

कम्ब रामायणम्

(तमिऴ्)

बालकाण्ड

(नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय एवं हिन्दी अनुवाद)

महर्षि कम्बर

लिप्यन्तरण एवं अनुवाद

आचार्य ति० शेषाद्रि, एम० ए०

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

प्रथम संस्करण—

१९८० ई०

पृष्ठसंख्या—१८"×२२"÷८=८+६५२=६६०

मूल्य— ४०·०० रुपया

मुद्रक :—

वाणी प्रेस

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ–२२६००३



स्व. विनोद चन्द्र पाण्डे सा

की स्मृति में उत्तराधिकारी से

संस्कृत भारती अकादमी जयपुर

[illegible] पुस्तकालय को भेंट स्वरूप प्राप्त।

Swami Chinmayananda

Bombay Yagnasala
14-11-79.

Sri Seshadri.
Madurai.

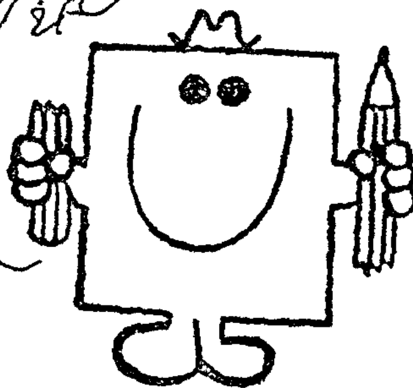
Blessed One,

Hari Om. Hari Om. Hari Om.
Salutations.

Congratulations that you found in you the "faith" to serve the Lord with this stupendous work of translating and commenting, in Hindi, the entire 10,000 and odd verses of Kamba Ramayana. May Sri Ramachandra shower His grace upon you. Let Sitha give the required heart; and let Hanuman supply the mental and physical strength to accomplish it.

Love and love,

Chinmaya



श्री स्वामी चिन्मयानन्द

सान्दीपनि साधनालय
१४-११-७९

श्री शेषाद्रि
मदुरै

धन्य ॐ

हरिः ओम्, हरिः ओम्, हरिः ओम्, प्रणाम ।



कम्बर रामायण के पूरे दस हजार से अधिक पद्यों के टीका सहित अनुवाद के अत्यद्भुत कार्य द्वारा श्री 'प्रभु' की सेवा करने के लिए, जो तुमने अपने में 'विश्वास' पा लिया है इसके लिए मेरी बधाइयाँ ।

श्रीराम तुम पर अपनी कृपा बरसाएँ, श्री सीताजी आवश्यक "मनोबल" हैं; और हनुमानजी उसे पूरा करने के लिए आवश्यक शारीरिक व मानसिक बल हैं ।

प्रेम प्रेम प्रेम
(प्रेमसहित)
ॐ चिन्मयानन्द

कम्बन-मणिमण्डपम्

कारैक्कुडी (तमिऴनाडु) में महर्षि कम्बन के समाधिस्थल
पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन अडिप्पॉडि
(कम्बन की चरणरेणु) श्री सा० गणेशन
द्वारा स्थापित—



उपर्युक्त पवित्र 'कम्बन-मणिमण्डप' में स्थायी निवास करते हुए, परमभक्त श्री सा० गणेशन, वार्षिक जयन्ती, उत्सव, पूजा की व्यवस्था रखते हैं। वे स्वयं 'कम्बन का प्रचार करके, कन्या (नितयौवना) तमिऴ की श्री-वृद्धि करने के' अपने स्तुत्य प्रयत्नों में 'कम्बन-मण्डपम्' की रचना, कम्बन के नाम पर एक विद्यालय आदि स्थापित करके अपने को 'कम्बन अडिप्पॉडि' अर्थात् 'कम्बन-चरणरेणु', ऐसा नाम देकर कम्बन-ज्योति को जगाये हुए हैं।

K. SANTHANAM
PHONE : 74231

58, Esst Abhiramapuram Street
MYLAPORE, MADRAS-4

To enable the millions of people whose Mother Tongue is Hindi to read, understand and appreciate Tamil classical literature like Kamba-Ramayana is certainly a worthy effort.



There can be differences of opinion as to how this should be done. To transliterate the Tamil verses into Hindi script and thereby enable the Hindi people to read Kamban in the original is one method.

To teach Hindi people the Tamil script and thereby enable them to read the Tamil original is another.

In this volume the first method has been adopted. The amount of effort involved is tremendous as the volume containing only the Balakandam with transliteration, meaning of words and Hindi translation is a volume of 652 pages.

I wish the effort all suceess.

1-9-79 Sd/ K. SANTHANAM.

अनुवाद

लाखों हिन्दी भाषियों को कम्बरामायण सरीखे तमिऴ के उत्कृष्ट ग्रन्थों के पढ़ने, समझने और रसास्वादन के विषय में सहायता देना अवश्य एक अच्छा प्रयास है।

यह कैसे किया जाय, उस पर मत भिन्न हो सकते है। तमिऴ पदों का लिप्यन्तरण करना एक उपाय है और उनको तमिऴ का अक्षर सिखाकर स्वयं पढ लेने देना दूसरा उपाय है।

इसमें पहला मार्ग अपनाया गया है। प्रयास बहुत बड़ा है। वालकाण्ड ही ६५२ पृष्ठ तक में व्याप्त हो गया है।

परिश्रम की सफलता की कामना करता हूँ।

58, ईस्ट अभिरामपुरम् स्ट्रीट
मइलापुरम्, मद्रास-4

(हस्ताक्षर) के० सन्तानम्
भूतपूर्व (संविधान सदस्य, केन्द्रमंत्री, उपराज्यपाल, विन्ध्य प्रदेश…)

Dr. S. Shankar Raju Naidu

M A., Ph D., F R.A.S. (London).

PROFESSOR & HEAD OF THE DEPARTMENT OF HINDI

UNIVERSITY OF MADRAS—5

विश्व-महाकाव्यों में आदि संस्कृत कवि वाल्मीकि-रचित रामायण का एक विशिष्ट स्थान है। अन्य किसी महाकाव्य का रामायण के समान पुनःपुनः पुनर्जन्म नहीं हुआ है— न मूल ग्रन्थ की ही भाषा मे और न अन्यान्य भाषाओं मे। रामायण ही एक ऐसा महाकाव्य है जिस पर संस्कृत मे ही नही अपितु अन्य सभी सम्पन्न भारतीय भाषाओं में काल एवं स्थान की परिवर्तित संस्कृति के अनुकूल सर्वथा मौलिक रूप मे ग्रन्थ-रत्नों की रचना हुई है। इनके अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व एशिया की भाषाओं मे भी अनेकानेक आश्चर्य-जनक रामायणों को श्रेष्ठ कवियो ने जन्म दिया है। इन सब पर यदि—

(i) 'वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्'

(ii) 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'

(iii) 'भूषण विनु न विराजयीं, कविता वनिता मित्र'

आदि सार्थक साहित्यिक सूक्तियों के आधार पर पुंखानुपुंख रूप से विचार किया जाय तो किसी भी सहृदय निष्पक्ष विद्वान को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि तमिऴ मे रचित कम्वरामायण का उनमें अद्वितीय स्थान है। कम्वर का काल वारह्वी शताब्दी माना जाता है। इस रचना मे कथा-वस्तु, पात्र-परिकल्पना व उद्देश्य मे मूल वाल्मीकि की रचना से अनेकानेक स्थानों मे अपूर्व परन्तु आवश्यक अन्तर देख सकते है, जो तमिऴ संस्कृति की विशिष्टता के परिचायक हैं।



डॉ० सु० शंकर राजू नायडू

इस अनुपम तमिऴ महाकाव्य का हिन्दी (अर्थात् खड़ी बोली) में रूपान्तरण करके प्रो० ति० शेषाद्रि ने एक राष्ट्रीय महत्त्व का अत्युत्तम साहित्यिक कार्य सम्पन्न किया है। उन्होंने अपने अनुवाद मे मूल कम्वरामायण के एक-एक शब्द का ही नही अपितु उनमें निहित व्यंजना व ध्वनि का भी विशेष ध्यान रखा है। प्रो० शेषाद्रि ने इस प्रकाशन के द्वारा तमिऴ-हिन्दी के वीच एक ऐसे सुदृढ़ साहित्यिक पुल का निर्माण किया है, जिससे राष्ट्रीय एकता को समझने मे विशेष सहायता प्राप्त होगी और साथ ही हिन्दी के विद्वान संसार की प्राचीनतम जीवित भाषा तमिऴ के साहित्यिक सौन्दर्य का कुछ अनुमान कर सकेंगे।

प्रो० शेषाद्रि इस सफल प्रयत्न के लिए वधाई एवं धन्यवाद के पात्र है।

मद्रास, ६ सितम्वर, १६७६

(ह०) सु० शंकर राजू

FOREWORD

Kamban is the greatest poet produced by Tamil Nadu and his Ramayana is a strikingly original recreation and not a translation. He has made significant departures from the frame-work of the original story and has introduced dramatic situations and dialogues which are not to be found in the original. His characterisation of the main characters in the Epic are radically different from, and a great improvement upon the original. He neutralizes the stiffness of the Epic with the supplen ss of Drama and suffuses both with the glow of his lyrical intensities. Whatever he does, he manages to sustain in the reader a feeling of passionate intimacy with things that count. He drives the reader to



जस्टिस् (न्यायमूर्ति) एस० महाराजन्

dip himself again and again in the cleansing waters of his Ramayana and to emerge with a warmer idealism, with a sense of keener personal partricipation in the upholding of virtue, with a sharper sensitivity to what is beautiful, good or true, with a greater courage to put the ultimate questions and an easier confidence to tackle them.

And all this he achieves through his supreme gift of poetry. Kamban's rhythm has an unrivalled fullness, variety and sufficiency. He manipulates his vowel and consonantal sounds with such dexterity and magic that they bring out the astral form of any mood or emotion. And his rhythmic inventions have the effect of hushing the chattering

mind of the reader and keeping it receptive to the message of the Poet, undistracted by the pressures of the private will. All this manipulation bears the imprimatur of unlaboured spontaneity and does not betray the pre-verbal agony of poetic creation. While describing some deep inexorable purpose behind the Cosmos or while conveying some glimpse of the inner chambers of existence, his rhythm effectively prolongs the moment of contemplation. Such indeed is the *attar* of Kamban's poetry that by common consent of the Tamils, Kamban has been rightly acclaimed as Kavi Chakravarti or the Emperor of Poesy.

Edward Leuders, a distinguished American Poet, has after going through the English translation of some of the poems of Kamban, said: "The characteristic reach of the Poet Kamban for cosmic personification in his poetry clearly ties these high and abstract matters to very human detail. It is the world of human experience he deals with, and it is through the exaltation of poetic song that he achieves what all the world's great poetry attempts to achieve ..a marriage of the divine and timeless with the earthly and experiential".

V.V.S. Iyer, who was a great scholar in Latin, Greek, Sanskrit, French and English has remarked that Kamban is entitled to a pre-eminent place in an assembly of the greatest poets of the world.

Prof. T. Seshadri has, by translating this great classic into Hindi, built a bridge of literary and intellectual understanding between the great Hindi-speaking world and the greatest poet of the Tamils. That Mr. Seshadri is a distinguished scholar in Hindi, Tamil and English and that his trilingual competence and his great expertise in the field of translation peculiarly fit him for the translation of Kamban into Hindi, is beyond question. By his translation, he has thrown open new avenues for comparative literary research. I am specially grateful to him for indicating with star marks the songs of Kamban, which alone were accepted as genuine by the great and distinguished aesthete, Rasikamani T K. Chidambaranatha Mudaliar, so that distortions may be avoided by Hindi men of letters and critics in the true evaluation of Kamban's genius. I admire Mr. Seshadri for having achieved the stupendous task of translating Kamban and thereby putting the Tamils under a deep debt of gratitude to him.

Shri Nandkumar Avasthi, Mukhya Nyasi Sabhapati, Bhuvan Vani Trust, has done pioneering work in India by causing the translation into Hindi the best in the literatures of the world. More than any other single individual in India, he has dedicatea his life to the sacred work of effecting through literature not only national integration but also world integration. May God bless his laudable venture with all success.

(Sd.) Justice S. Maharajan,
Chairman, Tamil Nadu State Expert Committee
for Translation of Classics &
Chairman, Tamil Nadu State Official
Language (Leg.) Commission, Madras-2.

अनुवाद

कम्वन तमिळ्नाडु (देश)-प्रसूत महानतम कवि है और उनकी रचित रामायण प्रभावकारी मौलिक पुनर्रचना है। उन्होंने केवल अनुवाद नहीं किया है। उन्होंने मौलिक कहानी के ढांचे में अनेक स्थलों में साभिप्राय परिवर्तन किये है और ऐसी नाटकीय घटनाओं और कथोपकथनों का विधान किया है जो मूल में प्राप्त नही। इस महान काव्य के प्रधान पात्रों का चरित्र-चित्रण जो कवि ने किया है, वह मूल से तत्त्वत: भिन्न है और असल में वह मूल का संशोधन है। उन्होंने काव्य की 'रुक्षता' को 'नाटक' की कोमलता से लचकदार बनाया है और दोनों को अपनी गीति की तीव्रता की ज्योति से आलोकित कर दिया है। उन्होंने जो भी किया है वहाँ उन्होंने इतना कौशल दिखाया है कि मुख्य घटनाओं से पाठक की रागात्मक आत्मीयता हो जाती है। वे पाठक को अपनी रामायण के पवित्रकारी प्रवाह में फिर-फिर गोता लगाने को मजबूर कर देते है और पाठक बाहर आते समय हर बार पहले से अधिक उत्साहवर्धक आदर्शवादिता, नैतिकता के संस्थापन में व्यक्तिगत योगदान की तीव्रतर दायित्व भावना, सत्यं, शिवं, सुन्दरम के प्रति अधिक संवेदनशीलता, परममुख्य प्रश्नों को उठाने का और अधिक साहस और उनका समाधान निकाल लेने का अधिक सुलभ-आत्मविश्वास —इनको लिये हुए निकलता है।

यह सब कवि सम्पादन करते हैं अपनी सर्वोत्कृष्ट कविता के वरदान द्वारा। कम्बन के (छन्दरचना) लय में एक अद्वितीय पूर्णता है, विविधता है और पर्याप्तता है। वे अपने स्वरों और व्यंजनों का इस दक्षता और जादू के साथ ताना-बाना बुनते है कि किसी भी मन-स्थिति या भाव को 'नक्षत्रलौकिक' (दिव्य) रूप प्राप्त हो जाता है। उनके आविष्कृत नये छन्दों में पाठक के वकवादी मन को चुप कराने का सामर्थ्य है; और स्वतन्त्र संकल्प के दबावों से दूर रहकर कवि के सन्देश को ग्रहण करने के लिए उन्मुख बनाने की अनूठी शक्ति है। इन सब कवि-कर्मों पर कवि की अनायास स्वत: प्राप्ति की छाप है; और किंचित भी काव्य-सृष्टि में सम्भाव्य शब्द-चयन-पूर्व परिश्रम की छटपटाहट की आहट नहीं मिलती। कवि चाहे प्रपंच के पीछे क्रियाशील गम्भीर और अवार्य हेतु का वर्णन करते हों या जीवन महल के अन्तरतम कक्षाओं की झाँकी दिखा रहे हों, उनके छन्दों का लय पाठक के अवधान की अवधि को बढ़ाने में सफल रहता है। कम्बन के काव्य की 'इन्न' (सुगन्ध) ऐसी है कि तमिळ् देशवासियों की सर्वसम्मति से वे कवि-चक्रवर्ती या काव्य-(साम्राज्य के) सम्राट् घोषित हो गये हैं।

एडवर्ड लूडर्स एक विख्यात अमरीकी कवि है। उन्होंने कम्बन के कुछ पदों का अनुवाद पढ़ा और बताया कि अपने काव्य मे विश्वव्यापी रूपक रचना की कला में उनकी अनूठी पहुँच है और वह साफ रूप से उन उच्च और सूक्ष्म पदार्थों को शुद्ध मानवीय तत्त्वों से बाँध देती है। वे मानवीय अनुभवों के संसार में ही व्यवहार करते है। तो भी काव्यगान के उदात्तीकरण के द्वारा उन्हें वह साफल्य मिल जाता है जिसकी प्राप्ति के हेतु विश्व का सर्वश्रेष्ठ काव्य प्रयत्न करता है— और वह है कालातीत दिव्य (तत्त्व) का लौकिक और अनुभवगम्य के साथ परिणय।

श्री वी० वी० एस० अय्यर ने, जो लेटिन, ग्रीक, संस्कृत, फ्रेंच और अंग्रेज़ी के श्रेष्ठ विद्वान हैं, यों कहा है कि संसार के सबसे बड़े कवियों के संघ में कम्वन अति मुख्य स्थान के हकदार है।

आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस समुन्नत काव्य का हिन्दी में अनुवाद करके विशाल हिन्दी भाषी जगत और तमिऴ के सर्वश्रेष्ठ कवि के मध्य एक साहित्यिक और बौद्धिक सेतु का निर्माण किया है। श्री शेषाद्रि हिन्दी के जानेमाने विद्वान हैं और अपनी त्रिभाषाई योग्यता और अनुवाद क्षेत्र मे अपनी निपुणता के कारण वे कम्बन के हिन्दी अनुवाद के कार्य के लिए योग्य हो गये है। उनके इस अनुवाद द्वारा तुलनात्मक साहित्यिक खोजों के लिए नये क्षेत्र खुल गये है। उन्होंने उन पद्यों को नक्षत्रचिह्न से चिह्नित किया है, जिनको ही उत्तम काव्यमर्मज्ञ और कलाविद 'रसिकमणि' टी० के० चिदम्बरनाथ मुदलियार ने प्रामाणिक माना था। इसके लिए हम शेषाद्रि के विशेष रूप से आभारी है। इस कार्य से हिन्दी के विद्वान कम्बन की प्रतिभा और मेधा के मूल्याकन मे अप्रामाणिकता और अशुद्धियों से बच सकेंगे। श्री शेषाद्रि ने कम्बन के अनुवाद का परम कष्ट-साध्य कार्य सम्पन्न किया है, और एतद्द्वारा तमिऴ लोगों पर बडा एहसान लाद दिया है। तदर्थ मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ।

भुवन वाणी ट्रस्ट के मुख्यन्यासी सभापति श्री नन्दकुमार अवस्थी ने ससार के अन्यतम ग्रन्थो का हिन्दी मे अनुवाद प्रस्तुत कर भारत मे युगप्रवर्तक काम किया है। कोई भी अकेले व्यक्ति जो कर सकते ह, उससे कही अधिक उन्होंने साहित्य द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण के लिए ही नही वल्कि विश्वैक्यकरण के पवित्र कार्य के लिए अपना तन-मन-धन लगा लिया है। भगवान उनके इस स्तुत्य कार्य मे सभी सफलताएँ प्रदान करें।

(ह०) जस्टिस् एस० महाराजन्

अध्यक्ष, तमिऴ सरकारी ग्रन्थ अनुवाद विशेषज्ञ-समिति

व

अध्यक्ष, राज्य शासकीय भाषा (वैधानिक) कमीशन

मद्रास–600002

FOREWORD

I am asked to write a foreword to this translation of Kamba Rāmayana in Hindi with transliteration of the original verses in Nagari script. I do so with pleasure.

Kamban has been an eternal and unfailing source of joy and elation to very many who know Tamil and who love literature. His beautiful language, brilliant delineation of the nature, captivating characterisation, amazing understanding of human feelings and sentiments, high moral purpose which runs through the entire work, his unique contribution to the concept of Godhood and the universal appeal which his philosophy makes, all combined together to make a unique impression on me. Reading of Kamban had always provided a rejuvenating relief from the routine of my work. Hence when I learnt that his work has been translated into Hindi, I felt delighted at the thought that a larger number of people whose mother tongue is not Tamil and who do not know Tamil can now enjoy and benefit by the study of Kamban.



चीफ़् जस्टिस् एम० एम० इस्माइल

I learn that this translation is being published by Bhuvan Vani Trust, Lucknow, and the individual behind the effort is Shri Nandakumar Avasthee, its founder-President. Thanks to his untiring zeal and enthusiasm in the cause of emotional and national integration which he desires to bring about by making available translation and transliteration of classics in various languages into Hindi and Nagari script, 30 books including the Holy Quran from the Arabic and Bible from English and Thirukkural from Tamil have come in Hindi. Many more works are said to be in the offing. The Trust is also making transliteration and translation of good literature in Hindi into other languages.

The present translation work is being done by Shri T. Seshadri, Retired Professor of Hindi, who has to his credit a rich experience of translation work in three languages English, Hindi and Tamil. The

scheme of the present work is to give Kamban's verses in Hindi script and below the same to give the meanings for the Tamil words in Hindi in the prose order and thereafter to give a running meaning of each stanza in Hindi. Of course it is impossible to bring out completely the inherent beauty of a literature in one language by translating the same into any other language, whatever the efforts that may be taken in that behalf, since from the very nature of the case each language has got its own peculiarities acquired by centuries of use of its words in a particular sense and in a sense the words may even epitomize the entire culture and civilisation of the concerned people. However, Shri Seshadri has done all that is humanly possible within the limitations inherent in the task and his work deserves encouragement and praise.

I commend the work of the Trust and I wish the Trust all success in this noble endeavour of its.

(Sd.) M. M. Ismail.
Chief Justice, Tamil Nadu

Madras, 11th Jan. 1980

अनुवाद

मुझसे निवेदन किया गया कि कम्बन के इस लिप्यन्तरण-भाषान्तरण की भूमिका लिखूँ और मैं सहर्ष यह भूमिका लिख रहा हूँ।

अनेकानेक तमिळ ज्ञाता साहित्यप्रेमियों के लिए 'कम्बन' (का अध्ययन) आनन्द और चित्तोल्लास का अचूक और निरन्तर स्रोत रहता आया है। उसकी सुन्दर भाषा, प्रकृति का उज्ज्वल वर्णन, चित्तापहारी चरित्र-चित्रण, मानवीय भावों और भावनाओं के क्षेत्र में उसका विस्मयकारी संवेदन, उसकी सारी रचना में अंतर्निहित रहनेवाला नैतिक उद्देश्य, ईश्वर सम्बन्धी धारणा के क्षेत्र मे उसके दर्शन का अनूठा योगदान, उसके दार्शनिक सिद्धान्त जिनका आकर्षण सार्वभौमिक है —इन सबने मिलकर मेरे मन पर अप्रतिम प्रभाव अंकित किया है। कम्बन का अध्ययन मुझे अपने दैनिक कार्य-भार के दबाव से यौवनोल्लासकारी मुक्ति दिलाता आया है। अतः जब मुझे मालूम हुआ कि इस काव्य का हिन्दी में अनुवाद हुआ है तो मुझे इस विचार को लेकर अति आनन्द हुआ कि अब अधिक संख्या में लोग, जिनकी मातृभाषा तमिळ नही है और जो तमिळ नही जानते, कम्बन का रस-भोग कर सकेंगे और लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

मुझे मालूम होता है कि यह अनुवाद लखनऊ के 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित हो रहा है और इस प्रयास के प्राण श्री नन्दकुमार अवस्थी है जो उस ट्रस्ट के संस्थापक-अध्यक्ष है। वे विभिन्न भाषाओं के उत्कृष्ट ग्रन्थों के हिन्दी में लिप्यन्तरण-भाषान्तरण द्वारा राष्ट्रीय एकता और भावात्मक ऐकीकरण लाना चाहते हैं और इस दिशा में उनका अथक उत्साह और ज्वलन्त जोश धन्य है कि आज लगभग तीस अत्युत्तम ग्रन्थ हिन्दी में उपलब्ध है जिनमे अरबी का कुरान शरीफ़, अंग्रेजी से इंजील और तमिळ से तिरुक्कुऱळ्

शामिल हैं। और भी अनेक ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं। ट्रस्ट हिन्दी के अच्छे ग्रन्थों का भी अन्य भाषाओं में लिप्यन्तरण-भाषान्तरण प्रस्तुत कर रहा है।

प्रस्तुत अनुवाद श्री ति० शेषाद्रि द्वारा किया जा रहा है। वे अवकाश-प्राप्त आचार्य हैं और उनका अंग्रेजी, तमिळ और हिन्दी में अनुवाद कार्य का समृद्ध अनुभव है। इस कृति की रचनाविधि यों है— पहले नागरी लिपि में कम्बन का मूल पद देना; बाद तमिळ के शब्दों का, अन्वय के क्रम से हिन्दी अर्थ देना, और उसके बाद धारावाही भावार्थ देना है। यह सिलसिला सभी पदों का रहेगा। यह तो सर्वविदित है कि एक भाषा के साहित्य के दूसरी भाषा में अनुवाद में सारी अन्तर्निहित खूबियाँ लाना-दरसाना असम्भव है; चाहे प्रयास कितने ही किये जाते हों! क्योंकि मामला ही कुछ ऐसा है कि हर भाषा की अपनी-अपनी विशिष्टताएँ हैं, जो उसे उसके शब्दों के सदियों के विशेष अर्थों में प्रयोग के दौरान मिल जाती हैं। एक तरह से शब्द सम्बन्धित लोगों की सारी सभ्यता व संस्कृति के सार-संक्षेप ही हो गये रहते। तो भी श्री शेषाद्रि ने कार्य की स्वाभाविक परिसीमाओं के अन्दर रहकर सारे प्रयत्न किये है जो मानवसाध्य हैं। और उन्हें प्रोत्साहन और प्रशंसा मिलनी चाहिए।

ट्रस्ट के सत्कार्य की मैं तहेदिल से ताईद करता हूँ और उसे इस सदिच्छापूर्ण कार्य में सफलता मिले —इसकी हार्दिक कामना करता हूँ।

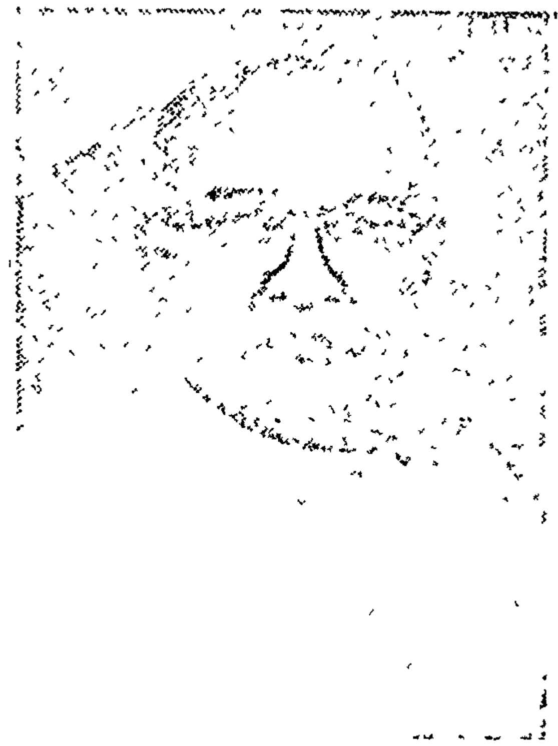
(हस्ताक्षर) एम० एम० इस्माइल
प्रधान न्यायमूर्ति, तमिळ नाडु

मद्रास, ११ जनवरी, १९८०

प्रस्तावना

कम्वन् ऑरु कविञन्; महा कवि; कविच् चक्करवर्त्ति; ऍल्लावट्रिरुकुम् मेलाह अवन् कल्वियिर् चिरन्दवन्. अवन् कल्लाद कलैयुम् वेदक्कडलुम् उलहिल् इल्लादन. आम्; अवन् कालत्तिल् इरुन्द वेदम्, उवनिडदम्, पुराणङ्गळ्, इदिहासङ्गळ्, तर्म शास्तिरङ्गळ्, पल् वेरु कलै नूल्हळ् आहियवट्रै आर्वमुडन् कट्रुत् तेर्न्दिरुक्किरान्. तमिळ् शमस्किरुदम् इरण्डिलुम् पेराट्रल् पॅरुम् बुलवनाय् इरुन्दिरुक्किरान्. वेरु शिल पिरान्दिय मोळिहळुम् अवनुक्कुत् तॅरिन्दिरुक्क वेण्डुम्.

इन्दिया ऑरु अकण्डमान तेयम्; इमयम् मुदल् कुमरि वरै इरु कडल् किळक्कुम् मेर्कुम् करै तॉट्टु निर्क, विळङ्गुम् ऑरु पळम् पॅरुम् देयम्! मोळियाल्, नागरिगत्ताल्, शीतोष्ण निलैयाल्, उणवुडैहळाल् वेरु पट्ट निलैहळ् काणप् पट्टालुम्, अ॒िवाल्, उणर्वाल्, नम्बिक्कैयाल् मारु पडाद मक्कळैक् कॉण्ड ऑरे देयमाह विळङ्गुवदु नमदु बारद देयम्. वेद कालत्तिलिरुन्दु जम्बुत् तीवम् बारद वर्षम्, बरद कण्डम् वि॒ङ्गि वरुहिन्ट्रदु. अन्द ऐक्किय मनप् पान्मै तमिळ् नाट्टिल् आयिरम् पल्लायिरम् आण्डुहळाह


कम्बन् अडिप्पॉडि सा० गणेशन्

— वरलाट्रुक् कालत्तिलिरुन्दे — निलवि वन्दुळ्ळदु. पण्डैत् तमिळ् नूल्हळुम्, पाडल्हळुम्, अहण्ड इन्दियावै अप्पडिये शॉर्चित्तिरमाहप् पडम् पिडित्तुक् काट्टुहिन्ट्रन.

अन्दप् परम्बरैयिल् उदित्तवन् कविच् चक्करवर्त्ति; दॅय्वम् तॅळिन्दवन्; कल्वि, अ॒िवु, ऑळुक्कम्, बक्ति, कवित्तुवम् निरैन्दवन्. वान्मीहि, बोदायणन्, वशिट्टन् आहियोर् इयट्रिय इराम कादैहळै ईडुपट्टुक् कट्रिरुक्किरान्. मूवरिलुम् मुन्नवरान वान्मीहियिन् इरामायणत्तिल् नॅञ्जैप् परि हॉडुत्तिरुक्किरान्. अक् कदैयुम्, अक्कदैयिन् तलैमैप् पात्तिरमाहिय इरामनुम् कम्बन् उळ्ळत्तैप् पॅरिदुम् कवर्न्दवर्हळ्. इरामनुडैय कल्याण गुणङ्गळैक् कर्कक् कर्क इरामनुक्के कम्बन् आळाय् विट्टान्. इरामनै कम्बनिन् मुळुमुदर् कडवुळाहवुम् आहि विट्टान्.

पल्वेरु वहैयान परन्दु पट्ट कल्वियुम्, इराम बक्तियुम्, कविदा सत्तनदमुम्, वळमान उलह अनुबवमुम्, "इरामावदारम्" ऍन्नुम् पारकावियत्तै अर्पुदमाहप् पडैक्कक् कम्बन् ऍन्नुर कविच् चक्करवर्त्तिक्कुक् कै कॉडुत्तु उदवियिरुक्किन्ट्रन. तिरुक्कुरळ् पोन्ट्र ऑप्पट्र अर नूल्हळिल् विदित्तुळ्ळ नॅरि मुरैहळुक्कु एट्रप इरामकदैक् कट्टुक् कोप्पुम्, इरामन्, शीदै, इलक्कुवन्, बरदन्, अनुमन् मुदलिय पात्तिरङ्गळुम् अमैन्दिरुन्दमै कम्बनुक्कु इराम कादैयैप् पाडुवदर्कुप् पॅरिदुम् ऊक्कत्तैयुम् उर्चाहत्तैयुम् अळित्तिरुक्किरदु.

कम्बन् सत्तियत्तै आशिरयित्तवन्, 'सत्तियमे इरामन्' ॲन नम्बुबवन्. "अऱत्तिन् मूर्त्ति" ॲन्ऱु इरामनैप् परवुवान्. इरामन् ॲन्नुम् तनदु वऴि पडु कडवुळुक्कुच् चमैत्त शोऱ्कोयिलाहवे करुदि 'इरामावदारम' ॲन्नुम् पार काावियत्तैप् पक्ति शिरत्तैयोडु पडैत्तुळ्ळान्. तान् पडैत्त अन्द महा कावियत्तै शकाब्दम् ८०७ (ॲण्णूत्तु एऴि) ल्- अदावदु कि० पि० ८८६ (ॲण्णूत्तु ॲण्बत् ताऱु) पॆब्रुवरि, २३ (इरुपत्तु मून्ऱु) आन् देदि पुदन् किऴमै तुदियै तिदि अस्त नट्चत्तिरत्तिल् वॆण्णॆयनल्लूरिल् अरङ्गेऱ्ऱितान्. अदन् अरुमै पॆरुमैहळै मदित्तु अऱवोर्हळुम्, अऱिञर्हळुम् शेर्न्दु मुदन् मुदलाहक् "कविच् चक्करवर्त्ति" ॲन्नुम् पट्टत्तैक् कम्बनुक्कुच् चूट्टि महिऴ्न्दनर्.

वान्मीह बगवान् अरुळिय इरामायणत्तिन् कट्टुक् कोप्पैयुम् कदैयैयुम् कम्बन् अप्पडिये एऱ्ऱुक् कॊण्डिरुक्किऱान्. ॲन्ऱालुम्, आङ्गाङ्गे कालत्तिऱ्कुम्, इडत्तिऱ्कुम् नागरिहप् पण्बाट्टिऱ्कुम् एऱ्ऱ शिऱ्चिल माऱ्ऱङ्गळैयुम् शॆय्दिरुक्किन्ऱ अरुमैप्पाट्टैक् काणलाम्. वान्मीहत्तिल् इल्लाद इरण्य वदैप्पडलत्तैक् कम्बत्तिल् काणलाम्. अदिल् कम्बनुडैय उबनिडद ञानम् ऒळिविडुवदैक् काणलाम्. वान्मीहि पडैत्त माया रामप्पडलत्तै नीक्कि विट्टु माया जनहप् पडलत्तैप् पुहुत्तिय कम्बनिन् मनत्तत्तुव (Psychological) अऱिवु पॆरिदुम् पाराट्टत् तहुम्. अप्पडिये वालि मोट्चम् ॲय्दि पिन् तारैयैच् चुक्किरीवनिन् मनैवियाक्कामल् विदवैयाहवे वाऴवैत्त नेर्त्तियुम् पॆरिदुम् महिऴत् तक्क माऱ्ऱमाहुम्. इङ्ङनम् तमिऴ् इलक्कणम् वहुक्कुम् "पिन्नोर् वेण्डुम् विहर्पङ्गळै" ॲल्लाम् आङ्गाङ्गे पुहुत्तिय कम्बनिन् पडैप्पाऱ्ऱलै ॲत्तुणैप् पुहऴिनुम् तहुम्.

काळिदासनै, बवबूदियै, हर्षनै, बासनै, इन्नुम् षेक्स्पियर्, मिल्टन्, बैरन्, षॆल्लि, कीत् पोन्ऱ वॆळिनाट्टुप् पुलवर् पॆरुमक्कळैयुम्, तुळसिदासर्, टाकुर् पोन्ऱ पिऱ्कालप् पुलवर्हळैयुम् तमिऴ् अन्बर्हळ् तम् मॊऴियिल् पॆयर्त्तुक् कऱ्ऱु महिऴ्हिन्ऱनर्. अङ्ङनमे तमिऴ् मॊऴियिल् उळ्ळ कम्बनै, वळ्ळुवनै, इळङ्गोवै, वारदियै ॲल्लाम् इन्दियप् पॊदु मॊऴियाहिय हिन्दियिल् मॊऴि पॆयर्त्तुप् पयन् तुयक्क वेण्डुम्. अप्पॊऴुदु तान् नाट्टिन् ऒरुमैप्पाडुम् परन्दडर्न्द पल् वेऱु कलै निलैहळुम् पुलप्पडुत्तप्पट्टु नलम् बयक्कुम्.

अन्द वहैयिल् वळ्ळुवप् पेराशान् वऴङ्गिय तिरुक्कुऱळ् एऱ्कनवे हिन्दियिल् मॊऴि पॆयर्क्कप्पट्टु विट्टदु. वेऱु शिल शिऱ्ऱिलक्कियङ्गळ्, शिऱु कदैहळ्, तनिप्पाडल्हळ् हिन्दियिल् मॊऴि पॆयर्क्कप्पट्टुळ्ळन. कविच् चक्करवर्त्तियिन् इरामावदारम् इप्पॊऴुदु मॊऴि पॆयर्क्कप्पट्टु वॆळि वरुहिऱ्दु. इदै मिक्क बक्ति शिरत्तैयुडन् वॆळिवरच् चॆय्बवर् श्रीजत् नन्दकुमार अवस्ति अवर्हळ् आवार्. अवर्हळिन् इराम बक्तियैयुम् इरामायण ईडुपाट्टैयुम् पॆरिदुम् पाराट्टि वाऴ्त्तुहिऱेन्; वणङ्गुहिऱेन्.

इन्दप् पॆरुङ्गाप्पियत्तैच् चॆम्मैयाहवुम्, शिऱप्पाहवुम् मॊऴि पॆयर्त्तवर् मदुरै हिन्दिप् पेराशिरियर् ति० शेषात्तिरि अवर्हळ्. मूल नूल् मॊऴियाहिय तमिऴिलुम् मॊऴि पॆयर्क्कप्पॆऱुम् मॊऴियाहिय हिन्दियिलुम् शिऱन्द पयिऱ्चियुम् पुलमैयुम् कॊण्डवर्; मॊऴि पॆयर्प्पाऱ्ऱल् मिक्कवर्; इरामकादैयिल् ईडुपाडु निरम्बियवर्; ॲल्लावऱ्ऱिऱ्कुम् मेलाह महा कविहळै मदित्तुप् पोऱ्ऱुम् पण्बाट्टाळर्. ॲनवे मॊऴि पॆयर्प्पु मूल नूलिन् पॆरुमैयैक् कऱ्पोर् नन्गुणरप् पॆरिदुम् तुणै पुरियुम्.

इङ्ङनम् इम् मॊऴि पॆयर्प्पुक्कुक् कारणर्हळायिरुन्द इरुवरैयुम् पलहालुम्

वाऴ्त्ति वणङ्गुहिऱेन्. इरुवर्क्कुम् ऍल्ला नलन्गळैयुम् अरुळवेण्डुमॆन्ऱु ऍन्नुतॆपिरात्त कम्बनैयुम् अवन् पाडिप् परवुम् परम् पॊरुळाम् श्री रामच्चन्दिर मूर्त्तियैयुम् पिरार्त्तित्तु अमैहिऱेन्.

वाऴ्ह इरामावदारम् !
वळर्ह कम्बन् पुहऴ् ॥

कम्बन् कऴहम्
कारैक्कुडि.
१५-१०-१६७६

अन्बन्
कम्बन् अडिप् पॊडि.

अनुवाद

कम्बन एक कवि है; महाकवि; कविचक्रवर्ती; सबसे बढ़कर वह विद्या का सागर है। संसार मे ऐसा "वेदसागर" या ऐसी "कला" (शास्त्र) नहीं है, जिनको उसने नही जाना था। हाँ ! उसके समय मे वेद, उपनिषद, पुराण, इतिहास, धर्मशास्त्र और अनेक विज्ञान (शास्त्र) के ग्रन्थ, जो भी प्रचार में थे, इन सबका उसने बहुत ही आतुरता के साथ अध्ययन कर लिया था। वह तमिऴ और संस्कृत दोनों का बडा ही विदग्ध और उद्भट विद्वान रहा है। अन्य कुछ देशी भाषाओं से भी उसका परिचय अवश्य रहा होगा।

भारत एक विशाल और अखण्ड देश है। हिमालय से कन्याकुमारी तक पूरब और पश्चिम मे रहनेवाले समुद्रों के तीरों के छूते रहते, फैला रहनेवाला बड़ा प्राचीन देश है। भाषा, सभ्यता, शीतोष्ण स्थिति, भोजन, पोशाक आदि अनेक बातों में विभिन्नता के होते हुए भी वह ऐसे लोगों का राष्ट्र है जो बुद्धि, अनुभूति और विश्वासों के क्षेत्र में अविभाज्य एक हैं। वेदकाल से यह जम्बूद्वीप, भारतवर्ष या भरतखण्ड ऐसे ही रहता आया है। यह ऐक्यभाव अनेक सहस्र वर्षों से विद्यमान है। प्राचीन तमिऴ ग्रन्थ और तमिऴ के मुक्तक गीत इसी अखण्डित भारत का शब्दचित्र उपस्थित करते है।

उसी भाव-परम्परा मे उत्पन्न था कविचक्रवर्ती— ईश्वर-विश्वासी, विद्या, बुद्धि, सदाचार, भक्ति और कवित्व से भरपूर कम्बन। उसने "वाल्मीकी बोधायन और वसिष्ठ" के द्वारा रचित रामगाथाओं को श्रद्धा के साथ सीखा है। उन तीनों में प्रथम मुनि वाल्मीकि के द्वारा रचित रामायण में उसने अपने मन को खो दिया है। वह चरित्र और चरितनायक दोनों ने उसके मन को एक दम लूट लिया है। श्रीराम के कल्याण-गुणों को पढ़ते-पढ़ते वह श्रीराम का दास बन गया और श्रीराम उसके आदि परमेश्वर बन गये।

विविध और विशाल ग्रन्थाध्ययन, श्रीराम-भक्ति, काव्य 'सन्नद्धता' (प्रतिभा), समृद्ध सांसारिक अनुभव आदि ने "इरामावदारम" नामक इस "पारकाव्य" (परकाव्य) की अद्भुत रचना मे कवि को अपना हाथ बँटाया है। "तिरुक्कुऱळ्" आदि नीति ग्रन्थों में विहित नीतिमार्ग के अनुकूल रामचरित का प्रबन्ध और श्रीराम, सीतादेवी, लक्ष्मण, भरत, हनुमान आदि पात्र बने हैं। यह बात कम्बन को श्रीरामचरित्र-गान करने मे अधिक उत्साह और उमंग दे सकी है।

कम्बन सत्याश्रयी है। "सत्य ही श्रीराम है" —इस पर विश्वास करनेवाला है। "कम्बन श्रीराम को धर्म-मूर्ति" (विग्रहवान धर्मः) —कहकर प्रशंसा करता है। अपने आराध्यदेव श्रीराम के लिए रचित काव्य-मन्दिर मानकर ही उसने "इरामावदारम" को भक्ति और श्रद्धा के साथ रचा है। स्वरचित महाकाव्य का उसने शकाब्द ८०७

में यानी सन् ८८६ ईसवी, फरवरी २३ तारीख, बुधवार द्वितीया, हस्त नक्षत्र में तिरुवेण्णेय्नल्लूर में विद्वन्-मण्डली के सामने 'अरङ्गेट्रम" (प्रकाशन) किया। उस ग्रन्थ की श्रेष्ठता, महानता आदि से प्रभावित होकर साधु पुरुषों और विद्वानों ने पहले-पहल कविचक्रवर्ती की उपाधि से उसको भूषित किया और स्वयं आनन्द पाया।

कम्बन ने भगवान वाल्मीकी की रामायण के कथा-प्रबन्ध और चरित्र-प्रवाह को वैसे ही अपना लिया है। तो भी यत्र-तत्र काल, देश और सभ्यता-संस्कृति के अनुकूल आवश्यक परिवर्तन किये है। उनकी अपूर्व सुन्दरता को देखकर हम मुदित हो जाते है। वाल्मीकी मे हिरण्यवध का चरित्र नहीं है। लेकिन कम्बन में है और उसमें उपनिषद ज्ञान अपनी छटा दिखा रहा है। वाल्मीकी में मायाराम का पटल है। कम्बन ने उसको हटाकर मायाजनक-पटल समाविष्ट किया है। उसमें कम्बन का मनोवैज्ञानिक ज्ञान खूब परिलक्षित होता है। वैसे ही वाली की मोक्ष-प्राप्ति के बाद तारा को सुग्रीव की पत्नी न बनाकर कम्बन ने उसको विधवा ही रहने दिया है। यह बहुत ही श्लाघनीय और मन को प्रसन्न करनेवाला परिवर्तन है। इस तरह तमिऴ के व्याकरण के नियमों के अनुकूल "आवश्यक विकल्प (परिवर्तन)" यत्र-तत्र करके काव्य-रचना करने की उसकी रचना-शक्ति की कितनी ही प्रशंसा क्यों न करो, वह उचित ही होगी।

तमिऴप्रेमी विद्वान कालिदास को, भवभूति, हर्ष, भास और शेक्स्पीयर, मिल्टन, बाइरन, शेल्ली, कीट्स, प्रभृति, विदेशी लेखकों और तुलसीदास, टैगोर आदि परवर्ती कवियों को अपनी भाषा में अनूदित कर रसास्वादन का मोद उठा रहे है। उसी तरह तमिऴ भाषा से कम्बन, वळ्ळुवन, इळंगो, भारती आदि की कृतियों का भी भारत की आम भाषा हिन्दी में अनुवाद कर उनके काव्य-रस का भोग करना चाहिए। तभी देश की एकता स्थिर होगी। पूर्णसम्पन्न और विविध कला-कृतियों की स्थिति का समाचार फैलेगा और मंगल होगा।

इस धारा में श्रेष्ठ आचार्य वळ्ळुवर का तिरुक्कुरळ् पहले ही हिन्दी मे अनूदित हो गया है। अन्य लघु ग्रन्थ, गल्प और मुक्तक गीत भी हिन्दी में अनूदित हो गये हैं। कविचक्रवर्ती का रामावतार अब अनूदित होकर आ रहा है। इसके भक्ति, श्रद्धा के साथ प्रकाशन में लगे रहनेवाले श्रीयुत नन्दकुमार अवस्थी हैं। उनकी श्रीराम-भक्ति और रामायण में उनकी श्रद्धा की मै खूब प्रशंसा करता हूँ और उनको नमस्कार करता हूँ।

इस महाकाव्य के श्रेष्ठ और सफल अनुवादक मदुरा के हिन्दी-आचार्य श्री ति० शेषाद्रि हैं। मूल ग्रन्थ की भाषा तमिऴ में और अनुवाद की भाषा हिन्दी में उनका अच्छा ज्ञान और उचित अभ्यास और विद्वत्ता है। अनुवाद-कला में उन्हें अच्छी दक्षता प्राप्त है। वे श्रीरामचरित्र पर विश्वास रखनेवाले है। इन सबके ऊपर वे महाकवियों का आदर करनेवाले सुसभ्य सज्जन हैं। इसलिए अनुवाद मूल ग्रन्थ की विशिष्टता को जानने में पाठकों को अवश्यमेव अच्छी सहायता देगा।

इस अनुवाद के कारणभूत दोनों सज्जनों को विविध प्रकार से बधाई देता हूँ और उनको नमन करता हूँ। दोनों को सभी सौभाग्य प्राप्त हों —इसकी अपने 'धातादेव' कम्बन से और उसके काव्य-विषय परवस्तु श्रीरामचन्द्रमूर्त्ति से प्रार्थना के साथ मै विराम लेता हूँ।

जिए 'रामावतार'
पले 'श्रीरामकीर्ती'

कम्बन कळ्हम,
कारैक्कुडि
१५-१०-७६

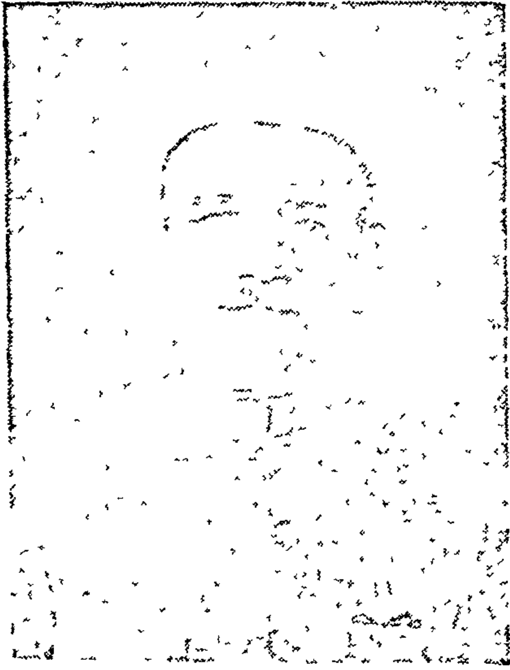
प्रिय,
कम्बन अडिप्पोडि
(कम्बन चरणरेणु)

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमरभारती सलिल-मञ्जु की 'तमिळ' सुपावन धारा।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

विषय-प्रवेश

भगवति वाणी देवि नमस्ते ! लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् कार्य, अकिञ्चन ने १९४७ ई० में अपनाया था। उल्लेखनीय उपलब्धि और प्रशस्ति प्राप्त होने पर, १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना की; और तब से भारतीय और भारत में स्थायित्व-प्राप्त सभी प्रमुख भाषाओं के श्रेष्ठ और सदाचार-ग्रन्थों के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरणों से राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि का शृंगार हो रहा है। विविध भाषाओं के विशाल ग्रन्थों के लिप्यन्तरित रत्नाभरणों से वाणी भगवति की साज-सज्जा हुई। अलौकिक रूप से शृङ्गारित और समलङ्कृत उसी 'अमरभारती' के मुकुटबन्धन का शुभ अवसर आज प्राप्त हुआ है।



भारत की अञ्चलीय भाषाओं में तमिळ को अति प्राचीन और सम्पन्न होने का गौरव प्राप्त है। तमिळ की लिपि तो और भी विचित्र है। उसमें थोड़े से व्यञ्जन, वे भी स्थानभेद से भिन्न-भिन्न ध्वनि प्रकट करते हैं ! इस स्वल्प किन्तु जटिल वर्णाक्षरी की गागर में अपार तमिळ साहित्य-सागर ! और उसका शीर्षस्थ ग्रन्थ 'कम्ब रामायण' का नागरी रूपान्तर मुकुटस्वरूप प्रस्तुत करते हुए हम आत्मविभोर है, कृतकृत्य हैं।

ग्रन्थोदय

इस अहोभाग्य के लिए परोक्षरूप नारायण को सराहा जाय अथवा प्रत्यक्ष नरनारायण को? विश्व-वाङ्मय के मूल स्रोत 'नारायण' की कृपा बिना यह प्रेरणा, यह साधन, यह सामर्थ्य, सुलभ कहाँ ? अतः कण-कण को गति देनेवाले अनन्तनारायण को नमन है। किन्तु अलक्ष्य नारायण पर कितने क्षण अकिञ्चन की दृष्टि टिकी रहेगी ? पार्थिव जगत् में ही नारायण की दिव्य ज्योति 'नरनारायण' को तलाश करना है। किनके आशीर्वाद से, किनके सहयोग से, किनके अथक श्रम से, और किनकी संस्तुति के बल पर कम्बर् के इस अद्भुत ग्रन्थ का नागरी-जगत् में उदय हुआ ?

ध्यान करने पर सर्वप्रथम हृदय नत होता है अनन्तश्रीविभूषित स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज पर। उनकी ही प्रेरणा और आशीर्वाद से इस अद्भुत और अतिकष्टसाध्य कार्य को पूर्ण करने की क्षमता और उत्साह, नागरी और हिन्दी रूपान्तरकार श्री ति० शेषाद्रि महोदय को प्राप्त हुआ। हम नारायण की ज्योति परमवैष्णव स्वामीचिन्मयानन्दजी को प्रणाम करते हैं।

श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०, ९९, भारती रोड, मदुरै (तमिळ्नाडु), तमिळ् एवं हिन्दी के लेखक, अनुवादक, प्रवक्ता, लगभग चार दशाब्दियों, यों कहिये कि आजीवन राष्ट्रभाषा के दक्षिण में प्रचारक, मदुरै कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक, गांधी-दर्शन के तत्त्वज्ञ शिक्षक, समाज-सेवादल के निदेशक, गुरुवर श्री चिन्मयानन्दजी के उपनिषद-वचनों के तमिळ् में अनुवादक, और सम्प्रति, मदुरै में हिन्दी प्रचारक विद्यालय के प्राचार्य हैं।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के प्रमुख अधिकारी विद्वान् श्री रा० शौरिराजन हमारे अतिशय धन्यवाद के पात्र हैं। तमिळ्-कम्बन के नागरी में प्रस्तुतीकरण की हमारी वर्षानुवर्ष की पिपासा, एक दिन उनके ही पत्र से शान्त हुई। श्री शेषाद्रि का परिचय उनसे ही प्राप्त होने पर हमारा अभीष्ट सिद्ध हुआ। कम्ब रामायण का अधिकांश कार्य श्री शेषाद्रि, न केवल पूरा कर चुके हैं, वरन् अब भुवन वाणी ट्रस्ट के वे आजीवन न्यासी भी हैं। वे ही इस महान् कार्य के यजमान हैं, पौरोहित्य भी उनका है, और ट्रस्ट के वाणीयज्ञ में 'कम्ब रामायण' रूपी साकल्य के आहुति-प्रदाता भी वे ही हैं। अकिञ्चन और सारा राष्ट्र उनका ऋणी रहेगा।

ग्रन्थ के प्रणेता महर्षि कम्बन का जीवनकाल, विद्वज्जन ९वीं शताब्दी वि० तक ले जाते हैं। उनकी जीवनी और उनका यह अपौरुषेय-जैसा भक्तिमहाकाव्य, तमिळ् भाषा का विचित्र वर्ण-विन्यास और व्याकरण आदि पर शेषाद्रिजी की अवतरणिका पृ० १८ से ३६ पर अवलोकनीय है। पृष्ठ ३७-४० में विषय-सूची भी सविस्तार दी गई है।

तमिळ्—राष्ट्रभाषा के संदर्भ में

जहाँ तक दक्षिणी, और विशेष रूप से तमिळ् भाषा का सम्बन्ध है, लोगों में यह भ्रान्ति-सी हो गयी है कि वे भिन्न कुल की हैं। यह सही है कि अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में दक्षिणी भाषाओं में प्रवेश अपेक्षाकृत कुछ कठिन है। उनका उत्तर की भाषाओं से सम्बन्ध कुछ दूर का है। संसार की सभी भाषाओं में कुछ क्षेत्रीय उपज-विशेष होती है। इसके प्रभाव से 'तमिळ्' भी मुक्त नहीं है। अन्यथा जिस प्रकार विश्व के मानव-समूह के पीछे एक वृत्ति, सामर्थ्य, दुर्बलता, भावात्मकता, परिलक्षित होती है, उसी प्रकार आप 'भाषा' को कितने ही कुलों में बाँट लें, उनमें समीपियों में वैभिन्य और दूरस्थ में समता के दर्शन होंगे।

तमिऴ् में व्यञ्जन २०-२२ मात्र हैं। वे भी स्थान-भेद से अलग-अलग ध्वनियों में बोले जाते हैं। इससे वे शब्द संस्कृत अथवा हिन्दी के तद्वत् होते हुए भी पहचान में नहीं आते और मूलतः भिन्न प्रतीत होते हैं। कुछ तमिऴ शब्दों के लेखन, कोष्ठकों में उच्चारण, और उनके राष्ट्रभाषाई रूपों में समानता का अवलोकन करें:—

मैऩ्तरुम् (मैन्दरुम्)–तरुण मानव; मऩमुम् चॅल्ल (मनमुऩ्जॅल्ल)–मन को चलाते हुए; कुयम्कऩ् (कुयम्हऩ्)–कुम्भकार (कुम्हार); तयिर् उऱ मत्तिऩ् (तयिरुऱ मत्तिऱ्)–दही में मथानी के समान; नॅट्टु कण् (नॅडुङ्गण्)–नेत्र कज्जल वाले; आरमुम्–हार (माला); इ–यह; उम्परो (उम्बरो)–उनके ऊपर भी; अङ्कुचम् (अङ्गुशम्)–अंकुश; चुऩ्तर (सुऩ्दर)–सुन्दर; वाचम् (वासम्)–वास (सुगन्ध); तण्टम् (ऱण्डम्)–दण्डम्; चेऩै (शेऩै)–सेनाएँ; पकवऩ् (पहवऩ्)–भगवन् आदि।

इस प्रकार हज़ारों शब्द है, जिनमे तमिऴ के अक्षरों और उनके स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझ लेने के बाद, वे विराने से अपने अर्थात् सारे राष्ट्र की सम्पत्ति बन जाते है। मैं यह नहीं कहता कि तमिऴ में मौलिक भिन्न शब्द नहीं है। यह तो एक से अनेकत्व को प्राप्त सृष्टि में आपको सर्वत्र दिखाई देगा। किन्तु प्रत्येक स्थान पर विभेद ही पर निगाह जाना घातक है; साम्य की तलाश में रहना श्रेयस्कर है। तमिऴ के अक्षर भी ब्राह्मी लिपि की देन है। भोजपत्र और ताळपत्र में लिखने की भिन्न परिस्थिति के कारण उत्तर भारत के अक्षर नुकीले पाईदार और दक्षिण भारत के गोलाकार हैं। शब्दों के साम्य की चर्चा ऊपर की जा चुकी है। वैषम्य की भावना को त्यागकर, और बिल्कुल 'अपना' समझकर तमिऴ के अलौकिक राष्ट्रभाषा-भण्डार का आनन्द लीजिये।

विद्वानों की संस्तुतियाँ

(१) हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान् डॉ० एस० शंकर राजू नायडू, एम० ए०, पीएच्० डी०, एफ़० आर० ए० एस० (लन्दन), हिन्दी विभागाध्यक्ष, मद्रास विश्वविद्यालय की विद्वत्तापूर्ण भूमिका; (२) कम्बन अडिप्पॉडि (कम्बन-चरण-रेणु) श्री सा० गणेशन (परिचय, पृष्ठ ३५) की ग्रन्थ पर शुभकामना; (३) तमिऴनाडु के जस्टिस श्री महाराजन तथा (४) चीफ़् जस्टिस श्री एम० ए० स्माइल —इन महानुभावों के प्रस्तुत नागरी संस्करण पर विस्तृत उद्गार, हमारे कार्य को गुरुत्व प्रदान करने के साथ ही, भाषा, धर्म, वर्ग और अञ्चलीय भेदभाव को चुनौती देते हुए, मानव को सन्तों की वाणी के माध्यम से विश्वबन्धुत्व की ओर उन्मुख करते हैं। हम इन महानुभावों के नितान्त आभारी हैं। हम उनके मूल पत्र (अंग्रेज़ी अथवा तमिऴ में), हिन्दी अनुवाद सहित, ग्रन्थ के आरम्भ में प्रस्तुत कर रहे हैं।

लोकप्रख्यात समाजसेवी, श्री के० सन्तानम् ने भी 'तमिऴ कम्ब रामायण' के नागरी रूपान्तर पर १-९-७९ को एक संस्तुति-पत्र भेजने

की कृपा की थी। उनके संस्तुति-पत्र को ग्रन्थारम्भ में प्रकाशित करने का एक ओर हमें सौभाग्य है, तो दूसरी ओर ग्रन्थ के प्रकाश में आने से कुछ दिवस ही पूर्व, ८५ वर्ष की आयु में, २८ फरवरी, १९८० को, उनके दिवंगत होने के समाचार से हम बिक्षुब्ध हो उठे हैं। हमें वेदना है कि ग्रन्थ पूरा होने पर उनके सम्मुख प्रस्तुत नहीं कर सके। १९२० ई० से अनवरत स्वतन्त्रता-सेनानी, संविधान सभा के सदस्य, अनेक केन्द्रीय मंत्रिपदों पर आसीन, अनेक पुस्तकों के लेखक, श्रीराजाजी के अभिन्न मित्र, अनेक प्रतिष्ठित पत्रों के सम्पादक, तमिळ और संस्कृत के समान रूपेण उद्भट विद्वान, वियुक्त श्री सन्तानम की पुण्यस्मृति में हम यह पावन रामायण-ग्रन्थ नागरी-जगत् के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए, पुण्यप्रवर श्री के० सन्तानम के परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हैं।

इस प्रकार अलक्ष्य और लक्ष्य, 'नारायण' और 'नरनारायण' सभी को नमन करते हुए, हम प्रार्थना करते हैं कि भाषा और लिपि के सेतुबन्धन द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण एवं विश्वबन्धुत्व का हमारा उद्देश्य और उपलब्धि उत्तरोत्तर फूलती-फलती रहे। ॐ नमो नारायण ! नमो नरनारायण !

आभार-प्रदर्शन

विशाल ग्रन्थ कम्ब रामायण का सानुवाद नागरी रूपान्तर, पाँच अथवा सात जिल्दों में प्रकाशित होकर सन् १९८१ ई० के अन्तर्गत विश्वनागरी-जगत् के सम्मुख प्रस्तुत हो जायगा, ऐसी हम आशा रखते हैं। भुवन वाणी ट्रस्ट के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान् और शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत सानुवाद लिप्यन्तरण के प्रकाशन में शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की विशेष सहायता निहित है। पिछले वर्षानुवर्ष से ट्रस्ट के इन कार्यों में केन्द्रीय शासन से प्राप्त उल्लेखनीय सहायता के फलस्वरूप नाना-भाषाई अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। हम प्रतिदान में यह आश्वासन देते हैं कि ट्रस्ट निरन्तर भाषा-सेतुबन्धन के पुनीत कार्य में रत रहेगा।

रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु, युगों के बीत जाने पर भी, आज अलक्ष्य होकर भी, राष्ट्र के सांस्कृतिक सेतु को बनाये हुए है। भुवन वाणी ट्रस्ट का विश्वनागरी सेतु, राष्ट्र तथा विश्व को एक सांस्कृतिक और भावात्मक स्नेह-बन्धन में उत्तरोत्तर आबद्ध करता रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त
(तमिऴ) वर्णमाला का देवनागरी रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने २३-६-६६ मे, प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था। मैंने उस पर आपत्ति करके 'ऴ' का सुझाव दिया था। तब से संभवत: और भी आपत्तियाँ 'निदेशालय' अवश्य पहुँची होंगी।

विदित हो कि ५-६ फरवरी, १६८० की निदेशालय की बैठक मे, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, यह निर्णय किया गया कि अब 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही प्रयुक्त किया जाय। आशा है लिप्यन्तरणकार इसका ध्यान रखेंगे।

तमिऴ - देवनागरी वर्णमाला

அ अ क	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ऒ कॊ	ஓ ओ को	ஔ औ कौ
	ஃ अक्		
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ,ऴ	ள ळ
ற ऱ,ऱ	ன ऩ,ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं।

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट



सानुवाद लिप्यन्तरणकार—

आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

अनुवादक की अवतरणिका

१ प्राक्कथन

आत्मविश्वास साधना-सागर-तरण की परमावश्यक तरी है। उसके बिना सिद्धि दुर्लभ है।

श्रीरामानुजाचार्य के भक्तिमार्ग के विशिष्टाद्वैत मत के प्रसिद्ध आचार्य, श्रीनिगमांतमहादेशिक वेंकटनाथार्य द्वारा प्रतिपादित, प्रवर्तित और विशदीकृत शरणागति या प्रपत्तिमार्ग के अनुयायियों के लिए यह आत्मविश्वास एक विशेष अर्थ रखता है; और वह है सर्वांगीण समर्पणमति और कैंकर्यवृत्ति। इसका साधारण शब्दों मे अर्थ है— अनपायी दिव्य-दंपति श्रीलक्ष्मी-नारायण या सीता समेत प्रभु श्रीराम, एक मात्र जग-शरण्य का अनन्य शेष, नियंत्रित सेवक और दास रहना। अर्थात उनकी आज्ञा और उनकी प्रेरणा लेकर, उनकी कृपा को पुरस्सर करके, उनके मनोरंजन को ध्येय मानकर कार्यरत रहना और फल को उनको समर्पित करना —यही शरणागति की दासवृत्ति है।

अस्तु! तमिळ के कवि सार्वभौम कम्बन की वृहत् काव्यकृति रामायण का सानुवाद लिप्यंतरण अति असाधारण काम है। मेरे हिन्दी-गुरु के शब्दों मे 'विचार ही भय उत्पन्न करनेवाला है'। फिर यह ज्यादती करने का साहस क्यों कर हुआ? इसके पीछे एक रहस्य है।

गत लगभग पच्चीस सालों से मैं स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का शिष्य, उनके ग्रथो का अनुवादक और उनके मिशन का एक सेवक रहता हूँ। स्वामी जी उत्तरकाशी के स्वामी तपोवनम के प्रमुख शिष्य, विश्वविख्यात गीता के प्रचारक, हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान में लगे रहनेवाले महान योगी और तपस्वी है। सन् १९७६, जुलाई-मध्य में उन्होंने एक पत्र, मेरे नाम, उत्तरकाशी से लिखा जिसका सार था— अव तुम्हारा संसार के प्रति कोई कर्तव्य शेष नही रह गया। सव कुछ छोड़कर यहाँ भाग आओ।

यह पत्र तव पहुँचा जव मै मरण देवता के मुख से अभी-अभी छूटा था। मृत्यु ने मुझे अपने हाथ में लेकर भी क्यो छोड दिया? —यह मेरे विस्मय का विषय रहा। मृत्यु-भय टल गया फिर भी मैं निर्वल और शय्याग्रस्त ही रहा। मैने उन्हें अपनी हालत लिखी और कहा कि दो तीन साल मैं नही आ पाऊँगा। उत्तर तुरन्त आया कि ठीक है। पर जल्दी स्वस्थ हो जाओ। रोगी रहने का हमारा अधिकार नहीं है। क्योंकि हमे अभी कितनी ही सेवाएँ करनी वाकी है!

यह 'हम' देखकर मैं चकरा गया। उनकी बात ठीक है। वे तो हिन्दूद्धार में रात-दिन अपनी शक्ति खपा रहे हैं। पर मेरी क्या बिसात है? मेरे सामने क्या कार्य है? मैं वह अलौकिक शक्ति कहाँ से लाऊँ?

पर प्रभु की आज्ञा देखिए। लखनऊ के विख्यात राष्ट्रलिपि-सेवी श्रीनंदकुमार जी अवस्थी का आदेश आया कि कम्बरामायण का सानुवाद लिप्यंतरण करो। सच मानिए। तब तक मुझे मालूम हीं नही था कि 'भुवन वाणी ट्रस्ट' नाम की एक संस्था है और उसके द्वारा भाषाई सेतुकरण का ध्येय लेकर इतना सारा अतुल महत्व का कार्य हो रहा है। इसे प्रभु का संकेत मानने के सिवा, उस स्थिति में, मेरे सामने और कोई चारा नहीं रह गया। यह मनोभाव दृढ़ रहे; मानवीय दुर्बलताएँ, जैसे अहंकार, प्रमाद, संशय, विस्मरण, अज्ञान, रोग आदि, मध्य में रोड़ा न बनें —इसकी सतत प्रार्थना के साथ इस शुभ कार्य को भगवत-कैंकर्य के रूप में मैंने आरम्भ किया।

२ संस्करण का चुनाव

तमिळ्नाडु में अब कम्बन के तीन सटीक संस्करणों की चर्चा है। टीकाएँ, टीकाकार विद्वानों के विभिन्न मतों के आधार पर परस्पर विभिन्न भावों के संकलन हो रहती हैं। तो भी टीका के बिना कम्बन को पूर्ण रूप से समझना कठिन है। इस क्षेत्र में वै० मु० गोपाल कृष्णमाचार्य की (लगभग पचास साल पहले कृत) टीका सबका पथप्रदर्शक रही है। आठ जिल्दों में (भागों में) निकला यह संस्करण वैष्णवों के लिए अत्यन्त मान्य और उपादेय है। पीछे के अन्य संकलन-सम्पादनकर्ता उनका आभार मानते है। फिर अण्णामलै विश्वविद्यालय ने विद्वानों की एक गोष्ठी नियुक्त की और उनका प्रथम विचार था कि 'उ-वे-सु नूल् निलयम्' वालों के सहयोग के साथ कम्बन-संस्करण निकाला जाय। सुन्दरकाण्ड परस्पर सहयोग के साथ प्रकाश में आया भी। पीछे विश्वविद्यालय ने अपना संस्करण अलग ही निकालने का फैसला कर लिया। विश्वविद्यालय का वह संस्करण प्रकाशित हुआ। महामहोपाध्याय श्री उ-वे-स्वामीनाथय्यर (अब दिवंगत) के पवित्र नाम पर चलनेवाले नूल निलयम् वालों ने दस जिल्दों में एक संस्करण निकाला। इसमें श्रीअय्यर के जन्म-व्यापी अन्वेषणों का फल समाहित है।

इनमें गोपालकृष्णमाचार्य का संस्करण भक्ति की दृष्टि से साम्प्रदायिक तथ्यों के ज्ञान का कोष रहता है। उ-वे-सु नूल् निलयम् वालों का संस्करण शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। अण्णामलै-संस्करण खोज की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

इनके अलावा मद्रास के कम्बन कळगम वालों ने एक मूल संस्करण निकाला है। एक ही जिल्द में कम्बरामायण के सारे पदों का (प्रामाणिकता की मुद्राप्राप्त और अतिरिक्त पदों के साथ) संकलन हुआ है। पर यह हमारे काम के लिए उपयोगी नही रहा, क्योंकि इसमें टीका नही है और दूसरा— संधि-विग्रह करके अलग-अलग शब्द दिये गये है, जिससे कविता का रूप बना नहीं रहा है।

खैर; सटीक संस्करणों में पूर्ण ग्रंथ न तो 'वै-मु-गो' का प्राप्य है, न अण्णामलै विश्वविद्यालय का। केवल उ-वे-सु का प्राप्य लगा और उसमें भी हमें एक ही सेट— पूर्ण रूप में —मिला। दूसरे सेट में अरण्यकाण्ड की प्रति बहुत बाद में मिली।

और एक महत्वपूर्ण संकलन है। वह भी अप्राप्य ही है तो भी उसकी चर्चा आवश्यक है। टी-के-चिदंबरनाथ मुदलियार ने कम्बर् तरुम् रामायणम् के नाम से तीन जिल्दों का एक संस्करण निकाला। उनमें सिर्फ १५१० पद संकलित हैं। उनकी चर्चा यथास्थान पीछे होनेवाली है। अब इतना कहकर यह अध्याय समाप्त करूँगा कि वह संकलन उपयोगी नहीं रहा। हम उ-वे-सु नूल निलयम् वालों के संस्करण के आधार पर ही यह लिप्यंतरित, अनूदित रामायण प्रकाशित कर रहे हैं।

३ संस्करणों में प्राप्त विभिन्नताएँ

कम्बरामायण की आज की हालत यह है कि उसका प्रामाणिक, व्यवस्थित और एक-सा रूप पाना दुर्लभ हो गया है। क्षेपक की बात सब मानते हैं पर प्रामाणिक पद और पाठ निर्धारित करने में सब अपनी-अपनी सूझ-बूझ के आधार पर कार्य करते है। हर सस्करण दूसरे से अनेक बातों मे भिन्न बना रहता है। पटलों की सख्या, पटलों का नामकरण, पटल का आरम्भ और अन्त, कुल पदों की संख्या, और प्रामाणिक मानकर चुने गये पद और पंक्तियों का क्रम, पदों का क्रम —हर बात मे विभिन्नता है। अलावा इनके पाठभेद लाखो की संख्या मे हैं। कभी-कभी ये भेद आकाश-पाताल का अंतर ला देते है। अगर हिन्दीभाषी श्री न-वी-राजगोपाल द्वारा कृत और बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा प्रकाशित कम्बरामायण का अनुवाद और हमारे इस अनुवाद की तुलना करेंगे तो इस बात की एक रूपरेखा मिल जायगी। किन्तु एक बात सामान्य रूप से हर संस्करण में यह पायी जाती है कि प्राप्य सभी पद हर सस्करण में मिल जाते हैं। जिनको संकलनकर्ता अप्रामाणिक मानते है, उनको वे अतिरिक्त पदों के तौर पर प्रस्तुत कर देते है। (टी-के-सी के संकलन में यह बात नहीं है।) वैसे ही पाठांतर भी दिये जाते है। कम्बन कळगम के मूल रामायण के संग्रह

में १०३६८ पद और १२९३ अतिरिक्त पद दिये गये है। वैं-मु-गो० के संस्करण में १०४९५ पद, अण्णामलै संस्करण में १०५०० से अधिक कुछ पद दिये गये हैं। उ-वे-सु के इस संस्करण में १०४१८ पद हैं। इन दोनों में अतिरिक्त पद भी दिये गये है।

४ इस संस्करण की विशेषताएँ

इस संस्करण की सारी सामग्री महामहोपाध्याय डॉ० उ-वे-सु (स्वामीनाथय्यर, तमिऴ में सुवामिनातय्यर लिखा जाता है; अतः उ-वे-सु कहा जाता है।) के द्वारा संग्रहीत थी। पर वे रामायण का संस्करण निकाल नहीं सके। तमिऴ के व्यास के रूप में मान्य इनके सामने और अन्य पुष्कल काम पड़े थे। इतना कहना काफी होगा कि वे तमिऴ के सर्वश्रेष्ठ, सर्वमान्य, सर्वप्रमुख महान विद्वान माने जाते है। उनकी संग्रहीत सामग्री का उपयोग करके, उनके सुपुत्र ने उनके पुनीत नाम पर स्थापित इस 'नूल निलयम्' द्वारा रामायण का यह उपादेय संस्करण निकाला।

इसमें कुल १०४१८ 'प्रामाणिक' पदों के अलावा अनेक अतिरिक्त पद भी दिये हैं। (उनमें कुछ पदों का सार यत्र-तत्र इस ग्रंथ में दिया जा रहा है।) बालकाण्ड में १३८९, अयोध्याकाण्ड में १२१०, अरण्यकाण्ड में ११९६, किष्किन्धाकाण्ड में १००४, सुन्दरकाण्ड में १०९६ और युद्ध में ४३२३ पद पाये जाते है। सारा संकलन दस जिल्दों में समाप्त हुआ है।

पहले पद दिया गया है। पद के चरणांशों के मध्य स्थान छोड़कर चरणांश (शीर्) अलग दिये गये हैं। पर शब्द संधियुक्त ही रखे गये हैं। उसके बाद शब्दों या वाक्यांशों के अर्थ के साथ अन्वय दिये गये है। अन्त में टीकाएँ दी गयी हैं, जिनमें साहित्यिक, पौराणिक और ऐतिहासिक विवरण सविस्तार दिये गये हैं। उनसे शब्दों की व्याकरणगत विशेषताओं, विषयों के सम्बन्ध में तुलनात्मक समीक्षाओं का पुष्कल ज्ञान मिल जाता है। हर भाग के आरम्भ मे पीठिका है जिसमें संकलन, संग्रह और संस्करण-सम्बन्धी सारे आवश्यक विवरण मिलते हैं। पुस्तक के अन्त में पदों की अकारादि सूची के साथ 'कठिन शब्दार्थ' भी दिये गये हैं। 'कठिन शब्दार्थ' में शब्दों के अर्थ मात्र नहीं दिये गये हैं। उदाहरणों से इसकी रीति साफ़ विदित होगी। उपमा शब्द के अधीन दिया गया विवरण यों है— खाँई की सेना के साथ तुलना (पदसंख्या ३१२); सन्ध्या-गगन की सर्प से उपमा (६२)……। उण्मैहळ् (तथ्य) के अधीन अविद्यानाश में ज्ञान का स्थान (१२३२); ……………। इरामन —यह शब्द ४, १६९, …………। पदों में आया है; उनके अन्य नाम— अंजन वर्ण— ४६१,५५४ …………।

इस, हमारे सानुवाद लिप्यंतरण ग्रंथ में तमिऴ पद मूल रूप में नागरी

अक्षर में दिये गये है। उनके आगे शब्दार्थ सहित अन्वय आये हैं। अंत में भावार्थ सरल भाषा मे दिये गये है। उनके ही अन्तर्गत कुछ आवश्यक टीकाएँ, विवरण आदि निहित कर दिये गये है।

लिप्यंतरण को और तमिऴ भाषागत और विषयगत कुछ विशिष्ट बातों को जानने मे सहायता देने के लिए तमिऴ व्याकरण के भागों की कुछ मोटी-मोटी बाते नीचे दी जाती है। पाठक इन पर थोड़ा ध्यान दें।

५ तमिऴ व्याकरण—कुछ तत्व

१ ध्वनि-समूह—स्वर (तमिऴ मे इनको प्राणाक्षर कहते है।) मूल १२ है।

लब्धलिपि	ह्रस्वः—अ इ उ ऍ (ए का ह्रस्व) ऑ (ओ का ह्रस्व)	—	1 मात्रा
	दीर्घः— आ ई ऊ ए ऐ ओ औ	—	2 मात्राएँ
	"आय्दम" (उपस्वर)— ∴	—	$\frac{1}{2}$ मात्रा
अलब्धलिपि	ह्रस्व— ऐ और औ	—	1 मात्रा
	ह्रस्व— उ, ह्रस्व इ	—	$\frac{1}{2}$ मात्रा
	ह्रस्व— 'आय्दम'	—	$\frac{1}{4}$ मात्रा

नोट:— आय्दम या उपस्वर संस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण 'अह्क्' है। इस लिप्यंतरण में दोनों संकेतों (∴ और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक ∴ पाने पर विसर्गवत पढ़ ले और : पाने पर ∴ लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यंतरण मे बालकाण्ड भर में और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों में अ या अय् लिखा गया है। इसमें एक त्रुटि रह जाती है कि तमिऴ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कहीं-कही संधि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियों के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अतः बाद के पदों में ऐ कै…आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरभ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी।

व्यंजन (शरीराक्षरः) मूल १८ है

लब्धलिपि	वल्लॅऴुत्तु (परुष वर्ग)	क च ट त प ऱ
	मॅल्लॅऴुत्तु —कोमल या अनुनासिक वर्ग	ङ ञ ण न म ऩ
	इडैयॅऴुत्तु (मद्धिम) वर्ग	य र ल व ऴ ळ

अलब्धलिपि: ह, ग, ज, ड, द, व,। ह और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है। वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है। स्थान-भेद से यह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाती है। बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं। लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं।

नोट— तमिळ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं। हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है। हलंत व्यंजन से शब्द आरंभ नहीं होता।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दारंभ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद क ही रह जाता है— जैसे पाक्कु, उङ्गट्कु, कऱ्क।
दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है— जैसे काहम्।
ङ् के बाद 'ग' बन जाता है। उदा: चङ्कम् —शङ्गम्।

च— द्वित्व में और ऱ्, ट् के बाद च ही रहता है। उदाहरण: अच्चु, शॉऱ्कुवै वॅट्चि। अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है। जैसे पा शम्, शदम् आदि। (अपवाद— संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है, जैसे कोसलै।
ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण: मञ्चम —मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है।

ट— शब्द के आरम्भ में नहीं आता। द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण: पडम्, पण्डम्।

त— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है जैसे: तयरदन, शत्तम्, शक्ति। अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है — शन्दम्, परदन्, मोदल्।

प— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद यह 'प' ही है। उदा: पडम्, कप्पल्, पॅट्पु, पॉऱ्पु, अन्यत्र यह 'व' के समान ध्वनित है।

विशेष: न् आदि के बाद यह कभी-कभी प ब दोनों से पृथक, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकालता है। भेद नगण्य है। बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है।

न— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है।

ऩ— यह भी दन्त्य है। पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है। इन दोनों में उच्चारण भेद नही के

बराबर है। पर शब्द के आरम्भ में न नहीं आता। न शब्द के मध्य में नही आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्य ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारंभ में नही आता। तमिऴ में अ, इ या उ मिलाकर कहते है, जैसे अरङ्गन्, इरामन् उरुत्तिरन्।

ऱ— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारंभ में नही आता। जब इसका द्वित्व होता है तब उच्चारण कुछ ट्र के समान हो जाता है। दोनों र और ऱ मूर्धन्य ही है पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नही जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण: अरम्-रेती; अऱम्-धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ऴ— यह ऱ और न के समान तमिऴ की विशिष्ट ध्वनि है। प और ळ के उच्चारण स्थानो के मध्य लुठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तब यह ध्वनि निकाली जा सकती हैं। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रंथाक्षर का ईजाद हुआ है। पर वे ठेठ सस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते है।

विशेष ध्यानयोग्य— कही-कही इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे जैसे निन्पॅरुव् को निन्बॅरुव् पढना चाहिए पर निन्पॅरुव् पाया जायगा तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर जोर देने के लिए अक्षर मूल रूप में उच्चरित है।

आखिर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही बना है। अन्यथा कोई निर्धारित नियम नहीं है। अतः इसमें कोई बड़ी गल्ती हो जाने की संभावना नही। हॉ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखड (आगे देखें) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिऴ मे छंद-रचना की विशेपता है। तमिऴ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते है और छंद-रचना उसे कही भी खण्डित कर देती है। तब पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत मानना पड़ेगा। तब 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सब नियम पढ़ते वक्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

२ संधि— संधि की अनेक विधियाँ हैं। उनका ज्ञान अब आवश्यक नहीं है। अन्वय पढ़ने से शब्दों के मूल रूप मिल जायँगे। मूल पढ़ने से संधि की रीतियाँ ज्ञात हो जायँगी। हाँ, पदखण्ड या चरणांश जानने के लिए छंद-रचना की रीति की दो एक मुख्य बात के बारे में जानकारी लाभकारी रहेगी।

३ छंद-रचना (याप्पु)— कम्बन के छंद विरुत्तम् कहे जाते हैं। (शायद वृत्त का तमिऴ् रूप हो, विशेष, बदले हुए अर्थ में) इसके चार चरण होते हैं और हर चरण के चरणखण्डों की संख्या समान है। यह चरणखण्ड तमिऴ में 'शीर' कहा जाता है। शीर के अंग (अशै) होते हैं। चरण-खण्ड के एक, दो, तीन या चार अशै तक हो सकते हैं। (अशै को 'गण' कह सकते हैं। पर तमिऴ का गण निश्चित संख्या के अक्षरों का नहीं होता।) अशै दो होते है— नेर् और निरै।

नेर् की व्याख्या— अकेला दीर्घ अक्षर— उदाहरण: आ, मा, ना…।
या ह्रस्व अक्षर— उदाहरण: ळि, म, ळ…।
ह्रस्व अक्षर हलन्त सहित— उदाहरण: वॅळ्
दीर्घ अक्षर हलंत सहित– उदाहरण: तेर्, पेर्…।

निरै की व्याख्या—दो ह्रस्व— वॅट्रि
ह्रस्व दीर्घ— उदाहरण: कुरा (दीर्घ और ह्रस्व मिल नहीं सकते —तब वे दो नेर् बन जायँगे।)
दो ह्रस्व हलन्त— कडल्
ह्रस्व दीर्घ हलन्त— विळाम्

विरुत्त-भेद इन 'अशै' यों की संख्या पर बने शीरों की एक चरण में संख्या, उन शीरों के अंतिम और प्रथम ध्वनियों की संधि का क्रम आदि पर निर्भर है। एक चरण के दो से लेकर अनेक शीर हो सकते हैं। उदा०—

कम्बन का पहला पद:—

उल हम् या वयुम् ता मुळ वाक् कलुम्
निरै नेर् नेर् निरै नेर् निरै नेर् निरै—
निल पॅ रुत् तलु नीङ् गलु नीङ् गला
निरै नेर् नेर् निरै नेर् निरै नेर् निरै—

यही क्रम शेष दो चरणों में भी पाया जायगा।

नेर् निरै के अलावा एक से अधिक 'अशै' यों के बने शीरों के सम्बन्ध में छंद का नाम जानने के लिए उन्हें मा, विळम, काय्, कनि आदि के संकेतिक

नाम भी दिये गये हैं। अस्तु ! अब तक लिप्यंतरण के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातों की चर्चा की गयी।

४ अन्वय के सम्बन्ध में इतना कहना है कि अन्वय के शब्द तमिऴ की लेखन-शैली के अनुसार ही लिखे गये हैं (कहीं अभ्यास-दोष के कारण 'ग' 'ह्' आदि लिखे गये हों तो स्मरण कर लें कि इनका अलग लिपि-संकेत तमिऴ में नहीं है।) और तमिऴ शब्द अधिकांश अपने संयुक्त, रूपांतरित, यौगिक या समस्त रूप में ही लिखे गये हैं।

अनेक पदों के अन्वयों में अऩ्ऱु, मऱ्ऱु, ओ, आल आदि ध्वनियाँ नहीं पायी जायँगी जो मूल में रहेंगी। वे सब पूरक ध्वनियाँ है जो छन्द के व्याकरण के अनुसार मिलायी गयी है। वे अर्थयुक्त शब्द भी हों तो भी जहाँ वे पूरक ध्वनियों के ही रूप में प्रयुक्त हुए है, वहाँ उनको मैंने अन्वय मे नहीं दिया है। कहीं-कही उल्लेख के साथ या उल्लेख-बिना कोष्ठकों के अन्दर मिलेगी। पर वह स्थल कम ही होंगे।

अब काव्य के रूप में कम्बन की कृति को समझने के लिए आवश्यक बातों की चर्चा करूँगा।

५ पॉरुळ् (विषय)— तमिऴ में काव्य-विषय पर भी व्याकरण बना हुआ है। साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब ही नही जीवन का पथप्रदर्शक और उन्नायक होता है। तमिऴ लोगों का जीवन प्रकृति से अभिन्न रूप से सम्बद्ध था। भूमि के पाँच प्राकृतिक विभाग होते है— (१) पर्वत तथा पार्वत्य प्रदेश; (२) वन और वन्य प्रदेश; (३) खेत और खेतों व बागों का प्रदेश; (४) समुद्रतट और उसके आस-पास का प्रदेश और (५) मरु प्रदेश। उनके क्रमश. तमिऴ नाम कुऱिञ्जि, मुल्लै, मरुदम, नॅय्दल और पालै है। पालै को कभी-कभी अलग भूभाग नही माना गया क्योंकि जलविहीन होने से मुल्लै और मरुदम प्रदेश पालै बन सकते है। अत: भूमि की चर्चा, इन चारो प्राकृतिक भागों की बनी रहने के कारण चतुर्विधा भूमि कहकर की है। इस रामायण में भी 'नानिलम' का शब्द बार-बार आया है।

तिणै— प्रकृति के साथ इस अभिन्न जीव-चर्या के कारण तमिऴ लोगों के साहित्य की चर्चा भी प्रतीकात्मक रूप में प्रकृति-सम्बन्धी नामों के अधीन करने की परिपाटी चली है। तिणै का शाब्दिक अर्थ भूमि है और लाक्षणिक अर्थ प्रवाह, प्रकरण या जीवन-चरित है।

काव्य-विषय को मोटे तौर से दो भागों में विभक्त किया जाता है। एक, अहम जिसका अर्थ आंतरिक या आत्मीय होता है। इस अहम साहित्य के अन्दर पूर्व-प्रेम का श्रृंगार तथा विवाहोत्तर प्रणय-वर्णन दोनों आ जाते है। यह पूर्व-प्रेम तमिऴो के जीवन और साहित्य की विशिष्ट

रीति है, जिसमें उत्तरदायित्वपूर्ण युवक और युवती नायक और नायिका के रूप में विवाह के पहले मिलते थे और प्रेम बढ़ाते थे। जब प्रेम परिपक्वता को पहुँच जाता तब समाज उनका विवाह करा देता था।

इस 'अहम' साहित्य का प्रधान रूप से पाँच 'तिणै' यों में विभाजन है। यहाँ और एक बात: साहित्य को नदी से उपमित करना सर्वविदित बात ही है। नदी इन पाँचों भूभागों से होकर बहती है। वैसे ही साहित्य भी विविध प्रसंगों का वर्णन करता जाता है। अब देखिए। अनमेल प्रेम और एकदेशीय प्रेम ये दोनों असाधारण हैं। उनके अलग नामकरण हुए हैं— कैक्किळै और पॅरुन्तिणै, बाकी पाँच 'तिणै' यों के विषय विभाजन निम्न प्रकार हैं :—

कुरिञ्चि—	(पर्वत-प्रदेश)—	मिलन और मिलन-निमित्त।
मरुदम—	(खेत-प्रदेश)—	रूठन और रूठन-निमित्त।
मुल्लै—	(वन-प्रदेश)—	गृहस्थी और उसका निमित्त।
नॅय्दल—	(समुद्रतट-प्रदेश)—	विरह-विलाप और उसका निमित्त।
पालै—	(जंगल मरु-प्रदेश)—	विछोह और विछोह का निमित्त।

इसके अलावा हर 'तिणै' के वर्णन के सम्बन्ध में ये जीव और पदार्थ भी आवश्यक और योग्य अंग माने गये हैं: देव, उच्च लोग, नीच लोग, पक्षी, पशु, बस्तियाँ, जलाशय, फूल, पेड़, भोजन-पदार्थ, ढोल के प्रकार, याळ (वीणा का-सा वाद्य), राग और काम-धंधे सब अलग-अलग हैं। इनकी सूची विस्तार-भय से नहीं दी जाती। तिणै के वर्णन में मिश्रित-वर्णन भी साहित्य का अंग माना गया।

तुऱै— हर तिणै के विविध तुऱै होते हैं। तुऱै का अर्थ घाट भी है। घाट ही जल में पान या स्नान के लिए मनुष्य के सहायक होते हैं। साहित्य में तुऱै को उपप्रकरण या निहित उपांग मान सकते है।

ऐसे ही 'बाह्य साहित्य' (पुऱम) के भी तिणै और तुऱै निर्धारित है। वहाँ तिणै के नामकरण फूलों के नामों पर हुए हैं। 'अहम्' साहित्य के समान भूभागों के नामों पर नहीं हुए हैं। बाह्य साहित्य का प्रधान विषय युद्ध था। बाह्य (युद्ध-) साहित्य के अंगों के नामकरण देखिए—

फूलों के नाम	**युद्ध के अंग**
१ वॅट्चि—	गायों का हरना।
२ करन्दै—	गायों का छुड़ाना।
३ वञ्जि—	चढ़ाई।

४ काञ्जि— युद्ध ।
५ नॊच्चि— परकोटे के अन्दर से युद्ध करना ।
६ उळिञै— घेराव डालना ।
७ तुम्बै— घमासान युद्ध ।
८ वाहै— विजय ।

वीर लोग युद्ध के प्रकारो के या अंगों के अनुकूल फूल (असली या स्वर्ण के बने) पहनकर युद्ध करते थे ।

कविगण (जिनको 'पुलवर' कहा जाता है) अभिभावकों की प्रशंसा में कविता या गीत बनाते थे । वे नीतिविषयक पर भी बनाते थे । ऐसे साहित्य पुऱम् के ही अंतर्गत लिये जाते हैं । उनमें प्रशंसा का 'तिणै' 'पाडाण्' कहा जाता है । इन सभी तिणैयों के भी 'तुऱै' होते है ।

इस विषय-विचार का ज्ञान तमिऴ-काव्य को समझने में सहायक होगा, यद्यपि अब यह परिपाटी कम्बन की रामायण में भी पूर्ण रूप से निबाही नही गयी है क्योंकि आधार संस्कृत का काव्य है और लोगों की जीवन-रीतियों में परिवर्तन आ गये थे ।

इतना जानने के बाद अब चलिए कम्बन व उसकी रचना पर एक विहंगम-दृष्टि डालें ।

६ कम्बन का चरित्र

कम्बन के चरित्र में अत्यधिक परिमाण में दन्तकथाएँ मिल गयी हैं । वे कब पैदा हुए ? कहाँ पैदा हुए ? उनके पिता कौन थे ? वे किस वंश के थे, किस जाति के ? उनकी मृत्यु कहाँ हुई ? आदि आवश्यक समाचार भी अनुमान और कल्पना के घने कुहरे में छिपे पड़े है । उन पर ऐतिहासिक और वैज्ञानिक रीति से विश्वास करना बड़ा कठिन लगता है ।

संक्षेप में निम्नलिखित विषयों का प्रचार है । वे मायवरम के पास तिरुवऴुन्दूर नामक गाँव में उवच्च (पुजारी) जाति के किसी व्यक्ति के घर में जन्मे थे या पले थे । (कथा कही जाती है कि किसी ब्राह्मणी द्वारा जनन के बाद त्यक्त होकर कोई शिशु उवच्चन के हाथ लगा । वही कम्बन हैं !)

फिर वे तिरुवॆण्णॆय नल्लूर के दानी ज़मीनदार शडैयप्पन् के यहाँ रहे । शडैयप्पन की ही प्रेरणा से उन्होंने कम्बरामायण रची । रामायण में उन्होंने अपनी कृतज्ञता के प्रदर्शन में दस बारह स्थलों में शडैयप्पन का नाम अंकित कर उनकी प्रशंसा की है । अतः यह बात स्वतः प्रमाणित है ।

वे कुलोत्तुंग राजा के दरबारी कवि थे । कभी-कभी मनमुटाव हो

जाता था क्योंकि दोनों का अपने-अपने पद का अहंभाव था। ऐसे एक संदर्भ में कम्बन यह कहकर चले गये कि मैं तुम्हारे दरबार में वापस आऊँगा नहीं। अगर आऊँगा तो तुमसे किसी बड़े राजा को अपना ताम्बूलपात्र-वाहक (पनबट्टा-वाहक) बना लेकर आऊँगा। वे पांडिय राजा के यहाँ गये। अपना असली नाम छिपाकर वे वहाँ रहे और अपनी विद्वत्ता के बल पर राजा के प्रिय मित्र बन गये। जब राजा को सच्चाई का पता लगा तो वे पछताने लगे। तव उन्हें अपना ताम्बूल-वाहक बना लेने का आश्वासन देकर कम्बन ने उनको सान्त्वना दी। इतने में चोऴन ने उन्हें बुला भेजा। वे आये और पांडिय राजा पनबट्टा-वाहक का वेष धरकर उनके साथ आया। बाद भी कम्बन का दरबारी जीवन सुख से नहीं बीता। कम्बन का पुत्र अंविकापति ने राजकन्या से प्रेम किया। यह बात खुलने पर राजा ने उसे प्राणदण्ड दे दिया। उधर राजा के पुत्र ने कम्बन की पुत्री पर कटाक्ष चलायी तो वह कोदों के ढेर में बैठ गयी और अन्दर धँसने से मर गयी। फिर कम्बन ने अपनी लोहे की लेखनी से राज-पुत्र का वध कर दिया। इसके बदले में राजा ने कम्बन को मार दिया।

चमत्कारों की कमी भी नहीं। उन्होंने सरस्वती के मुख से 'तुमि' नामक शब्द को ठीक सावित कराया। (यह शब्द युद्धकाण्ड में ६५७वें पद में पाया जाता है। ऑट्टक्कूत्तर नामक अन्य दरबारी कवि ने उसे तमिऴ का शब्द नहीं माना था।) पांडिय राजदरबार में सरस्वती देवी के नूपुर को माँग लेकर फिर उन्हें समर्पित कर दिया। एक कविता के द्वारा उन्होंने ब्रह्मराक्षस को भगाया। फिर अपनी रामायण के नागपाश पटल से एक पद सुनाकर गरुड़ को बुलाया और उनके द्वारा विष हटाकर तिल्लै (चिदंवरम्) के एक मृत ब्राह्मण-बालक को जिलाया। एक पद सुनाकर एक अश्व को मरवाया और दूसरा पद सुनाकर उसको जिला दिया। ऐसी अनेक बातें हैं।

उनकी जाति के सम्बन्ध में वे ब्राह्मण, पुजारी और राजा भी कहे जाते हैं। उनकी अन्य रचनाओं के नाम भी गिनाये जाते हैं जिन पर बहुत विद्वान विश्वास नहीं करते। उनका आन्ध्र देश के राजा प्रतापरुद्र के दरवार में जा रहने की कथा भी प्रचलित है। चोऴ राजा कुलोत्तुंग के स्थान पर वे आदित्य नामक चोऴ राजा के मित्र भी बताये जाते है।

जो हो, शक्ति पदिप्पगम वालों के कथनानुसार निम्नलिखित बातें निर्विवाद हैं—

कम्बन तिरुवऴुन्दूर में जन्मे थे।

तिरुवॆण्णॆय्नल्लर् (कदिरामंगलम) के ज़मींनदार शडैयप्पन उनके अभिभावक मित्र थे।

कम्वन ने रामायण लिखी।

उनके काव्य का प्रकाशन (तमिऴ वालों की रीति से 'अरङ्गेट्ट्रम्' यानी विद्वत्-सभा में सुनाना और स्वीकृति की मुहर पा लेना) श्रीरंगनाथ के मंदिर में हुआ। वह मंदिर विख्यात श्रीरंगम क्षेत्र में स्थित महिमायुक्त और प्रसिद्ध मंदिर है या कदिरामंगलम में कोई मंदिर था जो अव नष्ट हो गया है ? इस बात में सन्देह है। उनकी समाधि नाट्टरशन कोट्टै नामक गाँव में है —यह माना जाता है।

७ कम्बन का काल

कम्बन के चरित्र की जो स्थिति है वही उनके काल की भी है। नवीं सदी, ग्यारहवीं सदी, बारहवीं सदी, चौदहवी सदी और पन्द्रहवी सदी —इनमें हर एक के पक्षपाती पाये जाते हैं। यह पुस्तक खोज का ग्रन्थ नही है। अतः विस्तार के साथ इन पर जाना नही चाहता। पर आज के तीन प्रमुख विद्वान और कऴगम (संघ) वाले ९वी सदी के पक्ष में हैं। उनकी चर्चा यथास्थान होगी। इधर इतना कहना काफी होगा कि ९वी सदी के समर्थकों का पक्ष प्रबल दिखता है।

आजकल मदुरै विश्वविद्यालय मे अनेक विद्याव्यसनी जो खोज के कार्य में लगे हुए है, कम्वन-सम्बन्धी विषयों में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। आशा है उनकी खोजों के फलस्वरूप कुछ निर्धारण यथासमय मिल जायगा।

हाँ इन असंदिग्ध खोज के विषयों को एक ओर रखकर उस विषय की चर्चा करें जो ठोस रूप में हमारे सामने उपलब्ध है।

८ कम्बन का काव्य

वाग्देवी के पुष्कल प्रसाद के पात्र ये कवि सार्वभौम (कविचक्रवर्ती) विश्वकवियों में अग्रगण्य माने जाते हैं। इनके कारण तमिऴ भाषा की देवी का सिर गर्वोन्नत है। विद्वानों का खेदयुक्त विचार है कि अभी विश्व इनका महत्व पूर्ण रूप से जान नही पाया है।

कम्वन मेधावी और प्रतिभासंपन्न कवि थे। भाषा पर अधिकार और काव्य-कला की दक्षता उनकी अपूर्व थी और अलौकिक। मद्रास के कम्वन कऴगम द्वारा प्रकाशित रामायण-मूल ग्रन्थ के प्राक्कथन मे यों कहा गया है—

विश्वमान्य काव्यकारों में कम्वन अग्रगण्य हैं। कम्वन ने अपने काव्य में अपने पूर्व के सभी कवियों की विशेषताओं का समावेश कर लिया है। वह इतना सर्वांगीण हो गया है कि पीछे के कवि उनसे आगे बढ़ नही पाये, वरन उनके सफल अनुकरण में ही अपना भाग्य मान लेते है।

कम्बन तत्वज्ञ, गणितशास्त्र-विद्, ज्योतिष-विज्ञान के ज्ञानी, शिल्प-शास्त्री सब कुछ हैं। उनमें संगीत, नाटक, नृत्य आदि कलाओं का प्रथम श्रेणी का ज्ञान था। इनका संस्कृत और तमिऴ भाषा —दोनों पर अपार अधिकार था। छन्द, अलंकार आदि के प्रयोग में और रस के आयोजन में उनको अलौकिक दक्षता प्राप्त थी। काव्य, शास्त्र के इन परम पण्डित ने तमिऴ के ही नहीं संस्कृत के भी ग्रन्थों के विषयों का ज्ञान अर्जित कर लिया था।

इसलिए शकाब्द ८०७ से (सन् ८८६ ई० से) लेकर कम्बन की रामायण उत्तरोत्तर अपनी लोकप्रियता में बढ़ रही है। विद्वानों के लिए 'कम्बनाडन' की कविता के समान मनोरंजन का साधन और कोई नही है, जो उनके मन को इतना आह्लादित करे !

यह रामचरित का ही काव्य है। वह वृहत्काव्य के आवश्यक लक्षणों से पूर्ण है। ऐसे काव्य में इन विषयों का होना आवश्यक माना गया है— नांदी (ईश्वर-स्तुति या विषय-कथन) अलौकिक या अप्रमेय किसी नायक का चरित्र, पर्वत, सागर, राज्य, राजधानी, नगर, ऋतुएँ, चन्द्र व सूर्योदय और उनका अस्त आदि के वर्णन हों। विवाह, मुकुट-धारण, पुत्र-जन्म आदि घटनाओं का समावेश हो। श्रृंगार में मिलन-वर्णन और रूठन आदि की चर्चा हो। विद्या-विनोद, आचरण के उपदेश, मंत्रणा, दौत्य, युद्ध, विजय आदि प्रकरण हों। संधि-सर्ग, उपसर्ग, परिच्छेद आदि की व्यवस्था पायी जाय। भावों और तत्वों का समावेश हो। कुल मिलाकर ग्रन्थ रस-भरा होने के साथ-साथ चारों पुरुषार्थों का प्रतिपादक और दायक हो। कम्बन सभी दृष्टियों से सर्वांगीण हैं।

कम्बन ने अपनी रामायण का नाम 'इरामावतारम्' ही रखा। पर अब वह कम्बरामायण के ही नाम से विख्यात है। इसका मूल वाल्मीकीय रामायण है, यद्यपि अध्यात्म रामायण और अन्य श्रीराम-सम्बन्धी कथाओं का प्रभाव यत्र-तत्र पाया जाता है। कम्बन के इस स्तुत्य कार्य से भारत में भावात्मक एकीकरण का और विश्व में भारतीय संस्कृति की उन्नति के प्रकाशन का अपूर्व कार्य सध गया। भारत के मनीषी कवि समन्वय तथा सामंजस्य के प्रबल समर्थक रहते आये हैं। कम्बन को उनमें अग्रश्रेणी में मानना चाहिए। शैव-वैष्णव, उत्तर-दक्षिण, संस्कृत-तमिऴ, आर्य-द्रविड़, बड़े-छोटे, विद्वान-पामर, धार्मिक-धर्मनिरपेक्ष, भक्त-नास्तिक, पूँजीपति-साम्यवादी, प्रदेशभक्ति-देशप्रेम, देशप्रेम-विश्वनागरिकता आदि कितने ही प्रकारों के समन्वय उनके काव्य द्वारा प्राप्य हो गये हैं !

यह वाल्मीकी का शब्दश: अनुवाद नही है। उपमाएँ आदि तो इनकी अपनी ही हैं। तमिऴ जनों की संस्कृति के परिचायक अनेक परिवर्तन

इसमे हो गये है। सीता-राम का विवाह-पूर्व 'कन्यामाडम्[1]' के पास परस्पर देख लेना उनका विरह-वर्णन, सीताजी को रावण का भूखण्ड, आश्रम के साथ उठा ले जाना आदि के अलावा चरित्र-चित्रण में भी उचित परिवर्तन हैं। कम्बन के इस महान प्रयत्न से रचित महत् काव्य के कारण वाल्मीकी और कम्बन दोनों का गौरव बढ़ा और इन दोनों के कारण भारत का गौरव साहित्यिक और सास्कृतिक दृष्टि से उज्ज्वल हुआ।

कम्बन की अपनी तमिऴ-देशभक्ति, अपने अभिभावक शडैयप्पन के प्रति कृतज्ञता आदि बाते इस काव्य में परिलक्षित होती हैं।

कम्बन ने स्वयं अपनी कृति में काव्य का लक्षण और काव्य में प्रयुक्त शब्दों का लक्षण निम्न प्रकार से बताये है :—

नदी और काव्य में श्लेष के साथ बने इस पद में (अरण्यकाण्ड-शूर्पणखा पटल-पहला पद) कवि कहते है—

काव्य (और नदी) पृथ्वी का भूषण हो; बहुमूल्य और अत्युत्तम अर्थ दे; बुद्धि (भूमि) का पोषक हो; तापहारी 'तुरै' यों (घाटों या भाव-प्रसंगों) से युक्त हो; पाँचों 'तिणै' यों (भूभागों से या जीवन-व्यापारों) से होकर बहे; प्रकाशमय और स्वच्छ हो; और शीतल व प्रवहमान हो।

शब्दो के सम्बन्ध में उनका कथन है—

शब्द प्रसादगुणपूर्ण, मधुरतायुक्त, श्रेष्ठ अर्थबोधक, उत्तम श्रेणी के और तीक्ष्ण (सूक्ष्म) हों।

कहना नही है कि कवि ने अपने आदर्श खूब निवाहे हैं।

किं बहुना—वर्णन, प्रवाहमयता, रसभरितता, काव्यांग-निर्वाह, अलंकार-योजना, तथ्यों का निरूपण, धर्मो का उपदेश —सभी दृष्टियों से यह कांता-संहिता श्रीराम-काव्य सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोपयोगी कृति है। विद्वान लोग अनावश्यक तौर पर या झूठ-मूठ कम्बन को विश्वकवि नहीं मानते।

खैर, अब उन महानुभावों के प्रति हम अपनी कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि डालें, जिनकी वजह से हम आज कम्बन् का काव्य-रसास्वादन कर पा रहे हैं।

९ कम्बन के भक्त, विद्वान, प्रचारक आदि

तमिऴनाडु मे 'कम्बरामायण-विद्वानों' का बड़ा आदर रहा है। यद्यपि यह सत्य मानना पड़ेगा कि संस्कृतज्ञ वैष्णव भक्त ब्राह्मण लोग कम्बन को वाल्मीकी के समकक्ष मानने के पक्ष मे नही है तो भी देश की

---

[1] विवाह योग्य कन्याओं को अलग एक भवन में रखा जाता था। विवाह निश्चित होने के बाद विवाह के अवसर पर उन्हें राजमहल में लाया जाता था। उस भवन को कन्यामाडम् (प्रासाद) कहा जाता है।

अधिकांश जनता कम्वन के प्रति अधिक श्रद्धा रखती है। कहा जाता है— सप्रमाण कहा जाता है कि सन् १३७६ ई० से ही तमिऴनाडु में कम्वरामायणम् पर व्याख्यान देनेवालों के स्थान-स्थान पर जाकर भाषण देने की प्रथा है। सोलहवीं सदी के अंत में कुमर गुरुपरर् नामक मेधावी पुरुष काशी में दाक्षिणात्य मठ में रहकर कम्ब रामायण पर प्रवचन देते रहे। उनके व्याख्यान हिन्दी और संस्कृत में होते थे। ये संगीतज्ञ भी होते हैं और गंभीर विद्वान। अब हाल के और समकालीन कुछ विद्वानों की चर्चा करेंगे।

व-वे-सु अय्यर—ये तिलक के अनुयायी उग्र देशभक्त थे। इनके स्वतंत्रता-आन्दोलन में साहसपूर्ण कृत्यों से लोग मुग्ध हैं; उतने ही उनके अन्य साहित्यिक और समाजिक कार्य-कलापों से देश प्रभावित है। उन्होंने तिरुक्कुऱळ् का अंग्रेजी में अनुवाद किया। कम्बन के कतिपय पदों का भी अनुवाद किया है। उस अनुवाद-संग्रह का प्राक्कथन अति महत्व का माना जाता है। उसमें विश्वकवियों से तुलना करके कम्बन को उन्होंने सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया है। अब वे दिवंगत हैं।

पि-श्री-आचार्य—ये वयोवृद्ध है और अपने गाँव में (सुदूर दक्षिण में) अस्वस्थ रहते है। उन्होंने प्रसिद्ध, लोकप्रिय साप्ताहिक 'आनंद विकटन' द्वारा कम्बन पर एक लेखमाला (बरसों निकलती रही) प्रकाशित कर तमिऴ-भाषियों में कम्बन के प्रति रुचि बढ़ायी।

वै-मु-गोपालकृष्णमाचार्य—इन्होंने पहले-पहल सटीक कम्बरामायण का आठ भागों में संकलन निकाला। वही सबका पथप्रदर्शक रहा; अब भी वह वैष्णव भक्तों के मध्य प्रामाणिक माना जाता है।

महामहोपाध्याय उ-वे-स्वामीनाथय्यर—ये तमिऴ के जाने-माने विद्वान हैं। उन्हीं के कारण तमिऴ भाषा का इतिहास जीवंत हुआ। अगर उन्होंने सारे देश में घूमकर ग्रंथों का, ताळपत्र-पांडुलिपियों का चयन और संग्रह न किया होता तो तमिऴ का सिलसिलेवार साहित्येतिहास के प्रमाण न मिलते। जीवन भर में वे कम्बरामायण पढ़ते, टीका-टिप्पणियों और अन्य सामग्रियों का संग्रह करते रहे। उन्हीं लेखों के आधार पर जो संस्करण छपा उसी का आधार लेकर यह प्रस्तुत ग्रंथ तैयार हुआ है।

टी-के-चिदम्बरनाथ मुदलियार—(टी-के-सी) ये राजाजी के परम मित्र थे। (राजाजी विख्यात देश-सेवक, गाँधीजी के समधी, मद्रास के भूतपूर्व मुख्यमंत्री, और आखिरी गवर्नर जेनरल् थे।) ये तमिऴ-काव्य के प्रधानतया कम्बन के 'रसिक' थे। इनकी काव्य-मर्मज्ञता अद्वितीय थी। इनको ऐसा भाग्य प्राप्त था कि उन्होंने गाँधीजी को कम्बरामायण के अयोध्याकाण्ड के ५६१-५६२, ये दो पद सुनाये। यह वह प्रसंग है जिसमें श्रीराम सुमंत्र से

पूछते हैं कि क्या धर्म का पालन तभी हो जब उससे सुख मिलता है ? दुख हुआ तो धर्म त्याज्य हो जायगा ? 'रसिकमणि' उपाधिधारी, टी-के-सी के संगीतमय तर्ज मे पद्य सुनाने के और अर्थ बताने के अतीव मनोहारी ढंग से गाँधीजी प्रभावित हुए और पूछा कि तमिळ के काव्य को मूल में ही पढ़कर रस का स्वादन करने के लिए कौन सा उपाय है ? झट उत्तर मिला—तमिळभाषी का जन्म लें ! सत्यवादी गाँधीजी उनकी स्पष्टवादिता से खुश हुए ।

पूज्य विनोबा जी ने भी अपने एक पत्र में इन टी-के-सी महोदय को 'रसज्ञ-मर्मज्ञ' कहकर सराहा था ।

टी-के-सी का अपनी काव्य-मर्मज्ञता पर अपार विश्वास था । एक तरह से अभिमान था । उन्होंने यह साहसपूर्ण काम किया कि १५१० पद को छोड़कर कम्बन के अन्य सारे पदों को अप्रामाणिक घोषित किया । तीन जिल्दों में उन्होने रामायण का, 'कम्बन तरुम् रामायणम्' के नाम से जो संस्करण निकाला था (वह भी अव अप्राप्य है) उसमें उन्होंने वे ही १५१० पद संग्रह किये है । उसमें दी गयी टीकाएँ संक्षिप्त हैं पर सुमधुर, सुग्राह्य और आह्लादकारी है । मरते दम तक वे अपने मित्रों से याचना करते रहे कि कम्वन का नाम प्रशस्त करते रहो । इस ग्रंथ में तारे के चिह्न से जो पद चिह्नित है, वे उनके द्वारा प्रामाणिक और असंदिग्ध माने गये कम्बन के लिखे पद हैं ।

टी-पी-मीनाक्षी सुन्दरम्—(टी-पी-एम) ये प्रख्यात भाषाविद्, आलोचक, काव्य-मर्मज्ञ और अनेक गंभीर ग्रंथों के प्रणेता, मदुरै विश्व-विद्यालय के (भूतपूर्व) प्रथम उपकुलपति (वाइसचान्सलर) थे । अब अपनी अतिवृद्ध अवस्था मे महर्षि महेश योगी के ध्यान के प्रचार में लगे है । अव भी अति परिश्रमी साहित्य-स्रष्टा वने हुए है । उन्ही की अध्यक्षता में मद्रास के कम्बन कळगम वालों ने पूर्वोक्त कम्ब रामायण मूल का संस्करण संपादित कर प्रकाशित कराया ।

जस्टिस महाराजन—ये बहुत ही प्रसिद्ध तमिळ-भाषणकर्ता अनुवाद-कला-कुशल, साहित्य-मर्मज्ञ और मिलनसार सज्जन है । ये टी-के-सी के शिष्य है और इनके काव्य-प्रतिपादक भाषणो में टी-के-सी की रीति की झलक पायी जा सकती है । अव वे कम्बन के चुने हुए पदों का अंग्रेजी में नयी कविता की शैली पर अनुवाद कर रहे है । ये अवकाश प्राप्त जस्टिस हैं और संप्रति तमिळनाडु सरकारी अनुवाद विभाग के अध्यक्ष है ।

जस्टिस इस्माइल—ये मद्रास हाईकोर्ट के सीनियर जस्टिस है । (अव प्रधान जस्टिस वननेवाले है ।) उनका कम्बन-प्रेम इतना तीव्र था कि

उन्होंने कळगम की स्थापना मद्रास में की। ये स्वयं उसके अध्यक्ष हैं। सालाना उत्सव-सा मनाया जाता है, जब कम्बन पर भाषण, कविता-वाचन, विवाद-मंच (पट्टि मंडपम) पुरस्कार योजना आदि की विराट व्यवस्था रहती है। इनकी भी कम्बरामायण पर एक लेखमाला आनंदविकटन (साप्ताहिक) में निकली और वह बहुत लोकप्रिय रही और महत्वपूर्ण भी।

कम्बन अडिप् पॉडि—(कम्बन-चरण-रेणु—कारैक्कुडी शा० गणेशन जी) इन कम्बनभक्त-शिरोमणि का सचित्र परिचय आरंभ में दिया गया है। उनका कारैक्कुडी (रामनादपुरम जिले में एक मुख्य नगर) में स्थापित कम्बन कळगम सभी ऐसी संस्थाओं का मातृकळगम है। इकतालीस-बयालीस साल पहले बने इस संघ के चालन के अलावा ये और तीन बहुमूल्य कामों पर लगे है (१) कम्बन मणि मण्डपम का निर्माण (२) कम्बन के नाम पर एक उत्तर माध्यमिक (हायर सेकेंडरी) विद्यालय और (३) नाट्टरशन कोट्टाइ (एक बस्ती) में कम्बन-समाधि पर वार्षिक उत्सव का प्रवन्ध। उनकी ही प्रेरणा से तमिळनाडु भर में और मलाया में भी कम्वन पर व्याख्यानों की व्यवस्था के अलावा जयन्ती आदि उत्सव मनाये जा रहे हैं।

उनका इस ग्रंथ के लेखक के प्रति अगाध प्रेम और सद्भावना है।

वी-एस-मुदलियार— इनकी पुस्तक Kamba Ramayanam–A Condensed Version in English Verse and Prose कम्बरामायणम् अंग्रेजी पद्य और गद्य में सार-संग्रह भारत सरकार की आर्थिक सहायता लेकर सन् १९७० में प्रकाशित हुई। उसमें लगभग एक हज़ार चुने हुए सुन्दर पदों का अतुकांत नई कविता में अनुवाद है। कहानी की अविच्छिन्नता और प्रवाह गद्य-पद्य दोनों द्वारा रक्षित है।

डा० एस० रामकृष्णन— ये साम्यवादी लेखक, नेता और आचार्य हैं। मार्क्सवादी सिद्धांतों के वे गण्यमान्य तत्ववेत्ता है। उन्होंने अपने डाक्टर की उपाधि के लिए एक खोज-निबंध कम्बन और मिल्टन नाम से प्रस्तुत किया। वह अंग्रेजी में है। हाल में 'कम्बनुम् मिल्टनुम् ऑरु पुदिय पार्वै' (कम्बन और मिल्टन —एक नया अवलोकन) नाम से उन्होंने एक ग्रंथ लिखा है। उसमें उन्होंने कम्बन की कृति और मिल्टन की कृति (स्वर्ग-खोया हुआ) दोनों की तुलनात्मक समीक्षा की है। इनके ग्रंथ प्रामाणिक और मूल्यवान माने जाते हैं।

कितने ही अन्य विद्वान हैं! उनकी चर्चा विस्तारभय से अब हम छोड़ रहे है।

१० संस्थाएँ

आज कलकत्ता और मलाक्का (मलेशिया) के कम्बन कळगमों के अलावा तमिळनाडु में ३१ (इकतीस) स्थानों में कम्बन कळगम (कम्बन संघ) क्रियाशील है। उनका काम कम्बन की रामायण के वर्ग चलाना, भाषण, उत्सव आदि द्वारा उनका प्रचार करना आदि है।

उनमें प्रमुख कळगम मद्रास और कारैक्कुडी के हैं। ये दोनों बडी धूम-धाम से सालाना जयन्ती उत्सव मनाते है। कळगम के स्थापक और अध्यक्ष श्री कम्बन अडिप्पॉडि और जस्टिस इस्माइल प्रभृति महानुभाव इधर-उधर जाकर संघों के मध्य संपर्क चालू रखते हैं और उत्सवों में भाग लेकर कम्बन का नाम प्रशस्त कराते है।

११ उपसंहार

यह ग्रंथ बहुत परिश्रम और लगन के साथ किया जा रहा है। श्रीनंदकुमार जी को तो परिश्रम के साथ समुचित धनसंचय की भी कठिनाई का सामना पड़ता है। अतः आशा करता हूँ कि हिन्दीज्ञाता और प्रेमी विज्ञ पाठक इस ग्रंथ का समुचित स्वागत करेंगे और पठन से अपने को लाभान्वित कर लेगे; हमें कृतार्थ बनायेंगे और श्री सीताराम की कृपा के पात्र बनेंगे।

इसके अध्ययन से श्रीराम के चरितामृत के स्वादन के साथ काव्यानंद-भोग का भी लाभ होगा। साथ-साथ तमिळ भाषा, भाषी, उनकी काव्य-प्रणाली, संस्कृति आदि की उत्कृष्टता का भी बोध मिलेगा। हाँ, एक शंका अवश्य है: मेरी हिन्दी शायद इन बातों की उपलब्धि कराने में पूर्ण रूप से सहायता न दे सके! तो भी विश्वास है कि विद्वान पाठक को कम्बन के भावों को समझने में कठिनाई नही होगी।

जो है वह बहुत ही है। इसका सारा श्रेय उन कर्मण्य, भाषाप्रेमी, भावैक्य के सबल समर्थक, भाषाई-सेतुकरण के अथक सेवाव्रती, उदात्तगुण-पूर्ण और उदारचेता श्रीनंदकुमार अवस्थी (पद्मश्री) जी को और उनके निदेश व मार्गदर्शन मे सतत क्रियाशील रहनेवाले 'भुवन वाणी ट्रस्ट' और प्रेस के समर्थ और लगनशील कार्यकर्ताओ को है। प्रधानतया श्री विनयकुमार अवस्थी हमारी प्रशंसा के पात्र है। श्रीनन्दकुमार अवस्थी के चरणों मे मेरा मस्तक विनत है! उन कार्यकर्ताओं के प्रति हमारा हार्दिक धन्यवाद है।

श्री सीताराम की जय हो।

६६, भारती रोड, मदुरै
६२५०११

ति० शेषाद्रि, एम० ए०

विषय-सूची

कम्ब रामायणम्

तुदिप् पाडल्हळ् (स्तुति छंद)

ऑन्ऱा यिरण्डु शुडरायॅरु मून्ऱु माहिप्
पॉन्ऱाद वेद मॉरुनान्गॉडैम् बूद माहि
अन्ऱाहि यण्डत् तहत्ताहियप् पुऱत्तु माहि
निन्ऱा नॉरुव नवनीळ्कळल् नॅञ्जिल् वैप्पाम् 1

ऑन्ऱु आय्, इरण्टु चुटराय्, ऑरु मून्ऱुम् आकि, पॉन्ऱात वेतम् ऑरु नान्कॉटु ऐम् पूतम् आकि अन्राकि अण्टत्तु अकत्ताकि, अप्पुऱत्तुमाकि निन्ऱान् ऑरुवन्; अवन् नीळ् कळल् नॅञ्चिल् वैप्पाम् । १

जो एक बना, दो ज्योतियाँ बना, त्रिमूर्ति बना, अक्षय वेद चतुष्टय बना, पाँच भूत बना; इन सबका भी जो न बन, अण्ड के अन्दर का, अण्ड के वाहर का भी बना, (वह एक) रहता है। उस परमपुरुष के दीर्घ चरणों को हम अपने चित्त में धरें। १

ऑन्ऱाय्प् पलवा युळनायिल नायु रैप्पोर्क्
कन्ऱाय्प् परमा यरुवायुरु वाहि मेन्मै
कुन्ऱाद ञानक् कॉळुन्दाय्क्कुण मून्ऱुन् दन्दु
निन्ऱा नियाव नवनीळ्कळल् चॅन्नि वैप्पाम् 2

उरैप्पोर्क्कु ऑन्ऱु आय्, पल आय् उळन् आय् इलन् आय्, अन्ऱु आय्, परम् आय्, अरु आय् उरु आकि मेन्मै कुन्ऱात ञान कॉळुन्तु आय् कुणम् मून्ऱुम् तन्तु निन्ऱान् इयावन् अवन् नीळ् कळल् चॅन्नि वैप्पाम् । २

कहने वालों के लिए (कठिन रूप से) एक है; कई है; उनका भाव है; अभाव भी; वर्तमान हैं, परे भी; अरूपी हैं, रूपवान हैं; अनुत्तम ज्ञान के किसलय (शिखर) हैं। (सत्व, रज और तम) तीन गुणदायी जो हैं उनके दीर्घ चरण सिर पर धरेंगे। २

तिरुमाल् (श्रीविष्णु की स्तुति)

माङ्गडल् नेमियन् दडक्कै, मालै मालहॅड वणङ्गुदु महिळ्न्दे 3

नीलम् आम् कटल् नेमि अम् तटक्कै मालै माल् कॅट मकिळ्न्तु वणङ्कुतुम् । ३

नीले रंग को प्राप्त क्षीर सागर (-शायी), चक्रधारी, सुन्दर विशाल हस्त, श्री विष्णु की, भ्रम निवारण के लिए आनन्द के साथ वन्दना करेंगे। ३

कायुम्वॅण् पिऱैनिहर् कडुवॊ डुङ्गॆयिऱ्, ऱायिरम् पणामुडि यनन्दन् मीमिशै
मेयनाल् मऱैत्तॊऴ विऴित्तु ऱङ्गिय, मायन्मा मलरडि वणङ्गि येत्तुवाम् 4

कायुम् वॅण् पिऱै निकर्; कटु ऒट्टुङ्कु ऍयिऱ्ऱु, आयिरम् पणा मुटि अनन्तन् मीमिचै मेय नाल् मऱै तॊऴ विऴित्तु उऱङ्किय- मायन् मा मलर् अटि वणङ्कि एत्तुवाम् । ४

(चाँदनी) फैलाने वाले श्वेत चंद्र के सदृश, और विष से भरे दांतों और एक सहस्र फन वाले अनन्त (नाग) पर, श्लाघ्य चारों वेदों के स्तुति करते रहते, जागते हुए सोनेवाले (ज्ञान-निद्रा-रत) मायावी (विष्णु) के (कमल) फूल से चरणों की स्तुति करें । ४

इलक्कुमि (लक्ष्मी)

मादुळङ् गनियैच् चोदि वयङ्गिरु निदियै वाशत्
तादुहु नऱुमॆन् शॆय्य तामरैत् तुणैमॆन् पोदै
मोदुपाऱ् कडलिन् मुन्नाण् मुळैत्तुनाऱ् करत्ति लेन्दुम्
पोदुता याहत् तोन्ऱुम् पॊन्नडि पोऱ्ऱि शॆय्वाम् 5

मातुळम् कनि- ऐ चोति वयङ्कु इरु नितियै वाच तातु उकु नऱु मॆन् चॆय्य तामरै तुणै मॆन् पोतै, मोतु पाऱ् कटलिन्, मुन्नाळ् मुळैत्तु नाल् करत्तिल् एन्तुम् पोतु तायाक तोन्ऱुम् पॊन् अटि पोऱ्ऱुवाम् । ५

अनार की कली को, ज्योतिर्मय बड़ी श्री को, सुगंधयुक्त पराग चूने वाले मृदु, और लाल कमल की साथिन कमल-कली को, तरंगाकुल सागर में उदित हो (विष्णु के) चार हाथों पर धृत होते समय जो (जगन्मयी) माता बनीं उन लक्ष्मी के चरणों की स्तुति करें । ५

इराम पिरान् (प्रभु श्रीराम)

परावरु मऱैपयिल् परमन् पङ्गयक्, करादल निऱैपयिल् करुणैक् कण्णितान्
अरावणैत् तुयिऱुऱन् दयोत्ति मेविय, इरागवन् मलरडि यिऱैञ्जि येत्तुवाम् 6

परावु अरु मऱै पयिल् परमन्, पङ्कयम् करातलम् निऱै पयिल् करुणै कण्णितान् अरा अणै तुयिल् तुऱन्तु अयोत्ति मेविय इराकवन् मलर् अटि इऱैञ्चि एत्तुवाम् । ६

स्तुत्य श्रेष्ठ वेदों से घोषित परब्रह्म, कमल से करतल वाले, करुणाक्ष शेषशय्या की निद्रा त्याग अयोध्या जो आये उन राघव के चरण कमल की, विनय कर, स्तुति करेंगे । ६

कलङ्गा मदियुङ् गदिरोन् बुरविप्, पॊलन्कान् मणित्तेरुम् पोहा—इलङ्गा
परत्तानै वानोर् पुरत्तेऱ विट्ट, शरत्तानै नॆञ्जे तरि 7

नॆञ्चे ! कलङ्का मतियुम् कतिरोन् पॊलन् का मणि तेरुम् पोका, इलङ्का पुरत्तानै वानोर् पुरत्तु एऱ विट्ट चरत्तानै तरि । ७

रे मन ! नियम न तोड़नेवाला चंद्र, और सूर्य का अश्वयुक्त स्वर्णमय रथ जिसके बीच में नहीं जा सकते, उस लंकापुरी के राजा को आकाश पर चढ़ाते (मारते हुए जिन्होंने) शर छोड़ा उनका स्मरण कर। ७

नाराय णाय नमवॆन्नु नन्नॆञ्जर्, पाराळुम् बादम् बणिन्देत्तु माऱ्ऱियेन्
काराऱु मेनिक् करुणा हरमूर्त्तिक्, कारा दनैयॆन् नऱि यामै योन्ऱुमे 8

नारायणाय नम ऒन्नुम् नल् नॆञ्चर् पार् आळुम् पातम् पणिन्तु एत्तुम् आऱु अऱियेन्। कार् आऱुम् मेनि करुणाकर मूर्त्तिक्कु आराततॆ ऒन् अऱियामै ऒन्ऱुमे। ८

नारायणाय नमः (यह मंत्र) जपने वाले सच्चित्तवालों के लोक के शासक चरणों की स्तुति करने की रीति नहीं जानता। अतः मेघ श्यामल देह के और करुणाकर देव की आराधना (का द्रव्य) मेरी अज्ञता मात्र ही है। ८

नम्माळ्वार् (प्रसिद्ध वैष्णव संत)

तरुहै नीण्ड तयरदन् ऱान्ऱरुम्, इरुहै वेळ्त् तिरागवन् रन्गदै
तिरुहै वेलैत् तरैमिशैच् चॆप्पिडक्, कुरुहै नादन् कुरैहळल् काप्पते 9

तरु कै नीण्ट तयरतन् तान् तरुम् इरु कै वेळ्त्तु इराकवन् तन् कतै तिरकु ऐ वेलै तरै मिचै चॆप्पिट कुरुकै नातन् कुरै कळल् काप्पतु ए। ९

दानशील दशरथ के पुत्र, दो हाथों के हाथी (के समान रहनेवाले) श्रीराम का चरित, विविध तरह के सागरों से वलयित भूभाग में गाने के लिए कुरुकै (नामक क्षेत्र) के नायक शठकोप[1] के वीरतासूचक पायल से अलंकृत चरण रक्षक है। ९

आञ्जनेयर् (आंजनेय हनुमान)

अञ्जिले यॊन्ऱु पॆऱ्ऱा नञ्जिले यॊन्ऱैत् तावि
अञ्जिले यॊन्ऱा राह वारियर् काह वेहि
अञ्जिले यॊन्ऱु पॆऱ्ऱ वणङ्गैक्कण् डयला रूरिल्
अञ्जिले यॊन्ऱु वैत्ता नवॆम्मै यळित्तुक् काप्पान् 10

अञ्चिले ऒन्ऱु पॆऱ्ऱान् अञ्चिले ऒन्ऱैत् तावि अञ्चिले ऒन्ऱु आऱु आक, आरियर्कु आक एकि अञ्चिले ऒन्ऱु पॆऱ्ऱ अणङ्कै, अयलार् ऊरिल् कण्टु, अञ्चिले ऒन्ऱु वैत्तान्; अवन् ऎम्मै अळित्तु काप्पान्। १०

पांच (भूतों) में एक (वायु) का जना (हनुमान जो), पांच में एक (आकाश) के द्वारा आर्य श्री राम कार्य के हेतु जाते हुए पांच में एक (जल) को पार कर, पांच में एक (पृथ्वी) की सुता को अन्यों के देश में पाकर, उसमें पांच में एक (अग्नि) लगा दी (जिसने), वह हम पर कृपा कर हमारी रक्षा करेगा। १०

---

1 शठकोप-नम्माळ्वार जो वैष्णव भक्त आळ्वारों में प्रसिद्ध एक है।

अॅव्वि डत्तु मिरामन् शरिदयाम्, अव्वि डत्तिनु मञ्जलि यत्तन्नाय्प्
पव्व मिक्क पुहळ्त्तिरुप् पार्कडल्, दॅय्वत् तासनैच् चिन्दैशॅय् वामरो 11

एव्विटत्तुम् इरामन् चरितैयाम् अव्विटत्तितुम् अञ्चलि अत्तनाय् पव्व मिक्क पुकळ् तिरु पार् कटल् तॅय्व ताचनै चिन्तै चॅय्वाम् । अरो । ११

यत्र-यत्र रघुनाथ-कीर्तनम्, तत्र-तत्र अंजलि-हस्त हो (जो रहता है उस) पय-वहुल और प्रशंसित क्षीर-सागर-शायी देव के दास का (हनुमान का) स्मरण करेंगे । ११

कलैमहल् (सरस्वती)

पॉत्तहम् वडिह मालै कुण्डिहै पॉरुळ्शेर् ञान
वित्तहन् दरित्त शॅङ्गै विमलैयै यमलै तन्नै
मॉय्त्तकॉन् दळह पार मुहिळ्मुलैत् तवळ मेनि
मैत्तहु करुङ्गट् चॅव्वा यणङ्गिनै वणङ्गल् शॅय्वाम् 12

पॉत्तकम्, पटिक मालै कुण्टिकै, पॉरुळ् चेर् ञान वित्तकम् तरित्त चॅङ्कै, विमलैयै, अमलै तन्नै मॉय्त्त कॉन्तु अळक पारम् मुकिळ् मुलै, तवळ मेनि, मै तकु करुङ्कण्, चॅव्वाय् अणङ्किनै वणङ्कल् चॅय्वाम् । १२

पुस्तक, स्फटिक माला, कमण्डल, अर्थ-भरी ज्ञान मुद्रा, इनको रखने वाले लाल करतलों की स्वामिनी, विमल गुणों और अमल कृत्यों वाली, घने सुमन-गुच्छो से अलकृत केशवाली, कमलकलियों के समान स्तनों वाली, धवल शरीर, अजन लगी काली आखों वाली, (और) लाल अधरों वाली (सरस्वती) देवी की वंदना करेगे । १२

विनायकर् (विनायक)

तळैशॅविच् चिरुहट् टाळ्हैत् तनदशिन् दुरमुन् दारै
मळैमदत् तरुहट् चित्र वारण मुहत्तु वाळ्वै
इळैयिडैक् कलशक् कॉङ्गै यिमगिरि मडन्दै यीन्र
कुळवियैत् तॉळुव नन्बार् कुरैवर निरैह वॅन्रे 13

तळै चॅवि, चिरु कण्, ताळ्कै तनत चिनतुरमुम्, तारै मळै मत, तरुकण् चित्र, वारण मुकत्तु वाळ्वै, इळै इटै, कलश कॉङ्कै, इमकिरि ईन्र कुळवियै अन्पाल् कुरै वर निरैक ॲन्रे तॉळुवन् । १३

वड़े कान, छोटी आँखे, लंबी सूंड, लाल दांत, वहनेवाला मद जल, वल आदि से युक्त,विचित्र हाथी-मुख (विनायक), हमारे जीवनाधार को, पतली कमर, और कलश (सम स्तन) वाली हिमगिरि संभूता के शिशु को प्यार से, "अभाव दूर हों और (सुख) भरते रहे" यह प्रार्थना करते हुए नमस्कार करूँगा । १३

ॲक्क णक्कु मिऱन्द पॆरुमयन्, पॊक्क णत्तन् पुलियद ळाडयन्
मुक्क णत्तन् वरम्बॆऱ्ऱ मूप्पनै, अक्क णत्ति नवन्नडि ताळ्न्दन्नम् 14

ॲ कणक्कुम् इऱन्त पॆरुमैयन्; पॊक्कणत्तन्; पुलि अतळ् आटैयन्; मुक्कणत्तन् वरम् पॆऱ्ऱ मूप्पन् ऐ अक्कणत्तिन् अवन् अटि ताळ्न्ततम् । १४

किसी भी गणना के परे रहनेवाले यश का स्वामी, (भव रोग के लिए) उत्तम औषध; बाघ के चर्म का अंबरधारी, त्रि-नेत्र (शिव जी) के वर-प्राप्त (प्यारे) ज्येष्ठ पुत्र (है विनायक;) तत्क्षण उनके चरणों पर विनत होते हैं। १४

वाळ्त्तु (स्वस्ति)

वान्वळञ् जुरक्क नीदि मनुनॆऱि मुऱैयॆन् नाळुम्
तान्वळर्न् दिडुह नल्लोर् तङ्गिळै तळैत्तु वाळ्ह
तेन्वळर्न् दऱाद मालैत् तॆशरद रामन् शॆय्है
यान्नळन् दऱिन्द पाड लिडयऱा दॊलिर्ह वॆङ्गुम् 15

वान् वळम् चुरक्क; नीति मनु नॆऱि मुऱै ऍ(न्) नाळुम् तान् वळर्न्तिटुक; नल्लोर् तम् किळै तळैत्तु वाळ्क; तेन् वळर्न्तु अऱात मालै तॆचरत रामन् चॆय्कै यान् अळन्तु अऱिन्त पाटल् इटै अऱातु ॲङ्कुम् ऑळिर्क । १५

आकाश की समृद्धता (वर्षा) बढ़े ! नीति, मनु-धर्म-मार्ग पर सब दिन वर्धित हो; साधुओं का कुल वर्धित हो, जिए; मधुधारा जिसमें अटूट है उस माला के धारण करने वाले दशरथ (के पुत्र) श्रीराम का चरित्र (जो मैं अपनी बुद्धि के अनुसार) मापकर (समझकर) गाता हूँ, वह गीत निरंतर सर्वत्र प्रकाशमान रहे। १५

एह विरुत्त रामायणम् (एक वृत्त में रामायण)

परावरु मिरामन् मादो डिळवल्बिन् पडरक् कान्पोय्
विरादनैक् करनै मानैक् कवन्दनै वॆन्ऱि कॊण्डु
मरामरम् वालि मार्बु तुळैत्तणै वहुत्तुप् पिन्नर्
इरावणन् कुलमुम् पॊन्ऱ वॆय्दुड नयोत्ति वन्दान् 16

पराव अरु (या-परावरुम्) इरामन् मातु ओटु इळवल् पिन् पटर कान् पोय् विराततै, करनै, मानै, कवन्तनै वॆन्ऱि कॊण्टु, मरामरम् वालि मार्पु तुळैत्तु, अणै वकुत्तु पिन्नर् इरावणन् कुलमुम् पॊन्ऱ ऍय्तु उटन् अयोत्ति मीणटान् । १६

प्रशसा करने के लिए असाध्य (या प्रशंसित) श्रीराम, देवी (सीता जी) के साथ, अनुज के उनका पीछा करते, जंगल गये; विराध, खर, मृग (मारीच) और कबंध को मारकर साल वृक्ष और वाली के वक्ष को बेधकर, सेतु बांधकर, फिर रावण के कुल का नाश करते हुए शर चलाकर शीघ्र अयोध्या आ गये। १६

पायिरम् (प्रशस्ति-पद)

तनियन्कळ् (मुक्तक)

कम्बनाडर् पॅरुमै (कम्बन की महिमा)

❀ नारणन् विळैयाट् टॅल्ला नारद मुनिवन् कूऱ
आरणक् कविदै शॅय्दा नऱिन्दवान् मीकि यॅन्वान्
शीरणि शोळ नाट्टुत् तिरुवळुन् दूरुळ् वाळ्वोन्
कारणि कॊडयान् कम्बन् ऱमिळिनाऱ् कविदै शॅय्दान् 17

नारणन् विळैयाट्टु ॲल्लाम् नारत मुनिवन् कूऱ अऱिन्त वान्मीकि ॲन्पान् आरण कवितै चॅय्तान्। चीर् अणि चोळ नाट्टु तिरु वळुन्तूरुळ् वाळ्वोन् कार् अणि कॉटैयान् कम्पन् तमिळिनाल् कवितै चॅय्तान्। १७

श्रीमन् नारायण की लीलाये सब नारद के वर्णित करते (उसे ग्रहण कर), जानकर वालमीकी नाम के ऋषि ने वेद सम पदों में काव्य रचा। श्री-संपन्न चोळ देश के तिरुअळुन्तूर के वासी, मेघ सम दानशील कम्बन ने तमिळ् में (उसका) काव्य रचा। १७

❀ अम्बिले शिलैयै नाट्टि यमरर्क् कन्ऱ् ऱमुद मीन्द
तम्बिरा नॅन्नत् तानुन् दमिळिले तालै नाट्टिक्
कम्बना डुडैय वळ्ळल् कविच्चक्र वर्त्ति पार्मेल्
नम्बुपा मालै याले नरर्क्कुमिन् नमुद मीन्दान् 18

अम्पिले चिलैयै नाट्टि अमरर्क्कु अन्ऱु अमुतम् ईन्त तम्पिरान् ॲन्त, कम्प नाट्टु उटैय वळ्ळल् कवि चक्करवर्त्ति तानुम् तमिळिले तालै नाट्टि पार् मेल् नम्पु पा मालैयाले नरर्क्कुम् इन् अमुतम् ईन्तान्। १८

जल (सागर) में (मंदर) पर्वत गाड़कर (मथकर) देवों को जिन्होंने अमृत दिलाया उन विष्णुदेव के समान कम्ब देश के प्रभु कवि-चक्रवर्ती ने भी तमिळ (सागर) में जिह्वा रूपी पर्वत खड़ा कर प्रिय पद्य-माला द्वारा इस पृथ्वी पर के नरों को (श्री रामकाव्य का) मधुर अमृत दिलाया। १८

आदवन् पुदल्वन् मुत्ति यऱिविनै यलिक्कु मैयन्
पोदव निराम कादै पुहन्ऱरुळ् पुनिदन् मण्मेल्
कोदवन् जऱ्ऱु मिल्लान् कॊण्डल्मा ऱन्नै यॊप्पान्
मादवन् कम्बन् शॅम्बॊन् मलरडि तॊळुदु वाळ्वाम् 19

आतवन् पुतल्वन्, मुत्ति अऱिविनै अळिक्कुम् ऐयन्, पोतवन् इराम कातै पुकन्ऱु अरुळ् पुनितन्, मण्मेल् कोतु अवम् चऱ्ऱुम् इल्लान्, कॊण्टल् माल् तन्नै ऒप्पान्, मातवन् कम्पन् चॅम्पॊन् मलर् अटि तॊळुतु वाळ्वाम्। १९

सूर्य वंशी, मुक्ति-(देनेवाले) ज्ञान को देनेवाले प्रभु, (सबके) हृदय-कमलवासी श्रीराम का चरित्र कहने की कृपा करनेवाला पवित्र पुरुष,

अपने पार्थिव जीवन में दोष हीन और अपकृति रहित, मेघ श्याम-समान, महान तपस्वी कंबन के सुन्दर और उज्ज्वल कमल-चरण की वन्दना करके जियें। १९

अम्बरा वणिशडै यरन यन्मुदल्, उम्बरान् मुनिवराल्, योग रालुयर्,
इम्बराऱ्पिणिक्करु मिराम वेळ्ळञ्जेर, कम्बरास्बुलवरैक् करुत्तिरुत्तुवाम् 20

अम्पु अरा अणि चटै अरन् अयन् मुतल्, उम्पराल्, मुनिवराल्, योकराल्, उयर् इम्पराल्, पिणिक्करुम् इराम वेळम् चेर् कम्पराम् पुलवरै करुत्तु इरुत्तुवाम्। २०

गंगा जी और सर्प से अलंकृत जटाधारी, अज आदि देवों से, मुनियों से, योगियों द्वारा और उत्तम इहलोक वासियों से बंधन-अशक्य (जिनका ध्यान में धारण कठिन है वह) श्रीराम (रूपी) गज स्वयं जिसके पास जाता है उस (खंभे रूपी) कंब नाम के विद्वान् का स्मरण धारण करेंगे। २०

शम्ब नाड नुमैशेवि शाऱ्ऱुपूङ्, कॊम्ब नाडन् कॊळ्ळुनत्ति रामप्पेर्
पम्ब नाडळैक् कुङ्गदै पाच्चॆय्द, कम्ब नाडन् कळऱलै यिऱ्कॊळ्वाम् 21

चम्पु अ. नाळ् तन् उमै चॆवि चाऱ्ऱु, पू कॊम्पु अनाळ् तन् कॊळ्ळुनन् इराम पेर् पम्प नाळ् तळैक्कुम् कतै पा चॆय्त कम्प नाटन् कळल् तलैयिल् कॊळ्वाम्। २१

शंभु ने उस दिन अपनी उमा के कान में जो (नाम) कहा, और पुष्पलता सी देवी (सीता) के पति का श्रीराम जो नाम है, उस नाम के व्यापने से नित नवीन रहनेवाले चरित्र को पद्यों में रचनेवाले कंब नाडन के चरण सिर पर धारण करेंगे। २१

इम्बरु मुम्बर् तामु मेत्तिय विराम कादै
तम्बमा मुत्ति शेर्दल् शत्तियम् शत्तियम्मे
अम्बरन् दन्निन् मेवु मादित्तन् पुदल्वन् ञानक्
कम्बन् शॆङ्गमल पादङ् गरुत्तुऱ विरुत्तु वामे 22

इम्परुम् उम्पर् तामुम् एत्तिय इरामकातै तम्पमा मुत्ति चेर्तल् चत्तियम् चत्तियम्मे। अम्परम् तन्निल् मेवुम् आतित्तन् पुतल्वन् ञानक् कम्पन् चॆम् कमल पातम् करुत्तु उऱ इरुत्तुवाम्। ए। २२

इहलोकवासी और सुरलोकवासी इनका, स्तुत्य रामकथा का आधार ले, मुक्ति प्राप्त करना ध्रुव है, सत्य है। आकाश संचारी सूर्य के वंशस्थ श्रीराम का ज्ञान रखनेवाले कंवन के सुन्दर कमल-चरणों को चित्त में धारण करें। २२

वाळ्वार् तरुवॆण्णॆय् नल्लर्च् चडैयप्पन् वाळ्त्तुप्पॆरत्
ताळ्वा रुयरप् पुलवो रहविरु ञानहल्प्

पोऴ्वार् कदिरि तुदित्तदॅय् वप्पुल मैक्कम्बनाट्
टाऴ्वार् पदत्तैच्चिन् दिप्पवर्क् कियादु मरियदन्ऱे 23

वाऴ्वु आर् तिरुवॅण्णॅय्नल्लूर चटैयप्पन् वाऴ्त्तु पॅऱ, ताऴ्वार् उयर, पुलवोर् अक इरुळ् तान् अकल पोऴ् वार् कतिरिन् उतित्त तॅय्व पुलमै कम्प नाट्टाऴ्वार् पतत्तै चिन्तिप्पवर्क्कु यातुम् अरियतु अन्ऱे। २३

सुसंपन्न तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर् के वासी शडैयप्पन् को कृतज्ञता भरा साधुवाद मिले; निम्नश्रेणी के लोग उन्नत हों; विद्वानों का मन का तम दूर हो; (यह साध्य करने) सर्वत्र बंधन कर फैलनेवाली किरणों के देव (सूर्य) के समान जनमे, दिव्य-विद्वत्ता प्राप्त कंव नाट्टाऴ्वार् (कंव देश के साधू भक्त) के चरण-स्मरण करनेवालों के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। २३

नूल् पाटिय कालम् (ग्रंथ रचनाकाल तथा स्थान)

❀ ऍण्णिय शहात्त मॅण्णूऱ् ऱेऴिन्मेऱ् चडैयन् वाऴ्वु
नण्णिय वॅण्णॅय् नल्लूर् तन्निले कम्ब नाडन्
पण्णिय विराम कादै पङ्गुनि यत्त नाळिऱ्
कण्णिय वरङ्गर् मुन्ने कवियरङ् गेऱ्ऱि नाने 24

कम्प नाटन्, चटैयन् वाऴ्वु नण्णिय वॅण्णॅय् नल्लूर् तन्निले, पण्णिय इरामकातै ऍण्णिय चकात्तम् ऍण्णूऱ्ऱु एऴिन् मेल् पङ्कुनि अत्त नाळिल् कण्णिय अरङ्कर् मुन्ने कवि अरङ्कु एऱ्ऱिनान्। २४

कंव नाडन ने, शडैयन का जीवन जहाँ चलता था उस (तिरु) वॅणॅय्नल्लूर में, स्वरचित रामगाथा की, (गणित) (काल-गणना के लिए) निमित शकाब्द आठ सौ सात में होनेवाले फालगुन के हस्त नक्षत्र के दिन आदरणीय श्री रंगनाथ के सामने कवि-सम्मेलन (में) 'सही' प्राप्त कर ली। २४

कवि वळम् (कवि की [प्रतिभा] संपन्नता)

कऴुन्द रायुन कऴल्पणि यादवर कदिर्मणि मुडिमीदे
अऴुन्द वाळिह् डॉडुशिलै रागव वबिनव कविनादन्
विऴुन्द नायिऱ् ऱॅऴुवदन् मुन्मऱै वेदिय रुडनारायन्
ऱॅऴुन्द नायिरु विऴुवदन् मुन्कवि पाडिय ऱॅऴुनूऱे 25

कऴुन्तराय् उन् कऴल् पणियातवर् कतिर् मणि मुटि मीते अऴुन्त वाळिकळ् तॉटु चिलै इराकव अपिनव कवि नातन् विऴुन्त नायिरु अतु ऍऴुवतन् मुन् मऱै वेतियरुटन् आरायन्तु ऍऴुन्त नायिरु विऴुवतन् मुन् कवि पाटिनतु ऍऴुनूऱे। २५

जड़मति और श्रीराम के चरणों पर विनत न होनेवाले राक्षसों के उज्ज्वल रत्न-खचित किरीटधारी सिरों पर चुभाते हुए शरों को चलानेवाले

धनु के धारी श्रीराघव के नये काव्य के रचयिता, कविनाथ कम्बन के, अस्तंगत सूर्य के उदय के पहले (रात में) वेद-विप्रों के साथ रहते (ग्रंथों का) गुनन कर, उदित सूर्य के अस्त होने के पहले गाये गये पद, सात सौ हैं।२५

करैशॅरि काण्ड मेळु[1] कदैहळा यिरत्तॅण् णूरु
परवुरु शमरम् बत्तुप् पडलनूऱ् रिरुवत् तॅट्टे
उरैशॅयुम् विरुत्तम् पन्नी रायिरत् तॊरुपत् ताऱु
वरमिहु कम्बन् शॊन्न वण्णमुन् दॊण्णूऱ् ऱाऱे 25a

करै शॅरि काण्टम् एळु, कतैकळ् आयिरत्तु ऍण्णूरु, परवु उरु चमरम् पत्तु, पटलम् नूऱ्ऱु इरुपत्तु ऍट्टे; उरै चॅयुम् विरुत्तम् पन्नीरायिरत्तु ऒरु पत्तु आऱु; वरम् मिकु कम्पन् चॊन्न वण्णमुम् तॊण्णूऱ्ऱु आऱु। २५ अ

सीमा निर्धारित काण्ड सात; गाथाएं एक हज़ार आठ सौ; विवरण सहित समर दस; पटल एक सौ अठाईस; काव्यवस्तु कहनेवाले वृत्त बारह हज़ार सोलह; (छंद) प्रकार छियानबे हैं। २५ अ

कावियप् पॅरुमै (कव्य-महिमा)

तरादलत्ति लुळ्ळ तमिळ्क्कुऱ्ऱ मॆल्लाम्
अरावु मरमायिऱ् ऱन्ऱे - इरावणन्मेल्
अम्बुनाट् टाळ्वा नडिपणियु मादित्तन्
कम्बनाट् टाळ्वान् कवि 26

इरावणन् मेल् अम्पु नाट्टु आळ्वान् अटि पणियुम् आतित्तन् कम्प नाट्टाळ्वान् कवि, तरातलत्तिल् उळ्ळ तमिळ् कुऱ्ऱम् ऍल्लाम् अरावुम् अरम् आयिऱ्ऱु अन्ऱु ए। २६

रावण पर शर चलानेवाले दिवाकर (श्रीराम) के चरणों की वन्दना करनेवाले आदित्य-पुत्र कम्ब नाट्टाळ्वान् का काव्य धरातल पर तमिऴ भाषा की अशुद्धियों को रगड़ने (दूर करने) वाली रेती बना है। २६

---

1 इधर 'सात कांड' कहा गया है। पर उत्तर काण्ड का लेखक कम्बन नहीं था। ओट्टक्कूत्तर था—ऐसा कहा जाता है। ओट्टक्कूत्तर ने ईर्ष्यावश कम्बन से प्रयुक्त एक शब्द को गलत कह दिया [वह "तुमि" (बूंद) नामक शब्द है।] कम्बन ने कहा यह ग्वालिनों के यहां प्रचलित है। इसकी सत्यता जानने के लिए राजा और दोनों कवि ग्वालों की वीथी में गये। तब किसी घर में, जो एक ग्वालिन दही मथ रही थी, उसने अपने बच्चों को यह कहकर हटाया कि 'तुमि' (बूंदें) पड़ेंगी। हटो। ओट्टक्कूत्तर को मानना पड़ा। पीछे मालूम हुआ कि वह ग्वालिन साक्षात् सरस्वती देवी हैं। तब उसे दुगुना दुख हुआ। अतः वे अपनी लिखी रामायण को अग्नि को अर्पित करने लगे। छ कांड जल गये। सातवें काण्ड को भी जलानेवाले ही थे कि कम्बन आ गये। उन्होंने ओट्टक्कूत्तर से बहुत मिन्नत कर उसे बचा लिया और वादा किया कि रामायण का उत्तरकाण्ड मैं नहीं लिखूंगा। आपका ही चलेगा।

❀ इम्बर् नाट्टिऱ् चॅल्वमॅला मॅय्दि यरशाण् डिरुन्दालुम्
उम्बर् नाट्टिऱ् कऱ्पहक्का वोङ्गु नीऴ् लिरुन्दालुम्
शॅम्बॊन् मेरु वनैय पुयत् तिऱल्शे रिरामऩ् ऱिरुक्कदै
कम्ब नाडऩ् कविदयिऱ्पोऱ् कऱ्ऱोरक् किदयङ् गळियादे 27

इम्पर् नाट्टिल् चॅल्वम् ऍल्लाम् ऍय्ति अरचु आण्टु इरुन्तालुम्, उम्पर् नाट्टिल् कऱ्पक का ओङ्कुम् नीऴल् इरुन्तालुम्, चॅम्पॊऩ् मेरु अनैय पुय तिऱल् चेर् इरामऩ् तिरु कतैयिल् कम्प नाटऩ् कवितैयिऱ् पोल् कऱ्ऱोर्क्कु इतयम् कळियाते । २७

इह लोक में सारे धन प्राप्त कर राज करते रहें, चाहे स्वर्ग-भूमि पर उन्नत कल्पक तरु की छाया मे रहें, तो भी लाल स्वर्णमय मेरु सम कंधों के, शक्तिशाली श्रीराम की गाथा संबंधी कंवनाडन की कविता में जैसा (मुदित होता है) विद्वानों का हृदय (वैसा) उल्लसित नही होता । २७

नारदऩ् करुप्पञ् जाऱाय् नल्लवाऩ् मीहऩ् पाहाय्च्
चीरणि बोदऩ् वट्टाय्च् चॅय्तनऩ् काळि दासऩ्
पारमु दरुन्दप् पञ्ज दारैयाय्च् चॅय्दाऩ् कम्बऩ्
वारमा मिराम कादै वळमुऱै तिरुत्ति नाने 28

इराम कातै, पार् अमुतु अरुन्त नारतऩ् करुप्पम् चाऱाय्; नल्ल वाऩ्मीकऩ् पाकाय्, चीर् अणि पोतऩ् वट्टाय्; काळिताचऩ् पञ्च तारैयाय् चॅय्ताऩ् । कम्पऩ् वारम् आम् वळ मुऱै तिरुत्तिनाऩ् । २८

श्रीरामचरित का, संसार अमृत की तरह पान करे, इस हेतु नारद ने इक्षुरस; साधु वालमीकी ने चाशनी; श्रेष्ठतायुक्त बोधायन ने खोआ, कालिदास ने गुड़ बनाया । कंबन ने क्षीरान्न, योग्य रीति से अति मधुर बनाया । २८

इराम नामत्तिऩ् पॅरुमै (श्रीराम नाम महिमा)

नऩ्मयुञ् जॅल्वमु नाळु नल्हुमे, तिऩ्मयुम् बावमुञ् जिदैन्दु तेयुमे
शॅऩ्ममु मरणमु मिऩ्ऱित् तीरुमे, इम्मये यिरामवॅऩ् ऱिरण्डॅ ऴुत्तिनाल् 29

इ 'रा म' ऍऩ्ऱ इरण्टु ऍऴुत्तिनाल् इम्मैये नऩ्मैयुम् चॅल्वमुम् नाळुम् नल्कुम् तिऩ्मैयुम् पावमुम् चितैन्तु तेयुम्; चॅऩ्ममुम् मरणमुम् इऩ्ऱि तीरुम् । २९

रा और म दो अक्षरों (के जाप) से, इस जन्म में ही हित और धन दिनोंदिन बढ़ेंगे । अहित और पाप क्षीण हो मिट जायेंगे । जन्म और मरण का अभाव हो जायगा । २९

ओरायिर मकम्पुरि पयऩै युय्क्कुमे, नरादिबर् शॅल्वमुम् बुहऴु नल्हुमे
विरायॅणुम् बवङ्गळै वेर ऱुक्कुमे, इरामवॅऩ् ऱोरुमॊऴि यियम्बुङ् गालैये 30

इराम ऍऩ्ऱ ऒरु मॊऴि इयम्पुम् कालैये ओरायिरम् मकम् पुरि पयऩै उय्क्कुम् । नरातिपर् चॅल्वमुम् पुकऴुम् नल्कुम् । विरायॅणुम् पवङ्कळै वेर् अऱुक्कुम् । ए । ३०

(राम) का एक शब्द कहते ही, सहस्र यज्ञ करने का फल मिल जायगा। नराधिपों का धन (बढ़ेगा) और कीर्ति बढ़ेगी। संख्या में बढ़नेवाले जन्मों (या पापों) की जड़ कट जायगी। ३०

इरुव रम्बि लिरामवॆन् ऱारुम्बर्, निरुव रॆन्बदु निच्चय मादलाल्
मरुविन् माक्कदै केट्पवर् वैहुन्दम्, बॆरुव रॆन्बदु पेशवुम् वेण्डुमो 31

इरु वरम्पिल् इराम ऎन्ऱोर् उम्पर् निरुवर् ऎन्पतु निच्चयम् आतलाल् मरु इल् मा कतै केट्पवर् वैकुन्तम् पॆरुवर् ऐन्पतु पेचवुम् वेण्टुमो ? ३१

अंतकाल में 'राम' कहनेवाले स्वर्ग में स्थायी रहेंगे—यह कहना ध्रुव (सत्य) है। अतः निर्दोष यह महान चरित्र सुननेवाले श्री बैकुंठ (परमपद) को प्राप्त होंगे—यह कहना भी चाहिए क्या ? ३१

इराम कादैयिन् पॆरुमैयुम् पयनुम् (रामकथा की महिमा और फल)

वडहलै तॆन्गलै वड्डुहु कन्नडम्, इडमुळ पाडैया दॊन्ऱि नायिनुम्
तिडमुळ रगुकुलत् तिरामन् ऱन्कदै, अडैवुडन् केट्पव रमर रावरे 32

वटकलै तॆन्कलै वटुकु कन्नटम्, इटम् उळ पाटै यातु ऒन्ऱिन् आयिनुम् तिटम् उळ रकु कुलत्तु इरामन् तन् कतै अटै वुटन् केट्पवर् अमरर् आवर्। ए। ३२

उत्तरी भाषा (संस्कृत) दाक्षिणात्य भाषा (तमिळ), तेलुगु, कन्नड या किसी भी सशक्त भाषा में (रचित) स्थिर-कीर्ति, रघुकुलोत्पन्न श्रीराम की कथा को यथाक्रम श्रवण करनेवाले अमर बनेंगे। ३२

इत्त लत्ति लिरामाव तारमे, पत्ति शॆय्दु परिवुडन् केट्परेल्
पुत्ति रर्त्तरुम् पुण्णिय मुन्दरुम्, अत्त लत्ति लवन्पद मॆय्दुमे 33

इरामावतारमे पत्ति चॆय्तु परिवु उटन् केट्परेल् इत्तलत्तिल् पुत्तिरर् तरुम्, पुण्णियमुम् तरुम्; अत्तलत्तिल् अवन् पतम् ऎय्तुम्। ३३

श्री रामावतार चरित्र का भक्ति करके और चाहना के साथ श्रवण करेंगे तो वह इह लोक में पुत्र दिलायेगा। पुण्य भी दिलायेगा। उस (पर) लोक में उनके (श्रीराम के) चरण (या स्थान को) दिलायेगा। ३३

अन्न दान महिलनर् ऱानङ्गळ्, कन्नि दानङ् गबिलयिन् ऱानमे
शॊन्न दानप् पलनॆनच् चॊल्लुवार्, मन्नि राम कदैमऱ वार्क्करो 34

मन् इरामन् कतै मऱवार्क्कु अन्न तानम्, नल् अकिल तानङ्कळ्, कन्नि तानम्, कपिलैयिन् तानम् चॊन्न तानम् पलन् ऎन चॊल्लुवार्। ३४

(श्रेष्ठ) नायक श्रीराम चरित्र जो नहीं भूलते उन्हें, अन्नदान, अच्छा भूदान, कन्यादान, गोदान, स्वर्णदान सबका फल (प्राप्त होगा—यह लोग) कहते है। ३४

मऱ्ऱोरु तवमुम् वेण्डा मणिमदि लिलङ्गै मूदूर्
शॆऱ्ऱवऩ् विशयप् पाडल् तॊलिऩ्ददि लॊऩ्रु तऩ्ऩैक्
कऱ्ऱवर् केट्पोर् नॆञ्जिऱ् करुदुवो रिवर्हळ् पार्मेल्
उऱ्ऱर शाळ्वर् पिऩ्ऩु मुम्बराय् वीटटिऱ् चेर्वार् 35

मणि मतिल् इलङ्कै मूतूर् चॆऱ्ऱवऩ् विचयप् पाटल् तॊऴिऩ्तु अतिल् ऒऩ्रु तऩ्ऩै कऱ्ऱवर्, केट्पोर् नॆञ्चिऱ् करुतुवोर् इवर्कळ् पार् मेल् उऱ्ऱु अरचु आळ्वर्; पिऩ्ऩुम् उम्पराय् वीट्टिऱ् चेर्वार्। मऱ्ऱु ऒरु तवमुम् वेण्टा। ३५

सुन्दर परकोटों वाली लंका के प्राचीन नगर को मिटाने वाले (श्रीराम) की विजय-गाथा को खूब समझकर, उसके पदों में एक को ही सही सीखनेवाले, सुननेवाले और चित्त मे धारण करनेवाले—ये भूमि पर (राज) पाकर राज करेंगे; फिर स्वर्गगत हो मोक्ष पा लेगे। (इसके लिये) और कोई तपस्या नही चाहिए। ३५

वॆऩ्ऱिशे रिलङ्गै यानै वॆऩ्ऱमाल् वीर मोद
निऩ्ऱरा माय णत्ति निहऴ्न्दिडु कदैह डम्मिल्
ऒऩ्ऱिनैप पडित्तोर् तामु मुरैत्तिडक् केट्टोर् तामुम्
नऩ्ऱिदु वॆऩ्ऱोर् तामु नरहम दॆय्दि डारे 36

वॆऩ्ऱि चेर् इलङ्कै यान वॆऩ्ऱ माल् वीरम् ओत निऩ्ऱ रामायणत्तिल् निकऴ्न्तिटु कतैकळ् तम्मिल् ऒऩ्ऱिनै पटित्तोर् तामुम्, उरैत्तिट केट्टोर् तामुम्, नऩ्ऱु इतु ऎऩ्ऱोर् तामुम् नरकम् अतु ऎय्तिटार् ए। ३६

विजयी लकेश्वर को जीतनेवाले श्रीराम की वीरता के बखानने से जीवंत (हुई) रामायण में वर्तमान कथाओं मे एक को पढ़नेवाले, सुनाते वक्त सुननेवाले, (और) 'यह अच्छा है।' यह कहनेवाले नरक (नामक स्थान) नहीं जायँगे। ३६

आदियरि योनम नरायणर् तिरुक्कदै यरिन्दनुदि नम्ब रवुवोर्
नीदियनु बोहनॆरि निऩ्ऱुनॆडु नाळदि ऩिऱन्दुशॆह दण्ड मुऴुदुक्
कादिबर्ह ळायरशु शॆय्दुळ निनैत्तदु किडैत्तरुळ् पॊरुत्तु मुडिविल्
शोदिवडि वायऴिविल् मुत्तिपॆरु वारॆऩ उरैत्तशुरु दित्तो हैहळे 37

आति अरि ओ नम नारायणर् तिरु कतै अरिन्तु अनुतिनम् परवुवोर्, नॆट्टुनाळ् नीति अनुपोक नॆरि निऩ्ऱु अतिऩ् इऱन्तु चकतण्टम् मुऴुतुक्कु अतिपर्कळाय् अरचु चॆय्तु उळ निनैत्ततु किटैत्तु, अरुळ् पॊरुत्तु, मुटिविल् चोति वटिवाय् अऴिविल् मुक्ति पॆरुवार् ऎऩ चुरुतित् तॊकैकळ् उरैत्त। ए। ३७

आरंभ मे 'अरि (ओं) नमो' के साथ वन्द्य श्रीमन् नारायण की दिव्य कथा को जानकर दिने दिने गाने वाले, अनेक काल धर्म सम्मत भोग-मार्ग में रहने के वाद उससे छूटकर, जगदण्ड भर के शासक वनकर

राज्य करते; अपनी कामनायें प्राप्त करते; भगवान की कृपा का पात्र बनते और अन्त में अपार-ज्योति के रूप में अक्षर मोक्ष को पा जाते हैं। यह श्रुति-समूह घोषित करते हैं। ३७

इरागवन् कदैयि लॊरुकवि तन्नि लेहपा दत्तिनै युरैप्पोर्
परावरु मलरो नुलहिनि लवनुम् बन्मुरै वळ्ळुत्तवीर् रिरुनन्दु
पुरादन मरैयु मण्डर् पॊर् पदमुम् पॊन्रुना ळदनिनुम् बॊन्रा
अरावणै यमल नुलहेनुम् बरम पदत्तिनै यडैहुव रन्रे 38

इराकवन् कतैयिल् ऒरु कवि तन्निल् एक पातत्तितै उरैप्पोर् परावु अरुम् मलरोन् उलकितिल् अवनुम् पन्मुरै वळ्ळुत्त वीर्रू इरुन्तु, पुरातनम् अरैयुम् अण्टर् पॊन् पतमुम् पॊन्रु नाळ् अतनिनुम् पॊन्रा अरा अणै अमलन् उलकु अनुम् परम पतत्तितै अटैकुवर् अन्रु ए। ३८

श्रीराघव के चरित्र में एक पद्य के एक चरण को कहने वाले भी प्रशंसनीय ब्रह्मा के लोक में, उनके भी विविध रीति से स्तुति करते, (स्तुति के पात्र हो) कीर्ति के साथ रहने के बाद, प्राचीन कहलाने वाले देवों के सुन्दर लोकों के नाश होते समय भी (जो) नाश नहीं होता (और) शेषशायी विमल देव का लोक (जो) कहा जाता है उस परमपद में पहुँचेंगे। ३८

इन्नैयनर् कादै मुरुरु मॆळ्ळुदिन्नोर् वियन्दोर् कर्रोर्
अन्नैयदु तन्नैच् चॊल्वोर्क् करुम्बॊरुळ् कॊडुत्तुक् केट्पोर्
कन्नैहडर् पुडवि मीदु कावलर्क् करशाय् वाळ्नन्दु
विन्नैयम दरुत्तु मेलाम् विण्णवर् पदत्तिर् चेर्वार् 39

इत्तैय नर्कातै मुर्रुम् अॆळ्ळुतिन्नोर्, वियन्तोर्, कर्रोर्, अतैयतु तन्नैच् चॊल्वोर्क्कु अरुम् पॊरुळ् कॊट्टुत्तु केट्टोर्, कनै कटल् पुटवि मीतु कावलर्क्कु अरचाय् वाळ्न्तु वित्तैयम् अतु अरुत्तु मेलाम् विण्णवन् पतत्तिल् चेर्वार्। ३६

इतना हितकारी चरित्र, सारा, लिखनेवाले, (उसके) प्रशंसक, उसके कहनेवालों को श्रेष्ठ धन देकर सुननेवाले—ये सब घोषपूर्ण समुद्र-वलयित पृथ्वी पर राजाधिराज बनकर रहेंगे; बाद कर्म-बंधन काटकर उच्चदेव (श्री विष्णु) का (परम) पद प्राप्त करेंगे। ३९

नोट—चालीस पद्यों का यह अंश तमिळ् में **'शिरप्पुप् पायिरम्'** कहा जाता है पायिरम का अर्थ भूमिका है और **'शिरप्पु'** का विशेष। तब विशेष भूमिका या प्रस्तावना या प्राक्कथन हुआ। यह प्रस्तावना दो प्रकार की होती है—एक रचयिता जो स्वयं कहता है वह और योग्य विद्वान रचना, रचयिता आदि के संबंध में जो विवरण के साथ परिचय देकर रचना की खूबी बतलाते है—वह। इस भाग में इतर योग्य विद्वानों का वक्तव्य दिया गया है। दो एक कम्बन के से लगने वाले है।

इन पद्यों के क्रम बनाने में पृथक-पृथक संग्रहकर्ता अपनी अपनी रुचि का सहारा लेते है।

तऱ्चिऱप्पुप् पायिरम् (स्व-परिचयामुख)

परम्बॊरुळ् वणक्कम् (पर-तत्व की वन्दना)

❀ उलहम् यावयुन् दामुल वाक्कलुम्, निलैपॆ रुत्तलु नीक्कलु नींगला
अलहि लाविळै याट्टुडै यारवर्, तलैव रन्नवर्क् केशर णाङ्गळे[1] 1

उलकम् यावैयुम् तामुळ आक्कलुम् निलै पॆरुत्तलुम् नीक्कलुम् नींकला, अलकु इला विळैयाट्टु उटैयार् अवर् तलैवर् अन्नवर्क्कु ए नाङ्कळ् चरण् ए। १

लोक समुच्चय को स्वयं उत्पन्न करना और स्थिति दिलाना और मिटाना—इस अविच्छिन्न (व) अनंत लीला के स्वामी (जो है) वे आदि देव है। उन्ही की हम शरण है। १

शिऱ्कु णत्तर् तॆरिवरु नन्निलै, ऎऱ्कु णर्त्तरि दॆण्णिय मून्ऱनुळ्
मुऱ्कु णत्तव रेमुद लोरवर्, नऱ्कु णक्कड लाडुद नन्ऱरो २

ऎण्णिय मून्ऱन् उळ् मुन् कुणत्तवरे मुतलोर्; चिऱ् कुणत्तर् तॆरि अरु नल् निलै ऎऱ्कु उणर्त्तरितु। अवर् नल् कुणम् कटल् आट्टुतल् नन्ऱु (अरो)। २

गिने हुए तीन (सत्व, रज, तम) में प्रथम गुण के है वह आदिदेव। श्रेष्ठ ज्ञानी के लिए भी जानने में अशक्य (उनकी) उत्कृष्ट महिमा, मेरे लिए समझना कठिन है। उनके कल्याण-गुणों के अर्णव में अवगाहन शुभ है। २

आदि यन्द मरियॆन यावयुम्, ओदि नारल हिल्लन वुळ्ळन
वेद मॆन्बन मॆय्न्नॆऱि नोन्मयन्, पाद मल्लदु पऱ्ऱिलर् पऱ्ऱिलार् 3

आति अन्तम् अरि ऎन, अलकु इल्लन, उळ्ळन वेतम् ऎन्पन यावैयुम्, ओतितार्, पऱ्ऱु इलार्, मॆय् नॆऱि नोन्मैयन् पातम् अल्लतु पऱ्ऱिलर्। ३

आदि और अंत मे "हरि (ओं)' का उच्चारण कर अनंत तथा अमर वेदाख्यात सभी के पाठकर चुकनेवाले संग-रहित (विप्र) सन्मार्गव्रती (श्रीराम) के चरणों को छोड़ (और किसी में) मन नही लगाते। ३

अवैयडक्कम् (नम्रता निवेदन)

❀ ओशै पॆऱ्ऱुयर् पार्कड लुऱ्ऱॊरु, पूशै मुऱ्ऱवु नक्कुबु पुक्कॆन
आशै पऱ्ऱि यऱैयलुऱ् ऱेन्मऱ्ऱिक्, काशिल् कॊऱ्ऱत् तिरामन् कदैयरो 4

1 चरणंगळे ही ठीक हो सकता है–व्याकरण सम्मत विचार से–यह एक धारणा है।

ओशै पॅरुरु उयर् पाल् कटल् उर्रु, ऑरु पूशै, मुर्रवुम् नक्कुपु पुक्कु ॲन काशु इल् कॉर्र्रत्तु इरामन् इ कतै, आशै पर्रि अरैयल् उर्रेन् मर्रु[1] अरो[2] । ४

शोर कर उठनेवाले (उठनेवाली तरंगों के) क्षीर सागर (पर) पहुँच, एक बिल्ली सारा (पय) चाट लेने को उद्यत हो जैसे, कलंकहीन विजयी श्रीराम की कथा कामना प्रेरित हो (मैं) कहने लगा । ४

नॉय्दि नॉय्यशॊ नूर्कलुड् रेन्नै, वैद वविन् मरामर मेळ्तॊळ
ऍय्द वॅय्दवर् कॅय्दिय माक्कदै, शॅय्द शॅय्तवन् शॊन्निन्र् तेयत्ते 5

वैत वैविन् मरा मरम् एळु तॊळै ऍय्त ऍय्तवर्क्कु ऍय्तिय माक्कतै चॅय्त चॅय्तवन् चॊल् निन्र तेयत्तु, नॊय्तिन् नॊय्य चॊल् नूर्कल् उर्रेन्, अन्नै ? ५

दी गयी गाली[3] में ही, साल वृक्ष सातों को बेधते हुए शर चलाने वाले (श्रीराम जी) पर (जो) आगत (लागू) हुई (वह) कथा रचनेवाले तपस्वी (वाल्मीकि महर्षि) की वाणी जिस देश में स्थापित रहती है, उस देश में अल्प से अल्प शब्द ले (मैं) ग्रंथ रचने चला—यह क्या (जड़ता) है ? ५

❀ वैय मॅन्नै यिहळवु माशॆन्क्, कॅय्द वुम्मि दियम्बुव दियादॆनिल्
पॉय्यिल् केळ्विप् पुलमैयि नोन्पुहल्, दॅय्व माक्कदै माट्चि तॅरिक्कवे 6

वैयम् ॲनुनै इकळवुम् माचु ॲतक्कु ॲय्तवुम् इतु इयम्पुवतु यातु ॲतिल् पॊय् इल् केळ्वि पुलमैयिनोन् पुकल् तेय्व माक्कतै माट्चि तॅरिक्क ए । ६

दुनिया मेरी निन्दा करेगी; और कलंक मुझ पर लगेगा । (तिसपर भी) यह कहता क्यों ? क्योंकि—शाश्वत श्रुति (वेद) के ज्ञानी (वाल्मीकि महर्षि द्वारा) रचित दिव्य महान चरित्र की महिमा का प्रचार हो । ६

❀ तुरैय डुत्त विरुत्तत् तॊहैक्कविक्, कुरैय डुत्त शॅविहळुक् कॊदिल्याळ्
नरैय डुत्त वशुणनन् माच्चॅविप्, परैय डुत्तदु पोलुमॅन् पावरो 7

ओतिल् तुरै अटुत्त विरुत्तम् तॊकै कविक्कु उरै अटुत्त चॅविकळुक्कु ॲत् पा याळ्[4] नरै अटुत्त अचुणम्[5] नल् मा[6] चॅवि, परै अटुत्ततु पॊलुम् (अरो) । ७

1,2 छंद की पूरक ध्वनियां । उनके विशेप अर्थ नहीं होतें । उन्हें 'अशै' कहते है ।

3 वहुश्रुत विषय है : वाल्मींकी महर्षि ने क्रौच मिथुन मे, एक को मारनेवाले निषाद से खीझकर एक श्लोक बनाया जिसका आशय श्रीराम की कथा का आधार बना ।
4 याळ—वीणा सा पुराना वाद्य विशेष । 5 अचुणम्—कल्पित पशु या पक्षी जो याळ की ध्वनि सुन आह्लादित होता है और ढोल का शोर सुनकर मूर्च्छित हो गिर (मर भी) जाता कहा जाता है; 6 "मा" का अर्थ जानवर है । उस अर्थ मे **अचुणम् नल मा चॅवि**—अचुणम् के अच्छे जानवर के कान; अचुणम् का अर्थ पक्षी हो तो अच्छा श्रेष्ठ कान होगा । तव, "मा" श्रेष्ट या वड़ा है ।

अरे! (सच) कहा जाय तो, विविध अंगों सहित वृत्तों से भरे काव्य के आश्रय जो कान हैं उन कर्णों को, मेरी कविताएं याऴ़् (की ध्वनिरूपी) मधु पड़े अशुण के अच्छे श्रेष्ठ कानों में परै (ढोल) के (नाद के) लगने के समान लगेंगी। ७

❀ मुत्त मिऴ़त्तुऱै यिऩ्मुऱै पोहिय, उत्त मक्कवि जरक्कोंऩ् ऱुणर्त्तुवेंऩ्
पित्तर् शोंऩ्ऩवुम् पेदैयर् शोंऩ्ऩवुम्, पत्तर् शोंऩ्ऩवुम् पऩ्ऩप् पॆऱुववो 8

मुत् तमिऴ़् तुऱैयिल् मुऱै पोकिय उत्तमम् कविञर्क्कु ओंतऱु उणर्त्तुवेंऩ्। पित्तर् चोंऩ्ऩवुम् पेतैयर् चोंऩ्ऩवुम् पत्तर् चोंऩ्ऩवुम् पऩ्ऩप् पॆरुपवो ? ८

(गद्य, संगीत, नाटक की) त्रयी तमिष के अंगों में क्रमेण निपुणता प्राप्त उत्तम कवियों से एक बात निवेदन करूँगा। पागलों का कहा, अज्ञों का कहा और भक्तों का कहा (क्या) आलोच्य है ? ८

❀ अऱैयु माडरङ् गुम्बडप् पिळ्ळैहळ्, तऱैयिऱ् कोंऱिडिऱ् ऱच्चरुङ् गाय्वरो
इऱैयुङ् गेळ्वि यिलादवेंऩ् पुऩ्गवि, मुऱैयि नूलुणर्ऩ् दारु मुऩिवरो ? 9

अऱैयुम् आटु अरङ्कुम् पट पिळ्ळैकळ् तरैयिल् कोंऱिटिल् तच्चरुम् काय्वरो ? इऱैयुम् केळ्वि इलात ऍऩ् पुऩ् कवि मुऱैयिऩ् नूल् उणर्ऩ् तारुम् मुनिवरो। ९

कमरे और रंगमंच दिखाते हुए बालक जमीन पर (लकीरें) खींचते हैं तो शिल्पी दुतकारेंगे ? कुछ भी (सुना) ज्ञान न रखनेवाले मेरी तुच्छ कविता पर (उचित) क्रम से ग्रंथ पढ़े लोग गुस्सा करेंगे ? (नहीं)। ९

नूल्वऴि (ग्रंथ-मूल)

देव पाडैयि निक्कदै शय्दवर्, मूव रानवर् तम्मुळ् मुऩ्दिय
नावि ऩारुऱै यिऩ्बडि नाऩ्ऱमिऴ़्प्, पावि नालि दुणर्त्तिय पण्वरो 10

इ कतै तेव पाटैयिल् चेय्तवर् मूवर्; आत्तवर् तम्मुळुम् मुऩ्तिय नावितार् उरैयिऩ् पटि नाऩ् तमिऴ़् पावित्ताल् इतु उणर्त्तिय पण्पु अरो। १०

इस कथा के देवभाषा (संस्कृत) में रचयिता (वाल्मीकि, वशिष्ठ और बोधायन) तीन है उनमें आदि (वाल्मीकि) कवि के कथन का अनुसरण मेरा तमिऴ़ छंदो में समझाने का क्रम है। १०

नूल् शॆय्द इडम् (ग्रंथ रचना स्थल)

नडैयि निऩ्ऱुयर् नायकऩ् ऱोऱ्ऱत्तिऩ्, इडैनि हऴ्न्द विरामाव तारप्पेर्त्
तोंडैनि रम्बिय तोमऱु माक्कदै, शडैयऩ् वॆण्णॆय्नल् लूर्वयिऱ् ऱन्ददे 11

नायकऩ् तोऱ्ऱत्तिऩ् इटै निकऴ्न्त, नटैयिल् निऩ्ऱु उयर् इरामावतारम् पेर् तोंडै निरम्पिय तोम् अऱु मा कतै चटैयऩ्[1] वॆण्णॆय् नल्लूर वयिऩ् तन्ततु ए। ११

[1] चटैयऩ् या शडैयप्प वळ्ळल् (वळ्ळल = दाता) तिरुवॆण्णॆय् नल्लूर के रहनेवाले थे। उन्होंने अनाथ बालक कम्बन को पाला था। कम्बन ने अपनी कृतज्ञता ग्रंथ में ही उनके नाम का उल्लेख कर जतायी है।

नाथ (श्री विष्णु) के अवतारों के मध्य हुए, सदाचारनिष्ट हो उन्नति को प्राप्त श्रीराम के अवतार की उत्कृष्ट पदावली भरी, दोषहीन महान कथा (श्रीमान्) शडैयप्पन् के तिरुवॆण्णॆय् नल्लूर (ग्राम) में दी (रची) गयी। ११

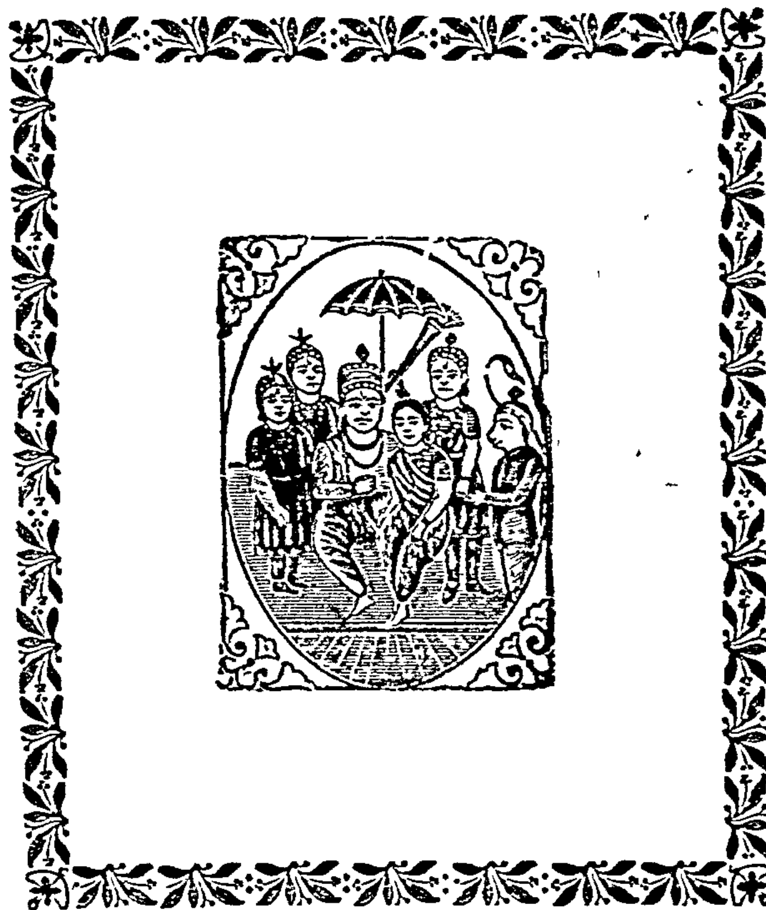
नूऱ् पयन् (ग्रंथ फल)

नाडिय पॊरुळ्कै कूडु ञानमुम् बुहळ्ळु मुण्डाम्
वीडियल् वळिय दाक्कुम् वेरियङ् गमलै नोक्कुम्
नीडिय वरक्कर् शेनै नीऱुपट् टॊळिय वाहै
शूडिय शिलैयि रामन् ड्रोळ्वलि कूऱु वोर्क्के 12

नीटिय अरक्कर् चेनै नीऱु पट्टु ऑळिय वाकै[1] चूटिय चिलै इरामन् तोळ् वलि कूऱुवार्क्के नाटिय पॊरुळ् कै कूटुम्; ञानमुम् पुकळुम् उण्टाम्; अतु वीटु इयल् वळि आक्कुम्। वेरि अम् कमलै नोक्कुम्। १२

विशाल राक्षस-सेना को राख बनाते हुए, नाशकर जयमाला पहने कोदण्ड-पाणि श्रीराम के भुजबल की स्तुति करनेवाले को ईप्सित वस्तुएँ प्राप्त हो जायँगी। ज्ञान और कीर्ति मिलेगी। वह (स्तुति) मोक्ष के रास्ते पर पहुँचायगी। (स्तोता पर) मधुमय सुन्दर कमल की देवी (कमला = लक्ष्मी) कृपादृष्टि फेरेंगी। १२

1 वाहै (वाकै)—एक पेड़ है; उसके फूल विजय के चिह्न के रूप में विजेताओं द्वारा पहने जाते है।



❀ श्री राम जयम् ❀

बाल काण्डम्

1. आऱ्ऱुप् पडलम् (नदी पटल)

आश लम्बुरि यैम्बॊरि वाळियुम्, काश लम्बु मुलैयवर् कण्णॆनुम्
पूश लम्बु नॆऱियिन् पुऱञ्जॆलाक्, कोश लम्बुनै याऱ्ऱणि कूऱुवाम् 13

आचु अलम् पुरि–अपराध अधिक करनेवाले; ऐन्तु पॊऱि वाळियुम्–पाँच इंद्रियाँ रूपी शर, (और); काचु अलम्पु मुलैयवर्–स्वर्णहार (हमेल) (जिन पर) लहराते हैं (उन) स्तनों वालियों (के); कण् ऎनुम् पूचल् अम्पुम्–आँखें रूपी चोट करनेवाले अस्त्र; नॆऱियिन् पुऱम् चॆल्ला–(जहाँ) (सन्-) मार्ग से हटकर नहीं चलते (या चल नहीं सकते); कोचलम् पुनै आऱु अणि–कोशल (देश) को अलंकृत करनेवाली नदी की महिमा (यें); कूऱुवाम्–कहेंगे (हम)। १३

हम (कवि) अब सरयू नदी की महिमा बखानेंगे। सरयू कोशल देश को, जो स्वयं महान है, अलंकृत करती है। वहाँ न पुरुषों की पंचेंद्रिय कुमार्ग पर चलती हैं न स्त्रियों की आँखें; यद्यपि साधारण रूप से ये इंद्रियाँ भटकानेवाली होती हैं। १३

नीऱ णिन्द कडवु णिऱत्तवान्, आऱ णिन्दुशॆन् ऱार्कलि मेय्न्दहिल्
शेऱ णिन्द मुलैत्तिरु मङ्गैतन्, वीऱ णिन्दवन् मेनियिन् मीण्डवे 14

नीऱु अणिन्त–भभूत (जिन्होंने) धारण किया है; कटवुळ् निऱत्त वान्–(उन) देव के रंग वाले मेघ; आऱु अणिन्तु चॆन्ऱु–(आकाश) मार्ग को अलंकृत करते हुये जाकर; आर् कलि मेय्न्तु–शब्द करनेवाले समुद्र (के जल) को पीकर; अकिल् चेऱु–अगरु का लेप; अणिन्त मुलै तिरु मङ्कै–धारण करनेवाले स्तनों की श्री-देवी (को); तन् वीऱु अणिन्तवन्–अपने वक्ष में धारण करनेवाले (के); मेनियिन्–शरीर के समान; मीण्टतु–लौट आये। १४

(पहले मेघों की चर्चा है।) जल-हीन मेघ जो सफ़ेद होते हैं वे समुद्र में जाकर जल पीते हैं, तब काले हो जाते हैं। पहले उनका रंग भस्मधारी शिव का सा था और बाद में श्री-निवास विष्णुदेव का सा हो गया। वे लौट आते हैं। १४

पम्बु मेहम् परन्दतु बानुवाल्, नम्बन् मादुलन् वॆम्मयै नण्णिनान्
अम्बि नाऱऱु मॆन्ऱहन् कुन्ऱिन्मेल्, इम्बर् वारि यॆऴुन्दतु पॊन्ऱदे 15

पम्पु मेकम्–घने रूप से फैले मेघों का; परन्ततु–फैलना; नमुपन् मातुलन्–श्री शिवजी के ससुर; पानुवाल् वॅम्मैयै नण्णितान्–सूर्य से गर्मी को प्राप्त कर लिया; अम्पिन् आऱ्ऱुतुम् ॲन्ऱु–(अपने) जल से शांत करेंगे, यह सोचकर; इम्पर वारि–यहाँ का समुद्र; कुन्ऱिन् मेल् ॲळुन्ततु पोन्ऱतु–पर्वत की तरफ चढ़ आया, ऐसा था। १५

वे मेघ उठकर आकाश मे सर्वत्र फैलते हैं। तब ऐसा लगता है मानों यहाँ का समुद्र ही, इस विचार से कि श्रीशिव जी के ससुर हिमवान सूर्य से सतप्त है और हम उनको अपने जल से तापहीन कर दें, एकदम उठकर (हिम-) पर्वत की ओर उड़ता जाता है। १५

पुळ्ळि माल्वरै पॉन्नॅन नोक्किवान्, वॅळ्ळि वीळ्ळिडै वीळ्त्तॅनत् तारैहळ्
उळ्ळि युळ्ळवॅल् लामुवन् दीयुमव्, वळ्ळि योरिन् वळ्ड्गिन मेहमे 16

मेकम्–मेघ; पुळ्ळि–लक्ष्य; माल् वरै–श्रेष्ठ पर्वत; पॉन् ॲनल् नोक्कि–स्वर्ण-रूप है–यह देखकर; वान् वॅळ्ळि वीळ्–श्रेष्ठ चांदी की तारें; इटै वीळ्त्त ॲन्न–(उस के) मध्य लटकायीं, ऐसा; उळ्ळि–सोचकर; उळ्ळ ऐल्लाम्–पास रहे सब को; उवन्तु ईयुम्–प्रसन्न होकर देनेवाले; अव्वळ्ळियोरिन्–उन (ऐसे) दाताओं के समान्; तारैकळ्–धारें (बूँदों की तारें); वळ्ड्गिन–वरसाये या वरसायीं। १६

मेघ बड़ी-बड़ी मोटी धारें गिराते हैं। वे धारें मानों चाँदी की तारें हैं, जिनको मेघ स्वर्णमय हिमाचल पर लटकाकर उसे वाँधने का प्रयास करते है— शायद अपनी ओर खीचने के लिये। १६

मान नेर्न्दर नोक्कि मनुनॅरि, पोन तण्कुडै वेन्दन् पुहळॅन
ज्ञान मुन्निय नान्मरै याळर्कैत्, तान मॅन्नत् तळैत्तदु नीत्तमे 17

मानम् नेर्न्तु–मान (से) युक्त होकर; अरम् नोक्कि–धर्म देखकर; मनु नॅरि पोन–मनुनीति पर चला (चलने वाला); तण् कुडै वेन्तन्–शीतल छत्र (धारी) राजा (का); पुकळ् ॲन्न–यश जैसा; नान्कु मरै आळर् कै–चारों वेदों के अधिकारियों के हाथों में; तानम् ॲन्न–दान जैसा; नीत्तम् तळैत्ततु–बाढ़ बढ़ी। १७

अब सरयू का प्रवाह देखिये। वह प्रतिष्ठित धर्मावलम्बी और मनु-नीति-शास्त्र-परख राजा (स्वयं दशरथ) के यश के समान फैलती है; और चतुर्वेदी ब्राह्मण को दान देने पर दाता को मिलनेवाले शुभफल के समान बढ़ती है। १७

तलैयु माहमुन् दाळुन् दळीइयदिल्, निलैनि लादिरै निन्ऱदु पॉलवे
मलैयि नुळ्ळवॅ लाड्गॉण्डु मण्डलाल्, विलैयिन् मादरै यॉत्तदव् वॅळ्ळमे 18

तलैयुम्–सिर को (और); आकमुम्–मध्य भाग (भागों) को; ताळुम्–पैरो (तलों) को; तळीइ–लग कर; अतिल्–उसमें; निलै निलातु–स्थिर-रूप से न रुक कर; इरै निन्ऱतु पोल–थोड़ा ठहरा, ऐसा (दिखाई देकर); मलैयिन् उळ्ळ ॲलाम्–पर्वत पर रहे सब को; कॉण्टु मण्टलाल्–लेकर सवेग जाने से; अ वॅळ्ळम्–वह वाढ़; विलैयिन् मातरै–विकाऊ स्त्रियों (को) (वेश्यायों को); ऑत्ततु–की समानता की। १८

वह बाढ़ वारांगना सा वरताव करती है। वेश्या पुरुष के सिर का, शरीर का, आलिंगन करती है; पैरों तले भी लगती है। एक क्षण के लिए उसका प्रेम स्थिर-प्रेम सा दिखता है। पर वह चंचल है और धोखा देकर उसका सारा धन लूट लेती है। उस पुरुष जैसा ही हाल पर्वत का भी है। (वेश्या-सदृश) धारा पर्वत की सभी वस्तुएँ बहा ले जाती है। १८

मणियुम् पॉन्नुम् मयिर्रळैप् पीलियुम्, अणियु मानैवॅण् कोडु महिलुन्दण्
इणैयि लारमु मिन्न कॉण् डेहलान्, वणिह माक्कळै यॉत्तदव् वारिये 19

मणियुम्–रत्नों को (और); पॉन्नुम्–स्वर्ण को; मयिल् तळै पीलियुम्–मोर के पंख-कलापों को; अणियुम् आनै वॅण् कोटुम्–सुन्दर, हाथियों के सफ़ेद दाँतों को; अकिलुम्–अगरु को; तण्–शीतल; इणै इल् आरमुम्–बेजोड़ चंदन (की लकड़ियों) को; इन्न–ऐसे और; कॉण्टु–लेकर; एकलान्–जाने से; अ वारि–वह प्रवाह; वणिक माक्कळै ऑत्ततु–वणिक लोगों से तुलता (मेल खाता) था। १९

वह प्रवाह रत्न, मयूर-पंख, हाथी दाँत, अगरु और चन्दन की लकड़ियाँ आदि बहुमूल्य वस्तुएँ बहा ले आता है। वह वणिकों के समान लगता है जो बहुत सामानों का क्रय-विक्रय करते हैं। १९

पूनि रैत्तुमॅन् ऱादु पॉरुन्दियुम्, तेन ळावियुञ् जॅम्बॉन् विरावियुम्
आनै मामद वाऱ्ऱो डळावियुम्, वान विल्लै निहर्त्तदव् वारिये 20

पू निरैत्तुम्–फूल, पंक्तियों में धारण करके; मॅन् तातु पॉरुन्तियुम्–कोमल पराग से मिलित; तेन् अळावियुम्–शहद से घुलकर और; चॅम् पॉन् विरावियुम्–लाल (चोखे) स्वर्ण से मिश्रित हो कर; आनै मा मत–हाथी के बहुत मद की; आऱ्ऱोटु अळावियुम्–नदी से सम्मिलित होकर, और; अ वारि–वह बाढ़; वानविल्लै निकर्त्ततु–इंद्रधनुष की समानता करती थी। २०

उस प्रवाह में फूल तैरते हैं; पराग, शहद, चोखे स्वर्ण, गजों का मद-जल आदि मिले आते है। उनके विविध रंगों के कारण वह प्रवाह इन्द्र-धनुष के समान दिखाई देता है। २०

मलैयॅ डुत्तु मरङ्गळ् परित्तुमा, डिलैमु दऱ्पॉरुळ् यावैयु मेन्दलाल्
अलैह डऱ्ऱलै यन्ऱणै वेण्डिय, निलैयु डैक्कवि नीत्तमन् नीत्तमे 21

मलै अॅट्टुत्तु–पर्वत (खोद) लेकर; मरङ्कळ् परित्तु–पेड उखाड़ कर; माट्टु–पास के; इलै मुतल् पॉरुळ्–पत्ते आदि वस्तुएँ; यावैयुम्–सभी को; एन्तलाल्–उठाने से; अलै कटल तलै–लहरानेवाले समुद्र-तल (पर); अन्ऱु–उस दिन; अणै वेण्टिय–सेतु(-बन्धन) में लगे हुए; निलै उटै–स्थिति वाली; कवि नीत्तम् ए–वानर सेना ही। २१

वह प्रवाह चट्टानों को और तरुओं को उखाड़ लाता है; उस पर पत्ते वगैरह बहते आते है। उसको देखकर श्रीराम की वानर सेना की याद आती है जो समुद्र-तरण के लिये सेतु-बन्धन में लगी हुई थी। २१

ईक्कळ् वण्डोडु मॊय्प्प वरम्बिहन्, दूक्क मेमिहुन् दुट्टॆऴि विन्ऱिये
तेक्कॆ रिन्दु वरुदलिर् ऱीम्बुनल्, वाक्कु तेन्नुहर् माक्कळै मानुमे 22

तीम् पुतल्–मधुर जल (प्रवाह); ईक्कळ् वण्टोटु मॊय्प्प–मक्खियों के भ्रमरो के साथ मंडराते; वरम्पु इकन्तु–सीमा लाँघ कर; ऊक्कमे मिकुन्तु–बल विक्रम में बढ़कर; तेक्कु–सागौन का पेड या डकार; ऎऱिन्तु–फेंकता हुआ (या फेंक कर); वरुतलिन्–आने से; वाक्कु–ढली हुई; तेन्–शहद या मधु; नुकर् माक्कळै मानुम्–पीने वाले लोगों की समता करता। २२

उस प्रवाह का जल मधुर है; अतः उस पर मक्खियाँ, भ्रमर आदि मँडराते हैं। प्रवाह की धारा प्रबल है; नयी बाढ़ है अतः जलमैला है (साफ़ नही है)। सागौन के पेड़ों को उछालता आता है। तब इसकी उपमा पियक्कड़ से हो जाती है। पियक्कड़ के मुख पर मक्खियाँ और भ्रमर मँडराते है; उसकी शक्ति बढ़ी हुई होती है। उसका अन्तःकरण (मन) साफ नहीं है। डकार लेता आता है। इसलिए दोनों मे साम्य है। (डकार का अर्थ मद्यप के पक्ष मे तेक्कु के अर्थ-श्लेष से सधता है।) २२

पणैमु हक्कळि यानैपल् माक्कळो, डणिव हुत्तॆन वीर्त्तिरैत् तार्त्तलिन्
मणियु डैक्कॊडि तोन्ऱवन् दून्ऱलाल्, पुणरि मेऱ्पॊरप् पोवदुम् बोन्ऱदे 23

पणै मुकम्–पीन मुख का; कळि यानै–मत्त हाथी; पल् माक्कळोटु–अनेक जानवरों को; अणि वकुत्तु–व्यूहों में बाँटकर मानों; ईर्त्तु–खींच लाकर; इरैत्तु आर्त्तलिन्–जोर से शोर मचाने से; मणि उटै–मणि (या सुन्दरता से) युक्त; कॊटि तोन्ऱ–ध्वजाओं (लताओं) के प्रकट होते; वन्तु ऊन्ऱलाल्–आकर डटने से, धकेलने से; पुणरि मेल्–समुद्र पर; पॊर–युद्ध करने के लिए; पोवतुम् पोन्ऱतु–जाता भी हो, ऐसा लगता है। २३

उस प्रवाह की सज-धज देखकर यह भाव मन में आता है कि वह समुद्र से लड़ने जानेवाली सेना हो। सेना में गज-दल हैं, अश्व-दल है। सेना चलती है तो बड़ा शोर होता है। उसमें सुन्दर ध्वजाएँ फहरती है। वह आकर शत्रु-दल के सामने डट जाती है। वैसे ही इस प्रवाह के साथ गज, और अन्य जानवर खिचकर आते है। शोर है, और लताएँ हैं जो ध्वजाओं का स्थान लेती है। (इस कॊडि शब्द में अर्थ-श्लेष है। कॊडि ध्वजा भी है, लता भी।) २३

*इरवि तन्कुलत् तॆण्णिल्पल् वेन्दर्तम्, बुरवु नल्लॊऴुक् किन्पडि पूण्डदु
सरयु वॆन्बदु ताय्मुलै यन्नदिव्, उरवु नीर्निलत् तोङ्गु मुयिर्क्कॆलाम् 24

चरयु ऎन्पतु–सरयू नाम की वह; इरवि तन् कुलत्तु–रवि-कुल के; ऎण्इल्–संख्या-हीन; पल् वेन्तर् तम्–अनेक राजाओं के; पुरवु–पालित; नल् ऒऴुक्किन्–सदाचरण की; पटि पूण्टतु–अनुरूपता रखनेवाली है; अन्नतु–वह; इ उरवु नीर्

निलत्तु–इस समुद्र (वलयित) भूमि के; ओङ्कुम् उयिर्क्कु ॲलाम्–बढनेवाले जीव, सबों के लिए; ताय् मुलै अन्नत्तु–मातृ-स्तन के बराबर है। २४

सरयू का जल-तल विशाल है; उसकी धारा अविच्छिन्न है और पवित्र है। इन बातों में सरयू नदी रवि-कुल के राजाओं के सदाचरण की समता करती है। और वह जन-समाज के लिए मातृ-स्तन के समान जीवन-दायिनी और जीव-वर्धक है। २४

कॊंडिच्चिय रिडित्त शुण्णङ् गुङ्गुमङ् गोट्ट मेलम्
नडुक्कुरु शान्दञ् जिन्दू रत्तॊडु नरन्द नाहम्
कडुक्कयार् वेङ्गै कोङ्गु पच्चिलै कण्डिल् वॆण्णॆय्
अडुक्कलि नडुत्त तीन्दे नहिलॊडु नारु मन्नु 25

कॊटिच्चियर्–पर्वत प्रदेश की स्त्रियों का; इटित्त–कूटा; चुण्णम्–चूर्ण; कुङ्कुमम्–केसर; कोट्टम्–एक सुगन्धित द्रव्य; एलम्–इलायची; नटुक्कु उरु चान्तम्–कंपन देनेवाला चंदन; चिन्तूरत्तॊटु–सिंदूर के साथ; नरन्तम्–नरन्द (नामक घास); नाकम्–पुन्नाग; कटुक्कै–अमलतास; आर्–अगस्त्य; वेङ्कै–फूलदार वृक्ष-विशेष; कोङ्कु–सेमर; पच्चिलै–तमाल; कण्टिल् वॆण्णॆय्–कोई द्रव्य; अटुक्कलिन् अटुत्त–पर्वत के ढालों में मिलनेवाला; तीम् तेन्–मधुर शहद; नारुम्–सुगन्ध देंगे (या देगा)। २५

सरयू के प्रवाह में अनेक पर्वत-प्रदेशीय वस्तुएँ मिल गयी हैं; जैसे—कूटा चूर्ण, केसर, कोष्ट, चन्दन, सिन्दूर, नरन्द घास; पुन्नाग, अमलतास, अगस्त्य, वेंगै, सेमर आदि के फूल; और तमाल आदि। अतः उसमें से उनका सम्मिलित सुवास आता है। (यह कुरिंचि§ प्रदेश सम्बन्धी वर्णन है।) २५

ॲयिन्नर्वाऴ् शीरू रप्पु मारियि न्निरियल् पोक्कि
वयिन्वयि नॆयिऱ्ऱि मादर् वयिऱलैत् तोड वोट्टि
अयिन्मुहक् कणैयुम् विल्लुम् वारिक्कोण् डलैक्कु नोराल्
शॆयिर्दरुङ् गोऱ्ऱ मन्नर् शेनैये मानु मन्नु 26

ॲयितर् वाऴ्–(जहाँ) ॲयित्तर् जाति के लोग रहते है (उन); चीऱूर्–छोटी बस्तियों (के वासियों) को; अप्पु मारियिन्–जल के प्रवाह से; इरियल् पोक्कि–डरा, भगाकर; वयिन्-वयिन्–स्थान-स्थान पर; ॲयिऱ्ऱि मातर्–ॲयिनर् की स्त्रियाँ; वयिऱु अलैत्तु ओट–पेट पीटते भागते; ओट्टि–भगाकर; अयिल् मुकम् कणैयुम्–तीक्ष्णमुखी-शरों को; विल्लुम्–धनुषों को; वारि कॊण्टु–समेट लेकर; अलैक्कुम् नीराल्–सताने के प्रकार से; चॆयिर् तरुम्–युद्ध करनेवाले; कॊऱ्ऱम् मन्नर्–विजयी राजाओं की; चेनैयै मानुम्–सेना की उपमा बनेगा। २६

§ तमिऴ् काव्य-लक्षण-शास्त्र के अनुसार विविध प्रदेशों से सम्बन्धित वर्णन-परिपाटी आदि की किञ्चित् विशेष जानकारी के लिए अवतरणिका मे देखें।

यह प्रवाह मानों विजयी राजाओं की प्रबल सेना के समान है। उससे डरकर व्याध लोग अपनी बस्तियाँ छोड़ भाग जाते है। यत्र-तत्र व्याध-स्त्रियाँ, अपनी सम्पत्ति के नष्ट होने के कारण पेट पीटकर रोती हैं; व्याधों के अस्त्रो और धनुष प्रवाह में बहते हुए आते है। अतः इसके पास धनुष और शर हैं। और यह लोगों को त्रास देता है। सेना का वैसा ही काम है। (इसमें "पालै" यानी रेतीले, मरु प्रदेश से सम्बन्धित वर्णन है।) २६

शॆऱ्‌िनरुन् दयिरुम् बालुम् वॆण्णॆयुञ् जेन्द नॆय्युम्
उऱ्‌ियॊडु वारि युण्डु कुरुन्दॊडु मरुद मुन्दि
मऱ्‌िविऴ्‌ि यायर् मादर् वळैतुहिल् कवरु नीराल्
पॊऱ्‌िवरि यरवि ऩाडुम् बुनिदनुम् बोन्ऱ दन्ऱे 27

चॆऱ्‌ि—गाढा; नरु तयिरुम्—सुगन्धित दही को और; पालुम्—दूध को और; चेन्त—लाल; नॆय्युम्—घी को और; उऱ्‌ि योटु—छीकों के साथ; वारि उण्टु—उठाकर खाकर; कुरुन्तॊटु—'कुरुन्द' (वृक्ष-विशेष) के साथ; मरुतम् उन्ति—अर्जुन तरु को उखाड़ फेंक कर; मऱ्‌ि विऴ्‌ि—मृग-नयनी; आयर् मातर्—गोपांगनाओं के; वळै तुकिल्—कंकण और वस्त्र (को); कवरुम् नीराल्—हर लेने के गुण से; पॊऱ्‌ि, वरि अरविन्—बिन्दियों और धारियों वाले सर्प पर; आटुम्—नाचनेवाले; पुनिततुम् पोन्ऱतु—पवित्र (पुरुष) के समान भी था। २७

इस पद्य में सरयू नदी और कालिय-दमन श्रीकृष्णचन्द्र का श्लेष है। दही, दूध, मक्खन आदि छीकों के साथ हर लेना; तरुओं को उखाड़ना, गोपांगनाओं के कंकणों और चीरों का हरण —ये काम सरयू नदी भी करती है और श्रीकृष्ण भी। (इसमें अरण्य प्रदेश सम्बन्धी वर्णन है।) २७

कदविनै मुट्टि मळ्ळर् कैयॆडुत् तार्प्प वोडि
नुदलणि यॊडै पॊङ्ग नुहर्वरि वण्डु किण्डत्
तदैमणि शिन्द वुन्दित् तऱ्‌ियिऱ्‌त् तडक्कै शाय्त्तु
मदमऴ्‌ै यानै यॆन्न मरुदञ्जॆन् ऱडैन्द दन्ऱे 28

कतविनै मुट्टि—कपाटों को ठेल कर; मळ्ळर्—कृषक लोग या वीर; कै ऎटुत्तु आर्प्प—हाथ उठाकर शोर करें-ऐसा; नुतल् अणि ओटै पॊङ्क—(१) सामने रहनेवाले तालावों को भरते, (२) माथे पर पहने मुख-पट्ट के शोभायमान होते; नुकर् वरिवण्टु—(मकरन्द या मदनीर) चूसने आये भौंरों के कुरेदते; तदै मणि, चिन्त—शिलष्ट रहनेवाले रत्नों को छितराते हुए; उन्ति—फेंक कर; तऱ्‌ि इऱ—खूँटों को या करि-पोत को तुड़ाते हुए; तट कै चाय्त्तु—विशाल लहरों या हाथों से गिराकर; मतम् मऴ्‌ै यानै ऎन्न—मद-नीर को वारिश के समान बहानेवाले गज के समान; मरुतम्—खेतों और बागों के देश में; अटैन्ततु—जा पहुँचा। २८

यह नदी बाँधों में लगे कपाटों को ठेलती हैं; कृषक लोग हाथ उठाकर आनन्द-रव करते है। नदी के मार्ग में उसके सामने आनेवाले

तालाब आदि भर जाते है। उस पर बहते आनेवाले फूलों को भौंरे कुरेदते हैं। नदी अपनी तरंगें जब उछालती है तब रत्न आदि बिखर जाते हैं; और किनारे पर गड़े खूँटे उखड़ जाते हैं। ठीक उसी प्रकार मत्त गज भी अपने कठघरे के कपाट को तोड़ देता और भागने लगता है तो वीर हाथ उठाकर (लोगों को सावधान करने के लिए) शोर करते है; हाथी के मुख-पट्ट है जो दीप्तिमान है; मद-नीर के लिए भौरे उनके कपोलों को कुरेदते हैं। वे अपने शरीर पर पहनाये गये, झूल आदि से रत्नों आदि को छितरा देते हैं और अपने बाँधने के खूँटों को उखाड़ देते हैं। (नदी के सम्बन्ध में जो तालाब सूचक शब्द आया है उसका मुख पट्ट दूसरा अर्थ है। इस अर्थ को लेकर यह श्लेष सधा है।) २८

मुल्लयैक् कुरिञ्जि याक्कि मरुदत्तै मुल्लै याक्किप्
पुल्लिय नॅय्द ऱत्तैप् पॉरुवरु मरुद माक्कि
ॲल्लयिल् पॉरुळ्ह ळॅल्ला मिडैतडु माऱु नीराल्
शॅल्लुरु कदियिऱ् चॅल्लुम् विनैयॅन्नच् चेन्ऱ दन्ऱे 29

मुल्लैयै—अरण्य प्रदेश को; कुरिञ्चि आक्कि—पर्वत-प्रदेश बनाकर; मरुतत्तै—खेतों और बागों के प्रदेश को; मुल्लै आक्कि—वन-प्रदेश बनाकर; पुल्लिय—अल्प (अनुर्वर); नॅय्तल् तन्नै—समुद्र-तटीय प्रदेश को; पॉरु अरु—उपमा रहित; मरुतम् आक्कि—खेतों का प्रदेश बनाकर; ॲल्लै इल् पॉरुळ्कळ्—सीमा रहित (असंख्य) वस्तुएँ; ॲल्लाम्—सब; इटै तटुमाऱुम् नीराल्—स्थानांतरित हो जाने के धर्म से; चॅल् उऱु कतियिल् चॅल्लुम्—जाकर जन्म लेने की कर्मगति में साथ चलनेवाले; वित्तै ॲन—(पाप और पुण्य के) कर्मों के समान; चॅन्ऱतु—गया। (अन्ऱु ए—पूरक ध्वनियाँ)। २६

नदी अपनी गति में एक प्रदेश की वस्तुओं को दूसरे प्रदेश में लाकर छोड़ती है। तब प्रदेशों की प्रकृति बदल गयी हो ऐसा लगता है। वस्तुओं का स्थानान्तरण करती हुई जानेवाली नदी की गति कर्म-गति के समान है जिसके कारण जीव विविध योनियों में अटूट क्रम से जन्म लेते हैं और वहाँ भी कर्म के अनुसार ही पाप या पुण्य करते हैं। ये योनियाँ चार प्रकार की हैं— उद्भिज, स्वेदज, अण्डज और पिण्डज— चतुर्विध हैं। भूभाग के सम्बन्ध में भी चार तरह की भूमि की ही गणना है। २९

कोत्तकान् मळ्ळर् वॅळ्ळक् कलिप्पऱै करङ्गक् कैपोय्च्
चेत्तनीर्त् तिवलै पॉन्नु मुत्तमुन् दिरैयिन् वीशि
नीत्तमात् ऱलैय वाहि निमिर्न्दुपार् किळिय नीण्डु
कोत्तका लॉन्ऱि नॉन्ऱु कुलमॅनप् पिरिन्द मादो 30

कोत्त काल्—(सरयू से) मिले नहर-नाले; नीत्तम् मिक्कु—जल बढ़कर; अलैय आकि—तरंगशील बनकर; पार् किळिय—भूमि का तल चिर जाय-ऐसा;

निमिर्न्तु नीण्टु—फैलकर, (बढ़कर); काल् कात्त मळ्ळर्—नाले की रखवाली करनेवाले कृषकों के; वॅळ्ळम् कलि पर्रै करङ्क—बाढ़ (-सूचक और उच्चनादवाले) पर्रै (एक तरह का ढोल) के बजते; कै पोय्—नालियो को पार कर जाकर; चेत्त नीर् तिवलै—लाल (मिट्टी के रंग की) जल (बिन्दुओं) को; पॉन्नुम् मुत्तमुम्—स्वर्ण और मोतियों को; तिरैयिन् वीचि कुलम् अॅन—(मानव-) कुलो के समान; ऑन्ड्रिन् ओन्ड्र पिरिन्त—एक से एक-(ऐसा) निकल कर विभक्त हुए। ३०

सरयू नदी से निकलनेवाले नहर-नालों मे भी जल अधिक बढ़ जाता है। उनमें तरंगें उठने लगती है। जल ऐसा सवेग मानों भूमि को चीरकर वहता है। नालों की रखवाली करनेवाले कृषक ढोल पीटकर सूचना देते है कि नयी बाढ़ आ गयी। तरंगों से जल-कण ही नहीं, स्वर्ण और मोती भी विखरते हैं। फिर सरयू नदी का सैकड़ों नहर-नालों में विभक्त होना एक मानव-कुल के हजारों (उप) कुलों मे वँट जाने के समान है। ३०

कल्लिडैप् पिऱन्दु पोन्दु कडलिडैक् कलन्द नीत्तम्
ॲल्लयिल् मरैह ळालु मियंबरुम् बॉरुळि दॅन्नत्
तॉल्लयि नॉन्ड्रे याहित् तुऱैतॉरुम् वरन्द शूळ्च्चिप्
पल्पॅरुञ् जमयज् जॉल्लुम् बॉरुळुम्पोर् परन्द दन्ड्रे 31

कल् इटै—पत्थर के मध्य; पिऱन्तु—पैदा होकर; पोन्तु—जाकर, वहकर; कटल् इटै—समुद्र मध्य; कलन्त नीत्तम्—[जो जा] मिला वह प्रवाह; ॲल्लै इल् मरैकळालुम्—अंत रहित वेदों द्वारा भी; इयम्प अरु पॉरुळ् इतु अॅन्न—कहने के लिए कठिन वस्तु (अप्रतिपाद्य तत्व) यह ऐसा कहने योग्य; तॉल्लैयिल्—आदि में; ऑन्ड्रे आकि—एक मात्र रहकर; तुरै तॉरुम्—अनेक घाटों में; परन्त चूळ्च्चि—विशाल खोज (कर चुके जो); पल्पॅरु चमयम्—विविध धर्म (जो) वतलाते है; पॉरुळ् पोल्—(उस) तत्व के समान; परन्ततु—(विभक्त हो) फैल गया। ३१

यह नदी पर्वत में उद्भव पाती है; समुद्र में जाकर लय होनेवाली यह उपनदियों, नहरों नालों में वँट जाती है। वह ईश्वर-तत्व के समान है जो पहले एक ही है पर वाद में विविध धर्मो के देवताओं के रूप में अनेक हो गया। ३१

तादुहु शोलै तोऱुञ् जण्बहक् काडु तोरुम्
पोदविळ् पॉय्है तोरुम् पुदुमणऱ् ऱडङ्ग डोरुम्
मादवि वेलिप् पूह वनन्दॉरुम् वयलह डोरुम्
ओदिय वुडम्बु तोऱु मुयिरॅन वुलाय दन्ड्रे 32

ओतिय—(शास्त्र) उक्त; उटम्पु तोऱुम्—शरीर-शरीर में; उयिर् अॅन—जीव के समान; तातु उकु चोलै तोऱुम्—पराग चनेवाले बाग-बाग में; चण्पकम् काट तोऱुम्—(सभी) चंपा वनों में; पोतु—कलियाँ; अविळ्—(जहाँ) खिलती

हैं; पॉयकै तोरुम्—जलाशयों में; पुतु मणल् तटङ्कळ तोरुम्—नये (रूप से) बालू भरे पोखरों में; मातवि वेलि—माधवी लता से घिरे; पूकम् वनम् तोरुम्—सुपारी के वनों में; वयल्कळ् तोरुम्—खेतों में; उलायतु—व्याप्त हुआ। ३२

सरयू-जल शास्त्र-निर्दिष्ट चारों प्रकार के शरीर-शरीर में व्याप्त जीव के समान सब जगह फैलकर प्रवेश करता है और व्याप्त रहता है। क्या उपवन, जहाँ पराग छूते हैं; क्या जलाशय जहाँ कलियाँ खिलती है; सुपारी के वन है जिसकी चहारदीवारी मालती-लतायें है। सब जगह वह जल अन्तर्व्याप्त है। ३२

आट्रुप् पडलम् मुट्रुम् (नदी पटल समाप्त)

2 नाट्टुप् पडलम् (देश पटल)

वाङ्गरुम् बाद नान्गुम् वहुत्तवान् मीकि ॲन्बान्
तीङ्गवि शॅविह ळारत् तवरुम् बरुहच् चेय्दान्
आङ्गवन् पुहळ्न्द नाट्टै यन्बॅन्नु नरव मान्दि
मूङ्गैयान् पेश लुट्रा नॅन्नयान् मॉळिय लुट्रेन् 33

वाङ्कु—प्राप्त; अरु—अपूर्व; पातम्—चरण; नान्कुम् वकुत्त—चार-चार के विविध वृत्त (छंद) जिन्होंने आविष्कार किये; वान्मीकि ॲन्पान्—वाल्मीकी नाम के (मुनि); तेवरुम् चॅविकळ् आर परुक—देव भी कान भर सुने—यह साध्य करते हुए; तीम् कवि चॅय्तान्—मधुर काव्य बनाया; आङ्कु—उसमें; अवन् पुकळ्न्त नाट्टै—जिसकी प्रशंसा की उस देश को; यान्—मै; अन्पु ॲनुम् नरवम् मान्ति—प्रेम नाम की सुरा पान कर; मूङ्कैयान् पेचल् उट्रान् ॲन—गूँगा बोलने लगा ऐसा; मॉळियन् उट्रेन्—कहना आरम्भ किया (है)। ३३

कवि अपनी असमर्थता प्रकट करते है। यह बड़ों की विनयशीलता है। भगवान वाल्मीकि ने ही पहले पहल चार-चार चरण के श्लोकों का चलन चलाया। उन्हें रामायण की कथा स्वयं ब्रह्मा जी के मुख से मिली थी। उनका काव्य स्वयं देवों के लिए भी आस्वाद्य बना। उनके द्वारा प्रशंसित कोसल देश का वर्णन करने का बीड़ा दीन-हीन मैने उठाया है। यह दुस्तर प्रयास ऐसा है जैसा कि एक गूगा अपने भावों को दूसरे को बोली द्वारा समझाने लगे; तो भी, प्रेम की मैंने सुरा पी है। नशे के आलम में कोई कुछ भी कर बैठता है! । ३३

वरम्बॅला मुत्तन् दत्तु मडैयॅलाम् बणिल मानीर्क्
कुरम्बॅलाञ् जॅम्बॉन् मेदिक् कुळियॅलाङ् गळुनीर्क् कॉळ्ळै
परम्बॅलाम् पवळञ् जालिप् परप्पॅला मन्नम् पाङ्गर्क्
करम्बॅलाञ् जॅन्देन् शन्दक् कावॅलाङ् गळिवण् डोट्टम् 34

ततुतु—(जल जहाँ) उछलता आता है; मटै—नालियाँ; ॲल्लाम्—सभी (में); पणिलम्—शंख; वरम्पु—मेड़; ॲल्लाम्—सभी में; मुत्तम्—मुक्ता; मा नीर् कुरम्पु ॲल्लाम्—बहुत जल (रोकने-) वाले बांधों में; चॅम्पॊन्—चोखा सोना; मेति—भैंसों के; कुऴि ॲल्लाम्—गड्ढो में; कळुनीर् कॊळ्ळै—कुमुदों की (लूट) भरमार; परम्पु ॲल्लाम्—(खेत के) पटे तल में सब; पवळम्—प्रवाल; चालि परप्पु ॲलाम्—धान के विस्तार-सब-में; पाड्कर्—पास के; करम्पु—खाली स्थानों; ॲल्लाम्—सब (में); चॅम् तेन्—अच्छा शहद; चन्तम् का—सुन्दर बाग; ॲल्लाम्—सब में; कळि वण्टु ईट्टम्—मुदित भौंरों का जमघट। ३४

कोसल देश के खेती-प्रदेशों की समृद्धता देखिये— नालियों में शंख; मेड़ों पर मोती; बाँधो में सोने के ढेले; भैंसे जहाँ पैठती हैं उन पंकिल गड्ढों मे कुमुद के फूलों की भरमार; खेतों में पाटा चलता है, वहाँ प्रवाल निकलते है; धान के खेतों में पौधों के बीच हंस ठहरे है; खेतों के पास भीटों पर शहद मिलता है। बागो में फूल अपार है और भौरे शहद पीकर मत्त रहते हैं। ३४

आऱुपा यरव मळ्ळ रालैपा यमलै यालैच्
चाऱुपा योशै वेलैच् चङ्गित्तुवाय्प् पॊङ्गु मोदै
एऱुपाय् दमर नीरि लॅरुमैपाय् तुळनि यिन्न
माऱुमा ऱाहित् तम्मिन् मयङ्गुमा मरुद वेलि 35

मा मरुतम् वेलि—विशाल खेत, प्रदेश की सीमाओ पर; आऱु पाय् अरवम्—नदी के बहने का रव; मळ्ळर्—कृषक; आलै पाय् अमलै—(इक्षु-रस निकालनेवाले) कोल्हू चलने का शोर; आलै चाऱु पाय् अमलै—कोल्हू से रस के बहने की ध्वनि; वेलै—किनारो पर; चङ्कित्तु वाय् पॊङ्कुम् ओतै—शंख-कीटों से बहती आनेवाली ध्वनि; एऱु पाय् तमरम्—बैलो के भिड़ने से उठता नाद; नीरिल्—जल में; ॲरुमै पाय् तुळनि—भैंसे पैठने की आवाज़; इन्न—ऐसे अन्य; माऱु माऱु आकि—अलग और विपरीत होकर; तम्मिल् मयङ्कुम्—आपस में लय होते है। ३५

वहाँ उस प्रदेश की सीमाओं पर कितनी तरह के समृद्धि-सूचक शोर पाये जाते है! ऐसे शोर का 'धूम' का अर्थ भी निकल सकता है! नदी बहती है— उसका; कृषक गन्ने जिससे पेरते है—उन यन्त्रो का; गन्ने का रस नदी के समान बहता है— उसका; खेतों, और जलाशयो के किनारों पर शंख-कीट जो पड़े रहते है—उनका; बैल आपस में जो लड़ते हैं— उसका; पानी में भैसे सवेग जो घुसती है —उसका और कितने ही अन्य नाद आपस मे मिल जाते है। इस पद्य मे ६ शब्द हैं जो 'शोर' के पर्यायवाची है। ३५

तण्डलै मयिलूह ळाडत् तामरै विळक्कन् दाङ्गक्
कॊण्डलूहण् मुळवि नेङ्गक् कुवळैकण् विऴित्तु नोक्कत्
तॅण्डिरै एऴिनि काट्टत् तेम्बिऴि महर याऴिन्
वण्डुह ळिन्तिदु पाड मरुदम् वीऱ् ऱिरुक्कु मादो 36

तण्टलै—वागों में; मयिल्कळ् आट—मोर नाचते; तामरै—कमल; विळक्कम् ताङ्क—(पुष्परूपी) दीपक उठाते; कॊण्टल्कळ्—मेघ; मुळविन् एङ्क—मृदंग के समान ध्वनि करते; कुवळै—नीलोत्पल; कण् विळित्तु नोक्क—आँखें खोलकर देखते; तॆण् तिरै—साफ जल की तरंगें; ऍळिनि काट्ट—पर्दे का दृश्य उपस्थित करते; वण्टुकळ्—भौंरे; तेम् पिळि मकर याळिन्—मधुर शहद सम मकर-याळ्—(नाम की वीणा का सा) गीत सुनाते; मरुतम्—खेतों का भूभाग; वीऱ्ऱु इरुक्कुम्—(राजा) विराज रहा होता है। ३६

खेतों का प्रदेश मानों राजा है जो दरबार में विराजमान है। उस सभा में मोर नाचते हैं; कमल के दीप रहते है; मेघ मृदंग बजाते हैं; नीलोत्पल दर्शक हैं— अपनी आँखें खोल देख रहे हैं; जलाशय की तरंगें यवनिका का काम दे रही हैं; भौंरे संगीत सुना रहे हैं। कितना सुहावना दृश्य है जो आँखों, श्रवणों और मन को लुभा रहा है। ३६

तामरैप् पडुव वण्डुन् दहैवरु तिरुवुन् दण्डारक्
कामुहर्प् पडुव मादर् कण्गळुङ् गाम नम्बुम्
मामुहिऱ्प् पडुव वारिप् पवळमुम् वयङ्गु मुत्तुम्
नामुदर् पडुव मॅय्यु नामनूऱ् पॊरुळु मन्नो 37

तामरै—कमलों (के पुष्पों) पर; पट्टुव—वास करते हैं; वण्टुम्—भौरे (और); तकै वरु तिरुवुम्—श्रीमती लक्ष्मी देवी; तण् तार् कामुकर्—शीतल माला (पहने हुए) कामुकों पर; पट्टुव—लगने (चुभने) वाले है; मातर् कण्कळुम् कामन् अम्पुम्—स्त्रियों की आँखें और मन्मथ के शर; मा मुकिल् पट्टुव—अधिक मेघों से (वारिश से) पैदा होनेवाले हैं; वारि पवळमुम् वयङ्कुम् मुत्तुम्—समुद्र के प्रवाल और बहुमूल्य मोती; ना मुतल् पट्टुव—(मनुष्यों की) जीभों पर बैठे है; मॅय्युम्—सत्य (वाणी) और; नामम् नूऱ् पॊरुळुम्—श्रेष्ट ग्रंथों के विषय। (मन् ओ—पूरक ध्वनियाँ।) ३७

कोसल देश मनोरम है और सर्व-समृद्ध थी। कमल-पुष्प श्रीलक्ष्मीदेवी का वासस्थान है। वे दौलत की देवी हैं। कोशल देश में कमल-पुष्पों की भरमार है। उन पर स्थूल-आँखों से भौंरे देखे जाते हैं। सूक्ष्म रूप से विचार करने पर सम्पत्ति की देवी का वास समझा जा सकता है। अतः कहा गया कि कमल-पुष्पों पर भौंरे और श्री दोनों पाये जाते है। यों तो इस छन्द में 'पट्टुव' शब्द के प्रयोग-वैविध्य का चमत्कार है। अतः कामुकों की बात उठायी गयी है। कामुकों ही पर (वेश्या) स्त्रियों की दृष्टि और कामदेव के शर लगते है। प्रचुर वर्षा के कारण समुद्र में से मूँगे और मोती खूब मिलते है। वहाँ के निवासी बोलते हैं तो सत्य और ग्रन्थ के विषय ही। ३७

नीरिडै युऱङ्गुञ् जङ्ग निळलिडै युऱङ्गु मेदि
तारिडै युऱङ्गुम् वण्डु तामरै युऱङ्गुञ् जॅय्याळ

तूरिडै युऱङ्गु मामै तुऱैयिडै युऱङ्गु मिप्पि
पोरिडै युऱङ्गु मन्नम् पॉऴिलिडै युऱङ्गुन् दोहै 38

चङ्कम्—शंख-कीट; नीर् इटै उऱङ्कुम्—जलाशयों में आराम से रहते हैं; मेति—भैसें; निऴल् इटै उऱङ्कुम्—छाँहों पर सोती है; वण्टु तार् इटै उऱङ्कुम्—भौंरे (फूलों के) गुच्छों पर; उऱङ्कुम्—ठहरे रहते है; चॅय्याऴ्—श्री लक्ष्मी देवी; तामरै उऱङ्कुम्—कमल पर विराजमान रहती है; आमै—कछुए; तूऱ् इटै—तलौछ-मध्य टिके रहते है; इप्पि तुऱै इटै उऱङ्कुम्—सीपियाँ घाटों पर पड़ी रहती है; अन्नम्—हंस; पोर् इटै—(खरहियों) धान के ढेरों पर; उऱङ्कुम्—विश्राम करते हैं; तोकै पॉऴिल् इटै उऱङ्कुम्—कलापी (मोर) उपवनों में आराम करते हैं। ३८

जलाशयो मे शख; छाँहो मे भैसें; फूलों के गुच्छो में भौरे; कमल पर समृद्धि की देवी श्री लक्ष्मी; तलौछ या कीचड़ में कछुए; घाटों पर सीपियाँ; धान के ढेरों पर हंस, बागों पर ढोर देखे जाते है। इसमें 'उरङ्कुम' शब्द का यह सामर्थ्य है कि इतना सब बताने के बाद वह समृद्धि की भी सूचना देता है। ३८

पडैयुऴ वॅऴुन्द पॊन्नुम् पणिलङ्ग ळुयिर्त्त मुत्तुम्
इडऱिय परम्बिऱ् कान्दु मिनमणित् तॊहैयु नॅल्लिन्
मिडैपशुङ् गदिरु मीनु मॅन्ऱऴैक् करुम्बुम् वण्डुम्
कडैशियर् मुहमुम् बोदुङ् गण्मलर्न् दॊऴिरु मादो 39

पटै उऴ—हल (के फाल) के जोतने से; ऍऴुन्त—निकला; पॊन्नुम्—स्वर्ण; पणिलङ्कळ्—शंख; उयिर्त्त—जो पैदा किया वह; मुत्तु—मोती; उम्—और; परम्पिन् इटऱिय—पाटे द्वारा फेंके गये; कान्तुम्—उज्ज्वल; इनम् मणि—विविध रत्नो की; तॊकैयुम्—राशि और; नॅल्लिन् मिटै पचुमै कतिरुम्—धान (के दानो) की भरी सुनहली बालें; मॅल् तऴै करुम्पुम्—कोमल पत्तों वाले गन्ने; मीनुम्—मछलियाँ और; वण्टुकळुम्—भ्रमर और; पोतुम्—फूल और; कटैचियर् मुकमुम्—(कृषि)-श्रमिक स्त्रियों के मुख; कण् मलर्न्तु ऒऴिरुम्—(प्रसंगानुसार) शोभायमान है, आँखो को आकृष्ट करते है, आँखो के समान सुन्दर है, या आँखें सुन्दर रूप से खोले रहते है। ३९

किसान हल जोतते है तो सोना प्रकट हो आता है; शख मोती देते है; पाटे के मार्ग से उज्ज्वल रत्न निकलते है, धान की बालें; कोमल पत्तों के ईख; मछलियाँ, भौरे, फूल और खेत की मजदूरिनों के मुख— ये सब मनोरम हैं। ('आँखे खोलकर शोभा देते है' इस वाक्यांश के शब्दो की अर्थ-विशेषता द्वारा यह एक वाक्यांश सभी वस्तुओं के लिए प्रयुक्त हो सका है।) ३९

तॆऴ्विळिच् चिऱियाऴ्प् पाणर् तॆम्बिळि नरव मान्दि
वळ्विशि करुवि पम्ब वयिन्वयिन् वळङ्गु पाडल्

वॆळ्ळिवॆण् माडत् तुम्बर् वॆयिल्विरि पशुम्पॊऩ् पळ्ळि
अॆळ्ळरुङ् गरुङ्कट् टोहै यिऩ्ऱुयि लॆळुप्पु मऩ्ऱे 40

तॆळ् विळि—स्पष्ट स्वरित; चिऱि याळ् पाणर्—छोटी वीणा के रखनेवाले (पाण जाति के) गवैये; तेम् पिळि नऱवम् माऩ्ति—शहद से मिश्रित ताड़ी (सुरा) पीकर; वळ् विचि करुवि पम्प—फीतों से कसे बाजे के (यानी मृदंग के) बजते; वयिऩ् वयिऩ्—स्थान-स्थान पर; वळङ्कु पाटल्—गाये जानेवाले गाने; वॆळ्ळि वॆण् माटत्तु—चाँदी (सम) श्वेत सोधों के; उम्पर्—ऊपरी भागों पर; वॆयिल् विरि—कांति बिखेरनेवाले; पचुम् पॊऩ् पळ्ळि—चोखे स्वर्ण से बने पलंग (पर); अॆळ् अरु—अनिन्द्य; करुमै कण्—काली आँख (वाली); तोकै—कलापिनियों (मोर सम स्त्रियों) को; इऩ् तुयिल् अॆळुप्पुम्—मीठी नींद से जगा देते है। ४०

पाणर् (भाट की तरहै एक जाति के गवैये) याळ् (वीणा) बजाते हुए गाते है। वे शहद मिली सुरा पी चुके है— अतः मस्त हो गाते है। उनके साथ मृदंग बजानेवाले हैं। वे स्थान-स्थान पर जाकर गाते है। उनका गाना सौधों के ऊपर, स्वर्णमय पलंग पर सोनेवाली सुन्दर, (संभ्रांत) स्त्रियों को जगा देता है। ४०

आलैवाय्क् करुम्बिऩ् ऱेऩु मरिदलैप् पाळैत् तेऩुम्
शोलैवाय्क् कऩियिऩ् ऱेऩुन् दॊडैयिऴि यिऱालिऩ् ऱेऩुम्
मालैवा युहुत्त तेऩुम् वरम्बिहन् दोडि वङ्ग
वेलैवाय् मडुप्प वुण्डु मीऩॆलाङ् गळिक्कु मादो 41

आलै वाय्–(गन्ने के) कोल्हुओं के स्थानों में (मिलनेवाले); करुम्पिऩ् तेऩुम्–रसरूपी शहद; अरि तलै पाळै तेऩुम्–(नारियल, ताड़ आदि पेड़ों के) कटे डंठलों से निकलनेवाले ताड़ीरूपी शहद; चौलै वाय्–बागों में (प्राप्त होनेवाले); कऩियिऩ् तेऩुम्–फल-रस रूपी शहद; तॊटै इऴि इरालिऩ् तेऩुम्–छत्तों से बहनेवाला शहद; मालै वाय्–(स्त्री-पुरुषों की पहनी हुई) मालाओं से चूनेवाला शहद; वरम्पु इकन्तु ओटि–सीमा तोड़ कर (अत्यधिक परिमाण में) बहकर; वङ्कम् वेलै वाय्–पोतोंवाले समुद्र में; मटुप्प–जा पहुँचता है (तब); मीऩ् अॆल्लाम्–मछलियाँ सब; उण्टु कळिक्कुम्—पीकर (खाकर) मस्त होते है। (तेऩ् शब्द का 'मधुर रस' अर्थ लिया गया है और वह सब जगह प्रयुक्त हुआ है।) ४१

कोल्हुओं से निकलनेवाला इक्षु-रस; ताड आदि पेड़ों के कटे डंठलों से वहनेवाला वृक्ष-रस; बागों में पेड़ों के फलों से निकलनेवाला फल-रस; मधु-छत्तों से वहनेवाला मधु-रस; स्त्री-पुरुषो की पहनी पुष्प-मालाओं से टपकनेवाला पुष्प-रस, ये सब मिलकर बड़ी धार बन जाते है। वह धार बहकर समुद्र में मिल जाती है। समुद्र में अनेक पोत आते-जाते रहते है। समुद्र में रहनेवाली मछलियाँ उस रस को पीकर मस्त रहती हैं। ४१

पण्गळ्वाय् मिळऱ्ऱु मिऩ्शॊऱ् कडैशियर् परन्दु नॊण्ड
कण्कैकाल् मुहम्वा यॊक्कुङ् गळैयलाऱ् कळैयि लामै

उण्कळ्वार् कडैवाय् मळ्ळर् कळैहला दुलोवि निऱ्पार्
पॅण्कळ्पाल् वैत्त नेयम् बिळैप्परो शिऱियोर् पॅऱ्ऱाल् 42

वाय्–मुख से; पण्कळ् मिळ्ऱ्ऱुम्–धुन गुनगुनाती; इन् चॉल्–मधुर वाणी; कटैचियर्–कृषक स्त्रियों की; परन्तु नीण्ट कण्–विशाल, आयत आँखें,; कै काल् मुकम् वाय्–हाथ, पैर, आनन, और मुख; ऑक्कुम्–के समान रहनेवाले; कळै अलाल्–व्यर्थ-पौधों के सिवा; कळै इलामै–दूसरे व्यर्थ पौधों के न रहने से (यानीः हर पौधा स्त्रियों के किसी न किसी अंग की याद दिलाता है); उण्–पी हुई; कळ् वार्–ताड़ी (जिससे) बाहर स्रवती है वैसे; कटै वाय् मळ्ळर–मुख (के कोने) वाले कृषक; कळै कलातु–निराने का (उन पौधों को हटाने का) काम बंद कर; उलोवि निऱ्पर्–(उन पर) आसक्त हो खड़े रहते है; पॅणकळ् पाल् वैत्त नेयम्–स्त्रियों पर रक्खे प्रेम को; पॅऱ्ऱाल्–(स्मरण में) प्राप्त करने पर; पिळैप्परो–छूट सकते है क्या ? ४२

कृषक लोग खेत निराने जाते है। उनके मुख के कोने से ताड़ी स्रवती है; मतलब यह है कि खूब पिये हुए हैं। खेत मे जल-पौधे है और फूल आदि। ये भ्रांत कृषक उनमे मधुरवाणी अपनी प्रियाओं की विशाल और दीर्घ आँखें, हाथ, पैर, आनन और मुख को देखते है, तो उनका मन नहीं होता कि इनको अलग कर दें। वे अपना काम नहीं करते क्योंकि उनका मन स्त्री-प्रेम के स्मरण में अटक गया है। नीच जाती के लोग हैं, अनपढ़ है। अतः स्त्री के स्मरण से उद्दीप्त प्रेम के मोह से छूट नही पाते ! । ४२

पुदुप्पुनल् कुडैयु मादर् पूवॉडु नावि पूत्त
कदुप्पुरु वॅऱिये नाऱुङ् गरुङ्गडर् ऱरङ्ग मॅन्ऱाल्
मदुप्पॉदि मळलैच् चॅव्वाय् वाट्कडैक् कण्णिन् मैन्दर्
विदुप्पुर् नोक्कु मिन्नार् मिहुदियै विळम्ब लामो 43

करु कटल् तरङ्कम्–नीले समुद्र की तरंगें; पुतु पुनल् कुटैयुम् मातर्–नयी बाढ़ (के जल में) स्नान करनेवाली स्त्रियों के; पूवॉटु नावि पूत्त–फूलों के साथ कस्तूरी-लेप-मिली; कतुप्पु उरु–(और) केशों में लगी; वॅऱिये नाऱुम्–सुगंधि देती हैं; अॅन्ऱाल्–यह कहा जाय तो; वाळ् कटै कण्णिन्–तलवार के समान तीक्ष्ण आँखों के कोर से; मैन्तर् वितुप्पु उऱ–जवान प्रेमासक्त हों ऐसा; नोक्कुम्–देखनेवाली; मतु पॉति मळलै–शहद के समान मधुर अस्पष्टता के साथ बोलनेवाली; चॅव्वाय्–लाल अधरोंवाली; मिन्नार्–विद्युल्लता सी स्त्रियों की; मिकुतियै विळम्पल् आमो–अधिकता कहना हो सकता है क्या ? ४३

सरयू की नयी बाढ़ के जल में स्त्रियाँ स्नान करती है। उनके केशों में लगे फूलों और कस्तूरी के लेप की सुगन्धि को नदी का जल ले जाकर समुद्र में पहुँचा देता है और समुद्र की लहरे तक सम्पूर्ण रूप से इस वास से सुवासित हो जाती है। तव कोशल देश की स्त्रियों की संख्या की गणना क्या हो सकती है ! यही नही; उनकी सुन्दरता भी कितनी ! आँखे तलवार के समान तीक्ष्ण है। अपनी आँखों के कोर से भी देखती है तो पुरुष

निहाल हो जाता है। उनके अधर लाल हैं और उनकी तोतली बोली भी मधु-सम मीठी है। ४३

वॅण्डळक् कलवैच् चेरुङ् गुङ्गुम विरैमॅन् शान्दुम्
कुण्डलक् कोल मैन्दर् कुडैन्दनीर्क् कोळ्ळै शाऱ्ऱिल्
तण्डलैप् परप्पुञ् जालि वेलियुन् दळीइय वैप्पुम्
वण्डलिट् टोड मण्णु मदुहर मॉय्क्कु मादो 44

चाऱ्ऱिल्–कहें तो; कुण्टलम् कोलम् मैन्तर्–(कर्ण-) कुंडल पहने हुए सुन्दर तरुण लोग; कुटैन्त–जहाँ गोते लगाकर स्नान किये (वहाँ के); नीर् कोळ्ळै–जल का प्रवाह; वॅण्मै तळम् कलवै चेरुम्–सफेद चंदन के लेप को और; कुङ्कुमम् विरै मॅल् चान्तुम्–केसर के गंध-मिले लाल चंदन-लेप को (घोल कर ले जाते हुए); तण्टलै परप्पुम्–वागों के विस्तार (विस्तृत भूतल) में; चालि वेलियुम्–धान के खेतों में; तळीइय वैप्पुम्–पास के ऊँचे स्थलों में; वण्टल् इट्टु ओट–तलौंछ छोड़ता हुआ बहता है-अतः; मण्णुम्–मट्टी पर; मतुकरम् मॉय्क्कुम्–मधुकर मंडराते हैं। ४४

कुण्डलधारी तरुण लोग खूब मज्जन करते हैं तो उनके शरीरों में लिप्त चन्दन आदि जल में घुल-मिल जाते है। नदी उसको वहा ले जाती है और वह बागों में, खेतों में और कुछ ऊँची भूमि पर, सब जगह तलौंछ रूप में जम जाती है। उसकी गन्ध से आकृष्ट हो भौरे सभी जगह मिट्टी पर मॅडराते हैं। ४४

शेलुण्ड वॉण्ग णारिऱ् ऱिरिहिन्ऱ शङ्गा लन्नम्
मालुण्ड नळिनप् पळ्ळि वळर्त्तिय मळलैप् पिळ्ळै
कालुण्ड शेऱ्ऱु मेदि कन्ऱुळ्ळिक् कनैप्पच् चोर्न्द
पालुण्डु तुयिलप् पच्चैत् तेरैता लाट्टुम् पण्णै 45

पण्णै–खेतों में; चेल् उण्ट–चेल् (नामक मछलियों) के समान रहनेवाली; ऑळ् कण्णारिन्–कांति भरी आँखोंवालियों के समान; तिरिकिन्ऱ्–चलने-फिरनेवाले; चॅम् काल् अन्नम्–लाल पैरोंवाले हंस; माल् उण्ट–गौरवयुक्त; नळिनम् पळ्ळि–कमल-पुष्प की शय्या पर; वळर्त्तिय–जिनको सुला चुके हैं उन्; मळलै पिळ्ळै–बाल हंस; काल् उण्ट–पैरों पर लिप्त; चेऱु मेति–पंकवाली भैंस; कन्ऱु उळ्ळि–बछड़े का स्मरण कर; कनैप्प–जब आवाज लगाती है (डौंकती है); चोर्न्त–जो स्रवता; पाल्–दूध; उण्टु–पीकर; तुयिल–सुलाते हुए; पच्चै तेरै–हरे (रंग के) दादुर; तालाट्टुम्–लोरी गाते हैं। ४५

खेतों में मीनाक्षी स्त्रियों के समान हंस संचार कर रहे है। वे अपने वच्चों को कमल-पत्र या पुष्पों पर सोने के लिए छोड़ गये हैं। वहाँ भैंसें अपने सावकों को याद करती है और आवाज देती हैं, तव उनके थन से खुद-व-खुद दूध वहने लगता है। उस दूध को ये वाल-हंस पीते हैं। तव हरे रंग के दादुर बोलते हैं और ये हस सो जाते है। दादुर का वोलना इनके लिए लोरी का काम देता है ! । ४५

कुयिलिनम् वदुवै शॆय्यक् कॊम्बिडैक् कुनिक्कु मञ्ञै
अयिल्विऴि महळिर् राडु मरंगिनुक् कऴहु शॆय्यप्
पयिल्शिऱै यरश वन्नम् पन्मलर्प् पळ्ळि निन्ऱुम्
तुयिलॆऴत् तुम्बि कालैच् शॆव्वऴि मुरल्व शॊलै 46

चोलै–बागों में; कुयिलिनम्–पिक के जोड़े; वतुवै चेय्य–विवाह करते (तव); कॊम्पु इटै–डालियों पर; कुनिक्कुम् मञ्ञै–(रहकर) नाचनेवाले मोर; अयिल् विऴि मकळिर्–तीक्ष्ण बर्छी सम आँखवाली नर्त्तकियो के; आट्टु अरङ्किनुक्कु–नृत्य-मंच से भी बढ़कर; अऴकु तर–शोभा दिलाते; पयिल् चिऱै–घने पंखोंवाला; अरच अन्नम्–राज-हंस को; पन् मलर् पळ्ळि तुयिल् निन्ऱु ऎऴ–(श्रेष्ठ-)कथित कमल-पुष्प-शय्या पर नींद से जगाते हुए; तुम्पि–भ्रमर; कालै चेव्वऴि मुरल्व–प्रातःकालीन राग गाते है। ४६

दो विनोदपूर्ण दृश्य देखिये। कोकिल और कोकिला विवाह-क्रिया में संलग्न है। उधर डालियों पर मोरों का नाच हो रहा है। मोरों का यह नृत्य-मंच और मोरों का यह नाच, सुन्दर बर्छी सी आँखवाली नर्तकियो का नाट्य-मच, और उनका नाच, इनसे भी बढ़कर आकर्षक है— यहाँ तक मोर और डालियाँ नर्तकियों और नृत्य-मंच का भी शृंगार बन सकती है। दूसरी तरफ़, कमल-शय्या पर सुप्त राज-हंस को भौंरे प्रातः जागरण-गीत गाकर जगाते है। ४६

पॊरुन्दिय महळिर् रोडु वदुवैयिऱ् पॊरुन्दु वारुम्
परुन्दॊडु निऴल्शॆन् ऱन्न वियलिशैप् पयन्ऱुय्प् पारुम्
मरुन्दिनु मिनिय केळ्वि शॆवियुऱ मान्दु वारुम्
विरुन्दिनर् मुहङ्गण् डन्न विऴावणि विरुम्बु वारुम् 47

पॊरुन्तिय–अपने योग्य; मकळिरोट्टु–स्त्रियों के साथ; वतुवैयिल् पॊरुन्तुवार् उम्–विवाह में लगे रहनेवाले; परुन्तॊट्टु निऴल् चेन्ऱु अन्न–(उड़नेवाले) चील के साथ उड़नेवाली छाया की तरह; इयल् इचै पयन् तुय्प्पारुम्–साहित्य और संगीत का मिला आनंद भोगनेवाले; मरुन्तिनुम् इनिय केळ्वि–अमृत से भी मधुर (सुखकारी) ग्रंथ-श्रवण का; चॆवि उऱ मान्तुवोरुम्–कर्ण-लाभ उठानेवाले; विरुन्तिनर् मुकम् कण्टु–अतिथियों का प्रसन्न मुख देखकर; अन्नम् विऴा अणि विरुम्पुवारुम्–भोज देने का उत्सव (उचित उपचार के साथ करना) चाहनेवाले(-करने में लगे हुए)। ४७

कोसल देशवासियों के कार्य-कलाप देखिये। सब तरह से अपने योग्य वधुओं से विवाह-क्रिया में सलग्न है कुछ लोग; चील जब उड़ती है तब उसकी छाया भी नीचे-नीचे उसी का अनुकरण करती हुई चलती है। वैसे ही साहित्य (यानी गीत में वर्णित विषय) और संगीत (स्वर) दोनों में गहरा सम्बन्ध है। दोनों का सम्मिलित आनन्द उठा रहे है कुछ लोग; ग्रन्थ-श्रवण अमृताशन से भी लाभकारी है— उसका लाभ उठा रहे है कुछ

लोग; और कुछ लोग अतिथियों के तृप्त-मुख भाव को देखकर भोज के प्रबन्ध में लीन है। ४७

करुप्पुरु मतमुङ् गण्णिऱ् चिवप्पुरु शूट्टुङ् गाट्टि
उरुप्पुरु पडैयिऱ् ऱाक्कि युरुपहै यिन्ऱिच् चीऱि
वेरुप्पिल कळिप्पिऩ् वॅम्बोर् मदुहय वीर वाळ्क्कै
मरुप्पड वावि पेणा वारणम् बॉरुत्तु वारुम् 48

उरु पकै इन्ऱि–पूर्व वैर के बिना; चीऱि–कोप कर; करुप्पु उरुम् मनमुम्–क्रोध-युक्त मन, और; कण्णिऩ् चिवप्पु उरु चूट्टुम् काट्टि–आँखों से लाल अपनी कलंगी को दिखाते हुए; उरुप्पु उरु पटैयिऩ्–(पैर के) अंग में बद्ध (छुरे) हथियार से; ताक्कि,–आक्रमण कर; वॆरुप्पु इल–(जिनमें) घृणा या उचाट नहीं; कळिप्पिऩ्–मस्ती के साथ; वॆम् पोर् मतुकैय–भयंकर युद्ध करने का साहस रखनेवाले; वीर वाळ्क्कै–वीरता का जीवन; मरु पट–लांछित हो जाय तो; आवि पेणा–जीवन रखना न चाहने-वाले; वारणम्–मुर्गो को; पॊरुत्तुवारुम्–लड़ानेवाले। ४८

कुछ लोग मुर्गे लड़ाने में दिलचस्पी लेते हैं। वे मुर्गे बिना पूर्व-वैर के भी आपस में रोष दिखाते है। उनका मन काला (कोपाक्रांत) है। आँखें लाल हो गयी हैं। इस कोप और आँखो के ही समान लाल कलगी को प्रकट दिखाते हुए वे एक दूसरे पर झपटते हैं और अपने पैरों में बँधी छुरी से चोट कर देते है। वे थकते ही नहीं और उनका उत्साह बढ़ता जाता है। वे बड़े साहसी हैं और वीरता पर धब्बा लगा तो मरने को तैयार! ४८

ऍरुमैना हीन्ऱ शॅङ्ग णेऱ्ऱयो डेऱ्ऱै शीऱ्ऱत्
तुरुमिवै यॆऩ्ऩत् ताक्कि यूळुर नॆरुक्कि यॊऩ्ऱाय्
विरियिरु ळिरण्डु कूऱाय् वॆहुण्डऩ वनैय नोक्कि
अरियिनङ् गुञ्जि यार्प्प मञ्जुर वार्क्किन् ऱारुम् 49

ऍरुमै नाकु ईन्ऱ–भैंस के जनाये; चॆम् कण्–लाल आँखोंवाले; एऱ्ऱैयोटु एऱ्ऱै–एक पाठे के विरुद्ध दूसरा पाठा; इवै चीऱ्ऱतु उरुम् ॲन्ऩ–ये नाराज़ वज्र (गाज) हैं-ऐसा कहने योग्य रीति से; ताक्कि–टकराकर-(सींग मारकर); ऊळ् उर नॆरुक्कि–बारी-बारी से दबोचकर; ऑन्ऱु आय् विरि इरुळ्–एकाकार फैला अंधकार; इरण्टु कूऱु आय् वॆकुण्टन–दो भागों में बंटकर (वे आपस में) रोष दिखाते हों; अनैय–ऐसे (उनको); नोक्कि–देखकर; कुञ्चि अरि इनम् आर्प्प–केशों पर बैठे भौरों के कल्लोल के साथ उठते; मञ्चु उर–मेघमंडल तक (शब्द) पहुँचाते हुए; आर्क्-किन्ऱारुम्–शोर मचानेवाले। ४९

कही भैंस के पाठों को लड़ाया जाता है और लोग देख रहे हैं। एक ठापा दूसरे पर क्रुद्ध वज्र के समान झपटता है; जोर से सींग चलाता है; वारी-बारी से एक दूसरे पर हावी हो जाता है। उनको देखते समय ऐसा

लगता है मानों विशाल अंधकार के दो भाग हो गये और वे भाग आपस में गुथ रहे हैं। इसको देख लोग ऐसे उछलते और शोर करते है कि उनके सिर पर रहनेवाले पुष्प में बैठे भौरों को उठकर उड़ जाना पड़ता है और उनका शोर मेघ-मण्डल तक पहुँच जाता है। ४९

मुळ्ळरै मुळरि वॅळ्ळि मुळैयिऱ मुत्तुम् पॊन्नुम्
तळ्ळुऱ मणिहळ् शिन्दच् चलंजलम् पुलम्बच् चालिल्
तुळ्ळिमीन् ऱुडिप्प वामै तलैपुडै शुरिप्पत् तूम्बिन्
उळ्वरा लॊळिप्प मळ्ळ रुळ्ळुपह डुरप्पु वारुम् 50

मुळ् अरै मुळरि–कांटेनुमा (गाँठों से भरे) नालवाले कमलों को; वेळ्ळि मुळ इऱ–श्वेत अंकुर तोड़ते हुए; मुत्तुम् पॉन्नुम्–मोती और स्वर्ण; तळ्ळुऱ–हटाये जायँ ऐसा; मणिकळ् चित्त–रत्न छितर जायँ ऐसा (या रत्न छितराते हुए); चलञ्चलम् पुलम्प–चलंजल नामक शंख के चिल्लाते; चालिल् मीन् तुळ्ळि तुटिप्प–हल के कूणों में मछलियाँ तड़पें ऐसा; आमै–कछुए; तलै पुटै–सिर और पार्श्व के अंगों को; चुरिप्प–छिपा लें ऐसा; वराल्–'वराल' नामक मछलियों के; तूम्पिन् ऑळिप्प–नालियों के अंदर छिप जाते; मळ्ळर् उळु पकटु उऱप्पुवार् उम्–कृषक जो जोतनेवाले बैलों को हांकते है-और। ५०

कृषक लोग हल चलाने की क्रिया में रत है। हल जब चलता है तब कमल के अंकुर टूट जाते है; मोती और स्वर्ण दोनों ओर हटाये जाते है; शंख ध्वनि करते है; हल के कूणो पर, मछलियाँ, फाल के लगने से तड़पती है; कछुए अपने सिर, पैर छुपा लेते है। वराल नाम की मछलियाँ नालियों में छिप जाती हैं। कृषक जोर से बैल हाँकते हैं। ५०

ऍऱिदरु मरियिन् शुम्मै यॆडुत्तुवा निट्ट पोर्हळ्
कुऱिकॊळुम् पोत्तिऱ् कॊल्वार् कॊन्ऱ नॆऱ्कुवैहळ् शॆय्वार्
वऱियवर्क् कुदवि मिक्क विरुन्दुण मनैयि नुय्प्पान्
नॆऱिहळुम् बुदैयप् पण्डि निऱैत्तुमण् णॊळिय वूर्वार् 51

ऍऱि तरुम्–पीटे हुए; अरियिन् चुम्मै ऍटुत्तु–धान के पौधों के मुट्ठों को लेकर; वान् इट्ट पोर्कळ्–आकाश को छूते हुए लगाये गये ढेर; कुऱि कॊळुम् पोत्तिन्–इंगित जानकर चलनेवाले बैलो से; कॊल्वार्–रौंदवाते है; कोन्ऱ नॆल्–मांड़ने से मिले धान के; कुवैकळ् चॆय्वार्–ढेर लगाते है; वऱियवरक्कु उतवि–दरिद्रों को दान कर; मिक्क–(जो) बचा उसको; विरुन्तु उण–अतिथियों को खिलाने; मनैयिन् उय्प्पान्–घर पहुँचाने के लिये; नॆऱिकळुम् पुतैय–सड़कें छिप जायँ (इतनी बड़ी संख्या में); पण्टि निऱैत्तु–छकड़ों में भर कर; मण् नॆळिय–धर्ती को धंसाते हुए; ऊर्वार्–चलाते है। ५१

कृषक लोग धान की फसल काटते हैं; क्रम से, पहले मुट्ठे बनाकर जमीन पर पीटकर धान अलग करते हैं; फिर वालें-सहित पौधों के ढेर

लगाकर मवेशी द्वारा माँडते हैं। तब जो धान मिल जाते हैं उनके ढेर लगाते हैं। बाद में वहाँ आनेवाले दरिद्र भिखमंगों को दान देकर बाकी को गाड़ियों में भरकर ले जाते हैं। गाड़ियों की संख्या इतनी है कि मार्ग छिप जाते है और उनके भार से मानों धरती लचक जाती है। ५१

कदिर्पडु वयलि नुळ्ळ कडिकमऴ् पॉऴिलि नुळ्ळ
मुदिर्पयन् मरत्ति नुळ्ळ मुदिरैहळ् पुऱवि नुळ्ळ
पदिपडु कॉडियि नुळ्ळ पडिवळर् कुऴियि नुळ्ळ
मदुवळ मलरिऱ् कॉळ्ळुम् वण्डॆन मळ्ळर् कॉळ्वार् 52

मळ्ळर्–कृषक; कतिर् पटु वयलिन् उळ्ळ–धान की बालों से भरे खेतों में मिलनेवाली (फसल की वस्तुएँ); कटि कमऴ् पॊऴिलिन् उळ्ळ–खुशबूदार बागों से प्राप्त होनेवाली (वस्तुएँ); मुतिर् पयन् मरत्तिन् उळ्ळ–वृद्ध (और) फलदायी वृक्षों से पायी जानेवाली; मुतिरैकळ् पुऱविन् उळ्ळ–दाले जहाँ पैदा होती हैं उन स्थलों से प्राप्त होनेवाली (वस्तुएँ); पति पटु कॊटियिन् उळ्ळ–कलम गाड़कर उगायी जानेवाली लताओं से प्राप्य (वस्तुएँ); पटि वळर् कुऴियिन् उळ्ळ–फैलकर धरती के अंदर फलनेवाली वस्तुएँ (-ये सब विविध प्रकार की फसलें); वळम् मलरिल् मतु कॊळ्ळुम् वण्टु अॆन–पुष्ट फूलों से मधु ग्रहण करनेवाले भ्रमरों के समान; कॊळ्वार्–संग्रह करते है। ५२

किसान लोग क्या-क्या फसले संग्रह करते है ? —इसकी सूची दी जाती है। खेतों की, बागों की, वृक्षों की, दालों के खेतों की; लताओं की; धरती के अन्दर होनेवाली— कन्द-मूल आदि सभी वस्तुएँ इस तरह स्थान-स्थान से संग्रह करते है, जैसे भौरे फूल-फूल से मधु संग्रह करते हैं। ५२

मुन्दुमुक् कनियि नाना मुदिरैयिन् मुऴुत्त नॆय्यिल्
शॆन्दयिर्क् कण्डङ् गण्ड मिडैयिडै शॆऱिन्द शोऱ्ऱिल्
तन्दमि लिरुन्दु तामुम् विरुन्दोडुन् दमरि नोडुम्
अन्दणर् मुदलो रुण्डि ययिल्वुरु ममलैत् तॆङ्गुम् 53

ऍङ्कुम्–सर्वत्र; अन्तणर् मुतलोर्–ब्राह्मण आदि; तम् तम् इल् इरुन्तु–अपने अपने घरों में रहकर; मुन्तुम् मुक्कनियिन्–प्रथम (गणनीय कटहल, आम और केले के) फलों के साथ; नाना मुतिरैयिन्–नानाविध दालों के साथ; मुऴुत्त नॆय्यिन्–भात को ढंकनेवाले (परिमाण में) घी के साथ; चॆम् तयिर् कण्टम्–लाल (पक्व) दही खण्डों के साथ; कण्टम्–खाण्ड; इटै इटै चॆऱिन्त चोऱ्ऱिन्–(इनके) बीच बीच में मिले हुए भात को; विरुन्तॊटुम्, तमरिनोटुम्–अतिथियों और अपनों के साथ; तामुम् इरुन्तु–खुद रहकर (बैठे); अयिल्वुरुम्–खाते हे-ऐसे; अमलैत्तु–संभ्रम का (है वह देश)। ५३

ब्राह्मण आदि चारों वर्णों के लोगों के यहाँ भोजन की व्यवस्था बड़ी समृद्ध है। कटहल, आम और केले के, प्रधान रूप से मान्य, फलों को खाया जाता है। नाना विध दाले, और भात ऐसा कि उसके साथ प्रचुर परिणाम में घी, श्रेष्ठ दही, खाण्ड आदि मिले हुए हैं। वे लोग अकेले नहीं

खाते; सव वन्धु-वान्धवों और अतिथियों के साथ वैठकर जीमते हैं। उस कोशल देश में इस वात की वड़ी धूम है। ५३

मुऱैयऱिन् दवावै नीक्कि मुनिवुऴि मुनिन्दु वॆ॰॰हुम्
इऱैयऱिन् दुयिर्क्कु नल्हु मिशैकॊऴु वेन्दऩ् काक्कप्
पॊऱैतविर्न् दुयिर्क्कुन् दॆय्वप् पूदल मदनिऱ् पॊन्निन्
निऱैपरन् चॊरिन्दु वंग नॆडुमुदु हाऱ्ऱु नॆय्दल् 54

मुऱै अऱिन्तु–नीति-रीति अच्छी तरह जान-समझकर; अवावै नीक्कि–इच्छाओं को दूरकर; मुनि उऴि मुनिन्तु–कोप करने के (उचित) स्थान पर कोप दिखाकर; वॆ॰॰कुम् इऱै अऱिन्तु–स्वयं चाह के साथ प्रजा दे दे-वह कर (का परिमाण) जानकर (वसूली कर); उयिर्क्कु नल्कुम्–प्रजा का पालन करनेवाले; इचै कॊऴु–यशस्वी; वेन्तऩ्–राजा (दशरथ) के; काक्क–शासन करते; पॊऱै तविर्न्तु–भार-निवृत्त हो; उयिर्क्कुम्–आश्वास की साँसें छोड़नेवाले (जहाँ है) उस; तॆय्वम् पूतलम् अतनिल्–दिव्य भूभाग में (कोशल देश में); नॆय्तल्–समुद्र तट पर; वङ्कम्–नावें; निऱै परम् चॊरिन्तु–अपना भरा भार उतरवाकर; नॆट्टु मुतुकु–वड़े पीठ के दर्द को; आऱ्ऱुम्–दूर कर रही है। ५४

राजा दशरथ श्रेष्ठ प्रजा-पालक थे; वे मनु-नीति से खूब अवगत थे। कामना-हीन (स्वार्थ-हीन) थे। आवश्यक होता था तभी दण्ड देते थे; कर का परिमाण ऐसा रखा कि प्रजा स्वयं अपनी इच्छा से दे देती थी; और प्रजा की रक्षा खूव करते थे। इसलिए उस दिव्य देश में सभी निश्चिन्तता की साँसे लेते थे: यहाँ तक नावे भी अपने भार उतारने के वाद अपनी पीठें ऊपर कर पड़ी रहती थी, मानों आराम कर रही हों। (यहाँ प्रथा है कि नावे औंधी छोड़ी जाती हैं, जव मल्लाह घर में रहते हैं)। ५४

परुव मङ्गयर् पंगय वाण्मुहत्, तुरुव वुण्गणै यॊण्पॆडै यामॆनक्
करुदि यन्बॊडु कामुऱ्ऱु वैहलुम्, मरुद वेलियिन् वैहिन वण्डरो 55

मरुतम् वेलियिन्–खेतों और वागों के भूभाग मे; वण्टु–भौंरे; परुव मङ्कैयर्–सयानी हुई स्त्रियों के; पङ्कयम् वाण् मुकत्तु–पंकज-सम कांतियुक्त मुख को; उरुवम् उण् कण्णै–सुन्दर काजल-लगी आँखों को; पॆटैयाम् अॆन करुति–अपनी भौंरियाँ समझ कर; अऩ्पॊटु कामुऱ्ऱु–प्रेम के साथ आसक्त होकर; वैकलुम् वैकिन–हमेशा ठहर गये। अरो–पूरक ध्वनि। ५५

खेतों और वागों वाले प्रदेश में भौंरे हमेशा के लिए ठहर गये इसलिए कि स्त्रियो के मुखो को उन्होने कमल समझ लिया और काजल-लगी आँखों को भौंरियाँ। वस, उनके पास रहना चाहते हुए वहीं सदा के लिए वस गये। ५५

वेऴै वॆन्ऱ विऴिच्चियर् वॆम्मुलै, आऴै निन्ऱु मुनिन्दिडु मङ्गॊर्बाल्
पाऴै तन्द मदुप्परु हिप्परु, वाऴै निन्ऱु मदर्क्कु मरुङ्गॆलाम् 56

अङ्कु–उस भाग के; ऑरु पाल्–एक ओर; वेळै–कामदेव को; वॆन्ऱ विऴिच्चियर्–जीतनेवाली आँखों की स्त्रियों के; वॆम् मुलै–मन को अधीर करनेवाले स्तन; निन्ऱु–(अपने स्थान पर तन कर) खड़े होकर; आळै मुनिन्दिटुम्–कार्य-रत मनुष्य को डांटते है (अपने वश में कर लेते है); मरुङ्कु अॅलाम्–आस-पास सब जगह; परु वाळै–मोटे "वाळै" नाम के मीन; पाळै तनृत मतु–(ताड़ आदि के) कटे डंठलों के दिये रस को पीकर; निन्ऱु मतर्क्कुम्–अकड़कर मस्ती के साथ चलते-फिरते है। ५६

उस कृषि-योग्य प्रदेश में तरुण स्त्रियों की आँखे इतनी आकर्षक हैं कि जिस पुरुष पर मन्मथ का कुछ वश नही चल सकता वहाँ उनकी आँखें उसे आकृष्ट कर लेती हैं और रहा सहा काम उनके मनोरम स्तन (गुस्सा दिखा) कर लेते हैं और उन कठिन स्तनों के सामने आदमी झुक ही जाता है। आदमी को झुका देना या उसे अपने वश में कर लेना —यह भाव जताने के लिए स्तन गुस्सा दिखाते हैं या डॉटते हैं, ऐसा कहना कुछ विचित्र पर मन रमानेवाली कल्पना है। और पीन मीन नारियल के डंठलों से झरनेवाले रस को पीकर अकड़ जाते है। ५६

❀ ईर नीर्पडिन् दिन्निलत् तेशिल, कार्क ळॅन्न वरुङ्गरु मॅदिहळ्
ऊरि निन्ऱहन् ऱुळ्ळिड वुण्मुलै, तारै कॊळ्ळत् तळैप्पन शालिये 57

ईरम् नीर् पटिन्तु–ठंडे जल में पैठी रहकर; इ निलत्ते–इस भूमि पर; चिल कार्कळ् अॅन्न वरुम्–कुछ मेघों के समान आनेवाली; करु मेतिकळ्–काली भैंसे; ऊरिल् निन्ऱ कन्ऱु उळ्ळिट–बस्ती में जो रह गये (उन) बछड़ों का स्मरण करने से; उण् मुलै तारै कॊळ्ळ–उन बछड़ों के पेय थन के दूध के भर कर बाहर निकल बहने से; चालि तळैप्पन–धान के पौधे पनपते है। ५७

ठंढे पानी में पैठी रहने के बाद भैंसें चली आती हैं— वे मानों काले मेघ हैं। वे जब अपने बछड़ों की याद करती हैं तब वे बोलने लगती है मानों उन्हें पुकार रही हों या उन्हें कुछ सुना रही हों। तब उनके थन से दूध स्वयं बहने लगता है और उस दूध की धारा खेतों में जाती है जहाँ धान के पौधे इससे पुष्ट हो जाते है। ५७

मुट्टि लट्टिन् मुळङ्गुऱ वाक्किय, नॆट्टु लैक्कळु नीर्नॆडु नीत्तन्दान्
पट्ट मॆन्गमु कोङ्गु पडप्पपोय्, नट्ट शॆन्नॆलि नाऱु वळर्क्कुमे 58

मुट्टु इल् अट्टिल्–सु संपन्न पाकशालाओं में; मुळङ्कु उऱ–संभ्रम के साथ; आक्किय–पके; नॆटु उलै–विपुल पाक-कार्य के लिये; कळु नीर्–चावल जिससे धोये गये उस जल का; नॆटु नीत्तम्–बड़ा प्रवाह; पट्टम् मॆल् कमुकु–उचित पर्व में उगाये गये कोमल सुपारी के छोटे वृक्ष; ओङ्कु पटप्पै पोय्–जहाँ बढ़ते है उस विस्तृत बाग से होकर; नट्ट–रोपे गये; चॆन् नॆलिन्–लाल धान के; नाऱु–बेढ़ों को; वळर्क्कुम्–बढ़ाता है। ५८

कोशल देश के घर समृद्ध है और लोग अतिथि-सत्कार में उत्साह रखते है। इसलिए उनकी पाक-शालायें हमेशा क्रिया-शील है। चावल

इतने पकते है कि पकाने से पहले जो जिस जल से इनको धोया जाता है वह जल नदी के समान वह चलता है; और क्रमुक-वन से होकर खेतों में बहता है और बेढों को बढ़ाता है। ५८

शूट्टु-डैत्तलैत् तूनिऱ वारणम्, ताट्टु णैक्कुडै यत्तहै शान्मणि
मेट्टि मैप्पन मिन्मिनि यामॆनक्, कूट्टि लुय्क्कुङ् गुरुविक् कुऴामरो 59

चूट्टु उटै तलै–कलगीवाले सिर; तू निऱ वारणम्–शुद्ध (सफेद) रंग के मुर्गे; ताऴ् तुणै कुटै–चरणद्वय से (कड़े) कुरेदते (तब बाहर निकलते); अ तकै चाल् मणि–वे श्रेष्ठ रत्न; मेटु इमैप्पन–(कूड़ों के) ढेरों पर चमकते है (उनको); मिन् मिनि आम् ऎन–जुगुनू है-समझकर; कुरुवि कुऴाम्–चिड़ियों के दल; कूट्टिल् उय्क्कुम्–घोंसलों में पहुँचाते है। (अरो)। ५६

सफ़ेद रंग के और लाल कलगी वाले मुर्गे अपने पैर के नखों से घूर कुरेदते है तो उससे रत्न निकलते हैं। उन चमकदार रत्नों को चिड़ियाँ देखती है और अपने घोंसलों मे, अपने बच्चों के मनोरंजनार्थ या खाने के लिए, उन रत्नों को उठा ले जाकर, रख लेती हैं। ५९

❀ तोयुम् वॆण्डयिर् मत्तोलि तुळ्ळल्पोय्, माय वॆळ्वळै वाय्विट् टऱ्ऱवुम्
तेयु नुण्णिडै शॆन्ऱु वणङ्गवुम्, आयर् मङ्गय रङ्गै वरुन्दुवार् 60

तोयुम् वॆण् तयिर्–(गाढ़ा) जमा सफेद दही; मत्तु ऑलि तुळ्ळल्–(मथने की) मथानी का रह-रहकर उठता नाद; माय–छिपाते हुए; वॆळ् वळै–सफ़ेद (शंख-)कंकण; वाय् विट्टु अरऱ्ऱ उम्–मुख खोलकर चिल्लाते हैं, और; तेयुन् नुण् इटै–क्षीण होती (पतली) कमरें; चॆन्ऱु वणङ्कवुम्–आगे बढ़कर झुक (लचक) जाती हैं, ऐसा; आयर् मङ्कैयर्–अहीर स्त्रियाँ; अम् कै वरुन्तुवार्–सुन्दर हाथों से सायास(मथती) हैं। ६०

अहीर-रमणियाँ दही मथती है; तब उनके हाथों के शंख के बने सफ़ेद कंकण बोल उठते है। वह ध्वनि मथनी की ध्वनि को अपने में लीन कर लेती है। कंकणों का बोलना ऐसा लगता है मानों वे इन स्त्रियों की कमरों का झुकना और हाथों का दुखना देख, उनकी सहानुभूति में रोती-बिलखती हों। ६०

कुऱ्ऱ पाहु कॊऴिप्पन कोणॆऱि, कऱ्ऱि लाद करुङ्ग णुळैच्चियर्
मुऱ्ऱि लार मुहन्दुत मुन्ऱिलिल्, शिऱ्ऱिल् कोलिच् चिदऱिय मुत्तमे 61

कोळ् नॆऱि–बुरा आचरण; कऱ्ऱिलात–जो नहीं जानतीं; करु कण्–काली आँखोंवाली; नुळैच्चियर्–धीवर स्त्रियाँ (बालायें); मुऱ्ऱिल् आर–सूप भर कर; मुकन्तु–लेकर; तम् मुन्ऱिलिल्–अपने आंगनो में; चिऱ्ऱिल् कोलि–घरौंदे बनाते (वक्त); चितऱिय–(जो) बिखर जाते है; कुऱ्ऱ पाकु कॊऴिप्पन–छिलके निकाले गये सुपारी-फलों से पछोरे जानेवाले हैं। ६१

चालाकी से दूर (गुण से सुन्दर) और काली आँखों वाली (रूप में भी सुन्दर) धीवर-बालायें अपने घरौदे मोतियों के बनाती है, जिन्हें वे सूपों

में भर लाती हैं; और वे फिर उन्हें फेंक देती हैं। यह समुद्र-तट के प्रदेश की वात है। ये ही मोती नीचे जंगल-प्रदेश में पहुँच जाते हैं। वहाँ उनका मूल्य क्या है? सुपारी के फलों के साथ ये मिल जाते है और वहाँ की स्त्रियाँ उन्हें पछोर देती है। ६१

तुरुवै मॅऩ्पिणै यीऩ्ऱ तुळक्किला, वरिम रुप्पिणै वऩ्ऱलै येऱ्ऱैवाऩ्
उरुमि-डित्तॅऩत् ताक्कुऱु मॉल्लॊलि, वॅरुवि माल्वरैच् चूऩ्मळै मिऩ्ऩुमे 62

मॆऩ् तुरुवै पिणै–मृदु स्वभाव की भेड़ों के; ईऩ्ऱ–जनाये; तुळक्कु इला–निडर; वरि मरुप्पु इणै–धारी-दार सींगों के जोड़े; वल् तलै–(जिन पर है उन) वलवान सिरों के; एऱ्ऱै–भेड़े; वाऩ् उरुम् इटित्तत्तु ॲन–आकाश में वज्र ने घोष किया-ऐसा; ताक्कु उऱुम्–भिड़ते हैं वह; ऑल ऑलि–उच्च नाद; वॅरुवि–डरकर; माल् वरै–बड़े पर्वत (पर के); चूल् मळै–(जल-) गर्भित मेघ; मिऩ्ऩुम्–चमकते हैं। ६२

जंगल-प्रदेश के आगे खेतों का प्रदेश है। वहाँ भेड़े आपस में भिड़ते है। वे निडर है; उनके सीग और सिर कठोर है। वे जव टकराते हैं तव वज्र-ध्वनि-सी ध्वनि निकलती है। इस ध्वनि के कारण पर्वतों पर रहनेवाले मेघ डरते हैं। और तव विजली जो चमक जाती है, वह ऐसा लगता है मानो मेघ ने डर से अपना मुख खोला हो। ६२

तिऩैच्चि लम्बुव तीञ्जॉ लिळङ्गिळि, नऩैच्चि लम्बुव नाहिळ वण्डुपूम्
पुऩैच्चि लम्बुव पुळ्ळिऩम् वळ्ळियोर्, मनैच्चि लम्बुव मङ्गल वळ्ळये 63

तिनै चिलम्पुव–कोदों के वागों में बोलते है; तीम् चॉल्–मधुर बोलीवाले; इळम् किळि–बाल तोते; ननै चिलम्पुव–कलियों पर (बैठ) स्वर देते है; नाकु इळ वण्टु–बहुत छोटे भौरे; पू पुनै–फूलों सहित जलाशयों में; चिलम्पुव पुळ् इनम्–वोलते हैं पक्षी समूह; वळ्ळियोर् मनै चिलम्पुव–उदार दाताओं के घरों में स्वरित होते है; मङ्कलम् वळ्ळै–मंगल सूचक विशिष्ट गाने (मूसल-गीत) जो धान कूटते वक्त गृहस्वामी की प्रशंसा में गाये जाते है। ६३

कोदों के वागों से तोतों का स्वर, कलियों से भौरों का स्वर, फूलों सहित रहनेवाले जलाशयों से चिड़ियों का स्वर, दाता गृहस्थों के घरों से धान कूटते वक्त के विशिष्ट गीतों का स्वर— सव अपने-अपने स्थान की समृद्धि सूचित करते हैं। ६३

कऩ्ऱु डैप्पिडि नीक्किक् कळिऱ्ऱिऩम्, वऩ्ऱॊ डर्प्पडुक् कुम्वन वारिशूऴ्
कुऩ्ऱु डैक्कुल मळ्ळर् कुऴूउक्कुरल्, इऩ्ऱु णैक्कळि यऩ्ऩ मिरिक्कुमे 64

कन्ऱु उटै पिटि–कलभों सहित (रहनेवाली) हथिनियों को; नीक्कि–अलग कर के; कळिऱु इनम्–हाथियों के समूहों को; वल् तॉटर् पटुक्कुम् वनम्–कठोर बंधन के अंदर (जहाँ) लाया जाता है उस वन में; वारि चूऴ्–गड्ढों से घिरे; कुन्ऱु उटै–पर्वत-वासी; कुलम् मळ्ळर्–व्याध-वीरों का; कुऴु कुरल्–उठाया गया शोर; इन् तुणै कळि

अऩ्ऩम्–(नीचे के जंगल-प्रदेश में) अपनी प्रिय हंसिनी के साथ आनंदित रहनेवाले हंसों को; इरिक्कुम्–अलग कर भगा देता। ६४

पर्वत-प्रदेश की सीमाओं में व्याध लोग हाथी पकड़ते हैं। पहले वे हाथी को, उसकी हथिनियों और कलभो से अलग करते है। फिर उसे उन गड्ढों की ओर भगाते हैं, जो यहाँ-वहाँ वनाये गये है। तव वे वहुत शोर मचाते है। यह शोर नीचे जंगल-प्रदेश में आता है, जिसे सुनकर हंस डर जाते हैं और अपनी संगिनी हंसिनी को, जिसके साथ वह केलि में मग्न था, छोड़कर भाग जाता है। ६४

वळ्ळि कॉळ्बवर् कॉळ्वऩ मामणि, तुळ्ळि कॉळ्वऩ तूङ्गिय माङ्गऩि
पुळ्ळि कॉळ्वऩ पॊऩ्विरि पुऩ्ऩैहळ्, पळ्ळि कॉळ्वऩ पङ्गयत् तऩ्ऩमे 65

वळ्ळि–शकरकन्द; कॉळ्पवर्–लेने (के लिए खोदने) वाले; कॉळ्वन–जो (साथ साथ) प्राप्त करते है; मा मणि–श्रेष्ठ मणियाँ; तुळ्ळि–कछुए; कॉळ्वऩ–जो प्राप्त करते है; तूङ्किय माङ्कनि–(नीचे) लटकनेवाले आम के फल; पुळ्ळि कॉळ्वऩ–गोल आकार वाले; पॊऩ् विरि–स्वर्ण-रंग (मकरंद) के साथ छिटके; पुऩ्ऩैकळ्–(फूलवाले) "पुन्नै" नाम के वृक्षो में; पळ्ळि कॉळ्वऩ–शयन करनेवाले हैं; पङ्कयत्तु अऩ्ऩम्–कमल पर सोने के आदी हंस। ६५

लोग कन्द-मूल के लिए खोदते है, तो उन्हे साथ-साथ रत्न भी मिल जाते है। आम की डालियाँ इतनी झुकी हुई हैं कि कछुए भी आम के फल पा लेते है। समुद्र-तटीय प्रदेश के विशेष तरु है— "पुन्नै"। उनके फूल गोल-गोल होते है और स्वर्ण रंग के केसर। उन पर आकर हंस, जो कमल पर सोने के आदी है, सो जाते है। (इसमें पर्वत, जंगल, समुद्र-तट) —तीनों प्रदेशों का मिश्रित वर्णन है। ६५

कॊऩ्ऱै यङ्गुळल् कोवलर् मुऩ्ऱिलिल्, कऩ्ऱु रप्पुङ् गुरवै कडैशियर्
पुऩ्र लैप्पुनङ् गाप्पिडै पोदरच्, चॆऩ्ऱि शैक्कु नुळैच्चियर शॆव्वळि 66

कटैचियर् कुरवै–कृषक स्त्रियों के 'कुरवै' नाम के नाच के गीत; कॊऩ्ऱै अम् कुऴल्–अमलतास के फलो के वने, वंशी के समान के वाद्य वजानेवाले; कोवलर् मुऩ्ऱिलिल् कऩ्ऱु–ग्वालो के आँगनो में (बँधे) वछडों को; उरप्पुम्–डराते है; नुळैच्चियर्–धीवर स्त्रियों के; चेव्वळि–संध्या गीत; पुऩ् तलै पुनम् काप्पु–कम हरे वागों की रखवाली के काम में; इटै पोतर–वाधा डालते हुए; चॆऩ्ऱु इचैक्कुम्–जा सुनाई देते हैं। ६६

कृषक स्त्रियाँ नाचती-गाती हैं। उनके गाने के स्वर खेतों के प्रदेश के ग्वालों के आँगन में पड़े रहनेवाले बछड़ों को डराते हैं और उकसाते हैं। ये ग्वाल अमलतास के फलों की नली से वाँसुरी जैसा वाजा वना लेते है और वजाते है। उधर समुद्र-तटीय प्रदेश की धीवर-तरुणियाँ संध्या-गीत गाती

है और वह स्वर कोदों के बागों की रखवाली करनेवालों का ध्यान आकृष्ट कर लेता है और उनके काम में बाधा पड़ जाती है। ६६

शेम्बु कालिऱच् चॆङ्गळु नीर्क्कुळत्, तूम्बु कालच् चुरिवळै मेय्वन
काम्बु काल्पॊरक् कण्णहन् मालवरैप्, पाम्बु नान्ऱॆनप् पाय्पशुन् देऱले 67

कण् अकल् माल् वरै–विशाल काले पर्वत पर; काम्पु काल् पॊर–वंशी-वृक्षों के हवा के झोंकों के कारण, टकराने से; पाम्पु नान्ऱतु ॲन–साँप लटकता हो ऐसा; पाय् पचुमै तेऱल–वहनेवाले ताजे शहद को; चॆङ्कळु नीर् कुळम् तूम्पु–लाल कमल वाले तालाब की (पानी भरने के लिये बनी) नाली का मुहाना; चेम्पु काल् इऱ–जंगली अरवी के तनों को तुड़ाते हुए; काल–निकाल देता है, तब; चुरि वळै–आवर्तवाले शंख; मेय्वन–पीते है। ६७

नीले पर्वतों पर हवा खूब बहती है और बाँस के पेड़ हिलकर मधु के छत्तों को बेध देते हैं। तब मधु की धारा गिरने लगती है, जिसे देखने पर लगता है कि साँप लटक रहा है। वह मधु बहता आता है। वह प्रवाह नालियों द्वारा इतने जोर से कमल-तालाबों में बहता है कि बीच में रहनेवाले अरवीनुमा पौधों के तने टूट जाते हैं। उस मधु को वहाँ, तालाब के पास रहनेवाले शंख पी लेते हैं। ६७

❀ पॆरुन्द डङ्गट् पिऱैनुद लार्क्कॆलाम्, पॊरुन्दु शॆल्वमुङ् गल्वियुम् बूत्तलाल्
वरुन्दि वन्दवर्क् कीदलुम् वैहलुम्, विरुन्दु मन्ऱि विळैवन यावये 68

पॆरु तट कण्–विशाल और आयत आँखें; पिऱै नुतलार्क्कु–(बाल) चंद्र सम भाल वालियों को; ॲल्लाम्–सब को; पॊरुन्तु चॆल्वमुम्–स्थायी संपत्ति और; कल्वियुम्–शिक्षा; पूत्तलाल्–खूब प्राप्त रहने से; वैकलुम्–दिनों दिन; वरुन्ति वन्तवर्क्कु–आयास के साथ आये हुओं को; ईतलुम्–दान देना; विरुन्तुम्–अतिथि (सत्कार); अन्ऱि–इनके सिवा; विळैवन–(उनके) चाहे; यावै ? –(विषय) क्या हैं ? ६८

कोशल देश की स्त्रियाँ, जो सुन्दर विशाल आँखों वाली और अर्द्धचन्द्र सम भाल वाली है, अचल धनी भी है और शिक्षित भी। अतः वे दीन-हीन आगतों को उनकी चाही वस्तुएँ देना और अतिथियों का भोजन करवाना —इनके सिवा कुछ नहीं चाहतीं। ६८

पिऱैमु हत्तलैप् पॆट्पि निरुम्बुपोऴ्, कुऱैक्क ऱिल्लिरळ कुप्पैप् परुप्पॊडु
निऱैवॆण मुत्ति निऱत्तरि शिक्कुवै, उऱैव कॊट्टिन वूट्टिडन् दोऱुमे 69

ऊट्टु इटम् तोऱुम्–अन्न-सत्रों में; पिऱै मुकम् तलै–अर्द्धचन्द्र के समान धार वाले; पॆट्पिन् इरुम्पु–(अच्छा रहने के कारण) प्रिय, तरकारी काटनेवाले लोहे के उपकरणों से; पोऴ् कुऱै–काटकर टुकड़े बनाये गये; करि तिरळ्–तरकारियों के ढेर; कुप्पै परुप्पॊटु–ढेरों दालों के साथ; निऱै वॆण् मुत्तिन् निऱत्तु–खूब सफ़ेद मोती के-से रंग के; अरिचि कुवै–चावलों के ढेर; कॊट्टिन उऱैव–उँड़ेल कर पड़े हैं। ६९

उस देश के अन्न-सत्रों में जाकर देखिये। वहाँ पकाने के लिए, लोहे के उपकरण (पीठिका पर स्थिर खड़ी की गई दराँती) तरकारियाँ काटकर जो टुकड़े बने है, वे ढेरों है; वैसे ही दालों के ढेर और श्वेत मोती के रग के श्रेष्ठ चावलों के ढेर अपार रूप से लगे मिलते है। ६९

*कलञ्जु रक्कु निदियङ् गणक्किला, निलञ्जु रक्कु निरैवळ नन्मणि
पिलञ्जु रक्कुम् पॅऱ्ऱदऱ् करियदम्, कुलञ्जु रक्कु मॊऴुक्कङ् गुडिक्कॆलाम् 70

कुटिक्कु–प्रजा-जनो को; ऍल्लाम्–सब (को); कलम्–पोत (या नावें); कणक्कु इला–गणना-हीन यानी अत्यधिक; नितियम् चुरक्कुम्–निधियाँ दिलाती है; निलम्–जमीन; निऱै वळम् चुरक्कुम्–अधिक (धानों की) समृद्धि दिलाती हैं; पिलम्–खानें; नल् मणि चुरक्कुम्–अच्छे रत्न दिलाती हैं; तम् कुलम्–उन उन के कुल; पॅऱ्ऱतऱ्कु अरिय–पाने में कठिन या दुष्प्राप्य; ऑऴुक्कम् चुरक्कुम्–सदाचरण (सिखा) देंगे। ७०

कोशल देश-वासियों को नावों द्वारा विविध सम्पत्तियाँ प्राप्त होती है; जमीन से धान प्रचुर परिमाण में मिल जाते है; खानों से रत्न आदि मिल जाते है। अपने-अपने कुलों द्वारा सदाचरण की शिक्षा मिल जाती है। ७०

कूऱ्ऱ मिल्लयोर कुऱ्ऱमि लामयाल्, शीऱ्ऱ मिल्लैतञ् जिन्दयिन् शॅम्मयाल्
आऱ्ऱ नल्लऱ मल्लदि लामयाल्, एऱ्ऱ मल्ल दिऴितह विल्लये 71

ओर् कुऱ्ऱम् इलामैयाल्–(देशवासियो के पास) कोई दोष (अपराध) नहीं है, अतः; कूऱ्ऱम् इल्लै–अकाल–मृत्यु (की चिंता) नहीं रहती; तम् चिन्तैयिन् चॅम्मैयाल्–अपने अपने मन की नेकी के कारण; चीऱ्ऱम् इल्लै–क्रोध (प्रदर्शन का मौका) नहीं होता; आऱ्ऱल्–पालन (उनका); नल्लऱम् अल्लतु–सद्धर्मेतर का; इलामैयाल्–नही है अतः; एऱ्ऱम् अल्लतु–उन्नति के सिवा; इऴितकवु–अवनति; इल्लै–नहीं। (ए–पद्यांत में आनेवाली पूरक ध्वनि।) ७१

उस देश मे कोई दुष्कृत्य नही करता; इसलिए अकाल मृत्यु का डर नही है। सभी अच्छे स्वभाव वाले है; अतः क्रोध के लिए स्थान नहीं रहता। सद्धर्म ही करते रहते है सब; अतः उन्नति ही होती है; अवनति की बात नही होती। कवि का चमत्कार है कि भावों (प्राप्त वस्तुओं) की बात कहने के बाद अभावों की भी सूची देता है। इन अभावों से श्रेय ही होता है, न कि हानि या दुख। ७१

नॆऱिक डन्दु परन्दन नीत्तमे, कुऱिय ऴिन्दन कुङ्कुमत् तोळ्हळे
शिऱिय मङ्गयर् तेयु मरुङ्गुले, वॆऱिय वुम्मवर मॆन्मलरक् कून्दले 72

नॆऱि कटन्तु–मार्ग (सीमा) लाँघकर; परन्तन–फैल चले; वॆळ्ळमे–प्रवाह ही; कुऱि अऴिन्तन–चिह्न मिटे; कुङ्कुमम् तोळ्कळे–(स्त्रियों की) कुंकुम के चिह्न

आदि से चिह्नित भुजाओं के ही; चिऱ्रिय–अल्प या छोटे; मङ्कैयर् तेयुम् मरुङ्कुले–स्त्रियों की (उत्तरोत्तर) क्षीण होती (सी लगनेवाली) कमर ही; वॆऱ्रियवुम्–सुगंधित या नशाग्रस्त है; अवर् मलर् मॆऩ् कूऩ्तले–उनके पुष्पालंकृत कोमल केश ही। ७२

देखिए, उस देश में सीमा का या मार्ग का उल्लंघन होता था तो प्रवाह वह काम करते थे, न कि मनुष्य। स्त्रियों के अगों पर कुंकुम के लेप से चित्रकारी बनती है। धान के ढेरों पर पहचान के लिए निशान लगाये जाते हैं। चित्रकारी का निशान मिट जाता है, प्रेमियों के आलिंगन से; और धान वाले वे निशान नहीं मिटते, अपहारी के न होने के कारण। अल्प या क्षीण वहाँ और कोई चीजें नही थी सिवाय स्त्रियों की कटियों के। गन्धयुक्त था स्त्रियों का केश ही! गन्धयुक्त के तमिऴ शब्द का श्लेष-अर्थ है नशाबाज या विक्षिप्त। अतः वहाँ नशाबाज या विक्षिप्त कोई दूसरा नही था। ७२

अहिलि डुम्बुहै यट्टिलि डुम्बुहै, नहलि ऩालै नरुम्बुहै नाऩ्मऱै
पुहलुम् वेळ्वियिऱ् पूम्बुहै योडळाय्, मुहिलिऩ् विम्मि मुयङ्गिऩ वॆङ्गणुम् 73

इटुम् अकिल् पुकै–प्रज्वलित अगरु का धुआँ; अट्टिल् इटुम् पुकै–रसोई-घरों में उठनेवाला धुआँ; नकल् इऩ् आलै नऱु पुकै–विशिष्ठ दिखनेवाले मधुर (गुड़ बनाने वाले) स्थानों में उठनेवाला धुआँ, और; नाऩ्कु मऱै पुकलुम्–चार वेदों में विहित; वेळ्वियिल् पू पुकैयॊटु–यज्ञों में उठनेवाले पवित्र धुएँ के साथ; अळाय्–मिलकर; मुकिलिऩ् अङ्कणुम् विम्मि–मेघों के समान सब जगह फैलकर; मुयङ्किन–व्याप्त हुए। ७३

उस देश में घरों में पूजा के समय पर, या स्त्रियों के केशों को सुखाकर सुगन्धित करने के लिए अगरु का धुआँ लगाया जाता था। रसोईघरों से चूल्हों का धुआँ उठता था। गुड़ जहाँ बनाया जा रहा था वहाँ भट्ठियों से धूम्र उठता था। वेदविहित यज्ञ जहाँ हो रहे थे वहाँ होम-कुण्डों से धूम्र आ रहा था। सब धुआँ मिलकर मेघों के समान उठकर आकाश भर में व्याप्त हो गया। ७३

इयल्बुडै पॆयर्वऩ मयिऩ्मणि यिऴैयिऩ्
वॆयिलपुडै पॆयर्वऩ मिळिर्मुलै कुऴलिऩ्
पुयल्पुडै पॆयर्वऩ पॊऴिलवर् विऴियिऩ्
कयल्पुडै पॆयर्वन कडिकमऴ् कऴनि 74

अवर्–उन (उस देश की स्त्रियों) की; इयल–छटा (के सामने); पुटै पॆयर्वन–हारकर एक ओर हटनेवाले; मयिल्–मोर; मिळिर् मुलै–सुन्दर दिखनेवाले स्तन (स्तनों पर के); मणि इऴै–रत्नाभरण (के सामने); वॆयिल् पुटै पॆयर्वऩ–धूप हारकर एक ओर हट जाती है; कुऴलिऩ्–केश के सामने; पुयल्–मेघ; पॊऴिल् पुटै पॆयर्वन–बागों में (हार मानकर) जा छिपते है; अवर् विऴियिऩ्–उनकी आँखों के

सामने; कयल्—मछलियाँ; कटि कमऴ् कऴनि—सुगंध बिखेरनेवाले खेतों में; पुटै पॅयर्वन—छिप जाती है। ७४

कोशल देश की स्त्रियो की शरीर-छवि के सामने मोर की छवि टिक नहीं पाती। उनके स्तनों पर आरूढ़ रत्नाभरणो के सामने (अचलारूढ़) सूर्य की रश्मि हार मान लेती है। उनके काले घने केशों के सामने मेघ हार ही नही मानते बल्कि जाकर उपवनो में छिप जाते हैं। ठीक उसी तरह मछलियाँ उनकी आँखो से हारकर खेतो में जाकर छिप जाती है। ७४

इडैयिऱ मह्ळिर्ह ळॅऱिपुनऱ् मरुहक्, कुडैपवर् तुवरिद ऴलर्वन कुमुदम्
मडैपॅय रन्नमवर् मडनडै पयिलुम्, कडैशियर् मुहमॅन मलर्वन कमलम् 75

इटै इर्—कमर टूट जाय, ऐसा; ॲरि पुनल् मरुक—तरंग फेंकते हुए पानी विलोड़ित हो ऐसा; कुटैपवर्—स्नान करनेवाली; कटैचियर् मकळिर्—कृषक-रमणियों के; तुवर् इतऴ्—लाल अधरों की तरह; अलर्वन—खिलते है; कुमुतम्—कुमुद; मटै पॅयर् अनम्—नालियों में संचार करनेवाले हंस; अवर् मट नटै पयिलुम्—उनकी मृदु चाल का अनुकरण और अभ्यास करते; मुकम् ॲन—मुखों के समान; मलर्वन—खिलनेवाले; कमलम्—कमल हैं। ७५

स्त्रियों के अन्य अंग भी सुन्दर है। नदी में वे कमर मटकाती, जल को विलोडती स्नान करती है। तव कुमुद उनके लाल अधर देखते हैं और उन्ही की नकल में खिलते है। नालियों में संचार करनेवाले हंस उनसे चाल सीखते है। कमल उनके मुखो को देखकर खिलते हैं। ७५

विदियिनै नहुवन वयिल्विऴि पिडियिऩ्, गदियिनै नहुवन ववर्नडै कमलप्
पॉदियिनै नहुवन पुणर्मुलै कलैवाऩ्, नदियिनै नहुवन वनिदयर वदनम् 76

वनितैयर्—(वहाँ की) स्त्रियो की; अयिल् विऴि—तीक्ष्ण आंखें; वितियिनै नकुवन—विधाता का परिहास करनेवाली हैं; अवर् नटै—उनकी चाल; पिटियिऩ् कतियिनै—हथिनी की चाल का; नकुवन—परिहास करनेवाली है; पुणर्मुलै—सटे रहनेवाले स्तन; कमलम् पॉतियिनै—कमल-कलियों का; नकुवन—परिहास करनेवाले हैं; वतनम्—उनके वदन; कलै वाऩ् मतियिनै नकुवन—कलापूर्ण श्वेत (राका) चंद्र का परिहास करनेवाले होते हैं। ७६

और; उनकी तीक्ष्ण आँखें ऐसी कि वे ब्रह्मा का भी उपहास कर सकती हैं। क्योंकि वह उनके उपमान-योग्य और कोई वस्तु सृजित नहीं कर सकते। उनकी चाल हथिनी की चाल को, उनके स्तन कमल-कलियों को, और उनका वदन राका को उपहसित कर देते है। ७६

पहलिनॊ डिहलुव पडुर्मणि मडवार्, नहिलिनॊ डिहलुव नळिवळ रिळनीर्
तुहिलिनॊ डिहलुव शुदैपुरै नुरैकार्, मुहिलिनॊ डिहलुव कडिमण मुरशम् 77

पटर् मणि—विविध मणियाँ; पकलिनॊटु इकलुव—सूर्य से प्रतिद्वन्द्विता करती हैं; नळि वळर् इळ नीर्—खूब समृद्ध डाम; मटवार नकिलिनॊट इकलुव—तरुणियों के

स्तनों से प्रतिद्वन्द्विता करते हैं। चुतै पुरै नुरै–अमृत-सम जल पर उठनेवाले फेन; तुकिलिनोंटु इकलुव–उन स्त्रियों के वस्त्रों से प्रतियोगिता करते है। कटि मण मुरचङ्कळ्–श्रेष्ठ (और) विवाह के समय वजनेवाले ढोल; कार् मुकिलिनोटु इकलुव–जल गर्भित मेघों से प्रतियोगिता करते हैं। ७७

(वर्णन में तुलना का वड़ा मूल्य रहता है। तुलना के प्रकार भी अनेक है। यहाँ दो वस्तुओं में प्रतियोगिता दिखायी जाती है और प्रस्तुत वस्तुएँ उस देश के वर्णन में शोभा की वृद्धि करनेवाली है।) उस देश के लोगों के आभूषणों में जड़े रत्नों (की कांति) और सूर्य (की ज्योति) में; पुष्ट डाभों और रमणियों के स्तनों में; अमृत सदृश जल के झाग और लोगों के वस्त्रों में; विवाह के अवसर में वजनेवाले मृदंग या ढोल और मेघों में प्रतियोगिता है। ७७

कारोंडु निहर्वन कटिपॊळिलि् कळनिप्, पोरोंडु निहर्वन पॊलन्वरै यणैशूळ्
नीरोंडु निहर्वन निरैकड लिदिशाल्, ऊरोंडु निहर्वन विमैयव रूलहम् 78

कार्–मेघ; कटि पॊळिलोंटु निकर्वन–(उस देश के) उपवनों के समान हैं; पॊलन् वरै–स्वर्णमय (पर्वत) शिखर; कळनि पोर् ओंटु–खेतों के पास लगी खरहियों के साथ; निकर्वन–तुलना करते है। निरै कटल्–(जल) भरा समुद्र; अणै चूळ् नीरोंटु निकर्वन–बांध से बंधकर पड़े जल-विस्तार के साथ तुलना करता है; इमैयवर् उलकम्–देवों के लोक; निति चाल् ऊरोंटु–निधियों से पूर्ण वस्तियों की; निकर्वन–समता कर सकते हैं। ७८

(इस पद्य में समानता वतायी जाती है।) मेघों और घने अन्धकार-पूर्ण उपवनों में; स्वर्ण (पीले) रंग के पर्वत शिखरों और खेतों के पास लगी खरहियों या ढेरों में; समुद्र और बाँध के जल-विस्तार में; देव-लोक और समृद्ध नगरों या गाँवों में समानता पायी जाती है। ७८

नॆल्मलै यल्लन निरैवरु तरळम्, शॊल्मलै यल्लन तॊडुकड लमिर्दम्
नल्मलै यल्लन नदितरु निदियम्, पॊन्मलै यल्लन मणियडु पुळिनम् 79

नॆल् मलै अल्लन–धानों के पर्वत (सम ढेर) नहीं हैं यदि; निरै वरु तरळम्–पंक्तियों में लगे मोतियों के ढेर; चॊल् मलै अल्लन–वाणी-गिरियाँ (शब्द-समूह) जो नहीं है वे; तॊटु कटल् अमिर्तम्–गहरे (क्षीर-) सागर का अमृत हैं; नल् मलै अल्लन–अच्छे पर्वत (जो) नहीं हैं वे; नति तरु नितियम्–नदियों से लायी गयी निधियाँ है; पॊन् मलै अल्लन–स्वर्ण-गिरियाँ जो नहीं है वे; मणि पटु पुळिनम्–मणियों से मिश्रित बालू के ढेर है। ७९

वहाँ ढेर जो लगे है वे या तो धान के अम्वार है; या वे नही है तो मोतियों के ढेर है। वैसे ही रमणियों की मधुर वोली नही है; वह अमृत है। मामूली पर्वत यदि नही है, तो वे, समझिये, नदियों द्वारा लायी गयी निधियों के ढेर है; अगर ये ढेर नही है तो वे विविधि रत्नों से मिश्रित वालू के ढेर है। ७९

पन्दिनै यिळैयवर् पयिलिड मयिलूर्, कन्दनै यनैयवर् कलैतेरि कळहम्
शन्दन वनमल शण्पक वनमाम्, नन्दन वनमल नरैविरि पुरवम् 80

इळैयवर् पन्तिनै पयिल् इटम्–कन्याओं के गेंद खेलनेवाले स्थान; चन्तन वनम् अल–चंदन-वन नहीं; चण्पक वनम्–चंपा के वन (वन जाते) है; मयिल् ऊर्–मयूर-वाहन; कन्तनै अनैयवर्–स्कंददेव के समान रहनेवाले; कलै तेरि कळकम्–कलाओं का अभ्यास करने के स्थान; नन्तन वनम् अल–पुष्प वन नहीं; नरै विरि पुरवम्–सुवासपूर्ण चमेली की वाटिकायें है। ८०

उस देश मे युवतियों के गेंद खेलने के स्थान, और स्कन्ददेव के समान सुन्दर और बलवान तरुणों के धनुर्विद्या आदि का अभ्यास करने के स्थान क्रमशः चन्दन वन नही, चम्पा वन हैं; और नन्दन वन नही, चमेली की वाटिकायें है। भाव यह कि स्त्रियो के शरीरों की गन्ध चम्पा की सी है और पुरुषों के शरीर की चमेली की सी। उन उद्यानो मे इनके शरीरों की गन्ध उन उद्यानों के पुष्पों की गन्ध पर हावी आ जाती है। (इस पद्य की विशिष्टता उपर्युक्त उपमानों और उपमेयों को क्रमशः रखने में है)। ८०

कोकिल नविल्वन विळैयवर कुदलैप्, पाहियल् किळविक ळवर्पयि नडमे
केकय नविल्वन किळरिळ वळैयिन्, नाहुह ळुमिळ्वन नहैपुरै तरळम् 81

कोकिलम् नविल्वन–कोकिल अभ्यास करते है; इळैयवर्–तरुणियों की; कुतलै पाकु इयल् किळविकल्–तोतली, चाशनी-सी बोलियों का; केकयम् नविल्वन–मोर अभ्यास करते हैं; अवर् पयिल् नटमे–उनसे अभ्यस्त नाच ही; किळर् इळ वळैयिन् नाकुकळ्–दर्शन-रम्य शंख की तरुणियां (सीपियां); उमिळ्वन–प्रकट करती है; नकै पुरै तरळम्–(उनके) दांतों सदृश मोती। ८१

उस देश के कोकिल, स्त्रियों की तोतली, चाशनी सी मधुर बोली का अभ्यास करते है; मोर उनके विविधि नृत्यों का अभ्यास करते है। सीपियाँ जो मोती निकालती है वे उन स्त्रियो के दाँतों के समान है। ८१

पळैयर्द मनैयन पळनरै नुहरुम्, उळवर्द मनैयन वुळुतोळिल् पुरियुम्
मळवर्द मनैयन मणवोलि यिशैयिन्, किळवर्द मनैयन किळैपयिल् वळैयाळ् 82

पळैयर् तम् मनैयन–मद्य-विक्रेताओ के घरों में मिलनेवाली है; नुकरुम् पळ नरै–पेय विविध तरह की ताड़ियां; उळवर् तम् मनैयन–कृषकों के घरों में मिलनेवाले हैं; उळु तोळिल्–कृषि कर्म संबंधी सामान; मळवर् तम् मनैयन–तरुण पुरुषों के घरों में प्राप्य है; मण ओलि–विवाहोचित मंगल स्वर; इचैयिन् किळवर् तम् मनैयन–गवैयों के घरो में प्राप्य है; किळै पयिल्–राग-उपरागो के अभ्यास-योग्य; वळै याळ्–झुके दण्डवाली वीणा। ८२

ताड़ी बेचनेवालों के यहाँ पीने के लिए प्रचुर रूप से ताड़ी के कई प्रकार प्राप्य रहते है। कृषकों के घर में कृषि के सारे उपकरण और

सामान; विवाह करनेवाले तरुणों के यहाँ सब तरह के मंगल-वाद्यों का स्वर; गवैयों के यहाँ सुन्दर वीणा-वाद्य पाए जाते हैं। ८२

❀ कोदैहळ् शॊरिवन कुळिरिळ नऱवम्, पादैहळ् शॊरिवन परुमणि कनहम्
ऊदैहळ् शॊरिवन उयिरुरु ममुदम्, कादैहळ् शॊरिवन शॆविनुहर् कनिहळ् 83

कोतैकळ्—मालायें; चॊरिवन—जो चूती है (बरसाती) हैं (वे); कुळिर् इळ नऱवम्—शीतल नव मधु (शहद) है; पातैकळ् चॊरिवन—मार्ग बरसाते है; परुमणि कनकम्—बड़े-बड़े रत्न और स्वर्ण; ऊतैकळ् चॊरिवन—ठंडी हवायें बरसाती (ला देती) हैं; उयिर् उरु अमुतम्—प्राणदायिनी जल (-बूँदे); कातैकळ्—गाथाएँ; चॊरिवन—बरसाती है; चॆवि नुकर् कनिकळ्—कानों से आस्वाद्य रसों का आनन्द। ८३

लोगों की पहती पुष्प-मालाएँ शीतल नव मधु तथा जल और थल-मार्ग रत्न और स्वर्ण बरसाते हैं। दोनों प्रकार के मार्गों से सम्पत्ति खिचकर उस देश में आती है। शीतल पवन सीकर बरसाते हैं और गाथाएँ रस बरसाती है। ८३

❀ इडङ्गॊळ शायल्कण् डिळैञर् शिन्दैबोल्
तडङ्गॊळ् शोलैवाय् मलर्कॊय् ताळ्हुळल्
वडङ्गॊळ् पूण्मुलै मडन्दै मारॊडुम्
तॊडर्न्दु पोवन तोहै मञ्ञैये 84

इटम् कॊळ्—(स्त्रियों को) आश्रय बनाकर रही; चायल् कण्टु—छवि देखकर; इळैञर् चिन्तै पोल्—(जो पीछे-पीछे चलता है उस) तरुणों के मन के समान; तटम् कॊळ् चोलै वाय्—विस्तृत उपवन में; मलर् कॊय्—फूल चुननेवाली; ताळ् कुळल्—लंबी लटकनेवाली वेणी; वटम् कॊळ् पूण् मुलै—कई लड़ियों वाले हारों से शोभायमान स्तनोंवाली; मटन्तै मारॊटुम्—स्त्रियों के (साथ); तोकै मञ्ञै—कलापी मोर; तॊटर्न्तु पोवन—पीछे-पीछे चलते हैं। ८४

वहाँ की सुन्दरियों की सुन्दरता से खिचकर तरुणों का मन उनके पीछे-पीछे जाता है; और मोर भी उनके पीछे-पीछे, उनको मोरनियाँ समझकर चलते है, जब वे लम्बे लटकनेवाले केश, और आभरण-भूषित स्तन-वालियाँ उपवन में फूल चुनने जाती हैं। ८४

❀ वण्मै यिल्लयोर् वऱुमै यिन्मयाल्, तिण्मै यिल्लनेर् शॆऱुन रिन्मयाल्
उण्मै यिल्लपॊय् युरयि लामयाल्, ऒण्मै यिल्लपल् केळ्वि योङ्गलाल् 85

ओर वऱुमै इन्मैयाल्—कोई दरिद्रता नहीं रहने से; वण्मै इल्लै—दानशीलता (देखने में आती) नहीं; नेर् चॆऱुनर् इन्मैयाल्—समक्ष समर करनेवाले नहीं, इसलिए; तिण्मै इल्लै—बल नहीं; पॊय् उरै इलामैयाल्—असत्य-कथन नहीं है, इसलिए; उण्मै इल्लै—सत्य (का विशेष महत्व) नहीं; पल् केळ्वि ओङ्कलाल्—अनेक (तरह के) श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान के (होने के) कारण; ऒण्मै इल्लै—ज्ञान का प्रकाश नहीं है। ८५

वहाँ कोई दरिद्र नहीं; इसलिए दानशीलता भी नही रहती। लड़नेवाले ही नही, तो वीरता (का प्रदर्शन) कैसे हो ? असत्य का कही नामोनिशान नही और इसलिए सत्य कथन की बात ही नही उठती। सब सुन-सुनकर अच्छे ज्ञानी हो रहते है; इसलिए ज्ञान की कोई महिमा चर्चित नहीं होती। ८५

ऍळ्ळु मेनलु मिरुङ्गुञ् जामयुम्, कॊळ्ळुङ् कॊळ्ळयिर् कॊणरुम् बण्डियुम्
अळ्ळ लोङ्गळत् तमुदित् पण्डियुम्, तळ्ळु नीर्मयिर् रुलैम यङ्गुमे 86

ऍळ्ळुम्–तिल; एनलुम्–लाल कोदों और; इरुङ्कुम्–ज्वार; चामैयुम्–मड़ुआ (और); कॊळ्ळुम्–कुलथी; कॊळ्लैयिल्–अधिक परिमाण में; कॊणरुम् पण्टियुम्–(लाद) लानेवाली गाड़ियाँ और; अळ्ळल् ओङ्कु अळत्तु–बटोर लेने (के काम) अधिक जहाँ होते है उन लोनारों से; अमुतिन् पण्टियुम्–नमक (-लदी) गाड़ियाँ; तळ्ळुम् नीर्मैयिन्–ठेलने के सिलसिले में; तलै मयङ्कुम्–आपस में मिश्रित हो सट जाती हैं। ८६

उस देश के मार्गों में तिल, कोदों, ज्वार, मड़ुआ और कुलथी इन चीज़ों की भरी गाड़ियाँ, और नमक के उत्पत्ति-स्थानों से नमक लादे आनेवाली गाड़ियाँ इतनी सख्या मे चलती है कि वे मिश्रित हो जाती है। ८६

उयरुञ् जार्विला वुयिर्हळ् शॆय्विनैप्, पॆयरुम् वल्कदिप् पिरक्कु मारुपोल्
अयिरुन् देनुमिन् पाहु मायरूर्त्, तयिरुम् वेरियुन् दलैम यङ्गुमे 87

उयरुम् चार्वु इला उयिर्कळ्–उद्गति पाने के साधन न रखनेवाले जीव; चॆय् विनै–अपने कृतकर्मो (के अनुसार); पॆयरुम् पल् कति–बदल बदलकर आनेवाले विविध शरीरों में; पिरक्कुम्–जन्म लेने के; आरु पोल्–प्रकार के समान; अयिरुम्–खाण्ड; तेनुम्–शहद और; इन पाकुम्–मधुर चाशनी और; आयर् ऊर् तयिरुम्–गोप-ग्रामों के दही; वेरियुम्–ताडी सब; तलै मयङ्कुम्–आपस में घुल-मिल जाते हैं। ८७

मोक्ष पाने का साधन जुटा न सकनेवाले जीव अपने कर्मो के बन्धन में पड़कर बारी-बारी से विविध शरीरो मे जन्म लेते है। वैसे ही खाण्ड, शहद, चाशनी और दही स्थानांतरित हो जाते है यानी खाण्ड और चाशनी वन प्रदेश के है; शहद पर्वत प्रदेश का और दही खेती के प्रदेश का। वे सब अपने-अपने जन्म के प्रदेश से अन्य प्रदेशों में ले जाकर बेचे जाते हैं। ८७

कूरु पाडलुङ् गुळलिन् पाडलुम्, वेरु वेरुनिन् रिशैक्कुम् वीदिवाय्
आरु मारुम्वन् दॆदिर्न्द दामॆनच्, चारुम् वेळ्वियुन् दलै मयङ्गुमे 88

कूरु पाटलुम्–मौखिक गीत; कुळल् इन् पाटलुम्–बाँसुरी से बजाये जानेवाले गीत; वेरु वेरु निन्रु इचैक्किन्र–अलग-अलग रहकर (जिन में) स्वरित होते है उन; वीतिवाय्–वीथियों में; आरुम् आरुम् वन्तु ऍतिर्न्ततु आम् ऍन–(दो) अलग-अलग नदियाँ आमने-सामने आ गयीं, ऐसे; चारुम्–देवोत्सव देखने आए लोगों की भीड़;

और; वॆळ्वियुम्–विवाहोत्सव में शरीक होने आए हुओं की भीड़; तलै मयङ्कुम्–आपस में मिश्रित हो जाती हैं। ८८

वीथियों में भी यह विनोद चलता है। वीथियों में मौखिक गीत और वाद्य-संगीत का अलग-अलग प्रबन्ध है। उन वीथियों में एक ओर से देवता के उत्सव देखनेवाले लोगों की भीड़ आती है। दूसरी ओर से विवाहोत्सव में भाग लेने आनेवालों की भीड़ आती है। दोनों, दो नदियों के समान आकर मिल जाती हैं। तब विवाहोत्सव वाला देवता के उत्सव की भीड़ में मिल गया और उसका इसमें। इस तरह मिश्रण हो जाता है। ८८

मूक्किऱ् ऱाक्कुऱु मूरि नन्दुनेर्, ताक्किऱ् ऱाक्कुऱु परैयुन् दण्णुमै
वीक्किऱ् ऱाक्कुऱुम् विळियुमळ्ळर्तम्, वाक्किऱ् ऱाक्कुऱु मॊलियिऩ् मायुमे 89

मूक्किल् ताक्कु उऱुम्–'नाक' में फूँककर; मूरि नन्तुम्–गंभीर, शंख-नाद; नेर् ताक्किल्–चोब से; ताक्कुऱु परैयुम्–प्रहारित डंके का नाद; तण्णुमै–मर्दल का; वीक्किल् ताक्कु उऱुम् विळियुम्–डोरों से कसे होने के कारण स्पंदन के साथ उठनेवाला नाद; मळ्ळर् तम्–वीरों (सैनिकों) के; वाक्किल ताक्कु उऱुम् ऑलियिऩ्–मुख से उठनेवाले नारों के नाद में; मायुम्–लीन हो जायँगे। ८६

उस देश में सभी तरह की ध्वनियाँ उठती है— शंख बजाने की ध्वनि, डंका बजाने की ध्वनि; मर्दल बजाने की ध्वनि और वीरों के नारे (या कृषकों के बैलों को हाँकने का शोर)। पर वीरों के नारों का शोर ही सबसे वलवान है और अन्य ध्वनियाँ उसमें लय हो जाती है। ८९

तालि यैम्बडै तळुवु मार्बिडै, मालै वायमु दॊळुहु मक्कळैप्
पालि नूट्टुवार् शॆङ्गै पङ्गयम्, वालि लावुऱक् कुविदऩ् मानुमे 90

ऐम्पटै तालि तळुवुम् मार्पिटै–(श्रीविष्णु के) पंचायुध-(की नकल में बने स्वर्ण-चिह्न) बँधा मंगल-सूत्र जिस पर है उस वक्ष पर; मालै वाय् अमुतु ऑळुकुम् मक्कळै–माला की तरह (मुख से) लार टपकाने वाले नन्हे बच्चों को; पालिऩ् ऊट्टुवार् चॆङ्कै–दूध पिलानेवाली माताओं के लाल हाथ; वाल् निला उऱ–उज्ज्वल चाँदनी के लगने से; पङ्कयम् कुवितल् मानुम्–कमल के निमीलन की समता करता है। ६०

वहाँ की माताएँ अपने बच्चों को छाती पर लगाये, हाथ में दूध-भरा शंख ले उसके द्वारा उनको दूध पिला रही हैं। बच्चे की छाती पर हार है जिसमें श्रीविष्णु के पंचायुध की शकल में बने स्वर्ण-पदक आदि है। यह दोष-निवारक समझा जाता है। उनके मुख से लार टपकती है जो हार की तरह उनके वक्ष पर बहती है। माता का निमीलित लाल हाथ देख कमल का स्मरण होता है, जो चन्द्र को देख बन्द होता है। यहाँ शंख, चन्द्र है। ९०

पॊऱ्पि ऩिऩ्ऱऩ पॊलिवु पॊय्यिला, निऱ्पि निऩ्ऱऩ नीदि मादरार्
अऱ्पि निऩ्ऱऩ वऱङ्ग ळऩ्ऩवर्, कऱ्पि ऩिऩ्ऱऩ काल मारियै 91

पॊऱ्पिऩ्–आन्तरिक सुन्दरता (श्रेष्ठ गुण-पूर्णता) की ही तरह; पॊलिवु–बाहरी (शारीरिक) सुन्दरता भी; निऩ्ऱऩ–रही; पॊय्इला निऱ्पिऩ्–असत्य-रहित भाव के आधार पर; नीति निऩ्ऱऩ–नैतिकता खड़ी रही; अऱङ्कळ्–धार्मिक आचरण; मातरार् अऱ्पिऩ् निऩ्ऱऩ–स्त्रियों के प्रेम के कारण टिके रहे; अऩ्ऩवर्–उनके; कऱ्पिऩ्–सतीत्व के कारण; काल मारि–मौसमी वारिशें; निऩ्ऱऩ–(वरावर) होती रहीं। ए। ६१

उस देश के लोग शीलवान हैं; तभी उनके सौन्दर्य का महत्व है। असत्याचरण नहीं करते; इसलिए नैतिक व्यवहार स्थिर है; स्त्रियों के प्रेम के कारण धर्म-पालन उचित रूप से होता है। स्त्रियाँ सतीत्व का पालन करनेवाली होती है, इसलिए वक्त की वारिश होती है। ९१

शोलै मानिलन् दुरुवि यावरे, वेलै कण्डुता मीळ वल्लवर्
शालुम् वार्पुऩल् चरयु वुम्वल, कालि ऩोडियुङ् गण्ड दिल्लयै 92

चोलै मा निलम्–वाग, वगीचों से भरे उस देश को; तुरुवि–खोजता जाकर; वेलै कण्टु मीळ वल्लवर्–सीमा देखकर लौट आ सकनेवाले; यावर्–कौन हैं; चालुम् वार् पुनल् चरयुवुम्–वहु प्रवतहमान जल वाली सरयू ने भी; पल कालिऩ् ओटि–अनेक नालों (पैरों) में दौड़कर भी; कण्टतु इल्लै–देखा नहीं हैं; ए–ताम्। ६२

उस देश का सारा विस्तार देख आना कठिन है। वागों और उद्यानों से भरा वह देश इतना विशाल है कि कोई यह दावा नहीं कर सकता कि हम अन्वेक्षणार्थ गये और सीमाये देख आये। स्वयं सरयू भी अपने सैकड़ों नालों मे (जो उसके पैर कहे जा सकते है) चलकर सीमा देख नही सकी है। ९२

वीडु शेरुनीर् वेलै काऩ्मडुत्, तूडु पेरिनु मुलैवि लानलम्
कूडु कोशल मॆऩ्ऩुङ् गोदिला, नाडु कूऱिना नहरङ् गूऱुवाम् 93

काल् मटुत्तु–(प्रलय-कालीन) पवन के झोके खाकर; वीटु चेरुम् नीर् वेलै–तीर (मर्यादा) लांघकर आनेवाला समुद्र; ऊटु पेरिनुम्–(उस देश के) ऊपर आ जाय तो भी; उलैवु इला नलम् कूटु–नष्ट न होने का स्वभाव-विशेष रखनेवाले; कोचलम् ऍन्नुम्–कोशल नाम के; कोतु इला–दोषहीन; नाटु कूऱिनोम्–देश की वात कही; नकरम् कूऱुवाम्–नगर (अयोध्या) (की वात) कहेंगे। ६३

वह ऐसा विशिष्ट देश है जिसको प्रलयकाल में मर्यादा पार कर फैलने वाला समुद्र भी नष्ट नही कर सकता। उस देश का हमने वर्णन किया। अव अयोध्या के महानगर का वर्णन करेंगे। ९३

3 नहरप्पडलम् (नगर की महिमा)

शॆव्विय मदुरम् जेर्न्दनऱ् पॉरुळिऱ् चीरिय कूरिय तीञ्जॉल्
वव्विय कविञ रनैवरुम् वडनूल् मुनिवरुम् बुहऴ्न्ददु वरम्बिल्
ऍव्वुल हत्तो रियावरुन् दवञ्जॆय् देऱुवा नादरिक् किन्ऱ
अव्वुल हत्तो रिऴिवदऱ् करुत्ति पुरिहिन्ऱ दयोत्तिमा नहरम् 94

अयोत्ति मा नकरम्–अयोध्या का महानगर; चॆव्विय–श्रेष्ठ; मतुरम् चेर्न्त–रसात्मक; नल् पॉरुळिल् चीरिय–अच्छे अर्थ देने में विदग्ध; कूरिय–सूक्ष्मता-क्षम; तीम् चॉल्–मधुर शब्दों पर; वव्विय–अधिकार रखनेवाले; कविञर् अनैवरुम्–कवि सब; वट नूल् मुनिवरुम्–उत्तरी भाषा (संस्कृत) के मुनिगण (द्वारा); पुकऴ्न्ततु–प्रशंसित है; वरम्पु इल्–अपार; ऍव्वुलकत्तोर् यावरुम्–किसी भी लोक के सब; तवम् चॆय्तु–तपस्या करके; एऱुवान् आतरिक्किन्ऱ–(जहाँ) चढ़कर प्रवेश करने की कामना करते हैं; अ उलकत्तोर्–उस लोक के वासी; इऴिवतऱ्कु–उतर नीचे आने की; अरुत्ति पुरिकिन्ऱतु–कामना करने का लक्ष्य-स्थान रहता है। ९४

अयोध्यानगर की यह महिमा है कि, प्रसादगुण-पूर्ण, रससिक्त, अर्थ-गर्भित और सूक्ष्म भावों के द्योतक शब्दों को अपने वश में रखनेवाले सभी भाषाओं के कवियों ने उसकी प्रशंसा की है; संस्कृत के मुनियों ने उसको सराहा है। और स्वयं श्रीवैकुंठलोक के, जहाँ किसी भी लोक के लोग आरोहण करके प्रवेश पाने की कामना करते हैं, वासी भी अयोध्या में उतर आना चाहते हैं। ९४

निलमहण् मुहमो तिलहमो कण्णो निऱैनॆडु मङ्गल नाणो
इलहुपूण् मुलैमे लारमो वुयिरि न्िरुक्कयो तिरुमहट् किनिय
मलर्हॉलो मायोन् मारबिनन् मणिहल् वैत्तपॉन् पॆट्टियो वानोर्
उलहिन्मे लुलहो वूऴियि निऱुदि युऱैयुळो यादॆन वुरैप्पाम् 95

निलमकळ् मुकमो–क्या भूदेवी का मुख है; तिलकमो–तिलक; कण्णो–आँखें; पूण् इलकुम्–आभरण-विभूषित; मुलै मेल् आरमो–स्तनों पर (के) मुक्ताहार; निऱै–उत्तम; नॆडु–महिमामय; मङ्कल नाणो–मंगल-सूत्र; उयिरिन् इरुक्कैयो–प्राणों का वासस्थान; तिरु मकट्कु इनिय मलर् कॉल् ओ–श्री लक्ष्मीदेवी का प्रिय (कमल-)पुष्प; मायोन् मार्पिल्–मायावी (विष्णु देव) के वक्ष के; नल् मणिकळ् वैत्त पॉन् पॆट्टियो–श्रेष्ठ कौस्तुभ मणि आदि आभरण रखने का स्वर्ण-निर्मित सन्दूक; वानोर् उलकिन् मेल् उलको–देवलोक से बढ़कर श्रेष्ठ (वैकुंठ) लोक; ऊऴियिन् इऱुति उऱैयुळो–युगांत में सभी जीवों का आश्रय-स्थान (श्री विष्णु का उदर); यातु ऎन–कौन सा है, यह; उरैप्पाम्–कहें। ९५

क्या यह अयोध्या भूदेवी (श्रीमन्नारायण की दो देवियों में एक) का मुख है? उनके मुख का तिलक है? मुख की आँखें है? वक्ष पर रहनेवाले आभरणों में मुख्य मुक्ताहार है? या अन्य आभरणों को महिमा प्रदान करनेवाला मंगलसूत्र है? या उनका जीव-स्थान है?

या श्री लक्ष्मीदेवी (श्रीविष्णु की देवियों में दूसरी) का आसन, कमल है? या वह स्वर्ण-मंजूषा है जिसमें श्रीविष्णु के कौस्तुभमणि आदि आभूषण रक्षित किये गये है? या स्वर्ग से ऊँचा या श्रेष्ठ श्रीवैकुंठलोक है? या प्रलयकाल में, जहाँ सभी जीव समा लिये जाते है वह श्रीविष्णु का दिव्य उदर है? क्या कहा जाय? । ९५

उमैक्कोरु पाहत् तोरुवनु मिरुवरक् कोरुतनिक् कोळुननु मलर्मेल्
कमैप्पॆरुञ् जॆल्वक् कडवुळु मुवमै कण्डिल रङ्गदु काण्वान्
अमैप्परुङ् गाद लदुपिडित् तुन्द वन्दरञ् जन्दिरा दित्तर्
इमैप्पिलर् तिरिव रदुवला लिदनुक् कियम्बला मेदुमऱ् ऱियादो 96

उमैक्कु ओरु पाकत्तु ओरुवनुम्–उमा को (शरीर) का एक भाग देनेवाले एक देव; इरुवर्क्कु ओरु तनि कोळुननुम्–दो (भूदेवी, श्रीदेवी) का एक पति और; अलर् मेल्–(श्री विष्णु के) नाभिकमल पर उद्भूत; अमै पॆरुम् चॆल्वम् कटवुळुम्–क्षमा-निधि (ब्रह्मा) देवता; उवमै कण्टिलर्–उस नगर की उपमा नहीं जानी है; अतु काण्पान्–उसको देखने के लिए; अमैप्पु अरु–अदम्य; कातल् अतु पिटित्तु उन्त–चाह की प्रेरणा से; चन्तिर आतित्तर्–चन्द्र और सूर्य; अन्तरम्–आकाश में; इमैप्पु इलर्–पलक मारे विना; तिरिवर्–घूमते है; इतनुक्कु इयम्पल् आम् एतु–इसका जो कहा जाय वह हेतु; अतु अल्लाल्–वह नही तो; मऱ्ऱु यातो–दूसरा है क्या? । ९६

अयोध्या से उपमेय और कोई नगर कही नही है। स्वयं शिवजी, जिनका आधा अग पार्वतीदेवी का हो गया, विष्णु जिनके दो देवियाँ है, और ब्रह्मा जो क्षमाशील है इसके सदृश किसी नगर को नही जानते। चन्द्र और सूर्य भी निद्रा त्याग कर उपमेय नगर ढूँढ निकालने के विचार से ही बरावर घूम रहे है। फिर क्या हेतु माना जाय उनके इस अटूट भ्रमण का? । ९६

अयिन्मुहक् कुलिशत् तमरर्को नहरु मळहयु मॆन्ऱिवै ययनार्
पयिलुऱ वुऱ्ऱ पडिपॆरुम् पान्मै पहर्तिरु नहरिदु पडैप्पान्
मयन्मुदऱ् ऱॆय्वत् तच्चरुन् दत्त मनत्तोळिल् नाणिनर् मऱन्दार्
पुयऱोडु कुडुमि नॆडुनिलै माडत् तिन्नहर् पुहलु माऱॆवनो 97

अयिल् मुक कुलिचत्तु–तीक्ष्ण-मुखी कुलिश (वज्र) के; अमरर् कोन् नकरुम्–देवेन्द्र का नगर, और; अळकैयुम्–अलकापुरी, और; ऎन्ऱ इवै–ये विख्यात नगर; अयनार्–अजदेव; पॆरुम् पान्मै पकर्–बहुत ही प्रशंसा (जिसकी) सब करते हैं; तिरुनकर् इतु–उस श्री सम्पन्न नगर इसको; पटैप्पान्–सृष्टि करने के लिए; पयिलुऱवु उऱ्ऱपटि–पूर्वाभ्यास के प्रयत्न थे; मयन् मुतल् तॆय्व तच्चरुम्–मय आदि देव-शिल्पी भी; नाणिनर्–लज्जायुक्त हुए; तम् तम् मनम् तोळिल् मऱन्तार्–और अपनी-अपनी संकल्प-मात्र से निर्माण करने की शक्ति भूल गये; पुयल् तोटु कुटुमि–

मेघ-स्पर्शी शिखरों के साथ; नॅट्टु निलै माटत्तु–ऊँचे सौधों से पूर्ण; इ नकर्–इस नगर की महिमा; पुकलुम् आरु ऍवन्–कहना किस प्रकार होगा ? । ९७

वज्र-पाणी इन्द्र की अमरावती, और कुबेर की अलकापुरी की सृष्टि, ब्रह्माजी ने इस अयोध्या नगरी के निर्माणार्थ अनुभव प्राप्त करने के लिए पूर्वाभ्यास के रूप में ही की थी; मय आदि देवशिल्पियों ने इसको देखा तो वे अवाक् रह गये। उन्हें लज्जा का अनुभव हुआ और वे संकल्पमात्र से नगर-निर्माण की विद्या-शक्ति भूल गये। ऐसी बात है तो उस अयोध्या की महिमा का बखान कैसे हो ? उसके अन्दर निर्मित भवन की चोटियाँ मेघमण्डल को छूती हैं। ९७

पुण्णियम् बुरिन्दोर् पुहुवदु तुरक्क मॅन्नुमी दरुमरैप् पॉरुळे
मण्णिडै याव रिराहव नन्नि मादव मरत्तॉडु वळर्त्तार्
ऍण्णरुङ् गुणत्ति नवनिनि दिरुन्दिव् वेळुल हाळिड मॅन्राल्
ऑण्णुमो वदनिन् वेरॉरु पोह वुरैविड मुण्डॅन वुरैत्तल् 98

पुण्णियम् पुरिन्तोर्–पुण्य-कर्म करनेवाले; पुकुवतु–पहुँचते हैं; तुरक्कम्–स्वर्गलोक; ऍन्नुम् ईतु–कथन यह; अरु मरै पॉरुळे–अपूर्व वेदों में कथित तथ्य है, अवश्य; मण्णिटै–भूतल में; इराकवन् अन्रि–श्री राघव के सिवा; यावर् ताम्–और किसने; अरत्तॉटु मा तवम् वळर्त्तार्–धर्म के साथ तपस्या का भी पालन किया; ऍण्ण अरु–गिनने (के लिए) अशक्य; कुणत्तिन् अवन्–गुणों के स्वामी वे; इनितु इरुन्तु–सुख से रहकर; इव् एळ् उलकु–इस सप्त-द्वीप वाले भू-लोक का; आळ् इटम्–जहाँ से शासन करते थे वह (राजधानी) स्थान है; ऍन्राल्–ऐसा है तो; पोकम् उरैवु वेरु ऑरु इटम्–भोग-स्थान और कोई लोक; उण्टु ऍन उरैत्तल्–है, ऐसा कहना; ऑण्णुमो–साध्य है क्या ? । ९८

यह अनोखी बात देखिए— पुण्यकर्म करनेवालों के लिए भोग-भूमि स्वर्ग माना जाता है। यह वेदों का कथन है अतः सत्य हो सकता है, पर स्वयं श्रीराम से बढ़कर धर्म और तप के पोषक कौन थे ? अनन्त कल्याण-गुण-पूर्ण वे स्वयं इसी नगर में रहकर तो, सहस्रों वर्ष सप्त-द्वीप-रूपी भूलोक का शासन करते रहे। फिर किसी दूसरे स्थान को स्वर्ग कहना कहाँ तक युक्तिसंगत है ? । ९८

तङ्गुपे ररुळुन् दरुममुन् दुणैयात् तमबहैप् पुलन्गळैन् दविक्कुम्
पॉङ्गुमा दवमु जानमुम् बुणर्न्दोर् यावर्क्कुम् बुहलिड मान
शॅङ्गण्माल् पिरन्दाण् डळप्परुङ् गालन् दिरुविन्वीर् रिरुन्दन नॅन्राल्
अङ्गण्मा जालत् तन्नह रॉक्कुम् पॉन्नह रमरर्नाट् टियादो 99

तङ्कु पेर् अरुळुम्–जन्म-सिद्ध करुणा और; तरुममुम्–धर्म को; तुणै आक–साधन बनाकर; तम् पकै पुलन्कळ्–अपने शत्रु, इन्द्रिय; ऐन्तु अविक्कुम्–पाँचों का दमन करके; पॉङ्कुम् मातवमुम्–बढ़ती जानेवाली तपस्या; ञानमुम्–और प्राप्त होनेवाला) तत्व ज्ञान; पुणर्न्तोर् यावर्क्कुम्–(इनमें) जो सिद्ध हो गये हैं,

(चाहे गृहस्थ हों या संन्यासी) उन सब के लिए; पुकलिटम् आन–आश्रय स्थान जो है; चॅम्मै कण् माल्–ताम्राक्ष श्री विष्णु; पिऱन्तु–जन्म ले, (अवतार कर); आण्टु–शासन कर; अळप्पु अऱु कालम्–अगणित काल तक; तिरुविन्–श्री लक्ष्मीदेवी (सीताजी) के साथ; वीऱ्ऱिरुन्तनन्–विराजते थे तो; अम् कण् मा ञालत्तु–सुन्दर और विशाल भूलोक के; इ नकर् ऑक्कुम्–इस नगर की समानता करनेवाला; पॊन् नकर्–श्रेष्ठ नगर; अमरर् नाट्टु यातु–देवों के लोक में कौन सा है ? (ओ–नकारात्मक अर्थ देनेवाली ध्वनि) । ९९

ये श्रीराम सब के शरण्य है। दया और धर्म का सहारा लेकर अपनी, शत्रुरूपिणी पंचेंद्रिय का दमन कर, तपस्या और तत्वज्ञान में बढ़ने-वालों के लिए, चाहे वे गृहस्थ हों, चाहे संन्यासी, ये ही पुण्डरीकाक्ष श्रीनारायण (जिनके अवतार श्रीराम है) प्राप्य स्थान है। वे स्वयं, श्रीलक्ष्मी-सीतादेवी के साथ अनन्तकाल तक यहीं अपना मंगलमय जीवन बिताते थे तो विशाल और सुन्दर, इस भूलोक के इस नगर अयोध्या की समता देवलोक मे कौन सा नगर कर सकेगा ? । ९९

अरशॅला मवण वणियॅला मवण वरुम्बॅऱन् मणियॅला मवण
पुरशैमाल् कळिऱुम् पुरवियुन् देरुम् बूदलत् तियावयु मवण
विरशुवार् मुनिवर् विण्णव रियक्कर् विज्जयर् मुदलिनो रॅवरुम्
उरैशॅय्वा राना रानपो दिदनुक् कुवमैदा नरिदर वुळदो 100

अरचु ऍलाम् अवण–राजा सब वहाँ; अणि ऍलाम् अवण–आभरण सब वहाँ; पॅऱल् अरु मणि ऍलाम् अवण–दुष्प्राप्य रत्न सब वहीं; पुरचै माल् कळिऱुम्–गले में रस्सी-बँधे बड़े हाथी; कुतिरैकळुम्–अश्व; तेरुम्–रथ (और); पूतलत्तु यावैयुम्–भूतल के अन्य सभी; अवण–वहाँ (प्राप्य); विरचुवार्–वहाँ आकर ठहरे हुए; मुनिवर्–मुनिगण; विण्णवर्–स्वर्गवासी देव; इयक्करुम्–यक्ष और; विञ्चैयर्–विद्याधर; मुतलिनोर् ऍवरुम्–आदि सभी; उरै चॅय्वारानार्–प्रशंसाकारी हुए; आन पोतु–जब ऐसा हुआ; इतनुक्कु उवमै अरितर उळतो ? – इसकी उपमा बोध-गम्य है ? (तान्–पूरक ध्वनि) । १००

उसी नगर में सभी देशों के राजा रहते है। जितने आभरण हो सकते है वे सब यही आ गये; अपूर्व मणियाँ सभी यही; बड़े-बड़े हाथी, श्रेष्ठ अश्व, अनेक रथ; और अन्य कितनी ही वस्तुएँ यहाँ आ चुकी है। वहाँ आकर ठहरे हुए मुनि, सुर, यक्ष, विद्याधर, आदि सभी उसकी बड़ी प्रशसा करते है तो उसकी उपमा, हमारी समझ में अन्यत्र कहाँ हो सकती है ? । १००

नाल्वहैच् चदुरम् विदिमुऱै नाट्टि ननिदव वुयर्न्दन पनितोय्
माल्वरैक् कुलत्तिल् यावयु मिल्लै यादला लुवमैमर् ऱिल्लै
नूल्वरैत् तॊडर्न्दु बयत्तॊडु पळहि नुणङ्गिय नूलव रुणर्वे
पोल्वहैत् तल्ला लुयर्विनो डुयर्न्द दॆन्नलाम् पॊन्मदि निलैये 101

पनि तोय् माल् वरै कुलत्तिल्–हिमाच्छादित बड़े-बड़े पर्वतों की श्रेणियों में; नाल् चतुरम् वकै–चौकोर; वितिमुरै नाट्टि–(वास्तु-विद्या-) विधिवत् निर्मित; ननितव उयर्न्तन–बहुत ऊँचे बने (पर्वत); यावैयुम् इल्लै–कोई नहीं हैं; आतलाल्–इसलिए; पोन् मतिल् निलै–स्वर्णमय प्राचीरों के रूप की; उवमै मर्रु इल्लै–उपमा दूसरी नहीं है; नूल् वरै तोटर्न्तु–अनेक शास्त्र-पारंगत हो; पयत्तोटु पळ्कि–शास्त्राध्ययन के फलों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के अधिकारी बनकर, और; नुणङ्किय नूलवर्–सूक्ष्म ग्रन्थ-श्रवण से प्राप्त ज्ञान रखनेवाले विद्वज्जनों के;- उणर्वे पोल् वकैत्तु–ज्ञान की श्रेणी के है; अल्लाल्–इसके अलावा; उयर्न्ततु एवर्रिलुम् उयर्न्ततु–उच्च सभी में सर्वोच्च है; अन्नतलाम्–यह कहा जा सकता है। १०१

अब प्राचीरों की बात लीजिए। क्या कोई पर्वत है जो इतना ऊँचा चौकोर, और वास्तु-शास्त्र-सम्मत रीति से बना मिलता है? चाहे हिमाच्छादित पर्वत-श्रेणियों में ही ढूँढ क्यों न ले ? इसलिए उसकी उपमा और कुछ नही है। उनकी ऊँचाई की बात लें तो उन लोगों का ज्ञान, जो सर्वशास्त्र-पारंगत हैं, जिनका श्रवण से प्राप्त ज्ञान गम्भीर है और जो अध्ययन के चारों (धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष) पुरुषार्थों के भोक्ता हो गए हैं, उनकी ऊँचाई की समता शायद कर सकता है तो कर सकता है। और कहना ही हो तो सर्वोच्च जितने भी है उनमें सबसे ऊँचे हैं ये प्राचीर। १०१

मेवरु मुणर्वु मुडिविला मैयिनाल् वेदमु मोक्कुम्विण् पुहलाल्
तेवरु मोक्कु मुनिवरु मोक्कुन् दिण्पोरि यडक्किय शेयलाल्
कावलिर् कलैयूर् कन्नियै योक्कुञ् जूलत्ताऱ् काळियै योक्कुम्
यावरुन् दन्नै येय्दुदर् करिय तन्मैया लीशनै योक्कुम् 102

मेवु अरुम् उणर्वुम्–किसी भी विषय में प्रविष्ट होकर उसको ग्रहण करनेवाली मति द्वारा भी; मुटिवु इलामैयाल्–पार पाना साध्य नहीं है, अतः; वेतमुम् ओक्कुम्–वेदों की समानता करते है; विण् पुकलाल्–आकाश तक पहुँचने से; तेवरुम् ओक्कुम्–देवों से तुलते हैं; तिण् पोरि अटक्किय चेयलाल्–सशक्त इंद्रिय (घातक यन्त्र) वश में रखने के कृत्य से; मुनिवरुम् ओक्कुम्–मुनियों की समता करेंगे; कावलिल्–रक्षा में; कलै ऊर् कन्नियै–हरिण-वाहना, कन्या देवता, दुर्गा के समान है; चूलत्ताल्–शूल (धारण) से; काळियै–कालिका के; ओत्तिरुक्कुम्–समान बनाये हुए है; यारुम्–कोई भी; तन्नै एय्तुतर्कु अरिय तन्मैयाल्–अपने पास पहुँच जाय–यह कठिन है, इस धर्म से; ईचनै ओक्कुम्–सर्वेश्वर के समान हैं। १०२

ये एक तरह से वेदों के समान कहे जा सकते हैं। प्राचीर, और वेद, दोनो का अन्त सूक्ष्म से सूक्ष्म मति भी नही पा सकती। आकाश में पहुँच गए है, अतः ये प्राचीर देवों के समान है; ये मुनियों के समान है क्योंकि मुनि अपनी बलवान इन्द्रियों को अपने वश में रखते है और प्राचीरों के वश में शत्रुघातक यन्त्र रखे रहते है। नगर की रक्षा करने के कारण प्राचीर और हरिणवाहना दुर्गा में साम्य है। लोहे के शूल प्राचीरों पर, गाज से रक्षा के लिए लगाये गये हैं और कालिकादेवी का आयुध त्रिशूल

है। इन दोनों में इसीसे साम्य माना जाता है। सर्वेश्वर और प्राचीर में यह साधर्म्य है कि इन दोनों के पास जाना सुलभ नहीं। १०२

पञ्जिवान् मदियै यूट्टिय वन्नैय पडरुहिर्प् पङ्गयच् चॅङ्गाल्
वञ्जिपोन् मरुङ्गुऱ् कुरुम्बैपोऱ् कॊङ्गै वयङ्गुवेय् वॆत्तमॆन् पणैत्तोळ्
अञ्जॊलार् पयिलु मयोत्तिमा नहरि नऴ्हुडैत् तॊवॆन वऱिवान्
इञ्जिवा नोङ्गि यिमैयव रुलहङ् गाणिय वॆऴुन्ददॊत् तुळदे 103

इञ्चि–प्राचीर; वान् मतियै–आकाश के चन्द्रों को; पञ्चि ऊट्टिय अन्नैय–महावर लगाकर लाल किया गया हो ऐसा; पटर् उकिर्–उज्ज्वल नखों वाले; पङ्कयम् चॅम् काल्–कमल जैसे लाल चरण; वञ्चि पोल् मरुङ्कुल्–लता के समान (महीन) कमर; कुरुम्पै पोल् कॊङ्कै–डाभ के समान स्तन; वयङ्कु वेय् वॆत्त–छविमान बांस-सदृश रहनेवाली; मॆन् पणै तोळ्–मृदुल सुडौल भुजाएँ; अम् चॊल्–सुन्दर वाणी; आर्–(इन से) युक्त स्त्रियों से; पयिलुम्–भरे रहनेवाले; अयोत्ति मा नकरिन्–अयोध्या-महानगर के समान; इमैयवर् उलकम्–देवों का लोक; अऴकु उटैत्तो ऍन अऱिवान्–सुन्दरता रखता है क्या, यह जानने के लिए; वान् ओङ्कि–आकाश में ऊँचा उठकर; काणिय–देखने के लिए; ऍऴुन्तत्तु ऒत्तु उळतु–उठे से रहते है। १०३

प्राचीर की ऊँचाई देखकर कवि कल्पना करता है कि प्राचीर, "देवलोक अयोध्या की समानता करनेवाला है क्या?" यह देखने के लिए बहुत-बहुत ऊपर उठे हुए है। अयोध्या मे सुन्दर स्त्रियाँ बहुत है। उनके पैरों के नख लाली लगे चन्द्रों के समान हैं; पैर कमल के समान हैं; कमर वल्ली के समान पतली; डाभ के समान स्तन; बाँस के समान भुजाएँ हैं। वे सुन्दर और मधुर बोलनेवालियाँ है। इनके कारण अयोध्या सुन्दर बना है। प्राचीर यह जानने को उत्सुक है कि क्या देवलोकों की स्त्रियाँ ऐसी सुन्दर हैं और देवलोक अयोध्या के समान सुन्दर हैं? १०३

कोलिडै युलह मळत्तलिऱ् पहैञर् मुडित्तलै कोडलिन् मनुविन्
नूलिडै नडक्कुञ् जॆव्वयिन् यार्क्कु नोक्करुङ् गावलिन् वलियिन्
वेलॊडु वाळ्विऱ् पयिऱ्ऱलिन् वॆय्य शूऴ्च्चियिन् वॆलऱ्करु नलत्तिन्
शालुडै युयर्विऱ् चक्कर नडत्तुन् दन्मैयिऱ् ऱलैवरॊत् तुळदे 104

उलकम्–देश को; कोल् इटै अळत्तलिन्–(राज) दण्ड से मापने में (शासित करने में); पकैञर्–शत्रुओं के; मुटि तलै–किरीटधारी सिरों को; कोटलिन्–वश में कर लेने में; मनुविन् नूल् इटै नटक्कुम् चॆव्वैयिन–मनु-धर्म-शास्त्र के अनुसार चलने के आर्जव में; यार्क्कु नोक्करुम् कावलिन्–किसी को भी देखने न देनेवाली रक्षा (के प्रबन्ध) से; वलियिन्–बल में; वेलॊटु, वाळ, विल् पयिऱ्ऱलिन्–बर्छियाँ, तलवारें, धनुष आदि के व्यवहार करने में; वॆय्य चूऴ्च्चियिन्–भयंकर (राज) तन्त्र में; वॆलऱ्कु अरु नलत्तिन्–अजेय बल-विक्रम में; चाल् उटै उयर्विन्–शीलवान बड़प्पन में; चक्करम् नटत्तुम् तन्मैयिन्–(आज्ञा) चक्र चलाने के धर्म में; तलैवर ऒत्तु उळतु–(अपने) स्वामियों (रविकुल के राजाओं) के समान थे। १०४

ये प्राचीर अपने ही मालिक रवि-कुल-राजाओं के समान हैं। कवि, शब्द-प्रयोग-चातुर्य से इसको सिद्ध करते हैं। राजा दण्ड द्वारा शासन का काम करते हैं; प्राचीर माप-दण्ड द्वारा नापे जाते हैं। राजा अपनी सेना के बल से और प्राचीर अपने रक्षकों द्वारा शत्रुओं के सिर गिरा देते है या झुका देते है। राजा, मनु के शास्त्र के अनुसार चलते है और प्राचीर भी मनु नामक देव-शिल्पी के लिखे शास्त्र के अनुसार बने है। राजा और प्राचीर दोनों को कोई आँख उठाकर नहीं देख सकता, दोनों के रक्षा के प्रबन्ध प्रबल है। दोनों बलवान हैं। दोनों के पास बर्छे, तलवारें और धनुष आदि आयुध प्रयोग में है। राजाओं के पास राज-तन्त्र है और प्राचीरों के अन्दर गूढ़-यन्त्र हैं। दोनों अजेय हैं। राजा के पास श्रेष्ठ गुण है; प्राचीरों में गुप्त-मार्ग आदि विशेषतायें हैं। राजा आज्ञा-चक्र चलाते हैं; प्राचीरों से चक्रायुध चलते हैं। १०४

शिन्नत्तयिल् कॉलैवाळ् शिलैमळुत् तण्डु शक्करन् दोमर मुलक्कै
कन्नत्तिडै युरुमिन् वॅरुवरुङ् गवण्ग लॅन्रिवै कणिप्पिल कॉदुहिन्
इन्नत्तयु मुवणत् तिरैयैयु मियङ्गु कालैयु मिदमल निन्नैवार्
मनत्तयु मॅरियुम् बॉरियुळ वॅन्रात् मरिनि युणरत्तुव दॅवनो 105

कॊतुकिन् इन्नत्तैयुम्–मच्छड़-कुल को; उवणत्तु इरैयैयुम्–खग-पति (गरुड़) को और; इयङ्कु कालैयुम्–चंचल पवन को; इतम् अल निन्नैवार् मन्नत्तैयुम्–हितेतर (अहित) सोचनेवालों के मन को; ॲरियुम्–प्रहारित करनेवाले; चिन्नत्तु अयिल्–कोपिष्ठ बर्छे; कॉलै वाळ्–घातिनी तलवारे; चिलै–धनुष; मळु–परशु; तण्टु दण्डायुध; चक्करम्–चक्रायुध; तोमरम्–तोमर और; उलक्कै–मूसल और; कनत्तु इटै उरुमित्–मेघ-मध्य वज्र के समान; वॅरु वरुम् कवण्कल्–भयोत्पादक ढेले बाँस; ॲन्र इवै–ऐसे और अन्य; कणिप्पु इल पॊरि–गणनाहीन आयुध; उळ ॲन्राल्–रहते हैं—(कह दिया) तो; मरु इनि उणरत्तुवतु ॲवन–और कहने के लिए क्या है ? । १०५

उस परकोटे के अन्दर ऐसे आयुध हैं जो छोटे से छोटे मच्छड़ों को भी मार सकते हैं; और बड़े पक्षी गरुड़ को भी। सूक्ष्म और चंचल पवन को भी आहत कर सकती है; अहित सोचनेवाले मन को भी। उनके अन्दर बर्छे, तलवारें, धनुष, परशु, दण्ड, चक्र, तोमर, मूसल, वज्र-सम ढेलाबाँस; ऐसे अगणित हथियार हैं। इतना कह दिया गया तो फिर कहने को क्या बचा है ? । १०५

पूणिनुम् बुहळ्वे यमैयुमॅन् ऱिन्नैय पॊर्पिन्निन् ऱुयिर्नन्ति पुरक्कुम्
याणरॅण् डिशैक्कु मिरुळर विमैक्कु मिरवितन् कुलमुद निरुबर्
शेणैयुङ् गडन्दु दिशैयैयुङ् गडन्द तिहिरियुम् जॅन्दनिक् कोलुम्
आणैयुङ् गाक्कु मायिनु नहरुक कणियॅन्न वियर्रिय दन्नरे 106

पूणिनुम् पुकऴे अणियुम्–आभरण से बढ़कर यश ही श्लाघ्य है; ॲन्ऱु इत्तैय पॉऱ्‌पिल् निन्ऱु–ऐसे इस सुन्दर सिद्धान्त पर स्थित होकर; उयिर् ननि पुरक्कुम्–(प्रजा-जनों) जीवों का परिपालन करनेवाले; याणर् ॲण् तिचैक्कुम्–सुन्दर आठों दिशाओं में; इरुळ् अऱ–अन्धकार हटाते हुए; इमैक्कुम्–प्रकाश देनेवाले; इरवि तन् कुलम्–रवि के कुल के; मुतल् निरुपर्–(राजाओं मे) प्रथम गणनीय राजाओं के; चेणैयुम् कटन्‍त–आकाश-लोक को भी पार करके; तिचैयैयुम् कटन्त–दिशाओं को भी पार करनेवाले; तिकिरियुम्–(आज्ञा-) चक्र और; तनि चॅङ्कोलुम्–अनुपम राजदण्ड; आणैयुम्–आज्ञायें; काक्कुम् आयिनुम्–रक्षा कर सकते हैं तो भी; नकरुक्कु अणि–नगर का शृंगार; ॲन–समझकर; इयऱ्‌ऱियतु–निर्मित हैं (वे प्राचीर)। (अन्ऱु–ए–पूरक ध्वनियाँ।)। १०६

ऐसे परकोटे के कारण ही वह अयोध्या सुरक्षित रही सो बात नहीं। स्वय राजाओ का आज्ञाचक्र (जो शासन का प्रतीक है), राज-दण्ड (जो दण्ड-विधान का प्रतीक है) और उनकी आज्ञाओं के मौखिक वचन ही काफी थे। क्योकि वे राजा, यश को ही अलंकार मानकर चलनेवाले थे। प्रजा-पालन मे दक्ष थे। वे उस रवि के कुल के थे जिसका प्रकाश सर्वत्र और सभी दिशाओं का सारा अन्धकार दूर करता है। इसलिए उनकी आज्ञा सभी दिशाओं में मानी जाती थी। तो भी नगर के शृगार को आवश्यक समझ, अलंकार के रूप में ये परकोटे बनाये गये थे। १०६

अन्‍नमा मदिलुक् काऴिमाल् वरैयै यलैहडल् शूऴ्न्दन वहऴि
पॉन्‌विलै महळिर् मनमॅनक् कीऴ्पोय्प् पुन्कवि यॅनत्तॅळि विन्‍ऱिक्
कन्‌निय रलहुड् रडमॅन यार्क्कुम् पडिवरुङ् गाप्पिन दाहि
नन्‌नॅऱि विलक्कुम् पॉऱियॅन वॅऱियुङ् गरात्तदु नविललुऱ् ऱदुनाम् 107

आऴि माल् वरैयै–विपुल चक्रवाल गिरि को; अलै कटल् चूऴ्न्त अन्न–लहरानेवाले समुद्र ने घेर लिया, ऐसा; अन्न मा मतिलुक्कु अकऴि–उस परकोटे की परिघा; पॉन् विलै मकळिर् मनम् ॲन–वेश्या के मन के समान; कीऴ् पोय्–नीचे जाकर (गहरी बनी); पुन् कवि ॲन–(प्रतिभा-हीन कवि की) हीन कविता के समान; तॅळिवु इन्‍ऱि–प्रसाद-गुण से रहित; कन्‌नियर्–कन्याओ के; अलकुल् तटम् ॲन–जघन प्रदेश के समान; यार्क्कुम् पटिवु अरु–किसी के लिए भी अथाह; काप्पिनतु आकि–सुरक्षित हो; नल् नॅऱि विलक्कुम् पॉऱि ॲन–सन्मार्ग छोड़नेवाली इंद्रिय के समान; ॲऱियुम्–हानि पहुँचानेवाले; करात्ततु–मगरों से भरी है; नाम् नविलल् उऱ्‌ऱतु–हम (जिसका) वर्णन करने चले। १०७

अब खाई का वर्णन है। पुराण बताते हैं कि सारी पृथ्वी को चारों ओर से चक्रवालगिरि घेरे रहती हैं और उस गिरि को एक 'बाह्य-महासागर' घेरे रहता है। अयोध्यानगर का परकोटा उस चक्रवाल के समान है और उसकी खाई उस महासागर के समान। वह गहरी है—वेश्या के मन के समान गहरी; क्षुद्र-कविकृत कविता के समान अस्पष्ट (मैली); कुलीन कन्या के अंगों के समान अथाह रूप से सुरक्षित; और

कुमार्गगामी इन्द्रियों के समान हिंस्र मगरों से युक्त है। उसी का कवि आगे भी वर्णन करता है। १०७

एहु हिन्नर दङ्ग णङ्ग ळोडु मॅल्लै काण्गिला
नाह मॊन्ऱ हन्कि डङ्गै नाम वेलै यामॆन्ना
मेह मॊण्डु कॊण्डॆ ळुन्दु विण्डॊ डरन्द कुन्ऱमॆन्
ऱाह नॊन्दु निन्ऱु तारै यम्म दिऱ्कण् वीशुमे 108

मेकम्, ॲल्लै काण्किला–मेघ, (विस्तार) सीमा अदृश्य हो; नाकम् ऑन्ऱु–पाताल तक जाकर, रही; अकन् किटङ्कै–विस्तृत उस खाई को; नामम् वेलै आम् अॅना–डरावना समुद्र मानकर; एकुकिन्ऱ तम् कणङ्कळोटुम्–जानेवाले अपने समूहों के साथ (जाकर); मॊण्टु कॊण्टु–(जल) भर लेकर; अ मतिल् कण्–उस प्राचीर पर; आकम् नॊन्तु निन्ऱु–शरीर के थक जाने से, ठहर कर; विण् तॊटर्न्त कुन्ऱम् ॲन्ऱु–गगन-व्यापी पर्वत समझकर; तारै वीचुम्–धारे बरसा देते है। १०८

मेघ आते हैं। उस पाताल तक गहरी खाई को समुद्र ही समझ लेते है। वस, वहीं जल भर लेते है। ऊपर उठते है तो प्राचीर इतने ऊँचे है कि वे उन्हें पार कर नहीं पाते। थक जाते है और वही पानी गिरा देते हैं। यहाँ खाई का विस्तार, उसकी गहराई और प्राचीर की ऊँचाई—इनकी ओर संकेत है। १०८

अन्द माम दिऱ्पु ऱत्त हत्तॆ ळुन्द लर्न्दुनीळ्
कन्द नाऱु पङ्ग यत्त कान मान मादरार्
मुन्दु वाण्मु हङ्ग ळुक्कु डैन्दु पोत्त मॊय्म्बॆलाम्
वन्दु पोर्वि ळैक्क माम दिल्व ळैन्द दॊक्कुमे 109

अन्त मा मतिल् पुऱत्तु–उस महान प्राचीरों के पार्श्व में; अकत्तु ॲळुन्तु–खाई के अन्दर से उगकर; अलर्न्तु–खिलकर; नीळ् कन्तम् नाऱु–खूब महकनेवाले; पङ्कयत्त कानम्–(जो) पंकज-कानन (रहा वह); मानम् मातरार् वाळ्मुकङ्कळुक्कु–(उस नगर के) मान्य स्त्रियों के उज्ज्वल मुखों के सामने; उटैन्तु–हारकर; मुन्तु पोत्त मॊय्म्पु ॲल्लाम्–पहले (जो) खोयी (वह) शक्ति सारी; वन्तु–अब प्राप्त कर; पोर् विळैक्क–(उनसे फिर) युद्ध करने के लिए; मा मतिल् वळैन्तत्तु–प्राचीरों को घेर लिया; ऑक्कुम्–इसके समान है। १०९

उस खाई में सुगन्ध-पूर्ण कमल के फूल खिले हैं। कमलों का कहिए, कानन ही है। उनको देख ऐसा लगता है कि उन्होंने आकर किले के वाहर घेराव डाला है। कवि-कल्पना है कि वे अयोध्यानगर की सुन्दरियों के उज्ज्वल चेहरों के सामने हार मानकर चले गए थे। अव नया वल पाकर, आकर ललकार रहे हैं। १०९

शूळ्न्द नाज्जिल् शूळ्न्द वारै शुऱ्ऱु मुऱ्ऱु पाॅरॅलाम्
पोळ्न्द माहि डङ्गि डैक्कि डन्दु पॊङ्गि डङ्गरमात्

ताऴ्न्द वङ्ग वारि यिऱ्ऱ डुक्कों णाम दत्तिन्वीऴ्न्
दाऴ्न्द यानै मीदॅ ऴुन्द ऴुन्दु हिऩ्ऱ पॉलुमे 110

चूऴ्न्त नाऴ्चिल्–खूब सोचकर बनाये गये भागों के साथ; चूऴ्न्त–(नगर को) घेरकर रहनेवाले; आर् चुऱ्ऱम् मुऱ्ऱ पार् ॲल्लाम्–परकोटे के (चारों) ओर रही, घनी भूमि, सब खोदकर बनायी गयी; मा किटङ्कु इटै किटन्तु–बड़ी खाई में पड़े रहे; इटङ्कर् मा–मगर; ताऴ्न्त वङ्क वारियिल्–प्रचुरता से नावें (जहाँ) रहती है उस समुद्र में; तटुक्क ऑणा मतत्तिन्–दुर्दम्य मत्तता के कारण; विऴुन्तु मुऴुकित–घुसकर पैठे रहे; यानैकळ्–हाथी; मीतु ॲऴुन्तु अऴुन्तुकिन्ऱ पोलुम्–ऊपर उठते; फिर नीचे जाते (उन हाथियों) के समान (दिखते) है। ११०

उस खाई में बड़े-बड़े मगर है। वह खाई परकोटे के चारों ओर की भूमि को खोदकर बनायी गयी है। उसमें दिखाई देनेवाले मगर उन्मत्त हाथियों के समान है जो अपनी अदम्य मस्ती के कारण समुद्र में घुसकर तैर रहे हों— कभी नीचे पैठते, कभी ऊपर आते हैं। ११०

ईरुम् वाळिन् वाल्वि दिर्त्तॅ यिऱ्ऱि ळम्बि ऱैक्कुलम्
पेर मिन्न वाय्वि रित्तॅ रिन्द कट्पि ऱङ्गुदीच्
चोर वॉन्ऱै यॊन्ऱु मुन्ऱों डर्न्दु शीऱि डङ्गर्मा
पोरु हन्दु शीऱु हिन्ऱ पोर रक्कर् पोलुमे 111

ईरुम् वाळिन्–आरे के समान रहनेवाली; वाल् वितिर्त्तु–पूँछ हिलाते हुए; ॲयिऱु इळम् पिऱै कुलम्–दाँत-रूपी वाल-चन्द्र-गण को; पेर मिन्न–रह-रहकर चमकाते; वाय् विरित्तु–मुख खोलकर; ॲरिन्त कण् पिऱङ्कु ती चोर–जलती सी आँखों से प्रकाशमान कोपाग्नि प्रकट करते हुए; ऑन्ऱै ऑन्ऱु मुन् तॉटर्न्तु–एक के मुख के सामने दूसरे का मुख रहे ऐसा जाते हुए; चीऱ–नाराज; इटङ्कर् मा–मगर; पोर् उकन्तु–युद्धकामना से; चीऱुकिन्ऱ–आपस में क्रोध दिखानेवाले; अरक्कर् पोलुम्–राक्षस के समान थे। १११

वे मगर अपने आरे के समान पूँछों को हिलाते हुए चलते हैं। वार-बार मुख खोलते है तो उनके दाँत, जो वक्र वाल-चन्द्र के समान है, रह-रहकर चमकते है। आँखो से चिनगारियाँ निकलती है। वे एक के सामने एक आपस में क्रोध दिखाते हुए चलते हैं तब वे राक्षसों के समान लगते है। १११

आऴु मन्नम् वॅण्कु डैक्कु लङ्ग ळाव रुङ्गराक्
कोळॅ लामु लावु हिन्ऱ कुन्ऱ मन्न यानयात्
ताऴु लावु पङ्ग यत्त रङ्ग मेदु रङ्गमा
वाऴुम् वेलु मीन साह मन्नर् शेनै मानुमे 112

आळुम् अन्नम्–वहाँ (मानो) राज करनेवाले हंस; वॅण् कुटै कुलङ्कळ् आ(क)–श्वेत छत्र हुए; अरु करा–अपूर्व मगर; कोळ् ॲलाम् उलावुकिन्ऱ–ग्रह जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुन्ऱम् अन्न–(उस) मेरु के सदृश; यानै आ(क)–हाथी बने; ताळ्

उलावु–नालों पर हिलनेवाले; पङ्कयम् तरङ्कमे–कमल को झकझोरनेवाली तरंगे; तुरङ्कम् आ(क)–अश्व बनीं; मीतम् वाळुम् वेलुम् आक–मछलियाँ, तलवारें और बर्छियाँ बनीं, (ऐसी सजकर); मन्नर् चेनै मानुम्–राजा की सेना की समानता करती है। ११२

वह खाई राजाओं की सेना से उपमेय बनी है। इस सेना के उसमें पाए जानेवाले हंस श्वेत छत्र हैं; अपूर्व मगर हाथी हैं जो मेरु पर्वत के, जिसकी ग्रह परिक्रमा करते है, समान है। कमल-पुष्पों को झकझोरनेवाली तरंगें अश्व हैं; मछलियाँ तलवारें और शक्तियाँ हैं। ११२

विळिम्बु शुऱ्ऱु मुऱ्ऱु वित्तु वॅळ्ळि कट्टि युळ्ळुऱप्
पळिङ्गु पॉऩ्ऩ् हट्टि नोड डुत्तु ऱप्प डुत्तलिऩ्
तळिन्द कऱ्ऱ लत्तॊ डच्च लत्ति नैत्त नित्तुऱत्
तॅळिन्दु णरत्तु हिऱ्ऱु मॆन्ऩ ऱेव रालु मावदे 113

चुऱ्ऱु–चारों ओर; विळिम्पु–किनारे को; वॅळ्ळि कट्टि–चाँदी से मढ़के; मुऱ्ऱुवित्तु–बना चुक कर; उळ्ळुऱ–अन्दर; पळिङ्कु पॉऩ् तकट्टिनोटुअटुत्तु उऱ पटुत्तलिऩ्–स्फटिक शिलाएँ, स्वर्ण-फलकों के साथ, पास-पास बिछायी गयी है, इसलिए; तळिन्त कल् तलत्तॊटु अ चलत्तिनै–स्फटिक शिला की फर्श वाली उस जमीन को और जल को; तनित्तु उऱ तॆळिन्तु उणरत्तुकिऱ्ऱम् ऎन्ऩल्–अलग-अलग पहचनवा सकते हैं, यह कहना; तेवरालुम् आवते–क्या देवों के लिए भी शक्य है; (ए–नकारात्मक ध्वनि)। ११३

उस खाई के किनारे चाँदी से मढ़े है। अन्दर स्फटिक की ईटों और स्वर्ण के फलकों को पास-पास रखकर तल बनाया गया है। तब पानी कहाँ है, तल कहाँ है ? यह पहचानना देवों के लिए भी कठिन हो जाता है। ११३

अन्न नीर हन्गि डङ्गु शूळ्हि डन्द वाळियैत्
तुन्नि वेऱु शूळ्हि डन्द तूङ्गु वीङ्गि रुट्पिळम्
बॆन्न लामि ऱुम्बु शूळ्हि डन्द शोलै यॆण्णिलप्
पॊन्निन् माम दिट्कु डुत्त नील वाडै पोलुमे 114

अन्न नीर्–इस प्रकार की; अकन् किटङ्कु–विशाल खाई (रूपी); चूळ् किटन्त आळियै तुन्नि–चक्रवाल को घेरकर पड़े महासागर के एक तरफ़; वेऱु चूळ् किटन्त–अलग-अलग पुंजीभूत रहे; तङ्कु वीङ्कु इरुळ् पिळम्पु ऎन्नल् आम्–अचल और विपुल अन्धकारघन, ऐसे मान्य; इऱुम्पु चूळ् किटन्त–छोटे-छोटे वनों से पूर्ण; चोलै ऎण्णिल्–उद्यानों को सोचें तो; अ पॊन्निन् मा मतिट्कु उटुत्त–उस स्वर्णमय प्राचीर पर वेष्टित; नील आटै पोलुम्–काले वस्त्र के समान थे। ११४

परकोटे हैं; उनके चारों ओर खाई है और उसको घेरकर उपवन बने है। यह ऐसा है जैसे भूमि को घेरकर चक्रवाल; उसको घेरकर महासमुद्र और उससे सटकर अन्धकार पुंजीभूत होकर घेर रहा हो। ये उपवन

ऐसे भी लगते है मानों स्वर्णमय प्राचीरों को कुदृष्टि से बचाने के लिए उन पर नीला वस्त्र लपेट दिया गया हो। ११४

ॲल्लै निऩ्ऱ वॆऩ्ऱि यानै यॆऩ्ऩ निऩ्ऱ मुऩ्ऩैमाल्
ऑल्लै युम्बर् नाड ळन्द ताळिऩ् मीदु यर्न्दुपोय्
मल्लन् ञालम् यावु नीदि माऱु ऱाव ऴ्क्किनाल्
नल्ल वाऱु शॊल्लुम् वेद नाऩ्गु मऩ्ऩ वायिले 115

मल्लल् ञालम् यावुम्–समृद्ध संसार के जीव सब; नीति माऱु उऱा वऴक्किनाल्–न्याय मार्ग से परे न जायँ, इस प्रकार; नल्ल आऱु चॊल्लुम्–अच्छे मार्ग बतानेवाले; वेतम्–वेद; नालुम् अऩ्ऩ–चारों के समान; वायिल्–गोपुर, (चारों); मुऩ्ऩै–पहले कभी; माल्–श्रीविष्णु के; उम्पर नाटु ऑल्लै अळन्त–(तिविक्रम बनकर) देवलोक को भी शीघ्र नापनेवाले; ताळिऩ्–चरणों से; मीतु उयर्न्तु–बढ़कर ऊँचे जाकर; ॲल्लै निऩ्ऱ–सीमाओं पर स्थित; वॆऩ्ऱि यानै अॆऩ्ऩ–विजय-स्मारक गजों के समान; निऩ्ऱ–(शान के साथ) खड़े रहे। ११५

प्राचीरों में चारों दिशाओं में चार गोपुर बने हैं। गोपुर से मतलब नगर-द्वार या तोरण हैं। उन तोरणों पर शिल्पकारी के साथ पत्थर या ईटों के बने, चौकोर और कुछ (सात) तल्लों के ऊँचे मेहराब से होते हैं। इन प्राचीरों के ये चारों द्वार चार वेदो के समान है जो सन्मार्ग के फाटक है। एक बार श्रीविष्णु ने जब सारे लोको को दो ही श्रीचरणों के अन्दर नाप दिया तब उनका चरण देवलोक मापने ऊपर गया। वह जितना ऊँचा गया उससे बढ़कर ये गोपुर ऊँचे गए है। ये विजय-स्मारक राज-गजो के समान शान के साथ खड़े है। ११५

ताविल् पॊऱ्ऱ लत्ति नऱ्ऱ वत्ति नोर्ह डङ्गुताळ्
पूवु यिर्त्त कऱ्प हप्पॊ दुम्बर् पुक्कॊ दुङ्गुमाल्
आवि यॊत्त शेवल् कूव वऩ्बिऩ् वन्द णैन्दिडा
दोवि यप्पु ऱाविऩ् माडि रुक्क वूडु पेडैये 116

आवि ऑत्त चेवल्–प्राण सम प्यारे अपने (पुरुष) कबूतर को; ताऩ् अऴैक्क–अपने बुलाने पर; अऩ्पिऩ् वन्तु अणैन्तिटातु–प्यार के साथ आकर आलिंगन न करके; ओवियम् पुऱाविऩ् माटु इरुक्क–चित्र या प्रतिमा की कबूतरी के पास खड़ा रहता है (यह देख); ऊटु पेटै–रूठनेवाली कबूतरी; ता इल् पॊऩ् तलत्तिल्–निर्दोष स्वर्गलोक में; नल् तवत्तिनोर्कळ् तङ्कु ताळ्–(जिनके पास) तपस्वी ठहरते है ऐसे तनों वाले, और; पू उयिर्त्त–(जो) फूल गिराते हैं; कऱ्पकम् पॊतुम्पर् पुक्कु–(उन) कल्पक-तरुओं के उपवनो में पहुँचकर; ऑतुङ्कुम्–छिप जाते है। (आल्)। ११६

इन गोपुरों की भित्तियों पर कबूतरों की प्रतिमाएँ या चित्र बने है। कबूतरी अपने प्रिय कबूतर को बुलाती है। वह नही आता पर चित्रार्पित कबूतरी के पास खड़ा रहता है। कबूतरी रूठती है और यों ही कलपक

वन में जाकर छिप जाती है। वह कलपक वन नन्दन वन है जहाँ तरु-तले ऋषि-मुनि है और फूल गिरे पड़े हैं। गोपुर की ऊँचाई की ओर और अयोध्या में प्राप्त चित्र-प्रतिमा और वास्तुकला की श्रेष्ठता की ओर संकेत है— इसमें। ११६

कल्ल डित्त डुक्कि वाय्प ळिङ्ग रिन्दु कट्टिमी
दॅल्लि डप्प शुम्बॉन् वैत्ति लङ्गु पन्म णिक्कुलम्
विल्लि डक्कु यिऱ्ऱि वाळ्वि रिक्कुम् वॅळ्ळि मामरम्
पुल्लि डक्कि डत्ति वच्चि रत्त काल्बॉ रुत्तिये 117

पळिङ्कु कल् अटित्तु अटुक्कि–स्फटिक के, कटे पत्थर चुनकर; वाय् मीतु–सन्धि स्थलों में; ऍल् इट पचुम् पॉन् अरिन्तु वैत्तु–चमकदार चोखे स्वर्ण के पत्र रखकर; कट्टि–(भित्तियाँ) बनाकर; इलङ्कु–कांतियुत रहनेवाले; पल् मणि कुलम्–विविध मणि-समूहों को; ऍत्त इट कुयिऱ्ऱि–वे चमकते रहें ऐसा जड़कर; वच्चिरत्त काल् पॉरुत्ति–हीरों के खम्भे खड़ाकर; वाळ् विरिक्कुम्–चमकनेवाले; वॅळ्ळि मा मरम्–चाँदी के धरन आदि; पुल्लिट किटत्ति–ठीक से लगाकर। ११७

११६ से ११८ तक तल्लै कैसे बने है और सबसे ऊपर कलश कैसे लगा दिए गए हैं, इसका विस्तृत वर्णन है। दीवारें स्फटिक-पत्थरों की चुनी हुई हैं। पत्थरों के सन्धि-स्थलों में सोने के खण्डित पत्र ठूँस दिए गए हैं और पंक्तियों के मध्य भी सोने के पत्र है। खम्भे हीरक के हैं और उन पर विविध रत्न जड़े हैं और वे चमकते हैं। बल्ले, धरन, शहतीर आदि चाँदी के हैं। ११७

मरक तत्ति लङ्गु पोति कैत्त लत्तु वच्चिरम्
पुरैत पुत्त डुक्कि मीतु पॉन्कु यिऱ्ऱि मिन्कुलाम्
निरैम णिक्कु लत्ति नाळि नीळ्व हुत्त वोळिमेल्
विरवु कैत्त लत्ति नुय्त्त मेद हत्तिन् मीदरो 118

मरकतत्तु इलङ्कु पोतिकै तलत्तु–मरकत के साथ चमकनेवाले स्तम्भ-शीर्ष के ऊपर; वच्चिरम् पुरै तपुत्तु अटुक्कि–हीरक खण्ड काट-छाँटकर एक के ऊपर एक रखकर; मीतु पॉन् कुयिऱ्ऱि–उस पर स्वर्ण धँसाकर; मिन् कुलाम्–बिजली के समान चमकनेवाले; निरै मणि कुलत्तिन् वकुत्त–पंक्ति-बद्ध अनेक रत्नों की बनी; आळि–सिंह की मूर्तियों के साथ; नीळ् ओळि मेल् विरवु–लम्बी श्रेणियों पर लगे; कैतलत्तिन् उय्त्त–शहतीरों के रूप में रहे; मेतकत्तिन् मीतु–गोमेद के बल्लों के ऊपर; (अरो)। ११८

खम्भे के ऊपर बल्ले के नीचे जो खम्भ-शिखर (कमलाकार के) लकड़ी के रखे जाते है उनकी जगह पर मरकत के बने स्तम्भ-शीर्ष है। छत को धारण करनेवाले आर-पार के बल्ले हीरक, स्वर्ण आदि के है और उनमें रत्नों से निर्मित सिंह आदि की प्रतिमाएँ है। बाद उनके ऊपर गोमेद के बल्लों की पंक्तियाँ हैं। ११८

एऴ्पॉ ऴिऱ्कु मेऴ्नि लैत्त लञ्ज मैत्त दॆन्ननूल्
ऊऴ् ऱक्कु ऱित्त मैत्त वुम्बर् शॆम्बॊन् वेय्न्दुमीच्
चूऴ्शु डरच्चि रत्तु नन्म णित्त शुम्बु तोन्ऱलाल्
वाऴ्नि लक्कु लक्कॊ ऴुन्दै मौलि शूट्टि यन्नवे 119

एऴ् पॊऴिऱ्कुम्–सप्त लोकों में रहनेवाले सब लोगों के लिए; एऴ् निलै तलम् चमैत्तु अॅन्न–सात तल्ले बना लिए गए हों–ऐसा; नूल् ऊऴ् उऱ–शास्त्र-विहित प्रकार से; कुऱित्तु अमैत्त–खूब सोचकर बनाये गये (वे गोपुर); उम्पर् चॆम्पॊन् वेय्न्तु–सबके ऊपर चोखे स्वर्ण-पत्र छाकर; मी–उस पर; चूऴ् चुटर् चिरत्तु–चमकीले शिरो-भाग पर; नल् मणि तचुम्पु तोन्ऱलाल्–अच्छे रत्नमय कलश दिखते है, इसलिए; वाऴ् निलम् कुलम् कॊऴुन्तै–जीवन्त भूमि के कुल-किसलय को (भूमि की उत्कृष्ट सन्तान–अयोध्या नगर को); मौलि चूट्टिय अन्न–किरीट पहनाया गया हो, ऐसा है। (ए)। ११९

ऐसी दीवारो, खम्भों और छतों के सात तल्ले है, मानो ऊपर के सप्त लोको में एक-एक के रहनेवालों के लिए एक-एक रचा गया हो। ये गोपुर शास्त्रविहित रीति से बने है। सबके ऊपर स्वर्ण की मेहराब की रचना है जिसपर रत्न-कलश पाए जाते है। इनको देखने पर ऐसा लगता है मानों भूदेवी के कुल-दीपक (सतान) अयोध्या के मुकुट है। ११९

❀ तिङ्गळुङ् गरिदॆन वॆण्मै तीऱ्ऱिय, शङ्गवॆण् शुदैयुडैत् तवळ माळिहै
वॆङ्गडुङ् गाल्पॊर मेक्कु नोक्किय, पॊङ्गिरुम् बाऱ्कडऱ् ऱरङ्गम् बोलुमे 120

तिङ्कळुम् करितु अॅन–चन्द्र मण्डल भी (इनके सामने) काला है–ऐसा कहने की स्थिति पैदा करते हुए; वॆण् चङ्कम् चुतै उटै–सफ़ेद शंख के बने चूने से; वॆण्मै तीऱ्ऱिय–सफेदी जिनपर पुती हो; तवळम् माळिकै–धवल सौध; वॆम् कटुकाल् पॊर–बलवान और वेगयुक्त पवन के झोंके से; मेक्कु नोक्किय पॊङ्कु–ऊपर की ओर उमड़ आये; इरुपाल् कटल् तरङ्कम् पोलुम्–विपुल क्षीरसागर की तरंगों के समान थे। ए। १२०

वे सौध सफेद थे; इतने सफ़ेद कि स्वयं चन्द्र भी उनके सामने काला लगता था। उनपर सफ़ेदी भी पुती थी। उनको देखने पर ऐसा लगता था मानो प्रबल प्रभजन के झोंकों से क्षीरसागर की उत्तुंग तरंगें उठी हुई हों। १२०

❀ पुऴ्ळियम् बुऱविऱै पॊरुन्दु माळिहै, तळ्ळरुन् दमनियत् तहडु वेय्न्दन
अॅळ्ळरुङ् गदिरव निळवॆ यिऱ्कुऴाम्, वॆळ्ळिवॆण् गिरियिडै विरिन्द पोलुमे 121

तळ्ळ अरु–अपृथक्करणीय; तमनियम् तकटु वेय्न्तन–स्वर्ण के पत्र मढ़े हुए; पुळ्ळि अम् पुऱवु पॊरुन्तुम्–बिन्दियों वाले सुन्दर कबूतरों के रहने के दरबे जिनमें रहते है; माळिकै–वे प्रासाद; अॅळ्ळ उरु–अनिन्द्य; इळ वॆयिल् कुऴाम्–सूर्य की बाल-किरणों के जाल; वॆळ्ळि वॆण् किरियिन् इटै–सफेद धवल-गिरि पर; विरिन्त पोलुम्–फैल गये ऐसा लगता है। १२१

उस नगर के सफेद सौधों में विधिवत् कबूतरों के ठहरने के दर्बे बने हैं, जिन पर स्वर्ण-पत्र मढ़े हैं। यह धवल प्रासाद सूर्य की पीत किरणों से मण्डित श्वेत-गिरियों के समान दिखाई देते है। १२१

वयिरनऱ् कालमिशै मरह दत्तुलाम्
शॅयिरऱु पोदिहै किडत्तिच् चित्तिरम्
उयिर्पॅऱक् कुयिऱ्ऱिय वुम्बर् नाट्टवर्
अयिर्वुऱ विमैप्पत्त वळविल् कोडिए 122

वयिरम् नल् काल् मिचै–हीरों से बने सुन्दर खम्भों पर; मरकतम् तुलाम्–मरकत के धरन; चॅयिर् अऱ पोतिकै–दोषहीन (कमलाकार के) खम्भ-शिखर; किटत्ति–रखकर; चित्तिरम् उयिर् पॅऱ कुयिऱ्ऱिय–मानों जीवित हो आये हों, ऐसे चित्रों (-प्रतिमाओं) से युक्त बनाकर; उम्पर् नाट्टवर्–देवलोकवासी; अयिर्वु उऱ–भ्रमित हो जायँ, ऐसे; इमैप्पत्त–दीप्तिमान हैं जो; अळवु इल् कोटि–असंख्य करोड़ हैं। ए। १२२

प्रासादों के खम्भे हीरक-मय हैं। खम्भों के ऊपर औंधेकमल के आकार के स्तम्भ-सिर होते है। उन पर मरकत के धरन रखे गए हैं। उन प्रासादों में अनेक सजीव दिखनेवाले चित्र बने है। इन प्रासादों को देख, देव भ्रम में पड़ जाते है कि क्या ये हमारे विमान तो नहीं। ऐसे प्रासाद असंख्य करोड़ है। १२२

चन्दिर कान्दत्तिन् ऱलत्त शन्दनप्, पन्दिशॅय् तूणित्मेऱ् पवळप् पोदिहैच्
चॅन्दम त्तियत्तुलाज् जॅऱित्त तिण्शुवर्, इन्दिर नीलत्त वॅण्णिल् कोडिए 123

चन्तिर कान्तत्तिन् तळत्त–चन्द्र-कान्त पत्थर की फर्श वाले; पन्ति चॅय् चन्तनत् तूणिन् मेल्–पंक्तियों में खड़े किए खम्भों के ऊपर; पवळम् पोतिकै–मूंगोंवाले खम्भ-शीर्षों पर; चॅम् तमनियम् तुलाम् चॅऱित्त–लाल सोने के बने धरन जिनपर लगे हैं, और; तिण् चुवर् इन्तिर नीलत्त–(जिनकी) भित्तियाँ इन्द्रनीलमणियों वाली हैं, (ऐसे प्रासाद); ऍण् इल् कोटि–असंख्यक करोड़ हैं। १२३

अन्य प्रासाद हैं, जिनकी फर्श चन्द्रकान्त पत्थरों की है। पंक्ति में स्थित खम्भे चन्दन के हैं। स्तम्भ-शीर्ष प्रवाल के हैं। धरन लाल स्वर्ण के; और दीवारें इन्द्र-नीलम की बनी है। ऐसे असंख्य करोड़ है। १२३

पाडहक् कालडि पदुमत् तेय्प्पत्त, शेडरैत् तळुइत्त शॅय्य वायित्त
नाडहत् तॉळिलित्त नडुवु तुय्यत्त, आडहत् तोऱ्ऱत्त वळवि लादत्त 124

पाटकम् काल् अटि–घुँघरू पहने पैरों के निचले भाग; पतुमम् एय्प्पन–पद्म के समान हैं; चॅय्य वायिन–लाल-मुखी है; नटुवु तुय्यन–मध्यभाग रुई के अग्र के समान सूक्ष्म हैं; आटकम् तोऱ्ऱत्त–स्वर्णमय दृश्यवाले है, जो (वे चित्र); अळवु इलातत्त–असंख्यक हैं; चेटरै तळुइयिन–(कुछ) अपने पतियों का आलिंगन करने की मुद्रा में बने; नाटकम् तॉळिलिन–(कुछ) नर्तन-कर्म-रत दिखाये गये हैं। १२४

अनेक प्रासादों में अनेक स्त्रियों के चित्र अंकित है। उनके घुंघरू वाले पैर पद्म के समान है। अधर लाल है। कटि भाग अति सूक्ष्म हैं। सोने के रंग के है। ऐसे वे असख्यक हैं। उनमें कुछ अपने पतियों का आलिंगन करती दिखायी गयी हैं और कुछ नृत्यलीन। (इस पद्य में प्रासाद और नारियों मे श्लेप का अर्थ निकालने का प्रयास भी किया जाता है; पर उसके लिए पाठ परिवर्तन की आवश्यकता पड़ जाती है। १२४

पुक्कवर् कण्णिमै पॉरुनृदु ऱादॊळि
तॊक्कुडऩ् ऱयङ्गविण् णवरिऱ् ऱोनॄऱलाल्
तिक्कुऱ निनैप्पिनिऱ् चॅल्लुन् दॆय्ववी
डोक्कनिऩ् ऱिमैप्पऩ वुम्बर् नाट्टिनुम् 125

पुक्कवर्–प्रविष्ट (हुए) लोग; कण्णिमै पॉरुनृदु उऱादु–पलक बन्द किये बिना ही; ऑळि तॊक्कु उटऩ् तयङ्क–उन (प्रासादों) की कान्ति के इनकी कान्ति के साथ मिलकर (फलस्वरूप); विण्णवरिऩ् तोनॄऱलाल्–देवो के समान दिखने से; निनैप्पितिल्–संकल्प करते ही; तिक्कु उऱ चॅल्लुम्–सभी दिशाओं में जा सकनेवाले; तॆय्व वीटु ऑक्क निनृऱ–देव-यानों के समान स्थित रहकर; उम्पर् नाट्टितुम्–देव-लोक में भी; इमैप्पन–शोभा दिखानेवाले है। १२५

उनमें जो प्रवेश करते है वे विस्मय-विमूढ़ हो पलक नहीं गिराते। उन पर भवन की छवि पड़ती है अतः वे देवों के सदृश लगते हैं। तव वे प्रासाद इन देवनुमा लोगों के साथ, और अपनी ऊँचाई की वजह से भी देवयानों के समान, जो संकल्प मात्र से कही भी जा सकते है— लगते है। १२५

अणियिळै महळिरु मलङ्गल् वीररुम्, तणिवन वऱनॆऱि तणिवि लादऩ
मणियिनुम् पॊऩ्ऩिनुम् वनैन्द वल्लदु, पणिपिऱि दियऩ्ऱिल पहलै वॆऩ्ऱऩ 126

अणि इळै मकळिरुम्–सुन्दर आभरण वाली रमणियों; अलङ्कल् वीररुम्–मालाधारी तरुणों; तणिवन–के आवास है; अऱनॆऱि तणिवु अलातत–धर्माचरण में कम नहीं होनेवाले; मणियितुम् पॊनृतितुम्–रत्न और स्वर्ण से; वनैनृत अलृलतु–वनने के सिवा; पिऱितु पणि इयनृऱिल–अन्य वस्तुओं से बननेवाले नही; पकलै वॆनृऱत–सूर्य को हरा चुके हैं। १२६

इनमें तरुणियाँ और तरुण रहते हैं। वे सब धर्मचारी है। इन पर स्वर्ण और रत्नों का ही अलंकार है; और किसी वस्तु का नहीं। वे सूर्य से भी वढ़कर उज्ज्वल है। (इस पद्य में 'तणिवन, तणिवलादन' दो शब्दों का प्रयोग है जिनमें परस्पर विरोध का आभास-सा लगता है। पर दोनों के अर्थ अलग-अलग है। पहले का— वसे हुए; दूसरे का— कम नहीं होनेवाले)। १२६

वानुर् निवन्दन वरम्बिल् शॅल्वत्त, तानुयर् पुहळॅनत् तयङ्गु शोदिय
ऊन्नमि लऱनॅरि युऱ्ऱ वॅण्णिलाक्, कोनिहर् कुडिहडङ् कॉळ्है शान्ऱन 127

वान् उऱ निवन्तन–आकाश तक ऊँचे गये है; वरम्पु इल् चॅल्वत्तन–अपार सम्पत्तिवाले; उयर् पुकळ् ॲन–बढ़ते यश के समान; तयङ्कु चोतिय–दीप्तिमान ज्योतिवाले हैं; ऊनम् इल् अऱम् नॅरि उऱ्ऱ–कमी-हीन धर्म-मार्ग पर चलनेवाले; कोन् निकर्–राजा के समान; ॲण् इला कुटिकळ्–असंख्य (प्रजा-) जनों को; तम् कॉळ्कै चान्ऱन–अपने (अधीन) में लेकर श्रेष्ठ बने हुए है। १२७

गगनोच्च, अपार धन भरे, उन्नत यश के समान शुभ्र, ये प्रासाद, निर्दोष, धर्म-पथ-चारी राजा के समान जिसके पालन के अधीन अनेक प्रजाजन हैं, अपने रक्षण में अनेक मनुष्यों को लिए रहते हैं। (यानी इन प्रासादों में असंख्यक लोग रहते हैं।)। १२७

अरुवियिऱ् ऱाळ्न्दुमुत् तलङ्गु तामत्त, विरिमुहिऱ् कुलमॅनक कॉडिवि रावित्त
परुमणिक् कुवैयिन पशुम्बॉन् कोडिय, वरुमयिऱ् कणत्तन मलैयुम् पोन्ऱन 128

अरुवियिन् ताळ्न्तु–सरिता के समान लटकते; अलङ्कु–हिलते; तामत्तन–हारों के है (से अलंकृत है); विरिमुकिल् कुलम् ॲन–फैले श्वेत मेघ-समूहों के समान; कॉटि विरावित्त–ध्वजाओं से व्याप्त; परु मणि कुवैयिन–बड़े रत्न-राशियों के है (से सज्जित); पचुम् पॉन् कोटिय–चोखे स्वर्ण से भरे; वरुम् मयिल् कणत्तन–पालित मयूर-समूह-युक्त; मलैयुम् पोन्ऱन–(इनके कारण) पर्वत-सम भी रहनेवाले, (प्रासाद)। १२८

अनेक सौध पर्वतों से साधर्म्य रखते हैं। पर्वतों में सरिताएँ ऊपर से नीचे बहती हैं; उन पर मेघ जमे है; रत्नों की राशियाँ हैं; स्वर्ण मिलता है; और मोर पलते है। उसी तरह इन प्रासादों में मोती-मालाएँ लटकायी गयी है, जो सरिताओं के समान हैं। मेघ के समान ध्वजायें फहरती हैं; रत्न और स्वर्ण की वात तो प्रसिद्ध ही है। और मोर पाले जाते हैं। १२८

अहिलिडु कॉळुम्बुहै यळाय्म यङ्गिन, मुहिलॉडु वेऱ्ऱुमै तॅरिह लामुळुत्
तुहिलुडै नॅडुङ्गॉडिच् चूल मिन्नुव, पहलिडु मिन्ननणिप् परप्पुप् पोन्ऱवे 129

अकिल् इटु कॉळु पुकै–अगर से निकला घना धुआँ; अळाय् मयङ्कित्त–फैलकर जमा है, ऐसे धूम जमे; मुकिलॊटु वेऱ्ऱुमै तॅरिकला–मेघों से पृथकत्व (जिनका) मालूम नहीं हो पाता; मुळु तुकिल् उटै नॅटु कॉटि–महीन चीर की (बनी) लम्बी ध्वजाओं के मध्य; चूलम् मिन्नुव–शूल जो चमकते हैं वे; पकल् इटु–चमकनेवाले; मिन् अणि परप्पु पोन्ऱन–विद्युत के सुन्दर विस्तार के समान रहते है। १२९

उन प्रासादों पर जो महीन कपड़े की बनी पताकाएँ फहरती हैं उन पर अगरु धूम जमता है। इसलिए वे बिल्कुल मेघों के समान लगती है। उनके बीच वज्र के सीधे आघात से मकान को बचाने के लिए लोहे

के शूल रखे गये हैं और वे चमकदार हैं। वे मेघों के मध्य कौंधनेवाली विजलियों के समान है। १२९

तुडियिडैप् पणैमुलैत् तोहै यऩ्ऩवर्, अडियिणैच् चिलम्बुपूण् डरऱ्ऱु माळिहैक्
कॊडियिडैत् तरळवॆण् कोवै शूऴ्वऩ, कडियुडैक् कऱ्पहक् कावैप् पोऩ्ऱवे 130

तुटि इटै–डमरू (के सामन पतली) कमर; पणै मुलै–पीन स्तन; तोकै अऩ्ऩवर्–कलापियों सदृश (छटावाली स्त्रियाँ); अटि इणै–चरण द्वय (को); चिलम्पु पूण्टु अरऱ्ऱुम् माळिकै–नूपुर पकड़कर (जहाँ) क्वणन करते हैं उन प्रासादों में; कॊटि इटै–अनेक ध्वजाओं के मध्य; तरळम् वॆण् कोवै चूऴ्वऩ–सफ़ेद मुक्ताहारों के लटकने के दृश्य; कटि उटै–श्रेष्ठ; कऱ्पकम् कावै पोऩ्ऱ–कल्पक वन के समान थे। १३०

वे प्रासाद जिनमें क्षीण-कटि, पीन-स्तन और कलापी-समाना रमणियाँ रहती है— ध्वजाएँ, मुक्ता-हार आदि के कारण कल्पक-वन के समान लगते है। १३०

काण्वरु नॆडुवरैक् कदलिक् काऩम्बोल्, ताणिमिर् पदाहैयिऩ् कुऴाऩ्द ळैत्तऩ
वाणनि मऴुङ्गिड मडङ्गि वैहलुम्, शॆण्मदि तेय्वदक् कॊडिह डेय्क्कवे 131

काण् वरु–सुन्दर रूपवाले; नॆटु वरै–विशाल पर्वत पर के; कतलि कानम् पोल्–कदली वन के समान; ताळ् निमिर्–डाँडों पर फहरनेवाली; पताकैयिऩ् कुऴाम्–पताकाओ का समूह; तळैत्तऩ–(प्रासादों पर) भर-पूर रहा; चॆण् मति–आकाश-चारी चन्द्र; मटङ्कि–बाधा पाकर; वाळ् ननि मऴुङ्किट–प्रकाश में अधिक मन्द पड़ते हुए; वैकलुम् तेय्वतु–दिने-दिने क्षीण होना; अक् कॊटिकळ् तेय्क्कवे–उन ध्वजाओ के घर्षण के ही कारण। १३१

वे अपनी ध्वजाओं के कारण पर्वतों पर मिलनेवाले कदलीवन से मेल खाते है। ये ध्वजाएँ चन्द्र को रोकती ही नहीं पर उसे रगड़-रगड़कर धीरे-धीरे कांतिहीन भी बना लेती है। १३१

पॊऩ्ऱिणि मण्डप मल्ल पूत्तॊडर्, मऩ्ऱुह ळल्लऩ माड माळिहै
कुऩ्ऱुह ळल्लन मणिशॆय् कुट्टिमम्, मुऩ्ऱिलह ळल्लन मुत्तिऩ् पन्दरे 132

पॊऩ् तिणि मण्टपम्–स्वर्ण-कृतियों से भूषित मण्डप; अल्ल–जो नहीं है वे; पू तॊटर्–फूलों की छाजनवाले लता-कुंज है; मऩ्ऱुकळ्–आम सभा-मण्डप जो नहीं; माटम् माळिकै–माढोंवाले सौध है; कुऩ्ऱुकळ् अल्लन–छोटे पर्वत जो नहीं; मणि चॆय् कुट्टिमम्–रत्नों की बनी कृत्रिम गिरियाँ है; मुऩ्ऱिल्कळ्–रिक्त स्थान नहीं; मुत्तिऩ् पन्तरे–मोती-वितान है। १३२

उस नगर में या तो स्वर्ण-रचनाओं से भरे मण्डपों को, आम सभा-भवनों को, प्राकृतिक शैलों को देखते है या लताकुंज, माढोंवाले सौध, या कृत्रिम-क्रीड़ा-शैल। खाली मैदान के ऊपर भी मोती का वितान छाया मिलेगा। अर्थात् नगर किसी न किसी भवन से या रचना से पूर्ण है। १३२

❀ मिन्नॅन्न विळक्कॅन्न वॅयिऱ्पि ऴम्बॅन्नत्, तुन्निय तमनियत् तॉऴिऱ् ऴैत्तवक्
कन्निनन् नहर्निऴल् कदुव लालरो, पॉन्नुल हायदु पुलवर् वान्मे 133

मिन् अॅन्न–बिजली के समान और; विळक्कु अॅन्न–दीप के समान, और; वॅयिल् पिऴम्पु अॅन्न–सूर्य-किरण-पुंज के समान; तुन्निय–अधिक कांतियुक्त; तमनियम् तॉऴिल् तऴैत्त–स्वर्ण की कारीगरी ज़हाँ अधिक है; अ कन्नि नल् नकर् निऴल्–उस अक्षय नगर का प्रकाश; कतुवलाल्–जा लपेट लेता है, अतः; पुलवर् वान्म्–देवों का स्वर्ग-लोक; पॉन् उलकु आयतु–स्वर्ण-लोक बना, (अरो) । १३३

देवलोक स्वर्णलोक कैसे बना ? कवि की कल्पना है कि अयोध्या की कांति उस पर फैली इसलिए वह वैसा बना। उस अक्षय नगर में स्वर्ण-कृतियों की भरमार है जिससे बिजलियों या सूर्य-किरणों का सा प्रकाश छिटकता है और वह देव-लोक पर फैल जाता है। १३३

अॅऴुमिडत् तहन्नॅऱिडै यॊन्ऱि यॅऱ्पडु, पॉऴुदिडैप् पोदलिऱ् पुरिशैप् पॉन्नहर्
अऴन्मणि तिरुत्तिय वयोत्ति याळुडै, निऴलॅन्नप् पॉलियुमा नेमि वान्शुडर् 134

नेमि वान् चुटर्–सूर्य-मण्डल की किरणें; अॅऴुम् इटत्तु–उगने के समय पर; अकन्ऱु–लम्बी होकर; इटै ऑन्ऱि–मध्याह्न में, घटकर; अॅल् पटु पॉऴुतु–अस्त के समय; पोतलिन्–छिप जाती हैं, इसलिए; अऴल् मणि–अग्नि के समान दीप्त रत्नों से अलंकृत; पुरिचै–प्राचीरोंवाली; पॉन्नकर्–स्वर्ण (सम) उज्ज्वल नगरी; अयोत्तियाळ् उटै–अयोध्या (देवी) के; निऴल् अॅन–प्रतिबिंब (या छाया) के समान; पॉलियुम्–सुन्दर दिखाई देता है (वह सूर्य-बिंब) (आल्)। १३४

सूर्य को अयोध्या नगर के प्रतिबिंब के रूप में देखते हैं कवि। उदय के समय पर उसकी किरणें दीर्घ, मध्याह्न में घटी हुई और अस्त के समय में ओझल हो जाती हैं। मणि-मणिक्यों के साथ निर्मित प्राचीरों वाली अयोध्या की परछाई भी वैसे ही लम्बी, घटी और ओझल हो जाती है। यह तो सूर्य के कारण अयोध्या की परछाई की यह हालत होती है। कवि इसका उल्टा बताकर अपनी चातुरी दिखाता है। १३४

आय्न्दमे हलैयव रम्बॉन् माळिहै, वॅय्न्न्दका रहिऱ्पुहै युण्ड मेहम्बोय्त्
तोय्न्दमा कडन्नरुन् दूब नारुमेल्, पाय्न्दता रैयिनिलै पहर वेण्डुमो 135

आय्न्त मेकलै अवर्–ध्यान देकर बनायी गयी मेखला-धारिणी स्त्रियों के द्वारा; अम् पॉन् माळिकै–सुन्दर प्रासादों में; वेय्न्त–(प्रज्वलित अगरु से निकलकर) फैले; कार् अकिल् पुकै उण्ट मेकम्–काले अगरु-धूम से मिश्रित मेघ; पोय् तोय्न्त मा कटल्–जिसपर जाकर (जल पीने के लिए) छाते है, वह विशाल सागर भी; नऱु तूपम् नारुमेल्–(अगरु-धूम की) सुगन्ध देता है तो; पाय्न्त तारैयिन् निलै–गिरती (वारिश-) धारों की स्थिति; पकर वेण्टुमो–कहना चाहिए क्या ? । १३५

प्रासादों में श्रेष्ठ मेखला-धारिणी स्त्रियाँ अगरु-धूम लगाती हैं। घने रूप से फैलनेवाला वह धुआँ मेघों में भी व्याप्त हो जाता है और मेघ

इतने सुवासित होते हैं कि वे समुद्र को भी, जल पीते वक्त, सुवासित कर देते हैं। फिर वे जो धारें वरसाते हैं वे भी सुवासित ही होगी— यह भी कहना है क्या ? । १३५

कुळलिशै मडन्दयर् कुदलै कोदयर्, मळलयङ् गुळलिशै महर याळिशै
ॲळिलिशै मडन्दय रिन्शॊ लिन्निशै, पळयर्तञ् जेरियिर् पॊरुनर् पाट्टिशै 136

कुळल् इचै मटन्तैयर्–(जिनके वाल अभी वढ़कर सम हुए जाते हैं उन) अलकाओं की; कुतलै–तोतली वोली का मधुर स्वर; कोतैयर्–घने केशवाली तरुणियों का; अम् कुळल् इचै मळलै–मीठी वाँसुरी (-स्वर सा) वाणी का स्वर; मकर याळ् इचै–मकर वीणा का मनोरम स्वर; ॲळिल् इचै–रम्यता-युक्त; मटन्तैयर् इन् चॊल् इन् इचै–उन्नीस-वीस वर्ष की युवतियों के मधुर वचनों का मीठा स्वर; पळैयर् तम् चेरियिल्–मद्य-विक्रेताओं की गली में; पॊरुनर् पाट्टु इचै–नाचने-गानेवालों के गाने का स्वर। १३६

उस नगर के सव नाद संगीतमय है और सुरीले। अलकाओं (आठ-दस वरस की लड़कियो) की वोली; घने केशवाली वालाओं की वोली; वीणा की ध्वनि, तरुणियों की वोली, मद्य-विक्रय के स्थानों में नाचने-गानेवालों के गाने—सव तरह के मनोरम स्वर पाए जाते हैं। १३६

कण्णिडैक् कनल्शॊरि कळिरु काल्कॊडु, मण्णिडै वॆट्टुव वाट्कै मैन्दर्तम्
पण्णैहळ् पयिलिडम् कुळिप डैप्पन, शुण्णमक् कुळिहळैत् तॊडर्न्दु तूर्प्पन 137

वाळ् कै मैन्तर् तम् पण्णैकळ्–करवीर-हस्त युवको के दल; पयिल् इटम्–(जहाँ तलवार चलाने आदि का) अभ्यास करते हैं उन स्थलों पर; कण् इटै कनल् चॊरि कळिरु–आँखों से अंगारे उगलनेवाले हाथी; काल् कॊटु मण् इटै वॆट्टुव–पैरों से जमीन काटते; कुळि पटैप्पन–गड्ढे वना देते हैं; अ कुळिकळै–उन गड्ढों को; चुण्णम्–युवकों (पट्ठों) के वक्षों और भुजाओं पर लगे चूर्ण, तॊटर्न्तु–लगातार गिरते और; तूर्प्पन–पाट देते हैं। १३७

अभ्यास-स्थलों मे हाथियों के सामने नौजवान लोग तलवार चलाने का अभ्यास करते है। तव हाथी अपने पैरों से जमीन खरोचते है जिससे गड्ढे पड़ जाते है। उनमें नौजवानों के अंगो से लिप्त लेप के चूर्ण गिरते हैं और उससे गड्ढे पट जाते है। १३७

पन्दुहण् मडन्दयर् पयिर्रु वारिडैच्, चिन्दिन मुत्तिन मवैति रट्टुवार्
अन्दमिल् शिलदिय रार्रु कुप्पैहळ्, चन्दिर नॊळिकॆडत् तळैप्प तण्णिला 138

पन्तुकळ् पयिर्रुवार्–गेंद खेलनेवाली; मटन्तैयर इटै–युवतियों के वीच; चिन्तिन मुत्तु इनम् अवै–छितरे मोतियों की राशियों को; तिरट्टुवार्–वटोर लेने-वाले; अन्तम् इल् चिलतियर्–अनन्त दासियाँ; चॆय्युम् कुवियल्कळ्–(जो) लगाती हैं वे ढेर; चन्तिरन् ऒळि कॆट–चन्द्र के प्रकाश को मन्द वनाते हुए; तण्निला तळैप्प–शीतल चाँदनी (सा प्रकाश) उगलते हैं। १३८

चाँदनी में युवतियाँ गेंद खेलती हैं। तब उनके शरीरों से मोती चू पड़ते हैं। उन मोतियों को बुहारकर दासियाँ उनके ढेर लगा देती हैं। वे ढेर इतना प्रकाश देते है कि चाँदनी मन्द पड़ जाती है। १३८

अरङ्गिडै मडन्दय राडु वारवर्, करुङ्गडैक् कण्णयिल् कामर् नॅञ्जित्तै
उरुङ्गुव मऱ्ऱव रुयिर्ह ळन्नवर्, मरुङ्गुल्पोऱ् ऱेय्वन वळर्व दाशये 139

अरङ्कु इटै–नाट्य मंचों पर; मटन्तैयर्–नर्तकियाँ; आटुवार्–नाचती हैं; अवर्–उनके; करु कटै कण् अयिल्–काली आँखों की तिरछी चितवनरूपी बर्छियाँ; कामर् नॅञ्चित्तै–कामियों के मनों को; उरुङ्कुव–खा लेती है; मऱ्ऱु–और (उससे); अवर् उयिर्कल्–उनके प्राण; अन्नवर् मरुङ्कुल् पोल्–उनकी कमरों के समान; तेय्वन–घटते जाते है; वळर्वतु–बढ़ता है; आचैये–उनका मोह ही। १३९

नाट्य-मंचों पर नर्त्तकियाँ नाचती है। उनकी तिरछी चितवन कामी दर्शकों के साथ बर्छी का काम करती है। कामियों के दिल उन स्त्रियों की कमरों के समान छीजते रहते हैं। जो वहाँ बढ़ता है वह बस उनका मोह ही। १३९

पॊऴिवन शोलैहळ् पुदिय तेऩ्शिल, विऴैवन तॆऩ्ऱलु मिजिरु मॆल्लॆन
नुऴैवन वन्नवै नुऴैय नोवॊडु, कुऴैवन तणन्दवर् कॊदिक्कुङ् गॊङ्गये 140

चोलैकळ् पुतिय तेन् पॊऴिवन–उपवन नये फूलों का शहद बरसाते हैं; विऴैवन चिल–उसको चाहनेवालों में कुछ; तॆन्ऱलुम्–दक्षिणी (मलय) पवन; मिजिरुम्–और भ्रमर; मॆल्लॆन नुऴैवन–धीरे-धीरे घुसते है; अन्नवै नुऴैय–उनके प्रवेश से; तणन्तवर्–पति-वियुक्त स्त्रियों के; कॊतिक्कुम्–तपनेवाले; कॊङ्कै–स्तन; नोवॊटु–वेदना के साथ; कुऴैवन–ढीले पड़ जाते है। १४०

उस नगर के उद्यानों में शहद चूता है। शहद और उसकी सुगन्धि से बड़ा प्रेम रखते है (एक जाति के) भौंरे, वे उनमें घुस आते है। साथ-साथ दक्षिणी पवन भी प्रवेश करता है। ये दोनों ही— भौरे और मलय-पवन-कामवर्धक हैं। इसलिए वियोगिनी स्त्रियों को बहुत वेदना होती है जिससे उनके मनोरम सुघड़ स्तन तप्त और ढीले हो जाते हैं। १४०

इऱङ्गुव महरया ळॆडुत्त विन्निशै, निऱङ्गिळर् पाडला निमिर्व वव्वऴिक्
कऱङ्गुव वळ्विशि करुवि कण्मुहिऴ्त्, तुऱङ्गुव महऴिरो डोदुङ् गिळ्ळये 141

इऱङ्कुव–धीमे स्वर में; मकर याऴ् ॲटुत्त इन् इचै–मकर-वीणा से उठे मधुर संगीत; निऱम् किळर् पाटलाल्–सुस्वरित गीतों के कारण; निमिर्व–और श्रेष्ठ बन जाते है; अव्वऴि–वहाँ; वळविचि करुवि–डोरे-बँधे (मृदंग आदि) वाद्य; कऱङ्कुव–अनुरूप बजते है; मकळिरॊटु ओतुम् किळ्ळै–स्त्रियों के साथ बोलते रहनेवाले शुक; कण् मुकिऴ्त्तु उऱङ्कुव–आँखे बन्द कर सोते है। १४१

किन्हीं भवनों में वीणा के साथ स्त्रियाँ गाती हैं। मृदंग भी बजता

है, समाँ बँध जाता है। इससे प्रभावित होकर, वहाँ उनसे पालित शुक सो जाते हैं। १४१

कुदैवरिच् चिलैनुदर् कॊव्वै वाय्च्चियर्, पदवुकैत् तॊऴिल्कोडु पऴिप्पि लादन्
तदैमलर्त् तामरै यन्न ताळिनाल्, उदैपडच् चिवप्पन वुरवुत् तोळ्हळ् 142

कुतै वरि चिलै नुतल्–(डोरे बाँधने के) चिह्नों और बन्धनों से युक्त धनुष के आकार के भालों और; कॊव्वै वाय्च्चियर्–विंब (-सम लाल) अधरोंवालियाँ; पतवु कैतॊऴिल् कॊटु–श्रेष्ठ चित्रकारी की सजावट के साथ; पऴिप्पु इलातन–दोष-हीन; ततै मलर् तामरै अन्न–दल-संकुल कमलों के समान; ताळिनाल्–पैरों की; उतैपट–लातें खाने से; उरवु तोळ्कळ्–(पुरुषों के) बलिष्ठ कन्धे; चिवप्पन–लाल हो जाते हैं। १४२

कहीं स्त्रियों को अपने प्रेमियों पर गुस्सा हो जाता है। (प्रेमी पति माफी माँगते है, पर वे नहीं मानती।) उनके कंधों पर लात मार देती है। वे स्त्रियाँ ऐसी जिनके भाल धनुष के समान मनोरम और अधर विंब-फलों के समान लाल हैं। अब पुरुषों के कंधे लाल हो जाते हैं। वह इस ताड़न के प्रभाव से नहीं; क्योंकि उनके पैर कमल के समान कोमल हैं। पर उनके पैरों में महावर लगी है और उसके कारण लाल निशान पड़ जाते हैं। १४२

पॊऴुदुणर् वरियवप् पॊरुविन् मानहर्त्, तॊऴुदकै मडन्दयर् शुडर्वि ळक्कॆनप्
पऴुदरु मेनियैप् पार्क्कु माशैकॊल्, ऎऴुदुचित् तिरङ्गळु मिमैप्पि लादवे 143

पॊऴुतु उणर् अरिय–समय (दिन और रात) का भेद समझना जहाँ कठिन था; अ पॊरु इल् मा नकर्–उस उपमाहीन नगर (में रहनेवाली); तॊऴु तकै मटन्तैयर्–नमस्कृत होने योग्य (आदरणीय) स्त्रियों के; चुटर् विळक्कु ॲन–ज्योतिर्मय दीप के समान; पऴुतु अरु मेनियै–जो कलंकहीन थे उन शरीरों को; पार्क्कुम् आचै कॊल्–(लगातार) देखते रहने की इच्छा ही से तो; ऎऴुतु चित्तिरङ्कळुम्–अंकित चित्र भी; इमैप्पु इलात–निर्निमेष हैं। १४३

उस नगर का ठाट कुछ ऐसा है कि वहाँ रात और दिन का भेद नहीं जाना जाता। उस अनुपम नगर में घर-घर में चित्र अंकित है जिनकी मूर्तियाँ अपलक देखती सी है। वे शायद उन स्त्रियों को देखते ही रहना चाहती है जो अनिन्द्य-सुन्दरियाँ है और जिनके शरीरों की छवि दीप की ज्योति के समान है। १४३

तणिमलर्त् तिरुमह ळयङ्गु माळिहै, इणरॊळि परप्पिनिन् ऱिरुळु रप्पन
तिणिचुडर् नॆय्युडैत् तीवि ळक्कमो, मणिविळक् कल्लन महळिर् मेनिये 144

तणि मलर् तिरुमकळ् तयङ्कुम्–शीतल कमल की (निवासिनी) श्री लक्ष्मी जहाँ सदा रहती थी; माळिकै–(उन) प्रासादों में; इणर् ऑळि परप्पि निन्ऱु–किरण-जाल फैलाते हुए रहकर; इरुळ् तुरप्पन–अन्धकार को दूर करनेवाले हैं; नॆय् उटै–

घृत-युक्त; तिणि चुटर्—घने प्रकाशवाले; ती विळक्कमो—जलते दीप हैं; मणि विळक्को—रत्नों की चमक है; अल्लन—नहीं, वे; मकळिर् मेनियें—स्त्रियों के पवित्र शरीर ही हैं। १४४

इस छन्द में कवि एक अपूर्व संशय उठाते है। उन प्रासादों में जो श्रीलक्ष्मी के वास-स्थान हैं, प्रकाश जो पाया जाता है क्या वह जलते दियों का प्रकाश है या रत्नों की कांति है ? वह उत्तर देते है; नहीं तो, वह सुन्दरियों के शरीर की छवि है। १४४

पदङ्गळिर् तण्णुमै पाणि पण्णुऱ, विदङ्गळिऩ् विदिमुऱै शदिमि दिप्पवर्
मदङ्गिय रच्चदि वहुत्तुक् काट्टुव, शदङ्गह ळल्लऩ पुरवित् ताळ्हळे 145

तण्णुमै—मर्दल; पाणि—हाथ की ताली; पण्—गाने; उऱ—सबके समाँ बँधते; चति वितङ्कळिऩ् विति मुऱै—पाद-मुद्राओं के शास्त्र के अनुसार; पतङ्कळ् मितिप्पवर्—पैर रखकर नर्तन करनेवाली; मतङ्कियर्—नर्तकी स्त्रियाँ; अ चति वकुत्तु काट्टुव—उन चरण-मुद्राओं का प्रदर्शन करती है; चतङ्कै—उनकी झाँझे; अल्लत—या, वे नहीं तो; पुरवि ताळ्कळ्—अश्वों के पैर है (जो नाचने में निपुण है)। १४५

वहाँ नृत्य की पाद-मुद्राएँ उन नर्तकियों के घुंघरू पहचनवा देंगे, जो (नर्तकियाँ) मृदंग-नाद, तालियों, और गाने के अनुरूप नृत्य करती है; नही तो आप अश्वों के पैरों से भी जान सकते है। १४५

मुळैप्पऩ मुऱुवलम् मुऱुवल् वॆन्दुयर्, विळैप्पऩ वॆऩ्ऱियॆ मॆलिन्दु नाडॊऱुम्
इळैप्पऩ नुण्णिडै यिळैप्प मॆऩ्मुलै, तिळैप्पऩ मुत्तॊडु शॆम्बॊ नारमे 146

मुऱुवल् मुळैप्पन—(उन नर्तकियों की कभी-कभी) मुस्कुराहट होती है; अ मुरुवल्—वह मुस्कुराहट; वॆम् तुयर् विळैप्पऩ—(कामुकों को) भयंकर पीड़ा देनेवाली होती है और यह; वॆऩ्ऱियॆ—(मुस्कुराहट की) जीत है; नुण् इटै—(उनकी) पतली कमरें; नाळ् तॊऱुम् मॆलिन्तु इळैप्पन—दिन-व-दिन घटनेवाली है; इळैप्प—उनके क्षीण होते-होते; मॆल् मुलै—उनके कोमल स्तन; मुत्तॊटु चॆम्पॊऩ् आरम्—मुक्ताहारों और स्वर्णहारों को पहने हुए; तिळैप्पन—फूलते हैं। १४६

नर्तकियाँ मुस्कुराती है। उनका मन्दहास कामुक दर्शकों के मन में काम-वेदना पैदा कर देता है; और वे क्षीण होते जाते है। इसमें नर्त्तकियों के मन्दहास को गर्व है। वैसे ही उन नर्तकियों की कटियाँ क्षीण हैं; उस क्षीणता को देखकर उनके स्तन आभरणों से सजकर इतराते हैं। १४६

इडैयिडै यॆङ्गणुङ् गळिय ऱादऩ, नडैयिळ वऩ्ऩङ्ग ळळिऩ् नीर्क्कयल्
पॆडैयिऩ वण्डुहळ् पिरश मान्दिडुम्, कडहरि यल्लऩ महळिर् कण्गळे 147

इटै इटै—अपने-अपने स्थान पर; ऍङ्कणुम्—हमेशा; कळि अऱातन—जो मोद-रहित नहीं; नटै इळ अन्नङ्कळ्—सुन्दर चाल वाले तरुण हंस; नळिनम्—नलिन पुष्प;

नीऱ् कयल्–जलचर मीन; पॅटॅयित्त वण्टुकळ्–भौंरियों के साथ रहनेवाले भौंरे; पिरचम् मान्तिट्टुम् कटकरि–सुरा पीनेवाले मत्तगज; अल्लातन–ये जो नहीं है तो (इनके सिवा); मकळिर् कण्कळे–तरुणियो की आँखें है। १४७

वहाँ सब सदा मुदित रहते है— सुन्दर चालवाले हंस, कमल, जलचर मछलियाँ, भौरी-भौंरे और सुरापायी मत्तगज; उनके अलावा तरुणियों की आँखें भी। १४७

तऴल्विऴि	याळियुन्	दुणॅयुन्	दाऴ्वरॅ
मुऴैविऴै	गिरिनिहर्	कळिऱ्ऱिन्	मुम्मदम्
मऴैविऴुम्	विऴुन्दोरू	मण्णुङ्	गोऴुऱ्
कुऴैविऴु	मदिल्विऴुङ्	गोडित्तिण्	डेर्हळे 148

तऴल् विऴि याळियुम्–आग सी आँखों वाले शरभ (एक बलवान जानवर जो अब कहीं नहीं मिलता); तुणॅयुम्–और उसकी स्त्री; ताऴ् वरॅ मुऴै विऴै–जिस पर्वत-तल में रहनेवाली गुफ़ा को चाहते हैं (और जाकर ठहरते हैं); किरि निकर् कळिऱ्ऱिन्–ऐसे पर्वत-सदृश गजों के; मुम् मतम् मऴै पोऴियुम्–(दोनों कपोलों से दो और 'बीज' एक) तीन (स्थानों का) मद जल वर्षा के समान बहता है; विऴुम् तोऱुम्–जहाँ-जहाँ वह गिरता है; मण्णुम् कोऴ् उऱ–गड्ढे बनते हैं और; कुऴै विऴुम्–पंक भर जाता है; अतिल्–उनमें; कोटि तिण् तेर्कळ् विऴुम्–ध्वजा सहित तगड़े (अनेक) रथ गिरते है। १४८

वहाँ के हाथी, उन पर्वतों के समान है जिनकी गुफा में शरभ के जोड़े प्यार के साथ रहते है; उन हाथियों के कपोलों से और बीज-कोष से मद-नीर निकलता है। वह दान-जल भूमि पर इतना गिरता है कि जगह-जगह पर गड्ढे बन जाते हैं और कीचड़ भर जाती है। फिर उनमें ध्वजा सहित रथ भी फिसलकर गिर जाते है। १४८

आडुवार् पुरवियिन् कुरत्तै याप्पन, शूडुवा रिहऴ्न्दवत् तोङ्गन् मालहऴ्
ओडुवा रिऴुक्कुव वूड लूडुऱ्, कूडुवार् वनमुलै कोऴित्त शान्दमे 149

आट्टु–संचरणशील; वार् पुरवियिन् कुरत्तै–ऊँचे अश्वों के खुरों को; याप्पत–उलझकर रोकनेवाले; चूटुवार्–पहननेवालों द्वारा; इकऴ्न्त–त्यक्त; तोङ्कल् मालैकळ्–लटकनेवाले छोरों के हार और छोर-बन्द हार हैं; ओटुवार इऴुक्कुव–दौड़नेवालों को फिसलाते हैं; ऊटल् ऊटु उऱ–रूठन छोड़ देने पर; कूटुवार्–(पतियों से) मिलनेवाली (स्त्रियों द्वारा); वनम् मुलै कोऴित्त चान्तम्–मनोरम स्तनों पर से पोंछकर फेंका गया चन्दन लेप। १४९

अयोध्या की वीथियों पर चलनेवाले अश्वों के पैरों से, लोगों द्वारा फेंकी गयी मालाएँ उलझ जाती है और चलनेवाले लोगों को, प्रणय कलह के शांत होने पर, स्त्रियाँ जो चन्दन आदि का लेप पोंछकर फेंक देती है उससे बना कीचड़ फिसला देता है। १४९

इळैप्परुङ् कुरङ्गळा लिवुळि पारिनैक्
किळैप्पन वव्वळिक् किळर्न्द तूळियिन्
ऑळिप्पन मणियवै यॉळिर मीदुतेन्
तुळिप्पन कुमरर्तन् दोळिन् मालये 150

इवुळि-कुतिरैकळ्, इळैप्पु अरु कुरङ्कळाल्–अथक खुरों से; पारिनै–भूमि को; किळैप्पन–खरोंचते है; अव् वळि किळर्नत–तब छिटक उठी; तूळियिन्–धूल से; मणि–रत्न; ऑळिप्पन–छिपाये जाते हैं; अवै ऑळिर–उनको धौत करते हुए; कुमरर् तम् तोळिन् मालै–(उन अश्वों पर सवार) नौजवानों की, कन्धों पर पहनी मालायें; मीतु तेन् तुळिप्पन–उनपर शहद टपकाती है। १५०

अश्वों के अपने खुरों के कुरेदने से उठी धूलिराशि, उन पर सवार नौजवानों के आभरणों की मणियों को छिपा लेती है। फिर उन जवानों की मालाओं से चूनेवाला शहद मणियों पर गिरकर उन्हें धौत कर देता है। १५०

विलक्करुङ् गरिमदम् वेङ्गै नाऱुव, कुलक्कॊडि मादर्वाय् कुमुद नाऱुव
कलक्कडैक् कणिप्परुङ् गदिर्ह णाऱुव, मलर्क्कडि नाऱुव महळिर् कून्दले 151

विलक्क अरु करि मतम्–दुर्निवार गज-मद; वेङ्कै नाऱुव–'वेंगै' वृक्ष के फूल के समान महकता है; कुलम् कॊटि मातर् वाय्–कुलीन, लता (सदृश) स्त्रियों के मुख; कुमुतम् नाऱुव–कुमुद पुष्पों की तरह महकते हैं; कलम् कटै–आभरण; कणिप्पु अरु कतिर्कळ्–अगणित किरणें; नाऱुव–छिटकाती है; मकळिर् कून्तल्–नारियों के केशों में; मलर् कटि नाऱुव–पुष्पों की सुगन्धि (महकती) है। १५१

गज-मद एक पुष्प-विशेष की सी गन्ध छिटकाता है; कुलीन स्त्रियों के मुख कुमुद की सी गन्ध छिटकाते हैं; लोगों के आभरण अपार कांति छिटकाते है; और स्त्रियों के केश पुष्पों की सी गन्ध छिटकाते हैं। १५१

कोवयि निदन्नॊडॆण् कुऱिक्कि लादवत्, तेवर्तन् नहरियैच् चॆप्पु हिन्ऱदॆन्
यावयुम् विळङ्गिडत् तिहलि यिन्नहर्, आवणङ् गण्डपि नळहै तोऱ्ऱदे 152

अळकै–अलकापुरी; यावैयुम् विळङ्कु इटत्तु–सब तरह की समृद्धि शोभाओं में; इकलि–(अमरावती से) तुलना में बढ़कर; इ नकर् आवणम् कण्ट पिन्–इस नगर के वाणिज्य-स्थलों को देखने के बाद; तोऱ्ऱतु–हार मान बैठी; कोवैयिन्–(श्रेष्ठ नगरों की) शृंखला में; इतन्नॊटु ऍण् कुऱिक्क इलात–इस (अयोध्या) के साथ रखकर जिसका नाम नहीं गिना जा सकता; अ तेवर् तम् नकरियै–उस देवेन्द्रलोक का; चॆप्पुकिन्ऱतु ऍन्–कहना क्या है ? । १५२

अमरावती (देवेन्द्रलोक) से अलकापुरी (कुवेर-लोक) अधिक समृद्ध और सुन्दर मानी जाती है। वह अलकापुरी भी, अयोध्या की दूकानों को देखते हुए हीन बन जाती है। तो अयोध्या के साथ रखकर भी जिसको गिना नहीं जा सकता, उस अमरावती का क्या कहना है ? । १५२

अदिर्कळ् लौलिप्पन वयिलि मैप्पन, कदिर्मणि यणिवॅयिल् कालुव मान्मदम्
मुदिर्वुरुक् कमळ्वन मुत्त मिन्नुव, मदुकर मिशैप्पन मैन्द रीट्टमे 153

मैन्तर् तम् ईट्टम्–नौजवानों की भीड़ जहाँ होती है वहाँ; अतिर् कळल् ऑलिप्पन–कँपानेवाले पायल बजते है; अयिल् इमैप्पन–शक्तियाँ चमकती है; कतिर् मणि–(उनके आभरणों के) उज्ज्वल-रत्न; अणि वॅयिल् कालुव–सुखद कांति छिटकाते हैं; मान् मतम्–कस्तूरी; मुतिर्वु उऱ–अधिकता के साथ; कमळ्वन–महकती है; मुत्तम् मिन्नुव–मोती कौंधते हैं; मतुकरम् इचैप्पन–भौंरे गूँजते हे। १५३

वहाँ के संभ्रांत वीर नौजवानो के पैरों पर पायल थर्राते हुए बजते है। उनके हाथों में शक्तियाँ चमकती है; अगों में आभरणों के उज्ज्वल रत्न सुखद धूप के समान कांति बिखेरते हैं; वक्ष और भुजाओं में कस्तूरी आदि का लेप खूब महकता है; हार के मोती विद्युत का-सा प्रकाश देते हैं। उनकी मालाओं पर भौंरे गूँजते है। १५३

वळैयॉलि वयिरॉलि मकर वीणयिन्
किळैयॉलि मुळ्वॉलि किन्नन रत्तॉलि
तुळैयॉलि पल्लियन् दुवैक्कुञ् जुम्मयिन्
विळैयॉलि कडलॉलि मॅलिय विम्मुमे 154

वळै ऑलि–शंख-नाद; वयिर् ऑलि–शृंग-नाद; मकर वीणैयिन् किळै ऑलि–मकराकार की वीणा का स्वर; मुळवु ऑलि–मर्दल-नाद; किन्नरत्तु ऑचैयुम्–किन्नर नाम के वाद्य की ध्वनि और; तुळै ऑलि–रंध्रवाले वाद्यों का स्वर; चुम्मैयिन् तुवैक्कुम्–एक साथ बजनेवाले; पल इयम् विळै ऑलि–चमड़े के बने, विविध बाजों का सम्मिलित स्वर; कटल ऑलि मॅलिय–समुद्र-ध्वनि दबाते हुए; विम्मुम्–विवृद्ध होते हैं। १५४

अयोध्या में विविध नादों का जमघट है; —शंखनाद, शृंगों द्वारा उत्पन्न स्वर, मकराकार की वीणा का स्वर; मर्दल का स्वर; किन्नर नाम के बाजे की ध्वनि; बाँसुरी आदि बाजो का नाद; और चमड़े के बने अनेक वाद्यों का सम्मिलित नाद। इनके सामने समुद्रघोष मन्द पड़ जाता है। १५४

मन्नवर् तरुतिऱै यळक्कु मण्डवम्, अन्नमॅन् नडैयव राडु मण्डबम्
उन्नरु मरुमऱै योदु मण्डवम्, पन्नरुङ् गलैतॅरि पट्टि मण्डबम् 155

मन्नवर् तरु तिऱै–राजाओ द्वारा लाया गया कर; अळक्कु मण्टपम्–मापनेवाले भवन; अन्नम् मॅल् नटै यवर् आटुम् मण्टपम्–हंसों की सी चालवालियों के नृत्य-भवन; उन्न अरु–अनन्त; मरु मऱै–पाठ-योग्य वेदों का; ओतुम् मण्टपम्–पारायण-भवन; पन् अरु कलै–बहुमानित अपूर्व शास्त्रो या कलाओं की; तॅरि–खोज के लिए बने; पट्टि मण्टपम्–विवाद-सभाएँ। १५५

उस नगर में अनेक मण्डप हैं। अधीन राजा लोग कर देते हैं;

उनको नापने के लिए बने भवन हैं। नृत्य-शालाओं के भवन हैं; वेद-पारायण के मण्डप है; और ऐसे सभा-भवन है जहाँ विद्वान बैठकर शास्त्रों (विद्याओं) की चर्चा करते है। १५५

इरवियिऱ् चुडर्मणि यिमैक्कुन् दोरणत्
तॅरुविनिऱ् चिऱियन तिशैहळ् शेण्विळङ्
गरुवियिऱ् पॅरियन वानैत् तानङ्गळ्
परवयिऱ् पॅरियन पुरविप् पन्दिये 156

इरवियित्‌ चुटर्‌ मणि–सूर्य के समान उज्ज्वल रत्न; इमैक्कुम्–चमकनेवाले; तोरणम्–गोपुरवाली; तॅरुविनिल्–वीथियों (से); तिचैकळ् चिऱियन–दिशाएँ छोटी हैं; आनै तानङ्कळ्–गजमद; चेण् विळङ्कु–दूर पर दिखनेवाले; अरुवियिल्–झरनों से; पॅरियन–अधिक है; पुरवि पन्ति–अश्वों की पंक्तियाँ; परवैयिल् पॅरियन–समुद्र से भी विशाल हैं (ए)। १५६

अयोध्या नगर की वीथियाँ दिशाओं से अधिक लम्बी है। गज-मद-प्रवाह बहुत दूर तक दिखनेवाले झरनों से भी बड़े है। पंक्तिबद्ध अश्वों का समूह समुद्र से भी विशाल हैं। १५६

शूळिहै मळैमुहि ऱॊडक्कुन् दोरणम्
माळिहै मलर्वन महळिर् वाण्मुहम्
वाळिह ळन्नवै मलर्व मर्ऱवै
आळिह ळन्नवर् निऱत्ति लाळ्बवे 157

चूळिकै–सौधों के ऊपर बने मण्डप; मळै मुकिल् तॊटक्कुम्–जल-गर्भित मेघों को रोकनेवाले हैं और; तोरणम्–वन्दनवारों से सजे है, (ऐसे मण्डपोंवाले); माळिकै–प्रासादों में; मकळिर् वाळ् मुकम् मलर्वन–स्त्रियों के सुशोभित मुख-कमल खिले है; अन्नवै–उनमें; वाळिकळ् मलर्व–आँखरूपी शर खिलते हैं; अवै–वे (नेत्रशर); आळिकळ् अन्नवर्–शरभों के समान पुरुषों के; निऱत्तिल्–वक्षों में; आळ्प–घुस जाते है, (ए–मऱ्ऱु)। १५७

उस नगर के प्रासाद अतिसम्पन्न है। उनके ऊपरी भागों में तोरणों से अलंकृत और मेघों को भी रोकनेवाले मण्डप बने है। उन प्रासादों में, सिंह-सदृश पुरुषों के वक्षों पर शर के समान चुभनेवाली आँखों, और उन आँखों के आश्रय, कमल-वदनोंवाली सुन्दरियाँ रहती हैं। १५७

मन्नवर् कळ्ॲॊडु माऱु कॊळ्वन, पॊन्नणि तेरॊलि पुरवित् तारॊलि
इन्नहै यवर्शिलम् बेङ्ग वेङ्गुव, कन्नियर् कुडैतुरैक् कमलं वन्नमे 158

मन्नवर् कळ्ॲॊटु–राजाओं के पायलों की ध्वनि के; माऱु कॊळ्वन–मुकाबले में स्वरित होती हैं; पॊन् अणि तेर् ऒलि–स्वर्ण से अलंकृत रथों की (घंटियों की) ध्वनि, और; पुरवि तार् ऒलि–अश्वों के गले के हारों की ध्वनि; कन्नियर् कुटै तुऱै–

स्त्रियाँ जहाँ स्नान करती है, उन घाटों पर; इन नकैयवर् चिलम्पु एङ्क–मधुर हँसी वाली उनके नूपुर क्वणित होते है, (उसके मुकावले में); कमलम् अन्नम् एङ्कुव–कमलों पर रहनेवाले हंस बोलते है। १५८

वहाँ राजाओं के पायलों की ध्वनि उठती है। अश्वों की किंकणी-ध्वनि और रथों की घंटिकाओं की ध्वनि उसका मुकावला करती है। स्नानघाटों पर हंस-मुखी रमणियों के नूपुर की ध्वनि का मुकावला कमल पर रहनेवाले हंस अपनी बोली से करते है। १५८

ऊडवुङ् गूडवु मुयिरि निऩ्ऩिशै, पाडवुम् विऱलियर् पाडल् केट्कवुम्
आडवु महऩ्पुन लाडि याय्मलर्, शूडवुम् पॊऴुदुपोज् जिलर्क्कत् तॊऩ्ऩहर् 159

अ तॊल् नकर्–उस प्राचीन नगर में; चिलर्क्कु–कुछ रमणियों का; ऊटवुम्–पतियों के साथ रूठने; कूटवुम्–मिलने; उयिरिऩ्–वहुत प्रिय; इऩ् इचै पाटवुम्–मधुर गीत गाने; विऱलियर् पाटल् केट्कवुम्–गायकियो का गाना सुनने में; अकऩ् पुऩल् आटवुम्–विशाल जलाशयों में स्नान करने; आटि–स्नान करके; आय्मलर् चूटवुम्–श्रेष्ठ फूलों से सजा लेने में; पॊऴुतु पोम्–समय कटता है। १५९

आगे वहाँ संभ्रांत घरों के स्त्री-पुरुषों के कार्यकलाप का वर्णन है। कुछ स्त्रियाँ है जिनका सारा समय, प्रणय-कलह, संभोग, मधुर गायन, गायकियों का सगीत स्वादन, स्नान, पुष्पालंकार, इत्यादि कामों में व्यय हो जाता है। १५९

मुऴङ्गुतिण् कडहरि मॊय्म्बि ऩूरवुम्
अॆऴुङ्गुरत् तिवुळियो डिरद मेऱवुम्
पऴङ्गणो डिरन्दवर् परिवु तीर्दर
वऴङ्गवुम् पॊऴुदुपोज् जिलर्क्कम् माणहर् 160

अ माण् नकर्–उस महान नगर में; चिलर्क्कु–कुछ पुरुषों का; मुऴङ्कु तिण् कटम् करि–चिघाड़नेवाले, वलिष्ठ, मत्त गजों पर; मॊय्म्पिऩ् ऊरवुम्–साहस के साथ सवार होने (व उन्हें चलाने) में; अॆऴुम् कुरत्तु इवुळियॊटु–ऊपर को उठाये खुरोंवाले अश्वों के साथ; इरतम् एऱवुम्–रथों पर सवारी करने में; पऴङ्कणॊटु इरन्तवर्–दीन-दुखी हो आकर मांगनेवालों को; परिवु तीर् तर वऴङ्कवुम्–चिन्ता दूर करते हुए दान देने में; पॊऴुतु पोम्–समय व्यतीत होता है। १६०

उस महान नगर के कुछ पुरुष लोग अपना समय मत्त गजों की सवारी में, तीव्रगति वाले अश्वों और रथों के चलाने में और दीन-दुखी याचकों को मुँहमाँगा दान देने में बिताते है। १६०

करियॊडु करियॆदिर् पॊरुत्तिक् कैप्पडै
वरिशिलै मुदलिय वऴङ्गि वाळुळैप्

पुरवियिऱ् पौरुविल्शॆण् डाडिप् पोर्क्कलै
तॆरिदलिऱ् पॊऴुदुपोऴ् जिलर्क्कच् चेणहर् 161

अ चेण् नकर्—उस विशाल नगर में; चिलर्क्कु—कुछ पुरुषों का; करियॊट्टु करि ऎतिर् पॊरुतुति—हाथी से हाथी लड़ाने में; कै पटै—(कुछ का) हाथ के शस्त्र; वरि चिलैमुतलिय—बन्धनयुक्त धनुष आदि चलाने में; वाल् उळै पुरवि—(कुछ का) शुभ्र अयालवाले अश्वों पर बैठकर; पॊरु इल् चॆण्टु आटि—अपूर्व रूप से नचाने में; पोर् कलै तॆरितलिल्—(कुछ का) युद्ध-विद्या सीखने में; पॊऴुतु पोम्—समय-यापन होता है। १६१

उस विशाल नगर के कुछ पुरुष हाथी लड़ाते हैं; कुछ अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास करते हैं; कुछ अश्वों पर बैठकर उन्हें नचाते हैं। १६१

नन्दन वनत्तलर् कॊय्दु नव्विपोल्
वन्दिळै यवरॊडु वावि याडिवाय्च्
चॆन्दुव रऴिदरत् तेऱल् मान्दिच्चू
दुन्दलिऱ् पॊऴुदुपोऴ् चिलर्क्कव् वॊण्णहर् 162

अ ऒळ् नकर्—उस ज्योतिर्मय नगर में; चिलर्क्कु—कुछ स्त्रियों का; नव्वि पॊल् वन्तु—हरिणों के समान आकर; नन्तन वनत्तु अलर् कॊय्तु—सुन्दर उद्यानों में फूल चुनकर; इळैयवरॊटु वावि आटि—नौजवान, अपने पतियों के साथ वापियों में स्नान कर; वाय् चॆम्मै तुवर् अऴितर—अधरों की लालिमा को मिटाते हुए; तेऱल् मान्ति—ताडी पीकर; चूतु उन्तलिल्—जुआ खेलने में; पॊऴुतु पोम्—समय बीतता है। १६२

उस प्रकाशमय नगर में कुछ युवती स्त्रियों के पास हरिणियों के समान उछलती कूदती पुष्पोद्यानों में जाकर, पुष्प-चयन करने, तरुण पतियों के साथ तड़ागों में स्नान करने, अपने लाल अधरों को विवर्ण बनाते हुए सुरापान करने और जुआ खेलने के लिए ही समय है। १६२

नाना विदमा नऴिमादिर वीदियोडि
मीनाऱु वेलैप् पुनल्वॆण्मुहि लुण्णु मापोल्
आनाद माडत् तिडैयाडु कॊडिहण् मीप्पोय्
वानाऱु नण्णिप् पुनल्वऱ्ऱिड नक्कु मन्ऱे 163

नाना वितम् आम् वॆण् मुकिल्—नाना आकार के श्वेत मेघ; नळि मातिरम् वीति ओटि—विशाल आकाश-मार्ग पर जाकर; मीन् नाऱु वेलै पुनल् उण्णुमाऱु पोल्—मत्स्य-संकुल समुद्र का जल पीते है—जैसे; आनात माटत्तु इटै आटु कॊटिकळ्—अक्षुण्ण प्रासादों के ऊपर फहरनेवाली ध्वजाएँ; मी पोय्—ऊपर जाकर; वान् आऱु नण्णि—आकाशगंगा पहुँचकर; पुनल् वऱ्ऱिट—जल को सोखते हुए; नक्कुम्—चाट लेती हैं। (अन्ऱु—ए)। १६३

वहाँ के नितनवीन प्रासादों की ध्वजाएँ मेघों के समान हैं। रंग

के वे दोनो सफ़ेद है। उनमें साधर्म्य भी है। मेघ आकाश मार्ग से जाकर समुद्र का जल पीते है। ध्वजाएँ भी आकाश में ऊँचे जाकर आकाशगंगा का जल पीती है। मेघो से वे ध्वजाएँ इस बात में आगे है कि उनके पीने के वाद आकाशगंगा सूख जाती है। १६३

वन्ऱो रणङ्गळ् पुणर्वायिलुम् वानि नूड्ड
शॅन्ऱोङ्गु मेलो रिडमिन्ऱॅनच् चॅम्बॉ निञ्जि
कुन्ऱोङ्गु तोळार् कुणङ्गूट्टिशैक् कुप्पै यॆन्न
ऑन्ऱो डिरण्डु मुयर्न्दोङ्गिय वुम्बर् नाण 164

वल् तोरणङ्कळ् पुणर् वायिलुम्–सुदृढ़ तोरणों से युक्त गोपुर (और); चॅम्पॉन् इञ्चि ऑन्ऱोटु इरण्टुम्–लाल स्वर्ण से विभूषित प्राचीर, (वाहरी) एक और अन्दर दो, (तीनों); कुन्ऱु ओङ्कु तोळार्–पर्वतोच्च कंधोंवालों के; कुणम् कूट्टु–अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण संग्रहीत, इचै कुप्पै अॅन्न–यश-राशि के समान; वानिन् ऊटु चॅन्ऱु–आकाश में ऊँचे जाकर; मेल् ओङ्कु ओर् इटम् इनऱु अॅन–ऊपर जाने के लिए कुछ स्थान नहीं है—ऐसा; उम्पर् नाण–देवों को लज्जित करते हुए; उयर्न्तु ओङ्किय–ऊँचे उठे रहे। १६४

अयोध्या नगर के तीन प्राकार होते है; एक सव के वाहर और दो एक के वाद एक, अन्दर। उनके, चार-चार के हिसाव से तोरण से अलंकृत गोपुर भी है। वे आकाश मे इतने ऊँचे उठे है कि आकाश में और ऊपर जाने के लिए स्थान नहीं है और देवगण उनको देख अपनी हीनता को लेकर लज्जित हैं। उनकी ऊँचाई की उपमा पर्वत सदृश कन्धों-वाले सूर्यकुल के राजाओं के, श्रेष्ठ गुणों के कारण प्राप्त, यश से दी गयी है। १६४

काडुम् बुनमुङ् गडलन्न किडङ्गु मादर्
आडुङ् गुळमु मरुविच्चुनैक् कुन्ऱु मुम्वर्
वीडुम् विरवु मणिप्पन्दरुम् वीणै वण्डु
पाडुम् बॊऴिलु मलर्प्पल्लवप् पळ्ळि मन्नो 165

काटुम्–वनो (में); पुनमुम्–वागों में; कटल् अन्न किटङ्कुम्–समुद्र के समान रही खाई के किनारों पर; मातर् आटुम् कुळमुम्,–स्त्रियों के स्नान करने के तड़ागों में; अरुवि चुनै कुन्ऱम्–सरिताओं और झरनों से भरे पर्वतों में; उम्पर् वीटुम्–सौधों के ऊपरी गृहो में; मणि विरवु पन्तरुम्–मुक्ता और मणि-मिश्रित अलंकारवाले वितानों में; वण्टु वीणै पाटुम् पॊऴिलुम्–(जहाँ) भ्रमर, वीणा का सा नाद करते है उन उद्यानो में; मलर् पल्लवम् पळ्ळि–पुष्पों और पल्लवों की वनी शय्यायें; मन्–अधिक है। १६५

नगर के वाहर, भीतर सभी स्थानों पर पुष्प-पल्लव-विछी शय्याये वनी है। नगर की सुरक्षा के अर्थ वने वन, उपवन, खाई, स्नान करने के

जलाशय, सरिता सहित पर्वत, सौधों की छतें, मुक्ता-मणि-मण्डित वितान, भ्रमर-गुंजरित-बगीचे, सब जगह पलंगों की व्यवस्था है। १६५

तॆळ्वार् मऴैयुन् दिरैयाऴियु मुट्क नाळुम्
वळ्वार् मुरशम् मदिर्वार्नहर् वाऴु माक्कळ्
कळ्वा रिलामैप् पॊरुळ्कावलु मिल्लै यादुम्
कॊळ्वा रिलामैक् कॊडुप्पार्हळु मिल्लै मादो 166

तॆळ्वार् मऴैयुम्–शुद्ध जल बरसानेवाले मेघ; तिरै आऴियुम्–तरंगवाला समुद्र और; उट्क–भीत हो जाएँ ऐसा; नाळुम्–हर दिन; वळ् वार् मुरचम्–चमड़े की डोरी से सुबद्ध नगाड़े; अतिर् मा नकर्–(जिस नगर में) जोर से बजते हैं उस नगर के; वाऴुम् माक्कळ्–रहनेवाले लोगों में; कळ्वार् इलामै–चोरी करनेवाले कोई नहीं हैं, इसलिए; पॊरुळ् कावलुम् इल्लै–वस्तुओं की रक्षा (का प्रश्न) भी नहीं है; यातुम् कॊळ्वार् इलामै–किसी वस्तु को दान में लेनेवाले नही है, इसलिए; कॊटुप्पार्कळुम् इल्लै–दाता भी (कोई) नहीं है। १६६

राजधानी होने के नाते उस नगर में नगाड़े नियमानुसार बजाये जाते हैं। उसका तुमुल नाद सुनकर मेघ और समुद्र मानों डर जाते है। वहाँ न चोर हैं न याचक। अतः उस नगर में रक्षा की व्यवस्था नहीं है; न दान देनेवाले ही पाये जाते है। १६६

कल्लादु निऱ्पार् पिऱरिन्मयिऱ् कल्वि मुऱ्ऱ
वल्लारु मिल्लै यवैवल्लरल् लारु मिल्लै
ऎल्लारु मॆल्लाप् पॆरुञ्जॆल्वमु मॆय्द लाले
इल्लारु मिल्लै युडैयार्हळु मिल्लै मादो 167

कल्लातु निऱ्पार् पिऱर्–अनपढ़ रहनेवाले ऐसे पृथक; इन्मैयिल्–न रहने के कारण; कल्वि मुऱ्ऱ वल्लारुम् इल्लै–शिक्षा में पूर्ण रूप से दक्ष—ऐसे कोई नही हैं; अवै वल्लवर् अल्लारुम् इल्लै–उसमें अनिपुण भी कोई नहीं; ऎल्लारुम्–सभी के पास; पॆरुम् चॆल्वम् ऎल्लामुम् ऎय्तलाले–बड़ी सम्पदाएँ सभी रहीं, इसलिए; इल्लारुम् इल्लै–निर्धन भी नहीं है; उटैयार्कळुम् इल्लै–धनी भी नहीं हैं। १६७

उस नगर के लोग पूर्णरूप से शिक्षित थे; अनपढ़ कोई नहीं था। इसलिए अशिक्षित-शिक्षित का कोई विभाजन नही होता था। उसी तरह वे इतने सर्वसम्पन्न थे कि धनिक, निर्धन में कोई पृथक्करण नहीं हो सकता था। १६७

एहम्मुदऱ् कल्वि मुळैत्तॆऴुन् दॆण्णिल् केळ्वि
आहम्मुदऱ् ऱिण्पणै पोक्कि यरुन्द वत्तिन्
शाहन्दळैत् तन्बरुम् वित्तरु मम्म लर्न्दु
पॊहङ्गनि यीन्ऱु पळुत्तदु पोलुमन्ऱे 168

कल्वि एकम् मुतल्–शिक्षारूपी एक बीज; मुळैत्तु ऍऴुन्तु–अंकुरित हो बढ़ा; अ मुतल्–उस तने से; ऍण् इल्–असंख्यक; केळ्वि आकुतिण् पणै पोक्कि–श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञानरूपी सुदृढ़ शाखाएँ फैलाकर; अरु तवत्तिन् चाकम् तळैत्तु–कठिन तपरूपी पत्ते निकालकर; अन्पु अरुम्पि–प्रेम की कलियाँ प्रकट करके; तरुमम् मलर्न्तु–धर्मरूपी फूलों का विकास कर; पोकम् कनि ऑन्रु पऴुत्ततु–भोग-(सुख-) रूपी एक फल पाक, ऐसा था वह नगर। (अनुरू ए)। १६८

उस अयोध्या नगर में विद्या और उससे प्राप्य सभी शुभ फल प्राप्त थे। एक सुन्दर सांगरूपक के द्वारा कवि विद्या को बीज बनाकर आनन्द को फल बताते है। विद्या बीज से उगे वृक्ष की, विविध श्रौत ज्ञान शाखाएँ थी; तपरूपी पत्र बहुत हुए। प्रेम की कलियाँ खिली। वह धर्म-रूपी पुष्पों से शोभायमान हुआ; उस पर भोग या आनन्द का फल फलित हुआ। १६८

4. अरशियर् पडलम् (राज्य शासन पटल)

अम्मा णहरुक् करशन्नर शर्क्क रशन्
शॆम्माण् डनिक्को लुलहेऴिनुञ् जॆल्ल निन्ऱान्
इम्माण् कदैक्को रिरैयाय विराम नॆन्नुम्
मॊय्म्माण् कऴलोऱ् ऱरुनल्लऱ मूर्त्ति यन्नान् 169

अ माण् नकरुक्कु–उस महान नगर के; अरचन्–राजा; अरचर्क्कु-अरॆचन्–राजाओं के राजा है; उलकु एऴिनुम्–लोक, जो सप्त-द्वीप-समूह हैं, इस पर; चॆम्मै माण् तत्ति कोल् चॆल्ल निन्ऱान्–ऋजु और महान अपना अनुपम राज-दण्ड (शासन) चलाते रहे; इ माण् कतॆक्कु–इस महान इतिहास के; ओर् इऱै आय–श्रेष्ठ नायक; इरामन् ऍन्नुम्–श्रीराम नाम के; मॊय् माण् कऴलोन्–गौरवपूर्ण पायलधारी महापुरुष को; तरु–दिलानेवाले; नल् अऱम् मूर्त्ति अन्नान्–श्रेष्ठ धर्म के (मानव) रूप के समान थे। १६९

उस महान नगर के राजा, दशरथ, राजाधिराज, सब तरह से योग्य, सीधे और भाग्यवान थे। सप्त-द्वीपीय इस भूलोक भर में उनका श्रेष्ठ शासन चलता रहा। वे इस काव्य के अनुपम नायक, वीरता के श्रृंगार, पायलों के धारक, श्रीराम को जन्म देनेवाले धर्मरूप थे। १६९

आदिम् मदियुम् मरुळुम्मऱ नुम्म मैवुम्
ऐदिन् मिडल्वी रमुमीहयु मॆण्णिल् यावुम्
नीदिन् निलैयु मिवैनेमियि नोर्क्कु निन्ऱ
पादिम् मुळ्ढु मिवऱ्केपणि केट्प मन्नो 170

आति–प्रथम श्रेणी की; मतियुम्–मति और; अरुळुम्–दया और; अमैवुम्–सन्तोष; एतु इल्–कमी हीन; मिटल् वीरमुम्–साहस के साथ वीरता और;

ईकैयुम्–दानशीलता और; नीति निलैयुम्–न्याय में स्थिति; इवै यावुम्–ये सब; ऍण्णिल्–सोचने पर; नेमियित्तोर्क्कु–(अन्य) राजाओं के पास; पाति निन्ऱ–आधा-आधा रहे; मुऴुतुम्–पूर्णरूप से; इवर्क्के पणि केट्प–इन (दशरथ) के ही आज्ञाकारी में थे। १७०

उनकी प्रज्ञा, दया, धर्म, संतोष, अकलंक धैर्य वीरता, दानशीलता; नीतिपरायणता, ये सब गुण, अन्य राजाओं के पास भी रहे; पर उनमें आधे-आधे थे। इनके पास परिपूर्ण थे। १७०

मॉय्यार् कलिशूऴ् मुदुपारिल् मुहन्द दानक्
कैयार् पुनला ननैयादन कैयु मिल्लै
मॅय्याय वेदत् तुऱैवेन्दरुक् केय्न्द यारुम्
शॅय्याद याह मिवन् शॅय्दु मुडित्त मादो 171

मॉय् आर् कलि चूऴ्–शक्ति-युत समुद्र से घिरि; मुतु पारिल्–प्राचीन इस भूमि पर; मुकन्त तानम् कै आर् पुनलाल्–अतिशय दान के साथ, (दान लेनेवाले के) हाथ में डाले गये जल से; ननैयातन–जो भीगे नहीं; कैयुम् इल्लै–वे हाथ नहीं थे; मॅय् आय–सच्चे; वेतम् तुऱै–वेद-मार्गी; वेन्तरुक्कु–राजाओं के लिए; एय्न्त–विहित; यारुम् चॅय्यात याकम्–(पर) (अन्य) किसी से न कृत यज्ञ; इवन् चॅय्तु मुटित्त–इनके द्वारा किये जा चुके। (मातो)। १७१

वे दान-धर्म और यज्ञ आदि खूब करते थे। उस नगर में कोई ब्राह्मण ऐसा नहीं था जिसका हाथ महाराज से दान नहीं ले चुका हो और जिसका हाथ दान देते वक्त विसर्जित जल से सिक्त नहीं हुआ हो। उसी प्रकार कोई यज्ञ ऐसा नहीं था, जो विहित था पर नहीं किया गया हो। उन्होंने ऐसे-ऐसे यज्ञ किये जिन्हें कोई दूसरा राजा कर नहीं पाया। १७१

तायॊक्कु मन्बिऱ् ऱवमॊक्कु नलम्ब यप्पिल्
शेयॊक्कु मुन्निन् ऱॊरुशॅल्हदि युय्क्कु नीराल्
नोयुऱ्ऱ ऍन्निन् मरुन्दॊक्कु नुणङ्गु केऴ्वि
आयप् पुहुङ्गा लऱिवॊक्कु मॅवर्क्कु मन्नान् 172

अन्नान्–वे; ऍवर्क्कुम्–सब किसी के लिए; अन्पिल्–प्रेम में; ताय् ऑक्कुम्–माता के समान थे; नलम् पयप्पिल्–हित करने में; तवम् ऑक्कुम्–तप के समान थे; मुन् निन्ऱु–अग्रगामी रहकर; ऑरु चॅल् कति उय्क्कुम् नीराल्–गम्य मार्ग पर चलाने की वृत्ति के कारण; चेय् ऑक्कुम्–पुत्र के समान थे; नोय् उऱ्ऱु ऍन्निल्–कोई रोग हुआ तो; मरुन्तु ऑक्कुम्–औषध के समान थे; आय पुकुम् काल्–अन्वेषण करने जायँ तब; नुणङ्कु केऴ्वि–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान और; अऱिवु ऑक्कुम्–प्रज्ञा के समान थे। १७२

वे माता के समान सबसे प्रेम करते थे; सभी की इच्छाओं की पूर्ति करने में तपस्या के समान थे; अच्छे मार्ग पर लोगों को वे स्वयं उदाहरण

रूप में रहकर, चलाते थे। इस प्रवृत्ति में वे पुत्र के समान थे जो अपने धर्माचरण से पितृलोगों को सद्गति मे पहुँचा देते है। वे रोग की औषधि के समान थे। खूब सोचकर देखें तो वे स्वयं प्रज्ञा और (श्रौत-) ज्ञान-रूप थे। १७२

ईन्दे कडन्दा निरप्पोर्कड लॅण्णि ऩऩ्नूल्
आय्न्दे कडन्दा नरिवॅन्ऩु मळक्कर् वाळाल्
काय्न्दे कडन्दाऩ् पहैवेलै करुत्तु मुऱ्ऱत्
तोय्न्दे कडन्दाऩ् ऱिरुविऱ्ऱॉडर् पोह पौवम् 173

इरप्पोर् कटल्–याचकरूपी समुद्र; ईन्ते कटन्ताऩ्–दान देकर ही पार किया; अऱिवु ॲन्ऩुम् अळक्कर्–ज्ञानरूपी सागर; ॲण् इल् नल् नूल्–असंख्यक उच्च शास्त्र-ग्रन्थ; आय्न्ते कटन्ताऩ्–अन्वेषण करके ही पार किया; पकै वेलै–शत्रुरूपी उदधि को; वाळाल् काय्न्ते–तलवार से दमन करके ही; कटन्ताऩ्–पार किया; तिरुविल् तॉटर्–ऐश्वर्य से प्राप्य; पोक पौवम्–भोग का पयोधि; करुत्तु मुऱ्ऱ–जी भर; तोय्न्ते कटन्ताऩ्–भोग करके ही पार किया। १७३

अयोध्या में याचक नही थे। महाराज स्वयं विद्या पारंगत, शत्रुहीन और निस्पृह रहे। (कवि इसकी चर्चा कुछ अनोखी रीति से करते हैं।) याचकों का सागर उन्होंने दान द्वारा; ज्ञान-समुद्र शास्त्राध्ययन-गुनन द्वारा; शत्रु-सिन्धु को तलवार द्वारा और ऐश्वर्य-सुख-भोग के पयोधि को भोगकर ही पार किया। १७३

वॅळ्ळमुम् पऱवैयुम् विलङ्गुम् वेशैयर्
उळ्ळमु मॊरुवऴि योड निऩ्ऱवऩ्
तळ्ळरुम् पॆरुम्पुहऴ्त् तयर तप्पॆयर्
वळ्ळल्वळ् ळुऱैययित् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩे 174

वळ् उऱै–चमड़े की बनी म्यान में रहनेवाली; अयिल् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्–तेज तलवार के धारी चक्रवर्ती; तळ्ळ अरु पॆरु पुकऴ्–अक्षय और विपुल यश के; तयरतऩ् पॆयर् वळ्ळल्–दशरथ नाम के वे नामी दानी; वॅळ्ळमुम्–नदी का प्रवाह और; पऱवैयुम्–पक्षी और; विलङ्कुम्–जानवर और; वेचैयर् उळ्ळमुम्–वेश्याओं का मन (और); ऑरु वऴि ओट–एक ही मार्ग पर चलें; निऩ्ऱवऩ्–ऐसा शासन करनेवाले (रहे)। १७४

चक्रवर्ती दशरथ वीर थे; यशस्वी थे और नामी दानी भी। उनके शासन की यह खूबी थी कि नदी का प्रवाह, पक्षी, जानवर और वेश्याओं का मन अपने-अपने एक ही मार्ग पर जाते थे। यानी कोई उच्छृंखल नही रहे। १७४

❀ नेमिमाल् वरैमदि लाह नीळ्पुऱप्, पाममा कडल्किडङ् गाहप् पऩ्मणि
वाममा ळिहैमलै याह मऩ्ऩऱ्कुप्, पूमियु मयोत्तिमा नहरम् पोऩ्ऱदे 175

मन्नर्कु–महाराज के लिये; नेमि माल् वरै–चक्रवाल गिरि; मतिल् आक–परकोटा बनी; नीळ् पामम् मा पुरम् कटल्–विशाल बाह्य-सागर ही; किटङ्कु आक–खाई बना; मलै–अन्य पर्वत; पल् मणि वामम् माळिकै आक–विविध रत्नों से अलंकृत सुन्दर महल बने; पूमियुम्–भूलोक सारा; अयोत्ति मा नकरम् पोन्ऱतु–अयोध्या के विशाल नगर के समान बना। १७५

उनके लिए जैसी अयोध्या वैसी ही, चक्रवाल पर्वत रूपी प्राचीर, बाह्य-महासागर की खाई और कुल गिरियों के उन्नत सौधों से युक्त सारी पृथ्वी ही शासनाधीन भूमि थी। १७५

❀ यावरुम् वन्मैने रॅरिन्दु तीट्टलाल्, मेवरुङ् गैयडै वेलुन् देयुमाल्
कोवुडै नॅडुमणि महुड कोडियाल्, शेवडि यडैन्दपोर् कळ्लुन् देयुमाल् 176

यावर् वन्मैयुम्–किसी के भी पराक्रम को; नेर् ऍरिन्तु–सामने जाकर (भाले को) फेंककर, दलित कर; तीट्टलाल्–बार-बार उस (कुंठित हुए) भाले को पैनाने से; कै अटै वेलुम् तेयुम्–हाथ में रहनेवाला भाला घिस जाता है; को उटै–(अधीनता स्वीकार कर विनत हुए) राजाओं के; नॅटु मणि मकुटम्–दीर्घ रत्नमय किरीट; कोटियाल्–असंख्यकों के (रगड़ने के) कारण; चेवटि अटैन्त–लाल चरणों में पहने हुए; पोन् कळ्लुम्–स्वर्ण पायल भी; तेयुम्–घिस जाते है। १७६

उनका भाला शत्रुओं पर प्रयोग करने से कुंठित हो जाता था और वार-बार उसे पैना करना पड़ता था; इसलिए वह घिसता गया। उसी प्रकार असंख्य राजाओं के मुकुट उनके स्वर्ण-पायल से घर्षण करते थे, उन राजाओं के, दशरथ के पैरों पड़ने से। तब उनका पायल घिस जाता था। १७६

❀ मण्णिडै युयिर्तोऱुम् वळर्न्दु तेय्विन्ऱित्
तण्णिळल् परप्पवु मिरुळैत् तळ्ळवुम्
अण्णरन् कुडैमदि यमैयु मादलाल्
विण्णिडै मदियिनै मिहैयि दॅन्बवे 177

मण् इटै–(इस) भूलोक में; तेय्वु इन्ऱि वळर्न्तु–विना घटे, वढ़कर; उयिर् तोऱुम्–जीव-जीव पर; तण् निळल् परप्पवुम्–शीतल छाया फैलाने; इरुळै तळ्ळवुम्–अन्धकार दूर करने; अण्णल् तन्–महिमामय (दशरथ) का; कुटै मति अमैयुम्–छत्र-रूपी चन्द्र पर्याप्त था; आतलाल्–इसलिए; इटै विण् मतियिनै–(इसके सामने निरर्थक हुए) हारे, आकाश (-स्थित) चन्द्र को; इतु मिकै ऍन्प–यह फालतू है, कहते है (लोग)। १७७

लोग राजाधिराज दशरथ के श्वेत छत्र के सामने चन्द्र को फालतू समझने लगे है। छत्र, चन्द्र के समान विना घटे ही, बढ़ा हुआ रहता है। वह शीतल छाया यानी रक्षा प्रदान करता है; (दुःख के) अन्धकार को दूर कर देता है। फिर उस आकाश के चन्द्र की आवश्यकता क्या रही ? १७७

❀ वयिरवाऩ् पूणणि मडङ्गऩ् मॊय्म्बिऩाऩ्
उयिरॆलाम् दऩ्ऩुयि रॊप्प वोम्बलाल्
शॆयिरिला वुलहिऩिऱ् चॆऩ्ऱु निऩ्ऱुवाऴ्
उयिरॆला मुऱैवदो रुडम्बु मायिऩाऩ् 178

वयिरम् वाऩ् पूण् अणि–हीरे जड़े श्रेष्ठ आभरणों से अलंकृत; मटङ्कल् मॊय्म्पिताऩ्–सिंह सदृश बलशाली; उयिर् ऍलाम्–जीव सबको; तऩ् उयिर् ऑप्प–अपने प्राणों के समान; ओम्पलाल्–पालित करने से; चॆयिर् इला उलकिनिल्–अपराध-हीन अपने राज्य में; चेऩ्ऱु निऩ्ऱु वाऴ् उयिर् ऍलाम्–चर और अचर जीव-राशि सभी; उऱैवतु–जिसके अन्दर विद्यमान रही; ओर् उटम्पुम् आयिऩाऩ्–वह एक शरीर बने। १७८

कोई किसी वस्तु की सावधानी के साथ रक्षा करे तो कहा जाता है कि वह उसको अपने प्राण-सम रखता है। इधर कवि कहते हैं कि हीरे-जड़ित आभरणवाले वीर दशरथ शरीर है और उनके राज्य के चर और अचर, सब जीव प्राण है। (यह कवि का चमत्कार है)। १७८

कुऩ्ऱॆऩ वुयरिय कुववुत् तोळिऩाऩ्, वॆऩ्ऱियिऩ् दिहिरिवॆम् बरुदि यामॆऩ
ऒऩ्ऱॆऩ वुलहिडै युलावि मीमिशै, निऩ्ऱुनिऩ् ऱुयिर्तॊऱु नॆडिदु काक्कुमे 179

कुऩ्ऱु ऍन उयरिय–पर्वत के समान उन्नत; कुववु तोळिनाऩ्–पुष्ट कन्धोंवाले के; वॆऩ्ऱि अम् तिकिरि–विजयशील सुन्दर (आज्ञा) चक्र; वॆम् परुति आम् ऍन–उष्ण-किरण सूर्य (रूप) मान्य हो; मीमिचै निऩ्ऱु निऩ्ऱु–सबके ऊपर स्थित हो; उलकु इटै–भूमि पर; ऒऩ्ऱु ऍन उलावि–अद्वितीय चलकर; उयिर् तॊऱुम्–जीव जीव को; नॆटितु काक्कुम्–सब तरह से रक्षा करता था। १७९

पर्वत सम कन्धोंवाले राजाधिराज का आज्ञा-चक्र उष्ण किरण सूर्य के समान सबके चक्रों (शासनों) से ऊपर रहता है; सारे भूलोक में अकेला है। हर जीव उसके संरक्षण में आ जाता है। १७९

ऍय्यॆऩ वॆऴुपहै यॆङ्गु मिऩ्मैयाल्, मॊय्पॆरात् तिऩवुऱु मुऴवुत् तोळिऩाऩ्
वैयह मुऴुवदुम् वऱिञ नोम्बुमोर्, शॆय्यॆनक् कात्तिनि दरशु शॆय्हिऩ्ऱाऩ् 180

ऍय् ऍन–शर के समान; ऍऴु पकै–(अपने ऊपर) उठ आनेवाले शत्रु; ऍङ्कुम् इऩ्मैयाल्–कहीं नहीं (है, इसलिए) रहने से; मोय् पॆरा तिनवु उऱु–युद्ध के बिना, युद्ध के लिए खुजलानेवाली (आतुर रहनेवाली); मुऴवु तोळिनाऩ्–मर्दल के समान भुजाओ वाले; वैयकम् मुऴुवतुम्–यह सारी पृथ्वी; वऱिञऩ् ओम्पुम् ओर् चेय् ऍन–गरीब मनुष्य द्वारा पालित एक छोटे खेत के समान; इनितु कात्तु–सावधानी से पालन कर; अरचु चॆय्किऩ्ऱाऩ्–शासन कर रहे है। १८०

शर के समान उनपर आक्रमण करने आनेवाला कोई शत्रु नही है। इसलिए युद्ध-प्रेमी उनकी भुजाओं में खुजली सी उठती है। मर्दल समान कन्धोंवाले वे, दरिद्र जितनी तत्परता और प्रयास के साथ अपने छोटे खेत

का पालन करेगा उसी तत्परता और लगन के साथ, भूमि का पालन करते हैं। १८०

5. तिरु अवदारप् पडलम् (श्री अवतार पटल)

आयव नॊरुपह लयत्तै येनिहर्, तूयमा मुनिवरर् ऱोळुदु तॊल्हुलत्
तायरुन् दन्दैयुन् दवमु मन्बिनाल्, मेयवान् कडवुळुम् पिऱवुम् वेऱुनी 181

आयवन्-वे; ऒरु पकल्-एक दिन; अयत्तैये निकर्-अज ही के समान विद्यमान; तूय मा मुनिवरन्-पवित्र और उत्तम मुनिवर को; तॊऴुतु-नमस्कृत कर; तॊल् कुलम्-(इस) प्राचीन कुल की; तायरुम्-माताये (और); तन्तैयुम्-मेरे पिता; तवमुम्-तपस्या; अन्पिनाल् मेय-भक्ति द्वारा प्राप्य; वान् कटवुळुम्-श्रेष्ठ ईश्वर; पिऱवुम्-और अन्य सब; वेऱु नी-(मेरे लिए) (उनसे) पृथक (उनके अलावा) आप ही है। १८१

उन्होंने (दशरथ ने) एक दिन ब्रह्माजी के ही समान रहनेवाले पवित्र और श्रेष्ठ मुनिवर का नमस्कार कर उनसे यह निवेदन किया। "मेरे लिए आप ही मेरे कुल में उत्पन्न माताएँ, पिता, तपस्या, भजनीय भगवान सबकुछ हैं। १८१

ऎङ्गुलत् तलैवर्ह ळिरवि तन्निनुम्
तङ्गुलम् विळङ्गिडत् तरणि ताङ्गिनार्
मङ्गुन रिलरॆन वरम्बिल् वैयहम्
इङ्गुनिन् नरुळिना लिनिदि नोम्बिनेन् 182

निन् अरुळिनाल्-आपके आशीर्वाद से; ऎम् कुलम् तलैवर्कळ्-मेरे कुल के राजा लोग; तम् कुलम्-अपना कुल; इरवि तन्निनुम् विळङ्किट-सूर्य से भी बढ़कर प्रकाशमान रहे, ऐसा; तरणि ताङ्किनार्-धरणी का पालन किया; इङ्कुम्-अब भी; निन् अरुळिनाल्-आपकी कृपा से; मङ्कुनर् इलर् ऎन-मन्द (प्रकाश) कोई नहीं, इस ख्याति के साथ; वरम्पु इल् वैयकम्-सीमा-हीन पृथ्वी को; इनितिन् ओम्पिनेन-सुखपूर्वक रक्षित करता आ रहा हूँ। १८२

"मेरे कुल के राजाओं ने अपने यश में सूर्य से भी बढकर प्रकाशमय बनकर भूमि का पालन किया। यह आपकी कृपा का फल था। आज भी आप ही की कृपा से, मैं उनके यश में कमी न लाते हुए इस निस्सीम धरणी का पालन करता हूँ। १८२

अऱुपदि नायिर माण्डु माण्डुऱ, उऱुपहै यॊडुक्कियिव् वुलह मोम्बिनेन्
पिऱिदॊरु कुऱैयिलै यॆऩ्पिन् वैयहम्, मऱुहुऱु मॆन्पदोर् मरुक्क मुण्डरो 183

अऱुपतिनायिरम् आण्टु-साठ सहस्र वर्ष; माण्टु उऱ-पूरा करते हुए; उऱु पकै ऒटुक्कि-आक्रामक सभी शत्रुओं को दूरकर; इ उलकम् ओम्पिनेन्-यह पृथ्वी

(मैंने) पाली; पिऱितु ऑरु कुऱै इलै–और कोई अपूरित इच्छा नहीं है; ऍन पिऩ्–मेरे बाद; वैयकम् मऱुकु उऱुम्–यह भूमि (शासक के न होने के कारण) संकट-ग्रस्त होगी; ओर् मऱुक्कम् उण्टु–यह एक मेरी चिन्ता बनी है। अरो। १८३

"मेरे शासन के साठ सहस्र वर्ष पूरे हो गये। सभी तरह के शत्रुओं का दमन किया; सुशासन करता आ रहा हूँ। मेरे मन में और कोई चिन्ता नही है सिवाय इसके कि, मेरे पश्चात संसार राजा के न रहने से दुखी होगा। यह दुख मुझे हो रहा है। १८३

अरुन्दव मुनिवरु मनद णाळरुम्, वरुन्दुद लिऩ्ऱियॆ वाऴ्विऩ् वैहिऩार्
इरुन्दुय रुळक्कुव रॆऩ्पि नॆऩ्बदोर्, अरुन्दुयर् वरुत्तुमॆऩ् नहत्तॆ यॆऩ्ऱनऩ् 184

वरुन्तुतल् इऩ्ऱियॆ–दुख के विना ही; वाऴ्विऩ् वैकिऩार्–जीवन जो भोगते रहे (वे); अरु तव मुनिवरुम्–कठिन तपस्वी मुनिगण; अनुलणाळरुम्–व ब्राह्मण; ऍन् पिऩ्–मेरे बाद; इरु तुयर् उळक्कुवर् ऍऩ्पतु–बड़ा कष्ट उठयँगे; ओर् अरु तुयर्–यह एक कठोर चिन्ता; ऍन् अकत्तै वरुत्तुम्–मेरे मन को त्रस्त करती है; ऍऩ्ऱनऩ्–कहा। १८४

"अब तक ऋषि, मुनि, ब्राह्मण सब सुखपूर्वक अपना तपोनिरत जीवन सुख से चलाते रहे। मेरे मरण के पश्चात उनको बहुत कष्ट सहना पड़ेगा—यह चिन्ता मेरे मन को व्यथित कर रही है।" १८४

मुरशॆऱि शॆऴुङ्गडै मुत्त मामुडि, अरशर्तङ् गोमह ननैय कूऱलुम्
विरैशॆऱि कमलमॆऩ् पॊहुट्टु मेविय, वरशरो रुहऩ्महऩ् मऩत्ति नॆण्णिनाऩ् 185

मुरचु ऍऱि–नगाड़े वजनेवाले; चेऴु कटै–समृद्ध गोद्वार वाले; मुत्तम् मा मुटि–मुक्ता-सज्जित उन्नत किरीटधारी; अरचर् तम् कोमकन्–राजाधिराज (के); अनैय कूऱलुम्–यों कहते ही; विरै चेऱि–सुगन्धिपूर्ण; मॆल् कमलम् पॊकुट्टु–कोमल कमल के बीज में; मेविय–जाकर (जो) रहे; वरम चरोरुकन् मकन्–श्रेष्ठ सरोरुहासन (ब्रह्मा) के पुत्र (वसिष्ठ) ने; मनत्तिऩ्–अपने मन में; ऍण्णिनाऩ्–सोचा। १८५

अयोध्या नगर के नगर द्वारों में नगाड़े वजते थे। ऐसे समृद्ध नगर के, मुक्ता-जड़ित किरीटधारी राजाधिराज ने यह निवेदन किया। तब कमल के बीज में रहनेवाले ब्रह्मा के पुत्र वसिष्ठजी ने अपने मन में सोचकर देखा। १८५

अलैकड नडुवणो रनन्दऩ् मीमिशै, मलैयॆन वऱितुयिल् वळरु मामुहिल्
कॊलैतॊऴि लरक्कर्तङ् गॊडुमै तीर्प्पॆऩॆऩ्, ऱुलैवुऱु ममररुक् कुरैत्त वाय्मैयै 186

अलै कटल् नटवण्–लहरानेवाले समुद्र के मध्य; ओर् अनन्तन् मी मिचै–अनुपम अनन्तनाग पर; मलै ऍन–(नीले) पर्वत के समान; अऱितुयिल् वळरुम्–योग-निद्रा में रत रहनेवाले; मा मुकिल्–श्रेष्ठ मेघ (मेघ श्याम श्रीविष्णु) ने; कॊलै तॊऴिल् अरक्कर्तम्–हत्याकारी राक्षसों के; कॊटुमै–अत्याचारों का; तीर्प्पॆन् ऍऩ्ऱु–निवारण करूँगा—यह; उलैवु उऱुम् अमररुक्कु–दुख उठानेवाले सुरों के पास; उरैत्त वाय्मैयै–जो कहा उस प्रतिज्ञा के वचन को, (स्मरण किया)। १८६

तब उन्हें क्षीरसागर की तरंगों के मध्य, शेषनाग पर योग-निद्रा-रत रहनेवाले और नीले पर्वत के समान शोभायमान श्रीविष्णु का स्मरण हो आया। और उनकी यह प्रतिज्ञा याद आयी कि मैं राक्षसों के त्रास से पीड़ित देवों का कष्ट निवारण करूँगा। १८६

शुडुतोंळि लरक्करार् रॉलैन्दु वानुळोर्, कडुवमर् कळनडि कलन्दु कूरलुम्
पडुपॉरु ळुणर्न्दवप् परमन् यामिनि, अडुहिल मॅनमरुत् तवरॉ डेहिनान् 187

वान् उळोर्–स्वर्ग-वासी (सुर लोग); चुट्टु तोंळिल् अरक्कराल्–क्रूर-कर्मी राक्षसों से; तॉलैन्तु–त्रस्त होकर; कटु अमर् कळन्–विष-कण्ठ (श्रीशिव जी) की; अटि कलन्तु–शरण में जाकर; कूरलुम्–कहने पर; पटु पॉरुळ् उणर्न्त–आगामी विषय जाननेवाले; अ परमन्–वे रुद्र देव; याम् इति अटुकिलम् अँन्न मऱुत्तु–हम अब नहीं मारेंगे, ऐसा नकार कर; अवरॉटु एकिनान्–उनके साथ गये। १८७

आगे मन पटल पर, उस समय के सारे चित्र अंकित हुए। देवता सब रावणादि राक्षसों के क्रूरतापूर्ण अत्याचारों से पीड़ित होकर श्रीनीलकंठ देव के पास गये और उनसे अपने कष्टों का निवेदन किया। शिवजी ने भावी को जाना था। उनसे बोले कि उन्हें अब मार नहीं सकेंगे। फिर उनको लेकर वे चले। १८७

वडवरैक् कुडुमियि नडुवण् माशरु, शुडर्मणि मण्डपन् दुन्नि नान्मुहक्
कडवुळै यडितॉळु दमरर् कण्डहर्, इडिनिहर् कॉडुमैय दियम्बि नाररो 188

अमरर्–देवगण; वटवरै कुटुमियिन् नटुवण्–उत्तर में स्थित (मेरु) पर्वत के शिखर पर रहनेवाले; माचु अऱु चुटर् मणि मण्टपम्–कलंकहीन, प्रकाशमान रत्न-(खचित) मण्डप; तुन्नि–पहुँचकर; नान् मुकम् कटवुळै–चतुर्मुख देव को; अटि तॉळुतु–चरण-वन्दना करके; कण्टकर्–निर्मम राक्षसों के; इटि निकर् कॉटुमै–वज्रपात समान क्रूर कार्यों को; इयम्पिनार्–बोले। १८८

वे सब उत्तर में स्थित मेरुपर्वत के एक शिखर पर, निर्दोष रत्नों से निर्मित एक मण्डप में आये। उन्होंने चतुर्मुख ब्रह्मा का नमस्कार कर लोक-कंटकों के वज्राघातों के समान पड़नेवाले अत्याचार बताये। १८८

पाहशा दनन्ऱनैप् पाशत् तार्त्तडल्, मेहना दन्पुहुन् दिलङ्गै मेयनाळ्
पोहमा मलरुऱै पुनिदन् मीट्टमै, तोहैपा हर्कुऱच् चॉल्लि नानरो 189

अटल् मेकनातन्–अति बली मेघनाद; पाकचातनन् तनै–पाकशासन (देवेन्द्र) को; पाचत्तु आर्त्तु–पाश द्वारा बाँधकर; इलङ्कै पुकुन्तु मेय नाळ्–लंका में ले गया, (और इन्द्र वहाँ रहा) तब; मीट्टमै–उसको मुक्त कर लाने की बात; पोकम् मा मलर् उऱै–मनोरम कमल-पुष्प पर आसीन ब्रह्मा ने; तोकै पाकर्कु–अर्धनारीश्वर को; उऱ–खूब समझाकर; चॉल्लिनान्–सुनाई। १८९

तब ब्रह्मा ने अर्धनारीश्वर शिवजी से पाकशासन (इन्द्र) की बात

कही। वह मेघनाद द्वारा पाश-बद्ध होकर लंका में ले जाया गया। फिर स्वयं ब्रह्माजी किसी तरह मुक्त कराके उसे लाये थे। अब वे कुछ नही कर सकेंगे। १८९

इरुपदु करन्दलै यीरैन् दॆन्नुमत्
तिरुविलि तन्नैत् तॆरुञ् जॆयलिन्‌ ऱॆङ्गळाल्
करुमुहि लॆन्नवळर् करुणै यङ्गडल्
पॊरुतिडर् तणिक्किलुण् डॆनुम्बु णर्प्पिनार् 190

करम् इरुपतु–हाथ बीस; ईरैन्तु तलै ऍन्नुम्–दस सिर––इस ख्याति के; अ तिरु इलि तन्नै–उस श्री-हीन को; तॆरुम् चॆयल्–मारने का काम; ऍङ्कळाल् इन्ऱु–हम (दोनों) के वश का नहीं; करु मुकिल् ऍन–श्यामल मेघ की तरह; वळर्–योग-निद्रा-रत; करुणै कटल्–कृपा-सागर; पॊरुतु–युद्ध कर; इटर् तणिक्किल्–दुख दूर करेंगे, तभी; उण्टु–हो सकता है; ऍनुम् पुणर्प्पिनार्–इस विचार में एकमत होकर। १९०

"दस सिर और बीस हाथ वाले, दया-श्री से हीन रावण को मारना हमारे वश का नही। श्यामल मेघ के समान, क्षीरसागर पर योग-निद्रा मे रहनेवाले दयासागर, श्रीविष्णु ही इसका उपाय कर सकते हैं।" ऐसा निश्चय कर; । १९०

तिरैतवऴ् पाऱ्कडऱ् ऱुयिलुन् देवनै, मरहद मलैयिनै वऴुत्ति नॆञ्जिनाल्
करकम लङ्गुवित् तिरुन्द कालैयिल्, परगति युणर्न्दवर्क् कुदवुम् बण्णवन्191

तिरै तवऴ्–लहरें जिस पर मन्द चलती हैं; पाल् कटल् तुयिलुम् तेवनै–उस क्षीरसागर पर योग-निद्रा करनेवाले; मरकत मलैयिनै–मरकत पर्वत को, (अर्थात् श्रीविष्णुदेव को); नॆञ्चिनाल् वऴुत्ति–मन से चिन्तन करके; कर कमलम् कुवित्तु–करकमल जोड़कर; इरुन्त कालैयिल्–रहते समय; उणर्न्तवर्क्कु–तत्वज्ञों को; परकति उतवुम् पण्णवन्–उत्कृष्ट परगति (मुक्ति) दिलानेवाले श्रीविष्णु भगवान। १९१

वे हाथ जोड़ क्षीरसागर की तरंगो के मध्य योग-निद्रा-रत मरकतपर्वत-सम विष्णुदेव का ध्यान करने लगे। तब तत्वज्ञों को मुक्तिपद अर्थात् अपना श्रीवैकुंठलोकवास, प्रदान करनेवाले विष्णुदेव, । १९१

करुमुहि ऱामरैक् काडु पूत्तुनी
डिरुशुड रिरुपुऱत् तेन्दि येन्दलर्त्
तिरुवॊडुम् बॊलियवोर् शॆम्बॊऱ् कुन्ऱिन्मेल्
वरुवपोऱ् कलुऴन्मेल् वन्दु तोन्ऱिनान् 192

करु मुकिल्–काला मेघ; तामरै काटु पूत्तु–कमल-कानन विकसित कर; नीटु इरु चुटर्–दीर्घ दो प्रकाशपुंज; इरु पुऱत्तु एन्ति–दोनो पार्श्वो मे धारण किये; अलर् ऍन्तु तिरुवॊटुम् पॊलिय–कमलासना श्रीलक्ष्मी के साथ शोभायमान होकर;

ओर् चॅम् पॊन् कुन्ऱिन् मेल्–एक लाल स्वर्णगिरि पर; वरुव पोल्–(विराजे) आये ऐसा; कलुळन् मेल् वन्तु–गरुड़ पर (आरूढ़ हो) आकर; तोन्ऱिनान्–प्रगट हुए। १६२

शंख और चक्र धारण कर, कमला, श्रीलक्ष्मीदेवी, के साथ गरुड़ारूढ़ आकर प्रकट हुए। यह ऐसा लगा मानों एक कमल-काननयुक्त नीला पर्वत, चन्द्र, सूर्य और श्रीलक्ष्मी के साथ स्वर्ण-पर्वत पर चढ़कर आया हो। १९२

ऍऴुन्दनर् कडवुळर्क् किरैयुन् दामरैच्
चॅऴुन्दवि शुहन्दवत् तेवुञ् जॅन्ऱॅदिर्
विऴुन्दन रडिमिशै विण्णु ळोरॊडुम्
तॊऴुन्दॊऱुन् दॊऴुन्दॊऱुङ् गळितु ळङ्गुवार् 193

कटवुळर्क्कु इऱैयुम्–देवेन्द्र और; चॅऴु तामरै तविचु उकन्त–प्रफुल्लित कमल के आसन पर विराजमान; अ तेवुम्–वे देवता (ब्रह्मा) भी; ऍऴुन्तनर्–उठे; विण् उळोरॊटुम्–अन्य देवताओं के साथ; ऍतिर् चॅन्ऱु–सामने जाकर; अटि मिचै विऴुन्तनर्–चरण तल पर विनत हुए; तॊऴुन्तोऱुम् तॊऴुन्तोऱुम्–ज्यों-ज्यों नमस्कार करते; कळि तुळङ्कुवार्–त्यों-त्यों आनन्दानुभव में बढ़ते है (उनका आनन्द वर्धित होता है)। १६३

उनको देखकर देवेन्द्र और कमलासन ब्रह्मा दोनों उठे और अन्य देवताओं को साथ ले उनके चरणों पर विनत हुए। अनेक बार उन्होंने नमस्कार किया। हर बार उनका आनन्द बढ़ा। १९३

आडिनर् पाडिन रङ्गु मिङ्गुमाय्
ओडिन्न रुवहैमा नऱवुण् डोर्हिलार्
वीडिन ररक्करॆन्न ऱुवक्कुम् विम्मलाल्
शूडिनर् मुऱैमुऱै तुळवत् ताण्मलर् 194

उवकै मा नऱवु उण्टु–आनन्दरूपी अधिक सुरा पीकर; ओर्किलार्–किंकर्तव्य-मूढ़ होकर; आटिनर्–नाचे; पाटिनर्–गाये; अङ्कुम् इङ्कुमाय् ओटिनर्–इधर-उधर भागे; अरक्कर् वीटिनर् ऍन्ऱु–राक्षस मरे––यह निश्चय करके; उवक्कुम् विम्मलाल्–आनन्दवर्धन (वर्धित आनन्द) के साथ; तुळवम् ताळ्–तुलसी-दल-गन्ध-भूषित चरणों पर; मुऱै मुऱै–यथाक्रम; मलर् चूटिनर्–पुष्पार्चना की। १६४

उनको आनन्द का नशा सा हो गया। वे नाचे, गाये और इधर-उधर दौड़े। उनको निश्चय हो गया कि अब राक्षस मिट गये। इस विचार से उत्पन्न आदर और श्रद्धा के कारण उन्होंने विष्णुदेव के चरणों पर पुष्पार्चन किया। (देवता के एक-एक नाम उच्चारण करते हुए पुष्प अर्पण करना अर्चन कहा जाता है।)। १९४

पॊऩ्वरै यिऴिवदोर् पुयलिऱ् पॊऱ्पुड़
ॲऩ्ऩैया ळुडैयवऩ् ऱोणिऩ् ऱॆम्बिराऩ्
शॆऩ्ऩिवाऩ् तडवुमण् डपत्तिऱ् चेर्ऩ्दरि
तुऩ्ऩुपॊऱ् पीडमेऱ् पॊलिन्दु तोऩ्ऱिऩाऩ् 195

ॲम्पिराऩ्–मेरे भगवान; पॊऩ् वरै इऴिवतु ओर् पुयलिऩ्–स्वर्ण-पर्वत से उतरनेवाले एक मेघ के समान; पॊऱ्पु उड़–शान के साथ; ॲऩ्ऩै आळुडैयवऩ् तोळ् निऩ्ऱु–मेरे शरण्य (भक्त गरुड़) के कन्धों पर से उतरकर; चेऩ्ऩि वाऩ् तटवु–जिसकी चोटी आकाश को स्पर्श करती रही उस; मण्टपत्तिल् चेर्न्तु–मण्डप के अन्दर जाकर; अरि तुऩ्नु पॊऩ् पीटम् मेल्–स्वर्ण सिंहासन पर; पॊलिन्तु तोऩ्ऱिऩाऩ्–ज्योतिस्वरूप विराजे। १९५

तब श्रीविष्णु, मेरे भगवान, स्वर्ण-पर्वत से उतरनेवाले एक मेघ के समान मेरे शरण्य गरुड़ से भव्य रूप से उतरे; और उस गगनस्पर्शी मण्डप के अन्दर श्रेष्ठ सिंहासन पर विराजे। (भक्तों के लिए भगवान से बढ़कर भगवान के सेवक अधिक श्रद्धेय है। अतः कम्बन गरुड़देव का नाम अधिक आदर से लेते है। १९५

विदियॊडु मुऩिवरुम् विण्णु ळोर्हळुम्
मदिवळर् शडैमुडि मऴुव लाळनुम्
अदिशय मुडनुवन् दयलि रुन्दुऴिक्
कॊदिकॊळ्वे लरक्कर्दङ् गॊडुमै कूऱुवार् 196

वितियॊटु मुनिवरुम्–विधाता के साथ मुनिगण; विण् उळोर्कळुम्–और, स्वर्ग-वासी देवता; मति वळर्–शुक्ल-पक्ष के चन्द्र का निलय; चटै मुटि–जटाधारी (चन्द्रशेखर); मऴु वल् आळनुम्–तप्त लोहे का अस्त्र रखनेवाले; अतिचयमुटऩ् उवन्तु–अतिशय मुग्ध होकर; अयल् इरुन्तुऴि–समीप रहते समय; कॊति कॊळ् वेल्–तापक शक्ति के; अरक्कर् तम् कॊटुमै–(धारक) राक्षसों के क्रूर कार्यों को; कूऱुवार्–कहने लगे। १९६

उनके पास विधाता, ऋषिगण, आकाशलोकवासी, जटा में चन्द्र और हाथ में तप्त लोहे का हथियार धारण करनेवाले शिवजी इत्यादि बैठकर संतापक भालोंवाले राक्षसों द्वारा होनेवाले अत्याचारों का वर्णन करने लगे। १९६

ऐयिरु तलैयिनो ऩनुश ऩादियाम्
मॆय्वलि यरक्कराल् विण्णु मण्णुमे
शॆय्दव मिऴन्दऩ तिरुवि ऩायह
उय्तिऱ मिल्लैयॆऩ् ऱुयिर्प्पु वीङ्गिनार् 197

तिरुविऩ् नायक–लक्ष्मीपति; ऐयिरु तलैयिनोऩ्–पांच के दो (दस) सिर वाले; अनुचऩ् आतियाम्–उसका अनुज आदि; मॆय्वलि अरक्कराल्–शरीर-बल रखनेवाले

राक्षसों द्वारा; विण्णुम्–देवलोक (वासी); मण्णुमे–भूलोक (वासी) भी; चॆय् तवम् इऴन्तन–कर्तव्य तप आदि कर्म छोड़ बैठे; उय् तिऱम् इल्लै–बचने का उपाय नहीं है; ॲन्ऱु–कहकर; उयिर्प्पु वीङ्किनार्–दीर्घ निश्वास छोड़ा। १६७

"हे श्रीलक्ष्मीपति ! दशग्रीव के अनुज आदि, अपार शरीर-बल से युक्त, राक्षसों के कारण, आकाशलोक और भूलोक तपस्या आदि सत्कर्मों से हीन हो गये। अब बचने का उपाय नहीं दिखता।" यह कहकर वे दीर्घ निश्वास छोड़ने लगे। १९७

ॲङ्गणीळ् वरङ्गळा लरक्क रॆन्ऱुळार्
पॊङ्गुमू वुलहैयुम् बुडैत्त ऴित्तनर्
शॆङ्गणा यहविनित् तीर्त्त लिल्लैयेल्
नुङ्गुव रुलहैयोर् नॊडियि नॆन्ऱनर् 198

चॆम् कण् नायक–लाल आँखों वाले नायक; ॲङ्कळ् नीळ् वरङ्कळाल्–हमारे प्रदत्त बड़े वरों के कारण; अरक्कर् ॲन्ऱु उळ्ळार्–राक्षस नामधारी सब; पॊङ्कुम् मू उलकैयुम्–संवर्धनशील तीनों लोकों को; पुटैत्तु अऴित्तनर्–आहत कर मिटाते हैं; इनि–अब; तीर्त्तल् इल्लैयेल्–संहार नहीं हुआ तो; उलकै–सारे लोकों को; ओर् नॊटियिन्–एक क्षण में; नुङ्कुवर्–उदरस्थ कर लेंगे; ॲन्ऱनर्–ऐसा कहा। १६८

उन्होंने आगे कहा कि ताम्राक्ष ! हमसे प्राप्त वरों के दीर्घ प्रभाव के कारण, वे राक्षस संवर्धनशील तीनों भुवनों का नाश कर रहे हैं। अब उनका संहार नही होगा तो सारे लोकों को एक पल में खा जाएँगे। १९८

ॲन्ऱन रिडरुऴन् दिरैञ्जि येत्तलुम्
मन्ऱलन् दुळविनात् वरुन्दल् वञ्जहन्
तन्ऱलै यऱुत्तिडर् तणिप्पॆन् ऱारणिक्
कॊन्ऱुनीर् केण्मेन वुरैत्तन् मेयिनान् 199

ॲन्ऱनर्–ऐसा कहनेवाले हो; इटर् उऴन्तु–दुखतप्त होकर; इऱैञ्चि एत्तलुम्–विनत हो स्तुति करने पर; मन्ऱल् अम् तुळविनान्–सुगन्धित तुलसीमाला से अलंकृत (श्रीविष्णु) ने; वरुन्तल्–दुखी मत हों; वञ्चकन् तन् तलै अऱुत्तु–वंचक का सिर काटकर; तारणिक्कु इटर् तणिप्पॆन्–धरणी का संकट हरण करूँगा; नीर् ऒन्ऱु केण्म् ॲन–आप लोग एक बात सुनें––यह बात कहकर; उरैत्तल् मेयिनान्–आगे कहने लगे। १६६

यह कहकर दु:ख से पीड़ित उन्होंने भगवान की बहुप्रकार से विनय की। तब तुलसी-मालाधारी देव ने कहा कि आपलोग दु:ख न करें। उस वंचक का सिर काटकर धरणी का दु:ख दूर कर दूँगा। आप एक बात सुनिए। १९९

वानुळो रनैवरुम् वान रङ्गळाक्, कानिनुम् वरैयिनुङ् गडिकोँळ् काविनुम्
शेनैयो डवदरित् तिडुमिन् शॅऩ्ऱॅन, आनन मलर्न्दन नरुळि नाळियान् 200

वान् उळोर् अनैवरुम्–सुरलोकवासी आप सब; वानरङ्कळ् आ–वानर बनें; कानिनुम्–वनो और; वरैयिनुम्–पर्वतो; कटि कोँळ्–सुवासपूर्ण; काविनुम्–बागों में; चेनैयोँटु चॅऩ्ऱु अवतरित्तिटुमिन्–सेना के साथ जाकर अवतार लीजिए; ऍन्न–यह कहकर; अरुळिन् आळियान्–दयासागर ने; आननम् मलर्न्तनन्–श्रीमुख से शुभ उच्चारण किया। २००

आकाशलोकवासी आप सब वानर बनकर, जंगलों, पर्वतों और सुवासपूर्ण बागो में जाकर रहे। ऐसा उन्होने अपने श्रीमुख से शुभ उच्चारण किया। २००

मशरद मनैयवर् वरमुङ् वाळ्वुमोर्, निशरद कणैहळा नीऱु शॅय्ययाम्
कशरद तुरहवाट् कडल्होँळ् कावलन्, दशरदन् मदलैयाय् वरुदुन् दारणि 201

अनैयवर्–उनके; वरमुम्–वरो को; मचरतम् वाळ्वुम्–'भूतरथ' के समान (माया-मय) जीवन को; ओर्–अनुपम; निचम् रतम् कणैकळाल्–अचूक और रक्त-पिपासू शरों से; नीऱु चेय्य–राख बनाने हेतु; याम्–हम; कचम्, रतम्, तुरकम्, आळ् कटल् कोँळ्–गज, रथ, तुरग पदाति, चतुरंग सेना-सागर के पति; कावलन् तचरतन्–चक्रवर्ती दशरथ के; मतलैयाय्–पुत्र के रूप में; तारणि वरुतुम्–पृथ्वी पर जन्म लूँगा। २०१

उन्होंने आगे कहा कि राक्षसों के वरो और उनके मायामय जीवन को हम अपने अमोघ और रक्तपिपासू शरों द्वारा खाक में मिलाने के लिए चतुरंगिनी सेना के स्वामी, राजा दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लेगे। २०१

वळैयोँडु तिहिरियुम् वडवै तीदर, विळैदरु कडुत्तुडै विरिहोँळ् पायलुम्
इळैयव रॅऩवडि परव वेहिनाम्, वळैमदि लयोत्तियिल् वरुदु मॅऩ्ऱऩऩ् 202

वळैयोँटु तिकिरियुम्–शंख के साथ चक्र (और); वटवै ती तर–वड़वाग्नि को भी जलाते हुए; विळै तरु कटु–उत्पन्न होनेवाला विष जिसमें है; विरिकोँळ् पायलुम्–वह विशाल शय्या (शेषनाग); इळैयवर् ऍन अटि परव–अनुज बनकर मेरी सेवा करें, ऐसा; नाम् एकि–हम आकर; वळै मतिल् अयोत्तियिल्–बड़े प्राचीरों से घिरे अयोध्या नगर में; वरुतुम्–जन्म लेगे। २०२

मेरे शख, चक्र और शय्या का काम देनेवाले कठोर विषधर शेषनाग मेरे अनुजो के रूप में आकर मेरी सेवा करेंगे। हम अयोध्या में आकर प्रकट होगे। २०२

ऍऩ्ऱव नुरैत्तपो दॅळ्ळुनत्तु तुळ्ळिनार्, नन्ऱिकोँण् मङ्गल नादम् बाडिनार्
मन्ऱलम् जॅळ्ळुनदुळ वणियु मायनार्, इत्तॅमै यळित्तन रॅऩ्नु मेसवलाल् 203

ऍऩ्ऱु अवन् उरैत्तपोतु–ऐसा उन्होंने कहा, तब (देव लोग सब); मन्ऱल् अम् चॅळ् तुळवु अणियुम् मायनार्–सुवासित, सुन्दर और प्रफुल्ल तुलसी-मालाधारी मायावी

(लीलाधर) देव; इन्ऱु ॲमै अळित्तनर्–आज हमको बचा चुके; ॲन्नुम् एम्पलाल्–इस आनन्द से; ॲळुन्तु तुळ्ळिनार्–उठे और उछले; नन्ऱि कॊळ्–कृतज्ञता-पूरित; मङ्कल नातम् पाटिनार्–मंगलाशासन के (मंगल चाहनेवाले) गीत गाये। २०३

जब उन्होंने यह कहा तब वे देवता सब उठे और उछले। तुलसी-मालाधारी देव ने हमारा उद्धार किया—इस विचार से उत्पन्न कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनका मंगल-सूचक कीर्तन किया। २०३

पोयदॆम् बॊरुम लॆन्ऩा विन्दिर नुवहै पूत्तान्
तूयमा मलरु ळोनुञ् जुडर्मदि शूडि नानुम्
शेयुयर् विशुम्बु ळोरुन् दीर्न्ददॆञ् जिरुमै यॆन्ऱार्
मायिरु ञाल मुण्डोन् कलुळन्मेऱ् चरणम् वैत्तान् 204

इन्तिरन्–देवेन्द्र; ॲम् पॊरुमल् पोयतु–हमारा भय दूर हुआ; ॲन्ऩा–कहकर; उवकै पूत्तान्–मुदित हुआ; तूय मा मलर् उळोनुम्–पवित्र, श्रेष्ठ पुष्प (कमल) पर आसीन ब्रह्माजी भी; चुटर् मति चूटिनानुम्–द्युतिमान चन्द्र के धारक भी; चेय् उयर् विचुम्पु उळोरुम्–अत्युन्नत आकाश-लोक के वासी भी; ॲम् चिऱुमै तीर्न्ततु–हमारी अवनति दूर हुई; ॲन्ऱार्–कहा; मा इरु ञालम् उण्टोन्–बहुत बड़ा यह भूलोक उदरस्थ करनेवाले (श्रीविष्णुदेव) ने; कलुळन् मेल्–गरुड़ पर; चरणम् वैत्तान्–अपना श्रीचरण रखा। २०४

देवेन्द्र यह सोचकर कि हमारा भय अब दूर हुआ बहुत उल्लसित हुये। ब्रह्मा, चन्द्रशेखर शिवजी और अन्य देवता—सबों ने यह मान लिया कि अब हमारी अवनति दूर हो गयी। तब भूगर्भ (विष्णु) गरुड़ पर चढ़े, (गमन के विचार से)। २०४

ॲन्नैया ळुडैय वैयन् कलुळन्मे लॆऴुन्दु पोय
पिन्ऩर्वा नवरै नोक्किप् पिदामहन् पेशु हिन्ऱान्
मुन्ऩरे यॆण्किन् वेन्तन् यानॆन मुडुहि नेन्मऱ्
ऱन्ऩवा ऱॆवरु नीर्पो यवदरित् तिडुमि नॆन्ऱान् 205

ॲन्नै आळुटैय ॲयन्–मेरे नियामक देव (के); कलुळन् मेल् ॲऴुन्तु पोय पिन्तर्–गरुड़ पर विराजकर जाने के पश्चात्; वानवरै नोक्कि–देवों को देख; पेचुकिन्ऱान् पिता मकन्–बोलनेवाले पितामह ने; मुन्नरे–पूर्व ही; यान्–मैं; ॲण्किन् वेन्तन् ॲन–रीछों के राजा के रूप में; मुटुकिनेन्–जन्म ले चुका हूँ; अन्नवाऱु–उसी प्रकार; नीर् ॲवरुम्–तुम सब लोग; पोय् अवतरित्तिटुमिन्–जन्म ले लो; ॲन्ऱान्–कहा; (मऱ्ऱु)। २०५

मेरे (कम्बन के) नियामक श्रीमन्नारायण गरुड़ पर विराजे चले गये। उसके बाद ब्रह्मा ने देवताओं से कहा कि मैं पहले ही रीछों के राजा जाम्बवान के रूप में जन्म ले चुका हूँ। उसी प्रकार आपलोग भी वानर बनकर अवतरित हो जाइए। (वैष्णव सम्प्रदाय में शेष-शेषी भाव का

मुख्यत्व है—अर्थात् श्रीलक्ष्मीनारायण को सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र स्वामी, नियामक और सर्वशेषी मानना। भक्त अपने को पूर्णरूप से उनके अधीन मान लेता है।)। २०५

तरुवुडैक् कडवुळ् वेन्दऩ् शाऱ्ऱुवा नॅऩदुकूऱ्
मरुवलर्क् कशनि यऩ्ऩ वालियु महनु मॅऩ्ऩ
इरविमऱ् ऱॅऩदु कूऱङ् गवऱ्किळै यवऩॅऩ् ऱोद
अरियुमऱ् ऱॅनदु कूऱु नीलनॅऩ् ऱुरैऩ्दिट् टानाल् 206

तरु उटै कटवुळ् वेन्तन्–(कल्पक) तरुओं के (स्वामी) देवेन्द्र; चाऱ्ऱुवान्–कहते है (कहनेवाले वनकर); ऍनतु कूऱु–मेरा अंश; मरुवलर्क्कु–शत्रुओं को; अचनि अऩ्ऩ–वज्र-सम; वालियुम्–वाली और; मकनुम् ऍऩ्ऩ–उसका पुत्र है, यह कहने पर; इरवि–सूर्य; ऍनतु कूऱु–मेरा अंश; अङ्कु अवऱ्कु इळैयवऩ्–कथित (उस) वाली का अनुज; ऍऩ्ऱु ओत–यह कहते; अरियुम्–अग्नि (ने) भी; ऍनतु कूऱु नीलऩ् ऍऩ्ऱु अरैन्तिट्टान्–मेरा अंश नील है—यह कहा। २०६

नन्दन वन के स्वामी देवेन्द्र ने कहा कि, शत्रुओं के लिए वज्रतुल्य बाली और उसके पुत्र अंगद में मेरा अंश है। सूर्य ने कहा कि वाली का अनुज सुग्रीव मेरा अंश है। अग्निदेव ने बताया कि नील नामक वानर मेरा अश है। २०६

वायुमऱ् ऱॅनदु कूऱु मारुदि यॅऩ्ऩ मऱ्ऱोर्
कायुमऱ् कडङ्ग ळाहिक् काशिनि यदनिऩ्मीदु
पोयिडत् तुणिन्दो मॅऩ्ऱार् पुरारिमऱ् ऱियानुङ् गाऱ्ऱिऩ्
शेयॅनप् पुहऩ्ऱान् मऱ्ऱैत् तिशैयुळोर्क् कवदि युण्डो 207

वायु–पवनदेव (के); ऍनतु कूऱु मारुति ऍऩ्ऩ–मेरा अंश मारुति है, यह कहने पर; मऱ्ऱोर्–अन्य (देवता लोग); कायुम् मऱ्कटङ्कळ् आकि–क्रोधी मर्कट बनकर; काचिनि अतनिऩ् मीतु–भूमि पर; पोयिट तुणिन्तोम्–जन्म लेने का निश्चय किया है (हमने); ऍऩ्ऱार्–बोले; पुरारि–त्रिपुरारि ने; यानुम्–मै भी; काऱ्ऱिऩ् चेय्–वायुपुत्र (में मिला) रहूँगा; ऍन पुकऩ्ऱान्–ऐसा कहा; मऱ्ऱै–और दूसरे; तिचै उळ्ळोर्क्कु–नाना दिशाओं के रहनेवालों की; अवधि उण्टो–कोई सीमा है। २०७

वायुदेव ने मारुति को अपना अंश कहा। अन्य देवताओं ने भी कहा कि हम सब क्रोधी वानरों के रूप में भूमि पर जाकर अवतरित होगे। तब त्रिपुरारी ने बताया कि मारुति में मेरा अश भी मिला रहेगा। कितने ही देवों का किस-किस दिशा में जन्म हुआ, इसका विवरण नही हो सकता। २०७

अरुडरु कमलक् कण्ण नरुण्मुरै यलरु ळोनुम्
इरुडरु मिडऱ्ऱि नॊनु ममररु मिनैय राहि

मरुडरु वन्नत्तित् मण्णिल् वान्नर राहि वन्दार्
पोरुडरु मिरुवर् तन्द मुरैविडज् जॆन्ऱु पुक्कार् 208

अरुळ् तरु–कृपालू; कमलम् कण्णन्–कमलाक्ष श्रीविष्णु के; अरुळ् मुऱै–आज्ञानुसार; अलर् उळोतुम्–पुष्पासन; इरुळ् तरु मिटऱ्ऱिनोनुम्–अन्धकारमय (नील) कण्ठवाले भी; अमररुम्–और अन्य देवता लोग; इत्तैयर् आकि–ऐसे संकल्पवाले बनकर; मरुळ् तरु वत्तत्तिल्–भयावने जंगलों में; मण्णिल्–अन्य स्थलों पर; वाततर् आकि वन्तार्–वानर बनकर पैदा हुए; पॊरुळ् तरुम् इरुवर्–वरद दोनों (ब्रह्मा और रुद्र); तम् तम् उऱैविटम् चॆन्ऱु पुक्कार्–अपने-अपने निवासस्थान जा पहुँचे। २०८

वरदायी कमलाक्ष श्रीविष्णु भगवान की अनुज्ञा के अनुसार कमलासन, श्रीनीलकण्ठ और अन्य देवता, अंश में, बानर बनकर भयंकर काननों और पर्वतों पर जाकर रहे। वर-प्रदाता (ब्रह्मा और शिवजी) दोनों अपने-अपने निवास-स्थान सिधारे। २०८

ईदुमुन् निहऴ्न्द वण्ण मॆन्नमुनि यिदयत् तॆण्णि
मादिरम् पॊरुद तिण्डोण् मन्ननी वरुन्द लेऴेऴ्
बूदल मुऴुदुन् दाङ्गुम् बुदल्वरै यळिक्कुम् वेळ्वि
तीदऱ मुयलि नैय शिन्दनोय् तीरु मॆन्ऱान् 209

ईतु–यह (वृत्तान्त); मुन् निकऴ्न्त वण्णम् ॲन–पहले घटित हुआ वृत्तान्त है—यह; मुनि–मुनिवर (वसिष्ठ) ने; इतयत्तु ॲण्णि–मन में सोचकर; मातिरम् पॊरुत–पर्वत का मुकाबला करनेवाले; तिण् तोळ् मन्न–सुदृढ़ कन्धोंवाले महाराज; नी वरुन्तल्–आप दुख न करें; एऴ् एऴ् पूतलम् मुऴुतुम् ताङ्कुम्–सात और सात लोकों का पालन करनेवाले; पुतल्वरै–पुत्रों को; अळिक्कुम् वेळ्वि–दिलानेवाला यज्ञ; तीतु अऱ मुयलित्–अपराध-हीन रीति से कर चुकेंगे तो; ऐय–महिमावान; चिन्तै नोय्–चिन्ता का रोग; तीरुम्–मिट जायगा; ॲन्ऱान्–ऐसा कहा। २०९

वसिष्ठ ने पूर्व-घटित यह वृत्तान्त अपने मन में सोचा। फिर उन्होंने दशरथ से कहा कि हे सशक्त कन्धोंवाले महाराज! आप चिन्ता मत कीजिए। सर्वलोक-शासन-समर्थ पुत्रों को दिलानेवाला एक यज्ञ है। उसको आप सफल रूप से कर चुकेंगे तो आपकी चिन्ता दूर हो जायगी। २०९

ॲन्ऱमा मुनिवन् कूऱ वॆऴुन्दुपे रुवहै पॊङ्ग
मन्नवर् मन्न नन्द मामुनि शरणज् जूडि
उन्नैये पुहल्पुक् केनुक् कुरुहण्वन् दुरुव दुण्डो
अन्नदऱ् कडियेन् शॆय्युम् बणियिनै यरुळ् हॆन्ऱान् 210

ॲन्ऱ–ऐसा; मा मुनिवन् कूऱ–महान मुनि के कहने पर; मन्नवर् मन्नन्–राजाधिराज; पेर् उवकै–बड़ा ही आनन्द; पॊङ्क–उमड़ते; अन्त–उन; मा मुनि चरणम् चूटि–महान मुनि के चरणों की वन्दना करके; उन्नैये पुकल् पुक्केऩुक्कु–आप ही की शरण में आये हुए मुझे; उरुकण् वन्तु उरुवतु उण्टो–दुख मिलेगा क्या;

अन्नतर्कु–उस यज्ञ के लिये; अटियेन् चेय्युम् पणियित्तै–मुझसे करणीय काम को; अरुळुक–आज्ञा करने की कृपा कीजिए। २१०

महर्षि वसिष्ठ ने यह बात कही तो महाराज के आनन्द का ठिकाना नही रहा। वे उठे और मुनिश्रेष्ठ के पैरों पर नमस्कार करके बोले कि मैं आपकी शरण में हूँ; मुझे दुःख ही नही हो सकता। आप कृपा कर बताइये कि उस यज्ञ को सुसम्पन्न करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए। २१०

माशरु शुरर्ह ळोडु मऱ्ऱुळोर् तमैयु मीन्ऱ
काशिब नरुळु मैन्दन् विबाण्डहन् गङ्गै शूडुम्
ईशनुम् बुहऴ्दर् कोत्तो निरुङ्गलै पिऱवु मॆण्णिन्
तेशुडैत् तन्दै यॊप्पान् ऱिरुवरुळ् पुनैन्द मैन्दन् 211

माचरु–कलंकहीन; चुरर्कळोटु–देवों को और; मऱ्ऱु उळोर् तम्मैयुम्–अन्य (दैत्य, मनुष्य, पक्षी, जानवर आदि) जीवों को; ईन्ऱ–जिन्होंने सृजित किया; काचिपन् अरुळुम् मैन्तन्–(उन) कश्यप (प्रजापति) जनित पुत्र; कङ्कै चूटुम् ईचतुम् पुकऴ्तर्कु ओत्तोन्–गंगाधर श्रीशिव जी के लिए भी स्तुति करने योग्य; इरु कलै पिऱवुम्–गम्भीर शास्त्र-ज्ञान और विद्याओं में; ऍण्णिल्–सोचने पर; तेचु उटैय तन्तै ऑप्पान्–तेजस्वी अपने पिता की समानता करनेवाले; विपाण्टकन्–विभाण्डक मुनि के; तिरु अरुळ् पुनैन्त मैन्तन्–लोक-दया से जनित पुत्र। २११

वसिष्ठजी बोले। कश्यप प्रजापति के पुत्र विभाण्डक थे जो गंगाधर शिवजी के लिए भी स्तुत्य थे; सर्वशास्त्रज्ञ थे; विद्वान थे और अपने पिता के ही समान तेजोमय। उनके, कृपा-प्रदत्त पुत्र,। २११

वरुहलै यऱिवु नीदि मनुनॆऱि वरम्बु वाय्मै
तरुहलै मऱैयु मॆण्णिऱ् चतुमुकऱ् कुवमै शान्ऱोन्
तिरुहलै युडैय विन्दच् चॆहत्तुळोर् तन्मै तेरा
ऒरुहलै मुहच्चि रुङ्ग वुयर्दवन् वरुदल् वेण्डुम् 212

वरु कलै अऱिवु–विविध कलाओ के (विधाओं के) ज्ञान में; नीति मनु नॆऱि वरम्पु–नीतिशास्त्र, मनु-धर्म के विधि-विधानों में; वाय्मै तरु–तत्वबोधक; कलै मऱैयुम्–शाखा-विभक्त वेदो में; ऍण्णिल्–विचार करने पर; चतुमुकन्कु उवमै चान्ऱोन्–चतुर्मुख से उपमेय है; तिरुकलै उटैय–(स्त्री पुरुषादि) भेदयुक्त; इन्त चॆकत्तु उळोर् तन्मै–इस लोक के वासियों के रहस्यों को; तेरा–न जाननेवाले; ऑरु कलै चिरुङ्कम् मुकम्–अकेला शृंगवाला मुख जिनका है; उयर् तवन्–उन्नत तपस्वी; वरुतल् वेण्टुम्–(उनको) इधर आना चाहिए। २१२

ऋष्यशृंग है। वे सारी विद्याओ में पारंगत, मनु-धर्म-शास्त्र मे निष्णात और अनन्त शाखाओं वाले वेदों के ज्ञान मे, कहिए, स्वयं चतुर्मुख के समान है। वे स्त्री-पुरुष का भेद नही जानते और उनके सिर पर एक शृंग है। वे महान तपस्वी हैं। उनको इधर लिवा लाना होगा। २१२

पान्दळिन् मकुड कोडि परित्तपा रिदनिल् वैहुम्
मान्दरै विलङ्गॅन् ऱुन्नु मनत्तन्मा तवत्त नॅण्णिऱ्
पून्दवि शुहन्दु ळोनुम् पुरारियुम् बुहळ्दऱ् कोत्त
शान्दनाल् वेळ्वि मुऱ्ऱिऱ् ऱनैयर्ह ळुळरा मॅन्ऱान् 213

पान्तळिन् मकुटम् कोटि–शेषनाग के अनेक (करोड़) फणों पर; परित्त–धृत; पार् इतनिल् वैकुम्–इस धरती पर बसनेवाले; मान्तरै–मनुष्यों को; विलङ्कु ॲन्ऱु उन्नुम् मनत्तन्–पशु समझनेवाले मन के; मा तवत्तन्–महान तपस्वी; ॲण्णिल्–विचार करने पर; पू तविचु उकन्तु उळ्ळोनुम्–(कमल) पुष्पासन-प्रिय ब्रह्मा; पुर अरियुम्–त्रिपुरांतक और; पुकळ्तऱ्कु ओत्त–(उनके लिए) स्तुति करने योग्य; चान्तनाल्–शांत स्वभाव के उन महर्षि (ऋष्यश्रृंग) द्वारा; वेळ्वि मुऱ्ऱिन्–यज्ञ सम्पन्न किया जाय तो; तनैयर्कळ् उळर् आम्–पुत्र होंगे; ॲन्ऱान्–(वसिष्ठजी ने) कहा। २१३

आदिशेष के अनेक फणों पर धृत इस भूमि पर रहनेवाले मनुष्यों को वे जानवर ही समझते है लेकिन बड़े तपस्वी हैं। मानिये तो वे कमलासन ब्रह्मा और त्रिपुरान्तक शिव द्वारा भी स्तोतव्य है। उन शान्त मुनि द्वारा यज्ञ-साधन होगा तो आप पुत्रवान वन जायँगे। २१३

आङ्गुरै यिनैय कूऱु मरुन्दवर्क् करशन् शॅय्य
पूङ्गळ ऱॉळुदु वाळ्त्तिप् पूदल मन्नर् मन्नन्
तीङ्गऱु कुणत्तिन् मिक्क शॅळुन्दवन् याण्डै युळ्ळान्
ईङ्गियान् कॉणरुन् दन्मै यियम्बुदि यिऱैव वॅन्ऱान् 214

आङ्कु–तब; पूतलम् मन्नर् मन्नन्–भूलोक के राजाओं के राजा; इनैय उरै कूऱुम्–ये बातें जिन्होंने बतायीं उन; अरु तवर्क्कु अरचन्–तपोधनों में (राजा) श्रेष्ठ (महर्षि) के; चॅय्य पू कळल्–लाल कमल-सम चरणों की; तॉळुतु–वन्दना करके; तुतित्तु–स्तुति करके; इऱैव–देव; तीङ्कु अऱु–(कामादि) दोष-रहित; कुणत्तिल् मिक्क–सद्गुणों में श्रेष्ठ; चॅळु तवन्–महान तपस्वी; याण्टु उळ्ळान्–कहाँ है; ईङ्कु यान् कॉणरुम् तन्मै–इधर उनको मेरे लिवा लाने का मार्ग; इयम्पुति–बताइयेगा; ॲन्ऱाल्–यह विनय की। २१४

यह सुनकर राजाधिराज दशरथ ने मुनिवर का प्रणमन करके पूछा कि पवित्र गुणवाले महान तपस्वी कहाँ रहते हैं, उनको मैं कैसे लिवा लाऊँ, इसका उपाय बताइये। २१४

पुत्तान कॉडुविनैयो डरुन्दुयरम् बोयॉळिप्पप् पुवनन् दाङ्गुम्
सत्तात कुणमुडैयोन् ऱयैयोडुन् दण्णळियिन् शालै पोल्वान्
ॲत्तानुम् वॅलर्करियान् मनुकुलत्ते वन्दुदित्तो न्रिलङ्गु मौलि
उत्तान पादन्ऱ ळुरोमपद नॅन्ऱुळनिव् वुलहै याळ्वोन् 215

पुत् आत कॉटु विनैयोटु–पुत् आदि नरक पहुँचानेवाले भयंकर पाप; अरु तुयरम्–

और असह्नीय दुख, ये; पोय् ऑळिप्प–जाकर छिप जायँ, ऐसा; पुवनम् ताङ्कुम्–भूमि का पालन करनेवाले; चत्तु आत्त कुणम् उटैयोऩ्–श्रेष्ठ (सत्व) गुणशील; तयैयोटुम् तण्णळियिऩ् चालै पोल्वाऩ्–दया और करुणा के निलय के समान रहनेवाले; ऍत्तानुम्–किसी भी उपाय से; वॅलऱ्कु अरियाऩ्–अजेय; मनुकुलत्ते वन्तु उतित्तोऩ्–(स्वयंभुव) मनुकुल में उत्पन्न; इलङ्कु मौलि–द्युतिमान किरीटधारी; उत्तानपातऩ् अरुळ्–उत्तानपाद के पुत्र; उरोमपतऩ् ऍऩ्ऩ्–रोमपाद नाम के; इ उलकै आळ्वोऩ्–इस भूमि में (अपने देश का) शासन करनेवाले; उळऩ्–हैं। २१५

वसिष्ठजी ने कहा कि स्वायंभुव मनु के वंश में उत्तानपाद नामक एक राजा हुए। उनके शासन में नरक मे पहुँचानेवाले पाप नहीं होते थे और इसलिए किसी को कोई दुःख भी नही होता था। वे स्वयं गुणशील, दया आदि के आश्रय, और अजेय थे। उनके एक पुत्र हुए जो रोमपाद के नाम से अब राज्य कर रहे है। २१५

अऩ्ऩवऩ्ऱाऩ् पुरन्दळिक्कुन् दिरुनाट्टु ऩॅडुङ्गाल मळव दाह
मिऩ्ऩियॆळु मुहिलिऩ्ऱि वॅन्दुयरम् पॆरुहुदलुम् वेद नऩ्नूल्
मऩ्नुमुनि वरैयळैत्तु मादानङ् गौडुक्कवुम्वाऩ् वळङ्गा दाहप्
पिऩ्नुमरै यवर्क्केट्पक् कलैक्कोट्टु मुनिवरिऩ्वाऩ् पिलिऱ्रुमॆऩ्ऱार् 216

अऩ्नवऩ् पुरन्तु अळिक्कुम्–उनके द्वारा सुरक्षित; तिरुनाट्टुळ्–(अंग) देश में; नॆटु कालम् अळवु अतु आक–दीर्घकाल तक; मिऩ्ऩि ऍळुम् मुकिल् इऩ्ऱि–विजली के साथ उठनेवाले मेघों के विना; वॅम् तुयरम् पॆरुकुतलुम्–भयंकर कष्ट फैल गया, तब; वेतम् नल् नूल् मऩ्नुम्–वेद-शास्त्रज्ञ; मुनिवरै अळैत्तु–विप्रों को बुलाकर; मा तातम् कोटुक्कवुम्–(राजा ने) वहुत दान दिये, तब भी; वाऩ् वळङ्काताक–मेघ नहीं वरसे; पिऩ्नुम्–फिर भी; मरैयवर् केट्प–वेदपाठियो से पूछने पर; कलैक्कोट्टु मुनि वरिऩ्–ऋष्यश्रृंग आएँगे तो; वाऩ् पिलिऱ्रुम् ऍऩ्ऱार्–मेघ वरसेगा–कहा। २१६

उनके शासित राज्य में दीर्घकाल से वर्षा नही हुई। लोग दुखी हो रहे। राजा ने ब्राह्मणों को वुलाकर वहुत दान दिया। तो भी पानी नहीं गिरा। फिर विप्रों को बुलाकर पूछा तो उन्होंने कहा कि ऋष्यश्रृंग आवें तो वारिश होगी। २१६

ओदनॆडुङ् गडलाडै युलहिनिल्वाळ् मतिदर्विलङ् गॆऩ्ऩवे युऩ्ऩुम्
कोदिल्कुणत् तरुन्दवनैक् कॊणरुम्वहै यावदॆऩक् कुणिक्कुम् वेलै
शोदिनुदऱ् करुनॆडुङ्गट् टुवरिदळ्वायत् तरळ नहैत् तुणैमॆऩ् कॊङ्गै
मादरॆळिन् दियामेहि यरुन्दवनैक् कॊणर्दुमॆन वणक्कञ् जॆय्दार् 217

ओतम् नॆटु कटलाटै–तरंगायित समुद्र से वेष्टित; उलकितिल्–भूलोक में; वाळ् मतितर्–वास करनेवाले मनुष्यो को; विलङ्कु ऍऩ्ऩवे उऩ्ऩुम्–पशु ही समझनेवाले; कोतु इल् कुणत्तु अरु तवत्तै–अकलंक गुणी और श्रेष्ठ तपस्वी को; कॊणरुम् वकै यावतु ऍऩ–लिवा लाने का मार्ग क्या है, यह; कुणिक्कुम् वेलै–विचार करते समय; चोति नुतल्–उज्ज्वल ललाट; करु नॆटु कण्–काली लम्वी आँखें; तुवर् इतळ् वाय्–प्रवाल

(लाल) अधर और मुँह; तरळम् नकै–मुक्ता से दाँत; मॅल् तुणै कोङ्कै–कोमल द्वय स्तन; मातर् अॅळुन्तु–(वार-) वनितायें उठकर; याम् एकि–हम गमन कर; अरु तवत्तै कोणर्तुम्–अपूर्व तपस्वी को ले आयँगी; अॅन–कहकर; वणक्कम् चॅय्तार्–नमस्कार किया। २१७

राजा को यह चिन्ता हुई कि समुद्र-वसना पृथ्वी के वासी, सब नर-नारियों को पशु समझनेवाले इन श्रेष्ठ तपस्वी को कैसे आमंत्रित किया जाय ? तब उनकी सभा में रही कुछ अति सुन्दर वारवनिताओं ने नमस्कार करके कहा कि हम जायँगी और उनको ले आयँगी। २१७

आङ्गवरम् मॉळियुरैप्प वरशन्मकिऴ्न् दवर्क्कणितू शादि याय
पाङ्गुळमऱ् ऱवैयरुळिप् पनिप्पिऱैयैप् पऴित्तनुदल् पणैत्त वेय्त्तोळ्
ऍङ्गुमिडै तडिक्कुमुलै यिरुण्डकुऴल् मरुण्डविऴि यिलवच् चॅव्वाय्प्
पूङ्गॉडियी रेहुमॆन्त् तॉऴुदिऱैञ्जि यिरदमिशैप् पोयि नारे 218

आङ्कु–वहाँ; अवर् अ मॉऴि उरैप्प–उनके वह वचन कहते; अरचन्–राजा; मकिऴ्न्तु–मुदित होकर; अवर्क्कु–उन्हें; अणि तूचु आति आय–आभरण वस्त्र इत्यादि; पाङ्कु उळ मऱ्ऱवै–उचित अन्य द्रव्य; अरुळि–देकर; पनि पिऱैयै पऴित्त नुतल्–शीतल अर्द्धचन्द्र का उपहास करनेवाली भौहों; पणैत्त वेय् तोळ्–पुष्ट बांस सम कन्धों; एङ्कुम् इटै–क्षीण कमर; तटिक्कुम् मुलै–पीन स्तनों; इरुण्ट कुऴल्–अन्धकार-सम (काले) केश; इलवम् चॅम्मै वाय्–सेमर-पुष्प-सम लाल अधरोंवाली; पू कॉटियीर्–पुष्पलताओ; एकुम्–जाओ; अॅन–आज्ञा देने पर; तॉऴुतु इऱैञ्चि–नमन और स्तुति करके; इरतम् मिचै–रथ पर; पोयिनार्–चलने लगीं। (ए)। २१८

यह सुनकर राजा ने बहुत सन्तुष्ट होकर उनको आभरण, वस्त्र और अन्य वस्तुएँ दीं; उनके अंग-लावण्य की सराहना की। और "शीतलचंद्र से भी अधिक सुन्दर ललाट, पुष्ट बांस के समान कंधे, क्षीण कमर; पीन उरोज, काला केशजाल, चकित आँखें, सेमर-सम लाल अधर-वाली पुष्पलताओ, जाओ" जाने की अनुमति दी। वे भी राजा का नमस्कार और स्तुति करके रथ पर बैठकर चल पड़ी। २१८

ओशनै पलकडन् दिनियॉ रोशनै, एशरु तवनुरै यिडम दॅन्नुऴिप्
पाशिळै मडन्तैयर् पन्न शालैशॅय्, दाशरु मरुन्दवत् तवरिन् वैहिनार् 219

पचुमै इऴै–हरे(चोखे स्वर्ण के)आभरणों से अलंकृत (वे); मटन्तैयर्–नारियाँ; ओचनै पल कटन्तु–अनेक योजन पार कर; एचु अऱु तवन् उऱै इटम् अतु–अनिंद्य तपस्वी का आश्रम; इति ओर् ओचनै ॲन्ऩ उऴि–(जहाँ से) आगे एक योजन पर था (वहाँ); पन्नचालै चॅय्तु–एक पर्णशाला बनाकर; आचु अऱुम् अरु तवत्तवरिन्–निर्दोष श्रेष्ठ तपस्वियों के समान; वैकिनार्–रहने लगी। २१९

अनेक योजनों की दूरी पार कर वे उस स्थान पर पहुँचीं जहाँ से

विभांडक का आश्रम एक योजन दूर था। वहाँ उन्होंने एक पर्णशाला वना ली और वे तपस्विनियों की भाँति रहने लगीं। २१९

अरुन्दवत्त् ऱन्दयै यऱ्ऱ नोक्किये, करुन्दडङ् गण्णियर् कलैव लाळनिल्
पॊरुन्दित्तर् पॊरुन्दुळि विलङ्गॆ नाप्पुरिन्, दिरुन्दव रिवरॆन विनैय शॆय्दत्तन् 220

करु तट कण्णियर्–काली विशाल आँखों वालियाँ; अरुतवन् तन्तैयै–श्रेष्ठ तपस्वी के पिता को; अऱ्ऱम नोक्किये–अनुपस्थिति जानकर; कलै वल् आळनिल् पॊरुन्तित्तर्–वेद-विद्या-विशिष्ट ऋषि के पास आयीं; पॊरुन्तुळि–मिलने पर; विलङ्कु ऍना–पशु न समझकर; पुरिन्त इरु तवर् ऍन–की हुई बड़ी तपस्यावाले हैं ये, मानकर; इनैय चॆय्तनन्–यो व्यवहार किया। २२०

फिर एक दिन, ऋष्यशृंग के पिता जब कहीं चले गये थे तब ऋष्य-शृंग को अकेले मे पाकर वे उनके आश्रम मे पहुँचीं। उनको देखकर ऋषि ने पशु नहीं समझा, वरन तपस्वी समझ लिया। इसलिए यथोचित सत्कार करने लगे। २२०

अरुक्किय मुदलिनो डाश नङ्गॊडुत्
तिरुक्कॆन विरुन्दपि निनिय कूऱलुम्
मुरुक्किदळ् मडन्दयर् मुनिव नैत्तॊळाप्
पॊरुक्कॆन वॆळुन्दुपोय्प् पुरैयुट् पुक्कनर् 221

अरुक्कियम् मुतलिनोटु–अर्घ्य आदि के साथ; आचनम् कॊटुत्तु–आसन देकर; इरुक्क ऍन–विराजिए—कहने पर; इरुन्त पिन्–बैठने के बाद; इनिय कूऱलुम्–मधुर उपचार-वचन कहते ही; मुरुक्कु इतळ् मटन्तैयर्–पलाशपुष्प सदृश अधरवाली नारियाँ; मुनिवनै तॊळा–मुनिवर्य का नमस्कार करके; पॊरुक्कु ऍन–झटित; ऍळुन्तु पोय्–उठकर गयीं और; पुरै उळ् पुक्कनर्–अपने आश्रम में घुस गयीं। २२१

ऋषि ने उन्हें अर्घ्य आदि दिया, आसन दिये, बिठाया और मधुर अभ्यर्थना के वचन कहे। वनिताओं ने इतना ही किया कि वे नमस्कार करके तुरन्त उठकर अपने आश्रम में चली आयीं। २२१

तिरुन्दिळै यवर्शिल दित्तङ्ग डीर्न्दुळि
मरुन्दिनु मिनियन वरुक्कै वाळैमात्
तरुङ्गनि पलवॊडु ताळै यिन्कनि
अरुन्तव वरुन्दॆन वरुत्ति नाररो 222

चिल तिनङ्कळ् तीर्न्तुळि–कुछ दिनों के बीतने के पश्चात्; तिरुन्तु इळैयवर्–सुघड़ आभरण-शोभिताओं ने; मरुन्तिनुम् इनिय्न–अमृत से भी मधुर; वरुक्कै–कटहल; वाळै–केले; मा–आम; तरुम् कनि पलवॊटु–से मिलनेवाले अनेक फलों को; ताळै इन् कनि–मधुर नारियल को (ला देकर); अरु तव–श्रेष्ठ तपस्वी; अरुन्तु–भुगतिये; ऍन–कहकर; अरुत्तिनार्–खिलाया (फलों के साथ वे भक्ष्य मिठाइयाँ आदि बना लायीं—यह भाव भी बताया जा सकता है)। २२२

कुछ दिन बीते, फिर वे श्रेष्ठ आभरणों से भूषित होकर, कटहल, आम, केले आदि के फल और नारियल लेकर वहाँ पहुँचीं और उनको खिलाया। (वे मधुर भक्ष्य भी साथ लायी।)। २२२

इन्नन पलपह लिऱन्द पिन्ऱिरु
नन्नुदन् मडन्दयर् नवैयिन् मादवन्
तन्नयॅम् मिडत्तिनुज् जार्दल् वेण्डुमॅन्
ऱन्नवर् तॊऴुदलु मवरॊ डेहिनान् 223

इन्नन पल पकल्–ऐसे अनेक दिन; इऱन्त पिन्–बीत जाने के पश्चात्; अन्नवर्–उन (के); तिरु नल् नुतल मटन्तैयर्–सुन्दर, अच्छे भालवालियों के; नवै इल् मातवन् तन्नै–आनिन्द्य और महान तपस्वी को; ॲम् इटत्तिलुम् चार्तल् वेण्टुम्–हमारे यहाँ भी पधारने की कृपा हो; ॲन्ऱु–कहकर; तॊऴुतलुम्–नमस्कार करने पर (वे); अवरॊटु एकिनान्–उनके साथ सिधारे। २२३

ऐसे अनेक दिन व्यतीत हुए। एक दिन सुन्दर भालवाली उन योषिताओं ने उन निष्कपट तपस्वी से, विनय की कि महात्मन्! आप भी हमारे आश्रम को अपने पदार्पण से पवित्र कीजिए। महर्षि भी उनके साथ जाने को तैयार हो गये। २२३

विम्मुऱु मुवहयर् वियन्द नॅञ्जिनर्, अम्मविव् विदुवॅन वहलु नीणॅऱिच्
चॅम्मशेर् मुनिवरन् ऱॊडरच् चॅन्ऱनर्, तम्मन मॅन्नमरुट् टैय लार्हळे 224

तम् मनम् ॲन–अपने मन के समान; मरुळ्–भ्रमित; तैयलार्कळ्–वे नारियाँ; विम्मुऱुम् उवकैयर्–प्रफुल्ल उल्लास के साथ; वियन्त नॅञ्चिनर्–चकित मन; अम्म–इधर देखिये; इव्वितु–यह, यही (हमारा आश्रम है); ॲन–ऐसा कहते हुए; अकलुम्–(अंग देश की ओर) जानेवाले; नीळ् नॅऱि–दीर्घ मार्ग में; चॅम्मै चेर् मुनिवरन्–भोले महर्षि के; तॊटर–उनका अनुसरण करते; चॅन्ऱनर्–गयीं। (ए)। २२४

यह देखकर उनका मन भ्रमित हुआ। उनकी आँखों में भी भय-विस्मय का भाव प्रकटित हुआ। एक ओर संतोष दूसरी ओर विस्मय के साथ वे उनको, इधर-उधर का निर्देश करती हुई, अंग देश के मार्ग में बहुत दूर ले आ गयीं। २२४

वळनहर् मुनिवरन् वरुमुन् वानवन्, कळनमर् कडुवॅनक् करुहि वान्मुहिल्
शळशळ वॅनमळैत् तारै कान्ऱन, कुळत्तॊडु नदिकडङ् गुरैह डीरवे 225

मुनिवरन्–मुनिश्रेष्ठ (के); वळम् नकर् वरुमुन्–समृद्ध नगर आने के पहले; वान् मुकिल्–आकाश के मेघ (मेघों ने); वानवन् कळत् अमर्–शंकर देव के गले में रहनेवाले; कटु ॲन–विष के समान; करुकि–काले बनकर; कुळनॊटु नतिकळ्–तड़ागों और नदियों को; तम् कुरैकळ् तीर–उनकी रिक्तता को दूर करते हुए,

(भरते हुए); चळ चळ ॲन–'गुळ् गुळ्' का शब्द करते हुए; मऴै तारै–वर्षा की धारायें; कान्ऱन–बरसायी। (ए)। २२५

नगर अभी दूर था। तो भी महर्षि के उस देश की सीमा में प्रवेश करते ही नीलकण्ठ के विष के समान काले मेघ उमड़-घुमड़ आये। वर्षा खूब हुई। तालाब, नदियाँ आदि भर गयीं। २२५

पॆरुम्बुनल् नदिहळुङ् गुळनुम् वॆट्पुऱक्
करुम्बॊडु शॆन्नॆलुङ् गविन्ऱॊण् डोङ्गिड
इरुम्बुयल् कहनमी दिडैवि डाद॑ळुन्
दरुम्बुनल् शॊरिन्तपो दरशु णर्न्दनन् 226

पॆरुम् पुनल् नतिकळुम् कुळनुम्–बहुत विशाल जलाशय, नदियाँ और तालाब; पॆट्पुउर्–(जल से भरकर) सुशोभित हों; करुम्पु ओटु चॆम् नॆलुम्–ईख के साथ श्रेष्ठ धान के पौधे; कविन्‌ कॊण्टु–चिकने बने बढ़ें, ऐसा; ककनम् मीतु–गगन पर; इरु पुयल् इटै विटातु एऴुन्तु–घने मेघ निरन्तर उठे और फैले; अरुमै पुनल् चॊरिन्त पोतु–जब अपूर्व-प्राप्त जल बरसाया तब; अरचु–राजा रोमपाद ने; उणर्न्ततनन्–(बात) समझ ली। २२६

विशाल जलाशय, नदी और तालाब सब भर गये; ईख, धान आदि खूब पनपने लगे। आकाश में मेघ लगातार फैले रहे और वर्षा होती रही। यह देखकर राजा रोमपाद समझ गये। २२६

काममुम् वॆहुळियुङ् गळिप्पुङ् गैत्तॆळु
कोमुनि यिवणडैन् दनन्कॊल कॊव्वैवायत्
तामरै मलर्मुहत् तरळवाणहैत्
तूममॆन् कुऴलियर् पुणर्त्त शूऴ्च्चियाल् 227

कॊव्वै वाय्–बिंबफल (सम लाल) मुख; तामरै मलर् मुकम्–लाल कमल सदृश आनन; तरळम् वाळ् नकै–मोती के समान धवल दाँत (वाली); तूमम् मॆल् कुऴलियर्–धूम्र लगे केश की गणिकाओं के; पुणर्त्त चूऴ्च्चियाल्–किये तन्त्र से; काममुम् वॆकुळियुम्–काम और क्रोध; कळिप्पुम्–और मोह; कैत्तु ॲऴु–त्याग कर श्रेष्ठ हुए; को मुनि–वरिष्ठ मुनि; इवण् अटैन्तनन् कॊल्–यहाँ पहुँच गये—शायद। २२७

रोमपाद ने सोचा—आश्चर्य है! काम, क्रोध और मोह को जीतकर जो महान हुए हैं क्या वे आ ही गये! बिंबाधर, कमलानन, मुक्ता-दाँत और अगरु-धूम लगे केश—इनसे युक्त ये नारियाँ किसी उपाय से उन्हें ला ही चुकी हैं तो!। २२७

ॲन्ऱॆऴुन् दरुमरै मुनिदर् यारॊडुम्
शॆन्ऱिरण् डोशनै शेनै शूऴ्तर

मऩ्ऱलङ् गुऴलियर् नडुवण् मादवक्
कुऩ्ऱिऩै यॅदिर्न्दनऩ् कुववुत् तोळिऩाऩ् 228

अॅऩ्ऱु–यह सोचकर; कुववु तोळिऩाऩ्–सुडौल कंधोंवाले (रोमपाद); अरु मऱै मुनिवर् यारॊटुम् अॅऴुन्तु–उत्तम वेदज्ञ, सब ब्राह्मणों के साथ उठकर; चेऩै चूऴ्तर–सेना से घिरे हुए होकर; इरण्टु ओचऩै चॆऩ्ऱु–दो योजन दूर चलकर; मऩ्ऱल् अम् कुऴलियर् नटुवण्–सुवासित सुन्दर केश-वालियों के बीच; मातवम् कुऩ्ऱिऩै–बड़े तपस्या के पर्वत (के समान तेजोमय महर्षि) के; ॲतिर्न्ततऩ्–सम्मुख पहुँचे। २२८

ऐसा सोचकर सुडौल भुजावाले रोमपाद उठे और उनकी अगवानी करने के लिए जाने लगे। उनके साथ वेदपाठी विप्रगण गये और सेना भी उनको घेरते हुए गयी। वे दो योजन चले और उन गणिकाओं के मध्य तप के पर्वत के समान आनेवाले ऋष्यश्रृंग से मिले। २२८

वीऴ्न्दऩ ऩडिमिशै विऴिह णीर्दर
वाऴ्न्दऩॆ ऩिऩ्ऱॅऩ महिऴ्ज् जिन्दयाऩ्
ताऴ्न्दॅऴु मादरार् तम्मै नोक्किनीर्
पोऴ्न्दऩि रॆऩ्ऱिडर् पुणर्प्पि ऩालॆऩ्ऱाऩ् 229

इत्ति वाऴ्न्तऩॆऩ् ॲऩ–अब तर गया—यह कहकर; मकिऴ्म् चिन्तैयाऩ्–प्रफुल्लचित्त होकर; विऴिकळ् नीर् तर–आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुए; अटि मिचै वीऴ्न्ततऩ्–चरणों पर गिरकर नमस्कार किया; ताऴ्न्तु ॲऴुम्–नमन कर उठनेवाली; मातरार् तम्मै–(गणिका) स्त्रियों को; नोक्कि–देखकर; नीर्, पुणर्प्पिनाल्–तुमने उपाय करके; ॲऩतु इटर्–मेरा संकट; पोऴ्न्तनिर्–मिटा दिया; ॲऩ्ऱाऩ्–(प्रशंसा में) कहा। २२९

'अब मेरा उद्धार हो गया', यह कहते हुए, प्रसन्नचित्त राजा रोमपाद आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुए महर्षि के चरणों पर नतमस्तक हुए। फिर उन नारियों को देखा जो उनके पैरों तले नमस्कार कर उठी, और उनसे कहा कि तुम लोगों ने अपने प्रयास से मेरा संकट दूर कर दिया है। २२९

अरशऩु मुऩिवरु मडैन्द वायिडै, वरमुऩि वञ्जमॆऩ् ऱुणर्न्द मालैवाय्
वॆरुविऩर् विण्णवर् वेन्दऩ् वेण्डलाल्, करैयॆऱि यादलै कडलुम् पोऩ्ऱनऩ् 230

अरचऩुम् मुनिवरुम्–राजा और ब्राह्मण लोग; अटैन्त आयिटै–जब आये तब; वञ्चम् ॲऩ्ऱु उणर्न्त मालै वाय्–कपट-व्यवहार समझ गये, उस स्थिति में; विण्णवर्–देवता लोग; वेरुविनर्–भयभीत हुए; वेन्तऩ् वेण्टलाल्–राजा की विनत प्रार्थना से; करै ॲऱियातु–सीमा को लाँघकर न जानेवाले; अलै कटल् पोऩ्ऱनऩ्–तरंगायित समुद्र के समान (रुके हुए क्रोधवाले) हो गये। २३०

यह सब महर्षि ने देखा। राजा रोमपाद आये है, उनके साथ विप्रगण हैं और सेना भी। उन्हें ज्ञात हुआ कि यह कोई कपट-व्यवहार हो

गया है। तब देवता भी डरने लगे कि इनको क्रोध हुआ तो अनर्थ हो जायगा। लेकिन राजा रोमपाद की विनय-याचना से, महर्षि का क्रोध मर्यादा-बद्ध तरंगाकीर्ण समुद्र के समान थमा रह गया। २३०

वळ्ळुरु वयिरवाण् मऩ्ऩऩ् पऩ्मुऱै, अळ्ळऱु मुनिवऩै यिऱैञ्जि यारिनुम्
तळ्ळरुन् दुयरमुञ् जमैवुञ् जाऱ्ऱलुम्, उळ्ळुऱु वॅहुळिपो यॊळित्त तामरो 231

वळ् उऱु–धारदार; वयिरम् वाळ्–वज्र-सम खड्गधारी; मऩ्ऩऩ्–राजा के; अॅळ् अऱु मुनिवऩै–अनिन्द्य मुनि को; पल मुऱै इऱैञ्चि–अनेकवार नमस्कृत करके; यारिनुम तळ्ळ अरु तुयरमुम्–किसी से भी अनिवार्य दुख; चुमैवुम्–और उसका निवारण; चाऱ्ऱलुम्–बताने पर; उळ् उऱु वॅकुळि–अन्तर्गत कोप; पोय् ओळित्तत्तु–जाकर अदृश्य हो गया (बिल्कुल नही रहा); (आम् अरो)। २३१

वज्र-सम खड्गधारी रोमपाद ने अनिन्द्य महर्षि से बार-बार नमस्कार करके विनय की कि हमारे देश की घोर विपदा ऐसी थी कि कोई भी उसका निवारण नही कर सकता था। महर्षि, आपके आने से वह दूर हो सकी। यह सुनकर दयालू महर्षि ने अपना कोप त्याग दिया। २३१

अरुळ्शुरन् दरशनुक् काशि युङ्गॊडुत्
तुरुळुरु तेरिऩ्मी दॊल्लै येऱिनल्
पॊरुडरु मुऩिवरुन् दॊडरप् पोयिऩऩ्
मरुळॊळि युणर्वुडै वरद मादवऩ् 232

मरुळ् ऒळि उणर्वु–संशयहीन ज्ञानी; वरतऩ् मातवऩ्–वरदायी, श्रेष्ठ तपोधन; अरुळ् चुरन्तु–करुणा से भरकर; अरचऩुक्कु–राजा रोमपाद को; आचियुम् कॊटुत्तु–आशीर्वाद भी प्रदान करके; उरुळ् उऱु तेरिऩ् मीतु–त्वरितगामी रथ पर; ऒल्लै एऱि–सत्वर आरूढ़ होकर; नल् पॊरुळ् तरुम्–अच्छे उपदेष्टा; मुऩिवरुम् तॊटर–मुनियों के अनुगमन करते; पोयिऩऩ्–(नगर की तरफ) गये। २३२

अप्रमत्त ज्ञानी और वरप्रदायी तपोधन महर्षि ने करुणा-भूयिष्ट होकर राजा को आशीर्वाद दिया। फिर वे द्रुतगामी रथ पर आरूढ़ हो नगर की ओर जाने लगे। सदुपदेष्टा विप्रो ने भी उनका अनुगमन किया। २३२

अडैन्दनऩ् वळनह रलङ्ग रित्तॆदिर्
मिडैन्दिड मुनियॊडुम् वेन्दऩ् कोयिल्पुक्
कॊडुङ्गलिल् पॊऱ्कुळात् तुऱैयु ळॆय्दियोर्
मडङ्गला दनत्तिऩ्मेल् मुनियै वैत्तनऩ् 233

वेन्तऩ्–राजा रोमपाद; वळम् नकर्–भरे-पूरे नगर को; अलङ्करित्तु–सुसज्जित कर; ऍतिर् मिटैन्तिट–(लोग) सामने आये, तब; मुनियॊटुम् अटैन्तनऩ्–महर्षि के साथ पहुँचे; कोयिल् पुक्कु–राजमन्दिर में प्रवेश करके; पॊऩ् कुळात्तु–स्वर्ण की समृद्ध कारीगरी से युक्त; ऒटुङ्कल् इल् उऱैयुळ् ऍय्ति–असंकीर्ण (विशाल)

भवन में आकर; मुनियै–महर्षि को; ओर् मटङ्कल् आतनत्तिन् मेल् वैत्तान्–एक सिंहासन पर आसीन कराया। २३३

नगर के लोगों ने नगर को खूब सजाया और वे उनके स्वागत के लिए आए। राजा ऋष्यशृंग के साथ नगर में आए और राजमहल में पहुँचे। उन्होंने एक विशाल भवन में, जो स्वर्ण की कारीगरी से जगमगा रहा था, एक उन्नत सिंहासन पर महर्षि को आसनस्थ कराया। २३३

अरुक्किय मुदलिय कडन्ग ळाऱ्ऱिवे, ऱुरैक्कुव दिलदॆन वुवन्दु तानरुळ्
मुरुक्किदळ्च् चान्दया मुहन लाडनै, इरुक्कॊडु विदिमुऱै यिनिदि नीन्दनन् 234

वेऱु उरैक्कुवतु इलतु–और कुछ कहने के लिए (प्रार्थनीय) नहीं है, ऐसा; उवन्तु–उत्साह के साथ; अरुक्कियम् मुतलिय कटन्कळ् आऱ्ऱि–अर्घ्य आदि उपचार करके; तान् अरुळ्–अपनी पुत्री; चान्तै आम्–शांता नाम की; मुरुक्कु इतळ् मुकम् नल्लाळ् तनै–पलाशपुष्प-सदृश अधर और सुन्दर मुखवाली को; वितिमुऱै–विधिवत्; इरुक्कॊटु–वेद-मन्त्रों के साथ; इनितिन्–आनन्दपूर्वक; ईन्तान्–(कन्या-) दान किया। २३४

प्रसन्नचित्त राजा ने उनका अर्घ्यपाद्यादि उपचार बड़ी सावधानी से किया। फिर, उन्होंने, पलाशपुष्प सदृश अधरोंवाली और सुघड़ मुखवाली अपनी कन्या को, विवाहोचित, वेदविहित मन्त्रोच्चारण के साथ, उनको (कन्या) दान में दे दिया। २३४

वरुमनोय्	**तणितर**	**वान्व**	**ळङ्गवे**
उरुदुयर्	**तविर्न्ददव्**	**वुलहम्**	**वेन्दरुळ्**
शॆऱिकुळल्	**पोऱ्ऱिडत्**	**तिरुन्दु**	**मादवत्**
तऱिञनाण्	**डिरुक्कुन**	**नरश**	**वॆन्ऱनन् 235**

वरुमै नोय् तणितर–(अकालजनित) दरिद्रता और रोगों को दूर करते हुए; वान् वळङ्कवे–मेघ बरसे, इसलिए; अ उलकम्–वह देश; उरु तुयर् तविर्न्ततु–बड़ी विपन्नता से छूटा; वेन्तु अरुळ्–राजा रोमपाद प्रदत्त; चॆऱि कुळल्–घने केशवाली के; पोऱ्ऱिट–सेवा करते; तिरुन्तु मातवत्तु अऱिञन्–उत्कृष्ट महान तपस्वी और ज्ञानी (महर्षि); आण्टु–वहाँ; इरुक्कुनन्–रहते है; अरच–राजन; ऎन्ऱनन्–(वसिष्ठजी ने) कहा। २३५

विपन्नता और रोग, जो उस देश में फैला हुआ था वह सब वर्षा के खूब होने से दूर हो गया। अब वह देश दुःख-निवृत्त होकर सन्तुष्ट है। महर्षि शान्तादेवी की परिचर्या स्वीकार करते हुए वहीं रहते हैं। यह महर्षि वसिष्ठ ने राजा दशरथ से कहा। २३५

ऎन्ऱलुमे मुनिवरन्ऱ नडियिऱैञ्जि योण्डेहिक् कोणरवॆ नॆन्नात्
तुन्ऱुकळन् मुडिवेन्द रडिपोऱ्ऱच् चुमन्दिरने मुदला वुळ्ळ

वन्ऱिरल्शे रमैच्चर्तॊऴ मामणित्ते रेरुदलुम् वानोर् वाऴत्ति
इन्ऱैमदु विनैमुडिन्द दॆनच्चॊरिन्दार् मलर्मारि यिडैवि डामल् 236

ॲन्ऱलुमे–ऐसा कहते ही, (दशरथ); मुनिवरन् तन् अटि इऱैञ्चि–मुनिवर (वसिष्ठजी) के पैरों पर नमन कर; ईण्टु एकि–अभी जाकर; कॊणर्वॆन् ॲन्ना–लिवा लाऊँगा, कहकर; तुन्ऱु कऴल् मुटि वेन्तर्–(पैरों पर) सुगठित पायल और (सिरो पर) किरीट धारण करनेवाले राजाओं के; अटि पोऱ्ऱ–उनके पैरों पर (पड़कर) वन्दना करते; चुमन्तिरने मुतला उळ्ळ–सुमंत्र आदि; वल् तिऱल् चेर् अमैच्चर्–अतिशय शक्ति-सम्पन्न मेधावाले मन्त्रियों के; तॊऴ–स्तुति करते; मा मणि तेर्–श्रेष्ठ मणियों से अलंकृत रथ पर; एऱुतलुम्–आरूढ़ होते ही; वानोर्–आकाश-लोकवासी (देवताओं ने); इन्ऱु ॲमतु विनै मुटिन्ततु–आज हमारा पाप शांत हो गया; ॲन–यह मानकर; वाऴत्ति–(दशरथ को) आशीर्वाद देकर; मलर् मारि–कल्पक पुष्पों की वर्षा; इटैविटामल्–निरन्तर; चॊरिन्तार्–बरसायी (वर्षा की)। २३६

वसिष्ठजी के यह कहते ही, राजा दशरथ झट उनके पैरों पर गिरे, और "उनको आमन्त्रित कर लाऊँगा", यह कहकर तुरन्त जाकर रथ पर चढ़े। तब पायल और किरीटधारी राजा लोगो ने उनकी चरण-वन्दना की। सुमन्त्र आदि अति समर्थ मन्त्रियों ने अंजलिबद्ध होकर स्तुति की। देव लोगो ने निश्चय कर लिया कि अब हमारा दुर्भाग्य दूर हो गया; दशरथ की मंगल-कामना की और उनपर लगातार फूल बरसाये। २३६

काकळमुम् पल्लियमुङ् गनैहडलिन् मिहमुऴङ्गक् कानम् वाड
मागदर्हळरुमऱैनूल् वेदियर्हळ् वाऴत्तॆडुप्प मदुरच् चॆव्वाय्त्
तोहयर्पल् लाण्डिशैप्पक् कडऱ्ऱानै पुडैशूऴ्च् चुडरो नॆन्न
ऐहियरु नॆऱिनीङ्गि युरोमपदन् ऱिरुनाट्टै यॆदिर्न्दा नन्ऱे 237

काकळमुम्–काहल (बड़ा ढोल) और; पल् इयमुम्–अनेक बाजे; कनै कटलिन्–गरजनेवाले समुद्र से भी अधिक; मिक मुऴङ्क–शोर से बजते हैं; माकतर्हळ्–मागध (वंदी) लोग; कानम् पाटवुम्–गान करते हैं और; अरुमऱै नूल् वेतियर्हळ्–उत्तम वेदपाठी; वाऴत्तु ॲटुप्प–मंगलाशासन करते हैं; मतुरम् चॆव्वाय्–मधुर-भाषिणी, लाल अधरोवाली; तोकैयर्–कलापिनियाँ (मयूर सी स्त्रियाँ); पल्लाण्टु इचैप्प–'जुग-जुग जियो' वाले गीत गाती है; कटल् तानै पुटै चूऴ्–सेना सागर घेरे रहती है, (इस साज-सज्जा के साथ); चुटरोन् ॲन्न–अंशुमाली के समान; एकि–जाकर; अरु नॆऱि नीङ्कि–कठिन मार्ग पार कर; उरोमपतन् तिरु नाट्टै ॲतिर्न्तान्–रोमपाद के श्रीसम्पन्न देश पहुँचे। २३७

राजा का रथ चलने लगा। काहल (बड़े ढोल) और अन्य बाजे समुद्र-घोष से भी अधिक शब्द करते हुए बजे। मागध जाति के वन्दी लोग मंगल-गीत गाते हुए चले। वेदपाठी ब्राह्मण लोगों ने वेद-मन्त्रों द्वारा राजा का मंगलाशासन किया। मधुर भाषिणी, बिंबाधरा, मयूराभा सुन्दर स्त्रियाँ, "अनेक वर्ष जियें", यह भाव-द्योतक गीत गाती हुई चली। और चतुरंगिणी सेना भी उन्हें घेरकर चली। इस राजकीय ठाट के साथ राजा

दशरथ सूर्य के समान अनेक योजन पार कर राजा रोमपाद के देश पहुँचे। २३७

कॉळुन्दोडिप् पडर्कीर्त्तिक् कोवेन्द नडैन्दमैशॅन् ड्रॉट्रर् कूड़क्
कळुन्दोडुम् वरिशिलैक्कैक् कडऱ्ऱानै पुडैशूळक् कळऱ्काल् वेन्दन्
शॅळुन्दोडुम् पल्कलनुम् वॅयिल्वीश मागदर्हळ् तिरण्डु वाळ्त्त
ॲळुन्दोडु मुवहैयॊडु मोशनैशॅन् ड्रननरशै यॅदिर्कॊ ळॅण्णि 238

कॉळुन्तु ओटि पटर्–शाखा-प्रशाखाओं के साथ फैले हुए; कीर्त्ति–यशस्वी; को वेन्तन्–राजाधिराज का; अटैन्तमै–अपने नगर में आगमन; ऑट्रर् चॅन्ऱु कूऱ–गुप्तचरों (ने जाकर कहा), कहने पर; कळल् काल् वेन्तन्–पायल पहने चरणवाले राजा (रोमपाद); ॲतिर् कोळ् ॲण्णि–अगवानी करने का विचार करके; कळुन्तु ओटुम्–सुगठित; वरि चिलै कै–बन्धनयुक्त धनुष के धारण करनेवाले हाथों के; कटल् तानै–सागर के समान सेना के सैनिकों के; पुटै चूळ–पार्श्व में आते; चॅळुमै तोटुम्–प्रकाशबहुल कर्णाभरणों और; पल कलनुम्–अन्य अनेक आभूषणों के; वॅयिल् वीच–कांति छिटकाते; माकतर्हळ् तिरण्टु वाळ्त्त–मागधों के, एकत्र होकर, स्तुति करते; ॲळुन्तु ओटुम् उवकैयॊटुम्–उमड़कर बहनेवाले आनन्दप्रवाह के साथ; ओचनै चॅन्ऱनन्–एक योजन दूर चले। २३८

'राजाधिराज दशरथ, जिनकी कीर्तिलता शाखा-प्रशाखाओं के साथ बहुत बड़ी फैली थी, हमारे देश में पधारे हैं' —यह बात चरों ने आकर रोमपाद से कही। पायलधारी रोमपाद ने सामने जाकर उनकी अगवानी करने का निश्चय किया। इसलिए वे अपनी सेना, वन्दी मागध आदि के साथ, आभरण आदि से खूब अलंकृत होकर एक योजन तक चले। २३८

ॲदिर्हॊळ्वान् वरुहिन्ऱ वयवेन्दन् ऱनैक्कण्णुऱ् ऱॅळिलि नाण
अदिर्हिन्ऱ पॊलन्देर्निन् ऱिरशर्पिरा निळिन्दुळिच्चॅन्ऱ् ऱडियिन् वीळ
मुदिर्हिन्ऱ पॅरुङ्गाद ऱळैत्तोङ्ग वॅडुत्तिऱुह मुयङ्ग लोडुम्
कदिर्हॊण्ड शुडर्वेलान् ऱलैनोक्कि यिवैयुरैत्तान् कळिप्पिन् मिक्कान् 239

ॲतिर् कॊळ्वान् वरुकिन्ऱ–अगवानी के लिए आनेवाले; वयम् वेन्तन् तनै विजयक (सदा जीतनेवाले) राजा को; अरचर पिरान् कण्णुऱ्ऱु–चक्रवर्ती (दशरथ) देखकर; ॲळिलि नाण अतिर्किन्ऱ–मेघों को भी लजाते हुए (मेघों से अधिक) शोर करनेवाले; पॊलम् तेर् निन्ऱु इळिन्तुळि–स्वर्णमय (अपने) रथ से ज्योंही उतरे त्योंही; चॅन्ऱु अटियिन् वीळ–रोमपाद जाकर पैरों पर गिरे (गिरने पर); मुतिर्किन्ऱ पॅरु कातल्–बढ़ते गम्भीर प्रेम के; तळैत्तु ओङ्क–अधिक उमड़ते; ॲटुत्तु–उठाकर; इऱुक मुयङ्कलोटुम्–कसकर आलिंगन करते ही; कळिप्पिल् मिक्कान्–अत्यानंदित (रोमपाद) ने; कतिर् कॊण्ट चुटर्–अंशुमाली सदृश; वेलोन् तनै–भालेवाले को; नोक्कि–देखकर; इवै उरैत्तान्–ये बातें कहीं। २३९

राजा दशरथ ने स्वागतार्थ आनेवाले रोमपाद को देखा तो वे स्वयं

रथ से उतर गये। राजा रोमपाद ने आकर दशरथ के चरणों पर नमस्कार किया। उमड़ते प्रेम के साथ उनको उठाकर जब दशरथ ने आलिंगन कर लिया, तब इनके प्रेम से प्रभावित राजा रोमपाद ने भालाधारी चक्रवर्ती से ये (निम्नलिखित) बातें कही। २३९

यान्शॅय्द मादवमो विव्वुलहञ् जॅय्दवमो यादो विङ्गण्
वान्शॅय्द शुडर्वेलो यडैन्ददॆन मिहमहिऴा मणित्ते रेऱ्ऱित्
तेन्शॅय्द तार्मौलित् तेर्वेन्दैच् चॆऴुनहरिऱ् कॊणर्न्दान् ऱॆव्वर्
ऊनशॅय्द शुडर्वडिवे लुरोमपद नॆनवुरैक्कु मुरवुत् तोळान् 240

तॆव्वर् ऊन् चॅय्त–(शत्रु-शरीर के) मांसयुक्त; चुटर् वटि वेल्–चमकीले और तीक्ष्ण भालेवाले; उरोमपतन् ॲन उरैक्कुम्–रोमपाद कहलानेवाले; उरवु तोळान्–वलिष्ठ कन्धोंवाले; तेन् चॅय्न तार् मौलि–शहद टपकनेवाली पुष्पमाला से अलंकृत किरीट (धारी) और; तेर्–रथ के (स्वामी); वेन्तै–राजा को (देख); वान् चॅय्त–देवलोक को बनाये (नाश से बचाकर) रखनेवाले; चुटर् वेलोय्–सूर्य-सम दीप्त भालेवाले; इङ्कण् अटैन्ततु–इधर (आपका) आगमन; यान् चॅय्त मातवमो–हमारी की हुई महान तपस्या (का फल) है; इ उलकम् चॅय् तवमो–इस भूलोक का किया हुआ तप है; यातो–क्या है; ॲन–ऐसा कहकर; मिक मकिऴा–अधिक प्रसन्न होकर; मणि तेर् एऱ्ऱि–रत्न-रथ पर आरूढ़ कराकर; चॆऴु नकरिल् कॊणर्न्तान्–अपने सुसम्पन्न नगर में लिवा ले आये। २४०

शत्रु-शरीरों के मांस से युक्त भालाधारी, वलिष्ठ भुजाओंवाले रोमपाद (नामक) उन राजा ने, पुष्पमालाओं से अलंकृत किरीट को धारण कर रथ पर आये हुए चक्रवर्ती दशरथ को देखकर उचित अभ्यर्थना के ये वचन कहे कि देवों के लिए देवलोक की रक्षा करने में समर्थ और उज्ज्वल वेल् (भाला) के धारण करनेवाले महाराज! श्रीमान का इधर आगमन मेरी तपस्या का फल है? या इस देश ने उचित तपस्या की थी? बाद में उन्होंने चक्रवर्ती को रत्न-जड़ित रथ पर आसीन कराया और वे उनको अपने सुसमृद्ध नगर मे लिवा लाये। २४०

आडहप्पॊऱ् चुडरिमैक्कु मणिमाडत् तिडैयॊरुमण् डबत्तै यण्मिप्
पाडहच्चॅम् बदुममलर्य् पावैयर्पल् लाण्डिशैप्पप् पैम्बॊऱ् पीडत्
तेडुतुऱ्ऱ वडिवेलान् ऱनैयिरुत्तिक् कडन्मुऱैहळ् यावुञ् जॅय्दु
तोडुतुऱ्ऱ मलर्त्तारान् विरुन्दळिप्प विनिदुहन्दान् सुरर्ना डोन्दान् 241

तोटु तुऱ्ऱ मलर् तारान्–दल-संकुल पुष्पों की (बनी) माला के धारी; आटकम् पॊन् चुटर्–"हाटक" -स्वर्ण की आभा से; इमैक्कुम्–दमकनेवाले; अणि माटत्तु इटै–सुन्दर सौध के अन्दर; ओरु मण्टपत्तै अण्मि–एक मण्डप में जाकर; पाटकम्–पाटक नामक पैजनी पहनी हुई; चॅम् पतुमम् मलर्–लाल कमल के समान पैरोंवाली; पावैयर्–रमणियों के; पल्लाण्टु इचैप्प–'अनेक वर्ष जिएँ' वाला शुभगीत गाते; एटु तुऱ्ऱ–पुष्पमाला से अलंकृत; वटि वेलान् तनै–तीक्ष्ण शक्ति (बर्छी) के धारक दशरथ

को; पचुमै पॉन् पीटत्तु इरुत्ति–हरे (सुभग) स्वर्ण के आसन पर विराजित कराके; कटन् मुरैकळ् यावुम् चॅय्तु–यथाक्रम उपचार के काम पूरा करके; विरुन्तु अळिपप–भोजन कराने पर; चुरर् नाटु ईन्तान्–सुरों को जिन्होंने उनका राज्य दिलाया था, उन्होंने; इत्तितु उकन्तान्–आनन्द के साथ स्वीकार किया। २४१

घने रूप से पंखुड़ियों से युक्त पुष्प-माला के धारण करनेवाले राजा रोमपाद हाटक (-हाटक, जंबूनद, शुकपक्ष और जातरूप इन स्वर्ण के चार प्रकारों में एक) प्रकार के स्वर्ण की कारीगरी के साथ निर्मित एक मण्डप में राजा दशरथ को ले आये। तब पैंजनी-विभूषित लाल चरणोंवालियाँ 'अनेक वर्ष जिओ' आदि मंगलभाव-द्योतक गीत गाये। चक्रवर्ती स्वच्छ-स्वर्ण के पीठ पर आसनस्थ कर दिये गये। रोमपाद ने यथाक्रम उनका सभी तरह से सम्मान किया और भोजन कराया। देव-लोक-रक्षक चक्रवर्ती दशरथ ने उनके आतिथ्य को प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया। २४१

शॅव्विनरुञ् जान्दळित्तुत् तेर्वेन्दन् इनै नोक्कि यिवणी शेऱ्न्द
कौवैयुरैत् तरुळुहॅन निहळ्न्दवॅला मरशर्पिरान् कळऱ लोडुम्
अव्वियनीत् तुयर्न्दमनत् तरुन्दवनैक् कॊणर्न्दाङ्गण् विडुप्पॅ नान्ऱ
शॅव्विमुडि योयॅन्नलुन् देरेऱिच् चेनैयोडु मयोत्ति शेर्न्दान् 242

चॅव्वि नऱ चान्तु अळित्तु–नवीन, सुवासपूर्ण चन्दन (लेप) देकर; तेर् वेन्तन् तनै–(दशों दिशाओं पर चलनेवाले) रथी (दशरथ) चक्रवर्ती को देखकर; नी इवण् चेर्न्त कौवै–श्रीमान के इधर पधारने का उद्देश्य; उरैत्तरुळुक–बताने की कृपा करें; अन–कहने पर; अरचर् पिरान्–चक्रवर्ती ने; निकळ्न्त अलाम्–जो घटा वह सब; कळऱलोटुम्–(कहा–) कहते ही; आन्ऱ चॅव्वि मुटियोय्–श्रेष्ठ, सुघड़ मुकुटधारी; अव्वियम् नीत्तु–मात्सर्य त्याग करके; उयर्न्त मनत्तु–उत्कृष्ट मन हुए; अरु तवनै–महान तपस्वी (ऋष्य शृंग) को; कोणर्न्तु आङ्कण् विटुप्पॅन्–ले आकर वहाँ छोडूंगा; अॅन्नलुम्–यह कहने पर; तेर् एऱि–रथ पर सवार होकर; चेनैयुटन्–सेना के साथ; अयोत्ति चेर्न्तान्–अयोध्या पहुँचे। २४२

भोजन के वाद चन्दन आदि, सेवा में प्रस्तुत कर रोमपाद ने, (दशों दिशाओं में जा सकनेवाले रथ के अधीश) दशरथ से प्रार्थना की कि श्रीमान इधर आगमन का हेतु बताने की कृपा करें। तब दशरथ ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। तब रोमपाद ने वादा किया कि सुन्दर और श्रेष्ठ किरीटधारी! मात्सर्यहीन उत्कृष्ट-मन उन महर्षि को मैं स्वयं वहाँ ले आऊँगा। राजा दशरथ अयोध्या लौट आये। २४२

मन्नर्पिरा नहन्नऱदऱ्पिन् वयवेन्द नरुमऱैनूल् वडिवु कॊण्ड
दन्नमुनि वरनुऱैयु डनैयणुहि यिणैयडित्ता मरैह ळम्बॊन्
मन्नुमणि मुडियणिन्दु वरन्मुऱैशॅय् दिडविवणी वरुदऱ् केय्न्द
तॅन्नॅयॅन वडियेऱ्कोर् वरमरुळु मडिहळॅन याव दॅन्ऱान् 243

मऩ्ऩर् पिराऩ्–चक्रवर्ती के; अकन्ऱतऩ् पिऩ्–हटने के बाद; वयम् वेन्तऩ्–विजयक राजा (रोमपाद); अरु मऱै नूल् वटिवु कॊण्टतु अऩ्ऩ–श्रेष्ठ वेद-शास्त्र ने रूप धर लिया, ऐसा दिखनेवाले; मुऩिवरऩ्–महर्षि के; उऱैयुळ् तऩै अणुकि–निवास-स्थान में जाकर; इणै अटि तामरैकळ्–द्वय चरण-कमल; अम् पॊऩ्मऩ्ऩुम्–सुन्दर स्वर्ण-निर्मित; मणि मुटि–रत्न-जड़ित मुकुट; अणिन्तु–धारण कर; वरऩ् मुऱै–क्रमबद्ध उपचार; चॆय्तिट–करने पर; नी–आप (के); इवण् वरुतऱ्कु–यहाँ आने का; एय्न्ततु–जो कारण बना वह; ऎऩ्ऩै–क्या; ऎऩ–पूछने पर; अटिकळ्–स्वामी महाराज; अटियेऱ्कु ओर् वरम् अरुळुम्–मुझ दास को एक वर प्रदान करें; ऎऩ–प्रार्थना करने पर; यावतु–कौन सा; ऎऩ्ऱाऩ्–पूछा। २४३

राजाधिराज के गमन के बाद, विजयी रोमपाद, वेद-स्वरूप मुनिवर के वासस्थान पर आये। चरणों पर अपना किरीट-शोभित सिर रखकर, नमस्कार करके यथोचित उपचार-कृत्य सम्पन्न किये। तब ऋषि ने प्रश्न किया कि क्या उद्देश्य लेकर आये है। राजा ने निवेदन किया कि एक वर माँगने आया हूँ। ऋषि ने कहा कहिये, कौन सा वर है? । २४३

पुरवॊऩ्ऱिऩ् पॊरुट्टाहत् तुलैपुक्क पॆरुन्दहैतऩ् पुहऴिऱ् पूत्त
अऱऩॊऩ्ऱुन् दिरुमनत्ता ऩमरर्हळुक् किडर्विळैक्कु मवुण रायोर्
तिऱलुण्ड वडिवेलाऩ् ऱशरदऩॆऩ् ऱुयर्कीर्त्तिच् चॆङ्गोल् वेन्दऩ्
विऱल्कॊण्ड मणिमाड वयोत्तिनह रडैन्दिवणी मीड लॆऩ्ऱाऩ् 244

पुऱवु ऒऩ्ऱिऩ् पॊरुट्टाक–एक कपोत (की रक्षा) के लिए; तुलै पुक्क–तुला पर बैठे; पॆरु तकै तऩ्–महान (चक्रवर्ती) के; पुकऴ् इल् पूत्त–प्रशंसित कुल में जनित; अऱऩ् ऒऩ्ऱुम् तिरु मनत्ताऩ्–धर्मभृत मनवाले; अमरर्कळुक्कु–देवों को; इटर् विळैक्कुम्–कष्ट देनेवाले; अवुणर् आयोर्–दानवों का; तिऱऴ् उण्ट–बल को हरनेवाले; वटिवेलाऩ्–तीक्ष्ण भालावाले; तचरतऩ् ऎऩ्ऱ–दशरथ नाम के; उयर्कीर्त्ति–उन्नत कीर्ति के; चॆङ्कोल् वेन्तऩ्–अविचलित दण्डधर शासक के; विऱल् कॊण्ट–महिमायुक्त; मणिमाटम्–सुन्दर प्रासादों से पूर्ण; अयोत्ति नकर्–अयोध्या नगर; नी अटैन्तु–आप पहुँचकर; इवण् मीळ्तल्–फिर इधर लौट आना; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। २४४

राजा ने कहा कि दशरथ नाम के चक्रवर्ती हैं। कपोत को बाज का ग्रास बनने से रक्षित करने के हेतु अपने शरीर को तोलकर चील के पास समर्पित करने के लिए तुला पर शिबि नामक राजा चढ़े थे। ये दशरथ उन उदार शिबि के प्रख्यात कुल में उत्पन्न, धर्मशील राजा हैं। उनके हाथ के भाले ने देवों का कष्ट और राक्षसों का पराक्रम दोनों का नाश किया था। वे स्वयं महान यशस्वी है और उनका राजदण्ड (शासन) कुटिल कभी नहीं हुआ। उनकी राजधानी, अत्यन्त शोभायुक्त प्रासादों से भरी अयोध्या है। वहाँ तक, महर्षि, आपको एक बार हो आने की कृपा करनी चाहिए। यही वर हम आपसे माँगते हैं। २४४

अव्वरन्दन् दन्नमिन्तित्तेर् कॊणर्दियॆन्न वरुन्दवत्तो नरुळ लोडुम्
वॆव्वरन्दिन् ऱयिल्पडैक्कुञ् जुडर्वेला नडियिरैञ्जि वेन्दर् वेन्दन्
कव्वयॊऴिन् दुयर्न्दनन्नॆन् ऱदिर्कुरऱ्ऱेर् कॊणर्न्दिदनिऱ् कलैव लाळन्
शॆव्विनुदऱ् ऱिरुविनॊडुम् पोन्देऱ् ऱॆन्नवेऱिच् चिऱन्दान् मन्नो 245

अ वरम् तन्तनम्–वह वर दिया हमने; इत्ति तेर् कॊणर्ति–अब रथ लाइये; ऍन्न–ऐसा; अरु तवत्तोन्–उत्तम तपस्वी (के); अरुळलोटुम्–वर-वचन कहते ही; वॆव् अरम् तिन्ऱ–भयंकर (रेती की) रगड़ खाकर; अयिल् पटैक्कुम्–तीक्ष्ण हुए; चुटर् वेलान्–उज्ज्वल भाला के धारी; अटि इऱैञ्चि–चरण-स्तुति करके; वेन्तर् वेन्तन्–राजाधिराज; कव्वै ऑऴिन्तु–दुख निवृत्त होकर; उयर्न्तनन्–उन्नत हुए; ऍन्ऱ–यह सोचकर; अतिर् कुरल् तेर्–घर्षण-शब्द करनेवाले रथ को; कॊणर्न्तु–लाकर; कलै वल् आळन्–विद्या-सम्पन्न; चॆव्वि नुतल् तिरुविनॊटुम् पोन्तु–सुन्दर ललाटवाली श्रीमती (शान्ता) के साथ आकर; इतनिल्–इस पर; एऱुक ऍन्न–आरूढ़ होइये, यह कहने पर; एऱि–सवार होकर; चिऱन्तान्–शोभायमान रहे। २४५

महर्षि कह उठे कि ठीक है! वह वर दे दिया हमने। जाइये, रथ लाइये। अपूर्व तपस्वी के ऐसा कहते ही, बार-बार रेती से रगड़ खाकर तीक्ष्ण हुई बर्छीवाले राजा रोमपाद ने उनका कृतज्ञता के साथ प्रणमन किया। 'अच्छा, राजा दशरथ की चिन्ता मिटी; और वे सब तरह से सम्पन्न हो गये'। इस विचार से प्रसन्न होकर, वे घर्षण का शोर करते हुए जानेवाले रथ को लाये और ऋषि से बोले कि विद्यापूर्ण मुनिवर! सुन्दर ललाटवाली शान्ता को साथ लेकर आप इस रथ पर आरूढ़ हो जाने की कृपा करें। तब महर्षि भी उनकी प्रार्थना मानकर सुन्दरी शान्ता के साथ आकर रथ पर सुशोभित हुए। २४५

कुनिशिलै वयवनुङ् गरङ्गळ् कूप्पिडत्, तुनियऱ मुनिवरर् तॊडर्न्दु शूऴ्वर
वनिदयु मरुमऱै वडिवु पोन्ऱॊऴिर्, मुनिवनुम् बॊऱिमिशै नॆऱियै मुन्निनार् 246

कुनि चिलै वयवन्–झुके धनुष के विजयक के; करङ्कळ् कूप्पिट–हाथ जोड़ते; तुनि अऱ मुनिवरर्–क्रोध-गुण-विमुक्त ऋषिगण; तॊटर्न्तु चूऴ्वर–पीछे लगे आये; अरु मऱै वटिवु पोन्ऱ–उत्तम वेदस्वरूप (मूर्तवेद) सम; ऑळिर् मुनिवनुम्–तेजोमय महर्षि और; वनितैयुम्–देवी; पॊऱिमिचै–रथ पर; नॆऱियै मुन्निनार्–मार्ग पर बढ़े। २४६

विजयी वीर रोमपाद ने अंजलिबद्ध हो उनको विदा किया। क्रोध-जयी ऋषिगण भी ऋष्यश्रृंग के साथ निकले। वेद-स्वरूप (विद्यमान) ऋषि ने और शान्तादेवी ने अयोध्या की ओर प्रस्थान किया। २४६

अन्दर तुन्दुमि मुऴक्कि यायमलर्, शिन्दिनर् कळित्तन रऱमुन् देवरुम्
वॆन्दॆऴ् कॊडुविनै वीऴ्क्कु मॆय्म्मुदल्, वन्दॆऴ वरुडरु वानॆन् ऱॆण्णिये 247

अऱमुम् तेवरुम्–धर्मदेवता और अन्य देवता; वॆन्तु ऍऴ् कॊटु विनै–जल कर

बढ़नेवाले क्रूर पापों के; वीऴ्क्कुम्–नाशक; मॆय् मुतल्–सत्य, आदि हेतु (कारण, परब्रह्म, श्रीराम); वन्तु ॲऴ–अवतरित हो आने के लिए; अरुळ् तरुवान्–कृपा करेंगे; ॲन्ऱु ॲण्णि–ऐसा सोचकर; कळित्ततर्–मुदित हुए; अन्तर तुन्तुमि–देव दुन्दुभी; मुऴक्कि–वादन कर; आय्मलर्–चुने हुए (सर्वश्रेष्ठ) पुष्प; चिन्तित्तर्–बरसाये; (ए)। २४७

तब धर्मदेवता और अन्य देवता ने समझ लिया कि संतप्त कर उठनेवाले पापों का नाश करने के लिये आदि परब्रह्म (श्रीराम के रूप में) अवतरित होंगे; और ये ऋषि उसको साध्य बनाने की कृपा करेंगे। इसलिए उन्होने बहुत आनन्द के साथ दुंदुभी बजायी और उत्तम कल्पक तरु के पुष्प बरसाये। २४७

तूदुव रव्वऴि ययोत्ति तुन्निऩार्, मादिरम् पॊरुदतोण् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्मुऩ्
ओदिऩर् मुऩिवर वोद वेन्दऩुम्, कादलॆऩ् ऱळवऱु कडलु ळाऴ्न्दऩऩ् 248

अव्वऴि–तब; तूतुवर्–दूत; अयोत्ति तुन्निनार्–अयोध्या आये; मातिरम् पॊरुत तोळ्–सभी दिशाओं में जाकर जो विजेता बन आये, उन कन्धोंवाले; मन्नर् मन्नन् मुन्–चक्रवर्ती के सामने; मुनि वरवु–महर्षि का आगमन; ओतिनर्–किया; ओत–उनके समाचार देने पर; वेन्तनुम्–राजा भी; कातल् ॲन्ऱ–स्नेह के; अळवु अऱु कटलुळ्–निस्सीम सागर में; आऴ्न्तनन्–मग्न हुए। २४८

तब कुछ दूतों ने अयोध्या आकर दिग्विजयी भुजाओंवाले चक्रवर्ती से महर्षि के आगमन का समाचार निवेदन किया। उनके कहते ही राजा अथाह प्रेम-सागर में मग्न हो गये (बहुत प्रसन्न हुए)। २४८

ॲऴुन्दऩऩ् पॊरुक्कॆऩ विरद मेऱिऩऩ्, पॊऴिन्दऩ मलर्मऴै याशि पूत्तऩ
मॊऴिन्दऩ पल्लिय मुरश मार्त्तऩ, विऴुन्दऩ तीविऩै वेरि ऩोडुमे 249

पॊरुक्कॆन ॲऴुन्तनन्–झट उठे; इरतम्–रथ पर; ॲऱिनन्–सवार हुए; मलर् मऴै पॊऴिन्तन–पुष्प वर्षा हुई; आचि पूत्तन–आशीर्वचन उच्चरित हुए; पल् इयम् मॊऴिन्तन–अनेक वाद्य बजे; मुरचम् आर्त्तन–ढोल बोल उठे; तीविनै–पाप; वेरिनोटुम् विऴुन्तन–जड़ों के साथ; विऴुन्तन–गिरे। २४९

वे झट उठे, अपने रथ पर सवार हुए। तब देवों ने पुष्प-वर्षा की। ब्राह्मणों ने आशीर्वाद के वचन कहे। अनेक वाद्य बज उठे। नगाड़े निनादित हुए। पाप सब उखड़ी जड़ों के साथ पतित हुए। २४९

पिदिर्न्ददॆऩ् मऩत्तुयर्प् पिऱङ्ग लॆऩ्ऱुकोण्
डदिर्न्दॆऴु मुरशुडै यरशर् कोमहऩ्
मुदिर्न्दमा दवमुडै मुऩियै यऩ्बिऩो
डॆदिर्न्दऩऩ् यॊशऩै यिरण्डॊ डॊऩ्ऱिऩे 250

अतिर्न्तु ॲऴु मुरचु उटै (य) अरचर् कोमकन्–गूँजनेवाले नगाड़ों के चक्रवर्ती;

अॅन् मनम् तुयर् पिऱङ्कल्–मेरे मन की चिन्ता-पर्वत; पितिर्न्ततु–चूर्ण हो गया; अॅन्ऱु कॉण्टु–ऐसा बूझकर; मुतिर्न्त मा तवम् उटैय–तपोवृद्धः मुनियै–मुनिवर को; अन्पिनोटु–प्रेम के साथ; योचनै इरण्टॉटु ऑन्ऱिऩ्–योजन, दो जमा एक, (यानी, तीन) की दूरी में; अॅतिर्न्ततऩ्–जा मिले । २५०

ताड़न पाकर गूँजते हुए नर्दन करनेवाले नगाड़ोंवाले अधिपति दशरथ ने अपने मन में धारणा कर ली कि महर्षि के आगमन से मेरी पर्वत के समान बढ़ी व्यथा ढह गयी । मै सुखी हो जाऊँगा । फिर उन्होंने तीन योजन आगे जाकर उनसे भेंट की । २५०

नऱ्ऱव मनैत्तुमोर् नवैयि लावुरुप्, पॅऱ्ऱिव णडैन्दॅनप् पिऱङ्गु वाऩ्ऱनैच्
चुऱ्ऱिय शीरैयु मुळैयिऩ् ऱोऱ्ऱमु, मुऱ्ऱुऱप् पॉलिदरु मूर्त्ति याऩ्ऱनै 251

नल् तवम् अनैत्तुम्–श्रेष्ठ तप सब; नवै इला–दोषहीन; ओर् उरु पॅऱ्ऱु–एक रूप लेकर; इवण् अटैन्ततु अॅन–इधर आ गया, ऐसा; पिऱङ्कुवान् तनै–शोभनेवाले उनको; चुऱ्ऱिय चीरैयुम्–वेष्टित वलकल; उळैयिन् तोऱ्ऱमुम्–हिरण का रूप भी; मुऱ्ऱुऱ पॉलि तरु–पूर्णरूप से प्रकट करनेवाले; मूर्त्तियान् तनै–आकार के उनको (मिले) । २५१

वे महर्षि ऐसे दर्शन देते थे मानों सभी श्रेष्ठ तप मिलकर साकार हो आये हों । वे वल्कलावृत्त थे और उनके सिर को हरिण का सा सींग सुशोभित कर रहा था । वे सौम्यमूर्ति थे । २५१

अण्डर्ह डुयरमु मरक्क राऱ्ऱलुम्, विण्डिडप् पॉलिदरु विन्नैव लाळनैक्
कुण्डिहै कुडैयॉडुङ् गुलवु नूऩ्मुऱैत्, तण्डॉडुम् बॉलितरु तडक्कै याऩ्ऱनै 252

अण्टर्कळ् तुयरमुम्–देवों का दुख व; अरक्कर् आऱ्ऱलुम्–राक्षसों का शौर्य; विण्टिट–नाश करते हुए; पॉलि तरु विनै–प्रभाव दिखानेवाले (यज्ञ-) कार्य में; वल्लाळनै–निपुण को; नूल् मुऱै कुलवु–शास्त्रों में विहित रीति से; कुण्टिकै कुटै ऑटु–कमण्डल और छत्र के साथ; तण्टु ऑटुम्–दण्ड के साथ; पॉलि तरु–शोभायमान; तट कैयान् तनै–विशाल हाथवाले को (मिले) । २५२

देवों का दु:ख और राक्षसों का शौर्य दोनों का एक साथ नाश करनेवाले यज्ञ की विद्या में वे दक्ष थे । शास्त्रोक्त रीति से वे अपने सुन्दर हाथों में कमण्डल और छत्र धारण किये हुए थे । राजा ने उनके, ऐसे रूप मे दर्शन किये । २५२

इऴिन्दुपो यिरदमाण् डिणैकॉ डाण्मलर्
विऴुन्दनऩ् वेन्दरतम् वेन्दऩ् मेऩ्मयाल्
मॊऴिन्दन ऩाशिहण् मुदिय नाऩ्मऱैक्
कॊऴुन्दुमेऱ् पडर्तरक् कॊऴुकॊम् बायिनाऩ् 253

वेन्तर् तम् वेन्तन्–राजाओं के राजा; आण्टु–तब; इरतम् इऴिन्तु पोय्–

रथ से उतरकर जाकर; इणै कॊळ् ताळ् मलर्–द्वय-चरण-कमलों पर; विऴुन्तनन्–गिरे (नमस्कार किया); मुतिय–प्राचीन; नाल् मऱै–चारों वेद; कॊऴुन्तु–लता की शाखा; मेल् पटर् तर–अपने ऊपर चढ़कर फले; कॊऴुकॊम्पु–अवलम्ब-तरु; आयितान्–जो बने, (उन्होंने); मेन्मैयाल्–विशेष रूप से; आचिकळ् मॊऴिन्ततन्–आशीर्वचन कहे। २५३

तब राजा दशरथ अपने रथ पर से उतरकर पैदल चले और महर्षि के चरणद्वय छूते हुए नमस्कार किया। महर्षि ने भी जो विवर्धित वेद-लता के अवलम्बतरु के समान थे (वेदों के अपार ज्ञाता थे) विशेष रूप से राजा का आशीर्वाद किया। २५३

अयल्वरु मुनिवरु माशि कूऱिडप्, पुयल्पॊरु तडक्कैयाऱ् ऱॊऴुडु पॊङ्गुनीर्क्
कयल्पॊरु विऴियॊडुङ् गलैव लाळनै, इयल्बॊडु कॊणर्न्दनन् निरद मेऱ्ऱिये 254

अयल् वरु मुनिवरुम्–पास आनेवाले ऋषियों ने भी; आचि कूऱिट–आशीर्वाद दिया, तब; पुयल् पॊरु–(दानशीलता में) मेघों से मुकाबला करनेवाले; तट कैयाल्–विशाल हाथों से; तॊऴुतु–विनय समर्पित कर; पॊङ्कुम् नीर्–उमड़ते आनन्दाश्रु-भरी; कयल् पॊरु विऴियॊटुम्–मछली-समान आँखोवाली (शान्तादेवी) के साथ; इरतम् एऱ्ऱि–रथ पर आरूढ़ कराकर; कलै वलाळनै–विद्या-सम्पन्न (मुनि) को; इयल्पॊटु–(यथोचित) प्रकार से; कॊणर्न्ततान्–लिवा लाये। २५४

उनके साथ आनेवाले ऋषियों ने भी राजा को आशीर्वाद दिया। राजा दशरथ ने अपने हाथ जोड़े। उनके हाथ दान करने में जलगर्भित मेघों का मुकाबला करते थे। फिर वे विद्याविदग्ध ऋषि को, और आनन्दाश्रु-भरी, मछली सी आँखोंवाली शान्ता को रथ पर आरूढ़ कराकर यथोचित रीति से अपने नगर में लिवा लाये। (शान्ता दशरथ महाराज की ही पुत्री थीं जिनको रोमपाद ने गोद लिया था। उनका अयोध्या में आते हुए, और अपने पति की महिमा को व्यक्त देखकर, आनन्द का आँसू बहाना स्वाभाविक ही था)। २५४

अडिकुरन् मुरशदि रयोत्ति मानहर्, मुडियुडै वेन्दनम् मुनिव नॊडुमोर्
कडिहयि नडैन्दनन् कमल वाण्मुह, वडिवुडै मडन्दयर् वाऴ्त्तॆ डुप्पवे 255

मुटि उटै वेन्तन्–किरीटधारी चक्रवर्ती; अ मुनिवतॊटुम्–उन मुनि के साथ; कमलम् वाळ् मुकम्–कमल-सम उज्ज्वल मुखोंवाली; वटिवु उटै–सुभग रूपवाली; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; वाऴ्त्तु ॲटुप्प–मंगलगान करते; अटि कुरल् मुरचु–ताडन से निनादित होनेवाले ढोल; अतिर्–बजनेवाले; अयोत्ति मा नकर्–अयोध्या के महान नगर में; ओर् कटिकैयिन्–एक घटिका के अन्दर; अटैन्तनन्–पहुँचे। २५५

मुकुटधारी महाराज मुनि के साथ एक घटिका के अन्दर नगर पहुँच गये। तब कमल के समान मुखों से शोभित सुन्दरी स्त्रियों ने मंगलमय अभ्यर्थना के गीत गाये। जोर के साथ नगाड़े बज उठे। २५५

कशट्टुरु विन्नैत्तौंऴिऱ् कळ्व रायुळ्ळल्, अशट्टर्ह ळैवरै यरुव राक्किय
वशिट्टनु मरुमरै वऴक्कु नीङ्गला, विशिट्टरुम् वेत्तवै पॉलिय मेविनार् 256

कचट्टु उरु विन्नै तौंऴिल्—कलंकित पाप कर्मों के प्रेरक; कळ्वराय् उळ्ळल्—चोर के समान क्रियमाण रहनेवाली; अचट्टर्कळ् ऐवरै—बुद्धिहीन पाँचों (पंचेंद्रिय) को; अरुवर् आक्किय—निष्क्रिय जिन्होंने बनाया वे; वचिट्टनुम्—वसिष्ठ और; अरु मरै वऴक्कु—श्रेष्ठ वेद-मार्ग (से); नीङ्कला—न हटनेवाले; विचिट्टरुम्—विशिष्ट (ब्राह्मण) लोग; वेत्तु अवै पॉलिय—राज-सभा को शोभायुक्त बनाते हुए; मेविनार्—आ विराजे। २५६

फिर महर्षि वसिष्ठजी और अनेक वेदमार्गानुयायी ब्राह्मण लोगों ने आकर राज-सभा को सुशोभित किया। वसिष्ठजी इन्द्रिय-निग्रही थे। (कम्बन इस बात की अपने अनोखे ढंग से चर्चा करते है। इन्द्रियों को चोर कहते हैं जो संख्या में पाँच है। तमिऴ भाषा में छ का द्योतक शब्द अरुवर् है। पर "अरुवर्" का अर्थ 'निष्क्रिय हुए' भी है। अतः 'पाँचों को छहों' बना दिया कहकर इन्द्रिय-निग्रही का अर्थ निकाला गया है)। २५६

मामणि मण्डप मन्नि माशरु, तूमणित् तविशिडैच् चुरुदि येनिहर्
कोमुनिक् करशनै यिरुत्तिक् कॉळ्कटन्, ऐमुरत् तिरुत्तिवे रिनैय शॅप्पिनान्257

मा मणि मण्टपम् मन्नि—श्रेष्ठ रत्न-शोभित सभा-भवन आकर; चुरुतिये निकर्—वेदों के ही समान रहनेवाले; को मुनिक्कु अरचनै—श्रेष्ठ मुनियों के राजा (सर्वश्रेष्ठ महर्षि ऋष्य शृंग) को; माचु अरु—निर्दोष; तू मणि—स्वच्छ रत्न-खचित; तविचु इटै—आसन पर; इरुत्ति—आसीन कराकर; कॉळ्कटन्—स्वीकार्य उपचार-कृत्य; एम् उर तिरुत्ति—सन्तोषदायक प्रकार से करके; वेरु—फिर; इन्नैय—यों; चॅप्पिनान्—कहा। २५७

चक्रवर्ती मूर्तिमान वेद के समान रहे महर्षि ऋष्यशृंग को मणिमय सभा-भवन में लिवा लाए। दोषहीन रत्नों से छविमान एक आसन पर विराजित कराया। फिर यथोचित अभ्यर्थना के रस्म अदा किये। आगे यों निवेदन किया। २५७

शान्ऱवर् शान्ऱव तरुम मादवम्, पोन्ऱौंळिर् पुनितनिन् नरुळिऱ् पूत्तवॅन्
आन्ऱतॉल् कुलमिनि यरशिन् वैहुमाल्, यान्ऱव मुडैमैयु मिऴप्पिन् ऱामरो 258

चान्ऱवर् चान्ऱव—श्रेष्ठ से श्रेष्ठ; तरुमम् मातवम् पोन्ऱु ऑळिर् पुनित—धर्म और महान तप के ही समान दर्शन देनेवाले पवित्र पुरुष; निन् अरुळिन् पूत्त—आपकी कृपा से उत्फुल्ल; ऍन् आन्ऱ तॉल् कुलम्—मेरा श्रेष्ठ प्राचीन वंश; इनि अरचिन् वैकुम्—अब राजा-सहित हो जायगा; यान् तवम् उटैमैयुम्—मेरा पूर्व-कृत तप भी; इऴप्पु इन्ऱु आम्—खोया हुआ नहीं रहेगा; (आल् अरो)। २५८

सर्वश्रेष्ठ साधु महर्षे! धर्म और तप के मूर्तिमान तेजस्वी! आपकी कृपा से अब मेरा प्राचीन श्रेष्ठकुल राजकुल बना रहेगा। यह भी सिद्ध हो जायगा कि मैंने तपस्या की है और वह तपस्या विफल नहीं होगी। २५८

ॲऩ्ऩलु मुऩिवर ऩिऩिदु नोक्कुऱा, मऩ्ऩवर् मऩ्ऩकेळ् वशिट्ट ऩॆऩ्ऩुमोर्
नऩ्ऩॆडुन् दवऩ्ऱुणै नवैयिल् शॆय्हय, निऩ्ऩैयिव् वुलहिऩि निरुवर् नेर्वरे 259

ॲऩ्ऩलुम्–कहते ही; मुनिवरऩ्–मुनिवर; इनितु नोक्कुऱा–स्निग्ध दृष्टि से देखकर; मऩ्नर् मऩ्न–राजाधिराज; केळ्–सुनिये; वचिट्टऩ् ॲऩ्ऩुम्–वसिष्ठ नाम के; ओर् नल् नॆटु तवऩ् तुणै–अनुपम, श्रेष्ठ, दीर्घकाल के तपस्वी के संग (पथ-प्रदर्शन) में; नवै इल् चॆय्कय निऩ्ऩै–दोष-हीन कर्मी, आपको; इ उलकिल्, निरुपर् नेर्वरो–इस संसार में, कोई राजा समानता कर सकेंगे, (नहीं) । २५६

महर्षि ने चक्रवर्ती की बातें सुनकर उनपर स्निग्ध दृष्टि फेरी और कहा कि महाराज ! वसिष्ठजी एक महान और दीर्घकाल के तपस्वी हैं। उनकी सहायता लेकर आप श्लाघनीय और पवित्र कार्य करते रहते हैं; आपकी, इस संसार में कौन राजा समता कर सकता है ? । २५९

ॲऩ्ऱऩ पऱ्पल विनिय कूऱिनल्, कुऩ्ऱुऱऴ् वरिशिलैक् कुववुत् तोळिनाय्
नऩ्ऱिकी ळरिमह नडत्त वॆण्णियो, इऩ्ऱॆनै यऴैत्तदिङ् गियम्बु वायॆऩ्ऱाऩ् 260

ॲऩ्ऱ अन–ऐसा और; पऱ्पल इऩिय कूऱि–विविध मधुर बातें कहकर; वरि चिलै–बन्धन- (गाँठो से) युक्त धनुर्धर; नल् कुऩ्ऱु उऱऴ्–अच्छे पर्वत-समान; कुववु तोळिऩाय्–सुडौल भुजाओंवाले; इऩ्ऱु ॲनै इङ्कु अऴैत्ततु–आज, मुझे, यहाँ आमंत्रित करना; नऩ्ऱि कॊळ्–मंगलदायक; अरि मकम्–अश्वमेध यज्ञ; नटत्त ॲण्णियो–करने के विचार से; इयम्पुवाय्–कहिये; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा (प्रश्न किया) । २६०

ऐसी मधुर बातें कहने के बाद महर्षि ने राजा से पूछा कि पर्वत समान सुडौल भुजावाले ! क्या आप अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करने की इच्छा से हमको इधर लाए है ?" । २६०

उलप्पिल्पल् लाण्डॆला मुऱुह णिऩ्ऱिये
तलप्पॊऱै यार्ऱिऩेऩ् ऱनयर् वऩ्दिलर्
अलप्पुनी रुडुत्तपा रळिक्कु मैन्दरै
नलप्पुहऴ् पॆऱविनि नल्ह वेण्डुमाल् 261

उलप्पु इल् पल् आण्टु ॲलाम्–अन्त-हीन (लगनेवाले) अनेक वर्ष भर; उऱुकण् इऩ्ऱि–(किसी) कष्ट के विना; तलम् पॊऱै आर्ऱिऩेन्–भू-भार वहन किया है; तनयर् वऩ्तिलर्–पुत्र नहीं जनमे; नलम् पुकऴ् पॆऱ–श्रेष्ठ यश मिले, इसके निमित्त; अलम्पु नीर् उटुत्त पार्–तरंगायित समुद्र से वेष्टित इस भूमि का; अळिक्कुम्–पालन कर सकनेवाले; मैन्तरै–वीर पुत्रों को; इनि नल्क वेण्टुम्–अव प्राप्त कराने की कृपा (आपको) करनी चाहिए; (ए, आल्) । २६१

इसके उत्तर में महाराज ने कहा कि अनेक वर्षों से मैं, बिना किसी कष्ट के, इस भू-भार का सम्यक् रूप से वहन करता आ रहा हूँ। मेरे पुत्र कोई पैदा नही हुए। मैं ऐसे पुत्र प्राप्त करूँ जो इस तरंगायमान

सागर से घिरी भूमि का परिपालन करने में समर्थ हों; आप इसका उपाय करने की कृपा कीजिए। २६१

ॲऩ्ऱलु	मरशनी	यिरङ्ग	लिव्वुल
हॊऩ्ऱुमो	वुलहमी	रेळु	मॊम्बिडुम्
वऩ्ऱिऱऩ्	मैन्दर्	यळिक्कु	मामहम्
इऩ्ऱुनी	यियऱ्ऱुदऱ्	कॆळुह	वीण्डॆऩ्ऱाऩ् 262

ॲऩ्ऱलुम्–कहते ही; अरच–राजन्; नी इरङ्कल्–आप दुखी मत हों; इ उलकम् ऒऩ्ऱुमो–यह एक लोक ही क्या; उलकम्–भुवन; ईरेळुम्–दो के सातों (चौदहों) का; ओम्पिटुम्–परिपालन करनेवाले; वल् तिऱल् मैन्तर्–बहुत समर्थ वीर पुत्रों को; अळिक्कुम्–दिलानेवाले; मा मकम्–महान (अश्वमेध) यज्ञ को; इऩ्ऱु नी इयऱ्ऱुतऱ्कु–आज ही आप, करने के लिये; ईण्टु ॲळुक–अभी (तुरत) उपक्रम कीजिये; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। २६२

उनके ऐसा कहने पर, ऋष्यश्रृंग ने कहा कि महाराज! चिन्ता मत कीजिए; यह एक भुवन क्या चौदहों भुवनों का परिपालन करने में समर्थ पुत्र जिसके फलस्वरूप पैदा होंगे वैसा यज्ञ करेंगे। आप अभी प्रस्तुत हो जाइए। २६२

आयदऱ्	कुरियन	कलप्पै	यावैयुम्
एयॆऩक्	कॊणर्न्दनर्	निरुबर्क्	केन्दलुम्
तूयनऱ्	पुनल्पडीइच्	चुरुदि	नूऩ्मुऱै
शाय्वऱत्	तिरुत्तिय	शालै	पुक्कनऩ् 263

आयतऱ्कु उरियन–उसके लिए आवश्यक; कलप्पै यावैयुम्–सामग्रियाँ सब; एयॆन कॊणर्न्तनर्–आज्ञा मिलते ही (सेवक) लाये; निरुपर्क्कु एन्तलुम्–राजाओं के राजा भी; तूय नल् पुनल्–पवित्र और श्रेष्ठ (सरयू) जल में; पटीइ–स्नान करके; चुरुति नूल् मुऱै–श्रुति-विहित क्रम से; चाय्वु अऱ तिरुत्तिय–दोष-रहित, समुचित रीति से बने; चालै–यज्ञमण्डप में; पुक्कनऩ्–पहुँचे। २६३

राजा ने आज्ञा दी और सभी उपकरण और सामग्रियाँ आ गयीं। महाराज भी पवित्र सरयू-जल में स्नान करके, श्रुति-विधियों के अनुसार निर्मित यज्ञ-शाला में प्रविष्ट हुए। २६३

मुळङ्गळऩ्	मुम्मैयु	मुडुहि	याहुदि
वळङ्गिये	यीरऱु	तिङ्गळ्	वाय्त्तपिऩ्
तळङ्गिन	तुन्दुमि	ताविल्	वाऩहम्
विळुङ्गिऩर्	त्रिण्णवर्	वॆळियिऩ्	ऱॆऩ्नवे 264

मुळङ्कु अळल् मुम्मैयुम्–शब्दायमान त्रिरग्नि; मुटुकि–प्रज्वलित करके; आकुति वळङ्कि–आहुतियाँ देकर; ईर् अऱु तिङ्कळ्–दो के छः (बारह) मास;

वाय्त्त पिन्-पूरा होने के बाद; तुन्तुमि-देव दुंदुभियाँ; तऴङ्कित्त-वज उठीं; विण्णवर्-देवता लोग; ता इल् वान्-निर्मल आकाश में; वॅऴि इन्ऱु ॲन्न-रिक्त स्थान नहीं हो, ऐसा; विऴुङ्किनर्-खचाखच भर गये। २६४

(आह्वनीय, गार्हपत्य, दक्षिणा की) त्रिरग्नि प्रज्वलित की गयी। उसमें उचित रीति से आहुतियाँ दी गयीं। ऐसे बारह महीने बीते। देवदुदुभियाँ बज उठी और देवता लोक आकाश को लीलते हुए (छिपाते हुए) आकर खचाखच भीड़ लगाकर खड़े हो गये। २६४

मुहमल रॉळिर्दर मॉय्त्तु वानुळोर्, तॉहैविरै नरुमलर् तूवि यार्त्तॅळत्
तहवुडै मुनियुमत् तऴन्नि नाप्पणे, महवरु ळाहुदि वऴङ्गि ऩानरो 265

वान् उळोर्-सुरलोकवासी; मुकम् मलर् ऑळि तर-मुख-कमलों को उज्ज्वल रखते हुए (प्रफुल्ल चित्त); मॉय्त्तु-भीड़ लगाकर; तॉकै विरै नरुमलर् तूवि-गुच्छों में, लगातार, सुवासित पुष्प बरसाकर; आर्त्तु ॲऴ-आनन्दरव करते उछले; तकवु उटै मुनियुम्-सर्व-योग्यता-सम्पन्न ऋषि भी; अ तऴलिन् नाप्पण्-उस यागाग्नि के मध्य; मकवु अरुळ् आकुति-पुत्र-दायक आहुति; वऴङ्किनान्-प्रदान की। २६५

देवताओं के मुख-कमल प्रफुल्लित थे। वे सुगन्ध-पूर्ण कल्पकवन के पुष्प बरसाने लगे। सन्तोष के साथ उछले-कूदे। तब सर्व-योग्यता-सिद्ध महर्षि ने अग्नि मे पुत्रेच्छा की पूर्ति करनेवाली आहुति छोड़ी। २६५

आयिडैक् कनलिनिन् ऱम्बॉऩ् ऱट्टमीत्, तूयनऱ् चुदैनिहर् पिण्ड मॉन्ऱुशूऴ्
तीयॅरि पङ्गियुञ् जिवन्द कण्णुमाय्, एयॅनप् पूदमॉन् ऱॅऴुन्द देन्दिये 266

अ इटै-तब; कनलिन् निन्ऱु-उस अग्नि से; चूऴ् ॲरि ती पङ्कियुम्-चारों ओर जलनेवाली आग के समान केश (और); चिवन्त कण्णुम् आय्-लाल आँखोंवाला बनकर; पूतम् ऑन्ऱु-एक भूत; अम् पॉन् तट्टम् मी-सुन्दर स्वर्ण-थाली पर; तूय नल् चुतै निकर्-पवित्र, श्रेष्ठ सुधा-सम; पिण्टम् ऑन्ऱु एन्ति-अन्न पिण्ड उठाते हुए; एय् ॲन ॲऴुन्ततु-सहसा उठ आया। २६६

तब उस अग्नि से एक भूत निकल आया। उसके केश जलती अग्नि के समान थे। आँखे लाल थी। उसके हाथ में एक सोने की थाली थी और उस पर अमृत-सम अन्न का एक पिंड था। २६६

वैत्ततु तरैमिशै मऱ्ऱित्तु मव्वऴित्
तैत्तदु पूदमत् तवनुम् वेन्दनै
उय्त्तनल् लमिर्दिनै युरिय मादर्हट्
कत्तहु मरबिनि लळित्ति यालॅन्ऱान् 276

पूतम्-भूत (ने); तरै मिचै वैत्ततु-(थाली को) स्थल पर रखा; मऱ्ऱितुम्-फिर; अ वऴि तैत्ततु-उसी रास्ते (अग्नि में) प्रविष्ट (अन्तर्धान) हुआ; अ तवनुम्-उन तपोधन ने भी; वेन्तनै-राजा को; उय्त्त नल् अमिर्तिनै-भूत-दत्त श्रेष्ठ

अमृत (-सम अन्न) पिण्ड को; उरिय मातर्कट्कु–अपनी पत्नियों को; अ तकु मरपित्तिल्–उनके उचित क्रम के अनुसार; अळितूति–दीजिये; अॅन्रान्–आज्ञा की। २६७

उस भूत ने उस थाली को भूमि पर रखा और वह जैसे आया था उसी तरह अग्नि में घुसकर अदृश्य हो गया। महर्षि ने महाराज को आज्ञा दी कि आप इसको यथाक्रम अपनी रानियों में बाँट दीजिये। २६७

मामुनि यरुळ्वळि मन्नर् मन्नवन्, तूममॅन् शुरिकुळर् ऱॉण्डैत् तूयवाय्क्
कामरॉण् कौचलै करत्ति नोर्पहिर्, तामुऱ वळित्तनन् शङ्ग मार्त्तॅळ 268

मा मुनि अरुळ् वळि–महामुनि की आज्ञा के अनुसार; मन्नर्मन्नवन्–चक्रवर्ती; चङ्कम् आर्त्तु अॅळ–शंख बज उठे; तूमम् मॅल् चुरि कुळल्–धूम्र वासित, कोमल, काले घुँघराले केश और; तॉण्टै तूय वाय्–बिम्ब-सम लाल और पवित्र मुख (अधरों) और; कामर् ऑण्–मनोरम छटावाली; कौचलै करत्तिन्–कौशिल्यादेवी के हाथों में; ओर् पकिर्–एक अंश को; तामम् उऱ–(भूलोक को) प्रकाशमयता दिलाते हुए; अळित्तनन्–दिया। २६८

महर्षि की आज्ञा पाकर महाराज ने उसका एक भाग, धूपवासित कोमल केश, बिंबाधर, पवित्र मुख और मनोरम छटा —इनसे युक्त कौसल्यादेवी के हाथ में दिया। तब शंख बजाये गये। कौसल्यादेवी के इसे भक्षण कर लेने से ससार नया प्रकाश पानेवाला था। २६८

कैकयन् ऱनयैतन् करत्तु मम्मुऱैच्, चॅय्हयि नळित्तनन् ऱेव रार्त्तॅळप्
पॉय्हयु नदिहळुम् पॉळिलु मोदिमम्, वैहुऱु कोसल मन्नर् मन्नने 269

पॉय्कैयुम्–तालाबों में; नतिकळुम्–नदियों में; पॉळिलुम्–उद्यानों में; ओतिमम् वैकु उऱ–हंस (जिस देश में) वास करते है उस; कोचलम्–कोशल देश के; मन्नर् मन्नन्–(शासक) चक्रवर्ती (ने); तेवर् आर्त्तु अॅळ–देवों के आनन्दरव कर उठते; कैकयन् तनयै तन् करत्तुम्–केकय-पुत्री के हाथ में; अ मुऱै चॅय्कैयिन्–उसी क्रम से; अळित्तनन्–दिया। २६९

तब कोसलाधीश ने केकयपुत्री कैकेयी के हाथ में उसी प्रकार एक भाग दिया। राजा से परिपालित वह देश ऐसा था कि तालावों, नदियों और बागों में हंस वास करते थे। (कवि इस देश की समृद्धता का स्मरण शायद इसलिए करते है कि कैकेयी के तनय इसके राजा बनेंगे)। २६९

नमित्तिरर् नडुक्कुऱु नलङ्गॉण् मॉय्म्बुडै
निमित्तिरु मरबुळान् मुन्नर् नीर्मयिन्
सुमित्तिरैक् कळित्तनन् सुरर्क्कु वेन्दिनिच्
चमित्तदॅन् पहैयॅनत् तमरॉ डार्प्पवे 270

न मित्तिरर्–अमित्र; नटुक्कु उऱ–काँप जायें, इसका हेतु जो है उस; नलम्

कॊळ् मॊय्म्पु उटै–श्रेष्ठ वल से युक्त; निमि तरु मरपु उळ्ळान्–राजा निमि के वंश में उदित (दशरथ); चुरर्क्कु वेन्तु–सुरेन्द्र; ऍन् पकै इनि चमित्ततु ऍन–मेरा शत्रु अब मिट गया, यह निश्चय कर; तमरॊटु आर्प्प–अपनों के साथ कोलाहल मचा उठे––(यह साध्य करते हुए); मुन्नर् नीर्मैयिन्–पहले के क्रम के अनुसार; चुमित्तिरैक्कु–सुमित्रादेवी को; अळित्तनन्–दिया। २७०

शत्रु को भयभीत करनेवाले वली निमि के वशस्थ राजा दशरथ ने सुमित्रादेवी के हाथ मे उसी प्रकार, जैसे कौसल्या और कैकेयी के सम्बन्ध मे किया था, पिण्ड का एक भाग दिया। तब देवेन्द्र यह कहकर कि मेरा शत्रु अब मिटा, अपने साथियों के साथ हल्ला मचाकर उछल उठे। २७०

पिन्नरप् पॆरुन्दहै पिदिर्न्दु वीऴ्न्दद्दु
तन्नयुज् जुमित्तिरै तनक्कु नल्हिनान्
ऒन्नलर्क् किडमुम्वे रुलहि नोङ्गिय
मन्नुयिर् तमक्कुनीळ् वलमुन् दुळ्ळवे 271

पिन्नर्–उसके बाद; अ पॆरु तकै–उन उदारचेता दशरथ ने; ऒन्नलर्क्कु–शत्रुओ के; इटमुम्–वाम अंग और; वेरु–उनसे परे; उलकिन् ओङ्किय–संसार में जीवन्त; मन् उयिर् तमक्कु–जीवों के; नीळ् वलमुम्–श्रेष्ठ दक्षिण अंग के; तुळ्ळ–फड़कते; पितिर्न्तु वीऴ्न्ततु तन्नैयुम्–जो छितरकर बचा रहा, उसको भी; चुमित्तिरै तनक्कु–सुमित्रा को; नल्कितान्–(प्रेम के साथ) दिया। २७१

फिर, उन उदारचेता ने जो भाग करते वक्त बचकर रह गये उन कणो को एकत्र करके उसे सुमित्रा को दे दिया। तब शत्रु लोगो के वाम अंग फड़क उठे और अन्य जीवो के दाहिने अंग। (पुरुषों के लिए वाम अंगों का फड़कना अहित का सूचक है।)। २७१

वाम्बरि वेळ्वियु मकारै नल्हुव, ताम्बुरै याहुदि पिऱवु मन्दणन्
ओम्बिड मुडिन्दपि नुलहु कावलन्, एम्बलॊ ऍऴुन्दनन् यारु मेत्तवे 272

वाम् परि वॆळ्वियुम्–लपकते चलनेवाले अश्व को लेकर किया जानेवाला यज्ञ; मकारै नल्कुवतु आम्–पुत्रोत्पादक (पुत्रकामेष्टि यज्ञ के); पुरै आकुति पिऱवुम्–योग्य आहुति आदि अन्य होम कार्य; अन्तणन् ओम्पिट–महर्षि ने सावधानी के साथ करके; मुटिन्त पिन्–सम्पूर्ण किया, करने के बाद; उलकु कावलन्–भूपति; यारुम् एत्त–सबके स्तुति करते; एम्पलॊटु–सन्तोष के साथ; ऍऴुन्तनन्–उठ चले। २७२

अश्वमेध यज्ञ सफल रूप से सम्पन्न हो गया और पुत्रकामेष्टि के लिये उपयुक्त आहुतियाँ दी गयी। यह सब महर्षि ने सावधानी से सम्पन्न किया। फिर दशरथ यज्ञशाला से बाहर आये। तब वे बड़े सन्तुष्ट थे और सबों ने उनकी, सम्मान के साथ स्तुति की। २७२

मुरुडरुम् बल्लिय मुळङ्गि यार्त्तन, इरुडरु मुलहमु मिडरि नीङ्गिन
तॆरुडरु वेळ्वियिन् कडन्ग डीर्न्दुळि, अरुडरु मवैयिन्वन् दरश नॆय्दिनान् 273

तॆरुळ् तरु–(वेद) प्रकाशित; वेळ्वियिऩ् कटऩ्कळ्–यज्ञ-कर्म; तीर्न्तुळि–पूरा होने के बाद; मुरुटु–मर्दल; अरु पल् इयम्–और अपूर्व अन्य (मंगल) वाद्य; मुळङ्कि आर्त्तन–निनादित हुए; इरुळ् तरुम् उलकमुम्–दुख के अँधेरे में पड़े लोक भी; इटरिऩ् नीङ्किन–कष्ट-निवृत्त हुए; अरचऩ्–महाराज भी; अरुळ् तरुम् अवैयिऩ्–दया-धर्म जहाँ से किया जाता है, उस सभा भवन में; वन्तु ऎय्तिनाऩ्–आ विराजे। २७३

वेदोक्त यज्ञ के कर्म जब पूरे हुए, तब मर्दल और अन्य बाजे मंगल-नाद कर उठे। लोक सब दुखरूपी अँधेरे से विमुक्त हुए। महाराज सब को उपहार देने के लिए सभा-मण्डप मे आये। २७३

शॆय्म्मुरैक् कडनवै तिऱम्ब लिऩ्ऱिये
मॆय्म्मुरैक् कडवुळर्क् कीन्दु विण्णुळोर्क्
कम्मुरै यळित्तुनी डन्द णाळर्क्कुम्
कैम्मुरै पॊऴिन्दनऩ् कनह मारिये 274

चॆय्मुरै कटऩ् अवै–यज्ञोत्तर (करणीय) हविदान आदि को; तिऱम्पल् इऩ्ऱि–अपचार के विना; मेय् मुऱै–यथोचित क्रम से; कटवुळर्क्कु ईन्तु–कुलदेवता विष्णुदेव आदि को देकर; विण् उळोर्क्कु–आकाशलोक वासियों को भी; अम्मुरै अळित्तु–यथाक्रम समर्पित कर; नीटु अन्तणाळर्क्कुम्–श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भी; कऩकम् मारि–स्वर्णदान-वर्षा; कै मुरै पॊऴिन्तनऩ्–अपने हाथों से बारी-बारी से बरसायी (प्रचुर परिमाण में स्वर्णदान किया)। २७४

यज्ञोतर कुछ कर्म थे। उनमें कुलदेवताओं और अन्य देवताओं की पूजा करना, भोग चढ़ाना आदि था। वह सब पूरा करके महाराज ने ब्राह्मणो पर अपने हाथ से, बारी-बारी से, मानों स्वर्ण की वारिश कर दी। २७४

वेन्दर्हट् करशोडु वॆरुक्कै तेर्परि
वायन्दनर् ऱुहिलॊडु वरिशैक् केर्पन
ईन्दनऩ् पल्लियन् दुवैप्प वेहिनीर्
तोयन्दनऩ् शरयुनर् ऱुरैक्क णॆय्दिये 275

वेन्तर्कट्कु–राजाओं को; वरिचैक्कु एर्पन–उनके पदों के योग्य; अरचॊटु–शासन की भूमि के साथ; वॆरुक्कै–अर्थ; तेर्–रथ; परि–अश्व; वाय्न्त नल् तुकिलॊटु–उपयुक्त श्रेष्ठ वस्त्रों के साथ; ईन्तनऩ्–प्रदान किया; पल् इयम् तुवैप्प–विविध वाद्यों के वादन के साथ; एकि–जाकर; चरयुनल् तुरैक्कण् ऎय्ति–सरयू नदी के श्रेष्ठ घाट पर जाकर; नीर् तोय्न्तनऩ्–स्नानरत हुआ। २७५

फिर राजाओं की बारी आयी। उनको जमीन दी; धन दिया। रथ, अश्व, वस्त्र आदि भी प्रदान किये गये। उसके वाद मंगलवाद्यों के वादन के साथ वे सरयू के श्रेष्ठ घाट पर गये और नहाये। २७५

मुरशिनङ् गऱङ्गिड मुत्त वॆण्कुडै, विरशिमे ऩिऴऱ्ऱिड वेन्दर ग्ऴ्तर्
अरशवै यडैन्दुऴि ययनु नाणुऱ, उरैशॆऱि मुऩिवऩ्ऱा ळिऱैञ्जि योङ्गिऩाऩ् 276

मुरचु इनम्–विविध नगाड़े जैसे वाजों के; करङ्किट–वजते; मुत्तम् वॆण्कुटै–मोतियों से अलंकृत श्वेत-छत्रों के; मेल् विरचि निऴऱ्ऱिट–ऊपर फैलकर छाया करते; वेन्तर् चूऴ् तर–राजाओ के घेरकर आते; अरचु अवै अटैन्तुऴि–राजसभा में पहुँचने पर; अयन् नाण् उऱ–ब्रह्मा को भी लजाते हुए, (ब्रह्मा से भी अधिक); उरै चॆऱि–प्रकीतित; मुनिवन् ताळ्–वसिष्ठ महर्षि के चरणों की; इऱैञ्चि–स्तुति करके; ओङ्किनाऩ्–उन्नत हुए। २७६

वाद वे दरबार-भवन की ओर गये। तव ढोल, नगाड़े आदि निनादित हुए। श्वेत छत्र छाया देने लगे। राजा लोग भी घेरे हुए उनके साथ आए। सभा-भवन में, वसिष्ठजी विराजमान थे जिनकी ख्याति स्वयं ब्रह्माजी को भी लज्जायुक्त करती थी। राजा ने उनके चरणों पर नमस्कार किया और उनकी स्तुति की। २७६

अरियनऱ् ऱवमुडै वशिट्ट नाणैयाल्
इरलनऱ् चिरुङ्गमा मुऩिवन् ऱाडॊऴा
उरियनऱ् पलवुरै पयिऱ्ऱि युयन्दऩॆऩ्
पॆरियनऱ् ऱवमिनिप् पॆऱुव दियादॆऩ्ऱाऩ् 277

अरिय नल् तवम् उटै–उत्तम और अच्छे तपस्वी; वचिट्टन् आणैयाल्–वसिष्ठ की आज्ञा से; इरलै नल् चिरुङ्कम्–हरिण के से सुन्दर सींग से शोभित; मा मुनिवन्–वड़े मुनि के; ताळ् तॊऴा–चरण-वन्दना करके; उरिय पल नल् उरै–उचित अनेक अच्छे वचन; पयिऱ्ऱि–कहकर; उय्न्ततॆन्–तर गया; पॆरिय नल् तवम्–ऊँचे, तप के फल के रूप में; इनि पॆऱुवतु यातु–इससे वढ़कर प्राप्य क्या है ? । २७७

तपस्वी वसिष्ठजी से संकेत पाकर महाराज ने ऋष्यश्रृंग को नमस्कार किया और प्रशस्ति के वचन निवेदन किये। कहा कि आपकी कृपा से मैं तर गया। इससे वढ़कर कौन सा तपस्या का फल है जो मैं पाना चाहूँगा ? । २७७

ऎन्दैनिऩ् ऩरुळिना लिडरि ऩीङ्गिये
उयन्दऩॆ नडियऩे ऩॆऩ्ऩ वॊण्डवऩ्
शिन्दयुण् महिऴ्च्चियाल् वाऴ्त्तित् तेर्मिशै
वन्दमा दवरॊडुम् वऴिक्कॊण् डेहिऩाऩ् 278

ऎन्तै–श्रेष्ठ; निन् अरुळिताल्–आपकी कृपा से; अटियनेन्–आपके इस दास ने; इटरिन् नीङ्कि–कष्ट से मुक्त होकर; उय्न्तनॆन्–उत्थित हुआ; ऎन्न–यह कहने पर; ऒळ् तवत्त–श्रेष्ठ तपस्वी; चिन्तै उळ् मकिऴ्च्चियाल्–मन के भरे आनन्द के साथ; वाऴ्त्ति–आशीर्वाद देकर; तेर् मिचै–रथ पर चढ़कर; वन्त मा तवरॊटुम्–अपने साथ आए हुए श्रेष्ठ मुनियों सह; वऴि कॊण्टु–मार्ग ग्रहण कर; एकिनान्–चले। २७८

"भगवन्! आपकी कृपा से संकट दूर हो गया; जीवन उत्कृष्ट हो गया।" दशरथ का यह कथन सुनकर ऋषि ऋष्यशृंग को हार्दिक आनन्द हुआ। वे उन्हें आशीर्वाद देकर, रथ पर चढ़कर मार्ग पर अग्रसर हुए। उनके साथ आये हुए मुनि भी उनके साथ गये। २७८

वाङ्गिय तुयरुडै मन्नन् पिन्नरुम्, पाङ्गुरु मुनिवर्ताळ् परवि येत्तलुम्
ओङ्गिय वुवहैय राशि योडॅळ्ळा, नीङ्गिन रिरुन्दन नेमि वेन्दने 279

वाङ्किय तुयर् उटै मन्नन्–निवृत्त-दुख महाराज ने; पिन्नरुम्–फिर भी; पाङ्कु उरु मुनिवर् ताळ्–वन्दनीय अन्य अनेक मुनियों के चरणों पर; परवि एत्तलुम्–विनत हो स्तुति करते ही; ओङ्किय उवकैयर्–उमड़ते हुए आनन्द से पूरित वे; आचियोटु–(राजा को) आशीर्वाद (देने) के साथ; ऍळ्ळा-उठकर; नीङ्किनर्–निकल पड़े; नेमि वेन्तन्–चक्रवर्ती; इरुन्तनन्–सुख से रहे। २७९

हृत-दुख राजा ने अन्य ऋषियों की भी स्तुति कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किये। वे भी विदा हुए। तदनन्तर राजा सुख से रहने लगे। २७९

तॅरिवयर् मूवरुन् जिऱिदु नाट्चॅलीइ, मरुविय वयावॊडु वरुत्तन् दुय्त्तवर्
पॊरुवरुन् दिरुमुह मन्ऱिप् पॊऱ्पुनी, डुरुवमु मदियमो डॊप्पत् तोन्ऱिनार् 280

तॅरिवैयर्–देवियाँ; मूवरुम्–तीनों भी; चिऱितु नाळ् चॅलीइ–कुछ दिन बीतने के बाद; मरुविय वयावॊटु–(गर्भ धारण) सम्बन्धित क्लेश के साथ; वरुत्तम्–कष्ट; तुय्त्तवर्–सहती हुई; पॊरु अरुम् तिरु मुकम् अन्ऱि–अनुपम शोभाशाली मुखों से ही नहीं, बल्कि; पॊऱ्पु नीटु उरुवमुम्–छविपूर्ण शरीरों से भी; मतियमोटु ऑप्प–चन्द्र के समान; तोन्ऱिनार्–(श्वेत-वर्ण लिये हुए) दिखीं। २८०

तीनों महिषियों को गर्भधारण-सुलभ आयास होने लगा। उनके मुख और शरीर चन्द्र के समान श्वेत हो गये। २८०

आयिडैप् परुवम्वन् दडैन्द वॅल्लैयिन्
मायिरुम् बुविमहण् महिऴ्वि नोङ्गिड
वेय्पुनर् पूशमुम् विण्णु ळोर्पुहऴ्
तूयहर्क् कडहमु मॅऴुन्दु तुळ्ळवे 281

अ इटै–इस बीच; परुवम् वन्तु अटैन्त ऍल्लैयिल्–(पुत्र-जन्म का) समय जब आया तब; मा इरु पुवि मकळ्–श्रेष्ठ और विशाल भूमि की देवी; मकिऴ्विन् ओङ्किट–आनन्द में बढ़ी; वेय् पुनर्पूचमुम्–बाँस नाम का पुनर्वसु नक्षत्र; विण् उळोर् पुकऴ्–देवों से प्रशंसित; तूय कर्क्कटकमुम्–पवित्र कर्क राशि; ऍऴुन्तु तुळ्ळ–उठकर उछल पड़ी—तब। २८१

फिर शिशु-जन्म का समय आया। विशाल भूमि की (अधिष्ठात्री) देवी उल्लसित हुईं। बांस या पुनर्वसु नक्षत्र और सुर-प्रशंसित पवित्र कर्क राशि उदीयमान हुई। (तमिऴ में बांस पुनर्वसु का पर्यायवाची समझा जाता है।)। २८१

शित्तरु मियक्करुन् दॅरिवै मार्हळुम्, वित्तह मुनिवरुम् विण्णु ळोर्हळुम्
नित्तरु मुरैमुरै नॅरुङ्गि यार्प्पुरत्, तत्तुरु लौळिन्दुनी डरुम मोङ्गवे 282

चित्तरुम्–सिद्ध और; इयक्करुम्–यक्ष और; तॅरिवै मार्कळुम्–यक्ष-स्त्रियाँ; वित्तक मुनिवरुम्–ज्ञानी मुनि लोग; विण् उळोर्कळुम्–सुरलोक वासी; नित्तरुम्–(श्रीमन्नारायण के वैकुंठलोक में नित्य उनके साथ रहनेवाले चरण-सेवी) गरुड़, विश्वक्सेन आदि नित्यसूरि; मुरै मुरै नॅरुङ्कि–पंक्तियो में इकट्ठा होकर; आर्प्पुर–आनन्द-घोष करते तब; नीळ् तरुमम्–प्राचीन धर्म; तत्तु उरल्–लड़खड़ाना; ऑळिन्तु–छोड़कर; ओङ्क–बढ़ा जब। २८२

सिद्ध, यक्ष, यक्षिणियाँ, ज्ञानी मुनि, देवता लोग, नित्यसूरि, गरुड़, विश्वक्सेन, आदि (जो श्रीवैकुठलोक के श्रीमन्नारायण के अमर चरण-सेवी है) पक्तियो मे जुटकर आनन्द का कोलाहल मचाने लगे। धर्म भी अपनी शिथिलता छोड़कर बढने लग गया। २८२

ऑरुपह लुलहॅला मुदरत् तुट्पॉदिन्
दरुमरैक् कुणर्वरु मवनै यञ्जनक्
करुमुहिऱ् कॉळुन्दॅळिल् काट्टुञ् जोदियैत्
दिरुवुरप् पयन्दन डिरुङ्गॉळ् कोसलै 283

तिरुम् कॉळ् कोचलै–उत्तम गुणशीला कौसल्या (ने); ऑरु पकल्–(पहले, प्रलय के) एक दिन; उलकु–लोक; ऍलाम्–सभी को; उतरत्तु उळ् पॉतिन्तु–उदरस्थ कर लिया, (जिन्होंने) उनको; अरुमरैक्कु उणर्वु अरुम्–समर्थ वेदो के लिये भी अग्राह्य; अवनै–उन देव को; अञ्चनम्–अंजन; करुमुकिल् कॉळुन्तु–काले मेघों की छटा; ऍळिल काट्टुम्–इनकी सुन्दरता को अपने शरीर मे दिखानेवाले; चोतियै–ज्योतिस्वरूप को; तिरु उर–(लोक-) कल्याण साध्य करते हुए; पयन्तनळ्–जन्म दिया। २८३

उस शुभ-लग्न में बड़ी भाग्यवती, और समर्थ देवी कौशल्या ने उनको, जिन्होंने सारे लोको को एक दिन (प्रलय के अवसर पर) अपने उदर में छिपा रखा था; जिनको वेद भी प्राप्त नही कर पाते, और जो अंजन और काले मेघो की छटावाले है, उन ज्योतिर्मय देव को पुत्र के रूप मे जन्म दिया। २८३

आशयुम् विशुम्बुनिन् ऱमर रार्त्तॅळ
वाशवन् मुदलिनर् वणङ्गि वाळ्त्तुरप्
पूशमु मीनमुम् पॉलिय नल्हिनाळ्
माशऱु केहयन् मादु मैन्दनै 284

माचु अऱु–अकलंक; केकयन्मातु–केकयतनया ने; अमरर्–देवगण; आचैयुम् विचुम्पुम् निन्ऱु–दिशाओं में और आकाश में खड़ा होकर; आर्त्तु ऍळ–शोर कर उठे; वाचवन् मुतलिनर्–वासव आदि; वणङ्कि वाळ्त्तुर–विनत हो स्तुति करें;

पूचमुम् मीनमुम्–पुष्य नक्षत्र और मीन राशि; पॊलिय–प्रकाशमान हों (ऐसा); मैन्तनै–पुत्र को; नल्किनाळ्–जन्म दिया। २८४

बाद में पुष्य नक्षत्र और मीन राशि के सुलग्न में अकलंक केकय-पुत्री कैकेयी ने एक बालक को जन्म दिया। तब देवगणों ने दिशा-दिशा में और आकाशभर में खड़े होकर आनन्दरव किया। वासव (इन्द्र) ने सिर नवाकर स्तोत्र पढ़ा। २८४

तळैयविऴ् तरुवुडैच् चैल कोपन्नुम्, किळैयुमन् दरमिशैक् कॅऴुमि आर्त्तॅळ
अळैपुहु मरवित्तो डलवन् वाऴ्वुर, इळैयवर् पयन्दन्न ळिळैय मॅन्गॊडि 285

तळै अविऴ्–पंखुड़ियाँ खिले; तरु उटै–(पुष्पवाले) कल्पक-तरुओं (के वन के) स्वामी; चैलकोपन्नुम्–शैलकोप (इन्द्र); किळैयुम्–उनके बन्धु; अन्तरम् मिचै कॅऴुमि–आकाश में एकत्र होकर; आर्त्तु ऎऴ–शोर कर उठे; अळै पुकुम् अरवित्तोटु–बिल में घुसनेवाले सर्प (आश्लेषा नक्षत्र) के साथ; अलवन्–कर्क (राशि) भी; वाऴ्वुर–(उत्कृष्ट) जीवन पा जाये ऐसा; इळैय मॅन् कॊटि–छोटी और कोमल लता (समाना देवी) ने; इळैयवन्–अनुज (लक्ष्मण) को; पयन्तनळ्–जन्म दिया। २८५

छोटी रानी, सुन्दर लता-समान सुमित्रा ने एक शिशु को जनाया। तब नन्दनवन के स्वामी, शैलकोप इन्द्र और उसके साथी आकाश में एकत्र होकर आनन्द-घोष कर उठे। सर्पाकार के आश्लेषा नक्षत्र और कर्क राशि का भाग्य जागा क्योंकि उसी सुलग्न में सुमित्रादेवी के पहले पुत्र (लक्ष्मण) ने जन्म लिया था। २८५

पडङ्गिळर् प॰॰ऱलैप् पान्दळेन्दु पार्
नडङ्गिळर् तरमऱै नविल नाडहम्
मडङ्गलु महमुमे वाऴ्वि नोङ्गिड
विडङ्गिळर् विऴियिनाळ् मोट्टु मीन्ऱनळ् 286

पटम् किळर्–फन-फैलाये; पल् तलै–अनेक (सहस्र) सिरों के; पान्तळएन्तु–शेषनाग से धृत; पार्–भूमि के; नटम् किळर्तर–(आनन्द का) नर्तन कर उठते; नाटु अकम्–देश भर में; मऱै नविल–वेद पारायण होते; मटङ्कलुम्–सिंह (राशि) और; मकमुम्–मघा (नक्षत्र); वाऴ्विन् ओङ्किट–जीवन में उत्थित हुए; विटम् किळर् विऴियिनाळ्–विष-सम काले नेत्रवाली (सुमित्रा) ने; मीट्टुम्–फिर एक (बार); ईन्ऱनळ्–(एक पुत्र को) जन्म दिया। २८६

सहस्र-फणी आदिशेषनाग से धृत यह भूमि आनन्द से नर्तन करने लगी; देश भर में वेद पारायण हुआ। सिंह राशि और मघा नक्षत्र के भाग्य को जगाते हुए सुमित्रा देवी ने और एक पुत्र को जन्म दिया। २८६

आडिन ररम्बय रमुद वेळिशै, पाडिनर् किन्नरर् तुवैत्त पल्लियम्
वीडिन ररक्करॆन् ऱुवक्कुम् विम्मलाल्, ओडिन रुलाविन रुम्बर् मुऱ्ऱुमे 287

अरक्कर् वीटिऩर् अँऩ्ऱु–राक्षस मर गये—यह निश्चय कर; उवक्कुम् विम्मलाल्–आनन्द की बढती से; अरम्पैयर् आटिनर्–अप्सराएँ नाचीं; किन्नरर्–किन्नर जाति के लोग; अमुतम् एऴ् इचै–अमृत समान सप्तस्वरोंवाले मधुर गान; पाटिनर्–गाये; पल इयम् तुवैत्तत–अनेक वाद्य बज उठे; उम्पर् मुऱ्ऱुम्–देवता सब; ओटिनर्–इधर-उधर दौड़े; उलाविनर्–घूमे। २८७

इनके जन्म से सर्वत्र अपार आनन्द फैल गया। राक्षस अब अवश्य मिट जायेंगे—इस विश्वास से अप्सराएँ नाचने गाने लगीं। किन्नर सप्त-स्वर वाले अनेक गीत गाये। अनेक वाद्य बजाये। आकाश भर में देवों का कोलाहल और उनकी उछल-कूद मची रही। २८७

ओडिऩ ररशऩ्माट् टुवहै कूऱिनिऩ्, ऱाडिनर् शिलदिय रऩ्द णाळर्हळ्
कूडिनर् नाळॊडु कोळु निऩ्ऱमै, नाडिन रुलहिनि नवैयिऩ् ऱॆऩ्ऱनर् 288

चिलतियर्–दासियाँ; अरचऩ् माट्टु–महाराज के पास; ओटिनर्–दौड़ीं; उवकै कूऱि निऩ्ऱु–(अपना) सन्तोष बताकर, खड़ी हो; आटिऩर्–नाचीं; अन्तणाळर्कळ्–(पुरोहित आदि) ब्राह्मण; कूटिऩर्–एकत्र हुए; नाळॊटु कोळुम् निऩ्ऱमै–नक्षत्रों और ग्रहों की स्थिति; नाटिऩर्–शोध की; उलकु इऩि नवै इऩ्ऱु–संसार का अब कोई दुख नहीं; ऍऩ्ऱऩर्–कहा। २८८

तब दासियाँ महाराज के पास दौड़ी। संतोष-समाचार कहते-कहते वे स्वयं अपने को भूलकर नाचने लग गयीं। पुरोहितों ने मिलकर जन्म-नक्षत्र, लग्न आदि का शोध किया और उनको विदित हुआ कि अब संसार को कोई दुख नहीं होगा। २८८

(इसके बाद दो अतिरिक्त पद हैं जिनका सार यों है— श्रीरामजन्म का मास मेष था; तिथि नवमी थी; नक्षत्र पुनर्वसु, लग्न मर्कट था; ग्यारहवे गृह मे चार ग्रह उच्च थे। फिर जन्मपत्रियाँ तैयार हुई। तमिऴनाडु में क्रमशः मेष, ऋषभ, मिथुन आदि (राशियों के ही नाम) चैत्र आदि बारह मासों के स्थान पर प्रचलित है। ये संकल्प-मास कहे जाते है और सौर गणना के आधार पर हैं।)

मामुनि तऩ्ऩॊडु मऩ्ऩर् मऩ्ऩवऩ्, एमुरु पुनल्पडीई वित्तॊ डिऩ्पॊरुळ्
तामुऱ वळङ्गिवॆण् शङ्ग मार्प्पुरक्, कोमहार् तिरुमुहङ् गुरुहि नोक्किनाऩ् 289

मऩ्ऩर् मऩ्ऩवऩ्–राजाओं के राजा ने; एम् उरु पुनल् पटीइ–आनन्द-दायक (सरयू-) जल में स्नान करके; वित्तॊटु–बीज के साथ; इऩ् पॊरुळ् ताम्–सन्तोषप्रद वस्तुएँ; उऱ वळङ्कि–खूब दान देकर; वॆण् चङ्कम् आर्प्पुर–श्वेत शंखों के मंगलनाद करते; मा मुऩि तऩ्ऩॊटु–महान मुनि के साथ; कुऱुकि–जाकर; कोमकार् तिरु मुकम्–राजपुत्रों के श्रीमुख; नोक्किनाऩ्–निहारे। २८९

महाराज ने यह अत्यन्त आनन्ददायक समाचार सुना। वे जाकर सरयू के सुखावह जल में स्नान कर आये। फिर बीज (धान का) और

धन का दान दिया। शंख आदि मंगल वाद्यों के बजते, राजा ने वसिष्ठ महर्षि को साथ ले जाकर राजकुमारों का मुख देखने का रस्म अदा किया। २८९

इऱैतविर्न् दिडुहपार् याण्डॊ रेऴ्निदि, निऱैदरु शालैता णीक्कि यावैयुम्
मुऱैहॆड वऱियवर् मुहन्दु कॊळ्हॆना, अऱैपऱै यॆन्ऱन न्ऱरशर् कोमहन् 290

अरचर् कोमकन्–राजाधिराज; याण्टु ओर् एऴ्–सात सालों तक; पार्–राज्य भर में; इऱै तविर्न्तिटुक–राजकीय कर वसूले न जायँ; निति निऱै तरु चालै–निधियों से पूर्ण हमारे कोष; ताऴ् नीक्कि–ताला हटाकर; वऱियवर्–गरीब लोग; यावैयुम्–सब (धन) को; मुऱै कॆट–नियम तोड़कर; मुकन्तु कॊळ्क–उठा ले; ॲन्ना–ऐसा; पऱै अऱै–ढिंढोरा पिटवा दो; ॲन्ऱनन्–(ढिंढोरा पीटनेवालों को) यह आज्ञा दिलायी। २९०

चक्रवर्ती ने जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में यह घोषणा करवा दी कि सात साल तक लगान की माफ़ी होगी। कोषों के ताले खोल दिये जायंगे; गरीब लोग नियमों का उल्लघन करके जितना चाहे ले ले। २९०

पडैयॊऴिन् दिडुहदम् बदिह ळेयिनि, विडैपॆऱु हुहमुडि वेन्दर् वेदियर्
नडैयुऱु नियममु नवैयिन् ऱाहुह, पुडैहॆऴु विऴावॊडु पॊलिह वॆङ्गणुम् 291

पटै ऒऴिन्तिटुक–अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग बन्द हो; मुटि वेन्तर्–(बन्दी बनाये गये) राजा लोग; इन्ऱि–अब; तम् पतिकळ् विटै पॆऱुकुक–अपने-अपने देश (गमन) के लिए विदा ले ले; वेतियर्–वेदविप्रों के; नटै उऱु नियममुम्–आचरणों के नियम; नवै इन्ऱु आकुक–विना दोष के चले; पुटै ॲङ्कणुम्–सभी ओर; कॆऴु विऴावॊटु–कोलाहलमय उत्सवों के साथ; पॊलिक–चमके। २९१

दशरथ ने और भी घोषणा करा दी कि हथियार (अस्त्र-शस्त्र) का व्यवहार बन्द रहे। बन्दी बने हुए राजा लोग मुक्त हो अपने राज्य में चले जायँ। वेदपाठी ब्राह्मणो के अनुष्ठान में कोई बाधा न पड़े। सब ओर उत्सव की चमक हो। २९१

आलयम् पुदुक्कुह वन्द णाळर्दम्, शालैयुम् चतुक्कमुञ् जमैक्क शन्दियुम्
कालयु मालैयुङ् गडवु ळोर्क्कणि, मालयुन् दूबमुम् वळङ्ग वॆन्ऱनन् 292

आलयम्–मन्दिरों को; पुतुक्कुक–नवीन बनाओ; अन्तणाळर् तम् चालैयुम्–अग्रहारों (ब्राह्मणों की वीथियों) को; चतुक्कमुम्–चौकों को; चमैक्क–बनाओ; चन्तियुम्–संध्या समय; कालैयुम् मालैयुम्–प्रातः और शाम; कटवुळोर्क्कु–देवताओं के; अणि–अलंकार के लिये; मालैयुम्–पुष्प मालाओं को (और); तूपमुम्–धूप की सामग्रियों को; वळङ्क–दो; ॲन्ऱनन्–कहा। २९२

देवालयों का सुधार-संस्कार हो; अग्रहारों की सड़कें दुरुस्त की जायं। प्रातः और सायं संध्याओं में देवताओं के अलंकार के लिये पुष्पमालाओं का और पूजा के धूप आदि का प्रबन्ध हो। २९२

ऍन्बुळि वळ्ळुवर् यानै मीमिशै
नन्बरै यरैतर नहर मैन्दरुम्
मिन्बिरळ् नुशुप्पिनार् तामुम् विम्मलाल्
इन्बमॅन् रळक्करु मळक्क रॅय्दिनार् 293

ऍन्पुळि–(यह आज्ञा) कहते ही; वळ्ळुवर्–ढिंढोरा पीटनेवालों ने; यानै मीमिचै–हाथियों पर रख; नन् परै अरैतर–खूब ढिंढोरा पीटा; नकर मैन्तरुम्–नगर के पुरुष, और; मिन् पिरळ् नुचुप्पिनार् तामुम्–विद्युल्लता सी कमरवाली स्त्रियाँ; विम्मलाल्–आनन्दातिरेक से; इन्पम् ऍन्रु–सुख नाम के; अळक्क अरुम्–अथाह; अळक्कर्–समुद्र में; ऍय्तिनार्–मग्न हुए। २९३

ढिंढोरा पीटने वालों ने हाथी पर बैठ ढोल बजाकर यह मुनादी सुनायी तो नगर के पुरुष और स्त्रियाँ सब आनन्द-सागर-मग्न हुए। २९३

आर्त्तनर् मुरैमुरै यन्बि नालुडल्
पोर्त्तन पुळहम्वेर् पॉडित्त नीणिदि
तूर्त्तन रॅदिरॅदिर् शॊल्लि नार्क्कॅलाम्
तीर्त्तनॅन् ररिन्ददो ववर्तम् जिन्दैये 294

मुरै मुरै–दल बाँधकर; अन्पिनाल्–प्रेम से; आर्त्तनर्–शोरगुल मचाया; उटल्–उनके शरीर; पुळकम् पोर्त्तन–पुलक से ढँक गये; वेर्वै पॉटित्त–स्वेद कण उठे; ऍतिर् ऍतिर् चॊल्लिनार्क्कु ऍलाम्–सामने आकर जिन किन्हींने समाचार सुनाया उन सब को; नीळ् निति तूर्त्तनर्–अधिक धन लुटाया; अवर् तम् चिन्तै–उनके मन ने; तीर्त्तन् ऍन्रु–स्वयं तीर्थंकर (विष्णु) हैं, यह; अरिन्ततो–जान लिया क्या शायद। २९४

वे प्रेम के कारण शोरगुल मचाने लगे। उनके शरीर पुलकित हुए। उनकी देह स्वेद-कण-भरी हो गयी। सामने आकर जिस किसी ने यह संतोष-समाचार सुनाया, उसे लोगों ने अत्यधिक दान दिया। (उन्होंने पहले ही यह समाचार जाना था लेकिन इससे उनका हाथ नहीं रुका)। २९४

पण्णयु मायमुन् दिरळुम् बाङ्गरुम्, कण्णहन् रिरुनगर् कळिप्पुक् कैमिहुन्
दॅण्णॅयुङ् गळबमु मिळ्ळुदु नानमुम्, शुण्णमुन् दूविनर् वीदि तोरुमे 295

कण् अकल् तिरुनकर्–विशाल, श्री-समृद्ध नगर में; कळिप्पु कैमिकुन्तु–आनन्द का ठिकाना नहीं रहा, इसलिए; पण्णैयुम्–नायिकाएँ (श्रेष्ठ स्त्रियाँ); आयमुम्–सखियाँ; तिरळ्–नायक (उच्चकुल के पुरुष); पाङ्करुम्–उनके सखा; ऍण्णॅयुम्–सुगन्धित तेल; कळपमुम्–चन्दन; इळुतुम्–घी और; नानमुम्–कस्तूरी; चुण्णमुम्–(सुगन्धित) चूर्ण को भी; वीति तोरुम्–सड़क-सड़क पर; तूविनर्–छिड़का। २९५

उस विशाल नगर में, गली-गली में, लोगों ने मंगल द्रव्य छिड़के। समाज के नेता लोग और उनके सखा, नायिकाएँ और उनकी सखियाँ—सबों ने उमड़ते आनन्द के साथ जहाँ-तहाँ सुगन्धित तेल, चन्दन, कस्तूरी और गन्धचूर्ण छिड़के। २९५

इत्तहै मानह रीरु नाळुम्, शित्तमु रुङ्गळि योडुशि रन्दे
तत्तमै यॊन्रु मुणर्न्दिलर् ताविन्, मॆय्त्तव नामम् विदिप्प मदित्तान् 296

मा नकर–महान नगर (के लोग); इ तकै–इस रीति से; ईर् अरु नाळुम्–दो के छः दिन; चित्तम् उरु–मन में हुये; कळियोटु–आनन्द के साथ; चिरन्तु–उत्कृष्ट बनकर; तम् तमै–अपनी-अपनी; ऑन्रुम् उणर्न्तिलर्–कुछ सुध नहीं रक्खी; ता इल्–अकलंक; मॆय तवन्–सत्यवान तपस्वी (वसिष्ठ) ने; नामम् वितिप्प–नामकरण करने की बात; मतित्तान्–सोची। २६६

उस नगर में बारह दिन तक ऐसे आनन्द का बोलवाला था कि लोग अपने को एकदम भूल गये। तब कर्तव्य-निष्ठ और सत्यवान वसिष्ठ जी ने निश्चय किया कि अब नामकरण का कर्म होना चाहिए। २९६

करामलै यत्तळर् कैक्किरि यॆय्त्ते, अरावणै यिट्रुयिल् वोयॆन वन्नाळ्
विरावि यळित्तरुळ् मॆय्प्पॊरुळुक्के, इराम नॆनप्पॆय रीन्दन नन्रे 297

करा मलैय–मगर के लड़ने से; तळर्–शिथिल हुए; कै किरि–गिरि सम गज; ऎय्त्तु–समझ-बूझकर; अरा अणै तुयिल्वोय् ऎन–शेष-शय्या पर सोनेवाले, ऐसा पुकारने पर; अ नाळ्–उस दिन; विरावि–आकर; अळित्तरुळ–बचाया जिन्होंने उनको; एय्–योग्य रहनेवाले; इरामन् ऎन् अ पॆयर् ईन्तनन्–श्रीराम का वह नाम रखा। २६७

'शेष-शायी!' पुकारने पर जिन्होंने आकर, मगर-ग्रस्त और निर्बल हुए गजेन्द्र की रक्षा की थी उन्ही के अवतार है—यह समझकर उन्होंने कौशल्या के पुत्र को श्रीराम का नाम धरा। २९७

करदल मुट्रॊळिर् नॆल्लि कडुप्प, विरद मरैप्पॊरुण् मॆय्न्नॆरि कण्ड
वरद नुदित्तिडु मट्रैय वॊळियैप्, परद नॆनप्पॆयर् पत्तिन नन्रे 298

विरतम् मरै पॊरुळ्–यज्ञ-बोधक वेदों का अर्थ; करतलम् उट्रु ऑळिर्–करतल में साफ दिखनेवाले; नॆल्लि कटुप्प–आमलक के समान; कण्ट–(जिन्होंने) जाना था, उन; वरतन्–वरदायी ने; उतित्तिट्टुम्–उदित; मट्रैय–दूसरे; ऑळियै–प्रकाश-पुंज को; परतन् ऎन–भरत का; पॆयर् पन्तिनन्–नाम दिया। (अन्रु, ए, निरर्थक ध्वनियाँ)। २६८

वसिष्ठ जी यज्ञादि कर्मों के विधायक वेदो के अर्थ को करतलामलकवत जानते थे। अतः उन्होंने श्रीराम के जन्म के बाद पैदा हुए कैकेयी देवी के पुत्र को भरत नाम दिया। २९८

उलक्कुनर् वञ्जह रुम्ब रुयर्न्दार्, निलक्कॊडि युन्दुयर् नीत्तन ळिन्द
विलक्करु मोय्म्बिन् विळङ्गॊळि नामम्, इलक्कुव नॆन्न विशैत्तन नन्रे 299

वञ्चकर् उलक्कुनर्–वंचक (राक्षस) मरनेवाले हो गये; उम्पर् उयर्न्तार्–देव उठे हुए (चिन्ताहीन) हो गये; निलम् कॊटियुम्–भूदेवी ने भी; तुयर् तीर्त्तनळ्–दुख त्याग दिया; विलक्क अरु–दुर्द्धर्ष; मॊय्म्पिन्–वली; इन्त विळङ्कु ऑळि–

इस प्रकाशमान ज्योति-पुंज का; नामम्–नाम; इलक्कुवन्–लक्ष्मण है; अॅन्त–ऐसा; इचैत्तनन्–बतलाया (महर्षि ने)। २६६

राक्षसों का नाश निकट आ गया। अब देवगणों के दिन फिर गये। भूमिदेवी भी दुख-विमुक्त हुई। ऐसी स्थिति के लिये हेतु बनने वाले थे सुमित्रादेवी के पहले पुत्र, वसिष्ठ जी ने उन ज्योति-स्वरूप सुन्दर पुत्र को लक्ष्मण कहकर पुकारा। २९९

मुत्तुरुक् कॉण्डुशॅम् मुळरि यलर्न्दाल्
ऑत्तिरुक् कुम्मॅळि लुडैयविव् वॉळियाल्
अॅत्तिरुक् कुड्गॅडु मॅन्नवदै यॅण्णाच्
चत्तुरुक् कन्नेन्नच् चार्रिन नामम् 300

मुत्तु उरु कॉण्टु–मोती ने एक रूप धरा; चॅम्मुळरि–लाल कमल; अलर्न्ताल्–उस पर खिले; ऑत्तु इरुक्कुम्–वैसा रहनेवाली; ऍळिल्–सुन्दरता से युक्त; इ ऑळियाल्–इस ज्योति से; अॅ तिरुक्कुम् कॅटुम्–कोई भी शत्रु मिट जायगा; ऍन्नपतै–इसको; ॲण्णा–मन में सोचकर; चत्तुरुक्कन् ॲन–शत्रुघ्न का; नामम् चार्रिनन्–नामकरण किया। ३००

उनके भाई भी वड़े सुन्दर ही नहीं, पराक्रमी भी दिखते थे। समझिये कि एक मोती ने सुन्दर शिशु का रूप लिया और उस पर लाल कमल के फूल खिले हैं। उस मोती के समान थे वह तेजोमय पुत्र। लक्षण ऐसे थे कि कोई भी शत्रु वच नहीं सकता था। इसलिए महर्षि ने उनका नामकरण 'शत्रुघ्न' किया। ३००

पॉय्वळि यिन्मुनि पुहऴरु मऱैयाल्, इव्वळि पॅयर्ह ळिशैत्तुळि यिरैवन्
कैवळि निदियॅनु नदिहळै मऱैयोर्, मॅय्वळि युवरिनि ऱैत्तन मेन्मेल् 301

पॉय्वळि–असन्मार्ग; इल् मुनि–(जिनका कभी) नहीं, वे मुनि; पुकल् तरु मऱैयाल्–सुप्रकीर्तित, वेद-मन्त्रोच्चारण के साथ; इ वळि पॅयर्कळ्–ऐसे नाम; इचैत्तुळि–जब रखे; इऱैवन्–चक्रवर्ती के; कैवळि निति अॅनुम् नति–हाथों द्वारा दान की हुई निधिरूपी नदियाँ; कलै मऱैयोर्–शास्त्रज्ञ वेदपाठियों के; मॅय् वळि उवरि–तत्वार्थ भरे (उनके) मनरूपी सागर को; मेल् मेल् निरैत्तत–उत्तरोत्तर भरने लगीं। ३०१

महर्षि वसिष्ठ ने, जो भूलकर भी असत्याचरण नहीं करते थे, वेदोच्चारण के साथ (या वेद-विहित रीति से) राजकुमारों का नामकरण-संस्कार किया। तब राजा ने वेदशास्त्रियों को अर्थ (धन) दान दिया। अर्थ-दान क्या था, वह तो नदी थी जो ब्राह्मणों के हाथों से होकर वही और उसने उनके सच्चे अर्थों (तात्विक ज्ञान) से भरे मन को और भी पूरा किया। ३०१

काविपु मॉळिर्तरु कमलमु मॅन्नवे, ओविय वॅऴिलुडै यॉरुवनै यलदोर्
आवियु मुडलमु मिलदॅन्न वरुळिन्, मेविन नुलहुडै वेन्दर्तम् वेन्दन् 302

उलकु उटैय–संसार को अपने अधीन रखनेवाले; वेन्तर्तम् वेन्तन्–राजाओं के राजा (ने); कावियुम्–कुवलय और; ऑळितरुम् कमलमुम् अॅन्न–(उनके मध्य) शोभायमान कमल है, ऐसे सुदर्शन; ओवियम् अॅऴिल् उटैय–चित्र की सी सुन्दरता से युक्त; ऑरुवनै अलतु–अनुपम उनको (श्रीराम को) छोड़; ओर आवियुम् उटलमुम् इलतु–कोई प्राण नहीं, शरीर नहीं, ऐसा; अरुळिन् मेविनन्–प्रेम के साथ रहे। ३०२

नीलोत्पल और कमल पुष्पों के जमघट के समान और सुन्दर चित्र-सम रहे श्रीराम पर राजा दशरथ इतना प्रेम रखते थे मानों श्रीराम को छोड़ उनके अपने अलग प्राण या शरीर नही हों। ३०२

अमिर्दुहु कुदलैयॉ डणिनडै पयिलात्, तिमिरम तऱवरु तिनकर नॅन्नवुम्
तमरम दुडन्वळर् चतुमऱै यॅन्नवुम्, कुमरर्ह णिलमहळ् कुऱैवऱ वळर्नाळ् 303

कुमरर्कळ्–कुमार; अमिर्तु उकु–अमृत उड़ेलनेवाली; कुतलैयॉटु–तुतली बोलियों के साथ; अणि नटै पयिला–सुन्दर लड़खड़ाती चाल (से चलने) का अभ्यास करते हुए; तिमिरम् अतु अऱ वरु–अन्धकार दूर करते आनेवाले; तिनकरन् अॅन्नवुम्–दिनकर के समान और; तमरम् अतु वळर्–(मौखिक रूप से) ध्वनि द्वारा ही बढ़नेवाले; चतुमऱै अॅन्नवुम्–चार वेदों के समान; निलमकळ् कुऱैवऱ–भूदेवी की चिन्ताएँ दूर करते हुए; वळर् नाळ्–जब बढ़ रहे थे उन दिनों। ३०३

वे राजकुमार अमृत-सम तोतली बोलियाँ बोलते हुए और सुन्दर अस्थिर चाल से चलना सीखते हुए, तिमिर-नाशक सूर्य के समान और "स्वरों" के साथ (श्रवण द्वारा) वढ़नेवाले चतुर्वेद के समान बढ़ने लगे। ३०३

चवुळमॉ डुपनय नमुमुऱै तरुहुऱ्, ऱिवळव दॅन्नवॊरु करैपिऱि दिलवाय्
उवळरु मऱैयिनॊ डॉऴिवऱु कलैयुम्, तवळ्मदि पुनैयऱ निहर्मुनि तरवे 304

तवळ् मति पुनै–धवलचन्द्र-धर; अरन् निकर् मुनि–हर देव के सदृश; मुनि–मुनि (वसिष्ठ) ने; चवुळमॉटु–चुड़ाकरण के साथ; उपनयनमुम्–उपनयन संस्कार भी; मुऱै तरुकुऱ्ऱु–क्रम से कराकर; ऑरु करै पिऱितु इल आय्–सीमा रहित हो; उवळ्–विस्तृत; अरु मऱैयिनॊटु–उत्तम वेदों के साथ; ऑऴिवु अऱु कलैयुम्–हितकारिणी अन्य विद्याएँ भी। ३०४

धवल-चन्द्र के धारण करनेवाले हरदेव-सदृश वसिष्ठ जी ने राजकुमारों के चूड़ाकरण, यज्ञोपवीत आदि संस्कार कराये। वाद अनन्त-विस्तृत वेदों का अभ्यास कराया। और अन्य आवश्यक विद्यायें भी सिखायीं। ३०४

यानैयु मिरदमु मिवुळियु मुदला, एनैय पिऱवुमव् वियल्विनि नडैवुऱ्
ऱुनुऱु पडैपल शिलैयॊडु पयिला, वानवर् तनिमुदल् किळैयॊडु वळर 305

यात्तैयुम्–गज सवारी; इरतमुम्–रथ सारथ्य; इवुळियुम्–अश्वारोहण; मुतला एनैय–आदि, और ऐसी; पिऱवुम्–अन्य विद्याओं में; अ इयल्पितिऩ् अटैवु उऱ्ऱु–यथाक्रम सिद्धहस्त होकर; ऊऩ् उऱु पटै–शत्रु-शरीर पर चुभनेवाले हथियार; पल–अनेक; चिलैयोटु–धनुर्विद्या के साथ; पयिऩ्ऱु–अभ्यास कर; वानवर तनिमुतल्–देवों के आदि हेतु (परम पुरुष); किळैयोटु वळर–अपने भाइयों के साथ बढ़ते रहे। ३०५

आदिदेव (के अवतार) श्रीराम ने गज, रथ, अश्व (आरोहण) और अन्य विद्याओं में यथा-विधि दक्षता प्राप्त कर ली। शत्रु-मांस-भक्षी अनेक हथियारों को चलाने की विद्या और धनुर्विद्या का भी अभ्यास करते हुए वे अपने भ्राताओं के साथ बढ़ रहे थे। ३०५

अरुमऱै मुनिवरु ममररु मवनित्, तिरुवुम नहरुऱै शॅनमुन मिडरो
डिरुविनै तुणितरु मिवर्हळि निवणिऩ्, ऱॊरुपॊऴु दहल्हिल मुऱैयॆन वुऱुवार् 306

अरु मऱै मुनिवरुम्–उत्तम वेदों के ज्ञाता मुनि और; अमररुम्–देव (और); अवनि तिरुवुम्–भूदेवी; इ नकर् उऱै चॅनमुम्–इस नगर में रहनेवाले जन भी; नम् इटरोटु–हमारे दुखों के साथ; इरु विनै–दोनों कर्म; इवर्कळिऩ् तुणि तरुम्–इनके द्वारा काटे जायँगे; इवण् निऩ्ऱु–यहाँ से; ऒरु पॊऴुतु–कभी भी; उऱै अकल्किलम्–रहना छोड़ेंगे नहीं; ऎन–ऐसा (निश्चय कर); उऱुवार्–(वहीं) रहते हैं। ३०६

वेदज्ञ मुनि, अमर, भूदेवी और नगर के प्रजाजन सब यह विचार कर कि इन राजकुमारों के सान्निध्य से हमारे दुख और दुखों के कारणभूत कर्म कट जायेंगे; हम यहाँ से नहीं हटेंगे! निश्चिन्त रह गये। ३०६

ऐयनु मिळवलु मणिनिल महडन्, शॅय्दव मुडैमैह डॆरिदर नदियुम्
मैदवळ् पॊऴिल्हळुम् वावियु मरुवि, नॆय्हुळ लुऱुमिळै यॆन्निलै तिरिवार् 307

ऐयनुम्–प्रभु और; इळवलुम्–अनुज; अणि निल मकळ् तऩ्–सुन्दर भूदेवी की; चॆय् तवम् उटैमैकळ्–की हुई तपस्या का अस्तित्व; तॆरि तर–सब पर प्रकट करते हुए; नतियुम्–नदियों पर; मै तवळ् पॊऴिल्कळुम्–मेघ-संचरित उपवनों में; वावियुम्–तालावों में; मरुवि–मिले-जुले; नॆय् कुळल् उऱुम्–बुनने की ढरकी में पड़े; इऴै ऎन–सूत के समान; निलै–पृथ्वी पर; तिरिवार्–घूमते रहे। ३०७

प्रभु श्रीराम और उनके लघुभ्राता लक्ष्मण नदियों के तटों पर, मेघ-संचरित उपवनों में और तालाबों के पास, ढरकी के तागे के समान, साथ-साथ घूमते दिखाई देते थे। उस दृश्य से यह प्रमाणित और प्रकट होता था कि पृथ्वी देवी ने बहुत अधिक तपस्या की थी। ३०७

परदनु मिळवलु मॊरुनॊडि पहिरा, तिरदमु मिवुळियु मिवरिनु मऱैनूल्
उरैतरु पॊऴुदिनु मॊऴिहिल रॆनैयाळ्, वरदनु मिळवलु मॆनमरु विनरे 308

परतनुम् इळवलुम्–भरत और उनके लघु भाई (शत्रुघ्न); ऒरु नॊटि पकिरातु–एक क्षण भी, अलग न होकर; इरतमुम् इवुळियुम्–रथ और अश्व (पर);

इवरित्तुम्–सवारी करते समय भी; मऱै नूल् उरै तरु पॊऴुतिलुम्–वेद शास्त्रार्थ सीखते समय भी; ऒऴिकिलर्–अपृथक; ॲत्तै आळ् वरतनुम्–मेरे स्वामी वरद (प्रभु श्रीराम) और; इळवलुम्–लघु भ्राता; ॲन्न–समान; मरुविनर्–संयुक्त रहे। ३०८

उधर भरत और शत्रुघ्न भी इन्हीं भाइयों के समान सदा अपृथक (साथ-साथ) रहते थे। चाहे रथ या अश्व चालन का समय हो, या वेदशास्त्राध्ययन का; एक क्षण भी वियुक्त नही होते थे। ३०८

वीरनु मिळैञरुम् वॆऱिपॊऴिल् कळिऩ्वाय्
ईरमॊ डुरैदरु मुनिवर रिडैपोय्च्
चोर्पॊऴु दणिनहर् तुरुहुव रॆदिर्वार्
कार्वर वलर्पयिर् पॊरुवुवर् कळियाल् 309

वीरतुम्–वीर (श्रीराम) और; इळैञरुम्–उनके छोटे भाई; वॆऱि पॊऴिल् कळिऩ् वाय्–सुगन्धपूर्ण उपवनों में; ईरमॊटु उरै तरु–स्नेह के साथ ठहरनेवाले; मुनिवरर् इटै पोय्–मुनियों के पास जाकर; चोर् पॊऴुतु–(वहाँ रहकर) सूर्यास्त के समय; अणिनकर् तुरुकुवर्–सुन्दर नगर लौट आ जाते; ॲतिर्वार्–समक्ष मिलनेवाले; कळियाल्–आनन्द से; कार् वर–मेघ के आगमन से; अलर् पयिर्–पनपनेवाले पौधों की; पोरुवुवार्–समानता करते। ३०९

ये पराक्रमी श्रीराम और उनके भाई सवेरे उन दयापूर्ण ऋषियों के पास जाते जो सुगन्धपूर्ण उपवनों (आश्रमों) में रहते थे और उनके सत्संग का लाभ उठाकर सूर्यास्त के समय लौट आते थे। रास्ते में जो भी उनके समक्ष मिलते वे मेघों को देखकर प्रफुल्लित होनेवाले पौधों के समान (आनन्दित हो) जाते थे। ३०९

एऴैय रनैवरु मिवर्तड मुलैतोय्, केऴ्हिळर् मदुहयर् किळैहळु मिळैयार्
वाऴिय रॆन्ऩवर् मनऩुरु कडवुळ्, ताऴ्हुवर् कवुशलै तयरद ऩॆन्ऩवे 310

एऴैयर् अऩैवरुम्–स्त्रियाँ, सभी; इवर् तट मुलै तोय्–इनके पीन स्तनों के भोगी; केऴ् किळर्–खूब प्रवृद्ध; मतुकैयर् किळैकळुम्–बलशाली पुरुषों के समूह भी; कवुचलै तयरतऩ् ॲऩ–कौसल्या और दशरथ के समान; इळैयार् वाऴियर् ॲऩ–ये कुमार चिरजीव हों, ऐसा; अवर् मनऩ् उरु कटवुळ्–अपने इष्टदेवों से; ताऴ्कुवर्–नमस्कार कर (प्रार्थना करते)। ३१०

नगर की सभी स्त्रियाँ और उनके सुडौल स्तनों के भोगी पुरुष कौशिल्या और दशरथ के ही समान अपने इष्टदेवता से यह प्रार्थना करते कि ये राजकुमार चिरंजीव हों। ३१०

कडल्करु मुहिलॊऴिर् कमलम दलरा, वडवरै युडऩ्वरु शॆयलॆऩ मऱैयुम्
तडवुद लऱिवरु तनिमुद लवनुम्, पुडैवरु मिळवलु मॆन्ऩिहर् पुहल्वार् 311

मऱैयुम्–वेदों के लिए; तटवुतल् अऱिवु अरु–स्पर्श (प्रत्यक्ष) ज्ञान-अगम्य (अगोचर); तनि मुतल्वऩुम्–अकेले (अद्वितीय) नायक और; पुटै वरुम् इळवलुम्–

पार्श्व में आनेवाले छोटे भाई; कटल्–समुद्र; करुमुकिल्–काले मेघ; ऑळिर् कमलम् अतु–सुन्दर कमल; अलरा–खिले फूलों के साथ; वट वरै उटन् वरु चॅयल्–उत्तरी पर्वत मेरु के साथ आने का काम; ऍन–ऐसा; निकर् पुकल्वार्–समानता बतलाते। ३११

वेदों के लिये भी अग्राह्य श्रीराम और लक्ष्मण को साथ-साथ आते हुए देखनेवाले लोग उपमा ढूँढ़ते और कहते कि विकसित कमलों से भरकर नीला सागर और श्यामल मेघ उत्तर के (मेरु) पर्वत के साथ मिलकर आ रहे हैं। ३११

ऍदिर्वरु मवर्हळै यॅमैयुडै यिरैवन्, मुदिर्तरु करुणैयिन् मुहमल रॊळिर
ऍदुविनै यिडरिलै यिनिदुनु मनैयुम्, मदितरु कुमररुम् वलियर्कॊ लॅनवे 312

ऍमै उटै इरैवन्–(मुझे अपना किंकर रखनेवाले) मेरे नायक; ऍतिर् वरुम् अवर्कळै–सामने आनेवाले उनको; मुतिर् तरु करुणैयिन्–अत्यन्त करुणा के साथ; मुकम् मलर् ऑळिर–मुख-कमल छिटकाते हुए; ऍतु विनै–क्या सेवायोग्य काम है; इटर् इलै–कोई कष्ट तो नहीं; नुम् मनैयुम्–आपकी पत्नियाँ और; मति तरु कुमररुम्–बुद्धिमान पुत्र; इनितु वलियर् कॉल्–दृढ़-स्वस्थ रहते हैं न; ऍन–यह पूछने पर। ३१२

हमारे नाथ श्रीराम अपने समक्ष मिलनेवालों से, बड़ी ही कृपा के साथ प्रफुल्ल-वदन होकर पूछते कि क्या कोई सेवा है जो मैं कर सकूँ? कोई कष्ट तो नहीं है? आपकी पत्नी और होनहार (बुद्धिमान) पुत्र सुदृढ़ स्वस्थ हैं? तब; । ३१२

अ.·.दैय निनैयॅम दरशॅन वुडैयेम्, इ.·.दॊरु पॊरुळल वॅमदुयि रुडनेळ्
महिदल मुळ्दैयु मुरुहवि मलरोन्, उहुवह लळवॅन वुरैनति पुहल्वार् 313

ऐय–प्रभु; अ.·.तु–वह वैसा ही; निन्नै ऍमतु अरचु ऍन उटैयोम्–आपको हमने राजा के रूप में पाया है; इ.·.तु–यह (कष्ट रहित रहना); ऑरु पॉरुळ् अल–कोई बात नहीं; ऍमतु उयिरुटन्–हमारे प्राणों के साथ; एळ् मकितलम् मुळुतैयुम्–सप्तद्विपीय भूलोक को; इ मलरोन् उकु पकल् अळवु–इन कमलासन (ब्रह्मा) के नाश होते दिन तक; उरुक–शासित करते रहें; ऍन–ऐसा; नति उरै–अच्छा उत्तर; पुकल्वार–कहते। ३१३

वे समुचित उत्तर देते कि नाथ! वैसे ही है। आपको शासक के रूप में पाने का हमारा भाग्य रहा। फिर इसका (कष्टभागी होने का) कोई प्रश्न ही नहीं (उठता)! आप हमारे प्राणों और सप्तद्वीपीय इस महीतल पर ब्रह्मा के आयुकाल तक शासन करते रहे। ३१३

इप्परि शणिनह रुरैयुम् यावरुम्, मॅय्प्पहळ् पुनैदर विळैय वीररुम्
तप्पऱ् चडिमलर् तळुवि येत्तुड, मुप्परम् पॊरुळिनु मुदल्वन वैहुरुम् 314

मून्ऱु परम् पॊरुळिनम्–तीनों परम देवों में; मुतल्वन्–प्रथम; इ परिचु–

इस प्रकार; अणि नकर्–सुन्दर नगर में; उऱैयुम्–वास करनेवाले; यावरुम्–सभी; मॅय् पुकऴ्–सच्चा यश; पुनै तर–बखानते; इळैय वीररुम्–छोटे (भाई) वीर; अटि मलर्–चरण कमल; तऴुवि एत्तुउ–लगकर स्तुति करते; वैकु उरुम्–वास करते थे। ३१४

इस प्रकार, सुन्दर अयोध्या नगर के सब वासियों द्वारा यथार्थ-स्तुति के पात्र बने, और अपने प्रतापी अनुजों की अपनी चरण-कमल वन्दना स्वीकार करते हुए तीनों आदिदेवों के आदि, परब्रह्म (के अवतार) श्रीराम सुख से जीवनचर्या चला रहे थे। ३१४

6. कैयडैप् पडलम् (हस्त धरन पटल)

अरशर्तम् बॅरुमह न्नहिलम् यावैयुम्, विरशुरु तनिक्कुडै विळङ्ग वॅन्ऱिशेर्
मुरशॊलि कऱङ्गिड मुनिव रेत्तुऱक्, करैशॅय वरियदोर् कळिप्पिन् वैहुनाळ् 315

अरचर् तम् पॅरु मकन्–राजाधिराज; अकिलम् यावैयुम्–भूलोक सब में; विरचु उरु–व्याप्त; तनि कुटै–अकेला छत्र; विळङ्क–शोभायमान होते; वॅन्ऱि चेर्–विजयवाहक; मुरचु–नगाड़े के; ऑलि कऱङ्किट–स्वर के उठ फैलते; मुनिवर् एत्तु उऱ–मुनियों के प्रशंसा करते; करै चॅय अरियतु–अपार; ओर् कळिप्पिन्–अकथ आनन्द में; वैकुम् नाळ्–जब रहते थे तब। ३१५

राजाधिराज दशरथ समस्त विश्व को अपने सुयोग्य श्वेत-छत्र की छाया में सुरक्षित रखते हुए, विजयशील नगाड़ों के समुचित वादन के साथ, मुनियों द्वारा अपनी स्तुति सुनाते जाते हुए (साधुवाद के पात्र बनकर) अपार आनन्दमय स्थिति में रहते थे। तब एक दिन; । ३१५

❀ ननैवरु कऱ्पह नाट्टु नन्नहर्, वनैतॊऴिन् मदिमिहु मयऱ्कुञ् जिन्तैयाल्
निनैयवु मरियदु विशुम्बि नीण्डदोर्, पुनैमणि मण्डबम् बॊलिय वॅय्दिनान् 316

ननैवरु–कलियों से पूर्ण; कऱ्पकम् नाट्टु नल् नकर्–कल्पतरुओं से शोभायमान श्रेष्ठ नगर (अमरावती) के; वनै तॊऴिल् मति मिकु–वास्तु-विद्या-विदग्ध; मयऱ्कुम्–मय के लिये भी; चिन्तैयाल् निनैयवुम् अरियतु–अचिन्त्य (रीति से सुन्दर); विचुम्पिन्–आकाश से बढ़कर; नीण्टतु–ऊँचा; ओर् मणि पुनै मण्टपम्–एक रत्न-शोभित सभा भवन को; पॊलिय ऍय्तिनान्–सुशोभित करते हुए पधारे। ३१६

वे अपने सभा-भवन में उसको सुशोभित करते हुए आये। वह सभा-भवन आकाश से भी ऊँचा और रत्नों की सजावट से युक्त था। उसका निर्माण इतने कलाकौशल के साथ हुआ था कि स्वयं मय भी, जो नन्दनवन से युक्त अमरावती नगर के नगर, भवन आदि के निर्माण के कार्य में कुशल थे, अपने मन में इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। ३१६

※ तूयमॆल् लरियणैप् पॊलिन्दु तोन्ऱिनान्
शेयिरु विशुम्बिडैत् तिरियुम् जारणर्
नायह निवन्कॊलॆन् ऱयिर्त्तु नाट्टमोर्
आयिर मिल्लैयॆन् ऱैय नीङ्गिनार् 317

तूय मॆल् अरि अणै–पवित्र, कोमल, सिंहासन पर; पॊलिन्तु तोन्ऱिनान्–शोभित हुए; चेय् इरु–ऊँचे और विशाल, विचुम्पु इटै–आकाश में; तिरियुम् चारणर्–संचार करनेवाले देव-चारण (देवों के वर्गों में एक वर्ग के); इवन् नायकन् कॊल्–ये क्या हमारे अधिपति हैं; ऎन्ऱु–ऐसा; अयिर्त्तु–संशय करके; नाट्टम् ओर् आयिरम् इल्लै–आँखें, एक सहस्र नहीं है; ऎन्ऱु–यह देख; ऐयम् नीङ्कितार्–सन्देह-विमुक्त हुए। ३१७

राजा दशरथ पवित्र और कोमल (गद्देदार) सिंहासन पर सुशोभित हुए। तब आकाशचारी देव-चारणों को यह संशय होने लगा कि क्या ये हमारे स्वामी देवेन्द्र तो नहीं है? पर बाद देखा कि उनके सहस्र नयन नहीं हैं। तब उनका संदेह दूर हुआ। ३१७

※ मडङ्गल्पोन् मॊय्म्बिनान् मुन्नर् मन्नुयिर्
अडङ्गलु मुलहुम्वे ऱमैत्तुत् तेवरो
डिडङ्गॊणान् मुहत्तैयुम् पडैप्पॆ नीण्डॆनात्
तॊडङ्गिय तुन्नियुरु मुनिवन् ऱोन्ऱिनान् 318

मटङ्कल् पोल् मॊय्म्पित्तान्–सिंह सदृश बलिष्ठ; मुन्नर्–के समक्ष; मन् उयिर् अटङ्कलुम्–जीवराशियाँ सभी; उलकुम्–लोक; वेऱु अमैत्तु–अलग सृष्ट कर; इटम् कॊळ् नान्मुकत्तैयुम्–(उन्नत गौरव के) आश्रय चतुर्मुख को भी; पटैप्पॆन्–सृष्टि कर दूँगा; ईण्टु ऎना–अब, यह कहकर; तॊटङ्किय–जिन्होंने आरम्भ किया वे; तुन्नि उऱु मुनिवन्–क्रोधी मुनि (विश्वामित्र); तोन्ऱिनान्–आ प्रकट हुए। ३१८

सिंह-बली उनके सामने क्रोधी स्वभाव के विश्वामित्र आकर प्रकट हुए। इन्हीं विश्वामित्र ने पहले कभी सभी जीवराशियों को और उनसे भरे लोक को अलग से सृष्टि करके, 'देवों को भी और चतुर्मुख को भी अब सृष्टि कर दूँगा—' यह कहकर उसका उपक्रम भी किया था। ३१८

※ वन्दुमुनि यॆय्दुदलु मार्बिलणि यारम्
अन्दरत लत्तिरवि यञ्जवॊळि विञ्जक्
कन्दमल रिर्कडवु ळन्वरवु काणुम्
इन्दिरनॆ नक्कडित ळुन्दडिप णिन्दान् 319

मुनि वन्तु ऎय्तलुम्–मुनि के आ पहुँचते ही; मार्पिल् अणि आरम्–वक्ष पर पहने हुए हारों के; अन्तर तलत्तु इरवि अञ्च–गगन प्रदेश के रवि को डराते हुए (रवि के प्रकाश से बढ़कर); ऒळि विञ्च–प्रकाश छिटकाते; कन्तम् मलरिल् कटवुळ्तन्–सुवासपूर्ण (कमल) पुष्प पर उदित देव का; वरवु काणुम्–आगमन

देखकर; इन्तिरन् ॲन्न–इन्द्र जैसा; कटितु ॲऴुन्तु–सवेग उठकर; अटि पणिन्तान्–चरणों में नमस्कार किया। ३१९

विश्वामित्र के आते ही राजा कमलासन को देख इन्द्र जैसे तुरन्त उठे। उनके वक्षस्थल-भूषी हार सूर्य को भी डराते हुए (प्रकाश को मन्द करते हुए) हिलकर चमक उठे। वे विश्वामित्र के पैरों पर नत हुए। ३१९

❀ पणिन्दुमणि शॆऱ्‌ऱुबु कुयिऱ्‌ऱियविर् पैम्बॊन्
अणिन्ददवि शिट्‌टिनि दरुत्तियॊ डिरुत्ति
इणैन्दहम लच्चरण रुच्चनैशॆय् दिन्‌ऱे
तुणिन्ददॆन् विनैत्तॊड रॆन्नत्तॊऴुदु शॊल्लुम् 320

पणिन्तु–नमस्कार करके; मणि चॆऱ्‌ऱुपु कुयिऱ्‌ऱु–रत्नों को घने रूप से जड़कर; अविर् पैम्पॊन् अणिन्त–चोखे स्वर्ण (की कारीगरी) से युक्त तविचु इट्टु–आसन लगवाकर; इतितु अरुत्तियॊटु इरुत्ति–सुखपूर्वक, प्रेम के साथ आसीन कराकर; इणैन्त–जोड़े के; कमलम् चरण्–कमल चरणों की; अरुच्चनै–पूजा; चॆय्तु–करके; ॲन् विनै तॊटर्–मेरी कर्म परम्परा; इन्‌ऱे तुणिन्ततु–आज ही टूट गया; ॲन्न–ऐसा; तॊऴुतु–अंजलिबद्ध होकर; चॊल्लुम्–कहा। ३२०

नमस्कार करके, राजा ने खूब रत्नों से सज्जित एक स्वर्णमयी आसन लगाया और उस पर उनको सुख के साथ आसीन कराया। फिर उनके चरणद्वय में फूल-पूजा की। 'मेरा कर्म-बन्धन आज ही टूट गया' —यह कहते हुए अंजलिबद्ध हो आगे बोले। ३२०

❀ निलञ्जॆय्दव मॆन्‌ऱुणरि नन्‌ऱुनॆडि योयॆन्
नलञ्जॆय्विनै युण्डॆनिनु मन्‌ऱुनहर् नीयान्
वलञ्जॆय्दु वणङ्गवॊऴि वन्दविदु मुन्दॆन्
कुलञ्जॆय्दव मॆन्‌ऱिनिदु कूऱमुनि कूऱुम् 321

नॆटियोय्–महात्मन्; नी–आप; यान् वलम् चॆय्तु वणङ्क–मै परिक्रमा करके नमस्कार करूँ, ऐसा (यह सौभाग्य देते हुए); नकर्–इस नगर में; ॲऴिवन्त इतु–सुगम रूप से पधारे, यह; निलम् चॆय्–देश का किया; तवम् ॲन्‌ऱु–तप है, यह; उणरिन्–माने तो; अन्‌ऱु–ऐसा नहीं; ॲन् नलम् चॆय् विनै–मेरा हितकारी कृत्य; उण्टु ॲतिनुम्–है, तो भी; अन्‌ऱु–वह भी नहीं, (फिर); मुन्तु ॲन् कुलम्–प्राचीन मेरे कुल के; चॆय् तवम्–कृत तप हैं; ॲन्‌ऱु–ऐसा; इनितु कूऱ–मीठे ढंग से कहने पर; मुनि कूऱुम्–मुनि ने कहा। ३२१

महात्मन्! आप स्वयं, मेरे लिये आपकी परिक्रमा और प्रणमन सुलभ बनाते हुए अनायास पधारे है। इस भाग्य का हेतु, मेरे देश का किया तप है—यह कहूँ तो वह नहीं है। मेरा किया हितकारी पुण्य है? वह भी नहीं। पर मेरे प्राचीन कुल के पूर्वजों के किये सुकृत्यों का ही यह फल है! ये मधुर शिष्टता के वचन सुनकर मुनि ने यों कहा। ३२१

❀ ॲऩ्ऩऩैय मुनिवर्हळु मिमैयवरु मिडैयूरॊऩ् ऱुडैय राऩाल्
पऩ्ऩहमु नहुवॆळ्ळिप् पऩिवरैयुम् पाऱ्कडलुम् पदुम् पीडत्
तऩ्ऩहरुङ् गऱ्पहनाट् टणिनहरु मणिमाड वयोत्ति ॲऩ्ऩुम्
पॊऩ्ऩहरु मल्लादु पुहलुण्डो विहल्हडन्द पुलवु वेलोय् 322

इकल् कटन्त–शत्रु संहारक; पुलवु वेलोय्–मांस-लिप्त भालेवाले; ॲन् अऩैय मुऩिवर्कळुम्–मेरे समान मुनि और; इमैयवर्कळुम्–देव भी; इटैयूऱु–बाधा; ऑन्ऱु–कोई एक; उटैयर आऩाल्–पा जावें तो; पल्नकमुम् नकु–अनेक पर्वतों का उपहास करनेवाले; पनि वॆळ्ळि वरैयुम्–हिम-श्वेत (कैलाश) पर्वत; पाल् कटलुम्–क्षीरसागर; पतुमम् पीटत्तिन्–पद्मासन का; नकरुम्–नगर व; कऱ्पकम् नाटु अणि नकरुम्–कल्प-तरुओं से शोभायमान (अमरावती) नगर; मणि माटम् अयोत्ति–रत्न-जड़ित प्रासादोवाला; अयोत्ति ॲन्नुम् पॊन् नकरुम्–अयोध्या नाम का स्वर्ण-नगर; अल्लातु–के सिवाए; पुकल् उण्टो–शरण पाने का स्थान (दूसरा) है क्या ? । ३२२

शत्रु-सहारक मांस-वासित भालावाले ! मेरे समान ऋषियों पर और अमरों पर कोई सकट आवे तो, उनका दूसरा आश्रय कहाँ, सिवाय पर्वतों में श्रेष्ठ कैलाश, क्षीरसागर, ब्रह्मा का नगर, नन्दनवनवाली अमरावती और रत्नसज्जित सौधोंवाली अयोध्या—इनके ? । ३२२

❀ इऩ्ऱळिर्क्कर् पहनरुन्दे निडैतुळिक्कु निऴलिरुक्कै यिऴन्दु पोन्दु
निऩ्ऱळिक्कुन् दऩिक्कुडैयि निऴलॊदुङ्गिक् कुऱैयिरन्दु निऱ्प नोक्किक्
कुऩ्ऱळिक्कुङ् गुलमणित्तोट् चम्परऩैक् कुलत्तोडुन् दॊलैत्तु नीकॊण्
डऩ्ऱळित्त वरशऩ्ऱो पुरन्दरनिऩ् ऱाळ्हिऩ्ऱ दरश वॆऩ्ऱाऩ् 323

अरच–चक्रवर्ती; पुरन्तरन्–इन्द्र; इन् तळिर् कऱ्पकम्–मधुर पल्लवों से युक्त कल्पक तरुओं का; नऱु तेन्–सुगन्धपूर्ण शहद; इटै तुळिक्कुम्–जिसके ऊपर यत्र-तत्र टपकता है उस; निऴल्–छाया में; इरुक्कै इऴन्तु–वास खोकर; पोन्तु–आकर; निऩ्ऱु अळिक्कुम्–एकरस रहकर लोक-पालन करनेवाले; तनि कुटै निऴल्–अकेले आपके छत्र की छाया में; ऑतुङ्कि–त्राण पाकर; कुऱै इरन्तु निऱ्प–अपनी प्रार्थना करते हुए खड़े रहने पर; नी आप; नोक्कि–देखकर; कुन्ऱु अळिक्कुम्–पर्वत-सम; कुलम् मणि तोळ्–श्रेष्ठ रत्नाभरणालंकृत कन्धोंवाले; चम्परऩै–शंबरासुर को; कुलत्तोटुम् तॊलैत्तु–कुल के साथ नाश कर; कॊण्टु–इन्द्रलोक लौटा ले; अन्ऱु अळित्त–उस दिन (इन्द्र को) जो दिया; अरचु अन्ऱो–वह राज्य ही न; इन्ऱु–आज; आळ्किन्ऱतु–(इन्द्र) शासन कर रहा है; ॲन्ऱान्–कहा । ३२३

चक्रवर्ती ! पुरन्दर को जब पल्लवित कलपक तरुओं की शीतल छाया को, जिस पर उन तरुओं के फूलों का शहद टपकता था, छोड़कर, आपके पास आकर आपकी विश्वरक्षक छत्र-छाया में आश्रय लेना पड़ा और उन्होंने आपसे मिन्नत की, तब आपने ही पर्वत-सम और रत्नमंडित भुजा-वाले शंबरासुर को उसके कुल सहित मारकर इन्द्र का राज्य जीता और पुनः देवेन्द्र को दिया; वही राज तो आज इन्द्र पाल (भोग) रहे है । ३२३

❀ उरैशॅय्द वळविलवऩ् मुहनोक्कि युळ्ळत्ति ऩॊरुव रालुम्
करैशॅय्य वरियदॊरु पेरुवहैक् कडल्पॅरुहक् करङ्गळ् कूप्पि
अरशॅय्दि यिरुन्दबय नॅय्दिऩेऩ्मऱ् ऱिनिच्चॅय्व दरुळु हॅऩ्ऱु
मुरशॅय्दु कडैत्तलैयाऩ् मुऩ्मॊऴियप् पिऩ्मॊऴियु मुऩिव ऩाङ्गे 324

उरै चॅय्त अळविल्–यह कथन करते ही; मुरचु ॲय्तु–तीन नगाड़े जहाँ बजते हैं; कटै तलैयाऩ्–वैसे नगरद्वार वाले; उळ्ळत्तिल्–अपने मन में; ऒरुवरालुम्–किसी के द्वारा भी; करै चॅय्य–ठीक वर्णन करने; अरियतु–अनर्ह; ऒरु पेर् उवकै–एक अतिशय आनन्द के; कटल् पॅरुक–सागर के उमड़ते; अवऩ् मुकम् नोक्कि–उनका मुख देखकर; करङ्कळ् कूप्पि–हाथ जोड़कर; अरचु ॲय्ति इरुन्त पयऩ्–राजपदस्थ हो रहने का फल; ॲय्तिऩेऩ्–(आज) प्राप्त किया; इऩि–अब; चॅय्वतु अरुळुक–(जो) करना (चाहिये) उसकी आज्ञा कीजिये; ॲऩ्ऱु मुऩ् मॊऴिय–ऐसा उनके पहले कहने पर; आङ्कु–तब; मुऩिवऩ् पिऩ् मॊऴियुम्–पीछे (उत्तर में) मुनि कहने लगे। ३२४

उनके यह कहते ही, दशरथ के, जिनके गढ़ के द्वार पर (दान, मंगल और विजय के सूचक) तीनों प्रकारों के ढोल बजते थे, मन में अपार आनन्द का सागर उमड़ आया। उन्होंने महर्षि से अंजलिबद्ध होकर निवेदन किया कि मुझे अपने शासन-भाग्य का सच्चा फल आज ही प्राप्त हुआ। अब मैं आपको क्या सेवा करूँ? आज्ञा कीजिये। जब उन्होंने यह उत्तरापेक्षी कथन किया तो ऋषि उत्तर में कहने लगे। ३२४

❀ तरुवऩत्तुळ् याऩियऱ्ऱुन् दहैवेळ्विक् किडैयूऱात् तवञ्जॅय् वोर्हळ्
वॅरुवरच्चॅऩ् ऱडैहाम वॅहुळियॅऩ निरुदरिडै विलक्का वण्णम्
शॅरुमुहत्तुक् कात्तियॅऩ निऩ्शिऱुवर् नाल्वरिनुङ् गरिय शॅम्मल्
ऒरुवऩैत्तन् दिडुदियॅऩ वुयिरिरक्कुङ् गॊडुङ्गूऱ्ऱि नुळैयच् चॊऩ्ऩाऩ् 325

तरु–(साधना का फल) देनेवाले; वऩत्तुळ्–(सिद्ध) वन में; याऩ् इयऱ्ऱुम्–जो मैं करनेवाला हूँ; तकै वेळ्विक्कु–श्रेष्ठ यज्ञ की; इटैयूऱा (क)–बाधा बनकर; तवम् चॅय्वोर् कळ् वॆरुवर–तप करनेवालों को दहलाते हुए; चॅऩ्ऱु अटै–जाकर, अभिभूत करनेवाले; कामम् वॆकुळि ॲऩ–काम और क्रोध के समान; निरुतर्–राक्षस; इटै विलक्का वण्णम्–बीच में आकर न रोकें, इस प्रकार; चॅरु मुकत्तु कात्ति ॲऩ–समरांगण में सामने रहकर बचाओ, यह आज्ञा देकर; निऩ् चिऱुवर् नाल्वरिऩुम्–आपके पुत्र, चार में; करिय चॅम्मल् ऒरुवऩै–श्यामल प्रभु उन अद्वितीय को; तन्तिटुति ॲऩ–मेरे साथ भेजिये यह; उयिर् इरक्कुम्–जान की याचना करनेवाले; कॊटुम् कूऱ्ऱिऩ्–क्रूर यम के समान; उळैय–मन को उद्वेलित करते हुए; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। ३२५

सिद्धवन में मैं एक यज्ञ करने जा रहा हूँ। तपस्वियों को भयभीत करनेवाले काम और क्रोध के समान राक्षस आकर उसमें बाधा डालेंगे। उनसे युद्ध करके यज्ञ की रक्षा करने की आज्ञा देकर, आप अपने चार

पुत्रों में श्यामरंग के प्रभु श्रीराम को मेरे साथ भेजिये। महर्षि ने यह बात कही तो ऐसा लगा कि मानों स्वयं यमराज दशरथ से प्राणों की मांग कर रहे हों। राजा का दिल दहल उठा। (सिद्ध वन को कवि ने 'तरु' वन कहा है। तरु का अर्थ तप, यज्ञ आदि का फल देनेवाला है और वृक्ष भी)। ३२५

❀ ऍण्णिला वरुन्दवत्तो नियम्बियशॉल् मरुमत्ति नॅरिवेल् पाय्न्द
पुण्णिलाम् पॅरुम्पुळैयिऱ् कननुळैन्दा लॅनच्चॅवियिऱ् पुहुद लोडुम्
उण्णिला वियनुयरम् पिडित्तुन्द वारुयिर्निन् ऱूश लाडक्
कण्णिलान् पॅऱ्ऱिऴन्दा नॅनवुळन्दान् कडुन्दुयरङ् गाल वेलान् 326

ऍण् इला—जिनकी गणना नहीं; अरु तवत्तोन्—कठिन तपस्वी; इयम्पिय चॉल्—कहे वचन; मरुमत्तिन्—मर्मस्थान (वक्षस्थल) में; ऍरि वेल् पाय्न्त पुण्णिल्—फेंके भाले के द्वारा लगे घाव के कारण; आम्—बने; पॅरु पुळैयिल्—बड़े गड्ढे में; कनल् नुळैन्ताल् ऍन—जलती हुई लकड़ी घुसी हो जैसे; चॅवियिल्—कानों में; पुकुतलोटुम्—घुसते ही; कालन् वेलान्—मृत्यु (सम) भालावाले; उळ् निलाविय—अन्तर्व्याप्त; तुयरम्—दुख के; पिटित्तु उन्त—पकड़कर बाहर ढकेलने से; आर् उयिर्—प्यारे प्राणो के; निन्ऱु ऊचल् आट—आते-जाते (झूलते) रहते; कण् इलान्—दृष्टि से हीन; पॅऱ्ऱु—प्राप्त कर; इऴन्तान् ऍन—फिर खो दी, जैसे; कटु तुयरम्—कठोर दुख (से); उळन्तान्—पीड़ित हुआ। ३२६

अनन्त और कठिन तपस्वी महर्षि की यह बात राजा के कानों में ऐसी घुसी मानों मर्मस्थान में लगे भाले के बने गहरे घाव में जलती लकड़ी घुसी हो। उनके प्राण मानों उस दुख के द्वारा बाहर निकाले जाने लगे। सुध खोते, फिर पाते ऐसी स्थिति में बहुत दुख उठाने लगे। उनकी स्थिति उस जन्मांध की सी हुई जिसने एक बार दृष्टि पाकर फिर खो दी हो। ३२६

(मूल में 'ऍण्णिला' है जिसका विग्रह 'ऍण् इला' करके अर्थ किया गया है। पर ऍण् इला के स्थान पर 'ऍण् निलावु' भी किया जा सकता सकता है जिसका अर्थ होगा— 'स्मरण जिन में रहा'। तब ऍण् निलावु काल वेलान् होगा। यम सम भालावाले जिनमे इस बात का स्मरण रहा। 'पुत्रवियोग से आपकी मृत्यु होगी'—यह ऋषिशाप था। इसकी कहानी अयोध्याकाण्ड में आती है। वह शाप राजा को स्मरण रहा। इसलिए राजा दशरथ को यह डर हो गया कि तनय राम अलग हो जायँगे तो मेरा मरण निश्चित है। अतः उनका दुख अपार बढ़ गया।)

❀ तॉडैयूऱ्ऱिऱ् ऱेन्ऱुळिक्कु नऱुन्दारा नीरुवण्णन् ड्डयर नीङ्गिप्
पडैयूऱ्ऱ मिलन्शिऱिय निवन्पॅरियॉय पणियिदुवेल् पन्निनीर्क् कङ्गै

पुडैयूऱ्ऱुञ् जडैयानु नान्मुहनुस् बुरन्दरनुम् बुहुन्दु शॅय्युम्
इडैयूऱ्ऱुक् किडैयूऱा यान्काप्पॅन् पॅरुवेळ्विक् कॅळुह वॅन्ऱान् 327

तॉटैयूऱ्ऱिन्—(माला में) पिरोये जाने के कारण; तेन् तुळिक्कुम्—शहद बाहर करनेवाली; नऱु तारान्–सुवासित माला से अलंकृत; ऑरु वण्णम्—एक प्रकार से; तुयरम् नीङ्कि—दुख से छूटकर; पॅरियोय्—महात्मा; पणि इतुवेल्—काम यही है तो; इवन् चिऱियन्—यह छोटा है; पटै ऊऱ्ऱम् इलन्—अस्त्र-शस्त्र का अभ्यस्त नहीं; पनि नीर् कङ्कै—शीतल जलवाली गंगा जी को; पुटै ऊऱ्ऱुम्—एक पार्श्व में बहानेवाले; चटैयानुम्—जटाधारी व; नान्मुकनुम्—ब्रह्मा व; पुरन्तरनुम्—इन्द्र भी; पुकुन्तु—आकर; पॅरु वेळ्विक्कु—बड़े यज्ञ की; चय्युम् इटैयूऱ्ऱुक्कुम्—जो करेंगे उस बाधा की भी; इटैयूऱु आक–बाधा करते हुए; यान् काप्पॅन्—मैं रक्षा करूँगा; ऍळुक—उठिये; ऍन्ऱान्—कहा। ३२७

मधु-युक्त, सुगन्धित पुष्प-माला के धारी राजा एक तरह से अपने दुख को दबाकर बोले। महात्मन्! यही सेवा है तो, देखिये, राम छोटा है। उसको अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास भी उतना अधिक नहीं है। मैं आऊँगा। चाहे शिवजी ही क्यों न आयें; चाहे ब्रह्माजी या इन्द्र; कोई भी आकर बाधा डालेंगे तो मैं उस बाधा की बाधा बनूँगा और आपके यज्ञ की रक्षा करूँगा। आप निश्चिन्त होकर प्रस्तुत हो जायँ। ३२७

ऍन्ऱनॅन् ऱलुमुनिवो डॅळुन्दनन्मण् पडैत्तमुनि यिरुदिक् कालम्
अन्ऱॅनवा नॅनविमैयो रचिर्त्तनर्मेल् वॅयिल्हरन्द दङ्गु मिङ्गुम्
निन्ऱनवुन् दिरिन्दनमे निवन्दकॉळुङ् गडैप्पुरुव नॅऱ्ऱि मुऱ्ऱच्
चॅन्ऱनवन् दननहैयुञ् जिवन्दनकण् णिरुण्डनपोय्त् तिशैह ळॅल्लाम् 328

ऍन्ऱनन्–ऐसा (दशरथ ने) कहा; ऍन्ऱलुम्–ज्योंही कहा त्योंही; मण् पटैत्त मुनि–पृथ्वी की सृष्टि करना जिन्होंने आरम्भ किया वे; मुनिवोटु–कोप के साथ; ऍळुन्तनन्–उठे; मेल् निवन्त–ऊपर उठी; कॉळु कटै पुरुवम्–घने कोनों की भौंहें; नॅऱ्ऱि मुऱ्ऱ–ललाट भर में; चॅन्ऱन–बिछ गयीं; नकैयुम् वन्तन–(अट्ट-) हास भी उठे; कण् चिवन्तन–आँखें लाल हुईं; तिचैकळ् ऍल्लाम्–दिशायें सारी; पोय् इरुण्टन–बहुत अँधेरी हो गयीं; मेल् वॅयिल् करन्ततु–आकाश का सूर्य भी छिप गया; अङ्कुम् इङ्कुम्–इधर-उधर की; निन्ऱनवुम्–स्थावर वस्तुएँ भी; तिरिन्तन–चंचल हुईं; इमैयोर्–देवता लोग; इऱुतिकालम्–संसार का अन्तिम काल; अन्ऱु आम्–आज ही हो जायगा; ऍन–ऐसा; अयिर्त्तनर्–संशयित हुए। ३२८

ज्योंही राजा के मुख से यह वचन निकला त्योंही महर्षि, जो कभी अलग लोकसृष्टि ही करने निकले थे, क्रोध के साथ उठे। उनकी घनी भौंहें तनकर ऊपर उठी और ललाट ही उनके पीछे छिप गया। वे अट्टहास कर उठे; और उनकी आँखें लाल हुई। उनकी क्रोधाग्नि से उठा धुआँ सारी दिशाओं में व्याप्त हुआ और सब जगह अन्धेरा छा गया। सूर्य भी छिप गया। स्थिर वस्तुएँ भी चंचल होकर घूमने लगी। यह देखकर देवता लोग डर गये कि क्या युगांत आ गया है। ३२८

करुत्त मामुनि करुत्तै युन्निनी, पॅारुत्ति यॅन्ऱवर् पुहन्ऱु निन्महर्
कुऱ्ऱ लाहला वुरुदि यॅय्दुनाळ्, मरुत्ति योवॅना वशिट्टन् कूऱुवान् 329

वचिट्टन्–वसिष्ठ; करुत्त मा मुनि–कोपाक्रांत हुए महामुनि का; करुत्तै उन्नि–(आंतरिक) भाव सोचकर; अवर्–उनको; नी पॅारुत्ति–आप क्षमा करें; ॲन्ऱु पुकन्ऱु–यह कहकर; निन् मकर्कु–आपके सुपुत्र के लिए; उऱ्ऱल् आक अल्ला–(सुगम रूप से) जो प्राप्य हो नहीं सकता; उऱुति ॲय्तुम् नाळ्–हित के प्राप्त होने का दिन; मरुत्तियो–इनकार करेंगे; ॲना–यह कहकर; कूऱुवान्–कहने लगे। ३२९

तब वसिष्ठ जी ने क्रुद्ध विश्वामित्र जी के मन का भाव ताड़ लिया। उन्होंने महर्षि से, थोड़ा सब्र कीजिये—कहकर राजा से कहा कि महाराज! आपके पुत्र को दुष्प्राप्य हित मिलनेवाला समय आ गया है। उसको क्या आप रोक देंगे? । ३२९

❀ पॅय्यु मारियाऱ् पॅरुहु वॅळ्ळम्बोय्, मॅाय्कॅाळ् वेलैवाय् मुट्टु माऱुपोल्
ऐय निन्महर् कळविल् विज्जैवन्, दॅय्दु कालमिन् ऱॅदिर्न्द दॅन्नवे 330

ऐय–राजन्; पॅय्युम् मारियाल्–बरसनेवाली वर्षा से; पॅरुकु वॅळ्ळम्–बहनेवाली धारें; पोय्–जाकर; मॅाय्कॅाळ् वेलै वाय्–सशक्त समुद्र में; मुट्टुम् आऱु पोल्–तेज बहकर पहुँच जाती जैसे; निन् मकर्कु–आपके सुपुत्र को; अळवु इल् विज्जै–अगणित विधाओं के; वन्तु ॲय्तु कालम्–आकर मिलने का समय; इन्ऱु–आज; ॲतिर्न्तत्तु–आ साक्षात हुआ है; ॲन्न–यह कहने पर। ३३०

देखिये; ऐसी शुभ वेला आ गयी है जब वर्षा से उत्पन्न छोटी-छोटी धाराएँ मिलकर बड़ी नदी के रूप मे सागर पहुँच जाती है—ऐसा आपके पुत्र को अनन्त विद्याएँ आकर प्राप्त होंगी। ३३०

कुरुविन् वाशहङ् गॅाण्डु कॅाऱ्ऱवन्, तिरुविन् केळ्वनैक् कॅाणर्मिन् ऱॅन्ऱॅन
वरुह वॅन्ऱन नॅन्न लोडुम्वन्, दरुहु शार्न्दन नऱिवि नुम्बरान् 331

कॅाऱ्ऱवन्–विजयी; कुरुविन् वाचकम् कॅाण्टु–गुरु का कथन मानकर; चॅन्ऱु–जाकर; तिरुविन् केळ्वनै–लक्ष्मीपति को; कॅाणर्मिन् ॲन–लिवा लाओ, कहने पर; वरुक–आइये; ॲन्ऱनन्–कहा है; ॲन्नलोटुम्–कहने पर; अऱिविन् उम्परान्–ज्ञान के परे रहनेवाले; वन्तु–उनके साथ आकर; अरुकु चार्न्तनन्–समीप में पहुँचे। ३३१

अपने गुरु का उपदेश मानकर विजयी महाराज ने सेवक को आज्ञा दी कि जाओ लक्ष्मीपति को लिवा लाओ। सेवक ने जाकर श्रीराम जी से कहा कि आप पधारें। तब श्रीराम, जो ज्ञानातीत है, तुरन्त अपने पिता के पास पहुँच गये। (लक्ष्मण भी साथ आये यह कहने की आवश्यकता नही।)। ३३१

वन्द नम्बियैत् तम्बि तन्नॊडुम्, मुन्दै नाल्मऱै मुनिक्कुक् काट्टिनल्
तन्दै नीतनित् तायु नीयिवर्क्, कॆन्दै तन्दनॆ नियैन्द शॆय्हॆन्ऱान् 332

तम्पि तन्नॊटुम्–अपने छोटे भाई के साथ; वन्त नम्पियै–आये नायक (श्रीराम) को; मुन्नै नाल्मऱै–प्राचीन चारों वेदो के ज्ञाता; मुनिक्कु काट्टि–महर्षि को दिखाकर; ॲन्तै–तात; इवर्क्कु–इन बालकों को; नल् तन्तै नी–अच्छे पिता भी आप है; तनि तायुम् नी–अप्रतिम माता आप है; तन्तनॆन्–(आपके पास) दिया है; इचैन्त चॆय्क–जो उचित हो वह करने की कृपा कीजिये; ॲन्ऱान्–कहा। ३३२

महाराज ने भाई सहित श्रीराम को विश्वामित्र के हाथ में सौंप दिया और कहा कि महर्षे ! आप ही इनके पिता हैं; और अनुपम माता भी आप ही है। आपके पास इन्हें सौंप दिया है। जो उचित हो वह कीजियेगा। ३३२

कॊडुत्त मैन्दरैक् कॊण्डु चिन्दैमुन्
दॆडुत्त शीऱ्ऱम्विट् टिनिदु वाऴ्त्ति मेल्
अडुत्त वॆऴ्विपोय् मुडित्तु नामॆन्ना
नडत्तल् मेयिन्ना नवैक्क णीङ्गिनान् 333

चिन्तै मुनतु ॲटुत्त चीऱ्ऱम् विट्टु–मन में पहले उठे क्रोध को छोड़कर; कॊटुत्त मैन्तरै–सौंपे गये कुमारों को; कॊण्टु–स्वीकार कर; नवै कण्–(क्रोध-संभवनीय) अपराध से बचे; इनितु वाऴ्त्ति–सुख से आशीर्वाद देकर; मेल्–उसके बाद; नाम् पोय्–हम जाकर; अटुत्त वेऴ्वि मुटित्तुम्–निर्णीत यज्ञ सम्पन्न करें; ॲन्ना–कहकर; नटत्तल् मेयिनान्–चलने लगे। ३३३

विश्वामित्र ने अपने सिपुर्द किये गये पुत्रों को अपने पास कर लिया। उनका क्रोध दूर हुआ और अच्छा हुआ; नहीं तो उनके क्रोध के कारण न जाने क्या-क्या अनर्थ हो गये होते। उन्होंने दशरथ को आशीर्वाद दिया और श्रीराम से कहा कि चलिये हम अपना यज्ञ करने चलें। फिर वे चले गये। ३३३

❀ वॆन्ऱि वाऴ्पुडै विशित्तु मॆय्म्मैपोल्, ॲन्ऱुन् दॆय्वुऱात् तूणि यात्तिरु
कुन्ऱम् पोन्ऱुयर् तोळिऱ् कॊऱ्ऱविल्, ऒन्ऱु ताङ्गिना नुलहन् दाङ्गिनान् 334

उलकम् ताङ्किनान्–विश्वम्भर (विष्णु के अवतार); वॆन्ऱि–विजयशील; वाऴ्–तलवार; पुटै विचित्तु–पार्श्व में बाँधकर; इरु कुन्ऱम् पोन्ऱु–दो पर्वतों के समान; उयर् तोळिल्–उन्नत स्कन्धों में; मॆय्म्मै पोल्–सत्य-सम; तेय्वुऱा–अक्षय; तूणि यात्तु–तूणीर लगाकर; कॊऱ्ऱम् विल् ऒन्ऱु–विजयदायी चाप धारण करनेवाले बने। ३३४

विश्वंभर के अवतार श्रीराम वीरोचित वेष में थे। विजयिनी तलवार पार्श्व में बंधी थी। दोनों पर्वत-सम उन्नत कंधों पर अक्षय तूणीर कसे थे। बायें हाथ में विजय-कोदण्ड था। ३३४

❀ अन्न तम्बियुन् दानु मैयनाग्, मन्न निन्नुयिर् वळिक्कोण् डालॅनच्
चॉन्न मादवर् रॉडर्न्तु शायैपोल्, पॉन्निन् मानहर्प् पुरिशै नीङ्गिनार् 335

अन्न तम्पियुम्–वैसे ही (सज्जित) भाई; तानुम्–और आप; ऐयन् आम् मन्नन्–पिता (दशरथ) महाराज के; इन् उयिर्–प्यारे प्राण; वळि कॉण्टाल् अॅन–मानों मार्ग तय कर रहे हों; चॉन्न मातवन्–(यज्ञ करने की बात) कह कर आनेवाले महान तपस्वी का; चायै पोल् तॉटर्न्तु–छाया के समान पीछा करते हुए; मा नकर्–बड़े नगर के; पॉन्निन् पुरिचै–स्वर्ण के प्राचीर (के द्वार) को; नीङ्किनार्–पार किया। ३३५

लक्ष्मण भी वैसे ही लैस थे। महर्षि ने कहा— चलो हम अब यज्ञ करने के लिए चलें। दोनों ने जैसे दशरथ के प्राण ही जा रहे हों ऐसा महर्षि का, उनकी छाया की तरह अनुगमन करते हुए नगर के स्वर्णमय प्राचीर को पार किया। ३३५

❀ वरङ्गण् माशऱत् तवञ्जॅय् दोर्हळ्वाळ्
पुरङ्ग णेरिला नहर नीङ्गिप्पोय्
अरङ्गि नाडुवार् शिलम्बि नन्ननिन्
ऱिरङ्गु वार्पुनर् चरयु वॅय्दिनार् 336

वरङ्कळ् माचु अऱ–वर दोषहीन (श्रेष्ठ) हों, इतनी; तवम् चॅय्तोर्कळ्–तपस्या करनेवाले; वाळ्–(जहाँ) निवास करते हैं; पुरङ्कळ्–(अमरावती आदि) नगर; नेर् इला–(जिसकी) समता नहीं कर सकते; नकरम्–(उस) नगर (अयोध्या) को; नीङ्कि पोय्–छोड़कर जाकर; अरङ्किन्–नृत्य मंच पर; आटुवार्–नाचनेवालियों की; चिलम्पिन्–पैंजनी के समान; अन्नम् निन्ऱु इरङ्कु–हंस खड़े होकर (जहाँ) बोलते हैं; वार्पुनल्–प्रवहमान जलवाली; चरयु अॅय्तिनार्–सरयू नदी (तट) पर पहुँचे। ३३६

अमरावती आदि नगर है जिनमें जाकर वास करने का भाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है जो कठिन तपस्या करके श्रेष्ठ वर प्राप्त कर चुके हों। वे नगर भी अयोध्या की बराबरी नहीं कर सकते। ऐसे अयोध्या नगर को छोड़कर वे तीनों सरयू नदी के, जिसमें जल खूब बहता था और जिस पर हंस रहकर नृत्य-मंच पर नाचनेवाली नर्तकियों के नूपुर-की-सी ध्वनि करते हुए बोल रहे थे, तट पर आये। ३३६

करुम्बु काल्पॉरक् कमुहिन् वार्न्दतेन्, वरम्बु मीदिडु मरुद वेलिवाय्
अरुम्बु कॉङ्गैया रम्मॅ लोदिपोल्, शुरुम्बु शूळ्वदोर् शोलै वैहिनार् 337

करुम्पु–ईखों के; काल् पॉर–हवा के कारण से टकराने से; कमुकिन् वार्न्त तेन्–सुपारी के पेड़ो पर (छत्तों) से बहनेवाला शहद; वरम्पु मीतिटु–मेड़ों को पार कर (जिस प्रदेश में) बहता है; मरुत वेलि वाय्–(उस) खेतों और बागों वाले भू भाग में; अरुम्पु–कली जैसे; कॉङ्कैयार्–स्तनोंवालियों के; अम् मॅल् ओति पोल्–

सुन्दर कोमल केश के समान; चुरुम्पु चूऴ्वतु–जहाँ भ्रमर मँडराते हैं; ओर् चोलै–एक उपवन में; वैकिऩार्–ठहरे। ३३७

वे खेतोंवाले भूभाग के एक उपवन मे आये। वह भूभाग ऐसा था जहाँ कमुक-तरुओं पर बने मधु के छत्तों से, तरुओं के, पवन में हिलाये जाकर, उकसाने से शहद बड़ी धारों में बहने लगता और वह प्रवाह खेतों की मेडों के ऊपर से भी बहता। उस उपवन में भ्रमर ऐसे मंडराते रहते थे मानों वे कमल-कलियों के समान स्तनवाली तरुणियों के मनोरम और कोमल केश पर मंडराते हों। (मूल पद्य का यह भी अर्थ निकल सकता है कि वे भ्रमर स्त्रियों के काले घुँघराले केश के समान थे।) वे रात मे वहीं ठहरे। ३३७

ताऴु मामऴै तऴुवु नॅऱ्ऱियाल्, शूऴि यानैपोऱ् ऱोऩ्ऱु मालुवरैप्
पाऴि मामुहट् टुच्चिप् पच्चैमा, एऴु मेऱ्प्पो याऱु मेऱिऩार् 338

ताऴुम् मा मऴै–नीचे उतरकर आनेवाले बड़े-बड़े मेघों से; तऴुवुम् नॅऱ्ऱियाल्–आवृत्त चोटियों के कारण; चूऴि यानै पोल्–मुख-पट्ट पहने हुए गजों के समान; तोऩ्ऱुम्–दिखनेवाले; माल् वरै–गरिमायुक्त (उदय-) गिरि की; पाऴि मा मुकटु उच्चि–दृढ़, ऊँची, चोटियों पर; पच्चै मा एऴुम् एऱ–हरे रंग के सातों अश्वों के चढ़ते; पोय्–जाकर; आऱुम् एऱिनार्–सरयू (पार करने के लिए नाव) पर चढ़े। ३३८

सवेरा हुआ। उदय-पर्वत अपने ऊपर घने फैले मेघों के साथ, मुखपट्ट के साथ दिखनेवाले हाथी के समान, दृश्य उपस्थित करता था। सूरज के रथ के (गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप, बृहती, पंक्ति दृष्टुप, जगती इत्यादि) छन्दरूपी सात हरे रंग के अश्व उस उदयाचल पर चढ़े। तब ये नाव पर चढ़कर नदी पार कर इस पार आये। ३३८

तेवु मादवऱ् ऱॊऴुदु देवर्तम्, नावु ळावुदि नयक्कुम् वेळ्विवाय्त्
तावु मापुहै तऴुवु शोलैकण्, डियाव दीदॆऩ्ऱा ऩॆवर्क्कु मेनिऩ्ऱाऩ् 339

ऎवर्क्कुम् मेल् निऩ्ऱाऩ्–परात्पर (श्रीराम); तेवर्–देवता; तम् ना उळ्–अपनी जिह्वाओं में; आवुति नयक्कुम्–आहुति का स्वाद भोगनेवाले; वेळ्वि वाय्–यज्ञ से; तावुम्–उठनेवाला; मा पुकै–घना (बहुत) धुआँ; तऴुवु चोलै–पूरित उपवन; कण्टु–देखकर; तेवु मा तवऩ्–दिव्य उत्तम तपस्वी को; तॊऴुतु–विनय करके; ईतु यावतु–यह कौन सा है; ऎऩ्ऱाऩ्–ऐसा पूछा। ३३९

वहाँ परात्पर भगवान (के अवतार) श्रीराम ने एक आश्रम को देखा। उसमें देवताओं को तृप्त करते हुए आहुतियाँ देनेवाले यज्ञ हो रहे थे। उनमें से अधिक धुआँ उठ रहा था। श्रीराम ने महान तपस्वी विश्वामित्र से, नमस्कार करके, पूछा कि यह कौन सा स्थान है ?। ३३९

7. ताडहै वदैप्पडलम् (ताडका-वध पटल)

तिङ्गण्मे वुञ्जडैत् तेवन्मेन् मारवेळ्
इङ्गुनिन् ऱॅय्यवु मॅरिदरु नुदल्विऴिप्
पॉङ्गुको पञ्जुडप् पूळैवी यन्नदन्
अङ्गम्वॅन् दन्ऱुतॉट् टनङ्गने यायिनान् 340

मार वेळ्–मार (मन्मथ) देव (के); इङ्कु निन्ऱु–यहाँ से; तिङ्कळ् मेवुम्–चन्द्राधार; चटै तेवन् मेल्–जटा-धारक (शिव) देव पर; ऍय्यवुम्–(पुष्प-बाण) चलाने पर; ऍरि तरु नुतल् विऴि–आग उगलनेवाले भाल-नेत्र से; पॉङ्कु–निकलनेवाली; कोपम् चुट–कोपाग्नि के जलाने से; पूळै वी अन्न–सेमर के फूलों के समान; तन् अङ्कम् वॅन्तु–अपने अंगों को (भस्म कराकर); अन्ऱु तॉट्टु–उसी दिन से; अनङ्कने आयिनान्–अनंग ही बन गया। ३४०

महर्षि ने उत्तर में कहा कि एकबार मारदेव ने चन्द्र-जटा-धारी शिवजी पर पुष्प-सायक चलाया। शिवजी कुपित हुए और उनके भालनेत्र से अग्नि-ज्वाला उठी। उसमें मन्मथ का शरीर सेमर के फूल के समान जल गया। तब से वह अनंग (अंग जिसके न हों) हो गया। ३४०

वारणत् तुरिवैयान् मदनन्नैच् चिनवुनाळ्
ईरमऱ् ऱङ्गमिङ् गुहुदला लिवणॅलाम्
आरणत् तुरैयुळा यङ्गना डिदुवुमक्
कारणक् कुऱियुडैक् कामनाच् चिरममे 341

आरणम् उऱैयुळाय्–हे वेदावास (वेद है आवास जिनका —परब्रह्म); वारणम् उरिवैयान्—गज-चर्म वस्त्रवेष्टित (श्रीशिव); मतननै चिनवुम् नाळ्–मदन को कोप से जलाया, उस दिन; अङ्कम्–अंग; ईरम् अऱ्ऱु–सूखकर; इङ्कु उकुतलाल्–यहाँ गिरने से; इवण् ऍलाम्–इधर सर्वत्र; अङ्क नाटु–अंगदेश (बना); इतुवुम्–इधर पास यह भी; अ कारणम् कुऱि उटैय–उसी कारण पर बना नाम वाला; कामन् आच्चिरममे–कामाश्रम ही है। ३४१

"वेदाश्रय भगवान! गजचर्माम्बर शिवजी ने जिस दिन मन्मथ पर कोप दिखाया उस दिन उसका शरीर सूख कर (चूर होकर) इसी प्रदेश में इधर-उधर गिरा। इसलिये यह अंग देश बना। उसी काम-दहन के संकेत मे यह कामाश्रम कहलाता है। (दारुकावन के मुनियों ने एक दुष्ट गज को पैदाकर, शिवजी को मारने भेजा था। शिवजी ने उसे मारा और उसकी खाल उधेड़ कर ओढ़ लिया। इसलिये वे गजचर्मांबरधारी कहलाते हैं।)। ३४१

पऱ्ऱवा वेरॉडुम् वशैयऱ् पिऱविपोय्, मुऱ्ऱवा लुणर्वुमेन् मुडुहिन्ना रऱिवुशॅन्
ऱुऱ्ऱवा नवनिरुन् दियोगुशॅय् दनन्नॅनिल्, शॉऱ्ऱवा मळवदो मऱ्ऱिदन् ऱ्य्मैये 342

पऱ्ऱु अवा–(बाहरी) आकर्षण और (भीतरी) कामना; वेरॉटुम् पचै अऱ–आमूल नाश कराने; पिऱवि पोय् मुऱ्ऱ–जन्म (चक्र) अन्त करानेवाले; वाल् उणर्वु–तत्वज्ञान में; मेल् मुटुकिनार्–बढ़े हुओं की; अऱिवु–भावना; चॅन्ऱु उऱ्ऱ वानवन्–जिनके पास जा पहुँचती है वे देव; इरुन्तु योकु चॅय्तनन्–यहाँ रहकर योग-साधना की; ऍनिल्–तो; इतन् तूय्मै–इसकी पवित्रता; चॉऱ्ऱ आम् अळवतो–कहने योग्य परिमाण का है क्या। ३४२

स्वयं शिवजी ने यहाँ रहकर योग साधना की थी। शिव देव तो ऐसे ईश्वर हैं जिनकी प्राप्ति उन्हीं लोगों को सुलभ होती है जो कामना और आकर्षण त्याग कर, मुक्ति की इच्छा के साथ तत्व-ज्ञान में उच्च स्थिति को प्राप्त कर चुके हैं। फिर इस आश्रम की पवित्रता का क्या पूछना ? । ३४२

ऍन्ऱवन् दणनियम् बलुम्वियन् दव्वयिन्
शॅन्ऱुवन् दॅदिर्कॉळुन् जॅन्नॅऱिच चॅल्वरो
डन्ऱुऱैन् दलर्कदिर्प् परुदिमण् डिलमहन्
कुन्ऱिन्वन् दिवरवोर् शुडुशुरङ् गुरुहिनार् 343

ऍन्ऱु–ऐसा; अ अन्तणन्–उन ऋषि (के); इयम्पलुम्–कहते ही; वियन्तु–विस्मित हुए; अव्वयिन् चॅन्ऱु–उस ओर जाकर; उवन्तु ऍतिर् कॉळुम्–चाह के साथ स्वागत करने आये हुए; चॅम्मै नॅऱि चॅल्वरोटु–सन्मार्ग-धनियों के साथ; अन्ऱु उऱैन्तु–उस दिन रहकर; अलर् कतिर् परुति मण्टिलम्–फैलती किरणोंवाले सूर्य-बिम्ब के; अकल् कुन्ऱिन् वन्तु इवर–विशाल (उदय-) गिरि पर आकर चढ़ते समय; ओर् चुटु चरम् कुरुकिनार्–एक गरम मरु प्रदेश में पहुँचे। ३४३

यह सुनकर दोनों भाई विस्मित हुए। वे तीनों वहीं गये। वहाँ के तपस्वी ऋषि-मुनियों ने उनका प्रेम व उत्साह के साथ स्वागत किया। रात उन्होंने वही काटी। दूसरे दिन सवेरे सूर्य के उदयाचल पर आते ही वे चले और एक अति-तप्त वालुका-प्रदेश मे आये। उसका वर्णन सुनिये। ३४३

परुदिवा नवनिलम् पशैयऱप् परुहुवान्
विरुदुमेऱ् कॉण्डुलाम् वेनिले यल्लदोर्
इरुदुवे ऱिन्मैया लॅरिशुडर्क् कडवुळुम्
करुदिन्वे मुळ्ळमुङ् गाणिन्वे नयन्ममुम् 344

परुति वानवन्–सूर्य देव; निलम् पचै अऱ–भूमि पर नमी कुछ न हो ऐसा; परुकुवान्–पीने (सोखने) के लिये; विरुतु मेऱ्कॉण्टु–विजय-चिह्न प्रदर्शित करते हुए; उलाम्–(जिस पर्व में) घूमता है; वेनिले अल्लतु–उस ग्रीष्म के सिवा; वेऱु ओर् इरुतु इन्मैयाल्–कोई अन्य ऋतु के न होने से; ऍरि चुटर् कटवुळुम्–जलानेवाली ज्वाला के (अग्नि-) देव भी; करुतिन्–स्मरण करे; उळ्ळमुम् वेम्–(उसका) मन भी जल जाय; काणिन्–देखे तो; नयन्ममुम् नेत्र भी; वेम्–झुलस जायँ। ३४४

वहाँ उस प्रदेश में ग्रीष्म के अलावा कोई ऋतु ही नहीं होती थी। ग्रीष्म सूर्य की विजय ध्वजा है जो इस बात का निशान है कि उसकी गर्मी से भूमि बिलकुल सूख जाती है। इसलिये वहाँ की स्थिति कुछ ऐसी है कि स्वयं अग्निदेव भी सोचे तो उसका मन जल जाय। आँख उठाकर देखे तो नेत्र जल जायं। ३४४

पडियिऩ्मेल् वॆम्मैयैप् पहरिऩुम् पहरुना
मुडियवे मुडियमू डिरुळुम्वाऩ् मुहडुम्वेम्
विडियुमेल् वॆयिलुम्वे मळैयुम्वे मिऩ्ऩिनो
डिडियुम्वे मॆऩ्ऩिल्वे ऱियावैवे वादवे 345

पटियिऩ् मेल्–भूमि पर की; वॆम्मैयै–गर्मी को; पकरिनुम्–कहा जाय तो भी; पकरुम् ना–बोलनेवाली जिह्वा; मुटिय वेम्–पूरी जल जायगी; मुटिय मूटु इरुळुम्–पूर्ण रूप से (लोक भर को) ढकनेवाला अन्धकार भी; वान् मुकटुम्–आकाश की चोटी भी; वेम्—जल-भुन जायँ; विटियुमेल्–दिन हो जाय तो; वॆयिलुम् वेम्–दिनकर भी जल जाय; मळैयुम् वेम्–मेघ भी जल जायँ; मिन्निनोटु–विद्युत के साथ; इटियुम् वेम्–वज्र भी जल जाय; ऍन्निल्–वैसी स्थिति रही तो; वेवात–जो न जले; वेरु यावै–कौन अन्य (होंगे)। ३४५

उस प्रदेश की बात कोई कहने लगे तो जीभ जल जाय! रात में अण्ड भर में छानेवाला अंधकार और आकाश की चोटी भी जल जाय; सूर्योदय हुआ तो सूर्य जल जाय। मेघ, बिजली की चमक, वज्र-सब जल जायँगे, तो कौन सी वस्तु होगी जो न जले ?। ३४५

विञ्जुवाऩ् मळैयिऩ्मे लम्बुम्वे लुम्बडच्
चॆञ्जॆवे शॆरुमुहत् तऩ्ऱियॆ तिऱऩिला
वञ्जर्ती विनैहळाऩ् मानमा मणियिळऩ्
दॆञ्जिनार् नॆञ्जुपो लॆऩ्ऱुमा ऱादरो 346

विञ्चु वान्–अधिक मेघों से; मळैयिन्–गिरनेवाली धारों के समान; अम्पुम् वेलुम्–शरों और वर्छियों के; मेल् पट–शरीर पर लगने से; चॆरु मुकत्तु–युद्धस्थल पर; चॆञ्चॆवे–सीधे; अन्ऱि–(लड़े) बगैर; तिऱऩ् इला–असमर्थ; वञ्चर्–कपटियों के; ती विनैकळाल्–धूर्त कार्यों से; मानम् आम्–मान-रूपी; अणि–शृंगार (धन); इऴन्तु–खोकर; ऍञ्चिनार्–(जो जीवित) बच जाते है; नॆञ्चु पोल्–मन की तरह; ऍन्ऱुम्–सदा; आऱातु—ताप-हीन नही होता (कभी ठण्डा नहीं होता)। ३४६

यह मरुस्थल उन वीरों के चित्त के समान विदीर्ण और संतप्त है जिन पर युद्ध मे प्रत्यक्ष रूप से, वर्षा के समान भाले व शर नहीं चलाये गये पर जिनको नीच, असमर्थ, धूर्तो के कपट के कारण मान खोना पड़ा और फिर भी जीवित रहना पड़ गया। ३४६

पेय्पिळन् दोंक्कनिन् रुलर्पॅरुङ् गळ्ळियिन्
तायपिळन् दुक्कहा रकिल्हळुन् दळैयिला
वेय्पिळन् दुक्कवॅण् डरळमुम् विडवरा
वाय्पिळन् दुक्कशॅम् मणियुमे वन्मॅलाम् 347

वनम् ॲलाम्–वन भर में; पेय् पिळन्तु ऑक्क–पिशाचों के चिरे शरीरों के समान; निन्ऱ–(चिर कर) खड़े होकर; उलर्–सूखनेवाले; पॅरु कळ्ळियिन्–बड़े सेंहुड के; ताय्–तने; पिळन्तु–फटे है, इसलिए; उक्क–छितरे; कार् अकिल् कळुम्–काले अगरु की लकड़ियाँ; तळै इला–पत्तों से रहित; वेय्–बाँसों के; पिळन्तु–फटने से; उक्क–छितरे; वॅण् तरळमुम्–सफ़ेद मोती; विटम् अरा–विषैले सर्पो के; वाय् पिळन्तु–मुखों के (फटने से) खुलने से; उक्क–बाहर उगले; चॅम्मै मणियुमे–लाल नग (माणिक्य) ही (थे)। ३४७

वहाँ सेंहुड़ पिशाचों के चिरे शरीरों के समान सूखे खड़े है। उनके तनों के फटने से अगरु के टुकड़े बिखरे पड़े है। बाँस सूख गये हैं और उनसे वंश-मुक्तायें निकलकर छितरी पड़ी हैं। विषैले सर्पो ने नाग-रत्न उगले है। वे छितरे पड़े है। ३४७

पारुमो डादुनी डादॅनुम् बालदे, शूरुमो डादुकू डादरो शूरियन्
तेरुमो डादुमा माहमी देऱिनेर्, कारुमो डादुनीळ् कालुमो डादरो 348

पारुम् ओटातु–भूमि (के जीव) भी नहीं जा सकते; नीटातु ॲन्नुम्–रह नहीं सकते इस; पालते–कारण से; चूरुम् ओटातु कूटातु–(मरुदेश की) कालिकादेवी भी नहीं भागे, यह नहीं हो सकता; चूरियन् तेरुम्–सूर्य का रथ भी; मा माकम् मीतु–विशाल आकाश के उच्च भाग पर; एऱिन्–चढ़े तो भी; नेर् ओटातु–सीधे ऊपर नहीं दौड़ सकता; कारुम्–मेघ भी; ओटातु–(सीधे ऊपर) नहीं दौड़ (चल) सकते; नीळ् कालुम्–संचारशील हवा भी; ओटातु–नहीं चल सकती। ३४८

वहाँ संसार की वस्तुएँ जायं तो जल जायं। उस भूभाग की अधिष्ठात्री देवी काली को भी वहाँ से गये वगैर निस्तार नही। सूर्य का रथ आकाश पर चढ़कर उसके ठीक ऊपर नहीं चल सकता; मेघ उनके ऊपर से जा नहीं पाते; सचरणशील पवन भी वहाँ नहीं चल सकता। ३४८

कण्किळित् तुमिळ्विडक् कनलरा वरशुहाल्
विण्किळित् तॉळिरुमिन् नन्नैयपन् मणिवॅयिल्
मण्किळित् तिडवॅळुन् जुडर्कगन्मण् महळुडर्
पुण्किळित् तिडवॅळुङ् गुरुदिये पोलुमे 349

कण् किळित्तु–(दर्शक की) आँखों को निस्तेज करनेवाला; उमिळ् विटम् कनल्–उगली विषरूपी अग्नि; अरा अरचु–नागों के राजा (नायक); काल्–जो उगले; विण् किळित्तु–आकाश चीरते हुए; ऑळिरुम् मिन्–चमकनेवाली विजली; अन्नैय–समान; पल मणि–अनेक (नाग-) रत्नों से; वॅयिल् मण् किळित्तिट–धूप के

भूमि को चीर देने से; अँळुम् चुटर्कळ्-(उन दरारों द्वारा) बाहर निकलनेवाली किरणें; मण् मकळ्-भूदेवी के; उटल् पुण्-शरीर के घावों के; किळितृतिट-(घावों के) खुलने से; अँळुम्-बाहर निकलनेवाले; कुरुतिये पोलुम्-रक्त के समान ही है। (ए)। ३४९

तेज धूप से भूमि में गहरी और विशाल दरारें पड़ गयी हैं और भूमि के गर्भ में रहनेवाले विषैले सर्पों के उगले रत्नों से उन दरारों द्वारा प्रकाश छूट रहा है। उसको देखकर ऐसा लगता है कि भूमि के शरीर पर गहरे घाव पड़ गये है और उनसे रक्त वह रहा है। ३४९

पुळुङ्गुवॅम् वशियॊडुम् पुरळुम् पेररा
विळुङ्गवन् दॅळुन्दॅदिर् विरित्त वायिन्वाय्
मुळङ्गुतिण् करिपुहु मुडुहि मीमिशै
वळङ्गुवॅङ् गदिर्शुड मरैवु तेडिये 350

मुळङ्कु तिण् करि-चिंघाड़नेवाला, ताकतवर हाथी; मीमिचै-आकाश से; वळङ्कु वॅम् कतिर्-आनेवाली संतापक धूप (के); चुट-जलाने से; मरैवु तेटि-साया खोजकर; पुळुङ्कु वॅम् पचियॊटु-कचोटनेवाली भयंकर भूख के साथ; पुरळुम्-लोटनेवाले; पेर् अरा-बड़े साँप के; विळुङ्क-निगलने के लिए; वन्तु-आकर; अँळुन्तु-सिर उठाकर; अँतिर् विरित्त-सामने खुले; वायिन् वाय्-मुख के अन्दर; मुटुकि पुकुम्-सवेग घुस जाता है। ३५०

वहाँ हाथी कड़ी धूप की वजह से चिंघाड़ता हुआ भागता है। वह कहीं जाकर छिप जाने को, छाया पाने को लालायित है। तब वह देखता है कि अदम्य भुभुक्षा से तड़पनेवाले एक सर्प ने, किसी भी वस्तु को निगलने के इरादे से अपना मुख खोल रखा है। वह उसी के अन्दर बेतहाशा घुस जाता है। ३५०

ऐहवॅङ् गन्नलर शिरुन्द काट्टिडैक्, काहमुङ् गरिहळुङ् गरिन्दु शाम्बिन
माहवॅङ् गदिरॅनुम् वडवैत् तीच्चुड, मेहमुङ् गरिन्दिडै विळुन्द पोलुमे 351

एकम् वॅम् कनल्-अद्वितीय संतापी अग्निदेव; अरचु इरुन्त-(जहाँ) राज करते थे; काट्टिटै-(उस बालुकामय) जंगल में; करिन्तु चाम्पिन-झुलसे (काले हो) पड़े रहे; काकमुम् करिकळुम्-कौए और हाथी; माकम् वॅम् कतिर् अँतुम्-आकाश (-स्थित) सूर्य-रूपी; वटवै ती चुट-वड़वाग्नि के जलाने से; मेकमुम्-मेघ भी; करिन्तु इटै विळुन्त पोलुम्-काले होकर उस भूमि पर गिरे (पड़े) से हैं। ३५१

उस जंगल में (जल-शून्य रेगिस्तान में), जिस पर अत्युष्ण अग्निदेव का एकछत्र राज था, कौए और हाथी झुलस कर गिरे थे। वे, छोटे बड़े मेघों के समान लगते थे, जो आकाश के अत्यन्त गरम सूर्य-रूपी वड़वाग्नि के जलाने से झुलसकर यत्र-तत्र गिरे पड़े हों। ३५१

कानहत् तियङ्गिय कळुदिन् ऱेर्क्कुलम्
तानहङ् गरिदलिऱ् ऱलैक्कॊण् डोडिप्पोय्
मेन्निमिर्न् दॆऴुन्दिडिन् विशुम्बुम् वेमॆन्ना
वानवर्क् किरङ्गिनीर् वळैत्त दॊत्तदे 352

कानकत्तु इयङ्किय–(उस) वन में संचरणशील रहे; कऴुतिन् तेर् कुलम्–पिशाच-रथ-समूह; तान् अकम् करितलिन्–उसके मध्य प्रदेश के झुलसने से; मेल् निमिर्न्तु–ऊपर मुख कर; ऎऴुन्तिटिन्–उठे तो; विचुम्पुम्–आकाश भी; वेम् ऎन्ना–जल जायगा, इसलिए; वानवर्क्कु इरङ्कि–देवताओं के प्रति सहानुभूति करके; नीर्–वरुणदेवता; ओटि पोय्–भाग जाकर; तलै कॊण्टु–उसको व्याप्त कर; वळैत्तु ऒत्ततु–घेर लिया जा रहा। ३५२

उस जंगल में मरीचिकायें दिखायी देती है जो चंचल भी दिखती है। (मरीचिकाओं को तमिऴ में भूत-रथ कहते है।) उनको देखने पर ऐसा लगता है कि जल के अधिपति वरुण देव ने, इस डर से कि यह गर्मी जंगल को राख बनाकर ऊपर उठेगी तो देवलोक भी जल जायगा; और देवताओं पर दया करके उस जंगल पर छाकर गर्मी को रोकते हुए जंगल को घेर लिया हो। ३५२

एय्न्दवक् कन्नलिडै यॆऴुन्द कानऱ्ऱेर्
काय्न्दवक् कडुवनङ् गाक्कुम् वेनिलिन्
वेन्दनुक् करशुवीऱ् ऱिरुक्कच् चॆय्ददोर्
पाय्न्दपॊऱ् कालुडैप् पळिक्कुप् पीडमे 353

एय्न्त–(सदा) लगी रही; अ कन्नल् इटै–उस अग्नि में; ऎऴुन्त–उत्पन्न; कानल् तेर्–मरीचिका; काय्न्त अ कट्टु वनम् काक्कुम्–तप्त उस भयंकर (मरु) वन का पालन करनेवाले; वेनिलिन् वेन्तनुक्कु–ग्रीष्म के राजा को; अरचु वीऱ्ऱिरुक्क–(उसके) राज-सभा में विराजने के लिए; चॆय्ततु–निर्मित; पाय्न्त पॊन्काल् उटै–ढले स्वर्ण से रचे पैरोंवाले; ओर् पळिङ्कु पीटमे–एक स्फटिक आसन ही है। ३५३

उन मृग-मरीचिकाओं को देखने पर, भ्रम में जल-विस्तार और प्रत्यक्ष किरणों की राशियाँ दिखायी देती है। दोनों मिलकर यह भ्रम पैदा करते है कि ढले स्वर्ण के पादोंवाले स्फटिक-सिंहासन डलवाये गये हों। कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि ये सिंहासन उस जंगल का शासन करनेवाले ग्रीष्म-राज के दरबार में उनके लिये डाले गये सिंहासन है। ३५३

❀ तावरु मिरुविनै शॆऱ्ऱुत् तळ्ळरु, मूवहैप् पहैयरण् कडन्दु मुत्तियिल्
पोवदु पुरिबवर् मनमुम् पॊन्विलैप्, पावैयर् मनमुमबोऱ् पशैयुमऱ्ऱदे 354

ता वरुम्–दुखदायी; इरुविनै–दो (पाप व पुण्य) कर्म; चॆऱ्ऱु–नष्ट करके; तळ्ळ अरु–दुर्निवार; मूवकै–त्रिविध (काम, क्रोध, मोह); पकै–शत्रुरूपी; अरण्

कटनुतु–प्राचीर लाँघकर; मुत्तिविल् पोवतु चुरिपवर्–मुक्ति-प्राप्ति के मार्ग में अग्रसर; मत्तमुम्–(ज्ञानियों का) मन; पोंत् विलै पार्वयर्–(और) स्वर्ण-दाम लेनेवाली (वेश्या-) स्त्रियों के; मत्तमुम् पोल्–मन की भी तरह; पचैयुम् अऱ्ऱतु–नमी (आर्द्रता) से हीन था। ३५४

वह जंगल आर्द्रता से निपट शून्य था। उसकी शुष्कता की तुलना उन ज्ञानियों के, जो विषम पाप-पुण्य का कर्म काटकर, (काम क्रोध, मोह रूपी) तीनों प्रकार के अन्तः शत्रुरूपी प्राचीरों को लाँघकर मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हों, मन से ही हो सकती है; या उन वेश्याओं के, जो स्वर्ण (दाम) लेकर अपना सुख देती हैं, मन से। ३५४

पॉरिपरऱ् पडर्निलम् पॉडिनुदु कीऴुऱ
विरिदलिऱ् पॅरुवऴि विळङ्गित् तोनुऱलाल्
अरिमणिप् पणत्तरा वरशर् नाट्टिनुम्
ऍरिकदिर्क् फिनदुपुक् कियङ्ग लायदे 355

पॉरि परल्–भुननेवाले कंकड़; पटर् निलम्–बिखरे (जहाँ थे वह) भूमि; पॉटिनुतु–चूर होकर; कीऴ् उऱ–नीचे (पाताल) तक; विरितलिन्–फटी रहने से; ऍरि कतिर्क्कु–जलानेवाली (सूर्य) किरणों के लिए; अरि मणि पणत्तु अराअरचर्–लाल माणिक्य-युक्त फनोंवाले नागराज के; नाट्टिनुम्–देश में भी; इनितु पुक्कु–सुख से घुसकर; इयङ्कल् आयतु–संचार करना हो सका। ३५५

भुने कंकड़ों से भरे उस जंगल पर पड़नेवाली सूर्य किरणें अब नागराज के फनों के माणिक्य से प्रकाशित पाताल में भी निर्विघ्न पहुँच सकी क्योंकि उसमें बड़ी-बड़ी और गहरी दरारें पड़ी हुई थीं जो पाताल तक गयीं थी। ३५५

अरिन्देऴ कॉडुञ्जुर मिनैय दॅय्दलुम्
अरुन्दव निवर्पॅरि दळवि लाऱ्ऱलॅप्
पॉरुन्दिन रायिनुम् पूविन् मॅल्लियर्
वरुन्दुवर् शिऱिदॅन मनत्ति नोक्किनान् 356

इनैयतु–ऐसे; ऍरिन्तु ऍऴु–जल उठनेवाले; कॉटु चुरम्–भयंकर मरु प्रदेश में; ऍय्तलुम्–पहुँचते ही; अरु तवन्–अतुल्य तपस्वी; इवर्–ये; अळविल् आऱ्ऱलै–अपार शक्ति को; पॅरितु पॉरुन्तिनर्–बहुत रखते हैं; आयिनुम्–तो भी; पूविन् मॅल्लियर्–फूल की तरह कोमल हैं; चिऱितु वरुन्तुवर्–थोड़ा दुखेंगे; ऍन–ऐसा; मनत्तिन् नोक्किनान्–चित्त में देखा (सोचा)। ३५६

ऐसे भयंकर रूप से तपनेवाले जंगल में जब तीनों आ पहुँचे तब महर्षि ने सोचा कि ये कुँवर बड़े शक्तिमान हैं सही। तो भी सुकुमार हैं; अतः इनको किंचित आयास होगा। ३५६

नोक्किन नवर्मुह नोक्क नोक्कुडैक्, कोक्कुम ररुमडि कुरुह नान्मुहन्
आक्किन विञ्जैह ळिरण्डु मव्वयिन्, ऊक्किन नवैयव रुळ्ळत् तुळ्ळिनार् 357

नोक्किनन्–सोचकर; अवर् मुकम् नोक्क–उनके मुख देखने पर; नोक्कुउटै(य)–इंगितज्ञ; को कुमररुम्–राजकुमार भी; अटि कुरुक–चरणों के पास आते (नमस्कार करते); अव् वयिन्–तब; नान्मुकन्–चतुर्मुख से; आक्किन–की गयी; विञ्चैकळ् इरण्टुम्–विद्याओं को, दोनों; ऊक्किनन्–सिखायीं; अवै–उनको; अवर्–उन (कुमारों) ने; उळ्ळत्तु उन्निनार्–मन में मनन (स्मरण) कर लिया। ३५७

इस विचार के साथ मुनि ने उनकी ओर दृष्टि फेरी। राजकुमार ताड़ गये और तुरन्त उनके चरणों के समीप आये। महर्षि ने चतुर्मुख-विरचित दो विद्याओं (बला, अतिबला) का उपदेश किया। श्रीराम और लक्ष्मण ने उनका मनन किया। ३५७

उळ्ळिय कालैयि लूऴित् तीयिनै, ऍळ्ळुरु कॉळुङ्गन लॅञ्जुम् वॅञ्जुरम्
तॅळ्ळुतण् पुनलिडैच् चेर लॊत्तत्तु, वळ्ळलु मुनिवनै वणङ्गिच् चॊल्लुवान् 358

उळ्ळिय कालैयिल्–मनन करते ही; ऊऴि तीयितै–युगांतकालीन अग्नि को; ऍळ्ळुरु–उपहास करनेवाले; कॊळु कनल्–अत्यधिक अनल से; अॅञ्चुम्–युक्त; वॅम् चुरम्–भीषण मरु प्रदेश (में जाना); तॅळ्ळु तण् पुनल्–स्वच्छ शीतल जल; इटै–मध्य; चेरल् ऑत्तत्तु–चलना जैसा बन गया; वळ्ळलुम्–कृपालु भी; मुनिवनै वणङ्कि–मुनि का नमस्कार करके; चॊल्लुवान्–बोलने लगे। ३५८

उनके मनन करते ही प्रलयाग्नि से बढ़कर भयंकर आग से तप्त उस जंगल मे चलना स्वस्थ शीतल जल मे चलने के समान हो गया। तब उदार प्रभु श्रीराम ने मुनि का नमस्कार कर पूछा। ३५८

शुऴिपडु गङ्गैयन् दोङ्गल् मोलियान्, विऴिपड वॅन्ददो वेरु तानुण्डो
पऴिपडर् मन्नवन् परित्त नाट्टिनै, दऴिवदॆन् कारण मरिञ कूरॆन्रान् 359

अरिञ–ज्ञानी; ईतु–यह स्थान; चुऴि पटुम कङ्कै–भँवरों सहित गंगा और; अम् तोङ्कळ–सुन्दर मालाओं के; मेलियान्–जटाधारी (की); विऴि पट–दृष्टि लगने पर; वॅन्ततो–जला (क्या); वेरु तान् उण्टो–अन्य भी है; पऴि पटर् मन्नन्–कुयशपूर्ण (अत्याचारी) राजा (के); परित्त नाट्टिन्–पालित देश के समान; अऴिवतु–उजड़ना; अॅन कारणम्–क्या कारण है; कूरुक–बताइयेगा; अॅन्रान्–कहा। ३५९

ज्ञानवृद्ध! यह प्रदेश क्यों ऐसा है? कुयश आततायी राजा से पालित देश के समान उजड़ा पड़ा है। क्या यह आवर्त्त-भरी गंगा और सुन्दर मालाओं के धारण करनेवाले जटाधारी शिवजी के भाल-नेत्र (की अग्नि) के लगने से ऐसा जल गया? या दूसरा कोई कारण है। ३५९

ऎन्ऱलु मिरामनै नोक्कि यिन्नुयिर्
कॊन्ऱुळल् वाऴ्क्कैयळ् कूऱ्ऱिन् ऱोऱ्ऱत्तळ्
अन्ऱियु मैयिरु नूऱु मैयत्मा
ऒन्ऱिय वलियिना ळुऱुदि केळॆन्ना 360

ऎन्ऱलुम्–ऐसा कहते ही; इरामनै नोक्कि–श्रीराम को देखकर; इन् उयिर्-कॊन्ऱु–प्रिय जीवों को मारकर; उळल् वाऴ्क्कैयळ्–फिरनेवाली जीविकावाली; कूऱ्ऱिन् तोऱ्ऱत्तळ्–यम के समान आकारवाली; अन्ऱियुम्–और भी; ऐ इरु नूऱु–पाँच, दो, सौ (सहस्र); मैयल् मा–मत्त गजों (की); ऒन्ऱिय–मिली; वलियिनाळ्–शक्तिवाली; उऱुति केळ्–चरित्र सुनिये; ऎन्ना–ऐसा। ३६०

उनके ऐसा पूछते ही, महर्षि ने राम से कहा कि सुनिये, एक स्त्री है जिसकी जीविका अच्छे अनेक जीवों को मारते फिरना है; जिसका यमदेव का-सा (भयंकर) रूप है; और जिसका सहस्र मद-मत्त-गजों के सम्मिलित बल से तुल्य बल है। उसका वृत्तांत सुनिये। ३६०

इयक्कर्तङ् गुलत्तुळा नुलह मॆङ्गणुम्
वियक्कुऱ मॊय्म्बिना नॆरियिन् वॆम्मैयान्
मयक्किलशऱ् चरॆन्नुम् वलत्ति नानरुळ्
तुयक्किलन् शुकेतुवॆन् ऱुळनोर् तूय्मैयान् 361

इयक्कर् तम्–यक्ष के; कुलत्तु उळान्–कुल में उदित; उलकम् ऎङ्कणुम्–संसार भर को; वियक्कुऱम् मॊय्म्पिनान्–विस्मय में डालनेवाली शक्ति से युक्त; ऎरियिन् वॆम्मैयान्–अग्नि-सम भयंकर; मयक्कु इल्–अभ्रांत; चर्चरन् ऎन्नुम्–चर्चर नाम के; वलत्तिनान्–प्रतापी; अरुळ्–जनाया; तुयक्कु इलन्–(अकंपन) स्थिर; चुकेतु ऎन्ऱु–सुकेतु नाम का; ओर् तूय्मैयान्–एक पवित्र; उळन्–रहा। ३६१

सुकेतु नाम का एक यक्ष था जो अथक वीर था और पवित्र स्वभाववाला था। और जो यक्षकुल जात, विस्मयकारी बली, अग्नि के समान संतापी, अभ्रांत चर्चर (झर्झ ?) का पुत्र था। ३६१

अन्नवन् महविला दयरुञ् जिन्दैयान्, मन्नॆडुन् दामरै मलरिन् वैहुरुम्
नन्नॆडु मुदल्वनै वळुत्ति नऱ्ऱवम्, पन्नॆडुम् बहलॆलाम् बयिन्ऱ पान्मैयान् 362

अन्नवन्–वह (सुकेतु); मक इलातु–पुत्र के बिना; अयरुम् चिन्तैयान्–आकुलित चित्तवाला; मन् नॆटु तामरै–स्थायी गौरव-युक्त कमल; मलरिन् वैकुउरुम्–पुष्प पर रहनेवाले; नल् नॆटु मुतल्वनै–दीर्घ यशस्वी आदिपुरुष को; वळुत्ति–आराधना करके; पल् नॆटु पकल् ऎलाम्–बहुत अनेक दिनों; नल् तवम्–श्रेष्ठ तप; पयिन्ऱ–करने का; पान्मैयान्–गुणवान। ३६२

सुकेतु के संतान नहीं हुई। अतः उसने बहुत काल तक चतुर्मुख की पूजा करते हुए तपस्या की। ३६२

मुन्दिन्न तरुमरैक् किळवन् मुऱ्ऱुनिन्, चिन्दनै यॆन्नॆनच् चिरुव रिन्मैयाल्
नॊन्दनॆ नरुळ्हॆन्न नुणङ्गु केळ्वियाय्, मैन्दरह ळिलैयॊरु महळुण् डामॆन्ऱान् 363

अरु मऱै किळवन्–श्रेष्ठ वेद-पति; मुन्तिनन्–सामने आये; मुऱ्ऱुम् निन् चिन्तनै–पूरने योग्य तुम्हारी इच्छा; ॲन्–क्या है; ॲन–पूछने पर; चिऱुवर् इन्मैयाल्–पुत्रों के न होने से; नॊन्तनॆन्–दुखी हूँ; अरुळ्क–कृपा करे; ॲन–(यह) प्रार्थना करने पर; नुणङ्कु केळ्वियाय्–सूक्ष्म श्रवण (प्राप्त) ज्ञानी; मैन्तर्कळ् इलै–पुत्र नहीं; ऑरु मकळ्–एक पुत्री; उण्टाम्–पैदा होगी; ॲन्ऱान्–कहा। ३६३

अनमोल वेदों के आश्रय ब्रह्मा जी ने उसके सामने प्रकट होकर पूछा कि तुम्हारा अभीष्ट क्या है ? सुकेतु ने उत्तर दिया कि मेरे पुत्र नहीं हुए और एतदर्थ मैं दुःखी हूँ। कृपा करके पुत्र-प्राप्ति का वर दीजिये। ब्रह्मा ने कहा—सूक्ष्म (श्रौत-) ज्ञानी ! तुम्हारे पुत्र नही होंगे। किन्तु एक पुत्री होगी। ३६३

पूमड मयिलिन्नैप् पॊलुवुम् पॊऱ्पॊडुम्, एमुरु मदमलै यीरैञ् ञूऱुडैत्
तामुरु वलियॊडुन् दनयै तोन्ऱुनी, पोमदि यॆन्वयन् पुहन्ऱु पोयिनान् 364

पू–कमलासना (सम); मटम् मयिलिन्नै पॊलुवुम्–नित्य यौवना मोर की सी छटावाली के समान; पॊऱ्पॊटुम्–सुन्दरता के साथ; एम् उरु–आनन्दयुत; मतम् मलै–मत्त (पर्वत) गज; ईर् ऐञ्ञूऱु–पाँच सौ के दो; उटैय–के वश के; उरु वलियॊटुम्–अधिक बल के साथ; तनयै तोन्ऱुम्–पुत्री पैदा होगी; नी पोमति–तुम जाओ; ॲन–कहकर; अयन्–अज; पुकन्ऱु–कहकर; पोयिनान्–गये। ३६४

और वह कमलासना के समान नित्य यौवना और कलापी-सी छटावाली होगी। सहस्र मत्त गजों की सम्मिलित बलवाली ऐसी एक तनया होगी; चलो। यह वर देकर अजदेव अन्तर्द्धान हो गये। ३६४

आयव नरुळ्वळिप् पिऱन्द वायिळै, शॆयव ळॆनवळर् शेव्वि कण्डिवट्
कायवन् यार्कॊलॆन् ऱायन्दु तन्किळै, नायहन् सुन्दनॆन् बवर्कु नळ्हिनान् 365

आयवन्–उनके; अरुळ् वऴि–आशिष से; पिऱन्त–जनित; आय् इऴै–चुने भूषणवाली (लड़की) (के); चेयवळ् ॲन–लक्ष्मी के समान; वळर् चॆव्वि–बढ़ने की रम्यता; कण्टु–देखकर; इवट्कु आयवन्–इसका पति; आर् कॊल्–कौन हो; ॲन्ऱु आय्न्तु–ऐसा खोजकर; तन्किळै नायकन्–अपने वर्ग के नायक; चुन्तन् ॲन्पवर्कु–सुन्द नामधारी को; नल्किनान्–विवाह में दिया। ३६५

उनके वर के फलस्वरूप सुकेतु के एक लड़की पैदा हुई। वह आभरण-भूषिता होकर लक्ष्मीदेवी के समान बढ़ने लगी। उसकी सुन्दर तरुणाई देखकर सुकेतु उसके सुयोग्य पति खोजने लगा और अपने कुल के नायक सुन्द के साथ उसका विवाह कर दिया। (सुन्द को झर्झपुत्र कहते हैं महर्षि वाल्मीकी।)। ३६५

कामनु मिरदियुङ् गलन्द काट्चियी
दामॅन वियक्कनु मणङ्ग न्नाळुम्वे
ऱियाममुम् पहलुमो रीऱिन् ऱॅन्नलाय्त्
तामुरु पॅरुङ्गळिच् चलदि मूळ्हिन्नार् 366

इयक्कनुम्—यक्ष (सुन्द) और; अणङ्कु अन्नाळुम्—देवी सी वह; ईतु—यह (मिलन); कामनुम् इरतियुम्—कामदेव और रति; कलन्त काट्चि—मिलाप का दृश्य; आम् अॅन—है, ऐसा मान्य (रीति से); वेरु याममुम् पकलुम्—परस्पर भिन्न रातों और दिनों में; ओर् ईरु इन्ऱु—एक अन्त नहीं; अन्नल् आय्—ऐसा लोग कहे, उस रीति से; उरु पॅरु—बहुत अधिक; कळि चलति—आनन्द-सागर में; मूळ्किन्नार्—डूबे। ३६६

यक्ष सुन्द और वह सुन्दरी इस तरह संयोग के साथ रहे कि देखने वाले कहते कि यह मन्मथ और रति का मेल है। वे रात और दिन को एक करते हुए आनन्द-सागर मे मग्न रहे। ३६६

पऱ्पल नाट्चॅलीइप् पदुमै पोन्ऱॉळिर्
पॉऱ्पिनाळ् वयिऱ्ऱिडैप् पुवन मेङ्गिड
वॅऱ्पणि पुयत्तुमा रीच नुम्विऱल्
मऱ्पॉरु सुवाहुवुम् वन्दु तोन्ऱिन्नार् 367

पल् पल नाळ् चॅलीइ—अनेक दिनों के बीतते; पतुमै पोन्ऱु—लक्ष्मी-सम; ऑळिर् पॉऱ्पिनाळ्—भासमान सुन्दरी के; वयिऱु इटै—पेट में; पुवन्नम् एङ्किट—भुवनों को त्रस्त करते हुए; वॅऱ्पु अणि—पर्वत-सम; पुयत्तु—भुजावाले; मारीचनुम्—मारीच और; विऱल् मल् पॉरु—सशक्त मल्ल-युद्ध करनेवाले; चुवाकुवुम्—सुबाहु; वन्तु तोन्ऱिनार्—आ जनमे। ३६७

इस तरह अनेक दिन बीते। उस लक्ष्मी-सी सुन्दरी के गर्भ से पर्वत-सम कंधों वाले मारीच और मल्ल-युद्ध चतुर सुबाहु पैदा हुए। बस, सारा ससार इनको देखते ही भावी को सोचकर कांप उठे। ३६७

मायमुम् वञ्जमुम् वरम्बि लाऱ्ऱलुम्
तायिन्नुम् पळहिन्नार् तमक्कुन् देर्वॉणा
दायवर् वळर्वुळि यवरै यीन्ऱवक्
काय्शिन वियक्कनुङ् गळिप्पिन् मॅन्मैयान् 368

आयवर्—वे (दोनो पुत्र); मायमुम्—माया और; वञ्चमुम्—वंचना में; वरम्पु इल्—सीमाहीन; आऱ्ऱलुम्—शक्ति में; तायिनुम् पळकिनार् तमक्कुम्—माता से भी अधिक परिचितो के लिये भी; तेर्वु ऑण्णातु—जानना कठिन हो ऐसा; वळर्वुळि—बढ़ते समय; अवरै ईन्ऱ—उनको जन्म देनेवाले; काय् चित्तम्—जला सकनेवाले क्रोध के; अ इयक्कनुम्—वह यक्ष भी; कळिप्पिन् मॅन्मैयान्—मद मे बड़ा होकर। ३६८

वे दोनों माया में, प्रवंचना में और अपार बाहु-बल में आगे इतने

बढ़े कि माता के समान हेल-मेल रखनेवाले भी विस्मय-विमूढ रहे। तब उनका जनक दाहक क्रोध-शील सुन्द मस्ती में आकर— । ३६८

तीदुरु मवुणर्हळ् तीमै तीर्दर, मोदुरु कडलॆला मोरुहै मॊण्डुणुम्
मादव नुऱैविड मदऩिल् वन्दुनीळ्, पादव मऩैत्तैयुम् पऱित्तु वीशिऩाऩ् 369

तीतु उऱुम्–दुराचारी; अवुणर्कळ्–असुरों से; तीमै तीर् तर–(की हुई) हानि दूर करने; मोतुरु–(तीर से) टकरानेवाले; कटल् अॆलाम्–समुद्र, सबको; ऒरु कै मॊण्टु–एक चुल्लू में भर ले; उणुम्–(जिन्होंने) पी लिया (उन); मातवऩ् उऱैवु इटम्–महान तपस्वी के वासस्थान; अतऩिल् वन्तु–में आकर; नीळ् पातवम्–दीर्घ पादप; अऩैत्तैयुम्–सभी को; पऱित्तु वीचिऩाऩ्–उखाड़कर फेंका। ३६९।

अगस्त्य के, जिन्होंने असुरों के अत्याचारों को मिटाने के लिये तीर से टकराने वाले सागर को एकदम अपने एक चुल्लू में भर कर पी लिया था, आश्रम में पहुँचा और उसने वहाँ रहे ऊँचे पादपों को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया।

(अगस्त्य का समुद्र-जल पीने का वृत्तांत—वृत्रासुर अपने सगे असुरों के साथ समुद्र के अन्दर जाकर छिप गया। इन्द्र उसको मारने का उपाय न पाकर क्षुब्ध रहा। तब अगस्त्य ने अपने तपोबल से सारे सागर को अपने एक चुल्लू में भर लिया और आचमन के रूप में पी लिया। फिर इन्द्र ने वृत्रादि असुरों को मार दिया। इसी वृत्र को मारने के लिए प्राणत्यागी दधीचि की रीढ़ का वज्र बना)। ३६९

विऴैवुरु मादवम् वॆ·ःकि ऩोर्विरुम्, बुऴैकलै इरलैयै युयिरुण् डोङ्गिय
वऴैमुदल् मरऩॆला मडिप्प मादवऩ्, तऴॆलॆऴ विऴित्तऩऩ् शाम्ब रायिऩाऩ् 370

विऴैवु उरु–अभीष्ट फलदायी; मा तवम्–महान तप; वॆ·ःकितोर्–चाह के साथ करनेवाले; विरुम्पु–(जिनको) चाहते हैं; उऴै–हरिणों; कलै–हरिणियों; इरलैयै–मृगों को और; उयिर् उण्टु–मारकर; ओङ्किय–उन्नत बढ़े; वऴै मुतल्–'वऴै' (नामक) तरु आदि; मरऩ्–वृक्ष; अॆल्लाम्–सबको; मटिप्प–नाश करने पर; मा तवऩ्–महान तपस्वी ने; तऴल् अॆऴ–अंगारे उगलते हुए; विऴित्तऩऩ्–तरेरा; चाम्पर् आयिऩाऩ्–(यक्ष) राख बना। ३७०

सुन्द ने और भी अभीष्ट फल-दायी तपस्या को मन लगाकर करने वाले ऋषि-मुनियों के प्रिय, विविध हरिणों को भी मारा। अलावा उसने "सुरपुन्नै" आदि तरुओं को भी तोड़ डाला। यह देख महान तपस्वी अगस्त्य ने उस पर आग्नेय दृष्टि फेरी और वह वहीं राख हो गया। ३७०

मऱ्ऱवऩ् विऴिन्दमै मैन्दर् तम्मॊडुम्, पॊऱ्ऱॊडि केट्टुवॆङ् गऩलिऱ् पॊङ्गुऱा
मुऱ्ऱुऱ मुडिक्कुवॆऩ् मुऩियै यॆऩ्ऱॆऴा, नऱ्ऱव नुऱैविड मदऩै नण्णिऩाळ् 371

मरुरु–फिर; अवन् विळिन्तमै–उस (सुन्द) का मरना; पॉन् तॉटि–स्वर्ण-कंकणधारिणी; केट्टु–सुनकर; वॅम् कनलिन्–भयंकर अग्नि के समान; पॉङ्कुरा–कोप करके; मुनियै–मुनि को; मुरुरुर–पूर्णरूप से; मुटिक्कुवॅन्–नाश करूँगी; ॲन्रु–यह कहकर; मैन्तर् तम्मॉटुम् ॲळा–(दोनों) पुत्रों के साथ निकलकर; नल्तवन्–श्रेष्ठ तपस्वी के; उरैविटम् अतनै–वासस्थान (को); नण्णिनाळ्–पहुँची। ३७१

उसकी मृत्यु की बात उस स्वर्ण-कंकणधारिणी ने अपने दोनों पुत्रों के साथ सुनी; भयकर आग के समान विफर उठी। मुनि का काम तमाम कर दूँगी—यह कहती हुई वह अपने दोनों पुत्रो को साथ ले, तपोधन अगस्त्य के आश्रम में आयी। ३७१

इडियॉडु मडङ्गलुम् वळियु मेङ्गिडक्
कडिकॅड वमरर्हळ् कदिरु मुट्किड्त्
तडियुडै मुहिऱ्कुलज् जलिप्प वण्डमुम्
वॅडिपड वदिर्त्तॅदिर् विळित्तु मण्डवे 372

इटियॉटु–वज्र के साथ; मटङ्कलुम्–वड़वाग्नि; वळियुम्–युगांत पवन भी; एङ्किट–दहल जायँ, ऐसा; अमरर्कळ्–देवता लोग; कटि, कॅट–निष्प्रभ हो जायँ, ऐसा; कतिरुम्–तेज पुंज (सूर्य व चन्द्र); उट्किट–डर जायँ; तटि उटै (य)–विद्युत सहित; मुकिल् कुलम्–मेघ-कुल (के); चलिप्प–चंचल होते; अण्टमुम्–अंड-गोल (के) भी; वॅटि पट–विदीर्ण होते; अतिर्त्तु–हा हू मचाते हुए; ॲतिर् विळित्तु–(मुनि को) उद्दिष्ट कर पुकारते हुए; मण्टवे–पास आये, तब। ३७२

वह भीषण ध्वनि में ललकारती हुई आयी। उसकी ध्वनि सुनकर वज्र, बड़वाग्नि और प्रलय-पवन भी डर गये। देवता लोग निष्प्रभ हो गये। सूर्य और चन्द्र भी भयभीत हुए और तडितावास मेघ भी थरथरा गये। अंडगोल फट गया। ३७२

तमिऴॅन्नु मळप्परुञ् जलदि तन्दवन्
उमिऴ्कनल् विऴिवऴि यॊऴुह वुङ्करित्
तऴिवन्न शॅय्दला लरक्क राहियॆ
इऴिहॆन वुरैत्तन नशनि यॆञ्जवे 373

तमिऴ् ॲनुम्–तमिऴ् कहलानेवाली; अळप्पु अरु–अकूत; चलति तन्तवन्–जलधि दिलानेवाले (की); उमिऴ् कनल–उगली आग (के); विऴि वऴि–आँखों द्वारा; ऑऴुक–निकलते; अचनि ॲञ्च–अशनि को निर्बल बनाते हुए; उङ्करित्तु–हुंकार कर; अऴिवन चॅय्तलाल्–मारक काम करने से; अरक्कर् आकि–राक्षस बनकर; इऴिक–पतित हो जाओ; ॲन उरैत्तनन्–ऐसा (शाप-वचन) कहा। ३७३

तमिऴ के अगाध सागर के देनेवाले अगस्त्य ने आँखों से अंगारे उगलते हुए वज्र-घोष से भी अधिक ऊँचे स्वर में हुंकार किया। और

श्राप दिया कि जीव-घातक काम करते हो, अतः राक्षस बनकर पतित हो जाओ। (अगस्त्य को 'तमिऴ के देनेवाले' कहना औपचारिक कथन है। अगस्त्य ने तमिऴ भाषा को व्याकरण आदि रचकर, सुबद्ध बनाया और उसका प्रचार किया। पाणिनी ने संस्कृत का प्रचार किया। अतः पौराणिक वृत्तांत है कि शिवजी ने पाणिनी को संस्कृत और अगस्त्य को तमिऴ भाषा सिखाकर उनके द्वारा उन भाषाओं का प्रचार कराया। —मूल टीकाकार)। ३७३

वॅरुक्कॉळ वुलहैयुम् विण्णु ळोरैयुम्
मुरुक्कियॅव् वुयिरुमुण् डुळलु मूर्क्करास्
अरक्कर्ह ळायिन्न रक्क णत्तितिल्
उरुक्किय शॅम्बॅन्न वुमिऴ्हट् टीयिन्नर् 374

अ कणत्तितिल्—उसी क्षण; उरुक्किय चॅम्पु ॲन—पिघले ताँबे के समान; कण् उमिऴ—आँखों से निकली; तीयिन्नर्—आगवाले; उलकैयुम् इस लोक को (और); विण् उळोरैयुम्—आकाश-लोक-वासियों को; वॅरु कॉळ—भयभीत करते हुए; मुरुक्कि—मारकर; अँ उयिरुम्—किसी भी जीव को; उण्टु उळलुम्—खाते हुए फिरनेवाले; मूर्क्करास्—मूर्ख; अरक्कर्कळ् आयिन्नर्—राक्षस बने। ३७४

ज्योंही शाप कहा गया त्योंही वे तीनों मूर्ख राक्षस बन गये। पिघले ताँबे के समान उनकी आँखों से कोपाग्नि निकलने लगी। वे पृथ्वी, और आकाश के लोकवासियों को डराते हुए किसी भी प्राणी को मार कर खाते हुए फिरने लगे। ३७४

आङ्गवन् वॅहुळियु मरैन्द शाबमुम्
ताङ्गिन्न रॅदिर्शॅयुन् दरुक्कि लामैयिन्
नीङ्गिन्नर् सुमालियै नेर्न्दु निर्कियास्
ओङ्गिय पुदल्वरॅन् ड्रुरवु कूर्न्दन्नर् 375

आङ्कु—वैसा; अवन् वॅकुळियुम्—उन (अगस्त्य) का क्रोध और; अरैन्त चापमुम्—कहे शाप; ताङ्कित्तर्—पात्र (बने) वे; ॲतिर् चॅयुम् तरुक्कु—प्रति (हिंसा) करने की शक्ति; इलामैयिन्—न रहने के कारण; नीङ्कित्तर्—हटे; चुमालियै नेर्न्तु—सुमाली के पास जाकर; निऱ्कु—आपके; याम्—हम; ओङ्किय—उत्कृष्ट; पुतल्वर्—पुत्र हैं; ॲन्ऱु—ऐसा कहकर; उऱवु कूर्न्तत्तर्—रिश्ता जोड़ा। ३७५

अगस्त्य के कोप और शाप के पात्र बने वे उनका कोई प्रतिकार करने में असमर्थ रहे। अतः वे (पुत्र) वहाँ से हटकर पाताल में सुमाली के पास पहुँचे और उससे हम आपके उत्कृष्ट संतान हैं कहकर नाता जोड़ लिया। (सुमाली रावण की माँ—केकशी का पिता था। माली और माल्यवान इसके सगे भाई थे। वे पहले लंका में रहे। उनके अत्याचारों से तंग

आकर श्रीविष्णु ने माली को मारा और बाकी दोनों भाई डरकर पाताल भाग गये। बहुत दिन बाद जब रावण राजा हुआ वे लंका में आ गये)। ३७५

अवनोडुम् पादलत् तनेह नाट्चॅलीइत्
तवनुरु दशमुहन् ऱनक्कु मादुलर्
इवरॅनप् पुडॅत्तऴित् तुलह मॅङ्गणुम्
पवननिऱ् ऱिरिहुवर् पदहि मैन्दर्हळ् 376

पतकि मैन्तर्कळ्—पातकी-पुत्र; पातलत्तु—पाताल में; अवनोटुम्—उस (सुमाली) के साथ; अनेकम् नाळ्—अनेक दिन; चॅलीइ—बिताकर; तवन् उरु—तपोबली; तचमुकन्—दशमुख; इवर् तनक्कु मातुलर्—ये मेरे मामा हैं; ऍन—ऐसा कहते; पुटॅत्तु अऴित्तु—मारकर, मिटाकर; पवननिल्—(प्रलय) पवन के समान; उलकम्—लोक; ऍङ्कणुम्—सर्वत्र; तिरिकुवर्—घूमने लगे। ३७६

उस पातकी ताडका के पुत्र अनेक दिन पाताल में छिपे-लुके रहे। फिर वे तपोबली रावण के पास गये। रावण ने इनको मातुल कहकर अपनाया। उसकी प्रेरणा और उसका बल पाकर ये सारे संसार में प्रलयकालीन प्रभंजन के समान सबको मारकर खाते हुए विचर रहे हैं। ३७६

मिहुन्दिऱन् मैन्दरै वेऱु नीङ्गुऱात्
तहुन्दॊऴिन् मुनिवरन् चलत्तै युन्नियॆ
वहुन्दुऱ वशुवरि वदिन्द दिव्वनम्
पुहुन्दन ळॆल्लॆनप् पुळुङ्गु नॆञ्जिनाळ् 377

तकुम् तॊऴिल्—सुयोग्य (तपो-) कर्मी; मुनिवरन् चलत्तै—मुनिवर के कोप को; उन्नियॆ—स्मरण करते हुए; अऴल् ऍन—अग्नि के समान; पुळुङ्कुम् नॆञ्चिनाळ्—घुलनेवाले मन की; तिऱल् मिकु—शक्ति में अधिक; मैन्तरै—पुत्रों (से); वेऱु नीङ्कुऱा—अलग हटकर; वकुन्तु उऱ—(रहने का) रास्ता अपनाने के कारण; वच अरि वतिन्तत्तु—ज्वालायुत अग्नि से व्याप्त; इ वनम्—इस वन में; पुकुन्तनळ्—प्रविष्ट हुयी। ३७७

तपस्या के श्रेष्ठ सुयोग्य कार्य में लगे रहे अगस्त्य के कोप का सदा स्मरण करके आग के समान कुढ़ती रही ताड़का को अपने पराक्रमी पुत्र से अलग होकर रहना पड़ा। अतः वह लपटों के साथ जलनेवाली अग्नि के निलय, इस जंगल में आकर वास करने लग गयी। ३७७

❀ मण्णुरुत् तेडुप्पिनुम् कडलै वारिनुम्
विण्णुरुत् तिडिप्पिनुम् वेण्डिऱ् चॅय्हिऱ्पाळ्
ऍण्णुरुत् तॅरिवरुम् पाव मोण्डियोर्
पॅण्णुरुक् कॊण्डॅन्नत् तिरियुम् पॅऱ्ऱियाळ् 378

ऍण् उरु—विस्तार (और) आकार; तॆरिवु अरु—जानने में अशक्य; पावम् ईण्टि—पाप मिलकर; ओर् पॆण् उरु—एक स्त्री का रूप; कॊण्टु—धरा; ऍन्न—ऐसा; तिरियुम् पॆऱ्ऱियाळ्—घूमने की स्वभाववाली; मण् उरुत्तु ऍटुप्पितुम्—भूमि खोदकर निकालना हो; कटलै वारितुम्—समुद्र को उठाकर पीना हो; विण् उरुत्तु इटिप्पितुम्—आकाश को, कोप कर, ढहाना हो; वेण्टिऩ्—चाहेगी तो; चॆय्किऱ्पाळ्—कर चुकनेवाली है। ३७८

जिनकी संख्या जानी नहीं जा सकती और जिनके प्रकार भी कल्पना में नही आ सकते वे सब पाप एक स्त्री का रूप धरकर आ जावें तो कैसी रहेगी ? वैसी ही है वह। भूमि को खोद निकालना हो, या समुद्र को पी जाना हो या आकाश को तोड़कर गिराना हो—चाहेगी तो अनायास कर देगी। ३७८

पॆरुवरै	यिरण्डोडुम्	बिऱन्द	नञ्जोडुम्
उरुमुऱऴ्	मुऴक्कोडु	मूऴित्	तीयोडुम्
इरुपिऱै	शॆऱिन्दॆऴु	कडलुण्	डामॆऩ्ऩिऩ्
वॆरुवरु	तोऱ्ऱत्तळ्	मेनि	मात्तुमे 379

पॆरु वरै—बड़े पर्वत; इरण्टॊटुम्—दो के साथ और; पिऱन्त नञ्चॊटुम्—सहजात विष के साथ; उरुम् उऱऴ्—वज्र से टक्कर लेनेवाले; मुऴक्कॊटुम्—गर्जन के साथ; ऊऴि तीयॊटुम्—युगांत (कालीन) आग के साथ; इरु पिऱै—दो अर्ध-चन्द्र; चॆऱिन्तु—सहित होकर; ऍऴु—उठ आनेवाला; कटल् उण्टु आम्—एक समुद्र है; ऍऩ्ऩिऩ्—तो; वॆरुवरु तोऱ्ऱत्तळ्—डरावनी सूरतवाली (उसके); मेऩि मात्तुम्—आकार की तुलना करेगा। ३७९

उस डरावनी सूरत की राक्षसी की देह की उपमा भयंकर समुद्र ही से हो सकती है जो दो पर्वतों (स्तनों की जगह में), सहजात विष (आँखों के स्थान में) वज्रसम घोष (जोर का शोर), प्रलयकालीन अग्नि (केशराशि की जगह पर), और दो अर्ध-चन्द्रों (मुख के कोनों से निकले लम्बे और वक्र दांतों के स्थान में) के साथ चलता आ रहा हो। ३७९

❀ शूडह	वरवुऱऴ्	शूलक्	कैयिनळ्
काडुऱै	वाऴ्क्कैयळ्	कण्णिऱ्	काणबरेल्
आडवर्	पॆण्मैयै	यवावुन्	दोऴित्ताय्
ताडहै	ऍऩ्पदच्	चऴक्कि	नाममे 380

कण्णिऩ्—आँखों से; काणपरेल्—देखे तो; आटवर्—पुरुष भी; पॆण्मैयै—स्त्रीत्व को; अवावुम्—चाहने लगें ऐसी; तोऴित्ताय्—भुजाओंवाले; चूटकम् अरवु—कंकणरूपी नाग; चूलम् उऱऴ्—(और) शूल धरनेवाले; कैयित्तळ्—हाथोंवाली; काटु उऱै—वन में वास करने के; वाऴ्क्कैयळ्—जीवनवाली; अ चऴक्कि—उस दुराचारिणी (का); नामम्—नाम; ताटकै ऍऩ्पतु—ताटका है। ३८०

हे सुन्दर-बाहु, जिसकी भुजाओं को देखकर पुरुष लोग भी स्त्रीत्व की इच्छा करेंगे ! वह अपने सर्प-कंकणधारी हाथ में त्रिशूल रखती है। वन-वासिनी है ! उस दुष्टा का नाम ताड़का है। ३८०

उळप्पेरुम् पिणिप्पऱा वुलोब मोन्ऱुमे
अळप्परुङ् गुणङ्गळै यळिक्कु माऱुपोल्
किळप्परुङ् गोंडुमैय वरक्कि केडिला
वळप्पेरु मरुदवैप् पळित्तु माऱ्ऱिनाळ् 381

उळम् पेरुम् पिणिप्पु—चित्त को अधिक बाँधने से; अऱा—न चूकनेवाला; उलोपम् ओन्ऱुमे—लोभ एक ही; अळप्प अरु—आँकने के लिये अशक्य; कुणङ्कळै—(अच्छे) गुणों का; अळिक्कुम् आऱु पोल्—नाश कर देगा, उसी तरह; किळप्पु अरु—अकथनीय; कोंटुमैय अरक्कि—अत्याचारिणी राक्षसी; केटु इला—अक्षय; वळम् पेरु—समृद्ध; मरुतम् वैप्पु—खेत और बागों के भूभाग को; अळित्तु—मिटाकर; माऱ्ऱिनाळ्—(ताड़का ने) परिवर्तित कर दिया। ३८१

यह सुन्दर खेतों और बागों का उर्वर प्रदेश था। (तमिऴ में इसे मरुतम् कहते है।) इस सारी भूमि को अकेली उसने दारुण और दाहक जंगल में वैसे बदल दिया जैसे अकाट्य लोभ का दुर्गुण अकेला ही अपरिमेय सद्गुणों का नाश कर डालता है। ३८१

इलङ्गैयर शन्पणिय मैन्दोरिडै यूऱाय्
विलङ्गल्वलि कोण्डेन्दु वेळ्विनलि हिन्ऱाळ्
अलङ्गन्मुहि लेयवळिव् वङ्गनिल मेङ्गुम्
कुलङ्गळों डडङ्गननि कोन्ऱुतिरि हिन्ऱाळ् 382

अलङ्कल्—माला (युक्त); मुकिले—मेघ; अवळ्—वह; विलङ्कल् वलि—पर्वत की शक्ति; कोण्टु—लेकर; इलङ्कै अरचन्—लंकाधिपति (की); पणि अमैन्तु—आज्ञा मानकर; ओर् इटैयूऱु आय्—(बड़ी) एक बाधा बनकर; एन्तु वेळ्वि नलिकिन्ऱाळ्—मेरा यज्ञ बिगाड़ती है; इव् अङ्क निलम् एङ्कुम्—इस अंग भूमि भर में (सर्वत्र); कुलङ्कळोटु अटङ्क—कुल सहित नाश करते हुए; ननि कोन्ऱु—खूब मारती हुई; तिरिकिन्ऱाळ्—घूमती है। ३८२

माला-धारी, मेघ-सदृश, हे श्रीराम ! वह पर्वत का-सा भुज-बल रखती है। लंकाधिप की आज्ञाकारिणी है। बाधा बनकर मेरा यज्ञ रोकती है। और इस अंग देश भर में सबको सकुल मारकर खाती फिरती है। ३८२

❀ मुन्नुल हळित्तमुनि तन्दवुयि रेल्लाम्
तन्नुण वेनक्करुदु तन्मैयिनण् मैन्द

ऍन्तिनि युणर्त्तुव दिनिच्चिर्दु नाळिल्
मन्नुयि रनैत्तैयुम् वयिऱ्ऱिलिडु मॆन्ऱान् 383

मैन्त–(चक्रवर्ती-) पुत्र; मुन् उलकु अळित्त मुति–प्राचीन लोकों को सृजित करनेवाले ऋषि (ब्रह्मा) (के); तन्त उयिर् ऍलाम्–सृष्ट जीव सबों को; तन् उणवु–अपना भोजन; ऍन करुतु–ऐसा समझने का; तन्मैयिनळ्–स्वभाववाली; इन्ि चिऱितु नाळिल्–अब थोड़े दिनों में; मन् उयिर्–स्थायी जीव; अनैत्तैयुम्–सबों को; वयिऱ्ऱिल् इटुम्–अपने उदर में डाल लेगी; इन्ि ऍन् उणर्त्तुवतु–आगे क्या समझना है; ऍन्ऱान्–बोले। ३८३

चक्रवर्ती-कुमार ! प्राचीन सभी लोकों के सृष्टा (चतुर्मुख) के दिये सभी जीवों को वह अपना भोजन-पदार्थ समझती है ! अतः (अब मारी नही गयी तो) कुछ ही दिनों में लोकस्थ सभी जीवो को अपने उदरस्थ कर लेगी। आगे क्या कहा जाय ? । ३८३

❀ इङ्गुरुव निप्परि शुरैप्पवट्ु केळाक्
कॊङ्गुऱै नऱैक्कुल मलर्च्चॆनि तुळक्का
ऍङ्गुऱैव दित्तॊऴि लियऱ्ऱुबव ळॆन्ऱान्
शङ्गुऱै करत्तॊरु तनिच्चिलै तरित्तान् 384

चङ्कु उऱै करतुतु–शंखधारी हस्त में; ऒरु तन्ि चिलै तरित्तान्–अद्वितीय और श्रेष्ठ धनु (कोदण्ड) धरनेवाले; इङ्कु–इधर; उरुवन् इ परिचु उरैप्प–महर्षि के ऐसा कहने पर; अतु केळा–वह सुनकर; कॊङ्कु उऱै–सुवासित; नऱै कुलम् मलर्–शहद-पूर्ण पुष्प (अलंकृत); चॆ(न्)नि–सिर को; तुळक्का–हिलाकर; इ तॊऴिल्–यह कृत्य; इयऱ्ऱुपवळ्–करनेवाली; उऱैवतु ऍङ्कु–रहती कहाँ; ऍन्ऱान्–पूछा। ३८४

श्रीराम ने, जो पांचजन्य शंख धारण करनेवाले अपने हाथ में अब कोदण्ड लिये हुए थे, विश्वामित्र जी की ये बातें सुनकर, सुगन्धित और शहद भरे पुष्पों से अलंकृत अपने सिर को हिलाकर पूछा कि यह (भयंकर) कार्य करनेवाली रहती कहाँ है ? । ३८४

❀ कैवरै यॆन्नत्तहैय काळैयुरै केळा, ऐवरै यहत्तिडै यडैत्तमुनि यैय
इव्वरै यिरुप्पदव ळॆन्बदनिन् मुन्बोर्, मैवरै नॆरुप्पॆरिय वन्ददॆन वन्दाळ् 385

कैवरै ऍन तकैय–गज ही वर्ण्य; काळै उरै केळा–ऋषभ का कथन सुनकर; ऐवरै अकत्तिटै अटैत्त मुनि–पाँच (इंद्रियों) को अन्दर ही दबाये रखनेवाले मुनि; ऐय–सुन्दर; अवळ् इरुप्पतु–उसका वासस्थान; इ वरै–यह पर्वत है; ऍन्पतनिन् मुन्पु–यह कहने से पूर्व; ऒर् मै वरै–एक काला पर्वत; नॆरुप्पु ऍरिय–आग के जलते (जलती आग के साथ); वन्ततु–(चलता) आया; ऍन–ऐसा; वन्ताळ्–आयी। ३८५

गज सन्निभ और ऋषभ-सम श्रीराम का वचन सुनकर इंद्रियजित

मुनि ने कहा कि प्रभु ! उसका वासस्थान यही पर्वत है। यह कह चुकने से पूर्व ही ताड़का उनके सामने, काला पर्वत जलता आ गया—ऐसा प्रकट होकर आने लगी। ३८५

शिलम्बुकॉळ् शिलम्बिडै शॅऱित्तकळ् लोड्डुम्
निलम्बुह मिदित्तिड नॅळित्तकुऴि वेलैच्
चलम्बुह वनऱ्ऱुह णन्दहनु मञ्जिप्
पिलम्बुह निलैक्किरिहळ् पिन्ऱोडर वन्दाळ् 386

इट्टै चॅरित्त–(यथा-) स्थान पहने; चिलम्पु कोळ्–गिरियों से (कंकड़ों के स्थान में) भरे; चिलम्पु–नूपुर; कळ्लोट्टुम्–(पर्वत-निर्मित) कड़ों के साथ; निलम् पुक–धरती धँसाते हुए; मितित्तिट–डग भरने से; नॅळित्त कुऴि–बने गड्ढों में; वेलै चलम् पुक–समुद्र जल आ भरा; अत्तल्–प्रज्वलित कोपवाले; तऱुकण्–निडर; अन्तकतुम्–यम (को) भी; अञ्चि–डरकर; पिलम् पुक–पाताल में पहुँचाते हुए; निलै किरिकळ्–अचल पर्वत भी; पिन् तॉटर–अनुगमन करते; वन्ताळ्–आयी। ३८६

वह अपने पैरो को जिनके नूपुरों के अंदर पर्वत ही कंकड़ों के रूप में भरे थे, इस तरह रखती आ रही थी कि भूमि मे गड्ढे वन गये और उनमें समुद्रजल आकर भर गया। कोपाग्नि से युक्त निडर अंतक भी उससे डरकर पाताल में आकर छिप गया। स्थावर गिरियाँ भी चलायमान होकर इसके पीछे आ रही थी। ३८६

❀ इऱैक्कडै तुडित्तपुरु वत्तळॅयि ऱॅन्नुम्
पिऱैक्कडै पिऱक्किड मडित्तपिल वायळ्
कऱैक्कडै यरक्किवड वैक्कनलि रण्डाय्
निरैक्कडन् मुळैत्तॅन्न नॅरुप्पॅळ विऴित्ताळ् 387

कऱै कटै अरक्कि–(संसार का) कलंक, नीच राक्षसी; कटै—कोनों में; इऱै तुटित्त–थोड़ा फड़कती; पुरुवत्तळ्–भौहोंवाली; ऍयिऱु ऍन्नुम्–(वक्र-) दाँतरूपी; पिऱै–अर्धचन्द्रो को; कटै पिऱक्किट–(मुख के) कोनों से प्रकट करते हुए; मटित्त–बन्द किये हुए; पिलम् वायळ्–गुफ़ा सम मुखवाली; वटवै कनल्–वड़वाग्नि; इरण्टाय्–दो वनकर; निरै कटल्–मर्यादावद्ध समुद्र में; मुळैत्तनु–प्रकट हुई; ऍन–ऐसा; नॅरुप्पु ऍळ–अंगारे निकालती हुयी; विऴित्ताळ्–घूरकर देखा। ३८७

लोक-कलंक, नीच, उस राक्षसी की भौहों के कोने किंचित कांपे। उसका मुख पर्वतगह्वर के समान था जिसको उसने वन्द किया था और जिसके कोनों से दो वक्र-दांत वाहर निकले हुए थे। उसने आँखों से वड़वानल दो भागों में मर्यादावद्ध सागर मध्य निकल रहा हो ऐसा आग उगलती हुई तरेरा। ३८७

❀ कडङ्गलुऴ् तडङ्गळिऱु कैयॉडुहै तॆऱ्ऱा
वडङ्गॊळ नुडङ्गुमुलै याण्मऱुहि वाऩोर्

इडङ्गळु नॆडुन्दिशैयु मॆळुलहु मॆङ्गुम्
अडङ्गलु नडुङ्गवुरु मञ्जनत्ति यार्त्ताळ् 388

कटम् कलुळ्–मद जलस्रावी; तट कळिरु–बड़े गजों को; कै ऑटु कै तॆर्रा–सूँड से सूँड बाँधकर; वटम् कॊळ–हार के समान पहने रहने से; नुटङ्कुम्–डोलनेवाले; मुलैयाळ्–स्तनोंवाली; वानोर इटङ्कळुम्–देवों के स्थानों को; नॆटु तिचैयुम्–लम्बी दिशाओं को; एळ् उलकुम्–सातों लोकों को; ऍङ्कुम्–और सब स्थानों को; अटङ्कलुम्–(उनके) सभी (जीवों) को; मरुकि नटुङ्क–डराते हुए; उरुम् अञ्च–वज्र डर जाय ऐसा; ननि आर्त्ताळ्–उच्च नर्दन किया। ३८८

उसने वक्ष पर मद-नीरस्रावी मत्त गजों की सूँड़ों को बटकर हार के रूप में पहन रखा था। इसलिए उसके स्तन दोलायमान थे। उसने ऐसा भीषण गर्जन किया कि गगन-लोक, लम्बी दिशाओं, भू आदि सातों लोकों में, सर्वत्र रहनेवाले सभी जीव थर्रा उठे और अशनि भी भयभीत हुआ। ३८८

आर्त्तवरै नॊक्किनहै शॆय्दॆवरु मञ्जक्
कूर्त्तनुदि मुत्तलै ययिर्कॊडिय कूर्रैप्
पार्त्तॆयिरु तिन्रुपहु वाय्मुळै तिरन्दोर्
वार्त्तैयुरै शॆय्दन ळिडिक्कुमळै यन्नाळ् 389

इटिक्कुम् मळै अन्नाळ्–गरजते मेघ समाना; आर्त्तु–दहाड़कर; अवरै–उनको; नोक्कि–देखकर; नकै चॆय्तु–ठठाकर; ऍवरुम्–कोई भी; अञ्च–डरे, ऐसा; कूर्त्त नुति–तीक्ष्ण नोकवाले; मुत्तलै अयिल्–त्रिशिरा शूल (रूपी); कॊटिय कूर्रै–भयंकर यम को; पार्त्तु–देखकर; ऍयिरु तिन्रु–दाँत पीसकर; पकु वाय् मुळै तिरन्तु–मुख-गह्वर खोलकर; ओर् वार्त्तै–एक वार्त्ता; उरै चॆय्तनळ्–कही। ३८९

वज्र-नाद-युक्त मेघ के समान उसने गर्जन करके, तीनों को देखा; ठठाकर हंसी। सबको डरानेवाले तीक्ष्ण फलों के त्रिशूलरूपी भयंकर यम को देखते (दिखाते) हुए, दाँत पीसकर, मुख-गह्वर को खोलकर उसने एक बात कही। ३८९

❀ कडक्करुम् वलत्तॆनदु कावलिदिल् यावुम्
कॊडक्करु वरुत्तनॆ निनिच्चुवै किडक्कुम्
विडक्करिदॆ नक्करुदि योविदिकॊ डुन्दप्
पडक्करुदि योपहर्मिन् वन्दपरि शॆन्राळ् 390

कटक्क अरु वलत्तु–अलंघ्य, क्षमता युक्त; ऍनतु कावल् इतिल्–मेरी रक्षा की इस भूमि में; यावुम् कॊट–सबका नाश करते हुए; करु अरुत्तनॆन्–निर्मूल किया; इनि–अब; वन्त परिचु–आने का हेतु; चुवै किटक्कुम्–स्वादिष्ट; विटक्कु अरितु–मांस (मिलना मेरे लिए) कठिन है; ऍन करुतियो–यह समझकर क्या;

का भुजबल भी इसका नाम सुनकर हार जायगा ! तो पुंसत्व किसके पास है ? । ३९५

इन्दि रन्निडैन् दानुडैन् दोडिनार्, तन्दि रम्वडत् तानवर् वानवर्
मन्द रम्मिव डोळॅनित् मैन्दरो, डन्द रम्मिनि यादुकॉ लाण्मैये 396

इन्तिरन् इटैन्तान्–इन्द्र हारा; तानवर्–दानव; वानवर्–सुर; तन्तिरम् पट–सेना के नष्ट होते; उटैन्तु ओटिनार्–हारकर भागे; इवळ् तोळ्–इसके कंधे; मन्तरम्–मन्दर पर्वत हैं; ॲनिन्–तो; इनि–फिर; आण्मैयिल्–पुंसत्व में; मैन्तरोटु–वीर पुरुषों से; अन्तरम् यातु–अन्तर क्या है ? (ए) (चॉल्) । ३९६

इन्द्र इसके सामने हारा; दानवों और देवों की सेना मिटी और वे भाग गये। इसके कंधे मंदर पर्वत (सम कठोर) हैं। तो पुरुषों से इसमे अन्तर क्या है ? । ३९६

कऱङ्ग	डऱ्ऱिहि	रिप्पडि	कात्तवर्
पिऱङ्ग	डॅप्पॅरि	योप्पॅरि	योरॊडुम्
मऱङ्गॉ	डित्तरै	मन्नुयिर्	माय्त्तुनल्
अऱङ्गॅ	डुत्तवट्	काण्मैयुम्	वेण्डुमो 397

कऱङ्कु–घूमनेवाले; अटल् तिकिरि–सक्षम (आज्ञा-) चक्र द्वारा; पटि कात्तवर्–भूमि का पालन करनेवालो (के); पिऱङ्कटै–(सूर्यवंश के) वंशज; पॅरियोय्–महानुभाव; पॅरियोरॊटुम्–महात्माओं से; मऱम् कॉटु–वैर करके; इ तरै–इस भूमि के; मन् उयिर् माय्त्तु–रहनेवाले जीवों को मारकर; नल् अऱम्–सद्धर्म (का); कॅटुत्तवट्कु–नाश करनेवाली (इस) के लिए; आण्मैयुम् वेण्टुमो–पुरुषत्व (पुरुषाकार) भी चाहिये क्या ? । ३९७

घूमने वाले अपने प्रतापी आज्ञा-चक्र से भूमि का पालन करनेवाले सूर्य-वंशी राजाओं के कुल में उत्पन्न हे राम ! साधुओं से वैर करके, इस पृथ्वी के रहनेवाले जीवो को मारकर इसने सद्धर्म को विगाड़ दिया है। तब क्या इसके वध के लिये इसका पुरुप-शरीरी होना भी आवश्यक है ? । ३९७

शाऱ्ऱु	नाळऱ्ऱ	तॅण्णित्	तरुमम्बार्त्
तेऱ्ऱुम्	विण्णॅन्व	दल्ल	दिवळैप्पोल्
नाऱ्ऱङ्	गाण्डलुन्	दिन्न	नयप्पदोर्
कूऱ्ऱु	मुण्डुकॉल्	कूऱ्ऱुऱऴ्	वेलिनाय् 398

कूऱ्ऱु उऱऴ्–यम की समता करनेवाला; वेलिनाय्–भालावाले; चाऱ्ऱुम् नाळ्–विधि-निर्णीत आयु; अऱ्ऱतु ॲण्णि–पूर्ण हुई जानकर; तरुमम् पार्त्तु–धर्म (या अधर्म कृत्य) देखकर; विण् एऱ्ऱुम्–स्वर्ग चढ़ायेगा; ॲन्पतु अल्लतु–इस बात के सिवा; इवळैप् पोल्–इसकी तरह; नाऱ्ऱम् काण्टलुम्–बू पाते ही; तिन्न

नयप्पतु—खाना चाहनेवाली; ओर् कूऱ्ऱम्—एक मृत्यु भी; उण्टु कॊल्—रहती है क्या ? । ३९८

मृत्यु (देव) के समान रहनेवाले भाले के धारक ! यम भी आयु का अन्त जानकर जीव के धर्म-अधर्म का हिसाब लगाकर ऊपर ले जाता है। इसके समान गंध पाते ही जीवों को मारकर खाना चाहनेवाला यम भी कहीं है ? ३९८

[इसके बाद चार अतिरिक्त पद कुछ प्राचीन संस्करणों में पाये जाते है। किसी-किसी में ये ३९६ वें पद के तुरन्त बाद भी पाये जाते हैं। उनका सार यों है—और भी एक बात है, सुनिये। इन्द्र ने सुमति (या कुमति) नाम की स्त्री को मार दिया क्योंकि वह सभी लोकों के वासियों को अपना आहार मानकर भक्षण कर लेती थी। भृगु की पत्नी ख्याति थी जो मीन के सदृश आँखोंवाली सुन्दरी थी। वह असुरों पर दया करके उनकी सहायता करती थी। चक्रपाणि विष्णु ने उसको मारा था। (वाल्मीकी उसको शुक्र माता और सुमति को विरोचन-सुता मंथरा कहते है।) इन हत्याओं से आखंडल और हरि की सुकीर्ति हुई या अपकीर्ति ? आप ही कहिये।]

❀ मन्नुम् पल्लुयिर् वारित्तन् वाय्प्पॆय्दु, तिन्नुम् पुन्मैयिऱ् ऱीमैय तेतैय
पिन्तुन् ताऴ्हुऴऱ् पेदैमैप् पॆण्णिवऴ्, ऍन्तुन् दन्मै ऍऴिमैयिन् पालदे 399

मन्नुम् पल् उयिर्—(संसार में) रहनेवाले अनेक जीवों को; वारि—समेटकर; तन् वाय् पॆय्तु—अपने मुख में भरकर; तिन्नुम् पुन्मैयिन्—खाने की नीचता से बढ़कर; तीमैयतु एतु—भयंकर काम कौन सा है; ऐय—प्रभु; इवऴ्—यह; पिन्तुम् ताऴ् कुऴल्—गुंथी लम्बी वेणी की; पेतैमै पॆण्—अबोध स्त्री; ऍन्तुम् तन्मै—यह कहने का विषय; ऍऴिमैयिन् पालते—अज्ञता के पक्ष का ही होगा। ३९९

जीवित अनेक प्राणियों को समेटकर अपने मुख में डालकर खाने की नीचता से बढ़कर अधम क्रूरता क्या हो सकती है ? प्रभो ! इस दुष्टा को देखकर गुंथी हुई, नीचे लटकती मेढ़ीवाली, एक निश्छल स्त्री के रूप में मानना निपट नादानी होगी। ३९९

❀ ईऱि नल्लऱम् पार्त्तिशैत् तेन्निवट्, चीऱि निन्ऱिदु चॆप्पुहिन् ऱेन्नलेन्
आऱि निन्ऱ दऱन्न् ऱरक्कियैक्, कोऱि ऍन्ऱेदि रन्दणन् कूऱिनान् 400

ईऱु इल्—शाश्वत; नल् अऱम्—अच्छे धर्म को; पार्त्तु—देखकर; इचैत्तेन्—यह बताया; इवऴ्—इसके प्रति; चीऱि निन्ऱु—क्रोधी रह करके; इतु—यह; चॆप्पुकिन्ऱेन् अलेन्—कहता नहीं हूँ; आऱि निन्ऱतु—शांत हो रहना; अऱन् अन्ऱु—धर्म नहीं है; अरक्कियै कोऱि—राक्षसी को मारो; ऍन्ऱु—ऐसा; ऍतिर्—(श्रीराम के) सामने; अन्तणन्—महर्षि (ने); कूऱिनान्—कहा। ४००

मैं जो कह रहा हूँ वह शाश्वत धर्म का विचार करके ही कह रहा हूँ। इस पर कोप करके नही। इसके सम्बन्ध में शांत होकर रहना धर्म नही होगा। इस राक्षसी का अभी वध कर दीजिए। महर्षि ने ऐसा श्रीरामके सामने कहा। ४००

ऐय नङ्गवॅ केट्टर नल्लदुम्, अँय्दि नालदु शॅय्हवॅन् ऱेविन्नाल्
मॅय्य निन्नुरै वेद मॅनक्कॊडु, शॅय्है यन्ऱो वऱन्जॅयु माऱॅन्ऱान् 401

ऐयन्—प्रभु; अङ्कु—तव; अवै केट्टु—वे (बातें) सुनकर; मॅय्य—सत्य-स्वरूप; अऱन् अल्लतुम्—धर्म जो नहीं हो; अँय्तिनाल्—(वह भी आवश्यक) हो जाय; अतु चॅय्क—वह करो; अॅन्ऱु एविनाल्—ऐसा आज्ञा करें तो; निन् उरै—आपका वचन; वेतम् अॅन कॊटु—वेद है मानकर; चॅय्कै अन्ऱो—करना ही तो; अऱम् चॅय्युम् आऱु—धर्म-कृत्य का मार्ग है; अॅन्ऱान्—कहा। ४०१

महिमामय श्रीराम ने महर्षि का कथन सुनकर निवेदन किया कि हे सत्यस्वरूप ! धर्मेतर कार्य भी करना पड़ जाय तो आपकी आज्ञा पाने पर, आपकी बात को वेदवाक्य मानकर, करना ही न धर्म-पालन की रीति होगी ! । ४०१

❀ गङ्गैत् तीम्बुन नाडन् करुत्तैयम्, मङ्गैत् तीयनै याळु मनक्कॊळाच्
चॅङ्गैच् चूलवॅन् दीयिनैत् तीयदन्, वॅङ्गट् टीयॊडु मेऱ्चॅल वीशिनाळ् 402

कङ्कै तीम् पुनल्—गंगा का मधुर जल (से); नाटन्—(सिंचित) देश के; करुत्तै—अभिप्राय को; अ मङ्कै—उस स्त्री (के रूप में); ती अनैयाळुम्—अग्नि के समान रही वह भी; मनम् कॊळा—मन में ले करके; चॅम्मै कै—लाल हाथ में रहे; चूलम् वॅम् तीयिनै—शूलरूपी भयंकर आग को; तीय—बुरी; तन् वॅम् कण् तीयॊटु—अपनी कठोर आँखों की अग्नि के साथ; मेल् चॅल—(श्रीराम) पर जाने के लिए; वीचिनाळ्—फेंका। ४०२

श्रीरामचन्द्र का, जिनके देश को पवित्र गंगा नदी उर्वर बना रही थीं, मनोभाव ताड़का को मालूम हो गया। तुरन्त उस स्त्रीरूपी अग्नि ने आँखों से दृष्टिरूपी अनल को और हाथ से त्रिशूलरूपी अग्नि को श्रीराम पर चलाया। उसने ही पहला प्रहार किया। क्रुद्ध-दृष्टि के साथ उसने त्रिशूल को फेका। ४०२

पुदिय कूऱ्ऱनै याळ्पुहैन् देविय, कदिरकॊण् मूविलैक् कालवॅन् दीमुनि
विदियै मेऱ्कॊण्डु निन्ऱवन् मेलुवा, मदियिन् मेलवरुङ् गोळॅन वन्ददे 403

पुतिय कूऱ्ऱु अनैयाळ्—नवीन यम-तुल्य (उससे); पुकैन्तु एविय—कोप के साथ प्रेषित; कतिर् कॊळ्—देदीप्यमान; मूविलै—त्रिपत्रवाली शूलरूपी; कालम् वॅम् ती—प्रलयाग्नि; मुनि वितियै—मुनि की आज्ञा को; मेल् कॊण्टु—धारण कर; निन्ऱवन् मेल्—स्थित (श्रीराम) पर; उवा मतियिन् मेल्—पूर्ण चन्द्र पर; वरुम् कोळ् अॅन—आनेवाले ग्रह के समान; वन्ततु—आया। ४०३

श्रीराम मुनिवर की आज्ञा मानकर ताड़का को मारने के लिये उद्यत खड़े रहे। उन पर नवीन-यम के समान ताड़का ने क्रोधोद्विग्न मन के साथ दीप्यमान त्रिशूल फेंका। वह त्रिशूल क्या था, प्रलय काल की भयंकर अग्नि थी। वह पूर्णचन्द्र को ग्रसने के लिये आनेवाले राहु ग्रह के समान आ रहा था। ४०३

❀मालु मक्कणम् वाळियैत् तॊट्टदुम्, कोल विऱ्काल् कुनित्तदुङ् गण्डिलर्
काल नैप्पऱित् तक्कडि याळ्विट्ट, शूल मिऱ्ऱदन् तुण्डङ्गळ् कण्डनर् 404

मालुम्–श्रीविष्णु भी; अ कणम्–उसी क्षण; कोलम् विल्–सुन्दर धनुष के; काल् कुनित्ततुम्–बाजुओं को झुकाना और; वाळियै–शर को; तॊट्टतुम्–छोड़ना; कण्टिलर्–(किसी ने) न देखा; अ कटियाळ्–उस दुराचारिणी के; कालनै पऱित्तु–यम से छीनकर; विट्ट–फेंके गये; चूलम्–त्रिशूल (के); इऱ्ऱतन् तुण्टङ्कळ्–टूटे टुकड़े; कण्टनर्–देखे। ४०४

श्रीविष्णु के अवतार राम ने उसको एक शर से खण्डित कर दिया। वह इतनी तेजी से सम्पन्न हुआ कि किसी ने न उनका धनुष झुकाना देखा न शर संधानकर खींचना; पर सब ने शूल के टुकड़ों को नीचे भूमि पर पड़े हुए देखा। ४०४

❀ अल्लिन् मारि यनैय निऱत्तवळ्, शॊल्लु मात्तिरै यिऱ्कड ङूर्प्पदोर्
कल्लिन् मारियैक् कैवहुत् ताळदु, विल्लिन् मारियिन् वीरन् विलक्किनान् 405

अल्लिल्–रात के; मारि अनैय–मेघ के समान; निऱत्तवळ्–रंगवाली; चॊल्लुम् मात्तिरैयिल्–एक शब्दोच्चारण की देरी में; कटल् तूर्प्पतु–समुद्र को भी पाट (सकने) वाली; ओर् कल्लिन् मारियै–एक प्रस्तर वर्षा को; कै वकुत्ताळ्–अपने हाथों से गिराया; अतु–उस (वर्षा) को; वीरन्–(रघु-) वीर ने; विल्लिन् मारियिन्–धनुष की शर वर्षा द्वारा; विलक्किनान्–हटाया। ४०५

रात के मेघ के समान काले रंग की ताड़का तब पत्थर उठाकर बहुत तेजी से फेंकने लगी। एक ही पल में वह इतने पत्थर बरसा चुकी कि समुद्र भी उनसे पट सकता था। श्रीराम ने अपने धनुष से शर वर्षा कर उनको रोका और अपने को बचा लिया। ४०५

❀ शॊल्लॊक्कुङ् गडिय वेहच् चुडुशरङ् गरिय शॆम्मल्
अल्लॊक्कु निऱत्ति नाण्मेल् विडुदलुम् वयिरक् कुन्ऱक्
कल्लॊक्कु नॆञ्जिऱ् ऱङ्गा दप्पुऱङ् गळन्ऱु कल्लाप्
पुल्लर्क्कु नल्लोर् शॊन्न पॊरुळॆनप् पोय दन्ऱे 406

करिय चॆम्मल्–श्यामल देव (के); चॊल् ऒक्कुम्–(महात्माओं के शाप के) वचन सम; कटिय वेकम्–अत्यन्त वेगवान और; चुटु–संतापी; चरम्–एक शर को; अल् ऒक्कुम्–अंधकार की समानता करनेवाले; निऱत्तिनाळ् मेल्–रंगवाली

पर; विट्टतलुम्–चलाने पर; वयिरम् कुन्ऱम् कल्–वज्र-पर्वत-प्रस्तर; ओंक्कुम् नेञ्चिल्–समान छाती में; तङ्कातु–न ठहरकर; अ पुऱम् कळन्ऱु–उस तरफ से निकलकर; कल्ला पुल्लर्क्कु–अपढ़ अल्पज्ञों को; नल्लोर् चोंन्न–साधुओं के कहे; पोंरुळ ॲन–उपदेश के समान; पोयतु–चला गया; (अन्ऱु, ए)। ४०६

फिर श्यामल भगवान ने एक शर छोड़ा। वह महात्माओ के शाप के समान सद्य प्रभावकारी शर था। अंधेरी रात के रंग की उस ताड़का पर छोड़ा वह शर वज्र-पर्वत के प्रस्तर-खण्ड के समान कठोर रही उसकी छाती मे प्रवेश कर वहाँ न रुका; पर पीछे पीठ पर से निकलकर, इस प्रकार उड़ गया जिस प्रकार साधुजनों के अनपढ़ मूढ़ों को दिये उपदेश उनके मन में न ठहर कर निकल (लुप्त हो) जाते है। ४०६

पोंन्नॆंडुङ् गुन्ऱ मन्नान् पुहर्मुहप् पहळि यॆन्नुम्
मन्नॆंडुङ् गाल वन्कार् ऱडित्तलु मिडित्तु वानिल्
कन्नॆंडु मारि पॆय्यक् कडैयुहत् तॆळुन्द मेहम्
मिन्नॊडु मशनियोडुम् वीळ्वदे पोल वीळ्न्दाळ् 407

पोंन्–स्वर्ण के; नॆंटु कुन्ऱम्–उन्नत पर्वत (मेरु); अन्नान्–सम रहनेवाले (के); पुकर् मुकम्–तीक्ष्ण-मुखी; पकळि ॲन्नुम्–शररूपी; मन्–दीर्घ; नॆंटु कालम्–प्रलयकाल के; वल् कार्ऱु–प्रवल पवन (के); अटित्तलुम्–झोंके से; कटै युकत्तु–युगांत में; वानिल्–आकाश में; इटित्तु–वज्र कड़क कर; कल्–पत्थर की; नॆंटु मारि पॆय्य–अधिक वर्षा करने; ॲळुन्त–ऊपर उठे; मेकम्–मेघ; मिन्नॊटुम् अचनियोटुम्–विद्युत और अशनि के साथ; वीळ्वते पोल–गिरे ऐसे; वीळ्न्ताळ्–गिरी। ४०७

उन्नत और स्वर्णमय मेरु पर्वत के समान थे श्रीराम; उनके धनुष से निकला तीक्ष्ण अनीवाला शर युगांत का प्रभंजन था। उससे आहत होकर ताड़का का घोर आकार के दांतों और भयंकर गर्जन के साथ उछल कर भूमि पर गिरना उस मेघ के गिरने के समान था जो युगांत में प्रस्तर-वर्षा करने के लिए कड़कते हुए ऊपर उठे, पर विद्युत प्रकाश और वज्र की कड़क के साथ भूमि पर गिर जाय। ४०७

पॊंडियुडैक् कान मॆंङ्गुङ् गुरुदिनीर् पॊंङ्ग वीळ्न्द
तडियुडै यॆयिऱ्ऱुप् पेळ्वायत् ताडहै तलैह डोरुम्
मुडियुडै यरक्कर् कन्नाळ् मुन्दियुर् पाद माहप्
पडियिडै यऱ्ऱु वीळ्न्द वॆर्ऱियम् वदाहै यॊत्ताळ् 408

पॊंटि उटै–धूल सहित; कानम् ॲङ्कुम्–जंगल भर में; कुरुति नीर् पॊंङ्क–रक्त की बाढ़ के बढ़ते; वीळ्न्त–गिरी हुई; तटि उटै ॲयिऱु–मांस युक्त दांतों; पेळ्वाय्–खुले मुख (वाली); ताटकै–ताड़का; तलैकळ् तोऱुम्–हर सिर पर; मुटि उटै–(या) किरीट पहने; अरक्कर्कु–राक्षस (रावण) को; मुन्ति–पहले

के; उऱ्पातम् आक—उत्पात (दुःशकुन) बनकर; अ नाळ्—उस दिन; अऱ्ऱु—कटकर; पटि इटै—भूमि पर; वीऴ्न्त—गिरे; वॆऱ्ऱि पताकै ऑत्ताळ्—विजयी झण्डे की समानता करती थी। ४०८

ताड़का भूमि पर मरकर गिरी। उसके शरीर का रक्त उस जंगल में सर्वत्र फैल गया। उसके दाँतों के बीच मांस-खण्ड फँसे हुए थे। वह, उस विजय पताका के समान लगती थी जो मुकुटधारी दस सिर वाले रावण पर आनेवाले उत्पात की पूर्व-सूचना का दुःशकुन देते हुए कटकर गिरी हो। ४०८

❀ कान्ऱिरिन् दाऴि याहत् ताडहै कडिन मार्वत्
तून्ऱिय पहऴि वायू डॊऴुहिय कुरुदि वॆळ्ळम्
आन्ऱवक् कान मॆल्ला माथिन दन्दि मालैत्
तोन्ऱिय शॆक्कर् वानन् दॊडक्कर्ऱु वीऴ्न्द दॊत्ते 409

ताटकै—ताड़का की; कटितम् मार्पत्तु—कठोर छाती में; ऊन्ऱिय—चुभे; पकऴि वाय् ऊटु—शर के बने घाव द्वारा; ऑऴु किय—बहनेवाली; कुरुति वॆळ्ळम्—रक्तधारा; अन्ति मालै—संध्या (सायं) काल में; तोन्ऱिय—प्रकट; चॆक्कर् वानम्—लाल आकाश; तॊटक्कु अऱ्ऱु—ग्रहण (आधार) खोकर; वीऴ्न्तत्तु ऑत्तु—गिरा हो ऐसा गिरकर; कान् तिरिन्तु—जंगल (प्रकृति) बदलकर; आऴि आक—समुद्र बन जाय, ऐसा; आन्ऱ—विशाल; अ कानम् ऍल्लाम्—उस जंगल भर में; आयिनतु—फैला। ४०९

ताड़का के वक्ष-स्थल के शर-विद्ध व्रण-मुख से जो रक्त बहा उसका फैलाव निराधार हो नीचे गिरे लाल गगन के समान लगा। वह रेतीले जंगल की प्रकृति को ही बदल कर रक्त-समुद्र वनाता हुआ सर्वत्र फैला। ४०९

❀ वाशनाण् मलरोत्तन्न मामुनि पणिम ऱाद
काशलाङ् गनहप् पैम्बूण् काहुत्तन् कन्निप् पोरिल्
कूशुवा ऴरक्कर् तङ्गळ् कुलत्तुयिर् कुडिक्क वञ्जि
आशया लुऴलुङ् गूऱ्ऱुञ् जुवैशिऱि दऱिन्द दन्ऱे 410

वाचम्—सुगन्धपूर्ण; नाळ् मलरोन्—सद्य-विकसित कमलासन; अन्न मा मुनि—सम महर्षि के; पणि मऱात—आज्ञा माननेवाले; काचु उलाम्—रत्न-जड़ित; कनकम् पचुमै पूण्—चोखे स्वर्णाभरणवाले; काकुत्तन्—काकुत्स्थ (श्रीराम) के; कन्नि पोरिल्—सर्वप्रथम युद्ध में; कूचु वाळ् अरक्कर् तङ्कळ्—डरानेवाली तलवार रखनेवाले राक्षसों के; कुलत्तु—वर्गों के; उयिर् कुटिक्क—जीवों के प्राण पीने से; अञ्चि—डरकर; आचैयाल्—लोभ के साथ; उऴलुम्—(मौके की ताक में) फिरनेवाले; कूऱ्ऱुम्—यम (ने) भी; चुवै चिऱितु अऱिन्ततु—स्वाद थोड़ा जाना; (अन्ऱु—ए)। ४१०

रावण के शासन काल में यम को न राक्षस-रक्त का पान मिला,

न राक्षस-मांस का खान; क्योंकि वह राक्षसों के तलवार आदि हथियारों से डरता था। फिर भी वह पिपासा लिये घूम रहा था। अब कमलासन ब्रह्मा के समान विश्वामित्र के आज्ञाकारी और रत्नजड़ित और स्वर्ण-निर्मित आभूषण-धारी श्री काकुत्स्थ (राम) ने अपने सर्वप्रथम युद्ध में उसे कुछ चखाया और उसे मांस का किंचित स्वाद मिला। ४१०

❀ यामुमॅम् मिरुक्कै पॅऱ्ऱे मुनक्किडै यूरु मिल्लैक्
कोमहऱ् किऩिय दॅय्वप् पडैक्कलङ् गॉडुत्ति यॅऩ्ऩा
मामुनिक् कुरैत्तुप् पिऩ्नर् विऱ्कॉण्ड मळैयऩ् ऩाऩ्मेऱ्
पूमळै पॉऴिन्दु वाऴ्त्ति विण्णवर् पोयिऩारे 411

विण्णवर्–देवता; लोग; यामुम्–हमने भी; ॲम् इरुक्कै पॅऱ्ऱेम्–अपना पद पाया; उनक्कुम् इटैयूरु इल्लै–आपको भी कोई बाधा नहीं (रहेगी); कोमकऱ्कु–चक्रवर्ती तनुज को; इनिय तॅय्वम् पटै कलम्–श्रेष्ठ दिव्य अस्त्र-शस्त्र; कॉटुत्ति–दिलायें; ॲऩ्ऩा–ऐसा; मा मुनिक्कु उरैत्तु–महान मुनि को कहकर; पिऩ्नर्–पश्चात; विल् कॉण्ट–धनुर्धर (या इन्द्र-धनुषवाले); मळै अऩ्ऩाऩ् मेल्–मेघ सदृश (श्रीराम) पर; पू मळै पॉऴिन्तु–पुष्प-वारिश (बरसा) कर; वाऴ्त्ति–बधाई देकर; पोयिऩार्–चले। ४११

स्वर्गवासी देवतागण इस घटना से मुदित हुए। उन्होंने महर्षि से कहा कि हमें अपने पद फिर से मिल गये। आपको भी रुकावटें अब नहीं रहेंगी। आप चक्रवर्ती-सुतों को अस्त्रोपदेश दिला दें। पश्चात् वे धनुर्धर (या इन्द्रधनुष सहित) मेघ-सदृश श्रीराम को बधाई देकर, कल्पक-सुमनों की वर्षा करके लौट गये। ४११

8. वेळ्विप् पडलम् (यज्ञ पटल)

विण्णवर् पोय पिऩ्ऱै विरिन्दपू मळैयि ऩाले
तण्णॅऩुङ् गाऩ नीङ्गित् ताङ्गरुन् दवत्तिऩ् मिक्कोऩ्
मण्णवर् वरुमै नोय्क्कु मरुन्दऩ शडैयऩ् वॅण्णॅय्
अण्णऱ्ऩ् शॊल्ले यऩ्ऩ पडैक्कल मरुळिनाऩ् 412

विण्णवर्–स्वर्गवासियों (के); विरिन्त पू मळैयिऩाले–पुष्कल पुष्प-वर्षा से; तण् ॲनुम्–शीतल बने; काऩम् नीङ्कि–जंगल को छोड़कर; पोय पिऩ्ऱै–जाने के बाद; ताङ्कु–सहनशील; अरु तवत्तिऩ् मिक्कोऩ्–तपस्या में उत्कृष्ट; मण्णवर्–पृथ्वी के वासियों के; वरुमै नोय्क्कु–दरिद्रता-रोग के लिए; मरुन्तु अ(ऩ्)ऩ–दवा के समान रहनेवाले और; वॅण्णॅय् अण्णल्–तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर के महिमायुक्त; चटैयऩ् तऩ्–शडैयप्पन के; चॊल्ले अऩ्ऩ–वचन के ही सम, (अमोघ); पटैक्कलम्–(अनेक) अस्त्र; अरुळिनाऩ्–(मन्त्र सहित) प्रदान किया। ४१२

देवों की पुष्प-वर्षा से वह जंगल शीतल बन गया। देव उस जंगल को छोड़कर चले गये। उनके जाने के बाद, अपार कष्ट सहकर की हुई बड़ी तपस्या से उत्कृष्ट(हुए)महर्षि ने श्रीराम को अनेक अस्त्र प्रदान किये। वे अस्त्र कवि के अभिभावक, वॅण्णॅय्नल्लूर के वासी, दरिद्रता के रोग की दवा के समान उदार दानी शडैयप्प वळ्ळल् के शब्द के समान अमोघ थे। (कवि ने अपने पोषक शडैयप्पन की कृतज्ञता के प्रदर्शन हेतु रामायण में अनेक स्थानों पर उनका नाम लेकर महिमा कही है।) ४१२

आऱिय वऱिवऩ् कूऱि यळित्तलु मण्ण ऱऩ्बाल्
ऊऱिय वुवहै योडु मुम्बर्तम् पडैह ळॅल्लाम्
तेऱिय मत्तत्ताऩ् शॅय्द नल्विऩैप् पयऩ्ग ळॅल्लाम्
माऱिय पिऱप्पिऱ् ऱेडि वरुवपोल् वन्द वऩ्ऱे 413

आऱिय अऱिवऩ्–दांत (संयमी) ज्ञानी; उम्पर्तम्–देवताओं के; पटैकळ् ॲल्लाम्–अस्त्र सब; कूऱि–(विस्तार से) विवरण कर; अळित्तलुम्–देने पर; तेऱिय मत्तत्ताऩ्–सुसंस्कृत विचारवाले के; चॅय्त–कृत; नल् विऩै पयऩ्कळ्–सत्कर्मों के फल; ॲल्लाम्–सभी; माऱिय पिऱप्पिल्–अन्य जन्म में; तेटि वरुव पोल्–खोजकर (पहचानकर) आते हैं जैसे; अण्णल् तऩ् पाल्–सम्मान्य (श्रीराम) के पास; ऊऱिय उवकैयोटुम्–(उत्तरोत्तर) रसनेवाले (बढ़नेवाले) उमंग के साथ; वन्त–आ पहुँचे। ४१३

दाँत (संयमी) ऋषि विश्वामित्र ने अस्त्रों के साथ उनसे संबंधित मन्त्र, उनको चलाने और लौटाने के उपाय आदि के भी उपदेश दिये। वे अस्त्र भी किसी के पूर्वकृत सत्कर्म के फल जैसे दूसरे जन्म में उसके पास स्वयं जाकर मिलते हैं, वैसे ही श्रीराम के पास आ गये। ४१३

मेविऩॅम् बिरिद लाऱ्ऱेम् वीरनी विदियि ऩॅम्मै
येविऩ शॅय्दु निऱ्ऱु मिळैयवऩ् पोल वॆऩ्ऱु
देवर्तम् बडैकळ् शॅप्पच् चॅव्विदॆऩ् ऱवऩु नेरप्
पूवैपो ऩिऱत्ति ऩाऱ्कुप् पुऱत्तॊऴ़िल् पुरिन्द वऩ्ऱे 414

तेवर् तम् पटैकळ्–दिव्यास्त्र; मेविऩॆम्–(आपके पास) आ गये; पिरितल् आऱ्ऱेम्–छोड़ना न सहेंगे; वीर–रघुवीर; नी–आप; वितियिऩ्–विधिवत्; ॲम्मै एविऩ–हमें जो सेवा बतलाते है वे; इळैयवऩ् पोल–आपके अनुज के समान; चॅय्तु निऱ्ऱुम्–करते रहेंगे; ॲऩ्ऱु–ऐसा; चॅप्प–कहने पर; अवऩुम्–वे (श्रीराम) भी; चॅव्वितु–श्रेष्ठ है; ॲऩ्ऱु नेर–कहकर स्वीकारने पर; पूवै पोल् निऱत्तिऩाऩ् कु–(अतसी ?) नील पुष्प से वर्णवाले को; अऩ्ऱे–तभी; पुऱम् तॊऴ़िल्–बाहरी, छोटी-मोटी सेवायें; पुरिन्त–करने लगे। ४१४

उन देवास्त्रों ने श्रीराम के पास निवेदन किया कि हम आपके पास आ गये हैं। अलग होना हमें सह्य नहीं होगा। हे रघुवीर! विधिवत्

आप जो भी सेवा चाहेंगे वह सहर्ष, आपके अनुज के समान करते हुए आपके पास रहेंगे। यह सुनकर श्रीराम ने तथाऽस्तु कहकर स्वीकार कर लिया। तभी से वे अस्त्र अतसी पुष्प के रंगवाले श्रीराम की वहिरंग सेवा में लग गये। ४१४

इनैयन निहळ्नद पिन्नरक् कावद मिरण्डु शॅन्ऱार्
अनैयवर् केट्क वाण्डो ररवम्वन् दणुहित् तोन्ऱ
मुनैववी दियाव दॅन्ऱु मुन्नवन् विनवप् पिन्नर्
विनैयऱ नोऱ्ऱु निन्ऱ मेलवन् विळम्ब लुऱ्ऱान् 415

इनैयन–ये सब; निकळ्नत पिन्तर्–घटने के बाद; कावतम्–(दस मील का) कोस; इरण्टु–दो; चॅन्ऱार्–गये; अनैयवर् केट्क–उनके कर्ण-गोचर होते हुए; आण्टु–वहाँ; ओर् अरवम्–एक ध्वनि; अणुकि वन्तु–पास आकर; तोन्ऱ–सुनायी देने पर; मुन्नवन्–ज्येष्ठ ने; मुनैव–श्रेष्ठ महानुभाव; ईतु यावतु ऍन्ऱु–यह क्या है ऐसा; विनव–पूछने पर; पिन्नर्–फिर; विनै अऱ–कर्मबन्धन काटकर; नोऱ्ऱु निन्ऱ–जो तप करके रहे; मेलवन्–उत्तम ऋषि; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ४१५

यह सब होने के बाद वे तीनों आगे दो कोस दूर गये। तब उनके कानों में एक ध्वनि पड़ी। ज्येष्ठ श्रीराम ने महर्षि से पूछा कि हे महानुभाव! यह ध्वनि कौन सी है? उस पर कर्म-बंधन काटते हुए तपस्या करके उन्नत हुए विश्वामित्र यों कहने लगे। ४१५

मानस मडुविऩ् ऱोन्ऱि वरुदलाऱ् चरयु वॅन्ऱे
मेन्मुऱै यमरर् पोऱ्ऱुम् विळ्ळुनदि यदनै नोडुम्
आनको मदिवन् दॅय्दु मरवम दॅन्ऩ वप्पाल्
पोन्पिन् पवङ्ग डीर्क्कुम् पुन्निदनीर् नदियै युऱ्ऱार् 416

मानच मटुविल्–मानस सरोवर से; तोन्ऱि वरुतलाल्–उत्पन्न होकर आने से; चरयु ऍन्ऱु–सरयू कहलाकर; मेल् मुऱै–उत्तम रीति से; अमरर् पोऱ्ऱुम्–देवताओं से प्रशंसित; विळु नति–श्रेष्ठ नदी; अततिनोटुम्–उसके साथ; आन–मिलनेवाली; कोमति वन्तु–गोमती (के) आकर; ऍय्तुम्–मिलने (गिरने) का; अरवम् अतु–ध्वनि, वह; ऍन्न–कहने पर; अप्पाल् पोन पिन्–आगे (कुछ दूर) जाने के बाद; पवङ्कळ् तीर्क्कुम्–भव-निवारक; पुन्नितम् नीर्–पवित्र जल वाली; नतियै–नदी पर; उऱ्ऱार्–आ पहुँचे। ४१६

मानस सरोवर से निकलकर आने से सरयू का नाम प्राप्त इस श्रेष्ठ नदी में, जिसकी देवता भी उत्तम रीति से प्रशंसा करते है, गोमती नदी आकर मिलती है। वह उसी मिलन की ध्वनि है। फिर वे आगे बढ़े और भव-नाशक एक नदी के तीर पर आ पहुँचे। (यह नदी कौशिकी थी।)। ४१६

सुरर्दॊळु दिरैञ्जर् कौत्त तूनदि याव दॆऩ्ऱु
वरमुनि तऩ्ऩै यण्णल् विऩवुऱ मलरुळ् वैहुम्
पिरमऩ् ऱळित्त वॆऩ्ऱिप् पॆरुन्दहै कुशऩॆऩ् ऱोदुम्
अरशर्को ऩळित्त मैन्द ररुमऱै यऩैय नाल्वर् 417

अण्णल्–सम्मानित (श्रीराम); चुरर्–सुरों के; तॊळुतु–विनय कर; इऱैञ्चर्कु ओत्त–स्तुति करने योग्य; तू नति–पुनीत नदी; यावतु–कौन सी; ऎऩ्ऱु–ऐसा; वर मुनि तऩ्ऩै–मुनिवर को; विनवुऱ–पूछने पर; मलर् उळ्–(कमल-) पुष्प के अन्दर; वैकुम्–रहनेवाले; पिरमऩ्–ब्रह्मा (से); अऩ्ऱु अळित्त–उस दिन दत्त; वॆऩ्ऱि–विजय; पॆरु तकै–उत्तम गुणवाले; कुचऩ् ऎऩ्ऱु ओतुम्–कुश कहलानेवाले; अरचर् कोऩ्–राजाधिराज; अळित्त मैन्तर्–जनित पुत्र; अरु मऱै अऩैय–श्रेष्ठ वेदों के समान; नाल्वर्–चार (थे)। ४१७

सम्माननीय श्रीराम ने मुनिवर से प्रश्न किया कि सुर-स्तुत्य यह पवित्र नदी कैसी है? तब उन्होंने विस्तार से निम्नलिखित वृत्तांत बखाना। कमलपुष्पवासी ब्रह्माजी ने कुश नामक राजाधिराज को जन्म दिया। वे विजयशील और उत्तम गुणवाले थे। कुश के (वैदर्भी नाम की पत्नी द्वारा) चार पुत्र पैदा हुए। ४१७

कुशऩ्कुश नाबऩ् कोदिल् गुणत्तिऩा दूर्त्तऩ् कॊऱ्ऱत्
तिशैकॊळु वशुवॆऩ् ऱोदु मिवर्पॆय रिवर्ह ळम्मुळ्
कुशऩ्कवु शाम्बि नाबऩ् कुळिर्महो दयमा दूर्त्तऩ्
वशैयिऱऩ् मवऩ मऱ्ऱै वशुगिरि विरशम् वाळ्न्दार् 418

इवर् पॆयर्–इनके नाम (थे); कुचन, कुचनापऩ् कोतु इल् कुणत्तिऩ् आतूर्त्तऩ्–कुश, कुशनाभ, अकलंक गुणों के आधूर्त; कॊऱ्ऱत्तु–विजयों के कारण; इचै कॊळु–कीर्ति में बढ़े; वचु ऎऩ्ऱु–वसु नाम से; ओतुम्–कहलानेवाले; इवर्कळ् तम्मुळ्–इनमें; कुचऩ्–कुश; कवुचाम्पि–कौशाम्बी (में); नापऩ्–(कुश-) नाभ; कुळिर् महोतयम्–शीतल महोदय (में); आतूर्त्तऩ्–आधूर्त; वचै इल्–आनिन्द्य; तऩ्म वनम्–धर्म-वन में; मऱ्ऱै–अन्य; वचु–वसु; किरि विरचम्–गिरिव्रज (में); वाळ्न्तार्–रहे। ४१८

ये, कुश, कुशनाभ, अकलंक गुणवाले आधूर्त और विजयी और कीर्तिमान वसु, चार थे। उनमें कुश कौशाम्बी नगर में, कुशनाभ शीतल महोदय नामक नगर में, आधूर्त अनिन्द्य धर्मवन में और अन्य वसु गिरिव्रज नामक नगर में (राजधानी बनाकर) रहते थे। ४१८

अवर्हळिऱ् कुशना बऱ्के यॆयिरु पदिऩ्म रञ्जॊल्
तुवरिदळ्त् तॊरिवै नल्लार् तोऩ्ऱिऩर् वळरु नाळिल्
इवर्पॊळिऱ् ऱलैक्क णायत् तॆय्दुळि वायु वॆय्दिक्
कवर्मऩत् तिऩ्ऩा यन्दक् कऩ्ऩियर् तम्मै नोक्कि 419

अवर्कळिल्–उनमें; कुचनापऱ्के–कुशनाभ के ही; अम् चोल्–मधुर बोली; तुवर् इतळ्–प्रवाल (सम लाल) अधरोंवाली; तॆरिवै नल्लार्–सुन्दर कन्यायें; ऐइरु पतिन्मर्–पाँच दो दस, एक सौ; तोन्ऱिनर्–पैदा होकर; वळरुम् नाळिल्–बढ़ती रहीं—तब; इवर्–ये; आयत्तु–सखियों के साथ; पॊळिल् तलै कण्–एक उपवन में; ऍय्तुळि–(जब) जा पहुँचीं तब; वायु ऍय्ति–वायुदेव आकर; अन्त कन्नियर् तम्मै नोक्कि–उन कुमारियों को देखकर; कवर् मतत्तितन् आय्–आकृष्ट-मन होकर। ४१६

उनमे कुशनाभ के ही एक सौ मधुर-भाषिणी, प्रवालाधरा कन्यायें पैदा हुईं। वे जब बढ़ रही थीं तब एक दिन वे सखियों के साथ एक उपवन में क्रीडार्थ गयीं। वहाँ वायु देव ने उन्हें देखा और वे उनके प्रेम में पड़ गये। तब उनसे वे यों बोले। ४१९

कौडित्तलै महरङ् गॊण्डोन् कुनिशिलैच् चरत्ता नॊन्देन्
वडित्तडङ् गण्णी रॆन्नै मणत्तिरॆन् ऱुरैप्प वॆन्दे
अडित्तलत् तुरैत्तु नीरो डळित्तिडि नणैदु मॆन्न
ऑडित्तनन् वॆरिनै वीळ्न्दा रौळिवळै महळि रॆल्लाम् 420

वटि तट कण्णीर्–तीक्ष्ण विशाल आँखोंवालियो!; कौटि तलै मकरम् कॊण्टोन्–मकरध्वज (मन्मथ) के; कुनि चिलै चरत्ताल्–झुके धनुष के शरों से; नॊन्तेन्–संतप्त हूँ; ऍन्नै मणत्तिर्–मेरे साथ विवाह कर लो; ऍन्ऱु उरैप्प–ऐसा कहते समय; ऑळि वळै–कांतियुक्त कंकण (धारिणी); मकळिर् ऍल्लाम्–कन्यायें सब; ऍन्तै अटि तलत्तु उरैत्तुम्–अपने पिता के चरणों में विनय करेंगी; नीरोटु अळित्तिटिन्–जल के साथ दान दे देंगे तो; अणैतुम्–(आप से) मिलेंगी; ऍन्न–ऐसा कहते समय; वॆरितै–पीठ को; ऑटित्तनन्–तोड़ दिया; वीळ्न्तार्–(वे) गिर पड़ीं। ४२०

तीक्ष्ण और विशाल आँखवालियो! मकरध्वज मन्मथ ने मुझ पर अपना इक्षु-धनुष झुकाकर पुष्प-शर मारे है। मैं वेदना से तड़प रहा हूँ। तुम लोग मेरे साथ विवाह कर लो। यह सुनकर उज्ज्वल कंकणधारिणी कन्याओं ने एक साथ कहा कि हम अपने पितृ-चरण में यह निवेदन करेंगे। कन्यादान में आपको दे देंगे तो हम आप से विवाह कर लेंगी। वे, अगर, दान-कर्म की विधि के अनुसार आपके हाथ में जल के साथ हमें समर्पित कर देंगे तो हम आपसे विवाह कर लेंगी। यह सुनकर वायु देव क्रुद्ध हुए। उन्होंने उनकी पीठ की रीढ़ को तोड़ दिया। वे भी बल खाकर गिर पड़ीं। (दाता दान लेनेवाले के दाहिने हाथ में जल देता है, वह अर्पण का निशान है)। ४२०

शमिरण नहनूऱ दऱ्पिन् ऱैयलार् तवळ्न्तु शॆन्ऱे
अमिर्दुहु कुदलै माळ्हि यरशन्माट् टुरैप्प वन्नान्

निमिर्हुळन् मादर्त् तेऱ्ऱि निऱैतवन् शूळि नलहुम्
तिमिरऱु पिरम दत्तऱ् कळित्तनन् ऱिरुव नारै 421

चमिरणन्–समीरण के; अकन्ऱतन् पिन्–छोड़ जाने के बाद; तैयलार्–कन्याएँ; माऴ्कि–घुलकर; तवऴ्न्तु चॆन्ऱु–रेंगती जाकर; अरचन् माट्टु–राजा (कुशनाभ) के पास; अमिर्तु उकु कुतलै–अमृत चूनेवाली अस्पष्ट वाणी में, (तुतलाकर); उरैप्प–कहते वक्त; अन्नान्–उन्होंने; निमिर् कुऴल्–लम्बे केश की; मातर्–कन्याओं को; तेऱ्ऱि–ढाढस देकर; तिरु अन्नारै–श्रीलक्ष्मी-सम उनको; निऱै तवन्–पूर्ण तपस्वी; चूळि नल्कुम्–चूली-जनित; तिमिर् अऱु–(अज्ञानरूपी) तिमिर के नाशक; पिरमतत्तऱ्कु–ब्रह्मदत्त को; अळित्तनन्–विवाह में दान कर दिया। ४२१

समीरण चले गये। फिर वे लड़कियाँ किसी तरह रेंगती हुई अपने पिता के पास गयीं और अपनी करुणाद्र तुतली बोली में जो हुआ सो बोलीं। कुशनाभ एक ओर खुश हुए कि मेरी कन्यायें अपनी मर्यादा और उचित व्यवहार जानती हैं तो दूसरी ओर उनकी स्थिति देखकर दुख हुआ। उन्होंने उनका ब्रह्मदत्त के साथ विवाह कर दिया। ये ब्रह्मदत्त अज्ञान काट चुके ज्ञानी थे और पूर्ण तपस्वी चूली के पुत्र थे। ४२१

अवन्मलर्क् करङ्ग डीण्डक् कून्निमिर्न् दळहु वाय्त्तार्
पुवनमुऱ् ऱुडैय कोवुम् पुतल्वरिल् लामै वॆळ्वि
तवननिऱ् पुरिद लोडुन् दहवुरत् तऴलि नाप्पण्
कवनवे हत्तु रङ्गक् कादिवन् दुदयञ् जॆय्दान् 422

अवन्–उनके; मलर् करङ्कळ् तीण्ट–कमल-हस्त-स्पर्श से (पाणिग्रहण करने पर); कून् निमिर्न्तु–ऐंठन (के) दूर होते; अऴकु वाय्त्तार्–सुन्दरता पा गयीं; पुवनम् मुऱ्ऱु उटैय–भुवन भर के; कोवुम्–स्वामी राजा भी; पुतल्वर् इल्लामै–पुत्र के अभाव के कारण; तवननिल्–अग्नि में; वेळ्वि पुरितलोटुम्–याग करने पर; तऴलिन् नाप्पण–अग्नि-मध्य से; तकवु उऱ–योग्यता के साथ; कवतम् वेकम्–गमन-गति में तीव्र; तुरङ्कम्–अश्वों की सेना (के स्वामी); काति–गाधि; वन्तु–आकर; उतयम् चॆय्तान्–उदित (प्रकट) हुए। ४२२

ब्रह्मदत्त के, पाणिग्रहण के अवसर पर, कर-कमल-स्पर्श से वे कन्यायें स्वस्थ सुन्दरियाँ बन गयी। राजा ने पुत्र की कामना से पुत्रकामेष्टि का यज्ञ किया। तो होम के अग्नि-मध्य से गाधि नाम के तेजस्वी पुत्र (उदय-सूर्य के समान) प्रकट हुए। उनकी तीव्रगामी अश्वसेना प्रसिद्ध थी। ४२२

अन्नवन् ऱन्कु वेन्द नरशोंडु मुडियु मीन्दु
पोन्नह रडैन्द पिन्नर्प् पुहऴ्महो दयत्तिल् वाऴुम्
मन्नवन् कादिक् कियानुङ् गौशिकि यॆन्नु मादुम्
मुन्नर्वन् दुदिप्प वन्द मुडियुडै वेन्दर् वेन्दन् 423

अन्नवन् तनक्कु–उन (गाधि) को; वेन्तन्–राजा (कुशनाभ); अरचॉट्टु–राज्य के साथ; मुटियुम्–मुकुट भी; ईन्तु–देकर; पॉन् नकर्–स्वर्गपुरी; अटैन्त पिन्नर्–पहुँचने के बाद; पुकळ् मकोतयत्तिल्–यश-प्राप्त महोदय में; मन्नवन् कातिक्कु–राजा गाधि के; यानुम्–मैं और; मुन्नर्–(उसके) पहले; कौचिकि ॲन्नुम् मातुम्–कौशिकी नाम की स्त्री; वन्तु उतित्प–आकर जनमने पर; अन्त मुटि उटै (य)–वे किरीटधारी; वेन्नर् वेन्तन्–राजाधिराज। ४२३

कुशनाभ ने गाधि को मुकुट पहनाकर राजा बनाया। फिर वे स्वर्ग सिधारे। महोदय के राजा गाधि के दो संताने हुयी। एक मेरी बहन कौशिकी थी। दूसरा मैं हूँ (विश्वामित्र)। ४२३

पिरुहुविन् मदलै याय पेरुन्तहै पितावु मॊव्वा
इरुशिह ॲन्नब वर्क्कव् वेन्दिळै याळै यीन्दान्
अरुमऱै यवनुज् जिन्ना ळऱम्बॊरु ळिन्नब मुऱ्ऱि
विरिमलर्त् तविशोन् ऱन्पाल् विळुत्तवम् पुरिन्दु मीण्डान् 424

पिरुकुविन् मतलै आय–भृगु के पुत्र; पॆरु तकै–श्रेष्ठ; पितावुम् ऑव्वा–पिता से भी तुलना में बढ़े; इरुचिकन् ॲन्नपवर्कु–ऋचीक नाम के (मुनि) को; अ एन्तु इळैयाळै–उस आभरण-भूषिता को; ईन्तान्–विवाह में दिया; अरु मऱै अवनुम्–अमूल्य वेदों के (ज्ञाता) वे भी; चिल नाळ्–कुछ समय; अऱम् पॊरुळ् इन्पम् मुऱ्ऱि–धर्मार्थकाम का साधन कर; विळु तवम् पुरिन्तु–श्रेष्ठ तपस्या करके; विरि मलर् तवचोन् तन् पाल्–विकसित कमल पर आसीन के पास; मीण्टान्–जा पहुँचे। ४२४

गाधी ने भृगु के पुत्र ऋचीक नामक ऋषि के साथ आभरण-भूषिता कौशिकी का विवाह कर दिया। ऋचीक बड़े योग्य वर थे और सदाचरण में उनके पिता भी उनकी समता नही कर सकते थे। ऋचीक ने कुछ काल गृहस्थ धर्म का, धमार्थकाम के संपादन में, उचित पालन किया। बाद बड़ी तपस्या करके ब्रह्म-लोक लौट गये। ४२४

कादलन् शेणि नीङ्गक् कौशिहि तरिक्क लाऱ्ऱाळ्
मीदुऱप् पडर्द लुऱ्ऱाळ् विळुनदि वडिव माहि
मादवर्क् करश नोक्कि मानिलत् तुरुह णीक्कप्
पोदुह नदिया यॆन्नाप् पूमह नुलहम् बुक्कान् 425

कातलन्–(प्रिय) पति (के); चेणिल् नीङ्क–आकाश (स्वर्ग) में जाने पर; कौचिकी–कौशिकी; तरिक्कल् आऱ्ऱाळ्–न सह सकी हो; विळु नति वटिवम् आकि–बड़ी एक नदी का रूप लेकर; मीतु उऱ–आकाश में बढ़कर; पटर्तल् उऱ्ऱाळ्–जाने लगीं; मा तवर्क्कु अरचन्–महान तपस्वियों में श्रेष्ठ; नोक्कि–देखकर; मा निलत्तु–विशाल पृथ्वी का; उरुकण्–दुख; नीक्क–दूर करने; नति आय्–(यही) नदी बनकर; पोतुक–जाओ; ॲन्ना–ऐसा कहकर; पूमकन् उलकम्–ब्रह्मा के लोक में; पुक्कान्–प्रवेश किया। ४२५

कौशिकी ने पतिदेव को आकाश-मार्ग पर जाते हुए देखा। वह पति-वियोग सह न सकी। अतः अपने सती-धर्म के पालनरूपी तपस्या से प्राप्त शक्ति के आधार पर नदी का रूप ले उनका पीछा करने लगीं। उन तपोधन ने अपनी पत्नी को देखकर यह उपदेश दिया कि तुम इसी नदी के रूप में रहकर भूलोक वासियों का ताप हरती रहो। बाद वे ब्रह्मा के लोक को चले गये। ४२५

ऍम्मुना णङ्गै यिन्द विरुनदि यायि नाळॆऩ्
ऱम्मुनि पुहलक् केळा वदिशय मिहवुन् दोऩ्ऱच्
चॆम्मलु मिळैय कोवुञ् जिऱिदिडन् दीर्न्द पिऩ्ऩर्
मैम्मलि पॊऴिल्या दॆऩ्ऩ मादवन् कूऱ लुऱ्ऱाऩ् 426

ऍम् मुऩ्ऩाळ्–मेरी पूर्वज; नङ्कै–देवी; इन्त इरु नति आयिऩाळ्–यह महा नदी बनीं; ऍऩ्ऱु–ऐसा; अ मुनि पुकल–उस मुनि के कहते; केळा–सुनकर; चॆम्मलुम् इळैय कोवुम्–पुरुषोत्तम और उनके भाई लघुराज; अतिचयम् मिकवुम् तोऩ्ऱ–विस्मय के अधिक होते; चिऱितु इटम्–थोड़ी दूर; तीर्न्त पिऩ्ऩर्–छूट जाने के बाद; मै मलि–अन्धकारमय; पॊऴिल् यातु–उपवन कौन सा; ऍऩ्ऩ–पूछने पर; मा तवऩ्–महान तपस्वी; कूऱल् उऱ्ऱाऩ्–कहने लगे। ४२६

मेरी पूर्वजा भगिनी यह महानदी बनीं। विश्वामित्र से यह सुनकर प्रभु श्रीराम और उनके अनुज लक्ष्मण विस्मित हुए। वे कुछ दूर आगे गये। तब एक वने रूप में अन्धकार से भरा उपवन आया। श्रीराम ने पूछा कि वह कौन सा आश्रम है। विश्वामित्र उत्तर में यों कहने लगे। ४२६

तङ्गणा यहरिऱ् ऱॆय्वन् दाऩ्पिऱि दिऩ्ऱॆऩ् ऱॆण्णुम्
मङ्गैमार् शिन्दै पोलत् तूयदु मऱ्ऱुङ् गेळाय्
ऍङ्गणाल् मऱैक्कुन् देव रऱिविऱ्कुम् पिऱर्क्कु मॆट्टाच्
चॆङ्गण्मा लिरुन्दु मेनाट् चॆय्दवञ् जॆय्द दऩ्ऱे 427

तङ्कळ् नायकरिऩ्–अपने पतियों के अलावा; तॆय्वम् ताऩ्–दैव ही; पिऱितु इऩ्ऱु–अन्य नहीं है; ऍऩ्ऱु ऍण्णुम्–ऐसा सोचनेवाली; मङ्कैमार् चिन्तै पोल–स्त्रियों के मन के समान; तूयतु–पवित्र है; मऱ्ऱुम्–और भी; केळाय्–सुनिये; ऍङ्कळ् नाल् मऱैक्कुम्–हमारे चारों वेदों; तेवर् अऱिविऱ्कुम्–देवों की बुद्धि; पिऱर्क्कुम्–और अन्य किसी के लिए भी; ऍट्टा–अगम्य; चॆम्कण् माल्–राजीव-लोचन विष्णु; मेल् नाळ्–प्राचीनकाल में एक समय; इरुन्तु–यहाँ रहकर; चॆय् तवम्–उद्दिष्ट तप; चॆय्ततु–(जहाँ पर) किया, यह है। ४२७

यह आश्रम सती-साध्वी के, जो अपने पति-देव को छोड़ किसी अन्य देव को मानती ही नहीं, मन के समान पवित्र स्थान है। और भी इसकी

यह महिमा है कि वेद, देवों का ज्ञान, और अन्य किसी के लिये भी अगम्य राजीवलोचन श्रीविष्णु यहाँ रहकर कभी तपस्या कर चुके है। ४२७

पारिन्पाल् विशुम्बिन् पालुम् पऱ्ऱऱ्प् पडिप्प दन्नान्
पेरॆन्बा नवन्शॆय् मायप् पॆरुम्बिणक् कॊरुङ्गु तेऱ्वार्
आरॆन्बा नमल मूर्त्ति करुदिय दऱिद ऱेऱ्ऱाम्
ईरैम्बा नूऴिक् काल मिरुन्दव मियऱ्ऱि यिट्टान् 428

पारिन् पाल्–भूमि पर; विचुम्पिन् पालुम्–आकाश में भी; पऱ्ऱु अऱ्–ईषना काटने के लिए; पटिप्पतु–जप करना; अन्नान् पेर्–उनका नाम; ॲन्पान्–ऐसा निर्दिष्ट; अवन् चॆय्–उनसे किये जानेवाले; मायम् पॆरु पिणक्कु–माया के विषम जाल; ऑरुङ्कु–पूर्ण रूपेण; तेर्वार् आर्–समझते कौन हैं; ॲन्पान्–ऐसा कहलानेवाले; अमलम् मूर्त्ति–अमल देव; करुतियतु–संकल्प क्या किया यह; अऱितल् तेऱ्ऱाम्–हम जान-बूझ नहीं सकते; ईर् ॲम्पान्–दो पचास (सौ); ऊऴि कालम्–कल्प काल; इरु तवम्–महान तपस्या; इयऱ्ऱियिट्टान्–कर चुके। ४२८

इह लोक और परलोक-दोनों के वासी अपना कर्म वंधन काटने के लिए जिनका नाम जपते है; और जिनके सम्वन्ध मे यह विस्मय किया जाता है कि कौन इनकी माया-लीलाओं की विचित्रताएँ जान सकते है वे अमल देव, न जाने क्या उद्देश्य लेकर, इधर सौ कल्प-काल तक तपोलीन रहे। ४२८

❀ आनव निङ्गुरै हिन्ऱवन् नाळ्वाय्, ऊनमिन् ञाल मॊट्टुङ्गु मॆयिऱ्ऱोर्
एनमॆ नुन्दिऱन् मावलि यॆन्बान्, वानमुम् वैयमुम् वौवुदल् चॆय्तान् 429

आतवन्–वे; इङ्कु उऱैकिन्ऱ–यहाँ रहते; अ नाळ् वाय्–उन दिनों; ऊनम् इल्–अखण्ड; ञालम्–लोक; ऑटुङ्कुम् ॲयिऱु–जिनके अन्दर समाये रहा ऐसे दाँतोंवाले; ओर् एनम् ॲनुम्–अनुपम वराह (अवतार) है, ऐसा मान्य; तिऱल्–पराक्रमी; मा वलि ॲन्पान्–महाबलि नामधारी; वैयमुम्–भूलोक को और; वानमुम्–आकाश-(स्वर्ग) लोक को; वौवुतल् चॆय्तान्–अधीन कर लिया। ४२९

वे जब यहाँ तपस्या करते रहे तब महाबलि ने उन वराह मूर्ति के समान, जिन्होंने अपने लम्बे और वक्र दाँतों के बीच भूमि को उठा ले अपने वश में रखा था, भू-लोक और स्वर्ग लोक दोनों को अपने वश में कर लिया। यहाँ विष्णु-देव के वराहावतार की घटना की ओर संकेत है। हिरण्याक्ष भूमि को चटाई के समान लपेट कर उसके साथ समुद्र में जा छिपा। श्रीमन्नारायण ने वराह बनकर हिरण्याक्ष को मारा और भूमि को अपने दाँतों के ऊपर धर कर बाहर लाकर पूर्ववत स्थिर किया। उस वराह के समान महाबलि बलशाली था। ४२९

❀ शॆय्दवन् वानव रुञ्जॆय लाऱ्ऱा, नॆय्तवळ् वॆळ्वियै मुऱ्ऱिड निन्ऱान्
ऐयमिल् शिन्दैय नन्दणर् तम्बाल्, वैयमुम् यावुम् वळङ्ग वलित्तान् 430

चॆय्तवऩ्–ऐसा किया, वह; ऐयम् इल् चिन्तैयऩ्–दृढ़चित्त होकर; वाऩवरुम् चॆयल् आऱ्ऱा–देवताओं के लिए भी अशक्य; नॆय् तवऴ्–घृत हवनवाले; वेळ्वियै–यज्ञ को; मुऱ्ऱिट निऩ्ऱाऩ्–सम्पन्न करने को उद्यत; वैयमुम्–धरणी को; यावुम्–और सबको; अन्तणर् तम् पाल्–ब्राह्मणों के पास; वऴङ्क–दान में देने को; वलित्ताऩ्–ठाना। ४३०

महावलि को दोनों लोकों को वश में करने के बाद अपनी शक्ति पर दृढ़ विश्वास हो गया। उसने संकल्प किया कि मैं घृत-होम का बड़ा यज्ञ करूँगा। और उसके अन्त में ब्राह्मणों को भूदान आदि दान करूँगा। ४३०

❀ आयद ऱिन्दनर् वाऩव रन्नाळ्, मायऩै वन्दु वणङ्गि यिरन्दार्
तीयवऩ् वॆन्दॊऴि ऱीरॆऩ निऩ्ऱार्, नायह नुम्मदु शॆय्य नयन्दाऩ् 431

आयतु–वह बात; वाऩवर्–देवता लोग; अऱिन्तऩर्–जान गये; अन्नाळ्–तब; वन्तु–यहाँ आकर; मायऩै वणङ्कि–मायावी का नमस्कार कर; तीयवऩ्–दुर्जन; वॆम् तॊऴिल्–बुरे प्रयत्न को; तीर् ऎऩ–विफल बनाइये; ऎऩ इरन्तार् निऩ्ऱार्–ऐसा याचना करते हुए खड़े रहे; नायकऩुम्–नायक भी; अतु चॆय्य–वह करने का; नयन्ताऩ्–कृत-निश्चय हुआ। ४३१

इसका संकल्प देवों पर प्रकट हो गया। वे इधर आये। उन्होंने श्रीविष्णु से विनय की कि दुराचारी असुर, महावलि का संकल्प चूर कर दें। जगन्नायक ने भी बात मान ली। ४३१

❀ काल नुणित्तुणर् काशिब ऩॆन्नुम्, वालऱि वऱ्कदि दिक्कॊरु महवाय्
नील निऱत्तु नॆडुन्दहै वन्दोर्, आलमर् वित्तिऩ् अरुङ्गुऱ ळानाऩ् 432

नील निऱत्तु–श्याम रंग के; नॆटु तकै–महिमायुक्त विष्णु; कालम् नुणित्तु–कालगति को सूक्ष्म रूप से देखकर; उणर्–जाननेवाले; काचिपऩ् ऎऩ्ऩुम्–काश्यप नाम के; वाल् अऱिवऱ्कुम्–आत्मज्ञानी को; अतितिक्कुम्–अदिति को; ऒरु मकवु आय्–एक पुत्र के रूप में; वन्तु–आकर; ओर् आल् अमर्–विशाल वटवृक्ष का आश्रय; वित्तिऩ्–बीज के समान; अरु कुऱळ्–बहुत ही छोटे रूप के; आनाऩ्–हुए। ४३२

ऊँचे और श्याम रंग के श्रीविष्णु, जो सर्व-कल्याणगुण-संपन्न थे, त्रिकाल ज्ञानी काश्यप और उनकी पत्नी अदिति के पुत्र के रूप में अवतरित हुए। वट-वृक्ष के बीज के समान, जो बड़े वृक्ष को अन्दर छिपाये रखता है, वे बहुत ही छोटे वामन (बौने) थे। ४३२

❀ मुप्पुरि नूलिनऩ् मुञ्जियऩ् विञ्जै, कऱ्पदोर् नाविनऩ् पुऱ्पड् कैयऩ्
अऱ्पुद नऱ्पुद रॆयऱि युन्दऩ्, शिऱ्पद मॊप्पदोर् मॆय्क्कॊडु शॆऩ्ऱाऩ् 433

अऱ्पुतऩ्–अद्भुत; मुप्पुरि नूलिऩऩ्–यज्ञोपवीतधारी; मुञ्चियऩ्–मूँज की करधनीवाले; विञ्चै कऱ्पतु–वेदमन्त्र उच्चारण करनेवाली; ओर् नाविऩऩ्–अद्वितीय जीभवाले; पुल् पट्टु कैयऩ्–कुश लिये हाथवाले; अऱ्पुतरे अऱियुम्–अद्भुत

ज्ञानी से ही जानने योग्य; चित् पतम् ओप्पतु—ज्ञान-स्वरूप-सम; ओर् मेय् कोंटु—एक शरीर लेकर; चेंन्ऱान्–(महावलि की) यज्ञशाला में गये। ४३३

वे अद्भुत देव, यज्ञोपवीत, और मूँज की करधनी पहने, मुख (जीभ) से वेद मन्त्र उच्चारण करते हुए, हाथ में कुश लिये अपने ज्ञानियों द्वारा ही ज्ञेय चिन्मय वामन रूप में महावलि की यज्ञशाला में गये। ४३३

❀ अन्ऱवन् वन्द दऱिन्दुल हॅल्लाम्, वॅन्ऱवन् मुन्दि वियन्दॅदिर् कॉण्डान्
निन्ऱुणै यन्दणरिल्लै निऱैन्दोय्, ऍन्ऱनि नुय्न्दवर् यारुळ रॅन्ऱान् 434

उलकु ऍलाम् वॅन्ऱवन्–भुवन सब जीतनेवाले; अन्ऱु अवन् वन्ततु अऱिन्तु—तब उनका आना जानकर; मुन्ति–आगे जाकर; वियन्तु–विस्मय करके; ऍतिर् कॉण्टान्–स्वागत किया; निऱैन्तोय्–(गुण-) पूर्ण; निन् तुणै अन्तणर् इल्लै—आपके समान ब्राह्मण नहीं हैं; ऍन् ततिन्–मुझ से बढ़कर; उय्न्तवर्–उज्जीवित; यार् उळर्–कौन हैं; ऍन्ऱान्–(शिष्टाचार के) ये वचन कहे। ४३४

सभी लोकों को जीतनेवाले महावलि ने वामन देव का आगमन जाना तो विस्मय किया और उनके सामने जाकर उनका स्वागत किया। उसने शिष्टतापूर्ण निवेदन किया कि (सर्वगुण-) सम्पूर्ण विप्र! आपके समान कोई और ब्राह्मण इस विशाल विश्व में नहीं है। आप मेरे यहाँ आये हैं। अतः मुझसे बढ़कर भाग्यवान कृतकृत्य कौन होगा? (सर्वगुण-संपूर्ण का अर्थ देनेवाले तमिऴ शब्द का 'सर्वव्यापी' अर्थ भी हो सकता है)। ४३४

❀ आण्डहै यव्वुरै कूऱ वऱिन्दोन्, वेण्डिनर् वेट्कैयिन् मेऱ्पड वीशि
नीण्डकै यायिनि निन्नुळै वन्दोर्, माण्डव रल्लवर् माण्बिल रॅन्ऱान् 435

आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; अ उरै कूऱ–वह वचन कहते समय; अऱिन्तोन्–सर्वज्ञ; वेण्टिनर्–याचकों को; वेट्कैयिन् मेल् पट–माँगे से अधिक; वीचि–बिना हिचक देकर; नीण्ट–(दान में) बड़े (बने); कैयाय्–हाथोंवाले; इनि–अब; निन् उळै–आपके पास; वन्तोर्–आगत; माण्टवर्–यश-प्राप्त है; अल्लवर्–(जो) न आये, वे; माण्पु इलर्–गौरव-वंचित है; ऍन्ऱान्–कहा। ४३५

महावलि श्रेष्ठ पुरुष था। उसने जब यह शिष्ट वचन कहा तब सर्वज्ञ वामनदेव ने उत्तर मे कहा कि आप के हाथ याचकों को अभीष्ट से भी अधिक, निस्संकोच देकर दीर्घ-यश हो गये है। आपके पास कुछ मांगते हुए आनेवाले को गौरव मिलता है। न आनेवाले गौरव से वंचित रह जाते हैं। ४३५

❀ शिन्दै युवन्दॅदि रॅन्शॅय वॅन्ऱान्, अन्दणन् मूवडि मण्णरु ळुण्डेल्
वॅन्दिऱ लोय्दर वॅण्डु मॅनामुन्, तन्दनॆ नॆन्ऱनन् वॅळ्ळि तडुत्तान् 436

चिन्तै उवन्तु–मन-मुग्ध होकर; ऍतिर्–उत्तर में; ऍन् चॅय–क्या करना

(हैं); ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा; अन्तणन्–ब्राह्मण; वॆम् तिऱलोय्–तापक शक्तिशाली; अरुळ् उण्टेल्–दया हो तो; मू अटि–तीन पादों की; मण् तर वेण्टुम्–भूमि देने की कृपा हो; ऎन्ऩा मुऩ्–कहने से पहले; तन्तनॆन्–दिया; ऎन्ऱतन्–कहा; वॆळ्ळि–शुक्र (ने); तट्टुत्ताऩ्–रोका। ४३६

महाबलि यह सुनकर मुदित हुआ। और पूछा कि अब क्या करना है? विप्र-वेषधारी वामन ने कहा कि परंतप बलवान! दया हो तो "पादत्रयाकांत" भूमि दे दीजिये। उनके कह चुकने के पहले ही महाबलि ने 'दे दिया' कह दिया। शुक्राचार्य ने उनको रोका और कहा—। ४३६

❀ कण्ड तिऱत्तिदु कैतव मैय, कॊण्ड ऩिऱक्कुऱ ळॆऩ्बदु कॊळ्ळेल्
अण्डमु मऱ्ऱै यहण्डमु मेऩाळ्, उण्डव ऩामिदु णर्न्तुहॊ ळॆऩ्ऱाऩ् 437

ऐय–नृप; कण्ट तिऱत्तु–प्रत्यक्ष; इतु–यह रूप; कैतवम्–कैतव है; कॊण्टल् निऱम्–मेघ-वर्ण; कुऱळ् ऎन्पतु–छोटे है, यह; कॊळ्ळेल्–मत समझिये; अण्टमुम्–यह अण्ड; मऱ्ऱै अकण्टमुम्–अन्य अखण्ड प्रपंच को; मेल नाळ्–पहले कभी; उण्टवन् आम्–(जिन्होंने) निगल लिया वे ही है; इतु–उणर्न्तु कॊळ्–यह समझ लीजिये; ऎन्ऱाऩ्–कहा। ४३७

प्रभु! आप इनके हमारी आँखों के सामने रहनेवाले रूप को सच समझ रहे हैं। यह धोखा है। मेघ-श्याम के इस बौने रूप को सत्य न मानिये। ये वही हैं जिन्होंने कभी सारे अण्ड-पराण्डों को अपने उदरस्थ कर लिया था। ये स्वयं भगवान विष्णु हैं। जानिये। ४३७

❀ निऩैक्किलै यॆऩकै निमिर्न्दिड वन्दु, तनक्किय लावहै ताऴ्वदु ताविल्
कऩक्करि याऩदु कैत्तल मॆऩ्ऩिऩ्, ऎऩक्किदऩ् मेऩल मियादुकॊ लॆऩ्ऱाऩ् 438

तनक्कु इयला वकै–अपने लिए अप्राकृत रूप से; वन्तु–आकर; ऎन् कै–मेरे हाथ; निमिर्न्तिट–ऊपर करके; ताऴ्वतु–नीचा रहनेवाला; ता इल्–निर्मल; कऩम् करियाततु–मेघ-श्याम का; कै तलम्–हस्त-तल है; ऎन्ऩिऩ्–तो; ऎऩक्कु–मेरा; इतन् मेल्–इससे बढ़कर; नलम् यातु–हित क्या है; निऩैक्किलै–आपने ध्यान नहीं दिया; ऎन्ऱाऩ्–कहा। ४३८

महाबलि ने उत्तर दिया—वैसा है तो यह उनके लिए असाधारण है। अगर ये जो मेरे हाथ को ऊपर और अपने हाथ को नीचे रखकर दान लेने आये हैं, स्वयं मेघवर्ण श्रीमन्नारायण हैं तो इससे बढ़कर मेरा सौभाग्य क्या होगा? आपने यह बात नहीं सोची! । ४३८

तुऩ्ऩिऩर् तुऩ्ऩल रॆऩ्बदु शॊल्लार्, मुऩ्ऩिय नऩ्ऩॆऱि नूलवर् मुऩ्वन्
दुऩ्ऩिय दाऩ मुयर्न्दवर् कॊळ्ह, ऎऩ्ऩि इलिवऩ्ऱुणै याव रुयर्न्दार् 439

मुऩ्ऩिय–सम्मान्य; नल् नॆऱि–सन्मार्ग के; नूलवर्–शास्त्रज्ञ; मुन् वन्तु–आगे आकर; उन्निय–उद्दिष्ट; तानम्–दान को; उयर्न्तवर्–(योग्य) श्रेष्ठ;

कोळ्क–ले लें; ॲन्निल्–यह कहकर करेंगे तो; तुन्निनर्–अपने; तुन्नलर्–पराये; ॲन्पतु–है, यह; चोल्लार्–नहीं बोलते; इवन् तुणै उयर्न्तार्–इनके समान उन्नत; यावर्–कौन है। ४३९

सम्मान्य धर्मशास्त्रज्ञ, जब यह देखते हैं कि दान देने को उद्यत होकर, कोई योग्य श्रेष्ठ व्यक्ति आकर ले ले—यह घोषणा करके दान देने लगते हैं तब अपना-पराया यह बात नहीं करते। और भी इनके समान योग्य और उत्कृष्ट याचक कौन होंगे? इनको आप देव (सुर-शत्रु) मानकर ऐसी बात न कहें। ४३९

वॅळ्ळियै यादल् विळम्बिनै मेलोर्, वळ्ळिय राह वळङ्गुव दल्लाल्
ॲळ्ळुव वॅन्शिल विन्नुयि रेनुम्, कोळ्ळुदल् तीदु कॉडुप्पदु नन्राल् 440

वॅळ्ळियै आतल्–अल्प-बुद्धि है, इसलिए; विळम्पिनै–आपने ऐसा कहा; वळ्ळियर् आक–दाता बनना हो तो; वळङ्कुवतु अल्लाल्–देते रहने के सिवाय; ॲळ्ळुव चिल–रोकने योग्य कुछ; ॲन्–क्या होंगे; इनिय उयिरे आयितुम्–प्यारा प्राण भी हो तो; कोळ्ळुतल्–माँग लेना; तीतु–बुरा है; कोटुप्पतु–देना; नन्रु–अच्छा है; (आल्)। ४४०

आप शुक्र हैं—यानी निपट कोरे हैं। (असुर-गुरु हैं, हमारे पक्षपाती हैं।) इसलिए आपने ऐसा कहा। दानी बनना हो तो याचित सभी वस्तुओं को देने के सिवा, बचाये रखने योग्य कुछ है क्या? प्राण भी हों—मांगना बुरा है; पर मांगने पर देना श्लाघ्य और भला है। ४४०

❀ मायन्दवर् मायन्दव रल्लर्हण् माया, देन्दिय कैहॊ डिरन्दव रॅन्दाय्
वीन्दव रॅन्बवर् वीन्दव रेनुम्, ईन्दव रन्रि यिरुन्दवर् यारे 441

ॲन्ताय्–(मेरे) तात; मायन्तवर्–(जो) मरे वे सब; मायन्तवर् अल्लर्–मृतक नहीं है; मायातु–प्राण न त्यागकर; एन्तिय कै कोटु–याचना के लिए बढ़े हाथ के साथ; इरन्तवर्–याचना करनेवाले ही; वीन्तवर्–मृतक (कहलाने योग्य) है; वीन्तवरेनुम्–मृतक भी; ईन्तवर् अन्रि–(याचित वस्तु) देनेवाले के सिवा; इरुन्तवर् यार्–(अमर) रहे कौन? । ४४१

पितृतुल्य ! जो मरे है वे सचमुच मृतक नहीं है। पर जो बिना प्राण त्यागे दूसरों के सामने याचना करते हुए हाथ बढ़ाते फिरते है उनको मृतक कहना चाहिए। जो मर गये हैं वे भी अगर दानी रहे हों तो अमर (नाम) हो जाते है। उनको छोड़कर स्थायी रहनेवाले कौन है? ४४१

अडुप्प वरुम्बऴि शॅय्ज्जरु मल्लर्, कॊडुप्पवर् मुन्बु कॊडॆलॆन्न निन्रु
तडुप्पव रेपहै तम्मैयु मन्नार्, कॅडुप्पव रन्नदोर् केडिलै यॅन्रान् 442

अरु पऴि अटुप्प–अमिट निंदा प्राप्त हो ऐसा; चॅय्ज्जरुम्–बुराई करनेवाले भी; अल्लर्–(शत्रु) नहीं; कॊटुप्पवर् मुन्पु निन्रु–दान देनेवाले के सामने खड़े होकर;

कॉटेल् अॅन–मत दो यह कहकर; तट्टुप्पवरे–रोकनेवाले ही; पकै–शत्रु हैं; अन्नार्–वे; तम्मैयुम्–अपने को भी; कॅट्टुप्पवर्–बिगाड़नेवाले होते हैं; अन्नतु–उसके समान; ओर् केट्टु इलै–कोई बुराई नहीं है; अॅन्ऱान्–कहा। ४४२

अमिट कलंक लेकर जो किसी की खुले रूप से हानि करते हैं, वे शत्रु नहीं है। पर दान देनेवालों के आड़े आकर 'मत दो', कहनेवाले ही उसके शत्रु हैं। ऐसा रोकनेवाले अपनी भी हानि करा लेते है। इससे बढ़कर अन्य कोई बुरा काम नहीं है। ४४२

कट्टुरै युत्तमर् कैत्तुळ पॉऴ्दे, इट्टिशै कॉण्डऱ नॅय्द मुयन्ऱोर्क्
कुट्टॅऱ वॅम्बहै याव दुलोबम्, विट्टिड लॅन्ऱु विलक्किनर् मादो 443

कट्टुरै उत्तमर्–धर्मोपदेशक उत्तम लोग; कैत्तु उळ पोऴ्ते–अपने वश में सम्पत्ति के रहते समय ही; इट्टु–देकर; इचै कॉण्टु–यश पाकर; अऱन् अॅय्त–पुण्य प्राप्त करने का; मुयन्ऱोर्क्कु–प्रयत्न करनेवालों को; उळ् तॅऱु–अन्दर से बिगाड़नेवाला; वॅम् पकै–भयंकर शत्रु; आवतु–जो बनता है वह; उलोपम्–लोभ है; विट्टिटल्–दूर करो; अॅन्ऱु–कहकर; विलक्किनर्–त्याज्य किया। ४४३

धर्म के उपदेशक उत्तम लोगों ने लोभ को त्याज्य कहा है। उनका कहना है कि अपने वश में संपत्ति के रहते समय में ही दान करो; यश कमाओ और पुण्य भी बना लो। इसका प्रयत्न करनेवालों को उसके ही अन्दर से रोकनेवाला शत्रु लोभ है। उसको त्याग दो। ४४३

ॲडुत्तॊरुव रुक्कॊरुव रीवदनिन् मुन्नम्
तडुप्पदु निनक्कऴहि दोतहविल् वॅऴ्ळि
कॊडुप्पदु विलक्कुकॊडि योर्तमदु शुऱ्ऱम्
उडुप्पदुवु मुण्बदुवु मिन्ऱियॊऴि युङ्गाण् 444

ऑरुवरुक्कु–किसी को; ऑरुवर–कोई; अॅटुत्तु ईवतन् मुन्नम्–(याचित वस्तु) लेकर देने से पहले; तट्टुप्पतु–रोकना; निनक्कु अऴकितो–आपको शोभा देता है क्या; तकवु इल् वॅळ्ळि–श्रेष्ठता शून्य शुक्र; कॊटुप्पतु–दान को; विलक्कु–रोकनेवाले; कॊटियोर् तमतु चुऱ्ऱम्–बुरे लोगों के परिवार भी; उटुप्पतुवुम् उण्पतुवुम् इन्ऱि–भोजन और वस्त्र के बिना; ऑऴियुम्–बिगड़ जायँगे; काण्–देखिये। ४४४

किसी को किसी दूसरे की याचित वस्तु लेकर देने के पहले ही उसको रोकना क्या आपके लिए शोभनीय है? श्रेष्ठता-शून्य शुक्राचार्य! दान को रोकनेवाले दुर्जनों के बंधु-बांधव भी भोजन और वस्त्र को तरसेंगे और नष्ट हो जायँगे। यह आप सोच ले। ४४४

❀ मुडियविम् मॊऴियॅला मॊऴिन्दु मन्दिरि
कॊडियनॅन् ऱुरैत्तशॊ लॊन्ऱुङ् गॊण्डिलन्

अडियॊरु मून्ऱुनी यळन्दु कॊळ्हॆन्ऩ
नॆडियवन् कुऱियहै नीरै नीट्टिनान् 445

इ मॊऴि ऍल्लाम्–यह कथन सब; मुटिय–पूर्ण रूप से (जी भरकर); मॊऴिन्तु–कहकर; मन्तिरि–मन्त्री (का); कॊटियन् ऍन्ऱ–'वंचक', ऐसा; उरैत्त चॊल्–कहा वचन; ऒन्ऱुम् कॊण्टिलन्–कोई परवाह न करके; अटि ऒरु मून्ऱुम्–पाद तीन; नी अळन्तु कॊळ्क–आप माप लें; ऍन–ऐसा कहकर; नॆटियवन्–उन्नत देव के; कुऱिय कै–छोटे हाथ में; नीरै–दानोदक को; नीट्टिनान्–बढ़ाया (डाला)। ४४५

महाबलि ने यह सब तृप्ति-भर कहा; शुक्राचार्य ने वामन के सम्बन्ध में जो मायावी, वंचक कहा उसको कोई मूल्य नहीं दिया। उसने वामन से कह दिया कि आपही तीन पाद-मापों की भूमि नाप लें। दान को स्थिर करने के लिए उसने उनके हाथ में उदक भी डाल दिया। ४४५

❀ कयन्दरु नऱुम्बुनल् कैयिऱ् ऱीण्डलुम्
पयन्दवर् हळुमिहळ् कुऱळन् पार्त्तॆदिर्
वियन्दवर् वॆरुक्कॊळ विशुम्बि नॊङ्गिनान्
उयर्न्दवर्क् कुदविय वुदवि यॊप्पवे 446

कयम् तरु–सरोवर से प्राप्त; नऱुम् पुनल्–श्रेष्ठ (दान-) जल के; कैयिल् तीण्टलुम्–हाथ में लगते ही; पयन्तवर्कलुम्–जनकों (माँ-बाप) द्वारा भी परिहास्य; कुऱळन्–वामन-रूपधारी; ऍतिर्–सामने देख; वियन्तवर–विस्मयाभिभूतों (के); वॆरु कॊळ–भयभीत होते; उयर्न्तवर्क्कु उतविय–उत्तम पात्र को दी गयी; उतवि ऒप्प–सहायता के समान; विचुम्पिन् ओङ्कितान्–आकाश में उन्नत हो गये। ४४६

उस स्वच्छ सरोवर के उदक को वामनदेव के हाथ में पड़ना ही था कि वामनदेव, जिनका रूप देखकर स्वयं माता-पिता को भी हँसी आ सकती थी, देखनेवालों को पहले विस्मय में, बाद में, भय में डालते हुए आकाश में ऊँचे बढ़े और त्रिविक्रम बन गये। उनका बढ़ना, उत्तम लोगों के प्रति की हुई सहायता का फल जैसा उन्नति को प्राप्त करती है, वैसा था। ४४६

❀ निन्ऱकान् मण्णॆला निरम्बि यप्पुरम्, शॆन्ऱुपा वियदिलै शिऱिदु पारॆन्ना
ऒन्ऱवा नुलहॆला मॊडुक्कि युम्बरै, वॆन्ऱकान् मीण्डदु वॆळिपॆ ऱामैये 447

निन्ऱ काल्–भूमि पर रहा श्रीपाद; मण् ऍलाम् निरम्पि–भूतल भर में फैलकर; पार् चिऱितु ऍन्ना–धरती को छोटी मान कर; अप्पुरम्–परे; चॆन्ऱु पावियतु इलै–जाकर फैला नहीं; वानुलकु ऍलाम्–ऊपर के लोकों, सभी को; ऒन्ऱ ऒटुक्कि–अपने में अन्तरित कर; उम्परै वॆन्ऱ काल्–सुरलोक को अन्तरित करनेवाला श्रीचरण; वॆळि पॆऱामै–स्थल न पाने से; मीण्टतु–लौट आया। ४४७

भूमि पर रहा श्रीचरण भूलोक को नाप आया। भूमि छोटी रह

गयी; इसलिए ही वह लौट गया। वैसे ही सुरलोकों को पूर्णरूप से एक श्रीचरण ने अन्तरित कर नाप लिया। आगे वहाँ भी स्थान नहीं रहा। ४४७

❀उलहॅला मुळ्ळडि यडक्कि योरडिक्, कलहिला दव्वडिक् कन्बन् मॅय्यदेल्
इलैहुलान् दुळाय्मुडि येह नायहन्, शिलैकुलान् दोळिन्नाय् शिरियन् शालवे 448

उलकु ॲलाम्–लोक, सारे; उळ अटि–अपने (दोनों) चरणों के अन्दर; अटक्कि–नापकर; ओर् अटिक्कु–(बाकी) एक पग के लिए; अलकु इलातु–लोकों में स्थान न मिलने से; अ अटिक्कु–उस पग के लिए; अऩ्पऩ् मॅय् अतु–भक्त का शरीर (लक्ष्य) बना; एल्–तो; चिलै कुलावुम्–धनुष-शोभित; तोळिऩाय्–भुजावाले; इलै कुलावुम्–पत्रों सहित; तुळाय् मुटि–तुलसी की माला से शोभायमान किरीटधारी; एक नायकऩ्–अद्वितीय जगन्नाथ; चाल च्चिरियऩ्–बहुत ही छोटे हैं। ४४८

सारे लोकों को श्री त्रिविक्रमदेव ने दो पगों में नाप लिया। तीसरे चरण के लिये स्थान नहीं रहा। इसलिए उन्हें भक्त के शरीर को ही उसका स्थान बनाना पड़ा। यह बात है तो, हे धनुष से शोभित भुजावाले श्रीराम ! श्री तुलसी-पत्र की माला से शोभित किरीटधारी श्रीविष्णु बहुत छोटे हैं न ? उनकी महिमा का कैसे वर्णन हो ? । ४४८

❀ उरियदिन् दिरर्किदॆन् ऱुलह मीन्दुपोय्
विरिदिरैप् पार्कडर् पळ्ळि मेविनान्
करियवऩ् ऱुलहॅलाङ् गडन्द ताळिणै
तिरुमहळ् करन्दॊडच् चिवन्दु काट्टवे 449

करियवऩ्–श्यामल; इतु इन्तिरऱ्कु उरियतु–यह देवेन्द्र का स्वत्व है; ॲऩ्ऱु–यह कहकर; उलकम् ईन्तु–लोकों को देकर; विरि तिरै–विशाल तरंगोंवाले; पाल् कटल् पोय्–क्षीरसागर पर जाकर; उलकु ॲलाम् कटन्त–सारे लोकों को नापकर जो पार हुए; ताळ् इणै–उन चरण-द्वय के; तिरुमकळ् करम् तॊट–श्रीलक्ष्मी के हस्तों के स्पर्श से; चिवन्तु काट्ट–लाल हो दिखते; पळ्ळि–(नाग) शय्या पर; मेविनाऩ्–चढ़े (योग-निद्रा में रत हुए)। ४४९

बाद श्याममूर्ति ने सारे लोकों को इन्द्र की संपत्ति मानकर उनके अधीन कर दिया। फिर वे क्षीरसागर पर जाकर शेषशायी बन गये। तब श्रीलक्ष्मीदेवी उनके पैर दबाने लगीं। आश्चर्य है कि सारे लोकों को नाप आनेवाले पैर श्रीलक्ष्मीदेवी के मृदुल कर-स्पर्श को भी सह नहीं सके। वे लाल हो गये। ऐसे कोमल पैर ही लोकों के ऊबड़-खाबड़, ऊँच-नीच प्रदेशों पर फैले थे। कितना कष्ट हुआ होगा उन्हें ? । ४४९

आदला लरुविनै यरुक्कु मारिय, कादलार् कण्डवर् पिरवि काण्गुरार्
वेदनून् मुडैमैयाल् वॆळ्वि मुऱ्ऱुवेर्, कोदला दिल्लैवे ऱिरुक्कर् पालदे 450

आतलाल्–इन (कारणों) से; कातलाल् कण्टवर्–प्रेम से दर्शन करनेवालों का अरुवितै अरुक्कुम्–कठोर कर्म-बन्धन काट देगा; पिरवि काण्कुरार्–फिर जन्म न देखेंगे (लेंगे); आरिय–पूज्य; वेतम् नूल्–वेद-शास्त्र (विहित); मुरैमैयाल्–रीति से; वेळ्वि मुट्रुवेर्कु–याग करनेवाले मुझे; इरुक्कल् पालतु–रहने योग्य स्थान; ईतु अलातु–इसके सिवा; वेरु इल्लै–कोई दूसरा नहीं है। ४५०

इन सबसे आप जानते होंगे कि यह कितना पवित्र आश्रम है। इसके दर्शन करनेवालों का कर्मबंधन कट जायगा। फिर वे जन्म नही लेंगे। हे पूज्य श्रीराम ! मैं वेद और वेदसम्मत शास्त्रों की विधियों के अनुसार यज्ञ करना चाहता हूँ। मेरे लिए यही उत्तम स्थान है जहाँ रहकर यज्ञ करूँ। कोई दूसरा स्थान, इसके सिवा मान्य नहीं हो सकता। ४५०

ईण्डिरुन् दियट्रुवॅन् याहम् यानॅना, नीण्डपूम् बळुवत्तै नॅरियि नॅय्दिप्पिन्
वेण्डुव कॊण्डुदन् वॅळ्वि मेविनान्, काण्डहु कुमररैक् काव लेवियॆ 451

ईण्टु इरुन्तु–यहाँ रहकर; यान्–मै; याकम् इयट्रुवॅन्–यज्ञ करूँगा; ॲन्ना–कहकर; नीण्ट–वड़े; पू पळुवत्तै–फूलों के (तरुओं से भरे) उद्यान में; नॅरियिन् ॲय्ति–मार्ग से जा पहुँचकर; पिन्–वाद; वॅण्टुव कॊण्टु–आवश्यक (सामग्री) जुटाकर; काण् तकु कुमररै–दर्शनीय राजकुमारों को; कावल् एवि–रक्षा के लिए नियत कर; तन् वेळ्वि मेविनान्–अपने यज्ञ-कर्म में प्रवृत्त हुए। ४५१

महर्षि, यहीं रहकर यज्ञ करूँगा, —यह कहकर सही मार्ग पकड़कर फूलों के तरुओं से पूर्ण एक उद्यान में गये; यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्रियाँ जुटायी और उन सुन्दर राजकुमारो को संरक्षण-कार्य में नियत किया। फिर वे यज्ञ-कार्य मे प्रवृत्त हुए। ४५१

एण्णुदर्कु काक्करि दिरण्डु मून्रुनाळ्
विण्णवर्क् काक्किय मुनिवन् वेळ्वियै
मण्णिनैक् काक्किनर् मन्नन् मैन्दर्हळ्
कण्णिनैक् काक्किनर् विमैयिर् कात्तनर् 452

ॲण्णुतर्कु–सोचने के लिए; आक्क अरितु–करने के लिए दुस्तर; इरण्टु मून्रु नाळ्–दो के तीन (छः) दिन; मुनिवन्–मुनि; विण्णवर्क्कु आक्किय–देवों के निमित्त किये; वेळ्वियै–यज्ञ (की); मन्नन् मैन्तर्कळ्–राजा के पुत्रों ने; कण्णिणै–आँखों के जोड़े की; काक्किन्र–रक्षा करनेवाले; इमैयिन्–पलक-सम; कात्तनर्–रक्षा की। ४५२

वह यज्ञ इतना कष्ट-साध्य था कि करने की कौन कहे—सोचना भी कठिन था। मुनिवर ने देवताओं को तृप्त करते हुए छः दिन का वह यज्ञ किया। राजकुमारों ने भी उसका इस प्रकार संरक्षण किया जिस प्रकार पलकें नेत्रों की रक्षा करती है। पलकों के आँखो के संरक्षण करने का

यह अपमान बड़ा अर्थ-पुष्ट है। एक टीका यह है जो प्रसिद्ध है—श्रीराम यज्ञ-शाला के चारों ओर घूमते आ रहे थे। लक्ष्मण द्वार पर सतर्क खड़े थे। श्रीराम जब द्वार के पास आते तो लक्ष्मण को सचेत करते। श्रीराम ऊपर की पलक के समान हैं। वह पलक गिरती उठती है। जब वह गिरती है तब नीचे की पलक को, जो अचल है, स्पर्श करती है। वैसे ही श्रीराम लक्ष्मण को स्पर्श करके सचेत करते थे। और भी पलक-आँख का उदाहरण बिलकुल अचूक सचेतता का भी द्योतक है। ४५२

कात्तनर् तिरिहिन्ऱ काळै वीररिल्, मूत्तवन् मुळ्ळुणर् मुनियै मुन्निनी
तीत्तॊऴि लियऱ्ऱुव रॆन्ऱ तीयवर्, एत्तरुङ् गुणत्तिनाय् वरुव दॆन्ऱॆन्ऱान् 453

कात्तनर्—रक्षा करते हुए; तिरिकिन्ऱ—घूमनेवाले; काळै वीररिल्—ऋषभ-सम वीरों में; मूत्तवन्—ज्येष्ठ; मुळ्ळु उणर् मुनियै—सर्वज्ञ मुनि के; मुन्नि—समीप जाकर; एत्तु—स्तुत्य; अरु—श्रेष्ठ; कुणत्तिनाय्—गुणवाले; नी—आप (के); ती तॊऴिल् इयऱ्ऱुवर्—दुष्कर्म करेंगे; ऎन्ऱ तीयवर्—ऐसे निर्दिष्ट अत्याचारी; वरुवतु ऎन्ऱु—आयेंगे कब; ऎन्ऱान्—यह पूछा। ४५३

जब ऋषभ-सम वे राजकुमार यज्ञ के संरक्षण में लगे घूमते थे तब ज्येष्ठ श्रीराम ने सर्वज्ञ मुनिवर के समीप जाकर संबोधन किया और पूछा कि हे स्तुत्य गुण-धन ! आपने दुष्कृत्य करनेवाले कहकर जिनका संकेत किया था वे दुराचारी राक्षस कब आवेंगे ? । ४५३

वार्त्तैमा ऱुरैत्तिलन् मुनिवन् मौनियाय्प्
पोर्त्तॊऴिऱ् कुमरनुन् दॊऴुदु पोन्दपिन्
पार्त्तनन् विशुम्बिनैप् परुव मेहम्बोल्
आर्त्तन रिडित्तन रशनि यज्जवे 454

मुनिवन्—महर्षि ने; मौनि आय्—मौनव्रती थे, (अतः); वार्त्तै—वचन; माऱु—उत्तर में; उरैत्तिलन्—नहीं कहा; पोर् तॊऴिल् कुमरनुम्—युद्ध सन्नद्ध कुमार भी; तॊऴुतु—नमस्कार करके; पोन्त पिन्—बाहर आये, बाद; विचुम्पिनै—आकाश की ओर; पार्त्तनन्—देखा; अचनि अञ्च—अशनि को भयभीत करते हुए; परुव मेकम् पोल्—मौसमी मेघों के समान; आर्त्तनर्—शोर मचाते हुए; इटित्तनर्—गर्जन किया। ४५४

विश्वामित्र ने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि वे यज्ञ-दीक्षित हो चुके थे इसलिए मौन-व्रती थे। बात समझकर युद्ध-सन्नद्ध श्रीराम ने बाहर आकर ऊपर देखा। तभी राक्षसों ने आकर अशनि के गर्जन को भी मन्द करते हुए हल्ला मचाया। ४५४

ऎय्दन रॆऱिन्दन रॆरियु नीरुमाप्, पॆय्दनर् पॆरुवरै पिडुङ्गि वीशिनर्
वैदनर् तॊऴित्तनर् मळुक्क ळोच्चिनर्, शॆय्दन रॊन्ऱल तीय मायमे 455

ऎय्तनर्–(शर) चलाये; ऎऱिन्तनर्–(भाले आदि) फेंके; ऎरियुम् नीरुम् आक–आग और जल को; पॆय्तनर्–उँडेला; पॆरु वरै–बड़े पर्वतों को; पिट्टुङ्कि–उखाड़कर; वीचित्तर्–फेंका; वैतनर्–गालियाँ दीं; तॆऴित्तनर्–डाँटे; मऴुक्कळ्–ओच्चिनर्–परशुओं को फेंका; ऒन्ऱु अल–एक नहीं, (अनेक); तीय मायम्–बुरे माया-कार्य; चॆय्तनर्–किये। ४५५

वही नही, वे शर, भाले, आग, जल, वड़े-वड़े पर्वत, और परशु आदि फेकने लगे। साथ-साथ दुर्वचन कहकर डाँटते। उन्होंने अनेक माया-कृत्य किये। ४५५

ऊनहु पडैक्कल मुरुत्तु वीशिन, कानह मरैत्तन्न काल मारिपोल्
मीनहु तिरैक्कडल् विशुम्बु पोर्त्तॆन, वानह मरैत्तन वळैन्द शेनैये 456

कालम् मारि पोल्–पर्व-कालीन मेघों के समान; उरुत्तु वीचिन–कोप के साथ प्रेषित; ऊन् नकु पटैकलम्–मांस-लिप्त हथियार; कानकम् मरैत्तन–वन को ढँक गये; वळैन्त चेनै–घेरनेवाली सेना; मीन् नकु तिरै कटल्–मछलियों से भरा और लहरें मारनेवाला वड़ा सागर; विचुम्पु पोर्त्ततु–आकाश को छा गया, ऐसा; वान् अकम् मरैत्तन–गगनमण्डल को ढाँप दिया। ४५६

क्रोध के साथ उन्होंने जो मांस-लगे हथियार, मेघ के समान वरसाये, उनसे वन ही ढँक गया। मन्त्र के वल के कारण वे नीचे आ नहीं सके। इसलिए वे आकाश में मछलियों और तरंगों से भरे समुद्र के समान छाये रहे। अतः आकाश भी ढँक गया। ४५६

विल्लॊडु मिन्नुवाण् मिडैन्दु लाविडप्
पल्लियङ् गडिप्पिनि लिडिक्कुम् पल्पडै
ऒल्लॆन वुरऱिय वूऴिप् पेर्च्चियिन्
वल्लैवन् दॆऴुन्ददोर् मऴैयुम् पोन्ऱवे 457

विल्लॊटु–चमक के साथ; मिन्नुम् वाळ्–कौंधनेवाली तलवारें; मिटैन्तु उलाविट–घने रूप से मिलकर दिखाई देती है, इसलिए; पल् इयम्–कई (ढोल आदि) वाजे; कटिप्पिनाल्–चोव (के प्रहार) से; इटिक्कुम्–वज उठे; पल् पटै–अनेक हथियार; ऊऴि पेर्च्चियिन्–युग के अन्त होते समय जैसे; ऒल् ॲन–ऊँचे घोष के साथ; उरऱिय–शब्द उत्पन्न किया; वल्लै वन्तु ॲऴुन्ततु–सहसा आ उमड़े; ओर् मऴैयुम् पोन्र–अनुपम मेघजाल के समान भी लगे। ४५७

तलवारें विजली की-सी चमक, और मारू वाजे और हथियार विजली की-सी कड़क उत्पन्न कर रहे थे। अतः सेना मेघ की समानता करती थी। ४५७

कवरुडै ऎयिऱ्ऱिनर् कडित्त वायिनर्
तुवर्निऱप् पङ्गियर् शुऴल्हट् टीयिनर्

पवर्शडै यन्दणन् पणित्त तीयवर्
इवरॆन विलक्कुवर्क् किरामन् काट्टिनान् 458

कवर् उटै–दो नोकवाले; ऎयिऱ्ऱिनर्–(मुँह के कोरों के) दाँत वाले; कटित्त वायिनर्–अधर मोड़कर दाँतों से दबाते रहे मुख वाले; तुवर् निऱ पङ्कियर्–लाल रंग के बालवाले; चुळल् कण् तीयिनर्–घूमनेवाली पुतली की आँखों से अग्नि प्रकट करनेवाले; इवर्–ये; पवर् चटै अन्तणन्–घने जटाधारी महर्षि; पणित्त–जिनके सम्बन्ध में कह चुके; तीयवर् ऎन–वे दुष्ट है, कहकर; इलक्कु वर्कु–लक्ष्मण को; इरामन्–श्रीराम ने; काट्टिनान्–दिखाया । ४५८

उन राक्षसों के मुख के कोरों के दाँत वक्र और दो नोक वाले थे। उन्होंने अपना अधर दाँतों से दवा रखा था। उनके बाल लाल थे। आँखे घूमती थीं और उनसे अंगारे से निकल रहे थे। उनको दिखाकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा देखो ये ही वे दुष्ट है जिनके संबंध में महर्षि ने हमें सावधान किया था। ४५८

कण्डक्क् कुमरनुङ् गडैक्कण् डीयुह
विण्डनै नोक्कित्तन् विल्लै नोक्कुऱा
अण्डर्ना यहकविनिक् काण्डि यीण्डिवर्
तुण्डम्वीळ् वनवॆनत् तॊळुदु शॊल्लिनान् 459

कण्ट अ कुमरनुम्–देखते हुए वह कुमार (ने) भी; कटै कण् ती उक–आँखों के कोनों से आग बरसाते हुए; विण् तनै नोक्कि–आकाश को देखकर; तन् विल्लै नोक्कुऱा–अपने चाप को भी देखकर; अण्टर् नायक–अण्डों के नायक; इनि–अब; ईण्टु–इधर; इवर् तुण्टम्–इनके टुकड़े; वीळ्वन–गिरते हैं; काण्टि–देखो; ऎन–ऐसा; तॊळुतु–नमस्कार करके; चॊल्लिनान्–कहा । ४५९

लक्ष्मण ने उनको देखा। उन्हें अपार क्रोध हुआ; आँखों के कोनों से आग-सी प्रकट हुई। राक्षसों को देखकर उन्होंने अपने धनुष को एक बार देखा। फिर उन्होंने श्रीराम का नमस्कार किया और कहा कि अब देखिये इनके शरीर के टुकड़े बनेंगे और वे टुकड़े भूमि पर गिरेंगे। ४५९

तूमवे लरक्कर्द निणमुञ् जोरियुम्, ओमवॆङ् गनलिडै युहुमॆन् ऱुन्नियत्
तामरैक् कण्णनुञ् जरङ्ग ळेकॊडु, कोमुनि यिरुक्कयोर् कूड माक्किनान् 460

अ तामरै कण्णनुम्–उन कमलाक्ष (ने) भी; तूमम् वेल् अरक्कर तम्–धुआँ छोड़नेवाले भालेवाले राक्षसों के; निणमुम् चोरियुम्–मांस और रक्त; ओमम् वॆम् कनल् इटै–होम के जलते अनल में; उकुम्–गिरेगा; ऎन्ऱु उन्नि–ऐसा सोचकर; कोमुनि इरुक्कै–मुनिश्रेष्ठ के स्थान के ऊपर; चरङ्कळे कॊटु–शरों से ही; ओर् कूटम् आक्किनान्–एक वितान बनाया । ४६०

राजीवलोचन श्रीराम ने सोचा कि धुआँ उगलने वाले भालों के धारक राक्षसों का मांस और रक्त होमाग्नि पर गिरेगा तो अनर्थ हो

जायगा। इसलिए उन्होंने जहाँ कौशिक बैठे यज्ञ कर रहे थे उस स्थान के ऊपर, वेदी आदि सभी की रक्षा में, शरों का एक वितान बना दिया। ४६०

नञ्जड वॅळुदलु नडुङ्गि नाण्मदिच्, चॅञ्जडैक् कडवुळै यडैयुन् देवर् पोल्
वञ्जनै यरक्करै वॅरुवि मादवर्, अञ्जन वण्णनिन् नवयम् यामॅन्ड्रार् 461

नञ्चु–विष (के); अट ॲळुतलुम्–मारने के लिए निकला; नटुङ्कि–काँपते हुए; नाळ् मति–(प्रथमातिथि की) एक कलावाला चन्द्र; चॅम् चटै–(और) लाल जटा के; कटवुळै अटैयुम–ईश्वर की शरण में गये; तेवर् पोल–देवों की तरह; मातवर–श्रेष्ठ तपस्वी लोग; वञ्चनै अरक्करै–वंचक राक्षसों से; वॅरुवि–डरकर; अञ्चन वण्ण–अंजनवर्ण; याम् निन् अपयम्–हम आपके उभयदान के प्रार्थी हैं; ॲन्ड्रार्–कहा। ४६१

जब क्षीर-सागर-मन्थन हुआ तब पहले विष निकल आया। 'वह हमको जला देगा' —इस डर से देवगण प्रथमा की कला का चन्द्र और जटा धारण करनेवाले शिवजी की शरण मे गये। उन्ही देवों के समान अब तपस्वी लोगों ने श्रीराम के पास आकर कहा— अंजनवर्ण। हम अभय चाहते है। ४६१

कवित्दनन् कैत्तलङ् गलङ्ग लीरॅनच्
चॅवित्तल निरुत्तिनन् शिलैयिन् ऱॅय्वनाण्
पुवित्तलङ् गुरुदियिन् पुणरि याक्किनन्
कुवित्तन नरक्करत्तञ् जिरत्तिन् कुन्ड्रमे 462

कलङ्कलीर्–व्याकुल मत हों; ॲन–कहकर; कै तलम् कवित्ततन्–हाथ की अभय-मुद्रा बनायी; चिलैयिन् तॅय्वम् नाण्–धनुष का दैवी डोरा; चॅवि तलम् निरुत्तिनन्–कर्ण तक खींचकर; पुवि तलम्–भूतल को; कुरुतियिन् पुणरि आक्कितन्–रक्त का प्रवाह बना दिया; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; चिरत्तिन् कुन्ड्रम्–सिरों के ढेर; कुवित्ततन्–लगा दिये। ४६२

श्रीराम ने अभय-मुद्रा मे हस्त उठाया और उनको आश्वासन दिया कि चिन्ताकुल मत होइये। फिर उन्होंने धनुष का दिव्य डोरा कानों तक खींचकर अस्त्र चलाये। उसके फलस्वरूप राक्षसों के शरीरों के रक्त से वहाँ प्रवाह बन गया; और कटे सिरों के ढेर बन गये। ४६२

तिरुमह णायहन् ऱॅय्व वाळितान्, वॅरुवरु ताडहै पयन्त वीरर्हळ्
इरुवरि लॉरुवनैक् कडलि लिट्टदव्, ऑरुवनै यन्दहन् पुरत्ति लुय्त्तदे 463

तिरुमकळ् नायकन्–श्रीलक्ष्मीपति के; तॅय्व वाळि–दिव्यास्त्र ने; वॅरु वरु–भयंकर; ताटकै पयन्त–ताडका-दत्त; वीरर्कळ् इरुवरिल्–वीर, दो में; ऑरुवनै–एक को; कटलिल् इट्टतु–समुद्र में डाल दिया; अ ऑरुवनै–उस दूसरे को; अन्तकन् पुरत्तिल्–यमलोक में; उय्त्ततु–पहुँचा दिया। ४६३

श्रीलक्ष्मीपति के एक अस्त्र से भयंकर ताड़का का एक पुत्र मारीच समुद्र में फेंक दिया गया। दूसरे अस्त्र ने सुबाहु को यमपुर पहुँचा दिया। ४६३

तुणर्त्तपून् दॉडैयिनान् पहऴि तूविनान्
कणत्तिडै विशुम्बिनैक् कवित्तुत् तूर्त्तलाल्
पिणत्तिडै नडन्दिवर् पिडिप्प रीण्डॅना
उणर्त्तिन्न रॉरुवर्मुन् नॊरुव रोडिन्नार् 464

तुणर्त्त पू–गुच्छों में रहे फूलों की; तॉटैयिनान्–मालाधारी (श्रीराम) ने; पकऴि–शर; तूविनान्–बरसाये (और); कणत्तिटै–एक क्षण में; विचुम्पित्तै–आकाश को; कवित्तु–घेरकर; तूर्त्तलाल्–ढँक दिया, इसलिए; इवर्–ये; ईण्टु–अब; पिणत्तिटै–लाशों पर से भी; नटन्तु–चलते आकर; पिटिप्पर्–पकड़ लेंगे; ऍना–सोचकर; उणर्त्तिनर्–(आपस में) समझाते हुए; ऑरुवर् मुन् ऑरुवर्–एक दूसरे के पहले; ओटिनार्–भागे। ४६४

पुष्पमाला-धारी श्रीराम ने इतने शर छोड़े कि एक क्षण में सारा अन्तरिक्ष शरों से भर गया। राक्षसों ने सोचा कि वीर, लाशों के ढेरों पर चढ़कर आयेंगे और हमको पकड़ लेंगे; इसलिए आकाश में जाने पर भी वचाव नही होगा। इस डर से वे अपना-अपना बचाव करते हुए एक के पहले एक भागे। ४६४

ओडिन वरक्करै युरुमिन् वॅङ्गणै, कूडिन कुरैत्तलै मिरैत्तुक् कूत्तुनिन्
ऱाडिन् वलहैयु मैयन् कीर्त्तियैप्, पाडिन परन्दन पऱवैप् पन्दरे 465

ओटिन अरक्करै–भागते राक्षसों को; उरुमिन् वॅम् कणै–वज्र-सम भयंकर शर; कूटिन–पीछा करते चले; कुऱै तलै–सिरहीन (कवंध); मिऱैत्तु निन्ऱु–तनकर खड़े होकर; कूत्तु आटिन–नाचे; अलकैयुम्–भूतों ने भी; ऐयन् कीर्त्तियै–प्रभु की कीर्ति; पाटिन–गायी; पऱवै पन्तर्–पक्षियों का (वना) वितान; परन्तत–तना। ४६५

वज्र से भी भयंकर शरों ने उनको नही छोड़ा। राम-बाण अमोघ होते हैं। युद्धभूमि में कबंध नाचे; भूतों ने प्रभु की कीर्ति गायी; दावत मिली थी, इसलिए। चील आदि पक्षियों का वितान सा तन गया। ४६५

पन्दरैक् किऴित्तन परन्द पूमऴै, अन्दरत् तुन्दुबि मुहिलि नार्त्तन
इन्दिरन् मुदलिय वमर रीण्डिनार्, सुन्दर विल्लियैत् तॊऴुदु वाऴ्त्तिनार् 466

परन्त पू मऴै–अधिक गिरी पुष्पवर्षा (ने); पन्तरै–वितान को; किऴित्तन–चीर दिया; अन्तर तुन्तुपि—देव-दुंदुभी; मुकिलिन्–मेघों के समान; आर्त्तन–निनादित हुए; इन्तिरन् मुतलिय–इन्द्र आदि; अमरर्–देव; ईण्टिनार्–एकत्र हुए; चुन्तर् विल्लियै–सुन्दर कोदण्ड-पाणि को; तॊऴुतु–नमन कर; वाऴ्त्तिनार्–बधाई दी। ४६६

तब मुदित देवों ने भी पुष्पवर्षा की। वे पुष्प पक्षियों के बने विस्तृत वितान को चीरते हुए यज्ञशाला में गिरे। देव दुंदुभियाँ मेघ-गर्जन के समान नाद कर उठीं। इन्द्र आदि देवों ने आकर श्रीराम को नमस्कार कर स्तोत्र किया। ४६६

पुनित मादव राशियम् बूमऴै पॊऴिन्दार्
अनैय कानत्तु मरङ्गळु मलर्मऴै शॊरिन्द
मुनियु मव्वऴि वॆऴ्वियै मुऱैमैयिन् मुऱ्ऱि
इनिय शिन्दय निरामनुक् किनैयन विशैत्तान् 467

पुनितम् मा तवर्—पवित्र महातपस्वी; आचि—आशीर्वाद की; अम्पूमऴै—सुन्दर फूलों की वर्षा; पॊऴिन्तार्—की; अनैय कानत्तु—उस वन के; मरङ्कळुम्—तरुओं ने भी; अलर् मऴै—पुष्पवर्षा; चॊरिन्त—गिरायी; अव् वऴि—तब; मुनियुम्—महर्षि ने भी; वेऴ्वियै—यज्ञ को; मुऱैमैयिन् मुऱ्ऱि—यथाविधि पूर्ण कर; इतिय चिन्तैयन्—सन्तुष्ट-मन हो; इरामनुक्कु—श्रीराम से; इनैयन—यों; इचैत्तान्—बताया। ४६७

फिर वे चले गये। पवित्र आचरण वाले महान तपस्वियों ने श्रीराम को पुष्कल आशीर्वाद दिया। वहाँ के तरुओं ने भी उन पर फूल बरसाये। इस वातावरण मे महर्षि ने यज्ञ पूरा किया और उनका मन कृतकृत्यता के संतोष से भर उठा। तब उन्होंने श्रीराम की प्रशंसा यों की। ४६७

पाक्कि यम्मॆनक् कुळदॆन निन्नैवुरुम् पान्मै
पोक्कि निऱ्किदु पॊरुळॆन वुणर्हिलॆन् बुवनम्
आक्कि मऱ्ऱवै यनैत्तयु मणिवयिऱ् ऱडक्किक्
काक्कु नीयॊरु वेळ्विहात् तनैयॆनुङ् गरुत्ते 468

पुवतम् आक्कि—सब भुवन (ब्रह्मा के रूप में) सृजन कर; मऱ्ऱु—फिर; अवै अत्तैत्तैयुम्—उन सब को; अणि वयिऱु अटक्कि—सुन्दर उदर में अन्तर्हित कर; काक्कुम्—रक्षा करनेवाले; नी ऒरु वेळ्वि कात्तनै—आपने एक यज्ञ पालन किया; ऎन्नुम् करुत्तु—यह बात; पाक्कियम् ऎनक्कु उळतु—भाग्य मेरा रहा; ऎन—ऐसा; निनैवु उरुम्—मानने का; पान्मै पोक्कि—(एक सन्दर्भ देती है—) इस विचार को छोड़कर; निऱ्कु इतु पॊरुळॆन—आपके लिए यह (गौरव की) बात है; उणर्किलॆन्—नहीं मानता। ४६८

हे श्रीराम! आप ही सृष्टि-विधाता ब्रह्मा है। उस रूप में आप ही कलपारंभ में सारे लोकों की सृष्टि करते हैं। फिर कलपांत में आप सारी सृष्टि को अपने उदर के अन्दर रखकर उसकी रक्षा करते है। फिर आपने एक यज्ञ का संरक्षण किया —यह कहना आपकी कीर्ति को क्या वढ़ायेगा? हाँ, एक बात है। मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि लोग

यह् कहेंगे कि श्रीराम ने विश्वामित्र के यज्ञ का संरक्षण किया। इसको छोड़ मैं यह् मानता नही कि यह् आपके गौरव को किंचित अंश भी बढ़ाता है। ४६८

ऍन्ऱु कूऱिय पिन्ऩरव् वॅऴिन्मलर्क् कानत्
तन्ऱु तानुवन् दरुन्दव मुनिवरो डिरुन्द
कुन्ऱु पोऱ्कुणत् तानॅदिर् कोसलै कुरुशिल्
इन्ऱु यान्शॅयुम् पणियॅन्कॊल् पणियॅन विशैत्तान् 469

ऍन्ऱु कूऱिय पिन्ऩर्–ऐसा कहने के बाद; ऍऴिल् मलर्–मनोरम सुमनों से भरे; अ कानत्तु–उस (आश्रम-) वन में; अरु तव मुनिवरोटु–श्रेष्ठ तपस्वी मुनियों के साथ; उवन्तु इरुन्त–आनन्द के साथ रहे; कुन्ऱु पोल् कुणत्तान्–पर्वत के समान उन्नत (अचल) गुण वाले; ऍतिर्–के सामने; कोचलै कुरुचिल्–कौसिल्या के पुत्र; इन्ऱु–आज; यान् चॅय्युम् पणि–मेरी करणीय सेवा; ऍन् कॊल्–क्या है; पणि ऍन–आज्ञा दें, ऐसा कहने पर; इचैत्तान्–कहा। ४६९

इसके बाद श्रीराम ने ऋषि-मुनियों के साथ उसी पुष्प-तरुओं से भरे आश्रम में रात बितायी। सबेरे पर्वत के समान उन्नत और अचल गुणों से युक्त 'गुण-गिरि' महर्षि विश्वामित्र के सम्मुख जाकर श्रीराम ने पूछा कि आज मैं आपकी क्या सेवा करूँ ? कृपया आज्ञा दीजिये। तब मुनिवर कहने लगे। ४६९

अरिय यान्शॉलि नैयनिऱ् करियदॊन् ऱिल्लै
पॆरिय कारिय मुळववै मुडिप्पदु पिन्नर्
विरियुम् वार्पुनन् मरुडञ्जूऴ् मिदिलयर् कोमान्
पुरियुम् वॆळ्वियुङ् गाण्डुना मॆऴुहॆनप् पोनार् 470

अरिय–कठिन काम (समझ); यान् चॊलिन्–मै कहूँ तो; ऐय–प्रभु; निऱ्कु–आपके लिए; अरियतु ऒन्ऱु–कठिन कोई; इल्लै–नहीं है; पॆरिय कारियम् उळ–बड़े कार्य है; अवै मुटिप्पतु–उनको पूरा करना; पिन्नर्–बाद को; विरियुम् वार् पुनल्–विस्तृत जल-समृद्ध; मरुतम् चूऴ्–खेतों और बागों से घिरा; मितिलैयर् कोमान्–मिथिला के राजा से; पुरियुम्–किया जानेवाला; वेळ्वियुम्–यज्ञ भी; काण्टुम् नाम्–देखेगे हम; ऍऴुक ऍन्न–उठे, कहने पर; पोनार्–(तीनों) चले। ४७०

प्रभु ! कौन-सा कठिन काम है जो मैं कहूँ, जिसे आप कर नहीं सकते ? तो भी बड़े और लोकहितकारी काम कतिपय हैं। उन्हें बाद को करेंगे। अब हम उर्वर खेतों और बागों से भरे मिथिला देश चलें और मिथिलेश जनक एक यज्ञ कर रहे है, उसे भी देखें। चलिये। फिर वे तीनों रवाना हुये। ४७०

9. अहलिहैप् पडलम् (अहल्या पटल)

अलम्बु मामणि यारत्तो डहिलणि पुळिनम्
नलम्बॆय् पूण्मुलै नाहिळ वञ्जिया मरुङ्गुल्
पुलम्बु मेहलैप् पुदुमलर्प् पुनैयरुर् कून्दल्
शिलम्बु शूळुङ्गार् शोणयान् दॆरिवयैच् चॆर्न्दार् 471

अलम्पु–धुले हुए; मा मणि–श्रेष्ठ रत्न; आरत्तोट्टु–चन्दन के साथ; अकिल्–अगरु; अणि–(इन से) अलंकृत; पुळिनम्–पुलिन; नलम् पॆय्–सुखावह; पूण् मुलै–आभरण-युक्त उरोज; नाकु इळ वञ्चि आम्–बहुत अल्प-वयस्क वल्लरी रूपी; मरुङ्कुल्–कमर; पुलम्पु–गुंजनशील; पुतु मलर् मेकलै–नये पुष्पों की पंक्ति की मेखला; पुनै अरल्–(पुष्प-) पहने हुए काले बाल रूपी; कून्तल्–केश; चिलम्पु चूळुम् काल्–नूपुर वलयित पैर (या पर्वत के चारों ओर बहनेवाले नाले) इनसे युक्त; चोणै आम्–शोण नामक; तॆरिवैयै–नारी के पास; चॆर्न्तार्–गये। ४७१

वे शोण नदी के तट पर आये। कवि काव्य-परम्परा-प्रणाली के अनुसार नदी को रमणी के रूप में वर्णित करते हैं। नदी के तल में पुलिन बने है। उन पर धुले हुए मणि, चंदन और अगरु की लकड़ियाँ आदि बहते आकर जमे रहते है। वे रत्नहार-भूपित अगरु-सुगन्ध-युक्त मनोरम उरोज है। अल्पवयस्क कोमल जल-लता कटि है। ताज़े फूल आकर पंक्तियों में पड़े है; वे मेखला है। काले बाल केश-जाल का स्थान लेते है। पर्वत के चारों ओर बहनेवाले उस नदी के नाले नूपुर-वलयित पैर है। ऐसी शोण-तरुणी के पास वे आये। इसमें अर्थश्लेप और शब्दश्लेष दोनों का प्रयोग चित्तहारी है। 'आरम' चन्दन भी है, हार भी; "चिलम्पु" पर्वत भी, नूपुर भी; और "काल्" नाले भी, पैर भी। ४७१

नदिक्कु वन्दव रॆय्दलु मरुणन्र नयनक्
कदिक्कु मुन्दुरु कलिनमान् ड्रॆरोंडुङ् गदिरोन्
उदिक्कुङ् गालयिर् रुण्मैशॆय् वान्रन दुरुविल्
कोदिक्कुम् वॆम्मयै यारुरुवान् पोर्कडर् कुळित्तान् 472

अवर्–वे; नतिक्कु वन्तु ऍय्तलुम्–नदी पर आ पहुँचे, तभी; कतिरोन्–अंशुमाली; उतिक्कुम् कालैयिल्–उदय के समय; तण्मै चॆय्वान्–शीतलता प्रदान करने के निमित्त; तनतु उरुविल्–अपने स्वभाव के; कॊतिक्कुम् वॆम्मैयै–तापक उष्ण को; आरुरुवान् पोल्–शान्त करनेवाला हो ऐसा; अरुणन् तन्–अरुण के; नयनम् कतिक्कुम्–दृष्टि की गति से भी बढ़कर; मुन्तु उरु–आगे जानेवाले; कलिनम् मान् तेरोटुम्–अश्वों के जुते रथ के साथ; कटल् कुळित्तान्–(पश्चिमी-) सागर में डूबे। ४७२

जब वे नदी पार आये तब सूर्यास्त हुआ। कवि उत्प्रेक्षा करते है कि अंशुमाली दूसरे दिन उदय के समय उनको शीतलता प्रदान करनेवाले

रहना चाहते थे। तदर्थ अपनी स्वाभाविक उष्णता को दूर करने के लिए पश्चिमी सागर में डूब गये। तब उनके सारथी अरुण भी, और रथ के अश्व भी जो नयनों की दृष्टि-गति से भी अधिक शीघ्र चलनेवाले थे, उनके साथ सागर में मग्न हुए। हाँ श्रीराम और लक्ष्मण सूर्यदेव के कुल के थे, इसलिए सूर्य का उन पर इतना प्रेम रखना स्वाभाविक ही था। ४७२

करङ्गु तणपुनऱ् कडिनॆंडुन् दाळुडैक् कमलत्
तरङ्गॊ णाण्मलर्क् कोयिल्ह ळिदळ्क्कद वडैप्पप्
पिरङ्गु तामरै वनम्विट्टुप् पॆडैयॊडुङ् गळिवण्
डुरङ्गु हिन्ऱदोर् नऱुमलर्च् चोलैपुक् कुऱैन्दार् 473

करङ्कु—कलकल वाले; तण् पुनल्—शीतल जल के; नॆंटु ताळ् उटै—लम्बे नालों के; कमलत्तु—कमल के; नाळ् कटि मलर्—उसी दिन विकसित, सुवासित पुष्परूपी; अऱम् कोळ् कोयिल्कळ्—धर्म के मन्दिर; इतळ् कतवु अटैप्प—दलरूपी किवाड़ बन्द कर देते हैं, तब; पॆटैयॊटुम्—भ्रमरियों के साथ; कळि वण्टु—क्रीड़ा मुदित भ्रमर; पिऱङ्कु—शोभामय; तामरै वनम् विट्टु—कमल-कानन छोड़ जाकर; उऱङ्कुकिन्ऱतु—जहाँ सोते हैं उस; ओर् नऱु मलर् चोलै—एक सुगन्धित फूलों के बाग में; पुक्कु—प्रवेश कर; उऱैन्तार्—विश्राम किया। ४७३

वे रात को एक उद्यान में ठहरे। उस उद्यान में भ्रमर भी आकर ठहरे। भ्रमर क्यों आये? उनको, कमल के द्वार बन्द हो गये थे अतः, इधर आकर ठहरना पड़ा। कमल को कवि (पक्षियों के कारण या लहरों के कारण) कलरव-युक्त शीतल जल में लम्बे नालों पर रहनेवाले कमल को धर्माश्रय मन्दिर कहते हैं क्योंकि वे भौरों के खाने और ठहरने के स्थान बनते हैं। इससे उन यात्रियों की ओर संकेत है जो दिन मे अन्नसत्रों में भोजन करके रात में यात्रा करते हुए उद्यानों में ठहरते हैं। ४७३

इन्नैय शोलैमऱ् ऱियाॆदॆन विराहवन् विन्नव
विन्नैयॆ लामऱ नोऱ्ऱवन् विळम्बुवान् मेन्नाळ्
तन्नैय रान्नवर्क् किरङ्गिये काशिबन् ऱन्नु
मन्नैयु ळाडवम् बुरिन्दन ळिवणॆन वलित्तान् 474

इन्नैय चोलै यातु—यह उद्यान कौन सा है; ऎन्न—ऐसा; इराकवन् विन्नव—श्रीराघव के पूछने पर; विनै ऎलाम्—कर्म, सब; अऱ नोऱ्ऱवन्—काटते हुए तपस्या कर चुकनेवाले (ने); विळम्पुवान्—कहना आरम्भ किया; मेल् नाळ्—पहले किसी समय; काचिपन् तन् मनै उळाळ्—काश्यप की गृहिणी (दिति ने); तन्नैयर् आन्नवर्क्कु इरङ्कि—अपने पुत्रों के कारण दुखी हो करके; इवण्—इधर; तवम् पुरिन्तनळ्—तपस्या की; ऎन्न वलित्तान्—यह समझाया। ४७४

वहाँ पहुँचकर रघुकुलतिलक श्री राघव ने प्रश्न किया कि यह उद्यान कौन-सा है? महर्षि ने, जिन्होंने अपनी तपस्या से कर्मबंधन काट दिया

था, यह उत्तर दिया। पहले कभी यहाँ काश्यप की पत्नी दिति ने अपने पुत्रों के संबंध में उत्पन्न मानसिक क्लेश के कारण तय किया था। वह वृत्तांत आगे बताया जाता है। ४७४

अण्ड कोळहैक् कप्पुड़त् तॆन्नैया ळुडैय
कॊण्ड नीळ्पदत् तॆय्दियोर् विन्जयर कोदै
पुण्ड रीहमॆन् वदत्तियैप् पुहळ्न्दनळ् पुहळ
वण्ड ड़ामदु मालिहै कॊडुत्तनण् महिळ्न्दु 475

अण्ट कोळकैक्कु—अण्ड-गोलों के; अ पुऱत्तु—उस पार; ऍन्नै आळ् उटैय—मुझ से कैंकर्य लेनेवाले (मेरे ईश्वर); कॊण्टल्—मेघवर्ण (के); नीळ् पतत्तु—श्रेष्ठ स्थान श्री वैकुण्ठ को; ओर् विञ्चैयर् कोतै ऍय्ति—एक विद्याधर स्त्री (जाकर); पुण्टरीकम् मॆल् पतत्तियै—कमलकोमल-चरणा की; पुकळ्न्तनळ्—स्तुति करने पर; मकिळ्न्तु—सन्तुष्ट होकर; वण्टु अऱा—भ्रमरों से अविमुक्त; मतु मालिकै—शहद चूनेवाली माला; कॊटुत्तनळ्—प्रदान की। ४७५

इन अण्डों के परे रहनेवाले परमपद मेघवर्ण श्रीमन्नारायण, मेरे नाथ, का लोक है। वहाँ एक विद्याधरी गयी। उसने कोमल कमलासना श्रीलक्ष्मी का यशोगान गाया। श्रीदेवी संतुष्ट हुईं और उन्होंने एक नयी पुष्पमाला प्रदान की। उससे शहद चूता था और उस पर भ्रमर मंडराते रहे। ४७५

अन्न मालैयै याळिडैप् पिणित्तय नुलहम्
कन्नि मीडलुङ् गशट्टुडै मुन्नियॆदिर् काणा
ऍन्नै याळुडै नायहिक् किशैयॆडुप् पवळॆन्
ड़न्न डाळिणै वणङ्गिनिन् ड़ेत्तुड़ वनैयाळ् 476

कन्नि—वह विद्याधर महिला; अन्न मालैयै—उस माला को; याळ् इटै पिणित्तु याळ्—(वीणा) से बाँधकर; अयन् उलकम्—ब्रह्मा के लोक को; मीटलुम्—लौट आते समय; कचटु उटै मुनि—मैले-कुचैले वस्त्र पहने (या दुर्गुणी) मुनि (दुर्वासा); ऍतिर् काणा—सामने देखकर; ऍन्नै आळ् उटै(य)—मेरा कैंकर्य लेनेवाली (मेरी ईश्वरी); नायकिक्कु—स्वामिनी श्रीलक्ष्मीदेवी को; इचै ऍटुप्पवळ् ऍन्ऱु—स्तुति गानेवाली (वंदिनी) जानकर; अन्नवळ् ताळ् इणै—उसके चरण-द्वय पर; वणङ्कि निन्ऱु—नमस्कार करके स्थित होकर; एत्तुऱ—स्तोत्र करते समय; अनैयाळ—उसने। ४७६

उस विद्याधरी ने माला से अपनी वीणा को अलंकृत करके उसका सम्मान किया। फिर वह ब्रह्मलोक गयी। मार्ग में दुर्वासा ऋषि मिले। दुर्वासा अपने नाम के अनुसार कोप-रूपी दुर्गुण और मैले वस्त्र धारण करते थे। दुर्वासा ने देखा कि यह विद्याधरी श्रीलक्ष्मीदेवी की वंदिनी है। वे स्वयं वैष्णवभक्त थे अतः जैसे वैष्णवों में नियम हैं वैसे ही उन्होंने विष्णु-भक्ता विद्याधरी के पैर छुए और स्तुति की। ४७६

उलहम् यावैयुम् पडैत्तळित् तुण्डुमि ऴौरुवन्
इलहु मार्बहत् तिरुन्दुयिर् यावैयु मीन्ऱ
तिलह वाणुदल् शॅन्नियिऱ् चूडिय तॅरियल्
अलहिन् मामुनि पॅऱुहॅन वळित्तन ळळियाल् 477

उलकम्–लोक; यावैयुम्–सभी को; पटैत्तु–पैदा करके; अळित्तु–पालकर; उण्टु–उदरस्थ करके; उमिऴ्–(कल्पारम्भ में उगलने) प्रकट करानेवाले; ऑरुवन्–अप्रमेय श्रीविष्णु के; इलकुम् मार्पकत्तु इरुन्तु–शोभायमान वक्षस्थल में रहते हुए; उयिर्–जीव (सचराचर); यावैयुम्–सबको; ईन्ऱ–(जिन्होंने) जन्म दिया; तिलकम् वाळ् नुतल्–(वे) तिलक-शोभित उज्ज्वल ललाटवाली श्रीलक्ष्मीदेवी के; चॅन्नियिल् चूटिय–सिर पर पहनी; तॅरियल्–माला को; अलकु इल् मा मुनि–अनन्त महिमा-पूर्ण मुनिवर; पॅऱुक ऍन–लीजिये कहकर; अळियाल्–प्रेम से; अळित्तनळ्–भेंट किया। ४७७

तब विद्याधरी ने सोचा कि यह श्रीनारायण की, जो प्रपंच की सृष्टि करते हैं, स्थिति दिलाते हैं और कल्पांत में अपने उदर में रखकर संरक्षण करके नये कलपारंभ में उनको फिर से प्रकट करनेवाले हैं, वक्ष-स्थल-वासिनी, जगज्जननी कमलादेवी की दी हुई माला है। यह ऋषि को अत्यन्त आदरणीय और प्रिय होगी। अतः उसने, 'ऋषि ! आप इसको लें' —यह कहते हुए उन्हें दे दिया। ४७७

दॅय्व नायहि शॅन्नियिऱ् चूडिय तॅरियल्
ऐय यान्पॅऱप् पुरिन्ददॅत् तवमॅन वाडि
वॅय्य मामुनि शॅन्नियिऱ् चूडिये विनैपोय्
उय्यु माऱॆन्ऱ् ुवन्दुवन् दुम्बर्ना डुऱ्ऱान् 478

वॅय्य मा मुनि–चाहते हुए महामुनि; तॅय्व नायकि–दिव्य नायिका; चॅन्नियिल्–सिर पर; चूटिय तॅरियल्–पहनी माला; पॅऱ–प्राप्त करने; यान् पुरिन्तत्तु–मैने जो किया; ऐय ऍ तवम्–ओह, कितना बड़ा तप; ऍन–कहकर; आटि–नाचकर; चॅन्नियिल् चूटि–(अपने) सिर पर धारण कर; विनै पोय्–कर्म-बन्धन से मुक्त हो; उय्युम् आऱु–तरने का मार्ग यह; ऍन्ऱु–समझकर; उवन्तु उवन्तु–बार-बार मुदित होकर; उम्पर् नाटु–देवताओं के लोक; उऱ्ऱान्–पहुँचे। ४७८

वहुत उत्कंठा के साथ ऋषि ने वह माला स्वीकार की। दिव्य नायिका कमलादेवी के सिर पर रही यह माला; मुझे यह मिली तो मैं कितना भाग्यवान हूँ ! मैने कैसा तप किया है ? ऐसा सोचकर ऋषि ने उसे अपने सिर पर धारण किया। संतोष से वे नाच उठे। मेरा कर्म-बन्धन कट गया —ऐसा विश्वास करते हुए उन्हें अपार हर्ष हुआ। वे बढ़ते आनन्द के साथ देवलोक गये। ४७८

पॅय्यु मामुहिल् वॅळ्ळियम् पिऱङ्गन्मीप् पिऱळुम्
शॅय्य तामरै यायिर मलर्न्दुशॅङ् गदिरिन्

मॉयूहॉळ् शोदियै मिलैच्चिय मुडैमैपोन् डॉळिरुम्
मॅय्यि नोडयि रावदक् कळिड्ड्रिन्मेल् विळङ्ग 479

पॅय्युम् मा मुकिल्–बरसनेवाली घटा; वॅळ्ळि पिड्ङ्कल् मी–चाँदी के पर्वत पर; पिड्ळुम्–शोभायमान; चॅयय तामरै–लाल कमल; आयिरम्–सहस्र; मलर्न्तु–खिलकर; मॉयकॉळ–घने रूप से संकुलित; चॅमूमै कतिरिन्–लाल किरणों की; चोतियै–ज्योति को; मिलैच्चिय मुडैमै पोन्ड्–धारण कर रहा है; ऐसे; ऑळिरुम्–शोभनेवाले; मॅय्यितोटु–शरीर की कान्ति के साथ; अयिरावतम् कळिड्ड्रिन् मेल्–ऐरावत (नाम) के गज पर; विळङ्क–दर्शन देते हुए। ४७९

तब देवेन्द्र घूम की यात्रा पर आ रहे थे। वे ऐरावत पर आरोह कर आ रहे थे। वे नीले जलगर्भित मेघ के समान लगते थे, जो एक चाँदी के पर्वत पर बैठा था; और जिस पर उनकी सहस्र आँखें हजार खिले कमलों के समान लगती थी। उनके शरीर से तेज छूट रहा था, जो सूर्य की लाल किरणों के पुंज के समान था। ४७९

अरम्बै मेनहै तिलोत्तमै युरुप्पशि यनङ्गन्
शरम्बॅय् तूणियिड् ड्ळिरडि नूपुरन् दळैप्पक्
करुम्बै युज्जुवै कैप्पित्त शॉल्लियर् विळरि
निरम्बु पाडलो डाडित्तर् वीदिह णॅरुङ्ग 480

करुम्पॅयुम्–इक्षु को भी; कॅप्पितत–कड़आ बनानेवाले; चुवै चॉल्लियर्–मधुर-भाषिणी; अरम्पै, मेनकै, तिलोत्तमै, उरुप्पचि–रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा और उर्वशी; अनङ्कन् चरम् पॅय्–अनंग के शर-पात्र; तूणियिन्–तूणीर के समान; तळिर् अटि–पल्लव-कोमल चरणों में; नूपुरम् तळैप्प–नूपुरों के मधुर नाद करते; विळरि निरम्पु पाटलोटु–विळरी राग के गानों के साथ; आटित्तर्–नाचते हुए; वीतिकळ्–वीथियों में; नॅरुङ्क–सटकर आती हैं, ऐसे। ४८०

उनके निकट पार्श्व में रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा और उर्वशी नाम की अप्सराएँ जिनकी बोली इक्षु रस से भी मीठी थी, नाचती आ रही थीं। उनके पैर अनंग के तूणीर के समान थे। उनके पैरों में नूपुर झनझना रहे थे। वे "विळरि" राग के गीतों के साथ नाच रही थीं। ४८०

नील मालूवरैत् तवळ्दरु निरैमदिक् कड्डै
पोल वेयिरु पुडैयिनुम् जामरै पुरळक्
कोल मामदि कुडैवड निरैन्दॉळि कुलावि
मेलु यरन्दॅत्त वॅळ्ळियन् दनिक्कुडै विळङ्ग 481

नीलम् माल् वरै–नीले रंग के पर्वत पर; तवळ्तरु–धीरे रेंगते चलनेवाली; निरैमति कड्डै पोल–पूर्णचन्द्र की किरणराशि के समान लगनेवाले; चामरै–चॅवर; एय् इरु पुटैयितुम्–शोभायमान दोनों पार्श्वों में; पुरळ–डोलते; कोलम् आम् मति–सुन्दरतायुक्त चन्द्र; कुडैवु अड–पूर्णरूप से; निरैन्तु–खिलकर; ऑळि कुलावि–

प्रकाश से भर कर; मेल् उयर्न्तु अॅत–ऊपर चढ़ा रहा, ऐसा; वॅळ्ळि तति कुटै–चाँदी का उत्तम छत्र; विळङ्क–दर्शनीय बना रहा, ऐसा। ४८१

दोनों ओर चामर डुल रहे थे। वे काले पर्वत पर रेंगनेवाली चाँदनी का भ्रम पैदा कर रहे थे। ऊपर चाँदी का अनुपम छत्र शोभित था, जिसको देखकर सुन्दर राकापति और अधिक उज्ज्वल होकर उनके ऊपर रहकर छटा बिखेर रहे थे। ४८१

तळङ्गु पेरियुङ् गुरट्टोडु पाण्डिलुञ् जङ्गुम्
वळङ्गु कम्बलै मङ्गल गीदत्तै मरैप्प
मुळङ्गु नान्मरै मूरिनीर् मुळक्कॅन वुलहै
विळुङ्ग माल्वरुम् विळावणि कण्डुळम् वियन्दान् 482

तळङ्कु–बजनेवाली; पेरियुम्–भेरी; कुरट्टोटु–'कुरडु' नामक ढोल; पाण्टिलुम्–झाँझ; चङ्कुम्–शंख, और; वळङ्कु कम्पलै–देनेवाला नाद; मङ्कल कीतत्तै मरैप्प–मंगलगीतों को अपने में डुबाते हुए; मुळङ्कु–उठनेवाला; नाल् मरै–चारों वेदों (के पारायण) की ध्वनि; मूरि नीर् मुळक्कु अॅन–प्रबल समुद्र-गर्जन के समान; उलकै विळुङ्क–विश्व भर में व्याप्त हो; माल् वरुम्–इन्द्र के आने का; विळा अणि कण्टु–(धूम की यात्रा के) उत्सव का वैभव देखकर; उळम् वियन्तान्–मन में विस्मय किया। ४८२

भेरी, ढोल, करताल, शख आदि वाद्य बज रहे थे। साथ-साथ मंगलगीत भी गाये जा रहे थे। अनर्थ होनेवाला था, इसलिए शायद मंगलगीत को सुनाई देने से रोककर वाद्यों का नाद गीत के स्वर को लील गया। वेदों का पाठ हो रहा था। वह समुद्र-गर्जन के समान विश्व भर में व्याप रहा था। ४८२

तनैयॊव् वादवन् महिळ्च्चियाल् वासवन् उन्कै
वन्नैयु मालैये नीट्टलुन् दोट्टियाल् वाङ्गित्
तुन्नैव लत्तयि रावदत् तॅरुत्तिडैत् तॊडुत्तान्
पनैशॆय् कैयिनाऱ् पऱित्तडिप् पडुत्तदप् पहडु 483

तनै ऑव्वातवन्–अपनी बराबरी न रखनेवाले महर्षि; मकिळ्च्चियाल्–सन्तोष से; वन्नैयुम् मालैयै–भूषक माला को; वाचवन् तन् कै–वासव के हाथ में; नीट्टलुम्–बढ़ाते ही; तोट्टियाल्–अंकुश से; वाङ्कि–ग्रहण कर; तुन्नै वलत्तु–तीव्रगति और बल से युक्त; अयिरावतत्तु ॲरुत्तिटै–ऐरावत के गले पर; तॊटुत्तान्–पहनाया; अ पकटु–उस गज ने; पनै चॆय् कैयिनाल्–ताड़-सम अपनी सूँड़ से; पऱित्तु–छीनकर; अटि पटुत्ततु–पैरों के नीच डालकर रौंद दिया। ४८३

इस संभ्रम के साथ इन्द्र की यात्रा को देख विचित्र गुण में अपना समान न रखनेवाले दुर्वासा ने आनन्द से भरकर अपने पास रही भूषित करनेवाली माला को देवेन्द्र के हाथ में देने के विचार से बढ़ाया। देवेन्द्र

ने उसे अंकुश से ग्रहण कर हाथी के गले पर डाल दिया। ऐरावत ने उसे छीना और अपने पैरों के नीचे डाल कर रौंद दिया। ४८३

कण्ड मामुनि विऴिवऴि यॉॖहुवॅङ् गत्तलाल्
अण्ड कूडमुन् जाम्बरा यॉॖियुमॅन् ऱुळ्जि
विण्डु नीङ्गिनर् विण्णव रिरुशुडर् विळङ्गा
दॅण्डि शामुह मिरुण्डन्न शुऴन्ऱदॅव् वुलहुम् 484

कण्ट–देखते रहे; मा मुनि–महर्षि (की); विऴि वऴि ऒॖकु–(कोप के कारण) आँखों द्वारा निकलनेवाली; वॅम् कत्तलाल्–भयंकर आग से; अण्ट कूटमुम्–अण्ड के ऊपर भी; चाम्पर् आय् ऒॖियुम्–राख बनकर मिट जायगा; अन्ऱु–समझकर; अञ्चि–भीत होकर; विण्णवर्–सुरलोक-वासी; विण्टु नीङ्कित्तर्–अलग हट गये; इरु चुटर्–दोनों प्रकाश-गोल (सूर्य और चन्द्र) भी; विळङ्कातु–मन्द पड़ गये, इसलिए; ऍण् तिचा मुकम्–आठों दिशाएँ; इरुण्टत्त–अँधेरे में पड़ गयीं; ऍ अलकुम्–सभी लोक; चुऴन्ऱतु–घूमे। ४८४

इन्द्र और ऐरावत के कृत्य देखकर दुर्वासा अति क्रुद्ध हुए। देवों को उनकी आँखों से निकलनेवाली आग की ज्वाला से "हमारे अण्ड के ऊपर तक जलकर राख हो जायगा" —ऐसा लगा। इसलिए देवगण डर से अलग भाग गये। सूर्य और चन्द्र भी तेजहीन हो गये और दिशाएँ अन्धकारमय हो गयी। सारे भुवन घूमने लगे। ४८४

पुहैयॅ ऴुन्दन वुयिर्त्तॊऱु मॅयिल्पॊडित् तवनिन्
नहैयॅ ऴुन्दन निवन्दन पुरुवनन् नुदलिल्
शिहैयॅ ऴुञ्जुडर् विऴियिन नशनियुन् दिहैप्प
मिहैयॅ ऴुन्दिडु शदमह केळॅन वॅहुण्डान् 485

उयिर्त्तॊऱुम्–हर श्वास के साथ; पुकै–धुएँ; ऍऴुन्तत्त–उठे; ऍयिल् पॊटित्तवनित्–त्रिपुरांतक शिवजी के समान; नकै ऍऴुन्तत्त–अट्टहास कर उठे; पुरुवम् नल् नुतलिल् निवन्तत्त–भौंहें सुन्दर भाल पर चढ़ीं; चिकै ऍऴुम् चुटर्–शिखायुक्त अग्नि के समान; विऴियित्तन्–आँखोंवाले बनकर; मिकै ऍऴुन्तिटु–अपराधकारी; चतमक–शतमख (इन्द्र); केळ्–सुनो; ऍत्त–कहकर; अचत्तियुम् तिकैप्प–अशनि को भी भ्रमित करते हुए; वॅकुण्टान्–कोप के साथ बोले। ४८५

महर्षि के श्वास के साथ धुँआ निकला; वे त्रिपुर जलानेवाले शिवजी के समान ठटाकर हँसे; उनकी त्यौरियाँ चढ़ गयीं। आँखों से ज्वालामयी आग सी निकालते हुए महर्षि ने गरजकर कहा—हे शतमख! तुमने गम्भीर अपराध किया है, सुनो। उनके स्वर के सामने वज्रनाद भी भय से ठहर नहीं सका। ४८५

पूद नायहन् पुविमह णायहन् पौरुविल्
वेद नायहन् मार्बहत् तिनिदुवीऱ् ऱिरुक्कुम्

आदि नायहि विरुप्पुरु तॉडैयल्हॉण् डणैन्द
माद राळ्वयिऱ् पॅऱ्ऱॅन् मुयन्ऱमा दवत्ताल् 486

पूतम् नायकन्–सर्व-भूत-नाथ; पुवि मकळ् नायकन्–भूदेवी के पति; पॉरु इल्–अप्रतिम; वेतम् नायकन्–वेदनायक; मार्पकत्तु–(के) वक्षस्थल में; इनितु वीऱ्ऱिरुक्कुम्–सुख से आसीन; आति नायकि–आद्या देवी की; विरुप्पु उरु–प्रिय; तॉटैयल्–माला को; कॉण्टु अणैन्त–लेकर जो आयी थी; मातराळ् वयिन्–(उस) विद्याधरी स्त्री से; मुयन्ऱ मा तवत्ताल्–पूर्वकृत बड़े तप (के बल) से; पॅऱ्ऱॅन्–प्राप्त किया। ४८६

आक्रोश के साथ दुर्वासा जी ने कहा—जगन्नाथ, श्रीनाथ, वेदनाथ श्रीमन्नारायण की वक्षस्थलवासिनी, आदिनायिका श्रीलक्ष्मीदेवी की प्रिय माला थी यह। उसे उनकी भक्ता एक विद्याधरी प्राप्त कर लायी थी। उस विद्याधरी से मुझे यह प्राप्त हुई। यह मेरी तपस्या का फल था। ४८६

इन्ऱु निन्पॅरुञ् जॅव्विकण् डुवहयि नीन्द
मन्ऱ लन्दॉडै यिहळ्न्दनै युनदुमा निदियुम्
ऑन्ऱ लादपल् वळङ्गळु मुवरिपुक् कॉळिप्पक्
कुन्ऱि नीतुय रुरुहॅन वुरैत्तनन् कॉदित्ते 487

इन्ऱु–अब; निन् पॅरु चॅव्वि कण्टु–तुम्हारा बड़ा वैभव देखकर; उवकैयिन्–आनन्द से; ईन्त–दिये; मन्ऱल् अम् तॉटै–सुवासित श्रेष्ठ हार को; इकळ्न्तनै–अनादर किया; उनतु मा नितियुम्–तुम्हारी बड़ी निधि; ऑन्ऱु अलात–(दूसरों के लिए) असुलभ; पल् वळङ्कळुम्–अनेक समृद्ध सम्पदाएँ; उवरि पुक्कु–समुद्र में प्रवेश कर; ऑळिप्प–छिप जायँ, तब; नी कुन्ऱि–तुम निर्धन बनकर; तुयर् उरुक–दुख भोगो; ऍन–ऐसा; कॉतित्तु–खौलकर; उरैत्तनन्–(शाप) कहे। ४८७

अब मैंने तुम्हारा वैभव देखा; बड़ा आनन्दित हुआ। उसी आनन्द की प्रेरणा से मैंने यह सोचकर कि तुम इसके योग्य हो तुम्हें भेंट की। तुमने उसका घोर अनादर किया है। अब तुम्हारी निधियाँ, सारे सत्व और सारी संपदाएँ तुमसे छूटकर सागर में छिप जाएँगी। तुम अभावग्रस्त होकर दुख उठाओगे। ४८७

अरम डन्दैयर् कऱ्पह नवनिदि यमिर्दच्
चुरबि वाम्बरि मदमलै मुदलिय तॉडक्कर्
ऱॉरुपॅ रुन्बॉरु ळिन्ऱियॆ युवरिपुक् कॉळिप्प
वॅरुवि योडिन वॅण्णॆय्वाळ् कण्णन्मे वारिन् 488

अर मटन्तैयर—सुर-स्त्रियाँ; कऱ्पकम्–कल्पक आदि वृक्ष; नव निति–नव-निधियाँ; अमिर्तम् चुरपि–अमृत (सा दूध देनेवाली) कामधेनु; वाम् परि–लपकनेवाला (उच्चैःश्रवा नाम का) अश्व; मतम् मलै–मत्त पर्वत (सम गज);

मुतलिय–आदि सभी; तॊटक्कु अऱ्ऱु–(इन्द्र से) सम्बन्ध विच्छेद करके; ऒरु पॆरु पॊरुळ् इन्ऱि–एक भी श्रेष्ठ वस्तु न बचाकर; उवरि पुक्कु–समुद्र में घुसकर; ऒळिप्प–छिपने के लिए; वॆण्णॆय् वाळ्–तिरुवॆण्णॆय् नल्लूर में रहनेवाले; कण्णन्–'कण्णन्' जिनका उपनाम है; मेवारिन्–उन (दाता) के शत्रुओं के समान; वॆरुवि ओटित–डरकर भागे। ४८८

उस शाप के फलस्वरूप देवांगनाएँ; संतान, हरिचन्दन, मंदार, पारिजात, कलपक इत्यादि पाँच देवतरु-विशेष, शंख, पद्म, महापद्म, मकर कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, वर इत्यादि नवनिधियाँ, अमृत-सम दूध देनेवाली कामधेनु, तीव्रगामी उच्चैश्रवा नामक अश्व, पर्वताकार और मत्त गज, ऐरावत, इत्यादि सभी, विना एक अपवाद के इन्द्र का संवंध-विच्छेद करके भागे और समुद्र में ओझल हो गये। कवि अपने संकल्प के अनुसार अपने अभिभावक की कृतज्ञतापूर्ण स्मृति में इनके भागने की उपमा तिरुवॆण्णॆय् नल्लूर के वासी, परमोदार, कण्णन् का उपनामवाले शडैयप्पन के शत्रुओं के भागने से देते है। वे शत्रु कहीं त्राण का स्थान न पाकर भागकर अदृश्य हो गये। ४८८

वॆय्य मामुनि वॆहुळियाल् विण्णह मुदलाम्
वैयम् यावयुम् वऱुमैनोय् नलियवा नोरुम्
शैय मीर्न्दिडुङ् गुलिशनुञ् जदुमुहत् तवनुम्
शॆय्य तामरैत् तिरुमऱु मार्वनैच् चेर्न्दार् 489

वॆय्य मा मुनि वॆकुळियाल्–क्रोधी महामुनि के कोप (के प्रभाव) से; विण्णकम् मुतल् आम्–सुरलोक आदि; वैयम् यावैयुम्–सभी लोकों को; वऱुमै नोय्–अभाव के रोग के; नलिय–त्रस्त करते; वानोरुम्–देवगण और; चैयम् ईर्न्तिटुम्–पर्वत (-पंख) काटनेवाले; कुलिचत्तुम्–कुलिशधारी; चतुमुकत्तवनुम्–चतुर्मुख और; चॆय्य तामरै तिरु–लाल कमल की श्रीलक्ष्मी और; मऱु–श्रीवत्स से मिलित; मार्पतै–वक्षवाले के; चेर्न्तार्–पास गये। ४८९

क्रोधी स्वभाव के दुर्वासा महर्षि के कोप के प्रभाव से देवादि सभी लोकों में दरिद्रता छा गयी। क्योंकि इन्द्र त्रिलोकाधिपति थे, सब संकट ग्रस्त हो गये। तब देवता लोग, पर्वत-पंख-हर कुलिशपाणि इन्द्र और चतुर्मुख ब्रह्मा मिलकर, कमला और श्रीवत्स जिनके वक्ष को अलंकृत करते है, उन श्रीमन्नारायण के पास गये। ४८९

वॆञ्जीन् मामुनि वॆहुळियाल् विळैन्दमै विळम्बिक्
कञ्ज नाण्मलर्क् किळवनुङ् गडवुळर् पिऱरुम्
तञ्ज मिल्लैनिन् शरणमे शरणॆनच् चलिया
दञ्ज लञ्जलॆन् ऱुरैत्तन नुलहॆला मळन्दोन् 490

कञ्चम् नाळ् मलर्–कंज के नवीन पुष्प के; किळवनुम्–वासी ब्रह्मा और;

कटवुळर् पिऱरुम्–अन्य देवता; वॆम् चॊल् मा मुनि–परुष वचनवाले महर्षि के; वॆकुळियाल्–क्रोध से; विळैन्तमै–हुई बातों को; विळम्पि–वर्णन करके; तञ्चम् इल्लै–कोई शरण्य नहीं है; निन् चरणमे–आपके चरण ही; चरण् ॲन्न–शरण्य कहने पर; उलकु ॲलाम् अळन्तोन्–सारे लोकों के मापक; चलियातु–बिना खीजे; अञ्चल् अञ्चल्–मत डरो, मत डरो; ॲन्ऱु–कहकर; उरैत्तनन्–आगे बताया। ४९०

नवीन कमल-सुमन पर रहनेवाले ब्रह्मा जी और अन्य देवताओं ने भगवान विष्णु से आक्रोश-वचन दुर्वासा के शाप से घटित सारी बातों का विवरण दिया। उन्होंने विनय की कि अब हमारा कोई आश्रय नहीं। आपके ही दिव्य चरणों की शरण है। तब त्रिविक्रम के अवतार में जिन्होंने तीनों लोकों को नापा था वे भगवान विना अन्यमनस्कता दिखाये यानी मन लगाकर बोले, तुम लोग चिन्ता मत करो। उन्होंने तीनों लोकों की सृष्टि की थी। फिर बलि से लेकर इन्द्र को दिया था। अतः उन्होंने सभी निधियों को प्राप्त करने का उपाय बताया। ४९०

मत्तु मन्दरम् वासुहि कडैहयि ऱडैतूण्
मॆत्तु चन्दिरन् शुराशुरर् वेऱुवे ऱुळ्ळ
कॊत्ति रण्डुपाल् वलिप्पव रोडदि कॊडुत्तुक्
कत्तु वारिदि मरुहुऱ वमिळ्दॆळक् कडैमिन् 491

मन्तरम् मत्तु–मन्दर (पर्वत) मथानी; वाचुकि कटै कयिऱु–वासुकि नेती; मॆत्तु चन्तिरन्–कलापूर्ण चन्द्र; अटै तूण्–स्थिर-थम्भ; वेऱु वेऱु उळ्ळ–अलग-अलग रहते; चर अचरर्–सुर और असुर; कॊत्तु–समूह; इरण्टु पाल्–दोनों तरफ़; वलिप्पवर्–खींचनेवाले; ओटति कॊटुत्तु–औषधि डालकर; कत्तु वारिति–गरजनेवाले (क्षीर) सागर को; मऱुकु उऱ–क्षुब्ध करते हुए; अमिळ्तु ॲळ–अमृत निकालते (तक); कटैमिन्–मथो। ४९१

देखो। मन्दर पर्वत को मथानी बनाओ, वासुकी नाग को नेती बनाओ; पूर्णचन्द्र को थिर-थंभ के रूप में खड़ा करो। सुर एक तरफ़ और असुर एक तरफ़ रहकर रस्सी खींचो और मथानी को घुमाओ। समुद्र में औषधियाँ डालकर ऐसा मथो कि क्षीरसागर एकदम गम्भीर रूप से विलोडित हो जाय और अमृत निकल आवे। ४९१

यामु मव्वयित् वरुदुनीर् कदुमॆन वॆळुन्दु
पोमि ॲन्ऱरुळ् पुरिदलु मिऱैञ्जिनर् पुहळ्न्दु
नाम मिन्ऱॆनक् कुनित्तनर् नल्हर वॊळिन्द
दामॆ नुम्बॆरुङ् गळितुळक् कुऱुत्तला लमरर् 492

अ वयित्–उस तरफ़; यामुम् वरुतुम्–हम भी आयँगे; नीर्–तुम लोग; कतुमॆन–झट; ॲळुन्तु पोमिन्–उठकर जाओ; ॲन्ऱु–ऐसा; अरुळ् पुरितलुम्–कृपा-वचन कहते ही; अमरर्–अमरों ने; इऱैञ्चितर्–प्रणमन किया; पुळ्ळ्न्तु–

पूजा करके; नामस् इन्रु-डर नहीं; ॲन-यह सोचकर; नल्कुरवु-दरिद्रता; ओंळिन्ततु आम्-भाग गयी; ॲनुम्-ऐसा; पॅरु कळि-बड़े आनन्द के; तुळक्कु उरुत्तलाल्-नचाने से; कुतित्ततर्-नाच उठे। ४६२

हम भी वहाँ आएँगे। तुम लोग सत्वर चलो। —यह वर-वचन सुनकर देवों ने भगवान का नमस्कार किया और स्तुति की। 'अब हमारी चिन्ता मिटी; भय भागा। दरिद्रता दूर हुई' —यह भाव उनके मन में उदित हुआ और उससे उत्पन्न आनन्द से प्रेरित होकर वे नाचे। ४९२

मलैपि डुङ्गित्तर् वासुहि पिणित्ततर् मदियम्
निलैपॅ रुम्बडि नट्टन्न रोडदि निरैत्तार्
अलैपॅ रुम्पडि पयोददि कडैन्दन्न रवत्ति
निलैत ळर्न्दिड वत्तन्दतुङ् गीळुरु नॆळिन्दान् 493

मलै पिटुङ्कित्तर्-(मन्दर-) पर्वत उखाड़ा; वाचुकि पिणित्ततर्-वासुकि को (उसपर) लपेटा; मतियम्-चन्द्र को; निलै पॅरुम्पटि-स्थिर खड़ाकर; नट्टतर्-गाड़ा; ओटति-अमृतवल्ली नाम की ओषधि; निरैत्तार्-भरपूर डाली; पयोतति-पयोदधि को; अलै पॅरुम्पटि-खूब आकुलित कर; कटैन्ततनर्-मथा; अवत्ति निलै तळर्न्तिट-भूमण्डल की स्थिति डोलायमान हुई; अनन्ततुम्-(भूभारधारी) अनन्त नाग भी; कीळ् उरु-भूमि के नीचे दबकर; नॆळिन्तान्-मरोड़ खाने लगा। ४६३

सुरों और असुरों ने मंदर-गिरि को उखाड़कर क्षीरसागर में मथानी के रूप में रखा। वासुकी नाग को नेती (रस्सी) के रूप में लपेटा; फिर चंद्र को स्थिर-थंभ के रूप में गाड़ा; (अमृतवल्ली नाम की) ओषधियाँ डालीं। फिर पयोदधि को खूब मथने लगे। तब मंदर पर्वत के घूमने से अवनि डोलने लगी और उसके नीचे अनन्तनाग बल खाकर छटपटाने लगा। ४९३

तिरुल्कॊ ळामैयाय् मुदुहिनित् मन्दरन् दिरिय
विरुल्कॊ ळायिरन् दडक्कहळ् परप्पि मीवलिप्प
मरुमु लामुत्ति वॆहुळियात् मरैन्दन वरवे
अरुनि लार्मनत् तडैहला नॆडुन्दहै यमैन्दान् 494

अरन् इलार् मनत्तु-धर्मविरुद्ध लोगों के मन में; अटैकला नॆटु तकै-जिनकी महिमा नहीं आ सकती (यानी मन जान नहीं सकता) ऐसे महिमामय भगवान; तिरल् कॊळ् आमै आय्-सशक्त कूर्म बनकर; मन्तरम् मुतुकिनिल् तिरिय-मन्दरपर्वत को अपनी पीठ पर घूमने देकर; विरल् कॊळ्-बल-युक्त; आयिरम् तट कैकळ्-सहस्र विशाल हाथों को; मी परप्पि-ऊपर फैलाकर; वलिप्प-मथने के लिए रस्सी खींचते हुए; मरम् उलाम् मुनि-क्रोधी स्वभाव के ऋषि के; वॅकुळियाल्-कोप के (शाप के) प्रभाव से; मरैन्तन-अदृश्य हुए सबको; वर अमैन्तान्-लौटा लेने का संकल्प किया। ४६४

तव महिमामय विष्णुदेव, जिनका ध्यान धर्म-रहित मनवाले नहीं धर पाते, बलवान कूर्म बने। वे अपनी पीठ पर घूमते मंदर पर्वत को धारण करते हुए अपने सहस्र हाथों से मंदर को घुमानेवाली वासुकी-रस्सी को खींचने भी लगे। यह अद्भुत कार्य भक्त लोग या धर्ममार्ग पर चलने वालों का मन ही समझ सकता है। उन्होंने समुद्र से उन सारी वस्तुओं को, जो मुनि-शाप से अदृश्य हो गयी थीं, निकाल देने का निश्चय किया। ४९४

इऱन्दु नीङ्गिन यावयु मम्बिरा नरुळाल्
पिऱन्द वववयिऱ् चुराशुरर् तङ्गळिऱ् पिणङ्गच्
चिऱन्द मोहिनि मडॅन्दैया लवुणर्तञ् जॅय्है
तुऱन्दु माण्डन रारमिर् दमरर्ह डुय्त्तार् 495

इऱन्तु नीङ्किन यावैयुम्–इन्द्र से छूटकर अलग हुए सब; ॲम्पिरान् अरुळाल्–मेरे आराध्य ईश्वर की कृपा से; पिऱन्त अ वयिन्–प्रगट हुए, उस समय; चुर अचुरर्–सुर और असुर; तङ्कळिल् पिणङ्क–आपस में लड़े, तब; चिऱन्त मोकिनि मटन्तैयाल्–उत्कृष्ट मोहनी स्त्री द्वारा; अवुणर्–दानव; तम् चॅय्कै तुऱन्तु–अपना काम छोड़कर; माण्टनर्–मरे; आर् अमिर्तु–इच्छित अमृत को; अमरर्कळ् तुय्त्तार्–देवों ने खा लिया। ४९५

उन्ही के संकल्प के प्रताप से, वे सारी वस्तुएँ, जो इन्द्र से संबंध छोड़कर अदृश्य हो गयी थी, फिर से प्रकट हो गयीं। तब सुर और असुरों में अमृत-पान के प्रश्न को लेकर भारी झगड़ा हो गया। श्रीविष्णु ने मोहनी स्त्री का रूप धरा और उस पर मोहित होकर असुरों ने अपना कार्य भुला दिया। वे देवों द्वारा मारे गये और देवों ने अमृत का अशन कर लिया। ४९५

अन्द वॅलैयिऱ् ऱिदिपॅरुन् दुयरुऴन् दऴिवाळ्
वन्दु काशिबन् मलरडि वणङ्गियॅन् मैन्दर्
इन्दि रादियर् पुणर्प्पिना लिऱन्दन रॅनक्कोर्
मैन्द नीयरु ळवर्तमै मडित्तलुक् कॅन्ऱाळ् 496

अन्त वेलैयिल्–उस समय; तिति–(दैत्यों की माता) दिति; पॅरु तुयर् उऴन्तु–बड़े दुख में कुढ़कर; अऴिवाळ्–मुरझानेवाली बनकर; वन्तु–आकर; काचिपन्–काश्यप के; मलर् अटि–कमलचरणों पर; वणङ्कि–नमस्कार करके; ॲन मैन्तर्–मेरे पुत्र; इन्तिरन् आतियर्–इन्द्र आदि के; पुणर्प्पिताल्–षड्यन्त्र से; इऱन्तनर्–हत हो गये; अवर् तमै–उनको; मटित्तलुक्कु–मारने के लिए; ॲनक्कु–मुझे; ओर् मैन्तन्–एक पुत्र; नी अरुळ्–आप प्रदान करें; ॲन्ऱाळ्–कहा। ४९६

उस समय दैत्यों की माता दिति को अपने पुत्रों की मृत्यु से अगाध

शोक हुआ। मनमारे वह काश्यप ऋषि के पास गयी। उनका नमस्कार करके उसने निवेदन किया कि देवों के षड्यन्त्र से मेरे सभी सुत मारे गये। अब देवों से बदला लेकर उनको मारना है। ऐसा कर सकनेवाला एक पुत्र मेरा पैदा हो। आप कृपा करें। ४९६

ऍन्ऱु कूऱलु महवुन्नक् कळित्तन मिनिनी
शॆन्ऱु पारिडैप् परुवमो रायिरन् दीर
निन्ऱु मादवम् पुरिदियेल् निनैवुमुऱ् ऱुदियॆन्
ऱन्ऱु कूऱिडप् पुरिन्दन ळरुन्दव मनैयाळ् 497

ऍन्ऱु कूऱलुम्–यह कहते ही; अन्ऱु–तव; मकवु–पुत्र; उनक्कु–तुम्हें; अळित्तनम्–दिलाया; इनि–अब; नी पार् इटै चॆन्ऱु–तुम भूमि में जाकर; परुवम् ओर् आयिरम् तीर–वर्ष, एक सहस्र, के बीतने तक; निन्ऱु–स्थिर रहकर; मा तवम्–दीर्घ तप; पुरितियेल्–करेगी तो; निनैवु मुऱ्ऱुति–इच्छा पूर्ण होगी; ऍन्ऱु कूऱिट–यह कहने पर; अनैयाळ्–उसने; अरु तवम्–कठिन तपस्या; पुरिन्तनळ्–(आरम्भ) की। ४९७

यह सुनकर मुनिवर ने कहा कि ठीक है। तुम्हें मैंने एक पुत्र दिया। अब तुम भूलोक पर जाओ और पूरे एक सहस्र वर्ष तपस्या करो। स्थिर-मति होकर कठोर तपस्या करो। तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। उनकी आज्ञा के अनुसार वह तपस्या करने लगी। ४९७

केट्ट वासव नन्नवट् कडिमयिऱ् किडैत्तु
वाट्ट मादवत् तुणर्न्दवळ् वयिऱ्ऱुऱ् महवै
वीट्टि येऍळु कूऱुशॆय् दिडुदलुम् विम्मि
नाट्ट नीर्दर मरुत्तॆनु नाममु नविन्ऱान् 498

केट्ट वाचवन्–इसको सुनकर, इन्द्र; अन्नवट्कु–उसको; अटिमैयिन् किटैत्तु–दास के रूप में प्राप्त होकर; मा तवत्तु–कठोर तपस्या के बीच; वाट्टम्–मूर्छित रहने का समय; उणर्न्तु–जानकर; अवळ् वयिऱु उऱु–उसके गर्भ में रहे; मकवै–शिशु को; वीट्टि–खण्डित कर; ऍळु कूऱु–सात भाग; चॆय्तिटलुम्–करते ही; विम्मि–सिसककर; नाट्टम् नीर् तर–आँखों से आँसू बहाने पर; मरुत् ऍन्नुम्–मरुत के; नाममुम्–नाम भी; नविन्ऱान्–कहे। ४९८

वासव (इन्द्र) ने यह बात चरों द्वारा सुनी। वह दिति के पास आये और उसके आज्ञाकारी और विश्वस्त सेवक बने और मौके की ताक में रहे। एक बार दिति तपस्या की विधियों के प्रतिकूल, तपस्या की कठोरता के प्रभाव से, दिन में थककर सो गयी। मौके की ताक में रहे इन्द्र ने सूक्ष्म रूप से उसके गर्भ में प्रवेश करके शिशु के सात टुकड़े कर दिये। जब दिति की मूर्छा छूटी तब उसे बड़ा दुख हुआ। इन्द्र ने उस

पर दया करके उन अंशों को जिलाया और उनका सप्त मरुद्‌गण नाम रखा। ४९८

आय दिव्विड मव्विड मविर्मदि यणिन्द
तूय वन्ऱन्नक् कुमैवयिऱ् ऱोन्ऱिय तॊल्लै
वायु वुम्बुनऱ् कङ्गैयुम् पॊऱुक्कला वलत्त
शेय्व ळर्न्दरुळ् शरवण मॅन्बदुन् दॆरित्तान् 499

आयतु इ इटम्–ऐसा है यह स्थान; अ इटम्–वह स्थान; अविर् मति अणिन्त–फैलानेवाली चाँदनी के चन्द्र को पहने हुए; तूयवन् तनक्कु–पवित्र ईश्वर शिवजी के; उमै वयिन् तोन्ऱिय–उमा से उत्पन्न; तॊल्लै वायुवुम्–प्राचीन वायु और; पुनल् कङ्कैयुम्—जल-रूपिणी गंगा से भी; पॊऱुक्क अला वलत्त–अधार्य बलशाली; चेय्–कार्तिककुमार; वळर्न्तरुळ्–जहाँ पले; चरवणम्–वह शरवण (सरकण्डों का वन) है; ऍन्पतुम्–यह वृत्तांत भी; तॆरित्तान्–वतलाया। ४९९

"यही वह पवित्र स्थान है। वही" —कहकर महर्षि ने और एक वृत्तांत कहा। चन्द्रशेखर ने, देवों की प्रार्थना मानकर, देव-सेनापति बनने योग्य एक पुत्र को देवी हैमवती उमा द्वारा जन्म दिया। उस तेज को वायु और गंगा दोनों धारण नहीं कर सके। उसके पहले अग्नि भी असमर्थ रहा। अग्नि ने वायु के पास रखा; वायु ने गंगा में छोड़ा। गंगा अधीर हुई और उसने उस तेज को शरवण में (सरकंडों के वन में) छोड़ दिया। (फिर कृत्तिकाओं ने उस तेज से उत्पन्न कार्तिकेय [स्कंद] को पाला।) यही वह 'शरवण' है जहाँ स्कंद कृत्तिकाओं द्वारा पालित हुए। (हिमवान की, उमा और गंगा, दोनो पुत्रियों का वृत्तांत, स्कंदोत्पत्ति का विवरण इत्यादि वातें इधर संक्षेप में बतायी गयी हैं। वालमीकी मे किंचित अधिक विस्तार पाया जाता है। शर और वन, दो शब्दों का जब समास बनता है तब 'वन, वण' हो जाता है। अतः शरवण कहा गया है)। ४९९

कालन् मेनियिऱ् करुहिरुळ् कडिन्दुल हळिप्पान्
नील वार्हलित् तेरॊडु निऱैकदिर्क् कडवुळ्
मालिन् मामणि युन्दियिन् वळन्नॊडु वन्द
मूल तामरै मुळ्मुदन् मुळैत्तॅन मुळैत्तान् 500

कालन् मेनियिन्–कालदेव की देह के समान; करुकु इरुळ्–काले अँधेरे को; कटिन्तु–दूरकर; उलकु अळिप्पान्–लोक रक्षा करनेवाले; निऱै कतिर् कटवुळ्–पुष्कल किरणों के देवता (सूर्य); मालिन् मा मणि उन्तियिन्–विष्णु की उत्तम और सुन्दर नाभी में; वळनॊट्टु वन्त–वहुत चिकने रूप से प्रकट हुए; मूल तामरै–(सृष्टि के आदि) हेतु कमल पर; मुळु मुतल्–सृष्टि के आदि कारण भूत; मुळैत्ततु ॲन–(ब्रह्मा) उत्पन्न हुए, ऐसे; नीलम् आर् कलि–नीले रंग के और गर्जनशील समुद्र-मध्य; तेरॊटु मुळैत्तान्–अपने रथ के साथ उदित हुए। ५००

अब सूर्योदय का समय आ गया। सूर्य नीले समुद्र-मध्य से अपने रथ के साथ ऊपर उठ आया। कवि उसकी उपमा श्रीविष्णु के नाभी-कमल से ब्रह्मा जी के प्रकट होने के दृश्य से देते हैं। समुद्र विष्णु से, रथ कमल से, और सूर्य ब्रह्मा से उपमित है। सूर्य उदित होकर यम-सम काले रंग के अंधकार को भगाकर लोक-संरक्षण में लग गया। ५००

अङ्गु नितृऍळुन् दयन्मुदन् मूवरु मनैयार्
शॅङ्ग णेर्ऱवन् शॅऱिशडैप् पळुवत्तु निऱैतेन्
पॉङ्गु कॉन्ऱैयीर्त् तॉळुहलार् पॉन्नियैप् पॊरुवुम्
गङ्गै यॅन्नुमक् करैपॊरु तिरुनदि कण्डार् 501

अयन् मुतल् मूवरुम् अनैयार्–अज आदि आदिदेव, तीनों के समान रहे वे; अङ्कु निन्ऱु–वहाँ से; ऍळुन्तु–उठ चलकर; चॅम् कण् एऱु अवत्त–लाल आँखवाले ऋषभ वाहन; चॅरि चटै पवळत्तु–जटा-जूटरूपी कानन से; निऱै तेन् पॊङ्कु–अधिक शहद भरे; कॊन्ऱै ईर्त्तु–अमलतास फूलों को खींचते हुए; ऒळुकलाल्–बहने से; पॊन्नियै पॊरुवुम्–पॊन्नि नामधारिणी कावेरी की समानता करनेवाली; कङ्कै ऍन्नुम्–गंगा संज्ञित; अ–उस; करै पॊरु–तीरों पर लहरें मारनेवाली; तिरु नति–श्रेष्ठ नदी को; कण्टार्–देखा। ५०१

दूसरे दिन सवेरे वे तीनों, जो ब्रह्मा, विष्णु और शंकर, त्रिदेव के समान थे, वहाँ से चलकर गंगा के तट पर आये। कौशिक की उपमा श्री ब्रह्मा जी से की गयी है दोनों ब्रह्मवित् हैं। श्रीराम तो विष्णु हैं ही। लक्ष्मण अपने क्रोधी स्वभाव में रुद्र की समानता करते हैं। गंगा नदी में शिव जी के जटा-जूट रूपी कानन से अमलतास के फूल बहते आते हैं। उस कारण वह पॊन्नि नाम की कावेरी नदी के समान, जो तमिळ्नाडु में बहती है, है। (इधर ये बातें स्मरणीय हैं। कम्बन वैष्णव भक्त थे और तमिळ देश पर उनका प्रेम अद्वितीय था। और दक्षिण के वैष्णवों में कावेरी को गंगा जी से अधिक श्रेष्ठ मानने का गुण है। कावेरी श्रीरंगम के वैष्णव-क्षेत्र के दोनों तरफ़ माला के समान दो भागों में विभक्त होकर बहती है। श्रीरंगम भूलोक में श्रीवैकुण्ठ तुल्य है। परमपद यानी श्रीवैकुण्ठ के मुक्तिलोक जाने से पहले मुक्त को विरजा नदी में स्नान करने की आवश्यकता पड़ती है। यह कावेरी विरजा नदी के स्थान में मानी जाती है। कावेरी का नाम इसलिए पॊन्नि पड़ा कि उसके जल में स्वर्ण-कण पाये जाते हैं। पॊन् का अर्थ स्वर्ण है। इसलिए भी वह पॊन्नि है कि उसका जल रंग में सुनहला है।)। ५०१

इन्द मानदिक् कुऱ्ऱळ तहैमय यावुम्
ऍन्दै कूऱॆन्न ऱिराहवन् विनवुऱ वनैयान्

मैन्द निन्ऱिरु मरबुळा नयोत्तिमा नहर्वाऴ्
विन्दै शॅर्पुयन् सगरनिम् मेदिनि पुरन्दान् 502

ॲन्तै–तात (पितृ-तुल्य); इन्त मा नतिक्कु–इस महानदी को; उऱ्ऱु उळ–प्राप्त रही; तकैमैय यावुम्–विशेषताएँ सब; कूऱुक–बताइये; ॲन्ऱु–ऐसा; इराकवन् वितवु उऴि–श्रीराघव के पूछते समय; अन्नैयान्–उन्होंने; मैन्त–वीरकुमार; निन् तिरु मरपु उळान्–आपके वंश में उदित; अयोत्ति मा नकर् वाऴ्–अयोध्या महानगर के वासी; विन्तै चेर् पुयन्–वीर्यलक्ष्मी-युक्त भुजोंवाले; चकरन्–सगर (ने); इ मेतिनि–यह भूमि; पुरन्तान्–पाली। ५०२

तब श्रीराघव ने मुनिवर से प्रार्थना की कि इस गंगा की सारी महिमा बताइये। महर्षि ने सगर-वृत्तांत से आरम्भ किया। उन्होंने राम से कहा कि हे वीर-कुमार ! आपके कुल में पहले सगर नाम के राजा हुए जो अयोध्या मे रहकर राज करते थे। उनकी भुजाएँ वीर्य-लक्ष्मी की आश्रय थी। वे अतुलित वीर थे। ५०२

विऱल्कॉळ् वेन्दनुक् कुरियव रिरुवरिल् विदर्प्पै
पॉऱैयि नल्हिय वशमञ्जर् कञ्जुमान पुदल्वन्
पऱवै वेन्दनुक् किळैयमॅन् शुमदिमुन् पयन्द
अऱनिन् मैन्दर्ह ळरुपदि नायिरर् वलत्तार् 503

विऱल् कॉळ् वेन्तनुक्कु–विजयेश राजा की; उरियवर् इरुवरिल्–अपनी दो पत्नियों में; वितर्प्पै–विदर्भनरेश-कुमारी से; पॉऱैयिन् नल्किय–गर्भ-धारणकर जनित; अचमञ्चर्कु–असमञ्जस का; अञ्चुमान्–अंशुमान; पुतल्वन्–पुत्र था; पऱवै वेन्ततुक्कु–खगराज गरुड़ की; इळैय–छोटी बहन; मॅन् सुमति–कोमल सुमति के; मुन् पयन्त–पहले जनाये; अऱन् निल् मैन्तर्कळ्–धर्म-रत पुत्र; अरुपतिनायिरर्–साठ सहस्र; वलत्तार्–अतिबली थे। ५०३

विजय-निलय राजा सगर के दो रानियाँ थी। पहली वैदर्भ-दुहिता (केशिनी) थीं। उनके गर्भ से असमञ्जस नाम का पुत्र हुआ। उसका पुत्र अंशुमान था। खगपति गरुड़ की अनुजा सुमति दूसरी पत्नी थी और उसके गर्भ से साठ हजार धर्मपरायण और बलशाली पुत्र पैदा हुए। ५०३

(बालमीकी में ये बातें हैं। सुमति काश्यप और विनता की पुत्री थी। हिमालय-तट में राजा सगर ने अपनी दोनों पत्नियों के साथ पुत्र-कामना से भृगुदेव की आराधना की। उनकी तपस्या से संतुष्ट होकर भृगु ने एक के द्वारा एक पुत्र और दूसरी के द्वारा साठ सहस्र पुत्रों की उत्पत्ति का वर देकर उसको चुनने में उनको स्वतंत्रता दे दी। केशिनी ने एक पुत्र से तृप्त रहने की बात मानी क्योंकि उसके द्वारा वंशवृद्धि की संभावना थी। सुमति ने बलवान पुत्र चाहे। केशिनी के गर्भ से असमंजस पैदा हुआ। लेकिन वह बड़ा क्रूर निकला। वह निरीह

वच्चों को पकड़कर जल में डुवो देता और उनका मरण के समय छटपटाना देखने में रस लेता था। राजा ने उसको निर्वासित कर दिया। सुमति के गर्भ से एक पिंड वाहर आया जो साठ सहस्र अंशों में फटा और हर अंश से एक पुत्र पैदा हुआ। कहा जाता है कि असमंजस ने जंगल में जाकर कठिन तपस्या की जिससे प्राप्त योग-वल से सभी मरे हुए वच्चे जीवित हो उठे।)

तिण्डि	रॖरॖपुत्तै	शगरनुन्	दनयर्शे	वहङ्गळ्
कण्डु	मुरॖरिय	वयमहम्	वुरिदलुङ्	गऩ्ऩ्रु
वण्डु	तुरॖरुतार्	वाशवर्	कुणर्त्तिनर्	वानोर्
ऑण्डि	रॖरॖपरि	कपिलऩ्	दिडैयिनि	लॊळित्तान् 504

तिण् तिरल् पुत्तै–अधिक वल से युक्त; चकरनुम्–सगर भी; तनयर् चेवकङ्कळ् कण्टु–पुत्रों के साहस-कृत्य देखकर; मुरॖरिय अयम् मकम् पुरितलुम्–विधि-सम्मत हय-यज्ञ करते समय; वानोर्–देवगण; कनऩ्ऱु–कुपित होकर; वण्टु तुरॖरु तार्–भ्रमर-गुंजरित मालाधारी; वाचवरॖकु उरैत्ततर्–वासव को वोले; ऑण् तिरल्–आकर्षक और बलवान; परि–यज्ञाश्व को; कपिलत्तु इटैयिल्–कपिल के स्थान में; ऑळित्तान्–छिपा दिया। ५०४

सगर स्वयं अत्यन्त वलवान थे; उन्होंने देखा कि उनके पुत्र भी साहसपूर्ण थे। इसलिए उन्होंने अश्वमेधयज्ञ करने की वात सोची और उसका आरम्भ किया। देव लोग इसे देखकर कुपित हुए और भ्रमर-गुंजित माला से अलंकृत देवेन्द्र को समाचार दिया। इन्द्र ने अपनी माया से उस सुन्दर, तीव्रगामी, और शक्तिशाली अश्व को हर कर पाताल में कपिल (मुनि) के पीछे, जो तपोलीन थे, छिपा दिया। ५०४

वावु	वाशिपिऩ्	शॆऩ्ऱन	नञ्जुमान्	मरुहिप्
पूवि	लोरिड	मिऩ्ऱिये	नाडिनऩ्	पहुन्दु
देवर्	कोमहऩ्	करन्दमै	यरिन्दिलऩ्	ऱिहैत्तु
मेवु	तादैतऩ्	ऱादेपा	लुरैत्तनऩ्	मीण्डु 505

वावु–लपकते चलनेवाले; वाचि पिऩ्–वाजी (अश्व) के पीछे; चॆऩ्ऱतऩ्–जो गया वह; अञ्चुमान्–अंशुमान; मरुकि–व्यथित होकर; तेवर कोऩ्–देवेन्द्र का; करन्तमै–छिपाना; अरिन्तिलऩ्–न जान पाया; पूविल्–भूतल में; ओर् इटम् इऩ्ऱि–कहीं (एक स्थान) न छोड़कर; पुकुन्तु नाटिनऩ्–जाकर खोजा; तिकैत्तु–किंकर्तव्यविमूढ़ होकर; मीण्टु–लौट आकर; मेवु तातै तऩ् तातै पाल्–यागदीक्षित अपने पिता के पिता के पास; उरैत्तनऩ्–वताया। ५०५

यज्ञाश्व के पीछे अंशुमान जा रहा था। अकस्मात् उसे मालूम हुआ कि अश्व अदृश्य है। वह भौंचक्का रह गया। उसे इन्द्र की माया मालूम नहीं थी। वह सव स्थानों में खोजने लगा। अश्व दिखायी नहीं दिया।

किंकर्तव्यविमूढ़ होकर वह अपने पितामह के पास लौट आया और समाचार कहा। ५०५

केट्ट वेन्दन् मदलैयर्क् कम्मौऴि किळत्ति
वाट्ट मीक्कौळच् चकरर्कळ् वडवैयिन् मरुहि
नाट्टम् वॅङ्गनल् पॉऴिदर नानिलन् दडवित्
तोट्टु नुङ्गिनर् पुवियिन्नैप् पादलन् दोन्र 506

केट्ट वेन्तनुम्–जिन्होंने सुना वे राजा भी; अ मौऴि–वह समाचार; मतलैयर्क्कु–अपने पुत्रों को; किळत्ति–देकर; वाट्टम् मी कौळ–अधिक दुखी हुए, तब; चकरर्कळ्–सगर-पुत्र; वटवैयिन् मरुकि–वड़वाग्नि के समान जलकर; नाट्टम्–आँखों से; वॅम् कनल्–कोपाग्नि को; पॉऴि तर–बरसाते हुए; नाल् निलम् तटवि–चतुर्विधा भूमि टटोलकर; पुवियिनै–भूमि को; पातलम् तोन्र–पाताल तक; तोट्टु नुङ्किनर्–खोदकर गहरा बनाया। ५०६

राजा सगर ने यह सुना तो वे क्लांत हुए। उन्होंने अपने पुत्रों से यह बात कही तो वे वड़वाग्नि के समान क्रोध से जलने लगे। फिर वे आँखों से क्रोधाग्नि प्रकट करते हुए निकल पड़े। सारा भूमंडल बीन डाला। फिर भूमि को खोदकर पाताल का मार्ग बना दिया। (भूमि को नानिलम् यानी चतुर्विधा भूमि कहते हैं। कारण; भूमि के पर्वत प्रदेश, जंगल प्रदेश, खेतों व बागों का प्रदेश और समुद्र-तटीय प्रदेश इत्यादि चार प्राकृत भेद है। पालै यानी रेतीले जंगल को अलग नहीं गिना जाता क्योंकि यह माना जाता है कि कोई भी भूप्रदेश वर्षा के न होते समय जंगल बन जाता है और वह बीहड़ भूमि पालै या मरुप्रदेश कही जाती है।)। ५०६

नूऱ्ऱु योशनै यहलमु माऴमु नुडङ्गक्
कूऱु शॅय्दनन् रॅन्बराल् वडगुण दिशैयिन्
एऱु मादवक् कबिलन्बि न्निवुळिकण् डॅरियिन्
शीऱ्ऱ वैदनर् शॅरुक्किनर् नॅरुक्किनर् शॅऱुत्तार् 507

वट कुण तिचैयिन्–उत्तर-पूर्व दिशा में; नूऱु योचनै अकलमुम् आऴमुम् नुटङ्क–शत योजन चौड़ा और उतना गहरा गड्ढा बने, ऐसा; कूऱु चॅय्तनर्–खोद दिया; ॲन्पर्–(लोग) कहते हैं; एऱु–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; मातवम्–महान तप में लगे; कपिलन् पिन्–कपिलदेव के पीछे; इवुळि कण्टु–अश्व को देखकर; ॲरियिन् चीऱ्ऱि–आग के समान जलकर; चॅरुक्किनर्–गर्वीले; वैततर्–डाँटते; नॅरुक्किनर्–घेरकर; चॅऱुत्तार्–संकट देने लगे। ५०७

कहा गया है (बालमीकी द्वारा) कि वे उत्तर-पूर्व दिशा में गये। वहाँ उन्होंने चौड़ाई में शतयोजन और गहराई में शतयोजन भूमि को खोदा। वहाँ पाताल में उन्होंने तपोमग्न कपिल को और उनके पीछे

यज्ञाश्व को देखा। उन्होंने कपिल देव को चोर समझा और वे आग के समान विफर कर उन्हें डाँटने और घेरकर सताने लगे। ५०७

मूळुम् वॆञ्जिनत् तरुन्दवन् मुनिनॆरि विळिप्पप्
पूळै शूडिद नहैयिनि लॆयिल्पॊडिन् दनपोल्
आळु मैन्दरा ऱ्युदरुम् जाम्बरा यविन्दार्
वॆळ्वि कॊण्डनल् वेन्दनुक् कुरैत्तनर् वेय्हळ् 508

मूळुम् वॆम् चित्ततु–उमड़ते हुए कठोर कोपवाले; अरु तवन्–उत्तम तपस्वी (के); मुनिन्तु–क्रोध करके; ऍरि विळिप्प–अग्नि उगलते हुए तरेरते समय; पूळै चूटि–पूळै नामक फूलों के धारक; तन् नकैयिनिल्–(शिव) के हास से; ऍयिल् पॊटिन्तन पोल्–त्रिपुर जल गये, ऐसा; आळुम् मैन्तर्–राजकुमार; आऱु अयुतरुम्–छः दस सहस्र सब; चाम्पर् आय्–भस्म बनकर; अविन्तार्–मिट गये; वेय्कळ्–गुप्तचरों ने; वेळ्वि कॊण्ट–याग दीक्षित; नल् वेन्तनुक्कु–अच्छे सगरराज से; उरैत्तनर्–यह बात कही। ५०८

तपस्वी महर्षि के मन मे क्रोध उठा और बढ़ने लगा। उन्होंने आग्नेय आँखों से उनको तरेरा। बस, उनकी दृष्टि पड़ते ही वे वैसे ही भस्म होकर ढेर बन गये जैसे त्रिपुर फूलधर शिवजी के हाथ से जलकर भस्म हो गये थे। गुप्तचरों ने जाकर यह समाचार जान लिया और राजा को विदित किया। ५०८

उळैत्तु वॆन्दुयरक् कीऱुकाण् किलनुणर् वळिया
अळैत्तु मैन्दनॆन् मैन्दनै यवर्कळिन् दनरेल्
इळैत्त वॆळ्वियिन् रिळप्पदो वॆनवव नॆळुन्दु
तळैत्त मादवक् कबिलन्वाळ् पादलञ् जार्न्दान् 509

उळैत्तु–दुखी होकर; वॆम् तुयर्क्कु–कठोर दुख का; ईऱु काण्किलन्–अन्त न पाकर; उणर्वु अळिया–सुध-बुध खोकर; मैन्तन् तन् मैन्तनै–पुत्र के पुत्र को; अळैत्तु–बुलाकर; अवर् कळिन्तनरेल्–वे मर गये, इस कारण; इळैत्त वेळ्वि–आरंभित यज्ञ को; इन्ऱु इळप्पतो–अब छोड़ना है क्या; ऍन्न–यह कहने पर; अवन् ऍळुन्तु–वह उठकर; तळैत्त मा तवम्–उत्कृष्ट महान तपोधन; कपिलन् वाळ्–कपिल के रहने के स्थान; पातलम् चार्न्तान्–पाताल पहुँचा। ५०९

राजा यह सुनकर असीम दुख मे पड़ गये। सुध-बुध जाती रही। फिर उन्होंने अंशुमान को बुलाया और कहा कि पुत्र-मरण के कारण, आरंभित यज्ञ को रोकना उचित नही होगा। तब अंशुमान पाताल में कपिल के पास पहुँचा। ५०९

विण्डु नीङ्गिन रुडलुहु पिऱङ्गल्वॆण् णीऱ्ऱैक्
कण्डु तुण्णॆनु मनत्तिनन् कपिलमा मुनितन्

पुण्ड रीहनऱ् ऱाडोऴु दॅऴुन्दनन् पुहऴ्क्
कॉण्डु पोहनिन् निवुळियॅन् ऱुऱ्ऱदुङ् गुऱित्तान् 510

विण्टु नीङ्कित्तर्–भर कर गये हुए; उटल् उकु–शरीरों के गिरे; पिऱङ्कल–पर्वत-सम; वॅण् नीऱ्ऱै–श्वेत भस्म (राशि) को; कण्टु–देखकर; तुण् ॲन्तुम् मनत्तिनन्–चौंकते मन का होकर; कपिल मा मुनि तन्–कपिल महामुनि के; पुण्टरीकम् नल् ताळ्–कमल-सम श्रेष्ठ चरणों पर; तॊऴुतु–नमस्कार कर; ॲऴुन्ततन्–उठा; पुकऴ्–स्तुति की; निन् इवुळि–अपना अश्व; कॊण्टु पोक–ले जाओ; ॲन्ऱु–कहकर; उऱ्ऱतुम्–घटित हुआ सब; कुऱित्तान्–बताया। ५१०

अंशुमान ने अपने पिता के सौतेले भाइयों के शरीरों के बने भस्म-ढेर को देखा जो श्वेतपर्वत के समान था, वह दलक गया। फिर उसने कपिल के पैरों पर पड़कर स्तुति की। कपिल ने करुणा के साथ उससे कहा कि तुम अपना अश्व ले जाओ। उन्होंने उसे घटित समाचार भी कह सुनाया। ५१०

पऴुदि लादव नुरैत्तशॊऱ् केट्टलुम् परिवाल्
तॊऴुदु वाम्बरि कॊणर्न्दवि शुरर्हऴुक् कीया
मुऴुदुम् वॅळ्वियै मुऱ्ऱुवित् तरशनु मुडिन्दान्
ॲऴुदु कीर्त्तियाय् मैन्दनुक् करशिय लीन्दु 511

ॲऴुतु कीर्त्तियाय्–(कवि द्वारा) उल्लेखनीय कीर्तिवाले हे राम; पऴुतु इलातवन्–दोषहीन (के); उरैत्त–कहे; चॊल् केट्टलुम्–वचन सुनते ही; परिवाल् तॊऴुतु–आदर के साथ प्रणमन करके; वाम् परि कॊण्र्न्तु–लपक चलनेवाले अश्व को लाकर; अरचतुम्–राजा (सगर) भी; अवि–हवि; चुरर्कळुक्कु ईया–सुरों को देकर; वॅळ्वियै मुऴुतुम् मुऱ्ऱुवित्तु–यज्ञ को निःशेष पूर्ण करके; मैन्तत्तुक्कु–पुत्र को; अरचियल् ईन्तु–शासनभार देकर; मुटिन्तान्–(अपनी इह-यात्रा) समाप्त की। ५११

कवियों द्वारा लिखने योग्य यशस्वी, हे राम! जिनका कोई कामादि दोष नहीं था (अतः इस काम में भी अपराध नहीं था) उन कपिलदेव का वचन सुनकर अंशुमान ने आदर के साथ उनकी वन्दना की। वह तीव्रगामी अश्व को यज्ञशाला में लाया। सगर ने देवों को हविर्भाग देकर यज्ञ को यथाविधि पूर्ण किया। फिर अंशुमान के पास राज्य का भार देकर उन्होंने अपनी इह-लीला सँवार ली। वे परमपद को प्राप्त हो गये। ५११

सगरर् तॊट्टलाऱ् चाहर मनप्पॅयर् तऴैप्प
महर वारिदि शिऱन्ददु महिदल मुऴुदुम्
निहरिल् मैन्दने पुरन्दन नवनॅडु मरविल्
पहिर दन्नॅतुम् वार्त्तिबन् परुदियॊत् तुदित्तान् 512

चकरर् तोट्टलाल्–सगर (-पुत्रों) द्वारा खुदे होने से; चाकरम् ॲत्र पॅयर् तळैप्प–सागर नाम के प्रथित होते; मकरम् वारिति–मकर-निलय वारिधि; चिऱन्ततु–उत्कृष्ट हुई; मकितलम् मुळ्ळुतुम्–महीतल सब को; निकर् इल् मैन्तते–उपमाहीन कुमार (अंशुमान) ने ही; पुरन्ततन्–पालित किया; अवन् नॅटु मरपिल्–उसके बड़े वंश में; पकिरतन्–भगीरथ; ॲनुम्–संज्ञित; पार्त्तिपन्–पृथ्वीपति; परुति ऑत्तु–सूर्य के समान; उतित्तान्–पैदा हुए। ५१२

सगर-पुत्रों द्वारा खोदे जाने के कारण मकर-संकुल-वारिधि सागर कहलायी और प्रशंसित हो गयी। अंशुमान ने राज्य-संचालन किया। उसके प्रशंसित वंश में भगीरथ नाम के राजा सूर्य के समान तेजस्वी और यशस्वी पैदा हुए। (अंशुमान, दिलीप, भगीरथ यह क्रम है)। ५१२

उलहम् यावैयुम् पॊदुवऱत् तिहिरियै युरुट्टि
इलहु मन्नव निरुन्दुळि यिऱन्दवर् शरिदम्
अलहि रॊन्मुनि याङ्गवर् कुरैत्तिड वरशन्
तिलह मण्णुऱ वणङ्गिनिन् ऱॊरुमॊळि शॅप्पुम् 513

इलकुम् अन्नवन्–यश के साथ रहनेवाले वे; उलकम् यावैयुम्–सभी लोकों को; पॊतु अऱ–अविभक्त अधिकार का; तिकिरियै उरुट्टि–आज्ञाचक्र चलाते हुए; इरुन्तुळि–जब रहे तब; आङ्कु अवर्कु–वैसे उनको; इऱन्तवर् चरितम्–मृत पितरों का वृत्तान्त; अलकु इल् तॊल् मुनि–अत्यन्त प्राचीन (वयोवृद्ध) मुनिवर, वसिष्ठजी के; उरैत्तिट–कहते समय; अरचन्–राजा; तिलकम् मण् उऱ–भाल को भूमि पर टेकते; वणङ्कि–दण्डवत् करके; निन्ऱु–खड़े होकर; ऑरु मॊळि चॅप्पुम्–एक बात कही। ५१३

यशस्वी भगीरथ एक-छत्र राज करते थे। एक दिन अत्यन्त वयोवृद्ध महर्षि वसिष्ठ ने उनसे सगर-पुत्रों की मृत्यु का वृत्तान्त कहा। वह सुनकर राजा भगीरथ ने वसिष्ठ जी के सामने ललाट को भूमि पर लगाकर दण्डवत् किया और यों कहा। ५१३

कॊडिय मामुनि वॅहुळियिन् मडिन्दवॅङ् गुरवर्
मुडिय नीणिर यत्तिनि लळुन्दुरु मुरैमै
कडियु मारॅनक् करुन्दव मम्मैहुरु करुमम्
अडिहळ् शार्रुह वॅन्ऱलु मन्दण नरैवान् 514

मा मुनि–महर्षि (कपिल) के; कॊटिय वॅकुळियिन्–भयंकर क्रोध से; मटिन्त–मरे हुए; ॲम् कुरवर्–मेरे पूर्व-पुरुष; नीळ् निरयत्तिल्–बड़े नरक में; मुटिय अळुन्तुरुम् मुरैमै–सदा मग्न रहने के व्यवहार को; कटियुम् आऱु–काटने के उपाय में; अरु तवम्–कठिन तपस्या; अमैकुऱु करुमम्–साध्य बनानेवाले कार्य को; ॲनक्कु–मुझे; अटिकळ्–महात्मन् आप; चार्रुक–बता दें; ॲन्ऱलुम्–प्रार्थना करते ही; अन्तणन् अरैवान्–महर्षि ने कहा। ५१४

आपके वचन से विदित होता है कि कपिल महर्षि के कठोर शाप के कारण मेरे पूर्वजों को नित्य-निरय-वास मिल गया है। उसको बदल देना चाहता हूँ। उनको उद्गति दिलानी है। उसके निमित्त तपस्या करनी है। उसके लिए क्या करना चाहिए। कृपा करके आप बताइये। तब महर्षि ने कहा। ५१४

वैय माळुडै मन्ऩवर् मन्ऩव मडिन्दोर्
उय्य नीडव मॊऴिवरु पहलॆला मॊरुङ्गे
शॆय्य नाण्मलर्क् किऴवऩै नोक्किनी शॆय्दि
नैय लॆऩ्ऱिऩि दुरैत्तन ऩवैयरु मुऩिवऩ् 515

वैयम् आळुटै–लोकपालक; मन्ऩवर् मन्ऩव–राजाधिराज; मटिन्तोर् उय्य–मृतों का उद्धार करने; ऑऴिवु अरु–निरन्तर; पकल् ॲलाम्–अनेक काल तक; ऑरुङ्के–एक साथ; चॆय्य नाळ् मलर्–लाल, नवीन कमल के; किऴवऩै–स्वामी (ब्रह्मा) को; नोक्कि–उद्दिश्य करके; नीळ् तवम् नी चॆय्ति–दीर्घ तपस्या आप कीजिये; नैयल्–क्लांत मत हो; ॲऩ्ऱु–ऐसा; नवै अरु मुऩिवऩ्–निर्मल मुनि ने; इतिनु उरैत्तनऩ्–मधुर वचन कहा। ५१५

हे पृथ्वीपति राजाधिराज ! भगीरथ ! शाप-हत सगर-पुत्रों को उद्गति में पहुँचाने के लिए दीर्घकाल तक निरन्तर कठोर तप करना है। ब्रह्मा को उद्दिश्य करके वह तपस्या कीजिये। चिन्ता में घुलने की आवश्यकता नहीं है। —यह निर्मल मुनिवर ने उपाय बताया। ५१५

ञालम् यावैयुज् जुमन्दिरऩ् ऱऩ्वयि ऩल्हिक्
कोलु मादवत् तिमगिरि मरुङ्गिनिऱ् कुरुहिक्
काल मोर्पदि नायिर मरुन्दवङ् गऴिप्प
मूल तामरै मुळ्मुदऱ् किऴवऩ् मुऩ्दिऩऩे 516

ञालम् यावैयुम्–भू (शासन) सब को; चुमन्तिरऩ् तऩ् वयिऩ्–सुमन्त्र के पास; नल्कि–सिपुर्द कर; कोलुम्–श्रेष्ठ; मातवत्तु–तपस्या के योग्य; इमकिरि मरुङ्किनिल्–हिमगिरि के पार्श्व में; कुरुकि–जाकर; ओर् पतिऩायिरम् कालम्–दस सहस्र वर्ष तक; अरु तवम् कऴिप्प–कठोर तपस्या करने पर; मूलम् तामरै–सृष्टि के मूल, (विष्णु के नाभी-) कमल पर उदित; मुळ्ळु मुतल् किऴवऩ्–सृष्टि के आदि पुरुष; मुऩ्तिऩऩ्–प्रकट हुए। ५१६

राजा भगीरथ यह सुनकर तत्पर हो गये। उन्होंने सुमंत के पास राज्य सौंपा। वे तपोनुकूल हिमालय की तलहटी में पहुँचे। दस सहस्र वर्ष तक उन्होंने कठोर तप किया। तब सृष्टि के आदिकर्ता, ब्रह्माजी ने, जो विष्णु के सुन्दर नाभी-कमल पर पहले प्रकट हुए थे, भगीरथ को दर्शन दिये। ५१६

निऩ्पॅ रुन्द्रव महिऴ्न्दन निनदुनीऴ् कुरवर्
मुऩ्बि इऩ्दर रुन्दवऩ् मुऩिविऩ्ऩा दलिऩ्ऩाल्
मऩ्बॅ रुम्बुवि यदनिल्वा नदिकडि दणुहि
ॲऩ्बु तॊयुमे लिरुङ्गदि पॆऱुवरॆऩ् ऱिशैत्ताऩ् 517

निऩ् पॆरु तवम्–तुम्हारी बड़ी तपस्या से; मकिऴ्न्ततऩ्–हम बड़े सन्तुष्ट हुए। निनतु नीऴ् कुरवर्–तुम्हारे अनेक पूर्वपुरुष; मुऩ्पु–पहले; अरु तवऩ् मुऩिविऩ्–श्रेष्ठ तपस्वी के कोप से; इऱन्ततर्–मरे; आतलिऩ्ऩाल्–इसलिए; वाऩ् नति–आकाश की गंगा; मऩ् पॆरु पुवि अततिल्–बहुत विशाल इस भूतल पर; कटितु अणुकि–बहती हुई आकर; ॲऩ्पु तॊयुमेल्–अस्थि पर जमेगी तो; इरु कति पॆऱुवर्–उद्‌गति को प्राप्त होंगे; ॲऩ्ऱु इचैत्ताऩ्–यह कहा। ५१७

उन्होंने भगीरथ को आश्वासन देते हुए कहा कि तुम्हारी कठोर और दीर्घ तपस्या से हम संतुष्ट हुए। तुम्हारे अधिक संख्या के पूर्वपुरुष कपिलदेव के कोप के शाप से मरे है। इसलिए सलिल-क्रिया सुरलोक की गगा नदी के जल से ही करनी चाहिये। वह जल हड्डियों पर वहेगा तभी वे श्रेष्ठ गति को प्राप्त होंगे। ५१७

माह मानदि पुवियिडै नडक्किऩ्मऱ् ऱवडऩ्
वेह माऱ्ऱुदल् विडैयवऱ् कऩ्ऱिवे ऱरिदाल्
तोहै पाहनै नोक्किनी यरुन्दवऩ् दॊडङ्गॆऩ्
ऱेहि नाऩुल हनैत्तुमॆव् वुयिर्हळु मीऩ्ऱाऩ् 518

उलकु अऩैत्तुम्–सारे लोकों को; ॲव् उयिर्कळुम्–सारे प्राणधारी जीवों को; ईऩ्ऱाऩ्–सृष्ट करनेवाले; माकम् मा नति–आकाश की महानदी; पुवि इटै नटक्किऩ्–भूमि पर आयेगी तो; अवळ् तऩ्–उसका; वेकम्–वेग को; आऱ्ऱुतल्–धारण करना; विटैयवऱ्कु अऩ्ऱि–ऋषभवाहन शिव के सिवा; वेऱु अरितु आल्–अन्यों के लिए दुस्तर है इसलिए; नी–तुम; तोकैपाकनै नोक्कि–कलापी सी छटावाली पार्वती जिनका एक भाग है उनको उद्दिश्य करके; अरु तवम् तॊटङ्कु–कठिन तपस्या आरम्भ करो; ॲऩ्ऱु–यह कहकर; एकिनाऩ्–चले गये (अदृश्य हो गये)। ५१८

सर्वलोक-पितामह, ब्रह्मा ने आगे कहा— महिमामयी आकाश-गंगा भूमि पर उतर आयेगी तो उसका वेग धारण करना सबके लिए असम्भव है। केवल ऋषभ-वाहन शिवजी उसको रोके रख सकते है। इसलिए कलापी-सी छटावाली सुन्दरी पार्वतीदेवी को अपने शरीर का आधा भाग देकर जो रखते है, उनका ध्यान करते हुए कठिन तपस्या करो। यह उपदेश देकर ब्रह्माजी तिरोभूत हो गये। ५१८

मङ्गै पाहनै नोक्किमुन मॊऴिन्दऩ वरुडम्
तङ्गु मादवम् बुरिदलुन् दऴनिऱ्क् कडवुळ्

अङ्गु वन्दुनिन् करुत्तिनै मुडित्तुमॅन् ऱहन्ऱान्
गङ्गै यैत्तॊऴक् कालमै यायिरङ् गऴित्तान् 519

मङ्कै पाकनै नोक्कि–देवी (पार्वती) जिनका एक भाग है उनको चिन्त्य बनाकर; मुन् मॊऴिन्तन्न वरुटम्–पूर्वोक्त (दस सहस्र) वर्ष; तङ्कुम्–अचंचल; मातवम्–घोर तपस्या करने पर; तऴल् निऱम् कटवुळ्–अग्निवर्ण ईश्वर शिव; अङ्कु वन्तु–उधर आकर; निन् करुत्तिनै मुटित्तुम्–तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे; ऍन्ऱु–कहकर; अकन्ऱान्–तिरोभूत हुए; कङ्कैयै तॊऴ–गंगा के दर्शनार्थ; कालम् ऐयायिरम्–काल पाँच सहस्र वर्ष; कऴित्तान्–(तपस्या में) व्यतीत किये। ५१६

अर्धनारीदेव का ध्यान कर, भगीरथ ने, फिर से दस सहस्र वर्ष तपस्या की। अग्नि-प्रभ ईश्वर ने भगीरथ को दर्शन दिये और, 'हम तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे', यह कहकर चले गये। फिर से भगीरथ ने गंगा के ध्यान में पाँच सहस्र वर्ष तपस्या की। ५१९

ऑरुम डक्कॊडि याहिवन् दुनदुमा दवमॅन्
पॊरुपु नऱ्कॊडि वरिन्नवळ् वेहमार् पॊऱुप्पार्
अरनु रैत्तशॊल् विनोदमऱ् ऱिन्ऱुनी यऱिन्दु
पॅरुहु नऱ्ऱवम् बुरिहॅन्न वरनदि पॅयर्न्दाळ् 520

वरम् नति–वर नदी; ऑरु मट कोटि आकि वन्तु–एक बाल-लता सी कन्या बन के आकर; उनतु मा तवम् ऍन्–तुम्हारी बड़ी तपस्या काहे के लिए; पॊरु पुनल् कॊटि वरित्–तरंगपूर्ण जल-धार आवे; अवळ् वेकम्–उसका वेग; पॊऱुप्पार् आर्–(रोकनेवाले) धारण करनेवाले कौन है; अरन् उरैत्त चॊल्–हर का कथन; विनोतम्–परिहास है; इन्ऱु नी अऱिन्तु–अब तुम समझो, और; पॅरुकु नल् नवम्–और भी अच्छा तप; पुरिक–करो; ऍन्न–कहकर; पॅयर्न्ताळ्–अदृश्य हो गयी। ५२०

वर नदी गंगा इनके तप से संतुष्ट होकर एक बाल-लता-सी सुन्दरी कन्या के रूप में प्रकट हुई और बोलीं— तुम्हारी कड़ी और बड़ी तपस्या का क्या अर्थ है? गंगा का सवेग प्रवाह आयेगा तो उसको रोक सकेगा कौन? हर ने जो कहा वह परिहास था। तुम यह समझो और अधिक तपस्या करो। यह कहकर वह अदृश्य हो गयीं। ५२०

करन्दै मत्तमो डॅरुक्कलर् कूविळङ् गडुक्कै
निरन्द पॊऱ्चडै निन्मलक् कॊऴुन्दिनै निनैया
अरन्दै युऱ्ऱव निरण्डरै यायिर माण्डु
पुरिन्दु नऱ्ऱवम् पॊलिदर वरैमहळ् पुनिदन् 521

अरन्तै उऱ्ऱवन्–दुखी हुए; करन्तै–(शिव-) तुलसी (पत्र); मत्तमोटु–धतूरे (फूलों) के साथ; ऍरुक्कु अलर्–अर्क के फूल; कूविळम्–बिल्वपत्र; कटुक्कै–अमलतास के फूल; निरन्त–भरे; पॊन् चटै–सुनहली जटा वाले; निन्मलम्–निर्मल; कॊऴुन्तिनै–(अग्नि-) ज्वाला-सम (शिवजी) को; निनैया–ध्यान कर; इरण्टरै

आयिरम् आण्टु–ढाई सहस्र वर्ष; नल् तवम् पुरिन्तु–अच्छी तपस्या करके; पोलि तर–शोभायमान रहते (समय); वरै मकळ् पुत्तितन्–पर्वतकुमारी-पति, पवित्र ईश्वर। ५२१

भगीरथ यह सुनकर बहुत खिन्न हो गये। फिर उन्होंने ईश्वर शंकरजी के, जिनकी जटाएँ, (शिव-) तुलसी और विल्व के पत्र, और धतूरे, अर्क और अमलतास के फूलों से अलकृत और सुनहली रहती हैं और जो निर्मल अग्नि-ज्वाला के समान कांतियुक्त है, ध्यान में ढाई सहस्र वर्ष तप किया। तप से तेजोवान हुए उनके सामने पार्वती-पति प्रकट हुए। ५२१

ऍदिर्न्दु निन्निनै वॅन्नॅन विरैञ्जियॅम् वॅरुम
अदिर्न्दु गङ्गैयी दरैन्दन ळॅन्ड्रलु मञ्जल्
पिदिर्न्दि डावहै कात्तुमॅन् ड्रेहिय पिन्नै
मुदिर्न्द मादव मिरण्डरै यायिर मुडित्तान् 522

ऍतिर्न्तु–सामने आकर; नित् नितैवु ऍन् ऍत–तुम्हारी क्या इच्छा है, पूछते समय; इरैञ्चि–विनय करके; ऍम् पॅरुम–मेरे देव; कङ्कै–गंगाजी ने; अतिर्न्तु–(दिल) दहलाते हुए; ईतु अरैन्ततळ्–यह कहा; ऍन्ड्रलुम्–कहते ही; अञ्चल्–मत डरो; पितिर्न्तिटा वकै–न छलके ऐसा; कात्तुम्–रोक लूँगा; ऍन्ड्रु–कहकर; एकिय पिन्नै–जाने के पश्चात्; मुतिर्न्त–गम्भीर; मा तवम्–कठोर तपस्या; इरण्टरै आयिरम्–ढाई सहस्र (वर्ष); मुटित्तान्–कर चुके। ५२२

(भगीरथ के सामने प्रकट होकर) उन्होंने पूछा कि अब तुम क्या चाहते हो? भगीरथ ने विनय की कि मेरे देव! गंगाजी ने मेरा दिल तोड़ते हुए यह कह दिया कि आपका वचन परिहास में कहा वचन है। तब ईश्वर ने धैर्य दिलाते हुए कहा कि मत डरो। सचमुच हम रोकेंगे। वह थोड़ा भी छलक ही नहीं पायेगी। यह कहकर वे चले गये। पश्चात् भगीरथ ने और ढाई सहस्र वर्ष गंगाजी के प्रति तपस्या की। ५२२

पॅरुहु नीरॊडु पूदियुम् वायुवुम् बिरङ्गु
शरुहुम् वॅङ्गदि रॊळियैयुन् दुय्त्तदु तन्नैयुम्
परुह लिन्ड्रियु मुप्पदि नायिरम् परुवम्
मुरुहु कादलिन् मन्नव नरुन्दव मुयन्ड्रान् 523

मन्नवन्–राजा भगीरथ; पिरङ्कु चरुकुम्–(हरीतिमा) बदलकर शुष्क बने पत्ते; पूतियुम्–भूति; पॅरुकुम् नीरॊटु–बहते जल के साथ; वायुवुम्–वायु को; वॅम् कतिर्–गरम सूर्य की; ऑळियैयुम्–किरणों को; तुय्त्तु–अशन कर; अतु तन्नैयुम् परुकल् इन्ड्रियुम्–उसको भी खाये बिना; मुप्पतिनायिरम् परुवम्–तीस सहस्र संवत्सर; मुरुकु कातलिन्–वर्धनशील श्रद्धा के साथ; अरु तवम् मुयन्ड्रान्–कठिन तपस्या पूरी की। ५२३

इस तरह भगीरथ ने कुल मिलाकर तीस सहस्र वर्ष तक तपस्या

की। ब्रह्मा, शिव, गंगा, फिर शिव, फिर गंगा को उद्देश्य वनाकर पाँच वारियों में तपस्या की। उनमें चार में क्रमशः सूखे पत्ते, धूलि और जल, वायु और सूर्य-किरणों का आश्रय लिया। पाँचवीं में कुछ भी नहीं लिया। यह कठोर तपस्या थी और उन्होंने श्रद्धा और चाह के साथ उसे पूरा किया। ५२३

उन्दि यम्बुयत् तुदित्तव नुऱैदरु मुलहुम्
इन्दि रादिय रुलहमुम् वॅरुवुऱ विरैत्तु
वन्दु तोन्ऱिनळ् वरनदि मलैमहळ् कॊऴुनन्
शिन्दि डादोरु शडैयिनिऱ् करन्दनन् शेर 524

वर नति–श्रेष्ठ नदी; उन्ति अम्पुयत्तु उतित्तवन्–श्रीविष्णु के नाभी-कमल पर उदित (ब्रह्माजी); उऱै तरुम् उलकुम्–जहाँ रहते हैं, उस लोक को (और); इन्तिर आतियर् उलकमुम्–इन्द्रादि देवों के लोकों को; वॅरुवु उऱ–डराते हुए; इरैत्तु–गर्जन करती हुई; वन्तु तोन्ऱितळ्–आ अवतरित हुईं; मलै मकळ् कॊऴुनन्–गिरिजापति (ने); चेर चिन्तिटातु–बिल्कुल छलकने न देकर; ऑरु चटैयितिल्–एक जटा के अन्दर; करन्तनन्–छिपा लिया। ५२४

गंगाजी अवतरित हुई। वह अहंकार-पूर्ण होकर इतने वेग और नर्दन के साथ उतरीं कि ब्रह्मा और अन्य सुरों के लोक डर गये। तव गिरिजापति ने उन्हें अपनी एक जटा के अन्दर निहित कर दिया। ५२४

पुन्नु नित्तरु पनियॅन वान्नदि पुनिदन्
शॅन्नि यिऱ्करन् दॊळित्तलुम् वणङ्गिनन् ऱिहैत्तु
मन्न निऱ्ऱलुम् वरुन्दलन् जडैयळ्वा नदियिन्
ऱॆन्न विट्टन नीरुशिऱि दवनिपोन् दिळिन्दाळ् 525

वान् नति–आकाशगंगा के; पुल् नुनि तरु पनि अॅन–घास की नोक पर पड़ी हुई ओस-बूंद के समान; पुनितन् चॅन्नियिल्–पवित्र ईश्वर की जटा में; करन्तु ऑळित्तलुम्–छिप जाते ही; मन्नन्–राजा; वणङ्किनन्–नत हुए; तिकैत्तु–भ्रमित; निऱ्ऱलुम्–खड़े होने पर; वरुन्तल्–दुखी मत; वान् नति–सुरनदी; इन्ऱु–अब; नम् चटैयळ्–हमारी जटा की अन्तर्वासिनी है; ॲन्न–ऐसा कहकर; ऑरु चिऱितु विट्टनन्–थोड़ा बाहर छोड़ा; अवनि इऴिन्तु पोन्ताळ्–भूमि पर उतरकर आयीं। ५२५

गंगाजी केवल घास की नोंक पर की ओस-विंदु के समान रह गयीं। शिवजी की जटा से वाहर दिखाई नहीं दी। यह देख भगीरथ चित्त-भ्रमित हो गये। शिवजी का नमस्कार करके वे अचल खड़े रहे। तव शंकर जी ने अभय दिया। चिन्ता मत करो। देवनदी हमारी जटा-वासिनी हो गयी है, यह कहकर उन्होंने एक छोटा अंश वाहर निकाला, वह भूमि पर उतर आयीं। ५२५

इऴिन्द गङ्गैमुन् मन्नवन् विरैवोडु मेहक्
कऴिन्द मन्नवर् गतिपॅऱ मुडुहिय कदियाल्
अऴुन्दु मादवच् चन्नुविन् वेळ्वियै यऴिप्पक्
कॉळ्ळुन्दु विट्टॅरि वॅहुळियन् कुडङ्गयिर् कॉळ्ळा 526

इऴिन्त कङ्कै मुन्–निसृत गंगा के सामने; मन्नवन्–राजा; विरैवोटुम् एक–सवेग जाते थे तव; कऴिन्त मन्नवर् कति पॅऱ–मरे राजाओं के सद्गति पाने के लिए; मुटुकिय कतियाल्–द्रुत गति के कारण; अऴुन्तुम् मा तवम्–(याग-) चिन्तनमग्न, महान तपस्वी; चन्नुविन् वेळ्वियै–जह्नु के यज्ञ को; अऴिप्प–विगाड़ते समय; कॉळ्ळुन्तु विट्टु–ज्वाला देकर; ऍरि–जलनेवाली अग्नि सम; वॅकुळियन्–क्रोधवाले बनकर; कुटङ्कैयिल् कॉळ्ळा–चुल्लू में भरकर। ५२६

नीचे उतरकर गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलने लगीं। भगीरथ अपने पितरों को सद्गति दिलाने की त्वरा में जा रहे थे। पीछे आती रही गर्वीली गंगा ने मार्ग में तपोमय जह्नु जो यज्ञ कर रहे थे उसको बिगाड़ दिया। महर्षि को अपने यज्ञ की स्थिति देखकर अपार क्रोध हुआ। उन्होंने गंगाजी को अपने चुल्लू में भरकर लिया। ५२६

उण्डु वन्दनन् मऱैमुनिक् कणङ्गळ्कण् डुवप्पक्
कण्डु वेन्दनुम् वणङ्गिमुन् निहऴ्न्दन कळऱक्
कॉण्डु पोहॅनच् चॅविवऴिक् कॉडुत्तनन् कुदित्तु
विण्डु नीङ्गिन रुडलुहु पॉडियिन्मे विन्नळे 527

मऱै मुनि कणङ्कळ्–वेदविद्वान ऋषियों को आनन्द देते हुए; उण्टु उवन्तनन्–पीकर तृप्त हुए; वेन्तनुम् कण्टु–राजा भी देखकर; वणङ्कि–नमस्कार करके; मुन् निकऴ्न्तन कळऱ–पहले घटित (समाचार) कहने पर; कॉण्टु पोक–ले जाओ; ॲन–कहकर; चॅवि वऴि–कर्ण द्वारा; कॉटुत्तनन्–जाने दिया; कुतित्तु–उछलकर; विण्टु नीङ्किनर्–प्राणों से अलग हो मरे हुओं के; उटल् उकु–शरीरों के बने; पॉटियिल्–भस्म पर (से); मेवित्तळ्–होती हुई वह चलीं। ५२७

उनके तप की महिमा से गंगाजी उतनी छोटी हो गयी। महर्षि ने उसे आचमन कर लिया। वेदज्ञ ऋषि सब विस्मित खड़े रह गये। महर्षि भी शान्त और तृप्त हो गये। तब भगीरथ को अपनी चिन्ता थी। उन्होंने महर्षि का नमस्कार कर उनसे सारी बातें कहीं। महर्षि आर्द्र हुए। उन्होंने अपने कर्ण से गंगाजी को बाहर छोड़ा और कहा कि ले जाओ। बाद, गंगा वह चली और सगर-पुत्रों के शरीरों के बने भस्म पर से होती हुई आगे बही। (इससे गंगाजी जाह्नवी कहलाती है)। ५२७

निरैय मुऱ्ऱुळ्ळल् शहरर्ह ळॅण्डुङ्गदि शॅल्ल
विरैम लर्पॊऴिन् दार्त्तन विण्णवर् कुळाङ्गळ्

मुरश मुऱ्ऱिय पल्लिय मुऱैमुऱै तुवैप्प
अरश नप्पॊऴु दणिमदि लयोत्तिमीण् टडैन्तान् 528

निरैयम् उऱ्ऱु उऴल्–नरक में पड़कर संकट उठाते रहे; चकरर्कळ्–सगर-पुत्र; नॆट्टु कति चॆल्ल–अमर सद्गति में पहुँचे, तब; विण्णवर् कुऴाङ्कळ्–देवगणों ने; विरै मलर्–सुवासपूर्ण पुष्प; पॊऴिन्तु–बरसाकर; आर्त्तत–आनन्द-रव किया; अप्पॊऴुतु–तब; अरचन्–राजा भगीरथ; मुरचम्–भेरी; मुऱ्ऱिय पल् इयम्–पूर्ण रीति से विविध वाद्य; मुऱै मुऱै तुवैप्प–बारी-बारी से बजे, तब; मीण्टु–लौट आकर; अणि मतिल्–सुन्दर प्राचीरवाले; अयोत्ति अटैन्तान्–अयोध्यानगर पहुँचे। ५२८

भगीरथ के प्रयत्न से गंगाजी भूमि पर अवतरित हुई और सगर-पुत्र भयंकर नरक-वास छोड़कर अमर सद्गति को पहुँच गये। इसको देखकर देवगण ने सुमन-वर्षा करायी और वाहवाही मचायी। भेरी और अन्य समूचे वाद्यों के नाद के साथ भगीरथ सुन्दर प्राचीर वाले अयोध्या नगर आये। (प्राचीरों की महिमा के कारण अयोध्या तब तक सुरक्षित रही।)। ५२८

अण्ड कोळहैक् कप्पुऱत् तादियन् ऱळन्द
पुण्ड रीहमॆन् मलरिडैप् पिऱन्दुपू महनार्
कॊण्ड तीर्त्तमाय्प् पहिरदन् ऱवत्तिनाऱ् कॊणर
मण्ड लत्तिन्वन् दडैन्ददिम् मानदि मैन्द 529

मैन्त–राजकुमार; इ मा नति–यह महानदी; अण्टम् कोळकैक्कु–अण्डगोल के; अप्पुऱत्तु–उस तरफ़; आति–आदि पुरुषोत्तम (ने); अन्ऱु अळन्त–उस दिन (जिनसे) नापा; मॆल् पुण्टरीकम् मलर् इटै–(उन) कोमल कमल चरणों में; पिऱन्तु–उत्पन्न होकर; पू मकनार्–कमल-पुत्र, ब्रह्मा के; कॊण्ट–गृहीत; तीर्त्तम् आय्–तीर्थ बनकर; पकिरतन् तवत्तिनाल् कॊणर–भगीरथ के तपोबल से लाने के कारण; मण् तलत्तिन्–भूतल में; वन्तु–आकर; अटैन्ततु–पहुँचीं। ५२६

हे चक्रवर्ती-तनय! श्रीराम! यह महानदी विष्णु के त्रिविक्रमावतार के समय के उन चरणों से निकलती है, जिनसे भगवान ने लोकों को नापा था। इस अंडगोल के उस पार्श्व में इस नदी का जन्मस्थान है। फिर वह ब्रह्मा द्वारा अपने कमण्डल में गृहीत होकर पुण्य-सलिला बनी। बाद, भगीरथ की तपस्या से वह भूतल में पहुँचीं। ५२९

सगरर् तम्बॊरुट् टरुन्दव नॆडुम्बह ऱऴिप्
पहिर दन्कॊणर्न् दिडुदलाऱ् पहिरदि याहि
महित लत्तिडैच् चन्नुविन् शॆविवऴि वरलाल्
निहरिल् शान्नवि यॆन्नप्पॆयर् पडैत्तदिन् नीत्तम् 530

पकिरतन्–भगीरथ; चकरर् तम् पॊरुट्टु–सगरपुत्रों के वास्ते; नॆटु पकल्–अधिक लम्बे काल को; अरु तवम्–कठोर तपस्या में; तऴि–व्यतीत करके;

मकितलत्तु इट्टॅ कॊणर्न्दिट्टतलाल्–महीतल में लाये, इसलिए; इ नीत्तम्–यह धारा; पकिरति आकि–भागीरथी बनकर; चन्नुविन्–जह्नु के; चॅवि वऴि वरलाल्–कर्ण द्वारा आने से; निकर् इल् चानवी–अनुपम जाह्नवी; ऍन्न पॅयर्–इस नाम को; पटॅत्तत्तु–धारिणी बनीं। ५३०

भगीरथ ने सगर-पुत्रों के उद्धारार्थ अनेक सहस्र वर्षों का समय तपस्या में व्यतीत किया; तब जाकर गंगाजी को वे महीतल पर ला सके। इस कारण वह भागीरथी बनी। फिर जह्नु के कर्ण से बाहर आने के कारण उनका नाम जाह्नवी पड़ा। यह अनुपम जाह्नवी हैं। ५३०

ऍन्ऱु	कूऱलुम्	वियप्पिनॊ	डुवन्दन	रिऱैञ्जिच्
चॆन्ऱु	तीर्न्दनर्	गङ्गैयै	विशालैवाऴ्	शिहरक्
कुन्ऱु	पोऱ्पुयत्	तरशन्वन्	दिणैयडि	कुऱुह
निन्ऱु	नल्लुरै	विळम्बिमऱ्	ऱवविय	नीङ्गा 531

ऍन्ऱु कूऱलुम्–ऐसा वृत्तान्त कहने पर; वियप्पिनॊटु–विस्मय के साथ; उवन्ततर्–आनन्दित हुए; कङ्कैयै इऱैञ्चि–गंगाजी की वन्दना करके; चॆन्ऱु–जाकर; तीर्न्तनर्–दूसरे पार गये; विचालै वाऴ्–विशालानगर में वास करनेवाले; चिकरम् कुन्ऱु पोऱ् पुयत्तु–शिखर सह पर्वत-समान भुजावाले; अरचन् वन्तु–राजा (के) आकर; इणैयटि कुऱुक–चरण-द्वय पर नमस्कार करते समय; निन्ऱु–ठहरकर; नल् उरै विळम्पि–उपदेश के शब्द कहकर; मऱ्ऱु–बाद; अ वयिन्–उधर से; नीङ्का–चलकर। ५३१

महर्षि ने यह वृत्तान्त सुनाया तो श्रीराम और लक्ष्मण विस्मय और आनन्द से भर गये। उन्होंने गंगाजी की वन्दना की। फिर वे गंगा जी को पार कर विशाला नगर में आये। वहाँ उस नगर के पर्वत-सम भुजावाले राजा ने आकर मुनिवर के पैरों मे नमस्कार किया। महर्षि रुके और उपदेश देकर राजकुमारों के साथ आगे बढ़े (इस पद में गंगा को दुबारा पार करने का उल्लेख आया है। पद्य ३३८ में सिर्फ़ नदी का ही उल्लेख है; नाम नहीं दिया गया है। वालमीकी सरयू-गंगा संगम पर गंगा को पार करने की बात कहते है। बालकाण्ड २४वाँ सर्ग श्लोक ५-१०। विशाला नगर के राजा का नाम सुमति था। इसका वंश वालमीकी में पूर्णतः वर्णित है)। ५३१

पळ्ळि	नीङ्गिय	पङ्गयप्	पऴनत्तन्	नारै
वॆळ्ळ	वान्कळै	कळैवुरु	कडैशियर्	मिळिर्न्द
कळ्ळ	वाणॆडुङ्	गण्णिळल्	कयलॆनक्	करुदा
अळ्ळि	नाणुऱु	महन्पणै	विदेहना	डणैन्दार् 532

पऴनम्–खेतों में; पङ्कयम् पळ्ळि नीङ्किय–कमल-शय्या छोड़ जो उठे थे; नल् नारै–अच्छे सारस; वॆळ्ळम्–जल में; वान् कळै–दृढ़ निराने योग्य पौधों को;

कळैवु उरु–निराती रही; कटैचियर्–कृषक स्त्रियों की; मिळिर्न्त–चंचल; कळ्ळम् वाळ्–चातुर्य भरी और तलवार-सम; नॆटुकण् निऴल्–आयत आँखों की परछाईं को; क़यल् ॲन्न करुता–कयल् नाम की मछली समझकर; अळ्ळि–चोंच मारकर; नाण् उरुम्–(असफल होकर) शरम खाते हैं, (ऐसे खेतों वाले); वितेक नाटु अणैन्तार्–विदेह देश गये। ५३२

वे अब विदेह, जनक के देश में आ गये। पहले कवित्वपूर्ण मनोरंजक रीति से कवि, देश की सीमा पर रहनेवाले खेतों का वर्णन करते हैं। खेतों में कमल-शय्या पर से जाग उठे सारस पक्षी भूख मिटाने के लिए मछलियों की खोज में विचर रहे हैं। तब वहाँ खेत निराने के लिए कृषक-रमणियाँ आयी हैं। झुकी हुई उनकी तलवार सम आयत, वंचना- (चातुर्य-) भरी और सुन्दर आँखों की परछाई खेत के जल में पड़ती है। उनको सारस पक्षी भ्रम से कयल नाम की मछलियाँ समझ लेते हैं और उनको पकड़ने के लिये चोंच मारते हैं। पर चोंच में कुछ नहीं आता। अतः वे अपनी नासमझी और असफलता से लजा जाते हैं। ५३२

वरम्बिल् वान्शिरै मदहुहण् मुऴवॊलि वऴङ्ग
अरुम्बु नाण्मल रशोहुह ळलर्विळक् कॆडुप्प
नरम्बि नान्ऱतेन् ऱारैहॊ णरुमलर् याऴिन्
शुरुम्बु पाण्शॆयत् तोहैनिन् ऱाडुव शोलै 533

चोलै–उद्यानों में; वरम्पु इल्–निस्सीम; वान् चिरै मतकुकळ्–विशाल जलाशयों की नालियाँ; मुऴवु ऒलि वऴङ्क–मर्दल नाद के समान स्वर करते हैं; अरुम्पु नाळ् मलर्–तभी हुए नवीन फूलों वाले; अचोकुकळ–अशोकवृक्ष; अलर् विळक्कु ॲटुप्प–(ज्योति) छिटकनेवाले (फूलों के) दीप धारण करते है; नरम्पिन् नाऩ्ऱ–तन्त्री के समान चूनेवाले; तेन् तारै कॊळ्–शहद की धारा से युक्त; नऱु मलर् याऴिन्–सुवासपूर्ण फूलरूपी याऴ् (वीणा) पर; चुरुम्पु पाण् चॆय–अमर गीत गाते है; तोकै–कलापी (मोर); निन्ऱु–खड़े होकर; आटुव–नाचते है। ५३३

वहाँ के उद्यान अनोखे नाट्य-मंच बने है। जलाशयों से नालियों द्वारा जब जल बहता है तब नाद उठता है। वह मर्दल-स्वर के समान है। अशोक वृक्ष अपने सद्य विकसित फूलों के दीप धरते हैं। फूलों के गुच्छे वीणा हैं और उनसे टपकनेवाले शहद की धारें तंत्रियों के समान हैं। भ्रमर उन पर बैठकर गुंजार करते हैं। उनको देखने पर ऐसा लगता है कि भ्रमर वीणावादन कर रहे हों। इतने वैभवों के साथ मोर नाचते हैं। ५३३

पट्ट वाणुदन् मडन्दैयर् पार्प्पॆनुन् दूदाल्
ॲट्ट वादरित् तुळ्ळवव रिदयङ्गळ वॆरुप्प
वट्ट नाण्मरै मलरिन्मेल् वयलिडै मळ्ळर्
कट्ट काविषड़् गट्किडै काट्टुव कळनि 534

पट्टम्–पट्ट पहने; वाळ् नुतल्–उज्ज्वल ललाटवाली; मटन्तैयर्–स्त्रियों की; पार्प्पु–दृष्टि; अँन्नुम् तूताल्–रूपी दैत्य से; अँट्ट आतरित्तु–(खिचकर) पास आना चाहते हुए; उळल्पवर्–फिरनेवाले (कामी) पुरुषों के; इतयङ्कळ् वॅरुप्प–मनों को खिझाते हुए; कळनि–खेतों के प्रदेश में; वयल् इटै मळ्ळर्–खेतों में काम करनेवाले कृषक (द्वारा); कट्ट काबि–निराये गये नीलोत्पल पुष्प; वट्टम् नाळ् मरै मलरिन् मेल्–गोल नवीन कमल-पुष्पों पर; अम् कण् किटै काट्टुव–सुन्दर आँखों का भ्रम देते हैं। ५३४

कामुक लोग शिरोभूषणधारिणी स्त्रियों की दृष्टि के दौत्य से खिचकर उनके पास जाना चाहते है। खेतों से कृषकों ने नीलोत्पल के पौधों को उखाड़कर पास के तडागों में फेंक रखे है। वे नीलोत्पल के फूल कमल पुष्पों पर पड़े रहते है। उन दोनों को देखकर ये लोग रमणी के मुखों और उनकी आँखों के भ्रम में पड़ जाते हैं और समझ लेते है कि स्त्रियाँ अपनी आँखों से इशारा कर रही है। वे उत्साह के साथ पास आते है तब सत्य प्रकट हो जाता है। उनका मन घृणा और क्रोध से भर जाता है। ५३४

तूवि यन्नन्द मिनमेन्रु नडैकण्डु तॉडरक्
कूवु मॅन्कुयिर् कुदलैयर् कुडैन्दतण् पुनल्वाय्
ओविल् कुङ्गुमच् चुवडुर वॉन्रॊडॊन् रूडिप्
पूवु ऱङ्गितुम् पुळ्ळुरङ् गादन पॉय्है 535

कूवुम् मॅन् कुयिल्–कूकनेवाली मृदुल कोकिला की सी; कुतलैयर्–(अस्पष्ट मधुर) तोतली बोली वाली स्त्रियों की; नटै कण्टु–चाल देखकर; तूवि अन्नम्–सुन्दर परों वाले हंस; तम् इनम्–'हमारा वर्ग'; अँन्रु–समझकर; तॉटर–अनुगमन करते; कुटैन्त–गोता लगानेवाले; पुनल् वाय्–जल में; पुळ्–पक्षीगण; ओवु इल्–न पोंछ सकने की रीति से; कुङ्कुमम् चुवटु उऱ–कुंकुम-चिह्नों के लग जाने से; ऑन्रॊटु ऑन्रु उटि–एक दूसरे के साथ झगड़कर; पू उऱङ्कितुम्–पुष्पों के निमीलित होने के बाद भी; उऱङ्कातन–नहीं सोते हैं (जिनमें); पॉय्कै–(ऐसे) जलाशय हैं। ५३५

कोकिलकंठी, तुतली बोलीवाली स्त्रियों की चाल देखकर हंस समझ लेते हैं कि ये हमारे ही वर्ग की है। वे स्त्रियाँ सरोवरों में स्नान करने जाती हैं तो ये हंस भी उनके पीछे-पीछे जाकर गोता लगा लेते हैं। तब स्त्रियों के शरीर का कुंकुम-लेप हंसों पर खूब लग जाता है और नहीं छूटता। इससे हंसों में आपसी कलह हो जाता है। हर पक्षी दूसरे पर लगा चिन्ह देखता है और समझता है कि वह अजनवी है। कलह मच जाता है, और हंसिनी और हंस में भी रार मच जाती है। इसलिए फूलों के बन्द हो जाने के बाद भी ये हंस बिना सोये आपस में झगड़ा करते रहते है। वहाँ के जलाशयों की स्थिति यह है। ५३५

मुरॆयि तिऩ्मुट्टु मेदियिऩ् मुलैवऴि पालुम्
तुरॆयि निऩ्ऱुयर् माङ्गऩि तूङ्गिय शारुम्
अरॆयु मॆऩ्करुम् बाट्टिय वमुदमु मऴिदेऩ्
नरॆयु मल्लदु नऴिर्पुऩल् पॆरुहल नदिहळ् 536

नतिकळ्–नदियों में; मुतु मेतियिऩ् मुलै वऴि पालुम्–वयस्क भैंसों के थन से स्रवनेवाला दूध; तुरॆयिल् निऩ्ऱु–घाटों पर खड़े; उयर् मा कनि–ऊँचे आम्र तरुओं के फलों से; तूङ्किय चारुम्–टपकता रसः अरॆयुम्–टुकड़ों में कटे; मॆऩ् करुम्पु–कोमल ईख को; आट्टिय अमुतमुम्–पीसने से निकला सुधासम रस; अऴि–(छत्तों के) टूटने से बहनेवाला; तेम् नरॆयुम्–मीठा शहद; मुरॆयितिल्–एक के बाद एक के क्रम से; अल्लतु–इनके बहने के सिवा; नळिर् पुऩल्–शीतल जल; पॆरुकल–प्रवाहित हो नहीं आता। ५३६

वहाँ की नदियों की बात विचित्र है। उसमें पैठनेवाली भैंसों का दूध, घाट पर खड़े आम्रवृक्षों के फलों का रस, इक्षु का रस और शहद, यह सब अधिकता से बहता है। कवि कहते है कि इसमें जल का प्रवाह नहीं है, इन्हीं का बारी-बारी से प्रवाह आता है। ५३६

इऴैक्कु नुण्णिडै यिडैतर मुहडुयर् कॊङ्गै
मऴैक्कण् मङ्गैय ररङ्गिऩिल् वयिरियर् मुऴवम्
मुऴक्कु मिऩ्ऩिशै वॆरुविय मोट्टिऴ मेदि
उऴक्क वाळैहळ् पाळैयिऱ् कुदिप्पऩ वोडै 537

ओटै–नालों में; इऴैक्कुम्–तागे से भी; नुण्–पतली; इटै–कटि (को); इटैतर–दुखानेवाले; मुकटु उयर्–पर्वत-सम उन्नत; कॊङ्कै–उरोजों; मऴै कण्–मोहक नेत्रोंवाली; मङ्कैयर–रमणियों के; अरङ्किनिल्–नाट्य मंच पर; वयिरियर्–वादक लोगों के; मुऴवम् मुऴक्कुम्–मृदंग बजाने से (उठे); इऩ् इचै–मधुर संगीत से; वॆरुविय–भयभीत; मोटु इऴ मेति–तगड़ी और छोटी आयु की भैंसें; उऴक्क–(घुसकर) क्षुब्ध करती हैं, (तब); वाळैकळ्–वाळै जाति की मछलियाँ; पाळैयिल्–नारियल, सुपाड़ी आदि पेड़ों की डंठलों पर; कुतिप्पऩ–उछल जाती हैं। ५३७

उस देश के नालों में ये दृश्य देखने को मिलते हैं। नाट्य-मंच पर मनोहारिणी अंगनाएँ अपनी सूत-सी पतली कटियों; पर्वत-सम उन्नत उरोजों जो उन कटियों को लचका देते हैं; और शीतल (स्नेहपूर्ण) नेत्रों के साथ नृत्य कर रही हैं। वहाँ मृदंग बजाया जाता है। उस शब्द से डरकर भैंसें भागती हैं और नालों में घुसकर जल को क्षुब्ध करती हैं। तब वाळै मछलियाँ उछलती है और किनारे पर उगे नारियल, सुपाड़ी आदि के पेड़ों के डंठलों पर जा बैठती है। वहाँ के मधु को पीकर मत्त बनती हैं। यह बात कोसल-देश-वर्णन में भी आयी है। सब जगह मत्तता है, समृद्धि है, यही इस पद का तात्पर्य है। ५३७

पडैनॆ डुड्गणवा ळुडैपुहप् पडर्पुनन् मूळ्हिक्
कडैय मुन्नकडर् चॆंळुन्दिरु वॆंळुम्बडि काट्टि
मिडैयुम् वॆंळ्वळै पुळ्ळॊडु मॊलिप्पमॆल् लियलार्
कुडैय वण्डिनङ् गडिमलर् कुडैवन कुळङ्गळ् 538

कुळङ्कळ्–तालावों में; मॆल् इयलार्–सुकुमारियाँ; मिटैयुम् वॆंळ् वळै–पहनी हुई शंख की चड़ियों के; पुळ्ळॊटुम् ऑलिप्प–पक्षियों के साथ कलनाद करते; नॆंटु कण् वाळ् पटै–दीर्घ नेत्ररूपी तलवारों के अस्त्रों के; उऱै पुक–(पलकों के) म्यान में घुसते; पटर् पुनल् मूळ्कि–विशाल तल के जल में डूबकर; मुन् कटल् कटैय–प्राचीन समय में सागर मंथन करते समय; चॆंळु तिरु–मनोहारिणी श्रीदेवी के; ऍंळुम् पटि काट्टि–उठ आने के प्रकार से; कुटैय–घुसकर तैरती उतराती हुई स्नान करती है, तब; वण्टु इनम्–मधुमक्खियाँ; कटि मलर् कुटैवन–सुगन्धित फूलों में घुसकर कुरेदती है। ५३८

तालावों की बात देखिये। कोमलांगी स्त्रियाँ उनमे स्नान करती है। तब उनके हाथ की श्वेत चूड़ियाँ खनखना उठती हैं। वह खनक पक्षियों की कल-कल ध्वनि के समान है। वे गोता लगाते समय आंखें मूंद लेती है। उसको देखकर कवि कल्पना करते है कि वे अपनी आयत आँखोंरूपी तलवारों को पलकरूपी म्यानों के अन्दर रख लेती हैं। जब वे स्नान करके ऊपर उठती है तब वे श्रीलक्ष्मीदेवी के समान लगती है जो क्षीरसागर-मंथन के अवसर पर प्रकट हुई थीं। वे जब जल में पैठती हैं और जल को खूब हिला देती है तब मधुमक्खियाँ फूलों में घुसकर शहद के लिए खूब कुरेद देती हैं। ५३८

इनैय नाट्टिडै यिनिदुशॆन्ऱ् रिञ्जिशूळ् मिदिलैप्
पुनैयु नीळ्कॊडिप् पुरिशैयिन् पुऱत्तुवन् दिऱुत्तार्
मनैयिन् माट्चियै यळित्तुयर् मादवन् पन्नि
कनैयु मोट्टुयर् करुङ्गलोर वॆंळ्ळिडैक् कण्डार् 539

इनैय नाटु इटै–ऐसे देश में; इत्तिु चॆन्ऱु–रमते हुए जाकर; इञ्चि चूळ्–प्राचीर-वलयित; मितिलै–मिथिला की; पुनैयुम् नीळ् कॊटि–अलंकृत उच्च पताकाओं वाले; पुरिचैयिन् पुऱत्तु–प्राचीर के इस पार; वनु्तु इऱुत्तार्–आकर ठहरे; ओर् वॆंळ् इटै–एक मैदान में; मनैयिन् माट्चियै अळित्तु–गृहस्थी की गरिमा मिटाकर; उयर् मातवन् पन्नि–श्रेष्ठ महातपस्वी की पत्नी (अहल्या) के; कनैयुम् मोटु उयर्–कठोर और उन्नत; करुङ्कल्–काले प्रस्तर-रूप को; कण्टार्–देखा। ५३९

इस देश से होकर वे तीनों प्राचीरों से घिरी हुई मिथिला नगरी के पास पहुँच गये। उनको यात्रा बड़ा सुख दे रही थी। वे प्राचीर के इस तरफ़ ठहरे। तब वहाँ खुले मैदान में उन्होंने एक उन्नत कठोर प्रस्तर की मूर्ति पड़ी देखी। वह श्रेष्ठ तपोधन गौतम की पत्नी का शाप-प्राप्त

रूप था, क्योंकि अहल्यादेवी ने गृहस्थी की गरिमा को बिगाड़ते हुए अपना चरित्र खोया था। ५३९

कण्ड कऩ्मिशैक् काहुत्तऩ् कऴऱ्ऱुहळ् कदुव
उण्ड पेदैमै मयक्कऱ वेऱुपट् टुरुवम्
कॊण्डु मॆय्युणर् बवऩ्कऴल् कूडिय दॊप्पप्
पण्डै वण्णमाय् निऩ्ऱऩळ् मामुऩि पणिप्पाऩ् 540

कण्ट कल् मिचै–दृष्ट प्रस्तर पर; काकुत्तऩ् कऴल् तुकळ्–काकुत्स्थ की चरण-धूलि के; कतुव–लगने पर; मॆय् उणर्पवऩ्–सत्यद्रष्टा; उण्ट पेतैमै मयक्कु–सहज अविद्या के भ्रम के; अऱ–दूर होने पर; वेऱु पट्ट उरुवम् कॊण्टु–अविद्या-प्राप्त रूप से विभिन्न अपना सच्चा रूप लेकर; कऴल् कूटियतु ऑप्प–ईश्वरचरण प्राप्त हुआ जैसा; पण्टै वण्णम् आय्–पुराना रूप बनकर; निऩ्ऱऩळ्–खड़ी हुईं; मा मुऩि–महिमावान ऋषि; पणिप्पाऩ्–बोलने लगे। ५४०

उस प्रस्तर पर काकुत्स्थ की चरण-धूली लगी। लगते ही अहल्या अपने पूर्व-रूप में आकर खड़ी हो गयीं। उनकी वह स्वरूप-प्राप्ति ऐसी थी जैसे अविद्या-प्राप्त मिथ्या-रूप को छोड़कर ज्ञानी आत्म-रूप पा गये हों और अपने भगवान के चरणारविन्दों पर आये हों। तब कौशिक श्रीराम से कहने लगे। ५४०

मायिरु विशुम्बिऱ् कङ्गै मण्मिशै यिऴित्तोऩ् मैन्द
मेयिन वुवहैयोडु मिऩ्ऩॆऩ वॊडुङ्गि निऩ्ऱाळ्
तीविऩै नयन्दु शॆय्द तेवर्को माऱ्कुच् चॆङ्गण्
आयिर मळित्तोऩ् पत्ऩि यहलिहै याहु मॆऩ्ऱाऩ् 541

मा इरु विचुम्पिल्–बहुत बड़े आकाशलोक में रही; कङ्कै–गंगा को; मण् मिचै–भूतल पर; इऴित्तोऩ्–उतारनेवाले (भगीरथ) के; मैन्त–वंशज कुमार; मेयित्त उवकैयोटुम्–उत्पन्न आनन्द के साथ; मिऩ् ऍन–विद्युल्लता के समान; ऑटुङ्कि निऩ्ऱाळ्–विनत होकर खड़ी रहनेवाली (ये); तीविऩै नयन्तु चॆय्त–दूषित काम चाहकर जिन्होंने किया; तेवर् कोमाऱ्कु–उन देवराज को; आयिरम् चॆम् कण्–सहस्र सुन्दर नेत्र; अळित्तोऩ्–दिलानेवाले की; पत्ऩि–पत्नी; अकलिकै–अहल्या; आकुम्–हैं। ५४१

आकाशगंगा को भूमि पर उतार लानेवाले राजा भगीरथ के वंशज, हे श्रीराम! ये जो आनन्द के साथ विनत होकर आपके सामने खड़ी हैं गौतम ऋषि की पत्नी है। इन्द्र ने जानबूझकर अपराध किया था जिसके फलस्वरूप गौतम ने उन्हें सहस्र सुन्दर नेत्र प्रदान किये थे। (कौशिक जी के इस कथन में कवि का चातुर्य देखने की वस्तु है। सचमुच अहल्या और देवेन्द्र का कार्य गर्ह्य था। तो भी कवि विश्वामित्र के मुख से अशिष्ट बातें नहीं करवाते।)। ५४१

पॊन्नैयेय् शडैयान् कूऱक् केट्टलुम् बूमिकेळ्वन्
ऎन्नैये यॆन्नै येयिव् वुलहिय लिरुन्द वण्णम्
मुन्नैयूळ् विनैयित्तालो नडुवॊन्ऱु मुडिन्त दुण्डो
अन्नैये यत्तैयाट् किव्वा ऱडुत्तवा ऱरुळुहॆन्ऱान् 542

पॊन्नैये एय्–स्वर्ण की ही समता (रंग में) करनेवाली; चटैयान्–जटा-भूषित (ऋषि) के; कूऱ–कहते; केट्टलुम्–सुनने पर; पूमि केळ्वन्–महीपति (श्रीराम) ने; ई उलकु इयल्–इस लोक की प्रकृति; इरुन्त वण्णम्–रहने का रंग-ढंग भी; ऎन्नै ऎन्नै–कैसा है, कैसा; अन्नैये अनैयाट्कु–(लोक-) माता-सी इनको; इव्वाऱु अट्टुत्त आऱु–यह स्थिति होने का कार्य; मुन्नै ऊळ् विनैयित्तालो–पूर्वकृत प्रारब्ध कर्म से; नट्ट ऒन्ऱु–मध्य में कोई; मुटिन्ततु उण्टो–घटा कुछ है; अरुळुक–कहने की कृपा करें; ऎन्ऱान्–पूछा। ५४२

सुनहली जटा से शोभित मुनि का यह कथन सुनकर महीपति श्रीराम को अपार आश्चर्य हो गया ! उन्होंने कहा— संसार की गति भी कितनी विचित्र है ! इसका रंग-ढंग कितना अनोखा है ! ये तो लोकमाता-सदृश हैं। इनकी क्यों ऐसी स्थिति हुई ? यह इनके प्रारब्ध का फल है या इस जन्म में कोई ऐसा अपराध हो गया ? कृपा कर बताइये। ५४२

अव्वुरै यिरामन् कूऱ वऱिञ्नु मवनै नोक्किच्
चॆव्वियोय केट्टि मेनाट् चॆऱिशुडरक् कुलिशत्तण्णल्
अव्विय मवित्त शिन्दै मुनिवनै यऱ्ऱ नोक्कि
नव्विपोल् विऴियि नाडन् वनमुलै नयत्त लुऱ्ऱान् 543

इरामन् अ उरै कूऱ–श्रीराम (के) वह वचन कहने पर; अऱिञ्नुम्–त्रिकालज्ञ (कौशिक) ने; अवनै नोक्कि–उनको देखकर; चॆव्वियोय्–सद्गुण सम्पन्न; केट्टि–सुनिये; मेल् नाळ्–पुराने समय में; चॆऱि चुटर्–अधिक प्रकाशमय; कुलिचत्तु अण्णल्–कुलिश के धारक (ने); अव्वियम् अवित्त चिन्तै–(कामादि) दुर्गुण-विमुक्त-चित्त; मुनिवन्–महर्षि की; अऱ्ऱम् नोक्कि–अनुपस्थिति जानकर; नव्वि पोल्–मृग की सी; विऴियिनाळ् तन्–आँखोंवाली इनकी; वनम् मुलै–मनोरम् उरोजों के; नयत्तल्–संस्पर्श-सुख की चाह; उऱ्ऱान्–की। ५४३

श्रीराम के इस प्रश्न के उत्तर में त्रिकालज्ञ मुनि विश्वामित्र ने कहा— हे सद्गुणपूर्ण ! (संकेत है कि श्रीराम अपराधों से अनभिज्ञ है क्योंकि अच्छे गुणों को ही जानते है।) पुराने समय में एक बात हुई— उज्ज्वल कुलिशपाणि इन्द्र ने दुर्गुण-विमुक्त व संयम-चित गौतम की मृगनयनी पत्नी का, उनकी अनुपस्थिति के समय, स्तन-संस्पर्श-सुख भोग करना चाहा। ५४३

तैयला णयन वेलुन् दन्निमदन् शरमुम् बाय
उय्यला मुरुदि नाडि युळ्ळ्वव नॊरुना ळुऱ्ऱ
मैयला लरिवु नोङ्गि मामुनिक् कऱ्ऱञ् जॆय्दु
पॊय्यिला वुळ्ळत् तान्ऱ नुरुवमे कॊण्डु पुक्कान् 544

तैयलाऴ्–स्त्री के; नयनम् वेलुम्–नयनरूपी भाले; तनि–अनुपम; मतन् चरमुम्–मन्मथ के शर (के); पाय–लगकर अशान्त करने से; उय्यल् आम्–छूटने का; उरुति नाटि–उपाय ढूँढते; उऴल्पवऩ्–फिरनेवाले; ओरु नाळ्–एक दिन; उऱ्ऱ मैयलाल्–उत्पन्न काम-मोह से; अऱिवु नीङ्कि–बुद्धि खोकर; मा मुतिक्कु–महामुनि को; अऱ्ऱम् चॅय्तु–अनुपस्थिति कराके; पॉय् इला–असत्य-रहित; उळ्ळत्ताऩ् तऩ्–मन के मुनि का; उरुवमे कॉण्टु–वेष धरकर; पुक्काऩ्–(आश्रम में) प्रविष्ट हुए। ५४४

सुन्दरी स्त्री के नयनों के भाले और अद्वितीय अनर्थकारी मन्मथ के शर से आहत वे, उस पीड़ा से छूटने का उपाय ढूँढ़ते फिरे। काम-मोहित उनकी बुद्धि भ्रष्ट हुई। उन्होंने गौतम को आश्रम से हटाने का उपाय किया। (अबेर में मुर्गे के समान बांग दी और ऋषि स्नान-वेला समझकर नदी पर चले गये।) उनकी अनुपस्थिति में देवेन्द्र अनिन्द्य गौतम मुनि का वेष धरकर आश्रम में प्रविष्ट हो गये। ५४४

पुक्कव ळोडुङ् गामप् पुदुमण मदुविऩ् ऱेऱल्
ऑक्कवुण् डिरुत्त लोडु मुणर्न्दऩ ळुणर्न्द पिऩ्नुम्
तक्कदऩ् ऱॆऩ्ऩत् तेऱा डाळ्न्दऩ ळिरुप्पत् ताळा
मुक्कण ऩऩैय वाऱ्ऱऩ् मुऩिवऩु मुडुहि वन्दाऩ् 545

पुक्कु–प्रवेश करके; अवळोटुम्–उन (अहल्या) के साथ; कामम् पुतु मणम्–काम-वासना-प्रेरित अपूर्व संगमरूपी; मतु इऩ् तेऱल्–मधुर छनी हुई शराब; ऑक्क–एकसम; उण्टु इरुत्तलोटुम्–भोगते रहते समय; उणर्न्तऩळ्–समझ गयीं; उणर्न्त पिऩ्नुम्–समझने के बाद भी; तक्कतु अऩ्ऱु–उचित नहीं; ऎऩ्ऩ–ऐसा; तेऱाळ्–नहीं सोचा (सँभली नहीं); ताळ्न्तऩळ्–मग्न; इरुप्प–रह गयीं, तब; मुक्कणऩ् अऩैय–त्रिलोचन-सम; आऱ्ऱल् मुऩिवऩुम्–शक्तियुत मुनि भी; ताळा–बिना दूरी किये; मुटुकि–सवेग; वन्ताऩ्–आये। ५४५

दोनों, देवेन्द्र और अहल्या, संभोग में लग गये। कामोद्दीप्त यह संगम अपूर्व था और उसने मधुर सुरा के समान उनको नशे में चूर कर दिया। दोनों समान रूप से आनन्दानुभव कर रहे थे। तब अहल्या देवी सत्य जान गयीं; तो भी संभल नहीं पायीं और मग्न रह गयीं। उसी समय त्रिलोचन शिवजी के समान शक्ति रखनेवाले महर्षि गौतम त्वरित गति से लौटकर आ गये। ५४५

शरन्दरु शाप मल्लाऱ् ऱडुप्परुञ् शाबम् वल्ल
वरन्दरु मुऩिव ऩॆय्द वरुदलुम् वॆरुवि माया
निरन्दर मुलहि ऩॆऱ्कु नॆडुम्बऴि पूण्डा णिऩ्ऱाळ्
पुरन्दर नडुङ्गि याङ्गोर् पूशैयाय्प् पोह लुऱ्राऩ् 546

चरम् तरु चापम्–शर-प्रेरक चाप; अल्लाल्–के सिवा; तटुप्पु अरु–दुर्निवार; चापम् वल्ल–शाप दिला सकनेवाले; वरम् तरु–वरदायी; मुऩिवऩ्–महर्षि;

ॲय्‌त वरुतलुम्–पास आये, तव; माया–अमर; निरन्तरम्–स्थिर; उलकिल् निऱ्कुम्–संसार में टिकनेवाली; नॅट्‌टु पऴि–दीर्घ निन्दा; पूण्टाळ्–प्राप्त करनेवाली (अहल्या); वॅरुवि–भीत होकर; निन्ऱाळ्–खड़ी रहीं; पुरन्तरन्–पुरन्दर; नटुङ्कि–थर्राकर; आङ्कु–तब; ओर् पूचै आय्–एक बिल्ली का रूप लेकर; पोकल् उऱ्ऱान्–जाने लगे। ५४६

गौतम मुनि के वचन, वर हो या शाप, दोनों तरह के, अचूक होते थे। शर-प्रेरक चाप का निवारण संभव था; लेकिन इनका शाप रोकना असम्भव था। वैसे ही उनके दिये वर भी सफल होते थे। गौतम को देखकर अमर स्थायी निन्दा का पात्र बनी अहल्या भयभीत हो एक ओर खड़ी रहीं। देवेन्द्र भी डर गये और एक बिल्ली का रूप लेकर भागने लगे। (तमिऴ में चाप, शाप दोनों एक ही तरह चापम् लिखा जाता है। यहाँ इस शब्द के तमिऴ और संस्कृत दोनों अर्थों में प्रयुक्त कर कवि ने चातुर्य दिखाया है)। ५४६

तीविऴि शिन्द नोक्किच् चॅय्ददै युणर्न्दु शॅय्य
तूयव नवनै निन्कैच् चुडुशर मनैय शॊल्लाल्
आयिर मादर्क् कुळ्ळ वऱिहुऱि युनक्कुण् डाहॅन्
ऱेयिन नवैयॅ लाम्वन् दियैन्दन विमैप्पिन् मुन्नर् 547

चॅय्य–आर्जवयुक्त; तूयवन्–पवित्र स्वभाववाले (ने); चॅय्ततै उणर्नतु–(इन्द्र का) कृत्य जानकर; अवनै–उनको; विऴि ती चिन्त–आँखों से आग निकालते हुए; नोक्कि–देखकर; निन् कै–आपके हाथ के; चट्टुचरम् अनैय–संतापी शर के समान; चॊल्लाल्–(अमोघ) शब्दों में; मातर्क्कु उळ्ळ–स्त्रियों के शरीर में रहनेवाले; अऱि कुऱि–लिंग-चिह्न; आयिरम्–एक सहस्र; उनक्कु उण्टाक–तुम्हें लग जायँ; ऍन्ऱु–ऐसा; एयिनन्–आज्ञा सुनायी; इमैप्पिन् मुन्नर्–पलक मारने से पहले; अवै ऍलाम्–वे सब (अवयव); वन्तु इयैन्तन–आकर लग गये। ५४७

गौतम पवित्र और न्यायी ऋषि थे। उन्होंने इन्द्र का अपराध जान लिया। कुपित आँखों से देखकर, हे राम! आपके शर के समान, अमोघ शाप दिया कि तुम्हारे शरीर पर सहस्र योनियाँ उत्पन्न हो जायँ। पलक मारती देर के अन्दर उनका शरीर उनसे युक्त हो गया। ५४७

ॲल्लैयि नाण मॅय्दि यावर्क्कु नहैवन् दॅय्दप्
पुल्लिय पऴियि नोडुम् पुरन्दरन् पोय पिन्नै
मॅल्लिय लाळै नोक्कि विलैमह ळनैय नीयुम्
कल्लिय लादि यॅन्ऱान् करुङ्गलाय् मरुङ्गु वीऴ्वाळ् 548

पूरन्तरन्–पुरन्दर; ॲल्लै इल् नाणम् ॲय्ति–निस्सीम लज्जा प्राप्त कर; यावर्क्कुम्–किसी को भी; नकै वन्तु ॲय्त–(इनकी निन्दा में) हँसी करने का मौका देते हुए; पुल्लिय पऴियिनोटुम्–निम्न अपयश के साथ भी; पोय पिन्नै–जाने के

पश्चात्; मॆल् इयलाळै नोक्कि–कोमल स्वभाव वाली को देख; विलै मकळ् अन्नैय–वेश्या-समान; नीयुम्–तू भी; कल् इयल् आति–प्रस्तर की प्रकृति को प्राप्त हो; ऎन्ऱान्–(शाप) कहा; करुङ्कल् आय्–कठोर प्रस्तर बनकर; मरुङ्कु वीऴ्वाळ्–नीचे गिरनेवाली (गिरते-गिरते)। ५४८

पुरन्दर अपार शरम से भर गये। कोई भी उनको देखनेवाले हँसते थे और उनको बहुत ही घृणित निन्दा लग गयी। इसके साथ वे चले गये। तब मुनि ने मृदुल स्वभाववाली अहल्या को देखकर कहा— वेश्या के समान बरताव कर चुकी तू पत्थर की बन जा। वे पत्थर बनकर गिर रही थीं कि उन्होंने कहा—। ५४८

पिऴैत्तदु पॊऱुत्त लॆन्ऱुम् बॆरियवर् कडनॆ यॆन्बर्
अऴऱ्ऱरु कडवु ळन्नाय् मुडिवॆनक् करुळ् हॆन्नत्
तऴैत्तुवण् डिमिरुन् दण्डाऱ्त् तयरद राम नॆन्वान्
कऴऱ्ऱुहळ् कदुव विन्दक् कल्लुरुत् तविरु मॆन्ऱान् 549

अऴल् तरु कटवुळ् अन्नाय्–अग्नि निकालनेवाले (शिव) देव सम (मुनिवर); पिऴैत्ततु–अपराध को; पॊऱुत्तल्–क्षमा करना; ऎन्ऱुम्–सदा; पॆरियवर् कटनॆ–बड़ों का कर्तव्य है; ऎन्पर्–कहते हैं; अतक्कु मुटिवु अरुळुक–मेरा (शाप-) मोचन बतलाइये; ऎन्न–कहने पर; वण्टु तऴैत्तु इमिरुम् तण्–भ्रमर-गुंजरित शीतल; तार्–मालाधारी; तयरत रामन् ऎन्पान्–दशरथ के पुत्र श्रीराम नामी; कऴल् तुकळ कतुव–पाद-धूलि लगते समय; इन्त कल् उरु तविरुम्–यह प्रस्तर-शरीर छूट जायगा; ऎन्ऱान्–बोले। ५४६

आग्नेय नेत्रवाले शिव-सम महर्षि ! लोगों का कहना है कि अपराध क्षमा करना बड़ों का कर्तव्य है ! आप मुझे शाप-मोचन का उपाय बताइये। मुनि शांत हो रहे थे। उन्होंने अहल्या से कहा— भ्रमर-गुंजरित शीतल माला से अलंकृत, चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र श्रीराम की पाद-धूलि तुझ पर लगेगी, तब तू पत्थर के रूप से छूटकर अपना रूप ले लेगी। ५४९

अन्दविन् दिरनैक् कण्ड वमरर्हळ् पिरमन् मुन्ना
वन्दुको दमनै वेण्ड मऱ्ऱवै तविर्त्तु माऱाच्
चिन्दैयिन् मुनिवु तीर्न्दु शिऱन्दवा यिरङ्ग णाक्कत्
तन्दम दुलहु पुक्कार् तैयलुङ् गिडन्दाळ् कल्लाय् 550

अन्त इन्तिरनै कण्ट–उन इन्द्र को देखकर; अमरर्कळ्–देव सब; पिरमन् मुन् आक–ब्रह्मा को पुरस्सर कर; वन्तु–आकर; कोतमनै–गौतम को; वेण्ट–याचना करने पर; चिन्तैयिल् मुनिवु तीर्न्तु–मन के कोप-रहित होकर; अवै तविर्त्तु–उन (अवयवों) को हटाकर; माऱा–उनके बदले में; चिर्न्त आयिरम् कण् आक्क–सुन्दर सहस्र नेत्र बनाये, तब; तम् तमतु उलकु–अपने-अपने लोक;

पुक्कार्–चले गये; तैयलुम्–देवी (अहल्या) भी; कल्लाय्–पत्थर बन; किटन्ताळ्–पड़ी रहीं। ५५०

वहाँ देवलोक में शाप-प्रभावित इन्द्र को देखकर देवता लोग चुप नहीं रह सके। वे ब्रह्माजी को आगे करके गौतम जी के पास आये। उन्होंने मुनि से प्रार्थना की कि इनका शाप दूर किया जाय। तब तक मुनि शांत हो गये थे। इसलिए उन्होंने उन अवयवों को सुन्दर सहस्र नेत्रों में बदल दिया। देवी अहल्या पत्थर की मूर्ति बनी पड़ी रहीं। ५५०

इव्वण्ण निहऴ्न्द वण्ण मिनियिन्द वुलहुक् कॅल्लाम्
उय्वण्ण मन्ऱि मऱ्ऱोर् तुयर्वण्ण मुऴ्व दुण्डो
मैवण्णत् तरक्कि पोरिल् मऴैवण्णत् तण्ण लेयुन्
कैवण्ण मङ्गुक् कण्डेन् काल्वण्ण मिङ्गुक् कण्डेन् 551

निकऴ्न्त वण्णम्–(पूर्व-) घटित घटना; इ वण्णम्–इस प्रकार की है; मऴै वण्णत्तु–मेघ-वर्ण के; अण्णले–प्रभु; मै वण्णत्तु–अंजन-वर्ण की; अरक्कि पोरिल्–राक्षसी के युद्ध में; अङ्कु–वहाँ; उन् कै वण्णम् कण्टेन्–आपके हाथ की महिमा देखी; इङ्कु–यहाँ; काल् वण्णम्–चरण-महिमा; कण्टेन्–देखी; इति–आगे; इन्त उलकुक्कु ॲल्लाम्–इन सभी लोकों के लिए; उय् वण्णम्–तरने का उपाय (हो गया); अन्ऱि–इसके सिवा; तुयर् वण्णम्–दुख का व्यवहार; उऴ्वतु उण्टो–होगा क्या। ५५१

अहल्या देवी का पूर्व वृत्तांत यही है। मेघ-वर्ण प्रभु श्रीराम! अंजन-वर्ण (काले रंग) की ताडका से आपने जो युद्ध किया उसमें मैंने आपका हस्तकौशल देखा। यहाँ आपके श्रीचरणों की तारक-शक्ति की महिमा देखी। (इनसे आपके दुष्ट-निग्रह और शिष्ट-परिपालन की महिमा मालूम हो गयी है।) अब आपकी उपस्थिति से सारे लोक सुखी हो जायँगे; दुख का कोई मौका नहीं आयगा। (इस पद में प्रयुक्त वण्णम् शब्द के अनेक अर्थ होते हैं जैसे, रंग, प्रकार, कौशल, शक्ति, व्यवहार, व्यापार, मौका इत्यादि)। ५५१

तीदिला वुदवि शॅय्द शेवडिक् करिय शॅम्मल्
कोदिलाक् कुणत्तान् शॊन्न पॊरुळॆला मत्तत्तुट् कॊण्डु
मादव नरुळुण् डाह वऴिपडु पडरु ऱादे
पोदुनी यत्तै यॅन्नप् पॊन्नडि वणङ्गप् पोनाळ् 552

तीतु इला–अहित-रहित; उतवि चॆय्त–हित करनेवाले; चॆम्मै अटि–श्रेष्ठ चरणों के; करिय चॆम्मल्–श्यामल प्रभु; कोतु इला कुणत्तान्–दोष से अमिश्रित (निर्मल) गुणवाले से; चॊन्न पॊरुळ् ॲलाम्–कथित बातें सब; मत्तत्तुळ् कॊण्टु–ध्यान में रखकर; अन्नै–माताजी; मा तवन्–महा तपस्वी; अरुळ् उण्टाक–कृपा-पात्र बनने के लिए; वऴि पटु–सेवा कीजिए; पटर् उऱाते–बीती बातों की

चिन्ता मत कीज़िए; नी पोतु–(हमारे साथ) आप आइए; ॲऩ्ऩ–कहकर; पोऩ् अटि–स्वर्ण-सम चरणों पर; वणङ्क–नमस्कार किया और; पोऩाऴ्–(वे भी) गयीं। ५५२

अहल्या-हित-कारी श्रीराम के हित-कार्य से सबका हित हुआ; किसी का अहित नहीं। उन श्यामल प्रभु ने साधु विश्वामित्र के कहे समाचारों को ध्यान से सुना। फिर अहल्या देवी को देखकर उनसे कहा— माता जी ! श्रेष्ठ तपस्वी गौतम की परिचर्या करके उनकी कृपा का पात्र बनिये। बीती वातों की चिन्ता मत कीजिये। आप हमारे साथ आयें। यह कहकर उन्होंने देवी का नमस्कार किया। फिर वह उनके साथ गयीं। ५५२

अरुन्दव नुरैयु डऩ्ऩै यनैयव रणुह लोडुम्
विरुन्दिऩर् तम्मैक् काणा विऩ्मलाल् वियत्त नॅञ्जऩ्
परिन्दॅदिर् कॊण्डु पुक्कुक् कडऩ्मुऱै पऴुदु ऱामल्
पुरिन्दपिऩ् काद्दि शॅम्मल् पुनिदमा दवनै नोक्कि 553

अनैयवर्–उनके; अरु तवऩ् उऱैयुळ् तऩ्ऩै–श्रेष्ठ तपस्वी (गौतम) के आश्रम में; अणुकलोटुम्–आते ही; विरुन्तिनर् तम्मै–अतिथियों को; काणा–देखकर; विम्मलाल् वियत्त नॅञ्चऩ्–आनन्द और विस्मय से भरे मन वाले हो; परिन्तु ॲतिर् कॊण्टु पुक्कु–स्नेह के साथ स्वागत करके ले जाकर; कटऩ् मुऱै–कर्तव्य आतिथ्य-क्रम; पऴुतुऱामल्–भंग न करके; पुरिन्त पिऩ्–(उपचार) करने के बाद; काति चॅम्मल्–गाधी के श्रेष्ठ पुत्र ने; पुनितम् मा तवनै नोक्कि–पवित्र महर्षि को देखकर। ५५३

वे श्रेष्ठ तपस्वी गौतम के आश्रम गये। महर्षि ने उनको दूर से देख लिया। वे स्वागतार्थ आये और अच्छे अतिथियों को पाकर विस्मित और मुदित हुए। यथाक्रम अर्घ्य-पाद्यादि से सत्कार किया। तब गाधी-पुत्र विश्वामित्र ने यों कहा। ५५३

अञ्जन वण्णत् ताऩ्ऱऩ् नडित्तुहळ् कदुवा मुऩ्ऩम्
वञ्जिपो लिडैयाळ् पण्डै वण्णत्त ळाहि निऩ्ऱाळ्
नॅञ्जिनाऱ् पिऴैप्पि लाळै नीयळित् तिडुदि यॅऩ्ऩक्
कञ्जमा मलरोऩ्ऩऩ मुऩिवनुङ् करुत्तुट् कॊण्डाऩ् 554

अञ्चन वण्णत्ताऩ्तऩ्–अंजनवर्ण श्रीराम (की); अटि तुकळ् कतुवा मुऩ्ऩम्–चरणधूली के लगते ही; वञ्चिपोल् इटैयाळ्–वल्लरी सम कमर वाली; पण्टै वण्णत्तळ्–पूर्व-रूप-धारिणी हो; आकि निऩ्ऱाळ्–उठ खड़ी हो गयीं; नॅञ्चिनाल् पिऴैप्पु इलाळै–मन से अपराध न करनेवाली इन पर; नी अळित्तिटुति–आप कृपा करें; ॲऩ्ऩ–कहने पर; कञ्चम् मा मलरोऩ्–कमल के श्रेष्ठ पुष्प पर आसीन; अऩ्ऩ–(ब्रह्मा के) समान; मुऩिवऩुम्–ऋषि भी; करुत्तु–(उनके) अभिप्राय को; उळ् कॊण्टाऩ्–सकारा। ५५४

महर्षि ! अंजनवर्ण श्रीरामचन्द्र प्रभु के श्रीचरणों की धूलि लगने ही वाली थी कि इसके पहले ये देवीस्वरूप में आ गयीं। अतः साफ़ है कि वह पवित्र और निर्दोष मन वाली थीं। इसलिए आप इन्हें स्वीकार करने की कृपा कीजिये। कमलासन ब्रह्माजी के समान गौतम ने भी विश्वामित्र की बात मन से मान ली। ५५४

कुणङ्गळा लुयर्न्द वळ्ळल् कोदमन् कमल पादम्
वणङ्गिनन् वलङ्गॉण् डेत्ति माशरु कर्पिन् मिक्क
अणङ्गिनै अवन्कै योन्दाण् डरुन्दव नोडुन् दूय
मणङ्गिळर् शोलै नीङ्गि मणिमदिन् मिदिलै कण्डार् 555

कुणङ्कळाल्–अपने (श्रेष्ठ) गुणों से; उयर्न्त वळ्ळल्–उत्तम बने हुए प्रभु; कोतमन् कमलम् पातम्–गौतम के कमल-चरण; वणङ्किनन्–नमन कर; वलम् कॊण्टु–परिक्रमा करके; एत्ति–स्तुति करके; माचु अऱ्ऱु कर्पिल् मिक्क–निर्दोष पति-परायणता के कारण श्रेष्ठ बनी हुई; अणङ्किनै–देवी को; अवन् कै ईन्तु–उनके हाथ में प्रदान कर; आण्टु–तब; अरु तवनोटुम्–उत्तम तपस्वी के साथ; तूय–पवित्र; मणम् किळर् चोलै–सुवास-पूरित आश्रम को; नीङ्कि–छोड़कर; मणि मतिल्–सुन्दर प्राचीरवाले; मितिलै कण्टार्–मिथिला नगर को; कण्टार्–देखा। ५५५

गुण-पूर्ण और उत्तम श्रीराम ने गौतम के पैरों में दण्डवत किया; उनकी परिक्रमा करके स्तुति की। फिर अकलंक पतिपरायणा अहल्या को उनके हाथ मे सौंपा। उसके बाद वे तपोधन विश्वामित्र के साथ, उस सुगन्धपूर्ण आश्रम को छोड़कर सुन्दर प्राचीरवाले मिथिला नगर की ओर गये। (कवि अहल्या को अकलंक पतिव्रता कहते हैं। उससे मानना पड़ेगा कि अहल्या अचल पतिपरायणा थीं। देवेन्द्र सम्बन्धी कार्य में देवेन्द्र का और स्त्री-सुलभ चापल्य का दोष है। अपने चापल्य का प्रायश्चित्त उन्होंने अनेक साल पत्थर रहकर किया। यह उनका पति का शाप मानकर प्रायश्चित करना इस बात का प्रमाण है कि वे अपने पति पर श्रद्धा रखती थीं। अहल्या का यह नया 'जन्म' श्रीराम का प्रसाद था। इसलिए वे पितृतुल्य हो गये। अतः उचित ही है कि कवि ईन्त-शब्द का प्रयोग करते हैं, जिसका प्रयोग बड़ों के छोटे के हाथ में दान देते समय किया जाता है)। ५५५

10. मितिलैक् काट्चिप् पडलम् (मिथिलादृश्य-दर्शन पटल)

मैयरु मलरि नीङ्गि यान्शॅय्मा दवत्तिन् वन्दु
शॅय्यव ळिरुन्दा ळॅन्रु शॅळ्ळुमणिक् कॊडिह ळॅन्नुम्
कैहळै नीट्टि यन्दक् कडिनहर् कमलच् चॅङ्गण्
ऐयनै यॊल्लै वावॅन् ऱळैप्पदु पोन्र दन्रे 556

अन्त कटि नकर्–वह श्रेष्ठ नगर; यान् चॅय् मा तवत्तिऩ्–मेरे किये हुए बड़े तप के फलस्वरूप; चॅय्यवळ्–श्री लक्ष्मीदेवी; मै अरु–निर्मल; मलरिऩ् नीङ्कि–(कमल) पुष्प से अलग होकर; वन्तु इरुन्ताळ्–आ ठहरी हैं; ऎऩ्ऱु–यह कहते हुए; कमलम् चॅम् कण् ऐयनै–कमलदल-सम लाल आँख वाले को; चॅऴुमणि–सुस्वर वाली घंटियाँ-बँधी; कॉटिकळ् ऎऩ्नुम्–ध्वजाएँ रूपी; कैकलै नीट्टि–हाथों को बढ़ाकर; ऑल्लै वा–शीघ्र आइये; ऎऩ्ऱु–कहकर; अऴैप्पतु पोऩ्ऱतु–बुलाता-सा है। ५५६

इस पद में मिथिला नगर के प्रासादों पर फहरनेवाली ध्वजाओं का वर्णन है। वे ध्वजाएँ उस नगर के हाथों के समान है। ये ध्वजाएँ जब फहरती है और उनमें बंधी घण्टियाँ बजती है तब ऐसा लगता है कि वह नगर अपने हाथों से कमलाक्ष श्रीराम को यह कहते हुए बुला रहा है कि मेरे तपोबल के कारण श्रीलक्ष्मीदेवी, निर्मल कमल-पुष्प को छोड़कर यहीं आकर बस रही हैं। आप शीघ्र आ जायें। ध्वजाएँ ऊपर फहर रही हैं, अतः वे ही पहले दृश्यमान हैं। ५५६

निरम्बिय माडत् तुम्बर् निरैमणिक् कॉडिह ळॆल्लाम्
तरम्बिऱ रित्मै युत्तिल् तरुममे तूदु शॆल्ल
वरम्बिल्पे रऴहित्ताळै मणञ्शॅय्वात् वरुहिऩ् ऱाऩॆऩ्
ऱरम्बयर् व्रिशुम्बि ऩाडु माडलि नाडक् कण्डार् 557

निरम्पिय माटत्तु उम्पर–(सुन्दरता और श्रेष्ठता-) पूर्ण प्रासादों के ऊपर; निरै मणि कॉटिकळ् ऎल्लाम्–पंक्तिबद्ध सुन्दर ध्वजाएँ सब; तरम् पिऱर् इऩ्मै उऩ्नि–योग्य कोई दूसरा नहीं, यह सोचकर; तरुममे तूतु चॅल्ल–धर्म ही दूत होकर गया, उस पर; वरम्पु इल्–सीमा-हीन; पेर् अऴकित्ताळै–बहुत सुन्दरतावाली को; मणम् चॅय्वान्–विवाहने के लिए; वरुकिऩ्ऱाऩ्–आते हैं; ऎऩ्ऱु–यह सोचकर (आनन्द से); अरम्पैयर्–देवांगनाओं के; विचुम्पिऩ् आटुम् आटलिऩ्–आकाश में किये हुये नृत्य के समान; आट–फहरती थीं, यह; कण्टार्–देखा। ५५७

और भी उन ध्वजाओं का हिलना देवांगनाओं के अत्यन्त संतोष के साथ नाचने के समान था। शोभा और समृद्धि से भरे उन प्रासादों के ऊपर फहरनेवाली ध्वजाओं को देवांगनाओं के समान यह आनन्द था कि सीताजी के योग्य वर श्रीराम के सिवा दूसरे नहीं है; मानों धर्म स्वयं दूत के रूप में जाकर अत्यन्त सुन्दरी सीतादेवी को विवाहित करने के लिए उनको बुला ला रहा है। (प्रेमी-प्रेमिका मिलन में दौत्य का स्थान मुख्य और उत्कृष्ट है। इधर धर्म के हाथ में कवि वह काम सौंप देते है। इस मिलन का शुभ फल देवताओं के लिए हितकारी है। अतः देवांगनाएँ नाचती हैं। ध्वजाओं पर उनके नृत्य की साम्यता आरोपित है)। ५५७

पहऱ्कदिर् मऱैय वाऩप् पाऱकडल् कडुप्प नीण्ड
तुहिऱ्कॉडि मिदिलै माडत् तुम्बरिऱ् ऱुवन्ऱि निऩ्ऱ

मुहिऱ्कुलन् दडवुन् दोरु ननैवन मुहिलिऱ् चूऴ्न्द
अहिऱ्पुहै कदुवुन् दोरु मुलर्वन वाहक् कण्डार् 558

पकलूकतिर् मऱैय–दिन की किरणें छिप गयीं, तब; वानम्–आकाश; पाल् कटल् कट्प्प–क्षीरसागर के समान दिखायी दे; मितिलै माटत्तु उम्परिल्–मिथिला के सौधों के ऊपर; तुवन्ऱि निन्ऱ–संकुलित रही; नीण्ट तुकिल् कोटि–ऊँची चीर की ध्वजाएँ; मुकिल् कुलम्–मेघ-कुल को; तटवुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों सहलाती हैं; नत्तवन–भीग जानेवाले और; मुकिलिऩ् चूऴ्न्त–मेघों के समान फैले हुए; अकिल् पुकै–अगरु-धुआँ; कतुवुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों जम जाता है; उलरवन–सूखनेवाले; आक–बने; कण्टार्–यह देखा। ५५८

इसमें भी ध्वजाओं का वर्णन है। सूर्य छिप गये। इन ध्वजाओं ने आकाश को क्षीरसागर के समान श्वेत बना दिया। वे ध्वजाएँ मेघ-कुल से सम्बन्ध पाकर भीग जाती हैं। पर मेघों के समान प्रासादों के अन्दर से उठ आनेवाले अगरु-धुएँ के लगने पर सूख जाती हैं। इस विनोद को विश्वामित्र, श्रीराम और लक्ष्मण तीनों ने देखा। ५५८

आदरित् तमुदिऱ् कोऱ्रोय्त् तवयव ममैक्कुन् दन्मै
यादॆन्नत् तिहैप्प दल्लान् मदनऱ्कु मॆऴुद लाहाच्
चीदैयैत् तरुद लाले तिरुमह ळिरुन्द शॆय्य
पोदॆनप् पॊलिन्दु तोन्ऱुम् पॊन्मदिल् मिदिलै पुक्कार् 559

मतनऱ्कुम्–मदन के लिए भी; आतरित्तु–मन से चाहते हुए; कोल्–तूलिका को; अमुतिल् तोयत्तु–अमृत में डुबोकर, (चित्र बनाते समय); अवयवम् अमैक्कुम् तन्मै–अवयव बनाने का प्रकार; यातु ऎन्न–कैसा, सोचते हुए; तिकैप्पतु अल्लाल्–चकित खड़ा रहने के सिवाय; ऎऴुतल् आका–नहीं अंकित कर सकता है ऐसी; चीतैयै–सीतादेवी को; तरुतलाले–दिलाने से; तिरुमकळ् इरुन्त–श्रीलक्ष्मीदेवी-बसित; चॆय्य पोतु ऎन–लाल (कमल-) फूल के समान; पॊलिन्तु तोन्ऱुम्–शोभायमान दिखनेवाले; पॊन् मतिल्–स्वर्ण के प्राचीरवाले; मितिलै पुक्कार्–मिथिला में (तीनों ने) प्रवेश किया। ५५९

स्वयं मदन भी बड़ी लगन के साथ तूलिका में अमृत लेकर सीताजी का चित्र बनाने का प्रयत्न करे तो भी सीताजी के दैवी-सुन्दरता-युक्त अवयवों को अंकित नही कर पायेगा और निष्क्रिय होकर चकित रह जायगा। ऐसी अप्रतिम और अनिन्द्य सुन्दरी देवी सीता इस मिथिला में आकर वास कर रही है। इसलिए यह नगर स्वर्णमय प्राचीरों के साथ श्रीलक्ष्मीदेवी का पीठ, दलयुक्त कमल के समान शोभायमान है। उस नगर में उन तीनों ने प्रवेश किया। ५५९

शोऱ्कलै मुनिव नुण्ड शुडर्मणिक् कडलुन् दुन्नि
अऱ्कलन् दिलङ्गु पन्मी नरुम्बिय वानुम् बोल

विऱ्कलै नुदलि ऩारु मैन्दरुम् वॆरुत्तु नीत्त
पॊऱ्कलऩ् किडन्द माड नॆडुन्दॆरु वरिदिऱ् पोऩार् 560

चॊल् कलै मुऩिवन् उण्ट–(तमिऴ-) भाषा के व्याकरण शास्त्र के निर्माता (अगस्त्य) से पिया हुआ; चुटर् मणि कटलुम्–उज्ज्वल रत्नों से भरे सागर (के समान) और; अल्–रात मे; तुऩ्ऩि–घने रूप से; कलन्तु इलङ्कु–मिले हुए चमकनेवाले; पल्मीऩ् अरुम्पिय–अनेक नक्षत्रों से पूरित; वाऩुम् पोल–आकाश के समान; किटन्त–पड़े हुए; विल् कलै नुतलिनारुम्–धनुष और चन्द्रकला-सदृश भालवालियाँ और; मैन्तरुम्–तरुण पुरुष; वॆरुत्तु नीत्त–उपेक्षित कर जिनको फेंक चुके है; पॊऩ् कलऩ् किटन्त–वे स्वर्णाभरण जिन पर पड़े है, और; माटम्–बड़े-बड़े प्रासादों वाले; नॆटु तॆरु–लम्बे (राज-) मार्ग से होकर; अरितिऩ्–सपरिश्रम; पोऩार्–चले। ५६०

वे वीथियों से होकर चले। एक लम्बी वीथी, जिसमें बड़े-बड़े प्रासाद है, अनेक रत्नों से भरे समुद्र के समान है, उस रत्नाकर के समान जो शब्द-शास्त्र- (व्याकरण-) कार अगस्त्य के जल को पी जाने से सारे प्रकाशमय रत्नादि को प्रकट करता हुआ सूखा पड़ा था। वह रात में अन्धकार के समय के आकाश के समान भी है जिसमें अनेक नक्षत्र चमकते हैं। वीथी-समुद्र में या वीथी-रूपी आकाश में रत्नों या नक्षत्रों के स्थान में वे स्वर्णाभरण पड़े हैं, जिनको प्रणय-व्यापार में लगे तरुण और तरुणियों ने, रूठन के अवसर पर उतार फेंक दिया था। चलते हुए इस बात की सावधानी रखनी पड़ती थी कि वे आभरण उनके पैरों में चुभ न जायें। इसलिए वे सश्रम जाते थे। ५६०

ताऱुमाय् तरुहट् कुऩ्ऱन् दडमद वरुवि ताऴ्प्प
आऱुमाय्क् कलिन मावि लाऴियु मिऴिन्दो राऱाय्च्
चेऱुमाय्त् तेर्ह ळोडत् तुहळुमा यॊऩ्ऱो डॊऩ्ऱु
माऱुमा ऱाहि वाळा किडक्किला मरुहिऱ् चॆऩ्ऱार् 561

ताऱु माय्–अंकुश तोड़नेवाले; तरुकण् कुऩ्ऱम्–निडर पर्वत (-सम गज); तटमत अरुवि ताऴ्प्प–अधिक मद नीर बहाते हैं, तब; आऱुम् आय्–नदी बनकर; कलिनम् मा–लगामवाले घोड़ों का; विलाऴि इऴिन्तु–झाग गिरकर; ओर् आऱु आय् उम्–(दूसरी) एक नदी बनकर; तेर्कळ् ओट–रथ दौड़ते हैं, तब; चेऱुम् आय्–पंक बनकर; तुकळुम् आय्–धूलि बनकर; ऑऩ्ऱोटु ऑऩ्ऱु माऱु माऱु आकि–एक दूसरे से विपरीत बनकर; वाळा किटक्क इला–चुप (एक रस) न रह सकनेवाले; मऱुकिल् चॆऩ्ऱार्–बड़े मार्ग पर चले। ५६१

और दूसरी वीथी देखिये। अंकुश तोड़नेवाले मद-मत्त गज मद-नीर बहाते हैं उससे वह वीथी नदी (के समान) बन जाती है। लगाम-युक्त अश्वों के मुख से इतना झाग बहता है कि दूसरी नदी बन जाती है। रथ चलते हैं और कीचड़ भी बन जाती है। फिर वह सूखकर धूलि बन जाती है। इस तरह वीथी, नदी में, पंक में और धूलि में बदलती रहती है और कभी भी एक सी नहीं रहती। ५६१

तण्डुद लिन्‌ऱि यौन्‌ऱित् तलैत्तलै शिऱन्द कादल्
उण्डपिन् कलविप् पोरि लॉशिन्दमॅन् मह्ळि रेपोल्
पण्डरु किळवि यार्तम् पुलवियिर् परिन्द कोदै
वण्डॊडु किडन्दु तेन्‌शोर् मणिनॅडुन् दॆरुविर् चॆन्‌ऱार् 562

तलै तलै चिऱन्त कातल्–परस्पर बढ़नेवाले प्रेम में; तण्टुतल् इन्‌ऱि ऑन्‌ऱि–बिना बाधा के संगम कर; उण्ट पिन्–भोग चुकने के बाद; कलवि पोरिल्–प्रणय-समर में; ऑचिन्त–थकी हुई; मॅल् मकळिरे पोल्–सुकुमारियों की ही तरह; पण् तरुम् किळवियार्–संगीत के समान बोलीवालियों से; तम् पुलवियिल्–अपनी रूठन के अवसर पर; परिन्त कोतै–उतारकर फेंकी गयी मालाएँ; वण्टोटु किटन्त–भ्रमरों के साथ पड़ी रहीं; तेन् चोर्–और शहद बहाती रहीं (जिन पर); मणि नॅटु तॆरुविल्–उन मनोरम दीर्घ मार्ग पर; चॆन्‌ऱार्–चले। ५६२

वे तीसरी वीथी पर से चलते हैं। उसमें वे पुष्पमालाएँ पड़ी हैं जिनको प्रासादों के अन्दर से सुमधुर-संगीत के समान बोली वाली स्त्रियों ने उतार कर फेंक दिया था। उन पर शहद की बूँदें पायी जाती हैं और भ्रमर मँडराते रहते है। ये मालाएँ उन्ही स्त्रियों के समान हैं जिन्होंने अपने प्रियतमों के साथ अन्योन्यसम बढ़ते उत्साह के साथ अबाध संगम किया था और प्रणय-समर मे शक्ति खोकर निर्बल हो पड़ी थी। (उनके माला के समान सुकुमार शरीरों के ऊपर के स्वेदकण शहद की बूँदें हैं और उन पर पतियों की दृष्टि भ्रमरों के समान मँडरा रही है)। ५६२

नॆय्दिर णरम्बिऱ् ऱन्द मळ्ळलयि ऩियऩ्ऱ पाडल्
तैवरु महर वीणै तण्णुमै तळ्ुवित् तूङ्गक्
कैवळि नयनञ् जॆल्लक् कण्वळि मनमुञ् जॆल्ल
ऎयनुण् णिडैया राडु माडह वरङ्गु हण्डार् 563

नॆय् तिरळ् नरम्पिन् तन्त–घी-लगी तन्त्री से उत्पन्न; मळ्ळैयिन् इयन्‌ऱ पाटल्–मधुर, तोतली बोली के समान गीत; तैवरुम्–गाने योग्य; मकर वीणै–मकर वीणा और; तण्णुमै–मृदंग; तळ्ुवि तूङ्क–लय के साथ स्वर देते; कै वळि–हस्तमुद्रा के मार्ग पर; नयनम् चॆल्ल–दृष्टि भेजती हुयी; कण् वळि–आँखों के अनुगमन में; मनमुम् चॆल्ल–मन को चलाते हुए; ऐयम् नुण् इटैयार्–अस्तित्व के सम्बन्ध में संशय पैदा करनेवाली पतली कमरों की नर्तकियों के; आटकम् अरङ्कु–स्वर्णमय नृत्यमंच; कण्टार्–(तीनों ने) देखे। ५६३

उन्होंने एक नाट्यमंच देखा। वहाँ मकर-वीणा का वादन हो रहा था। उस वीणा की तंत्रियाँ घी आदि के लगे रहने से बहुत ही मनोरम सुस्वर निकाल रही थी। मर्दल बज रहा था। दोनों मे लय था। तब हाथों पर नयन चलाते हुए और उन नयनों के पीछे अपना मन लगाते हुए, अस्तित्व के सम्बन्ध में सशय पैदा करनेवाली बहुत पतली कमरवाली नर्त्तकियाँ नाच रही थी। (मकर के आकार की होने से यह मकर-वीणा

कहलायी। हाथों पर दृष्टि रखना और दृष्टि के पीछे मन का लगा रहना— इसका अर्थ है कि नर्त्तकी की हस्तादि मुद्राएँ उसके मनोभावों को पूर्णरूप से परिलक्षित करती थी। मर्दल = मृदंग सा एक बाजा)। ५६३

पूशलि नॅळुन्द वण्डु मरुङ्गिनुक् किरङ्गिप् पोँङ्ग
माशुरु पिऱवि पोल वरुवतु पोव दाहिक्
काशरु पवळच् चॅङ्गाय् मरकतक् कमुहिऱ् पूण्ड
ऊशलिन् महळिर् मैन्दर् शिन्दैयो डुलवक् कण्डार् 564

माचु उरु पिऱवि पोल—वासना (दोष) के कारण होनेवाले जन्मों के समान; वरुवतु पोवतु आकि—(पेंग मारनेवाले) आने-जानेवाले होकर; काचु अरु—निर्दोष; पवळम् चॅम् काय्—प्रवाल-सम लाल फलों के साथ; मरकतम्—मरकत-रंग के; कमुकिल् पूण्ट—गुवाक वृक्षों पर बँधे हुए; ऊचलिन्—झूलों में; मकळिर्—रमणियाँ; पूचलिन् अॅळुन्त वण्टु—कलरव के साथ उठे भ्रमर; मरुङ्किनुक्कु—उनकी कमर की सहानुभूति में; इरङ्कि पोँङ्क—द्रवित होकर शोर मचावे, ऐसा; मैन्तर् चिन्तैयोटु—तरुण पुरुषों के मनों के साथ; उलव—झूलते; कण्टार्—देखा। ५६४

उनके मार्ग पर ऐसा स्थान आया जहाँ तरुणी रमणियाँ झूले झूल रही थीं। झूले सुपारी के वृक्षों पर बँधे झूलते थे। वे वृक्ष मरकत-रंग के थे और उनके फल सुडौल और प्रवाल सम लाल थे। (या प्रवालों के बने फलों से युक्त मरकत-निर्मित तरु के समान बने खम्भे थे।) वे झूले ऊपर-नीचे पाप-पुण्य कर्मानुसार होनेवाले जीव-जन्म के समान नीचे-ऊपर आ-जा रहे थे। जब वे स्त्रियाँ पेंग भर रही थीं तब उनके ऊपर से (धरी मालाओं से) भ्रमर उठते और ऊँचे स्वर करते मानों वे उन स्त्रियों की कमर का बल खाना देखकर सहानुभूति-जनित पीड़ा से कुछ कह रहे हों। उन स्त्रियों का झूलना जो तरुण देख रहे थे उनके मन भी झूल रहे थे। (यानी विविध भावाकुल मन के साथ उनको देख रहे थे)। ५६४

वरप्परु मणियुम् बॊन्नु मारमुङ् गवरि वालुम्
शुरप्पुडै यहिलु मञ्ञैत् तोहैयुन् दुम्बिक् कॊम्बुम्
कुरप्पणै निरप्पु मळ्ळर् कुविप्पुरक् करैह डोरुम्
परप्पिय पॊन्नि यन्न वावणम् बलवुङ् गण्डार् 565

वरम्पु अरु—मापहीन; मणियुम्—रत्न; पॊन्नुम्—स्वर्ण; आरमुम्—चन्दन-काष्ठ; कवरिवालुम्—चामर; चुरम् पुटै अकिलुम्—जंगल के भागों से प्राप्त अगरु; मञ्ञै तोकैयुम्—मयूरपंख, (और); तुम्पि कॊम्पुम्—गजदन्त (इनके); कुरम्पु अणै निरप्पुम्—खेतों के मेड़ बनानेवाले; मळ्ळर्—कृषक (द्वारा); कुविप्पु उऱ—ढेर लगाये जाते हैं, (ऐसा खेतों की भूमि में) और; करैकळ् तोरुम् परप्पिय—तीरों पर बिखेरती छोड़ चलनेवाली; पॊन्नि अन्न—कावेरी के समान; आवणम् पलवुम्—दूकानों की अनेक वीथियाँ; कण्टार्—देखीं। ५६५

अब वे बाजार में आ गये। वहाँ रत्न, स्वर्ण, चन्दन व अगरु के काष्ठ-खण्ड, चामर, मोर के पंख, हाथी-दाँत द्रव्यादि बहुमूल्य वस्तुएँ ढेरों में भी पड़ी रही और यत्र-तत्र भी पड़ी मिलीं। दोनों किनारों की दूकानों के साथ वह वीथी कावेरी (पॊन्नि-स्वर्णमयी) नदी के समान लगी जो मणि, स्वर्ण आदि वस्तुएँ बहा ले आती है; जो किनारों पर ही नही, पास के खेतों की भूमि में भी पहुँचकर पड़ी रहती हैं। जब कृषक खेत में काम करते है तब मेड़ बनाते वक्त इनको उठाकर उनके ढेर लगा देते हैं। (व्यापारी और कृषक में तुलना है; कावेरी और वीथी में तुलना है। सामान दोनों के लिए साधारण है)। ५६५

कॊट्पुरु कलिनप् पाय्माक् कुयमहन् मुडुक्कि विट्ट
मट्कलत् तिहिरि पोल वाळियिन् वरुव मेलोर्
नट्पिनि लिडैय ऱाद ञानिह ळुणर्वि ऩॊन्ऱायक्
कट्पुलत् तिनैय वॆन्ऱु तॆरिविल तिरियक् कण्डार् 566

कॊट्पु उरु—दत्त-चित्तता के साथ; कलिनम् पाय् मा—लगाम में दौड़नेवाले अश्व; कुयम्कन् मुट्कु विट्ट—कुम्हार से घुमाये गये; मण्कलम् तिकिरि पोल—घड़े बनानेवाले चाक के समान; वाळियिन् वरुव—गोल पथ पर जो दौड़ते हैं; मेलोर् नट्पिनिल्—बड़े मनुष्यों की मित्रता के समान; ञानिकळ् इटै अऱात—ज्ञानियो के अबाध; उणर्विन्—मनोभाव समान; ऒन्ऱु आय्—एकरस होकर; कण् पुलत्तु—दृक् इन्द्रिय के लिए; इतैय ऎन्ऱु—क्या है, यह; तॆरिवु इल—ज्ञात नहीं होकर; तिरिय—घूमते है, यह; कण्टार्—देखा। ५६६

एक स्थान में घुड़दौड़ का दृश्य है। अश्व-गोल मार्ग में दौड़ाये जाते हैं। वे अश्व कुलाल (कुम्हार) के चक्र के समान बहुत तेज़ी से, मानों निराधार, घूमते है, उनकी गति बड़ों की मित्रता या ज्ञानियों के मनोभाव के समान समरस है। वे इतनी तीव्र गति से दौड़ते हैं कि आँखों को यह भ्रम हो जाता है कि ये कौन सी चीज है ? । ५६६

तयिरुरु मत्तिऩ् काम शरम्पडत् तलैप्पट् टूडुम्
उयिरुरु काद लारि ऩॊन्ऱैयॊन् ऱॊरुव हिल्ला
शॆयिरुरु मनत्त वाहित् तीत्तिरळ् शॆङ्गण् शिन्द
वयिरवान् मरुप्पि यानै मलैयॆन मलैव कण्डार् 567

तयिर् उरु मत्तिन्—दही में मथानी के समान; काम चरम्—मन्मथ शर; पट—लगे, तब; तलैप्पट्टु—(संगम में) उतारू होकर; ऊटुम्—(सुख-वर्धन के लिए) रूठनेवाले; उयिर् उरु कातलारिन्—प्राणप्यारे प्रणयी-प्रणयिनियों के समान; वयिरम् वाल् मरुप्पु यानै—वज्रकठोर, सफेद दाँतवाले गज; ऒन्ऱै ऒन्ऱु उरुवकिल्ला—एक दूसरे से बचकर अलग न हो पाकर; चॆयिर् उरु मनत्त आकि—कोपाक्रांत मन होकर; चॆम् कण्—लाल आँखों द्वारा; ती तिरळ् चिन्त—अग्नि-राशि निकालते हुए; मलै ऎन—पर्वतों के समान; मलैव—भिड़ते है; कण्टार्—(उनको) देखा। ५६७

उन्होंने एक स्थान पर हाथियों की लड़ाई देखी। दो हाथी आपस में गुँथ रहे हैं। वे प्रणय-व्यापार-रत, परस्पर अत्यन्त प्राण-सम प्रिय पुरुष-स्त्री के जोड़े के समान भिड़ते हैं जो मदन-शर का लक्ष्य बनकर संगम में लग जायँ और बीच-बीच में सुख-संवर्धनकारी रूठन से किंचित अलग हो जायँ। वे हाथी पर्वत के समान है और उनके दाँत वज्र-सम कठोर और श्वेत रंग के हैं। वे वैर के साथ आँख से अगारों की झड़ी-सी निकालते हुए टकरा रहे हैं। वे चाहते हुए भी अलग हो नहीं पाते। ५६७

वाळरम् बॊरुद वेलु मऩ्मदऩ् शिलैयुम् वण्डिऩ्
केळॊडु किळैत्त नीलच् चुरुळुञ्जॆङ् गिडैयुङ् गॊण्डु
नीळिरुङ् गळङ्ग नीक्कि निरैमणि माड नॆऱ्ऱिच्
चाळरन् दोऱुन् दोऩ्ऱुञ् जन्दिर वुदयङ् गण्डार् 568

वाळ् अरम् पॊरुत वेलुम्–तीक्ष्ण रेती से रगड़कर सान-धरे भाले; मऩ्मतऩ् चिलैयुम्–मदन का चाप; वण्टिऩ् केळॊटु–भ्रमर-कुलों के साथ; किळैत्त–ऊपर छिटके; नीलम् चुरुळुम्–नीले छल्लों; चॆम् किटैयुम्–लाल खुखड़ी-खण्ड; कॊण्टु–साथ लेकर; नीळ् इरु कळङ्कम् नीक्कि–दीर्घकाल का कलंक दूरकर; निरै मणि माटम् नॆऱ्ऱि–पंक्ति-बद्ध रत्नमय सौधों के ऊपर; चाळरम् तोऱुम् तोऩ्ऱुम्–हर झरोखे पर दिखनेवाले; चन्तिर् उतयम्–चन्द्रों के उदय; कण्टार्–देखे। ५६८

किसी वीथी में जाते समय उनको मणिमय प्रासादों के ऊपर झरोखों से स्त्रियों के सुन्दर मुख दिखाई दिये। रेती से सान-चढ़े दो भाले, मन्मथ-चाप, भ्रमर, नीले छल्ले, लाल खुखड़ी (एक जल-पौधा जिसका तना काग के समान मृदु है) के खण्ड— इनके साथ, अपना दीर्घ-कालीन कलक को धुलाकर चन्द्र उदित हुआ, ऐसा लगनेवाले मुख थे वे। भाले (नोक की तीक्ष्णता के कारण) आँखों के उपमान बने; भ्रमर और नीले छल्ले, घुँघराले बालों के; धनुष भाल का; और खुखरी-खण्ड अधर के उपमान हैं। ५६८

पळिक्कुवळ् ळत्तु वाक्कुम् पशुनऱुन् देऱल् मान्दि
वॆळिप्पडु नहैयवाहि वॆऱियन मिऴऱ्ऱु हिऩ्ऱ
ऒळिप्पिनु मॊळिक्क वॊट्टा वूडलै युणर्त्तु मापोल्
कळिप्पिनै युणर्त्तुञ् जॆव्विक् कमलङ्गळ् पलवुङ् गण्डार् 569

पळिङ्कु वळ्ळत्तु–स्फटिक के कटोरों में; वाक्कुम्–भरी गयी; पचु नऱु तेऱल् मान्ति–ताजी और सुगन्धित ताड़ी पीकर; वॆळिप्पटु नकैय आकि–प्रकटित हासवाले होकर; वॆऱियऩ मिऴऱ्ऱु किऩ्ऱ–नशे में अर्थहीन शब्दों को तुतलानेवाले बन; ऊटलै–रूठन को; ऒळिप्पिऩुम्–छिपाना चाहने पर भी; ऒळिक्क ऒट्टा–न छिपा सक कर; उणर्त्तुम् आ(ऱु) पोल्–वह प्रकट हो ही जाती है ऐसा; कळिप्पिऩै–

(सुरापान-जनित) मोद को; उणर्त्तुम्–प्रकटित कर देनेवाले; चॅव्वि कमलङ्कळ् पलवुम्–सुन्दर कमल (-मुख) अनेक; कण्टार्–देखे (तीनों ने)। ५६६

स्त्रियाँ स्फटिक चषकों में ताड़ी ढालकर पी चुकी थीं। अतः उनके मुखों पर उल्लास के हास प्रकट हो रहे थे और मुखों से अनर्गल शब्द तुतली बोली में निकल रहे थे। इनके द्वारा उनको पीने से जो आनन्द प्राप्त हुआ वह प्रकट ही हो रहा था, यद्यपि वे उसको छिपाना चाहती थीं। यह वैसा ही था जैसे रूठन के अवसर पर हुई बातों को गोप्य रखने के प्रयास करने पर भी वे प्रकट हो ही जाती हैं। ऐसे उल्लसित कमल (मुख) उनमें अनेक के थे। (ये उच्चकुलवालियों की बातें नहीं है)। ५६९

वळ्ळुहिर्त् तळिर्क्कै नोव माडहम् पऱ्ऱि वार्न्द
कळ्ळॅन्न नरम्बु वीक्किक् कैयॊडु मनमुङ् गूट्टि
वॅळ्ळिय मुरुव ऱोन्ऱ विरुन्देन्न महळि रीन्द
तॅळ्विळिप् पाणित् तीन्देन् शॅविमडुत् तिनिदु शॅन्ऱार् 570

मकळिर्–तरुणियाँ; वळ् उकिर्–नुकीले नखों और; तळिर् कै–पल्लव-कोमल हाथों को; नोव–दुखाते हुए; माटकम् पऱ्ऱि–कील घुमाकर; वार्न्त कळ् ॲन–धार के रूप में गिरनेवाले शहद के समान; नरम्पु वीक्कि–तन्त्री को सहलाकर; कैयॊटु मनमुम् कूट्टि–हाथ के साथ मन को भी लगाकर; वॅळ्ळिय मुरुवल् तोन्ऱ–सफेद (दाँतों के) प्रकाश छिटकाकर मुस्कुराती हुई; विरुन्तु ॲन–दावत के समान; ईन्त–दी गयी; तॅळ् विळिपाणि–साफ़ सुन्दर मौखिक गीतरूपी; तीम् तेन्–मधुर शहद को; चॅवि मटुत्तु–कानों से सुनते हुए; इनितु चॅन्ऱार्–सुख से चले। ५७०

उन्हें श्रवणों का आनन्द भी प्राप्त हुआ। कुछ स्त्रियाँ अपनी उँगलियों से, जो इतनी सुकुमार थीं कि कील को घुमाने में भी दुख होता था, मधु-धारा सम वीणा-तंत्रियों को सहलाकर, हाथ की गति पर मन का ध्यान लगाकर स्वर उठाते हुए वीणा वादन कर रही थीं और उसके साथ मंदहास छिटकाते हुए गा भी रही थीं। उस श्रुति-मधुर संगीत का आस्वादन करते हुए वे तीनो आगे बढ़े। (यहाँ, इस पद में, जैसे अन्य स्थलों में भी, याऴ् शब्द आया है जिसका अर्थ वीणा दिया गया है। याऴ् वीणा की ही तरह का एक वाद्य है जो अब प्रचलन में नहीं है। कहा जाता है कि याऴ् चार तरह के थे)। ५७०

मॅय्वरुम् बोह मॊक्क वुडनुणडु विलैयुङ् गॊळ्ळुम्
पैयर वल्हु लार्त मुळ्ळमुम् बळिङ्गुम् बोल
मैयरि नॅडुङ्ग णोक्कम् बडुदलुङ् गरुहि वन्दु
कैपुहच् चिवन्दु काट्टुङ् गन्दुहम् बलवुङ् गण्डार् 571

मॅय् वरुम् पोकम्–शारीरिक सुख-भोग; ऑक्क–(पुरुष के ही) समान; उटन् ण्उट–साथ-साथ प्राप्त करके; विलैयुम् कॊळ्ळुम्–उसका दाम भी लेनेवाली; पै अरव

मै–सर्प के फन के समान; अल्कुलार् उळ्ळमुम्–जघनप्रदेश की (वेश्या) के मन और; पळिङ्कुम् पोल–और स्फटिक के समान; मै, अरि, नॅट्टु कण्–अंजनवाली, डोरे सहित, आयत आँखें; पट्टतलुम्–पड़ने पर; करुकि–काले रंग के बने; वन्तु; पुक–उनके हाथ में आ जाते हीं; चिवन्तु–लाल बने; काट्टुम्–दिखनेवाले कन्तुकम् पलवुम् कण्टार्–अनेक कंदुक भी देखे। ५७१

उन्होंने कंदुक-क्रीड़ारत नारियों को देखा। वे कंदुक उन वेश्याओं के मन के समान, जो पुरुष के साथ-साथ, पुरुष का शारीरिक सुख जितना प्राप्त करती हैं, फिर भी दाम भी ले लेती हैं, और स्फटिक के समान रंग बदलते थे। वे स्त्रियों के हाथ में रहते वक्त लाल लग रहे थे; उनके हाथों से ऊपर जाते वक्त उनकी डोरे सहित आयत आँखों के काजल का रंग प्रतिबिंबित करते हुए काले हो जाते थे। (कम्बन वेश्याओं की उपमा अनेक जगह पर देते है। इधर उनका और एक तरह का व्यवहार बताया गया है। वे अपने पास आये पुरुष के अनुरूप अपने भाव बदल लेती हैं पर उनका मन निर्लिप्त है। स्फटिक भी पारदर्शी है और पास की वस्तुओं का रंग उसमें प्रतिलक्षित होता है)। ५७१

पङ्गयङ् गुवळै याम्बल् पडर्कॊडि वळ्ळै नीलम्
शॆङ्गिडै तरङ्गङ् गॆण्डै शिनैवरा लिन्नैय तेम्बत्
तङ्गळो डुवमै यिल्ला ववयवत् तहैमै शालुम्
मङ्गयर् विरुम्बि याडुम् वाविहळ् पलवुङ् गण्डार् 572

पङ्कयम्–कमल-पुष्प; कुवळै–कुवलय; आम्पल–लाल कुमुद; पटर कॊटि वळ्ळै–फैलनेवाली लता वळ्ळै के पत्र; नीलम्–नीलोत्पल; चॅम् किटै–लाल खुखड़ी (एक जल-बेल); तरङ्कम्–तरंगे; कॅण्टै–कॅण्टै मछलियाँ; चित्तै वराल्–गाभिन वराल नाम की मछलियाँ; इन्नैय–और ऐसे; तेम्प–व्याकुल हों; तङ्कळोटु–अपने; उवमै इल्ला–उपमान-हीन; अवयवम् तकैमै चालुम्–अवयव-सौष्ठव में श्रेष्ठ; मङ्कैयर्–स्त्रियाँ; विरुम्पि आटुम्–उत्कण्ठित हो स्नान करनेवाली; वाविकळ् पलवुम्–वापियाँ, अनेक भी; कण्टार्–देखीं। ५७२

विश्वामित्र और श्रीराम और लक्ष्मण ने अनेक वापियाँ देखीं। उनमें सुन्दरी स्त्रियाँ स्नान कर रही थी। उनके आनन, आँखें, मुख, कान, केश, अधर, त्रिबलियाँ और पिंडलियाँ आदि अवयव इतने सुडौल और सुघड़ थे कि उनको देखकर क्रमशः कमल, नील कुमुद, लाल कुमुद पुष्प; फैलकर बढ़नेवाली "वळ्ळै" के पत्ते; नीलोत्पल, व मछलियाँ, लाल खुखड़ी और गाभिन "वराल" मीन आदि इस बात को लेकर रोते थे कि हम उन अवयवों के समान सुन्दर नहीं बने है। ५७२

कडहमुङ् गुळैयुम् बूणुम् मारमुङ् गलिङ्ग नुण्णूल्
वडहमु महर याळुम् वट्टिन्नि कॊडुत्तु वाशत्

तौडैयलङ् गोदै शोरप् पळिक्कुनाय् शिवप्पत् तौट्टुप्
पडैनेंडुङ् गण्णार् वट्टाट् टाडिडम् बलवुङ् गण्डार् 573

कटकमुम्–कंकण; कुळै–कुंडल; पूणुम्–और अन्य आभरण; आरमुम्–रत्नहार; नुण् नूल कलिङ्कम्–पतले सूत के बने वस्त्र; (नुण् नूल्) वटकमुम्–(महीन सूत के) उत्तरीय; मकर याळुम्–मकर वीणा; वट्टिति कोट्टुतु–दाँव पर चढ़ाकर; वाचम् तोंटैयल्–सुवासित माला से अलंकृत; अम् कोतै–सुन्दर केश के; चोर–खुलकर लटकते; पळिङ्कु नाय् चिवप्प–स्फटिक की गोटी के लाल होते; तोट्टु–(उसको) हाथ में लेकर; पटै नेंटु कण्णार्–हथियार सम आयत आँखों की स्त्रियाँ; वट्टु आट्टु–जुआ खेल के; आटु इटम् पलवुम्–खेलनेवाले अनेक स्थानों को; कण्टार्–देखा। ५७३

कहीं-कही स्त्रियाँ जुआ खेल रही थी। वे अपने कंकण, कर्ण-कुंडल, अन्य आभूषण, रत्नहार, वस्त्र, उत्तरीय और मकर वीणा तक को दाँव पर चढ़ा देती थीं और इतनी तत्परता के साथ खेलती थी कि उनके पुष्पालंकृत केश खुलकर लटकने लगे। गोटियाँ स्फटिक की थी और उनको वे स्त्रियाँ इस तरह कसकर पकड़ती थी कि उनकी हथेली लाल हो जाती और गोटी भी लाल रंग की लगने लगती। ५७३

इयङ्गुरु पुलन्ग ळङ्गु मिङ्गुङ्गोण् डेह वेहि
मयङ्गुपु तिरिन्तु निन्रु मरुहुरु मुणर्वि दॆन्नप्
पुयङ्गळिङ् कलवैच् चानदुम् बुणर्मुलैच् चुवडु नीङ्गा
वयङ्गॊळिङ् कुमरर् वाळाट् टाडिडम् पलवुङ् गण्डार् 574

इयङ्कु उरु पुलन्कळ्–सदा चलन-शील इन्द्रिय; अङ्कुम् इङ्कुम् कोण्टु एक–इधर-उधर खींच ले जाने से; एकि–जाकर; मयङ्कुपु–भ्रमित होकर; तिरिन्तुम् निन्रुम्–घूमते-फिरते या खड़े रहकर; मरुकु उरुम् उणर्वु इतु–आकुलित रहनेवाली बुद्धि की स्थिति, यह; ॲन्न–ऐसा मानने योग्य; वयङ्कु ऑळिल्–शोभायमान सुन्दरता के; कुमरर्–पट्ठे; पुयङ्कळिल्–अपनी भुजाओं में; कलवै चान्तुम्–सुगन्धित द्रव्य-मिश्रित चन्दन का लेप; पुणर् मुलै चुवटुम्–अन्तर-हीन रीति से सटे हुए स्तनो के (आलिंगन से प्राप्त) चिह्न; नीङ्का–विना पोंछे; वाळ् आट्टु–खड्ग-अभ्यास; आटु इटम् पलवुम्–करनेवाले अनेक स्थान; कण्टार्–देखे। ५७४

पट्ठे कहीं-कहीं खड्ग का अभ्यास कर रहे थे। वे उस बुद्धि के समान पैतरे बदलते रहते थे जो चंचल इन्द्रियों के पीछे जाकर भ्रम मे पड़कर कहीं इधर जाती, कही उधर; और कही धक्का खाकर खड़ी रहती और आकुल हो जाती। उन युवकों के शरीर पर चन्दन के लेप के साथ आलिंगन के अवसर पर लगे प्रियाओं के मांसल स्तनों से अंकित चिह्न भी है। ५७४

वञ्जुड रुरुवुड् डन्न मेनियर् वॆण्डिङ् डीयुम्
नॆञ्जिन रोशन् कण्णि नॆरुप्पुरा वन्ङग नन्नार्

शॅञ्जिलैक् करत्तर् मादर् पुलविह डिरुत्तिच् चेन्द
कुञ्जियर् शुऴला नित्ट्र मैन्दर्दङ् कुऴाङ्गळ् कण्डार् 575

वॅम् चुटर् उरु उट्र्तु अन्न–गरम सूर्य ने रूप लिया, ऐसे; मेनियर्–शरीरवाले; वेण्टिट्रु–माँगी गयी वस्तु को; ईयुम् नॅञ्चिन्नर्–देनेवाले स्वभाव के; ईचन् कण्णिन् नॅरुप्पु उरा–परमेश्वर की भाल की आँख की अग्नि से जो न जला; अनङ्कन् अन्नार्–अनंग-सम; चॅम् चिलै करत्तर्–सुघटित धनुषवाले हस्तों के; मातर् पुलविकळ् तिरुत्ति–प्रेमिकाओं की रूठन शांत करके, (उस प्रयत्न में उनके महावर लगे पैरों की लात खाकर, उस कारण); चेन्त कुञ्चियर्–लाल (रंजित) हुए केश वाले; चुऴला नित्ट्र–घूम फिरनेवाले; मैन्तर् तम् कुऴाङ्कळ्–पट्ठों के समूहों को; कण्टार्–देखा। ५७५

उन्होंने अनेक सुन्दर युवकों के समूह देखे। वे सूर्य के रूपों के समान तेजोमय थे। वे याचक के प्रति दयालू थे। वे उन अनंगों के समान लगते थे जिनको परमेश्वर के भाल-नेत्र की अग्नि नहीं जला पायी है। उनके हाथ में धनुष थे, उनके केश लाल थे, क्योंकि उन पर उनकी प्रियतमाओं की लातें पड़ी थीं जब वे उनकी रूठन को दूर करने के प्रयास में लगे थे, और पैरों में लगा महावर केश को लाली दे गया। ५७५

पाक्कॊक् कुञ्जॊट्र् पैङ्गिळि यॊडुम् बलपेशि
माहत् तुम्बर मङ्गयर् नाण मलर्कॊय्युम्
तोहैक् कॊम्बिन् नन्नवर्क् कन्न नडैतोट्रुप्
पोहक् कण्डे वण्डिन मार्क्कुम् पॊऴिल् कण्डार् 576

पचुमै किळियॊटुम्–हरे (रंग के) शुकों के साथ; पाकु ऑक्कुम् चॊल्–चाशनी के समान मधुर बातें; पल–अनेक; पेचि–बोलती (करती) हुई; माकत्तु–स्वर्ग की; उम्पर मङ्कैयर्–देवांगनाएँ; नाण–लजा जायँ, ऐसे; मलर् कॊय्युम्–पुष्प चयन करनेवाली; तोकै, कॊम्पु, अन्नवर्क्कु–मयूर व पुष्पलता के समान (छविमय और कोमल और सुन्दर) रहनेवाली स्त्रियों से; अन्नम्–हंसों (को); नटै तोट्रु–चाल में हारकर; पोक कण्टु–(उनके) पीछे जाते हुए देखकर; वण्टु इनम्–भ्रमर-कुल; आर्क्कुम्–जहाँ गुंजार करते थे; पॊऴिल्–उस फुलवारी को; कण्टार्–देखा। ५७६

वे राजमहल के पास आ गये। महल को घेरती हुयी खाई पड़ी है। उसके पास एक फुलवारी रही। उसमें कुछ रमणियाँ फूल चुन रही है। वे शुकों के साथ चाशनी के समान बोली में बोल रही है। उनको देखकर देवांगनाएँ भी लजा जाती है। वे मोरों के समान छविमय हैं और पुष्पलताओं के समान कोमल और मनोहर। उनकी चाल के सामने हंस हार मानकर उनके पीछे-पीछे चलते हैं। स्त्रियों की जीत पर भ्रमर वाहवाही करते गुंजार करते है। ५७६

उम्बर्क् केयुम् माळिहै योळि निळल्पाय
इम्बर्त् तोन्ऱुम् नाहर्द नाट्टिन् नळिल्काट्टिप्
पम्बिप् पोंङ्गुङ् गङ्गैयि नाळ्न्दु पडैमन्नन्
अम्बोंर् कोयिर् पोंन्मदिल् शुर्ऱुम् महळ्कण्डार् 577

उम्पर्क्कु एयुम्–देवों के लिए भी योग्य; माळिकै ओळि–प्रासादों की पंक्तियों की; निळल् पाय–परछाईं के पड़ने से; इम्पर् तोन्ऱुम्–इस लोक में आकर दिखनेवाले; नाकर् तम् नाट्टु–देवलोक की; इन् ऍळिल् काट्टि–रमणीय सुन्दरता प्रदर्शित कर; पम्पि पोंङ्कुम्–तरंगित होकर उमड़ती आनेवाली; कङ्कैयिन् आळ्न्तु–गंगा के समान गहरी बनकर; पटै मन्नन्–सेना-बहुल राजा (जनक) के; अम् पोंन् कोयिल्–सुन्दर स्वर्णमय राजमहल के; पोंन् मतिल् चुर्ऱुम्–स्वर्णमय प्राचीरों को घेरनेवाली; अकळ् कण्टार्–खाईं देखी। ५७७

(अब खाई का वर्णन है) खाई में देवों के लिए भी रहने योग्य मिथिला के प्रासादों की परछाईं पड़ती हैं। इससे यह खाईं ऐसा भ्रम पैदा करती है कि देवलोक इधर आ गया है। तरंगों के साथ उमंग भर कर बहनेवाली गंगा के समान वह गहरी है। वह महाराज जनक के स्वर्णमय महल के स्वर्णमय प्राचीरों को घेरकर पड़ी है। उस खाई को उन्होंने देखा। ५७७

पोंन्निन् शोदि पोदिनि नार्ऱम् पोंलिवेपोल्
तेंन्नुण् डेनिर् ऱीञ्जुवै शेंञ्जोंर् कवियिन्बम्
कन्निम् माडत् तुम्बरिन् माडे कळिपेडो
डन्नम् माडुम् मुन्ऱुऱै कण्डङ् गयनिन्ऱार् 578

पोंन्निन् चोति–(श्रेष्ठ) स्वर्ण की आभा; पोतिन् इन् नार्ऱम्–फूल की सुगन्ध; तेंन् उण् तेनिल्–मधुमक्खियों से खाद्य शहद का; तीम् चुवै–मीठा स्वाद (जिसमें रहता, उस); चेंम् चोंल् कवि इन्पम्–सुस्पष्ट शब्दों की बनी कविता का आनन्द, (इन सबकी); पोंलिवे पोल्–उज्ज्वल व्याख्या के समान; कन्नि–कन्या सीतादेवी के; माटत्तु उम्परिन् माटु–प्रासाद के ऊपरी भाग में एक ओर; अन्नम्–हंसों के; कळि पेटोटु आटम्–अपनी प्यारी हंसिनियों के साथ क्रीड़ा करने के लिए बने; मुन् तुऱै कण्टु–जलकुण्ड के साथ रहे सहन को देखकर; अङ्कु–वहाँ; अयल्–उस प्रासाद के पास; निन्ऱार्–खड़े रहे। ५७८

वे उस प्रासाद के पास आये जहाँ सीताजी रहती थी। (विवाह होते तक कन्याओं को अलग भवन में रखने की प्रचलित प्रथा के अनुसार उस प्रासाद में वास कर रही थी। उसको कन्या-सौध या कन्या-माढा कहा जाता है।) राजकुमारी, सीताजी स्वर्ण की आभा, पुष्प की सुगन्ध, मधुर-मधु सम शब्दों की बनी कविता का काव्यानन्द आदि की साक्षात् जीवित व्याख्या के समान छविमयी, सुगन्धित शरीरवाली और कविता के समान बोलनेवाली थी। उनके प्रासाद की ऊपरी छत पर एक जलकुंड

वना था जिसमें हंस अपनी प्रिय हंसिनियों के साथ केलि करते थे। उस कुंड के पास खुला सहन भी था। उन सबको देखकर वे तीनों यात्री खड़े हो गये। ५७८

शॅप्पुङ् गालैच् चॅङ्गम लत्तोऩ् मुदल्यारुम्
ऒप्पॅण् पालुङ् कॊण्डुव मिप्पो रुवमिक्कुम्
अप्पॅण् डाऩे यायिऩ पोदिङ् गयऩ्मऱ्ऱोर्
ऒप्पॅङ् गेकॊण् डॅव्वहै नाडि युरैशॅय्हेऩ् 579

चॅम्मै कमलत्तोऩ् मुतल्—लाल कमल पर आसीन (ब्रह्मा) आदि; यारुम्—सभी; चॅप्पुम् कालै—चर्चा करते समय; उवमिप्पोर्—उपमा-कथन के समय; ऒप्पु ऎण् पालुम् कॊण्टु—उपमा-योग्य वस्तु को आठों दिशाओं में ढूंढकर; उवमिक्कुम्—अन्त में उपमित (जिनसे) करते हैं; अ पॅण् ताऩे—वह देवी स्वयं; इङ्कु आयिऩपोतु—यहाँ सीता बनी आ रहीं, तब; अयल्—अलग; ओर् ऒप्पु—एक उपमा; ऎङ्के—कहाँ; ऎव्वकै—कैसे; नाटि—परखकर; कॊण्टु—लेकर; उरै चॅय्केऩ्—कहूँगा। ५७९

सीता के वर्णन में किसकी उपमा दी जाय? ब्रह्मा से लेकर सभी लोग स्त्रियों की उपमा आठों दिशाओं में ढूँढकर आखिर श्रीलक्ष्मी को ही लेते हैं। वही श्रीलक्ष्मी तो सीताजी हैं। कवि पूछते है कि इनकी उपमा कहाँ, कैसे ढूंढ़ लाऊँ? । ५७९

पॊऩ्शेर् मॆन्काऱ् किण्किणि मार्बम् बुऩैयारम्
कॊऩ्शे रल्हुन् मेहलै ताङ्गुङ् गॊडियऩ्ऩार्
तऩ्शॆर् कोलत् तिऩ्ऩॆऴिल् काणच् चदकोडि
मिऩ्शे विक्क मिऩ्ऩर शॆऩ्ऩुम् बडिनिऩ्ऱाळ् 580

पॊऩ् चेर्—सौष्ठव-युक्त; मॆऩ्काल्—कोमल पैरों में पहना हुआ; किण्किणि—पैर का आभरण (घुंघरू); मार्पम् पुऩै आरम्—वक्ष पर पहना हुआ हार आदि; कॊऩ् चेर्—सुडौल; अल्कुल्—कटिप्रदेश में पहनी; मेकलै—मेखला; ताङ्कुम्—इनको धारण करनेवाली; कॊटि अऩ्ऩार्—पुष्पलता-समान सखियों को; तऩ् चेर् कोलत्तु—अपने स्वाभाविक रूप की; इऩ् ऎऴिल् काण—मनोरम सुन्दरता दिखाती हुई; चतम् कोटि मिऩ् चेविक्क—शत कोटि बिजलियों से सेवित; मिऩ् अरचु—विद्युतों में राजा (रानी); ऎऩ्ऩुम् पटि—है, ऐसा वर्णनीय रीति से; निऩ्ऱाळ्—(प्रासादों के ऊपर (हंसों के जलकुंड के पास) खड़ी रहीं। ५८०

सीताजी आकर उस खुली छत पर खड़ी हो गयीं। उनके साथ चेरियाँ खड़ी थीं जो पैरों में घुंघरू, वक्षों में हार आदि और कमरों में मेखला पहने हुए थीं। इन आभरणों से सज्जित, लताओं के समान रही वे भी इनकी स्वाभाविक सुन्दरता से मुग्ध होकर सीताजी को निहार रही थी। तब सीताजी विद्युतों के समूहों से सेवित विद्युत्‌राज के समान शोभायमान खड़ी रहीं। ५८०

उमैया ळोक्कुम् मङ्गय रुच्चिक् करम्वैक्कुम्
कमैयाण् मेनि कण्डवर् काट्चिक् करैकाणार्
इमैया नाट्टम् पॅट्रिल मॅन्ड्रा रिरुकण्णाल्
अमैया वॅन्ड्रा रन्दर वानत् तवरॅल्लाम् 581

उमैयाळ् ऑक्कुम्–उमादेवी सदृश; मङ्कैयर्–देवियों से भी; करम् उच्चि वैक्कुम्–हाथ सिर पर रखकर (सम्माननीय); कमैयाळ–क्षमाशीला; मेनि–रूप-सौंदर्य; कण्टवर्–देखनेवालों ने; काट्चि करै काणार्–दर्शन, पूर्णरूप से कर, पार न पानेवाले (तृप्त न) होकर; इमैया नाट्टम्–पलक-हीन आँखें; पॅड्रिलम्–प्राप्त नहीं की हैं; ऍन्ड्रार्–कहा; अन्तरम् वानत्तवर् ऍल्लाम्–आकाश के सुर लोग सब; इरु कण्णाल् अमैयातु–दो आँखों से नहीं बन सकता; ऍन्ड्रार्–बोले। ५८१

उमादेवी की समानता करनेवाली श्रेष्ठ देवियाँ भी सीताजी को देखकर इनका महत्व मानती है और सम्मान में अपने सिरों पर हाथ जोड़े रख लेती हैं। सीताजी क्षमा आदि उत्तम गुणों से भी भूषित है। इनका रूप-सौन्दर्य देखकर आँखे नही अघाती। मानव की आँखें पार नही पातीं और अतृप्त होकर मानव कहते हैं कि हमारा भाग्य नही रहा और हमें ऐसी आँखे मिली है जिनको पलकें झपककर बन्द कर देती हैं और हम लगातार देख नही पाते। निर्निमेष आँखोंवाले देवता लोग भी अतृप्त है कि हमारे तो दो ही आँखें है और इनका सौन्दर्य पूर्णरूप से देखने के लिए दो आँखें यथेष्ट नहीं है। ५८१

वॅन्ड्रम् मानैक् काययिल् वेलुङ् गॉलैवाळुम्
पिन्ड्रम् मानप् पेर्कय लञ्जप् पिरळ्कण्णाळ्
कुन्ड्रम् माडक् कोवि न्ळिक्कुङ् गडलन्ड्रि
अन्ड्रम् माडत् तुम्ब रळिक्कुम् ममुदन्नाळ् 582

अ मानै वॅन्ड्रु–उस (उपमान की) हरिणी को जीतकर; काय् अयिल् वेलुम्–संहारक तीक्ष्ण भाले; कॉलै वाळुम्–और घातिनी तलवार को; पिन्ड्र–(स्पर्धा में) पीछे छोड़कर; मानम् पेर् कयल् अञ्च–मान और चंचलता से युक्त कयल् मछलियाँ डरें, ऐसा; पिरळ् कण्णाळ्–चंचल आँखों वाली; कुन्ड्रम् आट–मन्दर पर्वत के घूमने से; कोविन् अळिक्कुम्–श्रीविष्णु द्वारा दत्त; कटल् अन्ड्रि–क्षीरसागर के अतिरिक्त; अ माटत्तु उम्पर–उस प्रासाद की छत (के); अन्ड्रु अळिक्कुम्–तभी दिये हुए; अमुतु अन्नाळ्–अमृत के समान थीं। ५८२

सीताजी की आँखें अति सुन्दर है। उनके सामने अधीरता, तीक्ष्णता, आयतता आदि के कारण उपमित मृग, भाला, तलवार आदि वस्तुएँ टिक नही सकतीं। सौन्दर्य-स्पर्द्धा में देवी की आँखें इनको बहुत पीछे छोड़ आयी हैं। ऐसी सीताजी को छत पर देखकर यह भ्रम होता है कि ये अमृत है; लेकिन वह अमृत नहीं जिसको मंदर पर्वत को घुमाकर

बहुत परिश्रम के बाद पाया गया। यह अमृत कन्या-सौध ने अपनी छत पर अनायास अभी प्रकट किया है। ५८२

पॅरुन्दे तिन्शॉर् पॅण्णिव ळॊप्पा ळॊरुपॅण्णैत्
तरुन्दा तॅन्ऱा नान्मुह निन्नुन् दरलामो
अरुन्दा वन्दत् तेव रिरन्दा लमुदॅन्नुम्
मरुन्दे यल्ला दॅन्निनि नल्हुम् मणियाऴि 583

मणि आऴि–रत्नाकर (समुद्र); अरुन्ता अन्त तेवर्–(अमृत छोड़) किसी वस्तु को जिन्होंने नहीं खाया था, वे देव; पॅरु तेन् इन् चॊल्–बहुप्रशंसित शहद सम मधुर-वाणी की; पॅण् इवळ्–देवी, इनकी; ऑप्पाळ् ऑरु पॅण्णै–समानता करनेवाली एक स्त्री की; इरन्ताल्–याचना करें तो; तरलामो–दे सकता है क्या; अमुतु ऍन्नुम् मरुन्ते अल्लातु–अमृत नामक (अमरता-प्रदायी) औषध के सिवा; इनि ऍन् नल्कुम्–और क्या दे सकता है; इन्नुम्–और भी; नान्मुकन्तान् तरुम्–ब्रह्मा भी देना (चाहें) तो भी; तरल् आमो–दे सकते है क्या। ५८३

ऐसी देवी को अब न तो ब्रह्मा सृष्ट कर सकते हैं, न रत्नों का आगर क्षीरसागर ही दे सकता है। चाहें तो सागर अमृत के सिवा अन्य कुछ न रखनेवाले देवों के माँगने पर फिर से अमृत उत्पन्न कर सकता है; पर ऐसी सुन्दरी कन्या को नहीं दे सकता। (ब्रह्मा शायद अमृत भी नहीं दिला सकते।) सीतादेवी स्वयंभूता हैं। ५८३

अन्नैयाण् मेन्नि कण्डपि नण्डत् तरशाळुम्
विन्नैयोर् मेवुम् मेनकै यादिम् मिळिर्वेऱ्कण्
इन्नैयो रुळ्ळत् तिन्नलि नोर्तम् मुहमॅन्नुम्
पन्नितोय् वानिन् वॅण्मदिक् केन्ऱुम् पहलॅन्ऱे 584

अण्टत्तु अरचु आळुम् विन्नैयोर्–देवलोक के शासनकर्ता (इन्द्र आदि) से; मेवुम्–आदृत; मिळिर् वेल् कण्–प्रकाशमय, शक्ति-सम आँखोंवाली; मेनकै आति इन्नैयोर्–मेनका आदि ऐसी अप्सराएँ; अनैयाळ् मेन्नि कण्टपिन्–इनका रूप (-सौंदर्य) देखने के बाद; तम् मुकम् ऍन्नुम्–अपने मुखरूपी; पनि तोय्–शीतल (मनोरम); वान् इन् वॅण् मतिक्कु–छविमान, सुखद श्वेत चन्द्र के लिए; ऍन्ऱुम्–हमेशा; पकले ऍन्ऱु–दिन ही है, समझकर; इन्नलिनोर्–उदास हैं। ५८४

मेनका आदि ऐसी स्त्रियाँ हैं जिनका देवेन्द्र आदि भी, उनके सौन्दर्य के कारण आदर करते हैं। बर्छी-सम आँखोंवाली वे भी सीताजी को देखकर इस बात से उदास हैं कि हमारे मुख-चन्द्र के लिए सदा के लिए दिन ही दिन हो गया है, यानी हमारे मुखों की आकर्षकता कम हो गयी है। ५८४

मलर्मे निन्ऱिम् मङ्गैयि वैयत् तिडैवैहप्
पलहा लुन्दम् मॅय्न्नन्नि वाडुम् बडिनोऱ्ऱार्

अलहो विल्ला वन्दण रोनल् लड़मेयो
उलहो वानो उम्बर्कों लोवी दुणरेमाल् 585

इ मङ्कै–यह देवी; मलर्मेल् नित्रू–कमलपुष्प पर से; इ वैयत्तु इटै वैक–इस धरणी में (आकर) ठहरीं, इसके लिए; तम् मॅय्–अपना शरीर; नत्रि वाट्टुम्पटि–शरीर को खूब क्लेश देते हुए; पल कालुम् नोट्रार्–दीर्घकाल तक तपस्या करनेवाले; अलकु ओवु इल्ला अन्तणरो–(क्या) अगणित ब्राह्मण हैं; नल् अड़मेयो–श्रेष्ठ धर्मदेवता ही; उलको–यह पृथ्वी; वानो–देवलोक; उम्परो–उनके भी ऊपर के लोक; ईतु उणरेम्–यह नहीं जानते। ५८५

यह देवी कमल का वास छोड़कर इस भूमि में वास करने पधारी हैं तो यह किसकी तपस्या का अनुग्रह है? क्या अगणित ब्राह्मणों ने अपने शरीर को क्लेश देते हुए लम्वे काल तक तपस्या की थी? या स्वयं धर्म देवता ने व्रत रखा था? या इस लोक ने; या देवलोक ने; या उनके ही ऊपर के लोकों के वासियों ने तप किया? यह हम नही जानते। ५८५

तन्ने रिल्ला मङ्गयर् शॅङ्गैत् तळिर्माने
अन्नै तेन्ने यारमु देॅयॅन् ड्रडि पोड्र्
मुन्ने मुन्ने मॉय्म्मलर् तूवि मुड्रैशारप्
पॉन्ने शूळुम् बूवि नॉदुङ्गिप् पॉलिहिन्ड्राळ् 586

तम् नेर् इल्ला–अपनी सानी न रखनेवाली; मङ्कैयर्–सखियाँ; चॅम् कै तळिर् अरुण—पल्लव-सम हाथ वाली; माने–मृगी; अन्ने–माता; तेने–शहद; आर् अमुते–अपूर्व अमृत; ॲन्रू–कहकर; अटि पोड्र्–चरणों की रक्षा में; मुन्ते मुन्ते–(पग धरने के) पूर्व, पूर्व ही; मॉय् मलर् तूवि–घने रूप से पुष्पजाल विछाती; मुड्रैचार–क्रम से पास-पास आती है, ऐसा; पॉन् चूळुम् पूविन्–स्वर्णरंग के मकरंद-भरे फूलों पर; ऑतुङ्कि–चलती हुई; पॉलिकिन्ड्राळ्–कांतिमय दर्शन देती है। ५८६

सीताजी के साथ उनकी चरण-सेवा-रत, सुन्दरी सखियाँ रहती हैं। जव सीताजी चलने लगती है तव उनके पैर को कठोर भूमि पर लगने से पीड़ा न हो, इस वास्ते सखियाँ आगे-आगे पुष्प-राशि बिखराती जाती हैं। सीताजी मकरन्द-भरे पुष्प-समूहों पर पर रखती चलती हैं। सखियाँ उनको पल्लव-कोमल-हस्ते, मृगनयनी, माते, मधुतुल्ये, अपूर्व अमृतोपमे आदि शब्दों से सम्वोधित करती है। ५८६

कॉल्लुम् वेलुङ् गूड्रमु मॅन्नुम् मिवैयॅल्लाम्
वॅल्लुम् वल्लुम् मॅन्न मदर्क्कुम् दिळिकॉण्डाळ्
शॉल्लुन् दन्मैत् तन्ड्रु कुन्रून् जुवरुन्दिण्
कल्लुम् बुल्लुङ् कण्डुरु हप्पॅण् कनिनिन्ड्राळ् 587

कॉल्लुम्–मारक; वेलुम् कूड्रमुम्–भाला, यम; ॲन्नुम् इवै ॲल्लाम्–संज्ञित इन सव को; वॅल्लुम् वॅल्लुम् ॲन्न–जीतेगा, जीतेगा अवश्य, यह मानना पड़े ऐसा;

मतर्क्कुम् विऴि कॉण्टाळ्—विजय-गर्व-शालिनी आँखों वाली; पॆण् कऩि—स्त्रीत्व जिनमें पूर्णता को प्राप्त है उनको; कुऩ्ऱुम्—पर्वत और; चुवरुम्—दीवारें; तिण् कल्लुम्—कठोर प्रस्तर और; पुल्लुम्—(कोमल) घास; कण्टु—देखकर; उरुक—पसीज जाते है, ऐसा; निऩ्ऱाळ—आ स्थित हुई; अतु—वह (सुन्दरता); चॊल्लुम् तऩ्मैत्तु अऩ्ऱु—कहने योग्य नहीं (मुझ में सामर्थ्य नहीं है)। ५८७

"मारक भाला और कालदेव —इनको भी हम मात दे देंगी। वे चलकर पीड़ा देते हैं। हम अपनी जगह पर रहकर पुरुषों को विह्वल करा देंगी।" ऐसा गर्व करती सी दिखनेवाली आँखें लेकर और स्त्रीत्व के सारे (रूप-गुण) ऐश्वर्य से पूरित सीताजी खड़ी थीं। उनका रूप देखकर अचेतन वस्तुएँ भी जैसे दूर के गिरि, पास की दीवार, कठोर प्रस्तर और कोमल तृण भी द्रवीभूत हो जाते है। ऐसी स्थिति में खड़े होने की मुद्रा की सुन्दरता वर्णनीय नहीं रही, यानी हमारी वर्णनशक्ति के बाहर की है। ५८७

वॆङ्गळि विऴिक्कॊरु विऴवु मायवर्, कण्कळिऱ् काणवे कळिप्पु नल्हलाऩ्
मङ्गयर्क् किऩियदोर् मरुन्दु मायवळ्, एङ्गणा यहऱ्किऩि यावदाङ् गॊलो 588

मङ्कैयर्क्कु—स्त्रियों के लिए; अवर् कण्कळिऩ् काणवे—उनकी आँखों से देखते ही; कळिप्पु नल्कलाऩ्—परमानन्द देने से; वॆम् कळि विऴिक्कु—प्यारी मत्त आँखों के लिए; ऒरु विऴवुम् आय्—एक 'उत्सव' बनकर; इनियतु—मधुर, ओर् मरुन्तुम्—अनुपम अमृत भी; आयवळ्—जो बनीं वे; इऩि—आगे; ऎङ्कळ् नायकऱ्कु—हमारे नायक के लिए; यावतु आमो—क्या बनेंगी। ५८८

देवी सीता को जब स्त्रियाँ देखती हैं तब वे सहसा मन खो बैठती हैं। उनकी प्यारी आँखों में देवी सीता प्रमोदाधार उत्सव और संजीवनी अमृत लगती हैं। तो हमारे प्रभु श्रीराम को क्या लगनेवाली हैं ? । ५८८

❀ इऴैहळुङ् गुऴैहळु मिऩ्ऩ मुऩ्ऩमे, मऴैपॊरु कण्णिणै मडन्दै मारॊडुम्
पऴहिय वॆऩ्ऩिनुमिप् पावै तोऩ्ऱलाल्, अऴहॆनु मवैयुमो रऴहु पॆऱ्ऱवे 589

कुऴैकळुम्—कुंडल आदि आभरण; इऴैकळुम्—हार आदि आभरण; इऩ्ऩ मऴै पॊरु—ऐसे मेघ सम (शीतल, मधुर); कण् इणै—चक्षुद्वय वाली; मटन्तै मारॊटुम्—रमणियों के साथ; पऴकिय ऎऩ्ऩिनुम्—अभ्यस्त हैं तो भी; इ पावै तोऩ्ऱलाल्—इस प्रतिमा (सम सुघड़) देवी के प्रकट होने से; अऴकु ऎऩुम् अवैयुम—अन्धकार कहलानेवाले वे भी; ओर अऴकु पॆऱ्ऱ—विलक्षण अलंकार (सुन्दरता) पा गये। ५८९

सीताजी की देह पर रहनेवाले कुंडल, हार, आदि आभरणों ने अभूतपूर्व सुन्दरता प्राप्त की है। ये आभरण पहले भी अभ्रशीतल (तापहारिणी) आँखों की स्त्रियों से सम्पर्क पा चुके हैं। तब वे उनका अलंकार बनते थे। सीताजी के जन्म के बाद सीताजी इनकी अलंकार बन गयी हैं। इसलिए उनके सौंदर्य को सुन्दरता मिल गयी। ५८९

❀ ऍण्णरु	नलत्तिना	ळित्तय	निन्ऱुऴि
कण्णॊडु	कण्णिणै	कदुवि	यॊन्ऱैयॊन्
ऱुण्णवु	निलॆपॆऱा	दुणर्वु	मॊन्ऱिड
अण्णलु	नोक्किना	नवळु	नोक्किनाळ् 590

ऍण् अरु नलत्तिनाळ्–अकल्पनीय (रूप गुण-) सौष्ठव वाली; इत्तैयळ् निन्ऱुऴि–इस प्रकार खड़ी रहीं, उस समय; कण्णॊटु कण् इणै–चक्षुद्वय के साथ चक्षुद्वय; ऑन्ऱै ऑन्ऱु कतुवि–एक दूसरे का स्पर्श कर; उण्ण–अंगीभूत करने (पीने) लगे, तो; उणर्वुम्–मन की सुधें भी; निलै पॆऱावु–(अपने-अपने स्थान पर) रह न पाकर; ऑन्ऱिट–मिल गये उस स्थिति मे; अण्णलुम्–प्रभु ने भी; नोक्किनान्–दृष्टि डाली; अवळुम् नोक्किनाळ्–उन्होंने (सीताजी ने) भी देखा। ५९०

अचिंत्य रूप-गुण-समृद्ध सीतादेवी खड़ी थी। तब श्रीराम ने उन पर दृष्टि गड़ायी। सीताजी ने भी उनको देखा, तब आँखों के दो जोड़े एक दूसरे को पकड़ कर निगलने (अंगीभूत करने) लगे और (श्रीराम और सीता) दोनों की भावनाएँ (सुधियाँ) आपस में मिलकर एक हो गयीं। उनमें दृष्टि-स्पर्श और मन-संगम दोनों एक साथ हो गये। ५९०

नोक्किय नोक्कॆनु नुदिकॊळ् वेलिणै, आक्किय मदुहयान् ऱोळि लाळ्न्दन
वीक्किय कऴैकऴल् वीरन् शॆङ्गणुन्, दाक्कणङ् गनैयवळ् तनत्तिऱ् ऱैत्तवे 591

नोक्किय नोक्कु ऍन्नुम्–देखनेवाली आँखें रूपी; नुति कॊळ्–नुकीले; वेल् इणै–भाले का जोड़ा; आक्किय मतुकैयान्–अति बलशाली (श्रीराम) के; तोळिल्–भुजाओं में; आळ्न्तन–गहरे पैठे; वीक्किय–बद्ध; कऴै कऴल् वीरन्–स्वरित पायल-धारी वीर की; चॆम् कण्णुम्–लाल (-कमल सी) आँखें भी; ताक्कु अणङ्कु अनैयवळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी (सम) सीताजी के; तनत्तिल्–उरोजों में; तैत्त–जा लगीं। ५९१

सीताजी ने दृष्टि श्रीराम की आँखों से हटाकर उनकी बलशाली भुजाओं पर बर्छियों के समान गाड़ी। श्रीरामजी की दृष्टि सीतादेवी के उरोजो पर पड़ी। कवि सीताजी की दोनों आँखों को दो बर्छियाँ कहते है, क्योंकि श्रीराम की भुजाएँ सुदृढ़ थीं। सीताजी के, जो श्रीलक्ष्मी की अवतार थी, उरोज मृदुल थे इसलिए श्रीराम की आँखें कमल-दल के समान थी। और भी, श्रीराम की भुजाओं पर सीताजी की दृष्टि चुभी या गड़ी। इधर श्रीराम की आँखें सीताजी के उरोजों पर लगीं। कितना सरस वर्णन है! और कैसा अर्थपूर्ण! । ५९१

❀ परुहिय	नोक्कॆनुम्	बाशत्	ताऱ्पिणित्
तॊरुवरै	यॊरुवर्त	मुळ्ळ	मीर्त्तलाल्
वरिशिलै	यण्णलुम्	वाट्क	णङ्गैयुम्
इरुवरु	माऱिप्पुक्	किदय	मॆय्दिनार् 592

परुकिय नोक्कु–(रूप-सुधा को) पीनेवाली दृष्टि; ॲनुम् पाचत्तताल्–रूपी पाश से; पिणित्तु–बाँधकर; ऑरुवर् तम् उळ्ळम्–एक का मन; ऑरुवरै–दूसरे को; ईर्त्तलाल्–खींचने से; वरि चिलै अण्णलुम्–बन्धनयुक्त धनुष के धारक प्रभु; वाळ् कण् नङ्कैयुम्–तलवार-सम आँखोंवाली देवी; इरुवरुम्–दोनों; इतयम् मारि पुक्कु–मन बदलकर प्रवेश कर; ॲय्तिनार–बस गये। ५६२

आपस का देखना क्या था मानों उनकी दृष्टियाँ पाश के समान थीं। श्रीराम की दृष्टि ने सीता को बाँधकर खींचा और सीताजी की दृष्टि ने श्रीराम को। वे अब एक दूसरे के हृदय में स्थान बदलकर बस गये। यानी श्रीराम के हृदय में तलवार सम आँखोंवाली सीताजी का रूप आ गया और सीताजी के हृदय में श्रीराम का धनुर्धारी रूप। ५९२

❀ मरुङ्गिला नङ्गयुम् वशैयि लैयनुम्
ऑरुङ्गिय विरण्डुडऱ् कुयिरॊन्ऱायिनार्
करुङ्गडर् पळ्ळियिर् कलवि नीङ्गिप्पोय्प्
पिरिन्दवर् कूडिनाऱ् पेशल् वेण्डुमो 593

मरुङ्कु इला नङ्कैयुम्–कटि-हीन (क्षीण-कटि) देवी; वचै इल् ऐयन्–अनिन्द्य प्रभु; इरण्टु उटऱ्कु–दो शरीरों के लिए; ऑरुङ्किय–सम्मिलित; उयिर् ऑन्ऱु–एक प्राण; आयिनार्–बन गये; करु कटल् पळ्ळियिल्–विशाल क्षीरसागर-शय्या से; कलवि–संग; नीङ्कि पोय्–अलग हो, जाकर; पिरिन्तवर्–जो अलग हुए; कूटिनाल्–(वे) मिलें तो; पेचल् वेण्टुमो–वर्णन करना भी चाहिए क्या। ५६३

अब दोनों एक-प्राण हो गये। दोनों एक-एक अभाव के कारण मनोरम बने हैं। श्रीराम में अपयश का अभाव था, तो सीता में कटि की क्षीणता थी। ये दोनों अनपायी (नित्य) दम्पति है जो क्षीरसागर में एक साथ हैं, वे ही अलग-अलग जाकर जन्मे थे। अब वे फिर मिल रहे हैं। तब कहने को क्या है? (इस पद्य में क्षीरसागर का 'करु' विशेषण दिया गया है। तमिऴ मे करु का अर्थ विशाल भी है, काला या नीला भी। क्षीरसागर मेघ-श्याम विष्णु के रंग के प्रतिफल में नीला दिखता है।) ५९३

❀ अन्दमि नोक्किमै यणैहि लामैयाल्, पैन्दॊडि योवियप् पावै पोन्ऱनळ्
शिन्दैयु निऱैयुमॆय्न् नलनुम् पिन्ऱॆल, मैन्दनु मुनियॊडु मऱैयप् पोयिनान् 594

पैन्तॊटि–चोखे स्वर्ण के आभरण धारण करनेवाली; अन्तम् इल् नोक्कु–अनन्त लौट न आनेवाली दृष्टि के कारण; इमै अणैकिलामैयाल्–पलकें नहीं झपकीं, इसलिए; ओवियम् पावै पोन्ऱनळ्–चित्र-लिखित सुन्दरी के समान हो गयीं; चिन्तैयुम्–मन; निऱैयुम्–और संयम; मॆय् नलनुम्–शरीर की दृढ़ता; पिन् चॆल–साथ-साथ पीछे आने देते हुए; मैन्तनुम्–कुमार भी; मुनियॊटु–मुनि (विश्वामित्र) के साथ; मऱैय–अदृश्य; पोयिनान्–चले गये। ५६४

सीताजी की कामना भी अपूर्ण रह गयी। वे आँखें फाड़े, बिना

पलक गिराये देखती रही। तब वे चित्र में लिखित बाला के समान लगीं। श्रीराम विश्वामित्र के साथ चले गये और अदृश्य भी हो गये। उनके पीछे-पीछे सीताजी का मन और संयम भी चले गये। श्रीराम इनको भी लेकर अदृश्य हो गये —यह कहना भी ठीक है। ५९४

❀ पिऱैयॆन्नु नुदलवळ् पॆण्मै यॆन्पडुम्, नऱैकम ऴलङ्गला नयऩ कोशरम्
मऱैदुलु मनमॆनु मत्त यानैयिन्, निऱैयॆनु मङ्गुश निमिर्न्दु पोयदे 595

नऱै कमऴ् अलङ्कलान्-सुवासपूर्ण मालाधारी; नयऩ कोचरम् मऱैतलुम्—नयन-गोचर दूर से बाहर जाने पर; मतम् ऎनुम् मतृत यानैयिन्-मनरूपी मत्त हाथी का; निऱै ऎनुम् अङ्कुचम्-संयम रूपी अंकुश; निमिर्न्तु पोयतु-सीधा हो गया; पिऱै ऎतुम् नुतलवळ्-चन्द्रकला-सम ललाटवाली के; पॆण्मै-स्त्रीत्व (क्रीड़ा आदि गुण); ऎन् पटुम्-क्या (किस काम का) होगा। ५९५

संयम का धैर्य ही चला गया तो स्त्री-सुलभ लज्जा आदि गुण किस काम का ? ज्योंही स्वरित पायलधारी श्रीराम नयन-पथ से अदृश्य हो गये त्योंही सीता के मनरूपी मत्तगज का संयमरूपी अंकुश सीधा होकर वेकार हो गया। वे बेहद विह्वल हो गयीं। ५९५

मालुऱ वरुदलु मनमु मॆय्युनुदन्, नूलुऱु मरुङ्गुल्पो नुडङ्गु वाणॆडुङ्
गालुऱु कण्वऴिप् पुहुन्त कामनोय्, पालुऱु पिरैयॆनप् परन्द दॆङ्गुमे 596

माल् उऱ वरुतलुम्—काम-मोह के बढ़ते ही; मतमुम्-मन और; मॆय्युम्-शरीर; तन् नूल् उऱु मरुङ्कुल् पोल्-अपनी सूत्र-क्षीण कटि के समान; नुटङ्कुवाळ्-मुरझानेवाली (सीताजी) की; काल् उऱु नॆटु कण् वऴि—मार्ग बनी दीर्घ आँखों से होकर; काम नोय्—इच्छा-रोग; पाल् उऱु पिरै ऎन—दूध में पड़े मोर की बूंद (जामन) के समान; ऎङ्कुम् परन्ततु-(शरीर में) सर्वत्र फैल गया। ५९६

काम-मोह बढ़ता गया। इसलिए सीताजी का शरीर और मन उनकी कटि के समान बलहीन हो गये। उनकी आँखों के द्वारा अन्दर आया काम-रोग, दही में पड़े (जामन) खटाई के दही की बूंद का सा काम कर गया। सारे शरीर में वह रोग व्याप्त हो गया। ५९६

नोमुऱु नोय्निलै नुवल हिऱ्ऱिलळ्, ऊमरिऩ् मनत्तिडै युन्नि विम्मुवाळ्
कामनु मॊरुशरङ् गरुत्ति नॆय्दनन्, वेमॆरि यदनिडै विऱहिट् टॆन्नवे 597

नोम्—पीड़ित हैं; उऱु नोय् निलै—पीड़क रोग की स्थिति; नुवलकिऱ्ऱिलळ्—नहीं कहतीं; ऊमरिन्—गूँगों के समान; मनतुतु इटै—मन में ही; उन्नि—सोचकर; विम्मुवाळ्—तरसतीं; कामनुम्—मन्मथ भी; वेम् ऎरि अतन् इटै—जलनेवाली अग्नि में; विऱकु इट्टटु ऎन्न—इंधन दिया, ऐसा; ऒरु चरम्—एक (कमल-) शर को; करुत्तिन्—उनके अन्तःकरण में; ऎय्ततन्—चलाया। ५९७

सीताजी काम-वेदना से पीड़ित रहीं, पर उन्होंने किसी से उसकी चर्चा नहीं की। गूँगों के समान मन मे ही महसूस करती घुलने लगीं। तब

कामदेव ने भी, जलती आग में ईंधन डालने के समान उनके स्तनों पर एक शर छोड़ा। (यह शर कमल-पुष्प शर था जो कामोत्तेजक बताया जाता है।) ५९७

निऴलिडु कुण्डल मदनि नॅय्दिडा
अऴलिडा मिळिर्न्दिडु मयिल्हॉळ् कण्णिनाळ्
शुऴलिडु कून्दलुन् दुहिलुञ् जोर्दरत्
तऴलिडु वल्लियै पोलच् चाम्बिनाळ् 598

निऴल् इडु–कांति विकीर्ण करनेवाले; कुण्टलम् अततिन् ऍय्तिटा–कुंडलों तक जाकर; अऴल् इटातु मिळिर्न्तिटुम्–बिना आग में डाले ही चमकनेवाले; अयिल् कॉळ्–भाले के समान; कर्णणिनाळ्–आँखों वाली; चुऴल् इटु कून्तलुम्–सिरे पर घुँघराले बने केश और; तुकिलुम्–वस्त्र; चोर्तर–खिसक पड़े; तऴल् इटु–आग में पड़ी; वल्लियै पोल–पुष्पलता के समान; चाम्पिनाळ्–मुरझायीं। ५९८

उनकी आँखें कानों और कानों के उज्ज्वल कुंडलों तक गयी थी; बर्छी-सदृश तीक्ष्ण थीं। उनके घुँघराले केश खुलकर बिखर गये और वस्त्र खिसकने लगे। वे भी अग्नि में डाली गयी पुष्पवल्ली के समान मुरझा गयी। ५९८

तऴङ्गिय कलैहळु निऱैयुञ् जङ्गमुम्, मऴुङ्गिय वुळ्ळमु मऱिवु मामैयुम्
इऴन्दव ळिमैयवर् कडैय यावैयुम्, वऴङ्गिय कडलॅन वऱिय ळायिनाळ् 599

तऴङ्किय कलैकळुम्–मधुर ध्वनि उठानेवाले मेखला आदि आभरण; चङ्कमुम्–शंख-कंकण; निऱैयुम्–संयम का धैर्य; मऴुङ्किय उळ्ळमुम्–निस्तेज मन; अऱिवुम्–बुद्धि; मामैयुम्–और शरीर की छवि; इऴन्तवळ्–खोयी हुयी; इमैयवर् कटैय–देवों के मथने से; यावैयुम् वऴङ्किय–(अपने पास के) सबको दे चुका, उस; कटल् ऍन–(क्षीर-) सागर के समान; वऱियळ् आयिनाळ्–निर्धन (निस्सार) बन गयीं। ५९९

अब उनसे मेखला आदि आभरणों, शंख-कंकण आदि के साथ संयम की दृढ़ता, पहले ही कुंठित पड़ा हुआ मन, बुद्धि, शरीर की कांति सब छूट गये। और वे उस क्षीरसागर के समान निर्धन (निस्सार) हो गयी, जिसको मथकर देवों ने सारी वस्तुएँ निकाल ली थी। ५९९

कलङ्गुळैन् दुहनॅडु नाणुङ् गण्णऱ
नलङ्गुळै तरनहिन् मुहत्ति लेवुण्डु
मलङ्गुळै यॅन्नवुयिर् वरुन्दिच् चोर्दरुम्
पॊलङ्गुळै मयिलैक्कॊण् डरिदिऱ् पोयिनार् 600

कलम् कुऴैन्तु उक–आभरण खिसककर गिरते हैं; नॅटु नाणुम्–गरिमा देनेवाली लज्जा भी; कण् अऱ–हटती जाती है; नलम् कुऴै तर–देह की कांति छूटती जाती है; नकिल् मुकत्तिल्–उरोज-मुखों पर; ए उण्टु–मन्मथशर खाकर; मलङ्कु

उळै अँत्त वरुन्ति–आहत हरिणी के समान वेदना पाकर; उयिर् चोर् तरुम्–प्राण-विकलित हुई; पॉलम् कुळैमयिलै–स्वर्ण कुंडल-धारिणी, मयूर-सम छवि वाली को; अरितिऩ् कॉण्टु पोयिऩार्–सायास अन्दर ले गयी। ६००

सखियों ने देखा कि सीताजी वेहाल हो रही है। आभरण खिसक-कर गिर चुके। लाज छूटती जा रही थी। शरीर की कांति मन्द पड़ गयी थी। वे शराहत हरिणी के समान स्तनों पर मन्मथ के कमल-शर की चोट खाकर प्राणविह्वल हो रही हैं। तव वे स्वर्णकुंडल-धारिणी और मोर सी छटावाली, उनको सायास अन्दर ले गयी। (कुंडल नहीं गिरे थे, क्योंकि वे कानों में गुँथे हुए थे)। ६००

कादॊडुङ् गुळैपॊरु कडैक्क णङ्गैतऩ्
पादमुङ् गरङ्गळु मनैय पल्लवम्
तादॊडुङ् गुळैयॊडु मडुत्त तण्पऩिच्
चीदनुण् डुळिमल रमळिच् चेर्त्तिऩार् 601

कुळै–कुंडलों को; कातॊटुम् पॊरु–कानों से टकरानेवाली; कटै कण्–आँखों की कोर से देखनेवाली; नङ्कै तऩ्–देवी के; पातमुम् करङ्कळुम् अऩैय–चरण और हाथ की समानता करनेवाले; पल्लवम्–पल्लवों को; तातॊटुम् कुळैयॊटुम् अटुत्त–परागों और पुष्प-दलों के सहित; तण्चीतम्–अधिक शीतल; नुण् पऩि तुळि–सूक्ष्म ओस की सी सीकरों से सिंचित; मलर् अमळि–पुष्प-शय्या पर; चेर्त्तिऩार्–लिटाया। ६०१

वे कर्णों और कर्ण-कुंडलों तक जानेवाली अपनी आँखों की कोरों से देख रही थी। उनको सखियों ने पल्लव-शय्या पर लिटा दिया। वह देवी के हाथ और पैरों के ही समान, पल्लव-पुष्प आदि की बनी और अति शीतल हिम-सीकरों से सिंचित शय्या थी। ६०१

नाळऱा नऱुमल रमळि नण्णिनाळ्, पूळैवी पुरैपऩिप् पुयऱ्कुत् तेम्बिय
ताळता मरैमलर् तदैन्द पॊय्हैयुम्, वाळरा नुङ्गिय मदियुम् पोलवे 602

नाळ् अऱा–नवीन; नऱु मलर् अमळि–सुगन्धित पुष्प-शय्या (को); पूळै वी पुरै–सेमर के फूलों के सदृश; पऩि पुयल् कु तेम्पिय–ओस की वर्षा से मुरझाये; ताळ तामरै मलर् ततैन्त–तालों सहित कमल-पुष्पों से संकुलित; पॊय्कैयुम्–तड़ाग और; वाळ् अरा नुङ्किय–भयंकर सर्प (राहु) निगलित; मतियुम् पोल–चन्द्र के समान बनाते हुए; नण्णिऩाळ्–गयीं (शय्या पर बैठीं)। ६०२

जब सीताजी उस शय्या पर बैठी तब वह नवीन और सुवासित फूलों वाली शय्या पाले के कारण कमल के फूलों के झड़ने पर केवल नालों से भरे रहनेवाले सरोवर के समान और राहुग्रस्त चन्द्र के समान हो गयी। पुष्प और पल्लव सीताजी के ताप से मुरझाकर काले हो गये। कुहरा जो फैलता आया वह उड़नेवाले सेमर के फूलों के घने विस्तार के समान था। ६०२

मलैमुहट् टिडत्तुहु मळैक्क णालिपोल्
मुलैमुहट् टुदिर्न्दन नॆडुङ्गण् मुत्तिनम्
शिलैनुदऱ् कडैयुऱच् चॆऱिन्द वेर्वुतन्
उलैमुहप् पुहैनिह रुयिर्प्पिन् मायन्ददे 603

मलै मुकट्टु इटत्तु उकु—पर्वत-शिखर पर गिरनेवाले; मळै कण् आलि पोल्—मेघों की बूँदों के समान; मुलै मुकट्टु—उरोज-सिरों पर; नॆट्टु कण् मुत्तु इनम्—आयत आँखों के मोती-समान अश्रुकण; उतिर्न्तन—गिरे; चिलै नुतल् कटै—धनुष समान ललाट पर; उऱ चॆऱिन्त वेर्व—उठे संकुलित स्वेदकण; उलै मुकम् पुकै निकर्—(लुहार की) भट्ठी से निकलनेवाले धुएँ के समान; तन् उयिर्प्पिन्—उनके दीर्घ निश्वास से; मायन्ततु—सूख गये। ६०३

वे आँखों से मोती के समान आँसू गिरा रही थीं। वे आँसू की बूँदें स्तनों के अग्रभागों पर गिरी, जैसे मेघों से जल-कण पर्वत-शिखरों पर गिरते हैं। चाप के समान ललाट पर स्वेदकण प्रकट होते थे पर उनके तप्त निश्वास में वे सूख भी जाते थे। ६०३

कम्बमिल् कॊडुमनक् कान वेडन्कै
अम्बॊडु शोर्वदोर् मयिलु मन्नवळ्
वॆम्बुरु मनत्तनल् वॆदुप्प मॆन्मलर्क्
कॊम्बॆन कुळैन्दु शायन्दनळ् 604

कम्पमिल्—अकंपित (दयाहीन); कॊटुमनम्—क्रूर-मन के; कानम् वेटन् कै अम्पॊटु—जंगली व्याध के हाथ के शर से; चोर्वतु ओर् मयिलुम् अन्नतवळ्—लटनेवाले मोर के भी समान (विकल) हुई वे; वॆम्पु उरु मनत्तु—झुलसनेवाले मन की; अनल् वॆतुप्प—आग के जलाने से; मॆल् मलर् कॊम्पु अॆन—कोमल पुष्पलता के समान; कुळैन्तु—मुरझाकर; अमळियिल्—शय्या पर; चायन्तनळ्—गिरीं। ६०४

वे उस मोर के समान वेदना का अनुभव कर रही थीं, जिस पर निर्दयी क्रूर मनवाले वन्य व्याध का घातक शर लगा। अन्तर की कामाग्नि से झुलस कर वे अग्नितप्त पुष्पलता के समान शय्या पर लेटीं। ६०४

शॊरिन्दन नऱुमलर् शुरुक्कॊण् डेऱिन
पॊरिन्दन कलवैहळ् पॊरियिर् चिन्दिन
ऎरिन्दवॆङ् गनल्शुड विळैयिर् कोत्तनूल्
परिन्दन करिन्दन पल्लव वङ्गळे 605

ऎरिन्त वॆम् कनल् चुट—जलानेवाली भयंकर कामाग्नि के ताप से; चॊरिन्तन नऱु कलर्—फैले रहे पुष्प; चुरु कॊण्टु ऎऱिन—काँटे बनकर चुभे; पल्लवङ्कळ्—पल्लव; करिन्तन—(सूखकर) काले हो गये; कलवैकळ्—(चन्दनादि के) लेप; पॊरिन्तन—भनकर; पॊरियिन्—लाजे के समान; चिन्तिन—झड़ गये; इळैयिल् कोत्त नूल्—हारों में लगे सूत्र; परिन्तन—टूट गये। ६०५

शय्या के फूल तप्त होकर काँटे बने और उनके अंगों में चुभे। पल्लव झुलसकर काले पड़ गये। चन्दन-लेप भुन गया और उनके कण लाजों के समान चू गये। आभरणों को पोहनेवाला सूत्र भी जलकर टूट गया। ६०५

तादियर् शॅविलियर् तायर् तव्वयर्, मादुय रुळनुदुळन् दळुङ्गि माळ्हिनार्
यादुकॉ लिदुवॅन वॅण्ण ऱेऱ्ऱलर्, पोदिनो डयिनिनीर् शुळऱ्ऱिप् पोक्किनार् 606

तातियर्–चेटियाँ; चॅविलियर्–दाइयाँ; तायर्–माताएँ; तव्वैयर्–बड़ी बहनों के स्थान में रहनेवालियाँ; मातुयर् उळनुतु उळनुतु–बड़ी ही वेदना में कुढ़-कुढ़कर; अळुङ्कि–डर कर; माळ्किन्नार्–व्याकुल होती हुई; इतु यातु कोल्–यह भी क्या है; अॅन्न–यह; अॅण्णल् तेऱ्ऱलर्–समझ नहीं पायीं; पोतिनोट–पुष्पों के साथ; अयिनि नीर्–नीराजन; चुळऱ्ऱि–घुमाकर; पोक्किनार्–नजर उतारी। ६०६

देवी की यह दशा देखकर, चेरियाँ, दाइयाँ, माताएँ और बड़ी दीदियाँ सब डर गयीं। वे दुखी हो संकट उठाने लगीं। कारण न जान पाकर उन्होंने नीराजन घमाकर दृष्टि-दोष उतारा। (लड़के लड़कियों की पाँच तरह की, जैसे स्नान कराना, खिलाना, सुलाना, बोली सिखाना, रक्षा करना आदि की, परिचर्या करनेवालियों को दाइयाँ कहा जाता है। उनकी पुत्रियों को जो उम्र में बड़ी हैं, तव्वयर्—दीदियाँ कहा जाता है।) ६०६

अरुहुनिन्ऱु ऱशैक्किन्ऱ वाल वट्टक्काल्
अॅरियिनै मिहुत्तिड विळैयु मालैयुम्
करिहुव तीहुव कन्नलुव काट्टलाल्
उरुहुपॉन् पावैयु मॉत्तुत् तोन्ऱिनाळ् 607

अरुकु निन्ऱु–पास खड़ी होकर; अचैक्किन्ऱ–(सखियों द्वारा) डुलाये जानेवाले; आलवट्टम् काल्–पंखों की हवा; अॅरियिनै मिकुत्तिट–जलन को बढ़ाती गयी, तब; इळैयुम्–आभरण; मालैयुम्–हार; करिकुव–झलसते हैं; तीकुव–तपते हैं; कन्नलुव–अधिक तपते हैं; काट्टलाल्–इस प्रकार दिखाई देते हैं, अतः; उरुक–पिघलनेवाली; पॉन् पावै ऑत्तुम्—स्वर्ण-प्रतिमा के समान भी; तोन्ऱिताळ्–दिखाई दीं। ६०७

पास खड़ी होकर चेरियाँ पंखे झलती है। उससे जो हवा आती है वह देह-ताप को अधिक करा देती है। तव देवी के शरीर के आभरण तपते, लाल बनते और जलते से दीखते है। उस स्थिति में स्वय देवी स्वर्ण-प्रतिमा के समान लगती हैं, जिसे आग में डालकर पिघलाया जाता हो। ६०७

अल्लिनै वहुत्तदो रलङ्गर् काडॅनुम्
वल्लॅळु वल्लवेन् मरह दप्पॅरुङ्
कल्लॅनु मिरुपुयङ् कमलङ् गण्णॅनुम्
विल्लॉडु मिळिन्ददोर् मेह मॅन्नुमाल् 608

अल्लितै वकुत्तु–अन्धकार से निर्मित; अलङ्कल्–मालाधारी; ओर् काट्टु ऎन्नुम्–एक बन, कहती; इरु पुयम्–दो कन्धे; वल् ऎ‌ऴु–सुदृढ़ लौह-स्तम्भ; अल्लवेल्–नहीं तो; मरकतम् पॆरु कल्–मरकत का पर्वत; ऎन्नुम्–कहती; कण्–आँखें; कमलम्–कमल; ऎन्नुम्–कहती; विल्लोटुम् इऴिन्ततु ओर् मेकम्–(इन्द्र-) धनुष के साथ उतर आया एक मेघ; ऎन्नुम्–कहती। ६०८

सीताजी आप ही आप बोल रही हैं। कहती है कि (श्रीराम का केश) अंधकार-निर्मित और मालालंकृत वन है; कंधे लौहस्तंभ हैं या मरकत-गिरियाँ; आँखें कमल है। उनका रूप इन्द्रधनुष के साथ उतरकर आया हुआ मेघ है। ६०८

नॆरुक्कियुट् पुहुन्दरु निऱैयुम् पॆण्मयुम्
उरुक्कियॆन् नुयिरॊडु मुण्डु पोयिनान्
पॊरुप्पुऱऴ् तोऴ्पुणर् पुण्णि यत्तदु
करुप्पुविल् लन्ऱवन् काम नल्लने 609

उळ् नॆरुक्कि पुकुन्तु–मेरे अन्दर बलात् प्रविष्ट होकर; अरु निऱैयुम्–स्थिर संयम-धैर्य को; पॆण्मैयुम्–और स्त्रीत्व को; उरुक्कि–द्रवीभूत कर; ऎन् उयिरोटुम्–मेरे प्राणों के साथ; उण्टु पोयिनान्–जो खा (हर ले) गये (उनके); पॊरुप्पु उऱऴ् तोळ्–पर्वत से टकरानेवाले कन्धों से; पुणर् पुण्णियत्ततु–संश्लेष रखने का सुकृतवाला; करुप्पु विल् अन्ऱु–ईख का चाप नहीं; अवन् कामन् अल्लन्–वह कामदेव नहीं है। ६०९

वे आगे कहती हैं। उनके, जो मेरे अंदर वलात् घुसकर, मेरा संयम, स्त्री-गुण आदि को गलाकर मेरे प्राणों के साथ पीकर (हर कर) चले गये, कंधों पर लगा रहने का सुकृत वाला धनुष ईख का नहीं लगा। इसलिए वे कामदेव नहीं थे। ६०९

उरैशॆयिऱ् ऱेवर्त मुलहु ळानल्लन्; विरैशॆऱि तामरै यिमैक्कुम् मॆय्म्मयाल्
वरिशिलैत् तडक्कयन् मार्बि नूलिनन्, अरशिळङ् गुमरने यादल् वॆण्डुमाल् 610

उरै चॆयिल्–कहूँ तो; विरै चॆऱि तामरै–सुवास-पूर्ण कमल (-सदृश आँखें); इमैक्कुम् तन्मैयाल्–पलकें मारने के व्यवहार से; तेवर् तम् उलकु उळान्–देवलोक में रहनेवाले; अलन्–नहीं; वरि चिलै तट कैयन्–बन्धन-युक्त धनुर्धर विशाल-हस्त; मारपिल् नलितन्–वक्ष में यज्ञोपवीत धारण करनेवाले (इसलिए); अरच इळङ्कुमरने आतल् वेण्टुम्–तरुण राजकुमार ही है। ६१०

फिर कौन हैं? सोचती हूँ तो उनकी सुवासित कमल-सम आँखों की पलकें गिरती-उठती थीं। इसलिए वे देवलोकवासी नहीं हैं। वे अपने विशाल हाथ में धनुष रखते थे और वक्ष पर यज्ञोपवीत धारण किए हुए थे। इसलिए वे तरुण राजकुमार ही हैं। ६१०

पंण्वळि नलनोंडुम् पिरन्द नाणोंडुम्
ऍण्वळि युणर्वुना नॅङ्गुङ् गाण्गिलेन्
मण्वळि नडन्दडि वरुन्दप् पोऩवऩ्
कण्वळि नुळैयुमोर् कळ्वऩे कॉलाम् 611

पॅण् वळि नलनोंटुम्–स्त्रियोचित गरिमा के साथ; पिऱन्त नाणोंटुम्–सहज लज्जा के भी साथ; ऍण् वळि उणर्वुम्–विचारक विवेक; ऍङ्कुम् नाऩ् काणकिलेऩ्–कहीं नहीं देखती; अटि वरुन्त–चरणों को दुख देते हुए; मण् वळि–धरती पर; नटन्तु पोऩवऩ्–चलते जो गये वे; कण् वळि नुळैयुम्–आँखों के मार्ग से घुसनेवाले; ओर् कळ्वऩ् आम् कॉल्–एक चोर हैं क्या ? । ६११

और भी; मेरी सहज सुन्दरता, लज्जा, विवेक सब मुझे छोड़कर चले गये। कहीं ढूँढे नही मिलते। इसलिए चरणों को दुख देते हुए भूमि पर जो पैदल चलते गए वे अवश्य कोई विचित्र चोर होंगे जो देखनेवालों की आँखों के मार्ग से उनके हृदय में प्रवेश कर जाते हैं। (इधर तुलसीदास की सीता ने अपने "लोचन मगु रामहिं उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी"। अब कहिये दो में से कौन चोर है ?)। ६११

❀ इन्दिर नीलमॊत् तिरुण्ड कुऩ्जियुम्, चन्दिर वदनमुन् दाळ्न्द कैहळुम्
सुन्दर मणिवरैत् तोळु मेयल, मुन्दियॆऩ् ऩुयिरैयम् मुरुव लुण्डदे 612

इन्तिर नीलम् ऑत्तु–इन्द्रनील के समान; इरुण्ट कुऩ्चियुम्–काले केश और; चन्तिर वतऩमुम्–चन्द्र-वदन; ताळ्न्त कैकळुम्–(आजानु) लंबित हाथ; चुन्तर–सुन्दर; मणि वरै–नील-मणि पर्वत सम; तोळमे अल्ल–कन्धे, ये ही नहीं; ऍऩ् उयिरै–मेरे प्राणों को; मुन्ति–सबसे पहले; अ मुऱुवल्–उस मन्दहास ने; उण्टतु–पी लिया। ६१२

उनके अंगों का स्मरण करती हुई वे आगे कहती हैं कि इन्द्र-नील (के समान) केश, चंद्र-वदन, सुन्दर नील-मणि पर्वत-सम कंधे—केवल इन्हींने नहीं, इनके पहले उनके मंद-हास ने मेरी सुध हर ली। ६१२

❀ पडर्न्दॊळि परन्दुयिर् परुहु माहमुम्, तडन्दरु तामरैत् ताळु मेयल
कटन्दरु मामदक् कळिनल् यानैपोल्, नडन्ददु किडन्ददॆऩ् ऩुळ्ळ नण्णिये 613

पटर्न्त–विस्तृत हो; ऑळि परन्तु–तेजोमय; उयिर् परुकुम्–प्राण पीनेवाला; आकमुम्–वक्षस्थल; तटम् तरु–भव्य; तामरै ताळुमे–कमल-चरण ही; अल–नहीं (बल्कि); कटम् तरु मा मतम्–गण्ड से वहनेवाला मदजल; कळि–मत्तता (इनसे युक्त); नल् यानै पोल्–अच्छे हाथी के समान; नटन्ततु–चलने का दृश्य; ऍऩ् उळ्ळम् नण्णि–मेरे मन में पैठकर; किटन्ततु–पड़ा रहता है। ६१३

मेरे मन मे उनका विशाल तेजोमय और चित्तहारी वक्षस्थल, और गरिमामय चरण-कमल, इनकी स्मृति बनी तो रहती है। पर मदनीर

बहाने वाले मत्त गज की सी जो उनकी चाल रही वह अधिक गहरे रूप से अमिट बनी रहती है। ६१३

पिऱन्दुडै	नलनिऱै	पिणित्त	वॆन्दिरम्
कऱङ्गुपु	तिरियुमॆन्	कन्नि	मामदिल्
ऒऱिन्दवक्	कुमरनै	यिन्नुङ्	गण्णिऱ्कण्
डऱिन्दुयि	रिऴक्ककवु	माहु	मेकॊलाम् 614

पिऱन्तु उटै–मेरे सहजात; नलम् पिणित्त(स्त्रियोचित) गुणों की रखवाली करनेवाला; निऱै ऎन्तिरम्—संयम-धैर्यरूपी यन्त्र; कऱङ्कुपु तिरि–(जिसमें) घूमता रहता है; ऎन् कन्नि मा मतिल्–उस मेरे, कन्यात्वरूपी प्राचीर को; ऒऱिन्त–तोड़नेवाले; अ कुमरनै–उन तरुण कुमार को; इन्नुम्–और एक बार; कण्णिन् कण्टु–आँखों से देखकर; अऱिन्तु–परिचय पाकर; उयिर इऴक्क–(बाद) प्राण खोना; आकुमे–प्राप्त होगा क्या। ६१४

मेरा कन्यात्व प्राचीर था, जिसमें मेरा सहज संयमरूपी यंत्र (चक्रायुध) प्रबल रूप से घूमता था। पर इस अभेद्य प्राचीर को भी उन कुमार ने भेद दिया। कितना चाहती हूँ कि उनको फिर एक बार देख लूँ और उनकी सुन्दरता का मैं अधिक परिचय प्राप्त करूँ। मरना निश्चित सा लगता है। उनको देखने के बाद मर जाऊँ—ऐसा भाग्य होगा क्या ?। ६१४

ऎन्ऱिवै यन्नैयन वियम्बुम् वन्दॆदिर्, निन्ऱन न्निवणॆनुम् नीङ्गि नानॆनुम्
कन्ऱिय मनत्तुरु काम वेट्कयाल्, ऒन्ऱल पलनिनैन् दुणङ्गु कालये 615

ऎन्ऱ–ऐसे; इवै अन्नैयन–और इनके समान; इयम्पुम्–(आगे भी) कहती हैं; इवण् वन्तु ऎतिर निन्ऱनन्–यहाँ आकर सामने खड़े रहते हैं; ऎनुम्–कहतीं; नीङ्कितान्–हट गये; ऎनुम्–कहतीं; कन्ऱिय मनत्तु–उत्तप्त मन में; उरु कामम् वेट्कैयाल्–बढनेवाली कामेच्छा से; ऒन्ऱु अल–एक नहीं; पल निनैन्तु–अनेक (तरह के विचार) सोचकर; उणङ्कु कालै–धुलते समय। ६१५

इनके अतिरिक्त भी कहने लगी— इधर देखो वे मेरे सामने आकर खड़े हैं। बाद कहा कि ये तो हट गये। इस तरह मिलन की विफल-लालसा से उत्तप्त मन में कामेच्छा के बढ़ने के कारण वे विविध बातें सोचती और कहती हुई मुरझाने लगीं। तब, । ६१५

अन्नमॆन्	नडैयवट्	कमैन्द	कामत्ती
तन्नैयुञ्	जुडुवदु	तरिक्कि	लानॆन
नन्नॆडुङ्	गरङ्गलै	नडुक्कि	योडिप्पोय्
मुन्नैवॆङ्	गदिरवन्	कडलिन्	मूऴ्हिनान् 616

मुन्नै वॆम् कतिरवन्–प्राचीन और गरम किरणमाली; अन्नम् मॆल् नटैयवट्कु— हंस-मृदु-गमनी को; अमैन्तु–हुई; कामम् ती–कामाग्नि (का); तन्नैयुम्–अपने को भी;

चुट्वतु–दाहना; तरिककिलान् अँत–सह नहीं पाते, ऐसा; नल् नॅटु करङ्कळै–उत्तम लम्बे कर रूपी किरणों को; नटुक्कि–(भय के कारण) कँपाते (से) हुए; ओटि पोय–भागते जाकर; कटलिल् मूळ्किनान्–समुद्र में डूब गये। ६१६

सूर्य डूब गये। वे शायद इस डर से डूब गये कि हंस-गमनी सीता देवी की कामाग्नि हमको भी जला देगी ! वे स्वयं गरम किरणों वाले थे। तो भी डर से काँप गये। समुद्र में डूबते समय उनकी किरणें लहरों के कारण काँपती सी लगती थी। ६१६

विरिमलर्त् तॅन्ड्रलाम् वीशु पाशमुम्
ॲरिनिड्रच् चॅक्करु मिरुळुङ् गाट्टलाल्
अरियवट् कनड्रु मन्दि मालयाम्
करुनिड्रच् चॅम्मयिर् कालन् ड्रोन्रिनान् 617

विरि मलर् तॅन्ड्रल् आम्–सुविकसित-फूलों की सुगन्ध से भरा मलयपवन-रूपी; वीचु पाचमुम्–(किसी पर) फेंककर बद्ध करनेवाला पाश; अरि निड्रम्–आग के रंग का; चॅक्करुम्–केश; इरुळुम्–अन्धकार (शरीर); काट्टलाल्–(इनको) दिखाने के साथ; अरियवट्कु–अनुपम देवी को; अतल् तरुम्–काम-ताप देनेवाले; अन्ति मालै आम्–सायं-संध्या-रूपी; करु निड्रम्–काले रंग का; चॅम्मयिर्–लाल बालों का; कालन् तोन्ड्रिनान्–यम प्रकट हुआ। ६१७

संध्या आ गई। सायं-सध्या का समय सीता को यम के समान लगता है। फूलों की सुगंधि से भरा मलयपवन उस यम का पाश बना; लाल संध्या-गगन उसका लाल केश बना; अंधकार उसका काला रूप बना। वह यम उत्तम सीता देवी का ताप बढ़ाता हुआ आया। ६१७

मीदड़ै पड़वयाम् परैयुङ् गीळ्विळि, ऑदमॅन् शिलम्बॊडु मुदिरच् चॅक्करुम्
पादह विरुळ्शॅय्कञ् जुहमुम् पड्ड्रलाड्, चादह मॅन्नवुन् दहैत्तम् मालये 618

मीतु अड़ै–ऊपर (आकाश में) बोलनेवाले; पड़वै आम् पड़ैयुम्–पक्षी-रूपी ढोल; कीळ् विळि–नीचे (भूमि पर) शब्द करनेवाले; ओतम् अॅन् चिलम्पॊटुम्–समुद्र-रूपी नूपुर के साथ; उतिरम् चॅक्करुम्–रक्तारुण संध्या (रूपी केश); पातकम्–पीड़क; इरुळ् चॅय् कञ्चुकमुम्–अन्धकार कृत कंचुक; पड्ड्रलाल्–धारण करने से; अ मालै–वह संध्या-समय; चातकम् अॅन्नवुम् तकैत्तु–भूत के समान ही रहा। ६१८

वह समय भूत के समान भी था। आकाश में (उसके ऊपर) पक्षियों का बोलना ढोल का काम दे रहा था। भूमि पर समुद्र-गर्जन नूपुर का काम दे रहा था। लाल साँझ-गगन उसका केश बना। वेदना को उत्तेजित करनेवाला अंधकार काला कंचुक था। ६१८

कयङ्ग ळॅन्नुङ् गन्ड्रोय्न्दु कडिनाण् मलरिन् विडम्बूशि
इयङ्गु तॅन्ड्रन् मन्मदवे ळॅय्द पुण्णि न्ड्रैनुळैय

उयङ्गु मुणर्वु नन्नलमु मुरुहिच् चोर्वा ळुयिरुण्ण
मयङ्गु मालै वरन्नोक्कि यिदुवो कूट्रिन् वडिवॆन्ड्राळ् 619

कयङ्कळ् ॲन्नुम् कतल् तोय्न्तु—तालाब-रूपी आग में तपकर; नाळ् मलरिन्—नव-विकसित फूलों की; कटि विटम् पूचि—सुगन्धि-रूपी विष मलकर; इयङ्कु तॆन्ड्रल्—संचार करनेवाला मलयपवन; मन्मतवेळ् ॲय्त—मन्मथ-शर-चालन से बने; पुण्णिन् इटै—व्रण में; नुऴैय—(बर्छी के समान) घुसा, तो; उयङ्कुम् उणर्वुम्—मन्द पड़ती सुधि; नल् नलमुम्—और अच्छे स्वस्थ गुण; उरुकि—गलते है और; चोर्वाळ्—मुरझानेवाली देवी; उयिर् उण्ण—प्राण खाने के लिए; मयङ्कुम् मालै—(दिन और रात के) संक्रमण की संध्या वेला का; वरल् नोक्कि—आना देखकर; कूट्रिन् वटिवु—मृत्यु का रूप; इतुवो—क्या यही है; ॲन्ड्राळ्—कहा। ६१९

मलय पवन का शरीर पर लगना उन्हें काम-शर-विद्ध व्रण में बर्छी के घुसने के समान था। वह बर्छी भी तालाबरूपी अग्नि-पुंजों में तप कर, नव विकसित कुसुमों की सुगंधिरूपी विष से लिप्त होकर आई थी। तब सुध-बुध खोती रही देवी ने प्राण खाता सा आनेवाला संध्या-समय देखकर डर से पूछने लगीं कि क्या यही मौत का रूप है? । ६१९

कडलो मऴैयो मुऴुनीलक् कल्लो काया नरुम्बोदो
पडर्पूङ् गुवळै नाण्मलरो नीलोर् पलमो पान्नलो
इडर्शेर् मडवा रुयिरुण्ब देदो वॆन्ड्रु तळर्वाण्मुन्
मडलशेर् तारा निऱम्बोलु मन्दि मालै वन्ददुवे 620

इटर् चेर मटवार्—दुख-पीड़ित स्त्रियों के; उयिर् उण्पतु—प्राण खाना; कटलो—समुद्र है क्या; मऴैयो—मेघ; मुऴु नीलम् कल्लो—पूर्ण नीला पत्थर; नरु काया पोतो—सुवासपूर्ण 'काया' (अतसी ?) पुष्प; पटर् पू—विशाल (और) सुन्दर; कुवळै नाळ् मलरो—कुवलय का नवीन पुष्प; नीलोर्पलमो—नीलोत्पल; पान्नलो—नीला कुमुद; एतो—कौनसी; ॲन्ड्रु—तर्क कर; तळर्वाळ् मुन्—शिथिल पड़नेवाली के सामने; मटल् चेर् तारान्—पुष्प-संकुल मालाधारी के; निऱम् पोलुम्—रंग के समान; अन्ति मालै—सायं-संध्या (का समय); वन्ततु—आया। ६२०

अब वे सायं-संध्या के आगमन से अवगत होती है। उसका अंधकार देखकर वे श्रीराम का और उनके साथ उनके वर्ग की अन्य वस्तुओं का स्मरण करके व्याकुल होती है। बिरह-पीड़ित स्त्रियों का प्राण हरने जो आता है वह क्या है? काला मेघ है? नीला समुद्र है? नीलमणि पर्वत? सुगंधित अतसी पुष्प? कुवलय पुष्प? नीलोत्पल? नीला कुमुद? ऐसे-ऐसे तर्क करती हुई लटनेवाली उनके सामने पुष्प-माला-अलंकृत श्रीराम के वर्ण की संध्या आई। ६२०

सैवा निऱत्तु मीनॆयिड्रु वाडै युयिर्प्पिन् वळर्शॆक्कर्प्
पैवा यन्दिप् पडवरवे यॆन्नै वळैत्तुप् पहैत्तियाल्

अॅय्वा नॉरुवन् कैयोया नुयिरु मॉन्ऱे यिन्ऱियिल्लै
उय्वाळ् वळियिऱ् पळिपूण वॅन्नो डुनक्कुप् पहयुण्डो 621

वान् मै निऱत्तु–आकाश का काला रंग; मीन् अॅयिऱु–नक्षत्र-रूपी दाँत; वाटै उयिर्प्पिन्–उदीची (जाड़े की) हवा श्वास है; वळर् चॅक्कर्–अत्यधिक लालिमा; पै वाय्–विष-भरा मुख, (इनके साथ); अन्ति–सायंकाल रूपी; पटम् अरवे–फणी सर्प; अॅय्वान् ऑरुवन्–(शर) चलानेवाला एक (मन्मथ); कै ओयान्–नहीं रुकता; उयिरुम् ऑन्ऱे–प्राण एक ही; इन्ऱि इल्लै–अब (वह भी) नहीं (रहेगा); अॅन्नै वळैत्तु–आ घेरकर हो; पकैत्ति–शत्रुता दिखाते हो; उय्वाळ् वळियिल्–वचना चाहनेवाली, मेरे मार्ग पर; पळि पूण–बुरा नाम कमाने के लिए; अॅन्नोटु–मेरे साथ; उनक्कु पकै उण्टो–तुम्हारा विरोध है क्या। ६२१

वह उसको संबोधित करती है। हे सध्या! तू सर्प है। आकाश का रंग तेरा काला रंग है। नक्षत्र तेरे दाँत हैं। उदीची हवा तेरी साँस है। लाल संध्या गगन तेरा विष-भरा मुख है। फन फैलाकर आनेवाले भयंकर सर्प! पहले ही मन्मथ मुझ पर शर मार रहा है। वह रुकता नहीं दिखता। मुझे मार कर ही छोड़ेगा। मेरे दो प्राण भी नहीं। एक ही है; वह मन्मथ के शरों से निकल जायगा। इस स्थिति में तू मुझे घेरकर क्यों आता है? क्यों वैर दिखाता है? मैं मन्मथ से वचने के प्रयास में लगी हूँ। ऐसी-मेरे मार्ग में आड़े आकर बुरा नाम कमाता क्यों है? क्या मेरे साथ कोई पूर्व विरोध है? । ६२१

आल मुलहिऱ् परन्तदुवो आळि किळर्न्द दोववर्तम्
नील निऱत्तै यॅल्लारुम् निन्नैक्क वद्दुवाय् निरम्बियदो
काल निऱत्तै यञ्जनत्तिऱ् कलन्दु कुळैत्ता कायत्तिन्
मेलु निलत्तु मॅळुहियदो वॅय्य विरुळाय् विळैन्ददुवे 622

वॅय्य इरुळाय् विळैन्ततु–भयंकर अन्धकार बना यह; आलम् उलकिल् परन्ततुवो–हलाहल संसार में व्याप्त हुआ; आळि किळर्न्ततो–समुद्र उमड़ा; अवर् तम् नील निऱत्तै–उनके (श्रीराम के) नीले रंग को; अॅल्लोरुम् निन्नैक्क–सब के स्मरण करने; अतु आय्–वही (विस्तृत) बनकर; निरम्पियतो–भर गया; कालन् निऱत्तै–यम के रंग को; अञ्चनत्तिल् कलन्तु कुळैत्तु–अंजन से मिलाकर खूब घोलकर; आकायत्तिन् मेलुम्–आकाश पर; निलत्तुम्–और भूमि पर; मॅळुकियतो–लीपा गया। ६२२

यह अंधकार जो भयंकररूप से फैलता आ रहा है वह क्या है? हलाहल है जो व्याप रहा है? समुद्र उमड़ता आया? या सब के मन में श्रीराम का स्मरण स्थिर करने के लिए उनका रंग इस तरह छाता आया? कालदेव का रंग और अंजन को मिलाकर उस मिश्रण से आकाश और भूमि पर लीपा गया है? । ६२२

वॆळिनिऩ् ऱवरो पोय्मरैन्दार् विलक्क वोरुवर् तमैक्काणेऩ्
ऒळियळ् पॆण्णॆऩ् ऱिरङ्गादे यॆल्लि यामत् तिरुळ्डे
ऒळियम् बॆय्यु मऩ्मदऩा रुऩक्किम् माय मुरैत्तारो
अळियॆऩ् ऱॆय्द तीविऩैये यऩ्ऱिऱ् लाहि वन्दायो 623

वॆळि निऩ्ऱवरो–मेरी दृष्टि के सामने खड़े रहे वे तो; पोय् मरैन्तार–जा छिप गये; विलक्क–रोकने (वाले); ऒरुवर् तमै काणेऩ्–किसी को नहीं देखा; ऒळियळ्–दीन; पॆण्–स्त्री; ऎऩ्ऱु–समझकर; इरङ्काते–बिना दया किये; ऎल्लि यामत्तु इरुळ् ऊटे–रात के घने अन्धकार में; ऒळि अम्पु ऎय्युम्–छिपे-छिपे बाण छोड़नेवाले; मऩ्मतऩार्–कामदेव ने; उऩक्कु–तुम्हें; इ मायम्–यह छल-माया; उरैत्तारो–सिखायी क्या; अळियॆऩ्–दयनीय मेरा; चॆय्त तीविऩैये–(पूर्व जन्म-) कृत पाप ही; अऩ्ऱिल् आकि वन्तायो–क्रौंच पक्षी बनकर आये क्या ? । ६२३

क्रौंच पक्षी को संबोधित करके वे कहती है। मेरी दृष्टि के सामने उनका रूप आया। पर वे अब चले गये। उनको रोककर मेरी सहायता करनेवाला कोई नही रहा। मैं दीन हूँ, स्त्री हूँ। इसका भी लिहाज न करके मन्मथ रात के वक्त, छिपे-छिपे मेरे ऊपर अपने बाण छोड़ रहा है। क्या उसी ने यह वंचना-पूर्ण काम तुझे भी सिखा दिया है ? हे क्रौंच खग ! क्या मेरे पूर्व-कृत कर्म का तू रूप है जो अब सताने आया है ? । ६२३

आण्डङ् गऩैया ळिऩ्ऩैयनिनैन् दळुङ्गुम् वेलै यहल्वाऩ्ऩैत्
तीण्ड निमिर्न्द पॆरुङ्गोयिऱ् चीद मणियिऩ् वेदिहैवाय्
नीण्ड शोदि नॆय्विळक्कम् वॆय्य वॆऩ्ऱङ् गवैनीक्कित्
तूण्डल् शॆय्या मणिविळक्किऩ् चुडरा लिरवैप् पहल्शॆय्दार् 624

आण्टु अङ्कऩैयाळ्–वहाँ अंगना (सीताजी); इऩ्ऩैय निऩैन्तु–ऐसा-ऐसा सोचकर; अळुङ्कुम् वेलै–दुख-मग्न रहते समय; अकल्–दूर के; वाऩै तीण्ट निमिर्न्त–आकाश को स्पर्श करते हुए उन्नत बने; पॆरु कोयिल्–बड़े कन्या-सौध में; चीतम् मणियिऩ् वेतिकै वाय्–शीतल (चन्द्रकान्त) मणि की वेदिका पर; नीण्ट चोति नॆय् विळक्कम्–अति प्रकाशमय, घृत के दीप; वॆय्य ऎऩ्ऱु–गरम समझकर; अवै नीक्कि–उनको हटाकर; तूण्टल् चॆय्या–अनुद्दीप्य; मणि विळक्किऩ् चुटराल्–रत्नरूपी दीपों के प्रकाश से; इरवै–रात को; पकल् चॆय्तार्–दिन बनाया (चेटियों ने) । ६२४

वे इस तरह छटपटा रही थीं। उस गगनस्पर्शी सौध में चेरियों को दीप जलाने की बेला आ गई। घृत के दीये गर्मी को और उत्तेजित करेंगे—यह सोचकर उन्होंने उज्ज्वल रत्नों को चन्द्रकांत मणि की वेदिका पर रखा। जिनको उकसाने की आवश्यकता नहीं थी, उन मणियों के प्रकाश से रात, दिन के समान प्रकाश-पूर्ण हो गई। ६२४

पॆरुन्दि नॊडुसाल् वरैनिऱुविप् पिणित्त पाम्बिऩ् मणित्ताम्बाल्
विरिन्द तिवलै पोदिन्दमणि विशुम्बिऩ् मीऩिऩ् मेल्विळङ्ग

अरुन्द वमररू कलक्कियना ळमुद निरैन्द पौऱ्कलशम्
इरुन्द दिडैवन् दॆळुन्ददॆन वॆळुन्द ताळि वॆण्डिङ्गळ् 625

पॆरु तिण नॆट्टुमाल्–आदरणीय और बलवान श्रीत्रिविक्रम; वरै निऱुवि–(मन्दर-) पर्वत गाड़कर; पिणित्त–उस पर लपेटे; पाम्पिन् मणि ताम्पाल्–(वासुकी नाम के) सर्प-रूपी रस्से से; विरिन्त तिवलै–बिखरी बूँदें; पॊतिन्त मणि–भरे रहे रत्न; विचुम्पिल् मीतिन्–आकाश में नक्षत्रों के समान; मेल् विळङ्क–ऊपर शोभायमान रहे, ऐसा; अमररू अरुन्त–देवों के अशन के लिए; कलक्किय नाळ्–मन्थन (जिस दिन) किया उस दिन; इटै इरुन्ततु–सागर में रहा; अमुतम् निरैन्त पॊन् कलचम्–अमृत-भरा स्वर्णकलश; ॲळुन्तु वन्ततु ॲन्न–ऊपर उठ आया, ऐसा; आळि वॆण् तिङ्कळ्–गोल श्वेत चन्द्र; ॲळुन्ततु–उठ आया। ६२५

तब चन्द्र उग आया। वह वर्तुल चन्द्र उस अमृतकलश के समान लगा जो क्षीर-सागर-मध्य से तब उठ आया था जब श्रीत्रिविक्रम (विष्णु) ने मंदरपर्वत को मथानी के रूप मे गड़वाकर, वासुकी को लपेटवाकर सागर को मथवाया था। और तारे तब उठकर बिखरे जल-बिंदुओं और उनके अंदर रही मणियों के समान थे। (श्री विष्णु की बात उठाये बिना ही तमिळ के मूल पद्य का अर्थ किया जा सकता है। तब पर्वत के विशेषण बढ़ेंगे।)। ६२५

वण्डा ययनान् मऱैपाड मलर्न्द शॆन्दा मरैप्पोदु
पण्डा लिलैयिन् मिशैक्किडन्दु पारु नीरुम् पशित्तान्पोल्
उण्डा नुन्दिक् कडल्पूत्त दोदक् कडलुन् दान्वेऱोर्
वॆण्डा मरैयिन् मलर्पूत्त दॊत्त दाळि वॆण्डिङ्गळ् 626

पण्टु–पहले; आल् इलैयिन् मिचै किटन्तु–वट-पत्र-शायी होकर; पचित्तान् पोल्–भूखे के समान; पारुम् नीरुम् उण्टान्–पृथ्वी और समुद्र को जिन्होंने खाया उन श्रीविष्णु के; उन्ति कटल्–नाभी समुद्र (ने); वण्टु आय्–भ्रमर बनकर; अयन् नाल् मऱै पाट–अज (ब्रह्मा) के चतुर्वेद पढ़ते; मलर्न्त–विकसित हुए; चॆन्तामरै पोतु–लाल कमल को; पूत्ततु–(पैदा कर) विकसित कराया; ओतम् कटलुम्–तरंगायित समुद्र (ने) भी; तान्–स्वयं; वेऱु–पृथक; ओर् वॆण् तामरैयिन् मलर्–एक श्वेत कमल का पुष्प; पूत्ततु ऒत्ततु–खिलाया, ऐसा लगा; आळि वॆण् तिङ्कळ्–गोल श्वेत चाँद। ६२६

वह चन्द्र एक श्वेत कमल के समान लगा जिसको लवण-सागर ने पद्मनाभ श्रीविष्णुदेव की नाभीरूपी सागर की स्पर्द्धा में पैदा किया। सृष्टि के आरंभ में वट-पत्र मे योग-निद्रा मे लीन रहे श्रीविष्णु की, जिन्होंने मानों भूखे हों ऐसा भूतल और सागर को खा-पी लिया था (उदरस्थ कर लिया था), नाभी से एक लाल कमल उत्पन्न हुआ। तब ब्रह्माजी भ्रमर के रूप में चतुर्वेद गान कर रहे थे। इसको देखकर लवण-समुद्र ने अपनी ओर से श्वेत-कमल यानी चन्द्र को उत्पन्न किया। (कवि की इस उत्प्रेक्षा और

उपमा-मिश्रित कविता में अनुपम रस घुला है। नाभी को समुद्र का रूपक देना कमल की उत्पत्ति के लिए आवश्यक था। भूतल और समुद्र को उन्होंने उदरस्थ किया, भूख के कारण नहीं पर अपनी लीला के सिलसिले में, इसलिए कहा गया "मानों भूखे" थे। भोजन के लिए ठोस पदार्थ और जल दोनों की आवश्यकता है। अतः भूतल और समुद्र दोनों के भक्षण की बात कही गई। स्पर्द्धा में काम करनेवाला कुछ अंतर भी दिखाना चाहता है। इसलिए नाभी-सागर के लाल कमल के स्थान में लवण-सागर ने श्वेत कमल उत्पन्न किया। ब्रह्मा उधर भ्रमर रहे तो कलंक को इधर भ्रमर माना जा सकता है)। ६२६

पुळ्ळिक् कुऱियिट् टॅऩ्ऩप्पऩ्मीऩ् पूत्त वाऩम् पॊतिकङ्गुल्
नळ्ळिऱ् चॆऱिन्द विरुट्पिळम्बै नक्कि निमिरु निलाक्कऱ्ऱै
किळ्ळैक् किळविक् कॆन्ऩाङ्गॊल् कीऴ्पाऱ् ऱिशयिऩ् मेलवैत्त
वॆळ्ळिक् कुम्बत् तिळङ्गमुहिऩ् पाळै पोऩ्ऱु विरिन्दुळदाल् 627

पुळ्ळि कुऱि इट्टतु ॲॆन्न–बिन्दियों से चित्रित; पल मीऩ् पूत्त–अनेक नक्षत्र-भरे; वानम् पॊति–आकाश को ढँकनेवाली; कङ्कुल नळ्ळिल्–रात्रि-मध्य; इरुळ् पिळम्पै–अन्धकार-पुंज को; नक्कि निमिरुम्–चाटकर उठनेवाली; निला कऱ्ऱै–चाँदनी का समुच्चय; कीऴ् पाल् तिचैयिऩ्–पूर्वदिशा में; मेल् वैत्त–ऊपर रखे हुए; वॆळ्ळि कुम्पत्तिऩ्–चाँदी के कुंभ में; कमुकिऩ् इळम् पाळै पोऩ्ऱु–पूग के नवीन डण्ठल (बाल) के समान; विरिन्तु उळतु–खुला हुआ है; किळ्ळै किळविक्कु–शुक-वयनी को; ॲॆन् आम् कॊल्–क्या होगा (उनका क्या अहित करेगा) ? । ६२७

कवि उस चन्द्र को पूर्ण कलश (मंगल घट) के रूप में देखते हैं जो मंगल-कार्यों के अवसर पर वरुण-पूजा के लिए स्थापित किया जाता है। अर्ध-रात्रि का समय आ गया। अनेक नक्षत्र चित्र-बिंदियों के समान आकाश का शृंगार कर रहे थे। तव अंधकार उसको छिपा रहा था। उस अंधकार को (चाटते हुए) दूर करते हुए चन्द्र गगन में पूर्व दिशा में ऊपर उठता आ रहा था। उसकी चांदनी मंगल-घट पर रखे हुए क्रमुक-डंठल के समान थी जिसकी बालियाँ बिखरी थीं (कवि पूछते हैं कि यह मंगल-घट शुक-वयनी सीता का क्या करेगा ? मतलब है कि उन्हें दुख देगा)। ६२७

❀ वण्ण मालैक् कैपरप्पि युलहै वळैत्त विरुळॆल्लाम्
उण्ण वॆण्णित् तण्मदियत् तुदयत् तॆऴुन्द निलाक्कऱ्ऱै
विण्णु मण्णुन् दिशैयनैत्तुम् विळुङ्गिक् कॊण्ड विरिनन्नोरुप्
पण्णै वॆण्णॆय्च् चडैयन्ऱऩ् पुहऴ्पो लॆङ्गुम् बरन्दुळदाल् 628

वण्णम्–रंगीन; मालै कै परप्पि–संध्यारूपी बल को फैलाकर; उलकै वळैत्त–विश्व को आवृत्त करनेवाले; इरुळ् ॲॆल्लाम्–सब अन्धकार को; उण्ण ॲॆण्णि–लीलने के लिए; तण् मतियत्तु–शीतल चन्द्र का; उतयत्तु ॲॆऴुन्त–उदय से

विकीर्ण; निला कट्रै-प्रकाश; विरि नल् नीर् पण्णै-समृद्ध, उत्तम जल प्लावित खेतों वाले; वॅण्णॅय्-वॅण्णॅय् नल्लूर के; चटैयन् तन्-शडैयप्पन् की; विण्णुम्-स्वर्ग और; मण्णुम्-भूलोक को; तिच अनैत्तुम्-सारी दिशाओं को; विळुङ्कि कॉण्ट-अन्तर्निहित करनेवाली; पुकऴ् पोल्-सुकीर्ति के समान; ॲङ्कुम् परन्तु उळतु-सर्वत्र फैला रहता है। ६२८

चन्द्र की चांदनी सब जगह फैली। वह वॅण्णॅय् नल्लूर के (कवि के अभिभावक) दानी शडैयप्पन की सुकीर्ति के समान फैली। अंधेरा अपनी संध्या वेला का हाथ फैलाकर समस्त विश्व को आच्छादित कर रहा था। उसको निगलने के लिए चन्द्र उदित हुआ। उस शीतल चन्द्र से छिटकनेवाली चांदनी आकाश, भूमि, सभी क्षेत्रों में फैल गई। शडैयप्पन का यश स्वर्ग लोक तक फैला हुआ था, भूलोक की बात कौन कहे! (कवि के कृतज्ञता-प्रदर्शन का यह और एक स्थल है।)। ६२८

नीत्त मदनिन् मुळैत्तॅऴुन्द नॅडुवॅण् डिङ्ग ळॅनुन्दच्चन्
मीत्तन् करङ्ग ळवैपरप्पि विरिन्द निलविन् वॅण्शुदैयाल्
कात्त कण्णन् मणियुन्दिक् कमल नाळत् तिडैप्पण्डु
पूत्त वण्डम् पऴैयदॅनप् पुदुक्कु वानुम् पोन्ऱुळदाल् 629

नीत्तम् अतनिल्-(समुद्र-) जल राशि से; मुळैत्तु ॲऴुन्त-उग आया; वॅण् तिङ्कळ्-श्वेत चन्द्र; नॅटु तच्चन्-कुशल शिल्पी; कात्त कण्णन्-(विश्व-) गोप्ता श्रीविष्णु के; मणि उन्ति कमलम् नाळत्तु इटै-सुन्दर नाभी में उगे कमल के नाल पर; पण्टु पूत्त अण्टम्-प्राचीनकाल में उत्पन्न यह अण्ड; पऴैय ॲन-पुराना (मन्द-प्रभ) हो गया, यह समझकर; तन् करङ्कळ् अवै मी परप्पि-अपने हाथों को उस पर फैलाकर; निलविन् वॅण् चुतैयाल्-चन्द्रिकारूपी श्वेत सुधा (चूने) से; पुतुक्कुवान् पोन्ऱुम्-नया सा; उळतु-लगता है। ६२९

(उस चन्द्र और चांदनी को देखकर कवि निम्नोक्त कल्पना करते हैं—) चन्द्र समुद्र से उठ आया शिल्पी या कारीगर है। विष्णुदेव की सुन्दर नाभी से निकले कमल के नाल में से संलग्न यह विश्व पुराना पड़ गया था। अब यह कारीगर उसको नयी रौनक देने के लिए, अपने हाथों में चन्द्रिका-रूपी सुधा (चूना) लेकर उस पर पुताई कर रहा है। वही चूना चन्द्रिका है। ६२९

विरैशॅय् कमलप् पॅरुम्बोदु विरुम्बिप् पुहुन्द तिरुविनोडुम्
कुरैशॅय् वण्डिन् कुऴामिरियक् कूम्बिच् चाम्बिक् कुविन्दुळदाल्
उरैशॅय् तिहिरि तन्नैयुरुट्टि यॊरुहो लोच्चि युलहाण्ड
अरैश नॊदुङ्गत् तलयॆडुत्त कुरुम्बर् पोन्ऱ वरक्काम्बल् 630

विरै चॅय्-सुगन्धपूर्ण; कमलम् पॅरु पोतु-कमल के उत्तम पुष्प; विरुम्पि पुकुन्त-चाहकर अपने में आयी हुई; तिरुविनोटुम्-लक्ष्मी (श्री) के साथ; कुरै

चॅय् वण्टिन् कुऴाम्–गुंजार करनेवाले भ्रमर कुल; इरिय–छोड़कर चले जायँ, यह स्थिति पैदा करते हुए; कूम्पि–दल-जुटे होकर; चाम्पि–निष्प्रभ होकर; कुविन्तु उळतु–बन्द हुए हैं; अरक्कु आम्पल्–लाल कुमुद; उरै चॅय्–प्रकीर्तित; तिकिरि तत्तै–आज्ञा-चक्र; उरुट्टि–चलाते हुए; ऑरु कोल् ओच्चि–एक (राज-) दण्ड (शासन) धारण करते हुए; उलकु आण्ट अरैचन्–भूतल पालनेवाले राजा के; ऑतुङ्क–अलग हो जाने से; तलै ॲटुत्त–सिर उठानेवाले; कुऱुम्पर् पोन्ऱ–अधीन छोटे राजाओं के समान बने। ६३०

अब कमल बंद हो गये। उन पर रहनेवाली श्री भी अदृश्य हो गई। भ्रमर हट गये। तब कुमुद विकसित हुए। कुमुदों का वैभव के साथ विकास देखकर उन अधीन राजाओ का सिर उठाना याद आता है जो एक छत्र, प्रवल आज्ञाचक्र और शासनदण्ड रखनेवाला चक्रवर्ती (के प्रताप) के हट जाने पर होता है। ६३०

नीङ्गा मायै यवर्तमक्कु निऱमे तोऱ्ऱुप् पुऱमेपोय्
एङ्गा निन्ऱ वॅऱिकडऱ्कु मॅन्नक्कु मिहला यॅय्दिन्नयो
ऑङ्गा निन्ऱ विरुळाय्वन् दुलहै विळुङ्गि मेन्मेलुम्
वीङ्गा निन्ऱ करुनॅरुप्पि निडैये यॅऴुन्द वॅण्णॅरुप्पे 631

ओङ्का निन्ऱ–बहुत घना; इरुळ् आय् वन्तु–अन्धकार बन आकर; उलकै विळुङ्कि–विश्व को लील कर; मेन्मेलुम् वीङ्का निन्ऱ–उत्तरोत्तर बढ़नेवाली; करु नॅरुप्पिन्–काली (अन्धकार-रूपी) आग के; इटैये ॲऴुन्त–बीच में से उठी; वॅळ् नॅरुप्पे–सफ़ेद आग; नीङ्का मायै–अनिवार्य माया (में कुशल); अवर तमक्कु–उनके सामने; निऱमे तोऱ्ऱु–वर्ण के कारण हारकर; पुऱमे पोय्–बाहर जाकर; एङ्का निन्ऱ–तरसनेवाले; ॲॅऱि कटऱ्कुम्–तरंग-संकुल (या गरजनेवाले) समुद्र का; ॲन्नक्कुम्–और मेरा; इकल् आय्–शत्रु होकर; ॲय्तिनैयो–आये क्या?। ६३१

देवी चांद को संबोधित करती है। अंधकार आया, विश्व को लील कर घना होता गया। वह काली आग थी। उसमें से तुम निकले हो—श्वेत अग्नि के समान! और समुद्र निरंतर माया-कार्य करनेवाले श्रीराम से रूप-रंग में हारकर वाहर जा पड़ा है और तरंग-रूपी हाथों से (छाती) पीटकर दहाड़ मार रहा है। उसके और मेरे दोनों के शत्रु वनकर तुम आये हो! (चन्द्र को समुद्र का दुश्मन इसलिए कहा गया कि पूर्णिमा के दिन समुद्र उमंग पर आता है और अधिक गर्जन करने लगता है।)। ६३१

कॉडियै यल्लैनी यारैयुङ् गॉल्हिलाय्, वडुवि लिन्नमु दत्तॉडुम् वन्दन्नै
पिडियिन् मॅन्नडैप् पॅण्णॉडॅन् ऱालॅन्नैच्, चुडुदि योकडऱ् ऱोन्ऱिय तिङ्कळे 632

कटल् तोन्ऱिय–सागरोत्थित; तिङ्कळे–चन्द्र; नी कॉटियै अल्लै–तुम अत्याचारी नहीं हो; यारैयुम् कॉल्किलाय्–किसी को नहीं मारोगे; वटुइल् इन् अमुतत्तॉटुम्–अवगुणहीन मधुर अमृत के साथ; पिटियिन् मॅल् नटै–हथिनी के समान मृदु-चाल वाली;

पॅण्णोटुम्–देवी लक्ष्मी के साथ; वन्ततै–पैदा हुए; ॲन्ऱाल्–तब; ॲत्तै–(दीना) मुझे; चुटुतियो–ताप दोगे (क्यो) ? । ६३२

वह आगे चन्द्र से थोड़ी नरमी से बात करती हैं। सागर से (पहले क्षीरसागर से, अब समुद्र पर से) उदित चांद ! तुम तो क्रूर नहीं हो। किसी को मार नहीं सकते क्योंकि तुम अवगुण-रहित अमृत और हथिनी के समान चालवाली लक्ष्मीदेवी के भाई हो। फिर मुझे सताना तुमको शोभा देता है क्या ? । ६३२

मीदु मॉय्त्तॉळु वॅण्णिल विन्कदिर्, मोदु मत्तिहै मॅन्मुलै मेऱ्पड
ओदि मप्पॅडै वॅङ्गन लुऱ्ऱॅन्नप्, पोदु मॉय्त्तम ळिप्पुरण् डाळरो 633

मीतु–ऊपर; मॉय्त्तॉळु–गाढ़े रूप से उठी; वॅळ् निलविन् कतिर्–श्वेत चन्द्र की किरणें (रूपी); मोतु मत्तिकै–पीटनेवाला हथौड़ा; मॅल् मुलै मेल् पट–कोमल उरोजों पर जब लगा; ओतिमम् पॅटै–हंसिनी; वॅम् कनल् उऱ्ऱतु ॲन–जलानेवाली आग में गिर गयी जैसी; पॉतु मॉय्त्त अमळि–कमल-पुष्प-संकुल शय्या पर; पुरण्टाळ्–तड़फड़ाने लगी। ६३३

उनके मृदुल स्तनों पर चांदनी क्या पड़ी, वह पीटनेवाले हथौड़े की सी चोट करती रही। उससे वे बेचारी जलानेवाली आग में पड़ी हंसिनी के समान तड़फड़ाने लगी। ६३३

❀ नीक्क मिन्ऱि निरन्द निलाक्कदिर्, ताक्क वॅन्दु तळर्न्दु शरिन्दनळ्
शेक्कै याहि मलर्न्दशॅन् दामरैप्, पूक्कळ् पट्टन पूवयुम् पट्टनळ् 634

नीक्कम् इन्ऱि–अविच्छिन्न रूप से; निरन्त–विकीर्ण; निला कतिर्–चन्द्र-किरणें; ताक्क–(निरन्तर) आघात (करती) करने से; वॅन्तु–मुरझाकर; तळर्न्तु–शिथिल होकर; चरिन्ततळ्–नीचे गिरीं; चेक्कै आकि–वासस्थान-भूत; मलर्न्त–विकसित; चॅन्तामरै पूक्कळ्–लाल कमल के फूल; पट्टत–जिस स्थिति को प्राप्त हुए; पूवैयुम् पट्टनळ्–सारिका-सम कोमलांगी (देवी) भी उस स्थिति को प्राप्त हुई। ६३४

वह चांदनी बराबर फैलती हुई उनको ताप देती रही। इसलिए वह शिथिल होकर नीचे गिर गयी। सारिका-सम कोमलांगी, उनकी स्थिति कमल के समान बनी जो पहले उनका आवास बनकर चन्द्र के उदय पर मुरझा गया और अब उनकी शय्या पर रहकर चन्द्रिका द्वारा उत्तेजित विरह-ताप तप्त हुआ। ६३४

❀ वाश मॅन्कल वैक्कळि वारिमेल्, पूशप् पूशप् पुलर्न्दु पुळुङ्गिनाळ्
वीश वीश वॅदुम्बिन मॅन्मुलै, आशै नोय्क्कु मरुन्दुमुण् डाङ्गॉलो 635

वाचम् मॅन् कलवै कळि–सुवासित मृदु चन्दन के लेप को; वारि मेल् पूच पूच–लेकर उन पर लगाते-लगाते; पुलर्न्तु–सूखकर; पुळुङ्किनाळ्–मुरझाई; वीच

वीच—ज्यों-ज्यों (पंखा) झलती हैं; मॆल् मुलै वॆतुम्पिन—कोमल उरोज झुलसे; आचै नोय्क्कु—प्रेम के रोग की; मरुन्तुम् उण्टो—दवा भी है। ६३५

चेरियों ने उन पर सुवासित द्रव्य मिला चंदन का लेप लगाया। पर वह भुन गया और देवी पीड़ित हुई। इधर चेरियाँ पंखा झलतीं, उधर उनके स्तन मुरझाते। काम-रोग के लिए दवा कहाँ बनी थी ? । ६३५

ताय रिऱ्परि शॆडियर् तादुहु, वीय रित्तळिर् मॆल्लणै मेऩियिल्
कायॆ रिक्करि यक्करि यक्कॊणरऩ्ऩ्, दायि रत्ति ऩिरट्टिय डुक्किनार् 636

तातु उकु वी—पराग चूने वाले फूलों की; अरि तळिर्—कोमल पल्लवों की बनी; मॆल् अणै—मृदुल शय्या; मेनियिल् काय् ऍरि—(सीताजी के) शरीर पर की जलानेवाली (विरह की) आग से; करिय करिय—ज्यों-ज्यों झुलसी, (त्यों-त्यों); तायरिऩ्-परि चेटियर्—माता से भी प्यारी चेटियाँ; आयिरत्तिऩ् इरट्टि—सहस्रों के दुगुने (अत्यधिक); कॊणर्न्तु—लाकर; अटुक्किनार्—डालकर नयी (शय्या) बनायी। ६३६

शय्यार्पित पल्लव ज्यों-ज्यों झुलसे त्यों-त्यों माता से भी प्यारी चेरियों ने पुराने पल्लव हटाकर नये-नये पल्लव और फूल डालकर नयी-नयी शय्या बनाई। ६३६

कऩ्ऩि नऩ्मऩै यिऱ्कमऴ् शेक्कयुऴ्, अऩ्ऩ मिऩ्ऩण मायिऩ ळऩ्ऩवऴ्
मिऩ्ऩिऩ् मिऩ्ऩिय मेऩिकण् डाऩॆऩच्, चॊऩ्ऩ वण्णलुक् कुऱ्ऱदु शॊल्लुवाम् 637

नल्ल कऩ्ऩि मऩैयिल्—अच्छे कन्या-महल में; कमऴ् चेक्कैयुऴ्—सुवासित पुष्प-शय्या पर; अऩ्ऩम्—हंसिनी (समान वे); इऩ्ऩणम् आयिऩळ्—इस तरह (विरह तप्त) हुई; अऩ्ऩवऴ्—उनकी; मिऩ्ऩिऩ्—विद्युत समान; मिऩ्ऩिय मेनि—चमकनेवाली देह-कांति को; कण्टाऩ् ऍन चॊऩ्ऩ—देखा था, जिनके सम्बन्ध में हमने ऐसा कहा था, उन; अण्णलुक्कु उऱ्ऱतु—प्रभु पर क्या बीता; चॊल्लुवाम्—कहेंगे। ६३७

इधर कन्या-महल में, सुगंधित फूल-पल्लवों की शय्या में पड़ी देवी की यह स्थिति रही। उधर उन प्रभु का जिनके संबंध में, हमने सीताजी की "विद्युत-सम देह की कांति देखी"—यह कहा था, हाल कहेंगे। ६३७

एहि मऩ्ऩऩैक् कण्डॆदिर् कॊण्डवऩ्, ओहै योडु मिऩिदुकॊण् डुय्त्तिडप्
पोह बूमियिऱ् पॊऩ्ऩह रऩ्ऩदोर्, माह माडत् तऩैयवर् वैहिऩार् 638

अऩैयवर्—(विश्वामित्र, श्रीराम-लक्ष्मण) वे; एकि—जाकर; मऩ्ऩऩै कण्टु—(जनक) महाराज से मिले; अवऩ् ओकैयोटुम्—वे उत्साह के साथ स्वागत कर; पोक पूमियिल्—भोग-लोक में; पॊऩ् नकर् अऩ्ऩतु—स्वर्णमय प्रासाद के समान; ओर् माकम् माटत्तु—एक आकाश-स्पर्शी सौध में; इनितु कॊण्टु उय्त्तिट—प्रसन्नता के साथ ले पहुँचाते समय; वैकिऩार्—ठहरे। ६३८

वे तीनों, महर्षि विश्वामित्र, श्रीराम और लक्ष्मण, गये और राजा जनक से मिले। राजा जनक ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उनका स्वागत

किया। उनको सुख से ले जाकर एक गगनस्पर्शी महल में, जो भोग-भूमि, स्वर्ग के एक स्वर्गमहल के समान था, ठहराया। वे वहीं रहे। ६३८

वैहु मव्वळि मादवम् यावुमोर्, शेंय्है कोंण्डु नडन्दॅनत् तीदरु
मॉय्कॉळ् वीरन् मुळरियन् दाळिनाल्, मॅय्कॉण् मङ्गै यरुण्मुनि मेविनान् 639

वैकुम अ वळि–(जहाँ वे) ठहरे थे वहाँ; मा तवम् यावुम्–श्रेष्ठ तप सब; ओर् चॅय्कै कॉण्टु नटन्ततु–एक रूप धरकर चला आया; ॲन–ऐसा; तीतु अरु–निर्दोष; मॉय् कॉळ् वीरन्–बलशाली वीर (श्रीराम) की; मुळरि अम् ताळिनाल्–सुन्दर कमल-चरण (की धूली) से; मॅय् कॉळ्–(जिन्होंने अपना निजी) रूप प्राप्त किया; अरुळ्–उनके पुत्र; मुनि–मुनि शतानन्द; मेविनान्–पधारे। ६३९

जब वे वहाँ रहे तब महान् तपोमूर्ति शतानंदजी आये। वे उन अहल्या देवी के पुत्र थे जो निर्दोष वीर श्रीराम की चरण-धूली के प्रताप से अपने निजी रूप में आकर शापमुक्त हुई थी। शतानंदजी को देखने पर ऐसा लगता था मानों सभी तपों ने मिलकर उनका रूप ले लिया हो। ६३९

वन्दॅ दिर्न्द मुनिवनै मैन्दरुम्, शिन्दै यार वणङ्गळुम् जॅन्रॅदिर्
अन्द मिल्कुणत् तानॅडुत् ताशिहळ्, तन्दु कोशिहन् रन्मरुङ् गेय्दिनान् 640

वन्तु ॲतिर्न्त मुनिवनै–आकर दर्शन देनेवाले मुनि को; मैन्तरुम्–कुमार दोनों ने; ॲतिर् चॅन्रु–सामने जाकर; चिन्तै आर वणङ्कलुम्–हार्दिक आदर के साथ नमस्कार करने पर; अन्तम् इल् कुणत्तान्–अननुमित सद्गुणों से पूर्ण; ॲटुत्तु उठाकर; आचिकळ् तन्तु–आशीर्वाद देकर; कोचिकन् तन् मरुङ्कु ॲय्तिनान्–कौशिक जी के पास गये। ६४०

श्रीराम और लक्ष्मण ने आदर और श्रद्धा सहित आगत मुनि को नमस्कार किया। अनंत सद्गुणी महर्षि ने उनको उठाया और आशीर्वाद दिया। फिर वे विश्वामित्रजी के पास आये। ६४०

कोद मन्ररु कोमुनि कोशिह, माद वन्रनै वाण्मुह नोक्कियिप्
पोदु नीयिवण् पोदविप् पूदलम्, एदु शॅय्द तवमॅन् रियम्बिनान् 641

कोतमन् तरु कोमुनि–गौतम के दिलाये (सुपुत्र) मुनिराज (शतानन्द) ने; कोचिक मातवन् तन्नै–महर्षि कौशिक को; वाळ् मुकम् नोक्कि–तेजोमय मुख निहारते हुए; इ पोतु–अब; नी इवण् पोत–आप यहाँ पधारे, इसका हेतु; इ पूतलम् चॅय्त–इस भूतल की, की हुई; तवम् एतु–तपस्या क्या है; ॲन्रु इयम्पिनान्–यह कहा। ६४१

गौतम-पुत्र ने तपोधन विश्वामित्र से शिष्टाचार-पूर्ण वचन कहे। तेजोमय उनका मुख निहार कर शतानंदजी ने कहा— इस भूमि ने क्या तपस्या की है कि आपके पधारने का भाग्य हमें मिला ? । ६४१

पून्दण् शेक्कैप् पुन्निदन्नै येपॉरु, एय्न्द केण्मैच् चदानन्द नॅन्रुरै
वाय्न्द मादवन् मामुह नोक्किनूल्, तोय्न्द शिन्दैक् कवुशिहन् शॉल्लुवान् 642

पू तण् चेक्कै–कमल का शीतल (सुखद) आसन पर रहनेवाले; पुनितन्नैये पोरु–पवित्र ब्रह्मा जी के ही सदृश; एय्न्त केण्मै–(जीव मात्र से) स्नेह रखनेवाले; चतानन्तन् ॲन्रु–शतानन्द नामी; उरै वाय्न्त–प्रकीर्तित; मा तवन्–महान तपस्वी के; मा मुकम् नोक्कि–श्रीयुत मुख देखकर; नूल् तोय्न्त चिन्तै–शास्त्र-ज्ञान-मग्न मन के; कौचिकन्–कौशिक जी; चॊल्लुवान्–बोले। ६४२

शतानंद कमलासन ब्रह्माजी के ही सदृश पवित्र थे और भूत-दया-संपन्न थे। वे प्रथित तपस्वी थे। उनसे, शास्त्र-पारंगत कौशिक ने कहा। ६४२

वडित्त मादव केट्टियिव् वळ्ळऱान्
इडित्त वॆङ्गुरऱ् ऱाडहै याक्कयुम्
अडुत्त वेळ्वियु निन्नन्नै शावमुम्
मुडित्तॆ नॆञ्जत् तिडर्मुडित् तानॆन्ऱान् 643

वटित्त मातव–उत्कृष्ट महान तपस्वी; केट्टि–सुनिये; इ वळ्ळल तान्–इन उदार प्रभु ने ही; इटित्त वम् कुरल्–वज्रघोष-कण्ठ; ताटकै योक्कैयुम्–ताड़का का शरीर (जीवन); अटुत्त वेळ्वियुम्–मेरा आरम्भित यज्ञ और; निन् अन्नै चापमुम्–आपकी माता का शाप; मुटित्तु–समाप्त कर; ॲन् नॆञ्चत्तु इटर् मुटित्तान्–मेरे मन की चिन्ता दूर की। ६४३

उत्कृष्ट तपस्वी! सुनिये। इन्ही प्रभु ने वज्र-नर्दन-कारिणी ताड़का को मारा; मेरा आरंभित यज्ञ पूरा कराया और आपकी माता को शाप-मुक्ति दिलायी, और इस प्रकार मेरे मन की चिंताओं को दूर कर दिया। ६४३

ॲन्ऱु कोशिहन् कूऱिड वीऱिला, वन्ऱ पोदनन् मादव निन्नरुळ्
इन्ऱु नन्गुळ देलरि दियादिन्द, वॆन्ऱि वीरर्क् कॆनवुम् विळम्बिमेल् 644

ॲन्ऱु–यह; कोचिकन् कूऱिट–कौशिक जी के कहने पर; ईऱु इला वल् तपोतनन्–अनन्त व कठोर तपस्वी; मातव–महर्षि; निन् अरुळ् नन्कु उळतेल्–आपकी कृपा खब रही तो; इनत वॆन्ऱि वीरर्क्कु–इन विजयी वीरों के लिए; इन्ऱु अरितु यातु–अब दुस्तर क्या है?; ॲनवुम् विळम्पि–यह कहकर और; मेल्–आगे भी। ६४४

अति दीर्घ कठिन तपस्या में तप्त तपोधन, शतानंद ने कहा— महर्षि, आपकी कृपा इन पर परिपूर्ण रही तो इनके लिए दुस्तर कार्य क्या है? फिर (अतिरिक्त पद—अतसी पुष्प, इन्द्रनीलमणि समुद्र, मेघ-जाल, नीलोत्पल-सदृश श्रीराम का चन्द्रमुख देखकर) वे बोले। ६४४

नऱुम लर्त्तॊडै नायह नानुनक्, कऱिवु ऱुत्तुवॆन् केळिव् वरुन्दवन्
इऱयॆ नप्पुविक् कोऱिल्पल् याण्डॆलाम्, मुऱैयि निऱ्पुरन् देयरुण् मुऱ्ऱिनान् 645

नऱु मलर् तॊटै–सुगन्धित पुष्पमाला-धारी; नायक–जगन्नायक; नान् उनक्कु

अऱिवरुत्तुवॅन्–मैं आपको बताऊँगा; केळ्–सुनिये; इ अरु तवन्–ये श्रेष्ठ तपस्वी; पुविक्कु इऱै अॅन–भूमि के पालक के रूप में; ईऱु इल् पल् याण्टु–गणनाहीन अनेक वर्ष भर; मुऱैयिनिल् पुरन्तु–धर्म-सम्मत रीति से पालन कर; एय् अरुळ्–(जीवों पर) उद्‌बुद्ध दया में; मुऱ्ऱिनान्–बढ़े रहे। ६४५

सुगंधित-पुष्पमाला-धारी जगन्नाथ ! मैं आपको एक वृत्तांत सुनाऊँगा। सुनिये। ये पहले भूपति थे और अनेक वर्ष राज करते रहे। ये अत्यंत दयावान थे। ६४५

अरशिन् वैहि यऱनि ऩमैन्दुळि, विरशु कानिडैच् चॅन्ऱनन् वेट्टैमेल्
उरैशॅय् मादवत् तोङ्गु वशिट्टनाम्, परशु वानवन् पालणैन् दानरो 646

अरचिन् वैकि–राज कार्य में रत; अऱतिन् अमैन्त उळि–धर्मचारी रहते समय; वेट्टै मेल्–आखेट पर; विरचु कान् इटै–घने अरण्य में; चॅन्ऱनन्–गये; उरै चॅय् मा तवत्तु ओङ्कु–प्रकीर्तित तपोराशि; वचिट्टन् आम्–वसिष्ठ संज्ञित; परचुवान् अवन् पाल्–सम्मान्य (उन) के पास; अणैन्तान्–गये। ६४६

वे राज-काज धर्म-संवर्धक रीति से करते रहे। एक समय वे आखेट के लिए घने वन में गये। वहाँ तपोराशि श्रीमहर्षि वसिष्ठ के पास पहुँचे। ६४६

अरुन्ददि कणवन् वेन्दऱ् करुङ्गडन् मुऱैयि नाऱ्ऱि
इरुन्दरु डरुदि यॅन्ऩ विरुन्दुळि यिनिदु निऱ्कु
विरुन्दिनि यमैप्पॅ ऩॅन्ऩाच् चुरबियै विळित्तु नीये
शुरन्दरु ळमिर्द मॅन्ऩ वरुण्मुऱै शुरन्द दन्ऱे 647

अरुन्तति कण्वन्–अरुन्धती-पति ने; वेन्तऱ्कु–राजा के; अरुकटन्–श्रेष्ठ (आतिथ्य-) कर्तव्य; मुऱैयिन् आऱ्ऱि–यथाक्रम सम्पन्न करके; इरुन्तु अरुळ् तरुति–विराजिए, कृपा कीजिए; ऍन्ऩ–यह कहा, तब; इरुन्तुळि–(विश्वामित्र) आसीन हुए तब; इनि–अब; निऱ्कु–आपको; इनितु विरुन्तु अमैप्पन्–उत्तम भोज का प्रबन्ध करूँगा; ऍन्ना–कहकर; चुरपियै विळित्तु–कामधेनु को बुलाकर; नीये अमिर्तम् चुरन्तु अरुळ्–तुम ही अमृत (सम भोज्य पदार्थ) निकालकर दे दो; ऍन्ऩ–आज्ञा देने पर; अरुळ् मुऱै–आज्ञा के अनुसार; अन्ऱे चुरन्तत्तु–तभी निकाल दिये। ६४७

अरुन्धती के पति वसिष्ठजी ने उनका स्वागत किया; यथाविधि सत्कार करके आसनस्थ कराया। आपको भोज दूँगा, स्वीकार कीजिए— कहकर वसिष्ठजी ने कामधेनु (शवला) को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम्हीं इनको और इनके साथ आई सेना को भोजन देने का प्रबंध करो। सुरभी ने भी उनकी आज्ञा के अनुसार अमृत-सम भोज्य-पदार्थों को अपने ही शरीर से सृष्ट किया। ६४७

अऱुशुवैत् ताय वुण्डि यरशनिन् नलिहत् तोडुम्
पॅऱुहॅन वळिप्प वेन्दो डियावरुन् दुयत्त पिन्ऱै

नऱुमलर्त् तारुम् वाशक् कलवयु नल्ह लोडुम्
उऱुतुयर् तणिन्दु मन्नन् तुय्त्तुणर्न् दुरैक्क लुट्रान् 648

अरच–राजन; निन् अतिकत्ततोटुम्–अपने अनीक के साथ; अऱु चुवैत्तु आय–षड्रस-पूर्ण; उण्टि पॆऱुक–भोजन कर लीजिये; ॲन्न–कहकर; अळिप्प–खिलाने पर; वेन्तोटु यावरुम्–राजा के साथ सब के; तुय्त्त पिन्नरै–भोजन करने के बाद; नऱु मलर् तारुम्–सुवासपूर्ण पुष्प-मालाएँ और; वाचम् कलवैयुम्–सुगन्धि मिलित चन्दन; नल्कलोटुम्–देने पर; मन्नन्–राजा; उऱु तुयर् तणिन्तु–विश्रांत होकर; उय्त्तु उणर्न्तु–(कामधेनु की विशेषता) अनुभव द्वारा जानकर; उरैक्कल् उट्रान्–बोलने लगे। ६४८

वसिष्ठजी ने राजा कौशिक से कहा— षड्रसपूर्ण भोजन प्रस्तुत है। आप अपनी सेना सहित भोजन कीजिए। उनकी बात मानकर राजा के साथ सब वीरों ने भोजन किया। भोजन के उपरांत उन्हें पुष्पमाला और चंदन भी दिया गया। राजा विश्रांत होकर इस आश्चर्य के बारे में सोचने लगे। कामधेनु के विशिष्ट कौशल को देखकर वे मन में कुछ विचार करके महर्षि से बोले। ६४८

मादव वॆळुन्दि लायनी वन्दवॆम् बडैहट् कॆल्लाम्
कोदऱ वमुद मिक्को वुदविय कॊळ्है तन्नाल्
तीदऱु कुणत्तान् मिक्क शॆंळुमरै तॆरिन्द नूलोर्
मेदहु पॊरुळ्हळ् यावुम् वेन्दरुक् कॆन्नै तन्नाल् 649

मा तव–महातपस्वी; नी ॲळुन्तिलाय्–आप (अपनी जगह पर से) नहीं उठे; वन्त ॲम् पटैकट्कु ॲलाम्–मेरे साथ आयी सेना-सकल को; इ को–यह सुरभी; कोतु अऱ–बिना त्रुटि के; अमुतम् उतविय कॊळ्कै तन्नाल्–स्वादिष्ट भोजन दे सकी, इस विशिष्ट गुण के कारण; तीतु अऱु–निर्दोष; कुणत्ताल् मिक्क–विशिष्ट गुणों से सुसम्पन्न; चॆळु मरै–अर्थ-पुष्ट वेदों; नूल्–और शास्त्रों को; तॆरिन्तोर्–जाननेवाले; मेतक पॊरुळ्कळ् यावुम्–सभी उत्तम वस्तुएँ; वेन्तरुक्कु–राजा की; ॲन्नै तन्नाल्–यह कहते हैं, इससे। ६४९

तपोधन! आप तो अपने स्थान से उठे ही नहीं। पर इस सुरभी ने हमको, हमारी सेना को, बिना किसी त्रुटि के भोजन करा दिया। इससे साबित है कि यह विलक्षण और उत्तम गाय है। फिर सद्गुणोत्कृष्ट वेद-शास्त्रज्ञों का कहना है कि सभी श्रेष्ठ वस्तुएँ राजा की है। इन दो कारणों से, । ६४९

निऱ्किडु तहव दन्ऱा नीडरुळ् जुरबि तन्नै
ॲऱ्करु ळॆन्ऱ लोडु मियम्बलन् यादुम् पिन्नर्
वऱ्कलै युडैयॆन् यान्नो वळङ्गलॆन् वरुव दाहिल्
कॊऱ्कॊळ्वे लुळव नीये कॊण्डहल् ॲन्ऱु कऱ 650

निऱ्कु इतु तकुवतु अन्ऱु–आपके लिए यह युक्त नहीं है; नीट्टु अरु चुरपि तन्नै–बहुत विलक्षण इस सुरभी को; ॲऱ्कु अरुळ्–मुझे सौंप देने की कृपा करें; ॲन्ऱलोटुम्–कहने पर; यातुम् इयम्पलन्–(सहसा) कुछ नहीं कहा; यात्तो वऱ्कलै उटैयॅन्–हम तो वल्कलधारी हैं; वळङ्कलॅन्–दान दे नहीं सकता; कोल् कॉळ् वेल् उळव–संहारक भाले के प्रयोगी; वरुवतु आकिल्–वह आयँगी तो; नीये कॉण्टु अकल्क–आप ही ले जाइये; ॲन्ऱु कूऱ–यह कहा, तव । ६५०

यह गाय आपके पास रहने योग्य नहीं; आप तापस हैं। इसलिए आप उसे हमें सौंप दीजिये। यह सुनकर वसिष्ठजी कुछ देर सन्न रह गये। वाद, वोले कि हे सहारक भाला-कृपक! हम वल्कलधारी हैं। हम दान देने के अर्ह नही है। इसलिए आपही अगर वह गाय आपके साथ जायगी तो ले जाइये। (तमिळ मे एक विशेष प्रयोग है, भाला-कृषक! उसका विस्तार यों होगा—भाला-रूपी हल चलाकर शत्रु-रूपी खेत में हलचल मचानेवाला। वैसे ही लेखनी-कृपक का भी प्रयोग है)। ६५०

पणित्तदु पुरिवॅ नॅन्नाप् पार्त्तिव नॅळुन्दु पॉङ्गिप्
पिणित्तनन् शुरवि तन्नैप् पॅयर्वुळिप् पिणियै वीट्टि
मणित्तडन् दोळि नार्कुक् कॉडुत्तियो मऱैहळ् यावुङ्
गणित्तवॅम् बॅरुम वॅन्नक् कलैमऱै मुनिवन् शॊल्वान् 651

पार्त्तिपन्–पृथ्वीपति ने; पणित्ततु पुरिवॅन्–आज्ञानुसार करूँगा; ॲन्ना–कहकर; पॉङ्कि ॲळुन्तु–उमंग के साथ उठकर; चुरपि तन्नै–धेनु को; पिणित्तनन्–बाँधा; पॅयर्वुळि–जाते समय; पिणियै वीट्टि–वन्धन छुड़ाकर; मऱैकळ् यावुम् कणित्त–वेद सब जाननेवाले; ॲम् पॅरुम–मेरे नायक; मणि तटम् तोळिनाऱ्कु–सुन्दर विशाल भुजावाले (इन) को; कॉटुत्तियो–मुझे दे दिया क्या; ॲन्न–पूछने पर; कलै मऱै मुनिवन्–शास्त्रों और वेदों के ज्ञाता; चॊल्वान्–वोले। ६५१

राजा कौशिक यह सुनकर आनंद-विभोर हुए। उत्साह के साथ आपके कहे अनुसार करूँगा—यह कहते हुए वे उठे। उन्होंने जाकर काम-धेनु को पकड़ा। वे उसको खींचते ले जाने लगे। सुरभी (शवला) ने अपने को वंधन से छुड़ा लिया और वसिष्ठजी के पास जाकर पूछा कि क्या आपने मुझे दीर्घ-बाहु राजा के हाथ मे सौंप दिया है? । ६५१

कॉडुत्तिलॅन् यान्ने मऱ्ऱक् कुरैकळल् वेन्दन् रान्ने
पिडित्तहल् वुऱ्ऱा नॅन्नप् पॅरुञ्जिनङ् गदुवु नॅञ्जो
डिडित्तॅळु मुरश वॅन्दन् शेनैयै यान्ने यिन्ऱु
मुडिक्कुवॅन् काण्डि यॅन्ना मॉय्म्मयिर् शिलिर्त्त दन्ऱे 652

यान्ने कॉटुत्तिलॅन्–मैंने स्वयं नहीं दिया; अ कुरै कळल् वेन्तन्–वह क्वणनशील पायलधारी; तान्ने पिटित्तु–खुद पकड़कर; अकलवुऱ्ऱान्–जाने लगे; ॲन्न–कहने पर; पॅरु चिनम् कतुवुम् नॅञ्चोटु–वड़े क्रोधाक्रांत मन से; इटित्तु ॲळुम्–गरज उठनेवाले; मुरचम् वेन्तन्–ढोलवाले राजा की; चेनैयै–सेना को; यान्ने

इन्ऱु मुटिक्कुवॆन्–आज ही समाप्त करूँगी; काण्टि–देखिए; ऎन्ऩा–कहके; मॊय् मयिर्–घने बालों को; चिलिर्त्ततु–पुलकित कराया; अन्ऱे–तभी। ६५२

मैंने तो दिया नही। वे शब्दायमान पायलालंकृत राजा बलात् ले जा रहे है। यह सुनकर कामधेनु को बड़ा क्रोध हुआ। उसने आक्रोश के साथ कहा कि मै स्वयं इन नगाड़ेवाले राजा की सेना का संहार कर दूँगी। आप देखिये। यह कहकर उसने अपने रोंगटे पुलकित किये। तभी; । ६५२

पप्परर् यवऩर् शीऩर् शोऩकर् मुदल पल्लोर्
कैप्पडै यदनि ऩोडुङ् गबिलैमाट् टुदित्तु वेन्दऩ्
तुप्पुडैच् चेऩै यावुन् दुणित्तनर् तुणित्त लोडुम्
वॆप्पुडैक् कॊडिय मऩ्ऩऩ् ऱनैयर्हळ् वॆहुण्डु मिक्कार् 653

पप्परर्–पप्लव; यवऩर्–यवन; चीऩर्–चीनी; चोऩकर्–शोनक; मुतल–आदि; पल्लोर्–अनेक; कै पटै अतनितोटुम्–हाथों में हथियारों के साथ; कपिलै माट्टु उतित्तु–श्वेत धेनु द्वारा सृष्ट होकर; वेन्तऩ्–राजा की; तुप्पु उटैय–शक्तिमान; चेऩै यावुम्–सब सेना को; तुणित्तनर्–काट गिराया; तुणित्तलोटुम्–संहार करते ही; मऩ्ऩऩ्–राजा के; वॆप्पु उटैय कॊटिय तनैयर्कळ्–क्रोधी, क्रूर पुत्र; वॆकुण्टु–कोप करके; मिक्कार्–बढ़े। ६५३

पप्लव, यवन और चीन, शोनक आदि म्लेच्छ वीर हाथों में हथियारों के साथ उस गाय से बाहर आये। उन वीरों ने राजा की सबल सेना का संहार कर दिया। इसको जानकर राजा के क्रोधी और क्रूर पुत्र फड़क उठे और वसिष्ठ की तरफ बढ़ आये। ६५३

शुरबियिऩ् वलियि दऩ्ऱाऱ् चुरुदि नूलुणर वल्ल
वरमुऩि वञ्ज मॆऩ्ऩा मऱ्ऱिवऩ् शिरत्तै यिऩ्ऩे
अरिहुदु मॆऩ्ऩप् पॊङ्गि यडर्न्दऩ ऱडर वऩ्ऩाऩ्
ऎरियॆऴ विऴित्त लोडु मॆरिन्दनर् कुमर रॆल्लाम् 654

कुमरर् ऎल्लाम्–सब कुमारों ने; इतु चुरपियिऩ् वलि अऩ्ऱु–यह गाय का सामर्थ्य नहीं; चुरुतिनूल् उणर वल्ल–वेद और शास्त्र के ज्ञानी; वरऩ् मुनि वञ्चम्–मुनिवर की वंचना है; ऎऩ्ऩा–सोचकर; इऩ्ऩे–अभी; इवऩ् चिरत्तै–इसका सिर; अरिकुतुम्–काट लेंगे; ऎऩ्ऩ–कहकर; पॊङ्कि–जोश के साथ उठकर; अटर्न्ततर्–घेरकर आये; अऩ्ऩाऩ्–उनके; ऎरि ऎऴ–आग उगलते; विऴित्तलोटुम्–तरेरते ही; ऎरिन्तनर्–जलकर भस्म हो गये। ६५४

उन कुमारों ने सोचा कि यह इस मामूली गाय का शौर्य नहीं है। यह, वेद और शास्त्रों के ज्ञानी, मुनि वसिष्ठजी की माया है। अब उनका सिर काटकर वध करेंगे। वे आवेश के साथ उनको घेरते आये। महर्षि ने उन पर आग्नेय-दृष्टिपात किया। वे वहीं जलकर भस्म हो गये। ६५४

ऐयिरु पदिन्मर् मैन्द रविन्दमै यरशन् काणा
नॆय्शॊरि कन्नलिऩ् कान्दि नॆडुङ्गॊडित् तेर्ह डाविक्
कैतॊडर् कणैयि नोडुङ् गार्मुहम् वळैय वाङ्गि
ऎय्दनन् मुनियुन् दन्कैत् तण्डिनै यॆदिर्ह वॆन्ऱान् 655

मन्नन्–राजा; मैन्दर्–पुत्र; ऐ इरु पतिन्मर्–पाँच के दो के दस (एक सौ) का; अविन्तमै काणा–जलना देखकर; नॆय् चॊरि कन्नलिन् कान्ति–घृत-प्राप्त आग के समान जलकर; कॊटि नॆटु तेर्–ध्वजा सहित बड़े रथ को; कटावि–चलाते हुए आकर; कै तॊटर् कणैयिनोटुम्–हाथ में लिये हुए शर का उतना लम्बा; कार् मुकम् वळैय वाङ्कि–धनुष को झुकाते हुए डोरा खींचकर; ऎय्ततन्–(शर) चलाये; मुनियुम्–मुनिवर ने भी; तन् कै तण्टितै–अपने हाथ के योगदण्ड को; ऎतिर्क–सामना करो, यह; ऎन्रान्–आज्ञा दी। ६५५

कौशिक ने जाना कि मेरे एक सौ-पुत्र एक साथ जल गये। घी के अर्पण से आग जिस तरह भभक कर उठती है वैसे ही वे क्रोधोन्मत्त हो उठे। ध्वजा से अलंकृत अपने बड़े रथ पर बैठकर वे वसिष्ठजी के सामने आये। धनुष पर शर चढ़ाकर, डोरा खूब खींचा और तड़ातड़ छोड़ने लगे। महर्षि वसिष्ठ ने अपने योगदण्ड को आज्ञा दी कि तुम उनका सामना करो। ६५५

कडवुळर् पडैह ळीऱाक् कऱ्ऱन पडैहळ् यावुम्
विडविड मुनिवन् ऱण्डम् विळुङ्गिमेल् विळङ्गल् काणा
वडवरै विल्लि तन्नै वणङ्गिये वळ्ुत्त वीशन्
अडलुरु पडैयीन् ऱीय वन्नव नाऱ्ऱ लोडुम् 656

कटवुळर् पटैकळ् ईऱाक–दैवी अस्त्रांत; कऱ्ऱन पटैकळ् यावुम्–अभ्यस्त सभी आयुधों को; विट विट–ज्यों-ज्यों चलाया; मुनिवन् तण्टम्–मुनि का दण्ड; विळुङ्कि–कवलित कर; मेल् विळङ्कल् काणा–(उसका) अधिक तेजोमय दिखना, देख; वटवरै विल्लि तन्नै–मेरु-धन्वा को (शिवजी को); वणङ्कि वळुत्त–विनय कर स्तुति करने पर; ईचन्–ईश्वर (के); अटल् उरु पटै ऒन्ऱु ईय–सशक्त एक अस्त्र देने पर; अन्तवन् आऱ्ऱलोटुम्–उन (रुद्र) के (मन्त्र-) बल के साथ। ६५६

ज्यों-ज्यों कौशिक साधारण अस्त्रों से लेकर देवों के अस्त्रों तक अपने अभ्यस्त अस्त्रों को छोड़ते गये, त्यों-त्यों महर्षि के ब्रह्मदण्ड ने उनको निगल कर शांत कर दिया और वह उत्तरोत्तर तेजोमय दिखने लगा। तब कौशिक ने मेरुधन्वा, शिवजी की प्रार्थना की। उन्होंने राजा को एक बलवान अस्त्र दिया। शिवजी संबंधी मंत्र के बल का अवलंबन कर; । ६५६

विट्टनन् पडैयै वॆन्दन् विण्णुळो रुलहै यॆल्लाम्
शुट्टन नॆन्न वज्जित् तुळङ्गिनर् मुनियुन् दोन्ऱिक्
किट्टिय पडैयै युण्डु विळङ्गितन् किळरु मेनि
मुट्टिवॆम् पॊरिहळ् शिन्दप् पॊरुपडै मुरणुन् दीर 457

वेन्तन् पटैयै विट्टनन्–राजा (कौशिक) ने अस्त्र को प्रेरित किया; विण् उळोर्–देवता लोग; उलकै अॅल्लाम् चुट्टतन् अॅन्न–सभी लोकों को जला देगा, यह समझकर; अञ्चि तुळङ्किनर्–भय से काँप उठे; मुनियुम्–महर्षि (ने); तोन्ऱि–सामने आकर; किट्टिय पटैयै उण्टु–समीप आये अस्त्र को निगल लिया; किळरुम् मेनि–तेजोमय शरीर के अन्दर; पोरु पटै मुट्टि–युद्ध-प्रवण अस्त्र के टकराने से; वॅम् पोरिकळ् चिन्त–गरम अंगारे निकले, ऐसा; मुरणुम् तीर–(और) शक्ति नष्ट करके; विळङ्किनन्–शोभित रहे। ६५७

राजा ने उस रुद्रास्त्र को प्रेरित किया। देवता लोगों ने समझ लिया कि अब यह सारे लोकों को जला डालेगा। वे भय से काँप उठे। पर वसिष्ठ ने आगे आकर स्वयं उसको निगल लिया। युद्ध-प्रवृत्त अस्त्र था, उनके अंदर जाकर टकराया तो उनके शरीर से तेज फूटने लगा। वह शांत हो गया। वसिष्ठ दीप्तिमंत दिखाई दिये। (वाल्मीकी में रुद्र की पूजा के स्थान पर लंबे अरसे की तपस्या कही गई है। और उन्होंने रुद्र से देवास्त्र पाये। उनको लेकर वे आये और पुनः अस्त्र चलाना आरम्भ हुआ। सब अस्त्र व्यर्थ गये तो ब्रह्मास्त्र की बारी आई। उसको मुनि ने शांत कर दिया।) । ६५७

कण्डन नरशन् कण्णाऱ् कलैमऱै यवर्हट् कल्लाल्
तिण्डिऱल् वलियुन् देशु मुळवॆनल् शीरि दन्ऱाल्
मण्डल मुळ्ळुडुङ् गाक्कुम् मॊय्म्बॊरु वलनन् ऱॆन्ना
ऒण्डवम् बुरिय वुन्नि युम्बरकोन् ऱिशैयै युऱ्ऱान् 658

अरचन् कण्णाल् कण्टनन्–राजा ने प्रत्यक्ष देखा; कलै मऱैयवर्कट्कु अल्लाल्–वेद-विप्रों के सिवा; तिण् तिऱल् वलियुम्–अति धैर्य का बल; तेचुम् उळ अॅन्नल्–तेज है (अन्यों के पास), यह कहना; चीरितु अन्ऱु–मान्य नहीं है; मण्टलम् मुळ्ळुतुम् काक्कुम् मॊय्म्पु–भूमण्डल सारा पालन करने की शक्ति; ओरु वलन् अन्ऱु–एक (प्रशंसनीय) बल नहीं है; अॅन्ना–समझकर; ऒण् तवम् पुरिय उन्नि–प्रबल तपस्या करना चाहकर; उम्पर् कोन्–देवेन्द्र की; तिचैयै–(पूर्व) दिशा को; उऱ्ऱान्–जा पहुँचे। ६५८

राजा ने प्रत्यक्ष देख लिया कि समस्त विश्व का शासन करते हुए भी क्षत्रिय-बल कोई बल नहीं है। ब्रह्मतेजोबल के सिवा किसी और के शारीरिक, अस्त्र या मनोबल को बल मानना ही श्लाध्य नहीं है। इसलिए वे तपस्या करने का संकल्प लेकर देवेन्द्र की पूर्वी दिशा में गये। ६५८

माण्डमा दवत्तोन् शॆय्द वलन्नैये मनत्ति नुन्निप्
पूण्डमा दवत्त नाहि यरशरकोन् पॊलियु नोऱ्मै
काण्डलु ममरर् वेन्दन् ऱुणुक्कुऱ् करुत्ति नोडुम्
तूण्डिन नरम्बै माऱट् टिलोत्तमै यॆनुञ्जॊन् मानै 659

माण्ट मातवत्तोन्–महिमामय तपश्रेष्ठ (वसिष्ठ) का; चॅय्त वलत्तैये–कृत बल-प्रदर्शन ही; मत्तत्तिन् उन्ऩि–मन में सोचकर; पूण्ट मातवत्तन् आकि–सन्नद्ध तपस्वी होकर; अरचर् कोन्–राजाधिराज के; पॉलियुम् नीर्मै–शोभित रहने के प्रकार को; अमरर् वेन्तन् काण्टलुम्–देवेन्द्र (ने देखा उस) के देखते ही; तुणुक्कु उरु करुत्तिनोटुम्–भयभीत मन से; अरम्पै मारुळ्–रम्भा आदि अपसराओं में; तिलोत्तमै ॲनुम्–तिलोत्तमा नाम की; चॉल् मानै–प्रथित मृग-नयनी को; तूण्टिनन्–प्रेषित किया। ६५९

वे तपोराशि महान् वसिष्ठ के प्रताप को भूल नहीं सके। उसी का स्मरण करते हुए वे तपस्या करने लगे। (यह ईर्ष्या का भाव था और वह उत्तम तपोबल में बाधा डालने वाली है।) राजा कठोर तपस्या कर रहे है, यह देवेन्द्र ने जाना; (उनको डर हुआ कि कठोर तप के कारण तपस्वी के सिर से कपालाग्नि उठकर देवलोक को भी जला देगी।) भय खाकर उन्होंने रंभा आदि अप्सराओं में सुन्दरी, मृग-नयनी तिलोत्तमा को कौशिक की तपस्या मे विघ्न डालने के हेतु प्रेरित किया। ६५९

अन्नवण् मेनि काणा वनङ्गवेळ् शरङ्गळ् पायत्
तन्नुणर् वळिन्दु कादर् चलदियि नळुन्दि वेन्दन्
पन्नरुम् बहडीर् वुऱ्ऱुप् परुणिदर् तॅरिन्द नूलिन्
नन्नय मुणर्न्दो नाहि नञ्जॅनक् कनन्ऱु नक्कान् 660

अन्नवळ् मेनि काणा–उसका रूप-लावण्य देख; अनङ्कवेळ् चरङ्कळ् पाय–अनंग के शरों के लगने से; तन् उणर्वु अळिन्तु–अपनी (संयम-) बुद्धि खोकर; कातल् चलतियिल् अळुन्ति–प्रेम-समुद्र में डूबकर; पन् अरुम् पकल्–अकूत (अनेक) दिनों तक; तीर्वुऱ्ऱु–व्यतीत करने के बाद; परुणितर्–परिणत (शिष्ट) लोगों के; तॅरिन्त–गम्भीर अध्ययन के बाद कृत; नूलिन् नल् नयम्–शास्त्रों की श्रेष्ठ शिक्षाप्रद बातें; तॅरिन्तोन् आकि–जाननेवाले बनकर; नञ्चु ॲन–(कामेच्छा को) विष समझकर; कनन्ऱु–घृणा करके; नक्कान्–(अपनी भूल पर) हँसे। ६६०

कौशिक ने उसको देखा। तभी मन्मथ-शर उन पर लगे। वे अपना धैर्य खो गये। फिर उनके अनेक दिन उसके साथ प्रेम-सागर में मग्न रहने में बीत गये। तब जाकर उनको चेतना हुई। परिणत शिष्ट लोगों के अनुभव-भूत शास्त्रों के उपदेश मन में जागे। उनको अपना काम निन्द्य लगा। उसे विष-समान त्यागकर अपनी ही भूल पर स्वयं हँसे। ६६०

विण्मुळु दाळि शॅय्द विनैयॅन वॅहुण्डु नीपोय्
मण्मह ळादि यॅन्ऱु मडवर ऱन्नैच् चीऱिक्
कण्मलर् शेप्प वुळ्ळङ् गरुप्पुरक् कडिदि नेहि
ॲण्मरिन् वलिय नाय यमन्ऱिशै यदनै युऱ्ऱान् 661

विण् मुळुतुम् आळि चॅय्त–सब देवलोकों का शासन करनेवाले इन्द्र की, की हुई; वितै ॲन–वंचना (का कार्य) यह जानकर; वॅकुण्टु–कुपित होकर; मटवरल् तन्नै–दयिता (तिलोत्तमा) को; नी पोय् मण् मकळ् आ (कु)–तुम जाकर मानव-स्त्री बन जाओ; ॲन्ऱु चीऱि–यह शाप देकर; कण् मलर् चेप्प–आँखें लाल करते हुए; उळ्ळम् करुप्पु उऱ–मन को काला बनाते हुए (गुस्से के साथ); कटितिन् एकि–सत्वर जाकर; ॲण्मरिन्–आठ (दिग्पालकों) में; वलियन् आय–अधिक बलशाली; यमन् तिचै अतनै–यम की (दक्षिण) दिशा को; उऱ्ऱान्–गये। ६६१

विश्वामित्र समझ गये कि यह देवलोकों के अधिपति इन्द्र का यह वंचक काम था। उन्होंने कोप करके तिलोत्तमा को शाप दिया कि तू मानवी स्त्री हो जा। क्रोध से लाल हुई आँखों और "काला हुआ मन" (=कोप कलुषित मन) के साथ जल्दी वहाँ से चले और प्रबल यम की दक्षिणी दिशा में पहुँचे। ६६१

तॅन्ऱिशै यिरुन्दु मन्नन् शॅय्दवञ् जॅय्यु नाळिल्
वन्ऱिऱ लयोत्ति वाळु मन्ऱिरि शङ्गु वॅन्बान्
तन्ऱुणैक् कुरुवै नण्णित् तनुवॊडु तुऱक्क मॅय्द
इन्ऱॅनक् करुळु हॅन्न यान्ऱिन् दिलॅन दॅन्ऱान् 662

मन्नन्–राजा (कौशिक); तॅन् तिचै इरुन्तु–दक्षिण दिशा में रहकर; चॅय् तवम् चॅय्युम् नाळिल्–कर्तव्य (प्रकार से) तपस्या करते रहते समय; अयोत्ति वाळुम्–अयोध्यावासी; वन् तिऱल् मन्–अधिक प्रतापी राजा; तिरिचङ्कु ॲन्पान्–त्रिशंकु नामी; तन् तुणै कुरुवै नण्णि–अपने सहायक और गुरु के पास जाकर; तनुवॊटु तुऱक्कम् ॲय्त–तन के साथ स्वर्ग जाने के निमित्त; इन्ऱु ॲनक्कु अरुळुक–मुझ पर कृपा कीजिए; ॲन्न–प्रार्थना करने पर; अतु–वह; यान् अरिन्तिलॅन्–मैं नहीं जानता; ॲन्ऱान्–कहा। ६६२

जब वे राजा दक्षिण दिशा में रहकर तपस्या करते थे तब अयोध्या में त्रिशंकु नाम के बहुत प्रतापी राजा राज करते थे। वे अपने गुरु हित-साधक वसिष्ठ के पास जाकर बोले कि मैं सशरीर स्वर्ग जाना चाहता हूँ। कृपा करके उसका उपाय कीजिए। वसिष्ठजी ने उत्तर दिया कि मैं उसका उपाय नहीं जानता। ६६२

निनक्कॊला दाहि नैय नीणिलत् तियाव रेनुम्
मनक्किनि यारै नाडि वहुप्पल्यान् वेळ्वि यॅन्नच्
चिनक्कॊडुन् दिऱलोय् मुन्नैत् तेशिहऱ् पिळैत्तु वेऱोर्
निनक्किद नाडि नित्ऱाय् नीशनाय् विडुदि यॅन्ऱान् 663

ऐय–महर्षे; निनक्कु ऑल्लातु आकिन्–आप से सम्भव नहीं तो; नीळ् निलत्तु–विशाल विश्व में; यावरेनुम् मनक्कु इनियारै नाटि–मनोनुकूल किसी को खोजकर; यान् वेळ्वि वकुप्पल् ॲन्न–मैं यज्ञ करूँगा, कहने पर; चिनम् कॊटु तिऱलोय्–क्रोधी और क्रूर बल युक्त; मुन्नै तेचिकन् पिळैत्तु–प्राचीन अपने गुरु का अपराध करके;

वेरु ओर् निनक्कु इतन्–दूसरे किसी हितकारी को; नाटि निन्ड्राय्–खोजते खड़े हो; नीचन् आय् विटुति–नीच (चण्डाल) बन जाओ; अन्ड्रान्–यह (शाप) कहा। ६६३

तब राजा ने कहा कि आप असमर्थ है तो मै जाऊँगा और अपने मनोनुकूल किसी को खोज पाकर उसकी सहायता के साथ अपना मनोभीष्ट साधन के उपाय-रूपी यज्ञ को पूरा करूँगा। यह सुनकर वसिष्ठजी को क्रोध आ गया। उन्होंने उसको शाप दिया कि अपने प्राचीन गुरु के प्रति अपराध करते हो क्योंकि दूसरे हितकारी गुरु की खोज करना चाहते हो। इसलिए तुम नीच (चंडाल) बन जाओ। ६६३

मलरुळोन् मैन्दन् शीरि वळङ्गिय शाबम् दन्नाल्
अलरियोन् डानु नाणु मौळियिळन् दरशर् कोमान्
पुलरियङ् गमलम् पोलु मुहत्तिनिऱ् पौलिवु नीङ्गिप्
पलरुमाङ् गिहळ्ळ्दऱ् कौत्त पडिवमुवन् दुऱ्ऱ दन्ऱे 664

मलरुळोन् मैन्तन्—कमल-निवास (ब्रह्मा) के पुत्र (वसिष्ठ) के; चीरि–कोप करके; वळङ्किय चापम् तन्ताल्–दिये शाप से; अरचर् कोमान्–राजाधिराज ने; अलरियोन् तानुम् नाणुम्–सूर्य भी देखकर (जिस प्रभा के सामने) लजाते थे; औळि इळन्तु—देह-कांति खोकर; पुलरि अम् कमलम् पोलुम्–सूर्योदय में विकसनेवाले कमल का सा; मुकत्तिनिल् पौलिवुम् नीङ्कि—मुख-कांति भी खोकर; पलरुम् इकळ्ळ्तऱ्कु औत्त पटिवम्–बहु-निन्द्य रूप; अन्ऱे वन्तु उऱ्ऱतु–तभी आ मिल गया। ६६४

कमलासन ब्रह्मा के पुत्र वसिष्ठजी ने शाप दिया तो उसके प्रभाव से राजा का रूप-रंग बदल गया। देह की सूर्य-निंदक कांति और मुख की नव-विकसित कमल की सुन्दरता नष्ट हो गयी। सबसे निन्दनीय चंडाल का रूप मिल गया। ६६४

काशोडु मुडियुम् पूणुङ् गरियदाङ् गन्नहम् बोन्ऱु
तूशोडु मुन्नूल् मालै तोऱ्ऱन् दोऱ्ऱ माह
माशोडु करुहि मेनि वनप्पळिन् दिडवूर् वन्दान्
शीशियन् ऱारु मॆळ्ळत् तिहैप्पोडु पळुवज् जेर्न्दान् 665

काचोटु–रत्नहारों के साथ; मुटियुम्–मुकुट और; पूणुम्–और आभरण; करियतु आम् कनकम् पोन्ऱु–काले स्वर्ण (लोहे) के से हुए; तूचोटु–वस्त्रों के साथ; मुन्नूल्–तीन तागों का यज्ञोपवीत; मालै–पुष्पमाला; तोल् तरुम् तोऱ्ऱम् आक–चमड़े के से दिखते; मेनि–शरीर; माचोटु करुकि–गन्दा और काला बना; वनप्पु अळिन्तिट–सुन्दरता खो गया; ऊर् वन्तान्–(इस स्थिति में) पुरी में आये; आरुम्–सभी (किसी ने); ची ची अन्ऱु–छिः छिः कहकर; ॲळ्ळ–निन्दा की, तो; तिकैप्पोटु–घबराकर; पळुवम्–वन में; चेर्न्तान्–पहुँच गये। ६६५

उनके रत्नहार, किरीट और अन्य आभरण लोहे के हो गये। वस्त्र, यज्ञोपवीत, पुष्पमालाएँ आदि चमड़े की हो गयी। शरीर गंदा और काला

पड़ गया। इस स्थिति में वे अपने पुर में आये। सभी ने छि: छि: ! कहकर निन्दा की। वे भौचक हो गये और वन में चले गये। ६६५

काऩिडैच् चिऱ्ऱिडु वैहल् कऴित्तोर्नाट् कौशि हप्पेर्क्
कोऩिरुन् दवञ्जॅय् शोलै कुऱुहिऩन् कुऱुह वऩ्ऩाल्
ईऩऩी याव नॅऩ्ऩै नेर्न्ददिव् विडैयि नॅऩ्ऩ
मेऩिहऴ् पॉरुळ्हऴ् यावुम् विळम्बिऩन् वणङ्गि वेन्दन् 666

काऩ् इटै–वन में; चिऱ्ऱितु वैकल् कऴित्तु–कुछ समय व्यतीत करके; ओर् नाऴ्–एक दिन; कौचिकऩ् पेर् कोऩ्–कौशिक संज्ञित राजा (के); इरु तवम् चॅय् चोलै–कठोर तपस्या करनेवाले आश्रम में; कुऱुकिऩऩ्–पहुँचकर; कुऱुक–उनके पास गये, तब; अऩ्ऩाऩ्–उन्होंने; ईऩऩ् नी–चण्डाल तुम; यावऩ्–कौन हो; इ इटैयिल्–इस स्थान में; नेर्न्ततु अॅऩ्ऩै–(तुम्हारा) आना क्योंकर; अॅऩ्ऩ–पूछने पर; वेन्तऩ्–राजा त्रिशंकु ने; वणङ्कि–नमन कर; मेल् निकऴ् पॉरुळ्कळ् यावुम्–पहले बीती सब बातें; विळम्पिऩऩ्–बताईं। ६६६

अटवी में कुछ समय बिताने के बाद, एक दिन वे कौशिकजी जहाँ तपस्या कर रहे थे उनके आश्रम में आये और उनके सम्मुख गये। कौशिक ने उनको देखकर विस्मय से पूछा कि तुम कौन हो नीच ! यहाँ आये क्यों ? राजा त्रिशंकु ने आप-बीती सारी बातें कह सुनायीं। (त्रिशंकु जान बूझकर कौशिक के पास गये क्योंकि वे वसिष्ठजी के शत्रु थे और त्रिशंकु को वसिष्ठजी से मनमुटाव था।)। ६६६

इऱ्ऱिदो वॅऩ्न नक्किङ् गियानिरु वॅळ्वि मुऱ्ऱित्
तुऱ्ऱिय तऩुवि नोडु मेऱ्ऱुवॅन् सुवर्क्क मॅऩ्ना
मऱ्ऱुमा दवरैक् कूव वन्दऩर् वशिट्टऩ् मैन्दर्
कऱ्ऱिल मरशऩ् वॅळ्वि कनऱ्ऱुऱै पुलैयर् कीवाऩ् 667

इऱ्ऱितो–इतना ही; अॅऩ्न–कहकर; नक्कु–हँसकर; इङ्कु–अब; याऩ्–मैं; इरु वेळ्वि मुऱ्ऱि–बड़ा यज्ञ करके; तुऱ्ऱिय तनुविनोटुम्–प्राप्त इस तन के साथ ही; चुवर्क्कम् एऱ्ऱुवॅऩ्–स्वर्गारोहण करा दूँगा; अॅऩ्ना–कहकर; मऱ्ऱुम् मातवरै कूव–और महा तपस्वियों को आमन्त्रित करने पर; वन्तनर्–(अनेक) आये; वचिट्टऩ् मैन्तर्–वसिष्ठ के पुत्र; अरचऩ्–राजा (क्षत्रिय); कऩल् तुऱै वेळ्वि–अग्नि-मुख यज्ञ (फल) को; पुलैयर्कु ईवाऩ्–चण्डाल को देगा; कऱ्ऱिलम्–(यह यज्ञ-कार्य हम ने) नहीं सीखा है। ६६७

उनकी बातें सुनकर कौशिक 'इतनी सी बात' कहकर हँसे। फिर धीरज दिया कि मैं एक प्रबल यज्ञ करूँगा और तुम्हें सशरीर स्वर्ग पर चढ़ा दूँगा। उन्होंने तपस्वियों को बुला भेजा। अनेक आये भी। पर वसिष्ठजी के पुत्रों ने निन्दा की कि वाह ! एक क्षत्रिय राजा यज्ञ करता है और उसका फल चंडाल को मिलेगा ! ऐसा यज्ञ-कार्य हमने नहीं सीखा है। ६६७

ऍन्ऱुरैत् तियाड्ग ळॊल्लो मॆन्ऱऩ रॆन्ऩप् पॊङ्गिप्
पुत्ऱॊळिर् किराद राहिप् पोहॆन्ऩप् पुहल लोडुम्
अन्ऱव रॆयिन राहि यडविह डोरुळ् ञॆन्ऱार्
निन्ऱुवेळ् वियैयु मुट्रि निराशनर् वरुह वॆन्ऱान् 668

ऍन्ऱु उरैत्तु–यह कहकर; याङ्कळ् ऑल्लोम्–हम सहमत नहीं होंगे; ऍन्ऱनर्–यह कहा; ऍन्ऩ–कहने पर; पॉङ्कि–क्रोधोत्तप्त होकर; पुन् तॉळिल् किरातर् आकि–नीचकर्मी किरात बनकर; पोक–चलो; ऍन्न पुकललोटुम्–यह कहने पर; अन्ऱु–तभी; अवर–वे वसिष्ठ-पुत्र; ऍयिनर् आकि–किरात बनकर; अटविकळ् तोरुम् चॆन्ऱार्–अटवी-अटवी में घूमने लगे; निन्ऱु–(कौशिक) स्थिर रहकर; वेळ्वियैयुम् मुट्रि–यज्ञ को पूरा करके; निराचनर्–निरशन देवता; वरुक–आइये; ऍन्ऱान्–कहकर निमन्त्रित किया। ६६८

उन्होंने यह कहकर कि हम सहमत नहीं है साफ़ इनकार कर दिया। विश्वामित्र को उनकी बातें जानकर बड़ा क्रोध आ गया। तुरंत शाप दिया कि तुम सब नीच कर्म करनेवाले किरात बन जाओ। वे भी विराध बनकर अटवी-अटवी घूमने लग गये। फिर कौशिक जी ने अपने वचन पर अटल रहकर यज्ञ संपन्न किया और देवताओं को 'आओ' कहकर निमंत्रित किया। ६६८

अरशनिप् पुलैयर् कॊन्ने यनऱ्ऱुरै मुट्रि यॆम्मै
विरशुह वल्लै यॆन्ऱल् विळ्मिदॆन् ट्रिहळ्न्दु नक्कार्
पुरशमा कळिट्रित् वेन्दैप् पोहनी तुरक्कम् याने
उरैशॆय्देन् ट्रवत्ति नॆन्न वोङ्गिनन् विमानत् तुम्बर् 669

ऍन्ने–यह क्या (अन्याय है); अरचन्–राजा; इ पुलैयर्कु–इस चण्डाल के लिए; अत्तल् तुरै मुट्रि–अग्नि-कर्म (यज्ञ) सम्पन्न कर; ऍम्मै–हमें; वल्लै–शीघ्र; विरचुक–आना; ऍन्ऱल्–कहना; विळ्मितु–श्रेष्ठ है; ऍन्ऱु–कहकर; इकळ्न्तु–निन्दा करके; नक्कार्–हँस उठे; पुरचै मा कळिट्रिन्–रस्सी-बँधे गलों के बड़े हाथियों वाले; वेन्तै–राजा को; नी तुरक्कम् पोक–तुम स्वर्ग जाओ; तवत्तिन्–तपोबल से; याने उरै चॆय्तॆन्–मैंने कहा; ऍन्न–यह आज्ञा देने पर; विमानत्तु–विमान पर; उम्पर् ओङ्किनान्–आकाश में उड़े। ६६९

देवता लोग कौशिक की निन्दा करके हँसने लगे। यह क्या विपरीत बात चलती है! अग्निकर्म प्रधान यज्ञ एक राजा करे, वह भी एक चंडाल के हित में; तिस पर हमको भी 'हविर्भाग लेने के लिए तुरत आना' यह आज्ञा दी जाय! वे नहीं आये। कौशिक ने हाथियोंवाले राजा से कहा कि अब अपने तपोबल के आधार पर कहता हूँ। तुम जाओ स्वर्ग में। तब एक विमान आया। वह त्रिशंकु को लेकर ऊपर स्वर्ग की ओर उड़ा। ६६९

आङ्गवन् ऱुरक्क मॆय्द वमरर्हळ् वॆहुण्डु नीशन्
ईङ्गुवन् दडैव दॆन्नै यिरुनिलत् तिळिह वॆन्नत्

ताङ्गुद लिऩ्ऱि वीऴ्वाऩ् ऱापद शरण मॆऩ्ऩ
ओङ्गिनी निल्लु निल्लॆऩ् ऱुरैत्तुरु मीक्क नक्काऩ् 670

आङ्कु—तब; अवऩ् तुऱक्कम् ऍय्त—उनके स्वर्ग जाने पर; अमरर्कळ्—अमर लोगों के; वॆकुण्टु—कोप करके; नीचऩ्—चण्डाल; ईङ्कु वऩ्तु—यहाँ आकर; अटैवतु—पहुँचोगे; ऍऩ्ऩै—यह क्या है; इरु निलत्तु इऴिक—विशाल भूमि पर गिर जाओ; ऍऩ्ऩ—कहने पर; ताङ्कुतल् इऩ्ऱि—निराधार होकर; वीऴ्वाऩ्—(औंधे) गिरनेवाले; तापत चरणम्—तापस, शरण; ऍऩ्ऩ—चिल्लाने पर; ओङ्कि—हाथ ऊँचे उठाकर; नी निल् निल् ऍऩ्ऱु—तुम रुको, रुको कहकर; उरुम् ऒक्क—वज्र के समान; उरैत्तु—(उच्च स्वर में) कहकर; नक्काऩ्—हँसे। ६७०

जब त्रिशंकु स्वर्ग में पहुँचे तब देवों ने क्रोध के साथ कहा— नीच, तुम इधर आओगे कैसे ? यह नहीं होने का। चलो; गिरो भूमि पर। इस पर त्रिशंकु निराधार होकर औंधे नीचे गिरने लगे। तब वे घबड़ाकर चिल्लाये कि हे तापस ! मैं गिर रहा हूँ। कोई रक्षक नहीं। आप ही मेरे शरण्य हैं। तब कौशिक ने हाथ ऊपर उठाकर वज्रघोष-सम उच्च स्वर में आज्ञा दी कि रुको, रुको वहीं, और वे ठठाकर हँसे। यह क्रोध की हँसी थी। ६७०

पेणल रिहऴ्न्द विण्णोर् पॆरुम्बद मुदला मऱ्ऱैच्
चेणमुऴु दमैप्प लॆऩ्ऩाच् चॆऴुङ्गदिर् कोणा डिङ्गळ्
माणोऴि कॊंडादु तॆऱ्कु वडक्कदाय् वरुह मऱ्ऱैत्
ताणुवॊ डूर्व यावुञ् जमैक्कुवॆ ऩॆऩ्ऩुम् वेलै 671

पेणलर्—न माना; इकऴ्न्त—निन्दा करनेवाले; विण्णोर्—देवों के; पॆरुपतम् मुतलाक—उन्नत पद आदि; मऱ्ऱै चेण् मुऴुतुम्—अन्य सब देवलोक; अमैप्पल्—सृष्ट करूँगा; ऍऩ्ऩा—कहकर; चॆऴु कतिर्—संकुल किरणोंवाले सूर्य; तिङ्कळ्—चन्द्र; कोळ्—ग्रह; नाळ्—तारे; माण् ऒऴि कॊंटातु—महाप्रकाश बिना खोये; तॆऱ्कु वटक्कु अतु आय्—दक्षिण से उत्तर की ओर; वरुक—संचार करेंगे; मऱ्ऱै—इनके अलावा; ताणुवॊटु—स्थावरों के साथ; ऊर्व—जंगम भी; यावुम्—सभी को; चमैक्कुवॆऩ्—सिरजूँगा; ऍऩ्ऩुम् वेलै—कहकर (आरम्भ करते) समय। ६७१

कौशिक ने प्रतिज्ञा की। देवों ने मेरा अनादर किया; त्रिशंकु को निंदा करके गिरा दिया। अब नये देवता और नये देव-लोकों की सृष्टि कर दूँगा। सूर्य, चन्द्र अन्य ग्रह, नक्षत्र आदि सभी नये बनेंगे। सूर्य और चन्द्र दक्षिण से उत्तर जायँगे। नये सूर्य और चन्द्र आदि प्रकाश में कम नहीं रहेंगे। उन्होंने सृष्टि आरम्भ भी कर दी। तब; । ६७१

नरैत्तरु वुडैय कोऩु नाऩ्मुहक् कडवु डानुम्
करैत्तरु कळनु मऱ्ऱैक् कडवुळर् यारुन् दॊक्कुप्
पॊरुत्तरुण् मुऩिव निऩ्ऩैप् पुहल्पुहुन् दवनैक् कात्तल्
अऱत्तिऱ नॆऩ्ऱुन् दारा कणत्तव ऩमर वॆऩ्ऱार् 672

नऱ्ऱु तरु उटैय कोतुम्—सुगन्धपूर्ण कल्पादि तरुओं के स्वामी, देवेन्द्र; नाल् मुकम् कटवुळ् तान्नुम्—चतुर्मुख देव; कऱ्ऱु तरु कळनुम्—और नीलकण्ठ (शिवजी); मऱ्ऱै कटवुळर्—अन्य देवता; यारुम्—सभी; तॊक्कु—जमा होकर; तॊक्कु—एकत्र होकर; मुत्तिव—मुनिवर; पॊऱुत्तरुळ्—क्षमा कीजिये; निन्नै पुकल् पुकुन्तवर्त्—आपकी शरण में आगत को; कात्तल्—रक्षित करना; अऱम् तिऱन्—धर्म-कर्म है; अवन् ऎन्ऱुम्—वे हमेशा; ताराकणत्तु अमर—तारागणों में मिलित रहें; ऎन्ऱार्—कहा। ६७२

नंदनवन के स्वामी इन्द्र, चतुर्मुख ब्रह्मा, नीलकंठ शिवजी और अन्य देवता मिले। मुनिवर के सामने आकर प्रार्थना की। मुने! क्षमा करें। हम मानते है कि शरणागत की रक्षा करना धर्म-कार्य है। अतः त्रिशंकु का नक्षत्रगण में स्थान हो। ६७२

अरशमा दवन्नी यादि यैनुदुना डन्पाल् वन्दुन्
पुरैविळक् किडुह वॆन्नाक् कडवुळर् पोय पिन्नर्
निरैदवन् विरैवि न्नेहि नॆडुङ्गडर् करशन् वैहुम्
उरविड मदनै नण्णि युरुदव मुञ्ऱुङ् गालै 673

कटवुळर्—देवों ने; नी अरच मातवन् आति—आप राजर्षि हो जायें; ऐनुतु नाळ्—पाँच तारे; तॆन् पाल् वनुतु—दक्षिण में आकर; उन् पुरै विळक्किटुक—आपकी महिमा प्रकट करते रहें; ऎन्ना—कहकर; पोय पिन्तर्—जाने के बाद; निरै तवन्—बारी-बारी से (दिशाओं में) तपस्या करते आनेवाले; विरैविन् एकि—शीघ्र जाकर; नॆटु कटल् कु अरचन् वैकुम्—विशाल सागर के अधिदेव वसित; उरम् इटम् अतन्नै—सबल स्थान (पश्चिम दिशा) में; नण्णि—पहुँचकर; उरु तवम् उञ्ऱुम् कालै—(अपेक्षाकृत) अधिक कठिन तपस्या करते समय। ६७३

उन्होंने आगे कहा— राजन्! आप भी राजर्षि कहलायेंगे। आपने पाँच नक्षत्र जो सिरजे हैं वे दक्षिण में रहकर आपकी कीर्ति प्रकट करते रहें। यह वर देकर वे चले गये। अब कौशिक को यथार्थ वस्तु-स्थिति याद आयी। उनका तप पूर्ण नहीं हुआ। वे दो दिशाओं में तप कर चुके थे। अब समुद्र के अधिष्ठाता देवता, वरुण की प्रसिद्ध पश्चिम दिशा में गये और कठोर तपस्या में लग गये। उस समय; । ६७३

कुदैवरि शिलैवाट् टानैक् कोमह नम्ब रीडन्
शुदैतरु मॊऴियान् वैयत् तुयिर्क्कुयि राय तोन्ऱल्
वदैपुरि पुरुड मेदम् वहुप्पवोर् मैनुदर् कॊळ्वान्
शिदैविल कन्नहन् देर्कॊण् डडविह डुरुविच् चॆन्ऱान् 674

कुतै वरि चिलै—डॉता-बन्धन सहित धनुष; वाळ्—तलवारें; तानै—सेना, इनके पति; चुतैतरु मॊऴियान्—सुधा-सम वचनवाले; वैयत्तु उयिर्क्कु उयिर् आय—जग के जीवों के प्राण-सम; तोन्ऱल्—श्रेष्ठ; कोमकन् अम्परीटन्—राजा अम्बरीष; पुरुट वतै पुरिमेतम् वकुप्प—नरमेध यज्ञ करने के निमित्त; ओर् मैन्तन् कॊळ्वान्—एक

युवा को खरीदने के विचार से; तेर्–रथ पर; कनकम्–स्वर्ण; चितैवु इल कॊण्टु–अक्षय राशि लेकर; अटविकळ्–अनेक वनों में; तुरुवि चॆन्ऱान्–खोजते हुए चले। ६७४

राजा अंबरीष अयोध्या में राज कर रहे थे। वे श्रेष्ठ धनुर्धर, तलवार के धनी और श्रेष्ठ सेना के स्वामी थे। मधुर-भाषी भी थे। पृथ्वी के सारे जीवों को प्राण-सम प्रिय थे। (उन्होंने कोई यज्ञ किया। यज्ञ-पशु को इन्द्र ने चुराकर छिपा दिया। पुरोहितों ने कहा कि किसी कुमार की ही बलि देकर यज्ञ को पूरा कीजिए, नही तो बड़ा अनर्थ हो जायगा--वालमीकी) वे नर-मेध-यज्ञ करने के विचार से एक कुमार की खोज में, अपने रथ पर अपार धनराशि लेकर, वनों में घूमने लगे। (इस पद में 'कुतै', एक शब्द आया है। उसके दो अर्थ पाये जाते हैं। एक धनुष के अंत में डोरा बांधने का दाँता; दो : डोरे में तीर टिकाने के लिए बनी गाँठ; शायद गुत्थी का तमिऴ रूप है?)। ६७४

नऱ्ऱव रिशिकन् वैकुम् नन्तैवरुम् पळुव नण्णिक्
कॊऱ्ऱवन् विनव लोडु मिशैन्दनर् कुमरर् तम्मुळ्
पॆऱ्ऱव ळिळव लॆऱ्के यॆन्ऱनळ् पिदामु नॆन्ऱान्
मऱ्ऱैय मैन्द नक्कु मन्नवन् ऱन्नै नोक्कि 675

कॊऱ्ऱवन्–राजा; नल् तवम् रिचिकन् वैकुम्–श्रेष्ठ तपस्वी, ऋचीक जहाँ रहते थे उस; नन्तै वरुम् पळुवम्–पुष्प वृक्षाकीर्ण आश्रम में; नण्णि–पहुँचकर; विनवलोटुम्–पूछने पर; कुमरर् तम्मुळ् इचैन्ततर्--ऋषि-पुत्र आपस में सहमत हो गये; पॆऱ्ऱवळ्–माता (कौशिकी) ने; इळवल्–कनिष्ठ; ऍऩ्ऱके–मेरा ही (नहीं दूँगी); ऍन्ऱनळ्–कहा, पिता-पिता ने; मुन् ऍन्ऱान्–ज्येष्ठ (मेरा), कहा; मऱ्ऱैय मैन्तन्–बाकी रहा पुत्र, (शुनःशेप); नक्कु–हँसते हुए; मन्नवन् तन्नै–राजा को; नोक्कि–देखकर। ६७५

वे ऋचीक मुनि के आश्रम में आये। राजा ने उनसे पूछा। वे मधुर-भाषी तो थे ही। ऋचीक के तीनों पुत्र उद्यत हो गये। पर उनकी माता ने कहा कि मैं कनिष्ठ पुत्र को नहीं दूँगी, वह मुझे अत्यंत प्यारा है। पिता ऋचीक ने ज्येष्ठ पुत्र को रख लिया। तब जो बचा था वह (शुनःशेप) हँसा। उसने राजा से कहा। ६७५

कॊडुत्तरुळ् वॆरुक्कै वेण्डिऱ् ऱॊऱ्कमाम् विळुमङ् गुन्ऱ
ऍडुत्तॆन्नै वळर्त्त तादैक् कॆन्ऱवर् ऱॊळुदु वेन्दन्
तडुप्परुन् देरि लेऱ्ऱित् तडैयिलर् पडर्द लोडुम्
शुडर्क्कदिर्क् कडवुळ् वानत् तुच्चियज् जूळल् पुक्कान् 676

ऍन्नै ऍटुत्तु वळर्त्त–मुझे जन्म देकर जिन्होंने पाला; तातैक्कु–उन पिता को; ऒऱ्कम् आम् विळुमम् कुन्ऱ–दरिद्रतारूपी दुख दूर करते हुए; वेण्टिऱ्ऱ वॆरुक्कै कॊटुत्तु अरुळ्–यथेष्ट धन देने की कृपा करें; ऍन्ऱु–कहकर; अवन् तॊळुतु–उन

(पिता) का नमस्कार करके (उनसे विदा लेकर); वेन्तन्–राजा के; तटुप्पु अरुम् तेरिल् एऱि–दुर्दम रथ पर चढ़कर; तटै इलर्–अबाध हो; पटर्तलोटुम्–जाते रहे, तब; चुटर् कतिर् कटवुळ्–उज्ज्वल अंशुमाली; वानत्तु–आकाश के; उच्चि चूळल् पुक्कान्–मध्यप्रदेश में आये। ६७६

राजन्! मैं माता-पिता, दोनों से त्यक्त हो गया हूँ। उनकी इच्छा मुझे याग-पशु के रूप मे देने की है। इसलिए मैं आपके साथ आऊँगा। आप मेरे पिता की दरिद्रता को दूर कर सकने वाली धनराशि दे दीजिये। फिर उसने अपने पिता को नमस्कार करके विदा ली। राजा और वह, राजा के शीघ्रगामी रथ पर सवार हो गये। रथ विना किसी वाधा के चलने लगा। रास्ते में मध्याह्न हो गया। ६७६

अव्वयि निळिन्दु वेन्द नरुङ्गडन् मुऱैयि नाऱ्ऱच्
चॅव्विय कुरिशि ऱानुञ् जॅन्ऱन नियमञ् जॅय्वान्
अव्विय मवित्त शिन्दै मुनिवनै याण्डुक् काणाक्
कव्वयि नोडुम् बाद कमलम दुच्चि शेर्त्तान् 677

अ वयिन्–उस (मध्याह्न-) समय; वेन्तन्–राजा (अम्बरीष); इळिन्तु–(रथ से) उतरकर; अरुकटन्–अतिशय (प्रभावक) आह्निक कर्म; मुऱैयिन् आऱ्ऱ–सही प्रकार से करने गये, तब; चॅव्विय कुरिचिल् तानुम्–सीधा-सादा और श्रेष्ठ कुमार भी; नियमम् चॅय्वान्–नित्यनियम करने के लिए; चॅन्ऱनन्–गया; आण्टु–वहाँ; अव्वियम् अवित्त चिन्तै–ईर्ष्या (आदि दुर्गुणों) का अभाव जिसमें हो गया हो, ऐसे मनवाले; काणा–देखकर; कव्वैयितोटुम्–आकुलता के साथ; पात कमलम् अतु–उनके चरणकमल; उच्चि चेर्त्तान्–अपने सिर पर लगा लिये। ६७७

तब राजा अंवरीष रथ से उतरकर नित्य-कर्म करने में लगे। सदाचारी ऋषिपुत्र भी नियत कर्म करने गया। वहाँ उसने अपने मामा, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों के विजयी कौशिक को देखा। उनको देखते ही वह अपना दुख छिपा नहीं सका और रोते हुए उनके पैरों पर सिर रखकर दंडवत् किया। ६७७

विऱप्पॉडु वणक्कञ् जॅय्द विडलैयै यिनिदु नोक्किच्
चिऱप्पुडै मुनिव नॅन्नै तॅरुमरल् शॅप्पु हॅन्न
अऱप्पॉरु ळुणर्न्द मेलो यन्नयु मत्तन् ऱानुम्
उऱप्पॉरुळ् कॉण्डु वेन्दर् कुदविन रॅन्नै यॅन्ऱान् 678

विऱप्पॊटु–(मृत्यु-) भय के साथ; वणक्कम् चॅय्त–विनत; विटलैयै–छोटे लड़के को; चिऱप्पु उटै(य) मुनिवन्–तपोविशिष्ट मुनि ने; इनितु नोक्कि–स्नेह के साथ देखकर; तॅरुमरल् ॲन्नै–संकट क्या; चॅप्पुक–वताओ; ॲन्न–कहा, तब; अऱम् पॊरुळ् उणर्न्त–धर्मार्थ जाननेवाले; मेलोय्–उत्तम; अन्नैयुम् अत्तन् तानुम्–मेरी माता और पिता स्वयं; उऱ पॊरुळ् कॊण्टु–खूब धन लेकर; वेन्तर्कु–

(अम्बरीष) राजा को; ऍऩ्ऩै उतवित्तर्–मुझे दे दिया; ऍऩ्ऱाऩ्–(शुनःशेप ने) कहा। ६७८

भयभीत हो अपने चरणों पर पड़े लड़के को देखकर कौशिक ने आर्द्र-दृष्टि के साथ पूछा कि लड़के ! क्या बात है ? यह घबड़ाहट क्यों ? बोलो। तब शुनःशेप ने कहा— धर्म की गति-विधि जाननेवाले महात्मा ! मेरी माता और मेरे पिता ने यथेष्ट धन लेकर मुझे राजा अंबरीष के हाथ में बेच दिया है। ६७८

मैत्तुन ऩोडु मुन्नोळ् वऴङ्गिय माऱ्ऱङ् गेळात्
तत्तुऱ लॊऴिनी याऩे तडुप्पॅऩिऩ् ऩुयिरै यॅन्ऩाप्
पुत्तिरर् तम्मै नोक्किप् पोहवेन् दोडु मॅन्ऩ
अत्तहु मुऩिवऩ् कूऱ ववर्मरुत् तहऱ्ऱल् काणा 679

अ तकु मुऩिवऩ्–उन श्रेष्ठ मुनि ने; मुऩ्ऩोळ्–बड़ी भगिनी; मैत्तुऩऩ्ओडु–और उसके पति के; वऴङ्किय–दे देने का; माऱ्ऱम्–समाचार; केळा–सुनकर; नी तत्तु उऱल् ऑऴि–तुम घबड़ाना छोड़ दो; याऩे–मैं स्वयं; निऩ् उयिरै–तुम्हारे प्राणों को; तडुप्पॅऩ्–रोकूँगा; ऍऩ्ऩा–कहकर; पुत्तिरर् तम्मै–पुत्रों को; नोक्कि–देखकर; वेन्तोटुम् पोक–राजा के साथ जाओ; ऍऩ्ऩ कूऱ–यह कहने पर; अवर्–उनका; मरुत्तु–नकार कर; अकऱ्ऱल्–हटना; काणा–देखकर। ६७९

इन श्रेष्ठ राजर्षि ने अपनी बहन और अपने बहनोई के पुत्र-विक्रय की बात सुनकर उसको आश्वासन दिया कि तुम चिंता करना छोड़ दो। मैं तुम्हारे प्राण अवश्यमेव बचा लूँगा। फिर उन्होंने अपने पुत्रों से कहा कि तुममें कोई इसके स्थान में जाओ। लेकिन पुत्रों में कोई भी सहमत नहीं हुआ। वे इनकार करके हट गये। ६७९

ऑऴुङ्गदि रवऩु नाणच् चिवन्दऩ निरुह णॅञ्जम्
पुऴुङ्गिऩऩ् वडवै तीय मयिर्प्पुऱम् पॉऱियिऩ् ऱुळ्ळ
अऴुङ्गलिल् शिन्दै यानी रडविह डोरुञ् चॅन्ऱे
ऑऴुङ्गरु पुळिऩ राहि युरुतुय रुरुह वॅन्ऱान् 680

ऑऴुम् कतिरवनुम् नाण–उदय सूर्य को भी लज्जित करते हुए; इरु कण् चिवन्तऩ–दोनों आँखों को लाल किया; नॅञ्चम् पुऴुङ्किनऩ्–खिन्नमन हुए; वटवै तीय–बड़वा को भी झुलसाते हुए; मयिर् पुऱम् पॉऱियिऩ् तुळ्ळ–रोंगटे अंगारों से भरे; अऴुङ्कल् इल् चिन्तैयाल्—सहानुभूति-रहित चित्त के कारण; नीर्–तुम; ऑऴुङ्कु अऱु–व्यवस्थाहीन; पुळिनर् आकि–व्याध बनकर; अटविकळ् तोऱुम् चॅन्ऱु—जंगल-जंगल घूमकर; उरु तुयर् उरुक्–अधिक कष्ट उठाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ६८०

उनका काम देखकर राजर्षि को इतना क्रोध आया कि आँखें उदय-सूर्य से भी अधिक लाल हो गयीं। मन उत्तप्त हो गया। बड़वाग्नि को भी जला दे, ऐसी आग के अंगारे रोम-कूपों में भर गये। अपने पुत्रों को

शाप देते हुए ऋषि ने कहा— निष्ठुर चित्तवाले हो, तुम लोग। व्यवस्था-हीन (दुराचारी) व्याध वन जाओ और वन-वन में भटक कर संकट भोगो। ६८०

मामुनि वॅहुळि तन्नान् मडिहला मैनुदर् नाल्वर्
तामुरु शवर राहच् चवित्तॅदिर् चलित्त शिन्दै
एमुऱ लॉळ्ळिह विन्ने पॅरुहॅन विरण्डु विञ्जै
कोमरु हनुक्कु नल्हिप् पिन्नरुङ् गुऱिक्क लुऱ्ऱान् 681

मामुनि वॅकुळि तन्नाल्–महर्षि (वसिष्ठ जी) के कोप से; मटिकला–जो तब विना मरे (बचे); नाल्वर् मैनुतर्–(उन) चारों पुत्रों को; ताम् उरु चवरर् आक चपित्तु–नीच शवर बनने का शाप देकर; ऍतिर्–सामने रहे; चलित्त चिन्तै–अधीरमन; को मरुकनुक्कु–उत्तम गुणी भांजे से; एम् उरल् ऑळिक–दुख करना छोड़ दो; इरण्टु विञ्चै इन्ने पॅरुक–दो विद्याएँ आज ही प्राप्त कर लो; ऍन–कहकर; नल्कि–देकर; पिन्नरुम् कुऱिक्कल् उऱ्ऱान्–आगे भी बोलने लगे। ६८१

विश्वामित्र जी के अन्य एक सौ पुत्र पहले ही वसिष्ठजी की आँखों की अग्नि से जल गये थे। चार ही बचे थे। वे चारों पुत्र नीच शवर बन गये। उनको ऐसा शाप देकर चिंताकुल भांजे से ऋषि ने कहा। चिंता छोड़ दो। मैं तुमको दो विद्याओं का उपदेश दूँगा। उन्होंने उसे दो विद्यायें (मंत्र) सिखायीं और आगे कहा। ६८१

अरशनो डेहि यूपत् तणैयुङ्गाल् मऱैयै योदिन्
विरशुवर् विण्णु ळोरुम् विरिञ्जन्माल् विडैव लानुम्
उरैशॅरि वेळ्वि मुऱ्ऱु मुनदुयिर्क् कीरुण् डाहा
पिरशमॅन् ऱारा यॅन्नप् पळिच्चॊडुम् बॅयर्न्दु पोनान् 682

पिरचम् मॅन् ताराय्–मधुस्रावी कोमल पुष्पमाला-धारी; अरचनोटु एकि–राजा के साथ जाकर; यूपत्तु अणैयुम् काल्–यूपस्तम्भ से बाँधते समय; मऱैयै ओतिन्–ये मन्त्र जपो तो; विरिञ्चन्–विरंचि; माल्–विष्णु; विटै वलानुम्–और ऋषभ-वाहन; विण्णुळोरुम्–स्वर्गवासी देवता; विरचुवर्–आ जायँगे; उरै चॅरि वॆळ्वि–प्रकीर्तित वह यज्ञ भी; मुऱ्ऱुम्–सम्पूर्ण होगा; उनतु उयिर्क्कु–तुम्हारे प्राणों की; ईऱु उण्टाकातु–हानि नही होगी; ऍन्न–कहने पर; पळिच्चॊटुम्–स्तुति करके; पॅयर्न्तु पोनान्–उठ चला। ६८२

शहद चूनेवाले कोमल पुष्पों की माला पहने हुए वत्स ! तुम राजा के साथ जाओ। (माला पहने हुए) तुमको यूपस्तंभ में बाँधा जायगा। तब तुम यह मंत्र जपो। ब्रह्मा, महाविष्णु, ऋषभवाहन शिवजी और अन्य देवता यज्ञशाला में आयेंगे। उनकी कृपा से राजा का वहुप्रशंसित यज्ञ भी पूरा होगा और तुम्हारे प्राण भी बच जायेंगे। यह सुनकर शुनःशेप कौशिक की, कृतज्ञता के साथ, स्तुति करके चला गया। (इस पद्य में पुष्पमाला-धारी का संबोधन आया है। वह शुनःशेप का हो सकता है जो विश्वामित्र ने किया, या श्रीराम का हो सकता है, शतानंद द्वारा किया हुआ।) । ६८२

मरैमुनि युरैत्त वण्ण महत्तुरै मैन्द तायच्
चिरैयुरु कलुळ तन्नञ् जेमुदर् पिरवु मूरुम्
इरैवर्तोक् कमरर् चूळ विळवरन् नुयिरुम् वेन्दन्
मुरैतरु महमुङ् गात्तार् वडदिशै मुनियुञ् जॅन्रान् 683

मैन्तत्–कुमार (शुनःशेप); मकम् तुरै–यागशाला में; मुनि उरैत्त वण्णम्–महर्षि के कहे अनुसार; मरै आय–वेदमन्त्र जपा, तब; चिरै उरु कलुळत्–उत्तम पक्षीराज गरुड़; अन्नम्–हंस; चे–और ऋषभ; मुतल्–आदि; पिरवुम्–अन्य वाहनों पर; ऊरुम्–आरूढ़; इरैवर–देवताओं ने; अमरर् चूळ–अन्य देवताओं के घेरकर आते; तोक्कु–एकत्र होकर; इळवल् तन् उयिरुम्–बालक की जान; वेन्तन्–राजा अम्बरीष के; मुरै तरु–विधि-विहित; मकमुम्–मख को भी; कात्तार–रक्षित किया; मुनियुम्–ऋषि भी; वट तिचै–उत्तर की दिशा में; चॅन्रान्–गये। ६८३

वेदज्ञ विश्वामित्र की सीख के अनुसार शुनःशेप ने यागवेदी पर मंत्र-जप किया तो पक्षीराज गरुड़ारूढ़ महाविष्णु, हंसारूढ़ ब्रह्मा, ऋषभारूढ़ शिवजी और अपने-अपने वाहनों पर अन्य प्रधान देवता अन्य देवताओं के साथ आये। शुनःशेप के प्राण और राजा के यज्ञ की रक्षा हो गई। इसके बाद राजर्षि कौशिक उत्तर दिशा में तप करने पहुँच गये। ६८३

वडादिशै मुनियु नण्णि मलर्क्कर नाशि वैत्ताङ्
गिडावुपिङ् गलैता नैय विदयत्तु ॲळुत्तोन् ॲण्णि
विडादुपल् परुव निरॅप मूलमा मुहड्डु विण्ड्डु
तडादिरुट् पडल मूडच् चलित्तदॅत् तलमुन् दावि 684

मुनियुम्–मुनि भी; वट तिचै नण्णि–उत्तर दिशा में जाकर; आङ्कु–वहाँ; मलर् करम् नाचि वैत्तु–कमलहस्त (की उँगलियाँ) नासिका पर रखकर; इटावु पिङ्कलै ताम् नैय–(श्वास को) ईडा, पिंगला (द्वारा जाना) रोककर; इतयत्तु ऊटु–मन में; ॲळुत्तु ऑन्रु–एक अक्षर (ओं) का; ॲण्णि–ध्यान कर; विटातु पल् परुवम् निरॅप–निरन्तर अनेक काल खड़े रहे, तब; मूलम्–मूलाग्नि से; मा मुकट्टु विण्टु–श्रेष्ठ कपाल फटा तब; इरुळ् पटलम्–अन्धकार के समान धुआँ का पुंज; तटातु तावि मूट–अबाधगति से सर्वत्र छाकर ढाँप गया तो; ॲ तलमुम् चलित्ततु–सब लोक विचलित हुए। ६८४

वहाँ उन्होंने नासिका पर उंगली रखकर प्राणायाम करके इड़ा, पिंगला में जानेवाले श्वास को रोका और उन नाड़ियों को क्रिया-हीन बनाया। ओंकार के ध्यान में निरंतर अनेक वर्ष एक ही प्रकार खड़े रहे। फलस्वरूप मूलाग्नि ऊपर को उठी और सिर को भेद गई। तब जो धुआँ उठा वह विश्व भर में व्याप गया। सभी लोक विचलित हुए। ६८४

ॲयिलॅ रित्तवन् यान्यु रित्तुमॅय्, पयिलु रत्तनि पोर्त्तनन् पण्बॅनप्
पुयल्वि रित्तॅळुन् दालॅनप् पूदलम्, कुयिलु रुत्तिक् कॊळुम्बुहै विम्मवे 685

ऍयिल् ऍरित्तवन्–त्रिपुर जलानेवाले (शिवजी) ने; यातै उरित्तु–गज-चर्म उधेड़कर; मॅय् पयिलुरु–शरीर से लगाकर; तनि–विशिष्ट रीति से; पोर्त्त–ढँक लिया, उस; नल् पणपु ऍन–भले प्रकार से; पुयल्–मेघ; विरित्तु ऍळुन्ताल् ऍन्त–छा उठे, ऐसे; कोंळु पुकै–पुंजीभूत धुआँ; पूतलम्–भूतल को; कुयिल् उरुत्ति–अपने अन्दर समा लेकर; विम्म–विस्तृत हुआ। ६८५

वह अंधकार ऐसा छाया जैसे शिव के शरीर पर उनका उधेड़ा गज-चर्म वेष्टित हुआ। और मेघों के फैलने के समान भी फैला। उस धुएँ में सारा विश्व छिप गया। ६८५

तमन्दि रण्डुल हियावैयुन् दावुरु, निमिर्न्द वॅङ्गदिर्क् कर्रैयु नीङ्गुरुक्
कमन्द मादिरक् कावलर् कण्णोडुम्, शुमन्द नाहमुङ् गण्शुम् बुलित्तवे 686

तमम् तिरण्टु–तम मिलकर; उलकु यावैयुम् तावुरु–लोक भर में फैला, तब; निमिर्न्त–घनीभूत; वॅम् कतिर् कर्रैयुम्–गरम किरणों की राशि भी; नीङ्कुरु–छिप गयी, तो; कमन्त–दायित्वपूर्ण; मातिरम् कावलर्–दिग्पालकों की; कण्णोटुम्–आँखों के साथ; चुमन्त–(भूमि का भार) वहन करनेवाले; नाकम् कण्णुम्–हाथियों की आँखें भी; चुम्पुळित्त–वन्द हुईं। ६८६

तम के सर्वत्र छाने से सूर्य की रश्मि का जाल भी लुप्त हो गया। दायित्वपूर्ण रीति से दिशाओं की रक्षा करनेवाले दिग्पालों और भूमि के भार को उठानेवाले दिग्गजों की भी आँखें झप गयीं। ६८६

तिरिव निर्प शॅहदलत् तियावैयुम्, वॅरुव लुर्रन वॅङ्गदिर् मीण्डन
करुवि युर्र कहनमॅ लाम्बुहै, उरुवि युर्रिड वुम्बर्तु ळङ्गिन्नार् 687

करुवि उर्र–मेघाच्छादित; ककनम् ऍलाम्–गगन सब; पुकै उरुवि उर्रिट–धुआँ व्याप्त होकर फैल गया; चॅकतलत्तु–जगतीतल पर; तिरिव निर्प–चर-अचर; यावैयुम्–सभी; वॅरुवल् उर्रन–डर गये; वॅम् कतिर्–गरम किरणें; मीण्टन–(भेद न सकने के कारण) लौट गयीं; उम्पर् तुळङ्किनार्–आकाशलोक-वासी भयभीत हुए। ६८७

प्राणदायी मेघों के भरे आकाश में सर्वत्र धूम व्याप गया। इसलिए भूतल के सभी चर-अचर भयभीत हो गये। सूर्य-किरणें भी उस धुएँ के पटल को भेद नही पायी। देवता लोग भी भयाक्रांत हो गये। ६८७

पुण्ड रीहनुम् पुट्टरु पाहनुम्, कुण्डै यूर्दि कुलिशियु मर्रुळ
अण्डर् तामुम्वन् दव्वयि नॅय्दिवे, रॅण्ड पोदनन् रन्नै यॅदिर्न्दनर् 688

पुण्टरीकनुम्–कमलासन और; पुळ् तरु पाकनुम्–गरुड़वाहन (विष्णु) और; कुण्टै ऊर्ति–ऋषभ-वाहन (शिवजी); कुलिचियुम्–कुलिशपाणी इन्द्र; मर्रु उळ–अन्य; अण्टर् तामुम्–देव सब (ने); अ वयिन् वन्तु ऍय्ति–वहाँ आ पहुँचकर; वॅरु ऍण्–विशेष रूप से मान्य; तपोतनन् तन्नै–तपोधन से; ऍतिर्न्तनर्–भेंट की। ६८८

तब पुण्डरीक-रूप ब्रह्मा, खगराज गरुड़स्थ विष्णु, ऋषभारूढ़ शिव, कुलिशभृत इन्द्र और अन्य देवता वहाँ आ पहुँचे, और मुनियों में विलक्षण-भूत कौशिक के सामने प्रकट हुए। ६८८

पादि मामदि शूडियुम् पैन्दुळाय्च्, चोदि यानुमत् तूय्मल राळियुम्
वेद पारहर् वेऱिलर् निन्ऩलाल्, माद पोदन्न वॆन्ऩ वळङ्गिनार् 689

मा–महामान्य; पाति मति चूटियुम्–अर्धचन्द्र-धारी और; पचुमै तुळाय् चोतियानुम्–हरे तुलसीपत्र-मालाधारी और; अ तूय् मलर् आळियुम्–उन पवित्र कमल पर उद्भूत (ब्रह्मा); मा तपोतन–महान तपोधन; वेत पारकर्–वेद पारंगत; निन् अल्लाल्–आपको छोड़कर; वेऱु इलर्–कोई नहीं; ऍन्ऩ–ऐसा; वळङ्किनार–(अभिनन्दन वचन) बोले। ६८९

पूज्य अर्धचन्द्रधारी शिवजी, हरी तुलसी-माला से अलंकृत ज्योतिर्मय विष्णुदेव, पवित्र कमल पर आसीन ब्रह्मा—इन्होंने कौशिकजी से उनके सम्मान में कहा—महिमामय तपोधन ! आपको छोड़कर और कोई वेद-पारंगत नहीं है। (वाल्मीकी में, तपस्या के वृत्तांत में थोड़ा अंतर है। इस स्थल में भी यह वृत्तांत है—ब्रह्माजी ने उनको ब्रह्मर्षि मान लिया, पर विश्वामित्र ने चाहा कि 'ओंकार, वषटकार और वेद मुझे वरण करें और ब्रह्मऋषि वसिष्ठ अपनी ओर से मान लें। वही हुआ और विश्वामित्र तृप्त हुए। इस पद में जो 'वेदपारंगत' शब्द आया है उसके विस्तार में यह वृत्तांत भी अंतर्गत माना जा सकता है।)। ६८९

अन्ऩ वाशकङ् केट्टुण रन्दणन्, शॆन्ऩि ताऴ्त्तिरु शॆङ्गर मुङ्गुवित्
तुन्ऩु नल्विनै युऱ्ऱदॆन् ऱोङ्गिनान्, तुन्ऩु तेवर्दम् जूऴलिऱ् पोयिनार् 690

अन्ऩ वाचकम् केट्टु–वे वचन सुनकर; उणर्–ज्ञानी; अन्तणन्–ब्राह्मणत्व प्राप्त (कौशिक जी); चॆन्ऩि ताऴ्त्तु–सिर नवाकर; इरुचॆम् करमुम् कुवित्तु–दोनों सुन्दर हाथ जोड़कर; उन्ऩुम् नल् विनै–इच्छित सुकृत; उऱ्ऱतु–मिल गया; ऍन्ऱु–कहकर; ओङ्किनान्–आनन्द में बढ़े; तुन्ऩु तेवर्–एकत्र देव; तम् चूऴलिल् पोयिनार्—अपने-अपने स्थान गये। ६९०

उनके वचन सुनकर ब्रह्मर्षि ने अपना सिर झुकाया और तृप्ति के साथ हाथ जोड़कर कहा कि मेरा मनोरथ सफलीभूत हुआ और मैं सौभाग्य-वान हुआ। उनका आनंद उमड़ आया। फिर देवता लोग चले गये। ६९०

ईदु मुन्ऩ निहऴ्न्द दिवन्ऱुणै, माद वत्तुयर् माण्बुडै यारिलै
नीदि वित्तहन् ऱन्ऩरु णेर्न्दनिर्, याडु मक्करि दॆन्ऱन नोऱिलान् 691

मुन्ऩम् निकऴ्न्ततु ईतु–पहले घटित हुआ यही; इवन् तुणै–इनके समान; मातवत्तु उयर्–महा तपस्या में उत्कृष्ट; माण्पु उटैयार्–गौरवशाली; इलै–(कोई दूसरे) नहीं; नीति वित्तकन्–अनुष्ठान और ज्ञान के; अरुळ् नेर्न्तनिर्–(इनकी)

कृपा के आप पात्र बने है; उमक्कु अरितु यातु–आपके लिए दुर्लभ क्या है; ऎन्ऱत्तन्–कह चुके; ईरु इलान्–(तप आदि में) अपार ऋषि। ६६१

यह सब विस्तार से वर्णन करके तपोराशि और गुणपूर्ण शतानंद ने श्रीराम और लक्ष्मण से कहा— यही बीता वृत्तांत है। महान् तप में उन्नत इनके समान और कोई नही मिलेंगे। आप इनकी कृपा के पात्र बने हैं। अब आपके लिए अप्राप्य कुछ भी नही है। ६९१

ऎन्ऱु कोतमन् कादलन् कूरिड, वॆन्ऱि वीरर् वियप्पॊं डुवन्दॆळा
ऒन्ऱु मादवन् ऱाळॊळु दोङ्गिय, पिन्नै येत्तिप् पॆयर्न्दनन् ऱन्निडम् 692

ऎन्ऱु–यह; कोतमन् कातलन्–गौतम के प्रिय (पुत्र) के; करिट–कहने पर; वॆन्ऱि वीरर्–विजयी वीर; वियप्पॊटु उवन्तु–विस्मय के साथ आनन्दानुभव करके; ऎळा–आसन से उठकर; ऒन्ऱुम् मातवन्–(तपस्या के फल से) युक्त महातपस्वी (शतानन्द के); ताळ्–पैरों में; तॊळुतु–नमस्कार कर; ऒङ्किय पिन्नै–उठने के बाद; एत्ति–आशीर्वाद देकर; तन् इटम्–(शतानन्द) अपने स्थान; पॆयर्न्ततन्–चले। ६६२

शतानंद के मुख से विश्वामित्र की महिमामय कहानी सुनकर श्रीराम और लक्ष्मण विस्मय और आनंद से फूल उठे। वे शतानंद जी के चरणों में नमस्कार कर उठे। शतानंद उनको आशीर्वाद देकर चले गये। ६९२

*** मुनियुन् दम्बियुम् बोय्मुरै याऱ्ऱमक्, किनिय पळ्ळिह ळॆय्दिय पिन्ऱिरुट्**
कनियुम् बोल्बवन् कङ्गुलुन् दिङ्गळुम्, तनियुन् दानुमत् तैयलु मायिनान् 693

मुनियुम् तम्पियुम् पोय्–मुनि (कौशिक) और छोटे भ्राता, जाकर; मुऱैयाल्–क्रम से; तमक्कु इनिय पळ्ळिकळ्–अपनी-अपनी सुखद शय्या पर; ऎय्तिय पिन्–लेटने के बाद; इरुळ् कनि पोल्पवन्–अन्धकार घन-सम (श्रीरामचन्द्र); कङ्कुलुम्–रात और; तिङ्कळुम्–चन्द्र और; तनियुम्–विविक्तता; तानुम्–और स्वयं; अ तैयलुम्–वे देवी (सीता); आयिनान्–बने। ६६३

महर्षि विश्वामित्र और श्रीराम के भाई लक्ष्मण यथाक्रम अपनी-अपनी शय्या पर लेट गये। (यह क्रम तुलसीदास द्वारा स्पष्ट रूप से वर्णित है। श्रीराम ने विश्वामित्र के चरण चांपे। उनसे आज्ञा लेकर वे अपनी शय्या पर गये। उनके भाई लक्ष्मण उनके पाँव पलोटने लगे। पर श्रीराम को नींद नहीं आयी। उन्होंने श्रीलक्ष्मण को निद्रा करने भेज दिया।) श्रीराम सोये नही और सीताजी की याद में समय काटने लगे। (कवि इस बात को चातुरी से कहते है कि) घनीभूत अंधेरा-सम रंगवाले श्रीराम, रात, चन्द्र, एकांतता और स्वयं और सीताजी (की स्मृति या मिथ्या-दृश्य) इनके साथ रह गये। उन दोनों के लिए शय्या सुखद थी। पर इनके लिए नहीं थी। ६९३

❀ विण्णि नीङ्गिय मिऩ्ऩुरु विम्मुरै, पॆण्णि ऩऩ्ऩलम् पॆट्रुदुण् डेहॊलाम्
अॆण्णि नीदल दॆण्णऱि येऩिरु, कण्णि ऩुळ्ळुङ् गरुत्तिऩुङ् गाण्बॆऩाल् 694

विण्णिऩ् नीङ्किय–आकाश से निकली; मिऩ्–बिजली; इ मुरै–इस प्रकार; इऩ् नल् नलम् पॆण् उरु–मनोरम श्रेष्ठ सुन्दर स्त्री का रूप; पॆट्रु उण्टे आम्–प्राप्त कर आयी, वही है; अॆण्णिऩ्–सोचना है; ईतु अलतु–तो इसके सिवा; अॆण्ण अऱियेऩ्–सोचना नहीं जानता; इरु कण्णिऩ् उळ्ळुम्–दोनों आँखों के अन्दर; करुत्तितुम्–और मन में; काण्पॆऩ्–देखता हूँ। ६६४

श्रीराम विचार करते है कि वह अवश्य एक विद्युल्लता है जो मेघ से छूटकर सुन्दर, सुखद और शालिनी रमणी का श्रेष्ठ रूप लेकर आयी थी। कितना ही सोचता हूँ, पर वही भावना उठती है। वही रूप मेरी आँखों में और मन में अंकित रहता है। ६९४

वळ्ळऱ् चॆक्कैक् करियवऩ् वैहुमव्
वॆळ्ळप् पाऱ्कडल् पोऩ्मिळिर् कण्णिऩाळ्
अळ्ळऱ् पूमह ळाहुङ्गॊ लोवॆऩ
दुळ्ळत् तामरै युळ्ळुरै निऩ्ऱदाल् 695

वळ्ळल् चेक्कै–उदार (शेष-) शायी; करियवऩ्–श्यामल प्रभु; वैकुम्–जहाँ रहते हैं उस; अ वॆळ्ळम् पाल् कटल् पोल्—जल-विस्तार क्षीरसागर के समान; मिळिर्–भासमान; कण्णिऩाळ्–आँखोंवाली; अॆऩतु उळ्ळम्–मेरे हृदयरूपी; तामरै उळ्–कमल में; उरैकिऩ्ऱताल्–ठहरती है, इसलिए; अळ्ळल् पू मकळ्—पंकज-सुमन की देवी; आकुम् कॊल्ओ–है क्या। ६६५

उनकी आँखें शेषशायी, कृष्णवर्ण श्रीविष्णु का वासस्थल, क्षीरसागर के समान प्रकाशमान थीं। (क्षीरसागर आँखों के श्वेत भागों की उपमा है; शेषशय्या काले भाग की। शेष, भगवान के रंग से प्रभावित होकर काला दिखता है। श्रीविष्णु ही आँख की पुतली हैं। सागर की तरंगें सीताजी के मन के भावो की प्रतिछाया है। क्षीरसागर से मारक विष और संजीवनी अमृत, दोनों निकले, पर अलग-अलग प्रकट हुए। पर देवी की आँखें श्रीराम के लिए स्वयं विष भी है और अमृत भी।) वे मेरे हृदय कमल पर आकर विराजमान हैं। तब क्या वे पंकज, कमल-निवासिनी श्री (लक्ष्मी) देवी हैं?। ६९५

अरुळि लाळॆऩि ऩुम्मनत् ताशैयाल्
वॆरुळु नोय्विडक् कण्णिऩ् विळुङ्गलाल्
तॆरुळि लावुल हिऱ्चॆऩ्ऱु निऩ्ऱुवाळ्
पॊरुळॆ लामवळ् पॊऩ्ऩुरु वायवे 696

अरुळ् इलाळ्–अकरुण है; अॆनिनुम्–तो भी; मनत्तु आचैयाल्–मन में उत्पन्न प्रेम का; वॆरुळुम् नोय्विट–भयोत्पादक रोग दूर हो; कण्णिऩ् विळुङ्कलाल्–इस

हेतु अपनी आँखों से (उसके रूप को) निगलने से; तॅरुळ् इला उलकिल्–अस्पष्ट (दिखनेवाले) इस संसार में; चॅन्नुरु निन्नुरु वाळ् पॉरुळ् ॲलाम्–चर, अचर सभी पदार्थ; अवळ् पॉन् उरु–उनके स्वर्ण-रंग के रूप के समान; आय–बन गये। ६९६

वे मेरे प्रति करुणा-हीन हैं। (क्योंकि वे मेरा प्रेम और उससे उत्पन्न वेदना का ख्याल करके, मेरे पास आकर, मेरा ताप नहीं हरती।) तो भी ताप-रोग को दूर करने के हेतु मैंने उनको अपनी आँखों से दवा के रूप में निगल लिया। (मन में उनका रूप बिठाया है।) इसलिए अस्पष्ट इस संसार के चर, अचर सब पदार्थ उन्हीं के से स्वर्ण रंग के दिखाई देते हैं। (यानी अंदर, बाहर, सर्वत्र, सदा उन्ही का रूप दिखाई देता है। संसार को अस्पष्ट कहते है, क्योंकि उनका मन भावाकुल है और चिंतन-शक्ति स्पष्ट नही है।)। ६९६

पूणु लाविय पॉऱ्कल शङ्गळॅन्, एणि लाहत् तॅळुदल वॅन्निनुम्
वाणि लामुरु वऱ्कनि वाय्मदि, काण लावदॉर् कालमुण् डाङ्गॉलो 697

पूण् उलाविय–जिन पर आभरण डोलते हैं उन; पॉन् कलचङ्कळ्–स्वर्णकलश (स्तन); ॲन्–मेरे; एण् इल् आकत्तु–अभागे वक्ष पर; ॲळुतल ॲन्निनुम्–(गाढ़े रूप से) नहीं लगे तो भी; वाळ् निलाम् मुरुवल्–दीप्तियुत मन्दहास के; कनि वाय्–(बिम्ब-) फल सदृश मुख से शोभायमान; मति–मुख (-चन्द्र) को; काणल् आवतु ऑरु कालम्–देखने का एक अवसर; उण्टु आम् कॉल् ओ–मिल सकेगा क्या। ६९७

श्रीराम अपने सामने रिक्त आकाश में सीताजी का मिथ्या रूप देखते; उसका आलिंगन करने के लिए बढ़ते तो वह अदृश्य हो जाता। (तब वे कहते—) उनका आलिंगन, जिससे, उनके स्वर्णाभरणों को अपने स्पंदन से हिलानेवाले, स्वर्ण-घट सदृश उरोज मेरे भाग्यहीन वक्ष को मर्दित कर दें, प्राप्य न हो सका। तो भी क्या कम से कम उनके, मनोरम, हास और बिंबारुण अधरों से युक्त मुख को देखने का सौभाग्य नहीं मिलेगा। ६९७

❀ वण्ण मेहलैत् तेरॉन्रु वाणॅडुङ्, गण्णि रण्डु कदिमुलै तामिरण्
डुण्ण वन्द नहैयुमॅन् रॉन्रुण्डाल्, ॲण्णुङ् गूऱ्रिनुक् कित्तनै वेण्डुमो 698

ॲण्णुम्–(मेरे प्राण हरना) सोचनेवाले; कूऱ्रिनुक्कु–यम के लिए; वण्णम् मेकलै–सुभग मेखला से अलंकृत; तेर् ऑन्रु–(नितम्बरूपी) रथ एक; वाळ् नॅटु कण् इरण्टु–तलवार सी आयत आँखें, दो; कति मुलै इरण्टु–पीन उरोज दो; उण्ण वन्त–(और) प्राण खाने आयी; नकै ॲन्र ऑन्रु उम्–मन्द हँसी नाम का एक; उण्टु–है; इत्तनै वेण्टुमो–इतने चाहिए क्या ?। ६९८

(श्रीराम सीताजी के रूप को यमराज कहते है।) मेरे प्राण हरने की चाह के साथ आनेवाला रूप स्वयं वह काम करने के लिए पर्याप्त समर्थ है। तो भी उसके साथ रथ के स्थान में मेखला-वलयित जघन प्रदेश है;

तलवारों के समान दो आँखें हैं; और पीन दो उरोज हैं। इनके अलावा, प्राणघाती हँसी भी है। इतने साधनों की भी आवश्यकता है क्या ? वे भी एक साथ क्यों ? । ६९८

कन्नल् वार्शिलै काल्वळैत् तेमदन्, पॉन्नै मुन्निय पूङ्गणै मारियाल्
ॲन्नै ॲय्दु तॉलैक्कुमॅन् ड्रालिनि, वन्मै ॲन्नुमि दारिडै वैहुमो 699

मतन्–मदन; कन्नल् वार् चिलै–(इक्षु के) लम्बे धनुष को; काल् वळैत्तु–पैरों से दबाकर, उसे झुकाकर; पॉन्नै मुन्निय–स्वर्ण-सी उस देवी को पुरस्सर करके; पू कणै मारियाल्–पुष्पशर-वर्षा से; ॲन्नै ॲय्तु तॉलैक्कुम्–मुझे आहत कर देता है; ॲन्ड्राल्–तो; इनि–अब; वन्मै ॲन्नुम् इतु–पौरुष नामक वह; आर् इटै वकुमो–किसके पास रहेगा। ६९९

मदन अपने इक्षु-धनुष के सिरे को पैर के नीचे दबाकर, धनुष को झुकाकर, उन स्वर्ण-प्रभ सुन्दरी को मेरे ध्यान का विषय बनाकर, मुझ पर लगातार पुष्प-शर चला रहा है, और मुझे धैर्य-हीन बनाने में सफल हो गया है। तो पुरुषोचित (मनो) बल किसके पास पाया जायगा ? । ६९९

❀ कॉळ्ळै कॉळ्ळक् कॉदित्तेळु पाऱ्कडल्, पळ्ळ वॅळ्ळ मॅनप्पड रुन्निला
उळ्ळ मुळ्ळुऱ् ऱुयिरैत् तुरुवुमाल्, वॅळ्ळै वण्ण विडमुमुण् डाङ्गॉलो 700

कॉळ्ळै कॉळ्ळ–(मेरा प्राण) लूट मारने के हेतु; कॉतित्तु ॲऴु–क्रोधी हो उठनेवाले; पाल् कटल् पळ्ळम् वॅळ्ळम्–क्षीरसागर-जलप्रवाह; ॲन्न पटरुम्–समान फैलनेवाली; निला–चाँदनी; उळ्ळम् उळ्ळुऱ्ऱु–मेरे मन के अन्दर घुसकर; उयिरै तुरुवुम्–प्राणों को धीरे-धीरे मार देता है; वॅळ्ळै वण्णम् विटमुम्–श्वेतवर्ण विष भी; उण्टु कॉल ओ–रहता है क्या। ७००

मेरे प्राणों को हरने के लिए, रुष्ट हो उठनेवाले, गहरे क्षीर-सागर के अत्यधिक पय के समान यह चन्द्रिका मेरे मन में घुसकर तिल-तिल कर काट रही है। क्या यह विष है ? विष तो काला होता है ! तो क्या सफ़ेद रंग का विष भी होता है ? । ७००

आहु नल्वऴि यल्वऴि यॅन्मनम्, एहु मोविदु वॅय्दिय कारणम्
पाहु शेर्मॉऴिप् पैन्दॉडि कन्नियॆ, आहुम् वेऱिदऱ् कैयुऱ विल्लये 701

आकुम् नल् वऴि–अभ्युदय के सन्मार्ग से; अल् वऴि–इतर मार्ग में; ॲन् मनम्–मेरा मन; एकुमो–जायगा क्या (नहीं); इतु ॲय्तिय कारणम्–(प्रेम) इसके होने का कारण; पाकु चेर् मॉऴि–चाशनी सी बोलीवाली; पचुमै तॉटि–चोखे स्वर्ण के आभूषण-भूषित वे; कन्नियॆ आकुम्–(राज) कुमारी, कन्या ही होगी; इतऱ्कु–इसमें; वेऱु–दूसरा; ऐयुरवु–संशय; इल्लै–नहीं। ७०१

(अब श्रीराम जी के थोड़ा स्वस्थ हुए मन में एक खटका उठा।) मैं उनसे प्रेम करने चला। क्या वह मेरे योग्य कन्या होगी ? मेरा शिष्ट मन, भला मार्ग छोड़, अन्यत्र जानेवाला नहीं। स्वर्णकंकण-धारिणी, और

मधुर-भाषिणी वे अवश्य राज-कन्या ही होंगी। तभी मेरा मन उनके प्रेम में फँसा है। ७०१

कळिन्द कङ्गु लरशन् कदिर्क्कुडै, विळुन्द दॆन्नवु मेऱ्‌ऱिशै याळ्शुडर्क्
कॊळुन्दु शेर्नुदर् कोदऱु शुट्टिपोय्, अळिन्द दॆन्नवु माळ्न्ददु तिङ्गळे 702

कळिन्त–गत; कङ्कुल्–रात के; अरचन्–राजा के; कतिर् कुटै–उज्ज्वल छत्र; विळुन्ततु–गिरा (राज दूर हो गया); ॲन्नवुम्–वैसा और; मेल् तिचैयाळ्–पश्चिमी दिशा (रूपी) स्त्री का; चुटर् कॊळुन्तु चेर्–सुन्दर आभा-युक्त; कोतु अऱु नुतल् चुट्टि–अकलंक भाल का जेवर; पोय् अळिन्ततु–जाकर नष्ट हुआ; ॲन्नवुम्–वैसा; तिङ्कळ्–चन्द्र; आळ्न्ततु–(समुद्र में) मग्न हुआ। ७०२

चन्द्रास्त हो गया। चन्द्र रातरूपी राजा का छत्र था; और पश्चिमी दिशारूपी रानी का झूमर अब वह लुप्त हो गया। राजा दिवंगत हो गया। इसलिए छत्र भी लुप्त हो गया और रानी का अलंकार भी हटा दिया गया। ७०२

वीशु हिन्ऱ निलाच्चुडर् वीळ्न्ददाल्, ईश नामदि येहलुञ् जोहत्ताल्
पूशु मॆन्कल वैप्पुनै शान्दिनै, आशै माद रळित्तन रॆन्नवे 703

ईचन् आम् मति एकलुम्–पति यानी चन्द्र के जाने पर; आचै मातर्–उसकी प्रिय दिशारूपी नायिकाओं ने; चोकत्ताल्–शोक से; पुनै पूचुम्–अलंकार के हेतु जो लगाया गया था; मॆन् कलवै चान्तिनै–मनोज्ञ सुगन्धयुक्त चन्दन को; अळित्तनर् ॲन्न–पोंछ दिया, ऐसा; वीचुकिन्ऱ–फैली रही; निला चुटर्–चाँदनी का प्रकाश; वीळ्न्ततु–दूर हो गया; (आल्–पूरक ध्वनि)। ७०३

दिशाएँ रातराज की प्यारी रानियाँ है। राजा चला गया। इसलिए रानियों ने अपने शरीरों पर लगे हुए सुगंधित चंदन-लेप को पोंछ दिया। चंदनलेप चंद्रिका है। अब दिशाएँ चाँदनी-हीन हो गयी। (तमिळ में आशै का अर्थ प्यारा भी है और दिशा भी। उस विशेषण के कारण 'प्यारी दिशाएँ रूपी रानियाँ' अर्थ हो जाता है।)। ७०३

तदैयुमलर्त् तारण्ण लिव्वण्ण मयलुळन्दु तळरुम् वेलै
शिदैयुमनत् तिडरुडैयच् चॆङ्गमल मुहमलरच् चॆय्य वॆय्योन्
पुदैयिरुळि नॆदिर्हिन्ऱ पुहर्मुहया नयिन्नुरिवैप पोर्वै पोर्त्त
उदयगिरि यॆनुङ्गडवु णुदल्किळित्त विळिपोल वुदयञ् जॆय्दान् 704

ततैयुम् मलर्–घने रूप से पुष्प-गुँथी; तार् अण्णल्–माला के धारण करनेवाले प्रभु; इ वण्णम्–इस प्रकार; मयल् उळन्तु–उत्कट प्रेमवेदना से पीड़ित होकर; तळरुम् वेलै–श्रांत हो रहे थे, उस समय; चॆय्य वॆय्योन्–लाल किरणमाली; चितैयुम् मनत्तु इटर् उटैय–शिथिल मन के (श्रीराम के) दुख को दूर करते हुए; चॆम् कमलम् मुकम् मलर–अरुण कमल-मुख को प्रफुल्ल करते हुए; पुतै इरुळिन् एतिर्किन्ऱ–गाढ़े

अन्धकार के रूप में आक्रमण करने आये हुए; पुकर् मुकम् पुयात्तैयिन्–(लाल) बिन्दियों से युक्त मुख के गज (हाथी) के; उरिवै पोर्वै–चर्मरूपी ओढ़ना; पोर्त्त–ओढ़े हुए; उतय किरि अँनुम् कटवुळ्—उदयाचल-रूपी शिवदेव के; नुतल् किऴित्त–भाल चीरते हुए; विऴिपोल–नेत्र के समान; उतयम् चेय्तात्–उदित हुआ। ७०४

ऊपर लिखे प्रकार से घनी पुष्पमाला से शोभित श्रीराम प्रेमातुरता से व्याकुल रहकर थोड़ी देर किसी तरह सो पाये। तभी सूर्य उदित हुए, मानों वे शोकतप्त श्रीराम के मन की व्यथा को दूर कर, उनके मुख-कमल को खिलाना चाहते थे। वे सूर्य उदयाचल पर श्रीशिव जी के भाल पर प्रकट अग्नि-नेत्र के समान लगे। काला अंधकार रुद्र-मूर्ति का ओढ़ा हुआ गजचर्म-सा था। गजचर्म पर लाल बिंदियाँ श्रेष्ठ लक्षण समझी जाती हैं। सूर्योदय के समय उदयाचल पर काले आकाश में डूबनेवाले नक्षत्र आदि दिखाई दिये। उदयाचल-शिव, अंधकार-गजचर्म, नक्षत्र-बिंदियाँ और सूर्य-नेत्र और लाल-किरणें, नेत्राग्नि की यह रूपकमाला काव्यरस-पूर्ण है। ७०४

विशैयाडऱ् पशुमुपुरविक् कुरमिदिप्प वुदयगिरि विरिन्द तूळि
पशैयाह मऱैयवर्कैम् मलर्नऱैयु निऱैपुनलुम् परन्दु पाय
अशैयाद नॆडुवरैयिन् मुहडुतॊऱु मिळङ्गदिर्शॆन् ऱणैन्दु वॆय्योन्
तिशैयाळु मदहरियैच् चिन्दूर मप्पियपोऱ् ऱिहऴु मादो 705

विचै आटल्–वेग और विजयशील; पचुमै पुरवि–हरे रंग के अश्व; कुरम् मितिप्प–खुर रखते है इसलिए; उतयकिरि विरिन्त तूळि–उदयाचल पर उठकर फैली हुई धूलि; पचै आक–गीली करते हुए; मऱैयवर–ब्राह्मणों का; कैमलर् नऱैयुम्–हाथों में लिये गये फूलों का शहद; निऱै पुनलुम्–(हाथों में) पूर कर लिया (अर्घ्य-जल); परन्तु पाय–विस्तृत रूप से वह गया, तब; अचैयात नॆटु वरैयिन्–अचल, ऊँचे पर्वत के; मुकटु तॊऱुम्—शिखर-शिखर पर; इळ कतिर् चॆन्ऱु अणैन्त—बाल-किरणों के जाकर लगने से; वॆय्योत्–सूर्य; तिचै आळुम् मतम् करियै–पूरब की दिशा की रक्षा करनेवाले गज पर; चिन्तूरम् अप्पियतु पोल्–सिंदूर का लेप लगाया हो, ऐसा; तिकऴुम्–विद्यमान है; (मातु ओ–पूरक ध्वनियाँ)। ७०५

सूर्य-रथ के हरे रंग के अश्व बड़े वेगवान और विजयी हैं। उनके खुरों से उदयगिरि पर धूलि उठती है। ब्राह्मण लोग सूर्य को संध्या-पूजामध्य अर्घ्य देते है। अर्घ्यजल में फूल हैं। उन फूलों से वहनेवाला शहद और यह जल दोनों मिलकर उस धूलिपटल को गीला कर लेप वना देता है। उस लेप को सूर्य अपनी किरणरूपी हाथों से लेकर पूर्व दिशारूपी मस्त हाथी के मस्तक पर लगा देते हैं। (सूर्योदय पर पूरब का दृश्य और ब्राह्मणों का मन्देह-असुरों को सूर्य के मार्ग से हटाने के लिए दिया जानेवाला अर्घ्यदान, दिशा की लाली आदि का सम्मिलित वर्णन रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के सहारे से वड़ा ही मनोहारी हुआ है)। ७०५

पण्डुवरुङ् गुरिपहर्न्दु पाशरैयिर् पौरुळ्वयिनिर् पिरिन्दु पोन
वण्डुतोडर् नरुन्देरिय लुयिरनैय कौळ्नर्वर मणित्ते रोडुङ्
गण्डुमनङ् गळिशिरप्प वौळिशिरन्दु मॅलिवहलुङ् गर्पि नार्पोल्
पुण्डरिह मुहमलर वहमलर्न्दु पौलिन्दनपूम् बौय्है यॅल्लाम् 706

पण्टु–पहले ही; वरुम् कुरि पकर्न्तु–लौट आने का समय बताकर; पाचरैयिन्–खेमों की ओर (युद्ध पर); पौरुळ् वयिनिन्–(या) धनार्जन के हेतु; पिरिन्तु पोन–जो बिछुड़ गया; वण्टु तॉटर्–भ्रमर-मण्डरित; नरु तॅरियल्–सुवासपूर्ण माला धारण करनेवाले; उयिर् अनैय कौळ्नर्–प्राणप्यारे पतियों के; मणि तेरोटुम् वर–घण्टियों-सहित सुन्दर रथों पर आने पर; कण्टु–देखकर; मनम् कळि चिरप्प–मन में मोद के उमड़ते; ऑळि चिरन्तु–रौनक बढ़कर; मॅलिवु अकलुम्–मलिनता-विमुक्त; कर्पिनार् पोल्–पत्नियों के समान; पू पौय्कै ॲल्लाम्–फूलों से भरे तालाब सब; पुण्टरिकम् मुकम्–कमलरूपी मुखों के; मलर–विकसित होते; अकम् मलर्न्तु–अन्दर भी कांति पाकर; पौलिन्तन–शोभायमान रहे। ७०६

सूर्य के उदय पर कितने जादू होते हैं। तड़ागों में कमल-पुष्प विकसित होते है। यह कैसा है ? तमिळ साहित्य में पुरुष स्त्री से तीन कारणों से अलग जा सकते हैं। युद्ध के लिए, धनार्जन के लिए, या वेश्या के पास। यहाँ तीसरा कारण छोड़ दिया गया है। धनार्जन या युद्ध के लिए प्यारा, भ्रमराकीर्ण, मालाधारी बाहर गये हुए थे। जाते समय वे लौटने का समय भी निश्चित कर गये थे। उसी वचन के अनुसार वे अपने सुन्दर रथों पर बैठकर आ गये। उनको देख सती नायिकाएँ मन और तन में प्रफुल्लित हो जाती है। उनकी क्षीणता दूर हो जाती है। वैसे ही तड़ागों के कमल सूर्य को देख प्रफुल्लित हो खिले। ७०६

❀ ऍण्णरिय मरैयिनोडु किन्नरर्ह ळिशैपाड वुलह मेत्त
विण्णवरु मुनिवररुम् वेदियरुङ् गरङ्गुपिप्प वेलै यॅन्नुम्
मण्णुमणि मूळ्वदिर वानरङ्गि नडम्बुरिवा ळिरवि यॅन्नुम्
कण्णुदल्वा नवन्कनहच् चडैविरिन्दा लॅन्नविरिन्द कदिर्ह ळॅल्लाम् 707

ऍण् अरिय मरैयिनोटु–अनन्त (या अतुलनीय) वेदों के साथ; किन्नरर्कळ्–किन्नर नाम की देवजाति के लोग; इचै पाट–(वेद) गान करते है, तब; उलकम् एत्त–लोक स्तुति करते हैं; विण्णवरुम्–देवता लोग; मुनिवररुम्–मुनिगण; वेतियरुम्–वेदज्ञ ब्राह्मण; करम् कुविप्प–हाथ जोड़ते है, तब; वेलै ॲन्नुम्–समुद्ररूपी; मण्णुम् अणि मुळवु–मट्टी का काला लेप जिस पर लगा है उस मर्दल के; अतिर–बजते; वान् अरङ्किल् नटम् पुरि–आकाश के रंगमंच पर नर्तन करनेवाले; वाळ् इरवि आन–उज्ज्वल रवि रूपी; कण्णुतल् वानवन्–भालनेत्र (शिवजी) देवता की; कनकम् चटै विरिन्ताल् ॲन–कनकवर्ण जटा-जूट बिखरी, ऐसा; कतिर्कळ् ॲल्लाम्–सभी किरणें; विरिन्त–बिखरीं। ७०७

सूर्य जब उदित हुए, तब किन्नर वेद-गान करने लगे; लोक में श्रेष्ठ लोगों ने सूर्य-वंदना की। देवता लोग, मुनिवर और ब्राह्मण लोग, अंजलि-बद्ध

हुए। सागर कोलाहल करने लगा। किरणें सब ओर व्यापने लगीं। इस तरह सूर्य आकाश पर दिखाई देते हैं। उनको देखकर नटराज भालनेत्र शिवजी का नर्तन याद आता है। जब वे नाचने लगे तो किन्नर, देव, आदि सब स्तुति करते थे। मर्दल जो बजता था वह सागर-गर्जन है। आकाश रंगमंच है। किरणें उनकी कनक-वर्ण जटाएँ है। ७०७

❀ कॊल्लाळि नीत्तङ्गोर् कुनिवयिरच् चिलैतडक्कैक् कॊण्ड कॊण्डल्
ॲल्लाळित् तेरिरवि यिळङ्गरत्ता लडिवरुडि यन्नद् ऱीर्प्प
अल्लाळिक् करैकण्डा नायिरमा मणिविळक्क मळ्ळुम् जेक्कैत्
तॊल्लाळित् तुयिलादे तुयराळि नॆडुङ्कडलुट् टुयिल्हिन् ऱान् 708

तट कै—आजानु-लम्बित हाथ से; कॊल् आळि नीत्तु—संहारक चक्रायुध दूर करके; अङ्कु—उसमें; ओर् कुनि वयिरम् चिलै—एक झुका हुआ और कठोर धनु (कोदण्ड) को; कॊण्ट—धारण करनेवाले; कॊण्टल्—मेघवर्ण; आयिरम् आम्—सहस्र गणित; मणि विळक्कम्—रत्नदीप; अळ्ळुम्—प्रकाश जहाँ देते है; चेक्कै—उस (शेष) शय्यावाले; तॊल् आळि—प्राचीन (क्षीर-) सागर में; तुयिलाते—बिना निद्रा किये; तुयर् आळि—दुखपूर्ण; नॆटुकटलुळ्—विशाल सागर में; तुयिल्किन्ऱान्—जो मग्न हैं वे श्रीराम; ॲल् आळि तेर इरवि—प्रकाशमान एक-चक्र रथ के पति रवि के; इळम् करत्ताल्—अपने बाल-करों (किरणों) से; अटि वरुटि—पाँव दाबकर; अन्नल् तीर्प्प—मोह (तंद्रा) दूर करते; अल् आळि—रातरूपी सागर का; करै कण्टान्—तीर पाया (पार किया)। ७०८

श्रीराम श्रीविष्णु है। उनके हाथ में (दुष्ट-) संहारक चक्रायुध था। उसको छोड़कर अब कोदण्ड ले लिया है। पहले क्षीरसागर पर शयन करते थे। जहाँ अनंतनाग अपने सहस्र फणों के रत्नों द्वारा प्रकाश कर रहा था। अब दु:ख-सागर में सो (मग्न हो) रहे हैं। सूर्य अपने मंद, सुखद किरणों से उनका पैर सहला रहे हैं। तब बेसुध पड़े श्रीराम जागे और रात्रिरूपी सागर के पार गये। सूर्य ने अपने वंशज को दिन-चर्या के लिए जगाया। ७०८

ऊळिपॆयर्न् दॆन्नक्कङ्गु लॊरुवण्णम् बुडैपॆयर वुऱक्क नीत्त
शूळिया नयिन्नॆळुन्दु तॊन्नियमत् तुऱैमुडित्तुच् चुरुदि यन्न
वाळिमा दवऱ्पणिन्दु मनक्किनिय तम्बियॊडुम् वम्बिन् मालै
ताळुमा मणिमौलित् तार्च्चनकन् पॆरुवेळ्विच् चालै शार्न्दान् 709

ऊळि पॆयर्न्तु ॲन—एक युग ही बीत गया, ऐसा; कङ्कुल्—रात; ऒरु वण्णम्—एक तरह से; पुटै पॆयर—अलग हटी, तब; उऱक्कम् नीत्त—निद्रा से जागे हुए; चूळि यानैयिन्—मुखपट्ट से अलंकृत गज के समान; ॲळुन्तु—(श्रीराम) उठकर; तॊल् नियमम् तुऱै मुटित्तु—परम्परागत नियमानुष्ठान पूरा करके; चुरुति अन्न—वेदमूर्ति; मा तवन्—महातपस्वी (कौशिक जी) के सामने; पणिन्तु—नमस्कार करके; मनक्कु इनिय—हृदयप्रिय; तम्पियॊटुम्—भाई के साथ और (ऋषि के साथ);

वम्पु इन् मालै–सुवासित मनोरम सुमनमाला; ताळुम्–जिस पर से लटकती है; मामणि मौलि–उस श्रेष्ठ रत्नकिरीट के; तार्–वक्ष पर हार धारण करनेवाले; चत्तकन्–जनक महाराज के; पॅरु वेळ्वि चालै–बड़ी यज्ञशाला में; चार्न्तान्–पधारे। ७०९

एक युग-सी थी रात। वह लम्बी रात किसी प्रकार बीत गयी। श्रीराम मुखपट्ट पहने हाथी के समान (चुस्त हो) जाग उठे। नित्य-कर्म का अनुष्ठान पूरा किया। फिर साक्षात् वेदाकार विश्वामित्र को नमस्कार किया। फिर वे उनके और अपने प्यारे भाई के साथ उन जनक की यज्ञशाला में गये, जिनका रत्न-जटित किरीट सुगंधित, मनोरम और लटकनेवाली पुष्पमालाओं से युक्त था; और जिनके वक्ष पर पुष्पमालाएँ शोभायमान थी। ७०९

11. कुलमुरै किळत्तु पडलम् (वंशक्रम-परिचय पटल)

मडिच्चनहर् पॅरुमानु मुरैयाले पॅरुवेळ्वि मुट्रिच् चुट्रुम्
इडिक्कुरलिन् मुरशियम्ब विन्दिरनिर् चन्दिरन्रोय् कोयि लॅय्दि
अॅडुत्तमणि मण्डवत्तु ळॅण्डवत्तोन् मुनिवरोडु मिरुन्दान् पैन्दार्
वडित्तकुनि वरिशिलैक्कै मैन्दनुन्दम् वियुमरुङ्गि निरुप्प मादो 710

मुटि चत्तकर् पॅरुमानुम्–किरीटी जनक के कुल के श्रेष्ठ (महाराज) जनक भी; मुरैयाले–विधि के अनुसार; पॅरु वेळ्वि मुट्रि–बड़ा यज्ञ सम्पन्न करके; चुट्रुम्–चारों ओर; इटि कुरलिन्–वज्रघोष के साथ; मुरचु इयम्प–ढोल के नर्दन (बड़ा शोर) करते; इन्तिरतिन्–देवेन्द्र के समान; चन्तिरन् तोय् कोयिल् अॅय्ति–चन्द्रसंचरित (ऊँचे) मन्दिर में आकर; अॅटुत्त–शान से बने; मणि मण्टपत्तुळ्–मणियों से सज्जित मण्डप में; अॅण् तवत्तोन्–सम्मान्य तपोधन; पचमै तार्–नवीन फलों की माला धारण करनेवाले; वटित्त–सुगठित; कुनि वरि चिलै कै–झुका, बन्धनयुक्त धनुष वाले हाथ के; मैन्तनुम्–कुँअर; तम्पियुम्–और उनके लघु भ्राता; मरुङ्किन् इरुप्प–पार्श्व में विराजे, ऐसा; मुनिवरोटुम्–अन्य मुनियों के साथ; इरुन्तान्–आसीन रहे। ७१०

किरीटी जनक वंश के नायक राजा जनक उत्तम यज्ञ को वेद विहित रीति से सुसंपन्न करके महल में आये। तब चारों ओर ढोल वज्रघोष के समान नर्दन कर उठे। महल इतना ऊँचा था कि चन्द्र उसमें आकर संचार कर सकते। उस महल में एक शानदार, रत्नसज्जित मंडप था जहाँ उनकी सभा होती थी। वे वहाँ आये और सिंहासन पर आसीन हुए। उनके पार्श्व में सम्मानित तपस्वी कौशिकजी और कोदण्डपाणी श्रीराम और उनके लघुभ्राता लक्ष्मण विराजे। अन्य मुनि भी सभा में आसीन रहे। ७१०

❀ इरुन्दकुलक् कुमरर्तमै यिरुकण्णाऩ् मुहन्दळ्हु परुह नोक्कि
अरुन्दवऩै यडिवणङ्गि यारिवरै युरैत्तिडुमि ऩडिह ळॆऩ्ऩ
विरुन्दिऩर्ह ळिऩ्ऩुडैय वॆळ्विका णियवन्दार् विल्लुङ् गाण्बार्
पॆरुन्दहैमैत् तयरदऩ्ऱऩ् पुदल्वरॆऩ ववर्तहैमै पेश लुऱ्ऱाऩ् 711

इरुन्त–(जनक) पास रहे; कुलम् कुमरर् तमै–कुलीन कुँअरों को; इरु कण्णाल्–(दोनों) आँखों से; अऴ्कु मुकन्तु–सौन्दर्य को उठाकर; परुक नोक्कि–पीते से देखकर; अरु तवनै अटि वणङ्कि–श्रेष्ठ तपस्वी (कौशिक) के चरणों की पूजा करके; अटिकळ्–नमनीय चरण; इवर् यार्–ये कौन हैं; उरैत्तिटुमिऩ्–बतलाइये; ॲऩ्ऩ–यह पूछने पर; विरुन्तिऩर्कळ्–अतिथि; पॆरु तकैमै तयरतऩ् तऩ्–उत्तम महिमामय दशरथ के; पुतल्वर्–तनय हैं; निऩ्ऩुटैय–आपका; वेळ्वि–यज्ञ; काणिय–देखने के लिए; वन्तार्–आये हैं; विल्लुम्–धनु को भी; काण्पार्–देखेंगे (आज़माएँगे); ॲऩ–कहकर; अवर् तकैमै–उनकी महिमाएँ; पेचल् उऱ्ऱाऩ्–बखानने लगे। ७११

राजा जनक ने उन दोनों उच्चकुलोन कुंअरों को अपनी आँखों से ऐसा देखा मानों वे अपनी आँखों से उनकी सुन्दरता को उठाकर पान कर रहे हों। फिर उन्होंने विश्वामित्र के चरणों पर विनत होकर विनय की— हे पूजार्हचरण! ये कौन है? बताने की कृपा करे। महर्षि ने कहा कि ये अतिथि (अतिथि का अर्थ जिनकी तिथि नहीं यानी जो अप्रत्याशित रूप से आ जायँ—नवागंतुक) बड़े ही महिमावान दशरथ के सुपुत्र हैं। वे आपका यज्ञ देखने आये। अब आपका वह धनुष भी देखेंगे जिसको सीताविवाहेच्छुक के लिए परीक्ष्य विषय बना रखा है। ७११

आदित्तऩ् कुलमुदल्वऩ् मनुविनैया रऱियादार्
बेदित्त वुयिरनैत्तुम् पॆरुम्बशियाल् वरुन्दामल्
शोदित्तऩ् वरिशिलैया निलमडन्दै मुलैशुरप्पच्
चादित्त पॆरुन्दहैयु मिवर्कुलत्तोर् तरापदिकाण् 712

आतित्तऩ् कुलम् मुतल्वऩ्–आदित्यवंशी प्रथम पुत्र; मऩुविनै अऱियातार् यार्–मनु को न जाननेवाले कौन है; पेतित्त–परस्पर विभिन्न; उयिर् अऩैत्तुम्–जीव-राशि, सबको; पॆरु पचियाल् वरुन्तामल्–बड़ी भूख से बिना पीड़ित हुए; तऩ् चोति वरि चिलैयाल्–अपनी ज्योतिर्मय बन्धनयुक्त धनु द्वारा; निलम् मटन्तै–भूमि की देवी को; मुलै चुरप्प–स्तनों से (औषधियाँ आदि) निकालने को विवश करके; चातित्त–जिन्होंने साध लिया था; पॆरु तकैयुम्–बड़े महिमावान (पृथु) भी; इवर् कुलत्तु ओर् तरापति–इनके वंश के एक धराधिप हैं; काण्–जानिये। ७१२

(अब विश्वामित्र सूर्यवंश के राजाओं की महिमा का वर्णन करते हैं। वाल्मीकी में धनुर्भंग के बाद यह चर्चा आती है।) आदित्यवंश के प्रथम पुत्र (वैवस्वत) मनु को न जाननेवाले कौन है? उनके वंश में एक राजा हुए जिन्होंने भूदेवी को, जो गाय के रूप में अपने अंदर ओषधियाँ सब

छिपा लेकर भागने लगी थी, अपने थन द्वारा सबको निकालने को विवश किया। (यह राजा पृथु है।) उससे विविध जीवराशियों की भुभुक्षा मिटी। उनके बंधनयुक्त धनु के प्रताप से भूमि वश में आयी। (पृथु के पहले 'वेन' नामक राजा था, जो अत्याचारी था। भूदेवी ने उसके अत्याचारों से तंग में आकर सभी वृक्ष, लता आदि औषधियों को अपने अदर छिपा लिया। महर्षियो ने मिलकर वेन को मरवाकर पृथु को राजा बनाया। राजा पृथु ने भूमि पर धावा बोल दिया तो वह गाय का रूप लेकर भागी। फिर राजा पृथु के धनु के प्रताप के सामने हार मान गयी।)। ७१२

❀ पिणियरङ्ग विन्नैयहलप् पॅरुङ्गालन् दवम्पेणि
मणियरङ्ग नॅडुमुडियाय् मलरयन्नै वऴिपट्टुप्
पणियरङ्गप् पॅरुम्बायऱ् परञ्जुडरै याङ्गाण
अणियरङ्गन् दन्दानै यरियादा ररियादार् 713

मणि अरङ्कु—मणिमण्डित; अम् नॅट्टु मुटियाय्–सुन्दर उन्नत किरीट के धारण करनेवाले; पिणि अरङ्क–रोग दूर करने; वित्ते अकल–(रोगों का कारण) प्रारब्ध कर्म दूर करने; मलर् अयत्तै–कमलभव अज को; वऴि पट्टु–पूजा करके; पॅर कालम् तवम् पेणि–लम्बे काल तक तप करके; पणि अरङ्कम् पॅरु पायल्–आदिशेष रूपी विशाल शय्या (शायी); परम् चुटरै–परमज्योति को; याम् काण–हमारे दर्शनार्थ; अणि अरङ्कम् तन्तानै–सुन्दर रंग-विमान के साथ इस दुनिया में लानेवाले (इक्ष्वाकु) को; अऱियातार्–जो नहीं जानते; अऱियातार्–(वे लोग) अज्ञ हैं ही। ७१३

नवरत्न जड़ित उन्नत किरीटवाले जनक! इनके वंश के एक राजा (इक्ष्वाकु) ने ब्रह्माजी की लंबी तपस्या की। उन्हें कष्ट और भव-बाधा हरण के लिए ब्रह्मा ने शेषशायी श्रीविष्णुदेव का विग्रह रंगविमान के साथ प्रदान किया। उन्ही इक्ष्वाकु की तपस्या और करुणा से भूलोकवासियों को वह देव सुलभ हुए। उन इक्ष्वाकु को कौन नहीं जानता? (यहाँ विश्वास किया जाता है कि वही रंगविमान सहित श्रीमन्नारायण इक्ष्वाकु कुल में कुल-देवता के रूप में पूजे जाते थे। श्रीराम ने उन्हें विभीषण को दिया था। विभीषण उन्हें लेकर लंका जा रहे थे। लेकिन बीच में ही देव ने श्रीरंगम क्षेत्र को (जो तमिऴनाडु में तिरुच्चिनापल्ली के पास कावेरी और कौळ्ळिडम् नदियों के बीच में है) अपना वासस्थान बना लिया। विभीषण के तृप्त्यर्थ उन्होंने वादा किया कि मैं दक्षिण की तरफ मुख करके शयन करता रहूँगा और मेरी कृपादृष्टि श्रीलंका पर रहेगी। इस रंगविमान के पीछे ही वह श्रीरंगम नाम पड़ा और यह क्षेत्र वैष्णवों के लिए परमपद से भी श्रेष्ठ है।)। ७१३

तान्ऱनक्कु वॅलऱ्करिय तानवरैत् तलैतुमित्तॅन्
वान्ऱरुहिऱ् ऱिहॊलॅन्नक् कुऱैयिरप्प वरङ्गॊडुत्ताङ्
गेन्ऱॅडुत्त शिलैयिनना यिहल्पुरिन्द विवरकुलत्तोर्
तोन्ऱलैप्पण् डिन्दिरने कॊल्लेऱाच् चुमन्दान्काण् 714

तान्–(इन्द्र) आप; तनक्कु वॅलऱ्कु अरिय–खुद हराने में अशक्य; तानवरै–दानवों को; तलै तुमित्तु–सिर काटकर; ॲन् वान्–मेरे स्वर्ग को; तरुकिऱ्ऱि कॊल्–लौटा दे सकेंगे क्या; ॲन–यह; कुऱै इरप्प–अपनी प्रार्थना निवेदन करने पर; वरम् कॊटुत्तु–वर देकर; आङ्कु एऩ्ऱु–वहीं सन्नद्ध होकर; ॲटत्त चिलैयिननाय्–धनुर्हस्त होकर; इकल् पुरिन्त–युद्ध (जिन्होंने) किया; इवर् कुलत्तु ओर् तोन्ऱलै–(उन) इनके वंशज एक राजा को; पण्टु–पूर्वकाल में; इन्तिरने–स्वयं इन्द्र ही; कॊल् एऱु आकि–बलवान बैल बनकर; चुमन्तान्–ढोये (काण्) । ७१४

इसके बाद एक राजा आये । (उनका नाम ककुत्स्थ था ।) एक बार इन्द्र ने आकर उनसे कहा कि असुरों के सिर काट कर मेरा स्वर्ग लौटा दे सकते हैं क्या ? यह प्रार्थना सुनते ही राजा ने वर दिया और युद्धतत्पर हुए । उन्होंने जीत भी पायी । जब वे लड़ाई पर गये तब इन्द्र ने बैल बनकर अपने ककुद पर उन्हें धारण किया था । (ककुद = बैल का कुब्बड़) वैसे पराक्रमी थे वे राजा; वे इन्हीं के पूर्वज थे । ७१४

अरशववन् पिन्नोरै यॅन्नालु मळप्परिदाल्
उरैकुरुह निमिर्कीर्त्ति यिवर्कुलत्तो रॊरुवन्काण्
नरैतिरैमूप् पिवैयॅय्दि यिन्दिरनु नन्दामल्
कुरैहडलै नॅडुवरैयाऱ् कडैन्दमुदङ् गॊडुत्तानुम् 715

अरच–राजन्; अवन् पिन्नोरै–उनके बाद आये हुए अनेक की महिमाएँ; ॲन्नालुम् अळप्पु अरितु–मुझसे भी अवर्ण्य हैं; इन्तिरनुम्–देवेन्द्र (और अन्य देव भी); नरै–बाल का पकना; तिरै–चमड़े का संकोच; मूप्पु–जरा; इवै ॲय्ति–इन्हें प्राप्त करके; नन्तामल्–मरे बिना रहने के लिए; कुरै कटलै–सघोष (क्षीर-) सागर को; नॅटु वरैयाल्–ऊँचे पर्वत से; कटैन्तु–मथकर; अमुतम् कॊटुत्तानुम्–अमृत दिलानेवाले भी; उरै कुरुक निमिर् कीर्त्ति–अभिव्यंजना को असमर्थ बनाती हुई बढ़नेवाली कीर्ति के; इवर–इन कुंअरों के; कुलत्तोर् ऑरुवन् काण्–वंशज एक (राजा) थे, जानें । ७१५

महाराज ! उनके बाद जो इनके कुल में उत्पन्न हुये, उनकी महिमा मेरे लिए भी अवर्णनीय है । एक आये जिन्होंने गरजनेवाले दुग्धसागर को मेरु पर्वत से मथकर देवों को जरा आदि से विमुक्त अमर बनाने के लिए अमृत निकाल कर दिया था । वे भी इन्हीं अकथनीय यशस्वी श्रीराम और लक्ष्मण के पूर्वज थे । (इनका नाम वाल्मीकी में नहीं पाया जाता, अन्यत्र भी नहीं मिलता । इसमें 'उरै कुरुक निमिर्' कीर्ति का जो विशेषण

आया है वह सुन्दर शब्द-योजना है। भाषा-शक्ति को असमर्थ वनाकर वढ़ा हुआ यश— इसका अर्थ है।)। ७१५

करुदरिय पॅरुङ्गुणत्तो रिवर्पिन्वु कणक्किड़न्दोर्
तिरिबुवन मुळुदाण्डु शुडर्नेमि शॅलनिन्ड़ार्
पॉरुदुड़ैशेर् वेलिनाय् पुलिप्पोत्तुम् पुल्वायुम्
ऑरुतुड़ैयि नीरुण्ण वुलहाण्डो त्तॉरुवनुळन् 716

पॉरुतु उड़ै चेर् वेलिनाय्–युद्ध करके कोश में गये हुए भाला वाले; करुत अरिय–अशोच्य; पॅरु कुणत्तोर्–श्रेष्ठ गुणोंवाले; इवर् पिन्पु–इनके वाद; तिरिपुवनम् मळुतुम्–सारा त्रिलोक; आण्टु–शासन करके; चुटर् नेमि–प्रतापी (आज्ञा) चक्र; चॅल निन्ड़ार्–चलाते जा रहे; कण्क्कु इड़न्तोर्–वे असंख्यक हैं; पुलि पोत्तुम्–(मर्द) व्याघ्र; पुल् वायुम्–तृणमुख हरिण; ऑरु तुड़ैयिल् नीर् उण्ण–एक ही घाट पर जलपान करें, ऐसा; उलकु आण्टोन् ऑरुवन्–लोकशासक एक; उळन्–हैं। ७१६

शत्रु संहार करके कोश में रखा गया भालावाले ! उन राजा के वाद असंख्य राजा आये जो अकल्पित उत्तम गुणों के थे; जो त्रिभुवन पर एकछत्र राज करके अपना आज्ञाचक्र चलाते थे; उनमें एक थे जिनके राज में व्याघ्र और हरिण एक ही घाट पर जल पीते थे। (ये माँधाता थे, ये वड़े ही नीतिमान थे और उनके राज्य में वली दुर्बल को सता नहीं पाते थे।)। ७१६

मड़ैमन्नु मणिमुडियु मारमुम्वा ळॉडुमिन्नप्
पॉड़ैमन्नु वानवरुम् दानवरुम् पॉरुमॉरुनाळ्
विड़न्मन्नर् तॉळुकळला यिवर्कुलत्तोन् विड़्पिडित्त
अड़मॅन्न वॉरुतनिये यमैन्दमरर् पतिकात्तान् 717

मड़ै मन्नुम्–शास्त्र के अनुसार निर्मित; मणि मुटियुम्–रत्नकिरीट; आरमुम्–और हार; वाळॉटु मिन्न–कांतिसहित चमकते हैं, और; पॉड़ै मन्नु वानवरुम्–क्षमाशील देव भी; तानवरुम्–दानव भी; पॉरुम् ऑरु नाळ्–जव लड़े तव एक दिन; विड़ल् मन्नर् तॉळु कळलाय्–प्रतापी राजाओं से पूजित चरणवाले; इवर् कुलत्तोन्–इनके वंश के एक ने; विल् पिटित्त अड़म् अन्न–धनुर्हस्त धर्मदेवता के समान; ऑरु तनिये अमैन्तु–एकाकी (सहायक) रहकर; अमरर् पति कात्तान्–अमरावती की रक्षा की। ७१७

प्रवल राजाओं से पूजित चरणों के जनक ! एकवार आभरण-निर्माण विद्या के अनुसार रचित किरीट, हार आदि से अलंकृत और क्षमाशील देवों और असूया करनेवाले दानवों में युद्ध छिड़ा। तव इनके एक पूर्वज (मुचुकुंद) ने अकेले ही, धनुर्हस्त धर्मदेवता के समान देवताओं की सहायता करके दानवों को हराया और अमरावती (इन्द्र के नगर) को बचाया। ७१७

इऩ्ऩुयिर्क्कु मिऩ्ऩुयिरा यिरुनिलमुऩ् कात्तळित्त
पॊऩ्ऩुयिर्क्कुङ् गऴलवरै याम्बोलुम् पुहऴ्हिऱ्पाम्
मिऩ्ऩुयिर्क्कु नॆ॓ड्वेला यिवर्कुलत्तोऩ् मॆ॓ऩ्बुऱविऩ्
मऩ्ऩुयिर्क्कुत् तऩ्ऩुयिरै माऱाह वऴङ्गिऩऩाल् 718

मिऩ् उयिर्क्कुम्–बिजली के समान कांति बिखेरनेवाली; नॆ॓टु वेलाय्–लंबी शक्ति-धारी; इऩ् उयिर्क्कुम् इऩ् उयिराय्–प्रिय प्राणियों के प्रिय प्राण रहकर; इरु निलम्–इस विशाल भूमि को; मुऩ् कात्तु अळित्त–पूर्वकाल में जिन्होंने पाला; पॊऩ् उयिर्क्कुम् कऴल् अवरै–उन स्वर्ण वर्ण (स्वर्ण-निर्मित) पायलधारी राजाओं की; याम् पुकऴ्किऱ्पाम् पोलुम्–हम प्रशंसा करने में समर्थ होंगे (क्या); इवर् कुलत्तोऩ्–इनके वंशज; मॆ॓ऩ् पुऱविऩ्–कोमल कपोत के; मऩ् उयिर्क्कु–स्थायी प्राण के; माऱाक–बदले में; तऩ् उयिरै वऴङ्कितऩ्–अपने प्राण दे गये। ७१८

बिजली के समान चमकनेवाला भालावाले ! इनके वंश के राजाओं की, जिन पायलधारी शासकों को सभी प्राणों के प्यारे जीव प्राणसम प्यारे थे, कैसी प्रशंसा करूँ ? उनकी संख्या और हर एक की महिमा इतनी बड़ी है कि वह काम दुस्साध्य है। उस कुल के एक राजा कपोत की जान बचाने के हेतु, अपनी ही जान देने के लिए, तुला पर चढ़े थे। (वे राजा शिवि हैं।)। ७१८

इडऱोट्ट विण्णॆ॓डिय वरैयुरुट्टि यिव्वुलहम्
तिडऱोट्ट मॆ॓ऩ्ऩक्किडऩ्द वहैतिऱम्पत् तॆ॓व्वेऩ्दर्
उडऱोट्ट नॆ॓ड्वेला यिवर्कुलत्तो रुवरिनीर्क्
कडऱोट्टा रॆ॓ऩ्ऩिऩ्वेऱोर् कट्टुरैयुम् वेण्डुमो 719

तॆ॓व् वेन्तर्–शत्रु राजाओं के; उटल् तोट्ट–शरीरों को भेदनेवाले; नॆ॓टु वेलाय्–लम्बे भालेवाले; इवर् कुलत्तोर–इनके वंश के राजा लोगों ने; इटऱु ओट्ट–(राजा सगर के यज्ञ में हुई) बाधा को दूर करने के लिए; इ उलकम्–यह भूतल; तिटल् तोट्टम् ॲऩ्ऩ–ऊबड़-खावड़ जो रहा; किटन्त वकै तिऱम्प–उस स्थिति को बदलकर; इत्तम् नॆ॓टिय वरै उरुट्टि–विशाल पर्वतराशियों को तोड़-फोड़कर; उवरि नीर् कटल् तोट्टार्–लवणजल समुद्र खोदा; ॲऩ्ऩिऩ्–तो; वेऱु ओर् कट्टुरैयुम्–दूसरा कोई प्रमाण-वचन; वेण्टुमो–चाहिए क्या ? । ७१९

शत्रु-शरीरों को भेदनेवाला भालावाले जनक ! इनके वंश के पूर्वजों में एक दल ने (सगर-पुत्रों ने) अपने पिता के यज्ञ में हुई बाधा के निवारणार्थ इस ऊबड़-खाबड़ भूमि की प्रकृति को बदल कर नमकीन जलवाला समुद्र बना दिया। उस प्रयत्न में उन्होंने बड़े-बड़े पहाड़ों को भी चूर-चूर कर दिया। फिर और भी विस्तार की आवश्यकता है क्या ? । ७१९

तूनिऩ्ऱ शुडर्वेला यऩ्ऩदऩुक्कुऩ् जॊ॓लर्करिदॆ॓ल्
यानिऩ्ऱु पुहऴ्ऩ्दुरैत्तर् कॊ॓ळिदोवे डविऴ्कोऩ्ऱैप्

पूनिन्ऱ मवुलियैयुम् पुक्कळैन्द पुनऱ्कङ्गै
वानिन्ऱु कॊणर्न्दानु मिवर्कुलत्तोर् मन्ननवन्गाण् 720

तू निन्ऱ–सुदृढ़; चुटर् वेलाय्–दीप्त भालावाले; अतन्ऩतनुक्कुम्–अनन्तनाग के लिए भी; चॊलऱ्कु अरितेल्–(इनकी कुल महिमा) वर्णन कठिन है तो; यान्–मेरे; इन्ऱु–आज (एक दिन में); पुकळ्न्तु उरैत्तऱ्कु–प्रशंसा कहने के लिए; ऍळितो–सुलभ है क्या; एट्टु अविळ्—दल-प्रफुल्ल; कॊन्ऱै पू निन्ऱ–अमलतास के फूलों से भरी; मवुलियैयुम्—जटा-जूट में; पुक्कु अळैन्त पुनल्–प्रवेश कर जो (गंगा-) जल घूमता रहा; कङ्कै–उस जल की गंगा को; वान् निन्ऱु–आकाश से; कॊणर्न्तानुम्–(भूमि पर) लानेवाले भी; इवर् कुलत्तु ओर् मन्नवन्–इनके वंश के ही एक राजा हैं। ७२०

मांसलिप्त दीप्तिमान भालावाले ! इनकी कुलमहिमा आदिशेष अनन्तनाग के लिए भी (जिनके सहस्र जिह्वाएँ हैं) बखानना कठिन है। तो (एक ही जीभवाला) मैं एक दिन में कथन करके पार पाऊँ, क्या यह संभव है ? अमलतास के दलसंकुल पुष्पों से भूषित शिवजी की जटा-जूट में जिन गंगाजी का जल घुसकर घूमता था, उस पवित्र जलवाली गंगाजी को इस धरती पर लानेवाले भी इन्हीं के पूर्वज (भगीरथ) थे। ७२०

कयऱ्कडलुशू ऴुलहॆल्लाङ् गैनॆल्लिक् कनियाक्कि
इयऱ्कैनॆऱि मुऱैयाले यिन्दिरऱ्कु मिडरियऱ्ऱ
मुयऱ्कऱैयिन् मदिक्कुडैया यिवर्कुलत्तोन् मुन्नॊरुवन्
शॆयऱ्करिय पॆरुवेळ्वि यॊरुनूऱ्ऱ् शॆय्दमैत्तान् 721

मुयल् कऱै इल् मति कुटैयाय्–शशक के आकार का कलंक जिसमें नहीं हो ऐसे (पूर्ण, अकलंक) चंद्र सदृश छत्रवाले; मुन्–प्राचीन दिनों में; इवर् कुलत्तोन् ऒरुवन्–इनके कुल के एक राजा; कयल् कटल् चूळ्—मकरालय-मेखला; उलकु ऍल्लाम्–सम्पूर्ण वसुधा को; कै नॆल्लि कनि आक्कि–करतलामलक के समान अपने वश में करके; इन्तिरऱ्कुम् इटर् इयऱ्ऱ–इन्द्र को भी भय देते हुए; चॆयऱ्कु अरिय पॆरु वेळ्वि–दुष्कर बड़े यज्ञ; ऒरु नूऱुम्–एक सौ पूरा; इयऱ्कै नॆऱि मुऱैयाले–प्रकृत वेद-विधि-विहित प्रकार से; चॆयतु अमैत्तान्–सम्पन्न किये। ७२१

शशकरूप के कलंक से रहित (कलंकहीन) चन्द्र सदृश श्वेत-छत्र के अधिपति जनक महाराज! इनके पूर्वज एक राजा थे, जिन्होंने सागर-मेखला पृथ्वी को करतलामलक के समान अपने वश में करके विधिवत एक सहस्र दुष्कर अश्वमेध यज्ञ सुसंपन्न किये; जिससे देवेन्द्र भी भयभीत हो उठे थे। (ये कौन हैं, विदित नहीं होता। सूर्यकुल में एक नहुष हो गये थे और शायद उनकी इसमें चर्चा है। वाल्मीकी में नहुष, अंबरीष के पुत्र कहे गये हैं)। ७२१

चन्दिरनै वॅऩ्ऱाऩु मुरुत्तिरऩैच् चाय्त्ताऩुम्
तुन्दुवॅऩुन् दाऩवऩैच् चुडुशरत्ताऱ् ऱुणित्ताऩुम्
वन्दकुलत् तिडैवन्द रगुवॅऩ्बाऩ् वरिशिलैयाल्
इन्दिरऩै वॅऩ्ऱुदिशै यिरुनाऩ्गुञ् जॅरुवॅऩ्ऱाऩ् 722

चन्तिरनै वॅन्ऱाऩुम्–चन्द्र को युद्ध में जीतनेवाले एक राजा; उरुत्तिरनै–रुद्र को; चाय्त्ताऩुम्–हरानेवाले एक; तुन्तु ऍऩुम् तानवनै–"धुन्धु" नामक दानव को; चटुचरत्ताल् तुणित्ताऩुम्–आग्नेय अस्त्रों से खण्डित कर मिटानेवाले; वन्त कुलत्तिडै–ये जिस कुल में आये, उस कुल में; वन्त–जो जनमे; रकु ऍऩ्पाऩ्–रघु संज्ञित राजा; वरि चिलैयाल्–बन्धन-युक्त अपने धनुष से; इन्तिरनै वॅन्ऱु–इन्द्र को हराकर; तिचै इरु नाऩ्कुम्–दिशायें, दो के चार, (आठों) में; चॅरु वॅन्ऱाऩ्–युद्ध में विजय पायी। ७२२

इनके पूर्वज चन्द्रजित दिलीप थे; रुद्रविजयी भगीरथ थे। धुंधु नामक राक्षसहन्ता धुंधुमार और अष्ट-दिग्विजयी और इन्द्र को हरानेवाले रघु भी इन्हीं के वंश में जनमे थे। (चन्द्र ने देवगुरु बृहस्पति की पत्नी के साथ दुर्व्यवहार किया। असुर चन्द्र के साथी बने। देवों ने उनके साथ युद्ध किया तो उनको हारकर भागना पड़ा। तब दिलीप ने देवों के पक्ष में मिलकर असुरों को हराया। चन्द्र को जीतकर चन्द्रजित बने। स्कन्द-पुराण की सनत्कुमार-संहिता में उक्त वृत्तांत के अनुसार रुद्र-विजयी राजा भगीरथ थे। भगीरथ ने अश्वमेध यज्ञ के सिलसिले में अश्व को भ्रमण के लिए भेजा। षण्मुख ने उसे हर लिया और उनके पिता रुद्र उनके साथ मिल आये। भगीरथ ने उनको हरा दिया। धुंधु एक राक्षस था जो महर्षि उत्तंग को कष्ट देता रहा। कुवलयाश्व नामक राजा ने 'धुंधु' को मारा और धुंधुमार की संज्ञा के अधिकारी बने। रघु ने आठों दिशाओं में जाकर विजय पायी थी। उसी क्रम में रघु ने पूरवी दिशा के पालक इन्द्र को भी हराया। ७२२

※ विल्लॅऩ्ऩु नॅडुवरैयाल् वेन्दॅऩ्ऩुङ् गडल्कलक्कि
ऍल्लॅऩ्ऩु मणिमुऱुव लिन्दुमदि यॅऩुन्दिरुवै
अल्लॅऩ्ऩु मणिनिऱत्त वरियॅऩ्ऩ वयऩ्ऩॅऩ्बाऩ्
मल्लॅऩ्ऩुन् दिरळ्पुयत्तुक् कणियॅऩ्ऩ वैत्ताऩे 723

अयऩ् ऍऩ्पाऩ्–अज नामधारी राजा के; विल् ऍऩ्ऩुम् नॅटु वरैयाल्–धनुषरूपी बड़े (मन्दर) पर्वत से; वेन्तु ऍऩ्ऩुम् कटल् कलक्कि–राजाओं के समूहरूपी (क्षीर-) सागर को मथकर; ऍल् ऍऩ्ऩुम् मणि मुऱुवल्–उज्ज्वल मुक्ता सदृश दाँतोंवाली; इन्तुमति ऍऩुम् तिरुवै–इन्दुमति नामक श्री (सदृश) देवी को; अल् ऍऩ्ऩुम् अणि निऱत्त–अन्धकार-सम सुन्दरवर्ण; अरि ऍऩ्ऩ–हरि के समान; मल् ऍऩ्ऩुम् तिरळ् पुयत्तुक्कु–मल्लयुद्धाकांक्षी अपनी भुजाओं के लिए; अणि ऍऩ्ऩ–शृंगार के रूप में; वैत्ताऩ्–(रानी बनाकर) रख लिया। ७२३

फिर अज नाम के राजा भी इनके ही कुल के थे। उन्हें स्वयंवर में इन्दुमती ने वरा। पर राजा लोग लड़ने आये। अज ने उनको हरा दिया। राजा ने क्षीरसागर के समान राजाओं के समूह को मथकर (तितर-बितर कर) जैसे विष्णु ने सागरोद्भवा लक्ष्मी को अपनाया, वैसे ही इन्दुमती को अंगीकृत कर लिया। (अज ब्रह्मा का भी नाम है; विष्णु का भी)। ७२३

अयन्पुदल्वन् ऱयरदऩै यऱियादा रिल्लयवऩ्
पयन्दकुलक् कुमररिवर् तमैयुळ्ळ परिशॅल्लाम्
नयन्दुरैत्तुक् करैयेऱ नान्मुहऩ्कु मरिदाम्बल्
इयन्तुवैत्त कडैत्तलैया यानऱिन्द पडिकेळाय् 724

पल् इयम् तुवैत्त–विविध वाद्य जहाँ बज रहे हैं; कटै तलैयाय्–वैसे राजद्वार वाले; अयऩ् पुतल्वऩ्–अज के पुत्र; तयरतऩै–दशरथ को; अऱियातार्–न जानने-वाले; इल्लै–नहीं हैं; अवऩ् पयन्त–उनके जनाये; कुलम् कुमरर् इवर् तमै–कुलदीपक इनके सम्बन्ध में; उळ्ळ परिचु ॲलाम्–विद्यमान सब विशिष्टताएँ; नयन्तु उरैत्तु–चाव के साथ वर्णन कर; करै एऱल्–पार पाना; नाऩ् मुकऩ्कुम् अरितु आम्–चतुर्मुख के लिए भी कठिन है; याऩ् अऱिन्तपटि–(जिस प्रकार) मैं जानता हूँ उस प्रकार (कहता हूँ); केळाय्–सुनिये। ७२४

हे जनक, जिनके राजद्वार पर विविध वाद्य बजते हैं! राजा अज के पुत्र दशरथ हैं; उनके सम्बन्ध में अज्ञ कोई नहीं है। उनके श्रेष्ठ पुत्र, इनकी महानताएँ, पूर्णरूप से, ध्यान के साथ वर्णन करना हो तो, उस कार्य में पार पाना चतुर्मुख के लिये भी दुस्साध्य है। जैसे मैं जानता हूँ, वैसे कहता हूँ, सुनिये। ७२४

❀ तुनियिन्ऱि युयिर्कळिप्पच् चुट्टराऴिप् पडैवॅय्योऩ्
पनिवॅन्ऱ पडियॅन्नप् पहैवॅन्ऱु पडिहाप्पोन्
तनुवन्ऱित् तुणैयिल्लान् ऱरुमत्तिन् कवचत्तान्
मनुवॅन्ऱ नीदियान् महविन्ऱि वरुन्दुवान् 725

तरुमत्तिऩ् कवचत्ताऩ्–धर्म ही जिनका कवच था या (जो धर्म के कवच थे); मनु वॅन्ऱ नीतियाऩ्–मनु से भी श्रेष्ठ नीतिमान; तनु अन्ऱि तुणै इल्लाऩ्–धनु के अलावा कोई और सहायता (जिनको) नहीं (आवश्यक) थी; चुटर् आऴि पटै वॅय्योऩ्–किरणरूपी चक्रायुध वाले; पनि वॅन्ऱ पटि ॲन्न–(जिस तरह) हिम को हराते है उसी प्रकार; पकै वॅन्ऱु–शत्रुओं को हराकर; उयिर् तुनि इन्ऱि कळिप्प–जीवों को (प्रजाजनों को) विना दुख के सुख-भोगी रहने देकर; पटि काप्पोऩ्–पृथ्वी का पालन करनेवाले; मक इन्ऱि वरुन्तुवाऩ्–विना पुत्र के दुखी थे। ७२५

ये दशरथ धर्म-रक्षक और धर्म-रक्षित (धर्म-कवच) हैं। मनु से भी बढ़कर (या मनु ही कहलाने योग्य) नीतिमान है। अप्रतिम धनुर्धर हैं।

किरणमाली के उठते ही जैसे कुहरा लुप्त हो जाता है वैसे ही इनके युद्ध के लिए उठते ही शत्रुगण भाग जाते है। उनके पालन में राज्य के सभी जीव विना किसी दुख के, सुख से रहते हैं। लेकिन वे पुत्र-भाग्य के विना दुखी थे। ७२५

शिलैक्कोट्टु नुदऱ्कुदलैच् चॅङ्गनिवायक् करुनॅडुङ्गण्
विलैक्कॉट्टुम् पेरल्हुल् मिन्नुडङ्गु मिडैयारै
मुलैक्कोट्टु विलङ्गॅन्ऱु तॉडर्न्दणुहि मुन्वन्द
कलैक्कोट्टुप् पॅयर्मुनियाऱ् ऱुयर्नीङ्गक् करुदिनान् 726

चिलै कोट्टु नुतल्—धनु के समान (वक्र) आकारवाला ललाट; चॅम् कनि वाय्—लाल (बिंब) फल सदृश मुख (अधर); करु नॅटु कण्—काली, लम्बी आँखे; विलैक्कु ओट्टुम् पेर् अलकुल—दाम पर दिया जानेवाला विशाल भग; मिन्नुटङ्कुम् इटैयारै—बिजली के समान लचकनेवाली कटि, इनसे युक्त (वेश्या) स्त्रियों को; मुलै कोट्टु विलङ्कु ऍन्ऱु—स्तनरूपी सींगों के जानवर, समझकर; तॉटर्न्तु अणुकि—पीछा करते हुए पास आकर; मुन् वन्त—(राजा रोमपाद) के सामने आये हुए; कलै कोट्टु पॅयर् मुनियाल्—हरिण-शृंग के कारण प्रसिद्ध महर्षि (ऋश्यशृंग) द्वारा; तुयर् नीङ्क करुतिनान्—चिन्ताविमुक्त होना चाहा। ७२६

तब उन्होंने सोचा—धनुसमललाट, बिंबाधर, और काली आयत आँखें इनसे युक्त सर्वांगसुन्दरी और विक्रेय जघनवाली वेश्याओं को सींगों वाले जानवर समझकर, उनके साथ जो रोमपाद के राज्य में आये थे उन ऋष्यश्रृंग ऋषि द्वारा पुत्रकामेष्टि कराऊँ। ७२६

तार्हात्त नऱुङ्गुऴ्जित् तनयर्हळॅन् ऱवमिन्मै
वार्हात्त वन्मुलैयार् मणिवयिऱु वाय्त्तिलराल्
नीर्हात्त कडल्पुडैशूऴ् निलङ्गात्ते नॅन्निऱ्पिन्
पारहात्तऱ् कुरियारैप् पणिनीयॅन् ऱडिपणिन्दान् 727

तार् कात्त नऱु कुऴ्चि—(पुष्प-)माला से अलंकृत सुगन्धित केशवाले; तनयर्कळ्—पुत्र (प्राप्त करना); ऍन् तवम् इन्मै—मेरे (तप-प्राप्त) भाग्य में नहीं है; वार् कात्त वन्म् मुलैयार्—कंचुकी-बद्ध उरोजोंवाली मेरी पत्नियाँ; मणि वयिऱु वाय्त्तिलर्—(गर्भ-धारणकर) सुन्दर पेटवाली नहीं बनीं; नीर् कात्त—नीर-रक्षित; कटल् पुटै चूऴ्—समुद्र से घिरी हुई इस भूमि की; कात्तेन्—रक्षा करता रहा; ऍन्निन् पिन्—मेरे बाद; पार् कात्तऱ्कु उरियारै—पृथ्वी का पालन करनेवाले पुत्रों को; नी पणि ऍन्ऱु—आप प्राप्त करायें, ऐसा; अटि पणिन्तान्—चरणों पर विनत हुए। ७२७

राजा दशरथ ने उनसे प्रार्थना की, मैंने योग्य तप नहीं किया है। अतः पुत्रवान होने का मेरा भाग्य नहीं रहा। उसी कारण मेरी कंचुकीवद्ध उरोजोंवाली पत्नियाँ गर्भ धारण नहीं करतीं। मैं बहुत दिनों से इस समुद्र-मेखला पृथ्वी का परिपालन करता आया हूँ। मेरे

बाद इसका पालन करने के लिए योग्य पुत्र पैदा हों—इसकी कृपा कीजिये। यह कहकर राजा ने उनके चरणों पर नमस्कार किया। ७२७

अव्वुरैकेट् टम्मुनियु मरुळ्शुरन्द वुवहैयन्नाय्
इव्वुलह मन्ऱिमऱ् ऱॅव्वुलह मिनिदळिक्कुम्
शॅव्वियिळम् जिऱुवर्हळैत् तरुहिन्ऱे न्निनित्तेवर्
वव्विनुहर् पॅरुवेळ्विक् कुरियवॅलाम् वरुहॅन्ऱान् 728

अ उरै केट्टु—वह कथन सुनकर; अ मुनियुम्—वह मुनि भी; अरुळ् चुरन्त—कृपापूर्ण; उवकैयन् आय्—आनन्दयुक्त होकर; इ उलकम् अन्ऱि—इस लोक के अलावा; मऱ्ऱु ऍ उलकुम्—अन्य सभी लोकों को; इनितु अळिक्कुम्—सुखपूर्वक परिपालित करनेवाले; चॅव्वि इळम् चिऱुवर्कळै—योग्य बालकों को; तरुकिन्ऱेन्—दिला दूंगा; तेवर् वव्वि नुकर्—देव (जिसमें) हविर्भाग लेकर अशन करें उस; पॅरु वेळ्विक्कु—बड़े यज्ञ (को करने) के लिए; उरिय अलाम्—आवश्यक सभी (सामग्रियाँ); इनि वरुक—अभी आ जायँ; ऍन्ऱान्—कहा। ७२८

ऋषि ने राजा की प्रार्थना सुनी तो उन्हें आनन्द हुआ। करुणा उपजी। 'यह एक लोक क्या ? सभी लोकों के रक्षण में समर्थ और योग्य पुत्र पैदा होंगे। इसका मैं उपाय करूँगा। अब एक बड़े यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्रियाँ अभी मँगाइये। उस यज्ञ में हम देवों को हवि देंगे जिसको वे स्वीकार करेंगे'। ७२८

कादलरैत् तरुवेळ्विक् कुरियवॅलाम् कडिदमैप्प
मादवरिऱ् पॅरियोनु मऱ्ऱदनै मुऱ्ऱुवित्तान्
शोदिमणिप् पोऱ्कलत्तिऱ् चुदैयन्नैय वॅण्शोऱोर्
बूदगणत् तरशेन्दि यन्नतिन्ऱुम् बोन्ददाल् 729

कातलरै तरु वेळ्विक्कु उरिय ऍलाम्—पुत्र दिलानेवाले यज्ञ के लिए आवश्यक सब; कटितु अमैप्प—शीघ्र व्यवस्था करके; मऱ्ऱु—उसके बाद; मा तवरिल् पॅरियोनुम्—महान तपस्वियों में श्रेष्ठ, (ऋष्यशृंग) ने भी; अततै मुऱ्ऱुवित्तान्—उसको सुसम्पन्न कराया; ओर् पूत कणत्तु अरचु—एक भूत-गण-राज; चोति मणि पॊन् कलत्तिल्—उज्ज्वल मणिमय स्वर्ण-पात्र में; चुतै अनैय—सुधा सदृश; वॅण् चोऱु—श्वेत अन्न को; एन्ति—लेकर; अनल् निन्ऱुम्—यज्ञाग्नि से; पोन्ततु—बाहर आया। ७२९

पुत्रेष्टि के लिए सभी (स्थान, वस्तुएँ आदि का) प्रबंध शीघ्र किया गया। ऋष्यशृंग ने यज्ञ संपन्न कराया। तब यज्ञाग्नि से एक भूत-राज अपने हाथ में एक स्वर्ण-मणि-पात्र लेकर प्रकट हुआ। उस पात्र में अमृत के समान श्वेत अन्न था। ७२९

पॊन्निन्मणिप् परिहलत्तिऱ् पॊलिहिन्ऱ विन्नमुदैप्
पन्नुमऱैप् पॊरुडेर्न्द पॅरियोन्ऱन् पणियिनाल्

तऩ्ऩत्तैय निऱैकुणत्तुत् तयरदऩु मुऱैयाले
नऩ्ऩुदलार् मूवरुक्कु नालुकू ऱिट्टळित्ताऩ् 730

तऩ् अत्तैय–अपने समान जो स्वयं ही थे; निऱै कुणत्तु–सम्पूर्ण सद्गुणी; तयरतऩुम्–दशरथ भी; पन्ऩुम्–पाठ-योग्य; मऱै पॊरुळ् तेर्न्त–वेदों के अर्थ को खूब जाननेवाले; पॆरियोऩ् तऩ् पणियित्ताल्–महात्मा की आज्ञा के अनुसार; पॊऩ् इऩ् मणि परिकलत्तिल्–स्वर्णरचित मनोरम मणि-जड़ित पात्र में; पॊलिकिऩ्ऱ–रहनेवाले; इऩ् अमुतै–मधुर उस अन्न को; मुऱैयाले–यथाक्रम; नल् नुतलार् मूवरुक्कुम्–मनोहर ललाटवाली तीनों रानियों को; नालु कूऱु इट्टु–चार भाग बनाकर; अळित्ताऩ्–दिया। ७३०

वेदज्ञ ऋषि ने सर्व-गुण-संपन्न महाराजा दशरथ से, जिनके समान जो स्वयं हैं, बताया कि इसे अपनी पत्नियों को दीजिये। महाराज ने भी उसको चार भागों में बाँटकर सुन्दर ललाटवाली अपनी पत्नियों को उनके पद के अनुसार यथाक्रम प्राशन करा दिया। ७३०

❀ विरिन्दिडुती विऩैशॆय्द वॆव्वियती विऩैयालुम्
अरुङ्गडयिऩ् मऱैयऱैन्द वऱञ्जॆय्द वऱत्तालुम्
इरुङ्गडहक् करतलत्तिव् वॆऴुदरिय तिरुमेऩिक्
करुङ्गडलैच् चॆङ्गऩिवायक् कवुशलैयॆऩ् पाळ्पयन्दाळ् 731

विरिन्तिट्टु–व्याप्त; तीविऩै–बुरे पाप के; चॆय्त–कृत; वॆव्विय तीविऩैयालुम्–भयंकर बुरे कर्म (पाप) के कारण; अरु–श्रेष्ठ; कटै इल्–अनन्त; मऱै अऱैन्त–वेदों में कथित; अऱम् चॆय्त अऱत्तालुम्–पुण्य के किये पुण्य-प्रताप से; इरु कटकम् कर तलत्तु–श्रेष्ठ बाहुवलयधारी; ऍऴुत अरिय तिरुमेऩि–जिनका चित्र बनाना दुर्लभ है, ऐसे श्रीशरीर वाले; इ करु कटलै–इन नीलेसागर (सागरोपम) को; चॆम् कऩि वाय्–लाल बिम्बफल-सम मुखवाली; कवुचलै ऍऩ्पाळ्–कौसिल्या नाम की देवी ने; पयन्ताळ्–जनाया। ७३१

इसके फलस्वरूप अरुणबिंबाधरा कौसिल्या देवी ने सुन्दर और श्रेष्ठ बाहुवलयधारी, चित्रणदुर्लभ सुन्दर रूपधर, और नीलसागरोपम श्रीरामचंद्र को जन्म दिया। श्रीराम का जन्म, पाप को दूर करने और धर्म के संस्थापनार्थ हुआ है। अब संसार में व्याप्त रहे पापों को अपने पाप का फल भुगतना पड़ेगा और अनंतवेदोक्त धर्मों को अपने सुकृत पुण्य का फल भोगने का समय आ गया था। ७३१

❀ तळ्ळरिय पॆरुनीदित् तनियाऱु पुहमण्डुम्
पळ्ळमॆऩुन् दहैयाऩैप् परदऩ्ऩुम् पॆयराऩ्
ऍळ्ळरिय गुणत्तालु मॆऴिलालु मिव्विरुन्द
वळ्ळलैये यनैयाऩैक् केहयर्होऩ् महळ् पयन्दाळ् 732

तळ्ळ अरिय–दुर्निवार; पॆरु नीति–श्रेष्ठ नीतिरूपी; तनि आऱु–अनुपम नदियों

के; पुक–गिरने से; मणट्टुम्–भरे रहे; पळ्ळम् ॲनुम् तकैयात्–महासागर कहलाने योग्य; अॅळ्ळ अरिय–अनिन्द्य; कुणत्तालुम्–श्रेष्ठ गुणों में; अॅळ्ळिलालुम्–(और) सुन्दरता में; इव् इरुन्त–यहाँ विराजमान; वळ्ळलैये अनैयान्–उदार प्रभु (श्रीराम) के ही सदृश; परतन् ॲनुम् पॅयरानै–भरत नामधारी को; केकयर् कोन् मकळ् पयन्ताळ्–केकयतनया ने जनाया। ७३२

भरत नाम के पुत्र को केकयपुत्री ने जन्म दिया। वे भरत ऐसे सागर (के समान) कहे जा सकते है जिनमे जाकर समस्त अटल नीति-नदियाँ मिल जाती है। (प्रकीर्तित नीतिमान थे भरत।) वे अपने अनिन्द्य सद्गुणों और सुन्दरता में इन उदार प्रभु श्रीरामचन्द्र के ही समान है। ७३२

अरुवलिय तिऱलित्तरा यऱङ्गॅडुक्कु मडलरक्कर्
वॅरुवरुतिण् डिऱलारै विल्लॅन्दि वरुमेरुप्
परुवरैयु नॅडुवॅळ्ळिप् परुप्पदमुम् पोल्वार्हळ्
इरुवरैयु मिव्विरुवर्क् किळैयाळु मीन्ऱॅडुत्ताळ् 733

अरु–दुर्द्धर्ष; वलिय तिऱलित्तराय्–अति वलिष्ठ; अऱम् कॅटुक्कुम्–धर्मनाशक; अटल् अरक्कर्–विरोधी राक्षस; वॅरुवरु–जिनसे भयभीत हैं; तिण् तिऱलारै–उन सुदृढ़ बलवानों को; विल् एन्ति वरुम्–धनुष लेकर आनेवाले; मेरु परु वरैयुम्–मेरु के बड़े पर्वत की; नॅटु वॅळ्ळि परुप्पतमुम्–(और) बड़े चाँदी के पर्वत की; पोल्वार्कळ्–समानता करनेवालों को; इरुवरैयुम्–दोनों को; इ इरुवर्क्कु इळैयाळुम्–(कौसिल्या, कैकेयी) दोनों की छोटी (सुमित्रा) ने; ईन्ऱु अॅटुत्ताळ्–जन्म दिया। ७३३

कौशल्या और कैकेयी दोनों से छोटी रानी सुमित्रा ने अजेय और वलिष्ठ शत्रु राक्षसों के मन में भय उत्पन्न कर सकनेवाले, धनुर्धर मेरु पर्वत और कैलाश पर्वत के समान दिखनेवाले लक्ष्मण और शत्रुघ्न दोनों को जन्म दिया। (धनुर्धर पर्वत-अप्राप्य, कल्पित उपमा है। इससे लगता है कि लक्ष्मण स्वर्ण वर्ण थे और शत्रुघ्न श्वेत रंग के।)। ७३३

कलैयायुम् पेरुणर्विऱ् कलैमहट्कुन् दलैवराय्च्
चिलैयायुन् दनुवेदन् दॅव्वरैप्पोऱ् पणिशॅय्यक्
कलैयाळिक् कदिर्त्तिङ्ग ळुदयत्तिऱ् कलित्तोङ्गुम्
अलैयाळि यॅन्नवळर्न्दार् मऱैनान्गु मनैयार्हळ् 734

मऱै नान्कुम् अनैयार्कळ्–वेद चतुष्टय सदृश वे; कलै आयुम् पेर् उणर्विल्–शास्त्रान्वेषण के श्रेष्ठ विवेक में; कलैमकट्कुम्–सरस्वतीदेवी के भी; तलैवर् आय्–गुरु होकर; चिलै आयुम् तनुवेतम्–धनुर्विद्या का प्रतिपादक धनुर्वेद (के); तॅव्वरै पोल्–विजित शत्रु के समान; पणि चॅय्य–सेवा-टहल करते; कलै आळि–कलायुक्त वर्तुल; कतिर् तिङ्कळ्–उज्ज्वल चन्द्र के; उतयत्तिन्–उदय पर; कलित्तु ओङ्कुम्–गर्जन के साथ उठनेवाली; अलै आळि ॲन–लहरोंवाले सागर के समान; वळर्न्तार्–वढ़े (चन्द्रोदय-गुरु की कृपा, उससे वे शास्त्रविद्या और धनुर्विद्या के ज्ञान में बढ़े।) ७३४

वे चारों पुत्र चारों वेदों के समान पले। शास्त्रानुशीलन में वे सरस्वती देवी के भी नायक (गुरु) है। धनुर्विद्या के विषय मे स्वयं धनुर्वेद ही विजित शत्रु के समान उनकी सेवा करता है। ऐसे वे, पूर्ण कलाओं के साथ वर्तुल और प्रकाशमय चन्द्र के उदय होने पर जैसे समुद्र गरजते हुये बढ़ता है वैसे (गुण, सुन्दरता, आकार, कुशलता आदि में) वर्धित हुए। (ध्वनि से चंद्र गुरु की कृपा और गुरु का सान्निध्य है।)। ७३४

तिऱैयोडु मरशिऱैञ्जुञ् जऱिहळऱ्काऱ् ऱयरदऩाम्
पॉऱैयोडुन् दॉडर्मऩत्ताऩ् पुदल्वरॅनुम् पॅयरेकाण्
उऱैयोडु नॆडुवेला युबनयऩ विदिमुडित्तु
मऱैयोडु वित्तिवरै वळर्त्तानुम् वशिट्टऩगाण् 735

उऱै ओटम्–म्यान में रहनेवाले; नॆट्टु वेलाय्–लम्बे भालेवाले; अरचु–अनेक राजा; तिऱैयोटुम्–राजरव-सह; इऱैञ्चुम्–जिन (चरणों) की वन्दना करते हैं; चॆऱि कऴल् काल्–उन वीरता-प्रदर्शक पायलवाले चरणों के; तचरतऩ् आम्–दशरथ नामधारी; पॉऱैयोटुम् तॊटर् मनत्ताऩ्–क्षमाशील मन के राजा के; पुतल्वर् ॲनुम् पॅयरे–पुत्र, नाममात्र के लिए; उपनयनम् विति मुटित्तु–उपनयन संस्कार कराकर; मऱै ओटुवित्तु–वेदाध्ययन कराकर; इवरै वळर्त्तानुम्–इनके पालन-पोषण करनेवाले; वचिट्टऩ्–वसिष्ठ जी (ही थे)। ७३५

कोश-निहित भालाधारी जनक! (शत्रु नहीं रहे, इसलिए भाला कोश के अन्दर ही रहता है।) ये पुत्र, दशरथ के, जिनके पायलधारी चरणों में अनेक राजा आकर दण्डवत करते है और जो क्षमाशील हैं, पुत्र तो है पर वह दायित्व नाम मात्र का रह गया। क्योंकि विधिवत उपनयन आदि संस्कार पूरा करके वेदाध्ययन आदि कराकर इनको पालनेवाले तो वसिष्ठ जी ही हैं। ७३५

ईङ्गिवरा लॅन्वेळ्विक् किडैयूऱु कडिदियऱ्ऱुम्
तीङ्गुडय कॉडियोरैक् कॉल्विक्कुञ् जिन्दयऩाय्प्
पूङ्गऴला युडऩ्कॊण्डु वनम्बुक्केन् पुहामुऩ्ऩम्
ताङ्गरिय पेराऱ्ऱऱ् ऱाडहैये तलैप्पट्टाळ् 736

पू कऴलाय्–सुन्दर पायलधारी; ॲऩ् वेळ्विक्कु–मेरे यज्ञ के लिए; इटैयूऱु कटितु इयऱ्ऱुम्–बाधाएँ, सहसा डालनेवाले; तीङ्कु उटैय–दुष्टतापूर्ण; कॉटियोरै अत्याचारी (राक्षसों) को; ईङ्कु–यहाँ के; इवराल्–इनके द्वारा; कॉल्विक्कुम् चिन्तैयऩ् आय–मरवाने का विचार रखनेवाला बनकर; उटऩ् कॊण्टु–साथ लेकर; वऩम् पुक्केऩ्–वन में आया; पुका मुऩ्ऩम्–प्रवेश करने के पहले ही (करते-करते); ताङ्क अरिय–दुर्वह; पेराऱ्ऱल्–बड़ी बलशालिनी; ताटकैये–ताड़का ही; तलै पट्टाळ्–पहली विरोधिनी बनी सामने आयी। ७३६

सुन्दर पायलधारी जनक! अपने यज्ञ को अनेक तरह की बाधाएँ

पहुँचानेवाले दुष्कर्मी क्रूर राक्षसों को इनके द्वारा मरवाने का विचार करके मैं दशरथ के पास गया। उनकी अनुमति से इन्हें लेकर वन में आया। ज्योंही मैंने वन में प्रवेश किया त्योंही सबसे पहले दुर्द्धर्ष बलशालिनी ताड़का ही सामने आयी। ७३६

❀ अलैयुरुवक् कडलुरुवत् ताण्डहैतन् नीण्डुयरन्द
निलैयुरुवप् पुयवलियै नीयुरुव नोक्कैया
उलैयुरुवक् कननलुमिळ्हद् टाडहैतन् नुरमुरुवि
मलैयुरुवि मरमुरुवि मण्णुरुविर् ङोरुवाळि 737

ऐया–राजन्; अलै उरुवु–लहर-व्याप्त; अ कटल् उरुवत्तु–उस सागर-सम रूपवान; आण् तकै तन्–पुरुषश्रेष्ठ के; नीण्टु उयर्न्त–लम्बी और उन्नत; निलै उरुवम्–अचल सुन्दर; पुयम् वलियै–भुजाओं के प्रताप को; नी उरुव नोक्कु–आप खूब ध्यान देकर देखिये; ओरु वाळि–एक बाण; उलै उरुवम्–भट्ठी की सी दीप्त; कनल् उमिळ्–आग उगलनेवाली; कण्–आँखों की; ताटकै तन् उरम् उरुवि–ताड़का का वक्ष भेदकर; मलै उरुवि–पर्वत भेदकर; मरम् उरुवि–वृक्ष भेदकर; मण् उरुविर्रु–पृथ्वी में घुसा। ७३७

महाराज! तरंगो से व्याप्त सागर के रंगवाले इन पुरुषश्रेष्ठ की लम्बी उन्नत, मनोरम और सुगठित भुजाओं के बल की महिमा देखिये। इनका एक ही शर, भट्ठी की जलती आग के समान आँखोंवाली ताड़का के वक्ष में घुसा; उसको भेदकर बाहर निकला, फिर वह सामने के पर्वत को और वृक्ष को भेदकर बाहर आया और धरती में घुस गया। ७३७

शॆक्कर्निरत् तॆरिहुञ्जिच् चिरक्कुवैहळ् पॊरुप्पॆन्न
उक्कनवो मुडिविल्लै योरम्बि नॊडुमरक्कि
मक्कळिलङ् गॊरुवन्बोय् वान्पुक्कान् मर्रॊरुवन्
पुक्कविड मरिन्दिलेन् पोन्दनॆन् विनैमुडित्ते 738

चॆक्कर् निरत्तु–लाल रंग के; ऎरि कुञ्चि–जलती आग के समान केशवाले; चिरम् कुवैकळ्–शिरों की राशियाँ; पॊरुप्पु ऎन्न–पर्वतों के समान; उक्कनवो–जो कटकर गिरे; मुटिवु इल्लै–(उनका) अन्त तो नहीं; अङ्कु–वहाँ; अरक्कि मक्कळिल्–राक्षसी के पुत्रों में; ओरुवन्–(सुबाहु) एक; ओर् अम्पिनॊटुम्–एक शर से; पोय्–मरकर; वान् पुक्कान्–परलोक पहुँच गया; मर्रैयवन्–दूसरा (मारीच); पुक्क इटम् अरिन्तिलेन्–प्रवेश-स्थान मैंने नहीं जाना; ऎन् विनै मुटित्तु–अपना (यज्ञ-)कार्य पूरा कर; पोन्तनॆन्–इधर आया (मैं, इनके साथ)। ७३८

राजकुमार राम के शरों से जो अग्नि-सम लाल शिखावाले राक्षसों के सिर कट कर गिरे, और जिन सिरों की पर्वत-सम राशियों के ढेर हुए, उनका अन्त ही नही था। उनके एक शर से ताड़का का एक पुत्र सुबाहु मरकर आकाशलोक चला गया। दूसरा कहाँ गया! मैं नहीं जानता। मेरा यज्ञ पूरा हुआ और मै इनके साथ यहाँ आया। ७३८

आय्न्दोर्क्कु मुणर्वरिय वयर्क्केयु मऱिवरिय
काय्न्देवि नुलहनैत्तुङ् गडलोडु मलैयोडुम्
तीय्न्देऱच् चुडुहिऱ्कुम् पडैक्कलङ्गळ् शॅय्दवत्ताल्
ईन्देनुम् मनमुट्क विवर्क्केवल् शॅय्हुन्नवाल् 739

आय्न्तोर्क्कुम्–(युद्ध-विद्या-) विशारदों के लिए भी; उणर्वु अरिय–जो ज्ञान-गम्य नहीं; अयर्क्कुम्–ब्रह्मा के लिए भी; अऱिवु अरिय–समझने में दुर्लभ; काय्न्तु एविन्–कोप करके चलाने पर; उलकु अनैत्तुम्–सारे लोकों को; कटलोटुम् मलैयोटुम्–समुद्रों और पर्वतों के साथ; तीय्न्तु एऱ–पूर्णरूप से भस्म करते हुए; चुटुकिऱ्कुम्–जला सकनेवाले; पटैक्कलङ्कळ्–अस्त्र-शस्त्र (जो मैंने तप करके प्राप्त किये थे); चॅय् तवत्ताल्–अपने कृत तप के कारण; ईन्तेनुम्–प्रदान करनेवाला मैं भी; मनम् उट्क–लज्जित होऊँ ऐसा; इवर्कु–इनकी; एवल् चॅय्कुन–सेवा करते है। ७३९

इनको मैंने अपने सारे अस्त्र दे दिये। वे अस्त्र मुझे अपनी तपस्या के प्रभाव से ही मिले थे। मैंने उनको दिया—वह भी अपने तप की महिमा के कारण ही। वे अस्त्र-शस्त्र धनुर्विद्या-विशारदों के लिए भी अगम हैं। ब्रह्मा के लिए भी दुर्गम है। वैर के साथ चलाने पर वे सारे संसार को मय समुद्र व पर्वत के जला सकनेवाले है। वे उनकी जैसी सेवा करते है उसको देखकर स्वय मुझे लज्जा होती है। मैं उनका इतना अच्छा प्रयोग नहीं जानता था। (जनक के मन में जो सुकुमार राजकुमार के धनुर्बल में शंका हो सकती थी उसके निवारणार्थ महर्षि ने यह बात कही।)। ७३९

❀ कोदमन्ऱन् पन्निक्कु मुन्नैयुरुक् कॉडुत्तदिवन्
पोदुवॅन्ऱ दॅन्नप्पॉलिन्द पॉलङ्गळ्ऱ्कार् पॉडिहण्डाय्
कादलॅन्ऱ नुयिर्मेलु मिक्करियोन् पालुण्डाल्
ईदिवन्ऱन् वरलाऱुम् पुयवलियु मॅनवुरैत्तान् 740

कोतमन् तन् पन्निक्कु–गौतम की पत्नी को; मुन्नै उरु कॉटुत्ततु–पूर्वरूप दिया; इवन्–इनके; पोतुवॅन्ऱतु ऑन–कमल को हराया, ऐसा; पॉलिन्त–शोभित; पॉलम् कळल्—स्वर्ण-पायल-धारी; काल्–चरणों की; पॉटि–धलि; कण्टाय्–जान लीजिये; ॲन् तन् उयिर् मेलुम्–अपने प्राणों से बढ़कर; इ करियोन् पाल्–इन नील-वर्ण प्रभ पर; कातल् उण्टु–प्रेम (भक्ति) है; इवन् तन् वरलाऱुम्–इनका चरित्र; पुयम् वलियुम्—भुज-बल भी; ईतु–उपरोक्त यह है; ॲन उरैत्तान्–यह कहा। ७४०

जनक ! गौतम की पत्नी देवी अहिल्या का प्रस्तर-रूप दूरकर पूर्व निजी रूप दिया, इन्ही के सुन्दर कंकणधारी चरणों की धूलि ने ही, वह भी ध्यान कर लीजिये। इन पर मुझे अपने प्राणों से अधिक प्यार है, मेरी इन पर भक्ति है। इनका वृत्तांत, और भुजबल मैंने आपको

बता दिया। विश्वामित्र ने अपनी बात समाप्त की। (महर्षि ने क्रम से श्रीराम की महत्ता बताकर अन्त में उनके अवतार-रहस्य की ओर भी संकेत कर दिया।)। ७४०

12. कार्मुहप्पडलम् (कार्मुक पटल)

❀माऱ्ऱम्या दुरैप्पदु माय विऱ्कुनाल्, तोऱ्ऱवा वॅनमनन् दुळङ्गु हिऩ्ऱदाल्
नोऱ्ऱन णङ्गयु नॉय्दि नैयऩ्विल्, एऱ्ऱुमे लिडर्क्कड लेऱ्ऱ मॅऩ्ऱनऩ् 741

माऱ्ऱम् यातु उरैप्पतु–उत्तर क्या देना है; मायम् विल्कु–मायापूर्ण इस धनु से; नान् तोऱ्ऱवाऱु–मैं हार गया; ॲन–यह सोच; मनम् तुळङ्कुकिऩ्ऱतु–मेरा मन अधीर है; ऐयन्–ये प्रभु; विल् नॉय्तिन् एऱ्ऱमेल्–धनुष को अनायास चढ़ा देंगे; इटर कटल् एऱ्ऱम्–(तो मुझे) संकट-सागर के तीर पर चढ़ा देंगे; नङ्कैयुम् नोऱ्ऱनळ्–कुमारी भी सफलव्रता होगी; ॲऩ्ऱनऩ्–कहा। ७४१

जनक ने अपनी चिन्ता कही। महर्षे! मैं क्या उत्तर दूँ? मैं इसी धनुष के कारण विफल-संकल्प हो गया। यह धनुष मायावी लगता है (क्योंकि कोई अब तक यह धनुष उठाकर झुका नहीं पाया है) यह सोचकर मेरा मन अधीर है। हाँ, आपके श्रीराम इसको अनायास चढ़ा देंगे तो (आपके कथनों से ऐसा लगता है) मैं भी चिन्ता-सागर पार कर जाऊँगा और मेरी पुत्री सीता भी सफलव्रत हो जायगी। ७४१

❀ॲऩ्ऱन नॆऩ्ऩुदऩ् नॆदिर्निन् ऱारैयक्, कुऩ्ऱुरळ् वरिशिलै कॊणर्मि नीण्डॆन
नऩ्ऱॆन वणङ्गिऩर् नाल्व रोडिऩर्, पॊऩ्ऱिणि कारमुहच् चालै पुक्कनर् 742

ॲऩ्ऱनऩ्–यह कहकर; एऩ्ऱु–संकल्प करके; तन् ॲतिर् निऩ्ऱारै–अपने सामने खड़े रहे लोगों को; अ–उस; कुऩ्ऱु उरळ्–पर्वततुल्य; वरि चिलै–बन्धनयुक्त धनु को; ईण्टु कॊणर्मिऩ्–यहाँ ले आओ; ॲन–आज्ञा देने पर; नाल्वर्–चार सेवक; नऩ्ऱु ॲन–अच्छा कहकर; वणङ्किऩर्–नमस्कार करके (जय जीव कहकर); ओटिनर्–भागे; पॊन् तिणि–स्वर्णमय; कार्मुकम् चालै–कार्मुकागार में; पुक्कनर्–पहुँचे। ७४२

जनक ने यह कहकर, धनु को मँगाने के इरादे से, सामने स्थित सेवकों से कहा कि पर्वततुल्य उस कार्मुक को इधर ले आओ। चार आज्ञाकारी सेवकों ने जो वहाँ खड़े थे, जय जीव कहकर नमस्कार किया और वे दौड़े और स्वर्णमय धनु के आगार में पहुँचे। ७४२

पुक्कन रवर्हळैप् पॊरुन्द नोक्कियिम्
मुक्कणऩ् विल्लिनै मॊय्म्बि नाऱ्ऱलो
डिक्कणत् तळित्तिरॆन् ऱॆम्मै याळुडै
सिक्कुरु शनहनुम् विळम्बि नानॆऩ्ऱार् 743

पुक्कत्तर्—पहुँचे वे; अवर्कळै—उनको (जो वहाँ रहे); पॉरुन्त नोक्कि—अर्थ के साथ देखकर; ॲम्मै आळ् उटै(य)—हमारे स्वामी; मिक्कु उरु चत्तकत्—सम्मान्य जनक ने; इ मुक्कणन् विल्लिनै—इस त्रिनेत्र (शिवजी) के धनु को; सॉय्म्पिन् आऱ्ऱलोटु—बल लगाकर कुशलता के साथ; इ कणत्तु—इसी क्षण; अळित्तिर्—ले आओ; ॲन्ऱु—यह; विळम्पिनान्—(आज्ञा) कही; ॲन्ऱार्—बोले। ७४३

वहाँ पहुँचकर उन्होंने वहाँ रहे वीरों को राजा की आज्ञा सुनायी। "हमारे स्वामी, सम्मान्य राजाधिराज, जनकजी ने, इस त्रिनेत्र परमेश्वर के धनुष को वल लगाकर कौशल के साथ अभी वहाँ ले आने की आज्ञा दी है"। ७४३

❀ उरुवलि यानैयै यॊत्त मेनियर्, शॆऱिमयिर्क् कल्लॆनत् तिरण्ड तोळिनर्
अरुपदि नायिर रळवि लाऱ्ऱलर्, तऱिमडुत् तिडैयिडै तण्डिर् ऱाङ्गिनर् 744

उरु वलि—अति वलिष्ठ; यानैयै ऑत्त मेनियर्—गज-सम शरीरवाले; चॆऱि मयिर्—घने रोंगटोंवाले; कल् ॲन तिरण्ट—प्रस्तर के समान (कठोर) पुष्ट; तोळिनर्—हाथवाले; अळवु इल् आऱ्ऱलर्—अपार शक्तिवाले; अरुपतिनायिरर्—साठ सहस्र; इटै इटै तऱि मट्टुत्तु—बीच-बीच में वल्ले देकर; तण्टिन्—उन डाँडों के सहारे; ताङ्किनर्—ढो लाये। ७४४

उनकी बात सुनकर साठ सहस्र वीर उद्यत हो गये। वे अति बली गज के समान शरीरवाले थे और रोंगटे भरे और प्रस्तर-सम कठोर हाथों-वाले थे। अपार शक्तिशाली वे, धनुष के नीचे यत्र-तत्र वड़े डाँड लगाकर उनके सहारे धनु को ढोकर ले गये। (वाल्मीकी में पाँचसहस्र वीरों की वात ही है और वे 'अष्टचक्रा मंजूषा' मे धनुष को लाये। तमिऴ में अरु पतिनायिरम् का— "आधा दस हजार" अर्थ भी लगाया जा सकता है। तब पाँच सहस्र ठीक हुआ। लेकिन साठ सहस्र वाले अर्थ को ही अधिक मान्यता दी जाती है।)। ७४४

❀ नॆडुनिल महण्मुदु हाऱ्ऱ निन्ऱुयर्, तडनिमिर् वडवरै तानु नाणुऱ
इडमिलै युलहॆन वन्द दॆङ्गणुम्, कडल्पुरै तिरुनह रिरैत्तुक् काणवे 745

नॆटु निलम् मकळ्—विशाल भूमि की देवी (के); मुतुकु आऱ्ऱ—पीठ का दर्द दूर करते; निन्ऱु उयर्—स्थिर और उन्नत; तटम् निमिर्—गरिमापूर्ण; वट वरै तानुम्—मेरुपर्वत भी; नाण् उऱ—लजाता; कटल् पुरै तिरुनकर्—सागर-सम (विशाल और समृद्ध) श्रीनगर; ॲङ्कणुम्—सब जगह; इरैत्तु—गर्जन करते हुए; काण—देखते; उलकु इटम् इलै ॲन—संसार में स्थान नहीं हो ऐसा; वन्तत्तु—(वह धनुष) आया। ७४५

धनुष वहाँ से हटा तो भूदेवी को पीठ की पीड़ा से निवारण मिला। उस धनु को देखकर स्वयं मेरु पर्वत भी (जिसका ही बना यह शिवधनुष है) लाज का अनुभव करने लगा। विशालता और समृद्धता में सागर के समान रहनेवाली उस मिथिला-नगरी में सभी लोग कोलाहल मचाते हुए

आकर देखने लगे। संसार में स्थान कहाँ है ? ऐसा संदेह उत्पन्न करते हुए वह धनुष आया। ७४५

शङ्गॉडु शक्करन् दरित्त शॅङ्गयच्, चिङ्गवे इलूलने लिदनैत् तीण्डुवान्
ॲङ्गुळ नीरुवनिन् ड्रेड्रि निच्चिलै, मङ्गैतन् ट्रिरुमणम् वाळु मालॅन्बार् 746

चङ्कोटु चक्करम् तरित्त–शंख के साथ चक्र धारण करनेवाले; चॅम् कै–सुन्दर बाहु; अ–वे; चिङ्कम् एऋ अल्लतेल्–पुरुषसिंह (श्रीविष्णु) नहीं तो; इतनै तीण्टुवान्–इसका स्पर्श करनेवाले; ॲङ्कु उळन्–कहाँ हैं; ऑरुवन् निन्ऋ–वही एक खड़े होकर; इ चिलै एड्रिन्–यह धनुष (पर डोरी) चढ़ायेंगे तो; मङ्कै तन् तिरुमणम्–कुमारी जी का विवाह; वाळुम्–सम्पन्न होगा; ॲन्पार्–(कुछ लोग) कहते। ७४६

लोग आपस में बोलने लगे। कुछ लोगों ने कहा कि पाञ्चजन्य शंख और सुदर्शन चक्र के धारण करनेवाले नरकेसरी श्रीविष्णु के सिवा, इस धनु को झुकानेवाले कौन है, कहाँ है ? वे स्वयं आकर धनुष पर डोरी चढ़ा लेंगे, तभी कुमारी सीताजी का विवाह सम्पन्न होगा। (साफ़ है कि लोगों के मन में दिव्यदंपती का भान हो गया है। तो भी मानवीय अज्ञता स्वाभाविक है और वह आशंका और संशय की जननी है।)। ७४६

कैदवन् दनुवॅन्नल् कन्नहक् कुन्ड्रॅन्बार्
शॅय्ददत् तिशैमुहन् ड्रीण्डि यन्ड्रुतन्
मॉय्दवप् पॅरुनयिन् मुयड्चि यालॅन्बार्
ॲय्दवन् यावनो वेड्रिप् पण्डॅन्बार् 747

तन् ॲनल्–(इसको) धनु कहना; कैतवम्–कैतव है; कनकम् कुन्ऋ–कनक (मेरु) पर्वत है; ॲन्पार्–कहते; अ तिचै मुकन्–वह दिशामुख (ब्रह्मा); चॅय्ततु–निर्मित है; तीण्टि अन्ऋ–हाथ लगाकर नहीं; तन्–अपने; मॉय्तवम्–पूर्ण तपस्या; पॅरुमैयिन् मुयड्चियाल्–और बहुत प्रयत्न से; ॲन्पार्–कहते; पण्टु–प्राचीन समय में; एड्रि–इस पर प्रत्यंचा चढ़ाकर; ॲय्तवन् यावनो–चलानेवाला कौन था; ॲन्पार्–कहते। ७४७

कुछ लोग कहते कि इसको धनुष कहना धोखा है। 'यह स्वर्णमेरु है'। "ब्रह्मा का, विना हाथ से स्पर्श किये, निर्मित है; उनकी पूर्ण तपस्या और गुरु प्रयत्न के प्रभाव से रचा है।" "पहले इसको लेकर प्रत्यंचा चढ़ायी किसने थी ?"। ७४७

❀ तिण्णॅडु मेरुवैत् तिरट्टिड् ड्रोवॅन्बार्
अण्णल्वा ळरविनुक् करश नोवॅन्बार्
वण्णवान् कडल्पण्डु कडैन्द मत्तॅन्बार्
विण्णिड नॅडियविल् वीळ्न्द दोवॅन्बार् 748

तिण् नॅट्टु मेरुवै—सुदृढ़ और बड़े मेरुपर्वत को; तिरट्टिऱ्ऱो—उठाकर धनु बनाया गया क्या; अण्णल् वाळ् अर वित्तुक्कु—गौरव और शोभायुक्त सर्पो का; अरचनो—राजा है क्या; ऎन्ऩ्पार्—कहते; पण्टु—पहले; वण्णम् वान् कटल्—(श्वेत-) रंग के विशाल सागर को; कटैन्त मत्तु—जिससे मथा गया वह मथानी; ऎन्ऩ्पार्—कहते; विण् इट्टु—आकाश में बननेवाला; नॅटिय विल्—लम्बा (इन्द्र-) धनुष; वीऴ्न्ततो—(भू पर) गिर पड़ा क्या; ऎन्ऩ्पार्—कहते। ७४८

"क्या यह सुदृढ़ और बड़े मेरु पर्वत का धनुष-रूप है ?" "श्रेष्ठ और भासमान उरगों का राजा है ?" "क्या यह वह मथानी है जिसके सहारे क्षीरसागर मथा गया था ?" "क्या आकाश से दीर्घ इन्द्रधनुष नीचे गिरा पड़ा है ?"। ७४८

❀ ऎन्ऩिदु कॊणर्हवॆन्ऩ् ऱियम्बि नाऩॆन्ऩ्बार्
मन्ऩव रुळर्कॊलो मदिकॆट् टारॆन्ऩ्बार्
मुन्ऩैयूऴ् वित्तैयित्ताऩ् मुडिक्क लामॆन्ऩ्बार्
कन्ऩियु मिच्चिलै काणु मोवॆन्ऩ्बार् 749

इतु कॊणर्क—यह लाओ; ऎन्ऱु इयम्पित्ताऩ्—यह राजा ने कहा; ऎन्—क्यों; ऎन्ऩ्पार्—कहते; मति कॆट्टार्—बुद्धिहीन; मन्ऩवर् उळरो—(दूसरे) राजा हैं क्या; ऎन्ऩ्पार्—कहते; मुन्ऩै ऊऴ् वित्तैयित्ताल्—पूर्वपुण्य से; मुटिक्कलाम्—यह सम्पन्न किया जा सकता है; ऎन्ऩ्पार्—कहते; इ चिलै—यह धनुष; कन्ऩियुम् काणुमो—कन्या (सीता) देख चुकी होगी क्या; ऎन्ऩ्पार्—कहते। ७४९

"राजा ने इसे लाने की आज्ञा अब क्यों दी है ?" "हमारे राजा के समान जड़मति कोई है ?" "क्या यह कभी झुकाया जा सकता है ?" "हाँ, विधि प्रबल रही तो कोई उठा सके !" "क्या इसको सीताजी ने देखा होगा" ? ('जड़मति' उनके उद्देश्य में भी कहा जा सकता है जो धनुष उठाकर वीर्यशुल्का सीताजी को प्राप्त करने की इच्छा से आ गये हों। क्या सीताजी ने देखा होगा ? —इसका मतलब है सीता इस धनु की दुर्द्धर्षता देखकर क्या-क्या समझती होंगी ? या क्या सीताजी इस धनुष को उठते देखेंगी भी ?)। ७४९

इच्चिलै युदैत्तकोऱ् किलक्कम् यादॆन्ऩ्बार्
नच्चिलै नङ्गैमे नाट्टुम् वेन्दॆन्ऩ्बार्
निच्चय मॆंडुक्कुङ्गॊ नेमि यालॆन्ऩ्बार्
शिऱ्चिलर् विदिशॆय्द तीमै यामॆन्ऩ्बार् 750

इ चिलै—इस धनु के; उतैत्त कोल् कु—प्रेषित शर के लिए; इलक्कम् यातु—निशान क्या है; ऎन्ऩ्पार्—कहते; वेन्तु—हमारे राजा (ने); न चिलै—गुरु धनुष को; नङ्कै मेल् नाट्टुम्—राजकुमारी के दाँव के रूप में रखा है; ऎन्ऩ्पार्—कहते; नेमियान्—चक्रधारी; निच्चयम् ऎंटुक्कुम् कॊल्—अवश्य आरोपण कर लेंगे क्या;

अँन्पार्–कहते; चिऱ्चिलर्–अन्य कुछ; विति चॅय्त तीमै आम्–विधि की बुराई हैं; अँन्पार्–कहते । ७५०

"इस धनुष से निकले बाण का लक्ष्य क्या हो सकता है ?" "राजा ने इस गुरु-धनु को सीताजी के लिए दाँव रखा कैसे ?" "क्या चक्रपाणी भी इसको झुका सकेंगे, निश्चित रूप से ?" इस तरह कई एक कई प्रकार से बोल रहे थे। और कुछ लोगों ने कहा कि "यह विधि की करतूत है।" । ७५०

❀ मॉय्त्तन्न रिन्नण मॉऴिय मन्ननमुन्
उय्त्तनर् निलमुडु हुळुक्किक् कीऴुऱ
वॅत्तनर् वाङ्गुनर् याव रोवॅन्नाक्
कैत्तलम् विदिर्त्तनर् कण्ड वेन्दरे 751

मॉय्त्तनर्–जुटे आये; इन्नणम् मॉऴिय–(लोग) ऐसा कहते, तब; मन्नन् मुन्–राजा के सामने; उय्त्तनर्–लाकर; निलम् मुतुकु–भूमि की पीठ; उळुक्कि–धँसकर; कीऴ् उऱ–नीची हो जाय, ऐसा; वॅत्तनर्–(वीरों ने) रखा; कण्ट वेन्तर्–देखनेवाले राजाओं ने; वाङ्कुनर् यावरो–आरोपण करनेवाले कौन हैं; अॅन्ना–यह सोचकर; कैतलम् वितिर्त्तनर्–करतल पटके । ७५१

इस तरह कहते हुए लोग एकत्र हो आये। तब वीरों ने उस धनुष को ले जाकर राजा के सामने रखा। भूतल भी उसके भार से धँस गया। इस धनुष को देख राजा लोगों ने 'इसको कौन उठा सकेगा ?' यह कहा और नैराश्य प्रकट करते हुए अपने हाथ पटके। ७५१

❀ पोतह् मन्नैयवन् पॉलिवु नोक्कियव्, वेदन्नै तरुहिन्ऱ विल्लै नोक्कित्तन्
मादिन्नै नोक्कुवान् मनत्तै नोक्किय, कोदमन् कादलन् कूऱन् मेयिन्नान् 752

पोतकम् अन्नैयवन्–कलभसदृश (श्रीराम) की; पॉलिवु नोक्कि–शालीनता देखकर; वेतन्नै तरुकिन्ऱ–वेदना देनेवाले; अ विल्लै–उस धनुष को; नोक्कि–देखकर; तन् मातिन्नै–अपनी पुत्री (की स्थिति); नोक्कुवान्–सोचनेवाले को; मनत्तै नोक्किय–मन को देखनेवाले; कोतमन् कातलन्–गौतम के प्रिय (पुत्र) ने; कूऱल् मेयिनान्–कहना प्रारम्भ किया । ७५२

तब राजा जनक ने कलभसम श्रीराम की उत्फुल्ल शोभा देखी; सबमें खटका उत्पन्न करते रहे धनुष को देखा और अपने मन में सीता के भाग्य के सम्बन्ध में सोचा। तब उनकी दृष्टि और चिन्ता का तात्पर्य समझकर गौतम के पुत्र शतानन्दजी बोले। ७५२

इमैयविल् वाङ्गिय वीशन् पङ्गुऱै, उमैयिन्नै यिहऴ्न्दन नॅन्न वोङ्गिय
कमैयऱु शिन्नत्तनिक् कार्मु हङ्गॉळाच्, चमैयुऱु तक्कनार् वेळ्वि शारवे 753

इमैयम् विल् वाङ्किय–हिमालय को धनु बनाकर लेनेवाले; ईचन्–शिव;

पङ्कु उऱ्ऱै–अपने एक पार्श्व में रही; उमैयिनै–उमादेवी को; इकऴ्न्दतनऩ्–अपमानित किया (दक्ष ने); अॅऩ्ऩ–यह सोचकर; ओङ्किय–उठे हुए; कमै अऱ्ऱ चित्तत्तऩ्–अक्षम क्रोधी बनकर; इ तनि कार्मुकम् कॉळा–इस अद्वितीय कार्मुक को लेकर; चमै उऱ्–कलुषमन; तक्कनार्–दक्ष प्रजापति की; वेळ्वि–यागशाला में; चार–पहुँचे, तब। ७५३

"हिमालय (मेरु) पर्वत का ही धनु बनाया गया था। 'मेरे ही शरीर के एक भाग, देवी उमा को दक्ष ने अपमानित किया था' यह सुनकर परमेश्वर इस अद्वितीय धनुष को लेकर उनकी यज्ञशाला में गये। दक्ष प्रजापति के मन में शिवजी के प्रति कलुष था। ७५३

उक्कन पल्लॉडु करङ्ग ळोडिनर्, पुक्कनर् वानवर् पुहाद शूऴल्हळ्
तक्कनल् वेळ्वियिऱ् ऱळलु माऱिन, मुक्कणॅण् डोळवन् मुनिवु माऱिनान् 754

तक्कन् नल् वेळ्वियिल्–दक्ष के उत्कृष्ट यज्ञ में; वानवर्–देवों के; पल्लॉटु–दाँतों के साथ; करङ्कळ् उक्कन–हाथ टूटकर गिरे; ओटिनर्–भागे; पुकात चूऴल्कळ्–अप्रविष्ट स्थानों में; पुक्कनर्–जाकर घुसे; तऴलुम् माऱिन–अग्नियाँ नष्ट हुयीं; मुक्कण्–तीन नेत्र; अॅण् तोळ्–आठ हस्तवाले; अवऩ्–वे देव; मुनिवु माऱिनान्–क्रोध-विमुक्त हुए। ७५४

शम्भु ने देवों पर प्रहार किया। अनेक के हाथ और दाँत टूटकर गिर गये। वे भागे और जहाँ साधारण रूप से वे प्रवेश नहीं कर सकते थे उन स्थानों में जाकर छिप गये। अग्नि भी नष्ट हो गयी। पश्चात् त्रिनेत्री और अष्टहस्त शिवजी का क्रोध शान्त हुआ। ७५४

ताळुडै वरिशिलै शम्बु वुम्बर्तम्, नाळुडै मैयिनवर् नडुक्क नोक्कियिक्
कोळुडै विडैयनान् कुलत्तुद् टोन्ऱिय, वाळुडै युळवनोर् मन्नन् पाल्वैत्तान् 755

उम्पर्–देवता लोग; तम् नाळ् उटैमैयिऩ्–अपने जीवन के दिन शेष रहने के कारण; अवर् नटुक्कम् नोक्कि–उनका विकम्पन देखकर; चम्पु–शिवजी ने; ताळ् उटै–श्रेष्ठ डाँड़ के; वरि चिलै–और बन्धनयुक्त धनुष को; इ–इन; कोळ् उटै विटै–वलयुक्त ऋषभ के; अऩ्ऩान् कुलत्तुळ्–समान (जनक) के कुल में; तोऩ्ऱिय–जनमे; वाळ् उटै उऴवऩ्–तलवार के कृषक; ओर् मन्नन् पाल्–एक राजा के पास; वैत्तान्–सौंप दिया। ७५५

तब शम्भु ने देवों को इस धनुष से डरते हुए देखकर उसको पुरुष-ऋषभ इन महाराजा जनक के पूर्वज, एक राजा के पास सौंप दिया। देवों की आयु शेष थी। अतः शिवजी का क्रोध थमा! (वाळ् उटै उऴवन्-तलवार का कृषक—यह प्रयोग तमिऴ में प्रचलित है। वैसे ही शब्द-कृषक भी कहते हैं। अर्थ क्रमशः तलवार का धनी और कवि है। वाल्मीकी में कार्मुक-वृत्तान्त को जनकजी कहते हैं। यह भी बताया गया है कि शिवजी ने उस धनुष को जनक के पूर्वज देवरात के हाथ में दिया। उस

कार्मुक के सम्बन्ध में ऐसा भी वृत्तान्त है—विश्वकर्मा ने दो धनुष गुरु-प्रयत्न के द्वारा बनाये। एक शिवजी के हाथ लगा और दूसरा विष्णु के पास पहुँचा। शिव ने उसी के सहारे त्रिपुर को जलाया था। फिर बल-परीक्षा में शिव और विष्णु प्रवृत्त हुए। विष्णु के एक हुँकार से शिव के धनुष में हल्का दर्रा पड़ गया। वही देवरात के पास आया।) । ७५५

कार्मुह वलियैयान् कळ्रल् वेण्डुमो, वार्शडै यरनिहर् वरद नीयलाल्
यारुळ रहिवव रिवऱ्कुत् तोन्ऱिय, तेर्मुह वल्हुलाळ् शॅव्वि केळॆन्ना 756

कार्मुकम् वलियै—कार्मुक की शक्ति को; यान् कळ्रल् वेण्टुमो—मुझे कहना चाहिए क्या; वार् चटै—लम्बी जटावाले; अरन् निकर् वरत—हर-सदृश वरद; नी अलाल्—आपको छोड़कर; अऱिपवर् यार् उळर्—जान सकनेवाले (दूसरे) कौन हैं; इवन् कु—इनकी; तोन्ऱिय—(पुत्री के रूप में) प्रकट हुई; तेर् मुकम् अल्कुलाळ्—रथ-मध्य सम नितंबों वाली; चॅव्वि—(सीताजी का) सुवृत्तांत; केळ्—सुनिये; ऍना—कहकर। ७५६

शम्भु के इस धनुष की शक्ति के बारे में मैं क्या कहूँ? लम्बी जटावाले शिवजी सदृश वरद मुनिवर! आपको छोड़ इसका महत्व कौन जान सकता है? रहा वह; अब जनक की पुत्री के रूप में जो प्रकट हुई, इन सुन्दर नितंबिनी सीताजी का वृत्तान्त सुनिये। ७५६

इरुम्बनैय करुनॅडुङ्गोट् टिणैयेऱ्ऱिन् पणैयेऱ्ऱ
पॅरुम्बियलिऱ् पळिक्कुनुहम् पिणैत्तदन्नो डिणैत्तीर्क्कुम्
वरम्बिन्मणिप् पॊऱ्कलप्पै वयिरत्तिन् कॊळ्ळुमडुत्तिट्
टुरम्बॊरुवि न्निलम्वॆळ्विक् कलहिल्पल शालुळुदेम् 757

वेळ्विक्कु—यज्ञ के लिए; इरुम्पु अनैय—लौहसम; करु नॆटु कोट—बलिष्ठ और दीर्घ सींगों के; इणै एऱ्ऱिन्—(जोड़े के) दो बैलों के; पणै एऱ्ऱ—पीन; पॅरु पियलिल्—बड़े कन्धों पर; पळिङ्कु नुकम्—स्फटिक जुआ; पिणैत्तु—जोतकर; अततोटु इणैत्तु ईर्क्कुम्—उसके साथ मिलकर खिचनेवाले; वरम्पु इल्—असंख्यक; मणि पॊन् कलप्पै—रत्नजड़ित स्वर्ण हल में; वयिरत्तिन् कॊळु—हीरे की फाल; मटुत्तिट्टु—लगाकर; उरम् पॊरु इल् निलम्—कठिनता में बेजोड़ भूमि को; अलकु इल्—संख्याहीन; पल चाल्—अनेक बार; उळुतेम्—जोतीं। ७५७

हमने यज्ञ करना चाहा। उसके लिए, लौहसम सुदृढ़ सींगोंवाले ऋषभद्वय के पीन कंधों पर स्फटिक का जुआ रखकर, उस जुए से अपार मणिमंडित स्वर्ण-हल बाँधा। उस हल के नोक में हीरे की फाल लगी थी। भूमि बड़ी कठोर थी। अतः हमने कई बार जोता। ७५७

❀ उळुहिन्ऱ कॊळुमुहत्ति नुदिक्किन्ऱ कदिरिनॊळि
पॊळिहिन्ऱ पुविमडन्दै युरुवॆळिप्पट् टॆन्नप्पुणरि

अ॑ळुहिन्ऱ दॅळ्ळमुदो डॅळुन्दवळु मिळिन्दॉडुङ्गित्
तॉळुहिन्ऱ नन्नलत्तुप् पॅण्णरशि तोन्ऱिनाळ् 758

उळुकिन्ऱ कॊळु मुकत्तिन्–जोतती फाल के समक्ष; उतिक्किन्ऱ कतिरिन्–उदीयमान सूर्य की सी; ऑळि पॊळिकिन्ऱ–कांति बिखेरनेवाली; पुवि मटन्तै उरु–भूदेवी का रूप; वॆळिप्पट्टतु अॅन्न–प्रकट हुआ, ऐसा; पुणरि अॅळुकिन्ऱ–(क्षीर-) सागर से निकलनेवाली; तॅळ् अमुतोटु अॅळुन्तवळुम्–स्वच्छ अमृत के साथ उत्पन्न (श्रीलक्ष्मी) भी; इळिन्तु–घटकर; ऑतुङ्कि–हटकर; तॊळुकिन्ऱ्–नमस्कार जिनका करें; नल् नलत्तु–श्रेष्ठ सुन्दरता की; पॅण् अरचि–वे स्त्रियों में रानी (हमारी सीता); तोन्ऱिनाळ्–अवतरित हुयीं। ७५८

हल की फाल के सामने से सीताजी प्रकट हुयीं। उनका मानों उदीयमान-सूर्य की कांति के साथ प्रकट होनेवाली भूदेवी का सा रूप था। उस दिन क्षीरसागर से जो लक्ष्मी देवी उदित हुयी थी, वे भी इनके सामने अपनी कांति में घटी सी लगतीं; हटकर दूर से इनकी विनय करतीं— ऐसी सुन्दरी और गुणपूर्णा है ये। ७५८

गुणङ्गळैयॅन् कूऱुवदु कॊम्बिनैच्चेर्न्दवैयुय्यप्
पिणङ्गुवन वळहिवळैत् तवञ्जॅय्दु पॅऱ्ऱदुकाण्
कणङ्गुळैया ळॅळुन्ददऱ्पिन् कदिर्वानिऱ् कङ्गैयॅनुम्
अणङ्गिळियप् पॊलिविळिन्द वाऱॊत्तार् वेऱुऱ्ऱार् 759

कुणङ्कळै–गुणों का; अॅन् कऱुवतु–क्या कहना; अवै–वे; कॊम्पिनै चेर्न्तु–तरुशाखा (सीता) से मिलकर; उय्य–तरने के लिए; पिणङ्कुवन–आपस में स्पर्धा करते हैं; अळकु–सुन्दरता; तवम् चॅय्तु–तपस्या करके; इवळै पॅऱ्ऱतु–इन्हें (आश्रय के रूप में) पायी; कणम् कुळैयाळ्–पृथुल कुण्डल-धारिणी; अॅळुन्ततन् पिन्–प्रकट हुईं, उसके बाद; वेऱु उऱ्ऱार्–अन्य जो है (स्त्रियाँ); कतिर् वानिल्–सूर्य-संचार के आकाश में से; कङ्कै अॅनुम् अणङ्कु इळिय–गंगा नाम की देवी के उतर जाने पर; पॊलिवु इळन्त–शोभाविमुक्त; आऱु ऑत्तार्–नदियों के समान हो गयीं। ७५९

उनके गुणों का भी कैसा वर्णन किया जाय ? सारे अच्छे गुण, उनसे संपर्क पाकर उन्नत होने की उत्कट चाह से आपस में स्पर्द्धा कर रहे हैं। सुन्दरता ने बहुत तपस्या की तभी जाकर उसे इनका आश्रय मिला है। भारी कुण्डलधारिणी इन सीता देवी के अवतार के बाद पृथ्वी की सारी स्त्रियाँ आकाशगंगा के अवतार के बाद भूलोक की अन्य नदियों के समान प्रभाविहीन पड़ गयी। ७५९

शित्तिरमिङ् गिदुवॊप्प दॅङ्गुण्डु शॅय्विनैयाल्
वित्तहमुम् विदिवशमुम् वॅव्वेऱे पुऱङ्गिडप्प
अत्तिरुवै यमरर्कुल मादरित्त दॅनवऱिञ
इत्तिरुवै निलवेन्द रॅल्लारु मादरित्तार् 760

अऱिञ–सर्वज्ञ; चॅय् विनैयाल्–अपने करतूत से; वित्तकमुम्–विद्या-कौशल (प्रदर्शन); विति वचमुम्–विधि की अधीनता, दोनों; वेऱु वेऱे–अलग-अलग; पुऱम् किटप्प–दूर रहते हैं, तब; निलम् वेन्तर् ऍल्लारुम्–भूमिपति सब; अमरर् कुलम् अ तिरुवै आतरित्ततु–देवगणों ने उन श्रीलक्ष्मी को चाहा; ऍन–ऐसा; इ तिरुवै आतरित्तार्–इन (सीताजी) श्री को चाहते थे; इतु ऑप्पतु चित्तिरम्–इसके समान विचित्र बात; इङ्कु ऍङ्कु उण्टु–यहाँ कहाँ होगी। ७६०

सर्वज्ञ ! सभी राजाओं ने इनको प्राप्त करना चाहा। धनु लेकर कौशल दिखाना एक बात है; भाग्यवान होना दूसरी बात है। ये दोनों एक दूसरे से बिलकुल दूर हैं। यह राजा लोग नहीं मानते थे। जैसे उस दिन देवों ने श्रीलक्ष्मी देवी को प्राप्त करना चाहा वैसे ही ये राजा इनको प्राप्त करने की कामना करने लगे। यह भी कितनी विचित्र बात है ? इसके समान और कोई विचित्रता होगी क्या ? । ७६०

कलित्तानैक् कडलोडुङ् गैत्तानक् कळिऱ्ऱरशर्
ऑलित्ताळि यॅन्नवनृतु मणमॊऴिन्दार्क् कॅदिरुरुत्त
पुलित्तानैक् कळिऱ्ऱुरिवैप् पोर्वैयान् पोर्विल्लै
वलित्तान्ने मङ्गैतिरु मणत्तानॅन् ऱियाम्वलित्तेम् 761

कै तानम् कळिऱु अरचर्–सूँड़ व मदजल से युक्त हाथियों के पति, राजा लोग; कलि तानै कटलोटुम्–शोरयुक्त सेना-सागर के साथ; ऑलित्तु–कोलाहल मचाते हुए; आळि ऍन वन्तु–सिंहों के समान आकर; मणम् मॊऴिन्तार्क्कु–विवाह की बात करने लगे, उन्हें; ऍतिर्–उत्तर में; उरुत्त पुलि तानै–क्रुद्ध बाघ के चर्म को; कळिऱु उरिवै पोर्वैयान्–गजचर्म को ओढ़े हुए (शिवजी) के; पोर् विल्लै–युद्धधनु को; वलित्ताने–झुकानेवाले ही; मङ्कै–सीता से; तिरुमणत्तान्–विवाहनेवाले; ऍन्ऱु–यह; याम् वलित्तेम्–हमने निर्धारित कर दिया। ७६१

अनेक राजा लोग जिनके पास मत्तगज अधिक थे, अपनी सागर-सम और शोरभरी सेनाओं के साथ सिंहों के समान आये। हमने कटि में बाघ के चर्म को और उत्तरीय के रूप में गज-चर्म को धारण करनेवाले श्री शिवजी के इस धनुष को सामने रखा और निश्चित रूप से कह दिया कि इस युद्ध-चाप को जो झुकायेंगे वे ही हमारी सीता के पति बन सकेंगे। ७६१

वल्विल्लुक् काऱ्ऱार्कण् मारवेळ् वळैकरुम्बिन्
मॅल्विल्लुक् काऱ्ऱारायत् तामॅन्मै विळिहुऱ्ऱार्
कल्विल्लो डुलहळित्त कनङ्गुळैयैक् कादलित्तुच्
चॊल्विल्ला लुलहळिप्पाय् पोर्शॅय्यत् तॊडङ्गिनार् 762

चॊल् विल्लाल् उलकु अळिप्पाय्–वचनधनु से लोक-रक्षा करने में समर्थ; वल् विल्लुक्कु–कठोर धनु के सामने; आऱ्ऱार्कळ्–असमर्थ रहे; कल् विल्लोटु–इस

पर्वत-सम धनु के साथ; उलकु अऴित्त-भूमि पर घोषित; कतम् कुऴैयै-भारी कुण्डलधारिणी को; कातलित्तु-चाहने से; मार वेऴ् वळै-कामदेव के झुकाये; मॆल् करुम्पिऩ् विल्लुक्कुम्-कोमल इक्षु-धनु के सामने भी; आट्रार् आय्-हारकर; ताम् ऎम्मै विळिकुट्रार्-खुद हमें (युद्ध के लिए) आह्वान किया; पोर् चॆय्य तॊटङ्किऩार्-युद्ध करने लगे। ७६२

अपने वचन के प्रभाव से अनुग्रह (या निग्रह) कर सकनेवाले महर्षि! वे राजा इस शिव-धनुष को हिला नहीं सके। उसके सामने वे हार गये। इसके साथ, धनुरारोहण के शुल्क के रूप में जो सीता ठहरायी गयी थीं उनके प्रति प्रेम वे भूल नहीं सके। कामदेव के शर के आघात से वे तिलमिला उठे और उन्होंने हमको (हमारे महाराजा को) युद्ध के लिए ललकारा। ७६२

इम्मन्ऩन् पॆरुञ्जेऩै ईवदऩै मेट्कॊण्ड
शॆम्मन्ऩर् पुहऴ्वेट्ट पॊरुळेपोऱ् ऱेय्न्ददाल्
पॊम्मॆन्ऩ वण्डलम्बुम् पुरिहुऴलैक् कादलित्त
अम्मन्ऩर् शेऩैतम दाशैपो लायिऩवाल् 763

इ मन्ऩन् पॆरु चेऩै-इन (जनक) महाराज की विशाल सेना; ईवतऩै मेट्कॊण्ट-दानव्रती; पुकऴ् वेट्ट-(और उससे) कीर्ति चाहनेवाले; चॆम्मै मन्ऩर्-अच्छे राजा के; पॊरुळे पोल्-धन के समान; तेय्न्ततु-क्षीण हो गयी; वण्टु-भ्रमर; 'पॊम्' ऎऩ्ऩ-"भन, भन" की गुंजार के साथ; अलम्पुम्-जिसपर गुंजार करते हैं; पुरि कुऴलै-वटे केशवाली (सीता) पर; कातलित्त अ मन्ऩर्-आसक्त उन राजा लोगों की; चेऩै-सेना; तमतु आचै पोल् आयिऩ-अपनी (उनकी) कामना के समान (वर्धित) बनी। ७६३

उस युद्ध में महाराज की विशाल सेना यशार्थी दाता राजा के अर्थ के समान क्षीण हो गयी। उन राजाओं की, जो भ्रमरावृत्त केशवाली सीता के प्रेम में मत्त थे, सेना उनकी ही कामना के समान अधिक बढ़ने लगी। (इस पद की उपमाओं से यह संकेत मिलता है कि जनक धर्म पर दृढ़ थे और सीताजी को चाहनेवाले राजाओं की संख्या अनगिनत थी।)। ७६३

मऱ्काक्कु मणिप्पुयत्तु मन्ऩनिवन् मऴविडैयोन्
विऱ्काक्कुम् वाळमरिऩ् मॆलिहिन्ऱा ऩॆऩविरङ्गि
ऎऱ्काक्कु मुडिविण्णोर् पडैयीन्दा रॆऩवेन्दर्
अऱ्काक्कै कूहैयैक्कण् डञ्जिऩवा मॆऩवहन्ऱार् 764

मल् काक्कुम्-बलसंरक्षित; मणि पुयत्तु मन्ऩन् इवन्-सुन्दर भुजावाले ये महाराज (जनक); मऴविटैयोऩ्-ऋषभवाहन शिव के; विल् काक्कुम्-धनु के संरक्षण के हेतु; वाळ् अमरिऩ्-भयंकर युद्ध में; मॆलिकिन्ऱाऩ्-दुर्बल होते हैं; ऎऩ-यह

समझ; इरङ्कि–सहानुभूति करके; ऑल् काक्कुम् मुटि विण्णोर्–प्रकाशमान किरीटधारी देवों ने; पटै ईन्तार् ऍन–सेना दिलाई तो; वेन्तर्–राजा लोग; काक्कै–कागदल; अल् कूकैयै कण्टु–रात में उल्लू दल को देखकर; अनुचित्त आम् ऍन–डर गये जैसे; अकन्द्रार्–छोड़कर भागे। ७६४

सबल भुजाओवाले राजा जनक ऋषभवाहन शिवजी के धनुष के गौरव के संरक्षण के हेतु युद्ध करते हैं और उसमें वे निस्सहाय हो गये हैं—यह देखकर उज्ज्वल किरीटधारी देवों ने सहायतार्थ सेना भेजी। नयी देव-सेनाओं को देखकर वे राजा, रात में उल्लू को देखकर कौओं के दल जैसे भाग जाते हैं, वैसे मैदान छोड़कर भाग गये। ७६४

अन्ऱुमुद लिन्ऱळवु मारुमिन्दच् चिलैमरुङ्गुच्
चॅन्ऱुमिलर् पोयॉळितत तेरवेन्दर् तिरिन्दुमिलर्
ऍन्ऱुमिनि मणमिल्लै यॅन्ऱिरुन्दे मिवनेऱ्ऱिन्
नन्ऱुमलर्क् कुळऱ्चीदै नलम्बळुदा हादॅन्ऱान् 765

अन्ऱु मुतल् इन्ऱु अळवुम्–उस दिन से आज तक; आरुम्–कोई भी; इन्त चिलै मरुङ्कुम् चॅन्ऱिलर्–इस धनु के पास तक नहीं भटका; पोय् ऑळितत–जाकर छिपे; तेर् वेन्तर्–रथपति राजा भी; तिरिन्तुम् इलर्–लौट भी नहीं आये; इनि मणम् ऍन्ऱुम् इल्लै–अब विवाह कभी नहीं होगा; ऍन्ऱु–यह समझकर; इरुन्तेम्–(चिन्तामग्न बैठे) रहे; इवन् एऱ्ऱिन्–ये आरोपण कर देंगे तो; नन्ऱु–मंगल होगा; मलर् कुळल्–पुष्पकेशवाली; चीतै–सीता का; नलम्–यौवन (भाग्य); पळुतु आकातु–व्यर्थ नहीं होगा; ऍन्ऱान्–(शतानन्द ने) कहा। ७६५

तब से आज तक कोई भी धनुष के पास नहीं गये। (भुक्तभोगी भी और समाचार श्रोता लोग भी भूल कर भी नहीं आये।) वे भी जो भागकर छिप गये लौटकर नहीं आये। हम चिन्तित थे कि शायद सीताजी का विवाह होगा ही नही। अब ये श्रीराम पधारे हैं। ये अगर धनु पर प्रत्यञ्चा चढ़ा देगे तो सब मंगल हो जायगा। सीताजी भी विवाहिता हो जायेंगी और उनका यौवन निरर्थक नहीं होगा। ७६५

नित्तॅन्दुमुनि पहर्न्दवॅला नॅऱियुत्ति यऱिवत्तन्दन्
पुनॅन्दशडै मुडितुळक्किप पोरेऱ्ऱिन् मुहम्बार्त्तान्
वत्तॅन्दत्तैय तिरुमेनि वळ्ळलुमम् मादवत्तोन्
नित्तॅन्ददत्तै नित्तॅन्दन्द नॅडुञ्जिलैयै नोक्किनान् 766

मुनि नित्तॅन्तु पकर्न्त ऍल्लाम्–(शतानन्द) मुनि ने जो सोच-समझकर कहा वह सब; अऱिवत्तुम्–बहुज्ञ (विश्वामित्र) ने भी; नॅऱि उन्नि–यथोचित ध्यान देकर; तन् पुनॅन्त–अपनी शोभनेवाली; चटै मुटि तुळक्कि–जटा से अलंकृत सिर को हिलाकर; पोर् एऱ्ऱिन्–युद्ध-चतुर ऋषभ (सदृश श्रीराम) का; मुकम् पार्त्तान्–मुख निहारा; वत्तॅन्त अनैय–चित्रलिखित से; तिरुमेनि–श्रीशरीर वाले; वळ्ळलुम्–प्रभु ने भी;

मा तवत्तोऩ्–महान तपस्वी के; नितैन्ततै–विचार को; नितैन्तु–समझकर; अन्त नॅट्टु चिलैयै–उस दीर्घ धनुष को; नोक्कितान्–देखा। ७६६

शतानन्द ने यह सारी अर्थगर्भित बातें खूब सोच समझकर कहीं। ज्ञानी विश्वामित्र जी ने भी पर्याप्त ध्यान देकर क्रमवार ये बातें सुनीं। उनका संकेत भी समझा। सुन्दर जटा से आवृत्त अपना सिर हिलाते हुए उन्होंने योद्धाऋषभ के समान विराजमान श्रीरामचंद्र के मुख पर भावपूर्ण दृष्टि दौड़ायी। चित्रलिखित के समान सुन्दररूप प्रभु श्रीराम ने भी उन महान तपस्वी के मन की बात ताड़ ली। तब उन्होंने उस दीर्घ धनुष को निहारा। ७६६

ॐ पॊऴिन्दनॅय् याहुदि वाय्वऴि पॊङ्गि, ॲऴुन्द कॊऴुङ्गन लॅन्न वॆऴुन्दान्
अऴिन्ददु विल्लॅन्न विण्णव रार्त्तार्, मोऴिन्दन राशिहळ् मुप्पहै वॆन्ऱार् 767

आकुति नॅय–आहुति का घी; पॊऴिन्त वाय् वऴि–जहाँ गिरा उस स्थान से; पॊङ्कि ॲऴुन्त–प्रज्वलित उठी; कॊऴु कतल् ॲन्त–घनी आग के समान; ॲऴुन्तान्–उठे; विण्णवर्–देवता लोग; विल् अऴिन्ततु ॲन्त–धनुष गया, कहकर; आर्त्तार्–कोलाहल कर उठे; मुप्पकै वन्ऱार्–त्रिशत्रुजयी मुनियों ने; आचिकळ् मॊऴिन्ततर्–आशीर्वचन कहे। ७६७

श्रीराम झट उठे। उनका उठना आहुति का घी पाकर अग्नि का वहीं उठना सा था। तब देवों ने, 'अब धनुष न रहेगा' यह कहकर आनन्द भरे शोर मचाये। काम क्रोध मोह-रूपी तीन शत्रुओं के विजयी मुनियों ने आशीर्वचन कहे। ७६७

ॐ तूय तवङ्ग डॊडङ्गिय तॊल्लोन्, एयवन् वल्वि लिऱुप्पदन् मुन्नम्
शेयिऴै मङ्गयर् शिन्दैतॊ रॅय्या, आयिरम् वल्वि लत्तङ्ग निऱुत्तान् 768

तूय तवङ्कळ् तॊटङ्किय–पवित्र तपों को जिन्होंने अनेक वार आरम्भ किया था; तॊल्लोन्–उन प्राचीन (तपोवृद्ध) ऋषि से; एयवन्–प्रेरित श्रीराम; वल् विल्–सुदृढ़ धनुष को; इऱुप्पतन् मुन्नम्–तोड़ने के पूर्व; अनङ्कन्–मन्मथ ने; चॆम्मै इऴै–श्रेष्ठ आभरणवाली; मङ्कैयर् चिन्तै तॊऱुम्–स्त्रियों के हृदय-हृदय में; ॲय्या–(पुष्प शर) फेंकते-फेंकते; अयिरम् वल् विल्–सहस्रों प्रबल (इक्षु-) धनुओं को; इऱुत्तान्–तोड़ा। ७६८

विश्वामित्र, बड़े ही उद्यमी ऋषि थे। कितनी ही वार उन्हें तप नये सिरे से आरम्भ करना पड़ा था। तपोवृद्ध उन्होंने श्रीराम को प्रेरित किया और वे धनु को भंग करने गये। उनके उसको भंग करने से पहले कामदेव को वहाँ उपस्थित सुन्दर और श्रेष्ठ आभरणालंकृता स्त्रियों पर पुष्पवाण चलाते-चलाते अनेक इक्षु-धनु तोड़ने पड़ गये। (यानी वहाँ रही रमणियाँ प्रेम विह्वल हो गयीं।)। ७६८

❀ काणु नॆडुन्जिलै कालवलि दॆन्बार्, नाणुडै नङ्गै नलङ्गिळर् शॆङ्गेळ्प्
पाणि यिवन्पडर् शॆङ्गै पडादेल्, वाणुदल् मङ्गैयुम् वाळ्विल ळॆन्बार् 769

काणुम् नॆटु चिलै–हमारा देखा यह बड़ा धनु; काल् वलितु–कठोर बाजुओं का है; ॲन्पार्–कहते; नाण् उटै नङ्कै–लज्जा-शृंगारिता सीताजी के; नलम् किळर्–मनोरम; चॆम् कॆळ् पाणि–लाली लिए हुए हाथ; इवन्–इनके; पटर् चॆम् कै–विशाल सुन्दर हाथ; पटातेल्–स्पर्श नही करेंगे तो; वाळ् नुतल् मङ्कैयुम्–उज्ज्वल ललाटवाली सीताजी भी; वाळ्वु इलळ्–मंगलमय जीवन नहीं पायेंगी; ॲन्पार्–कहतीं। ७६९

वे भावना प्रभावित स्त्रियाँ कई प्रकार के भाव प्रकट करने लगीं। 'देखो, इस धनुष के बाजू कितने लम्बे हैं?' "लज्जाशील सीताजी के सुन्दर कोमल पाणि का, इनके विशाल हाथ ग्रहण नही करेंगे (यानी इन दोनों का विवाह नहीं होगा) तो सीताजी का जीवन निरर्थक हो जायगा"। ७६९

करङ्गळ् कुवित्तिरु कण्गळ् पनिप्प, इरुङ्गळि रिच्चिलै येट्रिल नायिन्
नरन्द नरैक्कुळ् नङ्गैयु नामुम्, मुरुङ्गॆरि युट्पुह मुळ्हुदु मॆन्बार् 770

इरु कण्कळ् पतिप्प–दोनों आँखों में आँसू ढलकाते हुए; करङ्कळ् कुवित्तु–हाथ (अपने इष्टदेव के सामने) जोड़कर; इरु कळिरु–श्रेष्ठ गज (सदृश ये); इ चिलै–यह धनु; एट्रिलत् आयिन्–नहीं चढ़ायेंगे तो; नरन्तम् नरै कुळल्–कस्तूरी-गन्ध भरे केश की; नङ्कैयुम् नामुम्–देवी सीता और हम; मुरुङ्कु ॲरि उळ् पुक–सर्व-भस्मकारी अग्नि में घुसकर; मूळ्कुतुम्–मग्न हो जायेंगी; ॲन्पार्–कहतीं। ७७०

सीताजी की बहुत निकट की सखियाँ आँखों में आँसू ढलकाती हुयी हाथ जोड़कर कहतीं— ये गज-सदृश श्रीराम इस धनुष पर प्रत्यंचा न चढ़ायेंगे तो कस्तूरी लगे केशवाली सीताजी के साथ हम भी अग्नि-प्रवेश कर जायेंगी। ७७०

❀ वळ्ळल् मणत्तै महिळ्न्दन नॆन्ड्राल्, कॊळ्ळॆन मुन्बु कॊडुप्पदै यल्लाल्
वॆळ्ळ मणैत्तवन् विल्लै यॆडुत्तिप्, पिळ्ळैमु निट्टदु पेदमै यॆन्बार् 771

वळ्ळल्–वदान्य ने; मणत्तै–विवाह को; मकिळ्न्ततन्–पसन्द किया; ॲन्ट्राल्–तो; कॊळ् ॲन–लो, कहकर; मुन्पु–पहले ही; कॊटुप्पतै अल्लाल्–देना छोड़कर; वॆळ्ळम् अणैत्तवन्–(गंगा की) बाढ़ को रोकनेवाले (शिवजी) का; विल्लै अटुत्तु–धनु लेकर; इ पिळ्ळै मुन् इट्टतु–इस बालक के सामने (झुकाने के हेतु) डालना; पेतैमै–जड़ता; ॲन्पार्–कहते। ७७१

कुछ (प्रौढ़ा) स्त्रियाँ कहती, दानी जनक ने सीताजी का विवाह सचमुच संपन्न करना चाहा तो करना यही चाहिए था कि उनके माँगने के पूर्व ही "ग्रहण कर लीजिये", कहकर उन्हें कन्यादान कर देते। इसके विपरीत गंगा की बाढ़ रोकनेवाले शिवजी के धनुष को विवाह की शर्त

के रूप में, बालक के सामने डालना कहाँ की बुद्धिमानी है ? यह तो निरी जड़ता है।" ('वदान्य' श्रीराम के पक्ष में भी लिया जा सकता है। 'श्रीराम यह विवाह चाहते हैं—यह जानकर कन्यादान कर देना ही बुद्धिमत्ता है।' "वॅळ्ळमणैत्तवन" का पाठांतर वॅळ्ळैमनत्तवन् है। उसका अर्थ अबोध होगा। वह जनक पर लागू है।)। ७७१

ञात्त मुनिक्कॉरु नाणिलै यॅऩ्बार्, कोऩिव ऩिऱ्कॉडि योरिलै यॅऩ्बार्
माऩव ऩिच्चिलै काल्वळै याऩेल्, पीऩ तऩत्तवळ् पेऱिल ळॅऩ्बार् 772

ञाऩम् (ज्ञानम्) मुनिक्कु—ज्ञानी मुनि की; ऑरु नाण् इलै—शरम कुछ नहीं है; ऍऩ्पार्—कहते; कोऩ् इवऩिऩ्—राजा (जनक) इनसे बढ़कर; कॉटियोर् इलै—क्रूर नहीं; ऍऩ्पार्—कहते; माऩवऩ्—सम्मान्य ये; इ चिलै काल् वळैयाऩेल्—इस धनुष के बाजू को नहीं झुकायँगे तो; पीऩम् तऩत्तवळ्—पीनस्तनी (सीता); पेऱु इलळ्—भाग्यहीना हैं; ऍऩ्पार्—कहते। ७७२

कुछ स्त्रियाँ विश्वामित्र की निन्दा करतीं— 'ये ज्ञानी हैं पर इनमें लज्जा नहीं है'। (इतने छोटे बालक को इतने बड़े धनुष को तोड़ने के कार्य में प्रवृत्त कराते हैं।) कुछ जनकजी के प्रति रुष्ट हैं। "इनसे बढ़कर क्रूर कोई नहीं होगा।" और कुछ पछताती— हाय! सम्मान्य ये श्रीराम इस धनुष को नहीं झुका पायँगे तो पीनस्तनी सीताजी सौभाग्य से वंचित हो जायँगी! । ७७२

⁂ तोहय रिऩ्ऩऩ शॉल्लिड नल्लोर्, ओहै विळम्बिड वुम्ब रुवप्प
माह मडङ्गलु माल्विडै युम्बॊऩ्, नाहमु नाहमु नाण नडऩ्दाऩ् 773

तोकैयर् इऩ्ऩऩ चॉल्लिट—मयूर-छटा स्त्रियाँ इस तरह कह रही थीं, तब; नल्लोर्—साधु लोगों ने; ओकै विळम्पिट—सन्तोष-वचन कहा, तब; उम्पर् उवप्प—देवगण मुदित हुए, तब; माकम् मटङ्कलुम्—शानदार सिंह; माल् विटैयुम्—श्रेष्ठ ऋषभ; पोऩ् नाकमुम्—स्वर्णपर्वत (मेरु) और; नाकमुम्—गज; नाण—लजा जायँ, ऐसा; नटऩ्ताऩ्—डग भरे। ७७३

स्त्रियाँ ऐसी ऐसी कह रही थीं। साधु लोग संतोष के साथ उत्साह-वर्धक आशीर्वाद दे रहे थे। देवता लोग आनन्द का अनुभव कर रहे थे। तब श्रीराम शानदार केसरी, भव्यऋषभ, स्वर्णमेरु और गज को लजाते हुए आगे बढ़े। (सिंह और मेरु रूप सौष्ठव के लिए उपमायें है और ऋषभ गज चाल के लिए)। ७७३

⁂ आडह माल्वरै यऩ्ऩदु तऩ्ऩैत्, तेडरु मामणि शीदैयॅ ऩुम्बॊऩ्
चूडह वाल्वळै शूट्टिड नीट्टुम्, ऑडविळ् मालयि दॆऩ्ऩवॆ डुत्ताऩ् 774

माल् आटकम् वरै अऩ्ऩतु तऩ्ऩै—भव्य स्वर्ण (मेरु) पर्वत सदृश उस (धनु) को; पोऩ् चूटकम्—स्वर्ण की चूड़ियाँ; वाल् वळै—और उज्ज्वल (शंख के) कंकण पहनी हुई; चीतै ऍऩुम्—सीता नाम की; तेट अरु मामणि—ढूँढकर प्राप्त न होने योग्य श्रेष्ठ

(कन्या-) रत्न को; चूट्टिट–पहनाने के लिए; नीट्टुम्–वढ़ाई हुई; एट्ट अविऴ् मालै इतु–विकसित दलवाली (पुष्पों की) माला है यह; ॲन्न–मानों यह कहते हुए; ॲट्टुत्तान्–उठाया। ७७४

वे धनुष के पास पहुँच चुके। वह धनुष स्वर्णपर्वत मेरु के समान (ललकारता हुआ) पड़ा था। लेकिन श्रीराम ने उसे इस तरह अनायास उठा लिया मानों वे स्वर्ण की चूड़ियों और शंख-कंकणों से अलंकृत दुर्लभ कन्यारत्न सीता देवी के गले पर डालने के लिए विकसित दलवाले पुष्पों की गुंथी माला को उठाकर बढ़ा रहे हों। ७७४

* तडुत्तिमै याम लिरुन्दवर् ताळिन्, मडुत्तदु नाणुदि वैत्तदु नोक्कार्
कडुप्पिनिल् यारु मऱिन्दिलर् कैयाल्, ॲडुत्तदु कण्डन्न रिऱ्ऱदु केट्टार् 775

कैयाल् ॲटुत्ततु कण्टनर्–हाथ से लेना देखा (जिन्होंने वे); तटुत्तु–रोककर; इमैयामल् इरुन्तवर्–पलक नहीं मारे रहे, उनमें; ताळिन् मटुत्ततुम्–पैरों के नीचे (एक सिरे का) रखना; नाण् नुति वैत्ततुम्–डोरे को दूसरे सिरे से बाँधना; कटुप्पिनिल्–(कार्य के) वेग के कारण; यारुम् नोक्कार्–कोई नहीं देखते; अऱिन्तिलर्–न समझते थे; इऱ्ऱतु केट्टार्–टूटना सुना। ७७५

श्रीराम को धनुष को उठाते हुए लोगों ने देखा। वे निर्निमेष देखते ही रहे क्योंकि यह बड़ा ही विस्मयकारी कार्य हो गया था। तो भी वे, उनका उसके एक सिरे को अपने पैर के नीचे दबाना, दूसरे सिरे पर प्रत्यंचा लगाना इत्यादि काम नहीं देख पाये। क्योंकि वह सब बहुत वेग के साथ हो गया था। (वे कल्पना भी नहीं कर सके; समझ भी नहीं सके कि क्या हो रहा था।) उन्होंने उसका टूटना ही सुना। ७७५

आरिडैप् पुहुदु नामॅन् ऱमररहळ् कमलत् तोन्ऱन्
पेरुडै यण्ड कोळम् पिळन्ददॅन् ऱेङ्गि नैन्दार्
पारिडै युऱ्ऱ तन्मै पहर्वदॅन् बारॅत् ताङ्गि
वेरॅनक् किडन्द नाह मिडियॅन वॅरुविर् ऱन्ऱे 776

अमरर्कळ्–देवता लोग; कमलत्तोन् तन् पेर् उटै(य)–कमलनिवास (ब्रह्मा) के नाम पर प्रचलित; अण्ट कोळम् पिळन्ततु–अण्ड गोल फट गया; नाम् आर् इटै पुकुतुम्–हम किनके पास शरण पायेंगे; ॲन्ऱु–सोचकर; एङ्कि–चिन्तित होकर; नॅन्तार्–दुखी हुए; पारै ताङ्कि–भूमि का भार वहन कर; वेर् ॲन्न किटन्त–जड़ के समान पड़ा रहा; नाकम्–शेषनाग भी; इटि ॲन्न–वज्रपात समझकर; वॅरुविऱ्ऱु–डर गया; पार् इटै उऱ्ऱ तन्मै–भूमि पर जो हुआ उसकी स्थिति; पकर्वतु ॲन–कहना क्या। ७७६

घोर धनुर्भंगनाद सुनकर देव डर गये। उनको ऐसा लगा कि ब्रह्मांड ही फूट गया है। उनको इस बात की चिन्ता हो गयी कि हम किनके पास जाकर त्राण पायेंगे? उधर पाताल में रहकर भूमि को जो ढो

रहा था वह शेषनाग भी वज्रपात समझकर भयाहत हो गया। (आकाश और पाताल की यह हालत रही तो) भूलोक की बात क्या कही जाय? (तीनों लोक डर गये)। ७७६

पूमऴै शॊरिन्दार् विण्णोर् पॊन्मऴै पॊऴिन्द मेहम्
पाममा कडलह ळॆल्लाम् पन्मणि तूवि यार्त्त
कोमुनिक् कणङ्ग ळॆल्लाङ् गूऱिन वाशि कॊऱ्ऱ
नामवेऱ् चनह निन्ऱॆ नल्विनै पयन्द दन्ऱान् 777

विण्णोर्–आकाशवासियों ने; पू मऴै चॊरिन्तार्–पुष्पवर्षा कराई; मेकम् पॊन् मऴै पॊऴिन्त–मेघों ने स्वर्णवर्षा कराई; पामम् मा कटल्कळ् ॲल्लाम्–विशाल और श्रेष्ठ सभी सागरों ने; पल मणि तूवि–अनेक रत्न-राशियाँ बिखेरकर; आर्त्त–उच्चनाद कराया; को मुनि कणङ्कळ् ॲल्लाम्–अग्रगण्य सभी मुनिवरों ने; आचि कूऱिन–आशीर्वाद (के वचन) कहे; कॊऱ्ऱम्–विजयी और; नामम्–आतंकदायक; वेल्–भाले के; चतकन्–जनक ने; इन्ऱु–आज; ॲन् नल् विनै–मेरे सुकृत्य ने; पयन्ततु–फल दिया; ॲन्ऱान्–कहा। ७७७

देवों ने पुष्प वर्षा की; मेघों ने स्वर्ण बरसाये और विशाल समुद्र रत्न बिखेर कर गरज उठे। अग्रगण्य मुनि लोगों ने आशीर्वाद दिया। विजयशील और शत्रुभयकारी भालाधारी जनक ने राहत की सांस ली कि आज मेरे सुकृत सफलीभूत हुए। ७७७

मालैयु मिऴैयुञ् जान्दुञ् जुण्णमुम् वास नॆय्युम्
वेलैवॆण् मुत्तुम् पॊन्नुङ् गाशुनुण् डुहिलुम् वीशप्
पाल्वळै वयिर्ह ळार्प्पप् पल्लियन् दुवैप्प मुन्नीर्
ओल्हिळर्न् दुवावुऱ् ऱॆन्न वॊण्णहर् किळर्न्द दन्ऱे 778

ऑळ्नकर्–प्रकाशमय नगर (भर) में; पाल् वळै–श्वेत शंख; वयिर्कळ्–श्रृंग; आर्प्प–निनादित किए गए; पल् इयम्–विविध वाद्य; तुवैप्प–बज उठे; मालैयुम्–पुष्पमालाएँ; इऴैयुम्–और आभरण; चान्तुम्–चन्दन; चुण्णमुम्–सुगन्धचूर्ण; वाचम् नॆय्युम्–फुलेल; वेलै वॆण् मुत्तुम्–समुद्र से प्राप्त श्वेत मोती; पॊन्नुम्–स्वर्ण; काचुम्–रत्न; नुण् तुकिलुम्–महीन वस्त्र; वीच–अधिकता से देते-लेते हुए; उवा उऱ्ऱु–पूर्णचन्द्र के उगने पर; मुन्नीर्–त्रिजली समुद्र; ओल् किळर्न्तु ॲन्न–सघोष उठा सा; किळर्न्ततु–(संतोषनाद) खिल उठा। ७७८

नगर में भी आनन्द की लहर बढ़ चली। नगर प्रकाशमान हो गया। शंख और श्रृंगवाद्य स्वरित हुए। अनेक बाजे बज उठे। लोगों ने मालाएँ, आभरण, चन्दन, गुलाल, फुलेल, मोती, स्वर्ण, रत्न, महीन वस्त्र, इत्यादि वस्तुएँ वितरित कीं। पूर्ण चन्द्र के उगने पर सागर जैसे गर्जन कर उमड़ता है वैसे उस नगर भर में आनन्दरव भर उठा। ७७८

नल्लियन् मह्र वीणै तेनुह नहैयुन् दोडुम्
विल्लिड वाळुम् वीश वेल्हिडन् दनैय नाट्टत्
तॅल्लियन् मदिय मन्न मुहत्तिय रॅळिलि तोन्ऱच्
चॊल्लिय परुव नोक्कुन् दोहैयि नाडि नारे 779

वेल् किटन्त अनैय–वेल् (भाला) पड़ा रहा, ऐसा दिखनेवाली; नाट्टत्तु–आँखें; अॅल् इयल् मतियम् अन्न–उज्ज्वल पूर्णचन्द्र-सम; मुकत्तियर्–आननवालियाँ; नल् इयल्–सुरचित; मकर वीणै–मकराकार की वीणा के; तेन् उक–मधुर शहद (नाद) देते; नकैयुम् तोटुम्–दन्तावली और कर्णाभरणों के; विल् इट–कान्ति विखेरते; वाळुम् वीच–तलवारों के चमकते; चॊन्लिय परुवम्–(वर्षा के लिए) कथित मौसम में; अॅळिलि तोन्ऱ–मेघों के प्रकट होने पर; नोक्कुम् तोकैयिन्–उनको देखनेवाले मोरों के समान; आटिनार्–नाचे। ७७९

स्त्रियाँ, जिनकी आँखें "वेल्" (शक्ति) के समान थीं और आनन पूर्णचन्द्र के समान थे, सुरचित वीणाएँ वजाती हुयी मेघाविर्भाव पर नाचने वाले मयूरों के समान नाच उठीं। तव उनके दांत और कर्णाभरण चमक रहे थे। उनकी आँखें भी तलवारों के समान दमक रही थीं। ७७९

उण्णऱ वरुन्दि नारिऱ् चिवन्दॊळिर् करुङ्गण् मादर्
पुण्णुऱु पुलवि नीक्किक् कॊळुनरैप् पुल्लिक् कॊण्डार्
वॅण्णिऱ मेह मेन्मेल् विरिहडल् परुहु मापोल्
मण्णुऱु वेन्दन् शॆल्वम् वऱियवर् मुहन्दु कॊण्डार् 780

उण् नऱवु–अशनयोग्य सुरा; अरुन्तिनारिन्–जो पी चुके हों उनके समान; चिवन्तु ऑळिर्–लाल होकर चमकनेवाली; करुमै कण् मातर्–काली आँखोंवाली स्त्रियाँ; पुण् उऱु पुलवि–वेदनादायक रूठन; नीक्कि–छोड़कर; कॊळुनरै–अपने पतियों को; पुल्लिक् कॊण्टार्–आलिंगनबद्ध कर लिया; वॅण् निऱम् मेकम्–श्वेत रंग के (जल-हीन) मेघ; विरि कटल्–विस्तृत सागरजल; मेल् मेल् परुकुम् आ(ऱु) पोल्–उत्तरोत्तर पीते से; वऱियवर्–अभावग्रस्त लोगों ने; मण्–इस भूमि में; उऱु–ग्राह्य; वेन्तन् चॆल्वम्–राजा के धन को; मुकन्तु कॊण्टार्–बटोर लिया। ७८०

स्त्रियों की काली आँखें, सुरापीत कामातुरा होने के कारण या सुरापीत कामातुरा स्त्रियों की आँखों के समान लाली मिश्रित हो गयी थीं। उन्होंने अपने प्रेमी पतियों को पीड़ा देनेवाली अपनी रूठन को त्याग दिया और प्रेमियों को अपने आलिंगन में ले लिया। याचक लोगों ने राजा के धन-द्रव्यों को अपनी इच्छा के अनुसार, सागरजल पीनेवाले जलहीन मेघों के समान उठा लिया। ७८०

वयिरियर् मदुर गीदम् मङ्गयर् अमुद गीदम्
शॆयिरियर् महर याळिन् तेम्बिळि दॆय्व गीदम्

पयिर्हिऴै वेयिन् गीद मॆन्ऱिवै परुहि विण्णोर्
उयिरुडै युडम्बु मॆल्ला मोविय मॊप्प निन्ऱार् 781

वयिरियर्–गवैयों के; मतुरम् कीतम्–मधुर गीत; मङ्कैयर्–(गायिका) स्त्रियों के; अमुतम् कीतम्—सुधा-सम गीत; चॆयिरियर्–वीणावादकों के; मकर याऴ्–मकराकार की वीणा के; इन् तेम् पिऴि–मधुर शहद निकला सा; तॆय्वम् कीतम्–दिव्य संगीत; पयिर् किऴै—नाद-जाल निकालनेवाली; वेय् इन् कीतम्–बाँसुरी का मधुर संगीत; ऎन्ऱ इवै–ऐसे ये; विण्णोर् परुकि–देवगण (पीकर) सुनकर; उयिर् उटै (य) उटम्पुम्–जीवंत शरीरी होकर भी; ऎल् आम् ओवियम् ऒप्प निन्ऱार्–दीप्तिमान चित्र के समान, खड़े रहे। ७८१

गवैयों का मधुर संगीत, गायिकाओं का सुधा सम संगीत, वीणावादकों का मधुर मधु सम दिव्य संगीत, विविधराग अलापनेवाली बांसुरी का रम्य-संगीत-इन सबको ऊपर से देवों ने सुना तो निस्पंद खड़े हो गये। जीवंतशरीरी होने पर भी वे चित्रलिखित काँतियुत प्रतिमाओं के समान अचल खड़े रहे। ७८१

ऐयन्विल् लिऱुत्त वाऱ्ऱल् काणिय वमरर् नाट्टुत्
तैयला रिऴिन्दु पारिन् महळिरैत् तऴुविक् कॊण्डार्
शॆय्हैयिन् वडिवि नाडल् पाडलिऱ् ऱॆऴिद ऱेऱ्ऱार्
मैयरि मलर्क्क णोक्कि यिमैत्तलु मयङ्गि निन्ऱार् 782

अमरर् नाट्टु तैयलार्–देवलोक की अप्सराएँ; ऐयन्–प्रभु के; विल् इऱुत्त आऱ्ऱल्–धनु तोड़ने का कौशल; काणिय–देखने के लिए; इऴिन्तु–उतरकर; पारिल् मकळिरै–भूलोक की स्त्रियों को; चॆय्कैयिन्–कृत्यों में; वटिविन्–रूपों में; आटल् पाटलिन्–नाच-गान में; तॆळितल् तेऱ्ऱार्–(पृथक) पहचान नहीं सकीं; तऴुविक् कॊण्टार्–(उनको देवांगनाएँ समझ) गले लगा लिया; मै अरि मलर् कण्–(उनकी) काजल लगी लाल डोरे युक्त आँखें; नोक्कि–देखकर; इमैत्तलुम्–पलकों के गिरते ही; मयङ्कि निन्ऱार्–चकित खड़ी रहीं। ७८२

देवांगनाएँ धनुर्भग देखने की इच्छा से ऊपर से उतर कर मिथिला में आयी थीं। उन्होंने भूलोक की रमणियों को देखा। उनके काम में, रूप में, नाच-गाने में किसी में भी अपने से कोई पृथकत्व नहीं देख सकीं। इसलिए भ्रम में पड़कर देवांगनाएँ उनको आलिंगन कर गयीं। तब उन्होंने उनकी आँखों पर दृष्टि डाली तो पलके गिरती उठती थीं। उसको देखकर अपनी भूल समझ गयी और ठिठककर खड़ी रह गयीं। ७८२

तयरदन् पुदल्व नॆन्बार् तामरैक् कण्ण नॆन्बार्
पुयलवन् मेनि यॆन्बार् पूवैयुम् पॊरुवु मॆन्बार्
मयलुडैत् तलह मॆन्बार् मालुड नल्ल नॆन्बार्
कयल्पॊरु कडलुळ् वेहुङ् गडवुळे काणु मॆन्बार् 783

तयरतन् पुतल्वन् अॅन्पार्–दशरथ के पुत्र, कहते; तामरै कण्णन्–पुण्डरीकाक्ष; अॅन्पार्–कहते; अवन् मेति पुयल्, अॅन्पार्–उनका शरीर मेघ है कहते; पूवैयुम् पोरुवुम्, अॅन्पार्–अतसी पुष्प भी योग्य है (उपमा के लिए) कहते; मानुटन् अल्लन्–मानव नही; अॅन्पार्–कहते; कयल् पोरु कटलुळ् वैकुम्–मछलियों से भरे (क्षीर) सागर में रहनेवाले; कटवुळे–देवता (श्रीमन्नारायण) हैं; अॅन्पार्–कहते; उलकम् मयल् उटैत्तु–संसार भ्रम में पड़ा है; अॅन्पार्–कहते। ७८३

लोग आपस में बातें करने लगे। 'दशरथ के पुत्र हैं' 'पुण्डरीकाक्ष है' 'मेघ श्याम है', 'अतसीसम है' "इनको संसार मनुष्य समझता है तो वह भ्रम मे है", 'ये मानव नही हैं', "क्षीरसागर-शायी महाविष्णु ही हैं।" ऐसे अनेक विचार व्यक्त कर रहे थे। ७८३

नम्बियैक् काण नङ्गैक् कायिर नयनम् वेण्डुम्
कॉम्बिनैक् काणुन् दोरुङ् गुरिशिऱ्कु मन्न देयाल्
तम्बियैक् काण्मि नॅन्बार् तवमुडैत् तुलह मॅन्बार्
इम्बरिन् नहरिऱ् ऱन्द मुनिवनै यिऱैञ्जु मॅन्बार् 784

नम्पियै काण–पुरुषश्रेष्ठ को देखने के हेतु; नङ्कैक्कु–हमारी नायिका के लिए; आयिरम् नयनम् वेण्टुम्–सहस्र नेत्र चाहिए; कोम्पिनै–सुमन शाखा सी सीताजी को; काणुम् तोऱुम्–हर देखती बार; कुरिचिऱ्कुम्–राजकुमार के लिए भी; अन्नते–वही स्थिति; तम्पियै काण्मिन्–छोटे भ्राता को देखो; अॅन्पार्–कहते; उलकम् तवम् उटैत्तु–संसार ने खूब तपस्या की है; अॅन्पार्–कहते; इम्पर्–इस लोक में; इ नकरिल् तन्त–इस पुरी में जो (इनको) लाए; मुनिवनै–महर्षि को; इऱैञ्चुम्–नमस्कार करो; अॅन्पार्–कहते। ७८४

कुछ लोग कहते-पुरुषोत्तम को तृप्ति भर देखना चाहेंगी तो सीताजी को सहस्रनयना होना होगा! क्या जानकी भी कम हैं? "पुष्पलता (सी) जानकी को देखने के लिए प्रभु श्रीराम को एक सहस्र नहीं, जितनी वार देखते है उतने सहस्र नेत्र चाहिए।" "छोड़ो वह बात! उनके छोटे भाई को भी देखो।" "संसार ने खूब तपस्या की है। तभी ये इस लोक में जन्म ले आये हैं।" कुछ लोग कहते—यह सब सही है। पर उन महर्षि को नमस्कार करो जो इनको इधर लिवा लाये! । ७८४

इऱ्ऱिव णिन्न दाह मदियोडु मॅल्लि नीङ्गप्
पॅऱ्ऱुयिर् पिन्नुङ् गाणु माशैयिऱ् चिऱ्ऱु पॅऱ्ऱ
शिऱ्ऱिडैप् पॅरिय कॉङ्गैच् चेयरिक् करिय वाट्कट्
पॉऱ्ऱॉडि मडन्दैक् कप्पा लुऱ्ऱदु पुहल लुऱ्ऱाम् 785

इवण्–यहाँ; इऱ्ऱु इन्नतु आक–यह बात ऐसी रही तब; अॅल्लि–रात; मतियोटुम्–चन्द्र के साथ; नीङ्कपॅऱ्ऱु–बीत गई, पाकर; पिन्नुम् काणुम् आचैयिन्–(श्रीराम को) फिर एक बार देख लेने की अभिलाषा से; उयिर् चिऱितु पॅऱ्ऱ–प्राणों को थोड़ा पुनः पाकर; चिऱु इटै–पतली कमर; पॅरिय कॊङ्कै–पृथुल उरोज; चेय्

अरि–लाल डोरों के साथ; करिय वाळ् कण्–काली तलवार सी आँखें; पौन् तोटि–स्वर्णकंकण, इनसे युक्त; मटन्तैक्कु–देवी का; अप्पाल् उऱ्ऱतु–तदनन्तर हुआ हाल; पुकलल् उऱ्ऱाम्–कहने लगे। ७८५

यहाँ ऐसी बातें हो रही थीं। अब सीताजी की बात देखें। रात बीत गयी। चन्द्र भी अस्त हो गया। श्रीरामदर्शनाभिलाषा ने सीताजी को थोड़ा प्राणदान दिया। उन, लघुकमर, पीनस्तनी, अरुण रेखांकित असितेक्षणा सीताजी पर क्या बीता— वह हाल अब कहेंगे। ७८५

ऊशला डुयिरि नोडु मुरुहुपूम् बळ्ळि नीङ्गिप्
पाशिळै महळिर् शूळप् पोयोरु पळिक्कु माडत्
तेशिऱा मरैयिन् पोय्हैच् चन्दिर कान्द मीन्ऱ
तेशुनी रळिक्कु मॅन्बूञ् जेक्कयै यरिदिऱ् चेर्न्दाळ् 786

ऊचल् आटु–झूलनेवाले; उयिरिनोटुम्–प्राण के साथ; उरुकु–पिघलानेवाली (तपानेवाली); पू पळ्ळि नीङ्कि–पुष्पशय्या छोड़कर; पचुमै इऴै–चोखे स्वर्ण के बने आभरणोंवाली; मकळिर् चूऴ पोय्–सखियों से घिरी हुई जाकर; ऒरु पळिङ्कु माटत्तु–एक स्फटिक-प्रासाद में; एचु इल् तामरै–अमल कमल से भरे; इन् पॊय्कै–सुखद तड़ाग के पास; चन्तिर कान्तम् ईन्ऱ–चन्द्रकान्त निसृत; तेचु नीर्–स्वच्छ जल से; अळिक्कुम्–सिंचित रहनेवाली; मॆन् पू चेक्कैयै–कोमल सुमनशय्या में; अरितिन् चेर्न्ताळ्–स-आयास पहुँची। ७८६

देवी के प्राण संकट में (दोलायमान) थे। पुष्पशय्या उनको बहुत ताप दे रही थी। वे उस पर से उठीं। उनकी सखियाँ (दासियाँ) उनको घेर कर आयी। वे धीरे-धीरे चली और एक स्फटिक-प्रासाद में, अमल कमलों के तड़ाग के पास बनी पुष्पशय्या पर जा लेटीं। उस शय्या को चन्द्रकांतमणि—निसृत स्वच्छ जल शीतल कर रहा था। ७८६

पॅण्णिव णुऱ्ऱ वाऱु पेणिये करुमै यान
वण्णमु मिलैहळाले काट्टलाल् वाट्टन् दीर्न्देन्
तण्णऱुङ् गमलङ्गाळॆन् ऱळिरनिऱ मुण्ड कण्णिन्
ऒण्णिऱङ् काट्टि नीरॆन् नुयिर्तर वुलोवि नीरे 787

तण् नऱु कमलङ्काळ्–शीतल सुगन्धित कमल; पॆण्–स्त्री में; इवण् उऱ्ऱवाऱु पेणि–(जिस हाल को) अब पहुँच गई वह हाल देखकर; करुमैयान वण्णम्–(उनका) श्यामल रंग; उम् इलैकळाले काट्टलाल्–अपने पत्रों द्वारा दिखाते हो, इसलिए; वाट्टम् तीर्न्तेन्–(थोड़ी) व्यथा छोड़ी; ऎन् तळिर् निऱम् उण्ट–मेरी आम्रपल्लव सदृश छटा पी ले, जो गई; कण्णिन् ऒळ् निऱम्–(उनकी उन) आँखों का सुन्दर रंग; काट्टिनीर्–(अपने पुष्पों में) दिखाते हो; ऎन् उयिर् तर–मेरे प्राणों (सम उन) को देने में; उलोविनीरे–कृपणता (क्यों) दिखाते हो। ७८७

तब सीता देवी यों कहने लगीं। शीतल और सुगन्धित कमल

लताओ ! तुमने मेरी स्थिति पर, मुझे स्त्री समझकर, रहम खायी है ! अपने पत्तों में मेरे प्रिय के रंग की छटा दिखाती हो। मैं थोड़ा स्वस्थ हुई। अपने फूलों में उनकी आँखों की शोभा दिखाती हो, जो मेरे आम्र-पल्लव के से रंग को हर ले गयी। (उनको देखने के बाद, असफल हुयी प्रेम-मिलन की इच्छा की व्यथा से, मेरा शरीर अपना रंग खो गया।) इससे भी मेरा मन कुछ धीरज पा सका। इतना जो किया, तुम उनको लाकर, मेरे प्राणों को पूरा लौटाने में कंजूसी और आनाकानी क्यों करती हो ? । ७८७

नाणुलावु मेरुवोड्डु नाणुलावु पाणियुम्
तूणुलावु तोळुम्वाळि यूडुलावु तूणियुम्
वाणिलावि नूलुलावु मालैमार्वु मीळवुम्
काणलाहु माहिन्नावि काणलाहु मेकॉलाम् 788

नाण् उलावुम् मेरुवोटु–(कन्धों की सुन्दरता के सामने) लजानेवाले मेरुपर्वत के (समान धनुष के) साथ; नाण्–(और) प्रत्यंचा के साथ; उलावु–व्यवहार करनेवाले; पाणियुम्–श्रीहस्त; तूण् उलावु तोळुम्–स्तम्भ-सम कन्धे; वाळि ऊटु उलावु तूणियुम्–बाण जिसके अन्दर है, वह तूणीर; वाळ् निलाविन्–श्वेतचन्द्र-सम; नूल् उलावुम्–यज्ञोपवीत जिसपर डोलते हैं वह; मालै मारपुम्–मालाशोभित वक्षस्थल; मीळवुम् काणल् आकुम्–पुनः देखना हो सके; आकिन्–तो; आवि–मेरा प्राण; काणल् आकुमे–देखा जा सकता है। ७८८

वे हाथ, जो उनके कंधों से लजानेवाले मेरु के समान रहनेवाले धनुष और उसकी प्रत्यंचा के साथ व्यवहार करते हैं, वे स्तंभसदृश कंधे; वह बाण भरा तरकस, वह मालायुक्त वक्षस्थल जिस पर उपवीत हिल रहा है इनको फिर देख सकूँ तो मैं जीवित रह सकती हूँ। वे ही मेरे प्राण हैं, उनको पाऊँ तभी मेरा प्राण भी पुनः मुझे मिलेगा। (सीताजी के ध्यान में श्रीराम के पृष्ठभाग की सुन्दरता अंकित है। अतः तरकस की बात कहती है।)। ७८८

❀ विण्डलङ्ग लन्दिलङ्गु तिङ्गळोडु मीदुशूळ्
वण्डलम्ब लङ्गरङ्गु पङ्गियोडुम् वार्शिलैक्
कॉण्डलन्रि रण्डुकण्णिन् मॉण्डुकॉण्डॆ न्नावियै
उण्डदुण्डॆ नॆञ्जिनिन्रु मुण्डदॆन्रु मुण्डरो 789

विण् तलम्–आकाश तल में; कलन्तु इलङ्कु–मिलकर रहनेवाले; तिङ्कळोट–चन्द्र के साथ; मीतु चूळ्–ऊपर मँडरानेवाले; वण्टु अलमपु–भ्रमर जिसपर गुंजार करते हैं उस; अलङ्कल तङ्कु–माला का आश्रय; पङ्कियोटुम्–केश के साथ; वार् चिलै–लम्बे धनुष के रखनेवाले; कॉण्टल्–मेघ (सदृश) वे; अन्रु–उस दिन; इरण्टु कण्णिन्–अपनी दोनों आँखों से; ऍन् आवियै–मेरे प्राणों को; मॉण्टु

कॉण्ट्टु उण्टतु उण्ट्टु–उठाकर पी लिया, यह सत्य है; अतु–वह; ॲऩ् नॅञ्चिऩ्–मेरे चित्त में; इऩ्ऩुम् उण्ट्टु–अब भी (याद) है; ॲऩ्ऱुम् उण्ट्टु–सदा (याद) रहेगा। ७८९

यह सत्य है कि उन्होंने मेरे प्राण ही पी लिये। आकाशवासी चन्द्र-समान आनन, भ्रमर जिस पर मँडराते गुंजन करते हैं, उस पुष्पमाला से अलंकृत केश, दीर्घ धनुष इनसे सुशोभित हो, श्याममेघ समान उन्होंने जिस दिन मुझे अपनी आँखों से देखा उसी घड़ी यह मेरे प्राणों का पान करने का काम हुआ। वह मुझे खूब याद है। वह हमेशा याद रहेगा भी। (मेघ हैं; प्राण-जल को पी गये —यह रूपक की सार्थकता है।)। ७८९

पञ्जरङ्गु तीयिऩावि पऱ्ऱनीडु कॉऱ्ऱविल्
वॅञ्जरङ्ग णॅञ्जरङ्ग वॅय्यकाम ऩॅय्यवे
शञ्जलङ्ग लऩ्दपोदु तैयलारै युय्यवऩ्
दञ्जलञ्ज लॅऩ्गिलाद वाण्मयॅऩ्ऩ वाण्मैये 790

वॅय्य कामऩ्–क्रूर मन्मथ; नीट्टु कॉऱ्ऱम् विल्–बड़े, विजयी धनुष द्वारा; पञ्चु अरङ्कु तीयिऩ्–रुई को जलानेवाली आग के समान; आवि पऱ्ऱ–प्राण पर लग गया; नॅञ्चु अरङ्क–मन को आहत करके; वॅम् चरङ्कळ्–भयंकर शरों को; ऍय्यवे–चलाता है, अतः; चञ्चलम् कलन्त पोतु–चित्त आकुल होता है, तब; तैयलारै–स्त्रियों को; उय्य वन्तु–बचाने के लिए आकर; अञ्चल् अञ्चल् ॲऩ्किलात–डरो मत, डरो मत यह न कहनेवाला; ॲऩ्ऩ आण्मै–पौरुष क्या है। ७९०

(सीताजी श्रीराम के पुरुषत्व की निन्दा करती हैं) क्रूर मन्मथ अपना दीर्घ और विजयशील धनुष पर शर रखकर मुझ पर चलाता है। वह शर रुई पर लगी आग के समान मेरे प्राणों में लग जाता है। मेरा मन चोट खाकर छटपटाता है। बिल्कुल अधीर हो गयी हूँ। ऐसी हालत में पड़ी स्त्रियों को ढाढस बँधाना ही पुरुषोचित काम है। उनका पौरुष भी कैसा जो ऐसी अबला को बचाने के लिए पास आकर "डरो मत, मत डरो" कहकर धीरज नहीं बँधाता ?। ७९०

इळैक्कलाद कॉङ्गैहाळॅ ऴुन्दुविम्मि यॅन्शॅय्दीर्
मुळैक्कलाम दिक्कॉऴुन्दु पोलुम्वाण्मु हत्तिऩाऩ्
वळैक्कलाद विऱ्कैयाळि वळ्ळऩ्मार्बि नुळ्ळुऱत्
तिळैक्कलाहु माहिलाऩ शॅय्दवङ्गळ् शॅय्मिने 791

इळैक्क अल्लात कॉङ्कैकाळ्–क्षीण न होनेवाले उरोज; विम्मि ॲऴुन्तु–उभर उठकर; ॲऩ् चॅय्तीर्–(तुमने) क्या किया (पाया); मुळैक्क अल्ला–आकाश में जो उदित नहीं होता; मति कॉऴुन्तु पोलुम्–उस बाल चन्द्रसम; वाळ् मुकत्तिऩाऩ्–तेजोमय आननवाले; वळैक्क अल्लात–(आसानी से) न झुकनेवाले; विल् कै आळि–

धनुर्हस्त; वळ्ळल्–दानी स्वभाव के (उनके); मार्पिन् उळ् उऱ–वक्ष के अन्दर घुस जाओ, ऐसा; तिळैक्कल् आकुम्–अतिशय सुख भोग करना हो; आकिल्–तो; आन–आवश्यक; चॅय्तवङ्कळ्–कर्तव्य तप; चॅय्म्मिन्–करो। ७९१

(सीताजी अपने उरोजों को उलाहना देती हैं।) "हे मूर्ख उरोज ! कृश न होकर उभरकर सिर उठाये खड़े हो ! इसका क्या लाभ है ? अस्त होकर उदय न होनेवाले (हमेशा प्रकाशमान रहनेवाले) बालचन्द्र के समान जिनका तेजोमय वदन है, और जिनके हाथ में ऐसा कठोर धनु है जिसको कोई दूसरा झुका नहीं सकता, और जो दानी स्वभाव के हैं उनके वक्ष में धँसकर सुखानुभव प्राप्त करते रहना चाहते हो न ! तब यह अकड़ किसी काम की नही होगी। झुको, क्षीण हो जाओ और आवश्यक तपस्या करो।" (भगवान के वक्षस्थल पर न लग जाने की हालत में उरोज की रम्यता का क्या मूल्य ?)। ७९१

ऍङ्गुनिन्ऱॅ ळुन्ददिन्द विन्दुवन्दॆ नॆञ्जुलाय्
अङ्गियन्ऱ नङ्गनॆय्द वम्बिन्वन्द शिन्दनोय्
पॊङ्गुहिन्ऱ कॊङ्गैमेल्वि डम्बॊऴिन्द दॆन्निनुम्
कङ्गुल्वन्द तिङ्गळन्ऱ हङ्गळङ्ग मिल्लये 792

अनङ्कन्–कामदेव; ऍन् नॆञ्चु उलाय्–मेरे मन में व्याप्त हो; अङ्कु इयन्ऱु–वहाँ स्थित रहकर; ऍय्त–जो चलाता है उन; अम्पिन् वन्त–शर द्वारा प्राप्त; चिन्तै नोय्–मन की व्याधि; पॊङ्कुकिन्ऱ कॊङ्कै मेल्–उभरने के स्थान, उरोजों पर; इन्त इन्तु–यह चन्द्र (सूर्य या श्रीराम का मुख); वन्तु–आकर; विटम् पॊऴिन्ततु–विष बरसाया; ऍन्निनुम्–तो भी; कङ्कुल् वन्त तिङ्कळ् अन्ऱु–कल रात (जो) आया (वह) चन्द्र नहीं; अकम् कळङ्कम् इल्लै–अन्दर कलंक नहीं है; ऍङ्कु निन्ऱु–कहाँ से; ऍऴुन्ततु–(यह) उग आया। ७९२

सीताजी को श्रीरामचन्द्र का वदनचन्द्र दिखाई देता है। (उसको देखकर कहती है।) मन्मथ मेरे मन में अड्डा जमाकर शर चलाता है। उससे पीड़ा का रोग जो हुआ वह मेरे स्तनों पर अत्यधिक प्रभाव दिखाता है। उन स्तनों पर यह नया चन्द्र, जो दिन में उग आया है, आकर विष ढाल रहा है। तो भी यह चन्द्र कल रात का चन्द्र नहीं दिखता। क्योंकि उसमें कलंक था। इसमें कलंक नही है। (सूर्य को देवी ने चन्द्र मान लिया। —यह भाव भी लिया जा सकता है)। ७९२

अडर्न्दुवन्द नङ्गनॆञ्ज ळन्ऱुशिन्दु मस्बॆनुम्
विडङ्गुडैन्द मॆय्युणिन्ऱु वॆन्दिडादॆ ळुन्दुवॆम्
कडन्दुदैन्द कारियानै यन्तकाळै कालडैन्
दुडन्ऱॊडर्न्दु पोन्ववि वन्दवावॆ नुळ्ळमे 793

ऍन् उळ्ळमे–मेरे मन; अनङ्कन्–मन्मथ; अटर्न्तु वन्तु–अति समीप आकर;

नॆञ्चु अऴऩ्ऱु चिन्तुम्–मन को तप्त करते हुए जो शर बरसाये उन; अम्पु ऍन्नुम् विटम्–शररूपी विष से; कुटैन्त–विद्ध; मॆय् उळ् निन्ऱु–शरीर के अन्दर रहकर; वॆन्तिटातु–बिना जले; ऍऴुन्तु–निकलकर; वॆम् कटम् तुतैन्त–गरम मद जल प्लावित; कार् यातै अन्न–काले गज के समान; काळै–उन तरुण ऋषभ की; काल् अटैन्तु–शरण में जाकर; उटऩ् तॊटर्न्तु पोऩ आवि–उनके पीछे जो गया वह मेरा प्राण; वन्तवाऱु–लौट आया कैसा। ७९३

मेरे मन ! यह क्या आश्चर्य है ! मनोज ने पास आकर मुझ पर शर मारा। उससे मेरा मन मुरझाने लगा। वह शररूपी विष मेरे शरीर को भेदकर अन्दर गया और उसको जलाने लगा। तब ये प्राण अन्दर रहकर नहीं जले पर काले मत्त गज के समान ज़ो जा रहे थे उन पुरुषऋषभ की शरण में गये। फिर वे कब लौट आये ? कैसे आ गये ? (स्वयं उनको आश्चर्य है कि वे जीवित हैं। व्यथा इतनी भारी है।)। ७९३

विण्णुळॆऴॅ ऴुन्दमेह मार्बिन्लिन् मिन्नॊडिम्
मण्णुळेयि ऴिन्ददॆन्न वन्दुपोन मैन्दनार्
ऍण्णुळेयि रुन्दपोदुम् यावरॆन्ऱु तेर्हिलेन्
कण्णुळेयि रुन्दपोदु कॆन्गोल्काण्कि लादवे 794

विण् उळ्ळे ऍऴुन्त मेकम्–गगन में उठा मेघ; मार्पिल् नूलिन् मिन्नॊटु–वक्ष में उपवीत रूपी बिजली के साथ; इ मण् उळ्ळे इऴिन्ततु–इस पृथ्वी में उतर आया हो; ऍन्न–ऐसा; वन्तु पोन–आकर जो गये; मैन्तनार्–राजकुमार; ऍण् उळ्ळे इरुन्त पोतुम्–विचार में रहने पर भी; यावर् ऍन्ऱु तेर्किलेन्–कौन हैं, यह नहीं जानती; कण् उळ्ळे इरुन्त पोतुम्–आँखों के अन्दर रहने पर भी; काण्किलातवे–वे उन्हें नहीं देखतीं; ऍन् कॊल्–यह क्या है। ७९४

आकाश का श्यामल मेघ बिजली के साथ भूमि पर उतर आया ऐसा, वे मेघश्याम वक्ष पर उपवीत के साथ मेरे सामने आये पर झट अदृश्य हो गये। तो भी वे हमेशा मेरे ध्यान में ही रहते हैं। पर वे वीर राजकुमार कौन हैं यह मैं जान नहीं पाती। आँखों के अन्दर ही हैं पर आँखें देख नहीं पातीं। कितनी विचित्र और वेदना देनेवाली दशा है ! । ७९४

❀ पॆय्कडऱ्पि ऱन्दयऱ्पॆ ऱऱ्कॊणाम रुन्दुपॆऱ्
ऱैयपॊऱ्क लत्तॊडङ्गै विरुट्टिरुन्द वादर्पोल्
मॊय्किडक्कु मण्णऱोण्मु यङ्गिडादु मुन्नमे
कैकडक्क विट्टिरुन्दु कट्टुरैप्प दॆन्कॊलो 795

पॆय् कटल् पिऱन्तु–(सब समृद्धि-द्रव्य) देनेवाले सागर में जन्म ले; अयल् पॆऱऱ्कु–अन्यत्र प्राप्ति में; ऑण्णा–अगम; मरुन्तु पॆऱ्ऱु–देवामृत को पाकर भी; ऐय पॊन्

कलत्तॊटु–सुन्दर स्वर्णघट के साथ; अम् कै विट्टु इरुन्त–हाथ से छोड़कर जो रहे; आतर् पोल्–उन मूर्खों के समान; मुन्नमे–पहले तभी; अण्णल्–पुरुषोत्तम के; मॊय् किटक्कुम् तोळ्–वल का आश्रय, भुजाओं से; मुयङ्किटातु–न लिपटकर; कै कटक्क विट्टु–हाथ से (मौका) जाने देकर; इरुन्तु–चुप रहकर; कट्टुरैप्पतु ॲन्–अब बातें बनाने से क्या (लाभ) है। ७९५

मेरी स्थिति उस मूर्ख के समान है जिसके हाथ में सभी द्रव्य देने में समर्थ क्षीरसागर से निकला, और अन्यत्र दुर्लभ, अमृत लगा था, पर जिसने उसको स्वर्णघट के साथ खो दिया है! जब वे दृष्टिगोचर हुए तभी उनके वलिष्ठ भुजाओं से लिपट जाना था। तव मूर्ख मैंने मौका हाथ से निकलने दिया। वैठी रह गयी। अब बातें बना रही हूँ। क्या लाभ है ? । ७९५

ॲन्रुकॊण्डु णैन्दुनैन्दि रङ्गिविम्मि विम्मिये
पॊन्रिणिन्द कॊङ्गैमङ्गै यिडरिन्मूळ्हु पोळ्दिन्वायक्
कुन्रमन्न चिलैमुरिन्त कॊळ्हैकॊण्डु कुळिर्मनत्
तॊन्रुमुण्कण् मदिमुहत्तॊ रुत्तिशॅय्द दुरैशॅय्वाम् 796

ॲन्रु–कहती हुई; कॊण्टु–(श्रीराम का) चिन्तन करके; उळ् नैन्तु नैन्तु–चित्त गल गल कर; इरङ्कि–रोकर; विम्मि विम्मि–सिसक-सिसककर; पॊन् तिणिन्त कॊङ्कै–स्वर्णरंग व्याप्त स्तनोंवाली; मङ्कै–देवी; इटरिल् मूळ्कु पोळ्तिन् वाय–दुख में मग्न रहते समय; कुन्रम् अन्न चिलै–पर्वताकार धनुष के; मुरिन्त कॊळ्कै कॊण्टु–टूटने का समाचार लेकर; कुळिर् मनत्तु ऒन्रुम्–(सीताजी के प्रति) आर्द्र मनवाली; उण् कण्–काजल-युक्त आँखोंवाली; मति मुकत्तु–चन्द्र-सम वदनवाली; ऒरुत्ति–एक सखी (का); चॅय्ततु–कृत्य; उरै चॅय्वाम्–कहेंगे। ७९६

इस तरह विक्षिप्त सी बातें करती हुयी सीता देवी कुढ़ रही थीं, घुल रही थी। रोती सिसकती रही। उनके वक्षस्थल में और स्तनों पर स्वर्ण-रंग फैला हुआ था। (तमिळ साहित्य में इस रंग को 'तेमल्' कहते हैं जो सुन्दरियों के शरीरों के कुछ अंगों पर विशेषकर वक्ष पर यौवन की अवस्था में फैलता है और सौन्दर्य में चार चाँद लगा देता है।) वे जब इस तरह दुखसागर में डूब रही थीं तब काजलयुक्त आँखोंवाली और चन्द्रसम वदनवाली (उनकी) एक प्रिय सखी धनुर्भंग का समाचार ले आयी। उसकी बात अब करेंगे। ७९६

❀ वडङ्गळुङ् गुळैहळुम् वान विल्लिडत्
तॊडर्न्दुपूङ् गुळल्हळुन् दुहिलुञ् जोरतर
नुडङ्गिय मिन्नॅन नॊय्दि नॅय्दिनाळ्
नॅडुन्दडङ् गिडन्दकण् णील मालयै 797

तटम् किटन्त–विस्तारयुक्त; नॅटु कण्–आयत आँखोंवाली; नीलमालै–

नीलमाला नाम की; वटङ्कळुम्–रत्नहार व; कुळैकळुम्–कुण्डलों के; तॉटर्न्तु–लगातार; वान विल् इट–इन्द्रधनु के समान रंगीन प्रकाश बिखेरते; पू कुळ्ळ्कळम्–पुष्पालंकृत केशजाल के; तुकिलुम्–और वस्त्र के; चोर् तर–खुलकर खिसकते; नुटङ्किय मिन् अँन–लचकनेवाली बिजली के समान; नॉय्तिन्–सत्वर; अँयतित्ताळ–आ पहुँची। ७९७

वह विशाल और आयत आँखोंवाली, नीलमाला नाम की सखी इस तरह दौड़ी आयी कि उसके रत्नहार, कुण्डल आदि आभरण हिलते थे और उनके रंगीन प्रकाश भूमि पर छिटककर इन्द्रधनुष सा बना रहे थे। उसका पुष्पालंकृत केश खुलकर बिखर गया। वस्त्र खिसकने लगा। वह ससंभ्रम आ पहुँची। ७९७

❀ वन्दडि वणङ्गिलळ् वळ्ङ्गु मोदयळ्
अन्दमि लुवहय ळाडिप् पाडिन्नळ्
शिन्न्दयुण् महिळ्च्चियुम् पुहन्द शॅय्दियुम्
सुन्दरि शॊल्लॅन्नत् तॊळुदु शॊल्लुवाळ् 798

वन्तु–आकर; अटि वणङ्किलळ्–चरणों पर नहीं झुकी; वळङ्कुम् ओतैयळ्–शोर मचानेवाली; अन्तम् इल् उवकैयळ्–असीम आनन्दवाली; आटि पाटिनळ्–नाची, गाई; चुन्तरि–सुन्दरी; चिन्तै उळ् मकिळ्च्चियुम्–मन का आनन्द; पुकुन्त चॅय्तियुम्–वह देनेवाली बात; चॊल् अँन–कहो, पूछने पर; तॊळुतु–नमस्कार करके; चॊल्लुवाळ्–बोलने लगी। ७९८

आकर उसने नियमानुसार नमस्कार नहीं किया। हल्ला मचाती है; असीम आनन्द के साथ गाती नाचती है। यह देख सीताजी ने उसको रोका और पूछा कि सुन्दरी! तुम्हारे मन का आनन्द और उस आनन्द का कारण क्या है? बताओ। तब वह देवी को नमस्कार करके कहने लगी। ७९८

❀ कयरद तुरहमाक् कडलन् कल्वियन्
तयरद नॅन्नुम्बॅयर्त् तनिच्चॅ नॆमियान्
पुयल्पॊळि तडक्कयान् पुदल्वन् पूङ्गणै
मयऱु मदन्नऱ्कुम् वडिवु मेन्मयान् 799

कयम् रतम् तुरकम्–गज, रथ, तुरग; मा कटलन्–बड़ा (सेना-) सागरवाले; कल्वियन्–विद्यापूर्ण; पुयल् पॊळि तट कैयान्–मेघ के समान दान देनेवाले विशाल हाथों के; तयरतन् अँन्नुम् पॅयर्–दशरथ नामधारी; तनि चॅन् नेमियान्–अकेला आज्ञाचक्र चलानेवाले; पुतल्वन्–(राजा के) पु ; पू कणै–पुष्पशरों से; मयल् तरु–काम, मोह दिलानेवाले; मतनन् कु उम्–मदन से भी बढ़कर; वटिवु मेन्मैयान्–रूपसौंदर्य में अधिक हैं। ७९९

(उत्सुकता को बढ़ाती रीति से उसने कहानी कहना आरम्भ किया)

गज, रथ, तुरंगादि बड़ी सेना के सागर के पति, विद्या सम्पन्न, और विश्रुत मेघ सम दानी, दशरथ नाम के जो एकछत्र चक्रवर्ती हैं, उनके पुत्र, पुष्पशरों द्वारा लोगों को काममोहित करनेवाले मन्मथ से भी बढ़कर रूप में, सुन्दर; । ७९९

❀ मरामर मिवैयॆन्ऩ वळर्न्द तोळिऩ्ऩाऩ्
अरावणै यमलऩॆऩ्ऩ् उयिर्क्कु माऱ्ऱलाऩ्
इरामऩॆऩ्ऩ् वदुपॆय रिळैय कोवॊडुम्
परावरु मुनियॊडुम् पदिवन् दॆय्दिऩ्ऩाऩ् 800

मरामरम् इवै–ये सालवृक्ष हैं; ऎऩ्ऩ–ऐसा कहने योग्य; वळर्न्त–वर्धित; तोळिऩ्ऩाऩ्–भुजावाले; अरा अणै अमलऩ् ऎऩ्ऩ्–शेषशायी विमल देव, समज्ञ; अयिर्क्कुम्–संशय करने योग्य; आऱ्ऱलाऩ्–शक्ति सम्पन्न; इळैय कोवॊटुम्–अपने लघु भाई युवराज के साथ; परावु वरुम् मुनियॊटुम्–और बहु प्रशंसित मुनि के साथ; पति वन्तु ऎय्तिऩ्ऩाऩ्–हमारे नगर में आ पहुँचे हैं; इरामऩ् ऎऩ्पतु पॆयर्–'श्रीराम' नाम है । ८००

सालवृक्ष के समान दीर्घ और बलिष्ठ भुजाओंवाले, शेषशायी भगवान विष्णु के समान शक्ति सम्पन्न, एक राजकुमार अपने छोटे भ्राता युवराज और बहुविश्रुत आदरणीय विश्वामित्र के साथ हमारे नगर में आये हैं। (सुना ?) उनका नाम श्रीराम है । ८००

❀ पूणियन् मॊय्म्बिऩ्ऩ् पुऩिद नॆय्दविल्, काणिय वन्दऩ् ऎऩ्ऩक् कावलऩ्
आणयि नडॆन्दविल् लदऩै याण्डहै, नाणिनि देऱ्ऱिन नडुङ्गिऱ् ऱुम्बरे 801

पूण् इयल् मॊय्म्पिऩ्ऩ्–बाहुवलय सहित भुजावाले वे; पुऩितऩ् ऎय्त विल्–पुनीत रुद्रदेव से व्यवहृत उस धनुष को; काणिय वन्तऩऩ्–देखने आये; ऎऩ्ऩ–यह (विश्वामित्र के) कहने पर; कावलऩ् आणैयिऩ्–हमारे महाराज की आज्ञा से; अटैन्त विल् अततै–सभा में आये धनु, (उस) पर; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ ने; इत्तितु–सुखपूर्वक; नाण् एऱ्ऱिऩऩ्–प्रत्यंचा चढ़ायी; उम्परे–देवलोक भी; नटुङ्किऱ्ऱु–काँपने लगा । ८०१

विश्वामित्र मुनि भी उनके साथ आये हैं। उन्होंने कहा— बाहुवलयधारी ये पुनीत ईश्वर रुद्र के उपयोग में रहे इस धनुष को आजमाने आये हैं। यह सुनकर हमारे महाराज जनक ने उस धनुष को सभा में ले आने की आज्ञा दी। धनुष आया। तब हमारे राजकुमार ने बड़े ही सुख से धनु की डोरी चढ़ा दिया। तब देखो ! सारा देवलोक ही थर्रा गया। ८०१

❀ मात्तिरै यळविऱ्ऱाण् मडुत्तु मुन्बयिल्
शूत्तिर मिदुवॆनत् तोळिन् वाङ्गिऩ्ऩाऩ्

एत्तिन रिमैयव रिऴिन्द पूमऴै
वेत्तवै नडुक्कुऱ मुऱिन्दु वीऴ्न्ददे 802

मात्तिरै अळविल्–एक मात्रा के समय भर में; ताळ् मडुत्तु–पैर के नीचे (एक सिरा) दबाकर; मुन् पयिल्–पूर्व अभ्यस्त; चूत्तिरम् इतु अॅन–साधन यह है, यह समझने देते हुए; तोळिन् वाङ्किनान्–(उन्होंने) भुज-बल से झुकाया; वेन्तु अवै–राजा सभा; नटुक्कु उऱ–काँप उठे, ऐसा; मुऱिन्तु वीऴ्न्ततु–टूटकर गिरा; इमैयवर् एत्तिनर्–देवों ने स्तुति की; पू मऴै इऴिन्त–पुष्पवर्षा गिरी। ८०२

एक ही मात्रा (क्षण) के समय में उन्होंने धनु के एक सिरे को पैर के नीचे दबा लिया और उस धनुष को इस प्रकार झुकाया कि देखनेवाले यही समझें कि यह धनु तो इन्हीं के उपयोग में पहले से रहा मालूम पड़ता है। तभी वह सभा में रहे राजाओं को कंपाते हुए टूटकर गिर गया। देवता लोग उनकी स्तुति करते हुए फूल बरसाये। ८०२

❀ कोमुनि युडन्वरु कॊण्ड लॆन्ऱपिन्, तामरैक् कण्णिना नॆन्ऱ तन्मयाल्
आमव नेकॊलॆन् ऱैय नीङ्गिनाळ्, वाममे कलैयिऱ वळर्न्द दल्हुले 803

को मुनियुटन् वरु–ऋषिराज के साथ आये; कॊण्टल अॅन्ऱ पिन्–मेघश्याम, यह कहने के बाद; तामरै कण्णितान्–पुण्डरीकाक्ष; अॅन्ऱ तन्मैयाल्–यह भी कहने के कारण से; अवने आम् अॅन्ऱु–हाँ वही हैं, समझ; एयम् नीङ्किनाळ्–संशय छोड़ दिया (सीताजी ने निश्चय कर लिया); अल्कुल–कटि प्रदेश; वामम् मेकलै इऱ–सुन्दर मेखला को तोड़ते हुए; वळर्न्ततु–बढ़ गया। ८०३

(सीताजी ने सखी की बात सुनी।) 'ऋषिराज के संग आये; मेघ के समान श्यामल थे; और नीरजाक्ष थे', इस विवरण से वे समझ गयीं कि वे ही होंगे जिन्होंने मेरे मन में इतनी बड़ी आँधी मचा दी है। उनको अब कोई संशय नहीं रह गया। तब आनन्द से उनका शरीर बढ़ गया। कटि भाग सहसा इतना बढ़ा कि मेखला ही टूट गयी। ८०३

इल्लये नुशुप्पॆन्बा रुण्डुण् डॆन्नवुम्
मॆल्लियल् मुलैहळुम् विम्म विम्मुवाळ्
शॊल्लिय कुऱियिनत् तोन्ऱ लेयवन्
अल्लने लिऱप्पनॆन् ऱहत्तु ळुन्निनाळ् 804

नुचुप्पु–कमर; इल्लैये अॅन्पार्–है ही नहीं, कहते थे (जो) वे; उण्टु उण्टु–है, है; अॅन्नवुम्–कहने लगें, ऐसा (कमर बढ़ी); मॆल् इयल् मुलैकळुम्–मृदु प्रकृति के स्तन भी; विम्म–फूल उठे; विम्मुवाळ्–इस तरह आनन्द-भरित होकर; चॊल्लिय कुऱियिन्–इसके कहे लक्षणों से; अ तोन्ऱले–वे ही राजकुमार हैं; अवन् अल्लनेल्–वे नहीं (साबित) हुये तो; इऱप्पॆन् अॅन्ऱु–मर जाऊँगी, यह; अकत्तुळ् उन्निनाळ्–मन में (सीताजी ने) सोचा। ८०४

सीताजी की कमर भी बढ़ गयी। पहले जो स्त्रियाँ संदेह करती

थी कि इनके कटि नहीं है अव कहने लगीं कि इनके कटि है। वैसे ही सीताजी के मृदु प्रकृति के स्तन भी फूल उठे। देवी भी आनन्द से भर गयीं। तव उन्होंने सोचा कि इसके वताये लक्षणों से यही लगता है कि धनुर्भंग करनेवाले वे ही राजकुमार हैं जिनसे विवाह की कामना कर रही हूँ। अगर पीछे ऐसा कुछ मालूम हो गया कि वे नहीं हैं, तो मैं मर जाऊँगी। ८०४

❀ आशया लयर्वव ळन्नन् ळायिन्नळ्
पाशडैक् कमलत्तोन् पटैत्त विल्लिरुम्
ओशयिड् पॅरियदो रुवहै यॅय्दियक्
कोशिहर् कॉरुमॊळि शन्नकन् कूरुवान् 805

आचैयाल् अयर्पवळ्–कामना से व्यथित वह; अन्नवळ् आयिनळ्–वैसी बनीं; चन्नकन्–जनक ने; पचुमै अटै कमलत्तोन्–हरे पत्तोंवाले कमल के फूल पर आसीन (ब्रह्मा) से; पटैत्त–रचित; विल् इरुम् ओचैयिन्–धनु के भंग से उठी ध्वनि से भी; पॅरियतु ओर् उवकै–वड़ा एक सन्तोष; ॲय्ति–प्राप्त कर; अ कोचिकर्कु–उन कौशिक से; ओरु मॊळि–एक वार्ता; कूरुवान्–कही। ८०५

इधर प्रेम-प्राप्ति की आतुरता से सीताजी इस तरह व्यथित हो रही थी। तव उधर जनक ने, जिनका आनन्द हरे पत्तोंवाले कमल के फूल पर आसीन ब्रह्मा से रचित रुद्र के धनु के टूटते वक्त उठे शब्द से भी वड़ा था, महर्षि कौशिक से एक वार्ता कही। ८०५

❀ उरैशॅय्ॅम् बॅरुमवुन् पुदल्वन् वेळ्वितान्
विरैविनिन् रीरुपहन् मुडित्तल् वेट्कयो
मुरशॅरिन् ददिर्कळल् मुळङ्गु तानैयव्
वरशयु मिव्वळि यळैत्तल् वेट्कयो 806

ॲम् पॅरुम–मेरे वन्द्य; उन् पुतल्वन्–आपके (ज्ञान-) पुत्र यानी शिष्य के; वेळ्वि–विवाह को; विरैविन्–सत्वर; इन्रु ओरु पकल्–इसी दिन में; मुटित्तल्–सम्पन्न करना; वेट्कैयो–इच्छित है; मुरचु ॲरिन्तु–ढोल पीटकर घोषणा करके; अतिर्कळल्–वजनेवाले पायल; मुळङ्कु तानै–गरजती सेना (के सागर) के; अ अरचैयुम्–पति उन चक्रवर्ती को भी; इ वळि अळैत्तल्–इस स्थान को आमंत्रित करना; वेट्कैयो–इच्छित है; उरै चॅय्–कृपा कर वतलाइये। ८०६

मेरे वन्दनीय महाराज! आपके (शिष्य) पुत्र का विवाह आज ही हो? या विस्तृत रीति से ढिंढोरा पिटवाकर, वीरपायलधारी, सघोष सेना के पति चक्रवर्ती दशरथ को भी आमंत्रित करूँ, तव विवाह हो? आप क्या चाहते हैं? कृपाकर वताइये। (गुरु-शिष्य के नाते शिष्य को पुत्र, ज्ञान-पुत्र और गुरु को ज्ञान-पिता कहने की प्रथा है। इसलिए जनकजी विश्वामित्र से श्रीराम के सम्वन्ध में, 'आपके पुत्र……' कहते हैं।) । ८०६

❀ मल्वला नवुरै पहर मादवन्, ऑल्लयि लवनुम्वन् दुरुद नन्ऱॅन
ॲल्लयि लुवहैयि निशैन्द वाऱॅलाम्, शॉल्लुहॅन् रोलयुन् दूदुम् पोक्किनान् 807

मल् वल्लान्–मल्लयुद्ध-चतुर जनक (के); अ उरै पकर–वह वचन कहने पर; मा तवन्–महा तपस्वी; ऑल्लैयिल्–अतिशीघ्र; अवनुम्–उनका भी; वन्तु उड्रतल्–आ पहुँचना; नन्ऱु–अच्छा होगा; ॲन–बोले, तब; ॲल्लै इल् उवकैयिन्–अपार मोद के साथ; इचैन्त आऱु ॲल्लाम्–यहाँ घटी हुई सभी बातें; चॉल्लुक–जाकर निवेदन करो; ॲन्ऱु–कहकर; तूतुम्–दूतों को भी; ओलैयुम्–विवाह-निमन्त्रणपत्र भी; पोक्कितान्–प्रेषित किया। ८०७

मल्लवीर जनक ने यह प्रश्न किया तो महातपस्वी ने उत्तर दिया कि दशरथ भी शीघ्र आ जायँ, यही श्रेष्ठ है। महाराज जनक को भी वह बात अपार आनन्दवर्धक रही। उन्होने दूतों को बुलाकर विवाह-निमंत्रणपत्र और 'वहाँ जाकर यहाँ का सारा हाल कहो'— यह संदेशा दिया और उनको अयोध्या भेजा। ८०७

13. ॲऴुच्चिप् पडलम् (प्रस्थान पटल)

❀ कडुहिय तूदरुङ् गालिऱ् कालिऱ्चॅन्
ऱिडिकुरन् मुरशदि रयोत्ति यॅय्दिनार्
अडियिणै तॉऴविड मित्ऱि मन्नवर्
मुडियॊडु मुडिपॊरु वायिन् मुन्निनार् 808

कडुकिय तूतरुम्–शीघ्रगामी दूत भी; कालिन्–वाहन पर; कालिन् चॅन्ऱु–वायुवेग से जाकर; इटि कुरल् मुरचु–वज्र के समान नाद करनेवाले ढोल; अतिर्–जहाँ बजते हैं; अयोत्ति ॲय्तिनार्–अयोध्या आये; मन्नवर्–अनेक राजा; अटियिणै तॉऴ–(दशरथ के) चरण-द्वय की वन्दना करने के लिए; इटम् इन्ऱि–स्थान न होने के कारण; मुटियॊटु मुटि पॊरु–जहाँ मुकुट से मुकुट टकराते थे उस; वायिल्–द्वार पर; मुन्नितार्–पहुँचे। ८०८

त्वरितगामी दूत पैदल या उचित वाहन पर वायु-वेग के साथ अयोध्या में आये। वहाँ नगाड़े वज्र के से नाद के साथ बज रहे थे। दूत राजद्वार पर आये। वहाँ चक्रवर्ती से भेंट करने और उन्हें नमस्कार करने के लिए आगत राजाओं की इतनी भीड़ थी कि उनके मुकुट आपस में टकराते थे। ८०८

❀ मुहन्दनर् तिरुवरुण् मुडैयि नॅय्दिलार्
तिहऴ्न्दॊऴिर् कऴलिणै तॉऴुदु शॅल्वनैप्
पुहऴ्न्दन ररशनिन् पुदल्वर् पोयपिन्
निहऴ्न्दवै यिदुवॅन नॅडिदु कूऱिनार् 809

तिरु अरुळ् मुकन्तनर्–चक्रवर्ती की कृपा के पात्र (उठानेवाले) बनकर; मुरैयिन् अॅय्तित्तार्–उचित प्रकार से (चक्रवर्ती के सामने) गये; तिकळ्न्तु ऑळिर्–बहुत शोभायमान; कळल् इणै तॉळुतु–पायलों से अलंकृत चरणद्वय पर नमस्कार करके; चॅल्वनै–ऐश्वर्यवान की; पुकळ्न्तनर्–स्तुति की; अरच–चक्रवर्ती; निन् पुतल्वर्–आपके पुत्रों के; पोयपिन्–यहाँ से जाने के बाद; निकळ्न्तत्तु इतु–जो हुआ वह यह है; ॲन–कहकर; नॅटितु कूरित्तार्–विस्तार से बयान किया। ८०६

(समाचार अन्दर गया और उन्हें अन्दर आने की अनुमति मिल गयी। उन्हें चक्रवर्ती की विशेष कृपा प्राप्त हो गयी थी।) चक्रवर्ती की कृपा के पात्र हुए वे राजसभा में बरतने योग्य शिष्टाचार के साथ राजा के सामने गये। उनके शोभायमान पायल पहने पैरों पर नमस्कार किया। उचित रीति से उनकी संस्तुति की। उन्होंने राजा के पुत्र श्रीरामचन्द्र जी संबंधी वृत्तान्त, उनके अयोध्या छोड़ने से लेकर मिथिला में आने तक का, कह सुनाया। ८०९

❀ कूरिय तूदरुङ् कॉणर्न्द वोलैयै, ईरिल्वण् पुहळिना यिदुव दॅन्ऱनर्
वेऱॉरु पुलमहन् विरुम्बि वाङ्गिनान्, माऱदिर् कळलिनान् वाशि यॅन्ऱनन् 810

कूरिय तूतरुम्–कहकर दूतों ने भी; कॉणर्न्त ओलैये–(अपने साथ) लाये विवाहपत्र को; ईऱु इल्–असीम; वण् पुकळिताय्–समृद्ध यशस्वी; इतु अतु–यही वह (विवाह-निमन्त्रणपत्र) है; ॲन्ऱनर्–कहा; वेऱु ऑरु पुलम् मकन्–(उसके लिए अलग) नियत दूसरे पण्डित ने; विरुम्पि–चाह के साथ; वाङ्कितान्–ले लिया; माऱु अतिर् कळलितान्–बारी-बारी से मुखरित होनेवाले पायलों को पहने हुए चक्रवर्ती ने; वाचि–पढ़ो; ॲन्ऱनन्–कहा। ८१०

वह सारा वृत्तान्त विस्तार से सुनाकर दूतों ने विवाह-निमन्त्रणपत्र बढ़ाया और निवेदन किया कि यही वह पत्र है जिसे हमारे महाराजा ने सेवा में भेजा है। उस पत्र को पत्र-वाचन के लिए नियत पंडित ने अपने हाथ में लिया। बारी-बारी से मुखरित होनेवाली पायलों से अलंकृत चरणों के दशरथ ने आज्ञा दी कि 'पढ़ो'। (बारी-बारी से पायलों का क्वणित होना— राजसभा के शिष्टाचारबद्ध महाराज की उतावली का संकेत देता है जिसके कारण वे पैरों की स्थिति को बदल देते थे। पहले पद्य (८०९) में केवल पायलों की शोभा बतायी गयी है; यहाँ उसका स्वर। —यह देखने योग्य है।)। ८१०

❀ इलैमुहप् पडत्तव नॅळुदिक् काट्टिय
तलैमहन् शिलैत्तॉळिल् शॅविधिऱ् चार्दलुम्
निलैमुह वलयङ्ग णिमिर्न्तु नीङ्गिड
मलैयॅन वळर्न्दन वयिरत् तोळ्हळे 811

इलै मुकम् पटत्तु–ताल-पत्र-पट पर; अवन्–उन जनक से; ॲळुति काट्टिय–चित्रण कर दिखाया गया; तलै मकन्–ज्येष्ठ पुत्र के; चिलै तॉळिल्–धनु सम्बन्धी

कृत्य; चॅवियिल् चार्तलुम्–कानों में पड़े, त्योंही; वयिरम् तोळ्कळ्–वज्रसम कन्धे; निलै मुकम् वलयङ्कळ्–पहने हुए वलयों को; निमिर्न्तु नीङ्किट–सन्धिस्थान पर तोड़कर दूर करते हुए; मलै अॅन्न वळर्न्ततन्–पर्वत के समान वर्धित हुए। ८११

जनक ने तालपत्र को पट बनाकर महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम के धनुर्विद्या-कौशल का बड़ा ही प्रभावपूर्ण (शब्द-) चित्रण लिखा था। उसको पढ़कर (पढ़ते सुनकर) महाराज को इतना आनन्द हुआ कि उनके कंधे पर्वतों के समान फूल उठे और बाहुवलय टूट कर अलग हो गये। ८११

❀ वॅऱ्ऱिवेल् मन्नवन् ऱक्कन् वॅळ्वियिल्
कऱ्ऱैवार् चडैमुडिक् कणिच्चि वानवन्
मुऱ्ऱवे ऴुलहयुम् वॅन्ऱ मूरिविल्
इऱ्ऱपे रॊलिकॊलन् ऱिडित्त दीङ्गॆन्ऱान् 812

वॅऱ्ऱि वेल् मन्नवन्–विजयी शक्ति के चक्रवर्ती; अन्ऱु ईङ्कु इटित्ततु–उस दिन यहाँ वज्रघोष सा सुनाई दिया; तक्कन् वेळ्वियिल्–दक्ष यज्ञ में; कऱ्ऱै वार् चटै मुटि–पुष्ट और लम्बी जटाजूट; कणिच्चि–तप्त लौहायुधवाले (या परशुधर); वानवन्–रुद्रदेव (के); एऴु उलकैयुम् मुऱ्ऱ वॅन्ऱ–(जिससे) सातों लोकों पर पूर्णरूप से विजय पाई उस; मूरि विल्–सुदृढ़ धनुष के; इऱ्ऱ पेर् ऑलि कॊल्–टूटने का बड़ा नाद था क्या; अॅन्ऱान्–कहा। ८१२

विजयी शक्ति (बर्छी) के धारण करनेवाले दशरथ ने आनन्दातिरेक से उद्‌गार निकाली— ओफ़! उस दिन जो एक अत्युच्च ध्वनि सुनाई दी क्या वह इसी धनु के भंजन की ध्वनि थी ? वह धनुष साधारण धनुष नहीं था। इसी से तो तप्तलौहायुध (या परशु) के धारण करनेवाले जटाधर, रुद्रमूर्ति ने दक्ष-यज्ञ के अवसर पर सातों लोकों पर विजय पायी थी। वह तो बड़ा ही बलवान धनुष था! । ८१२

❀ अॅन्ऱुरैत् तॅदिरॅदि रिडैवि डादुनेर्, तुन्ऱिय कनैकळऱ् ऱूदर् कॊळ्हॅनाप्
पॊन्ऱिणि कलन्गळुन् दूशुम् पोक्किनान्, कुन्ऱॅन वुयरिय कुववुत् तोळिनान् 813

कुन्ऱु अॅन्न उयरिय—पर्वत-समान उन्नत; कुववु तोळिनान्–पुष्ट कन्धोंवाले (दशरथ) ने; अॅन्ऱु उरैत्तु–ऐसा कहकर; पॊन् तिणि कलन्कळुम्–स्वर्णरचित आभरण; तूचम्–और (जरीदार) वस्त्र; अॅतिर् अॅतिर्–एक के पहले एक; इटै विटातु–निरन्तर; नेर् तुन्ऱिय–अपने सामने आ जुटे; कनै कळल् तूतर्–क्वणनशील पायलधारी दूत; कॊळ्क–ले ले; अॅना–कहकर; पोक्किनान्–दिलाया। ८१३

दशरथ के कंधे जो पहले बढ़े थे अब और भी बढ़े। उन्होंने आज्ञा दी कि इन्हें देने के लिए पुरस्कार लाओ। स्वर्ण-रचित आभरण और जरीदार वस्त्र एक के बाद एक नहीं, एक के पहले एक (यानी इतनी तेजी से) आकर एकत्र हुए। राजा ने कहा कि दूत आकर इन्हें ले लें।

दूत बारी-बारी से आये तब उनकी पायलें बज उठती थीं। उन्होंने वह सब ग्रहण किया। ८१३

※ वाऩवन् कुलत्तॅमर् वरत्ति नाल्वरुम्
वेऩिल्वे ळिरुन्दवम् मिदिलै नोक्किनम्
शेऩयु मरशरुम् जॅल्ह मुन्दॅन्ना
आनमे लणिमुर शरैहॅन् ऱेविनान् 814

वानवन् कुलत्तु–सूर्यकुल के; ऍमर् वरत्तिनाल्–मेरे पूर्वजों के पुण्य से; वरुम्–उत्पन्न; वेऩिल् वेळ्–वसन्तपति (मन्मथ) सम श्रीराम; इरुन्त–जहाँ रहते हैं; अ मितिलै नोक्कि–उस मिथिला को उद्देश्य करके; नम् चेऩैयुम्–हमारी सेना और; अरचरुम्–राजा लोग; मुन्तु चॅल्क ऍन्ना–आगे जायें, यह; आऩैमेल्–हाथी पर; अणि मुरचु–आलंकारिक ढोल; अरैक–पिटवाओ; ऍन्ऱु–यह; एवितान्–प्रेरित किया (आज्ञा दी)। ८१४

तब राजा ने यह आज्ञा दी कि श्रीराम जहाँ हैं, उस मिथिला में हमारी सेना, सामंत, राजा आदि जायँ। श्रीराम हमारे सूर्यकुल के पूर्व पुरुषों के पुण्य के बल से मेरे पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए हैं। कूच की मुनादी पिटवा दो। ढिंढोरा बहुत सुन्दर और सजा हुआ हो और वह हाथी पर रखकर पीटा जाय। ८१४

वाम्बरि वरुदिऩिक् कडलिऩ् वळ्ळुवन्
तेम्बॊळि तुळायमुडिच् चॅङ्गण् मालवन्
आम्बरि शुलहॅला मळन्दु कॊण्डनाळ्
शाम्बुवन् ऱिरिन्दॅनत् तिरिन्दु शाऱ्ऱिनान् 815

तेम् पॊळि तुळाय् मुटि–शहद स्रवित करनेवाली तुलसीजी की माला से अलंकृत मुकुटवाले; चॅम् कण् माल् अवन्–अरुणाक्ष श्रीविष्णु भगवान ने; आम् परिचु–योग्य प्रकार से; उलकु ऍलाम् अळन्तु कॊण्ट नाळ्–(जिस दिन) सारे लोकों को अपने चरणों से नापा था, उस दिन; चाम्पुवन् तिरिन्तत्तु ऍन्न–जाम्बवान (जिस प्रकार) घूमा उस प्रकार; वळ्ळुवन्–ढिंढोरा पीटनेवाला; वाम्परि वरुतिऩि कटलिऩ्–दुलकी वाले (त्वरितगामी) अश्वों की सेना के सागर में; तिरिन्तु–घूम-घूमकर; चाऱ्ऱिनान्–घोषणा कराई। ८१५

वळ्ळुवन ने (ढिंढोरा पीटनेवाली जाति का आदमी) जिस सेना में अतिवेगगामी अश्व थे उस सागर सम विपुल सेना के बीच चारों ओर घूमकर राजाज्ञा का ढिंढोरा पिटवाया। उसको देखकर जाम्बवान की याद आती थी जिन्होंने उस अवसर पर घूम-घूम कर ढिंढोरा पिटवाया था जब तुलसीदलों की माला से अलंकृत श्रीविष्णु ने त्रिविक्रमावतार लेकर सारे लोकों को अपने पैरों से नाप लिया था। ८१५

❀ शाऱ्ऱिय मुरशॉलि शॅवियिऱ् चारुमुऩ्
कोऱ्ऱॉडि मह्ळिरुङ् गोल मैऩ्दरुम्
वेऱ्ऱरु कुमररुम् वॅऩ्ऱि वेऩ्दरुम्
काऱ्ऱॅरि कडलॆनक् कळिप्पि ऩॊङ्गिऩार् 816

चाऱ्ऱिय मुरचु ऑलि–पिटे ढिंढोरे की ध्वनि; चॅवियिल् चारुम् मुऩ्–कानों में पड़ने के पूर्व ही; कोल् तॊटि मकळिरुम्–स्थूल कंकणधारिणी स्त्रियाँ और; कोलम् मैऩ्तरुम्–सुन्दर पुरुष; वेल् तरु कुमररुम्–भाला चलाने में चतुर जवान; वॆऩ्ऱि वेऩ्तरुम्–विजयी राजा (सामन्त) लोग; काऱ्ऱु ऍरि कटल् अॅऩ–पवनोद्वेलित सागर के समान; कळिप्पिऩ् ओङ्किऩार्–सन्तोष में बढ़े। ८१६

ज्योंही घोषणा सुनाई दी त्योंही मोटी-मोटी चूड़ियाँ पहने हुई स्त्रियाँ, सुन्दर पुरुष, भाला चलाने में चतुर पट्ठे, विजयी सामंत, राजा, सब आनन्द में पवनोद्वेलित सागर के समान उमगे। ८१६

विडैपॉरु नडैयिऩाऩ् शेनै वॅळ्ळमोर्, इडैयिलै युलहिऩि लॅऩ्ऩ वीण्डियक्
कडैयुह मुडिविऩि लॅवैयुङ् काऱ्पडप्, पुडैपॅयर् कडलॆऩ वॅऴुन्दु पोयदे 817

विटै पॉरु नटैयिऩाऩ्–ऋषभ समान चालवाले (दशरथ) की; चेऩै वॅळ्ळम्–सेना का सागर; उलकिऩिल् ओर् इटै–संसार में कोई स्थान; इलै अॅऩ्ऩ–नहीं है, यह स्थिति बनाते हुए; ईण्टि–एकत्र होकर; कटै युकम् अ मुटिविऩिल्–कल्पांत के उस अन्तिम समय में; ऍवैयुम्–(चराचर) सभी को; काल् पट–अपने (पैर के) नीचे दबाते हुए; पुटै पॅयर् कटल् अॅऩ–उमड़कर आनेवाले बहिस्सागर के समान; ऍऴुन्तु पोयतु–उठकर चला। ८१७

ऋषभ समान चालवाले दशरथ की विश्वव्यापी सेना उठ चली। सेना क्या थी वह उस युगांतकालीन बाह्य-सागर के समान थी जो अपने अन्दर चर-अचर सभी को समा लेते हुए प्रचंडरूप से उमड़ आता है। ८१७

शिल्लिड मुलहॅऩच् चॅऱिन्द तेर्हडाम्
पुल्लिडु शुडरॅनप् पॉलिन्द वेन्दराल्
ऍल्लिडु कदिर्मणि यॅऱिक्कु मोडयाल्
विल्लिडु मुहिलॅनप् पॊऴिन्द वेऴमे 818

उलकु चिल् इटम्–संसार छोटा स्थान है; अॅऩ–यह स्थिति बनाते हुए; चॅऱिन्त तेर्कळ् ताम्–जुटे हुए रथ; वेन्तराल्–राजाओं के कारण; पुल्लिटु चुटर् अॅऩ–सूर्य सहित रहने से; पॉलिन्त–भासमान रहे; वेऴम्–हाथी; ऍल् इटु कतिर् मणि–ज्वलन्त सूर्य-सम रत्नों के; ऍऱिक्कुम् ओटैयाल्–प्रकाशित मुख-पट्टों के कारण; विल्टुम् मुकिल् अॅऩ पॉलिन्त–इन्द्रधनुष सहित मेघ के समान शोभित रहे। ८१८

रथ इतने अधिक जुट आये कि संसार में स्थान का अभाव सा लगता था। उन पर विराजमान राजे इतने दीप्तिमान थे कि वे सूर्य के समान लगे और उनके रथ सूर्य सहित सूर्य के रथों के समान लगे। हाथियों के

मुखपट्टों में विविध उज्ज्वल रत्न थे। वे इन्द्रधनुप के समान लगे और ये गज इन्द्रधनुष सहित मेघों के समान। ८१८

कालविरिन् दौळिर्हुडै कणक्कि लोदिमम्
पालशिरै विरित्तुविण् परप्प पोन्ररन
मेल्विरिन् दॅळुहॉडिप् पडलम् विण्णॅलाम्
तोलुरिन् दुहुवन पोन्रु तोन्रुमे 819

काल् विरिन्तु ऑळिर् कुटै–डण्डे के ऊपर फैलकर प्रमा देते रहनेवाले छत्र; कणक्कु इल् ओतिमम्–असंख्य हंस; पाल् चिरै विरित्तु–दुग्ध-सम पक्ष खोलकर; विण् पर्प्प पोन्ररन–आकाश में उड़ते से हैं; मेल् विरिन्तु ऍळु–ऊपर फैलकर उठी; कॉटि पटलम्–पताकाओं का समूह; विण् ऍलाम्–सारा आकाश; तोल् उरिन्तु–चमड़ा उधेड़कर; उकुवन पोन्रु–गिरा रहा हो ऐसा; तोन्रुम्–दिखता है। ८१६

अनेक श्वेतछत्र खुले थे। वे ऐसे लगते थे मानों अनेक हंस अपने पंख फैलाते हुए आकाश मे उड़ रहे हों। आकाश में अनेक पताकाएँ झलमलाती फहर रही थीं। उनको देखकर ऐसा भास हो रहा था कि सर्प-सम (नीला) आकाश श्वेत उज्ज्वल केंचुलियाँ उतारकर गिरा रहा हो। ८१९

नुडङ्गिय तुहिर्कॉडि नूळैक् कैम्मलैक्, कड्गलुळ् शेन्रयैक् कडलि दामॅन्र
इडम्बड वॅङ्गणु मॅळुन्द वॅण्मुहिल्, तडम्बुनल् परुहिडत् ताळ्व पोन्ररवे 820

नुटङ्किय–(हाथियों पर) फहरनेवाली; तुकिल् कॉटि–वस्त्र की वनी ध्वजाएँ; इटम् पट–विस्तृत प्रदेश में; ऍङ्कणुम् ऍळुन्त–सर्वत्र व्याप्त हो उठे; वॅळ् मुकिल्–श्वेत मेघ; कटम् कलुळ्–मदजल वहानेवाले; नूळै कै मलै चेत्तैयै–नासिकाछिद्र सहित रहनेवाली सूंडो के, पर्वत-सम गजों की सेना का; इतु कटल् आम् ॲन्र–यह समुद्र है, समझकर; तट पुनल् परुकिट–अधिक जल पीने के लिए; ताळ्व पोन्रर–नीचे उतर आते से हैं। ८२०

हाथियो पर झंडे फहर रहे थे। वे चीर के झंडे थे। उनको देखकर ऐसा भ्रम होता था कि सर्वत्र फैले श्वेत मेघ जल पीने के लिए, गजसेना को समुद्र समझकर उस पर उतर आये हों। ८२०

इळैयिडै यिळवॅयि लॅरिक्कु मव्वॅयिल्, तळैयिडै निळल्कॅडत् तवळु मत्तळै
मळैयिडै यॅळिल्कॅड मलरु मम्मळै, कुळैवुर मुळङ्गिडुङ् गुळाङ्गॉळ् बेरिये 821

इळै इटै–(लोगों के) आभरणों के मध्य; इळवॅयिल् ऍरिक्कुम्–सवेरे की धूप के समान प्रकाश छिटकता है; अ वॅयिल्–वह बालधूप; तळै इटै निळल् कॅट–मोर-छत्रों की छटा को कम करते हुए; तवळुम्–धीरे-धीरे फैलती है; अ तळै–वे मोरछत्र; मळै इटै ऍळिल् कॅट–मेघों की छटा को कम करती हुई; मलरुम्–फैले रहते हैं; कुळाम् कॉळ् पेरि–समूहों में (अधिक संख्या में) रहनेवाली भेरियाँ; अ मळै कुळैवु उर–उन मेघों को अवनत करते हुए; मुळङ्किटुम्–वज उठती है। ८२१

सेना में जानेवालों के आभूषण प्रातः सूर्य की मन्दधूप की तरह सुखद प्रकाश बिखेरते हैं। वह प्रकाश मोरपंखों के बने छत्रों की छटा को मन्द कर देता है। वे छत्र इन्द्रधनुष के साथ भासमान मेघों की आभा को कम करते हुए फैले रहते हैं और भेरियों का समूह उन मेघों के गर्जन को फीका करते हुये नर्दन करता है। (इसमें एकावली अलंकार है।)। ८२१

मऩ्मणिप् पुरविहण् महळि रूर्वऩ, अऩ्ऩमुन् दियदिरै याऱु पोऩ्ऱऩ
पॊऩ्ऩणि पुणर्मुलैप् पुरिमॆऩ् कून्दलार, मिऩ्ऩॆऩ मडप्पिडि मेहम् पोऩ्ऱवे 822

मकळिर् ऊर्वऩ–स्त्रियों की सवारियाँ; मऩ् मणि पुरविकळ्–घुँघरू पहने हुए अश्व; अऩ्ऩम् उन्तिय तिरै–हंसों को ढोती हुई हिलनेवाली तरंगों की; आऱु पोऩ्ऱऩ–नदियों के समान है; पॊऩ् अणि—स्वर्णाभरण-भूषित; पुणर् मुलै–सटे हुए स्तन; पुरि मॆल् कून्तलार्–(और) गुँथी हुई वेणीवाली स्त्रियाँ (जो हाथियों पर सवार थीं); मिऩ् अॆऩ–बिजली के समान लगीं; मट पिटि, मेकम् पोऩ्ऱ–छोटी आयु की हथिनियाँ, मेघों के समान थीं। ८२२

अनेक स्त्रियाँ अश्वों पर आरोहण करके जा रही हैं। उनको देखकर ऐसा लगता है मानों सेनारूपी नदी की अश्वरूपी लहरों के ऊपर स्त्रीरूपी हंस थिरक रहे हों। अश्वों के पैरों में घुँघरू बँधे हैं। (वे झंकृत होकर हंसों का-सा नाद पैदा करते हैं।) और अनेक स्त्रियाँ, जो बिजलियों के समान हैं, हथिनियों पर बैठी जा रही हैं। वे हथिनियाँ विद्युतवाही मेघों के समान हैं। वे स्त्रियाँ स्वर्णालंकृता और मेढीभूषिता हैं। (स्वर्ण आभरण का भी द्योतक है; और फलनेवाले स्वर्ण-वर्ण के चर्म-रंग का भी। इसको तमिऴ में 'तेमल्' कहते हैं। यह यौवन के आकर्षण में चार चाँद लगा देता है। यह युवतियों के शरीर में, विशेषकर वक्ष-प्रदेश में फैलता है।)। ८२२

इणैयडुत् तिडैयिडै नॆरुक्क वॆळ्ळयर्
तुणैमुलैक् कुङ्कुमच् चुवडु माडवर्
मणिवरैप् पुयङ्गळिऱ् चान्दु माहिमॆल्
अणैयॆऩप् पॊलिन्ददक् कडलुॆ लाऱरो 823

अ कटल् चॆल् आऱु–उस सेनासागर के चलने के मार्ग में; इटै इटै–यत्रतत्र; इणै अटुत्तु—पास-पास होकर; नॆरुङ्कि–सटे हुए जाने से; एळैयर्–कोमलांगियों के; तुणै मुलै–जोड़े के स्तनों पर लिप्त; कुङ्कुमम् चुवटुम्–कुंकुम के सूखकर गिरने का चिह्न; आटवर्–पुरुषों के; मणि वरै पुयङ्कळिल् चान्तुम् आकि–सुन्दर गिरिसम भुजाओं के चन्दन के लेप के गिरने का चिह्न मिलकर; अणै ऍन–तोशक के समान; पॊलिन्ततु–दिखे। ८२३

उस सेना में स्त्रियों और पुरुषों की संख्या अत्यधिक है। वे परस्पर सटे हुये जाते हैं। तब स्त्रियों के स्तनद्वयों पर लगा हुआ कुंकुम का सूखा

लेप और पुरुषों की पर्वतोन्नत भुजाओं पर लगा चन्दन का लेप चूर्ण होकर गिर जाते हैं। उस चूर्ण का इतना भारी परिमाण है कि भूमि पर तोशक विछे से जान पड़ते है। ८२३

मुत्तिनाऩ् मुळुनिला वॆऱिक्कु मॊय्म्मणिप्
पत्तिया लिळवॆयिल् परप्पुम् वाहिनुम्
तित्तिया निऩ्ऱशॊऱ् चिवन्द वाय्च्चियर्
उत्तरा शङ्गमिट् टॊळिक्कुङ् गूऱ्ऱमे 824

पाकितुम्–चाशनी से वढ़कर; तित्तिया निऩ्ऱ चॊल्–मधुर वोलीवाली; चिवन्त वाय्च्चियर्–(विंव-सम) लाल मुखवाली स्त्रियों के; उत्तराचङ्कम् इट्टु–ओढ़नी लगाकर; ऑळिक्कुम्–छिपाये गये; कूऱ्ऱम्–मृत्यु (-रूपी स्तन); मुत्तिताल्–मुक्तामालाओं द्वारा; मुळु निला ऍऱिक्कुम्–सम्पूर्ण चाँदनी-सा प्रकाश विखेरते हैं; मॊय्मणि पत्तियाल्–संकुल रत्नराशियों द्वारा; इळवॆयिल् परप्पुम्–वालधूप फैलाते हैं। ८२४

चाशनी समान मधुर वोली बोलनेवाली, लाल अधरों की स्त्रियों ने अपनी ओढ़नी से ढँके हुए, यमसम उरोजों पर मुक्ताहार और रत्नहार पहन रखे है। मुक्ताहारों से चाँदनी सी द्युति और रत्नहारों से धूप की सी कांति छूटती है। (स्तन को यम कहना साहित्यिक परिपाटी है क्योंकि वे पुरुषों के मनों को अत्यधिक अधीर कर देते है।)। ८२४

विल्लिनर् वाळिनर् वॆऱित्त कुऩ्जियर्
कल्लिनैप् पळित्तुयर् कऩहत् तोळिनर्
वल्लियिऩ् मरुङ्गुलार् मरुङ्गु मापपिडि
पुल्लिय कळिऱॆऩ मैन्दर् पोयिऩार् 825

वॆऱित्त कुऩ्च्चियर्–सुवासपूर्ण केशवाले; कल्लितै पळित्तु–पर्वत का उपहास करके; उयर्–उन्नत हुए; कतकम् तोळितर्–स्वर्ण-सम कन्धोंवाले; मैन्तर्–पराक्रमी तरुण लोग; विल्लितर्–धनुर्हस्त; वाळिनर्–और तलवारहस्त बनकर; मा पिटि पुल्लिय कळिऱु ऍऩ–श्रेष्ठ हथिनियों को पास लेते हुए जानेवाले हाथियों के समान; वल्लियिऩ् मरुङ्कुलार् मरुङ्कु–लता-सी कमरवालियों के पास-पास; पोयिऩार्–चले। ८२५

पुष्प-वासित केशवाले, और पर्वतनिंदक कंधोंवाले जवान वीर धनुष और तलवार से लैस होकर, हथिनियों को अपने संरक्षण में लेते चलनेवाले बड़े-वड़े हाथियों के समान, लता-सी महीन कमरवाली स्त्रियों के साथ लगे-लगे जाते हैं। ८२५

मन्ऱलम् पुदुमलर् मळैयिऱ् चूळ्न्दॆनत्
तुऩ्ऱिरुङ् कून्दलार् मुहङ्ग डोऩ्ऱलाल्

ऑन्ऱल पलमदि यूरु मानम्बोल्
शॅन्ऱन तरळवान् शिविहै यीट्टमे 826

तरळम् वान् चिविकै ईट्टम्–श्रेष्ठ मुक्ता शिविकाओं का जमघट; मन्ऱल् अम् पुतु मलर्–सुवासित सुन्दर नवीन पुष्प; मऴैयिल् चूऴ्न्ततु ॲन्न–मेघों पर छा गये, ऐसा; तुन्ऱु–पुष्पबहुल; इरु कून्तलार्–काले केशवाली स्त्रियों के; मुकङ्कळ् तोन्ऱलाल्–मुखों के दिखाई देने से; ऑन्ऱु अल–एक नहीं; पल मति ऊरुम्–अनेक चन्द्रारोहित; मानम् पोल्–देवयानों के समान; चॅन्ऱन–चले। ८२६

(संभ्रांत कुल की या राजकुल की स्त्रियाँ शिविकाओं पर जा रही हैं। शिविकाओं पर परदे लगे हैं। वे कभी-कभी परदा हटाकर बाहर झाँकती है तब उनके मुखचन्द्र बाहर दिखाई देते हैं।) पुष्पावृत्त मेघों के समान काले केशवाली स्त्रियों के कारण शिविकायें अनेक विमानों के समान लगती हैं जिनमें पूर्णचन्द्र सवार हों। ८२६

मॊय्दिरैक् कडलॅन मुऴङ्गि मूक्कुडैक्
कैहळिऱ् ऱिशैनिलैक् कळिऱ्ऱै यायवन
मैयलुऱ् ऱिऴिमद मऴैय ऱामयाल्
तॊय्यलैक् कडन्दिल शूऴि यानये 827

इऴि मतम् मऴै–ढलनेवाला मदजल प्रवाह; इटै अऱामैयाल्–निरन्तर बहने से; तोय्यलै कटन्तिल–वने पंक को पार करने में अशक्य; चूऴि यानै–मुखपट्ट से अलंकृत हाथी; मैयल् उऱ्ऱु–मदमत्त होकर; मॊय् तिरै कटल् ॲन–संकुलित तरंगोंवाले समुद्र के समान; मुऴङ्कि–चिघाड़ते हुए; मूक्कु उटैय कैकळिन्–नाक का भी काम देनेवाली सूँडों से; तिचै निलै कळिऱ्ऱै–दिशाओं में स्थित हाथियों को (दिग्गजों को); आय्वन–टटोलते हैं। ८२७

गजों का मदनीर इतना बहता है कि पंक बन जाता है। मुख-पट्ट पहने हाथी उनमें फँस जाते है। तब वे मदमत्त होकर चिंघाड़ते हैं और अपनी सूँड़ों को बढ़ाकर दिग्गजों को ढूँढ़ते हैं। (हाथी की सूँड़ ही उसकी नाक का भी काम देती है। इसलिये कवि उसको नासिकायुक्त सूँड़वाले गज कहते है)। ८२७

शूरुडै निलैयॅनत् तोय्न्तुन् दोय्हिला, वारुडै वनमुलै महळिर् शिन्दैपोल्
तारॊडुम् जदियॊडुन् दावु मायितुम्, पारिडै मिदित्तिल परियिन् पन्दिये 828

परियिन् पन्ति–अश्वों की पंक्तियाँ; तारॊटुम्–घंटिका भरे दामों के साथ; चतियोटुम्–और टाप के साथ; तोय्न्तुम् तोय्किला–(शरीर से) बँधकर भी (मन से) न बँधकर; वार् उटै–कंचुकी बद्ध; वनम् मुलै मकळिर्–मनोरम उरोजोंवाली वेश्याओं के; चिन्तै पोल्–(चंचल) मन के समान; तावुम् आयितुम्–फाँदकर चलते हैं तो भी; चूर् उटै निलै ॲन–भूतों (या देवों) के समान; पार् इटै मितित्तिल–भूमि पर पैर रखनेवाले नहीं हैं। ८२८

अश्व अपनी किंकिणी-ध्वनि के साथ वहुत तेज दौड़ते हैं। उनकी गति में एक समरसता है। अश्वों का लपकना वेश्याओं के मन के समान अस्थिर है। (वेश्या शरीर से मिलकर भी मन से दूर है। वह अपना लगाव वदलती ही रहती है।) अश्वों के पैर भूमि पर लगते नहीं दीखते। इसलिए वे भूत या देव के समान लगते हैं जिनके पैर भूमि पर नहीं पड़ते। ८२८

ऊडिय मत्तत्तिन्न रुड़ाद नोक्किन्नर्, नीडिय वुयिर्प्पिन्नर् नॅरिन्द नॅट्ट्रियर्
तोडविळ् कोदैयुन् दुरन्द कून्दलर्, आडव रुयिरॅन्न वरुहु पोयिन्नार् 829

ऊटिय मत्ततुतित्तर्–रुष्टमना कुछ स्त्रियाँ; उड़ात नोक्किन्नर्–सीधे पति को नहीं देखती हुई; नीटिय उयिर्प्पित्तर्–दीर्घ निःश्वास छोड़ती हुई; नॅरिनृत नॅट्ट्रियर्–संकुचित ललाटवाली; तोटु अविळ् कोतैयुम्–विकसित दलवाले पुष्पों की वनी मालाओं से भी; तुड़नृत कून्तलर्–विमुक्त केशवाली; आटवर् उयिर् अॅन्न–पुरुषों के प्राणों के समान; अरुकु पोयिन्नार्–(उनके पास-पास) जा रही थीं। ८२९

(कुछ स्त्रियाँ अपने पतियों से मान करके रुष्ट थी। उसी स्थिति में उनको राजाज्ञा से जानेवाले पतियों के साथ जाना पड़ा। वे कैसे जाती हैं ? —इसका स्वाभाविक वर्णन है।) रुष्ट वे रमणियाँ अपने पति की ओर दृष्टि ही नहीं फिराती; दीर्घ निश्वास छोड़तीं; भौंहों के तनने से ललाट संकुचित हो गया था। केश पर पुष्प भी नहीं था क्योंकि वह रुष्ट होने के कारण उतार कर फेक दिया गया था। वे पुरुषों के प्राणों के समान उनके साथ-साथ चल रही थीं। (जो हो वे पतिप्राणा थीं। इसलिए जा रही थीं।)। ८२९

माड़ॅनत् तडङ्गळैप् पॉरुदु मामरम्, ऊरुपट् टिडविडै यॉडित्तुच् चाय्त्तुराय्
आरॅन्च् चॅन्ड्रन वरुवि पाय्हवुळ्, ताड़ॅनक् कनलुहु तरुहण् यानये 830

अरुवि पाय् कवुळ्–नदी के समान जिनपर मदजल वहता है उन गालों के; ताड़ अॅन्न–अंकुश का नाम लेते ही; कत्तल् उकु–कोपाग्नि उगलनेवाले; तड़कण्–निर्भय; यानै–हाथी; माड़ अॅन्न–वाधा समझकर; तटङ्कळै–टीलों को; पॉरुतु–टकराकर, ढहकर; मा मरम्–वड़े-वड़े वृक्षों को; ऊड़ पट्टिट–नाश करते हुए; इटै ऑटित्तु–बीच से तोड़कर; चाय्त्तु–समूल उखाड़कर; उराय्–उनसे रगड़कर; आड़ अॅन्न–नदी के समान; चॅन्ड्रन–चले। ८३०

हाथी जा रहे है। उनके गण्डस्थलों पर मदजल नदी के समान वह रहा था। वे ऐसे निडर थे कि अंकुश का नाम सुनते ही आँखों से कोप के अंगारे निकालते। वे मार्ग में वाधा देनेवाले टीलों को दूर करते हुए, बड़े-बड़े वृक्षों को तोड़कर, या उखाड़कर उनसे रगड़ते हुये जा रहे थे। किनारों को ढहाता हुआ, और वृक्षों को तोड़ गिराता हुआ जाना हाथियों और प्रवाह के मध्य साधर्म्य है। अतः वे नदी के समान जाते थे। ८३०

उऴुन्दिड विडमिलै युलह मॅङ्गणुम्
अऴुन्दलि लुयिर्क्कॅलाङ् गॉऴुहॉम् बातवन्
ॲऴुन्दिल नॅऴुन्दिडैप् पडरुञ् जेनयिन्
कॉऴुन्दुपोय्क् कॉडिमदिन् मिदिलै कूडिऱ्ऱे 831

उलकम् ऍङ्कणुम्–(अपने राज्य के) सारे प्रदेश में; उयिर्क्कु ऍलाम्–सभी जीवों के लिए; अऴुन्तल् इल्–निराधारता नाशक; कॉऴुकॉम्पु–अवलम्बतरु (आधार); आतवन्–जो थे; ऍऴुन्तिलन्–(वे चक्रवर्ती दशरथ) अभी नहीं निकले; ऍऴुन्तु–(उनकी आज्ञा से) निकलकर; इटै पटरुम् चेतैयिन्–मार्ग पर चलती रही सेना का; कॉऴुन्तु–अग्रभाग; पोय्–जाकर; कॉटि मतिल्–ध्वजाओं सहित प्राचीरों के; मितिलै कूटिऱ्ऱु–मिथिला नगर पहुँचा; उऴुन्तु इट–उड़द रखने को; इटम् इलै–स्थान नहीं। ८३१

अपने देश के सभी जीवों के लिए सहारा देनेवाले (लताओं के) अवलंबतरु के समान रहनेवाले दशरथ अभी नहीं निकले थे। क्योंकि सेना, जो उनसे पहले निकली थी, इतनी विशाल और लम्बी है कि उसका अग्रभाग मिथिला में है। और बीच में उड़द डालने की उतनी जगह भी नहीं थी। (तिल रखने को जगह नहीं— यही मसल तमिऴ में भी प्रचलित है पर तिल पितृकार्य में काम आनेवाला है। कवि विवाह के अवसर पर उसका नाम नहीं लेना चाहते। इसलिए उड़द की चर्चा की है। कवि ने अग्रभाग को "पल्लव (सेना पल्लव)" कहा है। यह प्रचलित प्रयोग है। उससे बड़ा ही गम्भीर भाव घोषित होता है।) ८३१

कण्डवर् मनङ्गळकै कोप्पक् कादलिन्, वण्डिमिर् कोदयर् वदन राशियाल्
पण्डिहळ् पण्डिहळ् परिशिर् चॅल्वन, पुण्डरी हत्तडम् पोव पोन्ऱवे 832

कण्टवर् मतङ्कळ्–दर्शकों के मनों को; काललिन् कैकोप्प–अनुरक्त कर अपनी ओर खींचनेवाली; वण्टु इमिर् कोतैयर्–(गाड़ियों पर बैठी) भ्रमरगुँजित केशवाली स्त्रियों की; वतन राचियाल्–वदनराशि के कारण; परिचिन् चॅल्वन–विशिष्टता लिए चलनेवाले; पण् तिकळ् पण्टिकळ्–आकर्षक कलाकारिता से युक्त गाड़ियाँ; पुण्टरीकम् तटम्–कमलपुष्प भरे तड़ाग; पोव पोन्ऱ–चलते जैसे दिखीं। ८३२

कलाकारियों सहित गाड़ियों में स्त्रियाँ जा रही थीं। उनके अत्याकर्षक वदन कमल के समान थे। उनके केशों पर भ्रमर मँडरा रहे थे। इसलिए गाड़ियों को देखने से ऐसा लगता था मानो कमलिनियाँ (कमल भरे तालाब) ही चल रही हों। ८३२

पाण्डिलिन् वैयत्तोर् पावै तन्नॉडुम्, ईण्डिय वन्बिन नेहु वानिडै
काण्डलु नोक्किय कडैक्क णञ्जनम्, आण्डहैक् किनियदो रमुद मायदे 833

पाण्टिल् इन् वैयत्तु—बैल-जुती एक गाड़ी में; ओर् पावै तन्नॉटुम्–चित्रप्रतिमा सी एक रमणी के साथ; ईण्टिय अन्पिनन्–गम्भीर प्रेम लेकर; एकुवान्–जो जाता

रहा उस एक तरुण ने; इटै काण्टलुम्–बीच में उस पर दृष्टि गड़ायी, तब; नोक्किय–(तरुण को) जवाब में देखनेवाली उसकी; कटै कण् अञ्चतम्–आँखों के कोर से गलकर रसनेवाला काला अंजन; आण् तर्कक्कु–पट्ठे को; इतियतु ओर् अमुतम्–मीठा, अनुपम अमृत; आयतु–बना। ८३३

एक गाड़ी में एक सुन्दरी जा रही है। वह चित्रप्रतिमा के समान मनमोहक है। उसके साथ-साथ उसका प्रेमी भी जा रहा है। वह उसको देखता है और वह प्रेयसी भी उसकी ओर देखती है। तब उसकी आँखों के कोरों से गलकर रसनेवाला काला अंजन भी अमृत-सम लगता है। (प्रेम के जादू से विष भी अमृत हो जाता है; असुन्दर भी सुन्दर दीखता है।)। ८३३

पिळ्ळैमा नोक्कियैप् पिरिन्दु पोहिन्ड्रान्
अळ्ळनीर् मरुदवैप् पदलि न्नन्नमाम्
पुळ्ळुमॅन् ड्रामरैप् पूवु नोक्किनान्
उळ्ळमुन् दानुनिन् रूश लाडिनान् 834

पिळ्ळै मान् नोक्कियै–बालहरिण की सी दृष्टिवाली (प्रिया) को; पिरिन्तु पोकिन्ड्रान्–छोड़कर जानेवाला एक; अळ्ळल् नीर्–पंक और जल से भरी; मरुतम् वैप्पु अततिल्–खेतों की भूमि में; अन्नतम् आम् पुळ्ळुम्–हंस पक्षियों को; मॅल् तामरै पूवुम्–कोमल कमल-पुष्पों को; नोक्किनान्–देखता है, तब; उळ्ळमुम् तानुम् निन्ड्रु–अपना मन और आप रुककर; ऊचल् आटिनान्–अधीर बना। ८३४

एक प्रेमी को अपनी बालमृगनयनी प्रेमिका को छोड़कर जाना पड़ गया। मार्ग में जब वह खेतों के प्रदेश में हंस पक्षी, कोमल कमल-सुमन आदि को देखता तो (अपनी प्रेयसी के कमल-चरण और हंसगति की याद में) तड़पकर निष्क्रिय खड़ा रह जाता था। ८३४

अङ्गण् ञालत् तरशर् मिडैन्दवर्, पॉङ्गु वॅण्कुडै शामरै पोर्त्तलाल्
गङ्गै याऱ् कडुत्तदु कारॅन्नच्, चङ्गु पेरि मुळङ्गिय तान्नये 835

चङ्कु–शंख; पेरि–भेरियाँ; कार् ॲन्न मुळङ्किय–जिसमें मेघों के समान गर्जन करती थीं उस; तानै–(विशाल) सेना में; अम् कण्–सुन्दर, विशाल; ञालत्तु–भूमि के; अरचर् मिटैन्तु–राजा लोग आकर एकत्र हुए, इसलिए; अवर्–उनके; पॉङ्कु वॅण् कुटै–(आकर्षण में) बढ़े श्वेत छत्र; चामरै–चामर; पोर्त्तलाल्–आच्छादन करते रहे, इस कारण; कङ्कै आऱु कट्टुत्ततु–(वह सेना) गंगा नदी से तुलती थी। ८३५

उस सेना में शंख और भेरियाँ बज रही थीं। अनेक देशों के राजे जो आये थे उनके श्वेतछत्र और चामर ऊपर फैलते हुये सेना को ढक रहे थे। इसलिए वह सेना (लहरों और ध्वनियों के साथ) गंगा नदी के समान लगती थी। ८३५

अमर रञ्जों लणङ्गनै यारुयिर्, कवरुङ् कूर्नुदिक कण्णॅनुङ् कालवेल्
कुमरर् नॅञ्जु कुळिप्प वळङ्गलाल्, शमर बूमियु मॉत्तदु तान्नये 836

अम् चॊल्–मनोरम वचनवाली; अमरर् अणङ्कु अतैयार्–देवांगनाएँ-सम स्त्रियाँ; उयिर् कवरुम्–प्राणहारी; कण् अॅतुम्–नयनरूपी; कूर् नुति कालन् वेल्–नुकीले, यम के से, भालों को; कुमरर् नॅञ्चु कुळिप्प–तरुणों के वक्षों में धँसाते हुए; वळङ्कलाल्–चलाने से; तान्नै–वह सेना; चमरम् पूमियुम् ऑतूततु–समरभूमि से भी तुलती थी। ८३६

उसमें जानेवाली, मधुर-भाषिणी, देवांगनासम स्त्रियाँ, प्राणघातिनी (मनमोहनकारी) आँखोंरूपी अतितीक्ष्ण, यम के से भालों को पट्ठों के हृदयों पर गाड़ देती थीं। अतः वह समरभूमि से भी तुलती थी। (समरभूमि भी कहना इसलिए आवश्यक हुआ कि पहले पद में उसे गंगाजी से तोला गया है।)। ८३६

तोण्मि डैन्दन्न तूण मिडैन्दॅन्न, वाण्मि डैन्दन्न वान्मिन् मिडैन्दॅन्नत्
ताण्मि डैन्दन्न तम्मिन् मिडैन्दॅन, आण्मि डैन्दन आळि मिडैन्दॅन्न 837

आळि मिटैन्त ॲन्न–सिंह एकत्र हुए से; आळ् मिटैन्तन्न–पदाति वीर एकत्र हुए; तम्मिल् मिटैन्तॅन्न–आपस में जुटकर जाने से; ताळ् मिटैन्तन्न–उनके पैर परस्पर उलझे; तूणम् मिटैन्त ॲन–स्तम्भ सटे से; तोळ् मिटैन्तन्न–भुजाएँ सटीं; वान् मिन् मिटैन्त ॲन्न–मेघों में बिजलियाँ संकुलित हुईं जैसे; वाळ् मिटैन्तन्न–तलवारें सटीं। ८३७

(सेना में रहे लोगों की संख्या अति अपार है।) पदाति वीर इतने जुटे थे कि उनको सटकर जाना पड़ता था। पैरों से पैर, स्तंभसम भुजाओं से भुजाएँ; मेघ में बिजलियों के समान तलवारों से तलवारें; सट गयीं। ८३७

वार्हु लामुलै वैत्तकण् वाङ्गिडप्, पेर्हि लादु पिऱङ्गु मुहत्तिन्नान्
तेर्हि लान्नॅऱि यन्दरिऱ् चॅन्ऱॉरु, मुरि मामद यान्नयै मुट्टिन्नान् 838

वार् कुला(वु)म् मुलै–(एक स्त्री के) कंचुकी-बद्ध स्तनों पर; वैत्त कण्–रखी दृष्टि को; वाङ्किट पेर्किलातु–हटाने में असमर्थ; पिऱङ्कुम्–प्रफुल्ल; मुकत्तिन्नान्–आननवाला (एक तरुण); नॅऱि तेर्किलान्–मार्ग न जानता हुआ; अन्तरिन् चॅन्ऱु–अन्धा-सा जाकर; ऑरु मूरि मा मतम् यान्नैयै–एक बलिष्ठ, बड़े, मत्त, गज से; मुट्टिन्नान्–टकराया। ८३८

एक वीर ने अपनी प्रेयसी के कंचुकीबद्ध स्तनों पर दृष्टि डाली तो वह अपनी दृष्टि को वहाँ से नहीं हटा सका। मुख कांतियुक्त हुआ पर मन धूमिल पड़ गया। अन्धा सा, मार्ग भूल गया और एक बलिष्ठ बड़े मत्तगज से जाकर टकराया। ८३८

शुळिहॊळ् पाय्परि तुळ्ळवोर् तोहयाळ्
वळुवि वीळ्दलुड़् ड़ाळयोर् वळ्ळड़ान्
ऍळुवि नीळ्पुयत् तालॆडुत् तॆन्दिये
तळुवि निन्ऱ्दल् लाड़्ड़ॆ मेल्वयान् 839

चुळि कॊळ्–भली भौरियों वाले; पाय् परि–दुलकीवाले एक अश्व के; तुळ्ळ–भड़कने से; ओर् तोकैयाळ्–एक मयूरछटा स्त्री; वळुवि वीळ्तल् उड़्ड़ाळै–फिसलकर गिरी, उसको; ओर् वळ्ळल्–एक उपकारी; तान्–स्वयं ही; ऍळुविन् नीळ् पुयत्ताल्–लौहस्तम्भ-सम अपनी दीर्घ भुजाओं से; एन्ति ऍट्टुत्तु–उठा लेकर; तळुवि निन्ऱ्तु अल्लाल्–अंक में भरकर खड़ा रहा, वह छोड़कर; तरै मेल् वैयान्–(उसे) भूमि पर नहीं उतारता। ८३९

भली भौरियों के एक श्रेष्ठ अश्व से, जो फांदकर चलता था, एक सुन्दरी खिसक कर गिर गयी। उस मयूराभा सुन्दरी को एक उदार वीर ने अपनी लौहस्तंभसम बलिष्ठ भुजाओं पर उठा लिया। पर उसको अंक में भरकर वैसे ही खड़ा रहा; उसे नीचे भूमि पर उतार नहीं दिया। (उसकी बलिष्ठ भुजाएँ है— वह कैसे उतरती ? शरीर और मन दोनों जो फँसे हुये हैं ! न ही वह उतारता क्योंकि वह उदार मनुष्य है !)। ८३९

तुणैत्त तामरै नोवत् तॊडर्न्दिडै, कणैक्क रुङ्गणि नाळैयोर् काळैतान्
पणैत्त वॆम्मुलैप् पाय्मद यानैयै, अणैक्क नङ्गैक् कहलिड मिल्लॆन्ड़ान् 840

तुणैत्त तामरै नोव–जोड़े के कमल (चरण) दुखाते हुए; तॊटर्न्तु इटै–अपना अनुगमन करके श्रमित होती; कणै करु कण्णिनाळै–शर-सम (और) काली आँखोंवाली (एक) दयिता को (उद्देश्य करके); ओर् काळै–एक पट्ठे ने; नङ्कैक्कु–इस तरुणी के; पणैत्त वॆम् मुलै–पीन और आकर्षक स्तनरूपी; पाय् मतम् यानैयै–(पुरुषों के मनों पर) आक्रमण करनेवाले गजों को; अणैक्क–रोकने का; अकल् इटम् इल्–विशाल स्थल (वक्ष में) नहीं है; ऍन्ड़ान्–कहा। ८४०

कुछ पुरुष छेड़-छाड़ का मनोरंजन करते हुए जा रहे थे। अपने सुन्दर जोड़े के कमल से चरणों को दुख देते हुए एक सुन्दरी एक पुरुष के पीछे-पीछे बहुत श्रम के साथ जा रही थी। उसको देखकर वह सुन्दर युवक कहता है कि इनके स्तन मत्तगज के समान बड़े और प्यारे हैं। वे मानों पुरुषों (के मनों पर) आक्रमण करते से लगते है। इनको बाँध रखने के लिए इनका वक्ष-प्रदेश पर्याप्त नही है। ८४०

शुळियुङ् गुञ्जि मिशैच्चुरुम् बार्त्तिडप्
पॊळियु मामद यानैयिऱ् पोहिन्ड़ान्
कळिय कूरिय वॆन्ड़ोरु कारिहै
विळियै नोक्कित्तन् वेलैयु नोक्किनान् 841

चुळियुम् कुञ्चि मिचै–घुंघराले बालों पर; चुरुम्पु आर्त्तिट–भ्रमर भनभनाते

हैं; मा मतम् पॉऴियुम्–अधिक मदजल बहानेवाले; यानैयिन्–गज के समान; पोकिन्ऱान्–जाते रहे (एक युवक) ने; ऑरु कारिकै विऴियै नोक्कि–एक सुन्दरी की आँखों को देखकर; कऴिय कूरिय–अत्यधिक तीक्ष्ण हैं; अन्ऱु–कहकर; तन् वेलैयुम् नोक्कितान्–अपनी बर्छी को भी देखा। ८४१

एक युवा वीर जा रहा है। उसके केश के ऊपर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। इस कारण वह मत्तगज के समान है (जिसके मदनीर पर भौंरे मँडराते हैं)। वह एक स्त्री की आँखों को देखता है। उसके मन में प्रश्न उठता है कि हमारी बर्छी अधिक तीक्ष्ण है या इसकी आँखें। इसलिए वह अपनी बर्छी को देखता है मानों तुलना कर रहा हो। ८४१

तरङ्ग वार्कुऴऱ् ऱामरैच् चीऱडिक्, करुङ्गण् वाळुडै याळैयोर् काळैतान्
नॅरुङ्गु पूण्मुलै नीळ्वळैत् तोळिनीर्, मरुङ्गु लॅङ्गु मऱन्दुवन् दीरॅन्ऱान् 842

तरङ्कम् वार् कुऴल्–लघु लहरों के समान छल्लेदार और लम्बे केश; तामरै चिऱु अटि–कमल-सम, छोटे चरण; वाळ् करु कण्–तलवार के समान काली आँखें; उटैयाळै–इनकी स्वामिनी एक को देख; ओर् काळै–एक युवक ने; नॅरुङ्कु पूण् मुलै–सटे हुए और आभरणमण्डित स्तन; नीळ वळै तोळिन्–लम्बे और कंकण सहित हाथ-वाली; नीर्–आप; मरुङ्कुल–कमर को; ऍङ्कु–कहाँ; मऱन्तु–भूलकर; वन्तीर्–आईं; ऍन्ऱान्–पूछा। ८४२

एक अति सुन्दर स्त्री जा रही है। उसके केश लहरों के समान घुँघराले हैं। पैर छोटे और कमल के समान हैं। आँखें काली और तलवार के समान हैं। उसको देखकर एक पट्ठा पूछता है कि आभरण-भूषित पीन-स्तनी और कंकण-हस्ता! आप अपनी कमर को कहाँ भूल से छोड़कर आयी हैं ?। ८४२

कूऱ्ऱम् बोलुङ् गॊलैक्कण्णि नालन्ऱि, माऱ्ऱम् पेशुहि लाळैयोर् मैन्दन्ऱान्
आऱ्ऱु नीरिडै यङ्गैह ळालॅडुत्, तेऱ्ऱु वारुमै यावर्हॊ लॊवॅन्ऱान् 843

कूऱ्ऱम् पोलुम्–यम के समान; कॉलै कण्णिनाल् अन्ऱि–घातक आँखों (के संकेत) के सिवा; माऱ्ऱम् पेचुकिलाळै–भाषण न करनेवाली (एक) युवती को (देख); ओर् मैन्तन्–एक जवान पुरुष; आऱ्ऱु नीर् इटै–नदी के प्रवाह में; उमै–आपको; अम् कैकळाल्–सुन्दर हाथों से; ऍटुत्तु–उठाकर; एऱ्ऱुवार् यारो–पार लगानेवाले कौन हैं, तो; ऍन्ऱान्–यह पूछा। ८४३

एक स्त्री लज्जाशीला है। वह मुख खोलकर बात करने से भी लजाती है। अपनी आँखों के, जो मृत्युदेव के समान प्राणघातिनी हैं, इशारे से ही जवाब देती है। उससे एक पुरुष पूछता है कि नदी पार करने का मौका आयगा तब आपको अपने भाग्यवान सुन्दर हाथों में लेकर कौन उस पार उतार देगा ? (तब बोलना ही पड़ेगा न ? और बोलने से

शरमानेवाली कैसे छूने देंगी ? नहीं छूने देंगी तो नदी पार करना कैसा ?) । ८४३

तळ्ळरुम् परन् दाङ्गिय वॊट्टहम्, तॆळ्ळु तेङ्गुळै यावैयुन् दिन्गिल
उळ्ळ मॆत्तुनतत्तम् वायु मुलर्न्दन, कळ्ळुण् मान्दरिड् कॆप्पन तेडिये 844

तळ्ळ अरुम्–उतारने में अशक्य; परम् ताङ्किय–बड़ा भार ढोनेवाले; ऑट्टकम्–उष्ट्र (ऊँट); तॆळ्ळु तेम् कुळै यावैयुम् तिन्किल–अच्छे मीठे पत्ते कुछ नहीं खाकर; वाय् कॆप्पन तेटि–मुख को कड़ुए लगनेवाले पत्ते खोजकर (खाकर); कळ् उण् मान्तरिन्–ताड़ी के पियक्कड़ों के समान; तम् उळ्ळम् अॆन्त–अपने ही मन के समान; वायुम् उलन्तन–मुख के भी शुष्क बने । ८४४

उस भीड़ में ऊँट भी जा रहे हैं। उनका स्वभाव विचित्र है। बहुत भारी सामान का बोझा उठाते चलनेवाले वे मीठे पत्ते नहीं खाते। कड़ुए, नीम के पत्ते जैसे, पत्तों को ही ढूँढ़कर खाते हैं। उनका यह पियक्कड़ों का सा स्वभाव है जो दूध आदि अच्छे पदार्थ नहीं पीते पर ताड़ी पीते हैं जिसके फलस्वरूप मुख सूखा सा रहता है और मन भी कालांतर में शुष्क यानी गुणहीन हो जाता है। ८४४

अरत्त नोक्किन रड्डिरण् मेनियर्, परित्त काविनर् पप्पर रेहिन्नार्
तिरुत्तु कूडत्तैत् तिण्कणै यत्तॊडुम्, अॆरुत्तिन् माल्हळि ऱेन्दिय दॆन्नवे 845

अरत्तम् नोक्कितर्–रक्तवर्ण नयन; अल् तिरळ् मेनियर्–अन्धकार जमा हो ऐसा शरीरवाले; पप्परर्–पप्पर (पल्पव ?) जाति के लोग; माल् कळिरु–मत्तगज; तिरुत्तु कूटत्तै–जहाँ बाँध रखकर अभ्यास दिया जाता है उस गजशाला को ही; तिण् कणैयत्तॊटुम्–सुदृढ़ आलान के साथ; अॆरुत्तिन् एन्तियतु–गर्दन पर ढो लिया; अॆन–ऐसे; परित्त कावितर्–काँवर उठाते हुए; एकितर्–चले । ८४५

पप्परर् जाति के लोग उनके साथ जाते थे। (वाल्मीकी रामायण में 'पप्लव' नाम आया है। वह उस संदर्भ में आया है जब वसिष्ठजी की सुरभी ने वीरों को उत्पन्न किया। शायद वही पप्लव ये पप्पर हों। उन लोगों को राजा लोग कुलियों के रूप में नियत करते थे।) उनकी आँखें रक्तसम लाल थीं; शरीर घना अन्धेरा सा काला था। काँवर ढोते जाते हुये उनको देखते समय वे उन गजों के समान लगते थे जो आलान के साथ गजशाला को ही उखाड़कर उठा लिये जा रहे हों। ८४५

पित्त यानै पिणङ्गिप् पिडियिऱ्कै, वैत्त मेलिरुन् दञ्जिय मङ्गयर्
अॆय्त्ति डुक्कणुड् ऱार्पुदैत् तार्क्किरु, कैत्त लङ्ळिड् कण्णडङ् गामये 846

पित्त यानै–मद-मस्त एक हाथी ने; पिणङ्कि–(महावत की आज्ञा) नहीं मानकर (बिगड़कर); पिटियिल् कै वैत्ततु–हथिनी पर अपनी सूँड़ रखी; मेल् इरुन्तु–उस पर बैठी रही; अञ्चिय मङ्कैयर–डरनेवाली स्त्रियाँ; कण् पुतैत्तार्ककु–आँखों को (अपने हाथों से) मूँदने जो लगीं; इरु कैत्तलङ्कळिल्–दोनो हथेलियों के

अन्दर; अटङ्कामै–नहीं समायीं, इसलिए; अय्त्तु–मन घबड़ाकर; इट्टुक्कण् उऱ्ऱार्–संकट में पड़ (भयातुर हो) गईं। ८४६

एक मदमस्त हाथी ने पीलवान से बिगड़कर एक हथिनी की ओर अपनी सूँड़ बढ़ायी। तब उसके ऊपर बैठी हुई कुछ प्रमदाओं ने अपनी आँखें अपनी हथेलियों से मूँद लीं। पर उनकी आँखें इतनी बड़ी थीं कि वे हथेलियों के अन्दर समा नहीं पायीं। उनका डर दूर नहीं हुआ और उनको डर से बड़ा संकट हुआ। (इसमें स्त्रियों के स्वभाव का वर्णन है और उनकी आँखों की विशालता बतायी गयी है।)। ८४६

वाम मेहलै यारिडै वालदि, पूमि तोय्पिडिच् चिन्दरुम् बोयिनार्
कामर् तामरै नाण्मलर्क् कातत्तुळ्, आमै मेल्वरुन् देरयि ताङ्गरो 847

वामम् मेकलैयार् इटै–सुन्दर मेखला-धारिणी स्त्रियों के बीच में; वालति पूमि तोय्–(जिनकी) पूँछें भूमि को स्पर्श करती थीं; पिटि–उन नाटी हथिनियों पर; कामर् तामरै नाळ् मलर् काततत्तु उळ्–मनोरम कमल के नवीन पुष्पों के मध्य; आमै मेल्–कछुओं पर; वरुम् तेरैयिन्–बैठकर आनेवाले दादुरों के समान; चिन्तरुम् पोयितार्–नाटी स्त्रियाँ भी गईं। ८४७

चित्ताकर्षक मेखलाधारिणी स्त्रियों के बीच में छोटे कद की औरतें उनके अनुकूल छोटे कद की हथिनियों पर बैठी जा रही हैं। उन हथिनियों की पूँछें लम्बी हैं और भूमि को स्पर्श करती हैं। (छोटे कद की औरतों को 'चिन्तर्' व "कुऱळर्" कहते हैं। "कुऱळर्" दो फुट की लम्बी और "चिन्तर्" तीन फुट की लम्बी होती हैं। उनको महलों में सेवा टहल के लिए नियुक्त किया जाता था।) उनको देखने पर ऐसा लगता है कि कमल वन के बीच कछुओं पर बैठकर दादुर जा रहे हों। (अन्य स्त्रियाँ नवविकसित कमल हैं। छोटे कद की हथिनियाँ कछुए हैं और बौनियाँ दादुर है।)। ८४७

इम्बर् नाट्टिन् ऱरमल्ल ळीङ्गिवळ्, उम्बर् कोमहऱ् कॅन्गिन्ऱ दॅाक्कुमाल्
कम्ब मावरक् काल्हळ् वळैत्तॊरु, कॊम्ब नाळैक्कोण् डोडुङ् गुदिरये 848

ऒरु कॊम्पु अऩ्ताळै कॊण्टु–एक पुष्पलता सदृश सुन्दरी को ढोकर; काल्कळ् वळैत्तु–पैरों को झुकाकर; कम्पम् मा वर–हाथी (पीछे आए, उस) के आगे; ओटुम् कुतिरै–दौड़नेवाला एक अश्व; ईङ्कु इवळ्–यहाँ की (मेरे ऊपर बैठी) यह; इम्पर् नाट्टिन्–इह लोक के लिए; तरम् अल्लळ्–योग्य नहीं है, (यानी यह धरती इसके योग्य नहीं है); उम्पर् कोमकऱ्कु–देवेन्द्र के लिए; अॅन्किन्ऱतु–मानो कह रहा हो; ऒक्कुम्–ऐसा लगता है। ८४८

एक अश्व एक पुष्पलता सदृश सुन्दरी स्त्री को अपनी पीठ पर लिये पैरों को झुका-झुकाकर अतिवेग से दौड़ रहा है। उसके पीछे एक हाथी आ रहा है। (उस अश्व को देखकर कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि) 'यह

सुन्दरी इस धरती पर रहने के लिए अर्ह नहीं है— देवेन्द्र के लिए ही अर्ह है' ऐसा अश्व कह रहा यानी ऐसा समझकर उसको लिये जा रहा है। ८४८

❀शन्द वार्हुळल् शोर्न्दवै ताङ्गलार्, शिन्दु मेहलै शिन्दयुम् जॅय्हिलार्
ॲन्दै विल्लिरुत् तान्नॅनु मिन्शॊलै, मैन्दर् पेश मनङ्गळित् तोड्वार् 849

ॲन्तै–मेरे पिता (भगवान); विल् इऱुत्तान्–धनु तोड़ चुके; ॲतुम्–यह; इन् चॊल्लै–मधुर समाचार को; मैन्तर् पेच–पुरुषों के कहने पर; मतम् कळित्तु–मन में आनन्दित होकर; चोर्न्तवै–खुलकर लटकनेवाले; चन्तम् वार् कुळल्–मनोरम लम्बे केशजाल को; ताङ्कलार्–उठाकर नहीं बाँधतीं; चिन्तुम् मेकलै–टूटकर गिरनेवाली मेखला की लड़ियों को; चिन्तैयुम् चॆय्किलार्–परवाह नहीं करतीं; ओट्टुवार–भागतीं। ८४६

पुरुष आपस में कह रहे थे कि हमारे तात श्रीराम ने धनु तोड़ लिया। यह सुनकर स्त्रियों में आनन्द और उत्साह भर गया। वे तेजी से चलने लगीं। उनके सुगन्धपूर्ण बाल खुलकर बिखरे; उनको नहीं संभाला। मेखला की लड़ियाँ टूटी और गुरियाँ गिरने लगीं। उसकी भी उन्होंने परवाह नहीं की। ८४९

कुडैयर् कुण्डिहै तूक्किनर् कुन्दिय, नडैयर् नाशि पुदैत्तकै नाऱ्ऱलर्
कडह् ळिऱ्ऱैयुङ् कारिहै यारैयुम्, अडैय वञ्जिय वन्दणर् मुन्दिनार् 850

कटम् कळिऱ्ऱैयुम्–मत्तगजों को; कारिकैयारैयुम्–स्त्रियों को; अटैय अञ्चिय–नियराने से डरनेवाले (संकोच करनेवाले); अन्तणर्–ब्राह्मण लोग; कुटैयर्–छत्र रखनेवाले; कुण्टिकै तूक्कितर्–कमण्डलधारी; कुन्तिय नटैयर्–उचकती चालवाले; नाचि पुतैत्त कै–नासिका पर (श्वास रोकने के हेतु) रखे हाथ को; नाऱ्ऱलर्–नीचे नहीं लटकाते; मुन्तित्तार्–आगे चले। ८५०

उस बारात के साथ ब्राह्मण भी गये। उनका वर्णन देखिये। वे हाथियों (से डरकर) और प्रमदाओं से (शंकित हो उनसे) दूर जाते थे। उनके एक हाथ में छाता था और कमंडल भी। दायाँ हाथ जो प्राणायाम करने के लिए नासिका पर रखने के व्यवहार में आता था, वे नीचे नहीं लटका रहे थे। (बार-बार प्राणायाम या धूल से बचने के लिए नासिका पर रखना पड़ता था; या पूर्णरूप से लटकाना पुनीतता में बाधा डाल सकता था।) वे उचक-उचक कर चल रहे थे। ८५०

नाऱु पूङ्गुळ नङ्गयर् कणणिन्नीर्, ऊऱ नेर्वन् दुरुवु वॆळिप्पड
माऱु कॊण्डन्नै वन्दन्नै याहिल्वन्, देऱु तेरॆन्नक् कैह ळिऱैञ्जुवार् 851

नाऱु पू कुळल्–सुवासित पुष्पालंकृत केशवाली; नङ्कैयर–कुछ तन्वियाँ; कण् इन् नीर् ऊऱ–अपनी आँखों से सुख का अश्रु निकालता हुआ; उरुवु–(श्रीराम का) रूप; नेर् वन्तु वॆळिप्पट–प्रत्यक्ष दिखाई दिया, तब; माऱु कॊण्टत्तै–सामने मिलने;

वन्तनै आकिल्–आये हैं तो; वन्तु तेर् एरु–आकर रथ पर चढ़ जाइए; अॅन्न–कहकर; कैकळ् इरैञ्चुवार्–हाथ जोड़कर विनती की । ८५१

सुवासित पुष्पों से अलंकृत केशवाली कुछ स्त्रियाँ, जो रथों पर जा रही हैं, अपनी आँखों के सामने श्रीरामचन्द्र के रूप को देखती हैं। (यह मायारूप है।) तब उनकी आँखों से आनन्दाश्रु बहने लगता है। वे श्रीराम (के रूप) से हाथ जोड़कर विनय करती हैं कि आप सचमुच हमारे समक्ष आ गये हैं तो आप हमारे साथ रथ पर चढ़कर विराजिये। (पाठांतर से यह भी अर्थ किया जाता है कि कुछ स्त्रियाँ, जिनके पुरुष उनसे रुष्ट होकर दूर चले गये हैं, अपने प्रेमियों के रूप को सामने भ्रांति में देखकर उनको बुला रही हैं।) । ८५१

कुरैत्त तेरुङ् कळिरुङ् गुदिरैयुम्, निरैत्त वार्मुर शुन्निरैन् दॅङ्गणुम्
इरैत्त पेरौलि यालिडै यावरुम्, उरैत्तु णर्न्दिल रुमरि नेहिनार् 852

कुरैत्त तेरुम्–गड़गड़ानेवाले रथ; कळिरुम्–हाथी; कुतिरैयुम्–अश्व; निरैत्त वार् मुरचुम्–पंक्तियों में रहे, डोरे-कसे ढोल, (सब ने); अॅङ्कणुम् निरैन्तु–सर्वत्र भरकर; इरैत्त पेर् ऑलियाल्–जो उठाया उस बड़े शोर से; इटै–वहाँ; यावरुम्–सभी; उरैत्त उणर्न्तिलर्–बात (करते) नहीं (सुन) समझ सके; ऊमरिन् एकिनार्–गूँगे के समान चलते रहे । ८५२

लोग आपस में नही बोलते और गूँगों के समान चुपचाप चल रहे हैं। क्योंकि रथ, गज, तुरंग, भेरियाँ— आदि सभी सर्वत्र अपार नाद कर रहे हैं और उस शोर में कोई किसी का सुन नहीं पाता, समझ नहीं पाता। ८५२

नुट्चि लम्बि वलन्दन्न नण्डुहिल्, कट्चि लम्बु करुङ्गुळ लार्हुळु
उट्चि लम्बु शिलम्बर्वो डुङ्गलाल्, पुट्चि लम्बिडु पॉय्हयुम् पोन्ऱदे 853

नुण् चिलम्पि–छोटे मकड़े के; वलन्त अन्न–बुने जाल के समान; नुण् तुकिल्–महीन वस्त्र; कळ् चिलम्पु–भ्रमर-गुंजित; करु कुळलार्–काले बालवाली स्त्रियों का; कुळु–समूह; चिलम्पु उळ्–नूपुरों के अन्दर के कंकड़ों को; चिलम्प–झनकाते हुए; ऑतुङ्कलाल्–चलती है, इसलिए; पुळ् चिलम्पिटु–पक्षी-रव-भरित; पॉय्कै पोन्ऱतु–तालाब के समान था । ८५३

स्त्रियों का समूह तालाब का दृश्य उपस्थित करता है जिसमें हंस पक्षी कलरव करते हुए पाये जाते हैं। उनका मकड़ी के जाले का सा महीन वस्त्र जल विस्तार है; उनके केशों पर पुष्प और उन पर भ्रमर जो पाये जाते हैं वे तालाव के फूल और भ्रमरों का दृश्य उपस्थित करते हैं। उनके नूपुरों के अन्दर के कंकण बज उठें, ऐसा वे चलती हैं। वह हंसों का बोलना सा है। कुल मिलाकर वैसे तालाब का दृश्य वन जाता है। ८५३

तॆण्डि रैप्पर वैत्तिरु वन्नवर्, नुण्डि रैप्पुरै नोक्किय नोक्किन्नैक्
कण्डि रैप्पन वाडवर् कण्कळि, वण्डि रैप्पन वान्नै मदङ्गळे 854

तॆण् तिरै–साफ़ लहरोंवाले; परवै–(क्षीर) सागर (में उत्पन्न); तिरु अन्नवर्–लक्ष्मी सदृश स्त्रियाँ; नुण् तिरै पुरै–झीने परदे के छेदों द्वारा; नोक्किय नोक्कित्तै–जो दृष्टि डालती रही उसको; आटवर् कण्–पुरुषों की आँखें; कण्टु–देखकर; इरैप्पत्त–मोहवश हुईं; आत्तै मतङ्कळ्–(मत्त) गजों के मदजल (प्रवाह) पर; कळि वण्टु इरैप्पत्त–मस्त भ्रमर गुंजार करते हैं। ८५४

पुरुष की आँखें स्वच्छ-तरंग सागरोत्पन्न लक्ष्मीदेवी सदृश स्त्रियों की आँखों को जो झीने पर्दों के अन्दर से उनको देखती है, देखकर विह्वल हो जाती है। मत्त भ्रमर गजमद जल को पीकर विह्वल हो जाते हैं और गुंजार करते हैं। (इस पद में 'इरैप्पन' शब्द के दो अर्थ— मोह-गद्गद होना और गुंजार करना लेकर भ्रमर और पुरुष की आँखों में श्लेष स्थापित किया गया है।)। ८५४

उळैक लित्तन वॆन्नन वुयिर्त्तुणै, नुळैक लिक्करुङ् कण्णियर् नूपुरम्
इळैक लित्तन वित्तिय मावॆळु, मळैक लित्तॆन वाशिक लित्तवे 855

उळै कलित्तत ॲन्नत–मृग मस्ती के साथ उठे से; उयिर् तुणै–मर्म तक; नुळै–घुसनेवाली; कलि करु कण्णियर्–प्रभावक काली आँखों की स्त्रियों के; नपुरम् इळै–नूपुर (रूपी) आभरण; इन्नु इयम् आ (क) कलित्तत्त–(श्रुति) मधुर वाद्य के रूप में बजे; वाचि–अश्व; ॲळु मळै कलित्तु ॲत्त–सातों मेघ गरज उठे से; कलित्त–हिनहिनाये। ८५५

इधर स्त्रियों की नूपुरध्वनि मधुर वाद्य-नाद के समान उठी और वाजियों का हिनहिनाना सातों मेघों के गर्जन के समान नाद करता था। स्त्रियाँ भी कैसी ? मृग के से मस्त काले और रोवीले नयनों की; जो नयन पुरुषों के मर्मस्थान तक दृष्टि गाड़ सकते हैं। (सात-मेघ संवर्त, आवर्त, पुष्कलावर्त, गंगारित, द्रोण, काळमुखी और नीलवर्णी)। ८५५

मण्क ळिप्प नडप्पवर् वाण्मुह, उण्क ळिक्कम लङ्गळि नुळ्ळुरै
तिण्क ळिच्चिरु तुम्बियॆ नच्चिलर्, कण्क ळिप्पन कामन् कळिक्कवे 856

मण् कळिप्प नटप्पवर्–धरती को आनन्द देते हुए चलनेवाली (कुछ स्त्रियों के); वाळ् मुकम्–उज्ज्वल मुखरूपी; उण् कळि कमलङ्कळित् उळ्–(सुरा-) पान की मत्तता दिखानेवाले कमलों में; उरै–(वास करने) रहनेवाले; तिण् कळि चिरु तुम्पि–बहुत मोदपूर्ण छोटे भ्रमररूपी आँखें; ॲन्न–(पुरुषों को देखकर नन्दित होतीं) उसी तरह; चिलर् कण्–कुछ पुरुषों की आँखें; कामन् कळिक्क–मदन को आनन्द करने का मौका देते हुए; कळिप्पत्त–(स्त्रियों के मुखों को देखकर) उल्लसित हैं। ८५६

पुरुष और स्त्रियों की परस्पर आँखें लड़ रही हैं। स्त्रियाँ ऐसी चलनेवाली हैं जिसके मृदु-पद पात से धरती दुखती नहीं वरन सुख का

अनुभव करती है। उनके सुन्दर मुख सुरापान के आनन्द की छटा दिखाते हैं और कमल के समान हैं। उन कमलरूपी मुखों में अतिमुग्ध, मस्ती से भरी, भ्रमरों सदृश आँखे पुरुषों को देखकर मुदित होती हैं। वैसे ही पुरुषों की आँखें भी इन आँखों को देखकर मोदमग्न हो जाती हैं। यह देखकर मन्मथ को भी संतोष होता है कि हमारा अब मौका मिल गया। (यानी परस्पर देखते वक्त दोनों के मन में एक दूसरे पर प्रेम पैदा हो जाता है।)। ८५६

ऍण्णु मात्तिर मुम्मरि दामिडै, वण्ण मार्त्त तुवर्क्कनि वाय्च्चियर्
तिण्ण मार्त्तोंळिर् शॅव्विळ नीरिऴि, शुण्ण मार्त्तन तूळियु मार्त्तवे 857

ऍण्णुम् मात्तिरमुम्–भावना के लिए भी; अरितुआम्–अशक्य; इटै–कमर; वण्णम् आर्त्त–सुन्दरतापूर्ण; तुवर् कनि–बिम्बफलारुण; वाय्च्चियर्–मुख (अधर) वाली तरुणियों के; तिण्णम् आर्त्तु–खूब कसकर बद्ध होकर; ऑळिर्–मनोरम लगनेवाले; चॅव्विळनीर्–कच्चे नारियल के फलों (सम उरोजों) से; इऴि–गिरनेवाले; चुण्णम्–चूर्ण; आर्त्तन–सर्वत्र भरे; तूळियुम् आर्त्त–धूलियाँ भी भरीं। ८५७

भावना के लिए भी अशक्य महीन कटि, सुन्दर बिम्बफल सम लाल मुख (अधरों) से युक्त स्त्रियों के कंचुकी के अन्दर खूब कसकर बँधे हुये, नारियल सदृश स्तनों पर लिप्त चन्दन सूख गया और चूर्ण बनकर गिरने लगा। वे चूर्ण सर्वत्र भर गये। धूल भी भर गयी। ८५७

शित्ति रत्तडन् देर्मैन्दर् मङ्गयर्, उय्त्तु रैप्प नितैप्प उलप्पिलर्
इत्ति ऱत्तिन रॅत्तनै योपलर्, मॊय्त्ति रैत्तु वऴिक्कॊण्डु मुन्तिनार् 858

चित्तिरम् तट तेर्–सुडौल, विशाल रथों में जानेवाले; मैन्तर् मङ्कैयर्–पुरुष और स्त्रियाँ; उय्त्तु उरैप्प–अनुमान लगाकर कहने में; नितैप्प–सोचने में; उलप्पु इलर्–असंख्यक हैं; इ तिऱत्तितर्–इस हैसियतवाले; ऍत्तनैयो पलर्–अन्य कितने ही अनेक; मॊय्त्तु–जुटकर; इरैत्तु–शोर मचाते हुए; वऴि कॊण्टु–मार्ग पकड़कर; मुन्तिनार्–(मिथिलानगर की ओर) बढ़े। ८५८

विशाल रथों पर चलनेवाले पुरुष और स्त्रियों की संख्या का अनुमान करना या कहना असंभव था। इन (रथों के सवारों) के अलावा अन्य अनेक लोग मिलकर जा रहे थे। वे आपस में खूब हल्ला मचाते हुये मिथिला के मार्ग में आगे बढ़े। (हैसियत का विचार छोड़कर सब मिलकर उत्साह के साथ जा रहे थे।)। ८५८

कुशैयुरु परियुन् देरुम् वीररुङ् गुळुमि यॅङ्गुम्
विशैयॊडु कडुहप् पॊङ्गि वीङ्गिय तूळि विम्मिप्
पशैयुरु तुळियिन् ऱारैप् पशुन्दॊळै यडैत्द मेहम्
तिशैतॊरु निन्ऱ यानै मदत्तॊळै शॆम्मिर् ऱन्ऱे 859

कुचै उरु परियुम्–लगाम लगे घोड़े; तेरुम्–रथ; वीररुम्–और पदाति; अॅङ्कुम् कुळुमि–सर्वत्र दल बाँधकर; विचैयॊटु कटुक–वेग के साथ जाने से; पॊङ्कि वीङ्किय तूळि–उठकर फैली धूलिराशि ने; विम्मि–भरकर; मेकम्–मेघों के; पचै उरु–गीली; तुळियिन् तारै–जलधारा के; पचुमै तॊळै–सिक्त रंध्र; अटैत्तत–बन्द करा दिये; तिचै तॊरुम् निन्र यात्तै–दिशा-दिशा में खड़े गजों के; मतम् तॊळै–मद-नीर रंध्रों में भी; चॆम्मिरु–(धूलि) भर गई। ८५९

लगाम लगे अश्व, रथ, पदाति, आदि इतनी बड़ी संख्या में चले कि धूलि की विपुल राशि उठकर फैली। वह मेघों की धारा के रंध्रों में भी भर गयी और हर दिशा के दिग्गज के मदजल के रंध्रों को भी अवरुद्ध कर गयी। ८५९

केडहत् तडक्कै याले किळरॊळि वाळुम् बऱ्ऱिच्
चूडहत् तळिर्क्कै मऱ्ऱैच् चुडर्मणित् तडक्कै पऱ्ऱि
आडहत् तोडै यात्तै यळिमदत् तिळुक्क लाऱ्ऱिल्
पाडहक् कालि न्नारैप् पयप्पयक् कॊण्डु पोन्नार् 860

केटकम् तट कैयाले–ढाल-धरे विशाल (बायें) हाथ में ही; किळर् ऑळि–छिटकती कान्तिवाली; वाळुम् पऱ्ऱि–तलवार भी लेकर; चुटर् मणि–दीप्त कंकण पहने हुए; मऱ्ऱै तट कै–दूसरे (दायें) विशाल हाथ से; चूटकम् तळिर् कै पऱ्ऱि–(पत्नियों के) चूड़ियोंवाले पल्लवमृदु हाथ पकड़कर; आटकत्तु ओटै–स्वर्णनिर्मित मुखपट्टधारी; यात्तै–गजों से; अळि मतत्तु–झरनेवाले मदजल के कारण; इळुक्कल् आऱ्ऱिल्–फिसलन-युक्त मार्ग में; पाटकम् कालिन्नारै–'पाटकम्' नाम के नूपुर-विशेष से शोभित पैरवालियों को; पय पय–धीरे-धीरे; कॊण्टु पोन्नार्–ले चले। ८६०

अनेक वीर एक ही हाथ में (बायें हाथ में) ढाल और तलवार लेकर दूसरे कंकण-भूषित हाथ से अपनी पत्नियों को सहारा देकर धीरे-धीरे ले जा रहे थे क्योंकि स्वर्ण-मुखपट्ट से अलंकृत गजों के मदजल प्रवाह के कारण मार्ग में फिसलन पड़ गयी थी। ८६०

शॆय्हळिन् मडुवि नन्नीर्च् चिऱैहळि निऱैयप् पूत्त
नॆय्दलुङ् गुमुदप् पूवु नॆहिळ्न्दशॆङ् गमलप् पोदुम्
कैहळु मुहमुम् वायुङ् कण्गळुङ् काट्टक् कण्डु
कॊय्दिवै तरुह वॆन्रु कॊळुन्नरैत् तॊळुहिन् ऱाराल् 861

चॆय्कळिल्–खेतों में; मटुविल्–छोटे सरोवरों में; नल् नीर् चिऱैकळिल्–अच्छे जल के जलाशयों में; निऱैय पूत्त–अधिकता से फूलित; नॆय्तलुम्–नीलोत्पल; कुमुतम् पूवुम्–कुमुद पुष्प; नॆकिळ्न्त चॆम् कमलम् पोतुम्–खिली लाल कमल की कलियाँ; कैकळुम्–हाथ; मुकमुम्–और मुख; कण्कळुम्–आँखें; काट्ट–दिखातीं, तो; कण्टु–देखकर; इवै कॊय्तु तरुक–इनको तोड़कर ला दो; ऍन्रु–कहकर; कॊळुन्नरै–पतियों से; तॊळुकिन्ऱार्–विनय करती हैं। ८६१

मार्ग में स्त्रियों ने खेतों, तालाबों और अन्य जलाशयों में नीलोत्पल,

कुमुद और कमल आदि फूल देखे। उनको वे अपने ही अवयवों के समान लगे। (वे उन्हें हाथ में लेकर मनोरंजन कर लेना चाहती थीं इसलिए—) वे अपने पतियों से नमस्कार करके विनय करने लगीं कि उनको तोड़कर ला दो। ८६१

पन्दियम् पुरवि निन्ऱुम् पारिडै यिऴिन्दोर् वाशक्
कुन्दळ पारञ् जोरक् कुलमणिक् कलन्गळ् शिन्तच्
चन्दनुण् डुहिलुञ् जोरत् तळिर्क्कैया लणैत्तुच् चार
वन्दडु वॅऴ मॅन्ऩ मयिलॅन्ऩ विरियल् पोवार् 862

पन्ति अम् पुरवि निन्ऱुम्—श्रेणियों में जानेवाले अश्वों पर से; पार् इटै इऴिन्तोर्—भूमि पर उतरी हुई कुछ स्त्रियाँ; वेऴम् चार वन्तदु अॅन्ऩ—हाथी हमारी ओर आ रहे हैं, यह जानकर; वाचम् कुन्तळ पारम् चोर—सुवासित केशभार के खुलकर लटकते; कुलम् मणि कलङ्कळ् चिन्त—श्रेष्ठ रत्नाभरण के गिरते; चन्तम् नुण् तुकिलुम् चोर—सुन्दर महीन (अधो) वस्त्र के खिसकते; तळिर् कैयाल् अणैत्तु—पल्लव-सम हाथों से पकड़कर; मयिल् अॅन्ऩ—मोरों के समान; इरियल् पोवार—अस्तव्यस्त हो अलग भागतीं। ८६२

पंक्तियों में अश्व जा रहे थे। उन पर स्त्रियाँ बैठी जा रही थीं। आराम के लिए वे नीचे उतरीं। तब किसी ने कह दिया कि हाथी आ रहे हैं और पास आ गये हैं। यह समाचार सुनते ही वे मोरों के समान छटा दिखाते हुये ससंभ्रम भागने लगीं। तब उनके सुवासपूर्ण केशजाल खुलकर बिखर गये। रत्नाभरण खुलकर गिर गये। महीन अधोवस्त्र भी खिसक गये। वे उन वस्त्रों को हाथ से सम्हालकर पकड़ती हुयी भागीं। ८६२

कुडैयॊडु पिच्चन् दोङ्गर् कुऴाङ्गळुङ् कॊडियिन् काडुम्
इडैयिडै मयङ्गि यॅङ्गुम् वॅळिहरन् दिरुळैच् चॅय्यप्
पडैहळु मुडियुम् पूणुम् पडर्वॅयिल् परप्पिच् चॅल्ल
इडैयॊरु कण्त्ति नुळ्ळे यिरवुण्डु पहलु मुण्डे 863

कुटैयॊटु—छत्रों के साथ; पिच्चम्—मोरछत्र; तोङ्कल् कुऴाङ्कळुम्—मोरछल का समूह; कॊटियिन् काटुम्—ध्वजाओं का वन; इटै इटै मयङ्कि—आपस में मिश्रित होकर; अॅङ्कुम् वॅळि करन्तु—सर्वत्र आकाश को छिपाकर; इरुळै चय्य—अँधेरा कर देते हैं, तब; पटैकळुम्—(तलवार, भाले) आदि हथियार; मुटियुम्—रत्नकिरीट; पूणुम्—अन्य आभरण; पटर् वॅयिल् परप्पि चॅल्ल—फैलती धूप (प्रकाश) करते जाते हैं; इटै—(सेना के मार्ग के) स्थानों में; ऒरु कणत्तिन् उळ्ळे—एक ही क्षण में (एक साथ); इरवु उण्टु—रात भी है; पकलुम् उण्टु—दिन भी है। ८६३

छत्र, मोरपंखछत्र, मोरछल, ध्वजाओं के समूह, ये सब आपस में मिश्रित होकर, आकाश को ढँककर सर्वत्र अंधेरा बना रहे थे। उसी

समय तलवार आदि अस्त्र, रत्नकिरीट आदि प्रकाश भी फैलाये जा रहे थे। इस तरह वह सेना जहाँ भी जा रही थी वहाँ एक ही समय में रात (का अंधेरा) भी होता था; दिन (की धूप) भी होता था। ८६३

मुरुक्किदळ् मुत्त मूरन् मुरुवलार् मुहङ्ग ळॆन्नुम्
तिरुक्किळर् कमलप् पोदिड् ड़ीट्टिन किडन्द कूर्वाळ्
नॆरुक्किडॆ यरुक्कु नीविर् नीङ्गुमि नीङ्गु मॆन्ऱॆन्
ऱुरुक्कनि लॊळिरु मेनि याडव रहलप् पोवार् 864

अरुक्कनिल् ऑळिरुम् मेनि–सूर्य के समान कान्तियुत शरीरोंवाले; आटवर्–पुरुष; मुरुक्कु इतळ्–(काँटेदार तनों और डालों के) 'मुरुङ्ग' वृक्ष के फूलों के रंग के (अति लाल) अधर; मुत्तम् मूरल्—मुक्ता-सम दन्तपंक्ति; मुरुवलार्–मन्दहास (इनके साथ शोभायमान) स्त्रियों के; मुकङ्कळ् ऍन्नुम्–मुखरूपी; तिरु किळर् कमलम् पोतिल्–शोभायुक्त कमल के फूलों पर; तीट्टिय किटन्त–(रहनेवाली) पैनाई गई; कूर्वाळ्–तीक्ष्ण तलवारें; नॆरुक्कु इटै अऱुक्कुम्–(हमारी) भीड़ को बीच से काट लेंगी; नीविर् नीङ्कुमित्–तुम लोग हटो; नीङ्कुम्–हटो; ऍन्ऱु ऍन्ऱु–ऐसा कहते हुए; अकल पोवार्–दूर हट जाते। ८६४

(पुरुषों का एक दल खड़ा है। स्त्रियाँ आती हैं। तब पुरुष शिष्टाचारवश मार्ग छोड़कर अलग हट जाते है। कवि की उत्प्रेक्षा देखिये।) सूर्य के समान तेजोमय रूपवाले पुरुष, "काँटेदार" मुरुङ्गै वृक्ष के फूलों के समान लाल अधर, मुक्ता के समान दंतपंक्ति और मन्दहास— इनके साथ मनोरम लगनेवाली स्त्रियों के सुन्दर कमल-पुष्पों के समान मुखों में जो तीक्ष्ण तलवारें (यानी आँखे) है, वे हमारी भीड़ को बीच से चीरते हुए चली जायँगी; इसलिए हट जाओ; हट जाओ, रास्ता दे दो! यह कहते हुये हट जाते हैं। ८६४

नीन्दरु नॆऱियि नुऱ्ऱ नॆरुक्किनाऱ् चुरुक्कुण् डऱ्ऱुक्
कान्दिन मणियु मुत्तुञ् जिन्दिन कलावञ् जूळ्न्द
पान्दळि नलहु लार्दम् परिपुरम् बुलम्बु पादप्
पून्दळि रुरैप्प माळ्हिप् पोक्करि दॆन्न निऱ्पर् 865

नॆऱियिन् उऱ्ऱ–मार्ग में बनी; नीन्त अरु–दुर्गम; नॆरुक्किनाल्–भीड़ से; चुरुक्कुण्टु–उलझकर; अऱ्ऱु–कटने से; कान्तु इनम–दीप्त और समूह के; मणियुम् मुत्तुम्–रत्न और मोती; चिन्तिन–जो गिरकर छितरे पड़े थे वे; कलापम् चूळ्न्त–कलाप वलयित; पान्तळिन् अलकुलार् तम्—सर्प-फन समान वरांगवाली स्त्रियों के; परिपुरम् पुलम्पु—नूपुर-झंकृत; पातम् पू तळिर्—चरण-पल्लवों में; उऱैप्प–चुभते हैं, इसलिए; माळ्कि–लड़खड़ाकर; पोक्कु अरितु ऍन्न–जाना असम्भव है, कहकर; निऱ्पार्–खड़ी हो जाती हैं। ८६५

मार्ग में इतनी भीड़ है कि आपस में टकराते वक्त रत्नहार, मोती की मालाएँ आदि आपस में उलझकर कट जाती है और कांतियुक्त रत्न

अङ्कुचम् निमिर–अंकुश को सीधा करके (बेकार कर); अरुवि पॆय् वरैयिऩ्–झरनों को बहानेवाले गिरियों के समान; पॊङ्कि–बिफरकर; चतङ्कळ्–जन; इरियलिऩ् ऎङ्कुम् चिन्त–भागकर तितर-बितर हो जायँ; वरि चिऱै–धारीदार पंखों के; तुम्पि ईट्टम्–भ्रमरों के समूह; वार् मतम् तोय्न्तु–ढलनेवाले मदजल में पैठकर; मातर् चुरि कुळल् पटिय–(फिर) स्त्रियों के घुँघराले बालों पर जा ठहर जायँ, ऐसा; एऱुम् पिटियै–(स्त्रियों से) आरोहित हथिनियों को; तॊटर्न्तुम् चॆल्व–अनुसरण करते गये। ८६९

(एक मत्त हाथी की करतूत देखिये।) मत्त गज के बलात खींचते हुए जाने से अंकुश अपनी वक्रता खोकर सीधा हो गया और बेकार भी। हाथी के मस्तक से मदजल नदियों के समान बह रहा था। तब वह झरनों सहित पर्वत के समान लगता था। उसको देखकर सभी लोग डरकर तितर-बितर हो गये। भ्रमर उस मदजल पर बैठकर उठे और स्त्रियों के घुँघराले केशों पर बैठे क्योंकि वह उसी हथिनी का पीछा करने लगा जिस पर स्त्रियाँ सवार होकर जा रही थी। ८६९

निऱैमदित् तोऱ्ऱङ् गण्ड नीर्नॆडुङ् गडलि दॆऩ्ऩ
अऱैपऱै तुवैप्पत् तेरु मातैयु माडऩ् मावुम्
कऱैहॊळु वेऱ्क णारु मैन्दरुङ् कविऩि यॊल्लै
नॆऱियिडैप् पडर वेन्द ऩेयमङ् गैयरॆ ळुन्तार् 870

निऱै मति–पूर्णचन्द्र के; तोऱ्ऱम् कण्ट–उदयदर्शी; नील् नॆटु कटल्–नीला विशाल समुद्र; इतु ऎऩ्ऩ–यह है ऐसा; अऱै पऱै तुवैप्प–पिटकर वजनेवाले (चमड़े-मढ़े) वाद्य बज उठे; तेरुम् आतैयुम्–रथ और गज; आटल् मावुम्–विजयी अश्व; कऱै कॊळु–(रक्त) चिह्न लगे; वेल् कण्णारुम्–भाले के समान आँखोंवाला स्त्रियाँ; मैन्तरुम्–पुरुष लोग, सब; कविऩि–मनोहर ढंग से मिलकर; नॆऱि इटै–मार्ग पर; ऒल्लै–शीघ्र; पटर–जाते हैं, तब; वेन्तऩ् नेयम् मङ्कैयर्–चक्रवर्ती की प्रिय महिषियाँ; ऎळुन्तार्–निकलीं (रवाना हुईं)। ८७०

(अब महिषियों की बारी है।) पूर्णचन्द्र के उदय पर जैसे नीला समुद्र गरज उठता है वैसे भेरियाँ आदि वाद्य पिटकर बज उठे। रथ, गज, तुरग, रक्त के धब्बे सहित वेल् (शक्ति) के समान तीक्ष्ण आँखोंवाली स्त्रियाँ और पुरुष ये सब बड़े सुन्दर ढंग से मिलकर मार्ग पर आगे गये। तभी चक्रवर्ती की प्रिय महिषियाँ रवाना हुयीं। ८७०

पॊय्हयङ् गमलक् काऩिऱ् पॊलिवदो रऩ्ऩ मॆऩ्ऩक्
कैहयर् वेन्दऩ् पावै कणिहैय रणियि ऩीट्टम्
ऐयिरु नूऱु चूळ वाय्मणिच् चिविकै तऩ्मेल्
दॆय्वमङ् गैयरु नाणत् तेऩिशै मुरलप् पोऩाळ् 871

कैकयर वेन्तऩ् पावै–केकय राजा की तनया; कणिकैयर् अणियिऩ्–दासियों की श्रेणियों का; ईट्टम्–समूह; ऐ इरु नूऱु चूळ–पाँच के दो सौ (हजार) साथ आये;

समान वे हाथी जलाशय देखकर उसमें जाकर पैठ जाते हैं। महावत वेग के साथ कमानों से मिट्टी के गोलों (गुलेलों) से मारते हैं। वे हाथी उनकी परवाह नहीं करते। उन्नत कुचों के समान अपने कुंभों और दाँतों (भर) को जल के बाहर प्रकट होने देते हुए मुख से पैठे रहते हैं। किनारे आने का नाम ही नहीं लेते। जलमग्न वे हाथी तब क्षीरसागर से निकले ऐरावत गज के समान दीखते हैं। ८६७

अड़लियड़् कूऩ्दल् वाट्क णमुदुहु कुदलैच् चॅव्वाय्
विड़लिय रोडु नल्याळ्च् चॅयिरियर् पुरवि मेलार्
नड़ैशॅविप् पॅय्वा रॅऩ्ऩ नैवळ मुळ्ळुदुम् पाडि
मुड़ैमुड़ै नणुहप् पोऩार् किऩ्ऩर मिदुन मॉप्पार् 868

किऩ्ऩरम् मितुऩम् ऑप्पार्—किन्नर मिथुन-सम; अड़ल् इयल् कूऩ्तल्—काले बालू के समान केश; वाळ् कण्—तलवार-सी आँखें; अमुतु उकु—अमृत बरसानेवाले; कुतलै—मधुर भाषण करनेवाला; चॅंव् वाय्—लाल मुख, इनसे युक्त; विड़लियरोटु—गायिकाओं सह; नल् याळ् चॅयिरियर्—श्रेष्ठ वीणावादक गवैये; पुरवि मेलार्—अश्वों पर सवार होकर; नड़ै चॅवि पॅय्वार् ऍऩ्ऩ—श्रवणों में मधु ढालते; नै वळम् मुळ्ळुतुम्—"पालै" राग सभी (मार्गगमन सम्बन्धी राग); मुड़ै मुड़ै पाटि—यथाक्रम गाते हुए; नणुक पोऩार्—पास-पास गये। ८६८

वीणावादक गवैये और गायिकाएँ किन्नर मिथुनों के समान गाकर मनोरंजन करते हुये गये। उन "विड़लि" (वंदिनी गायिका) स्त्रियों के बाल काले बालू के समान थे। आँखें तलवारों के समान तीक्ष्ण थीं। वे सुधा सम मधुर-भाषिणीं थी। ये और बाणजाति के वे वीणावादक गवैये अश्वों पर सवार होकर 'पालै' के विविध रागों के गाने गाते जा रहे थे। (बालों को बालू से उपमित करने की प्रथा है। नदी के तल में जब जल नहीं है और तल गीला है तब देख सकते हैं कि बालू का रंग और लहरों का-सा उनका तल वेणी के समान लगता है। "विड़लियर्" और "चॅयिरियर" विशेष जातियों का स्त्री और पुरुष नाम है। 'पालै' (यानी 'रेगिस्तान') तमिळ साहित्यिक काव्य शास्त्र में मार्ग गमन का द्योतक है। प्रस्थान और प्रवास सम्बन्धी गानों के लिए जो तानें निर्धारित हैं वे 'पालै पण्' कहलाती हैं।) किन्नर देवजातियों में एक है। (कभी-कभी वह विशेष पक्षी जाति भी बताया जाता है।)। ८६८

अरुविपॅय् वरैयिड़् पॉङ्गि यङ्गुश निमिर वॅङ्गुम्
इरियलिड़् चऩ्ऩङ्गळ् चिऩ्द विळङ्गळिच् चिड़ुकण् यानै
वरिशिड़ैत् तुम्बि यीट्टम् वारमदऩ् दोय्ऩ्दु मादर्
शुरिकुळ्ळड़् पडिय वेरुम् पिडियुडऩ् दॉडर्ऩ्दु शॅल्व 869

इळम् कळि—तरुण और मस्त; चिड़ु कण् यानै—छोटी आँखोंवाले कलभ;

अङ्कुचम् निमिर–अंकुश को सीधा करके (बेकार कर); **अरुवि पॆय् वरैयिऩ्**–झरनों को बहानेवाले गिरियों के समान; **पोंङ्कि**–विफरकर; **चत्तङ्कऴ्**–जन; **इरियलिऩ् ऍङ्कुम् चिन्त**–भागकर तितर-बितर हो जायँ; **वरि चिऱै**–धारीदार पंखों के; **तुम्पि ईट्टम्**–भ्रमरों के समूह; **वार् मतम् तोय्न्तु**–ढलनेवाले मदजल में पैठकर; **मातर् चुरि कुऴल् पटिय**–(फिर) स्त्रियों के घुँघराले बालों पर जा ठहर जायँ, ऐसा; **एऱुम् पिटियै**–(स्त्रियों से) आरोहित हथिनियों को; **तॊटर्न्तुम् चॆल्व**–अनुसरण करते गये। ८६९

(एक मत्त हाथी की करतूत देखिये।) मत्त गज के बलात खींचते हुए जाने से अंकुश अपनी वक्रता खोकर सीधा हो गया और बेकार भी। हाथी के मस्तक से मदजल नदियों के समान बह रहा था। तब वह झरनों सहित पर्वत के समान लगता था। उसको देखकर सभी लोग डरकर तितर-बितर हो गये। भ्रमर उस मदजल पर बैठकर उठे और स्त्रियों के घुँघराले केशों पर बैठे क्योंकि वह उसी हथिनी का पीछा करने लगा जिस पर स्त्रियाँ सवार होकर जा रही थीं। ८६९

निऱैमदित् तोऱ्ऱङ् गण्ड नीनॆडुङ् गडलि दॆऩ्ऩ
अऱैपऱै तुवैप्पत् तेरु मानैयु माडऩ् मावुम्
कऱैकॊऴु वेऱ्क णारु मैन्दरुङ् कविऩि यॊल्लै
नॆऱियिडैप् पडर वेन्द ऩेयमङ् गैयरॆ ऴुन्तार् 870

निऱै मति–पूर्णचन्द्र के; **तोऱ्ऱम् कण्ट**–उदयदर्शी; **नील् नॆटु कटल्**–नीला विशाल समुद्र; **इतु ऍऩ्ऩ**–यह है ऐसा; **अऱै पऱै तुवैप्प**–पिटकर बजनेवाले (चमड़े-मढ़े) वाद्य बज उठे; **तेरुम् आऩैयुम्**–रथ और गज; **आटल् मावुम्**–विजयी अश्व; **कऱै कॊऴु**–(रक्त) चिह्न लगे; **वेल् कण्णारुम्**–भाले के समान आँखोंवाला स्त्रियाँ; **मैन्तरुम्**–पुरुष लोग, सब; **कविऩि**–मनोहर ढंग से मिलकर; **नॆऱि इटै**–मार्ग पर; **ऑल्लै**–शीघ्र; **पटर**–जाते हैं, तब; **वेन्तऩ् नेयम् मङ्कैयर्**–चक्रवर्ती की प्रिय महिषियाँ; **ऍऴुन्तार्**–निकलीं (रवाना हुईं)। ८७०

(अब महिषियों की बारी है।) पूर्णचन्द्र के उदय पर जैसे नीला समुद्र गरज उठता है वैसे भेरियाँ आदि वाद्य पिटकर बज उठे। रथ, गज, तुरग, रक्त के धब्बे सहित वेल् (शक्ति) के समान तीक्ष्ण आँखोंवाली स्त्रियाँ और पुरुष ये सब बड़े सुन्दर ढंग से मिलकर मार्ग पर आगे गये। तभी चक्रवर्ती की प्रिय महिषियाँ रवाना हुयीं। ८७०

पॊय्हयङ् गमलक् कातिऱ् पॊलिवदो रऩ्ऩ मॆऩ्ऩक्
कैहयर् वेन्दऩ् पावै कणिहैय रणियि नीट्टम्
ऐयिरु नूऱु चूऴ वाय्मणिच् चिविकै तऩ्मेल्
दॆय्वमङ् गैयरु नाणत् तेऩिशै मुरलप् पोऩाऴ् 871

कैकयर् वेन्तऩ् पावै–केकय राजा की तनया; **कणिकैयर् अणियिऩ्**–दासियों की श्रेणियों का; **ईट्टम्**–समूह; **ऐ इरु नूऱु चूऴ**–पाँच के दो सौ (हज़ार) साथ आये;

आय् मणि–चुने हुए रत्न जड़े; चिविकै तन् मेल्–शिविका पर; पॉय्कै–तडाग में विकसित; अम् कमलम्–सुन्दर कमलों के; कानिल्–वन में; पॉलिवतु–शोभायमान; ओर् अन्नम् अॅन्न–एक हंस के समान; तॅय्व मङ्कैयरुम् नाण–देवांगनाओं को भी लजाते हुए; तेन् इचै मुरल–मधुभ्रमरों के श्रुति मधुर राग गाते; पोनाळ्–गई। ८७१

(पहले केकय राजकुमारी की चर्चा है।) एक सहस्र दासियाँ गयीं। उनके बीच में केकयराजतनया चुने हुये रत्नों से सज्जित एक शिविका पर बैठकर गयीं। कमलवन के मध्य एक हंस के समान, देवांगनाओं को भी शान व मान में हराती हुयी रानी कैकेयी जा रही थीं। ८७१

विरिमणित् तार्हळ् पूण्ड वेशरि वॅरिनिर् ड्रोन्रुम्
अरिमलर्त् तडङ्ग णल्ला रायिरत् तिरट्टि चूळ्क्
कुरुमणिच् चिविहै तन्मेर् कॉण्डलिन् मिन्नि दॅन्न
इरुवरैप् पयन्द नङ्गै याळिशै मुरलप् पोनाळ् 872

विरि–विस्तृत; मणि तार्कळ्–रत्न दाम; पूण्ट–पहने हुए; वेचरि वॅरिनिल्–खच्चरों पर; तोन्रुम्–बैठी दिखाई देनेवाली; अरि–लाल डोरों सहित; मलर्–कुमुद-सम; तट कण्–विशाल आँखों की; आयिरत्तु इरट्टि नल्लार्–हज़ार के दो (दो सहस्र) स्त्रियों के; चूळ–घेरते आते; कुरु–रंगीन; मणि–रत्नमय; चिविकै मेल्–शिविका पर; कॉण्टलिन् मिन्–मेघ में विजली; इतु अॅन्न–(यह है, ऐसा) के समान; याळ् इचै मुरल–वीणावादन के होते; इरुवरै पयन्त नङ्कै–दो पुत्रों की प्रसविनी (सुमित्रा) पोनाळ्–गईं। ८७२

मणियों की लड़ियों की वनी मालाओं से अलंकृत खच्चरों पर दो सहस्र दासियाँ, जिनकी आँखें लाल डोरों के साथ कुमुद के समान शोभायमान थीं, जा रही थीं। उनके बीच रत्नमय शिविका में मेघ मध्य बिजली के समान लक्ष्मण और शत्रुघ्न दो पुत्रों की प्रसविनी देवी सुमित्रा गयीं। वीणा वादन हो रहा था और वे उसका आस्वादन करती हुई जा रही थीं। ८७२

वॅळ्ळॅयिऱ् ड्रिलवच् चॅव्वाय् मुहत्तवॅण् मदिय मॅन्रु
कॉळ्ळॅयिऱ् ड्रिरळ्वान् मीन्गळ् कुळुमिय वनैय वूर्दित्
तॅळ्ळरिप् पाणडिऱ् पाणिच् चॅयिरिय रिशैत्तेन् शिन्द
वळ्ळलैप् पयन्द नङ्गै वान्वर् वणङ्गप् पोनाळ् 873

वॅळ् अॅयिऱु–सफ़ेद दाँत; इलवम् चॅव्वाय्–सेमर के समान मुख (अधर) शोभित; मुकत्तै–मुख को; मतियम् अॅन्रु–पूर्णचन्द्र समझ; कॉळ्ळैयिल् तिरळ्–अधिकता से जमा हुए; वान् मीन्कळ्–आकाश के तारे; कुळुमिय–एकत्र हुए से; अनैय–दिखनेवाले; उर्ति–यान पर; वळ्ळलै पयन्त–प्रभु को प्रसव करनेवाली; नङ्कै–देवी कौसिल्या; तॅळ्–स्वच्छ; अरि–कोमल; पाण्टिल् पाणि–ताल-लय के साथ गाने में चतुर; चॅयिरियर्–गवैयों के; इचै तेन चिन्त–संगीतरूपी शहद बहाते; वानवर् वणङ्क–देवों के स्तुति करते; पोनाळ्–गईं। ८७३

श्वेत दंतपंक्ति और सेमर के लालफूल की-सी अरुण अधरोंवाली कौसल्या देवी एक सुन्दर यान पर बैठी जा रही थीं। उनका यान चन्द्र के समान था और उसमें जड़ित मणियाँ नक्षत्रों के समान थीं। वह ऐसा लगता था मानों नक्षत्र चन्द्र समझकर इनको घेर आये हों। प्रभु श्रीराम की माता के साथ श्रेष्ठ गवैये, जो ताल लय शुद्ध रीति से संगीत सुनाने में कुशल थे; गाते हुए गये। देवगण माता कौसल्या की स्तुति कर रहे थे। ८७३

शॅङ्गयिन् मञ्ञै यन्नञ् जिरुकिळि पूवै पावै
शङ्गुरै कळित्त वन्न चामरै मुदल ताङ्गि
इङ्गल दॅण्णुङ् गात्मर् ऱॅळुदिरै वळाहत् तङ्गुम्
मङ्गय रिल्लै यॅन्न मडन्दयर् मरुङ्गु पोनार् 874

ऍण्णुम् काल्–समीक्षण करने पर; ऍळु तिरै वळाकत्तु–सात समुद्रों से घिरे इस भूमण्डल में; इङ्कु अलतु–यहाँ (अयोध्या) के सिवा; मऱ्ऱु ऍङ्कुम्–अन्यत्र कहीं; मङ्कैयर् इल्लै–स्त्रियाँ (है ही) नहीं; ऍन्न–इस कथन को साबित करते हुए; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; चम्कैयिल्–लाल (कोमल) हाथों में; मञ्ञै–मोर; अन्नम्–हंस; चिऱु किळि–छोटे शुक; पूवै–सारिकाएँ; पावै–प्रतिमाएँ; चङ्कु उऱै कळित्त अन्न–शंखों के समान जो अभी-अभी आवरण से बाहर निकाले गये हों; चामरै मुतल–चामर आदि; ताङ्कि–धारण करके; मरुङ्कु पोनार्–रानियों के पार्श्व में गईं। ८७४

अनेक स्त्रियाँ उनके पार्श्व में जा रही थीं। उनकी संख्या गिन कर देखें तो ऐसा कहा जा सकता है कि सप्तसमुद्रवलयित भूमंडल में अन्यत्र कहीं स्त्रियाँ हैं ही नहीं। वे अपने हाथों में मोर, हंस, छोटे शुक, सारिकाएँ, प्रतिमाएँ, नवीन शंख के समान श्वेत चामर आदि पदार्थ लेती गयीं। ८७४

कारण मिन्ऱि यॅयुङ् कनलॅळ विळिक्कुङ् गण्णार्
वीरवेत् तिरत्तार् ताळ्न्तु विरिन्तकञ् जुकत्तु मॅय्यार्
तारणि पुरवि मेलार् तलत्तुळार् कदित्त शॅाल्लार्
आरणङ् गनैय माद रडिमुऱै कात्तुप् पोनार् 875

कारणम् इन्ऱि येयुम्–अकारण ही; कनल् ऍळ विळिक्कुम्–अंगारे उगलते हुए तरेरनेवाली; कण्णार्–आँखों के; वीरम् वेत्तिरत्तार्–वीर वेत्रधर; ताळ्न्तु विरिन्त–आपादलम्बित और ढीले; कञ्चकत्तु मॅय्यार्–अँगरखा पहने शरीरोंवाले; कतित्त चॅाल्लार्–डाँटते हुए बोलनेवाले, (कंचुकी, अनेक); तार् अणि पुरवि मेलार्–हारों से अलंकृत अश्वों पर सवार; तलत्तु उळ्ळार्–और भूमि पर (पैदल) चलनेवाले; मुऱै–क्रम से; आर् अणङ्कु अनैय–सुन्दर देवांगनाओं के सदृश; मातर् अटि–रानियों के चरणतल में; कात्तु पोनार्–संरक्षण करते हुए गये। ८७५

उनकी रक्षा में कंचुकी भी जा रहे थे। उनकी आँखें अकारण क्रोध

के अंगारे उगलनेवाली थीं। उनके हाथ में वीरवेत्र थे। वे आपादलंबित और ढीले अंगरखे पहने हुये थे। डांट डपट से ही बात करते थे। उनमें अश्वों पर सवार भी थे, पैदल चलनेवाले भी। वे देवांगनाओं के समान उन रानियों की चरण-सेवा में उनकी रक्षा करते हुये जा रहे थे। ८७५

कून्ऩॊडु कुऱळुम् जिन्दुम् जिलदियर् कुळामुम् कॊण्ड
पाल्निऱप् पुरवि यन्ऩप् पुळ्ळॆऩप् पारिऱ् चॆल्लत्
तेन्ऩॊडु ञिमिऱुम् वण्डुम् दुम्बियुम् बन्दर् चॆय्यप्
पूनिऱै कून्दल् मादर् पुडैमडप् पिडियिऱ् पोऩार् 876

कूनॊट्टु कुऱळुम् चिन्तुम्–कुबड़े, "कुरळ्" और "चिन्त" ठिंगने और बौने; चिलतियर् कुळामुम्–दासियों के समूह; कॊण्ट–ढोनेवाले; पाल् निऱम् पुरवि–दुग्धवर्ण अश्व; अन्ऩपप्पुळ् अॆन–हंस पक्षी के समान; पारिल् चॆल्ल–भूमि पर आये; तेनॊट्टु–मधु-भ्रमर; ञिमिऱुम्–अलि; वण्टुम्–अन्य भौंरे; तुम्पियुम्–और काले भ्रमर; पन्तर् चय्य–ऊपर वितान सा बनाते हुए; पू निऱै कून्तल् मातर्–पुष्पालंकृत कुंतलवाली स्त्रियाँ; पुटै–पार्श्व में; मट पिटियिल्–छोटी आयु की हथिनियों पर; पोनार–गईं। ८७६

कुबड़े, बौने, ठिंगने, दासियाँ, आदि सभी दुग्धवर्ण अश्वों पर, जो हंसों के समान भूमि पर चल रहे थे, बैठकर गये। उनके पार्श्व में अनेक स्त्रियाँ छोटी आयु की हथिनियों पर सवार हो, जा रही थीं। उनके केशों पर फूल सजे थे और उन फूलों के ऊपर मधुभ्रमर, अलिभ्रमर और काले भौंरे वितान सा बनाते हुये मँडरा रहे थे। ८७६

तुप्पिनिऩ् मणियिऩ् पॊऩ्ऩिऩ् चुडर्मर हदत्तिन् मुत्तिन्
ऒप्पऱ् वमैत्त वैय मोवियम् पोल वेऱि
मुप्पदिऱ् ऱिरट्टि कॊण्ट वायिर मुहिऴ् मॆन् कॊङ्गैच्
चॆप्परुन् दिरुवि ऩल्लार् तॆरिवयर् शूऴप् पोऩार् 877

मुकिऴ् मॆन् कॊङ्कै–(कमल) कली से कोमल स्तनोंवाली; चॆप्प अरु–अवर्ण्य; तिरुविन् नल्लार्–लक्ष्मी से भी अधिक श्रेष्ठ; मुप्पतिऱ्ऱु इरट्टि कॊण्ट–तीस के दुगुने; आयिरम्–(साठ) सहस्र; तॆरिवैयर्–कोमलांगियाँ; तुप्पितिन्–प्रवाल से; मणियिन्–माणिक से; पॊन्निन्–स्वर्ण से; चुटर् मरकतत्तिन्–कान्तिमान मरकत से; मुत्तिन्–मोतियों से; ऒप्पु अऱ्–अनुपम रीति से; अमैत्त वैयम्–बनी बन्द गाड़ियों में; ओवियम् पोल एऱि–चित्र के समान चढ़कर; चूऴ–(रानियों को) घेरती हुई; पोनार्–चलीं। ८७७

इनके अलावा साठ सहस्र स्त्रियाँ प्रतिमाओं की तरह बन्द गाड़ियों पर सवार होकर जा रही थीं। वे कमलकलियों के समान स्तनोंवाली थीं और देवी लक्ष्मी से भी अधिक सुष्ठ थीं। उनकी गाड़ियाँ, प्रवाल, मणि-माणिक, स्वर्ण, कांतिमान मरकत, मोती आदि से संज्जित थीं और अनुपम

रीति से अति सुन्दर रची गयी थीं। (ये शायद चक्रवर्ती की अन्य पत्नियाँ थीं।)। ८७७

शॅविवयि नमुदक् केळ्वि तॅविट्टिन्नार् तेवर् नाविऩ्
अविहयि नळिक्कु नीरा रायिरत् तिरट्टि शूळक्
कविहयि नीळर् करुपि नरुन्ददि कणवऩ् वॅळ्ळैच्
चिविहयि नन्न मूरुन् दिशैमुह नॅन्नच् चॅन्ऱाऩ् 878

चॅवि वयिऩ्–श्रवणों से; अमुतम् केळ्वि–अमृत-सम श्रुति को; तॅविट्टिन्नार्–सुन-सुनकर जो तृप्त हो चुके है; तेवर् नाविऩ् अवि–देवों के जिह्वा से आस्वाद्य हवि को; कैयिऩ्–अपने हाथ से; अळिक्कुम् नीरार्–(यज्ञाग्नि द्वारा) दिलाने की योग्यता रखनेवाले; आयिरत्तु इरट्टि–सहस्र के दुगुने; चूळ–घेरते आये; करुपिऩ् अरुन्तति–सती अरुन्धती के; कणवऩ्–पतिदेव; अन्नम् ऊरुम्–हंसवाहन; तिचै मुकऩ्–दिशामुख (ब्रह्मा); ॲन्न–के समान; वॅळ्ळै चिविकैयिऩ्–श्वेत शिविका पर; कविकैयिऩ्–नीळल्–छत्र की छाया में; चॅन्ऱाऩ्–गये। ८७८

सती अरुन्धती के पति वसिष्ठजी रवाना हुये। उनके साथ दो सहस्र ब्राह्मण गये जिनके कान श्रुतियाँ सुनते-सुनते तृप्त हो चुके थे; और जो देवताओं को अपने हाथ से अग्निमुखेण हवि देनेवाले यज्ञ करने में दक्ष थे। वसिष्ठजी एक मोती की श्वेतवर्ण शिविका में हंसवाहन ब्रह्मा के समान लगते थे। ८७८

पॉरुहळि ऱिवुळि पॉऱ्ऱेर् पॉलङ्गळर् कुमरर् मुन्नीर्
अरुवरै शूळ्न्द दॅन्न वरुहुमुऩ् पिन्नुञ् जॅल्लत्
तिरुवळर् मार्बर् दॅय्वच् चिलैयिऩर् तेरर् वीरर्
इरुवरु मुनिपिऩ् पोन्न विरुवरु मॅन्नप् पोऩार् 879

पॉरु कळिऱु–युद्धगज; इवुळि–अश्व; पॊन् तेर्–स्वर्णरथ; पॉलम् कळल् कुमरर्—स्वर्ण-पायलधारी पदाति वीर; मुन्नीर्–समुद्र; अरु वरै–दुर्गम पर्वत को; चूळ्न्तु ॲन्न–घेर गया हो ऐसा; अरुकु–पार्श्व में; मुऩ् पिन्नुम्–आगे और पीछे; चॅल्ल–जाते है; तिरुवळर् मार्पर–श्रीशोभित वक्षवाले; तॅय्वम् चिलैयिऩर्–दिव्य धनुर्धर; वीरर्–प्रतापी; इरु वरुम्–(भरत और शत्रुघ्न) दोनों कुमार; मुनि पिऩ् पॉन–(जो विश्वामित्र) महर्षि के पीछे गये; इरुवरुम् ॲन्न–उन दोनों (श्रीराम और लक्ष्मण) के समान; तेरर् पोऩार्–रथ पर सवार होकर गये। ८७९

(भरत और शत्रुघ्न की चर्चा है) युद्ध गज, अश्व, स्वर्णरथ और स्वर्णपायलधारी पदाति वीर—ये चार सेनाएँ उनको घेरकर जा रही थीं। भरत और शत्रुघ्न श्रीशोभित विशाल वक्षवाले थे। उनके धनु दिव्य धनु थे। उनके रथ दुर्गम पर्वत के समान थे और सेनाएँ उनको घेरे रहनेवाले समुद्र के समान थीं। वे वीर कुमार बिलकुल उन श्रीराम और लक्ष्मण के समान थे, जो विश्वामित्र के पीछे गये थे। ८७९

नित्तिय नियम मुऱ्ऱि नेमियान् पादञ् जॆन्नि
वैत्तपिन् मऱैवल् लोर्क्कु वरम्बऱ मणियुम् पॊन्नुम्
पत्तिया न्निरैयुम् पारुम् परिवॊडु नल्हिप् पोनान्
मुत्तणि वयिरप् पूणान् मङ्गल मुहिळ्त्त नन्नाळ् 880

मुत्तु–मोती; अणि वयिरम्–सुन्दर हीरे; पूणान्–इनके बने आभरणोंवाले (चक्रवर्ती); मङ्कलम् मुकिळ्त्तम् नल् नाळ्–मंगल मुहूर्त के दिन में; नित्तिय नियमम् मुऱ्ऱि–नित्यानुष्ठान पूरा करके; नेमियान् पातम्–चक्रपाणि (अपने कुल देवता) के पैरों को; चॆन्नि वैत्त पिन्–अपने सिर पर धारण करने के अनन्तर; मऱै वल्लोर्क्कु—वेद-विद्वानों (ब्राह्मणों) को; वरम्पु अऱ मणियुम्–अपार रत्न; पॊन्नुम्–स्वर्ण; पत्ति आन् निरैयुम्–पंक्तियों में गायों के समूह; पारुम्–और भूमि; परिवॊटुम् नल्कि–प्रेम के साथ दान करके; पोनान्–चले। ८८०

(अब चक्रवर्ती ने भी प्रस्थान किया) उस दिन, जिसमें प्रस्थान का मंगल मुहूर्त पड़ता था चक्रवर्ती ने अपना नित्यकर्मानुष्ठान क्रम से पूरा किया। चक्रपाणि श्रीरंगनाथ उनके कुलदेवता थे। (ब्रह्मा से इक्ष्वाकु महाराज को वह विग्रह मिला और तव से वह अयोध्या में पूजित होता आता था) महाराज ने उनके पैरों को अपने सिर पर धारण किया (यानी दण्डवत की)। फिर वेदज्ञ विप्रों को अपार रत्न, मणि, माणिक्य, स्वर्ण, पंक्तियों में गायों के समूह, और भूमि—यह सव श्रद्धा के साथ दान दिया। खुद मोतियों और रत्नों के आभूषणों से अलंकृत होकर चल पड़े। (दान देना मंगलदायक रस्म है। मोती और हीरे शुभालंकार हैं।)। ८८०

इरुपिऱप् पाळ रॆण्णा यिरर्मणिक् कलश मेन्दि
अरुमऱै वरुक्क मोदि यऱुहुनीर् तॆळित्तु वाळ्त्त
वरन्मुऱै वन्दार् कोडि मङ्गयर् मळलैच् चॆव्वायप्
परुमणिक् कलाबत् तार्पल् लाण्डिशै परविप् पोनार् 881

ऍण्णायिरर्–आठ सहस्र; इरु पिऱप्पाळर्–द्विज; मणिकलचम् एन्ति–सुन्दर पूर्णकुम्भ लेकर; अरु मऱै वरुक्कम् ओति–श्रेष्ठ वेदमन्त्र स्तवन गान करते हुए; अऱुकु नीर् तॆळित्तु–दुर्वादल से, मन्त्रित जल लेकर चक्रवर्ती पर प्रोक्षण कर; वाळ्त्त–आशीर्वाद देते; वरल् मुऱै वन्तार्–वन्दी परम्परा में आये; मळलै चॆव्वाय्–मधुर तुतली बोली बोलनेवाले लाल अधरों की; परुमणि कलापत्तार्–स्थूल मणियों के कलाप से अलंकृत; कोटि मङ्कैयर्–करोड़ स्त्रियाँ; पल्लाण्टु इचै–जयजीव के गीत; परवि पोनार्–गाती हुई चली। ८८१

आठ सहस्र द्विजों ने पवित्र जल भरे रत्नकलश हाथों में लेकर वेद-मंत्र पढ़े। उस तरह मंत्रित जल को पवित्र दूर्वादल द्वारा लेकर उन्होंने चक्रवर्ती पर प्रोक्षण किया। फिर वन्दिनी के कुल में आयी करोड़ सुन्दरी स्त्रियों ने, जो मधुरभाषी लाल मुखोंवाली और कलापालंकृत थीं।

"जयजीव" के गीत गाये और राजा की स्तुति की। (मेखला शायद वस्त्र के अंदर और कलाप आदि वस्त्रों के ऊपर पहने जाते हैं)। ८८१

कण्डिल नॅन्नै यॅन्बार् कण्डन्न नॅन्नै यॅन्बार्
कुण्डलम् वीऴ्न्द दॅन्बार् कुरुहरि दिरिच्चॅन् रॅन्बार्
उण्डुहॉ लॅऴुच्चि यॅन्बा रॉलित्तदु शङ्ग मॅन्बार्
मण्डल वेन्दर् वन्दु नॅरुङ्गिनर् मरुङ्गु मादो 882

मण्टल वेन्तर्–अनेक मण्डलाधिप; मरुङ्कु वन्तु–पास आकर; नॅरुङ्कित्तर्–जमा हो गये; चङ्कम् ऑलित्ततु अॅन्पार्–शंख बजा, कहते; अॅऴुच्चि उण्टु कॉल्–कहीं प्रस्थान है क्या; अॅन्पार्–कहते; अॅन्नैक् कण्टिलन्–मुझे नहीं देखा; अॅन्पार्–कहते; अॅन्नै कण्टन्न्–मुझको देखा; अॅन्पार्–कहते; कुण्टलम् वीऴ्न्ततु–कर्णकुण्डल गिर गये; अॅन्पार्–कहते; इनि कुरुकु–अब पास जाना; अरितु–कठिन है; अॅन्पार्–कहते। ८८२

अनेक मंडलाधिपति चक्रवर्ती से भेंट करने आये थे। (उनको शायद विदित नहीं था कि चक्रवर्ती मिथिला जा रहे है) कुछ ने कहा— 'शंख बजता है' तब क्या चक्रवर्ती कहीं प्रस्थान करनेवाले हैं?—कुछ ने पूछा, कुछ आगे गये पर लौट आये और बोले कि मुझपर उनकी दृष्टि पड़ी ही नहीं। कुछ राजा लोगों ने कहा कि उन्होंने मुझे निहारा। भीड़-भम्भड़ में कुछ राजाओं के कर्णकुण्डल खुलकर गिर गये। उन्होंने शिकायत की कि कुण्डल कहीं गिर गये। कुछ राजाओं ने कहा कि अब चक्रवर्ती के पास पहुँचना असाध्य है। ८८२

पॉऱ्ऱॊडि महळि रूरुम् पॉलङ्गॉडार्प् पुरवि वॅळ्ळम्
शुऱ्ऱुबु कमलम् पूत्त तॊडुकडर् ऱिरैयिऱ् चॅल्लक्
कॉऱ्ऱवेऩ् मन्नर् शॅङ्गैप् पङ्गयक् कुऴाङ्गळ् कूम्ब
मऱ्ऱॊरु कदिरो नॅन्न मणिनॅडुन् देरिऱ् पोनान् 883

पॉन् तॉटि मकळिर्—स्वर्ण-कंकणधारिणी स्त्रियों की; ऊरुम्—सवारी के; पॉलम् कॉल् तार्—स्वर्ण के बने, हारोंवाले; पुरवि वॅळ्ळम्—अश्व का बड़ा दल; चुऱ्ऱुपु—चारों ओर घेरकर; कमलम् पूत्त—कमल पुष्पित; तॉटु कटल् तिरैयिन् चॅल्ल—(सगरपुत्र खनित) सागर की तरंगों के समान चलते; कॉऱ्ऱम् वेल् मन्नर्—विजयी भालेवाले राजाओं के; चॅम् कै—लाल हाथरूपी; पङ्कयम् कुऴाङ्कळ्—कमल-समूह; कूम्प—बन्द होते; मऱ्ऱु ऑरु कतिरोन् अॅन्न—अन्य एक अंशुमाली के समान; मणि नॅटु तेरिल्—रत्नखचित, उन्नत रथ पर; पोनान्—गये। ८८३

राजा दशरथ एक दूसरे विचित्र सूर्य के समान हैं। स्वर्ण कंकण-धारिणी स्त्रियाँ जिन पर बैठी हुयी जाती हैं वे स्वर्ण दामों से भूषित अश्व, सागर की तरंगों के समान चलते हैं। उन तरंगों पर स्त्रियाँ विकसित कमलों के समान हैं। दूसरी ओर विजयिनी शक्तियाँ धारण करनेवाले

राजाओं के लाल हाथरूपी कमल बंद हो जाते हैं। (यानी वे हाथ जोड़े हुये हैं, विनय प्रदर्शन के हेतु) (एक ही समय पर कुछ कमल विकसित होते हैं और कुछ अन्य कमल उन्मीलित। यही विचित्रता है) ऐसा वे एक रत्नखचित रथ पर सवार हो जा रहे थे। ८८३

आऱ्ऱतडु विशुम्बै मुट्टि मीण्डहऩ् ऱिशैह ळॆङ्गुम्
पोऱ्ऱतदङ् गॊरुवर् तम्मै यॊरुवर्हट् पुलङ्गॊ ळामैत्
तीऱ्ऱतडु शॆऱिऩ्द दोडित् तिरैनॆड्डुङ् गडलै यॆल्लाम्
तूऱ्ऱतडु सगर रोडुम् पहैत्तॆनत् तूळि वॆळ्ळम् 884

तूळि वॆळ्ळम्–धूलि की विपुल राशि; आऱ्ऱततु–उठ, फैलकर; विचुम्पै मुट्टि–आकाश से टकराकर; मीण्टु–लौटी; अकल् तिचैकळ् ऍङ्कुम्–लम्बी, दिशाओं भर में; पोऱ्ऱततु–ढाँप गई; अङ्कु–वहाँ; ऑरुवर् तम्मै ओरुवर्–एक को दूसरे को; कण् पुलम् कॊळ्ळामै–आँख नहीं देख सके, ऐसा; तीऱ्ऱततु–कर दिया; चॆऱिन्ततु ओटि–घने रूप से जाकर; चकररोटुम् पकैत्ततु ॲन्ऩ–सगरपुत्रों से शत्रुता करती सी; तिरै नॆटु कटलै ॲल्लाम्–तरंग-संकुल विशाल सागर, सब को; तूऱ्ऱततु–पार दिया। ८८४

धूलि की विपुल राशि उठी और उसने गजब कर दिया। वह आकाश से टकराकर लौटी; सारी दिशाओं में भरी उसने एक दूसरे को आँखों से देखना असाध्य कर दिया। फिर वह गयी, और मानो सगर-पुत्रों से वैर निवाह रही हो, उसने तरंगसंकुल विशाल समुद्र को पाट दिया। ८८४

शङ्गमुम् पणैयुङ् गॊम्बुन् दाळमुङ् गाळत् तोडु
मङ्गल वेरि शॆय्द पेरॊलि मळैयै योट्टत्
तॊङ्गलुङ् गुडैयुन् दोहैप् पिच्चमुञ् जुडरै योट्टत्
तिङ्गळ्वॆण् कुडैकण् डोडत् तेवरु मरुळच् चॆऩ्ऱाऩ् 885

चङ्कमुम्–शंख; पणैयुम्–बाँसुरियाँ; कॊम्पुम्–शृंग; काळत्तोटु–काहल; ताळमुम्–ताल और; मङ्कल पेरि–मंगल भेरियाँ; चॆय्त पेर् ऑलि–इनसे उत्पन्न बड़ा शोर; मळैयै ओट्ट–मेघ-गर्जन को भगाता है; तॊङ्कलुम्–(मोरपंख के बने) झालर; कुटैयुम्–रेशम के आतपत्र; तोकै पिच्चमुम्–मोरपंख के छाते; चुटरै ओट्ट–धूप को भगाते; वॆण्कुटै कण्टु–श्वेत छत्र देखकर; तिङ्कळ्–चन्द्र; ओट–हारकर भाग गया; तेवरुम् मरुळ–देव चकित हुए; चॆन्ऱाऩ्–(राजा इस ठाट के साथ) गये। ८८५

शंख, बाँसुरियाँ, शृंगियाँ, ताल, मंगलभेरियाँ, इसके नाद के सामने मेघ गर्जन डरकर भाग गया (कुछ नहीं था)। मोरपंख के झालर, रेशमी आतपत्र, मोरपंख के छाते; ये धूप को भगा देते थे (छिपा देते थे)। श्वेत छत्र के सामने चंद्र भाग गया। देव चक्रवर्ती के इतने वैभव

को देखकर चकित हो गये। इस ठाट के साथ चक्रवर्ती गये। (राजा का कूच है; इनकी विजय और शत्रुओं की हार शोभा देती है। अतः हारी हुई वस्तुओं की चर्चा है।)। ८८५

मन्दिर गीद वोदै वलम्बुरि मुळङ्गु मोदै
अन्दण राशि योदै यार्त्तॅळु मुरशि नोदै
कन्दडु कळिऱ्ऱि नोदै कडिहयर् कवियि नोदै
इन्दिर तिरुवन् शॅल्ल वॅळुन्दन तिशैह ळॅल्लाम् 886

इन्तिर तिरुवन्—इन्द्र-सम श्रीमान; चॅल्ल—जाते रहे, तब; मन्तिरम् कीतम् ओतै—वेदमन्त्र के गायन का स्वर; वलम्पुरि मुळङ्कुम् ओतै—दक्षिणावर्त शंख के बजने का नाद; अन्तणर् आचि ओतै—ब्राह्मणों के मंगलाशासन की ध्वनि; आर्त्तु ॲळुम्—थर्राकर उठनेवाला; मुरचिन् ओतै—ढोल का नर्दन; कन्तु अटु—आलान तोड़नेवाले; कळिऱ्ऱिन् आतै—गजों का शब्द; कटिकैयर्—"घटिकों" का (समय का ज्ञान देनेवाले लोगों का); कवियिन् ओतै—कविता में वाचन का स्वर; तिचैकळ् ॲल्लाम्—सभी दिशाओं में; ॲळुन्तन—प्रतिध्वनित होते हुए उठे। ८८६

कितनी ही तरह के नाद सुनाई देते है। चक्रवर्ती इंद्र समान श्रीमंत थे। जब वे जाते रहे तब वेदमंत्र गायन का नाद, दक्षिणावर्त शंख का नाद, विप्रों का मंगलाशासन नाद, ढोलों का तुमुल नाद, गजों के खूंटे तोड़ने का और चिघाड़ने का नाद, समय का ज्ञान दिलानेवाले घटिक जो कविता सुनाते हैं उसका नाद ये सब सारी दिशाओं में गूजते हुए उठे। ८८६

नोक्किय दिशैह डोरुन् दन्नये नोक्किच् चॅल्लुम्
वीक्किय कळऱ्कान् मन्नर् विरिन्दकैम् मलर्हळ् कूप्पत्
ताक्किय कळिरुन् देरुम् पुरवियुम् पडैञर् ताळुम्
आक्किय तूळि विण्णु मण्णुल हाक्कप् पोनान् 887

नोक्किय तिचैकळ् तोऱुम्—जिस-जिस दिशा में वे देखते है उस-उस में; तन्नैये नोक्कि—उनको देखते हुए; चॅल्लुम्—जानेवाले; वीक्किय कळल् काल् मन्नर्—कसकर बँधे पायलोंवाले राजा लोग; विरिन्त कै मलर्कळ् कूप्प—खुले हस्तकमलों को उन्मीलित कर (हाथ जोड़कर); ताक्किय—परस्पर टकरानेवाले; कळिऱुम्—गज; तेरुम्—और रथ; पुरवियुम्—अश्व; पटैञर् ताळुम्—पदाति वीरों के पैर; आक्किय तूळि—(उनसे) उठी धूलि; विण्णुम्—आकाश को भी; मण्णुलकु आक्क—भूलोक बनाती रही, ऐसा; पोनान्—गये। ८८७

महाराज के साथ अन्य राजा भी जाने लगे। जहाँ कहीं चक्रवर्ती दृष्टि दौड़ाते वहाँ पायलधारी राजा लोग हाथ जोड़े दिखाई देते थे। रथ, गज, तुरग और पदाति वीरों के चलने के कारण जो धूलि उठी उसने आकाश को भी भूलोक (की तरह धूलि भरा) बना दिया। ८८७

वीररुङ् कळिऱुन् देरुम् पुरवियु मिडैन्द शेनै
पेर्विड मिल्लै मऱ्ऱो रुलहिल्लै पॅयर्व दाह
नीरुडै याडै याळु नॅळित्तनण् मुदुहै यॆन्ऱाल्
पार्पॉऱै नीक्कि नानॆन् ऱुरैत्तदॆप् परिशु मन्नो 888

वीररुम्–पदाति के वीर; कळिरुम्–गज; तेरुम्–और रथ; पुरवियुम्–अश्व; मिटैन्त चेनै–मिलित सेना; पेर्वु इटम् इल्लै–हटने के लिए स्थान नहीं है; पॅयर्वतु आक–जहाँ हटकर जाये ऐसा; मऱ्ऱु ओर् उलकु इल्लै–अन्य लोक नहीं है; नीर् उटै आटैयाळुम्–समुद्र-वसना ने भी; मुतुकै नॆळितृतनळ्–पीठ को वल देती है; ऍन्ऱाल्–तो; पार् पॊऱै नीक्कितान्–भूभार निवारण किया (चक्रवर्ती ने); ऍन्ऱु उरैत्ततु–यह प्रशंसा-कथन; ऍ परिचु–कैसा (ठीक है)। ८८८

पदाति, गज, रथ, और तुरग की चतुरंगिनी सेना के लिए इस लोक में स्थान नहीं रहा। दूसरे लोक में जाना चाहे तो ऐसा कोई दूसरा लोक नही है। समुद्र-वसना पृथ्वी की पीठ पर इस सेना के भार के कारण वल पड़ गया। इस स्थिति में राजा चक्रवर्ती का "भूभार निवारक" का यशस्वी नाम कैसे उचित माना जाय ? (इन्हीं की सेना का भार तो भूमि के लिए भारी हो रहा !)। ८८८

इन्नण मेहि मन्नन् योशनै यिरण्डु शॆन्ऱान्
पॊन्मलै पोलु मिन्दु शयिलत्तिन् शारल् पुक्कान्
मन्मदक् कळिऱु मादर् कॊङ्गयु मार नम्बुम्
तॆन्वरैच् चान्दु नाऱच् चेनयु मिऱुत्त दन्ऱे 889

मन्नन्–राजा (दशरथ); इन्नणम् एकि–इस तरह जाकर; योचनै इरण्टु चॆन्ऱान्–दो योजन दूर गये; पॊन् मलै पोलुम्–स्वर्णमय (मेरु) पर्वत सदृश; इन्तु चयिलत्तिन् चारल् पुक्कान्–इन्दुशैल पर्वत की तलहटी में जा पहुँचे; मन्मतन् कळिऱुम्–मन्मथ का गज; नाऱ–फैल आया, तव; मातर् कॊङ्कैयुम्–स्त्रियों के स्तन; मारन् अम्पुम्–मदन के शर (फूल); तॆन् वरै चान्तुम्–और दक्षिणी (मलय) पर्वत के चन्दन; नाऱ–गन्ध फैलाते हैं; चेनैयुम् इऱुत्ततु–सेना भी वहीं पड़ाव डाल गई। ८८९

चक्रवर्ती इस ठाट के साथ जाकर चंद्रशैल (एक कल्पित) पर्वत की तराइयों में पहुँचे। तव "मन्मथ का गज" कहलानेवाला अंधकार फैला। स्त्रियों के स्तन, मार के शररूपी फूल (स्त्रियों के सिरों पर के और वहाँ रहे उपवनों उद्यानों के) और मलय पर्वत के चंदन आदि के गंध भी फैले। सेना ने वहीं पड़ाव डाला। (मन्मथ का गज स्त्रियों का केश भी कहा जाता है। तब केश से फूलों का और स्तनों से चंदन का गंध फैला—यह अर्थ किया जा सकता है। ८८९

14. वरैक् काट्चिप् पडलम् (शैल दर्शन पटल)

[चंद्रशैल नाम के पर्वत का कही कोई अस्तित्व असल में नहीं है न मूल (वाल्मीकीय) रामायण मे इसका नाम है। यह पूर्णरूपेण कम्बन् की कपोल कल्पना है। इस पटल और आगे के तीन पटलों में उस पर्वत पर लोगों ने अपना मन कैसे बहलाया, इसका सरस वर्णन है। काव्य मे सभी मानवीय व्यापारों का वर्णन अपेक्षित है, और सफल कवि के लिए किसी भी वस्तु और किसी भी घटना में कविता मिल जाती है। इन चारों अध्यायों में श्रृंगार रस की बातें खूब आती है। पाठक देख सकते है कि श्रृंगार में काव्य है और कम्बन् के श्रृगार में काव्य अपने सबसे मनोरम रूप में है।]

अलहि लामद यात्तयु मवर्ट्रोडु मिडैन्द
तिलह वाणुदर् पिडिहळुड् गुरुळयुञ् जॅरिन्द
उलवै नीळ्वनत् तूदमे योत्तन यूदत्
तलैव नेर्येन्प् पोलिन्ददु चन्दिर शयिलम् 890

अलकु इला–असंख्यक; मतम् यात्तैयुम्–मत्तगज; अवर्ट्रोटु मिटैन्त–उनके साथ मिली; तिलकम् वाळ् नुतल्–तिलक सहित शोभित भालवाली; पिटिकळुम्–हथिनियाँ; कुरुळैयुम्–कलभ (गजशावक); चॅरिन्त–मिले हुए झुण्ड; उलवै नीळ् वनत्तु–तरुसंकुलित विशाल वन के; ऊतम् ऑत्तन–जंगली गजसमूह के समान लगे; चन्तिर चयिलम्–चन्द्रशैल गिरि; यूतत् तलैवन् ॲन पोलिन्ततु–यूथपति के समान लगा। ८९०

चंद्रशैल पर्वत पर हाथियों का वड़ा जमघट हो गया। उसमें बड़े-बड़े हाथी थे, तिलक सहित सुन्दर हथिनियाँ थी और छोटे-छोटे हाथी के बच्चे थे। ये राजा के हाथी थे। उधर शैल पर भी जंगली हाथी पहले से थे। चंद्रशैल पर्वत उन गजयूथों के पति के समान लगता था। ८९०

कोवै यार्वड कोळुङ्गुव डोडिदर निवन्द
आवि वेट्टन वरिशिलै यनङ्गन्मेर् कोण्ड
पूवै वाय्च्चियर् मुलैशिलर् पुयत्तोडुम् पूट्टत्
तेव दारत्तुञ् जन्दिनुम् पूट्टिन शिनमा 891

पूवै वाय्च्चियर्–सारिकाओं की सी बोलीवाली; कोवै आर्–हारों से अलंकृत (गगनस्पर्शी); वट कोळु कुवटु–उत्तर के उर्वर पर्वत को (वट वृक्ष की उर्वर डालों को); ओटितर–लजाते हुए (तोड़ते हुए); निवन्त–उन्नत; आवि वेट्टन–प्रेमियों के प्राणग्राहक (जलाशय चाहनेवाले); वरिचिलै अनङ्कन्–वन्धनयुक्त धनुर्धर अनंग; मेल् कॉण्ट–जिनको साधन बनाता है (पुरुषों की कामोत्तेजना को तीव्र करने के लिये); मुलै–(वे) स्तन; चिलर् पुयत्तोटुम् पूट्ट–कुछ पुरुषों की भुजाओं से गुंथ गये; चितम् मा–क्रोधी गज; तेवतारत्तुम्–देवदारों से; चन्तिनुम्–और चन्दन (तरुओं) से; पूट्टिन–बाँधे गये (स्तन में और गज में श्लेष है। अतः गज सम्बन्धी अर्थ कोष्टक के अन्दर दिये गये हैं)। ८९१

पुरुषों ने स्त्रियों को हाथियों की पीठ पर से नीचे उतारा। तव उनके स्तन पुरुषों की भुजाओं से चिपटे। (उन स्तनों और हाथियों में श्लेष है) उन मधुर वयनियों के स्तनों पर हार थे; हाथी आकाश छूते हुए ऊँचे थे। स्तन उत्तर के मेरुपर्वत को तोड़ते हुये (झुकाते हुये)—यानी मेरुपर्वत से भी उन्नत थे; हाथी वट वृक्षों की डालों को तुड़ा दें इतने ऊँचे थे। स्तन पुरुषों के प्राणहरण के इच्छुक थे (यानी स्तनों को देखकर पुरुष सुध-बुध खोकर अधीर हो जाते है); हाथी प्यास से जलाशय के इच्छुक थे। स्तन वे साधन (वाहन) हैं जिनको मन्मथ पुरुषों के मन को कामोत्तेजित वनाने के लिये अपना लेता है। हाथी मन्मथ-सदृश पुरुषों के वाहन हैं। वे पुरुष अपनी प्रेयसियों को इस तरह उतारकर जिससे उनके स्तन इनकी भुजाओं से चिपट जायें, वाद में हाथियों को देवदारु और चंदन-तरुओं से वाँध देते है। (तव वे हाथी क्रुद्ध हो जाते हैं।)। ८९१

नेरॊ डुङ्गलिल् पहैयित्तै नीदियाल् वॆल्लुम्
शोर्वि डम्बॆऱा वुणर्विनन् शूऴ्च्चिये पोलक्
कारॊ डुन्दॊडर् कवट्टॊऴिन् मरामरक् कुवट्टै
वेरॊ डुङ्गॊडु गिरियॆन नडन्ददोर् वेऴम् 892

ओर् वेऴन्—एक हाथी; नेर् ऑटुङ्कल् इल्—सीधे अदम्य; पकैयित्तै—शत्रु को; नीतियाल् वॆल्लुम्—(सामदानादि) उपायों द्वारा हराने को; चोर्वु इटम् पॆऱा—अप्रमत्त; उणर्विनन्—बुद्धिशाली (के); चळ्च्चिये पोल—उपाय के समान; कारॊटुम् तॊटर्—मेघमण्डल स्पर्शी; कवट्टु—डालों सहित; ऑऴिल्—सुन्दर; मरामरम् कुवट्टै—साल वृक्ष के तने को; वेरॊटुम् कॊटु—जड़ के साथ उखाड़ लेकर; किरि ऎन नटन्ततु—पर्वत के समान चला। ८९२

एक हाथी मेघमंडलस्पर्शी डालों के एक साल वृक्ष से वँधा हुआ था। उसने मुक्त होने की इच्छा में एक उपाय किया। वह उस पेड़ को ही समूल उखाड़ लेकर पर्वत के समान चला गया। तव वह उस राजा के समान था जिसकी वुद्धि इतनी सूक्ष्म और तीव्र है कि वह सीधे रास्ते से कावू में न आनेवाले शत्रु को दूसरा उपाय करके हरा देता है और अपनी इष्ट सिद्धि करा लेता है। ८९२

तिरण्ड ताऴॆॣडुन् जॆऱिपणै मरुदिडै यॊडियप्
पुरण्डु पिन्वरु मुरलॊडु पोहुमाल् पोल
उरुण्डु कारॊडर् पिऱहिडु तऱियॊडु मॊऱुङ्गे
इरण्डु मामर मिडैयिऱ नडन्ददोर् यानै 893

तिरणट ताऴ्—पुष्ट तने; नॆटु चेऱि पणै—लम्वे और घने डालोंवाले; मरुतु इटै—अर्जन तरुओं के मध्य से; ऒटिय—उनको तुड़ाते हुए; पिन् पुरण्टु वरुम् उरलॊट—पीछे लुढ़कती आती ओखली के साथ; पोकुम् माल् पोल—जो गये उन विष्णु (श्रीकृष्ण)

के समान; ओर् यात्तै–एक हाथी; उरुण्ट काल्तोंटर् पिऱकिट्ट–लुढ़कते हुए, पैरों से लगे, पीछे आनेवाले; तऱियोंटुम्–खूँटे के साथ; इरण्टु मा मरम् ओरुङ्के इऱ–दो बड़े पेड़ों को एक साथ तुड़ाते हुए; इटै नटन्ततु–उन पेड़ों के बीच से चला। ८६३

एक हाथी ने अपना खूँटा तुड़ाया और वह उसको पीछे घसीटते हुए दो बड़े वृक्षों के बीच से गया। तब वे दोनों वृक्ष उखड़कर गिर गये। वह आगे भी जाता रहा और खूँटा उसके पैरों के पीछे लुढ़कता जाता था। उस दृश्य को देखकर श्रीकृष्ण की याद आती है। कृष्णचंद्र ओखली से बँधे थे। वे उसको खींचते हुए दो अर्जुनवृक्षों के बीच से गये। तब वे दोनों वृक्ष उखड़कर गिर गये। ८९३

कदङ्गॊळ् शीऱ्ऱत्तै याऱ्ऱुवा निऩियत्त कऴऱिप्
पदङ्गॊळ् पाहऩु मन्दिरि यॊत्ततऩ् पऩ्नूल्
विदङ्ग ळावऩ यावयु मॆल्लॆऩ विळम्बुम्
इदङ्गळ् कॊळ्हिला विऱैवऩै यॊत्तदोर् यात्तै 894

ओर् यात्तै–एक गज; पल वितङ्कळ् आवत्त–विविध प्रकार के; नूल् यावैयुम्–सभी नीतिशास्त्र (के आधार पर); मॆल्लॆऩ विळम्पुम्–(मन्त्री जो) धीरे-धीरे मधुर ढंग से कहता है; इतङ्कळ्–उन हितू वचनों को; कॊळ्किला–न माननेवाले; इऱैवत्तै ऒत्ततु–राजा के समान था; कतम् कॊळ् चीऱ्ऱत्तै–भागने की प्रेरणा देनेवाले क्रोध को; आऱ्ऱुवान्–शान्त करने के लिए; इनियत्त–मधुर बातें; कऴऱि–कहकर; पतम् कॊळ्–वश में लाने के लिए; पाकनुम्–महावत भी; मन्तिरि ऒत्तान्–मन्त्री सम हुआ। ८६४

एक हाथी उस राजा के समान उदण्ड था जो अपने मंत्री के हित-वचन नहीं सुनता था, यद्यपि मंत्री नीतिशास्त्रों के आधार पर धीरे-धीरे मधुर ढंग से राजा के ही हित के लिए कहता था। हाथी का महावत उस मंत्री के समान रहा। यानी हाथी पीलवान की बात नहीं माना और खूँटा तोड़कर भागा। ८९४

माऱु काण्किल दाय्निऩ्ऱु मऴैयॆऩ मुऴङ्गुम्
ताऱु पाय्हरि वऩकरि दण्डत्तैत् तडविप्
पाऱु पिऩ्शॆलक् कालॆऩच् चॆल्वदु पण्डोर्
आऱु पोहिय वाऱुपो लाऱुपोऩ् ऱुदुवे 895

माऱु काण्किलताय्–शत्रु न पाकर; निऩ्ऱु–अतृप्त होकर; मऴै ऎऩ मुऴङ्कुम्–मेघ के समान गरजनेवाला; ताऱु पाय् करि–अंकुश चभा एक हाथी; वनम् करि–जंगली हाथी के; तण्टत्तै तटवि–रास्ते को (गन्ध से) जानकर; पाऱु पिन् चॆल–बाजों को पीछे-पीछे आकृष्ट करता हुआ; काल् ऎऩ चॆल्वतु–वायु के समान (वेग से) जाता है, वह; पण्टु ओर् आऱु पोकिय–पहले एक नदी के गमन के; आऱु–मार्ग में; पोम्–जानेवाली; आऱु पोऩ्ऱतु–नदी के समान था। ८६५

एक हाथी था, जो युद्ध में जाने का अभ्यासी था। यहाँ किसी शत्रु

के न होने से वह अतृप्त और झुंझलाहट-भरा था। उसको वश में लाने के लिए महावत ने अंकुश का प्रयोग किया। वह और भी भड़क उठा। तब किसी जंगली हाथी के आगे जाने का भान उसे मिल गया। वह उसी के रास्ते पर, अपने मद जल से और रास्ते में जीवों को हत करके जाने से, बाजों और चीलों को आकृष्ट करता हुआ चला। तब ऐसा लगा कि एक नदी के रास्ते पर दूसरी नदी की धारा वहती जा रही हो। ८९५

पात्त यानयिऩ् पदङ्गळिड़् पडुमद नाड़क्
कात्त वङ्गुश निमिर्ऩ्दिडक् काल्पिडित् तोडिप्
पूत्त वेळ्ळिलैप् पालैयैप् पॉडिप्पॉडि याहक्
कात्ति रङ्गळाड़् ड़लत्तॉडुन् दॅय्त्ततोर् कळिड़ु 896

पात्त–पंक्तिबद्ध; यानैयिऩ्–गजों के; पतङ्कळिल् पट्टम्–बीच से उत्पन्न होनेवाली; मतम् नाड़–मदजल गन्ध के आने पर; ओर् कळिड़ु–एक गज; कात्त अङ्कुचम् निमिर्ऩ्तिट–वशीकारक अंकुश को सीधा करते हुए (बेकार बनाकर); काल् पिटित्तु ओटि–(गन्ध की दिशा को) हवा के सहारे जानते हुए भागकर; पूत्त एळिलै पालैयै–पुष्पित सप्तपर्णी वृक्ष को; पॉटि पॉटि आक–बुकनी करते हुए; कात्तिरङ्कळाल्–अपने अगले पैरों से; तलत्तॉटुम् तेय्त्त–भूमि पर रौंद दिया। ८९६

सप्रपर्णी वृक्ष पुष्पित थे। (उनसे गजमद का-सा गंध आता था) एक मत्त गज ने उसको सूंघकर समझा कि पंक्तियों में गज बंधे हैं। वह भागने लगा। महावत ने अंकुश लगाया तो अंकुश का वक्रभाग सीधा हो गया। वह बेकार हो गया। पर हाथी भागा और पेड़ों के पास आ गया। उसने गुस्से में उन पेड़ों को तहस-नहस कर दिया। ८९६

तरुण्ड मेलवर् शिड़ियवर्च् चेरिऩु मवर्तम्
मरुण्ड पुऩ्मयै माड़्ड़ुव रॅऩ्ऩुमिदु वळक्के
उरुण्ड वाय्तॉड़ुम् पॊऩ्ऩुरु ळुरैत्तुरैत् तोडि
इरुण्ड कल्लयुन् दऩ्निड़ माक्किय विरदम् 897

तॅरुण्ट–सुलझी हुई बुद्धिवाले; मेलवर्–बड़े लोग; चिड़ियवर् चेरिऩुम्–छोटों के साथ मिलें तो भी; अवर् तम् मरुण्ट पुऩ्मैयै–उनकी भ्रमित नीचता को; माड़्ड़ुवर्–बदल देंगे; ऎऩ्ऩुम् इतु–बात यह; वळक्के–मसल है; इरतम्–(रथ) ने; पॊऩ् उरुळ्–स्वर्णचक्र; उरुण्ट वाय् तॉड़ुम्–जहाँ-जहाँ घूमे वहाँ; उरैत्तु उरैत्तु ओटि–सोना घिस जाये ऐसा घूमकर; इरुण्ट कल्लैयुम्–काले पत्थर को भी; तम् निड़म् आक्किय–अपने रंग का बना दिया। ८९७

यह मसल मशहूर है कि सुलझे हुये विवेकशील महानपुरुष अपने संपर्क में आनेवाले नीचों की नीचता को बदल देते हैं। उसी प्रकार रथ अपने पहियों के स्वर्ण द्वारा, जहाँ-जहाँ वह जाता था, वहाँ रहनेवाले पत्थरों पर घिस-घिसकर उस पत्थर को स्वर्ण-वर्ण बना देता था। ८९७

कॊव्वै नोक्किय वाय्हळै यिन्दिर कोपम्
कव्वि नोक्किन वॆन्ऱुहॊल् काट्टिन मयिल्हळ्
नव्वि नोक्कियर् नलङ्गॊण्मे कलैपॊलञ् जायर्
चॆव्वि नोक्किय वरुवन पोल्वन तिरिन्द 898

काटु इनम् मयिल्कळ्–जंगल में रहनेवाले झुण्डों के मोर; नव्वि नोक्कियर्–मृगनयनी स्त्रियों के; कॊव्वै नोक्किय वाय्कळै—बिम्बफल-समान मुखों को (देख); इन्तिर कोपम् कव्वि नोक्कित–बीरबहूटियाँ पकड़कर आश्रय देख रही हैं; ॲन्ऱु कॊल्–यह समझकर, शायद; नलम् कॊळ् मेकलै–सुचारु मेखलाओं और; पॊलम् चायल् चॆव्वि–स्वर्णकान्ति की सुन्दरता को; नोक्किय वरुवत पोल्वत–देखने के लिए आते-जाते से; तिरिन्त–घूमे। ८६८

जंगली मोर मानो मृगनयनी स्त्रियों के सौंदर्य की छबि को देखने की इच्छा से आते जाते हैं, उनके सामने घमे। (किन्तु असली कारण दूसरा था) उन स्त्रियों के बिंबफल के समान अरुण अधर और ओष्ठ मोरों को बीरबहूटियों (लाल बरसाती कीड़े जिन्हें इंद्रगोप भी कहते हैं) के समान दिखे और उन्होंने सोचा कि वे स्त्रियों के मुखों में आश्रय ढूँढ रहे हैं। (बीरबहूटियाँ स्त्रियों के अधरों की सुन्दरता को देखती सी वहाँ आश्रय ढूँढ रही थीं— ऐसा समझकर मोर उनकी छटा को देखते से उनके सामने घूम रहे थे। दूसरों को बहानेबाज़ समझने वाले खुद बहाने-बाज़ी करते हैं।)। ८९८

उय्क्कुम् वाशिह ळिळिन्दिळ वन्नत्ति नॊदुङ्गि
मॆय्क्क लाबमुङ् गुळैहळु मिळैहळुम् विळङ्गत्
तॊक्क मॆन्मर निळल्पडत् तुवन्ऱिय शूळल्
पुक्क मङ्गयर् पूत्तकॊम् बामॆनप् पॊलिन्दार् 899

उय्க்कुम वाचिकळ्–अपनी सवारी के अश्वों पर से; इळिन्तु–उतरकर; इळ अन्नत्तिन् ऒतुङ्कि–बाल हंसों के समान पग रखकर; मॆय्–शरीर के; कलापमुम्–कलाप और; कुळैकळुम्–कुण्डल और; इळैकळुम्–अन्य आभरण; विळङ्क–भासमान हैं, तब; तॊक्क मॆल् मरम्–झुण्ड के कोमल तरु; निळल् पट–जो छाया देते हैं; तुवन्ऱिय चूळल्–उनसे भरे स्थान में; पुक्क–प्रविष्ट; मङ्कैयर्–स्त्रियाँ; पूत्त कॊम्पु आम् ॲत–पुष्पित डालों के समान; पॊलिन्तार्–भासमान रहीं। ८६६

स्त्रियाँ अश्वों पर से उतरीं, बालहंस के समान पग धरती हुयी घनी छाया फैलाने वाले तरुओं के झुंड में गयीं। तब उनके शरीर पर कलाप, हार, कुंडल और अन्य आभरण प्रकाशमान थे; इस कारण वे पुष्प-भरी डालों या लताओं के समान लगीं। ८९९

तळङ्गॊ डामरै यॆन्नत्तळि रडियिनु मुहत्तुम्
वळङ्गॊण् मालैवण् डलमर वळिवरुन् दिन्नराय्

विळङ्गु तम्मुरुप् पळिङ्गिडै वळिप्पड वेऱोर्
तुळङ्गु पाऱैयिऱ् ऱोळिय रयिर्त्तिडल् तुयिन्ऱार् 900

वऴि वरुन्तित्तराय्–पथश्रान्त; तळिर् अटियिनुम्–पल्लव चरणों और; मुकत्तुम्–मुखों को; तळम् कोळ् तामरै अॅन–दलयुक्त कमल समझकर; वळम् कोळ्–हृष्ट-पुष्ट; मालै वण्टु–और श्रेणीवद्ध भ्रमर; अलमर–मँडराते हैं, ऐसे; विळङ्कु तम् उरु–शोभायमान उनके रूप; पळिङ्कु इटै–स्फटिक मध्य प्रतिबिम्बित हों; वेऱु ओर्–अन्य; तुळङ्कु पाऱैयिल्–जिसमें उनका प्रतिबिम्बित है उस शिला पर; तोऴियर् अयिर्त्तिट–सखियाँ भ्रमित हो जायें, ऐसा; तुयिन्ऱार्–सोईं। ६००

लंबी यात्रा के कारण स्त्रियाँ श्रांत हो गयीं थीं। जाकर स्फटिक शिला पर लेट गयीं। तब उनके चरणों और मुखों पर भ्रमर उनको कमल समझकर झुंडों में मँडराने लगे। उनका रूप उन शिलाओं पर प्रतिबिंबित होता था जिन पर वे लेटीं थीं; और पास रही स्फटिक शिलाओं पर भी। उन प्रतिबिंबों को देखकर उनकी सखियाँ भ्रम में पड़ गयीं कि यह हमारी नायिका इधर कहाँ आ लेटी है। ९००

पिडिपुक् कायिडै मिन्नॊडुम् पिऱङ्गिय मेहम्
पडिपुक् कालॆन्नप् पडितरप् परिपुरम् पुलम्बत्
तुडिपुक् कायिडैत् तिरुमह डामरै तुऱन्दु
कुडिपुक् काळॆन्नक् कुडिल्पुक्कार् कॊडियिडै मडवार् 901

मिन्नॊटुम् पिऱङ्किय मेकम्–बिजली से प्रकाशित मेघ; पटि पुक्काल् अॅन–पृथ्वी पर आ गये हों, ऐसे; पिटि–हथिनियाँ (जिनपर बिजली-सम स्त्रियाँ बैठी आई थीं); आयिटै पुक्कु–उस तलहटी में आकर; पटि तर–(उनको उतरने देने के लिए) भूमि पर बैठती हैं तब; कॊटि इटै मटवार्–लता-सी लचकती कमरवाली स्त्रियाँ; परिपुरम् पुलम्प–नूपुरों को झंकृत करते हुए; तुटि पुक्कु–डमरू आकर; आय् इटै–तुले ऐसी कमर की; तिरु मकळ्–श्री लक्ष्मीदेवी; तामरै तुऱन्तु–(अपना निवास-स्थान) कमल त्यागकर; कुटि पुक्काळ् अॅन–आकर वास करने लगी, ऐसा; कुटिल् पुक्कार्–अपने झोपड़ों में प्रविष्ट हुईं। ६०१

हथिनियाँ अपने ऊपर सवार रही स्त्रियों के साथ मेघों के सदृश दिखती थीं। वे, उस तराई में आकाश के मेघ जैसे भूमि पर आ गये हों, ऐसे आयी। वहाँ आने पर वे स्त्रियों को उतरने देने के लिए भूमि पर बैठ गयीं। तब लता सी लचकनेवाली कमरवाली स्त्रियाँ उतरीं। फिर चलने लगीं तो नूपुर नाद कर रहे थे और कटि डमरू के समान लगी। डमरू के समान कटिवाली श्रीलक्ष्मीदेवी मानो अपना वासस्थान कमल छोड़कर इन खेमों में जाकर ठहर गयी हों, ऐसी एक-एक स्त्री चलकर अपने-अपने खेमे में घुस गयी। ९०१

उण्णमु दरुत्तियिळै योर्नहर् कोणर्न्द
तुण्णॆन्नु मुळ्क्किन्न तुरुक्कर्त्तर वन्द

मण्महडन् मार्बिन्नणि वन्नशर मॅन्नप्
पण्णुरु वयप्पुरवि पन्दियि निरैत्तार् 902

तुरुक्कर् तर वन्त–तुरुष्कों द्वारा लाये गये; इळैयोर्–दासों के द्वारा; उण् अमुतु अरुत्ति–सुखाद्य चारा खिलाकर; नकर् कॉणर्न्त–नगर से इधर लाये गये; तुण् ॲनुम् मुळक्किन्न–दिल दहलाते हुए हिनहिनानेवाले; पण् उरु–(और) खूब सजे; वयम् पुरवि–विजयशील अश्वों को; मण् मकळ् तन्–भूमि की देवी के; मार्पिन् अणि–वक्ष पर पहनाये गये; वन्नम् चरम् ॲन्न–रंग-बिरंगे रत्नहारों के समान; पन्तियिन्–पंक्तियों की; निरैत्तार्–श्रेणियों में बाँधा। ९०२

(अब घोड़ों की पंक्तियों की चर्चा है) वे घोड़े, जो अयोध्या से आये थे, तुरुष्कों द्वारा अयोध्या में लाये गये थे। उनकी देखभाल उनके लिए नियत दासों द्वारा होती थी; वे सुखाद्य चारा खिलाकर पाले गये थे। वे जब हिनहिनाते तब दिल दहल जाता था। वे कोतल घोड़े अनेक रंगों के थे। उनको श्रेणीवद्ध पंक्तियों में जब बाँधा गया तब देखने पर ऐसा लगता था मानो भू देवी के वक्ष पर हार पहनाये गये हों। (तुरुष्कों को ही शायद पहले 'शोनक' कहा गया है—६५३वाँ पद।)। ९०२

नीरतिरै निरैत्तदॅन्न नीडिरै निरैत्तार्
आर्हलि निरैत्तवॅन्न वावण निरैत्तार्
कार्निरै यॅन्नक्करिहळ् काविडै निरैत्तार्
मारुद निरैत्तदॅन्न वाशिह णिरैत्तार् 903

नीर तिरै निरैत्ततु ॲन्न–जल की लहरों को पंक्तियों में रखा हो ऐसा; नीळ् तिरै निरैत्तार्–लम्बे चीर (के पर्दे) बाँधे; आर्किल निरैत्तत ॲन्न–गर्जनयुक्त समुद्रों को पंक्तियों में सजाया हो ऐसा; आवणम् निरैत्तार्–हाटों की वीथियाँ बनायीं; कार निरै ॲन्न–मेघमालाओं के समान; करिकळ्–गजों को; का इटै निरैत्तार्–उपवनों में श्रेणीबद्ध बाँधा; मारुतम् निरैत्ततु ॲन्न–पवन को पंक्तियों में बाँध दिया गया हो ऐसा; वाचिकळ् निरैत्तार्–अश्व बाँध रखे। ९०३

पड़ाव डाला गया। स्त्रियों के डेरों के चारों ओर सफ़ेद पर्दे बाँधे गये। वे वीचियों की पंक्तियों के समान लग रहे थे। हाटों की पंक्तियाँ समुद्र की पंक्तियों के समान लगीं। उनमें सभी पदार्थ मिलते थे। उपवनों में हाथी पंक्ति में बाँधे गये थे; वे मेघमालाओं के समान दिखाई दिये। मानो पवन को ही पंक्तियों में बाँध दिया गया हो वैसे ही अश्व भी बाँधे गये थे। अश्व वायुसम वेगवान थे; अव वद्ध और अधीर थे। ९०३

नडिक्कुमयि लॅन्नवरु नव्विविळि यारुम्
वडिक्कुमयिल् वीररु मयङ्गितर् तिरिन्दार्

इडिक्कुमुर शक्कुरलि नॅङ्गुमुरल् शङ्गिन्
कॉडिक्कळि नुणर्न्दरशर् कोनह रडैन्दार् 904

नटिक्कुम् मयिल् अॅन्न-नर्तनशील मोरों के समान; वरुम्-आनेवाली; नव्वि विऴियारुम्-मृगनयनी स्त्रियाँ और; वटिककुम् अयिल् वीररुम्-पैनाये गये तीक्ष्ण भालोंवाले वीर; मयङ्कित्तर्-आपस में मिश्रित होकर; तिरिन्तार्-घूमे; अरचर्-(चक्रवर्ती के दर्शनार्थी) राजा; अॅङ्कुम् इटिक्कुम्-सर्वत्र ध्वनित होनेवाले; मुरचम् कुरलिन्-मंगल ढोल के नाद से; मुरल् चङ्किन्-होनेवाली शंखध्वनि से; कॉटिक्कळिन्-ध्वजाओं से; को नकर् उणर्न्तु-चक्रवर्ती का मुकाम जानकर; अटैन्तार्-पहुँचे। ६०४

स्त्री और पुरुष मिलकर घूम रहे थे। स्त्रियों का रूप नर्तनशील मयूरों का-सा था और आँखें हरिण की-सी थीं। पुरुष तीक्ष्णशूल-धारी थे। अनेक राजा चक्रवर्ती के मुकाम को ढोल का नाद, शंख की ध्वनि और ध्वजाओं के अस्तित्व से समझकर वहाँ पहुँचे। नहीं तो सब खेमे एक समान सुन्दर थे। ९०४

मिदिक्कनिमिर् तूळियिन् विळक्कमरु मॅय्यॅच्
चुदैक्कणुरै यॅप्पॉरुवु तूशुकॉडु तूय्दा
उदिर्त्तलि निळङ्गुमर रोवियरि नोवम्
पुदुक्किन रॅनत्तरुण मङ्गयर् पॉलिन्दार् 905

इळङ्कुमरर्-नौजवान लोग; मितिक्क निमिर्-(हाथी आदि के) पदछाप से उठी; तूळियिन्-धूल की वजह से; विळक्कम् अरु-प्रभाहीन; मॅय्यॅ-(अपनी प्रेयसियों की) देहों को; चुतै कण् नुरैयै पॉरुवु-दूध की साड़ी (या झाग) सम; तूच कॉटु-महीन वस्त्र से; तूय्तु आक-स्वच्छ बनाते हुए; उतिर्त्तलिन्-पोंछने से; तरुणम् मङ्कैयर्-वे तरुण स्त्रियाँ; ओवियर् इन् ओवम् पुतुक्कितर्-चित्रकारों ने सुन्दर चित्र को नवीन किया हो; अॅन-ऐसा; पॉलिन्तार्-शोभीं। ६०५

हाथी, अश्व आदि के चलने के कारण उठी हुई धूलि तरुण स्त्रियों पर लगी थी; अतः उनके शरीर की कांति मंद पड़ गयी थी। उनके प्रेमियों ने दूध की साड़ी (या झाग) के समान महीन वस्त्रों से उस धूल को पोंछ लिया। तब वे ऐसी चमक उठी मानो पुराने, मंदप्रभ चित्रों में कुशल चितेरे ने नया रंग लगाकर रौनक भर दी हो। ९०५

ताळुयर् तडक्किरि यिऴिन्दुतरै शारुम्
कोळरि यॅनक्करिहळ् कॉऱ्ऱव रिऴिन्दार्
पाळैविरि यॊत्तुलवु शामरै पडप्पोय्
वाळॅळ निरैत्तपड माडमवै पुक्कार् 906

कॉऱ्ऱवर्-राजा लोग; ताळ् उयर्-ऊँची तलहटीवाले; तट-बड़े; किरि इऴिन्तु-पर्वत से उतरकर; तरै चारुम् कोळरि अॅन-मैदान पर आनेवाले सिंहों के समान; करिकळ् इऴिन्तार्-हाथी से उतरे; पाळै विरि ऑत्तु-बाल बिखरे डण्ठलों

के समान; उलव–डुलनेवाले; चामरै पट–चामरों का उपचार पाते हुए; पोय्–जाकर; वाळ् ऍऴ निरैत्त–चमक-दमक के साथ पंक्तियों में निर्मित; पटम् माटम् अवै–पटमण्डपों में; पुक्कार्–प्रवेश कर ठहरे। ९०६

राजा लोग हाथियों पर बैठे आये थे। वे हाथी पर्वत के समान थे। जब वे उनसे उतरे तो वे पर्वत से नीचे समतल में उतर आनेवाले सिंह के समान थे। उनके दोनों तरफ़ बिखरे नारियल के डंठलों के समान चँवर डुलाये जा रहे थे। वे शान के साथ अपने-अपने उज्ज्वल खेमों में जाकर घुस गये। वे खेमे पंक्ति में निर्मित थे। (खेमे सिंहों की माँदों के समान थे—यह भाव भी प्राप्त किया जा सकता है।)। ९०६

तूशिनॅडु वॅण्पड मुडैक्कुडिल्ह डोरुम्
वाशमलर् मङ्गयर् मुहङ्गण्मळै वानिन्
माशिन्मदि यिन्कदिर् वळङ्गु निळलॅङ्गुम्
वीशुदिरै वॅण्बुनल् विळुङ्गियदु पोलुम् 907

नॅटु वॅळ् तूचिन्–लम्बे श्वेत चीर के; पटम् उटैय–ध्वजासहित; कुटिल्कळ् तोरुम्–खेमे-खेमे में; वाचम् मलर् मङ्कैयर् मुकङ्कळ्–सुवासित पुष्प पहनी हुई स्त्रियों के मुख; मळै वानिन्–मेघमण्डित आकाश में; माचु इल्–अकलंक; मतियिन्–चन्द्र के; कतिर् वळङ्कुम् निळल्–प्रकाशमान प्रतिबिम्बों को; ऍङ्कुम्–वहाँ सर्वत्र; तिरै वीचु वॅण् पुनल्–तरंगायित श्वेत (समुद्र-) जल ने; विळुङ्कियतु पोलुम्–मानों अन्तस्थ कर लिया। ९०७

सुन्दरी स्त्रियों के पटमंडप सफ़ेद वस्त्र के बने हुये थे। उनके ऊपर विरुदपट बाँधे गये थे। उनके अंदर रहनेवाली स्त्रियों के मुख चंद्रबिंबों के समान थे। अतः सारा दृश्य ऐसा लगता था, मानों समुद्रजल की तरंगों के अंदर चंद्र के असंख्यक बिंब दिखाई दे रहे हों। ९०७

मण्णुऱ विळुन्दुनॅडु वानुऱ वॅळुन्दु
कण्णुदल् पॉरुन्दवरु कण्णनिन् वरुङ्गार्
उण्णिऱ नऱुम्पॉडियै वीशियॊरु पाहम्
वॅण्णिऱ नऱुम्पॉडिपु नैन्दमद वेळम् 908

मण् उऱ विळुन्तु–धरती पर लोटकर; नॅटु वान् उऱ–ऊँचे आकाश को छूते हुए; ऍळुन्तु–उठकर; कार् उण्–काले रंग को ढँकनेवाली; निऱम् नऱु पॉटियै–(श्वेत) रंग की सुगन्धित धूलि को; (ऑरु पाकम्) वीचि–एक भाग पर से हटाकर; ऑरु पाकम्–दूसरे भाग पर; वॅळ् निऱम्–सफ़ेद रंग की; नऱु पॉटि–सुगन्धित धूलि; पुनैन्त–लगाये; मतम् वेळम्–(रहनेवाला) एक मत्तगज; कण्णुतल् पॊरुन्त वरु–भालनेत्र शिवजी को अर्धांग बनाकर आनेवाले; कण्णतिन् वरुम्–श्रीविष्णु के समान आता है। ९०८

एक हाथी शरीर का दर्द दूर करने के लिए धूल पर लोटकर उठा।

सफ़ेद रंग की धूलि उस पर लग गयी थी। हाथी ने एक ओर की धूलि झाड़ दी। पर दूसरे भाग में धूलि लगी थी। वह धूलि सुगंधित थी। अब वह ऐसा लगता है, मानों श्रीकृष्ण (विष्णु) शिवजी को अपना अर्धांगी बना लेकर आ रहे हों। (श्रीकृष्ण काले हैं और शिवजी भभूत मले सफ़ेद हैं।)। ९०८

तीयवरो	डॊऩ्ऱिय	तिऱत्तरु	नलत्तोर्
आयवरै	यऩ्ऩिलै	यऱिन्दनर्	तुऱन्दाङ्
गेयवरु	नुण्पॊडि	पडिन्दुड	ऩॆऴुन्दे
पाय्परि	विरैन्दुदऱि	निऩ्ऱऩ	परन्दे 909

तीयवरॊटु ऒऩ्ऱिय–बुरे व्यक्तियों के साथ मिले हुए; अरु तिऱत्तु नलत्तोर्–श्रेष्ठ चतुर सज्जन; आयवरै–उन बुरों को; अ निलै–उस अल्पकाल में ही; अऱिन्ततर्–पहचानकर; तुऱन्त आङ्कु–(उनका साथ) छोड़ देंगे, उसी तरह; पाय् परि–फाँदकर चलनेवाले अश्व; एय वरु नुण् पॊटि–शरीर पर जमा होनेवाली महीन धूलि में; पटिन्तु–लोटकर; उटऩ् ऎऴुन्तु–झट उठकर; विरैन्तु उतऱि–तुरन्त झटकारकर; परन्तु निऩ्ऱऩ—अलग-अलग खड़े रहे। ९०९

घोड़े भी धूल पर लोटकर अपना दर्द निवारण करते हैं। वे भूमि पर पड़े, लोटे, और उठे; उन्होंने अपने शरीर पर लगी धूल को झाड़ दिया। फिर वे हटकर अलग हो गये। वह ऐसा है मानो श्रेष्ठ गुणवाले साधु पुरुष ने किसी कारणवश बुरे आदमी से मैत्री कर ली हो। कुछ ही समय के अन्दर साधु पुरुष उसका असली गुण पहचान लेते हैं और उसी क्षण उसका साथ छोड़कर अलग हट जाते हैं। ऐसे ही अश्व ने धूल को झटकार दिया। ९०९

मुम्मपुरि	वऩ्कयिऱु	कॊय्युनॆऱि	मुऩ्ऩित्
तम्मयुमु	णर्न्दुतरै	कण्डुविरै	हिऩ्ऱ
अम्मयिनॊ	डिम्मैयै	यऱिन्दुनॆऱि	शॆल्लुम्
शॆम्मयव	रॆऩ्ननऩि	शॆऩ्ऱऩ	तुरङ्गम् 910

अम्मैयित्तॊटु इम्मैयै–पर के साथ इह को भी; अऱिन्तु–जानकर; नॆऱि चल्लुम्–(श्रेष्ठ परगति दिलानेवाले) सन्मार्ग पर जानेवाले; चॆम्मैयवर् ऎऩ्ऩ–साधु ज्ञानियों के समान; तुरङ्कम्–कुछ तुरग; तरै कण्टु–मैदान देखकर; विरैकिऩ्ऱ–वहाँ जाने की त्वरा दिखलाते हुए; तम्मैयुम् उणर्न्तु–अपनी (बन्धन की) स्थिति विचारकर; मुम्मै पुरि वऩ् कयिऱु–तीन तागों में पूरी गई तगड़ी रस्सी को; कॊय्युम् नॆऱि मुऩ्ऩि–तोड़ने का उपाय सोचकर; नऩि चॆऩ्ऱऩ–(तोड़कर) यथेच्छ चले। ९१०

कुछ घोड़े थे जो अपनी तीनगुणों की बटी हुई रस्सी तुड़ाकर मैदान में यथेच्छ भाग गये। उन घोड़ों की उन ज्ञानियों से तुलना की जाती है जो इह-पर की स्थिति जानकर उत्तम गति दिलानेवाले मार्ग को अपनाते हैं

और तदर्थ ईषणात्रयरूपी बन्धन तुड़ा देते हैं। (तीन गुणोंवाली रस्सी भूमि, स्त्री और स्वर्ण की ईषणाओं का मोह है। साधु लोग सोचते हैं और अपनी स्थिति, बन्धन की शक्ति आदि खूब तोलकर बन्धन तोड़ने का उपाय अपनाते हैं। वैसे ही अश्व ने किया। यह कवि का कथन है।)। ९१०

विऴुन्दपनि यन्नतिरै वीशुपुरै तोऱुम्
कळङ्गुपयिन् मङ्गयर्ह रुङ्गण्मिळिर् हिन्ऱ
तळङ्गुवळै शिन्दुदर ळम्बयि ऱरङ्गत्
तॅळुन्दिडै पिऱळ्न्दॊळिर्कॉ ळुङ्गयलॆह ळॅन्न 911

विऴुन्त–गिरकर फैलनेवाले; पनि अन्न–कुहरे के समान; तिरै–पर्दे; वीचु–जिनमें हिलते हैं उन; पुरै तोऱुम्–सभी खेमों में; कळङ्कु पयिल् मङ्कैयर्–"कळङ्कु" के बीजों को गोटी के रूप में लेकर खेलनेवाली स्त्रियों की; करु कण्–काली आँखें; तळङ्कु वळै–शब्द करनेवाले शंखों से; चिन्तु–निकले; तरळम् पयिल्–मोती जिनके मध्य फेंके जाते हैं; तरङ्कत्तु इटै–उन तरंगों के मध्य; ॲऴुन्तु पिऱळ्न्तु ऑळिर्–उछलकर, तड़पकर चमकनेवाले; कॊऴु कयल्कळ् अन्न–हृष्ट-पुष्ट मछलियों के समान; मिळिर्किन्ऱ–भासमान हैं। ६११

स्त्रियाँ डेरों के अन्दर बैठी 'कळङ्कु' के बीजों को गोटियाँ बनाकर खेल रही हैं। (ये कळङ्कु नाम की लता के बीज होते हैं। वे आकार-प्रकार में बहुत बड़े मोती के समान लगते हैं।) कुहरे के समान झीने परदे हिल रहे हैं। तब उन स्त्रियों की आँखें उन मछलियों के समान दिखाई देती हैं जो शंख-जनित मोती बिखेरनेवाली तरंगों के बीच तड़पती, छटपटाती और चमकती हैं। (परदों का हिलना लहरों का भ्रम पैदा करता है। गोटियाँ मोतियों के स्थान में और आँखें मछलियों के स्थान में ली जायँ।)। ९११

वॅळ्ळनॆडु वारियऱ वीशियुळ वेनुम्
किळ्ळवॆळु हिन्ऱपुनल् केळिरिन् विरुम्वित्
तॆळ्ळुपुन लाऱुशिऱि देयुदवु हिन्ऱ
उळ्ळदु मऱादुदवु वळ्ळलैयु मॊत्त 912

तॆळ्ळु पुनल् आऱु–स्वच्छ जलवाली नदियाँ; वॅळ्ळम् नॆटु वारि–प्रवाहित अधिक जल को; अऱ–कुछ न रखते हुए; वीचि उळवेनुम्–दे चुकीं, तो भी; किळ्ळ ॲऴुकिन्ऱ पुनल्–अव खोदने पर निकल आनेवाला जल; केळिरिन्–सगे-सम्बन्धियों के समान; विरुम्पि–स्नेह के साथ; चिऱिते उतवुकिन्ऱ–थोड़ा ही सही, देते हैं; उळ्ळतु मऱातु उतवु–(वे नदियाँ) अपने पास जो भी है उसको 'नाहीं' न कहकर दान करनेवाले; वळ्ळलै ऑत्त–उदार दानी के समान थीं। ६१२

चन्द्रशैल की नदियाँ उदार दानियों के समान हैं जो अपने पास कुछ

भी नही रखतें। और सब दान में दे देते हैं। इन नदियों ने अपना सारा जल पहले ही बहा दिया है; अब वे सूखी पड़ी हैं। उस स्थिति में भी उसे खोदें तो जल स्रव कर आयेगा और वे नदियाँ उसको सगे सम्बन्धियों के समान प्यार के साथ दान कर देंगी। ९१२

तुऩ्ऱिनॆऱि पङ्गिहडु ळङ्गवऴ लोडुम्
मिऩ्ऱिरिव वॆऩ्ऩमणि यारमिळिर् मार्बर्
मऩ्ऱऩ्मण नाऱुपड माडनुऴै हिऩ्ऱार्
कुऩ्ऱिऩ्मुऴै तोऱुनुऴै कोळरियै यॊत्तार् 913

तुऩ्ऱि नॆऱि पङ्किकऴ्–घने घुँघराले केश को; तुळङ्क–(हवा में) हिलने देते हुए; अऴलोटुम्–आग के साथ; मिऩ् तिरिव ॲऩ्ऩ–बिजलियाँ घूमती हों, ऐसा; मणि आरम्–रत्नहार; मिळिर्–(जिनपर) दमकते हैं; मार्पर्–उन वक्षवाले; मऩ्ऱल् मणम् नाऱु–नवीन गन्ध से युक्त; पटम् माटम्–पटमण्डपों में; नुऴैकिऩ्ऱार्–प्रवेश करनेवाले वीर; कुऩ्ऱिऩ्–पर्वतो की; मुऴै तोऱुम्–गुफ़ा-गुफ़ा में; नुऴै–घुसनेवाले; कोळ् अरियै–संहारक सिंहों के; ऒत्तार्–समान थे। ९१३

वीर सुवासपूर्ण वस्त्र-भवनों में प्रवेश करते हैं। उनके सिर के घने बाल हवा मे हिलते हैं। वक्षों पर बिजली चमकती हो और आग दमकती हो, ऐसे रत्नहार शोभित है। तब वे गुफाओं में घुसनेवाले खूनी सिंहों के समान लगते हैं। (वीरों के बाल की सिंहों के अयाल से उपमा है।)। ९१३

नॆरुङ्गयि लॆयिऱ्ऱिणैय शॆम्मयिरि नॆऱ्ऱिप्
पॊरुङ्गुलिह मप्पियऩ पोर्मणिह ळार्प्प
पॆरुङ्गळि ऱलैप्पुऩल् कलक्कुवऩ पॆट्टुक्
करुङ्गडल् कलक्कुमदु कैडवरै यॊत्त 914

नॆरुङ्कु–पास-पास रहे; अयिल्–तीक्ष्ण; ॲयिऱु इणैय–दन्तद्वय वाले; चॆम्मयिरिऩ् नॆऱ्ऱि–लाल वालों के माथों पर; पॊरुम् कुलिकम् अप्पियऩ–सुरुचियुक्त रीति से इंगुलिक से लिप्त; पोर् मणिकळ् आर्प्प–बारी-बारी से बजनेवाली घंटियोंवाले; पॆरु कळिऱु–बड़े-बड़े गज; अलै पुनल् कलक्कुवऩ–तरंग-समुद्र को आकुलित करनेवाले; करु कटल्–(प्रलयकाल के) नीले सागर को; पॆट्टु–चाहकर; कलक्कुम्–आलोड़ित करनेवाले; मतु कैटवरै ऒत्त–मधुकैटभ के समान थे। ९१४

हाथी जलाशयों में पैठे हैं। उनके दो तीक्ष्ण भाले के समान दाँत है। लाल रोम से भरे माथों पर इंगुलिक लगी है। दोनों ओर घंटियाँ लटकती हैं जो बारी-बारी से मानो प्रतिस्पर्द्धा में बजती है। वे जलाशयों में उतरकर जल को आलोडित करते हैं। वे मधुकैटभ के समान लगते हैं। (मधु और कैटभ दो असुर थे जो ब्रह्मा से वेदों को चुरा ले जाकर समुद्र के नीचे पाताल में रहे। ब्रह्माजी की प्रार्थना से श्रीविष्णु ने अपने वेद-गान से उन्हें बहकाकर अलग किया और वेद को ले आकर ब्रह्माजी

के पास दे दिया। असुर वेदों को न पाकर समुद्र को उद्वेलित करते हुए श्रीविष्णु के पास आये। श्रीविष्णु ने उनसे उन्हींको मारने का वर लेकर उनको मारा।) । ९१४

ऑक्कमिशै युयप्पव ष्रैत्तकुरि कॉळ्ळा
पक्कमित्त मोत्तय ललैक्कनन्ति पारा
मैक्कळि मदत्तवरै मादर्कलै यल्हुल्
पुक्कवरै यॉत्तन पुनर्चिरैह ळेरा 915

कळि मतत्त–मदमत्त; मै वरै–काले पर्वत (के समान गज); ऑक्क–उचित रीति से; मिचै उयप्पवर्–ऊपर बैठकर चलानेवाले; उरैत्त कुरि–(जो संकेत वचन) कहते हैं उन आज्ञाओं को; कॉळ्ळा–न मानकर; पक्कम्–दोनों ओर; इत्तम्–उन्हीं की जाति के हाथी; ऑत्तु–(उन पीलवानों से) समरस होकर; अयल् अलैक्क–बाहर आने पर मजबूर करें; ननि पारा–तो भी उसकी परवाह न करके; मातर्–स्त्रियों के; कलै अल्कुल् पुक्कवरै–मेखला-भूषित भग (के मोह) में मग्न (कामुकों); ऑत्तन–के समान बनकर; पुनल् चिरैकळ् एरा–जलाशयों से बाहर तीर पर नहीं आते। ९१५

और कुछ मदमत्त हाथी है जो स्त्री (के मेखला-भूषित जघन-प्रदेश) के मोह में मग्न कामुकों के समान जलाशय में पैठे है और तीर पर आने का नाम नहीं लेते। पीलवान की आज्ञा नहीं मानते, पार्श्व में रहे हाथियों के उसे बाहर निकालने के प्रयास को व्यर्थ बनाते और जलाशय में ही पैठे रहते। (कामुक, गुरु या बड़ों का उपदेश नहीं सुनते; न सगे सम्बन्धियों या मित्रों की निन्दा की परवाह करते हैं।) । ९१५

तुहिलिडै मडन्दयरॉ डाडवर् तुवन्रिप्
पहलिडैय वट्टिलिन् मडुत्तॅरि परप्पुम्
अहिलिडु कॉळ्मुम्बुहै यळुङ्गलिन् मुळङ्गा
मुहिल्पडु नॅडुङ्गडलै यॉत्तुळदम् मूदूर् 916

तुकिल् इटै मटन्तयरॉटु–(महीन और श्रेष्ठ) वस्त्र से अलंकृत कटिवाली स्त्रियों के साथ; आटवर्–पुरुष भी; तुवन्रि–साथ मिलकर; पकल् इटैय–दिन को सारहीन (मन्द) करते हुए; अट्टिलिल्–पाकशालाओं में; मटुत्तु–ले आकर; ऍरि परप्पुम्–जलाई जानेवाली; अकिल् इटु–अगरु की लकड़ियों का; कॉळु पुकै–घना धुआँ; अळुङ्कलिन्–भर जाने से; अ मूतूर्–वह 'प्राचीन' नगर; मुळङ्का मुकिल् पटु–जो नहीं गरजे ऐसे मेघों से आवृत्त; नॅटु कटलै ऑत्तु उळतु–विशाल समुद्र की तरह है। ९१६

सुन्दर वस्त्रधारिणी कमरवाली स्त्रियाँ और पुरुष मिलकर पाकशालाओं में अगरु की लकड़ियाँ जला रहे हैं। उनसे इतना प्रकाश होता है जिससे दिन भी मन्द दीखता है। उनसे घना धुआँ उठता है। यह

सारा दृश्य ऐसा लगता है मानो विशाल समुद्र ऐसे मेघों से आच्छादित हो जो नहीं गरजते। (पड़ाव को कवि 'मूदूर' प्राचीन नगर कहते हैं क्योंकि वह प्राचीन नगर के समान सब तरह से सम्पन्न है। वह समुद्र के समान है। समुद्र सब निधियों का आकर है। "धुआँ" न गरजनेवाला या मौन मेघ है। यह सुन्दर शब्दयोजना है।)। ९१६

कमरुरु पॉरुप्पिऩ् वाऴुम् विऩ्जयर् काण वन्दार्
तमरयु मट्रियार् निऩ्ऱु तिहैप्पुरु तहैमै शान्ऱ
कुमररु मङ्गै मारुङ् गुऴुमलाल् वऴुवि विण्णिऩ्
ट्रमरर्ना डिऴिन्द दॆन्नप् पॉलिन्ददव् वनीह वॆळ्ळम् 917

कमर् उरु–घाटियों सहित; पॉरुप्पिऩ्–पर्वतों में; वाऴुम्–रहनेवाले; विऩ्चैयर्–विद्याधर; काण वन्तार्–जो देखने आये; तमरॆयुम् अट्रियार्–अपनों को भी नहीं पहचानते; निऩ्ऱु–खड़े होकर; तिकैप्पु उरु–भ्रमित हो जावें; तकैमै चाऩ्ऱ–ऐसा रहनेवाले; कुमररुम्–नौजवान पुरुष; मङ्कैमारुम्–और स्त्रियाँ; कुऴुमलाल्–वहाँ जुटे रहे, इसलिए; अव् अनीक वॆळ्ळम्–वह सेना सागर; अमरर् नाटु–देवलोक; विण् निऩ्ऱु–आकाश से; वऴुवि–खिसककर; इऴिन्ततु ऎऩ्ऩ–गिर गया हो, ऐसा; पॉलिन्ततु–प्रकाशमय रहा। ९१७

(पड़ाव के पुरुष और स्त्री बने-ठने और बड़े ही सुन्दर और उत्साह-शील थे।) दर्रो सहित उस पर्वत में रहनेवाले विद्याधर उस स्थान को देखने आये। वे यह नहीं पहचान सके कि (अपने) विद्याधर कौन हैं और अन्य कौन हैं ? वे चकित रह गये। इस प्रकार सुन्दर वीर पुरुषों और स्त्रियों की वह सेना सागर आकाश से खिसककर नीचे गिरे हुए स्वर्गलोक के समान रहा। ९१७

वॆयिलिऩिरङ् गुरैयच्चोदि मिऩ्निऴल् परप्प मुऩ्नाळ्
तुयिलरु शॆव्वि योरुन् दुऩियुरु मुनिवि ऩोरुम्
कुयिलॊडु मिऩिदु पेशिच् चिलम्बोडु मिऩिदु कूवि
मयिलिऩन् दिरिव दॆऩ्ऩत् तिरिन्दऩर् महळि रॆल्लाम् 918

मुऩ् नाळ्–पिछले दिन (रात); तुयिल् अरु–निद्राहीन रही; चॆव्वियोरुम्–सुन्दरियाँ; तुऩि उरु मुनिविऩोरुम्–रूठने से उत्पन्न रोषवालियाँ; मकळिर् ऎल्लाम्–ऐसी सभी स्त्रियाँ; वॆयिल् निरम् कुरैय–धूप की कान्ति को मन्द करते हुए; चोति–अपनी देह कान्ति (आभूषण की चमक) द्वारा; मिऩ् निऴल् परप्प–बिजली के समान प्रकाश छिटकाती हुई; कुयिलॊटुम् इऩितु पेचि–कोयलों के साथ मधुर रीति से बोलती हुई; चिलम्पॊटुम्–पर्वतों से (प्रतिध्वनि बनाते हुए); इऩितु कूवि–चाह के साथ पुकार मचाती हुई; मयिल् इनम् तिरिव ऎऩ्ऩ–मयूरदल घूमता हो, ऐसा; तिरिन्तऩर्–घूमीं। ९१८

(रात बीत गयी। सवेरा हो गया।) पिछली रात कुछ स्त्रियों की

नींद हराम हो गयी थी। कुछ स्त्रियों की रूठन क्रोध में बदल गयी थी। ऐसी स्त्रियाँ अब अधिक सुन्दर लग रही थीं। पर्वत के दृश्यों से आकृष्ट होने से उनमें नया उत्साह भर गया। अतः वे सजधज कर बाहर आयीं। उनकी देहों की और उनके आभरणों की कांति इतनी चमकती थी कि धूप भी निष्प्रभ हो जाती थी। वे कोयलों के समान कूकती हुयी और पर्वत से प्रतिध्वनि पैदा करके उसका आनन्द उठाती हुयी मयूरों के दल के समान घूमीं। ९१८

ताळिडैक् कळल्ह ळार्प्पत् तारिडै यळिह ळार्प्प
वाळ्पुडै यिलङ्गच् चॆङ्गेळ् मणियणि वलयमिन्नत्
तोळॆन वुयर्न्द कुन्ऱिन् शूळल्ह ळिनिदु नोक्कि
वाळरि तिरिव वॆन्नत् तिरिन्दनर् मैन्द रॆल्लाम् 919

मैन्तर् ॲल्लाम्–वीर कुमार सब; ताळ् इटै–पैरों में; कळल्कळ् आर्प्प–पायलों को क्वणित करते हुए; तार् इटै–मालाओं में; अळिकळ् आर्प्प–अलियों को गुंजारने देते हुए; वाळ् पुटै इलङ्क–तलवारों को पार्श्व में झलकाते हुए; चॆम् केळ् मणि अणि–सुरुचिपूर्ण रंग के रत्नों के बने; वलयम् मिन्न–बिजायटों को चमकाते हुए; तोळ् ॲन उयर्न्त–अपने कन्धों के समान उन्नत; कुन्ऱिन् चूळल्कळ्–पर्वत के स्थानों में; इनितु नोक्कि–सुख से संदर्शन करते हुए; वाळ् अरि–उज्ज्वल सिंह; तिरिव ॲन्न–घूमते हैं ऐसे; तिरिन्तनर्–घूमे। ९१९

पुरुष भी सैर कर दृश्य देखने निकले। उनके पैरों पर पायलें नाद कर रही थीं। उनकी मालाओं पर भ्रमर गुंजार कर रहे थे। पार्श्वों में तलवारें शोभा दे रही थी। विजायटों की रंगीन मणियाँ चमक रही थीं। उनके ही कंधों के समान पर्वत के शिखर ऊँचे थे। ऐसे पर्वत के स्थानों पर वे प्रभापूर्ण सिंहों के समान घूमे। ९१९

शुऱ्ऱिय कडल्ह ळॆल्लाज् जुडर्मणिक् कनहक् कुन्ऱैप्
पऱ्ऱिय वळैन्द वॆन्नप् परन्दुवन् दिरुत्त शेनैक्
कॊऱ्ऱवर् देवि मार्हण् मैन्दर्हळ् कॊम्ब नार्वन्
दुऱ्ऱवर् काण लुऱ्ऱ वरैनिलै युरैत्तु मन्नो 920

चुऱ्ऱिय–(भूलोक) घेरते रहे; कटल्कळ् ॲल्लाम्–सभी सागरों ने; चुटर् मणि–दीप्त रत्नोंवाले; कनकम् कुन्ऱै–कनकमय पर्वत को; पऱ्ऱिय–ग्रसने के लिए; वळैन्त ॲन्न–घेर लिया हो, ऐसा; परन्तु वन्तु–विस्तार से आकर; इरुत्त चेनै–जुटी सेना के; कॊऱ्ऱवर्–राजा लोग; तेविमार्कळ्–उनकी रानियाँ; मैन्तर्कळ्–सैनिक वीर पुरुष; कॊम्पु अन्नार्–पुष्पशाखा सदृश स्त्रियाँ; वन्तु उऱ्ऱवर्–जो आये; काणल् उऱ्ऱ–उनके द्वारा दृष्टव्य; वरै निलै–चन्द्रशैल पर्वत की स्थिति आदि; मन् उरैत्तुम्–विस्तार से कहेंगे। ९२०

भूमि को घेरे रहनेवाले सभी समुद्रों ने आकर मेरु को घेर लिया हो,

ऐसे सेना-सागर ने आकर चन्द्रशैल (गिरि) को घेर लिया। उसके राजा लोग, उनकी रानियाँ, वीर सैनिक और पुष्पलता-सी सुन्दरी स्त्रियाँ उस पर्वत के दृश्यों का आनन्द उठाने के लिए निकलीं। उस पर्वत और उन दृश्यों का अब हम (कवि) विस्तार के साथ वर्णन करेंगे। ९२०

पम्बुतेऩ् मिञिरु तुम्बि परऩ्दिशै पाडि याड
उम्बर्वा नहत्तु निऩ्ऱ वॉऴितरु तरुवि ऩोङ्गुम्
कॉम्बुहळ् पनैक्कै नीट्टिक् कुऴैयॉडु मॉडित्तुक् कोट्टुत्
तुम्बिह ळुयिरे यऩ्ऩ तुणैमडप् पिडिक्कु नल्हुम् 921

कोट्टु तुम्पिकळ्–दाँतोंवाले (पुरुष) हाथी; पम्पु–अधिकता से; तेऩ्–मधुमक्खियाँ; मिञिरु–अलि; तुम्पि–काले भ्रमर; परन्तु–फैलकर; इचै पाटि–गीत गाते हुए; आट–मँडराते है, तब; उम्पर् वाऩ् अकत्तु–ऊपर के आकाशलोक तक जाकर; निऩ्ऱ–स्थित; ऑऴि तरु तरुविऩ्–शोभा देनेवाले वृक्षों की; ओङ्कुम् कॉम्पुकळ्–ऊँची डालों को; पत्तै कै नीट्टि–तालवृक्षों के समान सूँड़ों को बढ़ाकर; कुऴैयॉटुम् ऑटित्तु–पत्तों के साथ तुड़वाकर; उयिरे अऩ्ऩ–प्राणों के ही समान; तुणै–संगिनी; मटम् पिटिक्कु–छोटी आयु की हथिनियों को; नल्कुम्–देते हैं। ९२१

उस पर्वत में स्वर्गोन्नत आकाशव्यापी वृक्ष है। उन पर मधुमक्खियाँ आदि विविध भौंरे गुंजार करते हुए मँडरा रहे हैं। वहाँ दाँतवाले हाथी उन वृक्षों की डालों को पत्तों सहित तोड़कर अपनी संगिनी हथिनियों को खिलाते हैं! ९२१

पण्मलर् पवळच् चॅव्वायप् पनिमलर्क् कुवळै यऩ्ऩ
कण्मलर् कॉडिच्चि मार्क्कुक् कणित्तॉऴिल् पुरियुम् वेङ्गै
उण्मलर् वॅऱुत्त तुम्बि पुदियते ऩुदवु नाहत्
तण्मल रॅऩ्ऱु वानत् तारहैत् ताव मऩ्ऱे 922

पण् मलर्–संगीत के समान (मधुर शब्द) प्रकट करनेवाले; पवळम् चॅव् वाय्–प्रवाल-सम अरुण मुख; पत्ति कुवळै मलर् अऩ्ऩ–शीतल कुवलय पुष्प के समान; कण् मलर्–प्रफुल्लित आँखोंवाली; कॉटिच्चि मार्क्कु–"कॉटिच्चि" (पार्वत्य प्रदेश की जाति की) स्त्रियों के लिये; कणि तॉऴिल् पुरियुम्–ज्योतिषी का काम करनेवाले; वेङ्कै–"वेङ्कै" तरुओं के; उण् मलर् वॅऱुत्त–शहद पीकर पुष्प को जो त्याग चके वे; तुम्पि–काले भ्रमर; वाऩम् तारकै–आकाश के नक्षत्रों को; पुतिय तेऩ् उतवुम्–नया शहद देनेवाले; नाकम् तण् मलर् ऎऩ्ऱु–पुन्नाग के शीतल फूल समझकर; तावुम्–उनकी ओर उछलते हैं; (अऩ्ऱु–ए)। ९२२

पर्वत प्रदेश की स्त्रियाँ "कॉटिच्चि" कही जाती हैं। मधुर-भाषिणी उनके अधर प्रवालसम लाल हैं। आँखें कुवलय पुष्प सदृश हैं। वेंगै वृक्ष उनके लिए ज्योतिषी का काम देते है। (जब वे फूलते हैं तब पर्वत प्रदेश के लोग खेती आरम्भ करते हैं। उनके विवाह आदि मंगल-कार्य

किये जाते हैं। वे वेंगै वृक्ष को देखकर ऋतु, सुमुहूर्त आदि का निर्धारण कर लेते हैं।) "वेंगै" वृक्ष के फूलों से भ्रमर शहद चूस चुके। फिर वे ऊपर देखते हैं तो नक्षत्र दिखाई देते हैं। वे भ्रमर उनको पुन्नाग वृक्ष के फूल समझकर नया शहद पाने की आशा से उन पर लपकते हैं। ९२२

मीन्नॅनुम् पिडिह ळोडुम् विळङ्गुवॅण् मदिनल् वेळम्
कूललवान् कोडु नीट्टिक् कुत्तिडक् कुमुरिप् पायुम्
तेनुहु मडैयै माऱ्‌ऱिच् चॅन्दिनैक् कुऱवर् मुन्दि
वाननी राऱु पाय्च्चि यैवनम् वळर्प्पर् मादो 923

मीन् अॅनुम् पिटिकळोटुम्–नक्षत्ररूपी हथिनियों के साथ; विळङ्कु–शोभनेवाले; वॅळ् मति नल् वेळम्–श्वेत चन्द्ररूपी श्रेष्ठ हाथी; कूतल् वान् कोटु–वक्र, उज्ज्वल दाँतों को; नीट्टि–बढ़ाकर; कुत्तिट–(छत्तों में) खोंसने से; कुमुरि पायुम्–शब्द के साथ बहनेवाले; तेन् उकु मटैयै–शहद के नाले को; चॅम् तिनै कुऱवर्–सुनिर्मित कोदों की खेतीवाले "कुरव" (पार्वत्य) लोग; माऱ्‌ऱि–मार्ग बदलकर; मुन्ति–पहले; वान् आऱु नीर् पाय्च्चि–आकाशगंगा का जल सींचकर; अॅवनम् वळर्प्पर्–जंगली धान पालते हैं। ९२३

पर्वत प्रदेश के "कुऱ" लोग कोदों की खेती करनेवाले हैं। उसके लिए अधिक जल की आवश्यकता नहीं है। पर जंगली धान के लिए आवश्यक है। चन्द्ररूपी हाथी, जो नक्षत्ररूपी हथिनियों के साथ आकाश में घूमता है अपने दाँतोंरूपी नोकों से शहद के छत्तों को छेद कर उकसा देता है। उससे शहद की धार बहने लगती है। ("कुऱवों" की कोदों की खेती पहले ही हो चुकी) अब वे इस शहद की धारा को मार्ग बदलकर आकाशगंगा के जलमार्ग द्वारा जंगली धान के खेतों को ले जाकर सींचते हैं और धान पालते हैं। ९२३

कुप्पुऱऱ् करुमै यालक् कुलवरैच् चारल् वैहि
ऑप्पुऱत् तुलङ्गु हिन्ऱ वुडुपति याडि यिन्कण्
इप्पुऱत् तेयुङ् गाण्बार् कुऱत्तिय रियैन्द कोलम्
अप्पुऱत् तेयुङ् गाण्बा ररम्बय रळ्हु मादो 924

कुप्पुऱऱ्कु अरुमैयाल्–पार कर जाना कठिन है, इसलिए; अ कुलम् वरै–उस श्रेष्ठ पर्वत के; चारल् वैकि–पार्श्व में ही ठहरकर; ऑप्पु उऱ–(दोनों ओर) समरूप; तुलङ्कुकिन्ऱ–रहनेवाले; उटुपति–उडुपति; आटियिन् कण्–(रूपी) आइने के; इ पुऱत्तेयुम्–इस तरफ़; कुऱत्तियर्–पार्वत्य स्त्रियाँ; इयैन्त कोलम् काण्पार्–अपना सजा हुआ का रूप देखती हैं; अ पुऱत्तेयुम्–उस तरफ़; अरम्पैयर्–अप्सराएँ; अऴकु काण्पार्–अपना रूप निहार लेती है। ९२४

चन्द्र उस पर्वत को पार कर नहीं जा सका और उसी पर ठहर गया। चन्द्र दोनों ओर समतल है और आइने के समान है। आइने के

इस तरफ़ में "कुऱ" स्त्रियाँ अपना रूप-प्रतिविम्व देख लेती हैं और उस तरफ से अप्सराएँ अपना रूप-प्रतिविम्व। ९२४

उदियुरु तुरुत्ति यूदु मुलैयुरु तीयुम् वायित्
अदिविड नीरु नॅय्यु मुण्गिला दावि युण्णुम्
कौदिनुत्ते वेऌकण् मादर् कुऱत्तियर् नुदलि नोडु
मदियिनै वाङ्गि यौप्पुक् काण्गुवर् कुऱवर् मादो 925

उति उरु-(भाथी से) निकलनेवाली; तुरुत्ति ऊतुम्-भाथी की निकाली गयी; उलै उरु तीयुम्-भट्ठी की अग्नि और; वायित्-(मुख) नोक पर; अति विटम् नीरुम्-अति विषैला जल; नॅय्युम्-और घी; उण्किलातु-न खाकर (लगाया जाकर); आवि उण्णुम्-प्राण हर सकनेवाले; कौति नुत्ते वेल् कण्-संतापी सिरे के भाले के समान आँखोंवाली; कुऱत्तियर् मातर्-'कुऱ' स्त्रियों के; नुतलितोटु-भाले के साथ; मतियिनै वाङ्कि-चन्द्र को रखकर; कुऱवर्-'कुऱ' पुरुष; ऑप्पु काण्कुवर्-तुलनाकर देखते; (मातु-ओ)। ९२५

भाला साधारणतः भट्ठी पर भाथी द्वारा निसृत हवा के सहारे जलनेवाले अंगारों पर तपाकर तेज किया जाता है। फिर उसके अग्रभाग (मुख) पर विष लगा दिया जाता है; उसे अचूक घातक बनाने के हेतु। जंग न लगे, इस निमित्त घी लगाया जाता है। पर किसी ऐसे प्रयत्न के विना ही 'कुऱ' स्त्रियों की आँखें पुरुषों के प्राण को हर सकनेवाली (मन को मोह लेनेवाली) हैं। ऐसी स्त्रियों के भालों को चन्द्र के पास रखकर पुरुष लोग उपमा की परीक्षा करते है। (चन्द्र इतने पास है क्योंकि वह पर्वत बहुत ऊँचा है)। ९२५

पेणुदऱ् करिय शीयक् कुरुळयुम् पिडिह ळीन्ऱ
काणुदऱ् किनिय वेळक् कन्ऱोडु कळिक्कु मुन्ऱिल्
कोणुदऱ् कुरिय तिङ्गट् कुळवियुङ् गुऱवर् तङ्गळ्
वाणुदऱ् कौडिच्चि मार्द महवोडु तवळु मन्ऱे 926

कुऱवर् तङ्कळ् मुन्ऱिल्-'कुऱ' लोगों के (झोपड़ों के) आँगन में; पेणुतऱ्कु अरिय-पालने के लिए श्लाध्य; चीयम् कुरुळैयुम्-सिंह के शावक; पिटिकळ् ईन्ऱ-हथिनियों के जाये; काणुतऱ्कु इनिय-दर्शनीय; वेळम् कन्ऱोटु-हाथी के बच्चों के साथ; कळिक्कुम्-केलि करते; वाळ् नुतल् कौटिच्चिमार्-उज्ज्वल ललाटवाली 'कौटिच्चि' यों के; तम् मकवोटु-बच्चों के साथ; कोण् नुतऱ्कु उरिय-अराल भाल से उपमेय; तिङ्कळ् कुळवियुम्-बालचन्द्र भी; तवळुम्-घुटनों के बल रेंगकर खेलता है। ९२६

(पार्वत्य) "कुऱ" जाति के लोगों के आँगनों में वे सिंहशावक, जिन्हें वे चाव से पालते हैं, और हथिनियों के सुन्दर कलभ साथ-साथ खेलते हैं। उज्ज्वल ललाटवाली 'कुऱ' स्त्रियों के बच्चों के साथ उन्हीं के भाल से उपमेय चन्द्र घुटनों चलकर मन बहलाता है। ९२६

अञ्जनक् किरियि तन्न वळिहवुळ् यानै कॊन्ऱ
वॆञ्जिनत् तरियिन् रिण्काऱ् चुवट्टोडु विञ्जै वेन्दर्
कुञ्जियन् दलत्तु नीलक् कुलमणित् तलत्तु मादर्
पञ्जियङ् कमलम् बूत्त पशुञ्जुव डुडैत्तु मन्नो 927

कुलम् नील मणि तलत्तुम्–श्रेष्ठ नीली मणियों से भरे तल में; विञ्चै वेन्तर्–विद्याधर राजाओं के; अम् कुञ्चि तलत्तुम्–सुन्दर केश जाल में; अञ्चनम् किरि अन्न–अंजन पर्वत-सम; अळि कवुळ्–मदजल प्रवाही गालों के; यानै कॊन्ऱ–हाथियों के मारक; वॆम् चिनत्तु–कठोर वैर वाले; अरियिन्–सिंह के; तिण् काल् चुवट्टोटु–गम्भीर चरण-चिह्नों के साथ; मातर्–विद्याधर स्त्रियों के; पञ्चि अम् कमलम् पूत्त–महावर लगे चरणकमलों के लगने से बने; पचुमै चुवटु–गीले चिह्न; उटैत्तु–(उनसे पर्वत) अंकित था। ६२७

उस पर्वत की श्रेष्ठ नीली मणियों से आकीर्ण भूमि पर, और विद्याधरों के सुन्दर केशों पर क्रमशः मदनीर बहानेवाले गण्डस्थल के और अंजनगिरि सम काले हाथियों को मारकर जो चला उस भयंकर क्रोधी सिंह के पैरों के (रक्त के) लाल चिह्न और विद्याधरियों के लाक्षारस चर्चित चरणों के गीले चिह्न पाये जाते है। (इस पद में क्रमशः का प्रयोग कर स्थलों और चिह्नों को क्रमवार कहा गया है। यह 'यथा-संख्य' अलंकार है। स्त्रियों की रूठन शांत करने के लिए पुरुषों का सिर नवाना और स्त्रियों का लात मारना शृंगार-वर्णन का अंग समझा जाता है।)। ९२७

शॆङ्गय लन्नयनाट्टम चॆविपुहा मुऱुव ऱोन्ऱा
पॊङ्गिरुङ् गून्दल् शोरा पुरुवङ्ग णॆरिया पूविन्
अङ्गयु मिडऱुङ् गूट्टि नरम्बुळऱ्न् दमुद मूऱुम्
मङ्गयर् पाडल् केट्टुक् किन्नर मयङ्गु मादो 928

चॆम् कयल् अन्नैय नाट्टम्–सुन्दर 'कयल्' मछली-सी दृष्टि; चॆवि पुका–आँख तक नहीं जाती (चंचल नहीं बनती); मुऱुवल् तोन्ऱा–दाँत प्रकट नहीं होते; पॊङ्कु इरुकून्तल्–बहुत रहनेवाला काला केश; चोरा–नहीं खलता; पुरुवङ्कळ्–भौंहें; नॆरिया–कुंचित नहीं होतीं; पूविन् अम् कैयुम्–कमल-सम हाथों की मुद्राएँ और; मिटरुम्–कण्ठस्वर भी; कूट्टि–मेल बिठाकर; नरम्पु उळऱ्न्तु–तन्त्री झंकृत कर; अमुतम् ऊऱुम्–अमृत ढालनेवाला; मङ्कैयर् पाटल्–स्त्रियों का संगीत; केट्टु–सुनकर; किन्नरम्–किन्नर भी (देवजाति के गवैये या गायक पक्षी); मयङ्कुम्–मुग्ध रहते है। ६२८

'कुऱ' स्त्रियों का गाना इतना मोहक है कि किन्नर भी मुग्ध हो जाते हैं। जब वे गाती है तो भद्दी अंग चेष्टाएँ नहीं करतीं; मछली सम आँखें चंचल नहीं बनतीं; दांत प्रकट नहीं होते; केशजाल खुलकर नहीं बिखरता; और भौंहें ऊपर नहीं चढ़ती। हस्तमुद्राएँ और कंठस्वर में मेल

रहता है। तंत्रियों को झंकृत कर वे देवामृत ढलता हो, ऐसा संगीत गाती है। ९२८

कळ्ळविळ् कोदै मादर् कादोडु मुऱवु शॅय्युम्
कॊळ्ळैवाट् कण्णि नार्दङ् गुङ्गुमक् कुळम्बु तङ्गुम्
तॆळ्ळिय पळिक्कुप्पाऱैत् तॆळिशुनै मणियिऱ् चॅय्द
वळ्ळमु नऱवु मॆन्न वरम्बिल पॊलिव मन्नो 929

कातॊटुम् उऱवु चॅय्युम्–श्रवणों तक आयत; कॊळ्ळै–(पुरुषों के प्राण-) हारी; वाळ् कण्णिनार्–तलवार-सी आँखोंवाली; कळ् अविळ् कोतै मातर् तम्–शहद बहानेवाले केशवाली स्त्रियों के; कुङ्कुमम् कुळम्पु–कुंकुम के लेप; तङ्कुम्–जिसमें जम गये हैं उस; तॆळ्ळिय पळिङ्कु पारै–स्वच्छ स्फटिकशिला पर; तॆळि चुनै–स्वच्छ सरोवर; वरम्पु इल–असंख्यक हैं; वळ्ळमुम्–मधुचषक और; नऱवुम् अन्न–मधु के समान; पॊलिव–शोभित है। ९२९

स्फटिक शिलाओं पर जल के सरोवर हैं। उनमें स्त्रियाँ स्नान करती हैं तब कर्णों तक आयत तलवार सम आँखोंवाली, और मधु-मिश्रित कुंतलवाली उन स्त्रियों के कुंकुम का लेप उस जल में गलकर जल को गाढ़ा लाल बना देता है। तब वे सरोवर मधुचषक के समान और जल मधु के समान लगता है। ऐसे सरोवर असंख्यक हैं। ९२९

आडव रावि शोर वन्जन्न वारि शोर
ऊडलिऱ् चिवन्द नाट्टत् तुम्बर्द मरम्बै मादर्
तोडलर् कोदै निन्ऱुन् दुऱन्दमन् दार मालै
वाडल नऱव ऱाद वयिन्वयिन् मयङ्गु मादो 930

उम्पर् तम्–देवों के योग्य; अरम्पै मातर्–अप्सराएँ; आटवर् आवि चोर–(अपने) पुरुषों के प्राणों को अधीर करते हुए; ऊटलिन्–रूठती हैं, इसलिए; चिवन्त नाट्टत्तु–लाल बनी आँखों से; अन्चनम् वारि–अंजनमिश्रित अश्रु; चोर–ढलकता है; कोतै निन्ऱु तुऱन्त–केश से उठाकर फेंकी गई; तोटु अविळ् मन्तार मालै–दलविकसित मन्दार मालाएँ; वाटल–नहीं सूखीं; नऱव अऱात–शहद से हीन नहीं हुईं; वयिन् वयिन्–(ऐसी मालाएँ) यत्र-तत्र; वयङ्कुम्–शोभा के साथ पड़ी थीं। ९३०

अप्सराएँ रूठ गयीं। उससे देवगण बहुत अधीर हो रहे। अप्सराओं की आँखें लाल हो गयीं। काजल को पिघलाते हुये अश्रु बहे। उन्होंने अपने केशों से विकसित दलवाले मंदार पुष्पों की बनी मालाओं को निकाल कर फेंक दिया। वे मालाएँ यत्र-तत्र शोभा देती हुई पड़ी हैं क्योंकि देवलोक के पुष्प सदा नवीन रहते हैं और शहद भरे रहते हैं। ९३०

मान्दळि रनैय मेनिक् कुऱत्तियर् मालै शूट्टिक्
कून्दलङ् गमुहिन् पाळै कुळलिन्नो डॊप्पुक् काण्बार्

ऑन्दिळै यरम्बै माद रॅळिन्मणिक् कडहम् वाङ्गिक्
कान्दळम् बोदिर् पॅय्दु कैहळो डोप्पुक् काण्बार् 931

मा तळिर् अन्नैय मेनि–आम्र-पल्लव सदृश देहवाली; कुरत्तियर्–'कुर' स्त्रियाँ; कून्तल् कमुकिन्–'कुंतलकमुक' नाम की विशेष जाति के कमुक पेड़ों के; पाळै–बालों सहित डण्ठलों पर; माले चूट्टि–मालाएँ डालकर; कुळलितोटु ऑप्पु काण्पार्–अपने कुंतलों से तुलना कर देखतीं; एन्तु इळै अरम्पै मातर्–श्रेष्ठ आभरण-भूषित अप्सराएँ; ऑळिल् मणि कटकम् वाङ्कि–सुन्दर रत्नकंकण उतारकर; कान्तळ् अम् पोतिल् पॅय्तु–"कान्तळ्" के फूलों पर (जो स्त्रियों की अँगुलियों के समान पाँचदलीय है) पहनाकर; कैकळोटु ऑप्पु काण्पार्–अपने हाथों की समानता देखते। ६३१

वहाँ की "कुर" स्त्रियाँ जो आम्रपल्लव सम देहकांतिवाली हैं, 'कुंतल-क्रमुक' तरुओं के बालों सहित डंठलों पर मालाएँ पहनाती हैं और यह देखती हैं कि हमारे केश में और उनमें कैसी समता है। श्रेष्ठ आभरण-धारिणी अप्सराएँ "कांतळ्" पुष्पों को अपने रत्न कंकण पहनाकर अपने हाथों की समता परखती हैं। (कुंतल-क्रमुक क्रमुक जाति का एक विशेष तरु है जिसके बालों सहित डंठल स्त्रियों के केशों से उपमित किये जाते हैं। कांतळ् के पुष्प पाँच दल के होते हैं और वे स्त्रियों के हाथों से या सर्प के फन से उपमित होते हैं।)। ९३१

शरम्बयिल् शाप मन्न पुरुवङ्ग डम्मि लाड
नरम्बिन्नो डिनिदु पाडि नाडह मयिलो डाडुम्
अरम्बयर् वॅरुत्तु नीत्त वविर्मणिक् कोवै यारम्
मरम्बयिल् कडुवन् पूण मन्दिकण् डुवक्कु मादो 932

नरम्पिन्नोटु इनितु पाटि–वीणा की तन्त्रियों के स्वर के साथ मेल बिठाकर गाकर; मयिलोटु नाटकम् आटुम्–मोरों के साथ नाचनेवाली; अरम्पैयर्–देवांगनाएँ; चरम् पयिल् चापम् अन्न–शरसंनद्ध चाप के समान; पुरुवङ्कळ्–भौंहें; तम्मिल् आट–परस्पर (अनुरूप) फड़कने देती हुई; वॅरुत्तु नीत्त–झुंझलाकर जिनको उतार फेंका है; अविर् मणि कोवै–उन कान्ति छिटकनेवाले रत्नहारों को; आरम्–और मुक्ता-मालाओं को; मरम् पयिल् कटुवन्–तरुओं पर घूमनेवाले वन्दर; पूण–लेकर (बँदरियों को) पहनाते हैं, तब; मन्ति–बँदरियाँ; कण्टु–देखकर; उवक्कुम्–मुदित होती हैं; (मातु, ओ)। ६३२

अप्सराएँ वीणा के साथ गातीं और मोर के साथ नाचतीं। उनको अपने प्रेमियों से मान हो गया। उनकी भौंहें फड़क उठीं और रुष्ट होकर उन्होंने रत्नहार, मुक्ता-मालाएँ आदि आभरण उतार कर फेंक दिये। तब पेड़ों पर विचरनेवाले वानरों ने उनको उठाया और अपनी वानरियों को पहना दिया। वानरियाँ उनको देखती मनोरंजन करने लगीं। ९३२

शान्दुयर् तडङ्ग डोरुन् दादुरा हत्तुच् चार्न्द
कून्दलम् बिडिह ळॅल्लाड् गुङ्गुम मणिन्द पोलुम्

कान्दिऩ मणियिऩ् शोदिक् कदिरीडुङ् गलन्दु मूशच्
चेन्दुवा ऩहमॅप् पोदुम् जॅक्करै यॊक्कु मऩ्ऱे 933

चान्तु उयर्–चन्दन के तरु जहाँ उन्नत उगे है; तटङ्कळ् तोऱुम्–उन स्थल-स्थल पर; तातुराकत्तु चार्न्त–धातुराग (गैरिक) के रंग के लगने से; कून्तल् अम् पिटिकळ् ॲल्लाम्–सारी लोम-भरी सुन्दर हथिनियाँ; कुङ्कुमम् अणिन्त पोलुम्–कुंकुममण्डित-सी लगती है; कान्तु इऩम् मणियिऩ्–चमकदार श्रेष्ठ पद्मराग के पत्थरों की; चोति कतिरोटुम् कलन्तु–अधिक लाल रंग से मिलकर; मूच–फैलती है, इसलिए; वाऩ् अकम् चेन्तु–आकाश लाल हो जाता है, और; ॲप्पोतुम् चॅक्करै ऒक्कुम्–सदा लाल-संध्यागगन के समान रहता है। ६३३

चन्दन तरुओं से लसित उस पर्वत प्रदेश में धातुराग (गैरिक) पाया जाता है। उसके कारण रोम-भरे शरीरवाली हथिनियों के ऊपर वह रंग लग जाता है। ऐसा लगता है कि उनके ऊपर कुंकुम का लेप लगाया गया है। पद्मराग के नग बिखरे पड़े है। उनकी ज्योति गैरिक की लाल बुकनियों के साथ मिलती है और आकाश में भर जाती है। इसलिए आकाश हमेशा संध्यागगन के समान लाल बना रहता है। ९३३

निलमहट् कणिह ळॅऩ्ऩ निऱैहदिर् मुत्तम् जिन्दि
मलैमहळ् कॊळ्नऩ् चॅन्ऩि वन्दुवीळ् गङ्गै पोन्ऱ
अलहिल्पॊन् ऩलम्बि यारम् जार्न्दुवी ळरुवि मालै
उलहळन् दवन्ऱऩ् मार्बि नुत्तरी यत्तै यॊत्त 934

अलकु इल् पॊऩ् अलम्पि–अपरिमेय स्वर्ण छितराती हुई; आरम् चार्न्तु–मुक्तामिलित; वीळ् अरुवि मालै–गिरनेवाली सरिताओं की पंक्तियाँ; निलम् मकटकु–भूमिदेवी के; अणिकळ् ॲऩ्ऩ–आभरण होंगे, यह मानकर; निऱै कतिर् मुत्तम् चिन्ति–उज्ज्वल मोतियों को बहाती हुई; मलैमकळ् कॊळुनऩ्–पर्वतराजकुमारी (पार्वतीदेवी) के पति (शिवजी) की; चॅऩ्ऩि वन्तु वीळ्–जटा पर से नीचे सरकनेवाली; कङ्कै पोन्ऱ–शाखाओं सहित गंगा नदी के समान रहीं; उलकु अळन्तवन् तऩ् मार्पिऩ्–त्रिलोक नापनेवाले त्रिविक्रम देव के वक्ष के; उत्तरीयत्तै ऒत्त–उत्तरीय के समान भी थीं। ६३४

उस पर्वत पर सरिताएँ अत्यधिक मात्रा मे स्वर्ण और मोती बहाती हुयी बहती थी। जब वे झरनों के रूप में गिरती थी तब वे पार्वतीपति श्रीशिव जी की जटाजूट से गिरनेवाली अनेक धाराओं की गंगाजी के समान थीं; पर्वत के निचले भाग में सरिताओं के रूप में बहती थीं तब त्रिलोकमापक त्रिविक्रमदेव के उत्तरीय के समान लगती थीं। ९३४

कोडुला नाहप् पूवो डिलवङ्ग मलरुङ् गूट्टिच्
चुडुवार् कळिवण् डोच्चित् तूनऱुन् देऱल् कॊळ्वार्
केडिला महर याळिड् कित्ऩर मिदुनम् पाडुम्
पाडला लूड नीङ्गुम् परिमुह मादरक् कण्डार् 935

कोट्टु उलाम्–डालों पर पुष्पित; नाकम् पूवोटु–पुन्नाग पुष्पों के साथ; इलवङ्कम् मलरुम्–लवंगपुष्पों को; कूट्टि–गूँथकर; चूटुवार–पहननेवाली; कळि वण्टु ओच्चि–मत्त भ्रमरों को भगाकर; तू नऱ तेऱल् कोळ्वार्–स्वच्छ सुवासपूर्ण शहद लेनेवाली स्त्रियाँ; केट्टु इला–निर्दोष; मकर याळिन्–मकराकार वीणा के स्वर के सदृश; किन्नर मितुनम्–किन्नर जोड़ियों के; पाटुम् पाटलाल्–गाये गये गानों से; ऊटल् नीङ्कुम्–रूठन छोड़ती है जो; परि मुकम् मातर्–अश्वमुखी देवियों को; कण्टार्–देखा। ६३५

वहाँ अश्वमुखी किन्नर (देवता) लोग रहते थे। राजा दशरथ की सेना में रहनेवाली स्त्रियाँ, ऊँची डालों से पुन्नाग पुष्प और लवंग पुष्प चयन कर उनकी माला बनातीं; मधुमक्खियों को उड़ाकर शुद्ध, सुगंधित शहद को पी लेती। ऐसा करती हुयी घूमनेवाली उन्होंने किन्नर जाति की स्त्रियों को देखा, जो किन्नर-मिथुन के गाने सुनकर रूठन छोड़ देती थी। ९३५

पॅरुङ्गळि ऱेयु मैन्दर् पेरॅळि लाहत् तोडुम्
पॉरुन्दुणैक् कॊङ्गै यन्न पॊरुविल्कोङ् गरुम्बिन् माडे
मरुङ्गॆन्नक् कुळैयुङ् गॊम्बिन् मडप्पॆडै वण्डुन् दङ्गळ्
करुङ्गुळऱ् कळिक्कुम् वण्डुम् कडिमणम् पुणर्दल् कण्डार् 936

पॅरु कळिऱु एयुम् मैन्तर्–बड़े गजों के सदृश रहनेवाले वीर तरुणों के; पेर् अळिल् आकत्तोटुम्–बहुत ही सुन्दर वक्षस्थलों से; पॊरुम्–मुकाबला कर सकनेवाले; तुणै कॊङ्कै अन्न–जोड़े के स्तनों के समान; पॊरु इल्–अनुपमेय; कोङ्कु अरुम्पिन् माटु–सेमर की कलियों पर; मरुङ्कु अॅन कुळैयुम्–अपनी कमर के समान लचकनेवाली; कॊम्पिन्–पुष्पशाखाओं पर की; मट पॆटै वण्टुम्–बाला भौंरियाँ; तङ्कळ् करु कुळल्–अपने काले केशों पर; कळिक्कुम् वण्टुम्–भनभनाती हुई मोद करनेवाले भौंरे (दोनों को); कटि मणम् पुणर्तल्–सुखमय प्रेम-व्यवहार करते; कण्टार्–(कुछ ने) देखा। ६३६

कुछ स्त्रियों ने एक सरस दृश्य देखा। 'कोंगु' (सेमर की जाति का एक तरु विशेष) की कलियों के पास भौंरियाँ और भौंरे सुखमय संभोग में लगे थे। वे कलियाँ स्त्रियों के सुदृढ़ स्तन-द्वय के, जो बड़े-बड़े हाथियों के समान बलवान वीर पुरुषों के वक्ष-स्थल के साथ टकरा सकते थे, समान थीं और उन कलियों की अन्य कोई उपमा नहीं हो सकती है। वे भौंरियाँ उन पुष्पलताओं पर, जो स्त्रियों की कमर के समान लचीली हैं, ठहरने के स्वभाववाली थीं और भौंरे स्त्रियों के केशों पर आनन्द के साथ मँडराने के आदी थे। ९३६

पडिहत्तिन् ऱलमॆन् ऱॆण्णिप् पडर्शुनै मुडुहिप् पुक्क
शुडिहैप्पूङ् गमल मन्न शुडर्मणि मुहत्ति नार्तम्
वडहत्तो डुडुत्त तूशु माशिनीर् नन्नैप्प नोक्किक्
कडहक्कै यॆऱिन्दु तम्मिऱ् करुङ्गळल् वीरर् नक्कार् 937

पटर् चुनै–विशाल सरोवर को; पटिकत्तिन् तलम् ऍन्ऱु–स्फटिक तल यह; ऍण्णि–मानकर; मुट्टुकि पुक्क–सवेग जो उतरीं; चुटिकै–झूमर पहनी हुई; पू कमलम् अन्न–नवीन कमलपुष्प सदृश; चुटर् मणि मुकत्तिनार् तम्–उज्ज्वल मुखोंवाली स्त्रियों के; वटकत्तोटु–ओढ़नी के साथ; उट्टुत्त तूचुम्–अधोवस्त्र को; माचु इल् नीर् नतैप्प–निर्मल जल ने गीला कर दिया, तव; नोक्कि–उसको देखकर; करु कऴल् वीरर्–सुडौल पायलधारी वीर; कटकम् कै ऍऱिन्तु–कटक शोभित (हाथ पीटकर) ताली वजाकर; तम्मिल् नक्कार–अपने में हँसे। ९३७

स्वच्छ जल का छोटा तालाव पड़ा था। स्त्रियों ने उसको भ्रम से स्फटिक-तल मान लिया। वे तुरन्त उसमें घुस पड़ीं। झूमर-भूषित, उत्साह से उत्फुल्ल मुखवाली, उनके उत्तरीय और अधोवस्त्र दोनों निर्मल जल से गीले हो गये। उसको देखकर वीरपायलधारी तरुण अपने में मिलकर कंकणशोभित अपने हाथों से ताली वजाकर हँसे। ९३७

पूवणै पलवुङ् गण्डार् पॊन्नरि मालै कण्डार्
मेवरुङ् गोब मन्न वॆळ्ळिलैत् तम्बल् कण्डार्
आवियि निनिय कॊण्गरप् पिरिन्दऱि वऴिन्द विज्जैप्
पावयर् वैहत् तीय्न्द पल्लव शयनङ् गण्डार् 938

पू अणै–पुष्पशय्याएँ; पलवुम्–अनेक; कण्टार्–देखीं; पॊन्नरि मालै कण्टार्–कण्ठियाँ देखीं; मेवरुम् कोपम् अन्न–आकर्षक वीरबहूटियों की तरह दिखनेवाली; वॆळ् इलै तम्पल–तांबूल की पीक; कण्टार्–देखी; आवियिन् इनिय–प्राणों से भी प्यारे; कॊण्कर् पिरिन्तु–पतियों के वियोग से; अऱिवु अऴिन्त–मूर्छित; विज्चै पावैयर् वैक–विद्याधर महिलाओं के शयन करने से; तीय्न्त–झुलसे हुए; पल्लव चयनम् कण्टार्–पल्लवों की शय्या देखी। ९३८

(शैल पर सैर करनेवालों ने कैसे-कैसे दृश्य देखे!) उन्होंने यत्र-तत्र फूल की सेजें देखीं। उन पर "पॊन्नरि" नाम की हँसुलियाँ या कंठियाँ देखीं। उनको उन शय्याओं पर जो रात को लेटी रहीं उन्हीं ने उतार रख छोड़ा था। सेजों के पास इन्द्रगोप नामक लाल कीड़ों की तरह थूकी गयी पान की पीकें देखीं। कुछ पल्लवों की बनी शय्यायें भी देखी जिनके पल्लव झुलसे नजर आये। अपने प्राण-प्यारे प्रेमियों के वियोग-जनित ताप के कारण विद्याधरियों के शरीर गरम हो गये थे और उनके लेटे रहने से वे पल्लव सूख गये थे। ९३८

पानलङ् कण्ग ळाडप् पवळवाय् मुरुव लाडप्
पीनवॆम् मुलैयि निट्ट पॆरुविलै यार माडत्
तेन्मुरन् ऱळहत् ताडत् तिरुमणिक् कुऴैह ळाड
वानवर् महळि राडुम् वाशना रूशल् कण्डार् 939

पातल् अम् कण्कळ् आट–नीलोत्पल सी आँखें चंचल हैं; पवळम् वाय्–प्रवालसम अधरों पर; मुऱुवल् आट–हँसी खिलती हैं; पीनम्–पीन; वॆम् मुलैयिन् इट्ट–

आकर्षक उरोजों पर पहने हुए; पॅरु विलै आरम् आट–अत्यधिक मूल्य के हार हिलते हैं; अळकत्तु–केश पर; तेन् मुरन्रु आट–मधुमक्खियाँ भनभनाती मँडराती हैं; तिरु मणि कुळैकळ् आट–उत्तम मणिमय कुण्डल झूमते हैं; वात्तवर मकळिर आट्टम्–(इस साज के साथ) अप्सराएँ जिनपर झूलती हैं उन; वाचम् नाऱु–सुगन्धपूर्ण; ऊचल् कण्टार्–झूलों को देखा। ६३६

कुछ देवांगनाएँ झूलों पर झूलती थीं। तब उनकी कुवलयसम आँखें चलित होती थीं। प्रवालसम अधरों पर हँसी खेलती थी। पीन और मनोरम उरोजों पर मूल्यवान हार झूम रहे थे। उनके केशों पर भ्रमर भनभनाते मँडराते थे। श्रेष्ठ मणिमय कुंडल कानों पर झूम रहे थे। उनके झूले सुगन्धपूर्ण थे। ('आड' शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त है।) ९३९

सुन्दर वदन्न मादर् तुवरिदळ्प् पवळ वायुम्
अन्दमिल् शुरुम्बुन् देनु मिञिऱुमुण् डलहुल् विऱ्कुम्
पैन्दॊडि महळिर् कैत्तोर् पशैयिल्लै यॆन्न विट्ट
मैन्दरि तीत्त तीन्देन् वळ्ळङ्गळ् पलवुङ् गण्डार् 940

अल्कुल् विऱ्कुम्–भोग्य अंग को बेचनेवाली; पचुमै तॊटि मकळिर्–चोखे स्वर्ण के कंकण पहनी हुई (वार-) नारियाँ; ओर् पचै इल्लै–(अब इसके पास) कोई 'लसी' (आकर्षक धन) नहीं है; ऍन्न–यह जानकर; कैत्तु विट्ट–जिनको त्याग चुकीं उन; मैन्तरिन्–तरुण पुरुषों के समान; चुन्तर वतनम् मातर्–सुन्दरवदना स्त्रियों के; तुवर् इतळ् पवळम् वायुम्–लाल अधरोंवाले प्रवाल-सम मुखों से; अन्तम् इल्–अनन्त; चुरुम्पुम् तेनुम् मिञिऱुम्–मधुमक्खियों, भ्रमरों और काले भ्रमरों से; उण्टु नीत्त–पान कर त्यक्त; तीम् तेन् वळ्ळङ्कळ्–मधुर मधुपात्र; पलवुम्–अनेक; कण्टार्–देखे। ६४०

यत्र-तत्र रिक्त मधुपात्र अनेक देखे जाते हैं। उनको सुन्दरवदना स्त्रियों ने मधु पीकर, रिक्त करके फेंक दिया था। फिर उन पर भ्रमर बैठे और रहा सहा चूसकर उनको बिल्कुल नमीहीन कर दिया। उनको देखने पर उन नौजवानों की याद आती है जिनको, दाम लेकर सुख देनेवाली वारवनिताओं ने, इनके पास कोई "लसी" (चिपकानेवाली धनरूपी आकर्षक वस्तु) नहीं है— यह जानकर (बिल्कुल कंगाल बनाकर) घृणा के साथ त्याग दिया है! (इसमें भ्रमर के तीन नाम आये हैं। वे भ्रमर की ही विभिन्न जातियों के नाम हैं)। ९४०

अऱ्पह लाक्कुञ् जोदिप् पळिक्कदै यमळिप् पाङ्गर्
मऱ्पह मलर्न्द तिण्डोळ् वान्नवर् मणन्द कोल
विऱ्पहै नुदलि नार्तङ् गलवियिन् वॆरुत्तु नीत्त
कऱ्पह मीन्ऱ मालै कलन्नीडुङ् गिडप्पक् कण्डार् 941

अल् पकल् आक्कुम् चोति–रात को दिन में बदलनेवाली ज्योतिवाले; पळिङ्कु

अरै–स्फटिक के कमरे के अन्दर; अमळि पाङ्कर्–शय्या के पास; मल् पक–मल्लों को भी डरा भगानेवाली; मलर्न्त तिण् तोळ्–विशाल भुजाओं के; वानवर् मणन्त–देवपुरुषों से जिन्होने प्रणय किया था, उन; विल् पकै नुतलितार्–धनु से लड़नेवाले (समानता रखनेवाले) ललाट सहित देवांगनाओं से; तम् कलवियिन्–अपनी रतिवेला में; वॅरुत्तु नीत्त–(बाधा समझकर) झुंझलाते हुए त्यक्त; कर्पकम् ईन्र मालै–कल्पक तरुओं से दी हुई मालायें; कलनोटुम्–आभरणों के साथ; किटप्प–पड़ी हुई; कण्टार्–देखीं। ६४१

कहीं-कही स्फटिक-शिला के कमरे मिले। उनके अन्दर ऐसा प्रकाश पाया गया जिसने रात को दिन में बदल दिया था। उसमें शय्या बिछी थी। उसके पास कल्पकमालाएँ और हार आदि आभरण बिखरे पड़े थे। उनको, उन सुन्दर धनुसम ललाटवाली देवांगनाओं ने, जो मल्ल-विजयी भुजाओंवाले दैवपुरुषों के साथ रमी थीं, संभोग के अवसर पर बाधा समझकर झुंझलाहट के साथ निकालकर फेंक दिया था। ९४१

कैयॅन्न मलर वेण्डि यरुम्बिय कान्द णोक्किप्
पैयर विदुवॅन् रञ्जिप् पडैक्कणगळ् पुदैक्किन् ड्रारुम्
नॅय्तिरळ् वयिरप् पारै निऴलिडैत् तोन्रुम् बोदैक्
कॉय्दिवै तरुदि रॅन्रु कॉऴुनरैत् तॉऴुहिन् ड्रारुम् 942

कै अॅन्न मलर वेण्टि–(स्त्रियों के) हाथ के समान विकसित होना चाहकर; अरुम्पिय कान्तळ्–लगा 'कान्तळ्' पुष्प देखकर; इतु पै अरवु अॅन्रु अञ्चि–'यह फन फैला साँप है' समझकर, डरकर; पटै कण्कळ्–भालारूपी हथियार-सम आँखों को; पुतैक्किन्ड्रारुम्–बन्द कर लेने वालियाँ, और; नॅय् तिरळ्–मक्खन के समान राशिकृत; वयिरम् पारै निऴल् इटै–हीरे की चट्टानों के प्रकाश में; तोन्रुम् पोतै–दिखनेवाले; पुष्पों को; इवै कॉय्तु तरुतिर् अॅन्रु–'इनको तोड़कर दीजिए', कहकर; कॉऴुनरै–पतियों को; तॉऴुकिन्ड्रारुम्–प्रार्थना करनेवालियाँ। ६४२

(कुछ स्त्रियों की चेष्टाएँ बतायी जाती है।) "कांतळ्" के फूल स्त्रियों की हथेलियों से उपमित किये जाते हैं। वे फन फैलाये रहनेवाले सर्प के समान भी दीखते हैं। वे "कांतळ्" पुष्प स्त्रियों के हाथों की समानता करने की इच्छा लेकर ही जन्म ले चुके हैं। उनको देखकर स्त्रियाँ सर्प समझकर डर जाती हैं और उनकी प्रकृति के अनुसार (जो भय उत्पन्न होने पर आँखों को हाथ से मूँदने की है) शूल सदृश आँखों को अपने हाथों से मूँद लेती है। कहीं स्फटिक शिला के अन्दर फूलों का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। उनको देखकर कुछ स्त्रियाँ भ्रमवश उनको असली पुष्प समझ लेती हैं और अपने पतियों से प्रार्थना करती है कि इनको तोड़कर ला दो। ९४२

पिन्नङ्ग ळुहिरिऱ् चॅय्दु पिण्डियन् दळिर्हैक् कॉण्ड
चिन्नङ्गण् मुलैयि ऩप्पित् तेमलर् कॉय्हिन् ड्रारुम्

वन्नङ्गळ् पलवुन् दोन्ऱ मणियोॕळिर् मयिलि नल्लार्
अन्नङ्गळ् पुहुन्द वॆन्न वहन्शुनै कुडैहिन् ऱारुम् 943

वन्नङ्कळ् पलवुम् तोन्ऱ–कई रंगों को प्रकट करते हुए; मणि ऑळिर्–आभरणों की मणियाँ कान्ति बिखेरती है, उन आभरणों से शोभित; मयिलिन् नल्लार्–मयूर से भी अधिक छविवाली स्त्रियाँ; पिण्टि अम् तळिर्–अशोक के कोमल पल्लवों को; उकिरिन् पिन्नङ्कळ् चॆय्तु–नखों से नोचकर खण्ड-खण्ड बनाकर; कै कॊण्ट–अंजलि में भरकर; चिन्नङ्कळ्–उन टुकड़ों को; मुलैयिन् अप्पि–स्तनों पर लगाकर; तेम् मलर् कॊय्किन्ऱारुम्–शहद भरे फूल तोड़नेवालियाँ, और; अन्नङ्कळ् पुकुन्त ऍन्न–हंस वहाँ आ गये हों, ऐसा; अकन् चुनै–विशाल तालों में; कुटैकिन्ऱारुम्–स्नान करनेवालियाँ। ९४३

मयूरों की-सी छटावाली स्त्रियाँ सर्वालंकारभूषित थीं। उनके रत्न आदि नगों से रंग-बिरंगा प्रकाश छूट रहा था। वे अशोक के पल्लवों को नाखूनों से नोचकर खण्ड-खण्ड करके उन टुकड़ों को अपने स्तनों पर चिपकाये हुए थी। वे शहद भरे नवीन फूल चुन रही थी। ऐसी कुछ स्त्रियाँ पायी गयीं। और कुछ स्त्रियाँ नवागत हंसपक्षियों के समान पहाड़ी तालाबों में घुसकर गोते लगा रही थीं। ९४३

ईनु माळै यिळन्दळि रेयॊळि, ईनु माळै यिळन्दळि रेयिडै
मानुम् वॆळ्मु नाहमु मादरतोळ्, मानुम् वेळ्मु नाहमु माडॆलाम् 944

माटु ऍलाम्–(पर्वत-) तटों में; माळै इळम् तळिरे–कोमल आम्रपल्लव ही; ऑळि ईनुम्–प्रकाश छिटकाते हैं; मानुम्–हरिण; वेळ्मुम्–हाथी; नाकमुम्–वानर; मातर् तोळ् मानुम्–स्त्रियों के कन्धों की समानता करनेवाले; वेळ्मुम्–बाँस; नागमुम्–सुरपुन्नाग सब कहीं पाये जाते हैं; इटै–मध्य भागों में; ईनुम्–उस पर्वत से उत्पन्न; माळै इळम् तळिरे–कोमल स्वर्ण-पत्र ही। ९४४

(इसको मिलाकर आगे नौ पद है जो यमकालंकार के सुन्दर नमूने हैं। पर भाव में कोई विशेषता नहीं पायी जायगी। तो भी अर्थ भरे पद बने है।) उस पर्वत के सभी भागों में आम के कोमल पल्लव सुन्दर शोभा देते हैं। हरिण, हाथी, वानर, स्त्रियों के कंधों से तुलनेवाले बांस, 'सुरपुन्नाग' —सब (दिखाई देते) हैं। मध्य-मध्य में उस पर्वत पर मिलता है स्वर्ण का पतला पत्र। ९४४

पुहलुम् वाळरिक् कण्णियर् पॊऱ्पुयम्, पुहलुम् वाळरिक् कण्णियर् पूण्मुलै
अहिलु मारमु मारवङ् गोङ्गुमे, अहिलु मारमु मारवङ् गोङ्गुमे 945

पुकलुम्–प्रकीर्तित; वाळ् अरिक्कु अण्णियर्–भयंकर सिंहों के सदृश वीरों के; पॊन् पुयम्–सुशोभित कन्धे; वाळ् अरि कण्णियर्–तलवार-सम और डोरों से युक्त आँखोंवालियों के; पूण् मुलै–आभरणभूषित स्तनों को; पुकलुम्–(चाव के साथ) आलिंगन करते हैं; अकिलुम्–अगरु लेप; आरमुम्–चन्दन का लेप; अङ्कु आर्–उनपर जम जाता है; ओङ्कुम्–और सुगन्ध में बढ़ जाता है; अकिलुम् आरमुम्–अगरु

के तरु और चन्दन वृक्ष; मारवम्–कुंकुमवृक्ष; कोङ्कुम्–सेमर के पेड़; मे–विशिष्ट रूप से शोभित थे। ९४५

प्रथित, सिंहसम वीरों की स्वर्णप्रभ भुजाएँ, तलवार-सी और लाल रेखाओं से युक्त आँखों वाली स्त्रियों के आभरणालंकृत स्तनों का आलिंगन करती हैं। उससे अगरु और चन्दन का लेप उन भुजाओं पर लग जाता है और वे भुजाएँ सुगन्धमय हो जाती हैं। उस पर्वत पर अगरु, चन्दन, "कुंकुम" (केसर) और सेमर आदि के पेड़ विशिष्ट स्थान पाते हैं (यानी अत्यधिक पाये जाते है)। ९४५

तुऩ्ऩ रम्बै नॅरुङ्गिय तॊल्वरै, तुऩ्ऩ रम्बय रूरुविऱ् ऱोऩ्ऱुमाल्
किऩ्ऩ रम्बयिल् कीदङ्ग ळॅऩ्ऩवाङ्, गिऩ्ऩ रम्बयिल् हिऩ्ऱऩ रेऴैमार् 946

तॊल् वरै–प्राचीन उस पर्वत पर; नॅरुङ्किय–घने रूप से उगे; तुऩ् अरम्पै–पत्तों से भरे केले के पेड़; तुऩ्–वहाँ आनेवाली; अरम्पैयर् ऊरुविल् तोऩ्ऱुम्–अप्सराओं के ऊरुओं के समान दिखाई देते हैं; एऴै मार्–स्त्रियाँ; आङ्कु–वहाँ; किऩ्ऩरम् पयिल् कीतङ्कळ् ॲऩ्ऩ–किन्नरों के गाये गीतों के समान; इऩ् नरम्पु अयिल्किऩ्ऱतर्–मधुर वीणास्वर सुनती है। ९४६

प्राचीन उस पर्वत पर घने रूप से पाये जानेवाले केले के पेड़ वहाँ आनेवाली अप्सराओं की जंघाओं के समान सुन्दर हैं। स्त्रियाँ वहाँ वीणा का वादन कर रही है और वह संगीत किन्नरमिथुनों के संगीत के समान मनोरम है। ९४६

तिमिर मावुडऱ् कुङ्गुमच् चेदहम्, तिमिर मावॊडुञ् जऩ्दॊडुन् देय्क्कुमाल्
अमर मादरै यॊत्तॊऴि रञ्जॊलार्, अमर मादरै योत्तदव् वानमे 947

तिमिरम् मा उटल्—अन्धकार-सम काले जंगली सुअरों के शरीरों पर; कुङ्कुमम् चेतकम् तिमिर–कुंकुम का जो लेप मला है, उसको; मावॊटुम्–आम के पेड़ों; चन्तॊटुम् तेय्क्कुम्–और चन्दन के वृक्षों से मल देते हैं; अमर मातरै ऑत्तु ऑळिर्–देवस्त्रियों के समान शोभायमान; अम् चॊल्लार्–सुन्दरभाषिणी स्त्रियाँ; अमर–वहाँ विराजमान हैं, इसलिए; मा तरै–श्रेष्ठ वह स्थल; अ वानमे ऑत्ततु–उस देवलोक के समान ही था। ९४७

स्त्रियाँ अपने शरीर से कुंकुम का लेप निकालकर फेंक देती हैं और वह अंधेरे के समान काले शरीरवाले जंगली सुअरों पर जम जाता है। वे आम और चन्दन के पेड़ों से अपने शरीरों को रगड़ते है। वहाँ देवाँगनाओं के समान स्त्रियाँ बैठी रहती हैं; इसलिए वह श्रेष्ठ पर्वत प्रदेश देवलोक की समानता करता है। ९४७

पेर वावॊडु माशुणम् बेरवेय्, पेर वावॊडु माशुणम् बॅरुमाल्
आर वारत्ति ऩॊडु मरुविये, आर वारत्ति ऩॊडु मरुविये 948

पेर् अवावोंट्टु–बहुत चाह के साथ; माचुणम्–बड़े अजगर; पेर–रेंगते हैं, इसलिए; वेय् पेर्–बाँस गिर जाते हैं; आवोंट्टु–जंगली गाय के साथ; मा चुणम् पेरुम्–बड़ी धूल उड़ती है; अरुवि–सरिताएँ; आर–बहुत; आरत्तित्तोंट्टु–मोतियों के साथ; मरुवि–मिलकर; आरवारत्तिन् ओट्टुम्–बड़े शोर के साथ; ओट्टुम्–बहती हैं। ६४८

(चारे की खोज में) बड़ी चाव के साथ अजगर रेंगने लगता है तब बाँस के वृक्ष उखड़कर गिर जाते है। उससे डरकर जंगली गाय भागने लगती है और बड़ी धूल भी उठती है। सरिताएँ खूब मोती बहाती हुयीं बड़े शोर के साथ बह रही हैं। ९४८

ऊरु माहड मावुऱ् वूङ्गॅलाम्, ऊरु माहड मामद मोङ्गुमे
आरु शेर्वत्त मावरै याडुमे, आरु शेर्वत्त मावरै याडुमे 949

ऊङ्कु ॲलाम्–उस पर्वत प्रदेश में; मा कट मा ऊरु उऱ्–बड़ी जंगली गायों को बाधा देते हुए; मा कटम् मा–बड़े हाथियों का; ऊरुम् मतम्–स्रवनेवाला मद जल; ओङ्कुम्–बढ़कर बहता है; आरु चेर्वत्त–मार्ग में पड़े; मा–आम्रवृक्ष और; वरै–बाँस; आट्टुम्–चलित हो जाते हैं; मा–(कुछ) जानवर; वरै आट्टुम्–पर्वतीय बकरियाँ; आरु चेर्वत्त–उन नदियों पर आ जाते है। ६४६

वहाँ सर्वत्र बड़ी-बड़ी जंगली गायों के भी मार्गगमन में बाधा देता हुआ बड़े हाथियों का मदजल बहा करता है। उस प्रवाह के मार्ग में रहनेवाले आम के और बाँस के पेड़ चलित हो जाते हैं। कुछ पहाड़ी जानवर और पहाड़ी बकरे उधर (प्रवाह मे जल पीने के लिए) आ जाते है। ९४९

कल्लि यङ्गु करुङ्गुऱ् मङ्गयर्, कल्लि यङ्गहळ् कामर् किळङ्गॅडा
वल्लि यङ्ग ञॅरुङ्गु मरुङ्गॅलाम्, वल्लि यङ्ग ञॅरुङ्गि मयङ्गुमे 950

कल् इयङ्कु–पर्वत में रहनेवाले; करु कुऱ् मङ्कैयर्–काली 'कुऱ्' स्त्रियाँ; अङ्कु–वहाँ; कल्लि अकळ्–खोदकर लिया जानेवाला; कामर् किळङ्कु–श्रेष्ठ कंदों को; ॲटा–लेने के लिए; वल्लियङ्कळ् ञॅरुङ्कुम्–बाघ जहाँ अधिक संचार करते हैं उन; मरुङ्कु ॲलाम्–सभी स्थानों में; वल् इयङ्कळ्–उच्च शोर मचानेवाले चमड़े के वाद्य; ञॅरुङ्कि मयङ्कुम्–खूब मिश्रित होकर नाद करते हैं। ६५०

उस पर्वत पर रहनेवाली काले रंग की "कुऱ्" स्त्रियाँ भूमि खोद कर कन्द निकालने जाती हैं। पर वहाँ बाघ आते-जाते है। ये स्त्रियाँ बिना भय के खोदें— इस वास्ते चमड़े के वाद्य बजाये जाते हैं। ९५०

कोळि पङ्गय मूळ्हक् कुळिर्हयम्, कोळि पङ्गय मूळ्हक् कुलैन्दवाल्
आळि पॊङ्गु मरम्बय रोदिये, आळि पॊङ्गु मरम्बय रोदिये 951

कुळिर् कयम्–शीतल जलाशयों में; कोळ् इपम्–बलिष्ठ गज; कयम्–कलभ; मूळ्क–गोते लगाते हैं, इसलिए; कोळि–वट वृक्ष; पङ्कयम्–कमल; ऊळ्क

कुलैन्त–डील खोकर विध्वस्त हुए; आळि पोङ्कुम्–शेर जहाँ गरजकर उठते हैं; मरम् पैयर् ओति–उन तरुसंकुल प्रदेश के उस पर्वत में; अरम्पैयर् ओति–अप्सराओं के केश पर; आळि पोङ्कुम्–अलि उमंग के साथ मँडराते है। ६५१

शीतल जलाशय में वलिष्ठ हाथी और कलभ आकर गोते लगाते है। इसलिए तट पर रहनेवाले वट वृक्ष और जलस्थ कमल नष्ट हो जाते थे। शेर जिस प्रदेश में दहाड़ते हुए झपटते है उस प्रदेश में रहनेवाली अप्सराओं के केश पर अलि मुदित होकर मँडराते हैं। ९५१

आह मालय माहवु ळाळ्पोलि, वाह मालय निऩ्ऱॆऩ लाहुमाल्
मेह मालै मिडैन्दऩ मेलॆलाम्, मेह मालै मिडैन्दऩ कीऴॆलाम् 952

मेल् ऍलाम्–ऊपर के तलों में; मेकम् मालै–मेघमालायें; मिटैन्तत–खूब भरी हुई थीं; कीऴ् ऍलाम्–निचले तलों में; मे कम् मालै–उत्तम आकाशलोक की मालाएँ; मिटैन्तत–भरी पड़ी हैं; आकम् आलयमाक उळाळ्–वक्षनिवासिनी (श्रीलक्ष्मी) के; पोलिवु आक–शोभित रहने के लिए; माल् अयल् निऩ्ऱतु–श्रीविष्णु के पास खड़ी हैं; ऍन्तल् आम्–ऐसा कल्पना करने योग्य था। ६५२

ऊपरी भाग पर मेघ-मालाएँ पायी जाती हैं। नीचे उत्तम देवलोक में मिलनेवाले पुष्पों की मालाएँ तितर-वितर पड़ी है। यह दृश्य ऐसा लगता है मानो मेघवर्ण श्रीविष्णु के पास लक्ष्मीदेवी खड़ी हों। (यहाँ तक के नौ पदों में भावछटा से अधिक यमक की सज्जा है।)। ९५२

पोङ्गु तेनुहर् पूमिञि ऱामॆऩ, ऍङ्गु मादरु मैन्दरु मीण्डियत्
तुङ्ग माल्वरैच् चूऴल्हळ् यावयुम्, तङ्गि नीङ्गलर् तामिऩि दाडिऩार् 953

पू पोङ्कु तेऩ् नुकर्–फूलों से ढलकनेवाले शहद के पान में लीन; मिञिऱु आम् ऍऩ–भ्रमरों के समान; मातरुम् मैन्तरुम्–स्त्रियाँ और पुरुष; ऍङ्कुम् ईण्टि–सर्वत्र मिलकर घूमकर; अ तुङ्कम् माल् वरै–उस उत्तुंग और गुरु पर्वत के; चूऴल्कळ् यावैयुम्–सभी स्थानों में; तङ्कि–ठहरकर; नीङ्कलर्–नहीं हटते; इऩितु आटिऩार्–सुख से क्रीडा करते रहे। ६५३

शहद झरनेवाले फूलों पर जैसे भ्रमर, वैसे ही स्त्रियाँ और पुरुष उस उन्नत पर्वत पर सर्वत्र इकट्ठा होकर, मनोरम हरे-भरे स्थानों में बैठकर, अलग होने का नाम न लेते हुए खूब क्रीडामग्न रहे। ९५३

इऱक्क मॆन्बदै यॆण्णल रऩ्ऩदु, पिऱक्क लऩ्नदोर् पीऴय दाहलिऩ्
तुऱक्क मॆय्दिय तूयव रॆऩ्ऩ, मऱक्क हिऱ्ऱिल रऩ्नदऩ् माण्बॆलाम् 954

तुऱक्कम् ऍय्तिय तूयवरे ऍऩ–स्वर्गप्राप्त पवित्र जीवों की ही तरह; अऩ्ऩतऩ् माण्पु ऍलाम्–उसकी सारी विशेषताओं को; मऱक्ककिऱ्ऱिलर्–भूल नहीं सके; इऱक्कम् ऍऩ्पतै–उतरने का नाम; ऍण्णलर्–नहीं सोचते; अऩ्ऩतु–उतरना; पिऱक्कल् अऩ्ऩतु–जन्म लेने की सी; ओर् पीऴैयतु आतलिऩ्–पीड़ा देनेवाली बात है। ६५४

उस पर वे सब स्वर्ग में पहुँचे हुए पवित्र जीवों के समान रहे। वे उस पर्वत पर की सुखद मनोरंजन देनेवाली विशेषताएँ नहीं भूल सके (छोड़ जाना नहीं चाहते थे)। नीचे उतरने का नाम लेना भी उन्हें असह्य लगा क्योंकि वह स्वर्गवासी के लिए जन्म लेने की पीड़ा के समान लगता था। ९५४

मञ्जार्मलै वारण मॊत्तडु वान्ति लोडुम्
वॆञ्जायै युडैक्कदि रङ्गदन् मीदु पायुम्
पञ्जानन मॊत्तदु मऱ्ऱदु पाय वेऱुम्
शॆञ्जोरि यॆन्नप्पॊलि वुऱ्ऱदु शॆक्कर् वानम् 955

मञ्चु आर् मलै–सुन्दरतापूर्ण अस्ताचल; वारणम् ऑत्ततु–हाथी के समान था; वातिल् ओट्टुम्–आकाश में सवेग जानेवाले; वॆम् चायै उटै (य) कतिर्–गरम किरणों-वाले सूर्य; अङ्कु–वहाँ; अतन् मीतु पायुम्–उस (पर्वत पर) झपटनेवाले; पञ्चाननम् ऑत्ततु–पंचानन के समान हैं; अतु पाय–उसके झपटने से; एऱुम्–निकलकर फैलनेवाले; चॆम् चोरि ऎन–लाल रक्त के समान; चॆक्कर् वानम्–सांध्यगगन; पॊलिवुऱ्ऱतु–रागरंजित रहा। ९५५

तब सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था। वह अस्ताचल हाथी के समान था। उस ओर जानेवाला गरम अंशुमाली उस पर झपटने वाले पंचानन (सिंह) के समान था। उसके झपटने पर हाथी का सिर फटा और चारों ओर रक्त फैला-सा संध्या-गगन का रंग दिखाई दिया। ९५५

तिणियार्शिनै मामरम् यावयुञ् जॆक्कर् पायत्
तणियाद नऱुन्दळि रीन्ऱन पोन्ऱु ताऴ
अणियारॊळि वन्दु निरम्बलि नङ्ग मॆङ्गुम्
मणिया लियन्ऱ मलैयॊत्तदम् मैयिल् कुन्ऱम् 956

तिणि आर् चिनै–घनी डालोंवाले; मा मरम्–बड़े पेड़ों; यावैयुम्–सभी पर; चॆक्कर् पाय–सायं संध्या का लाल रंग छा गया, तब; तणियात–अक्षय; नऱु तळिर्–सुवासपूर्ण पल्लवों को; ईन्ऱत्त पोन्ऱु–अभी उत्पन्न किया हो, ऐसा; ताऴ–झुके हुए थे; अणि आर् ऑळि–मनोरम वह लालिमा; अङ्कम् ऎङ्कुम्–सभी अंगों में; वन्तु निरम्पलिन्–आकर फैल गई, इसलिए; अ–वह; मै इल् कुन्ऱम्–निर्दोष (चन्द्रशैल) पर्वत; मणियाल् इयन्ऱ्–मणिक नगों के बने; मलै ऑत्ततु–पर्वत के समान लगा। ९५६

घनी डालों से युक्त सभी आम के पेड़ों पर वह लालिमा छायी थी। इसलिए सभी पत्ते नये पल्लवों के समान लगे। उनका प्रकाश पर्वत के सभी भागों में बिखरा था। इसलिए वह पर्वत माणिक्य के पत्थरों का बना हुआ-सा दिखाई दिया। ९५६

कण्णुक्किनि दाहि विळङ्गिय काट्चि यालुम्
अँण्णरुकरि दाहि यिलङ्गुशि रङ्ग ळालुम्
वण्णक् कौंळुञ्जन् दनच्चेदह मार्प णिन्द
अण्णऱ् करियान् ऱनैयौत्तदव् वाशिल् कुन्ऱम् 957

अव् आचु इल् कुन्ऱम्–वह निर्दोष पर्वत; कण्णुक्कु इनितु आकि विळङ्किय–आँखों को सुखद रखनेवाले; काट्चियालुम्–रूप सौष्ठव से और; अँण्णरुकु अरितु आकि–अशोच्य बनकर; इलङ्कु–प्रकाशमय रहनेवाले; चिरङ्कळालुम्–शिखरों के कारण; वण्णम्–सुचारु रंग के; कौंळु चन्तनम् चेतकम्–गाढ़े चन्दन के लेप से; मार्पु अणिन्त–चर्चित वक्षवाले; अण्णल् करियान् तनै–पूज्य श्यामल (श्री विष्णुदेव) के समान था। ९५७

उस पर्वत पर आँखों को सुख देनेवाले अनेक दृश्य थे। उसका स्वरूप भी स्वतः रम्य था। अगणित और शोभायमान शिखर थे। इनके कारण वह नीलमेघश्याम श्रीविष्णु के समान लगता था, जिनका वक्ष चंदन के गाढ़े लेप से चर्चित हो। (इधर श्रीविष्णु का "सहस्रशीर्ष, सहस्राक्ष, सहस्रपात" —रूप इंगित है।)। ९५७

ऊनुम्मुयि रुम्मनै यारौरु वर्क्कौरुवर्
तेनुम्मिञि ऱुञ्जिऱु तुम्बियुम् बम्बि यार्प्प
यानै यिनमुम् पिडियुम्मिह लाळि येरुम्
मानुङ् गलैयु मॅन्तमाल्वरै वन्दि ळिन्दार् 958

औरुवर्क्कु औरुवर्–परस्पर; ऊनुम् उयिरुम् अनैयार्–शरीर और प्राण-सम (प्यारे) रहनेवाले; तेनुम् मिञिऱुम् चिऱु तुम्पियुम् पम्पि आर्प्प–मधुमक्खियाँ, काले भ्रमर और छोटे अलियों के आकार गुंजार करते; यानै इनमुम् पिटियुम्–हाथी के समूह और हथिनियाँ; इकल् आळि–बलिष्ठ शेरनियाँ और; एऱुम्–शेर; मानुम् कलैयुम्–हरिणियाँ और हरिण; अँन–जैसे; माल् वरै इऴिन्तु–श्रेष्ठ पर्वत से उतरकर; वन्तार्–आये। ९५८

(ऊपर घूमने जो गये थे वे स्त्री-पुरुष नीचे उतर आये।) परस्पर प्राणसम प्यार करनेवाले स्त्री और पुरुष उस श्रेष्ठ पर्वत से नीचे उतर आये। तब उनके केशों पर भ्रमर आकर गुंजार के साथ मँडराने लगे। वे हथिनी और हाथी के समान, शेरनी और शेर के समान तथा हरिणी और हरिण के समान दिखाई दिये। (रूप, बल, छटा आदि के साधर्म्य के कारण उन जानवरों में और इन स्त्री-पुरुषों में तुलना की गयी है।)। ९५८

काल्वानहत् तेरुडै वॅय्यवन् काय्ह डुङ्गण्
कोलमाय्कदिरप् पुल्लुळैक् कौंलशिनक् कोळ रिम्मा

मेल्पाल् मलैयिऱ् पडवीङ्गिरुळ् वेऱि रुन्द
माल्यानै यीट्ट मॅन्नवन्दु परन्द दन्ऱे 959

काल्–(एक) चक्रवाले; वानकम् तेर् उटै–आकाशचारी रथ के स्वामी; वॅय्यवन्–सूर्यरूपी; काय् कटु कण्–जलानेवाली भयंकर आँख; कोल्माय्–शरों को छिपा सकनेवाला; कतिर् पुल् उळै–किरणोंरूपी अयालवाला; कॅाल् चिनम्–संहारक क्रोधी; कोळ् अरि मा–शानदार सिंह; मेल् पाल् मलैयिल् पट–पश्चिमी पर्वत के पीछे छिप जाने से; वेरु इरुन्त–अलग छिपे रहे; वीङ्कु इरुळ्–घना विशाल अन्धकार; माल् यानै ईट्टम् ॲन–बड़े गजदलों के समान; वन्तु परन्ततु–आकर छा गया (इसमें श्लेष भी है। सिंह सम्बन्धी अर्थ करते वक्त यों विग्रह करना पड़ेगा— काल् वाल् नकत्तु एर् उटै–पैरों में सफ़ेद नाखूनों की शोभा जिसकी हो; वॅय्य वन् काय् कटु कण्–भयंकर, और अचल सुदृढ़ दृष्टि और; कोल् माय् कतिर् पुल् उळै–शर छिपा सकनेवाले उज्ज्वल अयालवाला; कॅाल चिनम् कोळरि मा–घातक क्रोध का शानदार सिंह।)। ९५९

एकचक्ररथी सूर्य सिंह था जो अस्ताचल के पीछे छिप गया। तब अंधकाररूपी गज जो अब तक कहीं छिपे रहे प्रकट हो आये और सर्वत्र फैल गये। (संधिविग्रह के चातुर्य से सूर्य और सिंह दोनों के लिए प्रयुक्त होने-वाली शब्दयोजना है। सूर्य के पक्ष में— एकचक्र, आकाशचारी रथ के स्वामी किरणमालीरूपी, जला सकनेवाली भयंकर आँखें; शरों को छिपा दें ऐसी किरणोंरूपी अयाल; संहारक क्रोध इनसे युक्त शानदार सूर्यरूपी सिंह। शेर के पक्ष में— पैरों में नाखूनों की शोभा से युक्त; क्रूरता और भयंकर आँखों का; और शर प्रेषित हों तो वे जाकर छिप जायँ ऐसे अयालों का; घातक क्रोधी सिंह।)। ९५९

मन्दार मुन्दु महरन्द मणङ्गु लावुम्
अन्दा ररशर्क् करशन्ऱ ननीक वॅळ्ळम्
नन्दा दॉलिक्कु नरलैप्पॅरु वेलै यॅल्लाम्
शॅन्दा मरैपूत् तॅन्नत्तीब मॅडुत्त वन्ऱे 960

मन्तारम् उन्तु–मन्दार सुमनों के बने; मकरन्तम् मणम् कुलावुम्–मकरन्दगन्ध-मिश्रित; अम् तार्–सुन्दर मालाधारी; अरचर्क्कु अरचन् तन्–राजाधिराज (दशरथ) की; अनीकम्–सेना; वॅळ्ळम्–का समूह; नन्तातु ऑलिक्कुम्–अक्षय रूप से गरजनेवाले; नरलै पॅरु वेलै ॲल्लाम्–बड़े शोर-युक्त सागर भर में; चॅन्तामरै पूत्त–लालकमल विकसित हुए; ॲन्न–ऐसा; तीपम् ॲटुत्त–दीप (जल उठे) जलाये गये। ९६०

(रात हो गयी और दीप जलाये गये— वह दृश्य कैसा था?) मंदारमकरंद से वासित मालाधारी चक्रवर्ती दशरथ की सेना विशाल सागर है जो अक्षय रूप से गरजती (शोर मचाती) रहती है। उस पर अनेक कमल खिले हों, ऐसे अनेक दीप जलाये गये। (मंदार—देवलोक तरु का पुष्प।)। ९६०

तण्णक् कडलिऱ् ऱळिशिनदु तरङ्ग नीङ्गि
विण्णिऱ् चुडर्वॆण् मदिवन्ददु मीन्गळ् चूळ
वण्णक् कदिर्वॆण् णिलवित्तिरळ् वालु हत्तो
डॊण्णित् तिलमीन् ऱॊळिर्वाल्वळै यूर्वदॊत्ते 961

वॆळ् मति–श्वेत चन्द्र; तण्णम् कटलिल्–शीतल समुद्र में; तळि चिनतु तरङ्कम् नीङ्कि–सीकरें बिखेरनेवाली तरंगों से छूटकर; वण्णम् कतिर्–सुभग, श्वेत; वॆळ् निलवु ईन्–चाँदनी के समान प्रकाश देनेवाले; तिरळ् वालुकत्तोटु–राशिकृत बालुकाओं के साथ; ऑळिर् वाल् वळै–दीप्तिमान शंख; ऑळ् नित्तिलम् ईन्ऱु–उज्ज्वल मोतियों को जनाते हुए; ऊर्वतु ऑत्तु–रेंगता है, जैसे; विण्णिल्–आकाश में; चुटर् मीन्कळ् चूळ–उज्ज्वल नक्षत्रों से घिरा हुआ; वन्ततु–उदित हो आया। ९६१

चंद्र उदित होकर आकाश पर धीरे-धीरे चलने लगा। वह जैसे जलबिंदुएँ बिखेरनेवाली तरंगों से छूटकर आया हो ऐसा लगा। मनोरम-गति से चलनेवाला वह उस श्वेतवर्ण शोभायुक्त शंख के समान रहता है जो बालुका में दीप्तियुत मुक्ताओं को उत्पन्न करता हुआ संचार कर रहा हो। चंद्र के चारों ओर जो नक्षत्र थे वे ही मोतीरूप थे। ९६१

मीनाऱु वेलै यॊरुवॆण्मदि यीनुम् वेलै
नोना ददनै नुवलर्करुङ् गोडि वॆळ्ळम्
वाना डियरिऱ् पॊलिमादर् मुहङ्ग ळॆन्नुम्
आना मदियङ् गण्मलर्न्द दनीह वेलै 962

मीन् नाऱु वेलै–मछलियों की गन्ध जिसमें महकती है उस समुद्र ने; ऑरु वॆळ् मति ईनुम् वेलै–एक श्वेत चन्द्र उत्पन्न किया, तब; अततै नोतातु–उसका सहन न करके; अनीकम् वेलै–(चक्रवर्ती की) सेना के सागर ने; वान् नाटियरिल् पॊलि–देवांगनाओं के समान आभायुक्त; नुवलर्कु अरु–अगण्य; कोटि वॆळ्ळम् मातर्–करोड़ों सागर (एक बृहत् संख्या) स्त्रियों के; मुकङ्कळ् ऎन्नुम्–मुखरूपी; आना मतियङ्कळ्–पूर्ण कलावाले (निष्कलंक) चन्द्रों को; मलर्न्ततु–पैदा कर विकसित कराया। ९६२

मछलियों की गंध से युक्त सागर से वह चंद्र ऊपर आया। यह चंद्र सागर ने उत्पन्न किया हो ऐसा लगता था। चक्रवर्ती की सेना के सागर को यह असह्य हो गया। उसने अनेक अनोखे चंद्र पैदा कर दिये। (वे कौन चंद्र थे) वे देवाँगनाओं के समान लगनेवाली कोटि-कोटि स्त्रियों के मुखचंद्र हैं, जिनमें कलंक नहीं है। ९६२

मण्णुम् मुळवित् नीलिमङ्गयर् पाड लोदै
पण्णुन् नरम्बिऱ् पयिलवारिशै पाणि योदै
कण्णुम् मुडैवे यिशैकण्णुळ राड ऱोरुम्
विण्णुम् मरुळुम् वडिविम्मि यॆळुन्द वन्ऱे 963

कण्णुळर् आटल् तोरुम्–नर्तकों का नाच जहाँ-जहाँ होता था वहाँ; मण् मुळवु इन् ऑलि–मृतिकाचेप लगे हुए मर्दल की सुमधुर ध्वनि; मङ्कैयर् पाटल् ओतै–स्त्रियों की संगीत ध्वनि; पण्णुम् नरम्पिल् पयिल्वार्–योग्य रीति से बनी तन्त्रियों को झंकृत कर (वीणा का) स्वर उठानेवालियों का; इचै–संगीत; पाणि ओतै–करताल का स्वर; कण् उटै वेय् इचै–रन्ध्रसहित बाँसुरियों की ध्वनि; विण्णुम् मरुळुम् पटि–देवों को भी मोहित करते हुए; विम्मि ॲळुन्त–भर उठे। ६६३

सेना के पड़ाव में कई तरह के संगीत के स्वर उठे। नाच जहाँ हो रहे थे वहाँ मर्दलों का मधुर नाद उठ रहा था। स्त्रियाँ गा रही थीं। वीणा आदि तंत्रीवाद्यों का वादन हो रहा था। करताल की ध्वनि भी सुनाई देती थी। बाँसुरियाँ भी बज रही थीं। यह सब नाद मिल-कर देवों को भी मोहित कर रहे थे। ९६३

मणियिन्तणि नीक्कि वयङ्गॉळि मुत्तम् वाङ्गि
अणियुम्मुलै यारहि लावि पुलर्त्तु नल्लार्
तणियु मदुमल् लिहैत्तामम् वॅरुत्तु वाशन्
दिणियु मिदळ्प्पित् तिहैक्कत्तिहै शेर्त्तु वारुम् 964

मणियित् अणि नीक्कि–रत्नाभरणों को हटाकर; वयङ्कु ऑळि–दीप्त प्रकाश-वाले; मुत्तम् वाङ्कि–मोतियों (की मालाओं) को भी दूर करके; अणियुम् मुलै–चित्रकारी से सुन्दर बने स्तनों को; आर् अकिल् आवि–श्रेष्ठ अगरु के धुएँ से; पुलर्त्तुम्–सुखानेवाले; नल्लार्–योषिताएँ; तणियुम् मतु–शहदहीन (पुरानी); मल्लिकै तामम् वॅरुत्तु–मल्लिका की मालाएँ हटाकर; वाचम् तिणियुम् इतळ्–सुगन्ध-पूर्ण दलों के; पित्तिकै कत्तिकै–"करुमुहै" नामक (या चमेली ?) पेड़ के फूलों के गजरे; चेर्त्तु वारुम–जिन्होंने पहन लिए वे। ६६४

(स्त्रियाँ रात के जीवन के लिए तैयारी कर रही हैं।) रत्नाभरण मुक्ताहार आदि उन्होंने निकाल दिया। स्तनों पर चित्रकारी की सजावट हुई। उसको सुखाने के लिए अगरु का धुआँ किया गया। फिर जिनमें शहद का स्रवना कम हो गया हो (यानी जो पुरानी पड़ गयी हो) उन मल्लिका पुष्पों की मालाओं को उतारकर चमेली ("करुमुकै" नाम के पेड़ के) फूलों के गजरे पहन लिये। ९६४

पुदुक्कॊण्ड वॆळम् पिणिप्पोर्पुनै पाड लोदै
मदुक्कॊण्ड मान्दर् मडवारिन् मिळर्रु मोदै
पॊदुप्पॆण्डि रल्हुर् पुनैमेहलैप् पूश लोदै
कदक्कॊण्ड यानै कळियाड्कळिक् किनूर वोदै 965

पुतु कॊण्ट वेळम्–अभी नये पकड़कर लाये गये हाथी को; पिणिप्पोर्–बन्धन में लानेवाले लोगों के; पुनै–रचकर; पाटल् ओतै–गाये जानेवाले गीतों का स्वर; मतु कॊण्ट मान्तर्–सुरा पिये हुए पुरुषों के; मटवारिन्–स्त्रियों के पास; मिळर्रुम् ओतै–(काम-) प्रलाप करने का स्वर; पॊतु पॆण्टिर्–वेश्याओं के; अल्कुल् पुनै–

जघन भाग पर पहने हुए; मेकलै–मेखला आदि आभरणों के; पूचल् ओतै–झंकृत होने का नाद; कतम् कॉण्ट यातै–मदमत्त गजों का; कळियाल्–मत्तता के कारण; कळिक्किनॢऱ ओतै–चिंघाड़ने का स्वर। ९६५

(वहाँ अनेक तरह के नाद सुनाई दे रहे थे।) हाथी जो नया पकड़ा गया था उसको वन्धन में लाने के प्रयास में लोग नये सिरे से रचकर गाना गा रहे थे। खूव ताड़ी पीकर कुछ लोग स्त्रियों के साथ कामवासना के उकसे प्रलाप कर रहे थे। कहीं वेश्याओं की मेखलाएँ क्वणित होती थीं। मत्तगज मस्ती के साथ चिंघाड़ रहे थे। (इस पद में "स्वर" संज्ञा है पर कोई क्रिया पद नहीं है। संकेत है कि अन्य प्रकार के नाद भी उठते थे।)। ९६५

उण्णावमु दऩ्ऩ कलैप्पॊरु ळुळ्ळ दुण्डुम्
पॆण्णारमु दम्मनै यार्मऩत् तूडल् पेर्त्तुम्
पण्णाऩ पाडल् शॆविमाऩ्दिप् पयऩ्कॊ ळाडल्
कण्णा ऩऩितुय्क् कवुङ्गङ्गुल् कऴिऩ्द दऩ्ऱे 966

उण्णा अमुतु अऩ्ऩ–जो खाया नहीं जाता (वरन भोगा जाता है) उस अमृत के समान; कलै पॊरुळ् उळ्ळतु–काम-कला का विषय जो है उस रति-भोग को; उण्टुम्–भुगतकर; पॆण् आर् अमुतम् अऩैयार्–स्त्रियों में अमृत समान जिनको मानते हैं उन (अपनी) प्रियाओं के; मनत्तु ऊटल् पेर्त्तुम्–मन का मान दूर करके; पण् आऩ पाटल्–रागयुक्त गीतों को; चॆवि माऩ्ति–श्रवण से सुनकर; पयऩ् कॊळ् आटल्–अर्थयुक्त नाच को; कण्णाल् ऩऩि तुय्क्कवुम्–आँखों से खूब देखने का आनन्द उठाकर; अऩ्ऱु कङ्कुल्–उस दिन की रात; कऴिऩ्ततु–वीत गई थी। ९६६

(लोगों ने वह रात कैसे वितायी? उनके कार्यों का वर्णन है।) रति भोग ऐसा अमृत है जो मुख से नहीं खाया जाता। कोकशास्त्र के उस विषय को कार्यान्वित कर लोग आनन्द उठा रहे थे; या रूठी हुई अपनी प्रेयसियों के मान को दूर करने मे व्यस्त थे। उन्हें उनकी प्रेयसियाँ स्त्रियों में अमृत के समान थीं यानी वे संजीवनी शक्ति रखती थीं। लोग राग के साथ गाये गये गीत सुनते थे या अर्थयुक्त नाच देखते थे। ऐसे कामों में लोगों का उस रात का समय वीता। ९६६

15. पूक्कॊय् पडलम् (सुमन-संग्रह पटल)

मीऩुडै यॆयिऱ्ऱुक् कङ्गुऱ् कऩहत्तै वॆहुण्डु वॆय्य
काऩुडैक् कदिर्ह ळॆऩ्ऩु मायिरङ् करङ्ग ळोच्चित्
ताऩुडै युदय मॆऩ्ऩुम् दमऩियत् तऱिपि ऩिऩ्ऱु
माऩुड मडङ्ग लॆऩ्ऩत् तोऩ्ऱिऩऩ् वयङ्गु वॆय्योऩ् 967

वयङ्कु वॆय्योऩ्–(प्रकाशपूर्ण) विद्यमान सूरज; मीऩ् ऎयिऱु उटैय–नक्षत्ररूपी दाँतों के साथ; कङ्कुल कनकऩै–रात्रिरूपी कनक कशिपु पर क्रोध करके; काऩ् उटै (य)–घनी; वॆय्य–गरम; कतिर्कळ् ऎऩ्ऩुम्–किरणें रूपी; आयिरम् करङ्कळ् ओच्चि–सहस्र हाथ बढ़ाते हुए; ताऩ् उटै (य)–अपने; उतयम् ऎऩ्ऩुम्–उदयाचल रूपी; तमनियम् तरियिऩ् निऩ्ऱु–स्वर्णस्तंभ से; मातुट मटङ्कल् ऎऩ्ऩ–नरसिंहमूर्ति के समान; तोऩ्ऱिऩऩ्–प्रकट हुआ। ९६७

सूर्य उदित हुये। वह नृसिंहमूर्ति के समान जो स्वर्ण के खम्भे के अन्दर से उसको चीर कर निकले थे, उदयाचल को भेदकर बाहर निकले। उनके दाँत नक्षत्र थे। हिरण्यकश्यप के स्थान में अंधेरा था। सूर्य की तापक किरणें उनके सहस्र कर थी। (हिरण्यकश्यप यद्यपि कनकवर्ण था तो भी साधारणरूप से राक्षस काले ही समझे जाते हैं। उस न्याय के अनुसार कनककश्यप को कवि ने अंधेरे का रंग दिया। इस पद्य में उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार है।)। ९६७

मुऱैयॆला मुडित्त पिऩ्ऩर् मऩ्ऩनु मूरित् तेर्मेल्
इऱैयॆलाम् वणङ्गप् पोऩा ऩॆऴुन्दुडऩ् शेऩै वॆळ्ळम्
कुऱैयॆलाञ् जोलै याहिक् कुऴियॆलाङ् गळुनी राहित्
तुऱैयॆलाङ् कमल मान शोणया ऱडैन्द दऩ्ऱे 968

मुऱै ऎलाम् मुटित्त पिऩ्ऩर्–नित्य कर्मों का अनुष्ठान पूरा करने के बाद; मऩ्ऩऩुम्–चक्रवर्ती भी; मूरि तेर् मेल्–बड़े रथ पर चढ़कर; इऱै ऎलाम् वणङ्क–सभी राजाओं को नमस्कार करने देते हुए; पोऩाऩ्–गये; चेऩै वॆळ्ळम्–सेना सागर भी; उटऩ् ऎऴुन्तु–साथ निकलकर; कुऱै ऎलाम्–(जिसके) सब कछारों या पुलिनों या तटों पर; चोलै आकि–वन बने थे; कुऴि ऎलाम्–गहरे भागों में; कऴुनीर आकि–लाल कुमुद उगे थे; तुऱै ऎलाम् कमलम् आऩ–घाटों में कमल थे; चोणै आऱु–(उस) शोण नदी पर; अटैन्ततु–पहुँचा। ९६८

प्रातःकाल के कर्मानुष्ठान यथाविधि पूरा करके चक्रवर्ती दशरथ प्रस्थानोन्मुख हुए। तब राजा लोगों ने उनकी अभ्यर्थना की। वे सुदृढ़ रथ पर आरूढ़ हो चलने लगे। सेना का सागर भी आगे बढ़ने लगा। वे शोण नदी के तट पर आ पहुँचे। शोण के तटों पर घने उपवन थे; घाटों में (जल में) कमल का वन था। कुछ गहरे जल में लाल कुमुद उगे थे। (नदी सागर को जाती है; यह प्राकृतिक है। यहाँ सागर नदी पर जाता है। यह विशेषता है!)। ९६८

अडैन्दव णिऱुत्त पिन्ऩ ररुक्कनु मुम्बर् शार
मडन्दयर् कुळाङ्ग ळोडु मऩ्ऩरु मैन्दर् तामुम्
कुडैन्दुवण् डुऱैयु मॆऩ्बूक् कॊय्दुनी राड मैतीर्
तडङ्गळु मडुवुज् जूऴ्न्द तण्णऱुञ् जोलै शार्न्दार् 969

अटैन्तु–पहुँचकर; अवण् इरुन्त पिन्नर्–वहाँ ठहरे, बाद; अरुक्कनुम्–सूर्य भी; उम्पर् चार–आकाशमध्य पहुँचा; मन्नरुम्–राजा लोग और; मैन्तरुम्–वीर लोग; मटन्तैयर् कुळाङ्कळोटु–स्त्रियों के दलों के साथ; वण्टु कुटैन्तु उरैयुम्–जिनपर भ्रमर कुरेदते हुए ठहरे थे; मेन् पू कॉय्तु–(उन) कोमल सुमनों को चुनने; नीर् आट–व स्नान करने के लिए; मै तीर्–निर्मल; तटङ्कळुम्–बड़े तालाबों और; मट्टुवुम्–छोटे तालाबों से; चूळ्न्त–घिरे हुए; तण् नऱु चोलै–शीतल व सुगन्धित उपवनों में; चार्न्तार्–पहुँचे। ६६६

वहाँ पहुँच कर सेना ने पड़ाव डाला। तब तक सूर्य आकाश-मध्य पहुँच गये। (मध्याह्न हो गया) राजा लोग और सेना-वीर अपनी-अपनी स्त्री के साथ पुष्प चयन करने और स्नान आदि करने को उद्यत हो उठे। वे उन उद्यानों की तरफ़ गये जिनके फूलों पर भ्रमर बैठकर कुरेद रहे थे और जिनके चारों ओर निर्मल छोटे-बड़े सरोवर थे। ९६९

तिण्शिलै पुरुव माहच् चेयरिक् करुङ्ग णम्बाल्
पुण्शिल शॅय्व रॅन्ऱु पोवन पोन्ऱ मञ्ञै
पण्शिलम् बणिवा यार्प्प नाणिनार् परन्द किळ्ळै
ऑण्शिलम् बरऱ्ऱ माद रॉदुङ्गुदो ऱॊदुङ्गु मन्नम् 970

मञ्ञै–मोर; पुरुवम्–भौंहों को; तिण् चिलै आक–सुदृढ़ धनुष बनाकर; चेय् अरि करु कण्–लाल डोरोंवाली काली आँखों के; अम्पाल्–शरों द्वारा; पुण् चिल चॅय्वर् ऍन्ऱु–हमें आहत करेंगे, समझकर; पोवन पोन्ऱ–हट जाते से लगे; पण् चिलम्पु–संगीत के समान स्वर देनेवाले; अणिवाय्–सुन्दर मुखों से; आर्प्प–(जब स्त्रियाँ) बोलीं, तब; किळ्ळै–शुक; नाणिनाल्–लाज से; पऱन्त–उड़ गये; मातर्–स्त्रियाँ; ऑण् चिलम्पु अरऱ्ऱ–उज्ज्वल नूपुर को झंकृत करते हुए; ऑतुङ्कु तोऱुम्–(जब) चलती थीं, तब; अन्नम्–हंसपक्षी; ऑतुङ्कुम्–(खुद वैसे ही) चलते हैं (या उनसे हट जाते)। ९७०

जब स्त्रियाँ उन उद्यानों में पहुँचीं तब मोर यह समझकर कि इन स्त्रियों की भौंहोंरूपी धनुष से लाल रेखायुक्त काली आयत आँखों की दृष्टिरूपी शर निकल कर हमें आहत करेंगे, हट गये। जब वे संगीत के समान मधुर भाषण करने लगीं तब शुक लजाकर उड़ गये। जब वे नूपुरों की झंकार के साथ पग रखकर चलने लगीं तो हंस-कुल उनकी देखा-देखी चलने लगे (या एकदम वहाँ से भाग गये)। (स्त्रियों की आभा, बोली और चाल क्रमशः मोर की छटा, शुक की बोली और हंस की चाल से उपमित की जाती हैं। इसका कवि अनोखे रूप से चित्रण करते हैं।)। ९७०

शॅम्बॊन्शॅय् शुरुळुन् दॅय्वक् कुळैहळुञ् जेर्न्दु मिन्नप्
पम्बुते नलम्ब वॊल्हिप् पण्णयि नाड नोक्किक्

कॉम्बॊडुङ् गॊंडिय नारैक् कुऱिप्पऱिन् दुणर्द ऱेऱ्ऱार्
वम्बवि ळलङ्गन् मार्बिन् मैन्दरु मयङ्गि निन्ऱार् 971

चॆम् पॊन् चॆय्–चोखे स्वर्ण से रचित; चुरुळुम्–'तालपत्र' नाम के कर्णाभरण और; तॆय्वम् कुळैकळुम्–दिव्य कुण्डल; चेर्न्तु मिन्न–मिलकर चमकते है ऐसा; पम्पु तेन् अलम्प–भीड़ लगाकर बैठे भ्रमर गुंजार करते है; ऑल्कि—लचक-लचककर; पण्णैयिन्–दल बाँधकर; आटल् नोक्कि–क्रीड़ा (रत है यह) देखकर; वम्पु अविऴ्–सुगन्धि देनेवाली; अलङ्कल् मार्पिन्–(पुष्प-)माला से अलंकृत वक्षवाले; मैन्तरुम्–तरुण लोग; कॉम्पॊटुम्–पुष्पलताओं और; कॊटि अन्नारै–पुष्पलता सदृश स्त्रियों में; कुऱिप्पु अऱिन्तु–भेद जानकर; उणर्तल् तेऱ्ऱार्–पहचान नहीं पाकर; मयङ्कि निन्ऱार्–चकित खड़े हैं। ६७१

(पुरुष स्त्रियों को देखते हैं लेकिन उनको पुष्प-लताओं से अलग करना नहीं जानते।) स्त्रियों के कानों में "तालपत्र" और कुंडल के स्वर्णनिर्मित आभरण हैं। वे चमकते हैं। उनके चारों ओर भ्रमर गुंजार करते हुए मँडराते हैं। जब वे चलती है तब उनके शरीर लचकते हैं। वे इस ठाट के साथ क्रीडा करती रहती है। तब सुवासित मालाधारी पुरुष उनको देखते हैं तथा पुष्पलताओं के समान रहनेवाली उनको अलग पहचान नहीं पाते और ठगे से खड़े रह जाते है। (इसका यह अर्थ भी किया जा सकता है कि स्त्रियों की भीड़ में पुरुष अपनी-अपनी प्रियाओं को अलग पहचान नहीं पाते हैं।)। ९७१

पाशिऴैप् परवै यल्हुर् पण्डरुङ् गिळवित् तण्डेन
मूशिय कून्दन् मादर् मॊय्त्तपे रमलै केट्टुक्
कूशिन्न वल्ल पेश नाणिन्न कुयिल्ह ळेल्लाम्
वाशहम् वल्लार् मुन्निन् ऱियावर्वाय् तिऱक्क वल्लार् 972

पचुमै इऴै–चोखे स्वर्ण के बने आभरण सज्जित; परवै अलकुल्–विशाल नितंब; पण् तरुम् किळवि—संगीत-सम बोली; तण् तेन्–शीतल शहद से; मूचिय कन्तल्–(पहने हुए पुष्पों से) स्रवित करनेवाले केश; मातर्–(इनसे युक्त) स्त्रियाँ; मॊय्त्त–वहाँ आकर जमा हुईं, इसलिए; पेर् अमलै–निकला बड़ा शोर; केट्टु–सुनकर; कुयिल्कळ्–कोयलें; ऍल्लाम्–सभी; कूचिन्न अल्ल–डरीं नहीं; पेच नाणिन्न–बोलने में लजाईं; वाचकम् वल्लार् मुन् निन्ऱु–बोलने में समर्थ के सामने खड़े होकर; वाय् तिऱक्क वल्लार्–मुख खोल सकनेवाले (बोलने की हिम्मत करनेवाले); यावर्–कौन हैं ? । ६७२

उन स्त्रियों के रूप-लक्षण बड़े आकर्षक थे। वे चोखे स्वर्ण से रचित आभरण पहने हुए थीं। नितम्ब, विशाल और मनोरम थे। उनकी बोली बड़ी मधुर थी। उनके केश पर पुष्प थे जिन पर भ्रमर मँडराते और गुंजार करते थे। उन स्त्रियों की उधर भीड़ लगी और शोरगुल मचा तो वहाँ की कोयलें चुप रह गयीं। डर से नहीं, वरन

उनकी बोली सुनकर अपने स्वर की हीनता समझकर वे चुप्पी साध गयीं। हाँ, वाक्समर्थ के समक्ष कौन अपना मुख खोलने (बोलने) की हिम्मत करेगा ? (इसमें अर्थान्तरन्यास है।)। ९७२

नञ्जिनुङ् गॊडिय नाट्ट ममुदॆन्न नयन्दु नोक्किच्
चॆञ्जॆवे कमलक् कैयाऱ् ऱीण्डलु नीण्ड कॊम्बुम्
तञ्जिलम् बडियित् मॆन्पूच् चोरिन्दिडै ताऴ्न्द वॆन्ऱाल्
वञ्जिपोन् मरुङ्गु लार्माट् टियावरे वळैहि लादार् 973

नञ्चित्तुम्–विष से भी; कॊटिय नाट्टम्–क्रूर (हानिकारक) दृष्टि से; अमुतु ऎन्न–(यह) अमृत (है) कहलाने योग्य रीति से; नयन्तु नोक्कि–चाह के साथ देखकर; कमलम् कैयाल्–अपने कमलकरों से; चॆञ्चॆवे तीण्टलुम्–यों ही पकड़ते ही; नीण्ट कॊम्पुम्–लम्बी शाखायें भी; तम् चिलम्पु अटियिल्–(उनके) नूपुर शोभित चरणों पर; मॆन् पू चॊरिन्तु–मृदु सुमनों को गिराकर; इटै ताऴ्न्त–उनके चरणों पर नत हुई; ऎन्ऱाल्–तो; वञ्चि पोल्–लता सदृश; मरुङ्कुलार् माट्टु–कमरवालियों (स्त्रियों) के प्रति; वळैकिलातार्–न झुकनेवाले; यावर्–कौन है ? । ६७३

स्त्रियाँ पुष्पित शाखाएँ झुकाती हैं। वे झुक ही नहीं जातीं वल्कि फूल भी गिरा देती है। क्योंकि वे स्त्रियाँ अपनी आँखों में जो पुरुषों के लिए विष से भी घातक लगती, चाह भर लेती हैं; अतः उनकी दृष्टि अमृत-सम मोहक हो जाती है। उनके स्पर्श मात्र से ही वे डालें झुक गयीं। अपने फूल उनके नूपुरार्पित चरणों पर अर्पित करके (मानो पूजा में) उन चरणों पर लग भी गयी। हाँ, लता-सी कमरवालियों के सामने कौन नहीं झुकेगा ? डालें भी झुक जाती हैं तो मनुष्यों के झुकने में क्या आश्चर्य है ?। ९७३

अम्बुयत् तणङ्गि नन्ना रम्मलर्क् कैह डीण्ड
वम्बवि ऴलङ्गऱ् पङ्गि वाऴरि मरुळुङ् गोळार्
तम्बुय वरैहळ् वन्दु ताऴ्वन दळिर्त्त मॆन्पूङ्
गॊम्बुह ळाऴु मॆन्ऱल् कूऱलान् तहैमैत् तॊन्ऱो 974

अम् पुयत्तु अणङ्कु अन्नार्–कमला श्रीलक्ष्मीदेवी के सदृश (जो) रहीं (उन) स्त्रियों के; अम्मलर् कैकळ् तीण्ट–सुन्दर पुष्पकरों के स्पर्श से; वम्पु अविऴ्–सुगन्ध बिखेरनेवाली; अलङ्कल् पङ्कि–पुष्पमाला से अलंकृत केश; वाऴ् अरि मरुळुम्–(जिनका देखकर) भयंकर सिंह भी डरते हैं उन; कोळार्–वलिष्ठ पुरुषों की; पुयम् वरैकळ्–भुजाएँरूपी पर्वत ही; वन्तु ताऴ्वन–आकर झुक जाते हैं, (तो); तळिर्त्त–नवीन; मॆन् पू कॊम्पुकळ्–मृदु पुष्पलताएँ; ताऴुम् ऎन्ऱल्–झुकेंगी, कहना; कूऱल् आम् तकैमैत्तु ऒन्ऱो–कहने योग्य कोई बात है क्या ?। ६७४

(कवि इस पद में उसी बात को लेकर और एक कल्पना करते हैं।) कमलोद्भवा श्रीलक्ष्मीदेवी के समान है— वे स्त्रियाँ। उनके कर-स्पर्श से

सुगन्धित पुष्पमालाओं से अलंकृत केशवाले, सिंहभयदायी पुरुषों के भुजा पर्वत ही झुक जाते हैं तो कोमल पुष्पलताएँ झुक जाती हैं यह बात उल्लेख योग्य भी है क्या ? (इसमें आश्चर्य क्या है ?) । ९७४

नदियिनुङ् गुळत्तुम् पूवा नळिनङ्गळ् कुवळै योडु
मदिनुदल् वल्लि पूप्प नोक्किय मळ्लैत् तुम्बि
अदिशय मॅय्दिप् पुक्कु वीळ्न्दन वलैक्कप् पोहा
पुदियन कण्ड पोदु विडुवरो पुदुमै पार्प्पार् 975

मति नुतल् वल्लि–चन्द्र सदृश ललाटवाली लताएँ (लता सदृश स्त्रियाँ); नतियिनुम्–नदियों और; कुळत्तुम्–तालाबों में; पूवा–जो नहीं खिले थे; नळिनङ्कळ्–उन कमलपुष्पों को; कुवळैयोटु पूप्प–कुवलयों के साथ विकसित; नोक्किय–देखनेवाले; मळ्लै तुम्पि–मधुरालापी भ्रमर; अतिचयम् ऍय्ति–विस्मित होकर; पुक्कु वीळ्न्तन–जाकर पिल पड़े; अलैक्क–(उनको हटाने के लिए) हाथ हिलाने पर भी; पोका–नहीं गये; पुतुमै पार्प्पार्–नवीन वस्तुओं को देखने को उत्सुक लोग; पुतियन कण्ट पोतु–नवीन वस्तुओं को देखने पर; विटुवरो–उनको छोड़ेंगे क्या ? । ९७५

मधुरालापी भ्रमर स्त्रियों के मुखों के पास भीड़ लगाकर मँडराते हैं। स्त्रियाँ उनके निवारणार्थ हाथ हिलाती हैं पर वे अलग नहीं हटते। इसका एक कारण है। चन्द्रसदृश ललाटों की लतासमान स्त्रियों के मुख कमलों के समान हैं और आँखें कुवलय के समान हैं। तथा ये नदियों और तालाबों (आदि जलाशयों) में उत्पन्न पुष्प नहीं हैं। यह भ्रमर के लिए नयी बात है। भ्रमर नवीनता के प्रेमी हैं। इस नवीन, अन्यत्र अप्राप्य वस्तु को पाने के बाद वे क्यों कर हटेंगे ? । ९७५

उलन्दरु वयिरत् तिण्डो ळोळुहिवा रॊळिकॊण् मेनि
मलर्न्दपून् दॊडैयत् मालै मैन्दरपात् मयिलि नन्नार्
कलन्दवर् पोल वॊल्हि यॊशिन्दन शिलहै वाराप्
पुलन्दवर् पोल नित्तृ वळैहिल पूत्त कॊम्बर् 976

उलम् तरु–चट्टान के समान; वयिरम् तिण् तोळ्–और हीरे के सदृश कठोर कन्धे; ऑळुकि–सीधे बढ़कर; वार् ऑळि कॊळ्–अतिशय उज्ज्वल; मेनि–शरीर; मलर्न्त पू तॊटैयल् मालै–(और) विकसित पुष्पों की गुंथी मालाओं के; मैन्तर् पाल्–नौजवानों के पास; कलन्तवर्–मिली हुई; मयिल् अन्नार् पोल–मोर की-सी छटावाली स्त्रियों के समान; पूत्त कॊम्पर् चिल–पुष्पडालों में कुछ; ऑल्कि ऑचिन्तन–लचककर झुक गईं; चिल–कुछ; कैवारा–वश में न आकर; पुलन्तवर् पोल–(मान न छोड़कर) रुष्ट हो रही स्त्रियों के समान; नित्तृ–तनकर; वळैकिल–नत नहीं हुईं । ९७६

(स्त्रियों की उपमा लताओं या पुष्पशाखाओं के साथ दी जाती है। अब पुष्पशाखाएँ स्त्रियों के साथ विशेषधर्म के आधार पर उपमित की

जाती हैं।) कुछ पुष्पशाखाएँ झुक गयीं और शिथिल लगीं। कुछ तनकर खड़ी रहीं। जो स्त्रियाँ चट्टान के समान कठोर और हीरे के समान दृढ़ भुजाओं, सीधे और शोभाशाली शरीरों और पुष्पितमालाओं वाले अपने प्रेमियों के साथ रतिक्रीडा में मग्न रहने के वाद थककर म्लान हो जाती हैं, उनके समान कुछ लताएँ रहीं। कुछ स्त्रियाँ अपना मान किसी भी तरह नहीं छोड़तीं, पतियों की मिन्नत नहीं मानतीं और उनके वश में नहीं आतीं। वैसे ही कुछ लताएँ जो स्त्रियों की पकड़ में नहीं आयीं, तनकर सीधी और ऊँची खड़ी रहीं। ९७६

पूवॅलाङ् गॉय्दु कॉळ्ळप् पॉलिविल तुवळ नोक्कि
यावदाङ् गणवर् कण्णुक् कळ्हिल विवॅयॅन् ड्रॅण्णिक्
कोवयुम् वडमु नाणुङ् गुळ्हळुङ् गुळ्यप् पूट्टिप्
पावयर् पणिमॅन् कॉम्बै नोक्किनर् परिन्दु निन्ड्रार् 977

पू ॲलाम् कॉय्तु कॉळ्ळ–सारे पुष्प तोड़ लेने से; पॉलिवु इल—(पुष्प-शाखाएँ) शोभाहीन होकर; तुवळ–शिथिल हुईं; नोक्कि–देखकर; पावॅयर्–प्रतिमा-सी तन्वियाँ; अळ्कु इल इवै–असुन्दर ये; कण्वर् कण्णुक्कु–हमारे पतियों की आँखों में; यावतु आम्–कैसे लगेंगी; ॲन्ड्रु ॲण्णि–यह सोचकर; कोवॅयुम्–अपनी मणिमालाओं और; वटमुम्–मुक्ताहारों को; नाणुम्–स्वर्ण की लड़ को; कुळै कळुम्–कर्णकुण्डलों को; कुळैय पूट्टि–भारावनत करके पहनाकर; पणि मॅन् कॉम्पै–झुकी पुष्पशाखा को; परिन्तु नोक्किनर्–चाव के साथ देखती हुईं; निन्ड्रार्–खड़ी रहीं। ९७७

कुछ पुष्पलताओं के सारे पुष्प चुन लिये गये। वे लताएँ शोभा खोकर म्लान रहीं। उनको देखकर कुछ स्त्रियों ने सहानुभूति के साथ सोचा कि हमारे पति देखेंगे तो क्या सोचेंगे? इसलिए उन्होंने अपने कुण्डल, मणि-मालाएँ, मुक्ताहार, सोने की करधनी आदि उतारकर उनको पहना दिया। फिर वे भारावनत उन लताओं को चाव के साथ देखती खड़ी रहीं। ९७७

तुरुम्बो दिनिड्रॅन् रुवैत्तुण्डुळ रुम्बि यीट्टम्
नरुङ्गोदै योडु नळिर्शिन्नमु नीत्त नल्लार्
वॅरुङ्गून्दन् मॉय्क्किन् ड्रनवेण्डल वेण्डु पोदुम्
उरुम्बोह मॅल्ला नलनुळ्वळि युण्ब रन्ड्रे 978

तुरुम् पोतिनिल्–घनी, बड़ी कलियों में; तेन्–शहद को; तुवैत्तु उण्टु–रौंदकर, खोलकर पीकर; उळल्–फिरनेवाले; तुम्पि ईट्टम्–भ्रमरों का झुण्ड; नल्लार्–स्त्रियों के; नरु कोतैयोटु–सुगन्धित पुष्पहारों से; नळिर् चिन्नमुम्–और छुट्टे फूलों से; नीत्त–विमुक्त; वॅरुम् कन्तल्–रिक्त केशों पर; मॉय्क्किन्ड्रन–मँडराते, बनकर; वेण्टु पोतुम्–अपने प्रिय पुष्पों को भी; वेण्टल–पसन्द नहीं करते;

नलऩ् उळ् वऴि—अच्छा-भला जहाँ मिलता है वहाँ; उरुम् पोकम् ऍल्लाम्—भोग्य भोग सब; उण्पर् अऩ्ऱे—(बुद्धिमान लोग) भोगते है न। ९७८

भ्रमर खूब समृद्ध कलियों पर बैठे, उन्हें रौंदकर खोला और शहद पी लिया। फिर स्त्रियों के केश पर जाकर बैठे। केश पर न मालाएँ थीं न छुट्टे फूल ही। केश की सुगन्ध स्वाभाविक सुगन्ध थी। वह उन्हें नयी लगी। उसी पर आसक्त होकर वे स्त्रियों के सिर पर टिक गये। उन्हें अन्य फूलों से प्रेम नहीं रहा। हाँ, बुद्धिमान लोग, जहाँ भोग के साथ हित भी मिलता है वहीं रहकर भोग्य सभी भोगों को भुगतते हैं। वैसे ही ये भ्रमर केश पर ही मँडराते रहे। (अर्थान्तरन्यास है।) । ९७८

मॅय्प्पोदि तङ्गैक् कणियऩ्ऩवळ् वॅण्ब ळिङ्गिल्
पॉय्प्पोदु ताङ्गिप् पॉलिहिऩ्ऱतऩ् मेऩि नोक्कि
इप्पावै यॅङ्गोऩ् कुयिरऩ्ऩव ळॆऩ्ऩ वुऩ्ऩिक्
कैप्पोदि ऩोडु नॅडुङ्गण्पऩि शोर निऩ्ऱाळ् 979

मॅय्—रूप में; पोतिल् नङ्कैक्कु—कमला श्रीलक्ष्मीदेवी के लिए भी; अणि अऩ्ऩवळ्—श्रृंगार बन सकनेवाली एक; वॅण् पळिङ्किल्—श्वेत स्फटिक शिला पर; पोतु ताङ्कि पॉलिकिऩ्ऱ—पुष्पालंकृत होकर शोभा देनेवाले; तऩ् पॉय् मेऩि—अपना छाया-रूप; नोक्कि—देखकर; इ पावै—यह प्रतिमा (-सी स्त्री); ऍम् कोऩ्कु—मेरे राजा (सजन) की; उयिर् अऩ्ऩवळ्—प्राण-सम प्यारी; ऍऩ्ऩ उऩ्ऩि—यह सोचकर; कै पोतिऩोटु—हाथ में रक्षित पुष्पों के साथ; नॅटु कण् पऩि चोर—अपनी विशाल आँखों से अश्रु बहाती हुई; निऩ्ऱाळ्—खड़ी रही। ९७९

एक तरुणी ने, जो रूप में श्रीलक्ष्मी के समान थी, स्फटिक शिला में अपना प्रतिबिम्ब देखा। वह फूलों से अलकृत थी। उसने भ्रम में सोच लिया कि यह (प्रतिमा-सी) सुन्दरी मेरे पति की प्यारी हो जायगी! वह अपने हाथ में फूल ले आयी थी। उनको वैसे ही लेकर वह आँखों से आँसू बहाती हुयी खड़ी रही। ९७९

कोळुण्ड तिङ्गण् मुहत्ताळॊरु कॊम्बर् मऩ्ऩऩ्
तोळुण्ड माले यॊरुतोहैयैच् चूट्ट नोक्कित्
ताळुण्ड कच्चिऱ् ऱहैयुण्डन तऩ्ऩङ्गण् मीदु
वाळुण्ड कण्णीर् मळैयुण्डॆऩ वार निऩ्ऱाळ् 980

कोळ् उण्ट—मेघावृत्त; तिङ्कळ् मुकत्ताळ्—चन्द्रवदना; ऑरु कॊम्पर्—पुष्पलता सदृश एक स्त्री; मऩ्ऩऩ् तोळ् उण्ट माले—अपने प्रिय के कन्धों को अलंकृत जो करती रही उस माला को; ऑरु तोकैयै चट्ट—मयूर की छटावाली एक को पहनाने पर; नोक्कि—देखकर; ताळ् उण्ट कच्चिऩ्—गाँठ सहित रहनेवाली अंगिया से; तकैयुण्टन—बद्ध; तनङ्कळ् मीतु—उरोजों पर; वाळ् उण्ट कण्—तलवार-सी आँखों से; कण् नीर् मळै उण्टु ऍऩ वार—अश्रु को धारा के समान बहने देती हुई; निऩ्ऱाळ्—खड़ी रही। ९८०

एक पुरुष के दो स्त्रियाँ थीं। उसने एक स्त्री को अपने वक्ष पर से एक माला निकालकर पहना दिया। इसको दूसरी पत्नी देख रही थी। उसका केश मेघ के समान था और मुख चन्द्र के समान। उसके मन में अपार ईर्ष्या और ग्लानि पैदा हो गयी। उसकी तलवार सदृश आँखों से अश्रुधारा वही और स्तनों के अग्रभाग पर गिरी। वे स्तन खूब कसकर अँगिया के अन्दर वाँधे गये थे। ९८०

मयिल्पोल् वरुवाण् मनङ्गाणिय कादन् मन्नन्
शॆयिर्तीर् मलर्क्काविन्नोर् मादविच् चूऴल् शेरप्
पयिल्वा ळिऱैपण्डु पिरिन्दरि याऴप दैत्ताऴ्
उयिर्नाडि यॊऴ्हुम् मुडल्पोलल मन्दु ऴन्ऱाऴ् 981

मयिल् पोल् वरुवाऴ्–मोर के समान आनेवाली (अपनी प्रेमिका) का; मतम् काणिय–मनोभाव परखने के लिए; कातल् मन्नन्–उसका प्रिय प्रेमी; चॆयिर् तीर् मलर् काविन्–निर्मल पुष्पोद्यान के; ओर् मातवि चूऴल् चेर–एक माधवी लताकुंज में छिप गया; पयिल्वाऴ्–संगिनी; पण्टु–इसके पहले कभी; इऱै पिरिन्तु अऱियाऴ्–कुछ देर के लिए भी जो अलग नहीं हुई थीं; पतैत्ताऴ–(उसकी प्रेमिका) तड़प गई; उयिर् नाटि–प्राण की खोज में; ऑलुकुम् उटल्पोल्–व्याकुलित शरीर के समान; अलमन्तु उऴन्ऱाऴ्–भ्रमित होकर भटकने लगी। ९८१

एक स्त्री जो मोर के समान सुन्दरी थी, अपने पति की खोज में गयी। उसका पति उसका मन परखने के लिए उस निर्मल उद्यान के माधवी-कुंज में छिप गया। वह स्त्री अपने पति से कभी अलग नहीं हुई थी। अब अपने पति को न पाकर तड़प गयी और अत्यन्त दुखी होकर भटकने लगी। वह ऐसा था जैसे शरीर प्राण को न पाकर छटपटा रहा हो। (यह एक अनोखा कल्पित उदाहरण है)। ९८१

शॆम्मान्द दॆङ्गि ळिऴनीरैयॊर् शॆम्म न्नोक्कि
अम्माविवै मङ्गयर् कॊङ्गैह ळाहु मॆन्न
ऎम्मादर् कॊङ्गैक् किवैयॊप्पन वॆन्ऱॊ रेऴै
विम्मा वॆदुम्बा वॆयरामुहम् वॆय्दु यिर्त्ताऴ् 982

ओर् चॆम्मल्–एक नायक (के); चॆम्मानत तॆङ्किन्–ऊँचे बढ़े नारियल के; इळनीरै नोक्कि–कच्चे फलों को देखकर; इवै मङ्कैयर् कॊङ्कैकळ् आकुम्–स्त्रियों के स्तन के समान हैं; ऎन्न–कहने पर; ओर् एऴै–एक स्त्री; ऎ मातर् कॊङ्कैक्कु–किस (पर-) स्त्री के स्तनों के; इवै ऒप्पन–ये समान हैं; ऎन्ऱु–कहकर; वॆतुम्पा–दुखी होकर; विम्मा–सिसककर; मुकम् वॆयरा–स्वेद भरे मुख की होकर; वॆय्तु उयिर्त्ताऴ्–गरम निश्वास छोड़ने लगी। ९८२

एक नायक ने ऊँचे एक नारियल के पेड़ पर पुष्ट डाभों को (कच्चे नारियल-फलों को) देखकर अकस्मात कहा कि ये नारी-स्तन के समान है।

पास खड़ी रही उसकी नायिका को संशय हो गया कि ये किस नारी के उरोजों की याद कर रहे है ? उसका मन, ईर्ष्या और दुख से आक्रांत हो गया। सिसकियाँ भरने लगी; उसका मुख पसीने से तर हो गया; और वह गरम निश्वास भरने लगी। ९८२

मैताळ् करुङ्गणगळ् शिवप्पुर वन्दोर् मादु
नॅय्तावु वॅला नॊडुनॅञ्जु पुलन्दु निन्राळ्
ऍय्दादु निन्र मलर्नोक्कि यॅन्नक्कि दीण्डुक्
कॊय्दीदि यॅन्रोर् कुयिलैक्करङ् गूप्पु हिन्राळ् 983

नॅय् तावु वेलानॊटु—घी लगा भालावाले (सजन) के साथ; नॅञ्चु पुलन्तु निन्राळ्—मन रुष्ट करके जो रही; ओर् मातु—एक स्त्री; मै ताळ् करु कण्कळ्—अंजन लगी अपनी काली आँखों के; चिवप्पु उर—लाल बनते; वन्तु—सामने आकर; ऍय्तावु निन्र मलर् नोक्कि—पहुँच के बाहर रहनेवाले एक फूल को देखकर; ओर् कुयिलै—एक कोयल से; अॅन्नक्कु इतु ईण्टु कॊय्तु—मुझे यह अब तोड़कर; ईति—दिला दो; अॅन्रु करम् कूप्पुकिन्राळ्—कहकर हाथ जोड़ती है (विनय करती है)। ९८३

एक रूठी हुई नायिका की विशिष्ट दशा और व्यवहार देखिये। वह अपने घृतलिप्त भालाधारी वीर नायक से रूठी हुयी थी। उसी मान की स्थिति में वह अपने पति के सामने आकर खड़ी हुयी। उसके अंजनांकित काले नेत्र लाल हो गये थे। उसने एक फूल को देखा जो उसकी पहुँच के ऊपर था और वहाँ रही एक कोयल के सामने हाथ जोड़कर उस कोयल से विनती की कि अभी यह फूल तोड़कर मुझे दो। ९८३

पोरॅन्न वीङ्गुम् पॊरुप्पन्न पॊलङ्गॊ डिण्डोळ्
मारन् नन्नैयान् मलर्कॊय्दिरुन् दानै वन्दोर्
कारन्न कून्दर् कुयिलन्नवळ् कण्पु दैप्प
आरॅन्न लोडु मन्नलॅन्न वयिर्त्तु यिर्त्ताळ् 984

ओर् कार् अन्न कून्तल्—एक, मेघ समान कुंतल व; कुयिल् अन्नवळ्—पिक-सम (वयन वाली स्त्री) ने; वन्तु—आकर; पोर् अॅन्न—युद्ध का नाम सुनते ही; वीङ्कुम्—फूल उठनेवाले; पॊरुप्पु अन्न—पर्वत-सम; पॊलम् कॊळ् तिण् तोळ्—शोभायुक्त सुदृढ़ कन्धोंवाले; मारन् अनैयान्—कामदेव सदृश (अपने पति को जो); मलर् कॊय्तिरुन्तानै—फूल तोड़ रहा था; कण् पुतैप्प—आँखों को बन्द किया; आर् अॅन्नलोटुम्—(तब) उसके 'कौन' पूछते ही; अयिर्त्तु—ठिठककर; अन्नल् अॅन्न—आग के समान; उयिर्त्ताळ्—लम्बा निश्वास छोड़ा। ९८४

एक नायिका ने, जिसका केश मेघ के समान काला और घना था और बोली कोयल की-सी मधुर थी, आकर अपने नायक की, जिसके कंधे युद्ध का नाम सुनते ही फूल उठनेवाले और पर्वतसम सुदृढ़ थे और जो कामदेव के समान सुन्दर था, (यानी जो साहसी, वीर, सुगठित शरीरवाला

और आकर्षक रूपवान था) आँखें बंद कर दी। तब वह फूल तोड़ रहा था। उसने पूछा कि कौन है ? इससे नायिका के मन में संशय पैदा हो गया इसलिए गुस्से के साथ वह गरम निश्वास छोड़ने लगी। ९८४

ऊड़्ड्रार् नड़्रैनाण् मलर्माद रॉरुङ्गु वाशच्
चेड़्ड्राल् विळैयाद शॅन्दामरैक् कैह णीट्टि
ॲड़्ड्रार्क् कुदवा त्तिडैयेन्दिन्न त्तिन्ड्रॉ ळिन्दान्
माड़्ड्रा नुदवा नॅडुवच्चयन् पोलॉर् मन्नन् 985

ओर् मन्नन्–एक राजा (नायक); ऊड़्ड्र आर्–स्रोत-सम बहनेवाले; नड़्रै नाळ् मलर्–शहद से पूर्ण नवीन फूलों को; मातर्–अपनी दो नायिकाओं; ऑरुङ्कु–एक साथ; वाचम्–सुगन्धित; चेड़्ड्राल् विळैयात–पंक में जो नहीं उपजे थे उन; चॅन्तामरै कैकळ् नीट्टि–लालकमल से अपने हाथों को बढ़ाकर; एड़्ड्रार्क्कु–माँगनेवाले को; उतवान्–न देकर; माड़्ड्रान्–(जो याचक को) नहीं नकारता; उतवान्–न ही देता; नॅटु वच्चैयन् पोल्–उस बड़े कृपण के समान; इटै–बीच में; एन्तितन्–धारण करके; निन्ड्रॉळिन्तान्–खड़ा ही रह गया। ९८५

एक नायक शहद-भरे नवीन पुष्प लेकर अपनी पत्नियों के पास गया। उसकी दोनों पत्नियाँ एक साथ थी। दोनों ने अपने सुन्दर हाथ, जो वे कमल थे, जो पंक से उत्पन्न नहीं हुए थे (यानी कमल के समान थे पर पंक से उत्पन्न नही हुए थे) बढ़ाकर फूल माँगा। नायक असमंजस में पड़ गया और बिना किसी को दिये खड़ा ही रह गया। तब वह उस कृपण प्रभु के समान था जो याचक को न 'नाहिं' कहता, न कुछ देता है। ९८५

तैक्किन्ड्र वेनोक् किनडन्नुयि रन्न मन्नन्
मैक्कॉण्ड कण्णा ळॅदिर्माड़्ड्रवळ् पेर्वि ळम्ब
मॅय्क्कॉण्ड मानन् दलैक्कॉण्डिड वॅदुम्बि मॅन्बूक्
कैक्कॉण्डु मोन्दा ळुयिर्प्पुण्डु करिन्द दन्ड्रे 986

तैक्किन्ड्र वेल्–चुभनेवाले भाले के समान; नोक्कितळ्–आँखोंवाली एक; तन् उयिर् अन्न–अपने प्राण-सम (प्यारे); मन्नन्–राजा (नायक) को; ऍतिर्–अपने सामने; माड़्ड्रवळ् पेर् विळम्प–अपनी सौत का नाम कहते सुनकर; मै कॉण्ट कण्णाळ्–अंजनयुक्त आँखवाली; मॅय् कॉण्ट–सच्चा; मानम् तलै कॉण्टिट–मान सिर पर चढ़ जाने से; वॅतुम्पि–दुखी होकर; मॅन् पू कै कॉण्टु–मृदु सुमन को हाथ में लेकर; मोन्ताळ्–सूँघा; उयिर्प्पु उण्टु–श्वास की हवा लगकर; करिन्ततु–झुलस गया। (अन्ड्रे)। ९८६

(इस पद में भी एक नायक की चर्चा है जिसके दो नायिकाएँ है।) चुभनेवाले भाले के समान तीक्ष्ण आँखोंवाली एक नायिका के पति ने उसके सामने ही दूसरी नायिका का नाम ले लिया। वह अंजन-लगी आँखोंवाली

रुष्ट हो गयी । मान सिर पर चढ़ गया । उसने एक मृदु सुमन को हाथ में लेकर सूँघा । बस, वह फूल झुलस गया । (इसमे स्त्रीस्वभाव का बहुत ही स्वाभाविक और सरस वर्णन है ।) । ९८६

तिण्डो ळरशत् नीरुवत्कुलत् तेवि मार्दम्
ऑण्डा मरैवाण् मुहत्तुण्मिळि रॉण्ग णॅल्लाम्
कण्डा दरिक्कत् तिरिवान्मदङ् कव्वि युण्ण
वण्डा दरिक्कत् तिरिमामद यानै यॊत्तान् 987

कुलम् तेवि मार्तम्–उच्च कुल की अपनी देवियों के; ऑळ् तामरै–सुन्दर कमल-सम; वाळ् मुकत्तुळ्–मनोरम वदनों में; मिळिर्–विद्यमान; ऑण् कण् ॲल्लाम्–उज्ज्वल आँखें, सभी; कण्टु आतरिक्क–उनको चाव से देखती रहें, ऐसा; तिरिवान्–घूमनेवाला; तिण् तोळ् अरचन् ऑरुवन्–बलिष्ठ भुजावाला एक राजा (नायक); मतम् कव्वि उण्ण–मदनीर पीने के लिए; वण्टु आतरिक्क–भ्रमरों को चाव के साथ मँडराने देते हुए; तिरि–घूमनेवाले; मा मत यानै ऑत्तान्–बड़े मत्तगज के समान रहा । ९८७

एक नायक के कई स्त्रियाँ थीं । वह सब उच्चकुल संभूताएँ थी । उस पर उन सबको गर्व था । जब वह चलता था तब कमलसम उनके आननों में विद्यमान उनकी भ्रमर-सी आँखें उसको चाव के साथ देखती रहतीं । वह सबल कंधोंवाला नायक उस मत्तगज के समान फिरता था जिसका मदजल पीने की इच्छा से भ्रमर उस पर मँडराते फिरते थे । (नायिकाओं की आँखें भ्रमर है और नायक का रूप मदजल है ।) । ९८७

सन्दिक् कलावॆण् मदिवाणुद लाड नक्कुम्
वन्दिक्क लाहु मडवाट्कुम् वहुत्तु नल्हि
निन्दिक्क लाहा वुरुवत्तित्न निऱ्क मॆन्बूच
चिन्दिक् कलाव मयिलिऩ्कण् शिवन्दु पोऩार् 988

चन्ति–संध्या के; कला वॆण् मति–कलायुक्त श्वेत चन्द्र-सम; वाळ् नुतलाळ्–उज्ज्वल ललाटवाली; नतक्कुम्–एक नायिका को; वन्तिक्कल् आकुम्–(उसके चरित्र के कारण) वन्द्य; मटवाट्कुम्–(दूसरी) नायिका को; निन्तिक्कल् आका उरुवत्तितन्–अनिन्द्य रूपवान नायक; मॆन् पू–(अपने हाथ में रहे) कोमल सुमनों को; वकुत्तु नल्कि–बाँटकर देकर; निऱ्क–तृप्त खड़ा रहा; कण् चिवन्तु–(दोनों) आँखें लाल करके; चिन्ति–फूलों को नीचे डालकर; कलापम् मयिलिन्–कलापी मोर के समान; पोनार्–झट हटकर चली गई । ९८८

एक नायक के दो स्त्रियाँ थीं । एक का ललाट संध्याकाल के कलाचंद्र के समान उज्ज्वल तथा मनोरम था । (वह रूपवती थी ।) दूसरी अपने पातिव्रत के लिए वन्द्य थी । (यह गुणवती थी ।) वह नायक भी लक्षणयुक्त अनिन्द्य रूपवान था । वह अपने हाथ में कोमल फूल ले

आया। उसने उन्हें बराबर-बराबर बाँटकर दोनों के हाथों में दे दिया। (वह सोचता रहा कि हमारे कार्य से दोनों खुश होंगी।) पर दोनों को गुस्सा हो आया क्योंकि हर एक सोचती थी कि नायक हमसे दूसरी से अधिक प्यार करता है। दोनों की आँखें लाल हो गयीं। दोनों झट वहाँ से हट गयीं। (९८५वें पद में 'नायक फूल को अपने हाथ में धरे ही कृपण के समान खड़ा रहा' कहा गया है। यह पद उसकी टीका-सा है।)। ९८८

वन्दॅङ् गुन्दम् मन्नुयि रेयो पिऱिदॊन्ऱो
कन्दन् दङ्गुऴ् जोर्हुऴल् काणार् कलैपेणार्
अन्दन् दोऱ्म् मऱ्ऱुहु मुत्तम् मवैपारार्
शिन्दुऴ् जन्दत् तेमलर् नाडित् तिरिहिन्ऱार् 989

कन्तम् तङ्कुम्—सुगन्ध का आवास; चोर् कुऴल्—बिखरते केश के; काणार्—नहीं देखतीं (सम्हालतीं); कलै पेणार्—(खिसकते) वस्त्र नहीं बचातीं; अन्तम् तोऱ्म्—सन्धियों में; अऱ्ऱु उकुम्—टूटकर गिरनेवाले; मुत्तम् अवै पारार्—मुक्ताहारों की परवाह नहीं करतीं; तेम् चिन्तुम् चन्तम् मलर्—शहद की बूंदे टपकानेवाले सुन्दर फूल; नाटि—खोजते हुए; ॲङ्कुम् वन्तु—सर्वत्र आकर; तिरिकिन्ऱार्—(नायिकायें) घूमती-फिरती है; तम् मन् उयिरेयो—(फूल) अपने स्थायी प्राण हैं; पिऱितु ऒन्ऱो—दूसरी वस्तु है। ९८९

पुष्पचयन में उन स्त्रियों का प्रेम कितना रहा। स्वाभाविक सुगंधि से युक्त लट खुलकर बिखर रहा था; उन्होंने उसको फिर से बाँधने की कोशिश नही की। वस्त्र खिसक रहे थे, उसको नहीं सम्हाला। मुक्ता-हार की लड़ियाँ, संधि-स्थल पर टूटकर गिरने लगीं, उनकी परवाह नही की। सुन्दर सुगंधित फूलों को खोजते हुए वे इधर-उधर भटक रही थीं। क्या फूल उनके प्यारे प्राण थे? या अन्य कोई वस्तु जो उनको उतनी ही प्यारी थी? ९८९

याऴॊक् कुञ्जोर् पॊन्नन्नै याळो रिहन्मन्नन्
ताऴत् ताऴा डाऴ्न्द मनत्ता डळर्हिन्ऱाळ्
आऴत् तुळ्ळुङ् गळ्ळ निनैप्पा ळवनिन्ऱ
शूऴऱ् केदन् किळ्ळैयै येवित् तॊडर्वाळुम् 990

याऴ् ऒक्कुम् चॊल्—वीणानाद-सी बोलीवाली; पॊन् अन्नैयाळ्—लक्ष्मी-समान एक नायिका; ओर इकल् मन्नन्—अनुपम वीर नायक के; ताऴ—(माननिवारणार्थ) विनय करने पर भी; ताऴाळ्—मानविमुक्त नहीं हुई; ताऴ्न्त मनत्ताळ्—(उसके चले जाने पर) झुका मनवाली होकर; तळर्किन्ऱाळ्—पछताने लगी; आऴत्तु उळ्ळुम्—मन की गहराई में; कळ्ळम् निनैप्पाळ्—कपट सोचती हुई; अवन् निन्ऱ—जहाँ वह रहा (उस); चूऴलकु—स्थान को; तन् किळ्ळैयै एवि—अपने शुक को भेजकर; तॊटर्वाळुम्—उसके पीछे-पीछे गई, वह और। ९९०

एक मानिनी ने, जो लक्ष्मी के समान रूपवती थी और जिसकी बोली वीणा के स्वर के समान थी, जब उसके पति ने मिन्नत की तब भी मान नहीं छोड़ा। वह बेचारा चला गया। फिर वह चुप नहीं रही। उसके मन की गहराई में कपट था, संदेह था। इसलिए उसने शुक को उसके पीछे भेजा और वह भी उसके पीछे चली गयी। (यहाँ से अलग-अलग स्त्री-पुरुषों का विवरण है। इसलिए पूर्ण विराम का क्रिया पद नहीं देकर-जानेवाली और-कहा गया है।)। ९९०

अन्दा राहत् तैङ्गणै नूऱा यिरमाहच्
चिन्दा निन्ऱ शिन्दयि त्तान्शॅय् **हुवदोरान्**
मन्दा रङ्गॉण् डीहुदि योमा दवियॆन्ऱोर्
शन्दार् कॉङ्गैत् ताळ्हुळ् लाळ्पार् ऱळर्वानुम् 991

अम्तार् आकत्तु–सुन्दर मालाभूषित वक्ष पर; ऐङ्कणै–(मन्मथ के) पंच बाण; नऱु आयिरम् आक–बहुत अनेक; चिन्ता निन्ऱ–आकर लगे, उससे; चिन्तैयित्तान्–(कामविचलित) मनवाला; चॅय्कुवतु ओरान्–क्या करना है, यह नहीं जानता; मातवि–माधवी लता; मन्तारम् कॉण्टु ईकुतियो–मन्दार ला दोगी क्या; ॲन्ऱु–कहता हुआ; ओर् चन्तु आर्–अनुपम चन्दनर्चाचित; कॉङ्कै–स्तनोंवाली; ताळ् कुळलाळ्–लम्बी लटकनेवाली केशलता की; पाल्–(स्त्री) पर; तळर्वातुम्–(प्रेम के कारण) म्लान होनेवाला, और। ९९१

एक मनोरम मालाधारी नायक के वक्ष पर मन्मथ के पंचशर (पंचशर–आम्र-मोहन की दशा देनेवाला; अशोक-उन्माद की; कमल-तपन की; नीलोत्पल-शोषण की; और नवमल्लिका-द्रवण की दशा देनेवाला) शतसहस्र (असंख्यक) रूप में लग गये। उसका मन कामविचलित हुआ। "अब क्या किया जाय,?" यह निश्चय नहीं कर पाया। एक माधवी लता से पूछने लगा कि हे माधवी लता! क्या तुम मंदार पुष्प लाकर दे सकोगी? उसके मन में चंदनर्चाचित स्तनों और लंबी लटकती वेणीवाली का स्मरण रहा और वह स्मरण उसे सता रहा था। ऐसा वह और। ९९१

नाडिक् कॊण्डाळ् कुऱ्ऱ नयन्दाण् मुनिवाऱाळ्
ऊडिक् काट्टक् काणु नलत्ता ळुडनिल्लान्
तेडित् तेडिच् चेर्त्त शॆळुम्बू नऱुमालै
शूडिच् चूडिक् कण्णडि नोक्कित् तुवळ्वाळुम् 992

ऊटि–रूठकर; काट्ट–(पति का) मनाना; काणुम्–देखना; नलत्ताळ–चाहनेवाली एक ने; कुऱ्ऱम्–(अपने पति का) कोई दोष; नयन्ताळ् नाटि कॊण्टाळ्–जान-बूझकर कल्पित कर लिया; मुनिवु आऱाळ्–कोप नहीं छोड़ा; उटन् निल्लान्–उससे वह संग छोड़ चला गया; तेटि तेटि चेर्त्त–(तब) उसके स्थान-स्थान पर

ढूँढकर लाये; चॆऴुम् पू–पुष्ट फूलों की; नऱु मालै–सुवासित माला को; चूटि चूटि–विविध प्रकार से पहन-पहनकर; कण्णटि नोक्कि–आइना देखती और; तुवळ्वाळुम्–मलिन होती जो —वह और। ९९२

एक नायिका की यह इच्छा हुयी कि मैं मान करूँ और वे, मेरे स्वामी, मनायें और उसका मजा लूटूँ। उसने कोई अपराध कल्पित कर उसपर लगाया और वह रूठने लगी। नायक ने मनाया पर वह रूठन को लंवा करती गयी। उसने रोष नहीं छोड़ा तो वह नायक चला गया। तब उसे बहुत पछतावा हुआ और जो मालाएँ उसने बड़े परिश्रम से अनेक स्थानों पर जाकर फूल चुन लाकर, बनायीं और अपनी प्रेयसी को पहनायी थीं उसको वह उठाती, पहनती फिर निकालती फिर दूसरे ढंग से पहनती और आइने में देखती— ऐसा करती हुई म्लान हो रही। वह स्त्री और। ९९२

मऱलिक् कूणा डुङ्गदिर् वेला निडैयेवन्
दुऱविक् कोलम् पॆऱ्ऱिल दॆन्ऱा लुडल्वाळ्विप्
पिऱविक् केला दॆन्शॆय्व दिप्पे रणियॆन्ना
विऱलिक् कीवा ळॊत्तिळै यॆल्लाम् विडुवाळुम् 993

इ कोलम्–यह साज-शृंगार; मऱलिक्कु–यम के लिए; ऊण् नाटुम्–आहार खोजकर देनेवाले; कतिर् वेलान्–चमकदार भाले के स्वामी (मेरे नायक); इटैये वन्तु–अभी आकर; उऱ पॆऱ्ऱिलतु–मुझसे मिलें, यह सौभाग्य नहीं दिला सका तो; इ पिऱविक्कु–इस जन्म में; उटल् वाळ्वु–इस शरीर के साथ जीना; एलातु–ठीक नहीं होगा; इ पेर् अणि–यह असाधारण अलंकार; चॆय्वतु ऍन्–करेगा क्या; ऍन्ना–कहकर; विऱलिक्कु ईवाळ् ऒत्तु–गानेवाली वन्दिनी को दे देगी, ऐसा; इळै ऍल्लाम्–आभरण, सभी को; विटुवाळुम्–निकालनेवाली और। ९९३

एक नायिका ने खूब अपने को अलंकृत कर लिया। सोचने लगी कि यम की, माँस को खोज करके दिलाकर सहायता करनेवाला भाला रखनेवाले मेरे स्वामी अब आकर मुझसे नहीं मिलेंगे तो इस साज-शृंगार का लाभ क्या रहा? यह सौभाग्य नही प्राप्त होगा तो इस शरीर में जीना निरर्थक है! यह सोचकर वह अपने आभरण सब निकालने लगी मानो उसने उन सबको वंदिनी गायिका ("विऱलि") को दे देने का निश्चय कर लिया हो। ९९३

तन्नैक् कण्डाण् मॆन्ऩडै कण्डा डमर्पोलत्
तुन्नक् कण्डा डोळ्मै यॆन्ऱा डुणैयॆन्ऱाळ्
उन्नैक् कण्डा रॊळ्ळुवर् पॊल्ला दुडुनीयॆन्
ऱन्नक् कन्निक् काडै यळिप्पा ऩमैवाळुम् 994

तन्नै कण्टाळ्–हंस को उसने देखा; मॅल् नटै कण्टाळ्–उसकी मन्द चाल देखी; तमर् पोल–अपनों के समान; तुन्न–पास आते; कण्टाळ्–देखा; तोळ्मै ॲन्राळ्–'अपनी सखी' समझा; तुणै ॲन्राळ्–तुम मेरी साथिन हो, कहा; उन्नै कण्टार् ॲळ्ळुवर्–तुमको देखनेवाले हँसी करेंगे; पॉल्लातु–(यह, नंगा रहना) बुरा है; नी उदु ॲन्रु–तुम पहन लो कहकर; अन्नम् कन्निक्कु–उस हंस-कन्या को; आटै अळिप्पान्–वस्त्र देने; अमैवाळुम्–जो उद्यत हुई, वह और। ९९४

एक नायिका ने एक मराली को देखा, उसकी चाल देखी और अपने पास उसको आते देखकर समझा कि वह मेरी मित्रता चाहती है। उसने उसको अपनी सखी मान लिया। फिर कहने लगी कि तुम नंगी हो, लोग देखेंगे तो हँसी उड़ायेंगे। नंगा रहना भी मेरे ऊपर अपराध है! इसलिए यह वस्त्र पहन लो। यह कहकर वह उस मराली को वस्त्र देने को उद्यत हो गयी। ऐसी एक नायिका, और। ९९४

पाहॊक् कुञ्जीन् नुण्गलै याडन् पडरल्हुल्
आहक् कण्डो राडर वार्मॆन् ऱयन्नण्णुम्
तोहैक् कञ्जिक् कॊम्बि नॊदुङ्गित् तुणरीन्ऱ
शाहैत् तङ्गैक् कण्गळ् पुदैत्ते तळर्वाळुम् 995

पाकु ऑक्कुम् चॊल्–चाशनी-समान मधुर बोलीवाली; नुण् कलैयाळ् तन्–महीन वस्त्रधारिणी एक के; पटर् अल्कुल–विस्तृत जघन प्रदेश को; आक कण्टु–सीधे देखकर; ओर् आटु अरवु आम्–एक फन फैलाया सर्प है; ॲन्रु–कहकर; अयल् नण्णुम्–पास आनेवाले; तोकैक्कु अञ्चि–मोर से डरकर; कॊम्पिन् ऑतुङ्कि–पुष्पलता के पास छिपी; तुणर् ईन्र चाकैत्तु–फूलों का गुच्छा फैला जैसा जो रहीं; अङ्कै–उन हथेलियों से; कण्कळ् पुतैत्तु–आँखें मूँदकर; तळर्वाळुम्–म्लान होनेवाली और। ९९५

चाशनी समान मधुर बोलीवाली एक नायिका महीन वस्त्र पहने हुए थी। उसका विशाल वराँग दिखाई दे रहा था। एक मोर ने उसे देखकर समझ लिया कि एक सर्प फन फलाये हुए नाच रहा है। वह उसे पकड़ने उसके पास जाने लगा तो वह नायिका डरकर एक पुष्पलता के पीछे छिप गयी। उसने डालों सहित पुष्पलता समान अपनी हथेलियों से आँखें मूंद ली। घबड़ानेवाली वह, और। ९९५

वम्बिऱ् पॊङ्गुङ् कॊङ्गै शुमक्कुम् वलियिन्ऱिक्
कम्बिक् किन्ऱ नुण्णिडै नोवक् कशिवाळुम्
पॆम्बॊऱ् किण्णम् मॆल्विर लाङ्गिप् पयिल्हिन्ऱ
कॊम्बिऱ् किळ्ळैप् पिळ्ळै यॊलिक्कक् कुळैवाळुम् 996

वम्पिल् पॊङ्कुम्–अंगिया के अन्दर से (न समाकर) उभरनेवाले; कॊङ्कै–उरोजों का भार; चुमक्कुम् वलि इन्रि–ढोने की शक्ति न रखकर; कम्पिक्किन्र–

कम्पनशील; नुण् इटै नोव–क्षीण कटि के दुखने से; कचिवाळुम्–स्वयं दुख उठाने-वाली, और; किळ्ळै पिळ्ळै–शुक शावक के; पयिल्किनॢर् कोम्पिल्–सटी रही शाखाओं में; ऑळिक्क–छिपने से; पचुमै पॉन्न् किण्णम्–चोखे स्वर्ण के कटोरे को; मॅल् विरल् ताङ्कि–कोमल हाथ में ढोती हुई; कुळैवाळुम्–लोचभरी वाणी में पुकारने-वाली, और। ९९६

एक स्त्री है जिसके उरोज अंगिया के अन्दर नहीं समाते। उनका भार वहन करने में असमर्थ उसकी कमर दुखती है। और एक स्त्री है जो हाथ में स्वर्ण के कटोरे में शुक का आहार लिए हुए उसको आतुरता से बुला रही है और वह शुक घनी पुष्पशाखाओं में छिपा हुआ है। ९९६

पॉन्ने तेने पूमह ळेका णॅनैयॅन्नात्
तन्ने रिल्ला तङ्गॉरु कॉय्पून् दळैमूळ्ह
इन्ने यॅन्नैक् काणुदि नीयॅन् ड्रिहलित्तन्
नन्नी लक्कण् कैयिन् मरैत्ते नहुवाळुम् 997

तन् नेर् इल्लान्–अपनी सानी न रखनेवाला एक नायक; पॉन्ने–स्वर्ण (समाना!); तेने–शहद; पू मकळे–कमलभवा लक्ष्मी; ऍनै काण् ऍन्ना–मुझे देखो कहकर; अङ्कु–वहाँ; ऑरु कॉय् पू तळै–चयनयोग्य कोमल पल्लवों से भरे एक स्थान में; मूळ्क–छिप गया, तब; इकलि–रुष्ट होकर; इन्ने–अभी; नी ऍन्नै काणुति–तुम मुझे ढूँढ पकड़ो; ऍन्ऱु–कहकर; तन् नल् नीलम् कण्–अपनी सुन्दर नीलोत्पल-सी आँखों को; कैयिन् मरैत्तु–हाथों से मूँदकर; नकुवाळुम्–हँसनेवाली, और। ९९७

आत्मोपम एक वीर ने अपनी प्रेयसी को स्वर्ण, शहद आदि कहकर संबोधित किया और 'मुझे ढूँढ लो' कहकर घने झुरमुट में जाकर छिप गया। उसकी प्रेयसी उससे सहमत नहीं हुयी। उसने कहा कि तुम मुझे ढूँढकर पहचानो! यह कहकर उसने अपनी नीलोत्पलसम आँखें अपने हाथ से मूँद ली। फिर वह हँसी। ऐसी एक और। (आँखें मूँद लेने से अदृश्य हो रहेगी—यह सोचना उसकी नादानी है और वह नादानी रसीली है!)। ९९७

विल्लिऱ् कोदै नाणुऱ मिक्को न्ऱिहलङ्गम्
पुल्लिक् कॉण्ड तामरै मॅन्बू मलर्ताङ्गि
अल्लिऱ् कोदै मादर् मुहमा मरविन्दच्
चॅल्वक् कानिऱ् चॅङ्गदि रॅन्नत् तिरिवानुम् 998

मिक्कोन्–अतिश्रेष्ठ नायक; विल्लिल् नाण् कोतै उऱ–धनुष की डोरी (बायें हाथ के) हस्तत्राण पर लेकर; इकल् अङ्कम्–बलिष्ठ दाहिने हाथ पर; पुल्लिक् कॉण्ट–शोभित; तामरै मॅन् पू मलर् ताङ्कि–कमल का कोमल फूल लेकर; अल्लिन् कोतै–अन्धकार-सम (काले) केशवाली; मातर्–स्त्रियों के; मुकम् आम्–मुखरूपी;

चॅल्वम् अरविन्तम् कात्तिल्–पुष्ट कमलों के वन में; चॅम् कतिर् अन्नन–सुन्दर किरणमाली के समान; तिरिवानुम्–फिरता है, वह, और । ९९८

एक नायक ने डोरी-चढ़ा धनुष बायें हाथ में लिया। बायें हाथ में चमड़े का दस्ताना था। दायें हाथ में एक सुन्दर कमल का फूल ले लिया। वह छैला स्त्रियों के मध्य सूर्य के समान घूम रहा था जिसको देखकर स्त्रियों के कमलमुख खिल उठे। उन स्त्रियों का केश अंधेरे के समान काला था। ९९८

शोलैत् तुम्बि मॅन्गुळ लूदत् तोंडैमेवुम्
कोलैक् कॉण्ड मन्मद वायन् कुरियुय्प्प
नीलत् तुण्गण् मङ्गयर् शूळ निरैयाविन्
मालैप् पोदिन् माल्विडै यॅन्न वरुवारुम् 999

मालै पोतिल्–सायंकाल में; चोलै तुम्पि–उपवन के भ्रमर; मॅन् कुळल् ऊत–हल्की बाँसुरी सी ध्वनि करते हैं; तोंटै मेवुम्–चढ़ाने योग्य; कोलै कॉण्ट–तीरों को हाथ में लिए हुए; मन्मतन् आयन्–मन्मथ-ग्वाला; कुरि उय्प्प–संकेत स्थलों को भिजवाता है; नीलम् उण् कण् मङ्कैयर्–नीलोत्पल सी आँखवाली नायिकाएँ; निरै आविन् चूळ–समूहबद्ध गायों से घिरकर; माल् विटै अॅन्न–शानदार ऋषभों के समान; वरुवारुम्–आनेवाले (नायक), और । ९९९

(ग्वाले लोग शाम को बांसुरी बजाकर गायों और बछड़ों को इकट्ठा करते हैं। पुष्पालंकृत बेंत का प्रयोग करके उन्हें उनके स्थानों को भेज देते हैं। इस पद में मन्मथ को ग्वाला, स्त्रियों को गायें, पुरुषों को बैल और भ्रमरों को बांसुरी बनाकर कवितापूर्ण प्रकार से बताया गया है कि—) शाम का समय आया। उद्यान में भ्रमरों ने बांसुरी का-सा नाद किया। मन्मथरूपी ग्वाले ने, जिसके हाथ में शर सन्नद्ध थे; स्त्रियों और पुरुषों को उनके स्थानों को जाने के लिये प्रेरित किया। तब नायक उत्तम ऋषभों के समान जाने लगे और उनको घेरकर नीलोत्पल सदृश आँखोंवाली स्त्रियाँरूपी गाये चलीं। (लोगों के मनों में कामेच्छा पैदा हुई और वे उचित स्थानों को जाने लगे।) ऐसे पुरुष और । ९९९

शॅय्यिर् कॉळ्ळुन् दॅळ्ळमु दच्चॅञ् जिलैयोन्रुम्
कैयिर् पॅय्यिर् काममु नाणुङ् गविन्नार्तम्
मैयर् पेदै मादर् मिळर्रुम् मळलैच्चॉल्
दॅय्वप् पाडर् चॉर्कलै वेण्डित् तिरिवारुम् 1000

चॅय्यिल् कॉळ्ळुम्–खेतों से ग्रहीत; तॅळ् अमुतम्–स्वच्छ अमृत के समान; चॅम् चिलै ऑन्रुम्–रस भरे सुन्दर (इक्षु के) धनुष को ही (केवल); कैयिल् पॅय्यिन्–हाथ में दे दिया तो; कामतुम् नाणुम्–कामदेव को भी लजानेवाली; कविन्नार्–सुन्दरता रखनेवाले; तम् मैयल् पेतै मातर्–अपनी प्यारी अबोध स्त्रियों को; मिळर्रुम्–

तुतलाती; मऴलै चॊल्–मधुर वोली रूपी; चॊल्–प्रथित; तॆय्वम् पाटल् कलै–वेदवचन को; वेण्टि–सुनने की चाह लेकर; तिरिवारुम्–भटकते हैं, वे और। १०००

(इस पद में कुछ अन्य पुरुषों का चित्रण है।) कुछ पुरुष बड़े ही सुन्दर है। वे स्त्रियों की मधुर तुतली वोली सुनने की चाह लेकर जा रहे है। उनमें और मन्मथ में इतना ही भेद है कि मन्मथ के हाथ में ईख का, जो खेतों में पैदा होता है और जिसमें अमृत-सा रस है, धनु है और इनके हाथ में वह नही है। बल्कि इनके हाथ में भी धनु दिया जाय तो वे मन्मथ से भी बढ़कर सुन्दर लगेगे। मन्मथ वेदगान सुनना चाहता है; पर इनके लिए अपनी अबोध स्त्रियों की मधुर अस्पष्ट वोली ही वेदगान है! वे उसी को सुनने की चाह लेकर चल रहे हैं। ऐसे, और। १०००

ऊक्क मुळ्ळत् तुडैय मुनिवराल्, काक्क लावदु कामऩ्ऱॆ विल्लॆऩुम्
वाक्कु मात्तिर मल्लदु वल्लियिऩ्, पूक्कॊय् वाळ्पुरु वक्कडै पोदुमे 1001

उळ्ळत्तु–मन में; ऊक्कम् उटैय मुनिवराल्–(तपस्या में) साहस रखनेवाले मुनियों से; कामऩ् कै विल्–कामदेव के हाथ के धनुष के कार्य से; काक्कल् आवतु ऎऩ्ऩुम्–अपने को बचाने का; वाक्कु मात्तिरम् अल्लतु–केवल वचन छोड़कर (काम में नहीं है); वल्लियिऩ्–लता के समान; पू कॊय्वाळ्–(एक) पुष्पचयन करनेवाली की; पुरुवम् कटै (ए)–भौंहों का कोना ही; पोतुम्–(मुनि के धैर्य को तोड़ने के लिए) पर्याप्त है। १००१

कहा जाता है कि तपोत्साही मुनि मन्मथ के धनु के आघात से वच सकते है, पर यह कथनमात्र ही है। मन्मथ के धनु की बात क्या, पुष्पचयन करनेवाली एक सुन्दरी की भौंह का कोना ही पर्याप्त है, उनके मन को अधीर करने के लिए। (मुनियों की वात ऐसी है तो साधारण गृहस्थ का मन स्त्री-प्रेम में चंचल हो— यह स्वाभाविक ही है। इसको अपराध या हेय मानना ठीक नहीं है। यह कवि की अपनी सफ़ाई है।)। १००१

नाऱु पूङ्गुऴ नऩ्ऩुदल् पुऩ्ऩैमेल्, एऱि ऩाऩ्मनत् तुम्बर्शॆऩ् ऱेऱिऩाळ्
ऊऱु ञानत् तुयर्न्दव रायिनुम्, वीऱु शेर्मुलै मादरै वॆल्वरो 1002

नाऱु पू कुऴल् नल् नुतल्–सुवासित पुष्प से अलंकृत केश और सुन्दर ललाटवाली एक; पुऩ्ऩै मेल् एऱिऩाऩ्–"पुन्नै" के वृक्ष पर जो चढ़ा; मनत्तु उम्पर चॆऩ्ऱु–उसके मन के ऊपर जाकर; एऱिऩाळ्–चढ़ वैठी; ऊऱुम् ञानत्तु–उत्तरोत्तर विकासशील ज्ञान के; उयर्न्तवर् आयिऩुम्–उत्कृष्ट भी हों; वीऱु चेर् मुलै–गर्वोन्नत उरोजों की; मातरै–स्त्रियों पर; वॆल्वरो–विजय पावेंगे क्या। १००२

एक प्रेमी कदंव (पुन्नै) के पेड़ पर चढ़ा। सुवासपूर्ण केश और सुन्दर ललाटवाली उसकी प्रेयसी उसके मन पर चढ़कर बैठ गयी। (यानी उसके मन में प्रेयसी का स्मरण रहा और वह उसे प्रेरित कर रहा था।)

इसमें क्या आश्चर्य है ? उत्तरोत्तर बढ़नेवाले ज्ञान के साधू भी तो गर्वोन्नत स्तनों के आकर्षण को जीत नहीं पाते ! । १००२

शित्तैयित् मेलिरुन् दानुरुत् तेवराल्, वत्तैय वुम्मरि याळ्वनप् पिन्ऱलै
निन्नैवु नोक्कमु नीक्कलन् कैहळाल्, नत्तैयु नाण्मुऱि युङ्गॊय्दु नल्हिनान् 1003

चित्तैयिन् मेल् इरुन्तान्–डाली पर बैठा था जो वह; उरु–(जिसका) रूप; तेवरात् वत्तैय अरियाळ्–देव भी खींच नहीं सकते, ऐसी सुन्दरी के; वत्तप्पित् तलै–लावण्य के; नित्तैवुम्–स्मरण और; नोक्कमुम्–(उसपर गई) दृष्टि को; नीक्कलन्–नहीं हटा सका; कैंकळाल्–अपने हाथों से; नत्तैयुम्–कलियों और; नाळ् मुऱियुम्–नवीन पल्लवों को; कॊय्तु नल्कितान्–तोड़कर देता रहा । १००३

एक नायक पुष्प-चयन के लिए डाल पर चढ़ा । वहाँ भी, देवों से भी चित्रित करने के लिए जो कठिन हो, ऐसे मनोरम रूपवाली उसकी प्रिया का रूप न उसके स्मरण से हटा, न आँखों के सामने से । इसलिए वह फूल छोड़कर कलियों और नवीन पल्लवों को तोड़कर देता रहा । १००३

वण्डु वाळ्कुऴ लाण्मुह नोक्कियोर्, तण्डु शेरपुयत् तान्ऱडु माऱिनान्
उण्डु कोबमॆन् ऱुळ्ळत् तुणर्न्दवळ्, तॊण्डै वायिड़् ऱुडिप्पॊन्ऱु शॊल्लवे 1004

ओर् तण्टु चेर् पुयत्तान्–दण्ड (आयुध) के समान भुजावाला एक; वण्टु वाळ्–जिसपर भ्रमर मँडरा रहे थे उस; कुऴलाळ् मुकम्–केशवाली का मुख; नोक्कि–देखकर; उळ्ळत्तु–उसके मन में; कोपम् उण्टु–कोई गुस्सा है; ऍन्ऱु–यह; अवळ् तॊण्टै वायिल्–उसके बिंबाधर के; तुटिप्पु ऑन्ऱु चॊल्ल–फड़कने के संकेत से; उणर्न्तु–जानकर; तटुमाऱिनान्–गड़बड़ाने लगा । १००४

दंडायुध समान भुजावाला एक नायक, अपनी प्रिया का, जिसके केश पर भ्रमर मँडरा रहे थे, मुख देखकर, उसके अधरों के फड़कने की रीति से यह जानकर कि वह किसी कारण रुष्ट है, घबड़ाने लगा । (वह शायद पुष्प आदि उपहार किसी दूसरी को देकर रिक्तहस्त इसके सामने प्रेम की याचना ले आया था !) । १००४

एयुन् दन्मय रिव्वहै यारॆलाम्, तूय वॊण्मलर्च् चोलैत् तुरुमलर्
वेयुञ् जॆय्है वॆऱुत्तनर् वॆण्डिरै, पायुन् दीम्बुनड़् पण्णैशॆन् ऱॆय्दिनार् 1005

एयुम् तन्मैयर्–(ऐसे मनोरंजनों में) लगे रहे; इ वकैयार् ऍल्लाम्–ऐसे स्त्री, पुरुष सब; तूय ऑळ्–पवित्र और प्रकाशमान (मन को आनन्द देनेवाले); मलर् चोलै–पुष्पोद्यान में; तुरुम् मलर–घनी पुष्प मंजरियों को; वेयुम् चॆय्कै–(चयन कर) पहनने के काम से; वॆऱुत्तनर्–ऊबकर; वॆण् तिरै पायुम्–श्वेत लहरें जिसमें लहर रही थीं उस; तीम् पुतल् पण्णै–सुखमय जल में क्रीडा चाहकर; चॆन्ऱु ऍय्तिनार्–(जलाशयों में) जा पहुँचे । १००५

इस तरह पुष्प-चयन के मनोरंजन में पुरुष और स्त्रियाँ लगी रही। उस पवित्र और मन को आनन्द का प्रकाश देनेवाले उद्यान में पर्याप्त समय व्यतीत करने के पश्चात उनका मन पुष्प-चयन-धारण के काम से उचट गया। तब वे जलाशयों में जाकर जल-क्रीडा करने की इच्छा से वहाँ से हटे और तीरों पर लहरे मारते रहनेवाले सरोवरों में गये।।१००५

16. नीर् विळैयाट्टुप् पडलम् (जल-क्रीडा पटल)

पुन्नैमलर्त् तडङ्गणोक्किप् पूशल्वण् डार्त्तुप् पोङ्ग
विन्नैयरु तुरक्क नाट्टु विण्णवर् कणमु नाण
अनहरु मणङ्ग नारु मम्मलर्च् चोलै निन्ऱुम्
वनहरि पिडिह ळोडुम् वरुवन पोल वन्दार् 1006

वित्तै अरु तुरक्कम् नाटु—कर्म-मुक्ति के स्वर्गलोक के; विण्णवर् कणमुम्—देवगण भी; नाण—लज्जित हों, ऐसा; अनकरुम्—अनघ (सुयोग्य) पुरुष; अणङ्कु अन्नारुम्—देवांगनाओं के समान स्त्रियाँ; अ मलर् चोलै निन्ऱुम्—उस पुष्पोद्यान से; वनम् करि—जंगल के हाथी; पिटिकळोटुम्—हथिनियों के साथ; वरुवन पोल—जो आते हैं उनके समान; पूचल् वण्टु—गुँजार करने के स्वभाववाले भ्रमरों के; आर्त्तु पोङ्क—गुँजार करते हुए उठते; पुन्नै मलर् तटङ्कळ्—अलंकृत करनेवाले फूलों से भरे तडागों को; नोक्कि—उद्देश्य करके; वन्तार्—आये। १००६

(पिछले अध्याय के अन्त में कही हुयी बात इस पद में अनुवाद और विस्तार से कही गयी है।) अनघ (पुण्यात्मा) पुरुष लोग और सुरबाला-सम स्त्रियाँ, सब पुष्पोद्यान से, जहाँ फूल तोड़ने आदि मनोरंजन के काम में लगे रहे, वहाँ से निकलकर सरों पर आये, जिनको सुन्दर सुमन समूह और सुन्दर बना रहे थे। उन लोगो को देखकर पाप-विमुक्त-देवलोक के वासी भी लज्जित होते थे। (पुण्यात्मा की बात इसलिए की गयी कि देवलोक के वासी पाप-विमुक्त है। उनसे बढ़कर श्रेष्ठ कहलानेवाले लोगों को 'अनघ' रहना आवश्यक था।) वे जंगली हथिनियों और उनके साथ आने वाले हाथियों के समान लगते थे और उनके आने पर मधुकर गुंजार करते हुए उठे। १००६

अङ्गवर् पण्णैनन्नी राडुवा नमैन्द तोऱ्ऱम्
गङ्गैवार् शडैयो नन्न मामुनि कन्नल मेन्नाळ्
मङ्गैमार् कूट्टत्तोडुम् वानवरक् किरैवन् शॆल्वम्
पॊङ्गुपार् कडलुट्पोहुन् दोऱ्ऱमे पोन्ऱ दन्ऱे 1007

अङ्कु अवर्—वहाँ (आकर) वे; पण्णै नल् नीर् आटवान् अमैन्त तोऱ्ऱम्—क्रीडा के साथ निर्मल जल में स्नान करने को उद्यत हुए, वह दृश्य; मेल् नाळ्—प्राचीन-काल में; कङ्कै वार् चटैयोन् अन्न—गंगा-सहित लम्बी जटावाले (रुद्र) सदृश;

मा मुति–बड़े मुनि (दुर्वासा) के; कतल–कोप करने से; वान्वर्क्कु इरैवन्–देवेन्द्र की; चॅल्वम्–निधियाँ; मङ्कैमार् कूट्टत्तोटुम्–अप्सराओं और अन्य देवांगनाओं के समूहों के साथ; पॉङ्कु पाल् कटलुळ्–सब निधियों से भरे क्षीरसागर में; पोकुम् तोऱ्ऱमे–जो गई उस दृश्य ही के; पोन्ऱतु–समान था; (अन्ऱे)। १००७

उनके उधर आकर जलक्रीडा करने के लिए उद्यत होने का वह दृश्य देवेन्द्र की निधियों और देवांगनाओं के, गंगाधर शिवजी सदृश ऋषि दुर्वासा के शाप के कारण सर्वसमृद्ध क्षीरसागर में प्रवेश करने के समय के दृश्य के ही समान था। (यह घटना तब घटी थी जब दुर्वासा ने इन्द्र को शाप दिया था। दुर्वासा ने लक्ष्मीदेवी की प्रसादरूप प्राप्त माला को देवेन्द्र को भेंट की और उसने उसे अपने हाथी पर डाला। हाथी ने उसे अपने पैरों के नीचे डालकर कुचल दिया। दुर्वासा को देवेन्द्र का यह धनमदमत्त अभद्र व्यवहार बुरा लगा।)। १००७

मैयवाङ् गुवळै यॅल्ला मादरकण् मलर्हळ् पूत्त
कैयवा मुरुवत् तार्दङ् गण्मलर् कुवळै पूत्त
शॅय्यता मरैहळॅल्लान् दॅरिवयर् मुहङ्गळ् पूत्त
तैयलार् मुहङ्ग ळॅल्लान् दामरै पूत्त वन्ऱे 1008

मैय आम् कुवळै ॲल्लाम्–काले रंग के कुवलय सब; मातर् कण् मलर्कळ् पूत्त–स्त्रियों के अक्षसुमनों के समान फूले; कै अवाम्–(सामुद्रिका-) लक्षण के अनुसार सृष्ट; उरुवत्तार् तम्–रूपवाली उन स्त्रियों के; कण् मलर्–अक्षसुमन; कुवळै पूत्त–उन कुवलयों के समान शोभे; चॅय्य तामरैकळ् ॲल्लाम्–लाल कमल सब; तॅरिवैयर् मुकङ्कळ् पूत्त–उन स्त्रियों के मुखों के समान फूले; तैयलार् मुकङ्कळ् ॲल्लाम्–दयिताओं के मुख, सब; तामरै पूत्त–लालकमल के समान शोभे; (अन्ऱे)। १००८

नीले रंग के कुवलय पुष्प स्त्रियों की आँखरूपी पुष्पों के समान खिले थे; और सुलक्षणा स्त्रियों के नेत्र इन कुवलय पुष्पों के समान शोभायमान थे। सरोवर के लाल कमल के फूल उन दयिताओं के मुखों के समान खिले थे और उन स्त्रियों के मुख उन लाल कमलों के समान प्रफुल्ल थे। (सब फूल ही फूल हो गये।)। १००८

वण्डुणक् कमळुञ् जुण्णम् वाशनॅय् नान्नत् तोडुम्
कॉण्डॅदिर् वीशु वारुङ् गोदैहॉण् डोच्चु वारुम्
तॉण्डैवाय्प् पॅय्द तूनीर् कॉळुनर्मेऱ् ऱूहिन् ऱारुम्
पुण्डरी हक्कै कूट्टिप् पुनन्मुहन् दिरैक्किन् ऱारुम् 1009

वण्टु उण–भ्रमर आकर चूस लें; कमळुम्–ऐसा, सुवासित; चुण्णम्–सुगन्धचूर्ण; वाचम् नॅय्–सुगन्धित तेल; नानत्तोटुम्–कस्तूरी के साथ; कॉण्टु–लेकर; ॲतिर् वीचुवारुम्–आमने-सामने छिटकानेवाले; कोतै कॉण्टु–पुष्पमालाएँ लेकर;

ओच्चुवारुम्–फेंकनेवाले; तोण्टै वाय् पॅय्त–बिंवसमान मुख में भरे; तू नीर्–निर्मल जल को; कोऴ्नर् मेल्–पतियों पर; तूकिन्ऱारुम्–उलीचनेवाले; पुण्टरीकम् कै कूट्टि–कमल सदृश हाथ जोड़कर; पुनल् मुकन्तु–पानी भर लेकर; इऱैक्किन्ऱारुम्–उछालनेवाले। १००९

स्त्री और पुरुष अपने आनन्दातिरेक में एक दूसरे पर सुगन्धित चूर्ण, तेल, कस्तूरी आदि लेकर फेंकने लगे। कुछ लोगों ने एक दूसरे पर पुष्पमालाएँ फेंकीं। कुछ स्त्रियों ने अपने बिंबारुण मुखों में शुद्ध जल भर कर अपने पतियों पर फेंका। और कुछ लोगों ने अपनी अँजुलियों में जल लेकर उलीचा। १००९

ताळैयेय् कमलत् ताळिन् मार्बुऱत् तऴुवु वारुम्
तोळैये पऱ्ऱि वॅऱ्ऱित् तिरुवॅन्नत् तोन्ऱु वारुम्
पाळैवी विरिन्द दॅन्नप् परन्दनी रुन्दुवारुम्
वाळैमी नुहळ वञ्जि मैन्दरैत् तऴुवु वारुम् 1010

ताळै एय् कमलत्ताळिन्–नालयुक्त कमल की निवासिनी कमला सी; मार्पु उऱ तऴुवुवारुम्–(अपने प्रेमी के) वक्ष को अपने गले से कसकर लगानेवालियाँ और; तोळैये पऱ्ऱि–भुजाओं को ही पकड़े; वॅऱ्ऱि तिरु अॅन्न–विजयश्री के समान; तोन्ऱु वारुम्–दिखाई देनेवालियाँ; पाळै वी विरिन्तदु अॅन्न–डण्ठल की बालों से फूल बिखेरकर गिरते हों ऐसा; परन्त नीर्–विस्तृत जल को; उन्तुवारुम्–उछालनेवालियाँ; वाळै मीन् उकळ–'वाळै' मछलियों के फड़फड़ाने पर; अञ्चि–भयभीत होकर; मैन्तरै–पतियों से; तऴुवुवारुम्–बाँध लेनेवालियाँ। १०१०

कुछ रमणियाँ नालयुक्त कमल की देवी कमला के समान (जो अपने पति श्रीविष्णु के वक्ष से लगी हुयी हैं) अपने पतियों के वक्ष से चिपकी-सी लगी हुयी दिखाई देती हैं। कुछ सुन्दरी बालाएँ अपने पतियों के कंधों से चिपटी हुयी है और वे विजयलक्ष्मी (जो वीरों के भुजबल की प्रतीक हैं) के समान दिखाई दे रही हैं। कुछ स्त्रियाँ अपने हाथों से अधिक जल लेकर उछाल रही है और वह जल नारियल के डंठलों के बालों के समान छिटक रहा है। कुछ भीरु स्त्रियाँ हैं जो मछलियों को उछलते लोटते देखकर डर जाती हैं और अपने पतियों का आलिंगन कर लेती हैं। १०१०

मिन्नीत्त विडैयि नारुम् विडमीत्त विऴियि नारुम्
शिन्नत्ति नळह पन्दि तिरुमुहम् मऱैप्प नीक्कि
अन्नत्तै वरुह वॅन्नो डाडवॅन् ऱळैक्किन् ऱारुम्
पोन्नीत्त मुलैयिन् वन्दु पूवीत्त वुळैहिन् ऱारुम् 1011

मिन् ओत्त इटैयित्तारुम्–बिजली के समान कमर और; विटम् ओत्त विऴियितारुम्–विष सरीखे नेत्रोंवालियाँ (जो); चिन्नत्तिन् अळकम् पन्ति–छुट्टे फूलों से अलंकृत केशजाल को; तिरु मुकम् मऱैप्प–जो उनके सुन्दर मुखों को छिपाता है;

नोक्कि–उसको हटाकर; अन्नत्तै–हंसों को; ॲन्नोटु आट वरुक–मेरे साथ खेलने आओ; ॲन्रु–इति; अऴैक्किन्ऱाऴम्–बुलाती हैं; पोन् ओत्त मुलैयिन्–(यौवनावस्था के कारण चर्म पर फैले पीले वर्ण के कारण) स्वर्णसम लगनेवाले स्तनों पर; पू वन्तु ओत्त–फूल के स्पर्शमात्र करने पर; उऴैकिन्ऱारुम्–तड़पनेवालियाँ। १०११

उनमें कुछ स्त्रियाँ हैं जिनकी कटि बिजली के समान है, कुछ हैं जिनके नेत्र विष के समान (पुरुषों के लिए मर्मपीडक) हैं। और कुछ स्त्रियाँ हैं जो अपने मुख पर बिखरते हुए केशजाल को हटाकर हंसों को अपने पास बुला रही हैं। कुछ कोमलांगी स्त्रियाँ हैं जिनके स्वर्णसम (फैलते पांडु रंग के कारण) लगनेवाले स्तन पर फूल स्पर्श करता है तो (उस मृदुस्पर्श मात्र से) एकदम असह्य पीड़ा का अनुभव करती हैं। १०११

पण्णुळ पवळन् दॊण्डै पङ्गयम् बूत्त दन्न
वण्णवाय्क् कुवळै युण्गण् मरुङ्गिलाक् करुम्बि तन्नार्
उण्णिरै कयलै नोक्कि योडुनीर्त् तडङ्गट् कॅल्लाम्
कण्णुळ वाङ्गॊ लॅन्रु कणवरै विनवु वारुम् 1012

पण् उळ–संगीत मधुर और; पवळम् तॊण्टै पूत्ततु पङ्कयम् अन्न–प्रवाल बिंबफल और खिला कमल —इनसे तुल्य; वण्णम् वाय्–लाल अधर (मुख); कुवळै उण् कण्–कुवलय सदृश और अंजनयुक्त नेत्र; मरुङ्कु इला–क्षीण कटि; करुम्पिन् अन्नार्–(इनसे युक्त और अपने पतियों के लिए) इक्षु सदृश स्त्रियाँ; उळ् निरै कयलै नोक्कि–सरोवर में भरी मछलियों को देखकर; ओटुम् नीर् तटङ्कट्कु ॲल्लाम्–बहते जलवाले सारे तडागों के; कण् उळ आम् कॊल्–आँखें भी होती हैं क्या; ॲन्रु–यह; कणवरै–पतियों को; वितवुवारुम्–पूछनेवालियाँ, और। १०१२

कुछ अबोध स्त्रियाँ भी हैं, जिनके मुख प्रवाल और बिम्बफल तथा विकसित कमल के समान लाल हैं, और संगीतसम (या और) मधुर वचन के प्रकटन के स्थान हैं; जिनकी कुवलय के सदृश आँखों में अंजन लगाया गया है, जिनकी कमर नहीं के बराबर है और जो अपने पतियों के लिए ईख के समान प्यारी हैं। वे सरोवरों के जल में कयल जाति की मछलियों को देखकर अपने पतियों से पूछ बैठती हैं कि क्या जल से लबालब भरे तालाबों के भी आँखें होती हैं? । १०१२

तेन्नहु नऱव मालैच् चॅरिहुळर् ऱॆय्व मन्नाळ्
तानुडैक् कोल मेनि तडत्तिडैत् तोन्ऱ नोक्कि
नानह नहुहित् ऱाळिन् नन्नुदल् तोऴि यामॅन्
ऱून्नमिल् मुलैयि नार मुळङ्गुळिर्न् दुदवु वाळुम् 1013

तेन् नकु–शहद सहित; नऱवम् मालै–सुगन्धित माला से अलंकृत; चॅरि कुऴल्–घने केशवाली; तॆय्वम् अन्नाळ्–देवनायिका तुल्य एक स्त्री,-(जो); तान् उटै (य) कोलम् मेनि–अपना सुन्दर रूप; तटत्तु इटै तोन्ऱ–तालाब के जल में दिखाई देने पर;

नोक्कि–देखकर; इ नल् नुतल्–यह सुन्दर भालवाली; नान् नक नकुकिन्ऱाळ्–मेरे हँसने पर हँसती है; तोऴि आम्–मेरी सखी है; ॲन्ऱु–यह कहकर; ऊतम् इल् मुलैयिन् आरम्–निर्दोष, अपने स्तन पर के (वक्ष के) हार को; उळम् कुऴिर्न्तु–स्नेहार्द्र मन के साथ; उतवुवाळुम्–दे देती है, वह और। १०१३

एक बाल-स्वभाव की स्त्री है। उसका केश घना है और शहद सहित पुष्पों की माला से अलंकृत है। देव-कन्या-सी वह अपने प्रतिबिम्ब को जल में देखती है। "यह सुन्दर ललाटवाली रमणी, जब मैं हँसती हूँ तब हँसती है। इसलिए यह मेरी सखी है।" यह कहकर वह अपने स्तनों पर से एक अनिन्द्य हार उतारकर रीझ कर दे देती है। १०१३

कुण्डलन् दिरुविल् वीशक् कुलमणि यारमिन्न
विण्डोडु वरैयिन् वैहु मॅन्मयिर् कणङ्गळ् पोलुम्
वण्डुळर् कोदै मादर् मैन्दर्तम् वयिरत् तिण्डोळ्
तण्डुहळ् तळुवु माशै यार्करै शार्हिन् ऱारुम् 1014

वण्टु उळर् कोतैमातर्–जिस पर भ्रमर मँडराते हैं, ऐसे केशवाली (कुछ) रमणियाँ; मैन्तर् तम्–अपने पतियों को (जो तीर पर हैं); वयिरम् तिण् तोळ् तण्टुकळ्–वज्र-सम कठोर भुजदण्डों को; तळुवुम् आचैयाल्–आलिंगन करने की इच्छा से; विण् तोटु वरैयिन् वैकुम्–गगनस्पर्शी पर्वत पर रहनेवाले; मॅल् मयिल् कणङ्कळ् पोलुम्–कोमल मोरों के समान; कुण्टलम् तिरुविल् वीच–कुण्डलों को अधिक प्रकाश बिखेरने देते हुए; कुलम् मणि आरम् मिन्न–श्रेष्ठ रत्नहारों को चमकने देते हुए; करै चार् किन्ऱारुम्–तीर पर जा रही हैं, वे और। १०१४

कुछ स्त्रियाँ स्नान कर रही थीं। उनके केश पर भ्रमर मँडरा रहे थे। अकस्मात उनकी इच्छा हुयी कि तीर पर रहे अपने पतियों के वज्र-सम भुजदण्डों से लिपट जायँ। वे ऐसे चली आयीं जैसे गगनस्पर्शी पर्वत पर रहनेवाले मोर चले आते हों। तब उनके कर्णकुंडलों से प्रकाश फल रहा था और उनके श्रेष्ठ रत्नहार झिलमिला रहे थे। १०१४

अङ्गिडै युऱ्ऱ कुऱ्ऱम् यावदॆन् ऱऱिद ऱेऱ्ऱाम्
शॆङ्गय लनैय नाट्टञ् जिवप्पुऱच् चीऱिप् पोन
मङ्गयोर् कमलच् चूळन् मऱैन्दनण् मऱैय मैन्दन्
पङ्गय मुहमॆन् ऱोरा दैयुऱ्ऱुप् पार्क्किन् ऱानुम् 1015

अङ्कु–वहाँ; इटै–क्रीडा के मध्य; उऱ्ऱ कुऱ्ऱम्–हुआ अपराध; यावतु ॲन्ऱु–कौन सा था, यह; अऱितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं सके; चॆम् कयल्–सुघड़ 'कयल' मछलीतुल्य; नाट्टम्–आँखें; चिवप्पु उऱ–लाल करते हुए; चीऱि पोन–(अपने पति से) गुस्सा करके जानेवाली; मङ्कै–एक बाला; कमलम् चूळल्–कमलों से भरे एक स्थान में; मऱैन्तनळ्–छिप गई; मऱैय–छिपने पर; मैन्तन्–उसका पति; पङ्कयम् मुकम् ॲन्ऱु–यह पंकज, यह मुख ऐसा; ओरातु–न परख

पाकर; ऐयुट्रू–संशयोद्विग्नता के साथ; पार्क्किन्ड्रानुम्–ढूँढता (जो) है, वह, और। १०१५

वहाँ अकस्मात क्या अपराध हो गया? नहीं जानते। पर एक तरुणी की "कयल" (मछली) -सी सुन्दर आँखें (गुस्से से) लाल हो गयीं और वह कुपित हो वहाँ से चली और कमलों के बीच में जा छिप गयी। छिपने पर, उसका नायक कमल-फूलों और उसके मुख में भेद न जान सकने के कारण संशय से उद्वेलित होकर ढूँढता रहा। वह—और। १०१५

पॊऱ्ऱॊडि तळिर्क्कैच् चङ्गम् वण्डॊडु पुलम्बि यार्प्प
ऎऱ्ऱिनीर् कुडैयुन् दोरु मेन्दुपे रलुहु निन्ऱुम्
कऱ्ऱैमे कलैह णीङ्गिच् चीऱडि कौवक् कालिऱ्
चुऱ्ऱिय नाह मॆन्ऱु तुणुक्कतत्ताऱ् ऱुवळ्हिन् ऱारुम् 1016

तळिर् कै–(कुछ रमणियाँ) अपने पल्लवकरों में; चङ्कम्–शंखकंगन; पॊन् तॊटि–स्वर्ण की चूड़ियाँ; वण्टॊटु–अन्य वलय; पुलम्पि आर्प्प–स्वरित-क्वणित करने देते हुए; नीर् ऎऱ्ऱि–जल उछालते हुए; कुटैयुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों स्नान करतीं; एन्तु पेर् अलकुल् निन्ऱुम्–उन्नत विशाल नितम्बों से; कऱ्ऱै मेकलैकळ् नीङ्कि–कई लड़ियों की मेखलाएँ अलग हो जातीं; चिऱु अटि कौव–और उनके छोटे पैरों में उलझ जाती हैं, तब; कालिल् चुऱ्ऱिय नाकम् ऎन्ऱु–पैरों को वलयित करता हुआ सर्प, समझ; तुणुक्कत्ताल्–डर से; तुवळ्किन्ऱारुम्–कांपनेवाली, और। १०१६

कुछ स्त्रियाँ खूब गोते लगाकर तैरकर जल में क्रीडा करती हुयी स्नान कर रही थीं। तब उनके हाथों के शंख-ककण, स्वर्णकंकण और अन्य चूड़ियाँ स्वरित हो रही थीं। तब उनके उन्नत नितम्बों पर से कई लड़ियों-वाली मेखलाएँ अलग हुयीं और खिसककर उनके पैरों से लिपट गयीं। उन्होंने समझा कि साँप आकर हमारे पैरों से उलझ गये है। तब वे डरीं और काँपने लगीं। वे, और। १०१६

कुडैन्दुनी राडु मादर् कुळाम्बुडै चूळ वाळित्
तडम्बुयम् पॊलिय वाण्डोर् तार्हॆळु वेन्द निन्ऱान्
कडैन्दना ळमुदि त्तोडुङ् गडलिडै वन्दु तोन्ऱुम्
मडन्दयर् शूळ निन्ऱ मन्दर मलैयै यॊत्तान् 1017

नीर् कुटैन्तु आटुम्–जल में तैरते हुए क्रीडा करनेवाली; मातर् कुळाम्–स्त्रियों का समूह; पुटै चूळ–(उनको) घेरे रहा; आऴि तट पुयम्–बाहुवलय से अलंकृत विशाल भुजाओं को; पॊलिय–शोभने देते हुए; आण्टु निन्ऱान्–(जो) वहाँ खड़ा रहा; तार् कॆऴु ओर् वेन्तन्–(वह) मालाधारी एक राजा; कटल् इटै–क्षीरसागर मध्य; कटैन्त नाळ्–जिस दिन मथन हुआ उस दिन; अमुतित्तोटुम् वन्तु तोन्ऱुम्–अमृत के साथ जो ऊपर आये; मटन्तैयर् चूळ–उन सुरबालाओं के बीच; निन्ऱ–जो खड़ा रहा उस; मन्तर मलैयै–मन्दरपर्वत के; ऒत्तान्–सदृश रहा। १०१७

विजायट पहने हुए एक सुन्दर राजा खड़ा है। उसके चारों ओर सुन्दर स्त्रियाँ हैं। उस दृश्य को देखकर ऐसा लगता है कि वह मंदर पर्वत है, जलाशय क्षीरसागर है और वे स्त्रियाँ अमृत-मंथन के दिन जो अमृत के साथ आकर प्रकट हुयी उन सुरस्त्रियों के समान हैं। (पहले १००७वें पद में कहा गया कि इन लोगों के जल-क्रीडा के लिए उन्मुख होने का दृश्य उस दिन देवलोक की निधियों और स्त्रियों के क्षीरसागर में जाने के दृश्य के समान रहा।) । १०१७

तॊंडियुलाङ् गमलच् चॆङ्गैत् तूनहैत् तुवर्त्त शॆव्वाय्क्
कॊंडियुला मरुङ्गु नल्लार् कुऴात्तॊरु कुरिशि निऩ्ड्राऩ्
कडियुलाङ् गमल वेलिक् कण्णहऩ् गाऩ याड्रुप्
पिडियॆंलाऩ् जूऴ निऩ्ड्र पॆंय्मद याऩै यॊत्ताऩ् 1018

तॊंटि उलाम्–कंकण शोभित; कमलम् चॆम् कै–पंकज-सम सुन्दर हाथों; तू नकै–पवित्र मुस्कराहट सहित; तुवर्त्त चॆव्वाय्–प्रवाल-सम लाल अधरों; कॊंटि उलाम्–लता समान; मरुङ्कुल–कमरोंवाली; नल्लार् कुऴात्तु–स्त्रियों के समूह में; निऩ्ड्राऩ् ऒरु कुरिचिल्–खड़ा था एक नायक; कटि उलाम् कमलम् वेलि–सुगन्धियुक्त कमलों के घेरे के अन्दर; कण् अकल्–विस्तृत तल की; काऩ याड्रु–जंगली नदी में; पिटि ऍलाम् चूऴ–हथिनियों से घिरा हुआ; निऩ्ड्र–शान के साथ जो खड़ा रहा उस; पॆय् मतम् यानै ऒत्ताऩ्–मदस्रावी गज के समान रहा। १०१८

इसमें एक नायक श्रेष्ठ का वर्णन है। वह सुन्दर स्त्रियों के मध्य खड़ा था। उन स्त्रियों के लाल कमल सरीखे हाथों में उत्तम कंकण आदि थे। उनके मुख पवित्र मुस्कुराहट के साथ प्रवाल सदृश लाल थे। उनकी कटि लताओं के समान लचीली थी। वह उस हाथी के समान लगा जिसके कपोल से मदजल वह रहा था और जो उस जंगली सरिता में, जिसके किनारों के पास कमल थे, अनेक हथिनियों के मध्य खड़ा हो। १०१८

काऩमा मयिलुह ळॆल्लाङ् गळिहॆंडक् कळिक्कुम् जायल्
शोनैवार् कुऴलि नार्तङ् गुऴात्तॊरु तोऩ्ड्र निऩ्ड्राऩ्
वाऩया ड्रदऩै नण्णि वयिऩ् वयिऩ् वयङ्गित् तोऩ्ड्रुम्
मीऩॆलाऩ् जूऴ निऩ्ड्र विरिहदिर्त् तिङ्ग ळॊत्ताऩ् 1019

काऩम् मा मयिल्कळ् ऍल्लाम्–जंगल में रहनेवाले सभी उत्तम मोर; कळि कॊट–अपनी अकड़ भूल जायँ ऐसी; कळिक्कुम्–मदवाली; चायल्–छटा; चोनै वार्–लगातार बरसनेवाले मेघ सम व लम्बे; कुऴलिनार्–केशवाली स्त्रियों के; कुऴात्तु–समूह मध्य; निऩ्ड्राऩ् ऒरु तोऩ्ड्रल्–खड़ा (जो) रहा एक नायक (वह); वयिऩ् वयिऩ्–यत्र-तत्र; वयङ्कि तोऩ्ड्रुम्–शोभायमान रहनेवाले; मीऩ् ऍलाम् चूऴ–सभी नक्षत्रों के घेरे में; वाऩम् याड्रु अतऩै नण्णि निऩ्ड्र–आकाशगंगा में जाकर जो स्थित

रहा उस; विरि कतिर् तिङ्कळ्-विस्तृत किरणोंवाले चन्द्र के; ऑत्तान्-समान रहा। १०१६

और एक नायक का चित्रण : वह उन सुन्दर स्त्रियों के मध्य था जिनकी आभा जंगली मोरों की छटा के गर्व को तोड़ सकती थी और जिनके केश लगातार बरसनेवाले मेघ के समान काले और लम्बे थे। वह मानो चन्द्र के समान लगा जो खूब चाँदनी छिटकाते हुए, आकाशगंगा में जाकर सभी नक्षत्रों के मध्य खड़ा हो। १०१९

मेवलान् दहैमैत् तल्लाल् वेळ्विड् इडक्कै वीरड्
केवॅलाड् गाट्टु हिन्ऱ विणैनॅडुड् गण्णॊ रेळै
पावैमार् परन्द कोलप् पण्णयिड् पॊलिवाळ् वण्णप्
पूवॅला मलर्न्द पॊय्हैत् तामरै पॊलिव दॊत्ताळ् 1020

मेवम् आम् तकैमैत्तु अल्लाल्-आकर्षकता के अलावा; वेळम् विल्-ईख के धनुर्धर; तटक्कै वीरर्कु-विशालहस्त मन्मथ के; ए ॲल्लाम्-कार्य सब; काट्टुकिन्ऱ-कर दिखानेवाले; इणै नॅट्ट कण्-जोड़े के विशाल नेत्रोंवाली; ओर् एळै-एक स्त्रीरत्न; पावै मार् परन्त-जहाँ अनेक स्त्रियाँ खड़ी रहीं वहाँ; कोलम् पण्णैयिल्-उस सुन्दर भीड़ में; पॊलिवाळ्-शोभायमान; वण्णम् पू ॲल्लाम्-रंग-बिरंगे अनेक जलपुष्प; मलर्न्त पॊय्कै-जिसमें खिले थे उस तालाब में; तामरै पॊलिवतु ऑत्ताळ्-कमल शोभायमान रहता जैसे, (शोभित) थी। १०२०

इसमें एक नायिकारत्न का चित्रण है। मन्मथ के पाँच शर— आम्र, अशोक, कमल, नीलोत्पल और नवमल्लिका हैं और वे क्रमशः मोहन, उन्मादन, तापन, शोषण और द्रवण के काम करनेवाले हैं। इस नायिका के मनोरम नेत्र उन पाँचों शरों के पाँचों कृत्य एक साथ करनेवाले हैं। स्त्रियों के मध्य वह रंग-बिरंगे फूलों से भरे तड़ाग में उनके बीच रहनेवाले कमलपुष्प के समान लगी। १०२०

मिडलुडैक् कॊडिय वेले यॅन्नवाण् मिळिर्व वॅन्नच्
चुडर्मुहत् तुलवु कण्णा डोहैयर् शूळ निन्ऱाळ्
मडलुडैप् पोदु काट्टुम् वळर्कॊडि पलवुज् जूळक्
कडलिडैत् तोन्ऱु मॅन्बूङ् गर्पह वल्लि यॊत्ताळ् 1021

मिटल् उटैय-बलयुक्त; कॊटिय वेले ॲन्न-भयंकर भाले के ही समान; मिळिर्व वाळ् ॲन्न-चमचमानेवाली तलवारों के सदृश; चुटर् मुकत्तु उलवु कण्णाळ्-प्रभापूर्ण मुख में शोभित आँखोंवाली एक नायिका; तोकैयर् चूळ निन्ऱाळ्-स्त्रियों के बीच में खड़ी रही; मटल् उटै-पुष्ट पंखड़ियों सहित; पोतु काट्टुम्-पुष्पों को उत्पन्न करनेवाली; वळर् कॊटि पलवुम् चूळ-अनेक उर्वर लताओं के मध्य; कटल् इटै तोन्ऱुम्-(क्षीर-) सागर में उत्पन्न; मॅन् पू-कोमल फूलों की; कर्पक वल्लि ऑत्ताळ्-कल्पलता के सदृश दिखाई दी। १०२१

(और एक नायिका का चित्रण है इस पद में।) एक नायिका मयूराभा स्त्रियों के मध्य थी। उसकी आँखें शक्तियुक्त शक्ति के समान हैं और चमचमानेवाली तलवार के समान चमकीली। वह क्षीरसागरोत्पन्न कल्पलता के समान लगती है जिसमें अनेक पुष्प लगे हों और जो अनेक पुष्पोत्पादक और पलनेवाली लताओं के मध्य रहती हो। १०२१

तेरिडैक् कॉण्ड वल्हु ट्रॅङ्गिडैक् कॉण्ड कॉड्गै
आरिडैच् चॅन्रुङ् गॉळ्ळ वॉण्गिला वळ्हु कॉण्डाळ्
वारिडैत् तन्नमी दाड मूळ्हिनाळ् वदन्न मैदीर्
नीरिडैत् तोन्रुन् दिङ्ग णिळ्लॅन्नप् पॉलिन्द दन्रे 1022

तेर इटै कॉण्ट अल्कुल–मानो रथ से (रूप लावण्य) लिया गया है, ऐसा कटिप्रदेश; तॅङ्कु इटै कॉण्ट कॉङ्कै–मानो नारियल के फलों से रूप प्राप्त कर लिया गया हो, ऐसे स्तन; आर् इटै चॅन्रुम्–किसी के पास जाने पर भी; कॉळ्ळ ऑण्किला–प्राप्त न हो सकनेवाले; अळ्कु कॉण्टाळ्–रूप-लावण्यवाली; वार् इटै तनम्–कंचुकी के अन्दर के उरोजों को; मीताट–बाहर दिखने देते हुए; मूळ्किनाळ्–जो स्नान कर रही थी उसका; वतनम्–वदन; नीर् इटै तोन्रुम्–जलमध्य दिखनेवाले; मै तीर् तिङ्कळ् निळल् ऑन–अकलंक चन्द्र के प्रतिबिंब के समान; पॉलिन्ततु–शोभा; (अन्रु, ए)। १०२२

एक नायिका का कटिप्रदेश ऐसा था मानो उसने वह रूप रथ से पा लिया हो। उसके उरोज नारियल के फलों का रूप रखते थे। पर उसका रूप-लावण्य ऐसा था जो कहीं भी, किसी से भी प्राप्त नहीं हो सकता था। वह स्नान करने जल में पैठी तो उसके स्तन गीले अंगिया के अन्दर से साफ़ दिखाई दिये। जल के मध्य उसका मनोरम मुख अकलंक चंद्र के प्रतिबिम्ब-सा शोभित था। १०२२

मलैह डन्द पुयङ्गण् मडन्दैमार्, कलैह डन्दह लल्हुल् कडम्बडु
मुलैह डन्दमिन् मुन्दि नॅरुङ्गलाल्, निलै कटन्दु परन्ददु नीत्तमे 1023

मलै कटन्त पुयङ्कळ्–पुरुषों की (कठिनता और आकार में) पर्वत विजयी भुजाएँ; मटन्तैयर्–रमणियों; कलै कटन्तु अकल्–वस्त्रों का उल्लंघन करके बढ़े हुए; अल्कुल्–नितम्ब; कटम् पटु मुलैकळ्–घट समान उरोज; तम् तम्मिल्–आपस में; मुन्ति–स्पर्द्धा करके; नॅरुङ्कलाल्–भर गये, इसलिए; नीत्तम्–सरोवरों का जल; निलै कटन्तु–तीर का उल्लंघन करके; परन्ततु–फैल गया। १०२३

जल में पुरुष और स्त्रियाँ अधिक संख्या में स्नान कर रहे थे। पुरुषों के पर्वतसम कंधे, स्त्रियों के वस्त्रविस्फारक नितम्ब; और घटसम स्तन एक से एक बढ़कर जल में भर गये तो जल सरोवर का तीर पारकर सब ओर फैलने लग गया। १०२३

शॆय्य वाय्वॆळुप् पक्कण् शिवप्पुर, मॆय्य राह मळियत् तुहिल्नॆहत्
तॊय्यिल् मामुलै मङ्गैयर् तोय्दलाल्, पॊय्है कादर् कॊळुनरैप् पोन्ऱदे 1024

तॊय्यिल् मा मुलै–चित्रकारी से सज्जित बड़े स्तनों की; मङ्कैयर्–स्त्रियाँ; चॆय्य वाय् वॆळुप्प–लाल अधर श्वेत हो जाय; कण् चिवप्पु उऱ–आँखें लाल करके; मॆय् अराकम्–शरीर का अंगराग; अळिय–मिट जाय, ऐसा; तुकिल् नॆक–वस्त्र ढीला हो जाय, ऐसा; तोय्तलाल्–नहाती हैं, (मिलती हैं) इसलिए; पॊय्कै–वह तालाब; कातल् कॊळुनरै पोन्ऱतु–प्रेमी पतियों के समान है। १०२४

वे सरोवर प्रेमी पतियों से तुलनीय हो गये। पतियों से मिलते समय स्त्रियों के लाल अधर श्वेत हो जाते हैं; अंगराग मिट जाता है। वस्त्र हट जाते हैं। वही हाल स्नान करते समय भी चित्रकारी से अंकित स्तनवाली नारियों का हो जाता है। (इसलिए सरोवर और पति में साम्य बताया गया है।) तोय्तल के दो अर्थ हैं— एक स्नान करना; दूसरा मिलना (संभोग करना)। १०२४

आन्न तूयव रोडुड न्नाडिन्नार्, ञान्न नीरव राहुवर् नन्ऱरो
तेनु नावियुन् देक्कहि लावियुम्, मीनु नाऱिन्न वेऱिन्नि वॆण्डुमो 1025

आन्न तूयवरोटु–पवित्र ज्ञानियों के साथ; उटन् आटिन्नार्–सहचर रहनेवाले; नन्ऱु ञान नीरवर् आकुवर्–बहुत ज्ञानी-स्वभाव हो जाते हैं; मीनुम्–मछलियाँ भी; तेनुम्–शहद का; नावियुम्–कस्तूरी का; तेक्कु अकिल् आवियुम्–अधिक अगरु के धुएँ का; नाऱिन–सुगन्ध देने लगीं; इनि–इसके अलावा; वेऱु वेण्टुमो–दूसरा उदाहरण चाहिए क्या? । १०२५

ज्ञानियों के साथ मिलने पर अज्ञानी भी ज्ञानी हो जाते हैं। उसी न्याय के अनुसार सरोवरों में रहनेवाली मछलियों की दुर्गंध छिप गयी और उनसे शहद, कस्तूरी, अगरु का धुआँ आदि की सुगन्धि आने लगी थी। इससे बढ़कर दूसरा उदाहरण उस न्याय के स्पष्टीकरण के लिए क्या चाहिये? । १०२५

मिक्क वेन्दर्तम् मॆय्यळि शान्दॊडुम्
पुक्क मङ्गैयर् कुङ्गुमम् पोर्त्तलाल्
ऒक्क नील मुहिऱ्ऱलै योडिय
शॆक्कर् वान्नह मॊत्तदत् तीम्बुन्नल् 1026

मिक्क वेन्तर् तम्–गौरव में बढ़े राजाओं के; मॆय् अळि चान्तॊटुम्–शरीरों से गलकर जल में मिले चन्दन लेप के साथ; पुक्क मङ्कैयर् कुङ्कुमम्–एकत्रित स्त्रियों के कुंकुम का लेप; ऒक्क पोर्त्तलाल्–एक साथ भर जाने से; अ तीम् पुन्नल्–वह मधुर जल; नीलम् मुकिल् तलै ओटिय–नीले मेघों पर व्याप्त; चॆक्कर् वानकम् ऒत्ततु–लाल संध्यागगन सा लगा। १०२६

जल पर राजाओं (नायकों) के शरीर का चन्दन घुल गया। स्त्रियों

के कुंकुम का लेप भी धुल गया। तब वह ऐसा दिखने लगा मानो नीले मेघों पर सांध्य-गगन की लाली पुत गयी हो। १०२६

काह तुण्ड नऱुङ्गल वैक्कळि, आह मुण्ड दडङ्गलु नीङ्गलाल्
पाह् डट्नूद पत्तिमॉऴि वाय्च्चियर्, वेह डञ्जॅय् मणियॅन्न मिन्निन्नार् 1027

आकम् उण्टतु–शरीर पर लिप्त; काकतुण्टम्–अगरु लेप मिश्रित; नऱु कलवै कळि–सुगन्धियुक्त चन्दन का लेप; अटङ्कलुम् नीङ्कलाल्–पूरा-पूरा धुल गया, इसलिए; पाकु अटर्न्त–चाशनी की सी मधुरता भरी; पत्तिमॊऴि वाय्च्चियर्–शीतल बोली बोलनेवाले मुखों की स्त्रियाँ; वेकटम् चॅय् मणि अॅन्न–तराशी हुई मणि के समान; मिन्निन्नार्–चमकीं। १०२७

स्त्रियों के स्नान करने से अगरु, चन्दन आदि लकड़ियों का घिसा लेप सारा का सारा धुल गया। अब वह चाशनी-सी मधुर बोली के मुखवालियाँ नयी तराशी हुयी मणियों के समान (अपनी प्राकृतिक सुन्दरता में) शोभीं। १०२७

पाय रित्तिड़ लान्पशुञ् जान्दिन्नाल्, तूय पॉऱ्पुयत् तुप्पॉदि तूक्कुऴि
मीय रित्तु विळक्कवॊर् मॅल्लियल्, शेय रिक्करुङ् गण्गळ् शिवन्दवे 1028

पाय् अरि तिड़लान्–झपटनेवाले सिंह सदृश बली (अपने नायक) के; तूय पॊन् पुयत्तु–पवित्र स्वर्णस्कन्धों पर; पचुमै चान्तिन्नाल्–गीले चन्दन-चेप से; पॊति तू कुऴि–लिखित उत्तम चित्रकारी; मी अरित्तु विळक्क–जल गलाकर पोंछ देता है, इससे; ओर् मॅल् इयल्–एक कोमलांगी के; चेय् अरि करु कण्कळ्–लाल डोरेयुत काले नेत्र; चिवन्त–लाल हुए। १०२८

एक रमणी ने अपने झपटनेवाले सिंह तुल्य पति के स्वच्छ स्वर्ण-स्कंधों पर गीले चन्दन के चेप से रेखाओं के चित्र बनाये थे। अब वह स्नान करने से धुल गये थे। इसको देखकर उस रमणी को क्रोध आ गया और उसके लाल डोरों से युक्त सुन्दर नेत्र लाल हो गये थे। १०२८

कदम्ब नाळ्विरै कळ्ळविऴ् तादीडुम्
तदुम्बु पून्दिरैत् तण्बुनल् शुट्टदाल्
निदम्ब बारत्तॊर् नेरिऴै कामत्ताल्
वॅदुम्बु वाळुडल् वॅप्पम् वॅदुप्पवे 1029

कामत्ताल्–काम की गर्मी से; वॆतुम्पुवाळ्–तपनेवाली; नितम्प पारत्तु–नितंब भाराक्रांत; ओर् नेर् इऴै–एक सुन्दर आभरणभूषिता स्त्री के; उटल् वॆप्पम् वॆतुप्प–शरीर की गर्मी के तपाने से; कतम्पम्–सुगन्धचूर्ण; नाळ्विरै–ताजा चन्दन लेप; कळ्–फूल का शहद; अविऴ् तातॊटुम्–चूने वाले मकरन्द के साथ; ततुम्पु–भरा हुआ; पू तिरै–मनोरम तरंगों का; तण् पुनल्–शीतल जल; चुट्टतु–खौल गया। १०२९

एक कामातुरा कामवेदना से तप्त थी। नितम्बभाराक्रांता उसके शरीर की गर्मी से, सुगन्धचूर्ण, नवीन चन्दनलेप, शहद, मकरन्द आदि से मिश्रित और मनोरम लहरों से भरा उस जलाशय का शीतल जल भी खौल उठा। १०२९

तॆय लाळैयोर् तारणि तोळितान्, नॆयहो ळोदियि नीर्मुहन् दॆऱ्ऱितान्
शॆय्य तामरैच् चॆल्वियैत् तीम्बुनल्, कैयि नाट्टुङ् गळिऱ्ऱर शॊन्नवे 1030

चॆय्य तामरै चॆव्वियै–लाल कमल की देवी (श्रीलक्ष्मी) को; **कैयिन्**–अपनी सूँड़ों से; **तीम् पुनल् आट्टुम्**–मधुर जल से स्नान करानेवाले; **कळिऱु अरचु ऒन्न**–गजराज के समान; **ओर् तार् अणि तोळितान्**–एक मालाधारी स्कन्धोंवाले ने; **तॆयलाळै**–अपनी प्रेमिका के; **नॆय् कोळ् ओतियिन्**–घी (कस्तूरी)-लगे केश पर; **नीर् मुकन्तु ऎऱ्ऱितान्**–जल उलीचकर उछाला। १०३०

एक मालाधारी नायक ने अपनी प्रेमिका के कस्तूरी लगे केश पर अपने हाथ से जल उछाला। वह दृश्य गजराज के श्रीलक्ष्मी का अभिषेक कराने के दृश्य के समान रहा। १०३०

शुळिपु मन्नडै तोऱ्क नडन्दवर्, ऒळिहोळ् शीऱडि यॊत्तन वामॆन
विळिवु तोन्ऱ मिदिप्पन पोन्ऱन, नळिन मेऱिय नाहिळ वन्नमे 1031

नळिनम् एऱिय–कमल पर बैठे हुए; **नाकु इळ अन्नम्**–बहुत छोटे हंस; **चुळिपुम्**–खिन्न; **मॆल् नटै तोऱ्क**–(हमारी) मृदु चाल को हराते हुए; **नटन्तवर्**–सुन्दर चाल चलनेवाली स्त्रियों के; **ऒळि कोळ् चिऱु अटि**–उज्ज्वल छोटे चरणों; **ऒत्तन**–के समान; **आम् ऎन**–हैं, यह समझकर; **विळिवु तोन्ऱ**–कोप प्रकट करके; **मितिप्पन पोन्ऱन**–रौंदते से है। १०३१

हंस (के पोटे) कमलों पर खड़े होकर उनको रौंदने लगे। शायद इस कोप के कारण कि स्त्रियों की चाल के सामने उनकी चाल हार गयी। उनको इस बात का विश्वास था कि ये कमल उन स्त्रियों के छोटे मनोहर चरणों के समान हैं और हम इन पर अपना गुस्सा उतारेंगे। १०३१

ऎरिन्द शिन्दय रॆत्तनै यॆन्गॆनो, अरिन्द कूरुहि रालळि शान्दुपोय्
तॆरिन्द कॊङ्गहळ् शॆव्विय नूल्पुडै, वरिन्द पॊऱ्कल शङ्गळै मानवे 1032

कॊङ्कैकळ्–स्तन; **अळि चान्तु पोय्**–गलकर सारा चन्दन लेप धुल गया इसलिए; **अरिन्त कूर् उकिराल्**–कटे नाखूनों से बने (नख-) क्षतों के साथ; **चॆव्विय नूल् पुटै वरिन्त**–श्रेष्ठ सूत्र-लपेटे; **पॊन् कलचङ्कळै मान तॆरिन्त**–स्वर्णकलशों के समान दिखे; **ऎरिन्त चिन्तैयर्**–(उनको देखकर) कामतप्त मनवाले; **ऎत्तनै ऎन्कॆन्**–कितने कहूँ। १०३२

कुछ स्त्रियों के स्तनों पर के चन्दन लेप के धुल जाने से उनपर उनके प्रेमियों के नखदाँत भी दिखाई देने लगे। स्तनों पर का वस्त्र भी इधर-उधर हो गया था। इसलिये वे सूत्र-लपेटे स्वर्णकलश के समान लगे।

उनको देखकर कितनों के मन में विवाह, प्रेम आदि का स्मरण हो आया, वासना जगी और पीड़ा का उबाल हुआ और मन जलने लगे। १०३२

ताऴ् निऩ्ऱ तहैमलरक् कैयिऩाल्
आऴि मऩ्ऩॊरु वऩ्ऩुरैत् ताऩदु
वीऴि यिऩ्कऩि वायॊरु मॆल्लियल्
तोऴि कण्णिऱ् कडैक्कणिऱ् चॊल्लिऩाळ् 1033

आऴि मऩ् ऒरुवऩ्–आज्ञाचक्रधारी राजा एक; ताऴुनिऩ्ऱ–लम्बे अपने; तकै मलर् कैयिताल्–श्रेष्ठ अपने कमलहस्त (के संकेत) से; उरैत्तात्–(प्रेम) जताया; अतु–उस (के उत्तर) को; वीऴि इऩ् कऩि वाय्–"विऴुति" के सुरम्य फल के समान लाल मुखवाली; ऒरु मॆल्लियल्–एक कोमलांगी; तोऴि कण्णिल्–अपनी सखी की आँखों में; कटै कण्णिल् चॊल्लिनाळ्–अपने 'कटाक्ष' से बताया। १०३३

आज्ञाचक्र चलानेवाले एक राजा ने अपनी आजानु लम्बी कर कमल के संकेत द्वारा अपने मन की कामना जतायी। उसके उत्तर में "विऴुति" के लाल फल के सदृश मुखवाली ने अपनी आँखों के कोर से अपनी सखी की आँखों में अपनी सम्मति जतायी। (पाठांतर एक है जिसके अनुसार राजा ने अपने सखा के द्वारा अपनी कामना प्रकट करायी।)। १०३३

तळ्ळि योडि यलैतडु माऱलाल्, तॆळ्ळु नीरिडै मूऴ्हुशॆऩ् दामरै
पुळ्ळि माऩ्ऩै यार्मुहम् बोल्हिला, दुळ्ळ नाणि यॊळिप्पऩ पोऩ्ऱवे 1034

अलै तळ्ळि ओटि–लहरों से बहाया जाकर; तटुमाऱलाल्–लड़खड़ाने से; तॆळ्ळुम् नीर् इटै–स्वच्छ जलमध्य; मूऴ्कु–मग्न होनेवाले; चॆन्तामरै–लाल कमल; पुळ्ळिमाऩ् अऩ्ऩैयार्–चितकवरे हरिणों के समान स्त्रियों के; मुकम् पोल्किलातु–मुख की तुलना न कर सकने से; उळ्ळम् नाणि–मन में लज्जा का अनुभव करके; ऒळिप्पत पोऩ्ऱत–छिपते से हैं। १०३४

लहरें कमलों को अस्त-व्यस्त कर रही थीं। कमल लड़खड़ाते और लहरों में छिप जाते थे। उसको देखकर लगता है कि कमल यह सोचता है कि हम उन चितकबरे हरिणों के समान रहनेवाली स्त्रियों के मुखों की तुलना नहीं कर सकते। उन्हें लज्जा का अनुभव हुआ और वे लहरों में छिप रहे थे। १०३४

इऩ्ऩैय वॆय्द विरुम्बुत्त लाडिय, वऩ्ऩैह रुङ्गऴल् मैन्दरु मादरुम्
अऩ्ऩैय नीर्वऱि दाहवन् देऱियॆ, पुऩ्ऩैन ऱुन्दुहिल् पूणॊडुन् दाङ्गिऩार् 1035

इऩ्ऩैय ऎय्त–इन सब के होते; इरु पुऩल् आटिय–बड़े जलाशयों में जिन्होंने स्नान किया; वऩ् करु कऴल् मैन्तरुम्–सुसज्जित श्रेष्ठ पायलधारी वीर पुरुष; मातरुम्–और स्त्रियाँ; अऩ्ऩैय नीर् वऱितु आक–उन जलाशयों को शोभारिक्त करते हुए; वन्तु एऱि–तीर पर चढ़कर; पुऩै नऱु तुकिल्–पहनने योग्य सुन्दर वस्त्रों को; पूणॊटुम्–आभरणों के साथ; ताङ्कितार्–पहन लिया। १०३५

उपर्युक्त प्रकार से जो वीर वलयधारी पुरुष और सुन्दर स्त्रियाँ जलक्रीडा कर रही थीं, वे तीर पर चढ़ आये। तब जलाशय शोभाहीन हो गये। उन्होंने मनमोहक वस्त्र और आभरण पहन लिये। १०३५

मेवि ऩार्पिरिन् दारन्द वीङ्गुनीर्, तावु तण्मदि तऩ्ऩॊडुन् दारहै
ओवु वाऩमु मुण्णिऱै तामरैप्, पूवॆ लाङ्गुडि पोऩ्ऱुम् बोन्ऱदे 1036

मेविऩार् पिरिन्तार्–(जो वहाँ) आये थे (वे सब) चले गये; अन्त वीङ्कुनीर्–वे जलाशय; तावु तण् मति–मन्द-मन्द चलायमान शीतल चन्द्र और; तारकै–तारकों से; ओवु–रिक्त हुए; वानमुम्–आकाश व; उळ् निऱै–अपने अन्दर भरे रहे; तामरैप्पू ऍल्लाम्–कमलपुष्प सब; कुटि पोऩ्ऱुम्–(जिससे) अलग हो गये उसके; पोऩ्ऱतु–समान रहा। १०३६

उनके चले जाने के बाद वे जलाशय धीरे-धीरे चलनेवाले चन्द्र से और तारकों से हीन आकाश के समान हो गये। वही नहीं; उनमें जो रहे उन कमलों से भी रिक्त हो गये हों, ऐसे लगे। १०३६

माऩि नॊक्कियर् मैन्दरॊ डाडिय, आऩ नीर्विळै याडलै नोक्किऩाऩ्
ताऩु मन्ऩदु कादलित् तानॆऩ, मीऩ वेलैयै वॆय्यव नॆय्दिऩाऩ् 1037

मातिऩ् नोक्कियर्–मृगलोचनियाँ; मैन्तरॊटु आटिय–वीर पुरुषों के साथ जो नहाती थीं उस; आऩ नीर् विळैयाटलै–उत्तम जल क्रीडा को; नोक्किऩाऩ् वॆय्यवऩ्–(जिसने) देखा वह सूर्य; ताऩुम् अन्ऩतु कातलित्ताऩ्–खुद वही (स्नान करना) चाहता था जैसे; मीऩम् वेलैयै–मकरालय को (पश्चिमी सागर); ऍय्तिऩाऩ्–पहुँचा। १०३७

सूर्य उन मृगलोचनियों और सुन्दर पुरुषों की जलक्रीडा देख रहा था तो उसे भी मानो नहाने की इच्छा हो गयी। इसलिए वह भी पश्चिमी सागर में जिसमें मकर भरे थे डूब गया। १०३७

आऱ्ऱलिऩ्मैयि ऩालऴिऩ् देयुमव्, वेऱ्ऱु मन्ऩवर् मेल्वरुम् वेन्दर्पोल्
एऱ्ऱु मादर् मुहङ्गळॊ डॆङ्गणुन्, दोऱ्ऱ शन्दिरन् मीळवुन् दोऱ्ऱिऩाऩ् 1038

आऱ्ऱल् इऩ्मैयिताल्–शक्ति न रहने से; अऴिन्तेयुम्–हार गये तो भी; अ वेऱ्ऱु मन्ऩर् मेल्–उन शत्रु राजाओं पर; वरुम्–पुनः धावा बोलनेवाले; वेन्तर् पोल्–राजाओं के समान; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; मातर् मुकङ्कळॊटु एऱ्ऱु–स्त्रियों के मुखों से टकराकर; तोऱ्ऱ चन्तिरन्–(जिसने) हार मान लिया वह शशांक; मीळवुम् तोऱ्ऱिऩाऩ्–फिर से प्रकट हो आया। १०३८

अब चन्द्र उग आया। कुछ राजा लोग शक्तिहीनता के कारण शत्रु राजाओं के सामने हार जाते हैं। फिर भी वे पुनः उन शत्रु राजाओं पर चढ़ आते हैं। उन राजाओं के समान यह चन्द्र भी जो स्त्रियों के मुखों के सामने टिक न सका और हार गया था, फिर प्रकट हुआ। १०३८

17. उण्डाट्टुप् पडलम् (पान-क्रीडा पटल)

वॆण्णिऱ नऱवुपाय् वॆळ्ळ मॆन्नवुम्
पण्णिऱज् जॆऱिन्दिडै परन्द दॆन्नवुम्
उण्णिऱै काममिक् कॊळ्हिड् ऱॆन्नवुम्
तण्णिऱै नॆडुनिलात् तळैत्त दॆङ्गुमे 1039

तण् निऱै–शीतलता भरी; नॆट्टु निला–विस्तृत चाँदनी; वॆळ् निऱम्–श्वेतवर्ण; नऱवु पाय् वॆळ्ळम्–सुरा की प्रवाहित धारा; ॲन्नवुम्–है, ऐसा और; पण्–संगीत; निऱम् चॆऱिन्तु–(रूप-) रंग लेकर; इटै परन्तु ॲन्नवुम–सर्वत्र फैला हो, ऐसा; उळ् निऱै कामम्–मानव मन के अन्दर व्याप्त कामवासना; मिक्कु ऑळुकिऱ्ऱु–बढ़कर फैली हो; ॲन्नवुम्–ऐसा; ॲङ्कुम् तळैत्ततु–सर्वत्र फैल गयी। १०३९

(इस अध्याय में मद्यपान और प्रेम-लीलाओं का सरस वर्णन है।) शीतल चाँदनी सब जगह खूब फैली। वह श्वेतवर्ण सुरा की प्रवाहशील धारा के समान और रूप-रंग से युक्त होकर फैलनेवाले संगीत के समान और सभी जीवों की आंतरिक कामेच्छा मानो रूप-रंग धारणकर छलक रही हो ऐसा लगी। १०३९

कलन्दवर्क् किनियदोर् कळ्ळु माय्प्पिरिन्
दुलन्दवर्क् कुयिर्शुडु विडमु मायुडन्
पुलन्दवर्क् कुदविशॆय् पुदिय तूदुमाय्
मलर्न्ददु नॆडुनिला मदन्न् वेण्डवे 1040

नॆट्टु निला–विस्तृत चाँदनी; कलन्तवर्क्कु–संयोग में रहनेवालों को; इतियतु ओर् कळ्ळुम् आय्–मीठा सुरा भी बनकर; पिरिन्तु उलन्तवर्क्कु–वियोग के दुखियों को; उयिर् चुटु विटमुम् आय्–प्राणतापी विष भी बनके; उटन् पुलन्तवर्क्कु–साथ रहकर भी रूठन में रहनेवालों के लिए; उतवि चॆय्–सहायता देनेवाले; पुतिय तूतुम् आय्–नवीन दूत भी बनकर; मतन्न् वॆण्ट–मदन की प्रार्थना पर; मलर्न्ततु–फैलती हुई आई। १०४०

वह चाँदनी संयोग में रही प्रेमिका व प्रेमी के लिए मधुर सुरा के समान रही। वियोग में संतप्त रहनेवालों के लिए प्राणतापक विष के समान रही। रूठनेवालों के लिए सहायता करनेवाला नया दूत बनी। वह मानो मन्मथ की प्रार्थना मानकर फैली। (चाँदनी मन्मथ का छत्र मानी जाती है और उसकी विजय की सहायिका है।)। १०४०

आऱॆलाङ् गङ्गये याय वाऴिदाम्, कूऱुपाऱ् कडलये यॊत्त कुन्ऱॆलाम्
ईऱ्ऱिलान् कयिलये येय्न्द वॆन्निनि, वेऱियाम् बुहल्वदु निलविन् वीक्कमे 1041

आऱु ॲलाम्–सभी नदियाँ; कङ्कैये आय–गंगा (श्वेतवर्ण) बन गईं; आऴितम्–(नीले) सागर; कूऱु–प्रथित; पाल् कटलैये ऑत्त–क्षीरसागर के समान बने;

कुन्ऱु ऍलाम्–पर्वत सब; ईऱु इलान्–अनन्त ईश्वर के; कयिलैये एय्न्त–कैलास सदृश बने; निलविन् वीक्कम्–चाँदनी का विस्तार; याम् इत्ति वेऱु–हम अब और; पुकल्वतु–कहें; ऍन्–क्या। १०४१

चाँदनी के प्रसार से सभी नदियाँ (यमुना जैसी काले रंग के जलवाली नदियाँ भी) गंगाजी के समान (श्वेतवर्ण) हो गयीं। सभी नीले सागर क्षीरसागर सदृश दिखे। सभी पर्वत अनंत ईश्वर शिवजी के कैलासपर्वत से बन गये। फिर चाँदनी की विपुलता के सम्बन्ध में कहने को क्या है? । १०४१

ऍळ्ळरुन् दिशैहळुम् यारुम् यावयुम्
कॉळ्ळैवॅण् णिलविन्नाऱ् कोलङ् गोडलाल्
वळ्ळुऱै वयिरवाण् महर केदनन्
वॅळ्ळणि यॊत्तदु वेलै ञालमे 1042

ऍळ् अरु तिचैकळुम्–अनिन्द्य दिशाएँ; यारुम्–सभी मनुष्य; यावैयुम्–सभी जीव; कॊळ्ळै वॅण् निलविन्नाल्–अत्यधिक चाँदनी के कारण; कोलम् कोटलाल्–अनोखा रूप धर गये, इसलिए; वेलै ञालम्–समुद्र वलयित भूतल; वळ् उऱै–तीक्ष्ण; वयिरम् वाळ्–वज्र-(कठिन) तलवार (के धारक); मकरम् केतनन्–मकरकेतु की; वॅळ् अणि ऑत्ततु–श्वेतवर्दी पहने वीरों की सेना के समान लगते थे। १०४२

अनिन्द्य सारी दिशाएँ, सब मानव, सब मानवेतर जीव और वस्तुएँ इस अत्यधिक चाँदनी के कारण नये सुन्दर (श्वेतवर्ण) रूप धर गयीं। इसलिए समुद्रमेखला भूमि पर के सारे पदार्थ, तीक्ष्ण तलवारधारी मकर-केतन (मन्मथ) की श्वेतवर्ण वर्दी से लैस सेना के व्यूहों के समान लगे। १०४२

तयङ्गुदा रहैपुरै तरळ नीळ्लुम्
इयङ्गुहार् मिडैन्दका वॅळिनिच् चूळ्लुम्
कयङ्गळ्पोन् ऱॊळिर्पळिङ् गडुत्त कानमुम्
वयङ्गुपूम् पन्दरु महळि रॅय्दिनार् 1043

मकळिर्–स्त्रियाँ; तयङ्कु तारकै पुरै–भासमान ताराओं से तुल्य; तरळम् नीळ्लुम्–मोतियों से सज्जित वितानों में; इयङ्कु कार्–संचरणशील मेघ; मिटैन्त का–जहाँ आ जुटे उन उद्यानों में; ऍळिनि चूळ्लुम्–पर्दों से आवृत्त जैसे रहनेवाले स्थानों में; कयङ्कळ् पोन्ऱु–जलाशयों के समान; ऑळिर्–लगनेवाले; पळिङ्कु अटुत्त–स्फटिक की चट्टानों के पास के; कानमुम्–उद्यानों में; वयङ्कु पू पन्तरुम्–सुशोभित पुष्पलताकुंजो में; ऍय्तिनार्–जा पहुँचे। १०४३

स्त्रियाँ मोतियों मे सज्जित कृत्रिम मंडपों, संचरणशील मेघों से भरे उपवनों में मानो पर्दो से आवृत्त गुप्त स्थानों, जलाशय समान दिखनेवाले

स्फटिक-चट्टानों के पास रहनेवाले पुष्पोद्यानों, और पुष्पलता भवनों में जा पहुँचीं। १०४३

पूक्कम ळोदियर् पोतु पोक्किय
शेक्कयिन् विळैशॅरुच् चॅरुक्कुळ् जिन्दयर्
आक्किय वमुदॆत्त वम्पोन् वळ्ळत्तु
वाक्किय पशुनऱा मान्दत् मेयिनार् 1044

पू कमळ् ओतियर्–पुष्पवासित केशवाली स्त्रियाँ; पोतु पोक्किय चेक्कयिन्–पुष्पबहुल शय्या पर; विळै–होनेवाले; चॅरु–(रति के) उलझन में; चॅरुक्कुम् चिन्तॅयर्–आनन्द लूटने का मन करके; आक्किय अमुतु ऑत–नवनिर्मित अमृततुल्य; अम्पॊन् वळ्ळत्तु–सुन्दर स्वर्णचषकों में; वाक्किय–ढला हुआ; पचु नऱा–गाढ़ा सुरा; मान्तत् मेयिनार्–पीने लगीं। १०४४

पुष्पों की सुगन्धि से सुवासित केशवाली स्त्रियों ने पुष्प-बहुल शय्याओं पर अपने प्रेमियों के साथ रति में उलझकर आनन्द लूटना चाहा। इसलिए उन्होंने स्वर्णचषकों (सुरा पात्रों) में नवीन अमृत के समान ढली हुयी गाढ़ी सुरा पी ली। १०४४

मीनुडै विशुम्बिनार् विञ्जै नाट्टवर्, ऊनुडै युडम्बिना रुरुव मॊप्पिलार्
मानुडै नोक्किनार् वायिन् मान्दिनार्, तेनुडै मलरिडैत् तेन्वॅय् दॆन्नवे 1045

मीन् उडै विचुम्पिनार्–नक्षत्र भरा आकाशवाले (देवगण); विञ्चै नाट्टवर्–विद्याधर लोकवासी; उरुवम् ऑप्पु इलार्–जिनकी, रूपसौंदर्य में समानता नहीं कर सकते वे; मान् उडै नोक्किनार्–मृग की-सी दृष्टिवाली; ऊन् उडै उटम्पिनार्–मांसल शरीरवाली उन स्त्रियों ने; तेन् उडै मलर् इडै–शहद सहित पुष्पों में; तेन् पॅय्तु ऑन्न–और मधु डाला जाय ऐसा; वायिन् मान्तितार–मुख में (सुरा) ढालकर पी। १०४५

ये स्त्रियाँ अवश्य मानव थीं और मांसपिण्ड थी। तो भी नक्षत्र भरे आकाशलोक की वासिनियाँ ही क्यों, विधाधर लोक की वासिनियाँ भी इनकी समानता नहीं कर सकती थीं; ये मृगलोचनियाँ इतनी रूपवती थीं। इन्होंने अपने मुख में सुरा ढालकर पी। वह ऐसा लगता था मानो मधु भरे पुष्प पर और भी मधु ढाला जाता था। (स्त्रियों के मुख पुष्प हैं और उनके मुख से जो जल (लार) स्रवता है उसका श्रृंगारशास्त्र में मधु-सा महत्व है। अतः शहद भरे पुष्प के साथ मुख की तुलना की गयी है।)। १०४५

उक्कपाल् पुरॆनऱा वुण्ड वुळ्ळमुम्
कैक्कवि नॊळिपडच् चिवन्दु काट्टत्तन्
मैक्कणुञ् जिवन्दवोर् मडन्दै वाय्वऴिप्
पुक्कदे नमुदमाय्प् पुहुन्द पोदिने 1046

ओर् मटन्तै–एक दयिता के; कै कविन् ऑळि पट–हाथ के सुन्दर प्रकाश के पड़ने से; उक्क पाल् पुरै नऱा–(स्फटिक प्याली में) ढली दूध सम सुरा; उण्ट वळ्ळमुम्–उसको धरनेवाली प्याली भी; चिवन्तु काट्ट–लाल बनी दिखीं; वाय् वळि पुक्क तेन्–उसके मुख के अन्दर (जो) सुरा गयी वह; अमुतम् आय्–अमृत बनकर; पुकुन्त पोतिन्–(पेट में) गयी तब; तन् मै कण्णुम्–उसके अंजनयुक्त नेत्र भी; चिवन्त–लाल बने। १०४६

एक सुन्दरी के हाथ में स्फटिकप्याली थी। उसमें दूध सदृश मद्य भरा था। उस पर उस सुन्दरी के हाथ की छाया पड़ी तो प्याली और मदिरा दोनों लाल बन गयी। इसलिए उसके पेट में जो मद्य अमृत-सा बनकर गया उससे अंजन लगे नेत्र भी लाल हो गये। १०४६

ताममु नानमुन् ददैन्द तण्णहिल्, तूममुण् कुळलिय रुण्ड तूनऱै
ओमवॅङ् गुळियुहु नॅय्यि नुळ्ळुऱै, कामवॅङ् गनलिनैक् कनऱ्ऱिक् काट्टिऱ्ऱे 1047

ताममुम्–पुष्पहार; नानमुम्–(बिलाव-) कस्तूरी; ततैन्त–खूब मिश्रित; तण्–शीतल; अकिल् तूमम् उण्–अगरु के धुएँ से रमाये हुए; कुळलियर्–केशवालियों से; उण्ट–पीत; तू नऱै–अच्छी सुरा ने; वॅम् ओमम् कुळि–गरम होमकुण्ड में; उकुम् नॅय्यिन्–डाले गये घृत के समान; उळ् उऱै–अन्दर रहे; कामम् वॅय् कनलिनै–कामरूपी गरम आग को; कनऱ्ऱि काट्टिऱ्ऱु–उभाड़कर दिखाया। १०४७

स्त्रियाँ स्वतः रूपवतियाँ थीं। उस पर अलंकार भी खूब किया गया था। उनके केश पर पुष्पहार लगे थे। मुश्कबिलाव से प्राप्त कस्तूरी लगी थी। अगरु का धुआँ भी लगा था। उन्होंने जो ताड़ी पी उसने जैसे होमकुड में डाला गया घी अग्नि को उभाड़ देता है वैसे ही उनकी आंतरिक कामाग्नि को उभाड़ दिया। १०४७

विडनॊक्कु नॅडिय नोक्कि नमुदॊक्कु मिन्शॊ लाऱ्दम्
मडनॊक्कु मडनु मुण्डो वाणुद लॊरुत्ति काणाच्
चडनॊक्कु निळलैप् पॊन्शेय् तण्णऱुन् देऱल् वळ्ळत्
तुडनॊक्क वुवन्दु नीयु मुण्णुदि तोळि यॆन्ऱाळ् 1048

वाळ् नुतल् ऑरुत्ति–प्रकाशमय ललाटवाली एक ने; पॊन् चॅय्–स्वर्णरचित; तण् नऱु तेऱल् वळ्ळत्तु–शीतल, सुगन्धित मधु के प्याले में; चटन् ऑक्कुम् निळलै काणा–अपने आकार के बराबर एक (प्रतिबिंब-) रूप को देखकर; तोळि–सखि; नीयुम्–तुम भी; उटन् ऑक्क–साथ-साथ; उवन्तु उण्णति–प्रसन्नता के साथ पिओ; ऍन्ऱाळ्–कहा; विटन् ऑक्कुम्–विष सम; नॅटिय नोक्किन्–आयत आँखें; अमुतु ऑक्कुम्–अमृत सम; इन् चॊल्लार् तम्–मधुरभाषिणी स्त्रियों की; मटन् ऑक्कुम्–नादानी से तुल्य; मटनुम्–नादानी; उण्टो–है क्या? । १०४८

एक सुन्दर ललाटवाली ने शीतल, सुगन्धित ताड़ी से भरी प्याली में अपना-सा एक रूप देखा। समझी कि वह उसकी सखी है। उसने उसे अपने साथ आकर मद्य पीने का निमन्त्रण दिया। यह भी क्या नादानी

है ? विष तुल्य आयत आँखों, और सुधासम बोलीवाली स्त्रियों की अज्ञता के समान कोई नादानी भी कहीं होती है ? यह विचित्र नादानी है। १०४८

अच्चनुण् मरुङ्गु लाळो रणङ्गन्ना ळळह् पन्दि
नच्चुवेऱ् करुङ्गट् चॅव्वाय् नहैमुह नऱवुट् टोन्ऱप्
पिच्चिनी यॅन्शॅय् दायिप् पॅरुनऱ विरुक्क वाळा
ऍच्चिलै नुहर्दि योवॅन् ऱॅयिऱ्ऱुम् विलङ्ग नक्काळ् 1049

अच्चम् नुण् मरुङ्कुलाळ्–(टूट जाने का) भय दिखानेवाली पतली कमर की; ओर् अणङ्कु अन्नाळ्–एक देववाला सदृश स्त्री के; अळकम् पन्ति–केशजाल; नच्चु वेल्–विष लगे भाले के समान; करु कण्–और काले नेत्र; चॅव्वाय्–लाल मुख इनसे युक्त; नकै मुकम्–उज्ज्वल आनन; नऱवु उळ् तोन्ऱ्–सुरा के अन्दर दिखा, तो; पिच्चि–री पगली; नी ऍन् चॅय्ताय्–यह तुमने क्या किया; इ पॅरु नऱवु इरुक्क–इधर (इस सुराही में) इतनी अधिक सुरा के होते; वाळा–व्यर्थ; ऍच्चिल् नुकर्तियो–उच्छिष्ठ पिओगी; ऍन्ऱु–कहकर; ऍयिऱु अरुम्पु–दन्तकलियों को; इलङ्क–प्रकट करते हुए; नक्काळ्–हँसी। १०४९

एक अप्सरातुल्य स्त्री थी, जिसकी कमर इतनी पतली थी कि हमेशा उसकी स्थिति में डर बना रहता था। उसने प्याली में देखा तो घना केश, विषसिक्त भाले-सी काली आँखें, लाल अधर— इनके साथ शोभायमान एक मुख दिख रहा है। वह उसके ही मुख का प्रतिबिम्ब था। समझी कि वह मेरी सखी है। उसने कहा— री पगली ! सुरापात्र में बहुत सुरा है ! तो भी तुमने यह क्या किया ? व्यर्थ ही उच्छिष्ठ का पान करने चली ? यह कहकर वह अपनी कलियों सदृश दंतपंक्ति प्रकट करते हुए हँसी। १०४९

पुऱमॅला नहैशॅय् देशप् पॉरुवरु मेनि वेऱोर्
मऱमुलाङ् गॉलैवेऱ् कण्णाण् मणियिन्वळ् ळत्तु वॅळ्ळै
निऱनिलाक् कदिर्हळ् पाय निऱैन्ददु पोन्ऱु तोन्ऱ
नऱविला ददनै वायिन् वैत्तन णाणुट् कॊण्डाळ् 1050

पॉरु अरु मेनि–अनुपम रूप; वेऱु ओर् मऱम् उलाम्–कुछ अन्य तरह की क्रूरतावाले; कॊलै वेल् कण्णाळ्–घातक भाले-सी आँखोवाली (एक ने); मणियिन् वळ्ळत्तु–स्फटिक प्याली में; वॅळ्ळै निऱ–श्वेत रंग की; निला कतिर्कळ् पाय–चन्द्र की किरणों के लगने से; निऱैन्तदु पोन्ऱु–भर गई सी; तोन्ऱ–दिखी, तो; पुऱम् ऍलाम् नकै चॅय्तु एच–पास वाले सब हँसकर हँसी उड़ाएँ, ऐसा; नऱवु इलाततनै–सुरा से खाली, उसको; वायिन् वैत्तनळ्–मुख पर रख लिया; नाण् उळ् कॊण्टाळ्–लाज से भर गई। १०५०

एक अनुपम सुन्दरी की बात देखिये। उसकी आँखें भाले के समान घातक तो थी पर अनोखे ढंग से ये आँखें अपने स्थान पर रहकर भी पुरुषों

के मर्म पर आघात कर सकती थीं। उसके हाथ में स्फटिक की खाली प्याली थी। उस पर श्वेत रंग की चाँदनी पड़ी तो लगा कि प्याली भर गयी। उसने पीने के विचार से उस प्याली को अपने ओठों पर लगाया। यह देखकर पास रहनेवालों को हँसी आ गयी। तब तक उसे भी मालूम हो गया कि वह प्याली खाली है। वह लाज से भर गयी। १०५०

याऴ्क्कुमिऩ् कुऴऱ्कु मिऩ्ब मऴित्तऩ विवैया मॆऩ्ऩक्
केट्कुमॆऩ् मऴलैच् चॊल्लोर् किञ्जुहङ् गिडन्द वायाऴ्
ताट्करुङ् गुवळै तोय्न्द तण्णऱैच् चाडि युट्टऩ्
वाट्कणि निऴलैक् कण्डाऴ् वण्डॆऩ वोच्चु हिऩ्ऱाऴ् 1051

याऴ्क्कुम्–याऴ् (वीणा का पुराना रूप) को; इऩ् कुऴऱ्कुम्–मधुर बाँसुरी को; इऩ्पम् अऴित्तऩ–मिठास देनेवाले; इवै आम् ऎऩ–ये ही है, ऐसा कहने योग्य; केट्कुम्–स्वरित होनेवाले; मॆल् मऴलै चॊल्–कोमल तोतले वचनवाली; ओर् किञ्चुकम् किटन्त वायाऴ्–किंशुक सम लाल मुख की एक ने; ताऴ् करु कुवळै तोय्न्त–जिसमें नाल के साथ नीलोत्पल डाले गये थे उस; तण् नऱै चाटियुळ्–शीतल सुगन्धयुक्त सुराही में; तऩ् वाळ् कण्णिऩ्–अपनी तलवार-सी आँखों का; निऴलै कण्टाळ्–प्रतिबिंब देखा; वण्टु ऎऩ–भौंरे समझकर; ओच्चुकिऩ्ऱाळ्–उड़ाती है। १०५१

एक स्त्री ने ताड़ी की सुराही के अन्दर देखा। वह बड़ी ही मीठी और तुतलाती हुयी बोलनेवाली थी। उसका स्वर इतना मधुर था कि वीणा और बाँसुरी की मधुरता इसी की देन समझी जा सकती थी। उसका मुख किंशुकपुष्प के समान लाल था। ताड़ी की सुराही में नीलोत्पल नालों के साथ डाल रखे गये थे। जब उसने उस सुराही के अन्दर देखा तो उसकी आँखों का प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। उसने समझ लिया कि वे भ्रमर हैं। उनको उड़ाने लगी। १०५१

कळित्तहण् मदर्प्प वाङ्गोर् कऩङ्गुऴै कळ्ळि ऩुळ्ळे
वॆळिप्पडु हिऩ्ऱ काट्चि वॆण्मदि निऴलै नोक्कि
अळित्तऩै ऩबयम् वाऩत् तरविऩै यञ्जि नीवन्
दॊळित्तऩै नडुङ्ग लॆऩ्ऱाङ् गिऩियऩ वुणर्त्तु हिऩ्ऱाऴ् 1052

आङ्कु–वहाँ; ओर् कऩम् कुऴै–स्वर्णकुण्डलधारिणी एक; कळित्त कण्–मोदपूर्ण आँखों को; मतर्प्प–मस्ती दिलाते हुए; कळ्ळिऩ् उळ्ळे–सुरा के अन्दर; वॆळिप्पटुकिऩ्ऱ काट्चि–दृश्यमान; वॆण् मति निऴलै–श्वेतचन्द्र के प्रतिबिंब को; नोक्कि–देखकर; नी वाऩत्तु अरविऩै अञ्चि–तुम आकाश के सर्प (राहु) से डरकर; वन्तु ऒळित्तऩै–इधर आकर छिपे हुए हो; अपयम् अळित्तऩॆऩ्–अभय दिलाया; नटुङ्कल्–मत काँपो; ऎऩ्ऱ आङ्कु–ऐसे और अन्य; इऩियऩ–मधुर (धीरज के) वचनों से; उणर्त्तुकिऩ्ऱाळ्–समझाती है। १०५२

एक स्वर्णकुण्डलधारिणी ने ताड़ी के पात्र के अन्दर झाँका। उसकी मत्त आँखें और भी मस्त हुयी। क्योंकि उसके अन्दर चन्द्र (का प्रतिविम्ब) दिखाई दिया। वह उससे कहने लगी कि तुम शायद स्वर्ग के राहु (सर्प) से डरकर इधर आकर छिपे वैठे हो! मैंने तुमको अभयदान किया। मत डरो। (यद्यपि तुमसे स्त्रियों को, विशेषकर विरहिणियों को दुख होता है, तो भी शरण में आये हो, तुम्हारी हानि नही कराऊँगी।) ऐसी वातें कहकर उसने उसे ढाढस वँधाया। १०५२

कण्मणि वळ्ळत् तुळ्ळे कळिक्कुन्दन् मुहत्तै नोक्कि
विण्मदि मदुवि नाशै वीऴ्न्ददॅन् ऱॊरुत्ति युन्नि
उण्महिऴ् तुणैव नोडु मूडुनाळ् वॆम्मै नीङ्गित्
तण्मदि यादि याहिऱ् ऱरुवॆन्निन् नऱवै यॆन्ऱाळ् 1053

ऑरुत्ति–एक वाला ने; कळ् मणि वळ्ळत्तु उळ्ळे–सुरा के स्फटिक प्याले के अन्दर; कळिक्कुम्–मोदभरे; तन् मुकत्तै नोक्कि–अपने मुख को देखकर; विण् मति–आकाश का चन्द्र; मतुविन् आचै–सुरा की कामना से; वीऴ्न्ततु–गिर गया; ऍन्ऱु उन्नि–यह समझकर; उळ् मकिऴ् तुणैवतोटुम्–मेरे मन के प्यारे प्रेमी के साथ; ऊटुम् नाळ्–रूठने के दिन में; वॆम्मै नीङ्कि–अपनी गर्मी त्यागकर; तण् मति आदि आकिल–शीतल हिमांशु वनोगे तो; इ नऱवै तरुवॆन्–यह सुरा दूँगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। १०५३

एक वाला ने सुरा के स्फटिकप्याले में अपना मस्त मुख देखा। समझा कि आकाश का चन्द्र इसमें गिर गया है। शायद वह सुरापान के मोह से इस तरह गिरा है। तव वह शर्त लगाकर कहती है कि अगर तुम, जव मैं अपने प्यारे पति से रूठूँगी, तव गरम होकर ताप देना छोड़कर सचमुच हिमांशु रहने का वादा करोगे तो मैं तुमको पान करने दूँगी। १०५३

ऍळ्ळॊत्त कॊल मूक्कि नॆन्दिऴै यॊरुत्ति पूङ्गै
तळ्ळत्तण् णऱवै यॆल्लान् दविशिडै युहत्तुन् दॆऱाळ्
उळ्ळत्तिन् मयक्कन् दन्ना लुप्पुऱत् तुण्डॆन् ऱुन्नि
वळ्ळत्तै मऱित्तु वाङ्गि मणिनिऱ विदऴिन् वैत्ताळ् 1054

ऍळ् ऑत्त–तिल के फूल सदृश; कोलम् मूक्किन्–सुन्दर नासिकावाली; एन्तु इऴै–धृत आभरणोंवाली; ऑरुत्ति–एक नारी ने; पू कै तळ्ळ–फूल से हाथ के कम्पन से; तण् नऱवै ऍल्लाम्–शीतल सुरा को; तविचु इटै उकुत्तुम्–आसन पर गिरा दिया, तव; उळ्ळत्तिल्–मन में; मयक्कम् तन्नाल्–भ्रांति से; तेऱाळ्–न जानकर; उ पुऱत्तु उण्टु–(प्याले के) उस तरफ़ होगा; ऍन्ऱु उन्नि–यह समझकर; वळ्ळत्तै–प्याले को; मऱित्तु वाङ्कि–उलट लेकर; मणि निऱम् इतऴिन्–(लाल) मणि सदृश लवों पर; वैत्ताळ्–लगाया। १०५४

तिल के फूल के समान सुन्दर नासिकावाली, आभरणभूषिता एक

स्त्री के हाथ नशे के कारण उत्पन्न कंपन से प्याले की सारी सुरा आसन पर ढलक गयी। नशे के आलम में उसने सोच लिया कि उसने गलत तरीके से प्याला पकड़ा है। इसलिए उसने प्याले को उलटाकर अपने ओठों पर रख लिया। १०५४

वान्ऱतैप् पिरिद लाऱ्ऱा वण्डिनम् वच्चै माक्कळ्
एन्ऱमा निदियम् वेट्ट विरवल रॅन्न वार्प्पत्
तेन्ऱरु कमलच् चॅव्वाय् तिऱन्दुते नुहर नाणि
ऊन्ऱिय कळुनीर् नाळत् ताळिना लॊरुत्ति युण्डाळ् 1055

वान् तनै–आकाश में मँडराना; पिरितल् आऱ्ऱा–त्याग न सकने वाले; वण्डु इनम्–भ्रमरकुल; वच्चै माक्कळ् एन्ऱ–कृपण लोगों से रक्षित; मा निलियम् वेट्ट–बड़े धन को पाना चाहनेवाले; इरवलर् अॅन्न–याचकों के समान; आर्प्प–शब्द कर रहे थे, तब; ऑरुत्ति–एक; तेन् तरु कमलम्–शहद सहित कमल के सदृश; चॅव्वाय्–लाल मुख; तिऱन्तु–खोलकर; तेन् नुकर नाणि–सुरा पीने से संकोच करके; ऊन्ऱिय–(पात्र में) डाले गये; कळुनीर् नाळम् ताळिनाल्–कुवलय के नाल की नली से; उण्टाळ्–चूसा। १०५५

सुरा के पात्र के ऊपर भ्रमर मँडरा रहे थे और वहाँ से हटते ही नहीं थे मानो वे मँडराना नहीं छोड़ सकते हों। वह याचकों का कृपण लोगों से धन पाने की इच्छा में उनके पास घूमते रहने के समान था। एक स्त्री को इन भ्रमरों को न हटते देखकर पात्र से प्याले में ढालने से संकोच हो गया। यह डर रहा कि भ्रमर प्याले में गिरकर मुख के अन्दर भी चले जायँगे। इसलिए उसने कुवलय के नाल की नली द्वारा सीधे सुरापात्र से ही चूसकर पी ली। १०५५

पुळ्ळुऱै कमल वाविप् पॊरुहयल् वॅरुवि योड
वळ्ळुऱै कळितृत वाळ्बोल् वशियुऱ वयङ्गु कण्णाळ्
कळ्ळुऱै मलर्मॅन् कून्दर् कळियिळ मञ्ञै यन्नाळ्
उळ्ळुऱै यन्ब नुणणा तॅन्ननऱ वुण्ण लॅण्णाळ् 1056

पुळ् उऱै–पक्षियों से भरे; कमलम् वावि–कमलवापी की; पॊरु कयल्–संघर्षशील मछलियाँ; वॅरुवि ओट–डरकर भाग जायँ, ऐसी; वळ् उऱै कळितृत–दृढ़ म्यान से निकाली गई; वाळ् पोल्–तलवार के समान; वचि उऱ वयङ्कु–तीक्ष्ण रहनेवाली; कण्णाळ्–आँखों की; कळ् उऱै मलर् मॅन् कून्तल्–मधुयुक्त पुष्पालंकृत केशवाली; कळि इळ मञ्ञै अन्नाळ्–मत्त बालमयूर-सी छटावाली; उळ् उऱै अन्पन्–मन में रहनेवाले प्रेमी पति; उण्णात् अॅन्न–सुरापान नहीं करता, इससे; नऱवु उण्णल् अॅण्णाळ्–सुरा पान करने का मन नहीं करती। १०५६

एक स्त्री थी, जिसकी आभा मोर की छटा के समान थी। उसकी आँखें, कमलसर की संघर्षशील मछलियों से भी अधिक सुन्दर और चंचल

थीं। मछलियाँ लाज से डरकर भाग जायँ इतनी सुन्दर थी। साथ-साथ वे म्यान से बाहर निकली तलवार के समान तीक्ष्ण थीं। उसके केश पर पुष्प सज्जित थे और उन पुष्पों पर भ्रमर मँडरा रहे थे। वह स्त्री अपने प्यारे पति की सहधर्मचारिणी थी। उसने सुरापान नहीं किया क्योंकि उसने सोचा कि मेरे पति नही पीते, इसलिए मैं भी नहीं पिऊँगी। पति तो उसके मन में बैठा हुआ था। १०५६

अऴिहिऩ्ऱ वऱिवि ऩालो पेदैमै यालो वाऱुच्
चुऴियॊऩ्ऱि निऩ्ऱ वॆऩ्ऩु मुन्दिया ळॊरुत्ति शॆन्देऩ्
पॊऴिहिऩ्ऱ पूविऩ् वेय्न्द पन्दरैप् पुरैत्तुक् कोळवन्
दिऴिहिऩ्ऱ कॊऴुनि लावै नऱवॆऩ वळ्ळत् तेऱ्ऱाळ् 1057

आऱु चुऴि–नदी की भँवर; ऒऩ्ऱि निऩ्ऱु–(इसके साथ) लगी रहती है; ऎऩ्ऩुम्–ऐसी; उन्तियाळ् ऒरुत्ति–नाभीवाली एक ने; अऴिकिन्ऱ अऱिवित्तालो–नष्ट चेतना के कारण; पेतैमैयालो–(या) अज्ञता के कारण; चॆन्तेऩ् पॊऴिकिन्ऱ–अच्छा शहद ढलकनेवाले; पूविऩ् वेय्न्त–पुष्पों से भरे; पन्तरै–लतावितान को; पुरैत्तु–चीरते हुए; कोळ् वन्तु इऴिकिन्ऱ–नीचे आ पड़नेवाली; कॊऴु निलावै–घनी चाँदनी को; नऱवु ऎऩ–सुरा समझकर; वळ्ळत्तु एऱ्ऱाळ्–प्याले में भरा। १०५७

एक स्त्री ने, जिसकी नाभि नदी की भँवर आकर लगी हो ऐसी थी, एक विचित्र काम किया। उसने नशे के आलम में किया या मूर्खतावश पता नही। लता कुंज में, जहाँ मधुस्रावी पुष्प सर्वत्र भरे थे, जाकर उसने अपने प्याले में, वितान के छिद्रों से आनेवाली चाँदनी को सुरा मानकर ग्रहण किया। (पकड़ने का प्रयास किया)। १०५७

मिऩ्ऩॆऩ्ऩ नुडङ्गु हिऩ्ऱ मरुङ्गुला ळॊरुत्ति वॆळ्ळै
इऩ्ऩमु दऩैय तीञ्जॊ लिडैतडु माऱि येय्न्द
वऩ्ऩमे कलैयै नीक्कि मलर्त्तॊडै यलहुल् शूऴ्न्दाळ्
पॊऩ्ऩरि मालै कॊण्डु पुरिहुऴल् पुऩैय लुऱ्ऱाळ् 1058

मिऩ् ऎऩ–विजली सी; नुटङ्कुकिन्ऱ–लचकनेवाली; मरुङ्कुलाळ् ऒरुत्ति–कमरवाली एक; वॆळ्ळै–श्वेतवर्ण; इऩ् अमुतु अऩैय–मधुर सुधा सम; तीम् चॊल्–मधुर वचन; इटै तटुमाऱि–बोलने में लड़खड़ाती थी; अलकुल् एय्न्त वऩ्ऩम्–नितम्बभूषी अनेक रंगों की; मेकलैयै नीक्कि–मेखला को दूरकर; मलर् तॊटै–पुष्पमाला; चूऴ्न्ताळ्–लपेट ली; पॊऩ्तरि मालै–स्वर्ण (रचित) पुष्पों की (कण्ठ की) माला को; कॊण्टु–लेकर; पुरि कुऴल्–जूड़े को; पुऩैयल् उऱ्ऱाळ्–अलंकृत किया। १०५८

एक बिजली-सी क्षीण-कटि वाली नशे की स्थिति में क्या-क्या करती है। उसके दुराव-रहित और अमृत-सम मधुर वचन अस्पष्ट और खण्डित शब्दों का जल्प हो गये। नितम्बों पर से उसने अपनी मेखला हटा ली और

पुष्पों की माला लपेट ली। गले के, स्वर्णपुष्पों के हार को उतारकर उससे जूड़ा अलंकृत किया। १०५८

कूऱ्ऱुरऴ् नयऩङ्गळ् शिवप्पक् कूऩ्दल्
ऐऱ्ऱिवा ळॅयिऱुह ळदुक्कि यिऩ्ऱळिर्
माऱ्ऱरुङ् गरदल मऱिक्कु मार्दोरु
शीऱ्ऱमा मविनयऩ् ऱॅरिक्किऩ् ऱारिऩ्ऩे 1059

ऑरु मातु—एक स्त्री; चीऱ्ऱम् आम्—क्रोध का; अविनयम् तॅरिक्किऩ्ऱारिऩ्—अभिनय करनेवालों के समान; कूऱ्ऱु उरऴ्—मृत्यु सरीखी; नयऩङ्कळ् चिवप्प—आँखों को लाल करके; कूऩ् तुतल एऱ्ऱि—वक्र भौहों को भाल पर चढ़ाकर; वाळ् ऍयिऱुकळ् अतुक्कि—उज्ज्वल दाँत पीसकर; इऩ् तळिर् माऱ्ऱु—मनोहर पल्लव विजयी; अरु करतलम्—श्रेष्ठ हथेलियों से; मऱिक्कुम्—निवारण (का अभिनय) करती है। १०५६

एक स्त्री नशे में अकारण क्रोध से भर गयी। उसकी मृत्यु-सी आँखें लाल हो गयीं। टेढ़ी भौंहें भाल पर चढ़ गयीं। उसने सुन्दर दाँत पीसे। अपने पल्लव विजयी हाथों को किसी अप्रकट वस्तु के निवारण की मुद्रा में हिलाया। १०५९

तुडित्तवाऩ् ऱुवरिदऴ्त् तॉण्डै तूनिलाक्
कडित्तवा ळॅयिऱुह ळदुक्किक् कण्गळाम्
वडित्तवॅङ् गुरुदिवेल् विऴिक्कु मादर्मॅय्
पॉडित्तवेर् पुऱत्तुहु नऱवम् बोऩ्ऱदे 1060

तुटित्त—फटक रहे; वाऩ् तुवर् इतऴ्—अधिक लाल अधररूपी; तॉण्टै—बिंबफल को; तू निला कटित्त—शुद्ध (सफेद) चाँदनी को हरानेवाले; वाळ् ऍयिऱुकळ्—उज्ज्वल दाँतों से; अतुक्कि—काटते हुए; कण्कळ् आम्—आँखें रूपी; वटित्त वॅम् कुरुति वेल्—पैनाये गये रक्तसिक्त भाले से; विऴिक्कुम् मातर्—दृष्टि चलानेवाली एक की; मॅय् पॉटित्त वेर्—देह पर निकले स्वेदकण; पुऱत्तु उकु नऱवम् पोऩ्ऱतु—बाहर टपकनेवाले मद्य के समान थे। १०६०

और एक ने फड़कते लाल अधररूपी बिम्बफल को उज्ज्वल चाँदनी-विजयी दाँतों से दबाया। दृष्टिरूपी तीक्ष्ण और क्रूर भाला फेंकती-सी भयंकर रूप से घूरने लगी। उसके शरीर पर स्वेदकण जो प्रकट हुये वे मानो बाहर ढलकनेवाली सुरा की बूँदों के समान थे। १०६०

कऩित्तिर ळिदऴ्पॉदि शॅम्मै कण्बुह
निऩैप्पदोऩ् ऱुरैप्पदोऩ् ऱामोर् नेरिऴै
तऩित्तड मरैमलर् सुहत्तुच चाबमुम्
कुऩित्तदु पऩित्तदु कुऴवित् तिङ्गळे 1061

ओर् नेर् इऴै—उत्तम आभरणधारिणी एक; कऩि तिरळ्-इतऴ्—बिंबफल सम व पुष्ट अधरों की; पॉति चॅम्मै—भरी लालिमा के; कण् पुक—आँखों में प्रवेश कर जाने

से; तत्ति तटम् मरै मलर् मुकत्तु–अनुपम, विशाल कमल-मुख का; चापमुम् कुनितत्तु–धनुष भी झुका; कुऴवि तिङ्कळ् पनित्तत्तु–बालचन्द्र (भाल) पसीने से भरा; निनैप्पतु ऑन्ऱु–सोचती एक; उरैप्पतु ऑन्ऱु आम्–बोलती (दूसरा) एक। १०६१

एक उत्तम आभरणों की धारिणी की, बिम्बफलाधरों की घनी लालिमा उसकी आँखों में पहुँच गयी। उसके अप्रतिम और बड़े कमल के समान जो था उस मुख का चाप भी झुका। यानी भौंहें टेढ़ी हो गयीं। बालचन्द्र भी जलसीकरयुक्त हो गया; यानी उसके भाल पर स्वेद झलक आया। वह सोचती एक और कहती एक—बकने लगी। १०६१

इलविदऴ् तुवर्विड वॅयिऱु तेनुह
मुलैमिशैक् कच्चॉडु कलैयु मूट्टऱ
अलैहुऴल् शरिदर वशदि याडलाल्
कलविशॅय् कॉऴुनरुङ् कळ्ळु मॊत्तवे 1062

इलवु इतऴ्–सेमर के फूलों के समान अधर; तुवर् विट–लाल रंग छोड़ गये; ऍयिऱु तेन् उक–दाँतों ने मधु स्रवा; मुलै मिचै कच्चॉटु–स्तनों पर बँधे हुए अँगिये के साथ; कलैयुम्–वस्त्र भी; मूट्टु अऱ–बन्धन-मुक्त हुए; अलै कुऴल्–बिखरा केश; कुलैय–अस्त-व्यस्त हुआ; अचति आटलाल्–थकावट हुई, इसलिए; कलवि चॅय् कॉऴुनरुम्–सम्भोग करनेवाला पति और; कळ्ळुम्–सुरा; ऑत्त–एकसम हुए। १०६२

शराबी स्त्रियों के लिए सम्भोग करनेवाले पति और मद्य दोनों समान रूप हो जाते है, क्योंकि पतिप्रसंग पर सेमर से लाल अधर लालिमा छोड़ जाते हैं; दाँतों से लार (रूपी) शहद रसता है; स्तनों पर से अँगिया और शरीर पर से वस्त्र बन्धन खोलकर हटा दिये जाते हैं। शरीर थक जाता है। वे ही कार्य मद्यपान से भी सम्पादित हो जाते है। १०६२

कनैहऴऱ् कामनाऱ् कलक्क मुऱ्ऱदै
अनहनुक् कऱिवियॆन् ऱऱियप् पोक्कुमोर्
इन्नमणिक् कलैयिनाळ् डोऴि नीयुमॆन्
मनमॆनत् ताऴ्दियो वरुदि योवॆन्ऱाळ् 1063

कनै कऴल्–बजनेवाली पायलधारी; कामनाल्–कामदेव से; कलक्कम् उऱ्ऱतै–अशान्त रहना; अनकनुक्कु–अनघ (मेरे पति) को; अऱिवि–समझाओ; ऍन्ऱु–कहकर; अऱिय–समझाने के लिए; पोक्कुम्–दूती को भेजनेवाली; ओर् इन्नम् मणि कलैयिनाळ्–श्रेष्ठ विभिन्न रत्नों की मेखलाधारिणी एक ने; तोऴि–सखि; नीयुम्–तुम भी; ऍन् मनम् ऍन्न–मेरे मन के जैसे; ताऴ्तियो–ठहर जाओगी; वरुतियो–(या) आ जाओगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। १०६३

नादयुक्त पायलधारी कामदेव के कारण एक (कामातुरा) स्त्री को बहुत बेचैनी हुई थी। श्रेष्ठ रत्नों की बनी मेखलाधारिणी उसने वह बात

अपने प्रेमी से कहने के लिए एक दूती को भेजा। भेजते समय उसने सखी से संशय भरा प्रश्न किया कि सखि ! तुम वहाँ मेरे मन के समान, जो उनके पास ही ठहर गया है, ठहर जाओगी या जल्दी आ जाओगी ?। १०६३

माऩमर् नोक्कियोर् मङ्गै वेन्दऩ्बाल्
आनतऩ् पाङ्गिय रायि ऩारॅलाम्
पोऩवर् पोऩवर् तॉडरप् पोक्किऩाळ्
तानुमङ् गवर्पिने तमिय ळेहिनाळ् 1064

मान् अमर् नोक्कि ओर् मङ्कै–हरिणी की-सी आँखवाली एक स्त्री ने; वेन्तन् पाल्–नायक के पास; आन–अनुकूल; तन् पाङ्कियर् आयिनार् ॲल्लाम्–अपनी सभी सखियों को; पोऩवर् पोनवर् तॉटर–एक के पीछे एक जाये, ऐसा; पोक्किऩाळ्–भेजा; अङ्कु अवर् पिऩ्ने–उनके पीछे; तानुम् तमियळ् एकिऩाळ्–वह अकेली चली। १०६४

मृगनैनी एक की बेचैनी की स्थिति देखिये। उसने अपने नायक के पास एक-एक करके सभी सखियों को भेजा। फिर वह खुद उठकर उसके पास अकेली चली गई। १०६४

मऩ्ऱऩा ऱॉरुशिऱै यिरुन्दोर् वाणुदल्
तऩ्ऱुणैक् किळ्ळयैत् तळीयियॅऩ् ऩावियै
इऩ्ऱुपोय्क् कॉणर्हिलै यॅऩ्शॅय् वायॅऩक्
कऩ्ऱिलो डॉत्तियॅऩ् ऱळुदु शीऱिऩाळ् 1065

ओर् वाळ् नुतल्–एक उज्ज्वल ललाटवाली; मऩ्ऱल् नाऱु–जहाँ सुगन्ध फूट रही थी; ओरु चिऱै इरुन्तु–एक ऐसे स्थान में रहकर; तन् तुणै किळ्ळैयै–अपने साथी शुक को; तळीइ–गले से लगाकर; इऩ्ऱु पोय्–आज जाकर; ॲन् आवियै–मेरे प्राण (-सम पति) को; कॉणर्किलै–नहीं लाये; ॲन् चॅय्वाय्–फिर क्या करोगे; ॲऩक्कु–मेरे लिए; अऩ्ऱिलोटु ऑत्ति–क्रौंच पक्षी के बराबर हो गये; ॲऩ्ऱु–कहकर; अळुतु–रोती हुई; चीऱिऩाळ्–गुस्सा किया। १०६५

उज्ज्वल ललाटवाली एक प्रेमिका ने जो पी चुकी थी, सुगन्धपूर्ण एक स्थान पर रहकर अपने साथी शुक को गले लगाती हुई उलाहना दी कि तुम जाकर मेरे प्राणों को (प्यारे को) नहीं बुला लाये। फिर तुम मेरे लिए क्या करनेवाले हो। अब तुम शुक नहीं रहे— क्रौंच पक्षी बन गये हो। क्रौंच पक्षी ही अपने स्वर से वियोगिनियों के दिल को दुखाता है। तुम अब उनकी अनुपस्थिति में उनका नाम ले लेकर, मुझे पीड़ा पहुँचा रहे हो ! (साधारण रूप से शुक का नायक नाम सम्बोधन नायिकाओं को आनन्द देता है। कभी-कभी वह दुखदायी भी होता है, जसे इस नायिका को होता है।)। १०६५

विरैशॆय्पूज़् जॆक्कयान् दॆप्प मीमिशैक्
करैशॆया वाशयङ् गडलु ळाळॊरु
पिरैशमॆन् कुदलैयाळ् कॊऴुनन् पेरॆलाम्
उरैशॆयुङ् गिळ्ळैयै युवन्दु पुल्लिनाळ् 1066

करै चॆया आचै–अपार प्रेम के; कटल्–सागर में; विरै चॆय्–सुगन्धि देनेवाली; चेक्कै आम् तॆप्पम् मी मिचै–शय्या रूपी बेड़े पर; उळाळ्–रहनेवाली; ओरु पिरैचम् मॆन् कुतलैयाळ्–शहद सम मीठी तोतली वाली एक ने; कॊऴुनन् पेर् ऎलाम्–पति के नाम सब; उरै चॆयुम् किळ्ळैये–कहनेवाले शुक को; उवन्तु पुल्लिनाळ्–अनुराग के साथ गले लगा लिया। १०६६

अपार कामना के सागर में सुवासित पुष्पशय्या को बेड़ा बनाकर एक मधु-सम मधुरवयनी तैर रही थी। उसके शुक ने उसके नायक के सारे नाम दुहराकर सम्बोधन किया तो उसे बड़ा आनन्द हुआ और उसने चाव के साथ उस शुक को गले लगाया। (पिछले पद में कभी-कभी होनेवाली शुक-सम्बन्धी बात कही गई थी। इसमे सामान्य बात कही गई है।)। १०६६

वळैपयिन् मुन्गयोर् मयिल नाट्कुतन्
इळैयवळ् पॆयरिनैक् कॊऴुन नीदलुम्
मुळैयॆयि ऱिलङ्गिड मुरुवल् वन्ददु
कळकळ वुदिर्न्दन कयऱ्क णालिये 1067

वळै पयिल् मुन् कै–कंकणों से अलंकृत कलाईवाली; ओर् मयिल् अन्नाट्कु–एक मयूराभा को; कॊऴुनन्–पति के; तन् इळैयवळ्–अपनी छोटी सौत के; पयरितै नाम को; ईतलुम्–लेने पर; मुळै ऎयिऱु इलङ्किट–अंकुर सदृश दाँतों को प्रकट करते हुए; मुरुवल् वन्ततु–(क्रोध की) हँसी आई; कयल् कण्–मछली-सी आँखों से; आलि–अश्रु; कळ कळ–टप-टप; उतिर्न्तत–गिरे। १०६७

कंकणभूषित हाथोंवाली एक मयूराभा नायिका के पति ने उसकी छोटी सौत का नाम ले लिया तो बीजांकुर के समान दाँत प्रकट करते हुए हँसी और उसकी मछली-सी आँखों से अश्रु टप-टप गिरने लगे। (हँसी क्रोध की हँसी थी। उसे एक साथ क्रोध भी आया और दुख भी हुआ।)। १०६७

शॆऱ्ऱमुऱ् ऱेहवोर् शॆम्मल् वॆम्मयाल्
पऱ्ऱलु मल्हुलिऱ् परन्द मेहलै
अऱ्ऱुहु मुत्तिन्मुत् ववनि शेर्न्दन
पॊऱ्ऱॊडि यॊरुत्तिकण् पॊऴिन्द मुत्तमे 1068

पॊन् तॊटि ऒरुत्ति–स्वर्णकंकणधारिणी एक; चॆऱ्ऱम् उऱ्ऱु एक–रूठकर जाने लगी तब; ओर् चॆम्मल्–श्रेष्ठ (उसके) नायक के; वॆम्मैयाल्–(मनाने की) इच्छा

से; अलकुलिल् परनृत–नितम्बों पर ढीली पड़ी रही; मेकलै पर्रलुम्–मेखला को पकड़ने पर; अर्र्रु उकु–टूटकर गिरनेवाले; मुत्तिन् मुन्नपु–मोतियों के पहले; कण् पॉळ्ळिन्त मुत्तम्–आँखों से गिरे (अश्रु-) मोती; अवनि चेर्नतत–भूमि पर जा पड़े। १०६८

स्वर्णकंकणालंकृत एक नायिका रूठकर अपने पति से अलग जाने लगी। नायक ने उसे मनाने की इच्छा से उसकी, नितम्बों पर की मेखला को पकड़ लिया तो वह कट गई और उसके मोती गिरने लगे। वे मोती भूमि पर जा लगें, इसके पहले ही उसकी आँखों से निकले मोती (अश्रुकण) भूमि पर गिर गये। (गुस्सा भी नहीं गया और दुख भी हो गया)। १०६८

तोडविळ् कून्दला ळोरुत्ति तोन्रलो, डूडुहॅ न्रोवुयि रुरुहु नोयहॅडक्
कूडुहॅ न्रोववन् गुणङ्गळ् वीणयिल्, पाडुहॅ न्रोवॅनप् पलवुम् बन्निन्नाळ् 1069

तोटु अविळ् कून्तलाळ्–विकसित दलवाले पुष्पों से अलंकृत केशवाली; ऑरुत्ति–एक स्त्री; तोन्रलोटु–अपने नायक (राजा) के साथ; उटुकॅन् ओ–रूठूँगी; उयिर् उरुकुम् नोय् कट–प्राणद्रावक रोग दूर करते हुए; कूटुकॅन् ओ–मिलूँगी; अवन् कुणङ्कळ्–उनके गुणों को; वीणैयिल् पाटुकॅन् ओ–वीणा पर गाऊँगी; ॲन–ऐसा; पलवुम्–अनेक प्रकार से; पन्निनाळ्–सोचा। १०६९

एक स्त्री, जिसके केश के फूल पूर्णरूप से विकसित थे, मन में तर्क-वितर्क करने लगी। मेरे पति आ जायँगे तो उनसे रूठी बैठी रहूँ ? या अपने प्राणों को पिघलानेवाला जो वियोग-रोग है उसको दूर करते हुए उनसे मिल जाऊँ ? या वीणा लेकर उनके श्रेष्ठ गुणों के वर्णन करनेवाले गाने गाऊँ ? वह इस तरह अनेक प्रकार से सोच रही थी। १०६९

माडहम् वर्रिय महर वीणैतन्
तोडविळ् मलर्क्करञ् जिवप्पत् तॉट्टनळ्
पाडिन्न ळोरुत्तितन् पाङ्गु ळार्हळो
डूडिन्न दुरैशॅया ळुळ्ळत् तुळ्ळदे 1070

ऑरुत्ति–एक बाला ने; ऊटित्तु–अपना रूठना; तन् पाङ्कु उळार्कळोटु–अपनी अनुकूल सखियों से; उरै चॅयाळ्–नहीं बताया; माटकम् पर्रिय–(तन्त्री की लम्बाई को कम या अधिक करने के लिए लगाई गई) पेचवाली; मकर वीणै–मकराकार की वीणा को; तन्–अपने; तोटु अविळ् मलर् करम्–दल खुले कमलतुल्य करों को लाल करते हुए; तॉट्टनळ्–हाथ में लेकर; उळ्ळत्तु उळ्ळतु–मन में जो रहा वह भाव; पाटिनाळ्–गाने के द्वारा प्रकट किया। १०७०

एक स्त्री ने अपनी अनुकूल सखियों से अपने रूठने की बात साफ़-साफ़ तो नहीं कही। पर उसने वीणा ली। पेच को, अपने हाथ को

दुखाकर लाल करते हुए घुमाया और तन्त्री को उचित तनाव दिया। फिर वह गाने लगी तो उसके आन्तरिक भाव प्रकट हो गये। १०७०

कुऴैत्तमॅन् कॉम्बना ऴॊरुत्ति कूडलै
इऴैत्तन ऴदुवव ळिऴैत्त पोदॅलाम्
पिऴैत्तलु मनङ्गवेळ् पिऴैप्पि लम्बॊडुम्
उऴैत्तन ऴुयिर्त्तन ऴुयिरुण् डॅन्नवे 1071

कुऴैत्त–पल्लवित; मॅन् कॉम्पु अन्नाळ्–कोमल पुष्पलता सदृश; ऑरुत्ति–एक ने; कूटलै इऴैत्तनळ्–"शकुनवृत्त" बनाये; अतु–वह; अवळ् इऴैत्त पोतॅल्लाम्–उसके बनाने के हर अवसर पर; पिऴैत्तलुम्–(सिरे न मिलकर पूर्ण न बना) गलत निकला; अनङ्कवेळ्–(तव) अनंग देव के; पिऴैप्पु इल् अम्पॊटुम्–अचूक शर के कारण; उऴैत्तनळ्–पीड़ित होकर; उयिर् उण्टु ऍन्न–जीवित तो है यह कहा जाय ऐसा; उयिर्त्तनळ्–साँस लेती रही। १०७१

एक पल्लव व फूलों से भरी पुष्पलतातुल्य दयिता ने शकुन देखना चाहा कि पति आयेगा कि नहीं। वह वृत्त बनाने लगी। (यानी बालू फैलाकर आँखें मूँदकर अपनी उँगली से वृत्त या गोल खींचा। अगर दोनों सिरे मिल गये और वृत्त पूर्ण हुआ तो निश्चित है कि वह आयेगा।) पर हर बार वृत्त नहीं बना, सिरे नही मिले। इसलिए उसका मन कामवेदना से भर गया। ज्यों-ज्यों वृत्त गलत हुआ, त्यों-त्यों काम का अचूक शर उसको उत्तरोत्तर अधिक वेदना देने लगा। वह सिर्फ़ साँस लेती रही इसलिए लोगों ने जाना कि वह जीवित है। अन्यथा उसके शरीर में कोई स्पंदन या जीवन के चिह्न नही दिखाई दिये। १०७१

पन्दणि विरलिना ळॊरुत्ति पैयुळाल्
सुन्दर नॊरुवन्पाऱ् ऱुदु पोक्किनाळ्
वन्दन नॆनक्कडै यडैत्तु माऱ्ऱिनाळ्
शिन्दनै तॆरिन्दिलञ् जिवन्द नाट्टमे 1072

पन्तणि विरलिनाळ्–कंदुक शोभावर्द्धिनी उँगलियोंवाली; ऑरुत्ति–एक स्त्री ने; पैयुळाल्–(वियोग-) दुख से; चुन्तरन् ऑरुवन् पाल्–सुषमायुक्त अपने अद्वितीय नायक के पास; तूतु पोक्किनाळ्–दूत भेजा; वन्तनन् ऍन्न–आया तो; कटै अटैत्तु–द्वार बन्द करके; माऱ्ऱिनाळ्–रास्ता रोका; नाट्टम् चिवन्त–आँखें लाल हुईं; चिन्तनै तॆरिन्तिलम्–अभिप्राय नहीं जानते। १०७२

कंदुक की शोभा को अपनी उँगलियों से बढ़ानेवाली एक स्त्री ने, वियोग-दुख सहन न करके अपने परम सुन्दर नायक के पास सन्देश भेजा। वह भी आ गया। पर इसका मन बदल गया। (उसको अपने झुकने के कारण झुँझलाहट और पति के सन्देशा पाते तक रह जाने से गुस्सा हुआ।) इसलिए उसकी आँखें लाल हुई और उसने द्वार बन्द कर उसको

अन्दर आने से रोक लिया। हम यह नहीं बता सकते कि अब उसका अभिप्राय क्या है ? । १०७२

उय्त्तपूम् बळ्ळियि नूड नीङ्गुवान्
शित्तमुण् डोरुत्तित तन्बन् ऱेर्हिलान्
पॉय्त्तदोर् मूरिया निमिर्न्दु पोक्कुवाळ्
ॲत्तनै यिऱन्दन कडिहै योण्ड्रॅन्ऱाळ् 1073

उय्त्त पू पळ्ळियिन्–(सखियों द्वारा) बिछाई गई पुष्पशय्या पर; ऊटल् नीङ्कुवान्–रूठना छोड़ने का (प्रिय से मिलने का); चित्तम् उण्ट–विचार रखनेवाली; ओरुत्ति तन् अन्पन्–एक का पति; तेर्किलान्–उसका मन नहीं समझा; पोक्कुवाळ्–समझाने के लिए; पॉय्त्ततु–झूठी; ओर् मूरियाल्–एक अँगड़ाई लेकर; निमिर्न्तु–सीधी होकर; ईण्टु–अब; ॲत्तनै कटिकै–कितनी घड़ियाँ; इऱन्तन–बीतीं; ॲन्ऱाळ्–पूछा। १०७३

एक स्त्री अपनी सखियों से निर्मित पुष्पशय्या पर लेटी थी। उसकी रूठन दूर हो गई और पतिसंयोग की इच्छा हुई। पति वह बात नहीं समझ सका। वह उसे जताना चाहती थी पर खोलकर तो नहीं कह सकी। इसलिए उसने एक झूठी अँगड़ाई ली; फिर शरीर को सीधा किया। बाद में पूछा कि अब कितनी घड़ियाँ बीत गई ? (मानो वह सो गई थी और अभी-अभी जागी हो।)। १०७३

विदैत्तमॅन् कादलिन् वित्तु मॅय्न्निऱै
मुदैप्पुन ननैत्तिड मुळैत्त वेयॅनप्
पदैत्तन ळॊरुवन्मे लॊरुत्ति पञ्जडि
उदैत्तलुम् पॉडित्तन वुरोम राशिये 1074

ओरुत्ति–एक; पतैत्तनळ्–आकुलित हुई; ओरुवन् मेल्–एक (अपने नायक) पर; पञ्चु अटि उतैत्तलुम्–महावर लगे पैरों से लात मारी, तब; मॅय्–उसका शरीर; निऱै मुतै पुतम्–(रूपी) उर्वर खेत को; ननैत्तिट–सिंचित करने से; वितैत्त–बोये गये; मॅन् कातलिन् वित्तु–कोमल प्रेम के बीज; मुळैत्त ॲन्न–उग आये ऐसा; उरोमराचि–रोम समूह; पॉटित्तन–पुलकित हुए। १०७४

एक स्त्री ने व्याकुल अवस्था में अपने प्रेमी पर लात मारी। उसके रोंगटे खड़े हो गये। कवि की कल्पना है कि प्रेमी का शरीर एक उर्वर खेत था; लाक्षारससिक्त पैरों की लात सिंचन थी और रोमहर्षण प्रेम के बीजों के अंकुर हैं। १०७४

एय्न्दपे रॅळिलिना नॊरुव नॆय्दिनान्
वेय्न्दपो लॅङ्गणु मनङ्गन् वॆङ्गणै
पाय्न्दपूम् बळ्ळियिऱ् पडुत्त पल्लवम्
तीय्न्दवा नोक्किनान् ऱळिर्क्कुळ् जिन्दयान् 1075

एय्न्त पेर् ऍऴिलितान् ऒरुवन्–संभूत बड़ी सुषमाशाली एक; ऍय्तितान्–(अपनी प्रेयसी के पास) पहुँचकर; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; अनङ्कन् वॆम् कणै–अनंग के प्यारे शर-पुष्प; वेय्न्त पोल्–बिछाये गये ऐसा; पाय्न्त–विस्तृत; पू पळ्ळियिल्–पुष्पशय्या पर; पट्टत–बिछाये गये; पल्लवम्–पल्लव; तीय्न्तवाऱु–झुलसे रहे, यह प्रकार; नोक्कितान्–देखा; तळिर्क्कुम् चिन्तैयान्–उत्फुल्ल-चित्त हुआ। १०७५

संभूत परम सौंदर्य का स्वामी एक था। वह अपनी प्रेयसी के पास आया। वह एक पुष्पों की, जो अनंग के प्यारे शर हैं, बनी शय्या पर लेटी थी। प्रेमी ने देखा कि उस शय्या के फूल और पत्ते कैसे झुलसे हैं। (समझ गया कि नायिका वियोगतप्त है और यह मिलन के लिए युक्त अवसर है।) उसका मन प्रफुल्लित हुआ। १०७५

पॊलिन्दवाण् मुहत्तिनान् पॊङ्गित् तन्नैयुम्
मलिन्दपे रुवहयन् माऱ्ऱु वेन्दरै
नलिन्दवा ळुळवनोर् नङ्गै कॊङ्गैपोय्
मॆलिन्दवा नोक्कित्तन् पुयङ्गळ् वीङ्गिनान् 1076

माऱ्ऱु वेन्तरै नलिन्त–शत्रु राजाओं के त्रासक; वाळ् उळवन्–तलवार कृषक (वीर); ओर् नङ्कै कॊङ्कै–एक (अपनी नायिका) के स्तनों के; पोय् मॆलिन्त आऱु नोक्कि–क्षीण हुए रहने की स्थिति देखकर; पॊङ्कि–उमंगित होकर; तन्नैयुम् मलिन्त पेर् उवकैयन्–अपने से भी अधिक प्रसन्नचित्त और; पॊलिन्त वाळ् मुकत्तितान्–दृश्यमान उज्ज्वल मुखवाला होकर; तन् पुयङ्कळ्–अपनी भुजाओं को; वीङ्कितान्–फुलाया। १०७६

एक राजा ने, जो तलवार का कृषक था, यानी तलवार का धनी था, अपनी प्रेयसी के स्तनों को देखा कि वे किस प्रकार क्षीण हुए हैं। (समझ गया कि ऐन मौका है। अतः) आनन्द से आपे से बाहर हो गया। उसका मुख खिल गया। उसकी भुजाएँ फूल उठीं। १०७६

ऊट्टिय शान्दुवॆन् दुलरुम् वॆम्मयान्
नाट्टिनै यळित्तिनी यॆन्ऱु नल्लवर्
आट्टुनीर्क् कलशमे यॆन्न लायवोर्
वाट्टॊऴिन् मैन्दर्कोर् मङ्गै कॊङ्गये 1077

ऊट्टिय चान्तु–(शरीर पर) चर्चित चन्दन; वॆन्तु उलरुम् वॆम्मैयान्–गरमी पाकर सूख जाय, इतना गरम शरीर के; ओर् वाळ् तॊऴिल् मैन्तर्कु–एक तलवार-कार्य-कुशल नायक को; ओर् मङ्कै कॊङ्कै–एक नायिका (उसकी प्रिया) के स्तन; नाट्टिनै अळित्ति नी–देश का अच्छा परिपालन करो, तुम; ऎन्ऱु–यह कहकर; नल्लवर्–उत्तम लोगों द्वारा; आट्टुम्–अभिषेक कराने के निमित्त; नीर् कलचम् ऎन्नल् आय–(अभिमंत्रित) जल के स्वर्ण कलश कहलाने योग्य बने। १०७७

एक तलवार के धनी वीर की कामवासना इतनी तीव्र थी कि उसका शरीर इतना गरम हो गया कि चर्चित चन्दन भी सूख गया। उसके लिए उसकी नायिका के स्तन उन स्वर्णकलशों के समान थे जिनमें उत्तम शास्त्रज्ञों द्वारा अभिमंत्रित जल भरा हो और जो 'तुम इस देश की खूब रक्षा करो' इस आशीर्वाद के साथ अभिषेक करने के लिए प्रस्तुत कर रखे गये हों। (अब प्रेम का राज्य उसके अधीन हो गया —यह सूचना दी गयी।)। १०७७

पयिरुरु किण्किणि परन्द मेकलै, वयिरवान् पूणवै वाङ्गि नोक्किनाळ्
उयिरुरु तलैवन्बाऱ् पोह् वुन्निनाळ्, शॅयिरुरु तिङ्गळैत् तीय नोक्किनाळ् 1078

उयिर् उरु तलैवन् पाल्–प्राण सम नायक के पास; पोक उन्निनाळ्–जाने का विचार करके एक ने; पयिर् उरु–झनझनानेवाले; किण्किणि–"किण्किणि" नामक पैर के आभरण; परन्त मेकलै–(कमर पर की) ढीली मेखला और; वयिरम् वान् पूण् अवै–हीरे के उज्ज्वल अन्य आभरणों को; वाङ्कि नोक्किनाळ्–उतारकर हटाया; चॅयिर् उरु तिङ्कळै–अपराधी चन्द्र को; तीय नोक्किनाळ्–(मानो) जला देगी ऐसा देखा। १०७८

एक नायिका ने नायक के पास (अभिसारिका हो) जाना चाहा। इसलिए उसने पैर की पैंजनी (तमिऴ में 'किणकिणी' कहा जाता है) कमर की मेखला और अन्य हीरे के उज्ज्वल आभरण उतारकर दूर किये। (ये उसके रहस्य को खोल सकते थे।) तब उसने देखा चाँद अपराधी है। चाँदनी में वह गुप्तरूप से कैसे जा सकेगी? इसलिए उसने चाँद के प्रति आग्नेय दृष्टि फेरी। १०७८

एलुमिव् वन्मयै यॅन्नॅन् रुन्नुदुम्
आलैमॅन् करुम्बन्ना नॉरुवर् काङ्गॊरु
शोलमॅन् कुयिलन्नाळ् शुऱ्ऱि वीक्किय
मालयै निमिर्न्दिल वयिरत् तोळ्हळे 1079

आलै मॅन् करुम्पु अन्नान्–(ईख के) कोल्हू में पिसनेवाले कोमल ईख के सदृश रहे; ऑरुवर्कु–एक नायक के; वयिरम् तोळ्कळ्–वज्र कठोर कंधे; आङ्कु–वहाँ; ऑरु चोलै मॅन् कुयिल् अन्नाळ्–एक उपवन की कोमल कोयल तुल्य एक (नायिका) द्वारा; चुऱ्ऱि वीक्किय–लपेटकर बाँधी गई; मालैयै–माला को; निमिर्न्तिल–तोड़ नहीं सके; एलुम् इ वन्मैयै–(माला को) प्राप्त इस शक्ति का; ऍन् ऍन्रु उन्नुतुम्–क्या कहकर माना जाय। १०७९

एक नायक था, बेचारा! वह कोल्हू में पिसनेवाले ईख के समान हो गया था। उसकी वज्र कठोर भुजाओं को एक उद्यानवासिनी कोमल कोकिलातुल्य स्त्री (नायिका) ने पुष्पमाला से बाँध दिया। वह उस बन्धन से अपनी भुजाओं को मुक्त नहीं करा सका। उस माला के बल का क्या सोचा जाय? (प्रेम की विचित्र दशा का विदग्ध चित्रण है।)। १०७९

शोरहुऴ लॊरुत्तिदन् वरुत्तम् जॊल्लुवान्
मारत्तै नोक्कियोर् मादै नोक्किन्नाळ्
कारिहै यवळिवळ् करुत्तै नोक्कियोर्
वेरियन् दॆरियलान् वीडु नोक्किन्नाळ् 1080

चोर् कुळल् ऑरुत्ति–बिखरे केशवाली एक ने; तन् वरुत्तम्–अपने वियोग-दुख को; चॊल्लुवान्–जताने के लिए; मारत्तै नोक्कि–(चित्रार्पित) मार को देखकर; ओर् मातै नोक्किन्नाळ्–एक (सखी) स्त्री को देखा; कारिकै अवळ्–सखी, उसने; इवळ् करुत्तै नोक्कि–इसका आशय समझकर; ओर् वेरि अम् तॆरियलान्–सुवासपूर्ण सुन्दर मालाधारी एक अप्रतिम (नायक) के; वीटु नोक्कित्ताळ्–घर की तरफ़ गई । १०८०

एक वियोग-दुखिनी नायिका ने, जिसका कुंतल खुलकर बिखर रहा था, अपनी सखी को अपनी स्थिति जताना चाहा । सीधे शब्दों में कह नहीं सकी । इसलिए उसने मारदेव के चित्र को देखा, फिर अपनी सखी पर दृष्टि डाली । सखी समझ गई और नायक के घर की तरफ़ उसने प्रस्थान किया । (नोक्कु–'देख' शब्द, देख, संकेत बता, संकेत समझ, की तरफ़ जा —इन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है ।) । १०८०

शिनङ्गॊऴु वेऱ्कयोर् शॆम्मल् पालॊरु
कनङ्गुळै मयिलन्नाळ् कडिदु पोयिन्नाळ्
मनङ्गुळै नऱवमो मालै तान्गॊलो
अनङ्गनो यार्हॊलो वळैत्त तूदरो 1081

चिनम् कॊळु वेल् कै–कोपिष्ट, भालाधारी हस्त के; ओर् चॆम्मल्–एक नायक; पाल्–के पास; ऑरु कनम् कुळै–एक स्वर्णकुण्डलधारिणी; मयिल् अन्नाळ्–मोर सी छटावाली; कटितु पोयित्ताळ्—जल्दी-जल्दी जाने लगी; अळैत्त तूतु–(उसको उस तरह) बुलानेवाला दूत; मनम् कुळै नऱवमो–मन को द्रवित करनेवाली सुरा; मालै तान् कॊल्लो–संध्या का समय ही; अनङ्कनो–(या) अनंग ही; यार् कॊलो–कौन है तो (हम नहीं जानते) । १०८१

एक स्वर्णकुंडलधारिणी नायिका अपने क्रोधी भालाधारी नायक के पास स्वयं त्वरित गति से जाने लगी। यह क्यों? उसको किस बात ने 'दूत' सदृश प्रेरित किया, जाने को मज़बूर किया ? उसने जो सुरा पी थी जिसके कारण उसका मन लालायित हो गया, वह ? सन्ध्या समय जो कामोत्तेजक ही नहीं, स्थल को गुप्त भी रखता है ? या स्वयं कामदेव ? कौन जाने ? । १०८१

तॊहुतरु कादऱ्कुत् तोऱ्ऱ शीऱ्ऱत्तोर्
वहिरमदि नॆऱ्ऱियण् मळैक्क णालिवन्

दुहुदलु मुऱ्ऱदॆऩ् ऩॆऩ्ऱु कॊऱ्ऱवऩ्
नहुदलु नक्कऩ णाणु नीक्किऩाळ् 1082

तॊकुतरु कातलकु तोऱ्ऱ–गम्भीर प्रेम के सामने हारने के कारण; चीऱ्ऱत्तु–उत्पन्न क्रोध की; ओर् वकिर्मति नॆऱ्ऱियळ्–एक कलाचन्द्र सदृश ललाटवाली की; मऴै कण्–शीतल आँखों से; आलि वन्तु उकुतलुम्–अश्रु के गिरते; कॊऱ्ऱवऩ्–विजयी (उसका नायक); उऱ्ऱतु ऎऩ्–हुआ क्या; ऎऩ्ऱु–कहकर; नकुतलुम्–हँसा तो; नक्कऩळ्–हँस दी; नाणुम् नीक्किताळ्–लाज (संकोच) छोड़ दी। १०८२

उस नायिका का प्रेम बड़ा गहन था। इसलिए पति के पास आते ही उसके प्रेम से हारकर अपना गुस्सा भूल गई। चन्द्रकला (अर्धचन्द्र) समान ललाटवाली उसकी आँखों से आँसू आये। अब क्या हो गया? —यह प्रश्न करके पति हँसा तो वह भी हँस दी। साथ-साथ लाज भी छूट गयी। (इस पद में नायक को 'विजयी' कहा गया है क्योंकि आसानी से उसे नायिका के प्रेम में जीत मिल गई।)। १०८२

पॊय्त्तलै मरुङ्गुला ळॊरुत्ति पुल्लिय
कैत्तल नीक्किऩळ् करुत्तै नोक्किऩाळ्
शित्तिरम् बोऩ्ऱवच् चॆयलॊर् तोऩ्ऱऱ्कुच्
चत्तिर मार्बिडैत् तैत्त दॊत्तदे 1083

पॊय्त्तु अलै–नहीं रहकर, संकट उठानेवाली; मरुङ्कुलाळ्–कमर की; ऒरुत्ति–एक; पुल्लिय–आलिंगन करनेवाले; कै तलम् नीक्कितळ्–(पति के) करतल को हटाया; करुत्तै नोक्किताळ्–और उसके मन को देखा (परखा); चित्तिरम् पोऩ्ऱ अ चॆयल्–विचित्र वह काम; ओर् तोऩ्ऱल् कु–एक राजा के लिए; मार्पु इटै–वक्षमध्य; चत्तिरम् तैत्ततु–शस्त्र का गड़ना; ऒत्ततु–सा लगा। १०८३

एक स्त्री ने, जिसकी कमर के होने में सन्देह थी, तो भी जो ग्रस्त होकर संकट पा रही थी, अपने पति के आलिंगनरत हाथ को हटा दिया। वह यह देखना चाहती थी कि उसके मन की दशा क्या होगी? पर इस विचित्र कार्य पर उसे ऐसा लगा मानो शस्त्र आकर लग गया हो। १०८३

मॆल्लिय लॊरुत्तिदाऩ् विरुम्बुञ् जेटियैप्
पुल्लिय कैयिऩळ् पोदि तूदॆऩच्
चॊल्लुदऱ् किशैन्दुपिऩ् ऩाणिच् चॊल्ललळ्
ऎल्लयिल् पॊऴुदॆला मिरुन्दु विम्मिऩाळ् 1084

मॆल् इयल् ऒरुत्ति–मृदुस्वभाव की एक; ताऩ् विरुम्पुम् चेटियै–अपनी प्यारी दासी को; पुल्लिय कैयिऩळ्–उसका हाथ पकड़कर; तूतु पोति–दूती बनकर जा; ऎऩ चॊल्लुतऱ्कु इचैन्तु–यह कहने को जाकर; पिऩ् नाणि–फिर लजाकर; चॊल्ललळ्–नहीं कहा; ऎल्लै इल् पॊऴुतु ऎल्लाम्–अन्त न होनेवाली रात भर रहकर; विम्मिताळ्–दुख में बढ़ती रही। १०८४

मृदु स्वभाववाली एक योषिता ने अपनी प्यारी चेरी के हाथ को अपने हाथ में लिया। वह उसे दूती वनाकर भेजना चाहती थी। पर लाज के मारे उसने कुछ नहीं कहा। फिर वह रात भर, जो अन्त होने को नहीं आती-सी लगती थी, दुख मे रही। १०८४

ऊरुपे रन्बिना ळॊरुत्ति तन्नुयिर्, मारिलाक् कादलन् शॆय्है मऱ्ऱॊरु
नाऱुपूङ्गोदैपा ऩविल नाणुवाळ्, वेऱुवे ऱुऱच्चिल मॊऴिवि ळम्बिऩाळ् 1085

ऊरु–उत्तरोत्तर वढ़नेवाले; पेर् अन्पिऩाळ्–वड़े प्रेमवाली; ऑरुत्ति–एक; तन् उयिर्–अपने प्राण (सम); माऱु इला–अविरोधी; कातलन् चॆय्कै–प्रेमी के (दूर रहने के) कृत्य को; मऱ्ऱु ऑरु–दूसरी एक; नाऱु पू कोतै–सुगन्धित पुष्पों से अलंकृत केशवाली को; नविल नाणुवाळ्–कहने से लजाती है; वेऱु वेऱु उऱ–परस्पर विपरीत रहनेवाली; चिल मॊऴि–कुछ वातें; विळम्पिऩाळ्–कहीं। १०८५

एक नायिका का अपने पति से प्रेम उत्तरोत्तर वढ़ता था। वह उसे प्राण मानती थी और पति ने भी कोई अप्रिय या विरोध नहीं किया था। पर अव उसके हाथ नायिका के प्रति अपराध हो गया। (वह अव दूर रह गया था।) उसने उसके सम्वन्ध में अपनी सखी से, जिसके केश पर सुवासित पुष्प थे, कहना तो चाहा, पर लाज ने आकर रोक दिया। इसलिए उसने उससे परस्पर विपरीत कुछ वातें कहीं। १०८५

उरुत्तॆरि तन्मैय दुयिरु मॊन्ऱुतम्, अरुत्तियु मत्तुणै याय नीरिऩार्
ऑरुत्तियु मॊरुवनु मुडलु मॊन्ऱॆऩप्, पॊरुत्तिन रिवरॆऩप् पुल्लि ऩाररो 1086

उरु तॆरि तन्मैयतु–(दो) रूप दिखनेवाली; उयिरुम्–(दोनों की) जान; ऑन्ऱु–एक है; तम् अरुत्तियुम्–(दोनों की) इच्छा भी; अ तुणै आय–उसी प्रकार की; नीरिनार्–ऐसे थे जो; ऑरुत्तियुम् ऑरुवतुम्–एक (नायिका) और एक (नायक); इवर् उटलुम् ऑन्ऱु ॲन–दोनों के शरीर भी एक हों, इसीलिए; पॊरुत्तितर्–सटा लिया; ॲन–ऐसा सव कहें, इस तरह; पुल्लितर्–आलिंगनबद्ध हो गये। १०८६

प्रेमी-प्रेमिका का एक जोड़ा था। दोनों की जानें एक थी, दोनों की इच्छा भी एक थी। अव दोनों ने अपने शरीरों को भी एक वनाया हो, ऐसा वे गाढ़े रूप से आलिंगनवद्ध हो गये। १०८६

वॆंदिर्पॊरु तोळिऩा ळॊरुत्ति वेन्दन्वन्
दॆंदिर्दलुन् दन्मन मॆळ्ळुन्दु मुन्शॆलक्
कदुमॆनक् कैयुऱ वणङ्गि ऩाळ्दु
पुदुमया दलिन्वर् कच्चम् बूत्तदे 1087

वॆतिर् पॊरु तोळिनाळ् ऑरुत्ति–वाँस के समान भुजावाली एक ने; वेन्तन् वन्तु ॲतिर्तलुम्–राजा के आकर प्रकट होते ही; तन् मनम्–उसका मन; मुन्

ऑळुन्तु चॅल्ल–पहले निकलकर चला और; कतुम् ऑन्न–झट; कै उऱ वणङ्किनाळ्–हाथ जोड़कर नमस्कार किया; अतु पुतुमै आतलिन्–वह अनोखा था, इसलिए; अवऱ्कु–उसे; अच्चम् पूत्ततु–भय हुआ। १०८७

बाँस सदृश भुजावाली एक स्त्री ने (जो नशे में थी) पति के आते ही झट हाथ जोड़कर नमस्कार किया। उसका मन तो पहले ही उसके पास पहुँच गया। पर पति क्या जाने? यह काम विचित्र और अभूतपूर्व था। अतः उसे संशय हुआ और उससे एक तरह का भय भी हुआ। (पूत्ततु का अर्थ 'विकसित हुआ' है। वह शब्द विशेष अर्थगर्भित हुआ है।)। १०८७

तुनिवरु नलत्तॉडुम् जॉर्हिन्न् ऱाळॉरु
कुनिवरु नुदलिक्कुक् कॉळ्ुन निन्ऱिये
तनिवरुन् दोळियुन् दायु मॉत्तन
इनियपून् दॅन्ऱलु मिरवु मॅन्बवे 1088

कॉळुनन् इन्ऱि–पति के (पास) न रहने से; तुनि वरुम्–मान के कारण उत्पन्न; नलत्तॉटुम्–सुन्दरता के साथ; चोर्किन्ऱाळ्–जो म्लान है उस; ऑरु कुनि वरु नुतलिक्कु–एक कुटिल ललाटवाली को; इनिय पू तॅन्ऱलुम्–सुखद पुष्पगन्ध भरा मन्द मलयपवन और; इरवुम्–रात; ऍन्प–जो कहे जाते हैं वे; तनि वरु तोळियुम्–क्रमशः (असफल हो) अकेली आनेवाली सखी और; तायुम्–माता के; ऑत्तन–समान थे। १०८८

एक वियोगिनी है। रूठन का सौंदर्य उसमें मिल गया है। उस कुटिल (बंकिम) ललाटवाली के लिए सुखद पुष्पगन्ध भरा मन्द पवन दूत-कार्य पर जाकर असफलता के साथ अकेली आनेवाली सखी-सा बन जाता है और रात माता के समान। (दोनों अब व्यर्थ हैं।)। १०८८

आक्किय कादला ळॉरुत्ति यन्दियिल्
ताक्किय दॅय्वमुण् डॅन्नुन् दन्मैयळ्
नोक्किन णिन्ऱन णुवल लोर्हिलळ्
पोक्किन तूदिनो डुणर्वुम् बोक्किनाळ् 1089

आक्किय कातलाळ् ऑरुत्ति–वर्धित प्रेम की एक ने; पोक्किन–जिसको भेजा; तूतिनॊटु–उस दूत के साथ; उणर्वुम्–अपनी सुध भी; पोक्किनाळ्–भेज दी; अन्तियिल्–संध्या वेला में; ताक्किय तॅय्वम् उण्टु–दुर्देव-(भूत-) ग्रस्त है; ऍन्नुम् तन्मैयळ्–ऐसी स्थिति की हो गई; नोक्किनळ्–देखती हुई; निन्ऱनळ्–खड़ी रही; नुवलल् ओर्किलळ्–बोलने की सुध नहीं रखती थी। १०८९

एक सुन्दरी, अपने पति पर अपार प्रेम रखती थी। अब उसने उसको बहुत बढ़ा दिया। इच्छा दुर्वह हो गई। उसने दूत भेजा। सुधि भी खो दी, मानो वह दूत के साथ भी चली गई। अब वह ऐसा व्यवहार करने लगी, मानो सन्ध्याकाल में भूतग्रस्त हो गई हो। घूरती खड़ी रही और कुछ बोली नहीं जैसे बोलना नहीं जानती थी। १०८९

मऱप्पिलळ् कॊऴुनऩै वरवु नोक्कुवाळ्
पिऱप्पिऩॊ डिऱप्पॆऩप् पॆयरुञ् जिन्दैयाळ्
तुऱप्परु मुहिलिडैत् तोऩ्ऱु मिऩ्ऩॆऩप्
पुऱप्पडुम् बुहुमॊरु पूत्त कॊम्बऩाळ् 1090

ऒरु पूत्त कॊम्पु अऩ्ऩाळ्–एक पुष्प-भरी शाखा सी (स्त्री); कॊऴुनऩै मऱप्पु इलळ्–पति को न भूल पाकर; वरवु नोक्कुवाळ्–आने की राह देख रही थी; पिऱप्पिऩोटु इऱप्पु ऎऩ–जन्म-मरण के समान; पॆयरुम् चिन्तैयाळ्–चक्रवत आनेवाले विचारों की होकर; तुऱप्पु अरु–अनिवार्य; मुकिल् इटै तोऩ्ऱुम्–मेघमध्य चमकनेवाली; मिऩ् ऎऩ–विजली के समान; पुऱप्पटुम्–(पटगृह से) वाहर निकलती और; पुकुम्–घुस जाती। १०९०

बहुपुष्पित लता के समान एक स्त्री की वात देखिए। वह अपने पति को भूल न सककर उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थी। वह विजली के समान जो मेघों से अलग नही हो सकती है, पटगृह के वाहर निकलती, फिर अन्दर घुस जाती —इस तरह करती रही। उसके विचार जन्म-मरण के चक्र के समान बारी-वारी से वदलते रहे। १०९०

ऎऴुदरुङ् गॊङ्गैमे लऩङ्ग ऩॆय्दवम्
बुऴुदवॆम् बुण्गळिल् वळैक्कै यॊऱ्ऱिऩाळ्
अऴुदऩळ् शिरित्तऩ ळऱ्ऱञ् जॊल्ललळ्
तॊऴुदऩ ळॊरुत्तियैत् तूदु वेण्डिये 1091

(एक) ऎऴुत अरु कॊङ्कै मेल्–जिनके चित्र वनाना कठिन है उन स्तनों पर; अऩङ्कऩ् ऎय्त अम्पु–अनंगप्रेषित शर के; उऴुत वॆम् पुण्कळिल्–वनाये गये पीडक व्रणों में; वळै कै ऒऱ्ऱिऩाळ्–कंकणभूषित हाथ धीरे रखे; अऴुतऩळ्–रोयी; चिरित्तऩळ्–हँसी; अऱ्ऱम्–शिकायत; चॊल्ललळ्–नहीं कहती; ऒरुत्तियै–एक सखी के सामने; तूतु वेण्टि–दौत्य की प्रार्थना में; तॊऴुतऩळ्–हाथ जोड़े। १०९१

एक ने अपने वहुत ही सुन्दर, इतने सुन्दर कि उनका चित्रण ही नहीं हो सकता था, स्तनों पर अपने कंकणभूषित हाथ रखे, मानो वह अनंगशर के बने व्रणों को सेंक रही हो। फिर वह हँसी, फिर रोई और विना उलाहना कहे ही उसने अपनी सखी के सामने इस अर्थ में हाथ जोड़े कि दूत वनकर जाओ। १०९१

आर्त्तियु मुऱ्ऱदु मऱिञरुक् कऱ्ऱन्दन्
वार्त्तयि ऩुणर्त्तुदल् वऱिदऩ् ऱॊऩ्ऩ
वेर्त्तऩळ् वॆंदुम्बिऩण् मॆलिन्दु शाय्न्दऩळ्
पार्त्तऩ ळॊरुत्तिदऩ् पाङ्गि ऩाळैये 1092

ऒरुत्ति–एक; उऱ्ऱतुम्–आपवीती वात; आर्त्तियुम्–और व्यथा को; अऱिञर्क्कु–जाननेवालों से; अऱ्ऱम्–शिकायत को; तऩ् वार्त्तैयिऩ्–अपने मुख से

(शब्दों द्वारा); उणर्त्तुतल्–समझाना; वरितु अन्रो–व्यर्थ तो नहीं; अँत–समझकर; वॅतुम्पित्तळ्–व्याकुल हुई; वेर्त्तत्तळ्–स्वेदयुक्त हो गई; मॅलिन्तु चाय्न्तत्तळ्–थककर लेट गई; तन् पाङ्कित्ताळै–अपनी सखी को; पार्त्तत्तळ्–अर्थ भरी दृष्टि से देखा। १०६२

एक वियोगिनी ने सोचा कि जो मेरी या मुझपर बीती बात और मुझे होनेवाली व्यथा जानते है, उन जानकार से उतने शब्दों में अपनी शिकायत को प्रकट करना व्यर्थ है। इसलिए वह मन ही मन कुढ़ी; उसके शरीर से पसीने निकल आये। वह थककर शय्या पर लेट गई। तब उसने अपनी सखी की आँखों में आँखें डालीं। (उसका अर्थ है कि तुम जाकर उन्हें जल्दी बुला लाओ।)। १०९२

तनङ्गळि त्रिळैयवर् तम्मिन् मुम्मडि
कनङ्गळि यिडैयिडै कळिक्कुङ् गळ्वनाय्
मनङ्गळि नुळैन्दवर् मान्दु तेरलै
अनङ्गनु मरुन्दिना नादल् वेण्डुमाल् 1093

अनङ्कनुम्–मन्मथ भी; तनङ्कळिन् इळैयवर् तम्मिन्–(मनोरम) उरोजों की तरुणियों से; मुम्मटि कनम् कळि–तिगुना बड़ा आनन्द; इटै इटै कळिक्कुम्–(उन स्थानों में) अनुभव करता है; कळ्वन् आय्–चोर बनकर; मनङ्कळिल्–मनों के अन्दर; नुळैन्तु–घुसकर; अवर् मान्तु तेरलै–उनसे पीत सुरा को; अरुन्तिनान् आतल् वेण्टुम्–पिया हुआ होना चाहिए। १०६३

जहाँ-जहाँ सुरापायी तरुणियाँ, जिनकी उदासीनता के कारण उनके मनोरम उरोज अपनी सम्पूर्ण मनोहारिता को ले प्रकट दिखाई देते है, सुख-भोग कर रही थीं, वहाँ मन्मथ भी तिगुना आनन्द भोग रहा था। क्या यह इसलिए कि उसने चोर बनकर उनके मन में बैठकर उनसे पीत सुरा को स्वयं भी पिया? वही होना चाहिए। (मद्यपान का नशा और कामकेलि दोनों का निकट सम्बन्ध है।)। १०९३

नरैकम ळलङ्गन् मालै नळिनरुङ् गुञ्जि मैन्दर्
तुरैयरि कलविच् चॅव्वित् तोहैयर् तूशु वीशि
निरैयह लल्हुल् पुल्हुङ् गलन्कळित् तहल नीत्तार्
अरैपरै यनैय नीरा ररुमरैक् काव रोतान् 1094

नरै कमळ्–सुगन्ध छिटकानेवाली; अलङ्कल् मालै–हिलनेवाली मालाधारी; नळि नरु कुञ्चि–(और) घना अच्छा केशवाले; मैन्तर्–वीर तरुण; तुरै अरि–(काम-) शास्त्र शिक्षित; कलवि चॅव्वि–सम्भोग योग्य; तोकैयर्–तरुणियों के; तूचु वीचि–वस्त्र हटाकर; निरै अकल्–(सौंदर्य-) भरा विशाल; अल्कुल् पुल्कुम्–जघन को अलंकृत करनेवाले; कलन्–आभरण को; कळित्तु–निकालकर; अकल नीत्तार्–दूर फेंक दिया; अरै परै अनैय नीरार्–पिटकर बजनेवाले ढोल के स्वभाववाले; अरु मरैक्कु आवरो–मुख्य रहस्यों में साथ रखने योग्य हैं क्या। १०६४

सुवासित मालाधारी तरुण जब कोकशास्त्र के अनुसार उसके लिए योग्य तरुणियों से प्रसंग करते है, तब पहले वे उनके वस्त्र हटा देते हैं। बाद में सुन्दर विशाल नितम्बों को लपेटे रहनेवाले आभरणों को भी उतारकर दूर रख देते है। वे आभरण शब्द करने लगेंगे तो रहस्य, रहस्य नहीं रह जायगा। ढोल के समान मुखर लोग रहस्य के लिए योग्य नहीं हैं। (यह अर्थान्तरन्यास है।)। १०९४

पॊऩ्ऩरुङ् गलऩुऩ् दूशुम् पुऱत्तुळ दुऱत्तल् पोह
नऩ्ऩुद लॊरुत्ति तऩ्बा लहत्तुळ नाणु नीत्ताळ्
उऩ्ऩरुऩ् दुऱवु पूण्ड वुरऩुडै यॊरुव ऩ्ऩॆपॊल्
तऩ्ऩयुऩ् दुऱक्कुऩ् दऩ्मै कामत्ते तङ्गिऱ् ऱऩ्ऱे 1095

नल् नुतल् ऑरुत्ति–सुन्दर ललाटवाली एक; पॊऩ् अरु कलऩुम्–स्वर्ण के अच्छे आभरण; तूचुम्–(और) वस्त्र; पुऱत्तु उळ–बाहर के; तुऱत्तल्–दूर करना; पोक–एक ओर रहे; तऩ् पाल्–अपने पास; अकत्तु उळ–अन्तस्थ; नाणुम् नीत्ताळ्–लाज भी छोड़ दी; उऩ् अरु तुऱवु पूण्ट–जो सोचना भी कठिन है वह संन्यास जिसने लिया है; उरऩ् उटै ऑरुवऩ् पोल्–उस साहसी एक पुरुष के समान; तऩ्तैयुम् तुऱक्कुम् तऩ्मै–अपने (अहंकार) को भी त्यागने का गुण; कामत्तु तङ्किऱ्ऱु अऩ्ऱे–काम में भी होता है न। १०९५

सुन्दर ललाटवाली एक स्त्री ने प्रसंग के अवसर पर स्वर्णाभरण और वस्त्र दूर किये। यह तो बाह्य वस्तुएँ है। उसने अपने अन्तर की बात, लाज को भी त्याग दिया। संन्यासी ही आपा त्याग देते हैं। काम में भी यह आपा छोड़ देने की प्रवृत्ति है, यह बड़ा आश्चर्य है। १०९५

पॊरुवरु मदनऩ् पोल्वा ऩॊरुवऩुम् पूविऩ् मेलत्
तिरुविऩुक् कुवमै शाल्वा ळॊरुत्तियुञ् जेक्कॆप् पोरिल्
ऑरुवरुक् कॊरुवर् तोला रॊत्तऩ रुयिरु मॊऩ्ऱे
इरुवर्द मुणर्वु मॊऩ्ऱे यॆऩ्ऱपो दियावर् वॆल्वार् 1096

पॊरुवु अरु–उपमाहीन; मतऩऩ् पोल्वाऩ्–मदन सम एक; पूविऩ् मेल्–(कमल-) पुष्प पर विराजनेवाली; अ तिरुविनक्कु–उस श्रीदेवी की; उवमै–उपमा; चाल्वाळ् ऑरुत्तियुम्–बन सकनेवाली एक स्त्री; चेक्कै पोरिल्–रतिसमर में; ऑरुवरुक्कु ऑरुवर् तोलार–परस्पर नहीं हारे; ऑत्तऩर्–समान रहे; इरुवर् तम् उयिरुम् ऑऩ्ऱे–दोनों की जानें एक हैं; उणर्वुम् ऑऩ्ऱे–मनोभाव एक है; ऍऩ्ऱ पोतु–ऐसी स्थिति में; वॆल्वार् यावर्–जीतेंगे कौन। १०९६

स्वोपम सुन्दर और मन्मथ तुल्य एक पुरुष और कमला तुल्य एक स्त्री रतिसमर में लगे। दोनों में एक भी नहीं हारा; दोनों समान रहे। हाँ, दोनों की जानें एक हैं; मनोभाव एक हैं। फिर जीतेगा कौन ?। १०९६

कौंळ्ळैप्पोर् वाट्क णाळङ् गौरुत्तियोर् कुमर तन्ऩान्
वळ्ळत्ता रहलन् दन्ऩै मलर्क्कैयान् मऱैप्प नोक्कि
उळ्ळत्ता रुयिर ऩाण्मे लुदैपडु मॆन्ऱु नीर्नुङ्
गळ्ळत्ताऱ् पुदैत्तो रॆन्ऩा मुन्ऩैयिऱ् कन्ऩऱ मिक्काळ् 1097

अङ्कु–वहाँ; कौंळ्ळै पोर्–जानें लूटनेवाले युद्ध में प्रयुक्त; वाळ् कण्णाळ्–तलवार सदृश आँखोंवाली; ओर् कुमरन् अन्ऩान्–एक कार्तिकेय सम (उसके नायक) के; वळ्ळम्–पुष्ट; तार् अकलम् तन्ऩै–(अपने) मालाधारी वक्षस्थल को; मलर् कैयाल् मऱैप्प–पुष्प-सम हाथों से ढँक लेने पर; नोक्कि–देखकर; उळ्ळत्तु–दिल में; आर–रहनेवाली; उयिर् अन्ऩाळ् मेल्–प्राण सम (अन्य नायिका) पर; उतै पडुम् ऍन्ऱु–लात पड़ेगी, समझकर; नुम् कळ्ळत्ताल्–अपनी प्रवंचना से; नीर् पुतैत्तीर्–तुमने छिपाया; ऍन्ऩा–कहकर; मुन्ऩैयिन्–पहले से भी अधिक; कन्ऩऱ मिक्काळ्–क्रोधशील हुई। १०९७

उधर युद्ध में वीरों को बड़ी संख्या में मारनेवाली तलवार के समान आँखों की एक नायिका ने रूठकर अपने प्रेमी के विशाल सुन्दर वक्षस्थल पर लात मारी। उसने अपने कमल-करों से वक्ष को छिपा लिया। यह देखकर नायिका को पहले से अधिक रोष आ गया। उसने उलाहना किया कि तुम्हारे हृदय में चोर नायिका है। उस पर लात पड़ेगी, उसे रोकना चाहिए, इसीसे तुमने अपने वक्ष को ढँक लिया। १०९७

पालुळ पवळच् चॆव्वायप् पणैमुलै निहर्त्त मॆन्ऱोळ्
वेलुळ नोक्कि ऩाळोर् मॆल्लियल् वेलैयन्ऩ
मालुळ शिन्दै यानोर् मळैयुळ तडक्कै याऩ्कु
मेलुळ वरम्बै माद रॆन्बदोर् विरुप्पै यीन्दाळ् 1098

पाल् उळ—दुग्धरुचियुक्त; पवळम् चॆम्मै वाय्–प्रवाल सम लाल मुख; पणै मुलै–पीन स्तन; निकर्त्त–परस्पर सम; मॆल् तोळ्–(स्पर्श-) मृदु स्कन्ध; वेल् उळ–भाले का सा कृत्य करनेवाली; नोक्किनाळ्–आँखों की; ओर् मॆल् इयल्–एक मृदु स्वभाववाली ने; वेलै अन्ऩ–सागर के समान; माल् उळ–(बड़े) प्रेम के; चिन्तैयान्–मन के; ओर् मळै उळ–एक मेघ समान; तट कैयान्कु–(दानशील) विशाल हाथवाले को; मेल् उळ–स्वर्गवासिनी; अरम्पैमातर् ऍन्पतु ओर् विरुप्पै–अप्सरा ही माननेयोग्य विशिष्ट प्रेम-सुख; ईन्ताळ्–दिया। १०९८

एक नायिका अति सुन्दर थी। उसके लाल अधरों में दूध का-सा स्वाद था; स्तन पीन थे। कंधे परस्पर सम थे और स्पर्श करने में मृदु और सुखद थे। उसकी आँखें भाले का-सा काम करनेवाली थीं। वह रति-कला चतुर भी थी। उसका प्रेमी सागर-सम अत्यधिक राग रखता था। वह मेघ-सम दानशील हाथ वाला था। उस नायिका ने उसे इतनी और ऐसी तृप्ति दी कि वह समझने लगा कि यह अप्सरा है!

(नायक की दानशीलता और अप्सरा की बात से अनुमान किया जा सकता है कि वह वार वनिता है) । १०९८

पुत्तत्तुऱै मयिलन्नाळ् कॊळ्ळुनन् पॊय्युरै, निनैत्तन्नळ् शोरुवा ळॊरुत्ति नीडिय
शिन्नत्तिनैक् कादलन् शेक्कैप् पोरिडै, मन्नत्तुऱै कादले वाहै कॊण्डदे 1099

कॊळ्ळुनन्–पति के; पॊय् उरै नित्तैत्तन्नळ्–असत्य भाषण सोचकर; चीरुवाळ्–गुस्सा करनेवाली; पुत्तत्तु उऱै–पर्वत के क्षेत्रों के वासी; मयिल् अन्नाळ्–मोर के समान रहनेवाली; ओरुत्ति–एक के; नीटिय चित्तत्तित्तै–दीर्घ क्रोध को; कातलन् चेक्कै पोर् इटै–प्रेमी पति के साथ प्रसंग-कार्य के अवसर पर; मन्नत्तु उऱै कातले–मन के प्रेम ने ही; वाकै कॊण्टतु–जीत लिया । १०९९

पर्वत के प्रदेशों में रहनेवाले मोर की-सी छटावाली एक नायिका को अपने प्रेमी के झूठ बोलने से गुस्सा हुआ। लेकिन उसके मन में प्रेमी के प्रति और उससे मिलने में बड़ा अनुराग था। उसी ने उसके दीर्घ क्रोध को जीत लिया। मिलनेच्छा क्रोध पर हावी हो गयी। १०९९

कॊलैयुरु वमैन्दॆनक् कॊडिय नाट्टत्तोर्
कलैयुरु वल्हुलाळ् कणवऩ् पुल्हुवाळ्
शिलैयुरु वळितरच् चिऱन्द मार्बिऱ्ऱन्
मुलैयुरु वित्तवॆन्न मुदुहै नोक्कित्ताळ् 1100

कॊलै–वधकर्म ने; उरु अमैन्तत्तु ॲन्न–रूप धर लिया हो ऐसा; कॊटिय नाट्टत्तु–भयंकर नेत्रों के साथ; ओर् कलै उरुवु अल्कुलाळ्–वस्त्र के बाहर दिखनेवाले जघन की एक ने; कणवन् पुल्कुवाळ्–पति का आलिंगन करके; चिलै उरु–पर्वत की सौम्यता; अळि तर–हराते हुए; चिऱन्त मार्पिल्–उत्कृष्ट हुए (उसके) वक्ष में; तन् मुलै–अपने स्तन; उरुवित्त ॲन्न–घुस आये, यह जानने के लिए; मुतुकै नोक्कित्ताळ्–पीठ को देखा। ११००

एक नायिका के अंग बड़े ही सुगठित और सुघड़ थे। आँखें थीं जो मृत्यु का ही दूसरा रूप था। वह महीन वस्त्र पहने थी जिसके द्वारा जघनप्रदेश बाहर दिखाई देता था। (वह अपने अंगों के विशेष आकर्षण से अभिज्ञ भी थी। उसे उन पर गर्व था।) उसने अपने पति का सामने से आलिंगन किया। उसके स्तन उसके प्रेमी के पर्वत विजयी, सुगठित वक्ष में घुसे से लगे। उसने प्रेमी की पीठ पर यह जानने को देखा कि क्या वे बाहर दिखाई देते है। ११००

कुङ्गुम मुदिर्न्दन कोदै शोर्न्दन, शङ्गिन मुरन्ऱन कलैयुञ् जारिन
पॊङ्गित शिलम्बुहळ् पूश लिट्टन, मङ्गैय रिळनल मैन्द रुण्णवे 1101

मङ्कैयर्–वालाओं के; इळनलम्–यौवनरस को; मैन्तर् उणण–जब पट्ठों ने

स्वादन किया; कुङ्कुमम्–तब कुंकुम; उतिर्न्तत–चू गये; कोतै चोर्न्तत–केश बिखरे; चङ्कु इनन् मुरन्रत–शंखकंकण क्वणित हुये; कलैयुम् चारित–वस्त्र खिसक गये; चिलम्पुकळ्–नूपुरों ने; पोङ्कित पूचल् इट्टत–अत्यधिक शब्द किया। ११०१

जब हृष्ट-पुष्ट तरुण लोग तरुणियों के यौवन-सुख का भोग करते हैं तब क्या-क्या होते हैं, इनका सम्मिलित स्वाभाविक चित्रण है। कुंकुम की चित्रकारी मिट जाती है और कुंकुम झर जाता है; केश बिखर जाते हैं। शंख-कंकण, चूड़ियाँ आदि शब्द करते हैं। वस्त्र हट जाते हैं। नूपुर अत्यधिक स्वर उठाते हैं। ११०१

तुनियुरु पुलवियैक् कादर् चूळ्शुडर्
पनियॅनत् तुडैत्तलुम् बदैक्कुज् शिन्दैयाल्
पुनैयिळै यॉरुमयिल् पॉय्यु रङ्गुवाळ्
कनवॅनु नलत्तिनार् कणवर् पुल्लिनाळ् 1102

पुनै इळै ऑरु मयिल्–शोभा देनेवाले आभरणों से भूषित एक मयूराभा के; तुनि उरु पुलवियै–(पति के लिए) त्रासक रूठन को; कातल्–कामेच्छा रूपी; चूळ् चुटर्–किरणमाली; पनि अन–ओस को जैसे (अदृश्य कर देता है); तुटैत्तलुम्–पोंछ लेने पर (दूर करने पर); पतैक्कुम् चिन्तैयाल्–उतावली से भरे मन से; पॉय् उरङ्कुवाळ्–झूठी निद्रा वाली; कनवु ॲनुम् नलत्तिनाल्–स्वप्न के अच्छे बहाने से; कणवन् पुल्लिनाळ्–पति का आलिंगन कर लिया। ११०२

शोभा देनेवाले आभरण-धारिणी और मयूर छटावाली एक स्त्री की, पति को त्रास देनेवाली रूठन रूपी ओस को प्रसंगलालसा रूपी किरणमाली ने दूर कर दिया। यानी उसके मन में रति की तीव्र इच्छा जाग उठी। वह झूठी नींद सो रही थी, सोने का बहाना कर रही थी। अब उचित स्वप्न का अच्छा बहाना किया और अपने पति को हाथों के पाश में ले लिया। ११०२

वट्टवाण् मुहत्तॉरु मयिलु मन्ननुम्
किट्टिय पोदुडल् किडैक्कप् पुल्लिनार्
विट्टिलर् कङ्गुलिन् विडिवु कण्डिलर्
ऑट्टिय वुडल्पिरिप् पुणर्हि लामैयाल् 1103

वट्टम्–गोल; वाळ् मुकत्तु–उज्ज्वल मुखी; ऑरु मयिलुम्–एक मयूराभा स्त्री और; मन्नतुम्–एक राजा (नायक); किट्टिय पोतु–जब (प्रसंग में) मिले; उटल् किटैक्क–शरीर को मिलाते हुए; पुल्लिनार्–परस्पर बाहुपाश में बाँध लिया; ऑट्टिय उटल्–जुड़े हुए शरीरों को; पिरिप्पु–अलग करना; उणर्किलामैयाल्–न (जानने) चाहने के कारण; विट्टिलर्–(परिरम्भण को) नहीं छोड़ा; कङ्कुलिन् विटिवु–रात का अन्त होना भी; कण्टिलर्–न जाना। ११०३

गोल आकार का और उज्ज्वल मुख और मयूर की आभा वाली एक

नायिका और राजा नायक मिले। दोनो ने अपने दो शरीरों को परिरंभण में (मानो) एक बना लिया। जुड़े उनको अलग करने की सुधि ही नहीं हुयी। उसी स्थिति में रात बीत गयी। वह भी वे जान नहीं पाये। ११०३

अरुङ्गळि मालूहळि ऱ्ऱैय वीरर्क्कुम्
करुङ्गुळऩ् महळिर्क्कुङ् गलविप् पूशलाल्
नॆरुङ्गिय वनमुलै शुमक्क नेर्हला
मरुङ्गॆनत् तेय्न्ददम् मालैक् कङ्गुले 1104

अरु कळि–उन्मत्त; माल् कळिऱ्ऱु अऩैय–मस्ती भरे हाथी के समान; वीरर्क्कुम्–वीरों में; करु कुळल् मकळिर्क्कुम्–और काले केशवाली स्त्रियों में; कलवि पूचलाल–(हुए) प्रणय कलह में ही; अ मालै कङ्कुल्–वह उपयुक्त रात; नॆरुङ्किय वनम् मुलै–सटे हुए सुन्दर उरोजों को; चुमक्क नेर्कला–वहन न कर सकनेवाली; मरुङ्कु ऍऩ–कमर के समान; तेय्न्ततु–क्षीण-हीन हुई। ११०४

मुदित, मद-मत्त गज तुल्य वीरों और काले केशवाली उनकी प्रेयसियों के लिए प्रसंग के युद्ध (उलझन) में ही रात ऐसे क्षीण और हीन हो गयी जैसे स्त्रियों की कमर सटे हुए सुन्दर उरोजों का भार वहन कर न सकने से छीज जाती है। ११०४

कडैयुऱ नन्नॆऱि काण्गि लादवर्क्
किडैयुऱु तिरुवॆऩ विन्दु नन्दिऩाऩ्
पडर्दिरैक् करुङ्गडर् परमऩ् मार्बिडैच्
चुडर्मणिक् करशॆऩ विरवि तोऩ्ऱिऩाऩ् 1105

नल् नॆऱि–पुण्य कार्य; कटै उऱ–अन्त तक; काण्किलातवर्क्कु–न करनेवालों की; इटै उऱु–मध्य में मिली; तिरु ऍऩ–सम्पत्ति की तरह; इन्तु नन्तिऩाऩ्–चन्द्र अदृश्य हुआ; परमऩ् मार्पु इटै–परमेश्वर श्रीविष्णु के वक्ष-मध्य; चुटर्–भासमान; मणिक्कु अरचु ऍऩ–मणिराज (कौस्तुभ) के समान; इरवि–रवि; पटर् तिरै–फैलनेवाली तरंगों के; करु कटल्–नीले सागर में; तोऩ्ऱिऩाऩ्–उदय हुआ। ११०५

आखिर तक जो पुण्य-कार्य नहीं करते उनकी, मध्य में प्राप्त संपत्ति जैसे मिटकर लुप्त हो जाती है वैसे ही इन्दु भी अस्त हो गया। परब्रह्म श्रीविष्णु के वक्ष में भासमान रहनेवाले मणियों में श्रेष्ठ कौस्तुभमणि के समान सूर्य विस्तृत तरंगोंवाले नीले सागर में से उग आये। (चन्द्र घटता और बढ़ता है और उसका प्रकाश प्रतिफलित प्रकाश है। इस तरह अधूरे पुण्यकृतों की संपत्ति अपूर्ण है।)। ११०५

18. ऍदिर्कोळ् पडलम् (अगवानी पटल)

अडार्नॅऱि यडैदल् शॅल्ला वरुमऱै यरैन्द नीदि
विडार्नॅऱिप् पुलमैच् चॅङ्गोल् वॅण्कुडै वेन्दर् वेन्दन्
पडामुह मलैयिऱ् ऱोन्ऱिप् परुवमुऱ् ऱरुवि नल्हुम्
कडानिऱै यारु पायुङ् कडलोडुङ् गङ्गै शेर्न्दान् 1106

अटा नॅऱि अटैतल् चॅल्ला—धर्म-विरुद्ध मार्ग पर न चलनेवाले; अरु मऱै अरैन्त—असाधारण (श्रेष्ठ) वेदों में उक्त; नीति विटानॅऱि—नीतिसम्मत साधु व्यवहार; पुलमै—विद्वत्ता; चॅङ्कोल्—निर्दोष राज्यशासन; वॅण् कुटै—श्वेतछत्र; वेन्तर् वेन्तन्—(इनके) राजाधिराज; पटाम् मुकम्—मुखपट्टधारी (हाथियों के); मलैयिल् तोन्ऱि—पर्वतों पर उत्पन्न होकर; परुवम् उऱ्ऱ—प्रवाहस्थिति को प्राप्त; अरुवि नल्कुम्—नदियाँ बनकर आनेवाली; कटाम् निऱै—मदनीर भरी; आऱु पायुम्—नदियाँ जिसमें आकर मिलती है उस; कटलोटुम्—(सेना-)सागर के साथ; कङ्कै चेर्न्तान्—गंगातट पर पहुँचे। ११०६

राजाधिराज दशरथ की सेना गंगा नदी के तट पर आ पहुँची। दशरथ धर्मविरुद्ध मार्ग पर न चलनेवाले, वेदोक्त नीति-परायण, शास्त्र ज्ञानी, सुशासक और श्वेतछत्रधारी थे। उनकी सेना सागर-सम थी तो मुखपट्ट पहने हुए हाथीरूपी पर्वतों से निकलकर मदजल की धाराएँ जो मिलकर नदियों में बढ़ गयीं वे नदियाँ थीं जो इस सेना-सागर में आकर संगमित हुयी। (इसमें दो ध्यान योग्य बातें है— सेना को सागर कहने पर नदियों की योजना और सागर का नदी से जाकर मिलना।)। ११०६

कप्पुडै नावि नाह रुलहमुङ् गण्णिऱ् ऱोन्ऱत्
तुप्पुडै मणलिऱ् ऱाहिक् कङ्गैनीर् शुरुङ्गिक् काट्ट
अप्पुडै अनिक वेलै यकन्पुनन् मुहन्दु मान्द
उप्पुडैक् कडलुन् दॅण्णी रुण्णशै युऱ्ऱ दन्ऱे 1107

कङ्कै—गंगानदी; कप्पु उटैय—दो नोक वाली; नाविन्—जीभ के; नाकर् उलकमुम्—नागों का लोक भी; कण्णिल् तोन्ऱ—आँखों में दिखे, ऐसा; नीर् चुरुङ्कि—जल रिक्त होकर; तुप्पु उटै(य)—शुद्ध; मणलिऱ्ऱु आकि—बालू वाली होकर; काट्ट—दिखे, ऐसा; अ पुटै अनिकम् वेलै—वहाँ जो आया वह सेना-सागर; अकन् पुनल्—विपुल जल को; मुकन्तु मान्त—उठाकर पी गया इससे; उप्पु उटै(य) कटलुम्—नमकीन सागर भी; अन्ऱु—उस दिन; तॅळ् नीर् उण्—शुद्ध जल पीने की; नचै उऱ्ऱतु—इच्छा करने लगा। ११०७

सेना के वीरों ने गंगा के जल को लेकर पान कर लिया तो नदी ही सूख गयी। द्विरसना सर्पो का पाताललोक नज़र आने लगा। तल के शुद्ध बालू भी दिखाई देने लगे। नमकीन समुद्र भी शुद्ध जल पीने को तरसने लग गया। ११०७

आण्डुनिन् ऍ़ळुन्दु पोहि यहन्पणै मिदिलै यॆ़न्नुम्
ईण्डुनीर् नहरिऩ् पाङ्ग रिरुनिलक् किऴव नॆ़य्दत्
ताण्डुमाप् पुरवित् तानैत् तण्णळिच् चनह नॆ़न्नुम्
तूण्डरु वयिरत् तोळान् शॆ़य्ददु शॊ़ल्ल लुऱ्ऱाम् 1108

इरु निलम् किऴवऩ्–विशाल भूमि के स्वामी; आण्टु निऩ्ऱु ऍ़ळुन्तु–वहाँ से निकलकर; पोकि–जाकर; अकऩ् पणै–विस्तृत खेतों और बागों से आवृत; मितिलै ऍ़न्नुम्–मिथिला नाम की; ईण्टु नीर्–जल समृद्ध; नकरिऩ् पाङ्कर्–नगर के निकट; ऍ़य्त–पहुँचे, तब; ताण्टु मा पुरवि–सरपट दौड़नेवाले बड़े-बड़े अश्वों की सेना; तण् अळि–और शीतल करुणा के स्वामी; चनकऩ् ऍ़न्नुम्–जनक नाम के; तूण् तरु वयिरम् तोळाऩ्–(लौह-) स्तंभ सदृश कठोर कंधोंवाले का; चॆ़य्ततु–कृत्य; चॊ़ल्लल् उऱ्ऱाम्–कहेंगे। ११०८

विशाल भूमि के पति चक्रवर्ती दशरथ वहाँ से निकलकर अपनी विपुल सेना के साथ मिथिला नगर के पास पहुँचे। वह नगर जल-समृद्ध था और उसके चारों ओर खेतों और बागों की उर्वर भूमि थी। तब सरपट दौड़नेवाले अश्वों की सेना के स्वामी, शीतल करुणानिधान, लौहस्तम्भ समान बाहुवाले जनक नामक महाराज ने क्या किया उसका वर्णन करेंगे। ११०८

वन्दन नरश नॆ़न्न मनत्तॆ़ळु मुवहै पॊङ्गक्
कन्दडु कळिऱुन् दॆ़रुङ् गलिनमाक् कडलुञ् चूऴच्
चन्दिर निरवि तन्नैच् चार्वदोर् तन्मै तोन्ऱ
इन्दिर तिरुवन् ऱन्नै यॆ़दिर्हॊऴ्वा नॆ़ळुन्दु वन्दान् 1109

अरचन् वन्तनऩ् ऍ़न्न–राजा आये, यह (चरों ने) कहा, तब; मनत्तु ऍ़ळुम्–मन में उठा; उवकै–आनन्द; पॊङ्क–उमड़ आया; कन्तु अटि–खूँटा तोड़नेवाले; कळिऱुम्–गजों और; तेरुम्–रथों और; कलिनम् मा कटलुम्–बागडोर वाले अश्वों की सेना के सागर के; चूऴ–घेरते आते; चन्तिरन्–चन्द्र; इरवि तन्नै–सूर्य के पास; चार्वतु ओर् तन्मै–गया, यह विचित्र हालत; तोन्ऱ–(हो गई हो ऐसा) दृश्य पैदा करते हुए; इन्तिर तिरुवन् तन्नै–इन्द्रतुल्य लक्ष्मीवान (दशरथ) को; ऍ़तिर् कॊ़ऴ्वाऩ्–सामने मिलकर ले आने के लिए; ऍ़ळुन्तु वन्ताऩ्–निकलकर आये। ११०९

'राजाधिराज दशरथ आ गये,' यह समाचार चरो ने राजा जनक को दिया। राजा के मन में अपार आनन्द उमड़ आया। इन्द्र समान श्रीमंत चक्रवर्ती के स्वागत के लिए रवाना हो गये। तब उनके साथ खूँटे तोड़नेवाले गज, रथ और बागडोर सहित अश्वों की सेना के सागर चले। उनका जाना ऐसा एक अनोखा और अप्राप्य दृश्य उपस्थित करता था जिसमें चन्द्र सूर्य से मिलने चले। (दशरथ सूर्यकुल के थे और जनक चन्द्रकुल के।)। ११०९

गङ्गनीर् नाडन् शेत्तै मऱ्ऱुळ कडलूह ऑल्लाम्
शङ्गिन्न मार्प्प वन्दु शार्वन्न पोलच् चारप्
पङ्गयत् तिरुवैत् तन्द पाऱ्कड लॅदिर्व दॆपोल्
मङ्गैयैप् पयन्द मन्नन् शेत्तैवन् दॅदिर्न्द दन्ऱे 1110

कङ्कै नीर् नाटन्–गंगाजल सिंचित देश के पति की; चेत्तै–सेनाएँ; मऱ्ऱु उळ कटल्कळ् ऍल्लाम्–(क्षीरसागर से) इतर सागर सब; चङ्कु इन्नम् आर्प्प–शंखगणों के नाद करते; वन्तु चार्वन्न पोल्–आ मिले, ऐसा; चार–आ रही थीं, तब; पङ्कयम् तिरुवै–कमला श्रीलक्ष्मी का; तन्त पाल्कटल्–जनक क्षीरसागर; ऍतिर्वतु पोल्–सामने आ मिले, जैसा; मङ्कैयै पयन्त–(सीता) देवी के जनक; मन्नन् चेत्तै–महाराज की सेना; वन्तु ऍतिर्न्ततु–आ मिली। १११०

उनकी सेनाओं का आना कैसा था।, दशरथ की विपुल सेनाएँ लवण, इक्षु, सुरा, घृत, दधि और जल के छः सागर शंखध्वनि के साथ आ रहे हों, ऐसी आ रही थीं। देवी सीता के जनक, जनक महाराज की सेना, श्रीलक्ष्मी देवी के जनक, क्षीरसागर के समान आकर उनसे मिली। १११०

इलैकुला वयिलिन्ना न्निकमे ऴॆन्नवुलाय्
निलैकुला महरनीर् नॅडियमा कडलॅलाम्
अलहिन्मा कळिऱ्तेर् पुरविया ऴॆन्नविराय्
उलहॆला निमिर्वदे पॊरुवुमो रुवमये 1111

इलै कुलावु–पत्र के आकार का; अयिलिन्नान्–भालाधारी की; अनिकम्–सेना; ऍऴु ऍन्न–सातवें (क्षीर-) सागर के समान; उलाय्–आयी, तो; निलै कुलाम्–स्थायी रूप से रहनेवाले; मकरम्–मकरों से भरे; नीर् नॅटिय–विपुल जलराशि के; मा कटल् ऍल्लाम्–बड़े समुद्र, सभी (सातों समुद्र); अलकु इल्–अकूत; मा कळिऱ् ऍन्न–बड़े गजों; तेर् ऍन्न–रथों; पुरवि–अश्वों; आळ् ऍन्न–और पदातियों का रूप लेकर; विराय्–मिलकर; उलकु ऍलाम् निमिर्वते–संसार भर में आ व्याप्त हो गये, यही; पॊरुवुम् ओर् उवमै–योग्य एक उपमा है। ११११

पत्र के आकार के नोक वाले भाले के धारक जनक की सेना सातवें सागर के समान आकर मिल गयी तो सारी सेना सम्मिलित सभी (सातों) सागरों के समान लगी, जो असंख्यक गजों, रथों, अश्वों और पदातियों का रूप धारणकर संसार भर में व्याप्त हो गई। यही उपमा उपयुक्त हो सकती है। ११११

तॊङ्गल्वॅण् कुडैतॊहैप् पिच्चमुट् पडविराय्
ऑङ्गुम्विण् पुदैदरप् पहन्मऱैन् दिरुळॆळप्
पङ्गयज् जॆय्यवुम् वॆळियवुम् पलपडत्
तङ्गुदा मरैयुडैक् कान्मे शालुमे 1112

तोंङ्कल्-मालायुक्त; वॆण् कुटै-श्वेतछत्र; तोकै पिच्चम् उट्पट-झुण्डों के मोरपंख छत्र, पंखे, चामर मिलाकर; विराय्-सबने मिलकर; ॲङ्कुम् विण् पुतै तर-सर्वत्र आकाश को छिपा दिया, तब; पकल् मर्ैन्तु-सूर्य की धूप छिप गई; इरुळ् ॲळ्-अन्धकार छाया; चॆय्यवुम् वॆळियवम्-लाल और श्वेत; पङ्कयम्-कमलों के; पल पट तङ्कु-अत्यधिक भरे; तामरै उटै कानम्-कमल-कानन; चालुम-के समान था। १११२

मालाओ से अलंकृत श्वेतछत्र, मोरपंखछत्र, पंखे, चामर आदि जो उस सेना में अत्यधिक संख्या में थे, सर्वत्र आकाश को ढँकते रहे। तब धूप छिप गयी और अन्धेरा फैल गया। जहाँ सेना रही वह स्थान लाल और श्वेत कमलों से भरे कमल-कानन के समान लगा। १११२

कॊडियुळा ळोतनिक् कुडैयुळा ळोकुलप्
पडियुळा ळोकडऱ् पडैयुळा ळोपहर्
मडियिला वरशिऩाऩ् मार्बुळा ळोवळर्
मुडियुळा ळोतॆरिन् दुणर्हिला मुळरियाळ् 1113

तॆरिन्तु उणर्किला-सोचकर न समझी जा सकी जो; मुळरियाळ्-वह जयश्री; पकर् मटि इला-(बुरी बात) कहलानेवाला आलस्य जिनमें नहीं था; अरचिताऩ्-उन शासक के; मार्पु उळाळो-वक्ष पर रहती हैं; वळर् मुटि उळाळो-उन्नत किरीट में है; कॊटि उळाळो-विजय पताका पर हैं; तनि कुटै उळाळो-एक-छत्र पर हैं; कटल् पटै उळाळो-सागर-सम सेना में हैं; कुलम् पटि उळाळो-कुल परम्परा में है। १११३

दशरथ की विजयश्री किस पर अवलंबित है, यह जानकर बताना कठिन है। क्या वह बड़ों से त्याज्य गुण जो कहा गया है उस आलस्य से दूर रहनेवाले दशरथ के वक्ष पर है; गौरवयुक्त किरीट पर; विजयध्वजा पर; अप्रतिम श्वेतछत्र पर; सागर-सम सेना पर; या उनकी कुल परम्परा पर ? (विजय के सारे प्रतीक उनके पास है। वे सब प्रकारों से विजयी है।)। १११३

वार्मुहङ् गॆळुवुकॊङ् गयर्करुङ् गुळलिऩ्वण्
डेर्मुळङ् गरवमे ळिशैमुळङ् गरवमे
तेर्मुळङ् गरवम्वॆण् डिरैमुळङ् गरवमे
कार्मुळङ् गरवम्वॆङ् गरिमुळङ् गरवमे 1114

वार् मुकम्-अँगिया में; कॆळुवु-भरपूर; कॊङ्कैयर्-स्तनोंवाली (स्त्रियों) के; करु कुळलिऩ्-काले केशों पर (मँडरानेवाले); वण्टु-भ्रमर; एर् मुळङ्कु अरवम्-जो करते है वह मधुर रव; एळ् इचै मुळङ्कु अरवमे-सप्तस्वर वाले संगीत का ही नाद है; तेर् मुळङ्कु अरवम्-रथों का बड़ा शोर; वॆण् तिरै मुळङ्कु अरवमे-श्वेत तरंगोंवाले समुद्र का बड़ा गर्जन ही है; वॆम् करि मुळङ्कु अरवम्-भयंकर गजों की चिंघाड़ का शब्द; कार् मुळङ्कु अरवमे-मेघगर्जन का शोर है। १११४

अँगियों के अन्दर मचलनेवाले स्तनों की स्त्रियों के केशों पर भ्रमर जो नाद कर रहे थे वह सप्तस्वरों पर आधारित संगीत के रव से बढ़कर था। रथों के शोर (झाग के कारण) श्वेत (दिखनेवाली) तरंगों के सागर के गर्जन ही थे। भयंकर गजों की चिंघाड़ मेघ-गर्जन ही थी। (दशरथ की सेना में ये शोर उठे।)। १११४

शूळ्मा कडल्हळुन् दिडर्पडत् तुहडवळ्न्
देंळ्पा रहमुमुर् रुळदॅलर् कॅळिदरो
आळिया नुलहळन् दन्रुताळ् शॅन्रवप्
पूळैयू डॅपॉडित् तप्पुरम् पोर्त्तते 1115

तुकळ्–धूल; चळुम्–(भूलोक को) घेरते रहे; मा कटल्कळुम–बड़े सागरों को भी; तिटर पट–मैदान बनाकर; तवळ्न्तु–फैली, इसलिए; एळु पार् अकमुम्–सप्तदीप यह भूलोक; उऱ्ऱु उळतु–बराबर हो गया; अॅतल् कु–यह कहने को; अॅळितु–आसान है; आळियान्–चक्रधर श्रीविष्णु ने; उलकु अळन्त अन्ऱु–(जब) लोकों को नापा उस दिन; ताळ् चॅन्ऱ–चरण (जिससे) गया; पूळै ऊटे–उस छेद के द्वारा; पॉटित्तु–ऊपर जाकर; अ पुऱम् पोर्त्ततु–अण्डों के उस ओर भी व्याप गयी थी। १११५

उनकी सेना के कारण जो धूल उठी उसने समुद्रों को मैदान बना दिया। इसलिए सातों द्वीप मिल गये। भूतल बराबर स्थल बन गया। यह कोई असम्भव या कठिन बात नहीं है। उस दिन, जब चक्रधर श्रीविष्णु ने त्रिविक्रमदेव बनकर लोकों को नापा था, उनका पैर अंड को भेदकर ऊपर गया। तब जो छेद बना उससे होकर धूल ऊपर गयी और अण्ड के बाहर के सब स्थलों में व्याप गयी। धूल, जिसने उस दिन उतना किया आज इतना नहीं कर सकेगी ?। १११५

मन्ऩॅडुङ् कुडैमिडैन् दडैयवान् मऱैदरत्
तुन्निडुन् निळल्वळङ् गिरुडुरप् परिदरो
पोन्ऩॅडुम् पूणिडुम् पुत्तमणिक् कुलमॅलाम्
मिन्निडुम् विल्लिडुम् वॅयिलिडुन् निलवॊडे 1116

पॊन् नॅटु पूण्–स्वर्ण-निर्मित श्रेष्ठ आभरण; इटुम्–(सेना में रहनेवालों के) पहने हुए; पुत्तै मणि कुलम्–शोभित करनेवाले रत्नसमूह; अॅलाम्–सब एक साथ; मिन् इटुम्–बिजली के समान चमकते हैं; विल् इटुम्–इन्द्रधनुष के समान कांति देते हैं; निलवॊटु वॅयिल् इटुम्–चाँदनी और धूप (सा प्रकाश) बिखेरते हैं; मन् नॅटु कुटै मिटैन्तु–अधिक (संख्या में) बड़े-बड़े छत्र मिलकर; वान् अटैय मऱै तर–आकाश भर को छिपा देते हैं, इसलिए; तुन्निटुम्–घने रूप से फैली हुई; निळल् वळङ्कुम्–छाया से उत्पन्न; इरुळ्–अन्धकार को; तुरप्पु अरितु–दूर करना कठिन है। १११६

उस सेना के लोगों के स्वर्णाभरण और रत्नहारों ने बिजली के समान

और इन्द्रधनुष के समान कांति बिखेरी। वे चाँदनी के समान भी प्रकाश देते थे, धूप के समान भी। इतना होते हुए भी, बड़े-बड़े छत्रों की विपुल राशि अपनी छाया के कारण जो अन्धेरा उत्पन्न कर रही थी वह अन्धेरा दूर करना कठिन रहा। १११६

ताविऩ्मऩ् ऩवर्पिराऩ् वरमुरट् चऩ्ऩहनाम्
एवरुञ् जिलैयिना ऩॆदिर्वरु नॆऱियॆलाम्
तूवुतण् शुण्णमुङ् गऩहनुण् डूळियुम्
पूविऩ्मॆऩ् ऱादुहुम् पॊडियुमे पॊडियॆलाम् 1117

ता इल्–अकलंक; मऩ्ऩवर् पिराऩ्–राजाधिराज; वर–आये, तब; मुरण्–बलवान; चऩ्ऩकऩ् आम्–जनक जो; ए वरुम् चिलैयिऩाऩ्–शरप्रेरक धनुर्धर हैं, उनके; ऍतिर् वरुम् नॆऱि ऍलाम्–सामने से स्वागतार्थ आने के मार्ग पर; पॊटि ऍल्लाम्–धूलि सब; तूवु तण् चुण्णमुम्–छिड़के हुए शीतल चूर्ण; कऩकम् नुण् तूळियुम्–स्वर्ण के छोटे कण; पूविऩ् मॆऩ् तातु–फूलों के कोमल मकरंदो की; उकुम् पॊटियुमे–चूनेवाली धूल ही (भरी थी)। १११७

अकलंक दशरथ की सेना इस तरह आती रही। उससे धूल उठती थी न? स्वागतार्थ आनेवाले, शरप्रेषक धनुर्धर जनक जो थे उनकी सेना की क्या हाल थी? उनके मार्ग पर सुगन्धित चूर्ण, स्वर्ण चूर्ण और मकरंद चूर्ण ही थे जो लोगों ने छिटके थे। (यह मंगल सूचक है।)। १११७

नऱुविरैत् तेनुना वियुनऱुङ् गुङ्गुमत्
तॆऱियहिड् ऱेय्वैयुम् माऩ्मदत् तॆक्करुम्
वॆऱियुडैक् कलवैयुम् विरवु शॆञ्जान्दमुम्
शॆऱिमदक् कलुऴिपाय् शेऱुमे शेऱॆलाम् 1118

चेऱु ऍलाम्–कीच जो बनी वह सब; नऱु विरै तेऩुम्–अच्छा सुगन्धयुक्त शहद; नावियुम्–बिलावकस्तूरी; नऱु कुङ्कुमत्तु–सुगंधित कुंकुम के साथ मिला हुआ; ऍऱि अकिल् तेय्वैयुम्–कटे अगरु के टुकड़ों का घिसा लेप; माऩ् मतत्तु–मृगकस्तूरी का चेप; विरवु वॆऱि उटै–(विविध वस्तुओं का) मिला हुआ, सुगंधित; कलवैयुम्–मिश्रित चेप; चॆम् चान्तमुम्–लाल चन्दन का लेप; चॆऱि मतम् कलुऴि–अधिक मदजल के; पाय् चेऱुमे–बहने से उत्पन्न कीच ही। १११८

वह मार्ग कीचड़ भरा हो गया। कौन-सा कीच? सुगंधपूर्ण शहद, बिलाव-कस्तूरी, कुंकुम, अगरु का पिसा लेप आदि का मिश्रण, मृगमद, अनेक सुगंध-पदार्थो का मिश्रित लेप, लाल चन्दन और अधिक (गजों के) मदजल के प्रवाह से बना कीचड़ —ये ही उस मार्ग के कीचड़ बने। १११८

मऩ्ऱलङ् गोदयार् मणियिनुम् पॊऩ्ऩिनुम्
शॆऩ्ऱुवऩ् दुलवुमच् चिदैविला निऴुनेर्

वॆऩ्ऱतिण् कॊडियॊडुम् नॆडुविता ऩमुम्विराय्
निऩ्ऱवॆण् कुडैहळिऩ् निऴलुमे निऴलॆलाम् 1119

मऩ्ऱल् अम् कोतैयार्–सुवासपूर्ण सुन्दर केशवाली राजकुमारियों के; मणियिऩुम्–रत्नाभरणों; पॊऩ्ऩिऩुम्–और स्वर्णाभरणों से; चॆऩ्ऱु वन्तु उलवुम्–रह-रहकर आनेवाली; अ चितैवु इला–वह निरंतर; निऴलुम्–झाँई और; नेर्–उनसे मिल; वॆऩ्ऱ् तिण् कॊटियॊटुम्–सुदृढ़ विजयपताकाओं के साथ; नॆटु वितातमुम्–और ऊँचे वितानों के साथ; विराय्–मिलकर; निऩ्ऱ–खुले रहे; वॆण् कुटैकळिऩ् निऴलुमे–श्वेतछत्रों की छाया ही; निऴल् ऎलाम्–छाया सब थी। १११९

वहाँ छाया किसकी होती थी? सुवासित केशवाली राजकुल की स्त्रियों के स्वर्णाभरणों और रत्नहारों से रह-रहकर छिटकनेवाली उस निरन्तर आभा की छाया, उससे युक्त विजयपताकाओं, उन्नत वितानों और श्वेत छत्रों की छाया ही वहाँ की छाया थी। (ये छायाएँ अन्धेरी छायाएँ नहीं, वरन मनोरम शीतल प्रकाश है।)। १११९

माऱिला मदुहयान् वरुपॆरुन् दानमेल्, ऊऱुपे रुवहया नऩिहम्वन् दुऱ्ऱपो
दीऱिलो दयिनुला मॆऱिदिरैप् परववाय्, आऱुपाय् हिऩ्ऱदो रमलपो लाऩदे 1120

माऱु इला–अनुपम; मतुकैयाऩ्–वीर (दशरथ) की; वरु पॆरु तातै मेल्–उत्तरोत्तर बढ़ आनेवाली बड़ी सेना के सामने; ऊऱु पेर् उवकैयाऩ्–उमँगनेवाले बड़े आनन्द से पूरित (जनक) की; अनिकम्–सेना; वन्तु उऱ्ऱ पोतु–जब आ पहुँची, तब; ईऱु इल् ओतैयिऩ्–निस्सीम शोर के साथ; उलाम्–उठनेवाली; ऎऱि तिरै–तीर से टकराती हुई लहरों के; परवै वाय्–समुद्र में; आऱु पाय्किऩ्ऱतु ओर् अमलै पोल्–नदी आकर जो गिरती है उस शोर के समान; आनतु–हुआ। ११२०

अप्रतिम वीर दशरथ की विपुल सेना के साथ, वर्धनशील उमंगवाले जनक की सेना जब आ मिली तब जो कोलाहल मचा वह उस समय के शोर के समान था जब एक नदी निस्सीम गरज के साथ, तीर से टकराती रहने वाली लहरोंवाले समुद्र से मिलती है। ११२०

कन्दये पॊरुहरिच् चनहऩुङ् गादले
उन्दवो दरियदोर् पॆरुमयो डुलहुळोर्
तन्दये यऩैयवत् तहविताऩ् मुऩ्बुतऩ्
शिन्दये पॊरुनॆडुन् देरिन्वन् दॆय्दिताऩ् 1121

कन्तैये पॊरु करि–खूँटे को ही तोड़नेवाले हाथी सेना के; चनकऩुम्–जनक भी; कातल् उन्त–(दर्शन-) लालसा की प्रेरणा से; ओत अरियतु–अकथनीय; ओर् पॆरुमैयोटु–एक गौरव के साथ; उलकु उळोर्–लोकवासियों के; तन्तैये अनैय–पितृतुल्य; अ तकविताऩ् मुऩ्पु–उन सर्वगुणपूर्ण के सामने; तऩ् चिन्तैये पॊरु–अपने ही मन से तुल्य; नॆटु तेरिऩ्–(वेगवान) बड़े रथ पर; वन्तु ऎय्तिताऩ्–आ पहुँचे। ११२१

आलान को भी तोड़नेवाले गजों की सेना के पति जनक, दशरथ के दर्शन की उतावली के कारण, एक अकथनीय शान के साथ जो सर्वलोक पिता तुल्य थे उन श्रेष्ठतायुक्त दशरथ के सामने अपने ही मन की गति से उपमेय वेग के साथ बड़े रथ पर सवार हो आये। ११२१

अॅय्दलुन् दिरुनॅडुन् देरिऴिन् दिन्नियतन्
मॊय्कॉडिण् शेनैपिन् निऱ्कमुन् शेऱलुम्
कैयिन्वन् देऱॅनक् कडिदिन्वन् देऱिनान्
ऐयनुम् मुहमलर्न् दहमुऱत् तऴुविनान् 1122

अॅय्तलुम्–पहुँचने पर; तिरु नॅट्टु तेर् इऴिन्तु–सुन्दर बड़े रथ से उतरकर; तन्–अपनी (उनकी); इतिय–प्यारी; मॊय्कॉऴ्–बलवती; तिण् चेनै–विशाल सेना; पिन् निऱ्क–पीछे खड़ी हो गई, तब; मुन् चेऱलुम्–आगे गये, और; ऐयनुम्–प्रभु, चक्रवर्ती दशरथ भी; मुकम् मलर्न्तु–प्रसन्न-मुख होकर; कैयिन्–अपने हाथ से; वन्तु एऱु–आकर आरोहण कीजिए; ॲन–कहने पर; कटितिन् वन्तु एऱिनान्–जनक भी आकर सवार हुए; अकम् उऱ तऴुविनान्–(दशरथ ने) गले से लगा लिया। ११२२

जब रथ दशरथ के समक्ष आया तब जनक उस सुन्दर बड़े रथ पर से उतरे। उनकी बलवती बड़ी सेना पीछे खड़ी रह गयी। वे आगे पैदल चले। चक्रवर्ती ने उन्हें देखा तो उन्हें बड़ा आनन्द हुआ। उन्होंने जनक को अपने रथ पर आरोहण करने का हाथ से संकेत करके निमंत्रण दिया। जनक भी उस पर चढ़े। चक्रवर्ती ने खूब उन्हें गले से लगा लिया। ११२२

तऴुविनिन् ऱवनिरुङ् गिळैयैयुन् दमरयुम्
वऴुविल्शिन् दन्नयिन्नान् वरिशयिन् नळवळाय्
ॲऴहमुन् दुऱवॅना विन्निदुहन् दॅय्दिनान्
उऴुवैमुन् दरियना नॅवरिनुम् मुयरिन्नान् 1123

उऴुवै मुन्तु–बाघों के सामने; अरि अन्नान्–सिंह सम; ॲवरितुम्–हर किसी से; उयरित्तान्–बढ़कर श्रेष्ठ; तऴुवि निन्ऱवन्–अपने आलिंगित जनक के; इरु किळैयैयुम्–विस्तृत परिवारों का; तमरैयुम्–मित्रों का; वरिचैयिन्–यथाक्रम; वऴु इल् चिन्तनैयिन्नान्–कपट-रहित मन से; अळवळाय्–कुशलक्षेम पूछकर; मुन्तु उऱ ॲऴुक–आगे बढ़ चलें; ॲना–कहकर; इतितु उकन्तु–तृप्त सुख के साथ; ॲय्तिनान्–गये। ११२३

बाघों के सामने सिंह सदृश, सर्वश्रेष्ठ राजा दशरथ ने अपने आलिंगित राजा जनक से निष्कलंक मन के साथ उनके विशाल परिवार के बन्धु-बान्धवों और मित्रों का यथाक्रम कुशल-समाचार पूछा। फिर, 'हम बढ़ें' यह कहकर उत्साह के साथ नगर में गये। ११२३

इन्नवा ट्रिरुवरुम् मिनियवा ड्रेहवन्
तुन्नुमा नहरिनिन् ड्रॅदिर्वरत् तुन्निनान्
तन्नये यन्नयवन् ड्रळलये यन्नयवन्
पॊन्निन्वार् शिलैयिड्रप् पुयनिमिर्त् तरुळिनान् 1124

इन्नवाड्र–इस प्रकार से; इरुवरुम्–दोनों; इनियवाड्र एक–सुख से जब जाते रहे, तब; तन्नैये अन्नैयवन्–स्वोपम (आप ही अपने से उपमेय); तळलैये अन्नैयवन्–अग्नि के ही समान; पॊन्निन् वार् चिलै–(शिवजी के) स्वर्णरचित लम्बे धनुष के; इड्र–भंजक; पुयम् निमिर्त्तरुळि तान्–हाथ जिन्होंने बढ़ाने की कृपा की वे (श्रीराम); तुन्नुम्–सर्वसमृद्ध; मा नकरिन् निन्ड्र–बड़े नगर (मिथिला) से; ऍतिर् वर–स्वागत करने के लिए; तुन्निनान्–आये। ११२४

जब ये सुखपूर्वक इस प्रकार जाते रहे तब आप ही अपना उपमेय रहनेवाले श्रीराम जिन्होंने अपने हाथ से अग्नि-वर्ण तेजस्वी रुद्रदेव के स्वर्ण के लम्बे धनुष का भंजन किया था, उस सर्वसमृद्ध मिथिला नगर से अपने पिता के स्वागतार्थ निकलकर आये। ११२४

तम्बियुन् दानुमत् तानैमन् नवनहर्प्
पम्बुतिण् पुरवियुम् बडैञरुम् पुडैवरच्
चॅम्बॊनिन् पशुमणित् तेरिन्वन् दॅय्दिनान्
उम्बरुम् मिम्बरुम् मुरहरुन् दॊळ्वुळान् 1125

उम्परुम्–स्वर्गलोकवासी और; इम्परुम्–इहलोकवासी; उरकरुम्–नागलोकवासी; तॊळ उळान्–(तीनों के) वन्द्य; तम्पियुम् तानुम्–आप और उनके लघु भ्राता; अ तानै मन्नवन् नकर्–उन सेना विशिष्ट राजा के नगर से; पम्पु तिण् पुरवियुम्–अधिक संख्या के ताकतवर अश्व; पटैञरुम्–पैदल वीर; पुटै वर–इनके (उन्हें) घेरे आते; चॅम् पॊन्निन्–श्रेष्ठ स्वर्ण के; पचुमणि–उत्तम मणिमंडित; तेरिन् वन्तु–रथ पर सवार होकर; ॲय्तिनान्–आ पहुँचे। ११२५

देवलोक, भूलोक और (नागों का) पाताललोक— इन तीनों लोकों के वासियों के वन्द्य (श्रीविष्णु के अवतार) श्रीराम, अपने प्रिय लघु भ्राता श्रीलक्ष्मण के साथ, एक स्वर्णनिर्मित श्रेष्ठ मणिमंडित रथ पर आये। उनके साथ, सेना के कारण कीर्तिप्राप्त जनक के नगर से अधिक संख्या में बलवान अश्वों की सेना और पैदल सेना आई। ११२५

यानयो पिडिहळो विरदमो विवुळियो, आन्पे रुरैयिला निरैवया रड्रिहुवार्
तानयेर् चन्नहन् वलिनॅट्टुन् दादैमुन्, पोन्पे रिरुवर्तम् पुडैवरुम् पटैयिन् 1126

नॅट्टु तातै मुन् पोन–गौरवोन्नत पिता के स्वागतार्थ जो गये; पेर् इरुवर् तम् पुटै–उन उत्तम दोनों (श्रीराम और लक्ष्मण) को घेरकर; तानै एर् चनकन्–श्रेष्ठ सेना के स्वामी जनक की; एवलिन् वरुम्–आज्ञा से जानेवाली; पटैयिन्–सेना-समूह में; यानैयो–हाथी; पिटिकळो–हथिनियाँ; इरतमो–रथ; इवुळियो–अश्व, इनकी;

आत्त–प्राप्य; पेर् उरै इला–वड़े से वड़े अदद से भी न गणनीय; निरैवै–अधिकता को; यार् अरिकुवार्–कौन जान सकता है । ११२६

अपने गौरवोन्नत पिता के समक्ष जो गये उन दोनों के साथ जो सेना गयी वह जनक की आज्ञा से ही गयी। उसके हाथियों, हथिनियों या अश्वों की संख्या गिनने के लिए कोई अदद ही नहीं था। फिर उसकी सही संख्या कौन जाने ? । ११२६

कावियुङ् गुवळयुङ् कडिहॊळ्हा यावुमॊत्
तोवियञ् जुवैहॆडप् पॊलिवदो रुरुवॊडे
तेवरुन् दॊऴुहऴर् चिरुवन्मुन् पिरिवदोर्
आविवन् दॆन्नवन् दरशन्मा डणुहिनान् 1127

कावियुम्–नीलोत्पल; कुवळैयुम्–और कुवलय (नीलकमल); कटि कोळ्–(वर्ण-) विलक्षण; कायावुम्–अतसी; ऒत्तु–तुल्य रहकर; ओवियम्–चित्र को भी; चुवै कॆट–(अपने सामने) रूपहीन वनाकर; पॊलिवतु–जो शोभायमान था उस; ओर् उरुवॊटे–अप्रतिम रूपसौंदर्य के साथ; तेवरुम् तॊऴु कऴल्–देवपूज्यचरण; चिरुवन्–चक्रवर्तीकुमार; मुन् पिरिवतु–पहले जो अलग हुआ; ओर् आवि–वह कोई प्राण; वन्तु ऎन्न–फिर आ गया हो; वन्तु–ऐसा आकर; अरचन् माटु–राजा के पास; अणुकिनान्–आये । ११२७

श्रीराम, जिनका वर्ण नीलोत्पल, नीलकुमुद (कुवलय) और सुन्दर रंग वाले अतसी का-सा था, जिनका रूप सौन्दर्य किसी भी कल्पित चित्र को मूल्यहीन बना सकता था और जो सर्वदेववन्द्यचरण थे, तथा जो चक्रवर्ती तनुज थे, अपने पिता के पास ऐसे गये मानो चक्रवर्ती का प्राण जो पहले उनके शरीर को छोड़ गया था अब लौट आकर मिल रहा हो। ११२७

अनिहम्वन् दडितॊऴक् कडिदुशॆन् ड्ररशर्होन्
इऩियपॆङ् कऴल्पणिन् दॆऴुदलुन् दऴुविनान्
मनुवॆन्तुन् दहैयन्मार् बिडैमरैन् दऩमलैत्
तऩिनॆडुञ् जिलैयिऱुत् तवऴ्दडङ् गिरिहळे 1128

अनिकम् वन्तु अटि तॊऴ–(चक्रवर्ती की) सेना ने आकर उनके चरणों में नमस्कार किया; कटितु चॆन्ऱु–(वे) जल्दी जाकर; अरचर्कोन्–राजाओं के राजा के; इऩिय पचुमै कऴल्–प्यारे, श्रेष्ठ स्वर्ण के (बने) पायलधारी चरणों पर; पणिन्तु ऎऴुतलुम्–नमस्कार कर (उठे), उठने पर; तऴुवितान्–बाहुपाश में लिया; मनु ऎन्तुम् तकैयन्–मनु मान्य उनके; मार्प् इटै–वक्षस्थल में; मलै तनि नॆटु चिलै–पर्वतसम अप्रतिम दीर्घ धनुष को; इऱु–तोड़ते हुए; तवऴ्–उसके साथ जिन्होंने लीला की; तट किरिकळ्–वे विशालगिरियाँ (बाहुएँ); मऱैन्तन–अन्तर्निहित हो गये । ११२८

जब वे जा रहे थे तब उनकी सेना ने उनके चरणों पर नमन किया।

वे स्वीकार करते हुये शीघ्र गये और अपने पितृदेव के श्रेष्ठ स्वर्ण के बने पायलधारी चरणों पर नमस्कार करके उठे। तब चक्रवर्ती ने उनको गले लगा लिया। उस समय श्रीराम के विशाल हाथ भी, जिन्होंने पर्वत-सम, अप्रमेय और बड़े धनुष को तोड़ने का दुस्तर काम किया था, चक्रवर्ती के विशाल वक्षस्थल में समा गये थे। ११२८

इळैयपैङ् गुरिशिल्वन् दडिपणिन् दॅळ्ळुदलुम्
तळैवरुन् दॉडयत्मार् बुऱ्मिहत् तळुवित्तान्
कळैवरुन् दुयरऱ्क् कगत्तमॅण् डिशैयॅल्लाम्
विळैतरुम् बुहऴित्ता नॅवरितुम् मिहुदियान् 1129

कळैवु अरुम्–दुर्निवार; तुयर्–(शंबरासुर से मिले) संकट; अऱ–दूर करके; ककत्तम्–आकाशलोक में; ॲण् तिचै ॲल्लाम्–आठों दिशाओं भर में; विळैतरुम्–होकर बढ़नेवाली; पुकऴित्तान्–कीर्तिवाले; ॲवरितुम् मिकुतियान्–सब (किसी) से बढ़कर श्रेष्ठ; इळैय पैङ्कुरिचिल् वन्तु–छोटे, स्वर्णवर्ण के राजकुमार (लक्ष्मण) के आकर; अटि पणिन्तु–चरणों पर नमन करके; ॲळुतलुम्–उठने पर; तळै वरुम् तॉटैयल्–गुँथी हुई मालाधारी; मार्पु उऱ–वक्ष से लगाकर; मिक तळुवित्तान्–खूब आलिंगन कर लिया। ११२९

शंबरासुर का वध करके, उसका त्रास दूर करने के कारण दशरथ की महिमा स्वर्गलोक में फैली थी। उनकी कीर्ति दिशा-दिशा में व्याप्त थी। वे सब (किसी) से श्रेष्ठ थे। उनके चरणों पर लघुराज श्रीलक्ष्मण ने भी आकर नमस्कार किया। नमस्कार कर उठते ही दशरथ ने उनको अपने माला से अलंकृत सुन्दर वक्ष से खूब कसकर लगा लिया। ११२९

कऱ्ऱैवार् शडैयित्तान् कैक्कॉळुन् दनुविऱक्
कॉऱ्ऱनीळ् पुयनिमिर्त् तरुळुमक् कुरिशिऱान्
पॅऱ्ऱदा यरैयुमप् पॅऱ्ऱियिऱ् ऱॉळुदॅळुन्
दुऱ्ऱपो दवर्मनत् तुवहया रुरैशॅय्वार् 1130

कऱ्ऱै वार्–घनी मिली हुई और लम्बी; चटैयित्तान्–जटाधारी; कै कॉळ्ळुम् तनु–अपने हाथ में जिसको रखते थे वह धनु; इऱ–टूट जाय, ऐसा; कॉऱ्ऱम् नीळ् पुयम्–विजयिनी और लम्बी भुजाएँ; निमिर्त्तुतरुळम्–जिन्होंने बढ़ाने की कृपा की; अ कुरिचिल्–वे प्रभु श्रीराम; पॅऱ्ऱ तायरैयुम्–जननियों को; अ पॅऱ्ऱियिन्–उसी प्रकार से; तॉळुतु–नमस्कार करके; ॲळुन्तु–उठकर; उऱ्ऱपोतु–उनके समीप गये, तब; अवर् मतत्तु उवकै–उनके मन का आनन्द; उरै चॅयवार् यार्–वर्णन कर सकेंगे कौन। ११३०

जटाजूटधारी श्री शिवजी के धनु को तोड़ने के लिए जिन्होंने अपने विजयशील दीर्घ हाथ बढ़ाये थे उन (धनुभंजक) श्रीराम ने अपनी तीनों माताओं के चरणों पर नमस्कार किया। जब वे उनके पास गये तब

उनके (माताओं के) मन में जो आनन्द हुआ उसका वर्णन कौन कर सकेगा ? । ११३०

उन्नुपे रन्बुमिक् कॊंळ्हियॊत् तॊण्गणीर्
पन्नुता रैंहडरत् तॊळ्ववॆळुम् बरदन्नैप्
पॊन्निन्मार् बुउवणैत् तुयिरुउप् पुल्लिन्नान्
तन्नैयत् तादैमुन् उळ्विन्ना लॆंन्नवे 1131

उन्नु पेर् अन्पु–सदा स्मरण करनेवाला उत्कट प्रेम; मिक्कु ऒंळ्कि (यत्तु) ओंत्तु–वढ़कर, छलककर बाहर आया, ऐसा; ऒण् कण्–उज्ज्वल आँखों ने; नीर् पन्नु–अश्रुजल भरी; तारैकळ् तर–धाराएँ बहाईं; तॊळुतु ऎंळुम्–नमस्कार करके जो उठे; परतनै–उन भरत को; पॊन्निन् मार्पु उउ–स्वर्णसम अपने वक्ष से कसकर; अणैत्तु–लगाकर; अ तातै–उन पिता ने; तन्नै–अपने को; मुन् तळ्वितात् ऎंन्नवे–पहले जैसे आलिंगन किया, उसी प्रकार; उयिर् उउ–प्राणों से लगाकर; पुल्लिन्नान्–बाहुपाशवद्ध किया —(श्रीराम ने) । ११३१

फिर भरत श्रीराम के चरणों में पड़े । उनकी आँखों से प्रेमाश्रु बह रहा था, मानो सदा स्मरण के साथ वढ़नेवाला वह प्रेम दिल के अन्दर समा नहीं सका और छलककर वाहर निकल आया हो । श्रीराम ने उनका ऐसा गाढ़ा आलिंगन किया जैसे उनके पिता ने उनका किया था । ११३१

करियवन् पिन्बुशॆन् उवन्नरुङ् गादलिन्
पॆरियवन् उम्बियॆन् उवेरुन् दुदिशॆय्दार्प्
पॊरुवरुङ् कुमरर्तम् पुत्तनउङ् गुञ्जियाल्
इरुवर्पैङ् गळ्ळुम्वन् दिरुवरुम् वरुडिन्नार् 1132

करियवन् पिन्पु चॆन्उवन्–नीलवर्ण (श्रीराम) के अनुगामी; अरुम् कातलिन्–गम्भीर प्रेम में; पॆरियवन् तम्पि–बढ़े हुए (भरत) का छोटा भ्राता; ऎंन्उ–कहकर; एवरुम् तुति चॆय्–सवसे प्रकीर्तित; तार्–पुष्पमालाधारी; पॊरु अरु कुमरर् इरुवरुम्–अनुपम दोनों कुमारों (लक्ष्मण और शत्रुघ्न) ने; वन्तु–आकर; इरुवर् पैङ्कळ्ळुम्–(भरत और श्रीराम) दोनो के श्रीचरणों को; तम् पुत्तै नउ कुञ्चियाल्–अपने अलंकृत और सुगन्धपूर्ण केशवाले सिरों से; वरुटिन्नार्–सहलाया (चरणों पर सिर लगाये) । ११३२

"लक्ष्मण नीलवर्ण श्रीराम के अनुगामी हैं; और शत्रुघ्न श्रीरामभक्ति में उत्कृष्ट भरत के ही अनुज हैं ।" ऐसे दोनों प्रकीर्तित थे । श्रीलक्ष्मण ने आकर भरत की दण्डवत की और शत्रुघ्न ने श्रीराम के चरणों पर नमस्कार किया । (लक्ष्मण भगवत-सेवा मे और शत्रुघ्न भागवत-सेवा में लीन परम भक्त थे ।) । ११३२

कोलवरुञ् जॆम्मयुङ् कुडैवरुन् दण्मयुम्
शालवरुञ् शॆल्वमॆन् उणर्वॆरुन्ल् दादैपो

मेलवरुन् दहैमयान् मिहविळङ् गिन्ऱ्हडाम्
नाल्वरुम् बौरुविनात् मरैयॅन्नुन् नडैयिन्नार् 1133

ताम् नाल्वरुम्–वे चारों; पॅरु इल् नाल् मरै–अप्रमेय चारों वेद हैं; ॲन्नुम् नटैयिन्नार्–ऐसा कहने योग्य आचरणवाले; कोल् वरुम् चॅम्मैयुम्–ऋजु दण्ड (नेक शासन) के लिए आवश्यक नीति; कुटै वरुम् तण्मैयुम्–छत्र (पालक धर्म) के लिए आवश्यक करुणा ही; चाल् वरुम् चॅल्वम्–श्रेष्ठ धन हैं; ॲन्ऱु उणर्—ऐसा माननेवाले; पॅरु तातै पोल्–गौरवयुक्त पिता के समान; मेल् वरुम् तकैमैयाल्–माननीय सुयोग्यता के साथ; मिक विळङ्कित्तर्कळ्–बहुत शोभायमान रहे। ११३३

वे चारों पुत्र चारों वेदस्वरूप मान्य उत्तम आचरणवाले थे। वे अपने ही पिता के समान जो नेकशासन के लिए आवश्यक नीतिपरायणता और प्रजापालन के लिए आवश्यक करुणा —इनको ही श्रेष्ठ निधियाँ मानते थे, सुयोग्य रूप से शोभायमान थे। ११३३

शान्ऱॅन्त् तहैयशॅङ् गोलिन्ना नुयिर्ऱ्हडाम्
ईन्ऱनऱ् ऱायॅनक् करुदुपे रुळिन्नान्
आन्ऱविच् चॅल्वमत् तन्नैयुमॉय्त् तरुहुऱत्
तोन्ऱलैक् कॉण्डुमुऱ् चॅल्हॅनच् चॉल्लिन्नान् 1134

चान्ऱु ॲन्त तकैय–उदाहरण के रूप में मान्य; चॅङ्कोलितान्–ऋजु राजदण्ड वाले (नेक शासक); उयिर्कळ् ताम्–प्रजाजन; ईन्ऱ नल् ताय् ॲन करुतु–जननी, अच्छी माता, ऐसा माने; पेर् अरुळितान्–इतने बड़े करुणामय; आन्ऱ इच् चॅल्वम् अत्तनैयुम्–श्रेष्ठ ये धन (सेना, छत्र, ध्वजाएँ) सब; मॉय्त्तु–घने रूप में एकत्र होकर; अरुकु उऱ–पास आये, तब; तोन्ऱलै कॉण्टु–राजकुमार को (अगुआ) बनाकर; मुन् चॅल्क–आगे बढ़ो; ॲन्त चॉल्लितान्–यह आज्ञा दी। ११३४

दशरथ ऐसे थे जो नेकशासन के लिए उदाहरण-स्वरूप थे। प्रजा सारी, उन्हें अपनी जननी माँ मानती थी, वे इतने करुणामय थे। उन्होंने, अपने पास आये राजवैभव, यानी सेना के वीर, छत्र, पताका आदि को आज्ञा दी कि श्रीराम को पुरस्सर करके आगे बढ़ो। ११३४

कादलो वऱिहिलङ् गरिहळैप् पॉरुविन्नार्
तीदिला वुवहयुञ् जिऱिदरो पॅरिदरो
कोदैशूळ् कुञ्जियक् कुमरन्वन् दॅय्दलुम्
तादयो डॉत्तदत् तान्नयिन् ऱन्मये 1135

करिकळै पॉरुविनार्–गजोपम; कातलो अऱिकिलम्–(वीरों के श्रीराम पर) प्रेम (की मात्रा); अऱिकिलम्–नहीं जान सकते; तीतु इला उवकैयुम्–निर्दोष उत्साह; चिऱितो–छोटा (नहीं) है; पॅरितु–बड़ा है; कोतै चूळ् कुञ्चि–पुष्पमाला से अलंकृत केशवाले; अ कुमरन्–वे राजकुमार; वन्तु ॲय्तलुम्–आ (पहुँचे), पहुँचते ही; अ तानैयिन् तन्मै–उस सेना की (मानसिक) स्थिति; तातैयोटु ऑत्ततु–उनके पिता की-सी हो गई। ११३५

सेना के वीर श्रीराम पर कितना प्रेम रखते थे इसकी मात्रा हम जान नहीं सकते। वे इतना गहरा और अधिक प्रेम करते थे। उनका निर्दोष उत्साह भी कम नहीं था; बहुत बड़ा था। जब पुष्पमाला से अलंकृत केशवाले श्रीराम उनके पास आये तब उनकी स्थिति श्रीराम के पिता दशरथ की सी हो गयी। उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। ११३५

तॉऴुदिरण् डरुहुमऩ् पुडैयतम् वियर्तॉडर्ऩ्
दऴिविल्शिन् दयिन्तॊडु माडऩ्मा मिशैवरत्
तऴुवुशङ् गुडत्तॆडुम् पणैतऴङ् गिडवॆऴुन्
दॆऴुदरुन् दहैयदोर् तेरिन्मे लेहिऩान् 1136

इरण्टु अरुकुम्–दोनो पार्श्वों में; अनुपु उटैय तम्पियर्–प्यारे छोटे भाई; अऴिवु इल् चिन्तैयिऩॊटुम्–सतर्क मन होकर; आटल् मा मिचै–विजयी अश्वों पर; तॊऴुतु तॊटर्न्तु वर–विनय के साथ पीछे आये; तऴुवु चङ्कुटऩ्–मंगलसूचक शंखनाद के साथ; नॆटु पणै तऴङ्किट–बड़े ढोलों के नाद के साथ; ऎऴुन्तु–इस प्रकार उठकर; ऎऴुत ऒरु तकैयतु–चित्र जिसका बनाना कठिन है, ऐसे; ओर् तेरिऩ् मेल्–एक रथ पर; एकिऩाऩ्–(श्रीराम) चले। ११३६

श्रीराम एक बहुत ही सुन्दर रथ पर, जो, उसका सफल चित्रकार भी चित्र न बना सके, उतना सुन्दर था, आरूढ़ होकर चले। तब उनके पार्श्व में, पर उनके पीछे ही उनके प्यारे अनुज सतर्कता के साथ विजयी अश्वों पर सवार होकर गये। मंगलसूचक शंख ढोल आदि बजे। ११३६

पञ्जिशूऴ् मेल्लडिप् पावैमार् पण्णयिऩ्
मञ्जुशूऴ् नॆडियमा ळिहैयिनिऩ् ऱिडैविराय्
नञ्जुशूऴ् विऴिहळ्पू मऴैयिन्मेल् विऴनडन्
दिञ्जिशूऴ् मिदिलैमा वीदिशॆन् ऱॆय्दिऩान् 1137

पञ्चि चूऴ् मॆल् अटि–महावर लगे कोमल चरणों वाली; पावै मार पण्णै–स्त्रियों के दल; इऩ् मञ्चु चूऴ्–सुहावने मेघों से आवृत; नॆटिय माळिकैयिऩ् निऩ्ऱु–उन्नत सौधों में से; इटै विराय्–(उनके) द्वारों पर आ लगें (खड़े रहें); नञ्चु चूऴ् विऴिकळ्–(उनकी) विषसिक्त आँखें; पू मऴैयिऩ्–पुष्पवर्षा के साथ; मेल् विऴ–अपने (श्रीराम के) ऊपर आ गिरें, ऐसा; नटन्तु–चलकर; इञ्चि चूऴ् मितिलै–प्राचीर वलयित मिथिला नगर की; मा वीति–राजवीथी में; चॆऩ्ऱु ऎय्तिऩाऩ्–जा पहुँचे। ११३७

जब श्रीराम रथ पर आरूढ़ हो जा रहे थे तब मेघों से आवृत (उतने ऊँचे) सौधों से महावर लगे कोमल चरणोंवाली स्त्रियों के दल द्वार पर आकर खड़ी हो गयी। उन्होंने आँख भर उनको देखा और उन पर पुष्प वर्षा की। विष लगी सी दृष्टियाँ और कोमल फूल दोनों उन पर एक

साथ गिरे। उनका निशान बने हुए श्रीराम प्राचीर-वलयित मिथिला नगरी की राजवीथी में पहुँचे। ११३७

शूडहन्	दुयल्वरक्	कोदैशोर्	दरमलर्प्
पाडहम्	बरदनूल्	पहरवॅङ्	कडहरिक्
कोडरङ्	गिडवॅळुङ्	गुवितडङ्	गोंङ्गयार्
आडरङ्	गल्लवे	यणियरङ्	गयलॅलाम् 1138

अणि अरङ्कु अयल् ॲलाम्–सुन्दर सौधों के सामने के सब आँगनों में एकत्रित; वॅम् कटम् करि कोटु–भयंकर मत्तगजों के दाँतों के गर्व को; अरङ्किट–चूर करते हुए; ॲळुम्–उगे हुए; कुवि–पुष्ट; तट कॉङ्कैयार्–विशाल स्तनवालियों के; चूटकम् तुयल् वर–(हाथ के) कंकण हिले और स्वरित हुए; कोतै चोर् तर–केश की माला खुलकर बिखरे; मलर् पाटकम्–(चरण) कमलों के "पाटकम" नाम के (घुंघुरू) आभरणों ने; परतनूल् पकर–भरतशास्त्र (भरतनाट्यम्) के अनुसार नृत्यमुद्राओं का स्वर उठाया; आटु अरङ्कु अल्लवे–नाट्यमंच तो नहीं। ११३८

सौधों के सामने के आँगनों में स्त्रियाँ आकर जुट गयी। उनके उन्नत पुष्ट और विशाल स्तन भयंकर मत्त गजों के दाँतों के गर्व को भी चूर कर सकते थे। वे कंकणों को खनकाते हुये, केश की माला को खुलकर गिरने देते हुये, और पैरों के घुंघुरुओं को भरतशास्त्र (भरतनाट्यम) के अनुसार झनझनाते हुए (स्वतः उनकी चाल नृत्यगति के समान थी।) आकर एकत्र हुयीं। कवि विस्मय करते है कि वे नाट्यमंच तो नहीं थे! । ११३८

पेदमार्	मुदल्कडैप्	पेरिळम्	पॅण्गडाम्
एदियार्	मारवे	ळॅय्यवन्	दॅय्दित्तार्
आदिवा	नवर्पिरा	नणुहला	लणिकॉळ्हार्
ओदियार्	वीदिवा	युर्र्वा	रुरैशॅय्वाम् 1139

आति वानवर् पिरान्–आदि देवदेव (परब्रह्म श्रीराम); अणुकलाल्–पास आते हैं, इसलिए; एति आर् मारवेळ–अस्त्रयुक्त मन्मथ के; ॲय्य–शर चलाने से; पेतै मार् मुतल्–बालाओं से लेकर; पेरिळम् पॅण्कळ् कटै–वृद्धाएँ तक; वन्तु ॲय्तित्तार्–आ जुटीं; अणि कॉळ्–सुन्दर; कार् ओतियार्–काले केशवाली वे; वीतिवाय्–वीथी में; उर्र् आरु–(जिस स्थिति को) पहुँचीं वह स्थिति; उरै चॅय्वाम्–कहेंगे। ११३९

आदिदेव, परब्रह्म श्रीराम जब वीथी में आये तब मन्मथ के शर चलाने से आहत होकर, यानी कामासक्त होकर बालाओं से लेकर वृद्धाएँ तक आकर वीथी के किनारे जुट गयी। काले (या मेघों सदृश) केशवाली स्त्रियों का वीथी में क्या हाल हुआ, उसका वर्णन अब हम करेंगे। ११३९

19. उलावियऱ् पडलम् (वीथि-भ्रमण पटल)

❀ मानिऩम् वरुव पोऩ्ऱु मयिलिऩत्ऩ् दिरिव पोऩ्ऱुम्
मीनिन मिळिर्व पोऩ्ऱुम् मिऩ्ऩिन मिडैव पोऩ्ऱुम्
तेनिनञ् जिलम्बि यार्प्पच् चिलम्बिनम् पुलम्ब वॆङ्गुम्
पूनत्तै कोदै मादर् पॊम्मॆऩप् पुहुन्दु मॊय्त्तार् 1140

पू नत्तै कोतै मातर्–पुष्पों के कारण ठण्डे बने केशवाली स्त्रियाँ; तेऩ् इऩम्–भ्रमर दल; चिलम्पि आर्प्प–गुंजार करें, ऐसा; चिलम्पु इऩम् पुलम्प–नपुरों की राशि के झनझन शब्द करते; माऩ् इऩम् वरुव–हरिणदल आते हों; पोऩ्ऱुम्–जैसे; मयिलिऩम्–मोर के समूह; तिरिव पोऩ्ऱुम्–फिरते हों जैसे; मीऩ् इनम् मिळिर्व पोऩ्ऱुम्–तारों के समूह चमकते हों जैसे; मिऩ् इऩम् मिटैव पोऩ्ऱुम्–बिजलियों के समूह जमा होते हों जैसे; पॊम् ॲॅऩ पुकुन्तु–शीघ्र आकर; ॲॅङ्कुम् मॊय्त्तार्–सर्वत्र भर गईं। ११४०

[तमिळ में स्त्रियों को वय के अनुसार सात वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है— पेतै-सात साल की; पॆदुम्बै-ग्यारह साल की; मङ्गै-१३ साल की; मडन्दै-१९ साल की; अरिवै-२५ साल की; तॆरिवै-२६-३० साल की; और पेरिळ मङ्गै—चालीस साल और उससे ऊपर की वृद्धाएँ। इनमें हर नाम स्त्री साधारण के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। वृद्धा के लिए जो पेरिळमङ्गै का नाम दिया गया है वह कवितापूर्ण है। उसका अर्थ है "वड़ी वाला" श्रीराम के प्रति प्रेम को भक्ति के रूप में लेना चाहिये।]

स्त्रियाँ झट आकर जुट गयीं। उनके केश पुष्प-मधु से गीले थे। उनके सिरों पर भ्रमर गुँजार कर रहे थे, और पैरों पर नूपुर झनझना रहे थे। वे मानो हरिण-दल आ रहे हों, मोर के समूह विचरण कर रहे हों, नक्षत्र चमक रहे हों या बिजलियाँ एकत्र हो आ रही हों, ऐसे आकर सर्वत्र भर गयीं। ११४०

विरिन्दुवीऴ् कून्दल् पारार मेकलै यऱ्ऱ नोक्कार्
शरिन्दपून् दुहिल्ह डाङ्गा रिडैतड् माऱत् ताळार्
नॆरुङ्गिनर् नॆरुङ्गिप् पुक्कु नीङ्गुमि ऩीङ्गु मॆन्ऱॆऩ्
ऱरुङ्गल मनैय मादर् तेनुह रळियिऩ् मॊय्त्तार् 1141

अरु कलम् अऩैय मातर्–(उस नगर के) श्रेष्ठ शृंगार-मान्य स्त्रियाँ; विरिन्तु वीऴ्–खुलकर लटकनेवाले; कून्तल् पारार्–केश नहीं देखतीं; मेकलै अऱ्ऱ नोक्कार्–मेखला टूटीं, उसको नहीं देखती (उस पर ध्यान नहीं देतीं); चरिन्त–खिसके हुए; पू तुकिल्कळ्–झीने (रेशमी) वस्त्रों को; ताङ्कार्–नहीं सँभालतीं; इटै तटुमाऱ–कमर झुक-झुककर दुख देती थी; ताळार्–(विश्रांति के लिए नहीं रुकीं; नॆरुङ्किनर्–पास आईं; नीङ्कुमिऩ्–हटो जी; नीङ्कुम्–हटो; ऍऩ्ऱु ऍऩ्ऱु–यह दुहराती हुई; नॆरुङ्कि पुक्कु–अतिनिकट पहुँचकर; तेऩ्नुकर् अळियिऩ्–शहद पीने के लिए जुटनेवाले भ्रमरो के समान; मॊय्त्तार्–पिल पड़ीं। ११४१

वे स्त्रियाँ मानो मिथिला का श्रृंगार थीं। अपनी उतावली में उन्होंने खुले-बिखरते केश का ख्याल नहीं किया; मेखला टूट गयी; उसकी परवाह नही की। महीन और रेशमी वस्त्र खिसक रहे थे उनको नहीं संभाला। कमर झुक-झुककर दुख देती थी लेकिन विश्रांति के लिए नहीं रुकीं। चलो, हटो, कहती हुयी वे शहद पीने आनेवाले भ्रमरों के समान पिल पड़ीं। ११४१

❀ **पळ्ळत्तुप् पायु नन्नी रनैयवर् पातल् पूत्त**
वॅळ्ळत्तुप् पॅरिय कण्णार् मॅन्शिलम् बलम्ब मॅन्बूत्
तळ्ळत्तम् मिडैह णोवत् तमैवलित् तवन्बार् चॅल्लुम्
उळ्ळत्तैप् पिडित्तु नामॅन् ड्रॉडुहिन् ड्रारु मॊत्तार् 1142

मॅन् चिलम्पु अलम्प–सुहावने नूपुर झनझना उठे; मॅन् पू तळ्ळ–कोमल पुष्प (चरण) लड़खड़ाये; तम् इटैकळ् नोव–उनकी कमरें दुखीं, ऐसे; पळ्ळत्तु पायुम्–गड्ढे की ओर बहनेवाले; नल् नीर् अनैयवर्–शुद्ध जल के समान (जो दौड़ीं) वे; पातल् पूत्त–कुवलयों के समान प्रफुल्लित; वॅळ्ळत्तु पॅरिय–(और) सागर-सम विशाल; कण्णार्–आँखोंवाली वे; तमै वलित्तु–अपने को खींचते हुए; अवन् पाल् चॅल्लुम्–उनके (श्रीराम के) पास जानेवाले; उळ्ळत्तै–मन को; पिटित्तुम् नाम् ॲन्रु–पकड़ेंगे हम, ऐसा कहकर; ओटुकिन्रारुम्–मानो दौड़ते हों; ऒत्तार्–ऐसी लगीं। ११४२

वे नीची भूमि (गड्ढे) की ओर बहनेवाले शुद्ध जल के समान मानो खिचकर आयीं। उनके पैरों के नूपुर शब्द कर रहे थे, चरण लड़खड़ा रहे थे, कमर दुखती थी। इस प्रकार, कुवलय के समान उत्फुल्ल और सागर-समान विशाल आँखोंवाली वे उन स्त्रियों की तरह दौड़ीं जो अपने को खींचते हुए श्रीराम के पास जानेवाले मन को 'पकड़ लेंगी' कहते हुए दौड़ रही हों। ११४२

कण्णिनाड् काद लॅन्नुम् पॊरुळैये काण्गिन् ड्रोमिप्
पॅण्णिनीर् मैयिना लॅय्दुम् पयनिन्रु पॅरुदु मॅन्बार्
मण्णिनी रुलर्न्दु वान मळैयर वर्न्द कालत्
तुण्णुनीर् कण्डु वीळु मुळैक्कुलम् बलवु मॊत्तार् 1143

कण्णिताल्–अपनी आँखों से; कातल् ॲन्नुम् पॊरुळैये–प्रेमरूप वस्तु को ही; काण्किन्रोम्–देखते है; इ पॅण्णिन् नीर्मैयिनाल्–इस स्त्री जन्म के भाव से; ॲय्तुम् पयन्–प्राप्य फल को; इन्रु पॅरुतुम्–आज पा जायँगे; ॲन्पार्–यह कहती हुई; मण्णिल् नीर् उलर्न्तु–भूतल में जल सूखकर; वानम् मळै अर–आकाश से वारिश भी न रहने पर; वरन्त कालत्तु–सर्वत्र सूखा पड़ गया, तब; उण्णुम् नीर् कण्टु–पेय जल (का स्थान) देखकर; वीळुम्–उधर पिल पड़नेवाले; उळै कुलम् पलवुम्–हरिण-कुल अनेक के; ऒत्तार्–समान बनीं। ११४३

"हम अपनी आँखों से प्रेम का मूर्तरूप ही देखती हैं। स्त्री-जन्म को

आज सफल बनायेंगीं" यह कहते हुए वे उन हरिण-दलों के समान टूट पड़ीं जो, शुष्क भूमि और मेघहीन आकाशवाले अकाल में कहीं पेय जल का भास पाकर टूट पड़ते हों। ११४३

अरत्तमुण् डनैय मेनि यहलिहैक् कळित्त ताळुम्
विरैक्करुङ् गुळलिक् काह विल्लिऱ निमिर्न्दु वीङ्गुम्
वरैत्तडन् दोळुङ् गाण मरुहिनिल् वीळु मादर्
इरैत्तुवन् दमिळ्दिन् मॉय्क्कु मीयिन मॅन्न लानार् 1144

अरत्तम् उण्ट अनैय मेनि–लाल रंग भर दिया गया हो, ऐसे शरीरवाली (गोरे शरीरवाली); अकलिकैक्कु–अहल्या पर कृपा जिन्होंने की थी; ताळुम्–उन श्रीचरणों को, और; विरै करु कुळलिक्कु आक–सुगन्धित काले केशवाली (सीता) के (विवाह) के लिए; विल् इऱ–शिवधनु को तोड़ते हुए; निमिर्न्तु वीङ्कुम्–दीर्घ और पुष्ट जो रहे उन; वरै तट तोळुम्–पर्वतोपम बड़े हाथों को; काण–देखने के लिए; मरुकिनिल् वीळुम् मातर्–वीथी में बराबर आनेवाली स्त्रियाँ; इरैत्तु वन्तु–शोर मचाते आईं और; अमिळ्तिल् मॉय्क्कुम्–अमृत पर जमा हुए; ई इनम् अॅन्नल् आनार्–मक्खियों के वृन्द कहलाने योग्य बनीं। ११४४

श्रीराम के चरण और हाथ दोनो विशेप महत्व के थे। चरणों ने लाल (गोरा) रंगवाली अहल्या पर कृपा की। हाथ जो थे, वे काले केशवाली सीता पर कृपा करने के लिए शिवधनु तोड़नेवाले दीर्घ और पुष्ट पर्वतसम थे। उनके दर्शन के लिए स्त्रियाँ, अमृत पर मक्खियों के समान कोलाहल के साथ आ जुटीं। ११४४

वीदिवाय्च् चॅल्हिन् ऱान्बोल् विळित्तिमै यादु निन्ऱ
मादरार् कण्ग ळूडे वावुमान् ऱेरिऱ् पोनान्
यादिनु मुयर्न्दोर् तन्नै यावर्क्कुङ् गण्ण नॅन्ऱ
ओदिय पॅयर्क्कुत् ताने युरुपॉरु ळुणर्त्ति विट्टान् 1145

वीतिवाय् चॅल्किन्ऱान् पोल्–वीथी में जाते हुए से; विळित्तु इमैयातु निन्ऱ–आँखें फाड़कर देखती हुई जो खड़ी रहीं उन; मातरार् कण्कळ् ऊटे–स्त्रियों की आँखों में से होकर; वावुम् मान् तेरिल्–सरपट दौड़नेवाले अश्वों के जुते रथ में; पोनान्–जो गये; यातिनुम् उयर्न्तोर्–सर्वश्रेष्ठ महात्मा लोग; यावर्क्कुम् कण्णन्–सबके नेत्र (में रहनेवाले) या सब जिनके नेत्रों में है); अॅन्ऱु–जो कहते हैं उस; तन्नै ओतिय पॅयर्क्कु–अपने लिए दिये गये नाम के; उरु पॉरुळ्–सही अर्थ; ताने उणर्त्तिविट्टान्–स्वयं साबित कर दिया। ११४५

श्रीराम वीथी में सरपट दौड़नेवाले अश्वों के जुते रथ पर आरूढ़ होकर जो गये तो उन स्त्रियों की निर्निमेष आँखें इतनी तन्मयता के साथ देख रही थी कि वह उनके दृष्टि-पथ में गये —ऐसा कहा जा सकता था। इसके आधार पर जो सर्व प्रकार से श्रेष्ठ महात्मा लोगों ने उन्हें "कण्णन्"

(नेत्री) नाम दिया उसको उन्होंने स्वयं सार्थक साबित कर दिया। कण्णन् का अर्थ है— वह जो सबकी आँखें हैं, या जिनकी आँखों में सब हैं, या जो सबकी आँखों में हैं। ११४५

ऍण्कडन् दलहि लादिन् ऱेहुरु मिवन्ऱे रॆन्ऱु
पॆण्गडन् दम्मि नॊन्दु पेदुरु हिन्ऱ वेलै
मण्गडन् दमरर् वैहुम् वान्गडन् दानैत् तान्ऱन्
कण्गड वामर् कात्त कारिहै पॆरिय ळेकाण् 1146

इन्ऱु–आज; इवन् तेर्–इन (श्रीराम का) रथ; ऍण् कटन्तु–मनोगति को पारकर; अलकु इलातु–अपार (वेग के साथ); एकुऱुम् ॲन्ऱु–भागता है, यह; पॆण्कळ्–बालाएँ; तम् तम्मिल्–आप अपने साथ; नॊन्तु–दुखी होकर; पेतु उऱुकिन्ऱ वेलै–(जब) व्यथित हो रही थीं, उस समय; मण् कटन्तु–(त्रिविक्रम के अवतार में) भूमि नापकर; अमरर् वैकुम् वान् कटन्तानै–देवों के (वासस्थान) स्वर्ग को भी जिन्होंने पार किया था, उनको; तान्–अकेली उन्होंने (सीताजी ने); तन् कण् कटवामल्–अपनी दृष्टि से बाहर जाने न देकर; कात्त–रोक रखा; कारिकै–वे ललित सीताजी; पॆरियळे–अवश्य बड़ी (सामर्थ्यशीला) हैं। ११४६

(कवि का कथन है—) आज स्त्रियों की शिकायत है कि श्रीराम का रथ मनोगति से भी बढ़कर अपार तीव्रगति से भागता है। उनको दुख है कि वे उनको अपनी दृष्टि में रोक (ध्यान में ले) नहीं पातीं। वे क्षुब्ध थीं। लेकिन उस दिन इह-परलोकों को अपने चरणों से नापने वाले त्रिविक्रम देव के इन अवतार श्रीराम को एक ही क्षण के लिए सीताजी ने देखा। तो भी उन्होंने, "आँखों से होकर घुसनेवाले चोर को", "पलक-कपाट देकर" सुरक्षित कर लिया था। अवश्य वे सबसे अधिक चतुर हैं। ११४६

पयिरॊन्ऱु कलैयुञ् जङ्गुम् पळिप्परु नलनुम् पण्बुम्
शॆयिरिन्ऱि यलर्न्द पॊऱ्पुञ् जिन्दयु मुणर्वुन् देशुम्
वयिरञ्जॆय् पूणु नाणु मडनुन्द निऱैयु मऱ्ऱुम्
उयिरॊन्ऱु मॊळिय वॆल्ला मुहुत्तॊरु तॆरिवै निन्ऱाळ् 1147

ऑरु तॆरिवै–एक तरुणी; तन् उयिर् ऑन्ऱुम् ऑळिय–अपना प्राण, एक, छोड़कर; निऱैयुम्–संयम; मटनुम्–संकोच (अबोधता); नाणुम्–और लाज; पयिर् ऑन्ऱु कलैयुम्–(नया होने के कारण) फरफर शब्दयुक्त वस्त्र; चङ्कुम्–शंखकंकण; पळिप्पु अरु नलनुम्–अनिन्दनीय श्रेष्ठ कार्य; पण्पुम्–श्रेष्ठगुण और; चॆयिर् इन्ऱि अलर्न्त पॊऱ्पुम्–निर्दोष शोभा की सुन्दरता; चिन्तैयुम्–मन (विवेक) और; उणर्वुम्–प्रज्ञा; तेचुम्–तेज; वयिरम् चॆय् पूणुम्–हीरे के आभरण; मऱ्ऱुम् ॲल्लाम्–अन्य (स्त्रियोचित) सभी; उकुत्तु–गिराकर (छोड़कर); निन्ऱाळ्–(निष्क्रिय) खड़ी रही। ११४७

एक युवती स्त्री श्रीराम को देखने आयी। श्रीराम का रथ चला गया। वह उसको पीछे से देखती हुयी निष्क्रिय खड़ी रह गयी। अब उसके पास सिर्फ़ प्राण थे। बाकी सब स्त्रियोचित गुण और अलंकार हट गये। संयम, संकोच या अबोधता नहीं रहीं। वस्त्र खिसक गये। शंखकंकण गिर गये। हीरे के आभरण गिर गये। वह उचित कार्य भूल गयी। उसके श्रेष्ठ गुण हट गये। उसकी अनिन्द्य सुन्दरता, विवेक, प्रज्ञा, तेज सब नही रह गये। ११४७

कुऴैयुऱा मिळिरुङ् गॅण्डै कॉण्डलि नालि शिन्दत्
तळैयुऱाक् करुम्बित् शाबत् तनङ्गवेळ् शरङ्गळ् पाय्न्द
इळैयुऱाप् पुण्ण ऱाद विळमुलै यॊरुत्ति शोर्न्दु
मळैयुऱा मिन्नि नन्न मरुङ्गुल्पो नुडङ्गि निन्ऱाळ् 1148

तळै उऱा–पत्तों से हीन; करुम्प चापत्तु–ईख के धनुर्धर; अनङ्कवेळ्–अनंगदेव के; चरङ्कळ् पाय्न्त–शरकृत; पुण् अऱात–व्रण सहित; इळै उऱा–सूत्रांतर भी न रखनेवाले (सटे हुए); इळ मुलै ऑरुत्ति–तरुणस्तनी एक; कुऴै उऱा मिळिरुम्–कुण्डलों तक पहुँचनेवाली; कॅण्टै–"कॅण्डै" नाम की मछलियों (सी आँखों) से; कॊण्टलिन्–मेघों के समान; आलि चिन्त–अश्रुधारा बहाते हुए; चोर्न्तु–बहुत श्रांत होकर; मऴै उऱा मिन् अन्न–मेघेतर (स्थान की) विजली के समान; मरुङ्कुल् पोल्–कमर के समान; नुटङ्कि निन्ऱाळ्–लचक खाती खड़ी रही। ११४८

एक ललितांगी जिसके स्तनों के बीच सूत्र भी नहीं जा सकता था, और जो कामशर से आहत थे, अपनी कर्णकुंडल तक गयी हुयी आयत मछली-सी आँखों से मेघ के समान अश्रुकण बरसाती हुयी उसी की उस कमर के समान, जो मेघों में न पायी जानेवाली (विलक्षण) बिजली सदृश थी, बल खाती रही। ११४८

पञ्जिवर् विरलि नार्तम् पडैनॆंडुङ् गण्ग ळॆल्लाम्
शॆञ्जॆवे यैयन् मॆय्यिर् करुमैयैच् चेर्न्त वोदाम्
मञ्जन मेनि यान्ऱन् मणिनिऱ माद रार्तम्
अञ्जन नोक्कम् पोर्क्क विरुण्डदो वऱिहि लेमाल् 1149

पञ्चु इवर्–महावर से अलंकृत; विरलिनार् तम्–आँखोवालियों की; पटै नॆंटु–(तलवार या भाले के) अस्त्रसम और दीर्घ; कण्कळ् ऍल्लाम्–आँखें सब; चॆञ्चॆवे–खूब; ऐयन् मॆय्यिल् करुमैयै–प्रभु के शरीर की नीलिमा को; चेर्न्तवो–प्राप्त कर गईं;। मञ्चु अन्न मेनियान् तन्–या मेघसम शरीरवाले का; मणि निऱम्–वह सुन्दर रंग; मातरार् तम्–स्त्रियों के; अञ्चन नोक्कम्–अंजनयुक्त नेत्र; पोर्क्क–लगे, इसलिए; इरुण्टतो–नीला हो गया; अऱिकिलेम्–नहीं जानते। ११४९

स्त्रियों की आँखें काली हैं और श्रीराम का शरीर भी काला या नीला है। अब लाक्षारसलिप्त उँगलियोंवाली उन स्त्रियों की, तलवार

या भाले जैसे हथियार-सदृश आँखों में श्रीराम के शरीर का नीला रंग आकर लग गया ? या श्रीराम के शरीर पर उन अंजनलिप्त आँखें जाकर लगीं; इस कारण उनका शरीर काला हो गया ? कौन जाने ? । ११४९

मान्दळिर् मेनि याळोर् वाणुदन् मदन तॅङ्गुम्
पून्दुणर् वाळि मारि पॉळिहिन्ऱ पूश नोक्कि
वेन्दर्को नाणै नोक्कान् वीरन्वि लाण्मै परान्
एन्दिळैयारै यॅय्वान् यावनो वॉरुव नॅन्ऱाळ् 1150

मा तळिर् मेनियाळ्–आम्रपल्लव सदृश शरीरवाली; ओर् वाळ् नुतल्–एक उज्ज्वल ललाट की स्त्री; मतनन्–मदन के; अॅङ्कुम्–सर्वत्र; पू तुणर् वाळि मारि–पुष्पशर वर्षा; पॉळिकिन्ऱ–करने का; पूचल्–टंटा; नोक्कि–देखकर; वेन्तर्कोन् आणै नोक्कान्–राजाधिराज की आज्ञा नहीं देखता; वीरन्–(श्रीराम) वीर का; विल् आण्मै परान्–धनुकर्म पौरुष नहीं देखता; एन्तु इऴैयारै–आभरणभूषित स्त्रियों पर; अॅय्वान् ऑरुवन्–अस्त्र चलाता है एक; यावनो–कैसा है वह; अॅन्ऱाळ्–कहा । ११५०

आम्रपल्लव-सी सुन्दरांगी एक ने देखा कि मन्मथ सब पर अपना पुष्पशर बरसा रहा है। (सभी स्त्रियाँ कामप्रेरित हो अकुलाहट दिखा रही थीं।) यह टंटा देखकर वह पूछने लगी कि यह कौन है जो राजाधिराज (जनक या दशरथ) की आज्ञा को अनसुनी करके और वीर कुमार श्रीरामचन्द्र के धनु-पराक्रम का ख्याल किये विना इस तरह आभरणधारिणी स्त्रियों पर अपने शर फेंक रहा है ? वह कैसा शख्स है ? । ११५०

विऱ्ऱङ्गु पुरुव नॅऱ्ऱि वॅयर्वरप् पशलै विम्मिच्
चुऱ्ऱॅङ्गु मॅऱिप्प वुळ्ळञ् जोरवोर् तोहै निन्ऱाळ्
कॉऱ्ऱञ्जॅय् कॉलैवे लॅन्नक् कूऱ्ऱॅनक् कॉडिय कण्णाळ्
मऱ्ऱॊन्ऱुङ् गाण्गि लादाळ् तमियनो वळ्ळ लॅन्ऱाळ् 1151

कॉऱ्ऱम् चॅय्–विजयदायक; कॉलै वेल् अॅन्न–संहारक भाले के सदृश; कूऱ्ऱु अॅन–और यम सदृश; कॉटिय कण्णाळ्–निर्मम आँखोंवाली; ओर–एक; तोकै–मयूराभा स्त्री; विल् तङ्कु पुरुवम् नॅऱ्ऱि–धनुसम भौंहों से युक्त ललाट में; वॅयर् वर–पसीना होने से; पचलै विम्मि–विवर्णता फैली; चुऱ्ऱु अॅङ्कुम् अॅऱिप्प–और चारों ओर अपनी सुन्दरता विखेरती; उळ्ळम् चोर–मन मारकर; निन्ऱाळ–खड़ी रही; मऱ्ऱु ऑन्ऱुम्–और किसी को; काण् किलाताळ्–नहीं देखती; वळ्ळल् तमियनो–क्या उदार प्रभु अकेले है; अॅन्ऱाळ्–कहा । ११५१

एक स्त्री के जिसकी आँखें विजयी और संहारक भाले के समान और यम जैसी थीं और रूप मोर की-सी आभा लिये हुये था, धनु-सम भौंहों के ललाट में स्वेदकण निकल आया। उसके शरीर भर में (विरहताप से फैलनेवाली) अनोखी, सुन्दर विवर्णता फैल गयी। उसका मन दुखाक्रान्त

था। वह अपने चारों ओर श्रीराम के सिवा और किसी को नहीं देखती थी। इसलिए उसने पूछा कि उदार प्रभु (मुझ पर कृपा करने के लिए) आये है ? वह भी अकेले ? । ११५१

तॊऩ्ऩयऩ् दॊडर्ऩ्द कामच् चुवैययो रुरुव माक्कि
इऩ्ऩयऩ् दॆरिय वल्ला ऩॆऴुदिय दॆऩ्ऩ निऩ्ऱाळ्
पॊऩ्ऩयम् बॊरुवु नीराळ् पुऩैन्दऩ वॆल्लाम् बोहत्
तऩ्ऩयुऩ् दाङ्ग लादा डुहिलॊऩ्ऱुऩ् दाङ्गिक् कॊण्डाळ् 1152

इऩ् नयम् तॆरिय वल्लाऩ्–मनोहरता की श्रेष्ठता को पहचानने में कुशल चितेरे ने; तॊल्नयम् तॊटर्न्त–प्राचीन (आरम्भ) काल से ही विशिष्टता प्राप्त; कामम् चुवैयै–श्रृंगार रस को; ओर् उरुवम् आक्कि–एक (स्त्री का) रूप देकर; ऎऴुतियतु ऎऩ्ऩ–बनाया है, ऐसी; निऩ्ऱाळ्–खड़ी थी (जो); पॊऩ्नयम् पॊरुवुम् नीराळ्–स्वर्ण की श्रेष्ठता की समानता करनेवाली, विलक्षणतावाली एक; पुऩैन्तऩ ऎल्लाम् पोक–अलंकार की सभी चीजें छूटने देकर; तऩ्ऩैयुम् ताङ्कलाताळ्–अपने को भी सँभाल न पाकर; तुकिल् ऒऩ्ऱुम्–वस्त्र एक (केवल); ताङ्किक् कॊण्टाळ्–सँभाल लिया। ११५२

एक स्वर्ण-सम श्रेष्ठ सुन्दरी, जो उस चित्र के समान थी जिसको रम्यता का लक्षण परखनेवाले चतुर चित्रकार ने पुरातन काल से श्रेष्ठ माने जानेवाले श्रृंगार-रस का मानवीय रूप देकर रचा था, वहाँ खड़ी थी। उस पर श्रृंगार का कोई साधन नहीं रह गया था। वह अपने को भी सम्हाल नही पाती थी। मुश्किल से केवल वस्त्र को गिरने से रोक रख सकी थी। ११५२

मैक्करुङ् गूऩ्दऱ् चॆव्वाय् वाणुद लॊरुत्ति युळ्ळम्
नॆक्कऩ ळुरुहु हिऩ्ऱा ऩॆञ्जिडै वञ्जऩ् वऩ्दु
पुक्कनऩ् पोहा वण्णङ् कण्णॆऩुम् पुलङ्गॊळ् वायिल्
शिक्कॆऩ वडैत्तेऩ् ऱोऴि शेरुदु ममळि यॆऩ्ऱाळ् 1153

मै करु कूऩ्तल्–अंजन-सम काला केश; चॆव्वाय्–लाल मुख; वाळ् नुतल्–उज्ज्वल ललाट; ऒरुत्ति–(इनकी) एक; उळ्ळम् नॆक्कतळ्–मन अनुरक्त होकर; उरुकुकिऩ्ऱाळ्–पिघलती है; तोऴि–सखि; वञ्चऩ्–वंचक; वऩ्तु–(आँखों द्वारा) आकर; नॆञ्चु इटै पुक्कतऩ्–मन में घुस गये; पोका वण्णम्–जाने न पावे इस प्रकार; कण् ऎऩुम्–आँख रूपी; पुलम् कॊळ् वायिल्–आनेजाने का मार्ग देनेवाले द्वार को; चिक्कॆऩ अटैत्तेऩ्–दृढ़रूप से बन्द कर दिया; अमळि चेरुतुम्–शय्या को जायेंगे; ऎऩ्ऱाळ्–कहा। ११५३

एक सुन्दरी थी जिसका केश काला, मुख लाल, और ललाट उज्ज्वल था। उसका मन श्रीराम के प्रेम में द्रवीभूत हो गया। उसने अपनी सखी से कहा— सखि ! मायावी (श्रीराम) ने आँखों के मार्ग से मेरे मन

के अन्दर प्रवेश किया। मैंने उस मार्ग को रोक दिया है। अब वह बाहर जा नहीं सकेंगे। चलो हम अब अपनी शय्या की ओर चलें। ११५३

ताक्कणङ् गत्तैय मेन्नि तैत्तवेळ् शरङ्गळ् पाराळ्
वीक्किय कलैयुन् दूशुम् वेरुवे ड्रान्न दोराळ्
आक्किय पावै यन्ना ळॊरुत्तिबाण् डमलन् मेन्नि
नोक्कुहिन् ड्रारै यॅल्ला मॅरियॅळ नोक्कि निन्ड्राळ् 1154

आण्टु–वहाँ; आक्किय पावै अन्नाळ् ऑरुत्ति–(चतुर शिल्पी द्वारा खूब सोचकर) निर्मित एक प्रतिमा-सी एक; ताक्कु अणङ्कु अन्नैय–मन को पीड़ा देनेवाली मोहनी देवता के से; मेन्नि तैत्त–(उसके) शरीर पर चुभे; वेळ् चरङ्कळ्–काम के शरों का; पाराळ्–विचार नहीं करती; वीक्किय–कमर पर बँधे; तूचुम्–वस्त्र और; कलैयुम्–मेखला; वेरु वेरु आनतु–अलग-अलग हो गई; ओराळ्–इसकी सुध नहीं ली; अमलन् मेन्नि नोक्कुकिन्ड्रारै–निर्मल श्रीराम के रूप के दर्शकों को; ॲरि ॲळ–अंगारे उगलते हुए; नोक्कि निन्ड्राळ्–(क्रोध से) देखती खड़ी रहती है। ११५४

एक स्त्री थी जिसकी बनावट उस शिल्प के समान थी जिसको बहुत ही कुशल शिल्पी ने बहुत यत्न से बनाया था। उसका मोहनी देवी का सा रूप था जो किसी को भी प्रेमदग्ध कर सकता था। वह अपनी कामशरतप्त हालत की भी परवाह नही करती; वस्त्र और मेखला अलग-अलग हो गयी; उसका भी विचार नहीं करती। पर अति ईर्ष्यालू और ऐकांतिक प्रेमवाली वह श्रीराम को जो भी देख रही थी उसको क्रोध के साथ घूरती थी, वह समझती थी कि उन पर अकेले मेरा अधिकार है और उन पर अन्यों के देखने से बुरी नज़र पड़ जायगी। ११५४

कळिप्पन मदर्प्प नीण्डु कदुप्पिनै यळप्प कळ्ळम्
ऑळिप्पन वॅळिप्पट् टोडप् पार्प्पन शिवप्पु ळूड्र
वॅळुप्पन करुप्प वान वेऱ्कणा ळॊरुत्ति युळ्ळम्
कुळिर्प्पॊडु काणवन्दाळ् कॊदिप्पॊडु कोयिल् पुक्काळ् 1155

कळिप्पन–मोद भरी; मतर्प्प–मस्ती भरी; नीण्टु–लम्बी बनकर; कतुप्पिनै अळप्प–केश को नापनेवाली; कळ्ळम् ऑळिप्पन–वंचना को छिपाये रखनेवाली; वॅळिप्पट्टु–कभी (मन की बात को) प्रकट करके; ओट पार्प्पन–दृष्टि चलाकर देखनेवाली; चिवप्पु उळ् ऊड्र–लालिमा को अन्दर रखकर; वॅळुप्पन–सफेद रहनेवाली; करुप्प आन–कहीं काली रहनेवाली; वेल् कण्णाळ्–भाला-सी आँखोंवाली; ऑरुत्ति–एक; उळ्ळम् कुळिर्प्पॊटु–मन में उमंग के साथ; काण वन्ताळ्–दर्शन करने आई; कॉतिप्पॊटु–ताप के साथ; कोयिल् पुक्काळ्–अपने भवन में चली। ११५५

एक सुन्दरी थी जिसकी आँखें विलक्षण थीं। वे मोदभरी थीं और मस्ती लिये थीं। वे इतनी लम्बी थी कि लगता था कि वे केश को नापती थीं। उनके अन्दर मोहकता छिपी थी इसलिए उनमें वंचना भरी थी।

कभी-कभी वह मोहकता प्रकट भी हो जाती और वे लोगों पर दौड़तीं। लाल डोरों के साथ सफ़ेदी और काले रंग से युक्त थीं। आकार और कृत्य में भाला-सी थीं। ऐसी आँखोंवाली बड़ा उत्साह लेकर श्रीराम के दर्शन करने के लिए आई। पर दर्शन मिल नहीं सका तो क्रोध और काम के कारण ताप लेकर लौटी। ११५५

करुङ्गुळऱ् पारम् वाऱ्हॉळ् कन्नमुलै कलैशू ऴ्लहुल्
नॅरुङ्गिन मऱैप्प वाण्डोर् नीक्किडम् वॅऱादु विम्मुम्
पॅरुन्दडङ् गण्णि काणुम् पेरॅऴि लाशै तूण्ड
मरुङ्गुलिन् वॅळिह ळूडे वळ्ळल नोक्कु हिन्ऱाळ् 1156

करु कुऴल् पारम्–काले केशजाल; वार् कॉळ्–अँगिया-बद्ध; कन्नम् मुलै–पीन स्तन; कलै चूऴ्–वस्त्रवेष्टित; अलकुल्–नितम्ब; नॅरुङ्कित्त–भीड़ लगाकर; मऱैप्प–रास्ता रोकते हैं, इसलिए; आण्टु–वहाँ; ओर् नीक्कु इटम् पॅऱातु–कहीं दृष्टि-मार्ग न पाकर; विम्मुम्–दुखपूरित; पॅरु तट कण्णि–विशाल और आयत आँखोंवाली एक; पेर् ऍऴिल् काणुम्–अत्यधिक सुन्दरता को देखने की; आचै तूण्ट–इच्छा से प्रेरित होकर; वळ्ळलै–प्रभु को; मरुङ्कुलिन् वॅळियिन् ऊटे–(उन स्त्रियों की) कटि के बीच के स्थान से; नोक्कुकिन्ऱाळ्–देखती है। ११५६

एक स्त्री ने पीछे रहकर श्रीराम को देखना चाहा पर काले केश, कंचुकीबद्ध पीनस्तन, वस्त्रावृत नितम्ब, ये सब घने रूप से सटे रहकर दृष्टिमार्ग को रोक रहे थे। पर दर्शन की लालसा अदम्य थी। प्रभु श्रीराम को वह स्त्रियों की क्षीण कटियों के मध्य जो स्थान पाया गया उसके मार्ग से देखने लगी। ११५६

वरिन्दवा ळनङ्गन् वाळि मतङ्गळन् ऱनवु मादर्
ॲरिन्दपू णिनमुङ् गॊङ्गै वॆयर्त्तपो दिऴिन्द शान्दुम्
शरिन्दमे हलैयु मुत्तुञ् शङ्गमुन् दाऴ्न्द कून्दल्
विरिन्दपून् दॊडैयु मन्ऱि वॆळ्ळिडै यरिदव् वीदि 1157

अव्वीति–मिथिला की वीथियों में; वरिन्त वाळ्–तलवार बाँधे; अनङ्कन् वाळि–अनंग के शर; मतम् कळन्ऱनवुम्–जो (स्त्रियों के मनों को निफरकर निकले और भूमि पर गिरे थे; मातर्–उन स्त्रियों के; ॲरिन्त–(आग के समान) प्रदीप्त; पूण् इनमुम्–आभरणसमूह; कॊङ्कै वॆयर्त्त पोतु–जब स्तनों पर पसीना हुआ; इऴिन्त चान्तुम्–तब गिरा चन्दन (लेप); चरिन्त मेकलैयुम्–खिसककर गिरी मेखलाएँ; मुत्तुम्–मुक्ताहार; चङ्कमुम्–शंखकंकण; ताऴ्न्त कून्तल्–लटकनेवाले केश को; विरिन्त–विस्तृत रूप से जो पहनी गई थीं; पू तॊटैयुम् अन्ऱि–उन पुष्पमालाओं के अलावा; वॆळ् इटै अरितु–रिक्त स्थान नहीं था। ११५७

मिथिला की उन वीथियों में, जहाँ श्रीराम का रथ जा रहा था, तलवारवाले अनंग के शर जो स्त्रियों के मनों को निफरकर निकले और

भूमि पर गिर गये थे, उन स्त्रियों के दीप्त आभरण, स्तनों के स्वेद से नीचे गिरा हुआ चंदन, कटिप्रदेश से गिरी हुयी मेखलाएँ, और शंखकंकण तथा केशों से गिरी मालाएँ— ये ही भरी थीं। कोई रिक्त स्थान नहीं था। ११५७

❀ तोळ्कण्डार् तोळेकण्डार् तॉडुकळ्ऴ् कमलमन्न
ताळ्कण्डार् ताळेकण्डार् तडक्कैकण् डारुम.·.दे
वाळ्कॉण्ड कण्णार्यारे वडिविन्नै मुडियक्कण्डार्
ऊळ्कॉण्ड शमयत्तन्ना नुरुवुकण्डारै यॉत्तार् 1158

वाळ् कॉण्ट कण्णार्—तलवार-सी आँखोंवाली उन स्त्रियों में; तोळ् कण्टार्—जिन्होंने (श्रीराम की) भुजाएँ देखीं; तोळे कण्टार्—उन्होंने भुजाएँ ही देखीं; तॉटु कळ्ऴल्—कसे हुए पायल के; कमलम् अन्न—कमल के समान; ताळ् कण्टार्—श्रीचरण जिन्होंने देखे; ताळे कण्टार्—उन्होंने श्रीचरण ही देखे; तट कै कण्टारुम्—विशाल हस्तदर्शक की भी; अ.·.ते—वही स्थिति थी; वटिविन्नै—उनके सौम्य रूप को; मुटिय कण्टार् यार्—पूर्णरूप से देखा किसने था; ऊळ् कॉण्ट समयत्तु—प्रौढ़ता प्राप्त मतों में; अन्नान् उरुवु—उन परब्रह्म का रूप; कण्टारै—जिन्होंने जाना था; ऑत्तार्-उनके समान थीं (ये स्त्रियाँ)। ११५८

(यह पद बहुप्रशंसित पद है—) संसार में जो अनेक प्रौढ़ताप्राप्त धर्म या संप्रदाय है उनमें हर एक की परब्रह्म संबंधी कल्पना भिन्न-भिन्न है। हर मतावलम्बी उस मत के द्वारा निर्दिष्ट रूप को ही देखता है और उसी में रम जाता है। इसी प्रकार उस दिन जिन स्त्रियों ने श्रीराम के दर्शन किये उनमें जिन्होंने उनकी भुजाएँ देखी वे उसी में रम गयीं। जिनको वीर कंकणधारी के श्रीचरणों के दर्शन मिले वे उन्ही पर ध्यान दिये रह गयीं। विशाल हाथों का दर्शन जिन्हें प्राप्त हुआ उनकी भी वही दशा हुयी; अर्थात वे उन्हीं में दृष्टि दिये रह गयी। उनमें कौन ऐसी थी जिसने उनका संपूर्ण रूप देखा ? कोई नही। वे मतावलम्बियों के समान रहीं जो परब्रह्म के अपने-अपने मत के द्वारा निर्दिष्ट रूप को ही देखते हैं, समूचा रूप नहीं देख पाते। (श्रीराम का हर अंग बड़ा सुन्दर था।)। ११५८

तैयल् शिऱ्ऱिडै याळॊरु ताळ्कुळल्, उय्य मऱ्ऱव ळुळ्ळत् तॊडुङ्गिनान्
वैय मुऱ्ऱुम् वयिऱ्ऱि तडक्किय, ऐय निऱ्पॆरि यारिन्नि यावरे 1159

ताळ् कुळल्—लम्बा केश; चिऱु इटैयाळ्—क्षीण कटिवाली; ऑरु तैयल—एक नारी; उय्य—जी जाय, इसलिए; अवळ् उळ्ळत्तु—उसके मन में; ऑटुङ्किनान्—बस गये; वैयम् मुऱ्ऱुम्—सारी सृष्टि को; वयिऱ्ऱिन् अटक्किय—अपने पेट में समा लेनेवाले; ऐयनिन्—प्रभु से बढ़कर; पॆरियार्—महिमावान; इन्नि यावर्—अब कौन हैं ? ११५९

एक लम्बा केश और छोटी कमरवाली स्त्री आयी। उसका जीवन बचाने के लिए श्रीराम उसके मन में समाहित हो गये। (उस स्त्री ने बाहर न देखकर अन्तस्तल में ही श्रीराम के रूप की कल्पना कर ली।) सारे लोकों को उन्होंने अपने पेट के अन्दर समाहित कर लिया था। उनसे बड़े कौन हो सकते ? वे भी आज एक छोटी स्त्री के छोटे मन में समा गये। ११५९

अलम्बु पारक् कुऴलियॉ रायिऴै
शिलम्बु मेहलै युन्जिलम् बत्तन्नि
नलम्बॅय् कॉम्बि नडन्दुवन् दॅय्दिन्नाळ्
पुलम्बु शेडियर् कैमिशैप् पोयिन्नाळ् 1160

अलम्पु–हिलनेवाले; पारम्–भारी; कुऴलि–केशवाली; ओर् आय् इऴै–चुने हुए आभरणों से भूषित एक स्त्री; चिलम्पुम्–नूपुर और; मेकलैयुम्–मेखला को; चिलम्प–बजने देते हुए; तत्ति–अकेली (स्वयं); नलम् पॅय् कॉम्पिन्–सुष्ठ पुष्पशाखा के समान; नटन्तु वन्तु ॲय्तिनाळ्–चलती हुई आई; पुलम्पु–प्रलाप करनेवाली; चेटियर् कै मिचै–चेरियों के हाथों पर; पोयिन्नाळ्–गई। ११६०

हिलते केशभाराक्रान्ता और उत्तम आभरणभूषिता एक स्त्री मेखला और नूपुर के नाद के साथ स्वतः विना किसी को साथ लिए पुष्पशाखा के समान 'अपने चरणों पर' (पैदल चलती) आयी। पर (श्रीराम को न पाकर) वह चेरियों के 'हाथों पर' (सहारे) लौटी। (उसकी स्थिति ऐसी हो गई कि चेरियों को सहारा देकर उसको उसके भवन में ले जाना पड़ा।)। ११६०

अरुप्पु मॅन्मुलै याळङ्गॉ रायिऴै
इरुप्पु नॅञ्जिनै यॅन्नुमो रेऴैक्काप्
पॉरुप्पु विल्लैप् पॉडिशॅय्द पुण्णिया
करुप्पु विल्लिरुत् ताट्कॉण्डु कावॅन्ड्राळ् 1161

अङ्कु–वहाँ; अरुम्पु मॅन् मुलैयाळ्–कोंगु (सेमर) की कली के समान स्तनवाली; ओर् आय् इऴै–चुने हुए आभरणों से अलंकृत एक स्त्री; ओर् एऴैक्काक–एक अबला के लिए; पॉरुप्पु विल्लै–एक पर्वत-सम धनु को; पॉटि चॅय्त–चूर करनेवाले; पुण्णिया–पुण्यकर्मी; इरुम्पु नॅञ्चिनै येतुम्–लोहे का मन वाले हो तो भी; करुम्पु विल् इऱुत्तु–ईख का धनु तोड़कर; आळ् कॉण्टु–मुझे दासी बना लेकर; का–मेरी रक्षा करो; ॲन्ड्राळ्–कहा। ११६१

सेमरकली-सम स्तन और चुने हुए आभरणवाली एक स्त्री ने श्रीराम से मन ही मन पूछा— कि आपने एक स्त्री के लिए पर्वतसम धनु को चूर किया। ऐसे पुण्यमूर्ति आप अब, हमारी ओर से विमुख,

लौह-दिलवाले हों तो भी मन्मथ का ईख का धनु तोड़कर हमें दासी बनाइये और हमारी जान बचाइए। ११६१

मैद वळ्ऩ्द करुङ्गणोर् वाणुदल्, शॅय्द वत्ऱऱित् तेर्मिशैच् चेऱल्विट्
टॅय्द वन्दॅदिर् निऩ्ऱमै तानिदु, कैद वङ्गॉल् कनवुहॉ लोवॅऩ्ऱाळ् 1162

मै तवळ्ऩ्त-अंजन से युक्त; करु कण्-काली आँखों की; ओर् वाळ् नुतल्-(और) उज्ज्वल ललाटवाली एक स्त्री; चॅय् तवत्-सफल तपस्वी श्रीराम; तत्ति तेर् मिचै-अनुपम रथ पर; चेऱल् विट्टु-जाना छोड़कर; ॲय्त वन्तु-मेरे पास पहुँचकर; ॲतिर् निऩ्ऱमै इतु-सामने खड़े रहे, यह बात; कैतवम् कॉल्-माया है क्या; कतवु ओ-या स्वप्न है; ॲऩ्ऱाळ्-कहा। ११६२

अंजनलगी आँखों और उज्ज्वल ललाटवाली को भ्रम हो गया कि श्रीराम उसके सामने आ उपस्थित हैं। उसे संदेह भी हो रहा था। उसने कहा कि श्रीराम ने पूर्वजन्म में बड़ी तपस्या की होगी। तभी सीता का और मेरा मन उनके मोह में पड़ गये हैं। अब वे रथ पर जाना छोड़कर मेरे सामने आकर खड़े है। यह माया है या मेरा स्वप्न ही है ?। ११६२

मादॉ रुत्ति मऩत्तिनै यल्लदोर्, तूदु पॅऱ्ऱिल ळिऩ्नुयिर् शोर्हिऩ्ऱाळ्
पोद रिक्कट् पॊलङ्गुळैप् पूण्मुलैच्, चीदै यॅत्तवञ् जॅय्दऩ ळॊवॅन्ऱाळ् 1163

मातु ऑरुत्ति-एक दयिता; मऩत्तिनै अल्लतु-मन के सिवा; ओर् तूतु पॅऱ्ऱिलळ्-एक दूत नहीं पा सकी; इऩ् उयिर् चोर्किऩ्ऱाळ्-प्यारे प्राण लट जाते हैं; पोतु अरि कण्-पुष्पतुल्य डोरेयुक्त आँखें; पॊलम् कुळै-स्वर्णकुण्डल; पूण् मुलै-आभरण-शोभित स्तन; चीतै-सीतादेवी ने; ॲ तवम् चॅय्तऩळो-कैसी तपस्या की है (कि इन्हें पति के रूप में पा सकीं); ॲऩ्ऱाळ्-कहा। ११६३

एक स्त्री थी जिसके पास अपने मन के सिवा कोई दूत नही था। बेचारी वह आप ही आप अपनी व्यथा कहकर घुल रही थी। उसने कहा कि पुष्पसदृश डोरे युक्त आँखों, स्वर्णकुण्डलों और आभरणमंडित स्तनोंवाली सीता ने कैसी तपस्या की है ? (कि उन्हें श्रीराम जैसे पति मिल गये। उसके अंग कृतकृत्य हो गये कि श्रीराम उनको भोगेंगे।)। ११६३

पळुदि लाददोर् पावयऩ् ऩाळ्पदैत्
तळुदु वॅय्दुयिर्त् तऩ्बुडैत् तोळियैत्
तॊळुदु शोर्न्दयर् वाळिऩ्दत् तोऩ्ऱलै
ॲळुद लाहुङ्गॊन् मऩ्मद नालॅऩ्ऱाळ् 1164

पळुतु इलाततु—दोष-रहित; ओर् पावै अऩ्नाळ्-चित्र प्रतिमा-सम एक; पतैत्तु-अकुलाकर; अळुतु-रोकर; वॅय्तु उयिर्त्तु-गरम निश्वास छोड़कर; चोर्न्तु-लटकर; अयर्वाळ्-दुखती जो थी; अऩ्पु उटै(य) तोळियै-प्यारी सखी को; तॊळुतु-नमस्कार कर; इऩ्त तोऩ्ऱलै-इन पुरुषोत्तम को; मऩ्मतनाल्-मन्मथ से भी; ॲळुतल् आकुम् कॊल्-चित्रार्पित कर सकता है क्या। ११६४

दोषहीन चित्र के समान सुन्दर एक तरुणी अत्यधिक प्रेम से व्याकुल हुयी। रोने और लम्बी साँसें भरने लगी। शिथिल और श्रांत होकर उसने अपनी सखी से नमस्कार करके कहा कि इन पुरुषोत्तम (श्रीराम) का मन्मथ भी चित्र बना सकता है क्या ? । ११६४

वण्ण वायॉरु वाणुदल् मानिडर्क्, कॅण्णुङ् गालिव् विलक्कण मॅय्दिड
ऑण्णु मोवॊन् ऱुणर्त्तुहिन् ऱेनिवन्, कण्ण नॆयिडु कण्डिडुम् विन्ऩॆन्ऱाळ् 1165

वण्णम् वाय्–सुन्दर मुख; ओर् वाळ् नुतल्–एक उज्ज्वल ललाटवाली ने; ऍण्णुङ्काल्–सोचने पर; मानि टर्क्कु–मनुष्यों में (किसी को भी); इव् इलक्कणम्–ये लक्षण; ऍय्तिट ऑण्णुमो–प्राप्त हो सकते हैं क्या; ऑन्ऱु उणर्त्तुकिन्ऱेन्–एक बात समझाऊँगी; इवन् कण्णने–ये कण्णन् ही (श्रीनारायण ही) हैं; इतु पिन् कण्टिटुम्–यह पीछे जान लोगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। ११६५

मनोहर मुख और मनोरम ललाटवाली एक ने अपने पास रहनेवालियों से यों कहा। "सोचकर देखो, मनुष्यों में किसी के पास ये दैवी लक्षण प्राप्त हो सकते है क्या ? नहीं। इसलिए कहती हूँ, एक बात, यह कि ये वे ही कण्णन् (श्रीमन्नारायण) है। पीछे तुम भी यह समझ लोगी।" । ११६५

कऩह नूपुरङ् गैवळै योडुह, मऩॅन हुम्वडि वाडियॉर् वाणुदल्
अऩह तिन्नह रॅय्दिय दादियिऱ्, चऩहऩ् शॅय्द तवप्पय ऩामॆन्ऱाळ् 1166

ओर् वाळ् नुतल्–मनोरम भालवाली एक ने; कनकम् नूपुरम्–स्वर्णनूपुर को; कै वळैयॊटु–हाथ के कंकणों के साथ; उक–खिसककर गिरने देते हुए; मनम् नॅकुम्पटि वाटि–(देखनेवाले का) मन द्रवित हो, ऐसा मुरझाकर; अनकन्–अनघ का; इ नकर्–ऍय्तियतु–इस नगर में पधारना; चनकन् आतियिल् चॅय्त–जनक महाराज ने जो पहले किया है; तवम् पयन् आम्–उस तपस्या का फल है; ऍन्ऱाळ्–कहा। ११६६

मनोरम ललाटवाली, बेचारी एक कनक नूपुर और हाथों के कंकणों को खिसककर गिरने देकर ऐसी खड़ी रही कि देखनेवाले का मन द्रवित हो जाय। उसने कहा— ये निर्मलदेव इस नगर में आये, सो महाराजा जनक की पूर्वकृत तपस्या का फल होना चाहिए। ११६६

नऩिव रुन्दि नलङ्गुडि पोयिडप्, पनिव रुङ्गणॉर् पाशिळै यल्हुलाळ्
मुऩिव रुङ्गुल मन्नरु मॉय्प्पऱत्, तऩिव रुङ्गॊल् कऩविन् ऱलयॆन्ऱाळ् 1167

नलम् कुटि पोयिट–शोभा अलग हो जाय, ऐसा; ननि वरुन्ति–बहुत दुख कर; पनि वरुम् कण्–आँसू बहानेवाली आँखों; पचुमै इऴै–और स्वर्णाभरणों से भूषित; ओर् अल्कुलाळ्–एक जघनवाली ने; मुनिवरुम्–(अनेक) मुनियों; कुलम् मन्नरुम्–और भीड़ के राजाओं के; मॉय्प्पु अऱ–घेरने से छूटकर; तनि–एकाकी हो; कनविल् तलै–स्वप्न में ही सही; वरुम् कॊल्–आयेंगे क्या; ऍन्ऱाळ्–कहा। ११६७

वियोग के कारण शोभाहीन बनी हुयी एक आँखों से आँसू बहाती हुयी खड़ी रही। स्वर्णाभरणभूषित कटिवाली उसने पूछा कि क्या ये श्रीराम, इन मुनियों और राजाओं की भीड़ को छोड़कर अकेले, स्वप्न में ही सही, मेरे पास आयेंगे ? । ११६७

पुनङ्गॉळ् कार्मयिल् पोलुमॉर् पॉऱ्ऱॉडि
मनङ्गॉळ् कादल् मऱैत्तलै यॅण्णिनाळ्
अनङ्ग नन्न दऱिन्दन ऩऱ्ऱन्दान्
मनङ्गळ् पोल मुहमु मऱैक्कुमो 1168

पुनम् कॉळ्–पर्वत के बागों के वासी; कार् मयिल् पोलुम्–मेघ से मुदित मोर के समान; ओर् पॉन् तॉटि–एक स्वर्णकंकणधारिणी; मनम् कॉळ् कातल्–मन में (श्रीराम के प्रति उत्पन्न) प्रेम को; मऱैत्तलै–छिपाना; ऍण्णिनाळ्–चाहती थी; अनङ्कन् अन्नतु अऱिन्तनन्–अनंग ने वह जान लिया; अऱ्ऱम्–रहस्य को; मनङ्कळ् पोल–मन के समान; मुकमुम् मऱैक्कुमो–वदन भी छिपा सकते है क्या। ११६८

पर्वतवनवासी, मेघ से मुदित एक मोर तुल्य, और स्वर्णकंकण-धारिणी एक स्त्री ने अपने श्रीराम-प्रेम को मन मे ही छिपाना चाहा। पर उसे अनंग ने समझ लिया। वह उसे सताने लगा तो मुख पर उसका प्रेम प्रकट हो ही गया। मन छिपा सकता है पर क्या मुख वह काम कर सकता है ? । ११६८

इणैनॅ डुङ्गणॊ रेन्दिऴै येन्दुपू, अणैय णैन्दिडि युण्डव रावॅनप्
पुणर्न लङ्गिळर् कॊङ्गै पुऴुङ्गिड, उणर्व ऴुङ्ग वुयिर्त्तन ळावियॆ 1169

इणै नॅटु कण्–परस्पर सम लम्बी आँखों वाली; ओर एन्तु इऴै–एक आभरण-शोभिता; एन्तु पू अणै अणैन्तु–पुष्प भरी शय्या में लेटकर; पुणर्–परस्पर सटे हुए; नलम् किळर्–ललामी लिए रहे; कॊङ्कै पुऴुङ्किट–स्तनों पर पसीना प्रकट करते हुए; उणर्वु अऴुङ्क–सुधि को क्षीण होने देते हुए; इटि उण्ट अरा ॲन्न–वज्राहत साँप के समान; आवि उयिर्त्तनळ्–लम्बी साँसें छोड़ीं। ११६९

परस्पर सम और लम्बी आँखोंवाली आभरणालंकृत एक युवती पुष्पशय्या पर जा लेटी। श्रीराम-प्रेम उसको चैन नही दे रहा था। उसके परस्पर सटे हुए सुन्दर स्तनों पर पसीना बहने लगा। सुधि मन्द होती रही। वज्राहत नाग के समान वह लम्बी साँसें भरने लगी। ११६९

आम्ब लॊत्तमु दूरुशॆव् वाय्च्चियर्, ताम्ब दैत्तुयि रुट्टडु मारुवार्
तेम्बु शिऱ्ऱिडैच् चीदैयैप् पोऱ्चिऱि, तेम्ब लुऱ्ऱिल रॅङ्ङन मुय्वरो 1170

आम्पल् ऑत्तु–लाल कुमुद से तुलकर; अमुतु ऊरु–(और) अधरामृत स्रवनेवाले; चॅव्वाय्च्चियर्–लाल अधरोंवाली स्त्रियाँ; पतैत्तु–तड़पकर; उळ् उयिर् तट्टुमाऱुवार्–अन्तस्थ प्राणों के छूटते, वापस आते, दोलायमान थीं; तेम्पु–(शरीर के भार से)

दबनेवाली; चिऱु इटै–क्षीण कटिवाली; चीतैयै पोल्–सीता की तरह; चिऱितु ऐम्पल् उऱ्ऱिलर्–कुछ भी सन्तोष नहीं पा सकीं; अॅङ्ङतम् उय्वरो–कैसे जीवित रहेंगी ? । ११७०

लाल कुमुदसम और अमृतस्रावी अधरोंवाली स्त्रियाँ तड़प रही थीं। उनके प्राण दोलायमान हुये। सीताजी को जिनकी पतली कमर शरीर के भार से संकट उठा रही थी, आनन्द मिल गया। इनको तो कुछ भी आश्वासन नहीं मिल रहा था। वेचारियों की जानें कैसे बचेंगी ? । ११७०

वेर्त्तु मेनि तळर्न्दुयिर् विम्मलो
डार्त्ति युऱ्ऱ मडन्दय रारयुम्
तीर्त्त नित्तनै शिन्दयिऱ् चॅङ्गणिऱ्
पार्त्ति लानुट् परिविलनो वॅन्ऱाळ् 1171

मेनि वेर्त्तु–शरीर पसीने से भर गया; उयिर् तळर्न्तु–प्राण शिथिल हो गया; विम्मलोटु–तरस के साथ; आर्त्ति उऱ्ऱ–दुखी जो हुईं; मटन्तैयर्–उन स्त्रियों में; आरॅयुम्–किसी को भी; तीर्त्तन्–तीर्थ श्रीराम ने; चॅम् कण्णिल्–अपनी मनोरम आँखों से; चिन्तैयिन्–(और) मन से; इत्तनै–इतना भी (बहुत कम भी); पार्त्तिलान्–नहीं देखा; उळ्–मन में; परिवु इलनो–करुणाहीन है क्या; अॅन्ऱाळ्–कहा। ११७१

एक स्त्री यों कह रही है। इधर इतनी स्त्रियाँ पसीने वहाती हुयी, प्राण संकट में रहने देकर, तरस के साथ दुख उठा रही है। उनमें एक पर भी श्रीराम ने अपनी आँखें नहीं डालीं; न मन ही लगाया। क्या उनके मन में करुणा नामक गुण है ही नहीं ? । ११७१

वैयम् बऱ्ऱिय मङ्गय रॅण्णिलार्, ऐयऩ् पॊऱ्पुक् कळविलै यादलाल्
अॅय्युम् बॊऱ्चिलै मारनु मॅनशॅय्वान्, कैयम् बऱ्ऱुडै वाळिनुङ् गैवैत्तान् 1172

वैयम् पऱ्ऱिय मङ्कैयर्–(श्रीराम के) रथ को लक्ष्य बनाकर जो आईं वे स्त्रियाँ; अॅण् इलार्–असंख्यक है; ऐयऩ्–प्रभु श्रीराम की; पॊऱ्पुक्कुम्–सुन्दरता की भी; अळवु इल्लै–सीमा नहीं है; आतलाल्–इसलिए; अॅय्युम्–शर चलानेवाले; पॊऩ् चिलै–सुन्दर धनुर्धर; मारऩुम्–कामदेव भी; अॅन् चॅय्वान्–क्या करेगा; कै अम्पु अऱ्ऱ–हाथ शरों से रिक्त हो गये, तब; उटै वाळितुम्–करवाल पर (केवड़े के फूल पर) भी; कै वैत्तान्–प्रयोग के लिए हाथ रखा। ११७२

श्रीराम के रथ को लक्ष्य बनाकर जो आयी है उनकी संख्या अपार है। श्रीराम का सौन्दर्य भी अपार है। इसलिए पुष्पशर चलानेवाले सुन्दर धनुर्धर का काम भी अपार रूप से बढ़ गया। उसके सारे शर खर्च हो गये। अब उसको लाचार होकर अपने करवाल (केवड़े के फूल) को प्रयोग करना पड़ा। (अर्थात स्त्रियों की दशा बिलकुल शोचनीय हो रही थी।) । ११७२

नान वार्हुळ त्तारिय रोडलाल्, वेन्तल् वेळॊडु मेलुऱै वार्हळो
डान पूश लऱिन्दिल मम्बुपोय्, वान नाडियर् मार्बिनुन् दैत्तवे 1173

नातम् वार् कुळल्—कस्तूरी-लिप्त लम्बे केशवाली; नारियरोटु अल्लाल्—(भूलोक की) स्त्रियों के अलावा; वेन्तल् वेळॊटु—बसन्तकाल के राजा मन्मथ के साथ; मेल् उऱैवार्कळोटु—स्वर्ग-वासिनियों का; आन पूचल्—(जो) हुआ (वह) झगड़ा; अऱिन्तिलम्—नहीं जानते; अम्पु पोय्—उसके शर जाकर; वानम् नाटियर् मार्पितुम्—देवलोक वासिनियों के वक्षों में भी; तैत्त—चुभे। ११७३

कस्तूरी-लगे केशवाली, भूलोकवासिनी स्त्रियों की हालत तो हम देखते रहते हैं। देवलोक की नारियों के साथ वसंतकाल के राजा मन्मथ के टंटे का क्या हाल रहा? हम नहीं जानते। अवश्य मन्मथ के शर उनके हृदय पर भी जा लगे। (समर या झगड़ा इसलिए कहते हैं कि प्रेम और लोकलाज में संघर्ष होता है। शायद देवलोक की नारियाँ सुगम रूप से मन्मथ के शिकार हो गयीं!)। ११७३

मरुण्म यङ्गु मडन्दयर् माट्टॊरु, पॊरुण यन्दिलन् पोहिन्ऱ देयिवन्
करुणै यॆन्बदु कण्डऱि यान्बॆरुम्, बरुणि दन्कॊल् पडुकॊलै यान्ॆन्ऱाळ् 1174

इवन्—ये राम; मरुळ् मयङ्कुम्—अपने प्रति मोहमुग्ध; मटन्तैयर् माट्टु—स्त्रियों से; ऒरु पॊरुळ् नयन्तिलन्—एक भी वस्तु न चाहते हुए; पोकिन्ऱते—(उदासीन हो) जाते हैं (क्या उचित है); करुणै ऎन्पतु—करुणा नाम की वस्तु; कण्टु अऱियान्—कहीं देखी-जानी नहीं है; परुणितन् कॊल्—"परिणत" (ज्ञानवृद्ध वैरागी) है क्या; पटु कॊलैयान्—निपट हत्यारे हैं; ऎन्ऱाळ्—कहा एक (अबला ने)। ११७४

एक स्त्री निष्ठुरता से शिकायत करने लगी। मोह मुग्ध इतनी नारियाँ इधर हैं। श्रीराम इनसे किसी भी वस्तु की अपेक्षा नहीं करते हुये अपने रास्ते जा रहे हैं। क्या यह उचित है? क्या वे करुणा नामक वस्तु क्या है यह नहीं जानते? या कहीं देखी भी नहीं है? क्या वे ज्ञान-वृद्ध वैरागी हो गये हैं? न! वे निपट हत्यारे हैं!। ११७४

तॊय्यिल् वॆय्य मुलैत्तुणै यालुऱ, नैयु नॊय्य मरुङ्गुलॊर् नङ्गैतन्
कैयु मॆय्यु मुणर्न्दिलळ् कण्डवर्, उय्यु मुय्यु मॆन्त्तळर्न् दोय्वुऱ्ऱाळ् 1175

तॊय्यिल्—चित्रकारी से युक्त; वॆय्य—तप्त; मुलै तुणैयाल्—स्तनद्वय से; उऱ नैयुम्—बहुत त्रस्त; नॊय्य मरुङ्कुल—क्षीण कटिवाली; ओर् नङ्कै—एक युवती; तन् कैयुम्—अपने (कंकण-हीन) हाथों को; मॆय्युम्—(शिथिल) शरीर को; उणर्न्तिलळ्—भूलकर; कण्टवर्—देखनेवाले; उय्युम् उय्युम्—जी जायगी, जी जायगी; ऎन्न—कहें, ऐसा; तळर्न्तु—श्रांत होकर; ओय्वु उऱ्ऱाळ्—निस्पन्द हुई। ११७५

क्षीणकटि एक स्त्री ने, जिसकी कमर चित्रकारीयुक्त और तप्त स्तन-द्वय के भार से आक्राँत थी, अपने कंकणहीन हाथों और शिथिल शरीर की

सुध नहीं ली। वह इतनी श्रांत और क्लांत हो रही कि देखनेवालों को उसके जीने में संदेह हुआ और कुछ 'जी जायगी' यह कहकर ढाढस दे रही थी। ११७५

पूक वूशल् पुरिबवर् पोलोरु, पाहु पोऩ्मोऴि याण्मलर्प् पादङ्गळ्
शेहु शेर्दरच् चेवहऩ् ऱेरिऩ्बिऩ्, एहु मीळुमि दॆऩ्शॆय्द वाऱरो 1176

ओरु पाकु पोल् मोऴियाळ्–एक चासनी-सी बोलीवाली; पूकम् ऊचल् पुरिपवर् पोल्–पूगतरु से बँधे झूले में झूलनेवाली के समान; मलर् पातङ्कळ्–कमलचरणों पर; चेकु चेर् तर–(घर्षण चिह्न) घट्ठा लग जायँ, ऐसा; चेवकऩ् तेरिऩ् पिऩ्–वीर श्रीराम के रथ के पीछे; एकुम–जाती; मीळुम्–लौट आती (ऐसा बार-बार करती थी); इतु चॆय्त आऱु–यह करने का प्रकार; ऎऩ्–क्या है। ११७६

चाशनी-सी बोलीवाली एक, पूगतरु से बँधे झूले में झूलनेवाली के समान (ऊपर-नीचे) आगे-पीछे जाती रहती है, श्रीरघुनाथ के रथ के पीछे जाती, फिर वापस आती। वह ऐसा बार-बार क्यों करती थी जिसके फलस्वरूप उसके पैरों में घट्ठा पड़ गया था? । ११७६

पॆरुत्त कादलिऱ् पेदुरु मादरिल्, ऒरुत्ति मऱ्ऱङ् गॊरुत्तियै नोक्कियॆऩ्
करुत्तु मव्वऴिक् कण्डदुण् डोवॆऩ्ऱाळ्, अरुत्ति युऱ्ऱपि ऩाणमुण् डाहुमो 1177

पॆरुत्त कातलिऩ्–अत्यधिक (श्रीराम-) प्रेम के कारण; पेतुऱुम् मातरिल् ऒरुत्ति–चक्रित स्त्रियों में एक; अङ्कु–वहाँ; मऱ्ऱॊरुत्तियै–दूसरी को; नोक्कि–देखकर; ऎऩ् करुत्तुम्–मेरे मन को; अव् वऴि–उस स्थान में; कण्टतु उण्टो–देखा था क्या; ऎऩ्ऱाळ्–पूछा; अरुत्ति उऱ्ऱपिऩ्–अनुराग होने के बाद; नाणम् उण्टु आकुमो–लाज रहती होती क्या। ११७७

श्रीराम पर अपार प्रेम के कारण जो चक्रित हो गयी थीं उनमें एक ने श्रीराम के रथ की ओर से लौट आनेवाली एक स्त्री से पूछा कि क्या वहाँ तुमने मेरे मन को देखा! अनुरागी बनने के बाद लाज कहाँ रहेगी? । ११७७

नङ्गै यङ्गॊरु पॊऩ्ऩयन् दारुयत्, तङ्ग ळिऩ्ऩुयि रुङ्गॊडुत् तार्दमर्
ऎङ्ग ळिऩ्ऩुयि रॆङ्गळुक् कीहिला, वॆङ्ग णॆङ्ङऩ् विळैन्द दिवर्क्कॆऩ्ऱाळ् 1178

अङ्कु ऒरु पॊऩ् नङ्कै–वहाँ, श्रीलक्ष्मी तुल्य स्त्री; तमर्–इनके लोगों ने (पूर्वजों ने); नयन्तार् उय्य–अपने पास प्रेम के साथ आये हुओं का जीवन बचाने के लिए; तङ्कळ् इऩ् उयिरुम् कॊटुत्तार्–अपने प्यारे प्राण दे दिए; ऎङ्कळ् इऩ् उयिर्–हम स्त्रियों के प्यारे प्राणों को ही; ऎङ्कळुक्कु ईकिला(त)–हमें न देनेवाले; वॆम् कण्–कठोर स्वभाव को; इवर्कु–इनके पास; ऎङ्ङऩ् विळैन्ततु–कैसे उत्पन्न हुआ। ११७८

श्रीलक्ष्मी तुल्य एक स्त्री पूछती है— इनके पूर्वजों ने अपने पास प्रेम के

साथ आनेवालों की जान बचाने के लिए अपने प्राण तक दे दिये थे। अब ये तो हमारे ही प्राणों को (मन को) हमारे पास नही देते। इतनी निर्ममता इनके पास कहाँ से आयी? (यह उनको विरासत में तो नही मिल सकती थी।)। ११७८

नामत् तालऴि वाळॊरु नन्नुदल्, शेमत् तार्विल् लिरुत्तदु तेरुङ्गाल्
तूमत् तार्हुळऱ् ऱमॊऴित् तोहैबाल्, कामत् तालन्ऱु कल्वियि नालॆन्ऱाळ् 1179

नामत्ताल् अऴिवाळ्–नामस्मरण के साथ अकुलानेवाली एक ने; ऒरु नल् नुतल्–एक सुन्दर ललाटवाली; चेमत्तु आर् विल्–(हमारे महाराज को) सुरक्षा में जो रहा उस धनुष को; इऱुत्ततु–तोड़ने का काम; तेरुम् काल्–सोचने पर; तूमत्तु आर् कुऴल्–(अगरु का) धुआँ जिसमें रमाया गया, उस केश की; तू मॊऴि–और पवित्र बोलीवाली; तोकै पाल्–मयूराभा सीता के प्रति; कामत्ताल् अन्ऱु–प्रेम के कारण नहीं (किया श्रीराम ने); कल्वियिनाल्–धनुर्विद्या (के प्रेम) से ही; ऎन्ऱाळ्–कहा। ११७९

श्रीराम का नाम बरावर लेते हुये एक स्त्री अकुला रही थी। सुन्दर ललाटवाली उसे सन्देह हो गया कि श्रीराम सीता पर भी आसक्ति नहीं रखेंगे! वह कहती है कि श्रीराम ने महाराजा जनक की सुरक्षा में रहे धनुष को सीताजी के निमित्त तोड़ा नहीं है; वह तो अपनी धनुर्विद्या (में दक्षता) के प्रदर्शन के लिए ही किया होगा। ११७९

आर मुन्दुहि लुङ्गल न्रियावयुम्, शोर विन्नुयिर् शोरवॊर् शोरहुळल्
कोर विल्लिमुन् नेयॆन्नैक् कॊल्हिन्ऱान्, मार वेळिन् वलियवर् यारॆन्ऱाळ् 1180

ओर् चोर् कुऴल्–खुलकर विखरे केश की एक; आरमुम्–हार; तुकिलुम्–वस्त्र; कलन् यावैयुम्–आभरण सब; चोर–गिरने देते हुए; इन् उयिर् चोर–प्यारे प्राणों को भी छूटने देते हुए; कोर विल्लि मुन्ने–घोर धनुर्धर (श्रीराम) के सामने ही रहकर; ऎन्नै कॊल्किन्ऱान्–मुझे मार रहा है जो; मार वेळिन्–उस कामदेव से बढ़कर; वलियवर् यार्–वलवान कौन है। ११८०

एक स्त्री के केश खुलकर लटक रहे थे। हार, वस्त्र और आभरण सब तो खिसके हुए थे, प्राण भी छूटते से लगते थे। वह मन्मथ की वीरता की सराहना करने लगी। श्रीराम वड़े ही घोर धनुर्धर हैं। उनके ही सामने यह मन्मथ मुझ पर अपना शर चलाकर सता रहा है। इससे बढ़कर साहसी कौन हो सकता है? । ११८०

꙳माद रिन्नण मॆय्त्तिड वळ्ळल्पोय्क्, कोदिल् शिन्दै वशिट्टनुङ् गोशिह
वेद पारनु मेविय मण्डबम्, एदिन् मन्नर् कुळात्तॊड् मॆय्दिनान् 1181

मातर् इन्नणम् ऎय्त्तिट–जब नारियाँ इस तरह संकट उठा रही थीं, तब; वळ्ळल्–उदार प्रभु; एतिल् मन्नर् कुऴात्तॊटुम्–पराये (राज्यों के) राजाओं के

समूह के साथ; पोय्-(रथ पर) जाकर; कोतु इल् चिन्तै-अकलंक (पवित्र) मन; वचिट्टनुम्-महर्षि वसिष्ठ और; कोचिकऩ्-कौशिक; वेत पारऩुम्-(जो) वेदपारंगत (थे वे भी); मेविय-जहाँ आसीन थे; मण्टपम्-विवाह-मण्डप; अॅय्तिऩाऩ्-पहुँचे। ११८१

स्त्रियाँ जब इस तरह व्याकुल हो रही थीं तब उदार प्रभु श्रीराम उस मंडप में जा पहुँचे जहाँ अकलंक पवित्र मन वाले वसिष्ठजी और वेद-पारंगत कौशिकजी विराजमान थे। उनके साथ पराये राज्यों के अनेक राजा भी गये। ११८१

❀ तिरुवि ऩायकऩ् मिऩ्ऱिरिऩ् दालॅऩत्, तुरुविऩ् मामणि यारऩ् दुयल्वरप्
परुव मेहम् पडिवदु पोऱ्पडिऩ्, दिरुवर् ताळ्‌ मुऱैयि निऱैञ्जिनाऩ् 1182

तिरुविऩ् नायकऩ्-श्रीलक्ष्मीपति ने; तुरु इल् मा मणि आरम्-दोष-हीन श्रेष्ठ रत्नहार; मिऩ् तिरिन्ताल् अॅऩ्ऩ-बिजली चमकती हो जैसे; तुयल् वर-चमके तब; परुव मेकम्-(वर्षा-) कालीन मेघ; पटिवतु पोल्-विनत हुआ जैसे; पटिन्तु-दण्डवत कर; इरुवर् ताळुम्-(वसिष्ठ और कौशिक) दोनों के चरणों पर; मुऱैयिऩ् इऱैञ्चिनाऩ्-यथाक्रम नमस्कार किया। ११८२

श्रीलक्ष्मीपति (श्री रामजी) ने वसिष्ठजी और कौशिकजी के चरणों पर यथावत दण्डवत की। तब वे भूमि पर पड़नेवाले वर्षाकाल के मेघ के समान लगे। उनके वक्ष पर जो श्रेष्ठ रत्नहार हिलते थे वे चमकने वाली बिजलियों के समान थे। ११८२

❀ इऱैञ्ज वऩ्ऩव रेत्तिन रेववोर्
निऱैञ्ज पूऩ्दवि शेऱि निऴल्हळ्पोल्
पुऱञ्जॅय् तम्बिय रुट्पॉलिऩ् दाऩरो
अऱञ्जॅय् कावऱ् कयोत्तियुट् टोऩ्ऱिनाऩ् 1183

अऱम् चॅय् कावल् कु-धर्मरक्षण के लिए; अयोत्ति उळ् तोऩ्ऱिताऩ्-अयोध्या में जो अवतरित हुए; इऱैञ्च-उन श्रीराम ने उक्त दोनों का नमस्कार किया, करने पर; अऩ्ऩवर्-उन दोनों ने; एत्तितर्-आशीर्वाद दिये; एव-(फिर) आज्ञा दी, तब; ओर् निऱैञ्च पू तविचु-एक खूब सजावट भरे, सुन्दर आसन पर आसीन होकर; निऴल्कळ् पोल्-छाया की तरह; पुऱम् चॅय्-(निरन्तर) रक्षण की सेवा करनेवाले; तम्पियर् उळ्-लघु भ्राताओं के मध्य; पॉलिन्ताऩ्-शोभे। ११८३

धर्मरक्षणार्थ जो अयोध्या में अवतार ले आये थे उनके नमस्कार करने पर, दोनो, वसिष्ठजी और कौशिकजी ने आशीर्वाद दिये। फिर आज्ञा दी कि आसन पर विराजें। सजावट से भरपूर एक श्रेष्ठ आसन पर श्रीराम विराजे और उनके पार्श्व में निरन्तर उनके रक्षणकार्य में लगे रहनेवाले उनके लघुभ्राता उनको मध्य में रखकर आसनस्थ हुये। ११८३

❀ आन्‌ मामणि मण्डब मन्नुदु, तानै मन्नन्‌ उमरोडुम्‌ जार्न्दनन्‌
मीनॅ लान्दन्‌ पिन्वर वॅण्मदि, वानि लावुऱ वन्ददु मान्नवे 1184

वॅण्मति–श्वेतवर्ण चन्द्र; मीन्‌ ॲलाम्–सब नक्षत्र; तन पिन्‌ वर–अपने पीछे आयें, ऐसे; वान्‌ निला उऱ–आकाश को प्रकाशमान करते हुए; वन्ततु मात–आया हो जैसे; तानै मन्नन्‌–बड़ी सेना के स्वामी (दशरथ); तमरोदुम्–अपनों (समान राजाओं) के साथ; आन–उपरोक्त; मा मणि मण्टपम्‌ अन्नतु–उत्तम रत्नों से शोभायमान मण्डप में; चार्न्तनन्‌–आ पहुँचे। ११८४

वहाँ उस श्रेष्ठ रत्नमय मंडप में राजा दशरथ भी आ पहुँचे। उनके साथ उनके अपने राजा लोग भी आये। उनका राजाओं के साथ आना चन्द्र के, आकाश को शोभायमान करते हुए, नक्षत्रों के साथ आने के समान था। ११८४

❀ वन्दु मादवर्‌ पादम्‌ वणङ्गिमेल्‌, शिन्दु तेमलर्‌ मारि शिऱन्दिड
अन्द णाळर्‌ह ळाशियो डाशनम्‌, इन्दि रन्मुह नाणुऱ वेऱिनान्‌ 1185

वन्तु–आकर; मा तवर्‌ पातम्‌ वणङ्कि–महान तपस्वियों के चरणों पर नमस्कार करके; मेल्‌ चिन्तु–(उनके) ऊपर गिरनेवाले; तेम्‌ मलर्‌ मारि–शहद सहित पुष्पों की वर्षा; चिऱन्तिट–सम्मान बढ़ावे, ऐसा; अन्तणाळर्कळ्–ब्राह्मणों के; आचियॊटु–आशीर्वाद के साथ; इन्तिरन्‌ मुकम्‌ नाणुऱ–इन्द्र के मुख को लाज-भरा करते हुए; आचनम्‌ एऱिनान्–अपने आसन पर विराजे। ११८५

मण्डप में आकर राजा ने महान तपस्वियों, वसिष्ठजी और कौशिकजी, के चरणों पर नमस्कार किया। तब उन पर शहद भरे पुष्पों की वर्षा खूब हुयी। वेद-विप्रों ने आशीर्वाद दिये। उनका वैभव देखकर इन्द्र भी लजा गये थे। वे शान के साथ अपने आसन पर आसीन हुए। ११८५

गङ्गर्‌ कोङ्गर्‌ कलिङ्गर्‌ तॅलुङ्गर्‌हळ्, शिङ्ग ळादिबर्‌ शेरलर्‌ तॅन्नवर्‌
अङ्ग राशर्‌ कुलिङ्ग रवन्दिकर्‌, वङ्गर्‌ माळवर्‌ शोळर्‌ मराडरे 1186

कङ्कर्–गंग देश का राजा; कोङ्कर्–कोङ्ग देश का राजा; कलिङ्कर्–कलिंगपति; तॅलुङ्कर्कळ्–तेलुगु देश का राजा; चिङ्कळ अतिपर्–सिंहल देश का राजा; चेरलर्–चेर देशाधिपति; तॅन्नवर्–पांडिय; अङ्क राचर्–अंग राज; कुलिङ्कर्–कुलिंग का शासक; अवन्तिकर्–अवन्तिकाधिप; वङ्कर्–बंगदेश नरेश; माळवर्–मालवाधिपति; चोळर्–चोळपति; मराटर्–महाराष्ट्र नरेश। ११८६

गंग देशाधिप, कोंग देश के राजा, कलिंग, तेलुगु, सिंहल, चेर, पांडिय, अंग, कुलिंग आदि देश के राजा अवंतिका, बंग, मालव, चोल और महाराष्ट्र देश के राजा लोग; । ११८६

मान्‌ माहदर्‌ मच्चर्‌ मिलेच्चर्‌हळ्, एनै वीर विलाडर्‌ विदर्प्पर्‌हळ्
शीनर्‌ शेहुणर्‌ शिन्दियर्‌ शोमहर्, शोन केशर्‌ तुरुक्कर्‌ कुरुक्कळे 1187

मानम् माकतर्–सम्मानित मागधराज; मच्चर्–मच्छदेश नरेश; मिलेच्चर्–म्लेच्छ; एत्तै–और अन्य; वीर इलाटर्–वीर लाटदेशवासी; वितर्प्पर्कळ्–विदर्भ लोग; चीनर्–चीनी; चेकुणर्–चेकुण; चिन्तियर्–सिंधी; चोमकर्–सोमक; चोनक ईचर्–शोनकेश; तुरुक्कर्–तुरुष्क; कुरुक्कळ्–कौरव। ११८७

सम्मान्य मागध, मच्छ, म्लेच्छ और लाट देश के, विदर्भवासी, चीनी, छेगुण (?) सिन्धी, शोमक आदि नरेश; सोनकेश, तुरुष्क और कौरव लोग। ११८७

एदि यादव रेऴ्दिऱ्ऱ् कौङ्गणर्, शेदि राशर्ह ळुट्पडच् चेण्विळङ्
गादि वानङ् गवित्त ववनिवाऴ्, शोदि नीण्मुडि मन्नरुन् दुऩ्ऩिनार् 1188

एति यातवर्—अस्त्र-शस्त्र चतुर यादव; एऴ् तिऱल् कौङ्कणर्–सप्त विभाग के कौङ्कण देश के पराक्रमी; चेतिराचर्कळ् उळ् पट–चेदि राजाओं के साथ; चेण् विळङ्कु—दूर-दूर तक रहनेवाले; अति–आदिभूत; वानम् कवित्त–आकाश जिनको ढँके रहता है; अवनि वाऴ्–इस लोक में रहनेवाले; चोति नीळ् मुटि मन्नरुम्–ज्योतित और उन्नत किरीटधारी राजा लोग; तुऩ्ऩिनार्–आ एकत्र हुए। ११८८

अस्त्र-चतुर, यादव सप्त-खण्ड कोंकण और चेदि के राजाओं के साथ, दूर-दूर तक विद्यमान आदिम भूत, आकाश से आच्छादित इस भुवन मे रहनेवाले उज्ज्वल उन्नत (या दीर्घकाल से राजा रहनेवाले के वंश के) किरीटधारी राजा आकर एकत्र हुए। ११८८

❀ तीङ्ग रुम्बिनुन् दित्तिक्कु मिऩ्शॊलार्, ताङ्गु शामरै माडु तयङ्गुव
ओङ्गि योङ्गि वळर्न्दुयर् कीर्त्तियिऩ्, पूङ्गॊ ळुन्दु पॊलिवऩ पोऩ्ऱवे 1189

तीम् करुम्पिनुम्–मधुर इक्षुरस से भी; तित्तिक्कुम्–मधुर; इऩ् चॊल्लार्–मोहक बोलीवाली स्त्रियाँ; ताङ्कु–जिनको ले (डुला) रही हैं वे; चामरै–चामर; माटु तयङ्कुव–पार्श्व में जो डुलते है वे; ओङ्कि ओङ्कि वळर्न्तु–उत्तरोत्तर ऊँचा बढ़कर; उयर्–उन्नत हुई; कीर्त्तियिऩ्–कीर्ति के; पू कॊऴुन्तु–सुन्दर पल्लव जो; पॊलिवन–शोभायमान हो, उनके; पोऩ्ऱ–समान थे। ११८९

मधुर ईख से भी बढकर मीठी, मनोरम बोली बोलनेवाली स्त्रियाँ जो चामर ले डुलाती थीं, वे दोनो तरफ शोभायमान थे। और वे उत्तरोत्तर बढ़नेवाली, चक्रवर्ती की कीर्ति के पल्लवों के समान शोभायमान थे। ११८९

शुऴलुम् वण्डु मिञिऱुञ् जुरुम्बुञ्जऴऩ्, डुऴलुन् दुम्बियुम् बम्बऱ लोदियर्
कुऴलि नोडुऱक् कूऱुपल् लाण्डॊलि, मऴलै याऴिशै यॊडु मलिन्दवे 1190

चऴलुम्–मँडरानेवाले; वण्टुम् मिञिऱुम् चुरुम्पुम्–(इन) तीनो तरह के भ्रमरों के साथ; चूऴन्तु उऴलुम्—घूम-घूमकर मँडरानेवाले; तुम्पियुम्–काले भौंरे; पम्पु–जिन पर जुटे है; अऱल् ओतियर्–उन काले बालू समान केशोंवाली स्त्रियाँ;

कुळलिन्नोटु उऱ–बाँस के नाद से मिलकर; कूऱु–(जो गीत) गाती हैं; पल्लाण्टु ऑलि–उन "पल्लाण्डु" (अनेक वर्ष जियो) वाले गीतों के स्वर; मळलै याळ् इचैयॉटुम्–श्रुतिमधुर वीणा के स्वर के साथ मिलकर; मलिन्त–(मण्डप में) भरे। ११९०

मँडरानेवाले भौरे, भौंरियाँ, (चार तरह की) जिनके ऊपर मँडरा रही थीं, वे बालूसम केशवाली स्त्रियाँ बाँसुरी की ध्वनि के साथ, 'जयजीव' (अनेक वर्ष जिओ) भाव देनेवाले गीत गा रही थीं। उनके साथ मधुर वीणा का स्वर भी मिला था और वह सम्मिलित स्वर उस मण्डप में भर गया। ११९०

वॅङ्ग णाऩयन् ऱाऩ्ऱऩि वॅण्कुडै, तिङ्ग डङ्गळ् कुलक्कॉडि शीदयाम्
मङ्गै मामणङ् गाणिय वन्दरुळ्, पॉङ्गि यॉङ्गित् तळैप्पदु पोऩ्ऱदे 1191

वॅम् कण्–(क्रोध के) लाल आँखोंवाले; आनै अन्नान्–गज के समान (दशरथ) के; तनि वॅण् कुटै–अद्वितीय श्वेतछत्र (राजा के रक्षण का प्रतीक); तिङ्कळ्–चन्द्र; तङ्कळ् कुलम् कॉटि–अपने कुल की लता (सन्तान); चीतै आम् मङ्कै–सीतादेवी के; मा मणम्–श्रेष्ठ उद्वाह को; काणिय वन्तु–देखने के लिए आकर; अरुळ् पॉङ्कि ओङ्कि–करुणा अधिक करके; तळैप्पतु पोन्ऱतु–शीतलता फैलाता-सा लगा। ११९१

क्रोध के कारण लाल हुई आँखोंवाले गज सदृश चक्रवर्ती दशरथ का एकश्वेतछत्र ऐसा भासमान था, मानो चन्द्र अपने कुल की फैलनेवाली लता (सन्तान) सीता नाम की पुत्री के श्रेष्ठ उद्वाह को देखने के लिए आकर करुणा और शीतलता फैला रहा हो। ११९१

ऊडु पेर्विड मिन्ऱियॉन् ऱाम्वहै, नीडु माहडऱ् ऱानैनॆ रुङ्गलाल्
आडन् माहळि यानैच् चनहर्होऩ्, नाडॆ लामॊरु नन्नह रायदे 1192

ऊटु–मध्य में; पेर्वु इटम् इन्ऱि–(जिसमें) पग धरने की जगह न हो ऐसी; नीटु मा कटल् तानै–लम्बे, विशाल सागर सदृश (दशरथ की) सेना; ऑन्ऱु आम् वकै–सम रूप से; नॆरुङ्कलाल्–भरी रही, इसलिए; आटल् मा–विजयी अश्व सेना; कळि यानै–मत्तगजों की सेना; चनकर् कोन्–(इनके स्वामी) महाराज जनक का; नाटु ऍलाम्–सारा देश; ऑरु नल् नकर् आयतु–एक बड़ा नगर-सा बन गया। ११९२

चक्रवर्ती दशरथ की सेना बहुत बड़ी थी। उसमें हाथी, वीर आदि खचाखच भरे थे। वह विस्तृत सागर-समान सेना देश भर में फैल गयी थी। इसलिए विजयी अश्वों और मत्तगजों की सेनावाले महाराजा जनक का सारा देश एक नगर के समान बन गया। ११९२

ऑळिन्द दॆन्निनि यॊण्णुद ऱादैदन्
पॊळिन्द काद ऱॊडरप् पॊरुळॆलाम्
अळिन्दु वन्दुहॊण् डाडलि ऩन्बुदान्
इळिन्दु ळार्क्कु मिरामऱ्कु मॊत्तदे 1193

ऑळ् नुतल् तातै–उज्ज्वल ललाटवाली सीता के पिता; तन् पॉऴिनृत कातल्–अपने बढ़ते प्रेम के; तॉटर–उत्तरोत्तर बढ़ते; पॉरुळ् ॲलाम् अऴिनृतु–अपना सारा धन व्यय करके; उवनृतु–आनन्द करते हुए; कॉण्टाटलिऩ्–जो सत्कार करते रहे उस क्रम में; अऩ्पु–उनका प्रेम; इऴिनृतु उळार्क्कुम्–नीचे पद में रहनेवालों और; इरामऩ् कु उम्–श्रीराम के प्रति; ऑत्ततु–समान रहा; इनि–आगे; ऑऴिनृततु ॲऩ्–(कहने से) छूट गया क्या (वर्णन)। ११९३

उज्ज्वल ललाटवाली सीताजी के पिता महाराजा जनक का प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। इसलिए उन्होंने अपना सारा धन व्यय करके अतिथियों का सत्कार किया। उस सत्कार के क्रम में नीचे पद में रहनेवालों और स्वयं श्रीराम में वे कोई भेद नहीं करते थे। फिर महाराजा जनक के प्रेम के सम्बन्ध में कहने के लिए छूटा क्या है ? । ११९३

20. कोलङ्गाण् पडलम् (श्रृंगार-सज्जा पटल)

देवियर् मरुङ्गु शूळ विन्दिर निरुक्कै शेर्नृद
ओविय मुयिर्पॅऱ् ऱॅऩ्ऩ वुवन्दवै यिरुन्द कालैत्
ताविल्वॅण् कविहैच् चॅङ्गोऱ् चत्तहऩै यिनिदु नोक्कि
माविय नोक्कि नाळैक् कॉणर्हॅन्न वशिट्टऩ् शॉऩ्ऩाऩ् 1194

इन्तिरऩ् इरुक्कै चेर्नृत–(सुधर्मा नाम की) इन्द्र सभा में बनी रही; ओवियम्–चित्र प्रतिमाएँ; उयिर् पॅऱ्ऱ ॲऩ्ऩ–मानो जीवित हो गई हो, ऐसे; उवन्त अवै–आनन्ददायक सभा में; तेवियर् मरुङ्कु चूऴ–देवियों (रानियों) के पार्श्व में घेरे रहते; इरुन्त कालै–जब चक्रवर्ती विराजमान रहे, तब; वचिट्टऩ्–वसिष्ठजी ने; ता इल्–निर्मल; वॅण् कविकै–श्वेत छत्र; चॅङ्कोल्–राजदण्ड धर; चत्तकऩै–महाराज जनक को; इऩितु नोक्कि–स्नेह से देखकर; मा इयल नोक्किताळै–श्रीलक्ष्मी सदृश रूप, गुणवाली सीताजी को (मृगनयनी को, आम की फाँक-सी आँखोंवाली, या बड़ी आँखोंवाली); कॉणर्क ॲऩ्ऩ–लाने को कहो, यह; चॉऩ्ऩाऩ्–कहा। ११९४

चक्रवर्ती दशरथ राजसभा में देवेन्द्र के समान विराजमान थे। उनकी रानियाँ, इन्द्रसभा की प्रतिमाएँ जीवित हो आयी हों, ऐसे उनको घेरे आसीन थीं। तब वसिष्ठजी ने निर्मल श्वेतछत्रधर (श्रेष्ठपालनकर्ता) और ऋजु राजदण्डधर (उत्तम शासक) जनक को देखकर आज्ञा दी कि श्रीलक्ष्मीदेवी सदृश सीताजी को लिवा लाने का प्रबन्ध करें।

[माइयल् नोक्किनाळ् का अर्थ— मृगनयनी, आम की फाँक-सी आँखोंवाली, या बड़ी आँखोंवाली भी किया जा सकता है।] । ११९४

उरैशॅयत् तॉळुद कैय तुवन्दवुळ् ळत्तऩ् पॅण्णुक्
करैशियैत् तरुदि रीण्डॅऩ् ऱायिऴै यवरै येवक्

करैशॅयर् करिय कादल् कडाविडक् कडिदु शॅन्ऱार्
पिरैशमॊत् तिनिय शॊल्लार् पेदैता दियरिऱ् चॊन्ऩार् 1195

उरैचॅय–(वसिष्ठजी के) कहने पर; तॊळुत कैयऩ्–अंजलिबद्ध हो; उवन्त उळ्ळत्तऩ्–आनन्दमन (जनक के); आय् इऴैयवरै–सुरुचिपूर्ण आभरणधारिणी (चेरियों को देखकर); पॆण्णुक्कु अरैचियै–स्त्रियों में रानी (सीता) को; ईण्टु तरुतिर्–यहाँ लिवा लाओ; ऍऩ्ऱु एव–यह आज्ञा देने पर; पिरैचम् ऒत्तु–शहद से तुलकर; इऩिय चॊल्लार्–मधुर बोलीवाली वे; करै चॅयऱ्कु अरिय–तट बनाने के लिए कठिन; कातल् कटाविट–प्यार के प्रेरित करते; कटितु चॅऩ्ऱार्–सवेग गईं; पेतै तातियरिल् चॊऩ्ऩार्–सीताजी की चेटियों से बात कही। ११९५

वसिष्ठजी के वैसी आज्ञा देने पर जनक ने अंजलि करके, अधिक आनन्द के साथ पास खड़ी जो रहीं उन उत्तम आभरणधारिणी चेरियों को आज्ञा दी कि जाकर स्त्रियों में रानी मान्य सीता को लिवा लाओ। शहद-सी मधुर बोलीवाली वे निस्सीम प्रेम के उत्साह के साथ शीघ्र गयीं और उन्होंने सीताजी की चेरियों को जनक की आज्ञा बतायी। ११९५

अमिऴिमैत् तुणैहळ् कण्णुक् कणियॅऩ वमैक्कु मापोल्
उमिऴ्शुडर्क् कलऩ्ग णङ्गै युरुविऩै मऱैप्प दोरार्
अमिऴ्दिऩैच् चुवैशॅय् दॅऩ्ऩ वऴहिऩुक् कऴहु शॅय्दार्
इमिऴ्दिरैप् परवै ञाल मेऴमै युडैत्तु मादो 1196

अमिऴ्–(आँखों को) छिपानेवाली; तुणै इमैकळ्–दो पलकें; कण्णुक्कु अणि ऍऩ–आँखों का अलंकार मानकर; अमैक्कुम् आ(ऱु) पोल्–प्रकृति ने बनाई हैं, ऐसे; उमिऴ् चुटर् कलऩ्कळ्–कांति छिटकानेवाले आभरण; नङ्कै उरुविऩै–नायिका के रूप (-सौंदर्य) को; मऱैप्पतु–छिपाते हैं, यह; ओरार्–नहीं देखतीं; अमिऴ्तिऩै–अमृत को; चुवै चॅय्तऩ्ऩ–और मधुर बनाया हो ऐसा; अऴकिऩुक्कु अऴकु चॅय्तार्–"सुन्दरता कहँ सुन्दर करई"; इमिऴ् तिरै परवै–गर्जनशील लहरों के सागर वाला; ञालम्–यह लोक; एऴैमै उटैत्तु–अज्ञता-भरा है (मातु ओ)। ११९६

(चेरियों ने सीताजी का शृंगार करना आरम्भ किया।) प्रकृति ने आँखों का अलंकार समझकर पलकें देकर आँखों को छिपा दिया है; सुन्दरता कम कर दी है। वैसे ही ये भी, काँतिपूर्ण आभरण सीताजी के प्राकृतिक रूपसौन्दर्य को छिपा लेते है, यह न जान सकीं। अमृत को और मधुर बनाने का प्रयास करनेवालों के समान उन्होंने सुन्दर को और सुन्दर बनाना चाहा। गरजती लहरों के सागर से वलयित भूमि भी कितनी अज्ञता भरी है! । ११९६

कण्णऩ्ऩ निऱन्द नुळ्ळक् करुत्तिऩै निऱैत्तु मीदिट्
टुण्णिऩ्ऱुङ् गॊडिह ळॊडि युलहॆङ्गुम् बरन्ददऩ्ऩ

वण्णत्र्जॅय् कून्दऱ् पार वलयत्तु मऴैयिऱ् ऱोन्ऱुम्
विण्णिन्ऱ मदियिन् मॅन्बूव् जिहऴिहैक् कोदै वेय्न्दार् 1197

कण्णन् तन् निऱम्–कण्णन (कमलाक्ष) का वर्ण; तन् उळ्ळम् करुत्तित्तै–देवी के मन की चिन्ता भर में; निऱैत्तु–भरकर; उळ् निन्ऱुम् मीतु इट्टु–अन्दर से बाहर निकलकर; कॉटिकळ् ओटि–लताओं के रूप में चलकर; उलकु अॅङ्कुम् परन्ततु अन्न–लोक भर में फैल गया, ऐसा; वण्णम् चॅय्–रंग और रूप में श्रेष्ठ; कून्तल् पारम् वलयत्तु–केश-भार के जूड़ाओं में; मऴैयिल् तोन्ऱुम्–मेघ में प्रकट; विळ् निन्ऱ मतियिन्–(किरणें) बिखेरते रहे चन्द्र के समान; मॅन् पू–कोमल फूलों की; चिकऴिकै कोतै–'शिखऴिका' नाम के गजरे को; वेय्नतार्–पहनाया। ११९७

लोकनेत्राधार, कण्णन, कमलाक्ष के (नीलवर्ण) रंग ने मानो सीताजी के मन में भरकर, वहाँ से बाहर छलक निकलकर लताओं के रूप में लोक भर में व्यापकर स्त्रियों के केश का रूप ले लिया —ऐसा दिखनेवाले (यानी केश के रूप में सर्वत्र व्याप्त सीताजी के मन में भरे रहे श्रीराम के रंग से शोभित) रूप और रंग के जूड़े में, मेघों पर दिखनेवाले चन्द्र के समान शिखऴिका नामक फूल का गजरा उन्होंने पहनाया। ११९७

विदियदु वहैयाल् वानमीनिनम् पिऱैयै वन्दु
कदुवुरु हिन्ऱ दॅन्नक् कॉऴुन्दोळि कजलत् तूक्कि
मदियिनै नक्क मेह मरुङ्गुना वळैप्प दॅन्नप्
पॉदियिरु ळळह पन्दि पूट्टिय पूट्टि विट्टार् 1198

विति अतु वकैयाल्–विधि के विधान से; वानम् मीन् इनम् वन्तु–आकाश के नक्षत्र-समूह आकर; पिऱैयै कतुवुरुकिन्ऱतु–कलाचन्द्र को पकड़ रहे हों, ऐसे; कॉऴुन्तु–झूमर को; ऑळि कजल–कांति बिखेरने देते हुए; तूक्कि–भाल पर लटकाकर; मेकम्–मेघ; मतियित्तै नक्क–चन्द्र को चाटने के लिए; मरुङ्कु–उसके ऊपर; ना वळैप्पतु अॅन्न–जिह्वा को निकाल घुमाया हो, ऐसा; इरुळ् पॉति–अन्धकार भरे (काले); अळकम् पन्ति–सामने के बालों की राशि में; पूट्टिय–पहनाने योग्य आभरण; पूट्टि विट्टार्–पहना दिये। ११९८

उन्होंने भाल पर झूमर पहनाया। वह ऐसा लगता था, मानो विधि के विशेष विधान से नक्षत्र आकर चन्द्र को पकड़ रहे हों। और सिर के सामने के भाग पर अन्य आभरण पहनाये जिनको देखने पर यह भ्रम होता था कि मेघ चन्द्र को चाटने के लिए जीभ निकाल रहा हो। ११९८

वॅळ्ळत्तिन् शटिलत् तान्ऱन् वॅञ्जिलै यिरुत्त वीरन्
तळ्ळत्तन् नावि शोरत् तनिप्पॅरुम् बॅण्मै तन्नै
अळ्ळिक्कॉण् डहन्ऱ काळै यलुलन्कॉ लाङ्गॉ लॅन्बाळ्
उळ्ळत्ति नूश लाडुङ् गुऴैनिऴ लुमिऴ विट्टार् 1199

वॅळ्ळत्तिन् चटिलत्तान् तन्–जल (गंगा)-धर जटाजूट वाले (शिव) के; वॅम् चिलै–भयंकर धनु को; इरुत्त वीरन्–(जिन्होंने) तोड़ा, (वे) वीर; तन् आवि तळ्ळ–अपने (सीताजी के) प्राणों को दोलायमान करके; चोर–(उनको) क्लेश देकर; तन्ति पॅरु पॅण्मै तन्नै–उनके श्रेष्ठ स्त्री-सहज संयम को; अळ्ळिक् कॉण्टु अकन्ऱ–लूट ले चले जो; काळै अल्लन् कॉल्–पुरुष ऋषभ नहीं हैं; आम् कॉल्–वही क्या; ॲन्पाळ्–(संशय से) कहनेवाली के; उळ्ळत्तिन्–मन के समान; ऊचल् आटुम्–झूलनेवाले; कुळै–कुण्डलों को; निळल् उमिळ–ज्योति बिखेरने देते हुए; इट्टार्–पहनाया। ११९९

अपनी जटाजूट में जो जल (गंगा) को धारण कर रहे हैं उनके धनु के भंजक श्रीराम क्या वही वीर कुमार हैं जो उस दिन मेरे प्राणों को खतरे में डालकर, मुझे अधिक क्लेश देकर मेरे स्त्रीसहज संयम को भी हर ले गये थे ? वही होंगे ? या नही ? इस तरह सीताजी का मन परस्पर विरोधी मान्यताओं के बीच झूल रहा था। ऐसे ही झूलनेवाले कुण्डलों को चेरियों ने उनके कानों में पहनाया। ११९९

कोनणि शङ्गम् वन्दु कुडियिरुन् दनैय कण्डत्
तन्निमिल् कलन्ग डम्मि लियैवन वणिदल् शॅय्दार्
मानणि नोक्कि नार्तम् मङ्गलक् कळुत्तुक् कॅल्लाम्
तानणि यॅन्ऱ पोदु तनक्कणि यादु मादो 1200

कोन् अणि चङ्कम्–जगन्नायक श्रीविष्णु के हाथ में शोभित (पाञ्चजन्य) शंख; वन्तु–आकर; कुटियिरुन्त अन्नैय–बसा हो, ऐसा; कण्टत्तु–कण्ठ में; ईन्ऱम् इल् कलन्कळ् तम्मिल्–कोई कमीहीन आभरणों में; इयैवन–जो फबते हैं उनको; अणितल् चॅय्तार्–पहनाया; मान् अणि नोक्किनार् तम्–मृगलोचनी स्त्रियों के; मङ्कलम् कळुत्तुक्कु–मंगलसूत्र वाले कण्ठों; ॲल्लाम्–सभी के लिए; तान् अणि ॲन्ऱ पोतु–स्वयं जो शृंगार है, तो; तनक्कु अणि यातु–उनके लिए शृंगार क्या हो। १२००

जगन्नाथ श्रीविष्णु के हाथ को भूषित करनेवाले पाँचजन्य नाम के शंख ने आकर इनके कंठ का स्थान ले लिया है, ऐसा मान्य शंखसम कण्ठ-वाली सीताजी थीं। उसमें श्रेष्ठ आभरणों से सर्वश्रेष्ठ और युक्त आभरणों को चुनकर चेरियों ने पहना दिया। श्रीलक्ष्मी देवी स्वयं सौभाग्यवती मृगनयनियों (स्त्रियों) का कंठाभरण मानी जाती हैं। उनके मंगलसूत्र में श्रीलक्ष्मी देवी का रूपांकित स्वर्णपदक बाँधा जाता है। ऐसा उनके कण्ठ का आभरण कौन हो सकता है ? । १२००

कोणिला वान मीन्ग ळियैवन कोत्त दॅन्नगो
वाणिला वयङ्गु शॅव्वि वळर्पिऱै वहिर्न्द दॅन्नगो
नाणिला नहैयि निन्ऱोर् नळिर्निलात् तवळ्न्द दॅन्नगो
पूणिला मुलैमे लार मुत्तयान् पुहल्व दॅन्नो 1201

पूण् निलावुम् मुलै मेल्–आभूषणभूषित स्तनों पर के; आरम् मुत्तै–मोतियों के हार को; वानम् मीन्कळ्–आकाश के नक्षत्र; कोण् इला इयैवन–भेदरहित (एक सम) जो युक्त हों उनको; कोत्ततु ॲन्को–गूँथा है, कहूँ; वाळ् निला वयङ्कु–बहुत कांति देनेवाले; चॅव्वि–सुन्दर; वळर् पिरै–शुक्लपक्ष के चन्द्र को; वकिर्न्ततु ॲन्को–दो भागों में विभक्त कर रखा है, कहूँ; नाण् निलावु–व्रीडायुक्त; नकैयिन् निन्ऱु–(देवी के) मन्दहास से; ओर् नळिर् निला–एक शीतल ज्योति; तवऴ्न्ततु ॲन्को–फैली, कहूँ; यान् ॲन् पुकल्वतु–मै क्या कहूँ। १२०१

उस मुक्ताहार को जो उनके स्तनों पर शोभायमान था, क्या कहा जाय ? उन नक्षत्रों को जो समरूप और समशोभित थे गूँथकर बनाया गया हार कहा जाय ? शुक्लपक्ष के चन्द्र को दो भागों में विभक्त कर बनाया गया, कहा जाय ? या स्वयं सीताजी के व्रीडा सहित मन्दहास से एक शीतल किरणराशि निकलकर वक्ष पर शोभित रही —यह कहा जाय ? कवि कहते है— मैं क्या कहूँ ? । १२०१

मोयॅहोॅळ्शी ऱडियैच् चेर्न्द मुळरिक्कुञ् जॅम्मै यीन्द
तैयला ळमिऴ्द मेनित् तयङ्गोॅळि तऴुविक् कोॅळ्ळ
वॅय्यपूण् मुलैयिऱ् चेर्न्द वॅण्मुत्तञ् जिवन्द वॅन्ऱाल्
शॅय्यवर्च् चेर्न्दु ळारुञ् जॅय्यरायत् तिहऴ्व रन्ऱे 1202

मोय् कोॅळ्–गौरव युक्त; चीऱटियैच् चेर्न्त–लघुचरणों से मिले; मुळरिक्कुम्–कमल को भी; चॅम्मै ईन्त–ललाई जिन्होंने प्रदान की; तैयलाळ्–उन श्रीलक्ष्मी (सीता) देवी के; अमिऴ्तम् मेनि–सुधा-सम शरीर की; तयङ्कु ऑळि–दीप्त शोभा के; तऴुविक्कोॅळ्ळ–लग जाने से; वॅय्य–वाहनीय; पूण्–आभरणभूषित; मुलैयिल् चेर्न्त–स्तनो पर पड़े; वॅण् मुत्तम्–श्वेत मोती भी; चिवन्त ॲन्ऱाल्–लाल हो गये तो; चॅय्यवर्–साधु लोगों के साथ; चेर्न्तु उळ्ळारुम्–मिलकर रहनेवाले भी; चॅय्यर् आय्–श्रेष्ठगुणवाले बनकर; तिकऴ्वर्–रहेंगे; अन्ऱे–न। १२०२

कमल को श्रीलक्ष्मी ने ही अपने पैर की ललाई प्रदान की क्योंकि कमल उनके चरणों से लग गया था। ऐसी देवी के शरीर की ललाई ने ही उनके आभरणालकृत स्तनों पर लगे श्वेत मोतियों को भी लाल बना दिया। इससे यह कथन साबित हो जाता है कि जो उत्तम गुणों के साधुओं से मिले रहते है वे भी उत्तम गुणोंवाले हो जाते हैं। १२०२

कोॅमैयुऱ वीङ्गुहिन्ऱ कुलिहच्चॅप् पनैय कोॅङ्गैच्
चुमैयुऱ तुडङ्गुहिन्ऱ नुशुप्पिनाळ् पूण्पॅय् तोॅळुक्
किमैयुऱ विमैक्कुञ् जॅङ्गे ऴिनमणि मुत्ति नोडुम्
अमैयिडै यमैव दुण्डा माहिनॉप् पाहु मन्ऱे 1203

कोॅमै उऱ–पुष्टियुक्त; वीङ्कुकिन्ऱ–फूल उठे; कुलिकम् चॅप्पु अनैय–इंगुरौटी (या ईंगुर के बने कलश) सम; कोॅङ्कै–स्तनों के; चुमै उऱ–भार के लगने से;

नुटङ्कुकिन्ऱ–लचकनेवाली; नुचुप्पित्ताळ्–कमर से शोभित देवी के; पूण् पॅय् तोळुक्कु–आभरणभूषित भुजाओं की; इमै उऱ–आँखें चौंधिया जायँ, ऐसा; इमैक्कुम्–चमकनेवाले; चॅम् केळ् इत्तम् मणि–लाल रंग के पद्मराग रत्न; मुत्तिनोटुम्–मोतियों के साथ; अमै इटै–बाँस पर; अमैवतु उण्टु आम् आकिल्–शोभित मिल सकें तो; ऑप्पु आकुम्–उपमा बन सकता है (वह बाँस); (अन्ऱु–ए)। १२०३

पुष्ट, प्रवृद्ध और इंगुरौटी-सम सुन्दर स्तनों के बोझ से आक्रांत होकर लचकनेवाली कमर थी, देवी की। उनकी भुजाओं की तुलना किससे की जाय ? अगर ऐसा बाँस मिले जिस पर, आँखें चौंधिया जायँ, ऐसे चमकदार लाल रंग के पद्मराग के साथ मोतियों का अलंकार हुआ है तो उस बाँस के साथ उनकी भुजाओं की तुलना की जा सकेगी। (वह तुलनाहीन है।)। १२०३

तळैयविळ् कोदैयोदिच् चानहि तळिर्क्कै यॅन्नुम्
मुळरिह ळिरामन् चॅङ्गै मुऱैमैयिऱ् ऱीण्ड नोऱ्ऱ
अळियत्त कङ्गुऱ् पोदुङ् गुवियल वाहु मॅन्ऱाङ्
गिळवॅयिल् शुऱ्ऱि यन्न वॅरिमणिक् कडह मिट्टार् 1204

तळै अविळ्–विकासशील; कोतै ओति–पुष्पों की माला से अलंकृत केशवाली; चानकि–जानकीजी के; तळिर् कै ॲन्नुम्–पल्लवहस्तरूपी; मुळरिकळ्–कमलपुष्पों ने; इरामन् चॅम् कै–श्रीराम के उत्तम हाथों से; मुऱैमियिन्–(वेदोक्त) क्रम से; तीण्ट–गृहीत होने के लिए; नोऱ्ऱ–तपस्या की है; कङ्कुल् पोतुम्–रात को भी; कुवियल आकुम्–उन्मीलित नहीं होनेवाले; अळियत्त–(इसलिए) सुरक्षायोग्य है; ॲन्ऱु–कहकर; आङ्कु–उन में; इळवॅयिल् चुऱ्ऱियतु अन्त–बालधूप घेर गई हो ऐसा; ॲरि मणि कटकम्–दीप्तिमान रत्नकंकण; इट्टार्–पहनाये। १२०४

विकासशील पुष्पों की माला सीताजी के केश को अलंकृत कर रही थी। चेरियों ने उनके पल्लवसम सुन्दर हाथों में कंकण पहनाये। 'इन हस्त-कमलों ने श्रीरामचन्द्र प्रभु के उत्तम हाथों के पाणिग्रहण का भाग्य पाने के योग्य तपस्या की है। ये कमल रात को भी बन्द नहीं होनेवाले हैं। इसलिए इनको खूब सुरक्षित करना आवश्यक है।' ऐसा सोचकर चेरियों ने बालातप के समान मनोरम कांतिवाले कंकण पहनाये। (कंकण अमंगल-परिहार या मंगलसाधन का चिह्न है।)। १२०४

चिल्लिय लोदि कॊङ्गैत् तिरण्मणिक् कन्नहच् चॅप्पिल्
वल्लियु मनङ्गन् विल्लु मान्मदच् चान्दिऱ् ऱीट्टिप्
पल्लिय नॆऱियिऱ् पार्क्कुम् बरम्बॊरु ळॆन्न यार्क्कुम्
इल्लैयुण् डॆन्न निन्ऱ विडैयिनुक् किडुक्कण् शॆय्दार् 1205

चिल् इयल् ओति–कुछ विभिन्न प्रकार से अलंकार-योग्य केशवाली सीताजी के; कॊङ्कै–स्तनरूपी; मणि–मणि जड़ित; तिरळ्–पुष्ट; कनकम् चॅप्पिल्–कनक कलश पर; वल्लियुम्–कल्पलता का चित्र; अनङ्कन् विल्लुम्–अनंग का

धनुष; मान् मतम् चान्तिल्–मृगमद लेप से मिश्रित चन्दन से; तीट्टि–लिखकर; पल् इयल् नॅऱियिऩ्–बहुप्रकार रहनेवाले मतों द्वारा; पार्क्कुम्–अन्वेषित; परम् पॉरुळ् ॲऩ्ऩ–परब्रह्म के समान; यार्क्कुम्–सब के लिए; इल्लै उण्टु–नहीं, हाँ, कहलाते हुए; निऩ्ऱ–(दृष्टिगोचर नहीं होते हुए) रहनेवाली; इटैयित्तक्कु–कमर को; इटुक्कण् चॅय्तार्–कष्ट दिलाया। १२०५

देवी विभिन्न प्रकार से (जैसे, गाँठ, चूड़ा, वेणी आदि के रूप में) अलंकृत करने योग्य केशवाली थीं। उनके एक-एक मणि (चूचुक) से अलंकृत कनककलश के समान स्तनों पर चेरियों ने कस्तूरी-मिश्रित चंदन के चेप से कल्पलता, कामधनु (ईख) आदि की चित्रकारी बनायी। इससे उन्होंने उनकी कमर को कष्ट दिलाया। वह कमर सभी धर्मों में अन्वेषण का विषय बनकर अनुमान द्वारा "हैं" प्रत्यक्ष रूप से "नहीं" का संशय उत्पन्न करते हुए अदृश्य रहनेवाले परब्रह्म के समान थी। (केश पाँच तरह से अलंकृत किया जा सकता है। अतः उसे पंचालंकार केश भी कहा जाता है।)। १२०५

निऱञ्जॅय्को शिकनुण् डूशु नीविनी वाद वल्हुऱ्
पुऱञ्जॅय्मे हलयु मारत् तारहैच् चुमैयुम् बूट्टित्
तिऱञ्जॅय्हा शीऩ्ऱ शोदि पेदॅशे यॉळियिऱ् ऱीर्न्द
करङ्गुपु तिरिय यारुङ् गण्वळुक् कुऱ्ऱ निऩ्ऱार् 1206

निऱम् चॅय्–(मनोरम) रंगवाले; नुण् कोचिकम् तूचु–महीन कौशेय वस्त्र के; नीवि नीवात–नीवि (कटि वस्त्रबंध) से अलग न होनेवाली; अल्कुल् पुऱम् चॅय्–कटिप्रदेश को अलंकृत करनेवाली; मेकलैयुम्–मेखला को; आरम्–मोती के; तारकै चुमैयुम्–"तारकभार" नामक आभरण को; पूट्टि–पहनाकर; तिऱम् चॅय्–अनेक प्रकार के; काचू ईऩ्ऱ–उनके रत्नों से जनित; चोति–प्रकाश; पेतै चॅय् ऑळियिऩ्–वाला (सीताजी) की ललाई से; तीर्न्त–विपरीत; करङ्कुपु तिरिय–पार्श्व में छिटका, इसलिए; यारुम्–सभी; कण् वळुक्कु उऱ्ऱ–(आँखें) चौंधियाकर; निऩ्ऱार्–खड़ी रही। १२०६

चेरियों ने सुचारु रंग का कौशेय वस्त्र पहनाया। उसकी नीवि से बाँधकर मेखला और मोती के "तारकभार" नामक आभरण से कमर को अलंकृत किया। उन आभरणों के रत्नों से जो कांति छूट रही थी वह सीताजी की देह-कांति से भिन्न थी। सब कांतियाँ इस तरह बिखरीं कि पास खड़ी रहनेवालियों की आँखें चौंधिया गयीं। १२०६

ऐयवा यनिच्चप् पोदि ऩदिहमु नॉय्य वाडल्
पैयर वल्हु लाडऩ् पञ्जिऩ्ऱिप् पळुत्त पादच्
चॅय्यपूङ् गमल मत्तनच् चेर्त्तिय चिलम्बु शाल
नॉय्यवे नॉय्य वॅऩ्ऱो पलपड नुवल्व दम्मा 1207

आटल्–फन फैलाकर नाचनेवाले; अरवु पै अल्कुलाळ् तन्–सर्प के फन सरीखे वरांगवाली के; ऐय आय्–सुन्दर बनकर; अऩिच्चम् पोतिऩ्–'अनिच्च' नामक (लजालू) पुष्प से बढ़कर; अतिकमुम् नॊय्य–अधिक कोमल; पञ्चु इऩ्ऱि पऴुत्त–महावर के बिना ही लाल; पातम्–चरणरूपी; चॆय्य पू कमलम्–लाल कमलपुष्पों पर; मऩ्ऩ चेर्त्तिय–फबनेवाली रीति से पहनाये गये; चिलम्पु–नूपुर; पल पट नुवल्वतु–विविध शब्द जो करते हैं; चाल नॊय्यवे नॊय्यवे–बहुत कोमल हैं कोमल; ऍऩ्ऱो–ऐसा क्या; अम्मा–री माँ। १२०७

सीताजी के चरण-कमलों में चेरियों ने नूपुर पहनाये। सर्प के फैलाये गये फन के समान जिनका वरांग था उन सीता के चरण 'अनिच्च' नाम के फूल से भी, जो सूँघने पर मुरझा जाता है, कोमल थे। और वे महावर लगे बिना ही लाल थे। उन चरणों के नूपुर जब नाद करते थे तब ऐसा लगता था, मानो वे यह कह रहे हों कि ये चरण अवश्य कोमल और छोटे हैं, कोमल और छोटे है। १२०७

नञ्जिनो डमुदङ् गूट्टि नाट्टङ्ग ळाऩ वॆऩ्ऩच्
चॆञ्जॆवे नीण्डु मीण्डु शेयरि शिदऱित् तीय
वञ्जमुङ् गळवु मिऩ्ऱि मऴैयॆऩ मदर्त्त कण्गळ्
अञ्जऩ निऱमो वण्णल् वण्णमो वऱिद ऱेऱ्ऱाम् 1208

नञ्चिनोटु अमुतम् कूट्टि–विष के साथ अमृत मिलकर; नाट्टङ्कळ् आऩ–आँखें बनीं; अऩ्ऩ–ऐसी; चॆञ्चॆवे–सीधी; नीण्टु–लम्बी (दूर) जाकर; मीण्टु–लौटकर; चेय् अरि चितऱि–लाल डोरों से युक्त होकर; तीय वञ्चमुम्–बुरा कपट; कळवुम्–और चोरी के; इऩ्ऱि–बिना; मऴै ऍऩ–मेघ-सम (शीतल); मतर्त्त–पुष्ट; कण्कळ्–आँखों का रंग; अञ्चऩम् निऱमो–अंचन का रंग है; अण्णल् वण्णमो–प्रभु श्रीराम का रंग है; अऱितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं सके। १२०८

सीताजी की आँखे लम्बी थीं और कान तक गयी थीं। वे विष और अमृत दोनो, की बनी-सी लगती थी। (वे दोनो श्रीलक्ष्मी के साथ सागर से निकले थे। आँख का सफेद अंश अमृत-सा था और काला अंश विष के समान था।) उन आँखों में लाल डोरे पाये जाते थे। उनमें न कपट था न चोरी। वे पुष्ट और मनोरम थीं। उनका काला रंग कहाँ से आया ? अंजन जो लगा हुआ था उससे मिल गया ? या श्रीराम का रूप उनमें भरा था, उनका रंग उन आँखों में दिखता था ? हम जान नहीं पाते। १२०८

मॊय्वळर् कुवळै पूत्त मुळरियिऩ् मुळैत्त मुऩ्नाळ्
मॆय्वळर् मदियि नाप्पण् मीत्तुण्डे लऩैय देय्प्प
वैयह मडन्दै मार्क्कु नाहरको दयर्क्कुम् वाऩत्
तॆय्वमङ् गयर्क्कु मेलान् दिलकत्तैत् तिलकञ् जेर्त्तार् 1209

मॉय् वळर्-(दल) लसे और विकसित; कुवलै पूत्त-कुवलय जिसपर खिले हों; मुळरियिऩ्-(उस) कमलपुष्प पर; मुळैत्त-उदित; मूऩ्ऱु नाळ् मॅय् वळर्-तीन दिन के बढ़े हुए; मतियिऩ् नाप्पण्-(तीज के) चाँद में; मीऩ्-नक्षत्र; उण्टेल्-हो, तो; अनैयतु एय्प्प-उसके समान; वैयकम् मटनत्तै मार्क्कुम्-भूलोक की स्त्रियों से; नाकर् कोतैयर्क्कुम्—नाग-(पाताल) लोक की नारियों से; वाऩम्-सुरलोक की; तॅय्व मङ्कैयर्क्कुम्-देव स्त्रियों से; मेल् आम्-वढ़कर श्रेष्ठ; तिलकत्तै-तिलक समान देवी को; तिलकम् चेर्त्तार्-तिलक लगाया। १२०६

एक कल्पित चित्र है। दो पुष्ट कुवलय एक कमल में खिले हैं। उस कमल में तीज का चाँद उदित है। उस चाँद में एक तारा है। ऐसा कोई कमल मिले वह सीताजी के श्रीमुखमण्डल की उपमा वन सकता है। (कमल मुख है; कुवलय आँखें; चन्द्र ललाट है और तिलक तारा है।) ऐसे मुखवाली सीताजी के, जो भूलोक, देवलोक और पाताललोक की वासिनियों की तिलक थीं, भाल में तिलक लगाया गया। १२०९

शिऩ्ऩप्पूच् चॅरुहु मॅऩ्बूच् चेहरप् पोदु कोदिल्
कऩ्ऩप्पूक् कज़्ल मीदु कऱ्पहक् कॉळुन्दि यावुम्
मिऩ्ऩप्पूज् जुरुम्बुम् वण्डु मिञिऱुन्दुम् विहळुम् वम्बप्
पुऩ्ऩैप्पून् दादु मानुम् पॉऱ्पॉडि यप्पि विट्टार् 1210

चिऩ्ऩम् पू-छुट्टे फूल; चॅरुकुम् मॅऩ् पू-सिर पर खोंसने के कोमल फूल; चेकरम् पोतु-चोटी पर रखने के फूल; कोतु इल्-निर्मल; कऩ्ऩम् पू-कर्णमूल में रखने के पुष्प; कज़्ल्-शोभित रहे; मीतु-ऊपर; कऱ्पकम् कॉळुन्तु यावुम्—कल्पपल्लव-सम सभी पल्लव; मिऩ्ऩ-भासमान रहे, ऐसा; चुरुम्पुम् वण्टुम् मिञिऱुम् तुम्पिकळुम्-चारों तरह के भौंरे; पम्प-मँडरायें; पुऩ्ऩै पू तातु मानुम्-कदम्ब के फूल के मकरन्द के समान; पॉऩ् पॉटि-(अंगराग) स्वर्णचूर्ण; अप्पिविट्टार्-लगा दिया। १२१०

चेरियों ने सीताजी का पुष्पों से शृंगार किया। छुट्टे फूल, केशों में खोंसनेवाले फूल, चोटी पर पहनाया जानेवाला फूल, निर्मल कर्णमूल पर रखनेवाले फूल इनसे अलंकृत कर पल्लवों से भी सजाया। उनके ऊपर सब तरह के भौरे मँडराने लगे। इसके वाद उन्होंने कदम्ब के सुमनों के मकरन्द के समान स्वर्णरंग के अंगराग से उवटन कराया। (ये फूल प्राकृतिक फूल भी हो सकते थे या स्वर्ण के वने फूलों के रूपवाले भी। पल्लवों की भी वही बात है।)। १२१०

नॅय्वळर् विळक्क माट्टि नीरॉडु पूवुन् दूविल्
तॅय्वमुम् पराविं वेद पारकर्क् कोनुडु शॅम्बॉऩ्
ऐयवि यरुहु शेर्त्ति याय्निऱ वयिऱ् ऱुऱ्ऱिक्
कैवळर् सयिल नाळै वलञ्जॅय्दु काप्पु मिट्टार् 1211

नॅय् वळर् विळक्कम् माट्टि-घी डालकर दीप जलाकर; नीरॉटु पूवुम् तूवि-जल और फूल (वलि के रूप में) छिड़काकर; तॅय्वमुम् परावि-इष्टदेवों की पूजा

करके; वेत पारकर्क्कु–वेद पारंगतों को; चॆम् पॊन् ईन्तु–स्वर्णदान करके; ऐयवि अरुकु चेर्त्ति–पीली सरसों और दूर्वा घास को सिर पर डालकर; आय् निऱम् अयिऩि–सुन्दर लाल रंग के अन्न-मिश्रित जल का नीराजन करके; कै वळर् मयिल् अऩ्नाळै–अपने हाथों पालित मोर-सी छटावाली सीता को; वलम् चॆय्तु–परिक्रमा करके; काप्पुम् इट्टार्–(धाइयों ने उनके भाल में) रक्षण का टीका लगाया। १२११

इतना होने के बाद धाइयों ने कुदृष्टि से बचाने के लिए कुछ 'दृष्टि-परिहार' के कार्य किये। घी का दिया जलाया, फूलों के साथ जल छिड़का। इष्टदेवों की पूजा करायी गयी और वेदपारगों को स्वर्ण का दान किया गया। पीली सरसों और दूब की घास को सीताजी के सिर पर डाला। एक थाली में लाल गरं के अन्न के साथ जल लेकर आरती उतारी गयी। फिर अपने हाथों जो मोर के समान पली थी उन सीता के भाल में धाइयों ने आरती के जल की बिन्दु अमंगल-परिहारार्थ लगायी। १२११

कञ्जत्तुक् कळिक्कु मिऩ्ऱेऩ् कवर्न्दुणुम् वण्डु पोल
अञ्जॊर्कळ् किळ्ळैक् कॆल्ला मरुळुवा ळऴ्है मान्दित्
तञ्जॊर्कळ् कुळऱित् तत्तन् दहैतडु माऱि निऩ्ऱार्
मञ्जर्क्कु माद रार्क्कु मनमॆन्ब दॊऩ्ऱे यऩ्ऱो 1212

किळ्ळैक्कु ऎल्लाम्–सब तोतों को; अम् चॊर्कळ् अरुळुवाळ्–मधुर बोली (सिखा) देनेवाली; अऴ्कै–(देवी की) सुन्दरता को; कञ्चत्तु–कंज में; कळिक्कुम् इऩ् तेऩ्–मस्ती देनेवाले मधुर शहद को; कवर्न्तु उणुम्–लूटकर खानेवाले; वण्टु पोल–भ्रमरों के समान; मान्ति–(आँखों से) मानो पीकर; तम् चॊर्कळ्–वचन; कुळऱि–अस्पष्ट करके; तम् तम् तकै तटुमाऱि–अपनी-अपनी स्थिति भुलाकर; निऩ्ऱार्–(स्त्रियाँ) खड़ी रहीं; मञ्चर्क्कुम्–पुरुषों के लिए और; मातरार्क्कुम्–स्त्रियों के लिए; मनम् ऎऩ्पतु–मन का करण; ऒऩ्ऱे अऩ्ऱो–एक ही (सा) है न। १२१२

देवी का श्रृंगार करके धाइयाँ और चेरियाँ उनके दिव्यसौन्दर्य को देखकर एकदम मुग्ध हो गयी। शुकों को मधुर बोली सिखानेवाली, यानी शुक से बढ़कर मधुर बोली बोलनेवाली देवी के रूप-सौन्दर्य को वे कमल के शहद को चूसनेवाले भ्रमरों के समान अपनी आँखों से मानो पीने लगीं। तब एक तरह का मोह और मस्ती उत्पन्न हो गयी। इसलिए बोलने में अस्थिरता और अस्पष्टता आ गयी। हम स्त्री हैं, यह भी भूल गयीं। हाँ, पुरुष हों, चाहे स्त्री, दोनो का मन तो एक ही बनावट या प्रकार का है न ? । १२१२

इळैहुला मुलैयि नाळै यिडैयुवा मदियि नोक्कि
मळैहुला मोदि नल्लार् कळिमयक् कुऱ्ऱु निऩ्ऱार्
उळैहुला नयनत् तार्माट् टॊऩ्ऱॊऩ्ऱे विरुम्बर् कॊत्त
दळैहॆला मॊरुङ्गे कण्डाल् यावरे याऱ्ऱ वल्लार् 1213

मऴै कुलाम् ओति—मेघ-सम केशवाली; नल्लार्—स्त्रियाँ; इऴै कुलाम् मुलैयिऩाळै—आभरण को शोभा देनेवाले उरोजोंवाली को; उवा मतियिऩ् नोक्कि—पूर्णचन्द्र सदृश देखकर; कळि मयक्कु उऱ्ऱु निऩ्ऱार्—मोदमुग्ध खड़ी रहीं; उऴै कुलाम् नयत्तत्तार् माट्टु—मृगनयनी स्त्रियों में; ऑऩ्ऱु ऑऩ्ऱे—एक न एक अंग ही; विरुम्पऱ्कु ऑत्ततु—आकर्षक रहता है; अऴकु ऍलाम्—सारा सौंदर्य; ऑरुङ्के कण्टाल्—एक ही स्थान में दिखाई दे तो; आऱ्ऱ वल्लार् यावरे—अपने को सम्हाल सकनेवाले कौन हैं। १२१३

मेघसम केशवाली सब उनको, पूर्णचन्द्र के समान, आभरण-शोभित स्तनोंवाली देवी को देखते हुये, मुग्ध और चकित खड़ी रहीं। मृग-नयनियों में एक-एक का एक अग सुन्दर होता है। जिस एक ही स्त्री के सारे अंग सुन्दर हैं, उस सर्वागसुन्दरी को देखकर किसका मन वश में रहेगा ? । १२१३

शङ्गङ्गै युडैम यालुम् तामरैक् कण्ण दालुम्
ऍङ्गॅङ्गुम् बरन्दु पल्वे ऱुळ्ळत्तु मॆऴुदिऱ् ऱॆऩ्ऩ
अङ्गङ्गे तोऩ्ऱ लालु मरुन्ददि यनैय कऱ्पिऩ्
नङ्गयु नम्बि यॊत्ता णामिनिप् पुहल्व दॆऩ्नो 1214

चङ्कु अम् कै उटैमैयालुम्—शंख (पाञ्चजन्य) हाथ में रखने से; कण् अतु तामरै आलुम्—आँखें कमल (सी) हैं, इसलिए; ऍङ्कु ऍङ्कुम्—सब कहीं; परन्तु—व्यापकर; पल् वेऱु उळ्ळत्तुम्—अत्यधिक लोगों के मनों में; ऍऴुतिऱ्ऱु—(रूप) लिखा गया; ऍऩ्ऩ—सा; अङ्कु अङ्के तोऩ्ऱलालुम्—यत्रतत्र दिखाई देने से; अरुन्तति अनैय कऱ्पिऩ्—अरुंधती के समान पातिव्रत्यवाली; नङ्कैयुम्—देवी सीताजी; नम्पि—प्रभु (नायक) के; ऑत्ताळ्—समान बनीं; नाम् इनि पुकल्वतु ऍऩ्ऩो—आगे हमें कहने को क्या है। १२१४

श्रीराम के हाथ में (विष्णुदेव के होने के नाते) पाँचजन्य नामक शंख है; सीताजी के हाथों में शंख (कंकण) है; आँखे श्रीराम की कमल के समान है। सीताजी (लक्ष्मीदेवी होने के नाते) भी कमल पर रहने वाली है। दोनों सर्वत्र व्याप्त हैं। अनेक लोगों के मनों मे उनकी कल्पना के अनुसार रूपों में दिखाई देते है। इसलिए अरुंधतीतुल्य सीताजी पुरुषों में श्रेष्ठ नायक श्रीराम के समान ही रहीं। इससे वढ़कर सीताजी की महिमा कैसे कही जाय ? । १२१४

परन्दमे हलयुङ् गोत्त पादशा लहमु नाहच्
चिरञ्जॆय्नू बुरमुम् वण्डुम् शिलम्बॊडु शिलम्बि यार्प्पप्
पुरन्दरऩ् ऱनक्कुर् ऱाळै यरम्बयर् पुडैशूऴ्न् दॆऩ्न
वरम्बऱु मऴलैत् तीञ्जॊऩ् मडन्दयर् तॊडर्न्दु शूऴ्न्दार् 1215

वरम्पु अऱु—असंख्य; तीम् मऴलै चॊल् मटन्तैयर्—मधुर तुतली बोली बोलनेवाली

स्त्रियाँ; परनृत मेकलैयुम्–(कमर में) ढीली पहनी हुई मेखला; कोतृत–(सुन्दर रूप से) गुँथी हुई; पातचालकमुम्–"पाद जाल" नामक पैंजनी; नाकम् चिरम् चेय् नूपुरमुम्–सर्पसिर-सम सिरेवाला नूपुर; चिलम्पोट्टु–पायलें; वण्टुम्–और हाथ के कंकण (या भ्रमर); चिलम्पि आर्प्प–अधिक बज उठे; तोंटर्न्तु–साथ लगे; पुरन्तरन् ततक्कु उड्राळै–इन्द्र की प्यारी (शची देवी) को; अरम्पैयर् पुटै चूळ्न्तु ॲन्न–अप्सराएँ घेरकर आती हों, ऐसा; चूळ्न्तार्–घेर गईं। १२१५

सभी स्त्रियाँ सीताजी को घेरकर आयीं। वे सब मधुर रूप से तुतलाती बोलनेवालियाँ थीं। उनकी कटि में मेखलाएँ और पैरों में पादजाल, सर्पसिर के समान सिरेवाले नूपुर और पायलें आदि विविध आभरण झनझना रहे थे। वे इन्द्र की देवी शची को अप्सराएँ घेरकर आयी हों, ऐसा सीताजी के चारों ओर आकर खड़ी हुयीं। १२१५

शिन्दोड्ड कुरळुङ् गूनुञ् जिलदियर् कुळामुन् देंड्रि
वन्दडि वणङ्गिच् चुड्र मणियणि विदान नीळल्
इन्दुविन् कोळुन्दु विण्मी निनत्तोडुम् वरुवदॆन्न
नन्दलिल् विळक्क मन्न नङ्गयु नडक्क लुड्राळ् 1216

चिन्तोट्टु–ठिगनियाँ; कुरळुम्–और बौनियाँ; कूनुम्–कुब्जाएँ; चिलतियर् कुळामुम्–चेरियों के समूह; तेंड्रि वन्तु–बहुत निकट आकर; अटि वणङ्कि–पैरों पर विनत होकर; चुड्र–घेरकर आईं; मणि अणि–रत्नालंकृत; वितानम् नीळल्–वितान के नीचे; इन्तुविन् कोळुन्तु–बालचन्द्र; विण्मीन् इनतुटन्–आकाश के ताराकुल के साथ; वरुवतु ॲन्न–आ रहा हो, ऐसा; नन्तल् इल्–निर्मल; विळक्कम् अन्न–दीप के समान; नङ्कैयुम्–नायिका भी; नटक्कल् उड्राळ्–चलने लगीं। १२१६

उनमें ठिंगनी स्त्रियाँ (तीन फुट की), (दो फुट की) बौनी स्त्रियाँ, और कुब्जाएँ थीं। चेरियों का समूह था। वे सीताजी के पैरों पर नमस्कार करके उनके साथ जाने लगीं। सीताजी के सिर के ऊपर रत्नालंकृत वितान तना हुआ आ रहा था। निर्दोष दीपक के समान भासमान वे नायिका, तारों के बीच जानेवाले चन्द्र के समान चलने लगीं। १२१६

वल्लियै युयिर्त्तनिल मङ्गयिवळ् पादम्
मॆल्लिय वुरैक्कुमॆन्न वञ्जिवॆळि यॆङ्गुम्
पल्लव मलर्त्तोहै परप्पिन ळॆन्नत्तन्
नल्लणि मणिच्चुडर् तवळ्न्दिड नडन्दाळ् 1217

वल्लियै–लता (सी सीता) को; उयिर्त्त–जन्म देनेवाली (प्रकट करानेवाली); निल मङ्कै–भू की देवी; इवळ् पातम्–इनके चरण; मॆल्लिय–कोमल हैं; उरैक्कुम्–दुखेंगी (धरती); ॲन्नृ–ऐसा; अञ्चि–डरकर; वॆळि अङ्कुम्–सभी स्थलों पर;

पल्लवम्–कोमल पत्तों; मलर् तोकै–और पुष्पकुल को; परप्पिनळ् अँत–मानो (भूमि ने) बिछाया हो, ऐसा; तन् नल् अणि मणि चुटर्–उनके श्रेष्ठ आभरणों की मणियों की ज्योति को; तवऴ्न्तिट–छिटकने देते हुए; नटन्ताळ्–(देवी) चलीं। १२१७

जब वे चली तब उनके आभरणों की मणियों की कांति भूमि पर गिरती फैलती आ रही थी। उसको देखकर ऐसा लगता था, मानो सीताजी को प्रकट करनेवाली भूमिदेवी ने, इस डर से कि देवी के कोमल चरण धरती पर पड़ने से दुखेंगे, सर्वत्र पल्लव और फूल बिछाये हैं। १२१७

तॉऴुन्दहय मॅन्नडै तॉलैन्दुकळि यन्नम्
ऍऴुन्दिडै विऴुन्दयर्व दॆन्नवय लॆङ्गुम्
कॉऴुन्दुडैय शामरै कुलाववॊर् कलावम्
वऴङ्गुनिऴल् मिन्नवरु मञ्ञैयॆन वन्दाळ् 1218

कळि अन्नम्–मुदित हंस; तॊऴुम् तकैय–सबसे प्रशंसनीय; मॆल् नटै–मन्द (सुन्दर) चाल के सामने; तॊलैन्तु–हारकर; ऍऴुन्तु–उठते; इटै विऴुन्तु–गिरते; अयर्वतु ऍन्न–म्लान होते हैं, जैसे; अयल् ऍङ्कुम्–सब ओर; कॊऴुन्तु उटैय–पल्लव मृदुल; चामरै कुलाव–चामर डुलते हैं; कलावम् वऴङ्कुम्–(पंख) कलाप से निकलनेवाली; निऴल्–आभा; मिन्न वरुम्–बिजली के समान फैलाते आनेवाले; ओर् मञ्ञै ऍन–एक मोर के समान; वन्ताळ्–आई। १२१८

सीताजी के चारों ओर चामर डुल रहे थे। वे उन हंसों के समान लगते थे जो अपनी प्रशंसित हंसगति के सीताजी की चाल के सामने मूल्य खो देने से दुखी होकर उठते, चलते और लड़खड़ाकर गिर जाते थे। वे अपने कलाप आदि आभरणों के साथ कलाप खोलकर आकर्षक ढंग से छटा बिखेरते आनेवाले मोर के समान चलती गईं। १२१८

* मण्मुद लनैत्तुलहिन् मङ्गयर्गळ् ऍल्लाम्
कण्मणि यॆनत्तहय कन्निऍऴिल् काण
अण्णन्मर बिर्चुड ररुत्तियॊडु ताव्
विण्णिऴिव दॊप्पदॊर् वितानऩिऴल् वन्दाळ् 1219

मण् मुतल्–भूलोकादि; अनैत्तु उलकिल्–सभी लोकों में रहनेवाली; मङ्कैयर्कळ् ऍल्लाम्–सभी स्त्रियाँ; कण् मणि ऍन तकैय–अपनी आँखों का तारा मानें, इस योग्य; कन्नि–कन्या; ऍऴिल् काण–(का) सौंदर्य देखने के लिए; अण्णल् मरपिल् चुटर्–(श्रीरामचन्द्र) प्रभु के वंश के आदि पुरुष, सूर्य; अरुत्तियॊटु–चाव के साथ; अव विण् इऴिवतु–उस आकाश से उतरते हों; ऒप्पतु–ऐसा; ओर् वितानम् निऴल्–एक वितान के नीचे; वन्ताळ्–आईं। १२१९

सीताजी के ऊपर रत्नमंडित एक वितान ले आया जा रहा था। वह सूर्य के समान लगता था, जो श्रीराम के वंश के आदि पुरुष थे और जो भूलोक आदि सभी लोकों की सुन्दरियों से आँखों के तारे के समान मान्य सीताजी के सौन्दर्य को देखने के लिए उतरकर आ रहे हों। १२१९

कऱ्ऱैविरि पॊऱ्चुडर् पयिऱ्ऱुरु कलाबम्
शुऱ्ऱुमणि पुक्कविऴै मिक्किडै तुवन्ऱि
विऱ्ऱवऴ वाण्मिळिर मॆय्यणिहण् मिन्नच्
चिऱ्ऱिडै नुडङ्गवॊळिर् शीऱडि पॆयर्त्ताळ् 1220

कऱ्ऱै विरि–किरणजाल बिखेरनेवाला; पॊन् चुटर् पयिऱ्ऱु उरु–स्वर्ण की कांति से युक्त; कलाप–कलाप नामक कटि का आभरण; चुऱ्ऱुम्–और कमर को वलयित कर पहने जानेवाले; मणि पुक्क इऴै–रत्नखचित आभरण; मिक्कु–अधिक; इटै तुवन्ऱि–आपस में मिलकर; विल् तवऴ–धनु के समान टेढ़ा प्रकाश फैलाते थे; वाळ् मिळिर–तलवार के समान भी फैलाते थे; मॆय्–उनकी देह और; अणिकळ्–आभुरण भी; मिन्न–बिजली के समान चमकते; चिऱु इटै–छोटी कमर; नुटङ्क–झुक जाती; ऑळिर् चिऱु अटि–उज्ज्वल अपने छोटे (चरण) डग; पॆयर्त्ताळ्–(देवी ने) (बारी-बारी से) भरे। १२२०

सीता के शरीर पर अनेक आभरण थे। कमर में कलाप, (सोलह लड़ियोंवाली मेखला) और अन्य रत्नमय आभरण थे। उनका प्रकाश धनुष और तलवार के समान भूमि पर पड़ता था। उनकी देह की काँति बिजली के समान चमकती थी। पतली कमर झुक-झुक जा रही थी। वे अपने छोटे सुन्दर चरणों को बारी-बारी से रखते हुये आ रही थीं। १२२०

पॊन्निन्नॊळि पूविन्वॆऱि शान्दुपॊदि शीदम्
मिन्निनिऴ लन्नवडन् मेनियदु मान
अन्नमु मरम्बयरु मारमिऴ्दु नाण
मन्नवै यिरुन्दमणि मण्डब मणैन्दाळ् 1221

पॊन्निन् ऑळि–सोने की कांति; पूविन् वॆऱि–फूलों की सुगन्ध; चान्तु पॊति–चन्दन की; चीतम्–शीतलता; मिन्निन् निऴल्–बिजली की दमक; अन्नवळ् तन् मेनि–उनके शरीर पर (मिले थे); अतु–उससे; मान–तुल्य रीति से; अन्नमुम्–(चाल से) हंस; अरम्पॆयरुम्–(सुन्दरता से) अप्सराएँ; आर् अमिऴ्तुम्–(वचन-मधुरिमा में) श्रेष्ठ अमृत; नाण–लजा जायँ, ऐसा (चलकर); मन् अवै इरुन्त–जहाँ राजसभा लगी थी उस; मणि मण्टपम्–रत्नमण्डप में; अणैन्ताळ्–पहुँचीं। १२२१

उनके शरीर में स्वर्ण की आभा, फूल की सुगन्धि, चन्दन की शीतलता और बिजली की दमक —ये सब मिले हुये थे। वे हंसों को (चाल में), अप्सराओं को (रूप में), अमृत को (वचन-मधुरिमा में) हराकर उनको लज्जित करते हुये सभा मंडप में गयी जिसमें सभी राजा लोग आसीन थे। १२२१

शमैत्तवरै यिन्मैमरै तानुमॆन लामच्
चुमैतिरण् मुलैत्तॆरिवै तूय्वडिवु कण्डोर्

अमैत्तिरळ्हों डोळियरु माडवरु मॆल्लाम्
इमैत्तिल रुयिर्त्तिलर्हळ् शित्तिर मॆनत्ताम् 1222

चमैत्तवरै इन्मै–सर्जक के न होने के कारण; तानुम् मऱै ऍन्तल् आम्–स्वयं वेद जो माने जा सकते थे; चुमै–(वे) भारी; तिरळ् मुलै–पुष्ट स्तनोंवाली; तॆरिवै–कन्यारत्न का; तूय् वटिवु कण्टार्–पवित्ररूप का दर्शन जिन्होंने किया उन; अमै तिरळ् कॊळ्–बाँस की-सी सुन्दरता से युक्त; तोळियरुम्–भुजाओंवाली स्त्रियाँ और; आटवरुम्–पुरुष; ऍल्लाम्–सभी ने; चित्तिरम् ऍन्त–चित्र के समान; इमैत्तिलर्–पलकें नहीं मारीं; उयिर्त्तु इलर्कळ्–साँस नहीं छोड़ी; (ताम्)। १२२२

• सीताजी स्वयंभू थीं। अतः उनका शरीर वेदों के समान, जो अपौरुषेय है, पवित्र था। मनोरम पीन उरोजों से शोभित उनको देखकर बाँस-सम भुजावाली स्त्रियाँ और पुरुष सब चित्रों के समान निस्पंद रह गये। उनका विस्मय इतना था कि उनकी आँखें नहीं झपकीं और साँसें भी रुकी रह गईं। १२२२

❀ अन्नवळै यल्लळॆन वामॆन वयिर्प्पान्
कन्नियमिळ् दत्तयॆदिर् कण्डकडल् वण्णन्
उन्नुयिर् निलैप्पदॊ ररुत्तियॊ डुळैन्दाण्
डिन्नमु दॆळक्कळिहॊ ळिन्दिरनै यॊत्तान् 1223

कन्नि अमिळ्तत्तै–सुधा-सम कन्यारत्न को; ऍतिर् कण्ट–सामने जिन्होंने देखा; कटल् वण्णन्–समुद्रवर्ण (नीले) श्रीराम; अन्नवळै–उनको (उनके सम्बन्ध में); अल्लळ्–वे नहीं; ऍन–ऐसा; आम् ऍन–होंगी वही, ऐसा; अयिर्प्पान्–संशयग्रस्त रहे; उन्नु–(श्रेष्ठ)मान्य; उयिर्–प्राणों को; निलैप्पतु ओर् अरुत्तियॊटु–अमर बनाने की इच्छा से; उळैत्तु–बहुत परिश्रम करके; आण्टु–वहाँ (क्षीरसागर में); अमुतु ऍळ–अमृत के प्रकट होने पर; कळि कॊळ्–आनन्दपूरित; इन्तिरनै–(जो हुए) उन इन्द्र के; ऑत्तान्–समान हुए। १२२३

उनको देखने पर प्रभु श्रीराम की क्या हालत हुयी ? उनको देखने से पहले सागरवर्ण श्रीराम के मन में संशय बना हुआ था। धनुर्भंग के फलस्वरूप जो उनके साथ विवाहनेवाली थी वे क्या वही हैं जिनको मैंने उस दिन देखा था ? वे कभी सोचते कि हाँ वही होंगी, कभी सोचते कि नही हों, शायद। संशयसागर में डूबते उतराते थे। अब उनको देखकर वे इन्द्र के समान जो अमर बनने की इच्छा से बहुत परिश्रम से सागरमंथन कराकर अमृत के प्रकट होने पर बहुत आनन्द मग्न हुये थे, हो गये (बहुत आनन्दित हो गये)। १२२३

नऱत्तुऱै मुदिर्च्चियुरु नल्लमुदु पिल्हुऱ्
ऱऱत्तिन्विळै वॊत्तुमुह डुन्दियरु हुयक्कुम्

निऱत्तुव रिदऴ्क्कुयि निन्नैप्पिनिडै यल्लाल्
पुऱत्तुमुळ ळोवॆन्न मनत्तॊडु पुहन्ऱान् 1224

नऱत्तुउ उऱै–शहद में स्थित; मुतिर्च्चि उऱु–(स्वाद में) वर्धित; नल् अमुतु–अच्छी सुधा को; पिलुकु उऱ्ऱु–बहाते हुए; अऱत्तिन् विळैवु–धर्म के फल से; ऒत्तु–तुल्य होकर; मुकडु उन्ति–चोरी से लाकर; अरुकु उय्क्कुम्–पास में प्राप्त की हुई; निऱम्–सुचारु रंगवाली; तुवर् इतऴ्–प्रवाल-सम मुख; कुयिल्–कोयल (-बयनी) ये; निनैप्पिन् इटै अल्लाल्–केवल मेरे मन की (स्मरण की) न होकर; पुऱत्तुम् उळळो–बाहर भी रहती है क्या; ऎन्न–ऐसा; मनत्तॊटु–मन के साथ; पुकन्ऱान्–कहा। १२२४

"मधु-मिश्रित अत्यन्त रुचिपूर्ण अच्छे पीयूष को बरसाते हुये, धर्म के फल के समान (मुझे अत्यन्त प्यारी बनकर), उस कन्यासौध के शिखर से इधर निकट आगत, ये प्रवालाधरा और कोकिल वाणी (सीताजी) मेरे मन में (अन्दर) रहने के अलावा बाहर भी है क्या ?" श्रीराम ने आप से आप ऐसा आश्चर्य करते हुए कहा। १२२४

❀ ऎङ्गळ्शॆय् तवत्तिनि लिरामनॆन वन्दोन्
शङ्गिनॊडु शक्कर मुडैत्तनि मुदऱ्पेर्
अङ्गणर शादलिनव् वल्लिमलर् पुल्लुम्
मङ्गैयिव ळामॆन्न वशिट्टन्महिऴ् वुऱ्ऱान् 1225

वचिट्टन्–वसिष्ठजी ने; ऎङ्कळ् चॆय् तवत्तितिल्–हमारी पूर्वकृत तपस्या से; इरामन् ऎन्न वन्तोन्–श्रीराम के रूप में जो (अवतरित हो) आये; चङ्कितॊटु चक्करम् उटैय–शंख चक्रधर; तनि मुतल्–अद्वैत ब्रह्म; पेर् अम् कण् अरचु–बड़ी आँखोंवाले सुन्दर जगन्नाथ ही हैं; आतलित्–इसलिए; इवळ्–ये; अल्लि मलर् पुल्लुम्–कमलपुष्प पर रहनेवाली; अ मङ्कै आम् ऎन–वही (कमला) देवी हैं यह समझकर; मकिऴ्वु उऱ्ऱान्–आनन्द अनुभव किया। १२२५

उनको देखकर वसिष्ठजी को अपार आनन्द हुआ। उनको विदित था कि श्रीराम जो हमारी पूर्वकृत तपस्या के कारण अवतार ले आये हैं शंख चक्रधर, अद्‌वितीय परब्रह्म, विशालाक्ष, जगन्नाथ श्रीमन्नारायण ही हैं। अतः ये सीताजी स्वयं श्रीलक्ष्मी देवी हैं —यह जानकर वे आनन्दमग्न हो गये। १२२५

❀ तुन्ऱुपुरि कोदयॆऴिल् कण्डुलहु शूऴ्वन्
दॊन्ऱुपुरि कोलॊडु तनित्तिहिरि युय्प्पान्
ऎन्ऱुमुल हॆऴुमर शॆय्दियुळ नेनुम्
इन्ऱुतिरु वॆय्दिय दॆनक्कॆन्न निनैत्तान् 1226

उलकु चूऴ् वन्तु–लोक भर में भ्रमण करके आकर; ऒन्ऱु पुरि कोलॊटु–एक-सम शासन करनेवाले राजदण्ड (नीति) के साथ; तनि तिकिरि उय्प्पान्–एक

(आज्ञा-) चक्र चलानेवाले; तुऩ्ऱु पुरि कोतै–घने घुँघराले बाल वाली (सीताजी) का; ऍऴिल् कण्टु–सौंदर्य देखकर; उलकु एऴुम्–सातों लोकों पर; ऍऩ्ऱुम्–सदा; अरचु ऍय्ति उळत्तेऩुम्–राज्य करता रहा, तो भी; ऍतक्कु तिरु ऍय्तियतु–मैं श्रीमान हुआ; इऩ्ऱु ऍऩ–आज ही, यह; निऩैत्ताऩ्–सोचा। १२२६

दशरथ का भी मन अत्यन्त मुदित हुआ। चक्रवर्ती ने जो सारे लोक पर एक ही सम (तटस्थ रहकर) राजदण्ड धारणकर अकेला आज्ञाचक्र चलाते रहे, सुलक्षणा, घने केशवाली सीताजी को देखा तो समझ लिया— कि इतने दिन सातों लोकों को शासित कर रहा था तो क्या हुआ ? आज ही मैं सचमुच श्रीमान हुआ कि मेरे राज्य में लक्ष्मीदेवी आईं। १२२६

❀ नैवळ नविऱ्ऱु मॊऴि नण्णवर लोडुम्
वैयनुहर् कॊऱ्ऱवत्तु मादवरु मल्लार्
कैहडलै पुक्कन करुत्तुळवै यॆल्लाम्
दॆय्वमॆन वुऱ्ऱवुडल् शिन्दैवश मन्ऱो 1227

नैवळम् नविऱ्ऱुम्–'नैवळम्' नाम के राग के समान मधुर वचनवाली सीताजी; नण्ण वरलोटुम्–पास आई, त्योंही; वैयम् नुकर् कॊऱ्ऱवत्तुम्–लोकरंजक श्रीराम; मातवरुम् अल्लार्–और (वसिष्ठ विश्वामित्र प्रभृति) महान तपस्वियों से इतर सबों के; कैकळ्–हाथ; तलै पुक्कन–सिरों के ऊपर अंजलिबद्ध हो गये; करुत्तु उळ् अवै ऍल्लाम्–उनके मन आदि अन्तःकरणों ने; तॆय्वम् ऍऩ उऱ्ऱऩ–(आद्या) देवी को पहचान लिया; उटल् चिन्तै वचम् अऩ्ऱो–शरीर मन का वशवर्ती है न। १२२७

'नैवळम्' (तमिऴ् का एक राग है। वह "पालै" प्रदेश, मरुप्रदेश से संबंध रखता है। वह बहुत ही मोहक राग समझा जाता है। इसी काण्ड के ८६८वें पद में भी इसकी चर्चा आयी है।) की सी मधुर-बयनी सीताजी जब पास आ गईं तब लोकरंजक रामचन्द्रजी (या भूपति दशरथ या भूप जनक —या तीनों) को और महान तपस्वियों (वसिष्ठजी विश्वामित्र प्रभृति महर्षियों) को छोड़कर अन्य सबके हाथ आप ही आप अपने-अपने सिरों के ऊपर अंजलिबद्ध हो गये। उनके मन ने उन्हें पहचनवा दिया कि वे आद्यादेवी, भगवती है। शरीर तो मन का आज्ञाकारी है ! (इस पद में सिर्फ एक राजा की चर्चा विना नाम के आयी है। अतः अर्थ करने में कठिनाई महसूस की जाती है।)। १२२७

❀ मादवरै मुऱ्कॊळ वणङ्गिनॆंडु मऩ्ऩऩ्
पादमल रैत्तॊऴुदु कण्गळ्पनि पायुम्
तादैयरु हिट्टतवि शिऱ्ऱनि यिरुन्दाळ्
पोदिऩै वॆऱुत्तरशर् पॊऩ्मनै पुहुन्दाळ् 1228

पोतिनै वॆऱुत्तु–(कमल) पुष्प से घृणा करके (त्याग कर); अरचर् पॊऩ् मतै–(जनक) महाराज के स्वर्णमहल में; पुकुन्ताळ्–जो (प्रवेश करने) आई;

मातवरै–(उन सीतादेवी ने) तपोधनों का; मुन्नु कॊळ वणङ्कि–पहले नमस्कार करके; नॆट्टु मन्नवन्–चक्रवर्ती के; पातमलरै तॊळुतु–चरणकमलों की पूजा करके; कण्कळ् पनि पायुम्–आँखों में (आनन्द के) अश्रु बहाते हुए; तातै अरुकु–(विराजमान) पिता के पास; इट्ट तविचिल्–डले रहे आसन पर; तनि इरुन्दाळ्–शालीन रूप से आसीन हुई। १२२८

कमलपुष्प का अपना वासस्थान छोड़कर जो राजा जनक के स्वर्ण-महल में अपनी इच्छा के साथ आयी थी उन सीतादेवी ने पहले महात्मा तपोधनों को नमस्कार किया। बाद श्रेष्ठ चक्रवर्ती दशरथ को नमस्कार किया। इसको राजा जनक आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुये देख रहे थे। उनके पास ही सीताजी के लिए उत्तम आसन डलवा दिया गया था। सीताजी उस पर आकर आसीन हुईं। १२२८

❀ अच्चिलै युणर्न्दमुद लन्दण ऩिनैन्दान्
पच्चिलैयै यॊत्तपडि वत्तडलि रामन्
नच्चिलै ययिऱ्कण्मलर् नङ्गैयिव ळॆन्ऱाळ्
इच्चिलै किडक्कमलै येळ्ळैयुमि ऱानो 1229

अ चिलै उणर्न्त–उन दिव्यमूर्ति का पारलौकिक सौंदर्य जो पहले ही पहचान गये, वे; मुतल् अन्तणन्–अग्रगण्य महर्षि; नच्च–आकर्षणयुक्त; इलै अयिल् कण्–पत्र के आकार (का सिरवाला) भाला-सी आँखवाली; मलर् नङ्कै–कमलादेवी; इवळ् ऎन्ऱाल्–ये हैं तो; पच्चिलैयै ऒत्त पटिवत्तु–तमाल समान रंगवाले; अटल् इरामन्–बली श्रीराम; इ चिलै किटक्क–यह शिव-धनुष रहे एक ओर; मलै एळ्ळैयुम्–सातों गिरियों को; इऱानो–नहीं तोड़ेंगे क्या; निनैन्तान्–ऐसा मन में सोचा। १२२९

विश्वामित्रजी ने अब श्रीलक्ष्मी को साक्षात देखा। उनकी दिव्य मूर्ति के पारलौकिक सौन्दर्य से अवगत उन्होंने मन मे सोचा कि भाला-सी आँखवाली ये कमला हैं; तो तमालवर्ण और बली श्रीराम इनको पाने के लिए यह एक धनुष क्या, सातों कुलगिरियों को नही तोड़ेंगे क्या ? । १२२९

❀ ऎय्यविल् वळैत्तदु मिऱुत्तदु मुरैत्तुम्
मॆय्विळै यिडत्तुमुद लैयम्विड लुऱ्ऱाळ्
ऐयनै यहत्तुवडि वेयल पुऱत्तुम्
कैवळै तिरुत्तुबु कडैक्कणि नुणर्न्दाळ् 1230

ऎय्य–शर चलाने; विल् वळैत्ततुम्–धनुष झुकाना और; इऱुत्ततुम्–उसका भंजन करना; उरैत्तुम्–लोगों ने कह दिया था, तो भी; मुतल् ऐयम्–पहले उठे सन्देह को; मॆय् विळैवु इटत्तु–सत्य जानने पर; विटल् उऱ्ऱाळ्–(अभी) दूर करके; ऐयनै–सुन्दर प्रभु को; अकत्तु वटिवे अलतु–मन में (ध्यान करने) देखने के साथ-साथ; पुऱत्तुम्–बाहर भी; कै वळै–हाथों के कंकणों को; तिरुत्तुपु–ठीक करने के बहाने; कटै कण्णिन्–अपाँग से; उणर्न्ताळ्–देख, पहचान लिया। १२३०

श्री सीताजी को चेरियों ने श्रीराम का शर चलाने के उद्देश्य से धनु लेना, फिर उसका भंग करना आदि समाचार बतलाया था। उनके मन में पूर्णरूप से विश्वास नहीं हुआ था कि ये वही हैं जिनको वे ध्यान में रख रही हैं। अब सामने देख लिया तो सन्देह दूर हो गया। तो भी ध्यान के रूप से सामने के रूप को मिलाते हुए वे अपने कंकणों को ठीक करने के बहाने अपने अपांग से उन्हें खूब देख कर आश्वस्त हो गईं। १२३०

❀ करुङ्गडै नॆडुङ्गणॊळि यारुनिऱै कण्णप्
पॆरुङ्गडलिऩ् मण्डवुयिर् पॆट्ऱिति दुयिर्क्कुम्
अरुङ्गल ऩणङ्गरशि यारमिऴ् दऩैत्तुम्
ऒरुङ्गुड ऩरुन्दिऩरै यॊत्तुड ऱडित्ताळ् 1231

करु नॆट्टु कटै कण् ऒळि–काली दीर्घ अपांग की दृष्टिरूपी; आऱु–नदी के; निऱै–(सुन्दरता से) भरपूर; कण्णऩ् पॆरु कटलिल–सबके नेत्र (श्रीराम) रूपी बड़े सागर में; मण्ट–सवेग जाकर मिलने से; उयिर् पॆट्ऱु–प्राण पाकर; इतितु उयिर्क्कुम्–सन्तोष की साँस लेती (हैं, जो); अरु कुलऩ्–श्रेष्ठ गुणों का आगार; अणङ्कु अरचि–स्त्रियों में रानी, सीताजी; आर् अमिऴ्तु अऩैत्तुम्–सारा दुष्प्राप्य अमृत; ऒरुङ्कु उटऩ्–अकेले एक साथ; अरुन्तिऩरै ऒत्तु–(जिसने) पिया (हो उसके) समान; उटल् तटित्ताळ्–मोटे शरीर की हुईं। १२३१

वे आनन्द से फूल उठीं। उनकी काली लम्बी आँख की कनखी-दृष्टि रूपी नदी कण्णन (लोकनेत्र) श्रीराम रूपी सौन्दर्य-सागर की ओर सवेग बही। तब सीताजी के प्राण लहलहा उठे। वे सुख-सन्तोष की साँसें छोड़ने लगीं। श्रेष्ठ गुणों का आगार, स्त्रियों में रानी देवी सीताजी उस मनुष्य के समान फूल उठीं जिसने सारा प्राप्य अमृत अकेला और एक साथ अशन कर लिया हो। १२३१

कणङ्गुऴै करुत्तिलुऱै कळ्वऩॆऩ लाऩाऩ्
वणङ्गुवि लिऱुत्तव ऩॆऩत्तुयर् मऱन्दाळ्
अणङ्गुऱु मविज्जैकॆड विज्जयि ऩहम्बा
डुणर्न्दऱिवु मुट्ऱुपय ऩुट्ऱवरै यॊत्ताळ् 1232

कणम् कुऴै–स्थूल कर्णकुण्डल धारिणी; करुत्तिल् उऱै कळ्वऩ्–मन में आकर घुसा चोर; ऎऩल् आताऩ्–कहाने योग्य जो बने; वणङ्कु विल् इऱुत्तवऩ्–वे ही झुके धनुष को तोड़नेवाले हैं; ऎऩ–यह जानकर; तुयर् मऱन्ताळ्–दुख भूलीं; अणङ्कु उऱुम्–(जन्म लेने का) दुखदायी; अविज्चै कॆट–अविद्या का नाश करके; विज्चैयिऩ्–आत्मविद्या से; अकम् पाटु उणर्न्तु–अन्तरात्मा को जानकर; अऱिवु मुट्ऱु पयऩ्–ज्ञान के विकास का परिणाम (मुक्ति); उट्ऱवरै–जिन्होंने पाया हो; ऒत्ताळ्–उनके समान हुईं। १२३२

जब बड़े-बड़े कुण्डलों की धारिणी सीता को दृढ़ विश्वास हो गया

कि जो पहले अपने (सीताजी के) मन में प्रविष्ट होकर 'चोर' कहने योग्य थे वे ही अपने सामने जो "झुका" उस धनु के भंजक श्रीराम है। अब चोर के समान रहने की आवश्यकता नही रही। इसलिए वे चिन्ता से विमुक्त हुई। अविद्या जन्म का कारण है। आत्मविद्या-प्राप्त मनुष्य का अविद्यानाश हो जाता है और उस विद्या या ज्ञान का परिणाम मुक्ति है। सीताजी उस मुक्तिप्राप्त मनुष्य के समान हुई। १२३२

कॊल्लुयर् कळिऱ्ऱरशर् कोमहऩव् वेलै
कल्विकरै युऱ्ऱमुनि कौशिकऩै मेलोय्
वल्लिपोरु शिऱ्ऱिडै मडन्दैमण नाळाम्
ॲल्लयि ऩलत्तपह लॆऩ्ऱुरैशॆ यॆऩ्ऱाऩ् 1233

अव् वेलै–उस समय; कॊल् उयर् कळिऱ–मारने के काम में अभ्यस्त हाथियों (की सेना) के; अरचर् कोमकऩ्–(पति) राजाधिराज (दशरथ) ने; कल्वि करै उऱ्ऱ–विद्या-पारंगत; मुऩि–मुनि; कौचिकऩै–कौशिक को देखकर; मेलोय्–महात्मा; वल्लि पोरु–लता-तुल्य; चिऱु इटै–पतली कमरवाली; मटन्तै–कन्या, सीताजी का; मणम् नाळ् आम्–विवाह का दिन जो; ॲल्लै इल् नलत्त–अपार मंगलदायक; पकल्–दिन (होगा); ॲऩ्ऱु–कौन-सा दिन है; उरै चॆय्क–बताइये; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा। १२३३

तब घातक हाथियों की सेना के स्वामी दशरथ ने सर्वविद्यापारंगत महर्षि कौशिक से पूछा कि महर्षि! लता-सी पतली कमरवाली सीताजी के विवाह का शुभ दिन, जो सर्वमंगलदायी दिन है, कौन-सा निश्चित है?। १२३३

वाळैयुह ळक्कयल्हळ् वाविपडि मेदि
मूळैमुदु हैक्कदुव मूरिय वराल्मीऩ्
पाळैविरि यक्कुदिहॊळ् पण्णैवळ नाडा
नाळैयॆऩ वुऱ्ऱपह नऱ्ऱव नुरैत्ताऩ् 1234

वावि–वापियों में; वाळै उकळ–वाळै नाम की मछलियाँ उछलती हैं; पटि मेति–जलमग्न भैंसों के; मूळै मुतुकै–मेजा (सिर) और पीठ को; कयल्कळ् कतुव–"कयल" मछलियाँ कुरेदती हैं; मूरिय वराल् मीऩ्–मोटी "वराल्" नामक मछलियाँ; पाळै विरिय–(क्रमुक, नारियल आदि के डण्ठलों के) वालों को खोलते हुए; कुतिकॊळ्–(उतना ऊँचा) उछलती हैं जहाँ; पण्णै वळम्–(उस) खेतों और बागों के उर्वर; नाटा–देशाधिपति; उऱ्ऱ पकल्–(विवाह के) योग्य दिन; नाळै–कल; ॲऩ–यह; नल् तवऩ् उरैत्ताऩ्–महान तपस्वी ने कहा। १२३४

उत्तम तपस्वी विश्वामित्र ने उत्तर दिया कि हे कोशल देश के, राजा दशरथ! उस कोशल देश के जिसकी वापियों में 'वाळै' मछलियाँ उछलती

रहती हैं, जलमग्न भैंसों के सिरों और पीठों को 'कयल' मछलियाँ काटती हैं और वराल नामक मछलियाँ इतना ऊँचा उछलती है कि वे तट में रहने वाले नारियल और पूग के पेड़ों पर डंठलों में कूदकर बालों को खोल देती हैं, और जो खेतों और बागों की भूमि है, विवाह का दिन कल होगा। १२३४

❀ शॉऱ्ऱपॉऴु दत्तरशर् कैदॉऴु वॅऴुन्दान्
ऑऱ्ऱवयि रच्चुरिहॉऴ् शङ्गिनॉलि पॉङ्गप
पॉऱ्ऱड मुडिप्पुदु वॅयिऱ्पॉऴि तरप्पोय्
नऱ्ऱवरनुच् चैयॉडु नन्मनै यडैन्दान् 1235

चॉऱ्ऱ पॉऴुतत्तु–(उनके) कहते समय; ऍऴुन्तान्–(चक्रवर्ती) उठे; अरचर् कै तॉऴ–(अन्य) राजाओं के विनय करते; ऑऱ्ऱै–अनुपम; वयिरम्–हीरे की शामी से युक्त; चुरि कॉऴ्–आवर्तनयुक्त; चङ्किन् ऑलि–शंख का नाद; पॉङ्क–हुआ, तव; पॉन् तट मुटि–स्वर्ण के बड़े किरीट से; पुतु वॅयिल् पॉऴितर–(सूर्य की) मन्द धूप का-सा प्रकाश छिटका, तब; नल् तवर् अनुच्चैयॉटु–श्रेष्ठ तपस्वियो की आज्ञा लेकर; पोय्–जाकर; नल् मनै अटैन्तान्–उत्तम भवन में पहुँचे। १२३५

यह सुनकर चक्रवर्ती उठे और राजाओं का नमस्कार स्वीकार करते हुए, और अप्रतिम, शामीदार, आवर्तनयुक्त शंख का नाद सुनते हुये, और स्वर्णनिर्मित ऊँचे किरीट से प्रकाश फैलाते हुये, महर्षियों की आज्ञा लेकर अपने लिए नियत उत्तम महल में पहुँचे। १२३५

अन्नमरि दिऱ्पिरिय वण्णलु महन्ऱोर्
पॉन्निनॅडु माडमनै पुक्कनन् मणिप्पूण्
मन्नवर् पिरिन्दनर्हण् मादवर्हळ् पोनार्
मिन्नुचुड रादवनु मेरुविन् मऱैन्दान् 1236

अन्नम्–हंसिनी सदृश सीताजी; अरितिन् पिरिय–विना इच्छा के वहाँ से गईं, तव; अण्णलुम्–प्रभु ने भी; अकन्ऱु–वहाँ से हटकर; ओर्–अप्रतिम एक; पॉन्निन् नॅटु माटम्–स्वर्ण के बड़े माढ़ेवाले; मनै–भवन में; पुक्कनन्–प्रवेश किया; मणि पूण् मन्नवर्–रत्नाभरणधारी राजा लोग भी; पिरिन्तनर्कळ्–वहाँ से हट चले; मातवर्कळ् पोनार्–बड़े तपस्वी भी गए; मिन्नु चुटर् आतवनुम्–दीप्त किरणोंवाले सूर्य भी; मेरुविल् मऱैन्तान्–मेरु के पीछे छिप गये। १२३६

पश्चात सीताजी, जो हंसिनी सदृश थी, चलीं। उनको जाने की इच्छा ही नहीं होती थी। प्रभु श्रीराम भी वहाँ से हटकर एक माढ़ा वाले बड़े, स्वर्णमय सौध में गये। रत्नाभरणधारी राजा चले। महान तपस्वी लोग भी चले। किरणमाली सूर्य भी मेरु के पीछे छिप चला। १२३६

21. कडिमणप् पडलम् (शुभ-विवाह पटल)

इडम्बडु पुहऴ्च्चनहर् कोन्निन्डु पेणक्
कडम्बडु कळिऱ्ऱरश रादियिडै कण्डोर्
तिडम्बडु तिऱत्तशिरु कम्मियर्हळ् काऱुम्
उडम्बोडु तुऱक्कनह रुऱ्ऱवरै यॊत्तार् 1237

इटम् पटु पुकऴ्–विस्तृत यशस्वी; चनकर् कोन्–जनक महाराज के; इन्तु पेण–ख़ब सत्कार करने से; कटम्पटु कळिरु–मदजलस्रावी गजों वाले; अरचर् आति–राजा आदि; इटै कण्टोर्–मध्य स्थिति के मन्त्री; तिटम् पटु तिऱत्त–शारीरिक बल और कुशलतायुक्त; चिरु कम्मियर्कळ् काऱुम्–छोटे कारीगरों तक; उटम्पोटु तुऱक्क नकर् उऱ्ऱवरै–शरीर के साथ स्वर्ग जो पहुँचे हों; ऒत्तार्–उनके समान बने। १२३७

विस्तृत यशस्वी जनक ने सभी अतिथियों का खूब सत्कार किया। सत्कार में कोई भेद नहीं दिखाया गया। मत्तगजों की सेना वाले उच्च राजा से लेकर, मध्य में रहनेवाले अमात्यों के साथ, श्रमिकों तक, जो शरीर की शक्ति और शारीरिक सामर्थ्य का अवलम्ब ले जीते थे, सभी उनके सत्कार से तृप्त हुए। वे सब ऐसा अनुभव करने लगे मानो सशरीर वे स्वर्ग पहुँच गये हों। (स्वर्ग भोग-भूमि कहा जाता है।)। १२३७

तेडरु नलत्तपुन लाशैतॆर लुऱ्ऱार्, माडॊर्तड मुऱ्ऱदन्नै यॆय्दुम्वऴि काणा
दीडऴि वुऱत्तळर्वॊ डेमुरुव रन्ऱे, आडह वळैक्कुयिलु मन्निलय ळानाळ् 1238

तेटु–अन्वेषित; अरु नलत्त पुनल् आचै–आवश्यक अच्छे जल की इच्छा से; तॆरल् उऱ्ऱार्–कष्ट उठानेवाले; माटु–एक ओर; ऒर् तटम् उऱ्ऱु–एक तालाब देखकर भी; अतन्नै ॲय्तुम् वऴि काणातु–उसके पास जाने का मार्ग न पाकर; ईटु अऴिवु उऱ–अपना सारा बल खोकर; तळर्वॊटु–शिथिलता के साथ; एम् उरुवर् अन्ऱे–क्षुब्ध होंगे न; आटकम् वळै–श्रेष्ठ सोने के कंकणवाली; कुयिलुम्–कोकिला (सी बोलीवाली) भी; अ निलैयळ्–उस स्थिति को पहुँची हुई; आनाळ्–बनीं। १२३८

(सीताजी की विरह-वेदना फिर जाग्रत हो गई। स्वर्णकंकण-धारिणी और कोकिल-बयनी उनकी स्थिति कैसी थी?) समझिये कि स्वच्छ अच्छे जल के अन्वेषण में कोई संकटग्रस्त है। उसे कहीं एक ओर तालाब दिखाई दे रहा है। पर उसके पास जाने का मार्ग नहीं मिलता। तब वह क्लान्त और श्रान्त होकर विक्षुब्ध हो जायगा न? देवी उसकी वैसी हालत को पहुँच गई। १२३८

उरवेदुमि लारुयि रीर्दुमॆन्नाक्, करवेपुरि वारुळ रोकदिरोन्
वरवेयॆन्नै याळुडै यान्वरुमे, इरवेकॊडि याय्विडि यायॆनुमाळ् 1239

उरवु एतुम् इलार्–वल कोई जिनमें न हो, उन (अवलाओं) के; उयिर् ईर्तुम् ॲत्ता–प्राण हर लेंगे, कहकर; करवे पुरिवार्–प्रवंचना करनेवाले; उळरो–हैं क्या (नहीं हैं); इरवे–हे निशा; कॊटियाय्–तू क्रूर है; कतिरोन् वरवे–(कल) सूर्य के (उदय हो) आते ही; ॲनै आळ् उटैयान्–मुझे अपनानेवाले स्वामी; वरुमे–आ जायेंगे; विटियाय्–तू चली नहीं जाती; ॲनुम्–कहतीं । १२३६

(निशा का उपालम्भ) री रजनी ! निर्बल अबलाओं की जान हर लेंगे यह संकल्प लेकर प्रवंचना करनेवाले भी संसार में कहीं हैं ? तुम ही क्रूर हो ! कल सूर्य के उदय के साथ मेरे स्वामी मुझे अपना लेंगे । तुम अन्त नहीं होतीं और प्रभात को आने नहीं देती । यह कैसा स्वभाव है —देवी ने रात्रि को यह उपालम्भ दिया । १२३९

करुनायिरु पोल्बवर् कालॊडुपोय्, वरुनाळय लेवरु वाय्मनने
पॅरुनाळुड नेपिरि याडुळल्वाय्, ऑरुनाडरि यादॊळि वारुळरो 1240

मनने–हे मेरे मन; करु नायिरु पोल्पवर्–नीलमेघ श्यामल, सूर्य के समान ज्योतिपुंज श्रीराम के; कालॊटु पोय्–श्रीचरणों से लगकर (उनके साथ) जाकर; वरुम् नाळ्–उनके आते दिन; अयले वरुवाय्–उनके साथ आते हो; पॅरु नाळ्–अनेक दिन तक; उटने–मेरे साथ; पिरियातु उळल्वाय्–बिना बिछुड़े रहोगे; ऑरुनाळ् तरियातु–एक दिन भी सहन न करके; ऑळिवार्–छोड़ जानेवाले; उळरो–(तुम्हारे समान) कोई है । १२४०

(अपने मन से) रे मेरे मन ! नीले सूर्य सम श्रीराम के चरणों के साथ गया; फिर उनके साथ लौट आया । विवाह के बाद से, जब हम मिल रहेंगे तब तू मेरे साथ रहनेवाला है । फिर इस एक रात का वियोग सह नहीं सकता क्या ? इस तरह एक दिन का भी बिछोह न सह सकनेवाला कोई और है ? । १२४०

कनैयेळ्हडल् पोल्करु नाळिहैतान्, विनैयेन्विनै याल्विडि याविडिनी
तनियेपऱ वाय्दह वेदुमिलाय्, पनैमेलुऱै वाय्पळि पूणुदियो 1241

पनै मेल् उऱैवाय्–तालवृक्ष पर रहनेवाले पक्षी; नी तनिये पऱवाय्–तुम अकेले नहीं उड़ते; कनै एळ् कटल् पोल्–गर्जनशील सात समुद्र के समान; करु नाळिकै–(दीर्घ) रात्रि; विनैयेन् विनैयाल्–मुझ पापी के पाप से; विटिया विटिन्–अन्त न हो जाय तो; तकवु एतुम् इलाय्–नेकी कुछ न रखनेवाले; पळि पूणुतियो–व्यर्थ निंदा पाओगे क्या । १२४१

(पपीहे से) ताल-तरुवासी पपीहा ! तू कभी (संगिनी को छोड़) अकेले कहीं नहीं उड़ता (जाता) । सातों गरजनेवाले समुद्रों के समान यह रात जो लम्बी होती जा रही है अगर अन्त नहीं होगी तो, तू अपनी वोली से मुझे मरवा देगा । फिर वड़ा अपयश तुझ पर लगेगा । तू यह अपयश क्यों लेना चाहता ?

(पपीहा या चकवा या क्रौंच पक्षी तालतरु में रहनेवाला समझा जाता है और उसका स्वर विरहिणियों को बड़ा दुख पहुँचाता है।)। १२४१

अयिल्वेलतल् काल्वन वानिळ्लाय्, वॅयिलेयॅन्न नीविरि वाय्निलवे
शॅयिरेदुमि लारुड रेय्वुरुवार्, उयिर्कोळ्रु वारुळ रोवुरैयाय् 1242

अन्तल् काल्वन आम्–आग उगलनेवाले; अयिल् वेल् निळ्लाय्–तीक्ष्ण भाले के समान चाँदनीवाले; निलवे–चन्द्र; नी–तुम; वॅयिले अॅन्न–धूप के समान; विरिवाय्–फैले हो; चॅयिर् एतुम् इलार्–अपराधहीन; उटल् तेय्वु उरुवार्–उत्तरोत्तर क्षीण-देह होनेवाले की; उयिर्–जान को; कोळ् उरुवार्–हरने के काम में प्रवृत्त; उळरो–और कोई है क्या; उरैयाय्–तुम बोलो। १२४२

(चाँदनी से) हे चाँद! आग उगलनेवाले भाले के समान किरणों वाली चाँदनी के चाँद! तुम धूप के समान फैले हो और मुझे जला रहे हो। बिना किसी अपराध के, और जो पहले ही क्षीण होते रहते हैं उन लोगों के प्राण लेने के लिए तत्पर होनेवाले तुमको छोड़ और कोई हैं क्या?। १२४२

मन्ऱ्ऱ्कुळिर् वाशमुव यङ्गनल्वाय्, मिन्ऱॉत्तु निलानहै वीळ्मलयक्
कुन्ऱिर्कुल मामुळै यिर्कुडिवाळ्, तॅन्ऱ्ऱ्पुलि येयिरै तेडुदियो 1243

मन्ऱल्–(नायक के साथ) संयोग समय में आनन्ददायक; कुळिर् वाचम्–शीतल सुगन्धरूपी; वयङ्कु अनल्–दीप्त आग उगलनेवाला; वाय्–मुख, और; मिन् तॉत्तु–प्रकाशपुंज; निला नकै–चाँदनीरूपी दाँत; वीळ्–मनोरम; मलयम् कुलम् कुन्ऱिल्–मलय संज्ञित श्रेष्ठ पर्वत की; मा मुळैयिल्–बड़ी गुफ़ा में; कुटि वाळ्–बसनेवाले; तॅन्ऱल् पुलिये–दक्षिणीपवन-रूपी बाघ; इरै तेटुतियो–आहार की खोज में हो क्या। १२४३

(मलयपवन का उपालम्भ) हे मलयपवन! तुम बाघ हो। साथ रहनेवाले प्रेमी-प्रेमिका को आनन्द देनेवाला शीतल सुगन्ध जो तुम्हारा है वह अब अग्नि बरसानेवाला तुम्हारा मुख है। प्रकाशपुंज जो चाँदनी है वह तुम्हारे दाँत हैं। और जो मलयपर्वत सबके लिए प्यारा है उसकी एक बड़ी गुफ़ा में तुम्हारा वास है। वहाँ से निकलकर अब तुम (आहार) शिकार की खोज में फिर रहे हो क्या?। १२४३

तॅरुवेतिरि वारॉरु शेवहनार्, इरुपोदुम् विडारिदु वॅन्नैकॊलाम्
करुमामुहिल् पोल्बवर् कन्नियर्पाल्, वरुवारुळ रोकुल मन्नवरे 1244

करु मा मुकिल् पोल्पवर्–काले, बड़े सुन्दर मेघ के समान; तॅरुवे तिरिवार्–वीथी में सैर करनेवाले; ऑरु चेवकन्नार्–अनुपम वीर नायक; इरु पोतुम् विटार्–(दिन और रात) दोनों जून नहीं छोड़ते; इतु अॅन्नै आम्–यह क्या (नीति) है; कुल मन्नवर्–उच्च कुल के राजा; कन्नियर् पाल् वरुवार्–अविवाहित कन्या के पास आनेवाले; उळरो–कोई हैं क्या?। १२४४

(सीताजी के सामने श्रीराम का छायारूप उनके भ्रम के कारण दिखाई देता है।) सीताजी कहती हैं कि काले, सुन्दर मेघ सम वे (श्रीराम) वीथियों में सैर करते थे। अप्रमेय वे वीर हमेशा मेरी आँखों के सामने आते रहते हैं। चाहे दिन हो, चाहे रात। यह कैसा न्याय है ? वे राजकुमार हैं। उनको राजकुल-मर्यादा मालूम है! 'कन्याभवन' के अन्दर रहनेवाली अविवाहित कन्या के सामने जाना अपराध है। ऐसे कोई राजकुमार कभी कन्या के सामने आयेंगे क्या ? । १२४४

तॆरुळावित्तै तीयवर् शेरलर्तोळ्, अरुळानॆऱि योडुम वावदुवो
करुळार्कड लोकरै काणरिदाल्, इरुळामिदु तानॆत्ते यूऴिकॊलाम् 1245

तॆरुळा–दृढ़ विवेचनहीन; वित्तै तीयवर्–हानिकारक काम करनेवाले (वे नायक); तोळ् चेरलर्–(मेरी) भुजाओं में नहीं लगते; अवा अतुवो–(मेरी) इच्छा तो; अरुळा नॆऱि ओटुम्–जो वे कृपा नहीं करते, उसी मार्ग पर चलती है; इरुळ् आम् इतु–रातरूपी यह; करुळ् आर् कटलो–कालिमा-युक्त सागर है क्या; करै काण अरितु–पार पाना दुर्लभ है; ऍत्तै ऊऴि आम् कॊल्–कितने कल्प तक यह स्थिति रहेगी; (आल् तान्–पूरक ध्वनियाँ)। १२४५

(वे रात की निन्दा करती है।) वे (श्रीराम), लगता है कि दृढ़ विवेकी नहीं हैं। मुझे संकट देकर निवारण का कोई काम नहीं करते। वे मेरी भुजाओं के आलिंगन में नहीं आते। तो भी मेरी कामना तो उन्हीं के प्रति लगी रहती है। रात कालिमायुक्त सागर है क्या ? इसको पार करना दुस्तर लगता है। यह स्थिति कितने कल्पकाल तक बनी रहेगी ? । १२४५

पण्णोवॊऴि यापह लोपुहुता, दॆण्णोदवि राविर वोविडिया
तुण्णोवॊऴि यावुयि रोवहला, कण्णोतुयि लाविदु वोकडने 1246

पण्णो ऒऴिया–संगीत के स्वर तो थमते नहीं; पकलो पुकुतातु–दिन आता नहीं लगता; ऍण्णो तविरा–चिन्ताएँ दूर नहीं होती; इरवो विटियातु–रात प्रभात पर नहीं आ रही; उळ् नो ऒऴिया–मानसिक क्लेश नहीं मिटते; उयिरो अकला–प्राण नहीं छोड़ जाते; कण्णो तुयिला–आँखें नहीं सोतीं; कटऩ् इतुओ–कर्तव्य (भाग्य) यही है क्या। १२४६

(सीताजी के विवाह के उपलक्ष्य में नगर में आनन्द कोलाहल मचा है। सब ओर संगीत का प्रबन्ध है। सीताजी की वेदना को वह बढ़ाता है।) वे कहती है कि संगीतस्वर बन्द नही होता; दिन (प्रभात) आता नहीं दिखता। मेरा मन चिंता करना नहीं छोड़ता। रात पूरी नही होती। आन्तरिक वेदना जारी है। प्राण भी नहीं छूटते। कम से कम नींद आवे तो छुटकारा होगा। वह भी नही आती, आँखें नही झपतीं। फिर क्या यह वेदना सहता रहना ही अब मेरा काम है ? । १२४६

इडैयेवळै शोरवॅ ळुन्दुविळुन्, दडलेयमद नन्शर मञ्जिन्नैयो
उडलोय्वुऱ् नाळुमु ऱङ्गलैयाल्, कडलेयुरै नीयुमोर् कन्निकॉलाम् 1247

कटले–सागर; इटैये–तुम में से; वळै चोर–शंख गिरते है, ऐसे; ॲळुन्तु–उठते; विळुन्तु–और गिरते; उटल् ओय्वु उऱ–शरीर थकाते हुए; नाळुम्–अहोरात्र; उऱङ्कलै–सोते नहीं हो; नीयुम् ओर् कन्नि आम् कॉल्–तुम भी एक कन्या हो; अटल् एय्–मारक स्वभाव-युक्त; मतनन् चरम्–मदन के शरों से; अञ्चितैयो–डरे हुए हो; उरै–कहो। १२४७

(वे सागर में अपनी-सी स्थिति देखती है। वे क्षीण हो गई हैं, अत: हाथ से शंख (कंकण) छूटकर गिर गये हैं। नींद नहीं आती, अत: वे उठती बैठती विलाप रही है और बेचैन हैं। सागर की भी वही हालत समझकर वे कह रही हैं कि) सागर! तुमसे शंख छूट रहे हैं। उठते, गिरते थक जाते हो। दिन रात सोते नहीं हो। तब क्या तुम भी एक अविवाहित कन्या हो और तुम पर भी काम के शर लग गये हैं। मनमथ भयंकर मारक है। उनके शर से तुम भी डरे हुए हो? कहो तो। १२४७

ॲन्नविन्नन पन्निथि रुन्दुळैवाळ्, तुन्नियुन्निम नत्तॉडु शोर्वुऱुहाल्
मन्नैतन्निन्व यङ्गुरु वैहिरुळ्वाय्, अन्नहन्निनै हिन्ऱन यामऱैवाम् 1248

ॲन–ऐसा; इन्नन पन्नि–ऐसी बातें कहकर; इरुन्तु–जागती रहकर; उळैवाळ्–क्लांत होनेवाली बनकर; तुन्नि उन्नि–अपने दुख का स्मरण करते हुए; मनत्तॉटु–मन के साथ; चोर्वु उऱु काल्–जब व्याकुल थीं, तब; मनै तन्निन्–अपने भवन में; वयङ्कुरु वैकु इरुळ् वाय्–स्थिर अँधेरे में; अनकन्–अनघ श्रीराम; निनैक्किन्ऱन–जो बातें सोचते थे, उनको; याम् अऱैवाम्–हम कहेंगे। १२४८

कवि कहते हैं कि अब तक हम सीताजी की स्थिति का वर्णन करते रहे। सीताजी ऐसी बातें ऐसा कहते हुए, निद्राहीन रहकर दुख का ही स्मरण करनेवाले मन के साथ वेदना से तड़प रही थी। तब अनघ श्रीराम उस घने अन्धकार की रात में अपने भवन में रहकर क्या-क्या सोच रहे थे? अब उनका हाल बतायेंगे। १२४८

मुन्कण्डु मुडिप्परु वेट्कयिनाल्, ॲन्कण्डुणै कॉण्डिद यत्तॅळुदिप्
पिन्कण्डुमोर् पॅण्करै कण्डिलॅन्नाल्, मिन्कण्डव रॅङ्गऱि वार्विनैये 1249

मुन् कण्टु–पहले एक बार देखकर; मुटिप्पु अरु–अन्तहीन; वेट्कैयिनाल्–अनुराग के साथ; ॲन् कण् तुणै कॉण्टु–(अपनी) मेरी आँखों की सहायता लेकर; इतयत्तु ॲळुति–अपने हृदय में (रूप) अंकित करके; पिन् कण्टुम्–फिर से देखने के बाद भी; ओर् पॅण्–अप्रमेय स्त्रीरूपी सागर का; करै कण्टिलॅन् नान्–पार कर नहीं पाता मैं; मिन् कण्टवर्–बिजली को जो पास से देख चुके है वे; विनै ॲङ्कु अऱिवार्–काम कहाँ जानेंगे। १२४९

(श्रीराम कहते हैं कि उनकी (सीताजी की) ज्योती से मेरी आँखें

चौंधिया गई। और मैं कोई काम करने योग्य नहीं रह गया।) मैंने उनको उस दिन मिथिला प्रवेश के समय 'कन्याभवन' की छत पर देखा। अगाध प्रेम उत्पन्न हुआ और उसके कारण मैंने अपनी आँखों की कूँची से अपने हृदय पर उनका चित्र बना लिया। फिर आज एक बार देखा। तो भी उनका पूर्णरूप मेरे मन में नहीं समाता। मैं उस रूप को धारण करने में असमर्थ हो रहा हूँ। हाँ! विजली को जिसने पास से देखा है वह किस काम के लायक होगा? । १२४९

तिरुवेयनै याण्मुह मेतॆरियित्, करुवेहत्ति येविळै कामविदैक्
कॊरुवेमदि येयिदु वॆन्ऱॆय्दवा, ऒरुवेनॊडु नीयुऱ वाहलयो 1250

मतिये–हे चन्द्र; तॆरियिऩ्–सोच-समझने पर; विळै कामम् वितैक्कु–आनन्द-दायक काम के बीज के लिए; ऎरुवे–खाद; करुवे–अंकुर; कतिये–और उसका फल हो; तिरुवे अनैयाळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी ही से तुल्य सीताजी के; मुकमे–मुखमण्डल (सदृश) हो; इतु चॆय्तल आऱु–यह करने का धर्म; ऎन्ऩ्–क्या है; ऒरुवेऩॊटु–(उनसे वियुक्त मुझ) एक के; नी उऱवु आकलैयो–तुम बन्धु न बनोगे। १२५०

(वे चन्द्र से अपनी वेदना कहते हैं।) हे चन्द्र! खूब सोच विचार-कर देखे तो तुम आनन्दप्रसू कामेच्छा के बीज की खाद हो, फिर उसका अंकुर भी तुम ही हो और उसका फल भी तुम ही हो! तुम श्रीलक्ष्मी देवी सदृश सीताजी के मुख के ही समान हो। तो भी मुझे अत्यन्त पीड़ा दे रहे हो। यह क्यो? मै उनके संग के विना दुखी हूँ। दुख में तुम मेरे सहायक नही बनोगे? । १२५०

कऴियावुयिर् वव्विय कारिहैदन्, विऴिपोल विळैन्ददु वीहिलदाल्
अऴिपोरिऱै वन्बड वञ्जियवऩ्, पऴिपोल वळर्न्ददु पायिरुळे 1251

पाय् इरुळ्–सर्वत्र फैला हुआ यह अन्धकार; कऴिया उयिर्–शरीर से न छुटे हुए मेरे प्राण को; वव्विय–जिसने हर लिया; कारिकै तऩ् विऴि पोल–उस अंगना की आँखों के समान; विळैन्ततु–आया है; वीकिलतु–दूर होता नहीं; अऴि पोर्–संहारक समर में; इऱैवऩ् पट–अपने राजा को छोड़कर; अञ्चियवऩ्–अपने प्राणों के लिए डरकर भागे हुए एक सेनापति के; पऴि पोल–अपयश के समान; वळर्न्ततु–बढ़ा है; (आल्, ए)। १२५१

(श्रीराम रात्रि का उपालम्भ करते है।) यह जो अन्धकार फैला है वह उस अंगना, सीता की आँखों के समान, जिन्होंने मेरे, मुझसे न छूटने वाले प्राण को हर लिया है, फैला है। वह मिटता नहीं दीखता। वह उस सेनापति के अटल अपयश के समान बढ़ा हुआ और स्थिर है जो संहारक युद्ध में ऐन अवसर पर अपने स्वामी राजा को मरने देकर अपने प्राण लेकर भागा हो। १२५१

निन्नैयायॊरु कालॆण्डि दोनॆऱिदान्, विन्नैवादवर् पाल्विडै कॊण्डिलयो
पुन्नमानन्नै यारॊडु पोयिन्नवॆन्, मन्नॆयॆन्नै नीयु मऱन्दनयो 1252

पुन्नम् मान् अन्नैयारॊटु–वन के हरिण के समान सुन्दर उस बाला के साथ; पोयिन–जो गया; ॲन् मनने–मेरे मन; ऑरु काल् निनैयाय्–एक बार भी मेरा स्मरण नहीं करते; नॆऱि तान् नॆटितो–मार्ग लम्बा है क्या; विनवातवर् पाल्–तुम से कुछ न पूछनेवाले उससे; विटै कॊण्टिलैयो–उत्तर में कुछ नहीं पाया; ॲन्नै नीयुम् मऱन्ततैयो–क्या मुझे तुम भी भूल गये हो। १२५२

(श्रीराम अपने मन को उपालम्भ देते है।) हे मेरे मन, जो वनचारी मृग-समान रहनेवाली उस कन्या के साथ गया है। एक बार भी तू मेरा स्मरण नहीं करता है। क्या मार्ग लम्बा है कि लौट आया नहीं ? या तेरी सुध ही नही लेनेवाली से उत्तर पाने की प्रतीक्षा में खड़ा है और अब तक कोई उत्तर प्राप्त नही हुआ ? या क्या तू भी मुझे भूल गया ?। १२५२

तन्नोक्कॆरि काऱहै वाळरविन्, पन्नोक्किय दॆन्बदु पण्डुहॊलाम्
ॲन्नोक्किनु नॆञ्जिनु मॆन्ऱुमुळार्, मॆन्नोक्किन्न देहडु वल्विडमे 1253

कटु वल् विटम्–भयंकर और प्रभावक विष; तन् नोक्कु ॲरि काल्–अपनी आँखों से आग उगलनेवाले; तकै–स्वभाव के; वाळ् अरविन्–क्रूर सर्प के; पल् नोक्कियतु–दाँत में है; ॲन्पतु–यह कथन; पण्टु आम्–पहले से प्रचलित (सत्य) है; ॲन् नोक्किनुम्–मेरी आँखों और; नॆञ्चिनुम्–मन में; ॲन्ऱुम् उळार्–जो सर्वदा संस्थित है, उस देवी की; मॆल् नोक्किनते–मृदु कनखी में है। १२५३

(श्रीराम देवी की आँखों के बारे में क्या कहते है ? देखिये।) वे कहते है कि पहले से यह कथन प्रचलित है और वह सत्य भी है कि आँख से आग निकालनेवाले सर्प के दाँतों में भयंकर, प्रभावक विष रहता है। पर अब मैं देखता हूँ कि विष उस देवी की, जो मेरी दृष्टि के सामने और मेरे मन में सदा संस्थित है, मृदु कनखी में है। १२५३

वल्लार्पुनै माळिहै वार्पॊऴिलो, डॆल्लामुळ वायिनु मॆन्मनमो
कल्लोडुऱऴ् नॆञ्जुरु कन्नियराम्, मॆल्लोदियर् ताम्विळै याडिडमे 1254

वल्लार् पुनै–चतुर (शिल्पी) से निर्मित; माळिकै–भवन; वार् पॊऴिलोटु–बड़ी फुलवारियाँ और; ॲल्लाम्–अन्य सभी स्थान; उळ आयिनुम्–विद्यमान हैं, तो भी; कल्लोटु उऱऴ्–प्रस्तर-सम; नॆञ्चु उरु–चित्तवाली; कन्नियर् आम्–कन्या जो; मॆल ओतियर्–कोमल केशवाली है, उसका; ताम् विळैयाटु इटम्–अपने विहार का स्थल जो बना है; ॲन् मनमो–क्या मेरा मन है। १२५४

(देवी के सम्बन्ध में और शिकायत देखिये।) वे कहते है कि उसके विहार के लिए चतुर शिल्पी से रचित बड़े महल हैं; बड़े-बड़े उपवन हैं, फुलवारियाँ है। और अन्य स्थान भी हैं। पर प्रस्तर मन उसने, उनको छोड़कर जिसे अपना प्रिय विहारस्थल चुना है वह मेरा मन है क्या ?। १२५४

वानवर् पॅरुमानुम् मननिन्नॆवि न्नाहत्
तेनमर् कुळ्ळलाडन् ट्रिरुमण विन्नॆनाळै
पूनहु मणिवाशम् पुन्नॆनह रणिवीरॆन्
ड्रानयित् मिशॆयाण रणिमुर शऱॆहॆन्ड्रान् 1255

वानवर् पॅरु मानुम्–देव देव; मनन् इनैवु इनन् आक–मन से इस तरह दुखग्रस्त रहे, तब; तेन् अमर् कुळ्लाळ्तन्–भ्रमर-मोहक केशवाली सीताजी का; तिरुमणम् विनै नाळै–विवाह-दिन कल है; पू–फूलों से; नकु मणि–दीप्त रत्न; वाचम्–और वस्त्र से; पुनै नकर्–सुन्दर हमारे नगर को; अणिवीर्–सजा दें; ॲन्ड्रु–ऐसा; याणर् अणि मुरचु–खूब अलंकृत ढोल को; यानैयित् मिचै–हाथी के ऊपर रखकर; अऱैक–पिटवा दो; ॲन्ड्रान्–आज्ञा दी (जनक ने)। १२५५

देवदेव श्रीराम इस तरह व्याकुलता का अनुभव कर रहे थे। उधर महाराजा जनक ने आज्ञा दिला दी कि मुनादी पिटवा दो कि कल मधु-केगिनी के उद्वाह का दिन है। इसलिए फूलों, श्रेष्ठ कांतिमय रत्नों और चीरों से हमारे सुन्दर नगर को सजा दो। ढोल जो उपयोग किया जाता है वह खूब अलंकृत हो और उसे हाथी पर चढ़ाकर पिटवा दिया जाय। १२५५

मुरशऱै दलुमान मुदियरु मिळैयोरुम्
विरैशॆरि कुळ्ळारुम् विरविनर् विरैहिन्ड्रार्
उरैशॆरि किळयोडु मुवहयि नुयर्हिन्ड्रार्
करैदॆरि वरिदाहु मिरवीरु करैहण्डार् 1256

मुरचु अऱैतलुम्–ढिंढोरा पीटने पर; मानम् मुतियरुम्–सम्मान्य वृद्ध लोग और; इळैयोरुम्–युवा लोग; विरै चॆरि कुळ्लारुम्–सुवासित केशवाली स्त्रियाँ; विरवितर्–आपस में मिलकर; विरैकिन्ड्रार्–(नगर का अलंकार करने के लिए) शीघ्र गये; उरै चॆरि किळैयोटुम्–संभाषणप्रिय बान्धवों के साथ; उवकैयिन् उयर्किन्ड्रार्–आनन्द में बढ़े; करै तॆरिवु अरितु आकुम् इरवु–जिसका (अन्त) तीर देखना दुर्लभ है उस रात के सागर का; ऑरु करै कण्टार्–एक अन्त पाया। १२५६

ढिंढोरा पीटते ही आदर योग्य वृद्ध, तरुण ऋषभ सम युवक लोग, और सुवासित केशवाली स्त्रियाँ, सब आपस में मिलकर नगर सजाने दौड़े। उद्वाह सम्बन्धी संभाषण में लगे उनको अपार आनन्द हुआ। वे इन कार्यो में लगे रहे और रात व्यतीत हो गयी। वे दुस्तर रातरूपी सागर के उस पार पहुँच गये। १२५६

अञ्जन वॊळियानु मलर्मिशै युऱैवाळुम्
ॲञ्जलिन् मणनाळैप् पुणर्हुव रॆनलोडुम्
शॆञ्जुड रिरुळ्हीड्रित् तिन्हर ञॊरुतेर्मेल्
मञ्जनै यणिहोलङ् काणिय वॆन्वन्दान् 1257

अञ्चनम् ऑळियानुम्–अंजनवर्ण श्रीराम और; अलर् मिचै उऱैवाळुम्–कमल

पर रहनेवाली श्रीसीताजी; नाळै–कल; अञ्चल् इल्–निर्मल; मणम् पुणर्कुवर्–उद्वाह कर लेंगे; अॅन्नलोटुम्–यह जानते ही; तिन्नकरन्–दिनकर; चॅम् चुटर्–लाल किरणों (हाथों) से; इरुळ् कीरि–अन्धकार चीरकर; ऑरु तेर् मेल्–एकचक्र अपने अनुपम रथ पर; मञ्चनै–(अपने कुल के) कुमार को; अणि कोलम् काणिय अॅन्न–अलंकृत दूल्हावेश में देखने के लिए; वन्तान्–(उदय हो) आये। १२५७

सूर्य उदित हुये। 'कल अंजन वर्ण प्रभु, हमारे कुलदीप, श्रीराम और कमलवासिनी सीताजी का उद्वाह होगा। कुमार को दूल्हे के वेश में देखूंगा।' मानो इस विचार से सूर्य, अपनी किरणरूपी हाथों से अंधकार को चीरते हुए अपने एकचक्र-रथ पर बाहर आये। १२५७

तोरण नड्डुवारुन् दूणुरै यिड्डुवारुम्
पूरण कुडमॅड्गुम् पुनैतुहिल् पुनैवारुम्
कारणि नॅडुमाडङ् गदिर्मणि यणिवारुम्
आरण मरैवाणर्क् कमुदिनि दडुवारुम् 1258

तोरणम् नट्टु वारुम्–तोरणस्तम्भ गाड़नेवाले; तूण उरै इट्टु वारुम्–खम्भों पर खोल चढ़ानेवाले; अॅङ्कुम्–सब स्थानों में; पूरण कुटम्–पूर्ण कुंभों से; पुनै तुकिल्–चित्रमय वस्त्रों से; पुनै वारुम्–सजानेवाले; कार् अणि नॅट्टु माटम्–मेघस्पृष्ट ऊँचे प्रासादों को; कतिर् मणि अणि वारुम्–श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत करनेवाले; आरणम् मरै वाणर्क्कु–अनेक शाखाओं वाले वेद के मार्गों पर चलनेवाले विप्रों को; इनितु अमुतु अटुवारुम्–(भोज कराने के लिए) मधुर अन्न पकानेवाले। १२५८

नगर के लोग किसी न किसी काम में प्रवृत्त दिखाई दिये। तोरण बाँधने के लिए खम्भे गाड़नेवाले; स्तम्भों पर खोल चढ़ानेवाले; सब जगह पूर्णकलशों और चित्रमयी वस्त्रों से सजानेवाले; मेघस्पृष्ट प्रासादों के ऊपरी भागों में कांतिपूर्ण रत्नों को सजानेवाले; वेदमार्गानुयायी ब्राह्मणों को भोज देने के लिए मधुर अन्न पकानेवाले पाये गये। १२५८

अन्नमॅ नडैयारु मळविडै यनैयारुम्
कन्निन नहर्वाळै कमुहोडु नड्डुवारुम्
पन्नरु निरैमुत्तम् परियन तॅरिवारुम्
पॉन्नणि यणिवारुम् मणियणि पुनैवारुम् 1259

कन्नि नल् नकर्–नितनवीन उस नगर में; अन्नम् मॅल् नटै यारुम्–हंस की-सी चालवालियाँ और; मळ विटै अनैयारुम्–तरुण ऋषभ-सम पुरुष लोग; वाळै–केले के पेड़ों को; कमुकॉटु–पूग तरुओं के साथ; नट्टुवारुम्–गाड़नेवाले; पन्न अरु–(मूल्य) कहने में कठिन; निरै मुत्तम्–मोती की लड़ियों में से; परियन तॅरिवारुम्–सबसे स्थूल को खोज लेनेवाले; पॉन् अणि अणिवारुम्–स्वर्णाभरण पहननेवाले; मणि अणि पुनैवारुम्–रत्नाभरणों से अपने को सजा लेनेवाले। १२५९

और भी लोग जिनमें हंसगामिनी स्त्रियाँ थी और तरुण ऋषभ समान युवा थे, केले सुपाड़ी आदि के पेड़ गाड़ने लगे। कुछ लोग स्थूल से स्थूल

मोतियों की माला चुनने में लगे रहे। कुछ श्रेष्ठ स्वर्णाभरण धारण करने में प्रवृत्त हुये। कुछ लोग रत्नाभरण पहनने में लगे। १२५९

शन्दन महिनारुञ् जान्दोंडु तॆरुवॆङ्गुम्
शिन्दिन्नर् तिरिवारुञ् जॆऴुमलर् शॊरिवारुम्
इन्दिर तनुनाणु मॆरिमणि निरैमाडत्
तन्दमिल् विलैयारक् कोवैह ळणिवारुम् 1260

नारुम्–सुगन्ध फैलानेवाले; चन्ततम्–चन्दन को; अकिल् चान्तॊटु–अगरु के चेप के साथ; तॆरु ऎङ्कुम्–सभी वीथियों में; चिन्तिन्नर् तिरिवारुम्–छिड़कते हुए घूमनेवाले; चॆऴुमलर्–पुष्ट फूलों को; चॊरिवारुम्–ले आकर जमा करनेवाले; इन्तिर तनु नाणुम्–इन्द्रधनुष को लजाते हुए; ऎरि मणि–दीप्त (रंग-विरंगी) मणियो से युक्त; निरै माटत्तु–पंक्तियों में रहनेवाले प्रासादो के ऊपरी भागों में; अन्तम् इल् विलै–अपार मूल्य की; आरम् कोवैकळ्–मोतीमालाओं से; अणिवारुम्–सजानेवाले। १२६०

लोग ये जो चन्दन और अगरु का घिसा चेप वीथियों में छिड़क रहे थे। और उनमे पुष्ट फूलों को लाकर ढेर लगानेवाले, इन्द्रधनुष की आभा को हरानेवाली रीति से ज्यातित रत्नों से भरे प्रासादों के ऊपरी भागों में मोतीमालाएँ लटकानेवाले थे। १२६०

तळङ्गिळर् मणिहालत् तवऴ्शुड रुमिऴ्दीवम्
इळङ्गुळिर् मुळैयार्नऱ् पालिहै यिऩ्मॆङ्गुम्
विळिम्बुपॊऩ् नॊळिनाऱ वॆयिलॊडु निलवीनुम्
पळिङ्गुडै युयर्तिण्णैप् पत्तियिऩ् वैप्पारुम् 1261

ऎङ्कुम्–सब जगह; तळम् किळर्–छतों पर अधिक रहनेवाले; मणि काल–रत्नकांति बिखेरते है; विळिम्पु–किनारों पर; पॊऩ् ऒळि–(जो बनी है उस) स्वर्ण की (कारीगरी की) ज्योति; नाऱ–फैलती है; वॆयिलॊटु–धूप के समान प्रकाश के साथ; पळिङ्कु उटै निलवु–फ़र्श के स्फटिक पत्थर की चाँदनी-सा प्रकाश; ईऩुम्–बिखेरनेवाले; उयर् तिण्णै–ऊँची वेदिकाओं पर; तवऴ् चुटर्–विस्तृत प्रकाश; उमिऴ् तीपम्–देनेवाले दीपो; इळम् कुळिर् मुळै आर्–छोटे शीतल अंकुरों से भरे; नल् पालिकै इऩम्–मंगलमय "पालिका" नामक मिट्टी के छोटे वरतनो को; पत्तियिऩ् वैप्पारुम्–पंक्तियों में रखनेवाले। १२६१

सर्वत्र प्रासादों की छतों से रत्न अपनी कांति विखेर रहे थे। वहाँ वेदिकायें बनी थी। वेदिकाओं के किनारे स्वर्णनिर्मित थे। उनसे निकलनेवाली कांति धूप समान थी। तल स्फटिक-पत्थरों का था। उनसे चाँदनी का-सा प्रकाश छूट रहा था। लोग उन वेदिकाओं पर विशाल प्रकाश देनेवाले दीपों और छोटे और मनोरम अंकुरों से भरी

पालिकाओं को पंक्तियों में सजा रहे थे। (पालिका मट्टी का छोटा चुक्कड़-सा बरतन है जिसमें बालू या मट्टी भरकर नवधान्य उगाये जाते हैं। ये दीपक और पालिकाएँ मंगलचिह्न माने जाते हैं। पालिकाएँ शुभ कार्य पूरा होने के बाद मंगलवाद्यों के वादन के साथ जुलूस बाँधकर ले जायी जाती हैं और नदियों या तालाबों में छोड़ दी जाती हैं।)। १२६१

मन्दर मणिमाड मुऩ्ऱिलिऩ् वयिऩॆङ्गुम्
अऩ्दमि लॊळिमुत्ति नहनिरै यॊळिवीश
अऩ्दर नॆडुवाऩ मीनलर् हुवदॆऩ्नप्
पन्दरि निऴल्वीशिप् पडर्वॆयिल् कडिवारुम् 1262

मन्तरम् मणि माटम्–मन्दरपर्वत-समान (उन्नत) सुन्दर सौधों के; मुऩ्ऱिलिऩ् वयिऩ्–आँगनों में; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; अन्तरम्–ऊपर के; नॆटु वाऩम्–विशाल आकाश में; मीन् अलर्कुवतु ऍन्ऩ–तारे जैसे छिटके रहते है; अन्तम् इल् ऑळि–(वैसे) अनन्त प्रकाशमय; मुत्तिन् अकल् निरै–मोतीमालाओ की विपुल राशियों का; ऑळि वीच–प्रकाश फैलानेवाले; पन्तर् इऩ् निऴल् वीचि–पण्डालों की सुखद छाया बनाकर; पटर् वॆयिल् कटिवारुम्–(जो) फैली रही उस धूप की उग्रता को कम करनेवाले। १२६२

कुछ लोग मंदर पर्वत के समान रहनेवाले प्रासादों के सामने आँगनों में पंडाल बना रहे हैं। उन पंडालों में मोती की मालाएँ लटकायी गयी हैं जिनसे मनोरम प्रकाश छूट रहा है, इसलिए पंडाल नक्षत्र-खचित आकाश के समान दिखाई दे रहे हैं। उन पंडालों के कारण धूप की उग्रता से लोग बच पाते हैं। १२६२

वयिरमि नॊळियीनु मरहद मणिवेदिच्
चॆयिरऱ वॊळिर्दीबञ् जिलदियर् कॊणर्वारुम्
वॆयिल्विर वियपॊऩ्निऩ् मिडैकॊडि मदितोयुम्
ऍयिलिलि नडुवारु मॆरियहि लिडुवारुम् 1263

वयिरम्–हीरे; मिऩ् ऑळि ईऩुम्–(जिन पर) बिजली के समान प्रकाश देते हैं; मरकतम् वणि वेति–उन मरकतों की सुन्दर वेदी पर; चिलतियर्–दासियाँ; चॆयिर् अऱ ऑळिर्–निर्मल प्रकाशवाले; तीपम् कॊणर्वारुम्–दीप लाकर रखनेवालियाँ; वॆयिल् विरविय पॊऩ्तिऩ्–कांतिमय स्वर्ण दण्ड की; मिटै कॊटि–बहुत पास-पास रहनेवाली पताकाओं को; मति तोयुम्–चन्द्र जिन पर आ ठहरता है उन; ऍयिलितिल्–प्राचीरों पर; नटुवारुम्–गाड़नेवाले; अकिल् ऍरि इटुवारुम्–अगरु को जलानेवाले। १२६३

विवाहोत्सव मनाने के लिए नगर सजानेवालों में वे दासियाँ हैं जो मरकत की वेदिकाओं पर, जिन पर जड़े हीरों से विद्युत का-सा प्रकाश विकीर्ण होता है, सजाने के लिए निर्मल दीप जलाकर ले आ रही हैं। वे

हैं जो चन्द्रस्पर्शी प्राचीरों पर कांतिमय स्वर्ण के डण्डवाली ध्वजाएँ गाड़ रही हैं। और वे लोग हैं जो अगरु को जलाकर धुआँ उत्पन्न कर रहे हैं। १२६३

पण्डियि निऱैवाशप् पनिमलर् कॊणर्वारुम्
तण्डलै यिलैयॊडुङ् गनिपल तरुवारुम्
कुण्डल मॊळिवीशक् कुरवैहळ् पुरिवारुम्
उण्डैकॊण् मदवेळत् तोडैहळ णिवारुम् 1264

पण्टियिल्–गाड़ियों में; निऱैवाचम्–अधिक सुगन्धित; पतिमलर्–शीतल पुष्प; कॊणर्वारुम्–लानेवाले; तण्टलै–बागों से; इलैयॊटुम्–(पान और केले के) पत्तों के साथ; कत्ति पल–विविध फल; तरुवारुम्–लानेवाले; कुण्टलम् ऑळि वीच–कुण्डलों का प्रकाश फैलाते हुए; कुरवैकळ् पुरिवारुम्–"कुरवै" नामक (रास) नाच करनेवालियाँ; उण्टै कॊळ्–अन्नपिण्डों को खानेवाले; मतम् वेळत्तु–मत्तगजों को; ओटैकळ् अणिवारुम्–मुखपट्ट पहनानेवाले। १२६४

गाड़ियों पर सुवासित पुष्प भरकर लानेवाले, बागों से केले, पान आदि के पत्ते लानेवाले और फल लानेवाले पाये जाते हैं। कुछ स्त्रियाँ अपने कर्णकुंडलों से कांति बिखेरते हुए "कुरवै" का (रास-) नृत्य कर रही हैं। कुछ लोग अन्नकवल खानेवाले हाथियों को मुखपट्ट से अलंकृत कर रहे है। १२६४

कलवैहळ् पुनैवारुङ् गलैनल तॆरिवारुम्
मलर्हुळन् मलैवारुम् मदिमुह मणियाडित्
तिलदमु निडुवारुञ् जिहळिहै यणिवारुम्
इलविदळ् पॊलिहोल मॆळिल्पॆऱ विडुवारुम् 1265

कलवैकळ् पुनैवारुम्–चन्दन लगा लेनेवाले; कलैनलल तॆरिवारुम्–वस्त्र खूब चुनकर पहननेवाले; मलर् कुळल् मलैवारुम्–केश पर फूल का अलंकार कर लेने वालियाँ; अणि आटि मुऩ्–सुन्दर मुकुर के सामने; मति मुकम्–अपने चन्द्रमुखों पर; तिलतम् इटुवारुम्–तिलक लगा लेनेवालियाँ; चिकळिकै अणिवारुम्–चोटी पर गजरे पहन लेनेवाले (या केश का अलंकार कर लेनेवाले); इलवु इतळ्–सेमर के फूलों के समान अधरों पर; ऎळिल् पॆऱ–अधिक सुन्दर करने के लिए; पॊलि कोलम्–सुशोभित रंग का अलंकार; इटुवारुम्–करनेवालियाँ। १२६५

चन्दन लगाने के काम में प्रवृत्त, वस्त्र चुनकर पहनने के काम में प्रवृत्त, केश में फूल लगाने में संलग्न और सुन्दर मुकुर के सामने खड़े होकर तिलक लगा लेने में लगे हुए पुरुष या स्त्रियाँ; केशालंकार, अधर-रंगान आदि श्रृंगार के काम में लगी हुई स्त्रियाँ —ये सब उनमें हैं। १२६५

तप्पिन मणिकाशुञ् जङ्गमु मयिलन्नार्
ऒप्पनै पुरिपोदु मूडलि नुहुबोदुम्

तुप्पुरळ् निऱैवाशच् चुण्णमु मुदिर्तादुम्
कुप्पैह ळॆन्वारिक् कॊण्डयल् कळैवारुम् 1266

मयिल् अन्नार्—मोर-सी छटावाली स्त्रियाँ; ऒप्पनै पुरि पोतुम्—जब अपना श्रृंगार करती हैं तब, और; ऊटलिन् उकु पोतुम्—रूठकर अलंकार हटाती हैं, तब; तप्पित—जो नीचे छितरे; मणि—उन रत्नों और; काचुम्—स्वर्ण के सिक्कों और; चङ्कमुम्—(उतारे गये) शंखकंकणों; तुप्पु उरळ्—प्रवाल की समानता करनेवाले (लाल)'; निऱै वाचम् चुण्णमुम्—अधिक सुगन्ध का चूर्ण; उतिर् तातुम्—जो गिरे हैं उन मकरन्दों को; कुप्पैकळ् ऎन—कूड़ा जैसे; वारि कॊण्टु—बटोर लेकर; अयल् कळैवारुम्—बाहर (अलग) फेंकनेवालियाँ। १२६६

मयूरनिभ मानिनियाँ जब श्रृंगार कर लेती हैं तब, या अपने पतियों से रूठकर अलंकार उतारकर दूर कर देती हैं तब भी रत्न, हमेल के स्वर्ण-सिक्के, शंखकंकण, प्रवालसम लाल, सुवासित अंगराग के चूर्ण, पुष्पों का पराग आदि बिखर जाते हैं। उनको कूड़ों के समान बटोर ले जाकर जो बाहर फेंक आती हैं वे दासियाँ, और; । १२६६

मन्नवर् वरुवारुम् मऱैयवर् निऱैवारुम्
इन्निशै मणियाऴि निशैमदु नुहर्वारुम्
शॆन्नियर् तिरिवारुम् विऱलियर् शॆऱिवारुम्
कन्नलिन् मणवेलैक् कडिहैह ळॆरिवारुम् 1267

मन्नवर्—राजा; वरुवारुम्—जो आते है; मऱैयवर्—ब्राह्मण लोग; निऱैवारुम्—जो आकर इकट्ठे होते है; इन् इचै—मधुर संगीत; मणि याऴिन् इचै मतु—और सुन्दर वीणा का संगीतमधु; नुकर्वारुम्—स्वादन करनेवाले; चॆन्नियर् तिरिवारुम्—बन्दी (बाण कहलानेवाले) गायक जो घूमते है; विऱलियर् चॆऱिवारुम्—चारण गायिकाएँ जो एकत्र होती हैं; कन्नलिन्—समयसूचक जल-यंत्र द्वारा; मणम् वेलै कटिकैकळ् तॆरिवारुम्—विवाहमुहूर्त के समय की प्रतीक्षा करनेवाले। १२६७

राजा लोग जो आते हैं, ब्राह्मण जो एकत्र होते हैं, संगीत, वीणा-वादन आदि के सुननेवाले, चारण, चारणियाँ जो घूम-घूमकर गाना सुनाती हैं —ऐसे लोग है। १२६७

कणिहैयर् तॊहुवारुङ् गलैपल पयिल्वारुम्
पणिपणि यॆन्नलोडुम् पलविरु निलमन्नर्
अणिनॆडु मुडियोन्ऱोन् ऱुऱैदलि नुहुमम्बॊन्
मणिमलै यॆनमन्न वायिलिन् मिडैवारुम् 1268

कणिकैयर्—गणिकाएँ (नाटक आदि ६४ कलाओं की जानकार); तॊकुवारुम्—जो एकत्र हुईं; कलै पल पयिल्वारुम्—विविध कलाओं का अभ्यास करनेवालियाँ; पल इरु निल मन्नर्—अनेक विशाल राज्य के राजा (जो); पणि पणि ऎन्नलोटुम्—आज्ञा हो, सेवा करें —कहते हुए; अणि नॆटु मुटि—सुन्दर ऊँचे किरीटों को; ऒन्ऱु

ऑन्ऱ्ऱ् अऱैतलिऩ्–एक से एक टकराने से; उकुम्–छूटकर गिरनेवाले; अम् पॉऩ् मणि–सुन्दर स्वर्ण-मणियों को; मलै अॅऩ मऩ्ऩ–पर्वत के समान ढेर कराते हुए; वायिलिल् मिटैवारुम्–राजद्वार में सटे हुए आनेवाले। १२६८

चौसठ कलाओं में निपुण गणिकाएँ जो एकत्र होती है; कलाप्रदर्शन करनेवाली पेशेवर स्त्रियाँ; अनेक विशाल भूखण्डों के राजा लोग जो हमारी योग्य सेवा कहिए, सेवा कहिए कहते हुए राजद्वार में इतनी बड़ी संख्या में आपस में अपने सुन्दर दीर्घ किरीटों को टकराते हुए एकत्र होते है कि उनसे गिरनेवाले स्वर्ण और रत्न पर्वत के समान ढेर के ढेर बन जाते हैं। १२६८

केडहम् वॅयिल्वीशक् किळरयि ऩिलवीऩक्
कोडुयर् नॅडुविऩ्जैक् कुऩ्जर मदुपोल
आडवर् तिरिवारु मरिवयर् कळिहूरुम्
नाडह नविल्वारुम् नहैयुयिर् कवर्वारुम् 1269

आटवर्–पुरुष, जो; केटकम्–ढालों के; वॅयिल् वीच–धूप-सा प्रकाश देते; किळर् अयिल्–(दूसरे हाथ में) रहनेवाली तलवार के; निलवु ईऩ–चाँदनी-सा प्रकाश फैलाते; कोटु उयर्–उन्नत दाँतों वाले; नॅटु विऩ्चै–खूब युद्धविद्या में अभ्यस्त; कुञ्चरम् अतु पोल–गजों के समान; तिरिवारुम्–घूमनेवाले; अरिवैयर्–(नाटक-) गणिकाएँ; कळि कूरुम्–मनोरंजक; नाटकम् नविल्वारुम्–नाटक प्रदर्शन करनेवालियाँ; नकै–मन्दहास से; उयिर् कवर्वारुम्–(पुरुषों के प्राण) हरनेवालियाँ (चित्त झकझोरनेवालियाँ)। १२६९

कुछ पुरुष पाये जाते है जो बायें हाथ में ढाल लिए, जिससे धूप-सा प्रकाश छूटता है और दायें हाथ में तलवार लिए, जिससे चाँदनी-सा प्रकाश छिटकता है बड़े दाँतों वाले गजों के समान जो युद्धविद्या में खूब अभ्यस्त हैं, घूमते हैं। कुछ गणिकाएँ नाटक का प्रदर्शन कर रही है जिनसे खूब मनोरंजन होता है। उनका मन्दहास पुरुषों के मनो को एकदम झकझोर देता है। १२६९

कदिर्मणि यॉळिकालक् कवर्पॉरु ळॅरियावा
ऱॆदिरॆदिर् शुडर्विम्मुऱ् ऱॆळुदलि ऩिळैयोरुम्
मदुविरि कुऴलारु मदिलुडै नॅडुमाडम्
अदुविदु वॆऩवोरा रलमर लुरुवारुम् 1270

कतिर् मणि ऑळि काल–कांतियुक्त रत्नप्रकाश छिटकाते हैं, इसलिए; कवर् पॉरुळ् तॆरिया आऱ्–दृष्टि को आकृष्ट करनेवाली वस्तुएँ साफ दिखाई देने न देते हुए; ऍतिर् ऍतिर्–(वीथियों के दोनों किनारों से) आमने-सामने; चुटर्–चमक-दमक; विम्मुऱ्ऱु ऍळुतलिन्–अत्यधिक उठती है, इसलिए; इळैयोरुम्–तरुण पुरुष; मतु विरि कुऴलारुम्–(पुष्पों पर के) शहद से भरे केशवाली (स्त्रियाँ); मतिल् उटै नॅटु माटम्–

चहारदीवारी वाले बड़े सौध (जिनमें उनको प्रवेश करना है); अतु इतु ॲन्न ओरार्–वह था यह —यह नहीं जान पातीं; अलमरल् उऱुवारुम्–गड़बड़ानेवालियाँ। १२७०

वीथियों के दोनों किनारों पर आमने-सामने रहनेवाले सौधों से रत्न, स्वर्ण आदि वस्तुएँ इतने प्रकाश उगलती है कि आँखें चौंधिया जाती हैं। इसलिए वीथियो में तरुण और पुष्प-शहद-भरे केशवाली तरुणियाँ पायी जाती है जो यह निश्चय नहीं कर पातीं कि हमें इस सौध में प्रवेश करना है या उसमें; और गड़बड़ाती है। १२७०

तेर्मिशै वरुवारुञ् जिविहयिल् वरुवारुम्
ऊर्दियिल् वरुवारु मौळिमणि निरैयोडैक्
कार्मिशै वरुवारुङ् गरिणियिल् वरुवारुम्
पार्मिशै वरुवारुम् पण्डियिल् वरुवारुम् 1271

तेर्मिचै वरुवारुम्–रथों पर आनेवाले; चिविकैयिल् वरुवारुम्–शिविकाओं पर आनेवाले; ऊर्तियिल् वरुवारुम्–(अश्व, ऊँट आदि) सवारियों पर आनेवाले; ऑळि मणि निरै ओटै–कान्त रत्न-सज्जित मुखपट्टधारी; कार् मिचै वरुवारुम्–मेघों (सदृश गजों) पर आनेवाले; करिणियिल् वरुवारुम्–हथिनियों पर आनेवाले; पार् मिचै वरुवारुम्–(पैदल) भूमि पर आनेवाले; पण्टियिल् वरुवारुम्–गाड़ियों पर आनेवाले। १२७१

लोग कितने ही प्रकार के वाहनों पर आ रहे है। रथ, शिविकाएँ, अश्व, ऊँट आदि सवारियाँ, हाथी जिनके कांतियुक्त रत्नों के मुखपट्ट हैं और जो मेघ के समान हैं; हथिनियाँ, गाड़ियाँ —इन सबों पर सवार होकर लोग आ रहे हैं। इनके अलावा पैदल आनेवाले भी हैं। १२७१

मुत्तणि यणिवारुम् मणियणि मुनिवारुम्
पत्तियि ऩविर्शॆम्बॊऩ् पलहलऩ् महिळ्वारुम्
तॊत्तुरु तॊळिऩ्मालै शुरिहुळ लणिवारुम्
शित्तिर निरैतोयुञ् जॆन्दुहिल् पुऩैवारुम् 1272

मुत्तु अणि अणिवारुम्–मुक्ताभरण धारण करनेवाले; मणि अणि मुनिवारुम्–(पहने हुए) रत्नाभरणों से गुस्सा करनेवाले (उनको उतार देनेवाले); पत्तियिऩ्–पंक्ति में; अविर् चॆम् पॊऩ्–उज्ज्वल श्रेष्ठ स्वर्ण के; पल कलऩ्–अनेक आभरण; मकिळ्वारुम्–आनन्द के साथ पहननेवाले; चुरि कुळल्–घुंघराले केश में; तॊत्तु उरु तॊळिल्–गुच्छों वाली और विशिष्टता से गुँथी हुई; मालै अणि वारुम्–मालाएँ पहननेवाले; चित्तिरम् निरै तोयुम्–चित्र-पंक्तियों से सज्जित (कढ़ाई द्वारा); चॆम् तुकिल् पुऩैवारुम्–लाल कौशेय वस्त्र पहननेवाले। १२७२

श्रृंगार में लगे हुए लोगों को देखिये। स्त्रियाँ पायी जाती हैं या पुरुष पाये जाते हैं जो मुक्ताभरण पहन रहे हैं। कुछ रत्नाभरण उतार रहे है। कुछ पंक्तियों में, आलोकमय स्वर्णाभरण पहन रहे है। कुछ

लोग सुन्दर गुच्छों को कलापूर्ण ढंग से गूँथकर उन मालाओं को अपने केशों में पहन रहे हैं। कुछ वस्त्र पहनने में लगे हुए हैं जिन वस्त्रों पर कई चित्रों की कढ़ाई हुई है। १२७२

विडनिहर् विऴियारु मनुदॅन्तु मॉऴियारुम्
किडैपुरै यिदऴारुङ् गिळर्नहै यॉळियारुम्
तडमुलै पॅरियारुन् दनियिडै शिऱियारुम्
पॅडैयॅन्न नडयारुम् पिडियॅन्न वरुवारुम् 1273

विटम् निकर् विऴियारुम्—विषसदृश दृष्टि वालियाँ; अमुतु अॅन्नम्—सुधा-सम; मॉऴियारुम्—वोली वालियाँ; किटै पुरै इतऴारुम्—(खुखरी ?) "किटै" नाम की जललता-सम अधरवालियाँ; किळर् नकै ऑळियारुम्—उज्ज्वल दन्तावली की शोभावालियाँ; तट मुलै पॅरियारुम्—विशाल और पीन स्तनोंवालियाँ; तनि इटै चिऱियारुम्—अनुपम और छोटी कमरवालियाँ; पॅटै अन्नम् नटैयारुम्—स्त्री हंस के समान चालवालियाँ; पिटि अॅन्न वरुवारुम्—हथिनी-सी गति के साथ आनेवालियाँ। १२७३

स्त्रियाँ जिनकी आँखें विष के समान (काली और प्राणहारी) हैं; स्त्रियाँ जो सुधा सम बातें करती हैं, जिनके अधर "किटै" (खुखरी ?) नाम की अत्यन्त लाल जललता के समान हैं; स्त्रियाँ जो आकर्षक मन्दहास-वालियाँ है, या उज्ज्वल दन्तावली वालियाँ हैं; स्त्रियाँ जिनके स्तन मूल में विस्तार के साथ पुष्ट भी हैं; स्त्रियाँ जिनकी कमरें छोटी या क्षीण हैं; स्त्रियाँ जो हंसिनियों के समान चलती आती है, या स्त्रियाँ जो हथिनी की चाल चलती आती है —ये सव हैं। (यहाँ तक के पद्यों में कर्ता ही हैं। क्रिया नहीं है। "एक सूची दी गयी है उसमें लोग किन-किन कामों में लगे हुए थे, यह वताया गया है।" आशय है कि हर कोई किसी न किसी काम में लगा हुआ था।)। १२७३

उण्णिऱैनिमिर् शॅल्वत् तुळवियल् पदैनाडिक्
कण्णुऱ लरिदॅन्निऱ् कळरुद लॅळिदामो
ॲण्णुरु शुडर्वानत् तिन्दिरन् मुडिशूडुम्
मण्णुरु तिरुनाळे यॊत्तद मणनाळे 1274

उळ् निऱै निमिर् चॅल्वत्तु—नगर के अन्दर के भरे व उन्नत वैभव का; उळ इयल्पु अतै—सच्ची स्थिति को; नाटि कण्णुऱल् अरितु—अन्वेषण कर देखना ही कठिन हैं; अॅन्निऱ्-तो; कळऱुतल् ॲळितु आमो—वर्णन करना सुलभ है क्या; अ मणम् नाळ्—वह विवाह-दिन; ॲण् उरु—गौरव समेत; चुटर् वानत्तु—उज्ज्वल आकाश में; इन्तिरन् मुटि चूटुम्—देवेन्द्र के किरीट—धारण के; मण्णुरु तिरुनाळे—अभिषेक के दिन के ही; ऑत्ततु—समान रहा। १२७४

उस नगर के अन्दर का सारा वैभव देखना ही दुस्तर है। तो विवरण कैसे दिया जायगा ? संक्षेप में कहा जाय तो वह सीता-राम का

उद्वाह-दिन स्वर्गलोक के देवेन्द्र के मुकुटधारण के अंगीभूत अभिषेक के दिन के समान कोलाहलमय था और उमंगभरे उत्साह का प्रदर्शन खूब होता था। १२७४

करैत्तॅरि वरियदु कत्तहम् वेय्न्ददु
वरैयॅत्त वुयर्न्ददु मणियित् चॅय्ददु
निरैवळै मणवित्तै निरप्पु मण्डबम्
अरैशर्त मरशनु मणुहत् मेयित्तान् 1275

करै तॅरिवु अरियतु–अन्त पाना (जिसका) कठिन है; वरै ॲत्त उयर्न्ततु– पर्वत-समान (जो) ऊँचा था; कत्तकम् वेय्न्ततु–चाँदी से (जो) मढ़ा हुआ था; मणियित् चॅय्ततु–रत्नों की कारीगरी से (जो) युक्त था; निरै वळै–श्रेणी में कंकण (जो) पहने हुई थी, उन सीताजी का; मणवित्तै–विवाहोत्सव; निरप्पुम् मण्टपम्– (जहाँ) सुसम्पन्न होनेवाला था (उस) भवन में; अरैचर्तम् अरचतुम्–राजाधिराज भी; अणुकल् मेयित्तान्–आने को हुये। १२७५

विवाहमण्डप इतना विशाल था कि अन्त देखना कठिन था। वह पर्वत के समान ऊँचा था। उस पर सोने की चादर मढ़ी हुई थी और रत्न जड़े हुए थे। उसी में सीताजी का, जो अपने हाथों में पंक्तिबद्ध प्रकार से चूड़ियाँ पहने हुए थीं, विवाहसंस्कार होनेवाला था। दशरथ उस मण्डप में पधारने को उद्यत हो निकले। १२७५

वॅण्गुडै यिळनिला विरिक्क मिन्नॅत्तक्
कण्गुडै मणियिळ वॅयिलुङ् गान्ऱिडप्
पण्गुडै वण्डित्तम् बाड वाडन्मा
मण्गुडै तूळिविण् मरैप्प वेहित्तान् 1276

वॅण् कुटै–श्वेत छत्र; इळ निला विरिक्क–मन्द चाँदनी-सा प्रकाश फैलाता; मिन् ॲत्त–बिजली के समान; कण् कुटै–आँखों में कौंधनेवाले, मणि-रत्न आदि; इळ वॅयिलुम् कान्ऱिट–बालधूप फैलाते; कुटै वण्टु इनम्–फलों को कुरेदनेवाले भ्रमर कुल; पण् पाट–संगीत (सा) नाद करते हैं; आटल् मा–विजयी अश्वों की; मण् कुटै–धरती को कुरेदने से उठी; तूळि–धूली; विण् मरैप्प–आकाश को छिपा देती; एकित्तान्–(इस ठाट के साथ) वे आये। १२७६

तब श्वेतछत्र मन्द चाँदनी (सा प्रकाश) फैला रहे थे। किरीट आदि के रत्न बिजली के समान दर्शकों की आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करते हुए धूप-सी कांति बिखेर रहे थे। पुष्पों पर कुरेदते रहनेवाले भ्रमर संगीत की (सी) ध्वनि उत्पन्न कर रहे थे। अश्वों के टाप से धूलि उठी और उसका पटल आकाश को छिपा रहा था। इस ठाट से राजा चले। १२७६

मङ्गल मुरशित्त मळैयि न्नार्त्तन, शङ्गित्त मुळङ्गित्त तारै पेरिहै
पॊङ्गिन मरैयवर् पुहलु नान्मरै, कङ्गुलि नॊलिक्कुमा कडलुम् बोन्ऱदे 1277

मङ्कलम् मुरचु इतम्—मंगलसूचक ढोल; मऴैयिन् आर्त्तत—मेघ के समान नर्दन कर उठे; चङ्कु इतम् मुऴङ्कित—शंख वाद्य-समूह बज उठे; तारै—शृंगियाँ; पेरिकै—नगाड़े; पॊङ्कित—बज उठे; मरैयवर् पुकलुम्—ब्राह्मणों द्वारा पारायण किये जानेवाले; नाल् मरै—चारों वेदों की ध्वनि; कङ्कुलिन् ऑलिक्कुम्—रात में नाद करनेवाले; मा कटल् पोन्र्रतु—बड़े समुद्र की-सी थी। १२७७

और मंगलसूचक ढोल मेघों के गर्जन के समान नर्दन कर रहे थे। शंख, तुरहियाँ, भेरियाँ आदि क्वणित हो उठीं। वेदज्ञ ब्राह्मण वेद का पारायण करते हुए जा रहे थे। वह शब्द रात में समुद्र-गर्जन के समान सुनाई दिया। १२७७

परन्दतेर् कळिरुपाय् पुरवि पण्णयिल्, तरन्दर नडन्दन तानै वेन्दनै
निरन्दरन् दॊऴुदॆऴु नेमि मन्नवर्, पुरन्दरन् पुडैवरु ममरर् पोन्ऱनर् 1278

परन्त तेर्—विस्तृत स्थल पर आनेवाले रथ; कळिरु—गज; पाय् पुरवि—सरपट दौड़नेवाले अश्व; पण्णैयिल्—अनेक दलों में आनेवाले; तरम् तरम् नटन्तत—श्रेणी बाँधकर चले; तानै वेन्तनै—सेना के स्वामी दशरथ को; निरन्तरम् तॊऴुतु ॲऴुम्—निरन्तर नमस्कार कर उठनेवाले; नेमि मन्नवर्—आज्ञाचक्रधारी राजा लोग; पुरन्तरन् पुटै वरुम्—पुरन्दर के साथ आनेवाले; अमरर् पोन्ऱनर्—देवतुल्य थे। १२७८

विस्तृत थल में रथ, गज और सरपट दौड़नेवाले अश्व समूहों में और श्रेणीबद्ध हो चले जा रहे थे। सेना के स्वामी चक्रवर्ती की निरन्तर सेवा में लगे रहने के कारण जो उन्नत हो गये थे, वे राजा पुरन्दर के साथ देवों के समान दशरथ को घेरते हुए चले। १२७८

अनैयवन् मण्टब मणुहि यम्बॊनिन्, पुनैमणि यादनम् पॊलियत् तोन्ऱिनान्
मुनैवरु मन्नरु मुऱैयि नेऱिनार्, शनहनुन् दन्किळै तऴुव वेऱिनान् 1279

अनैयवन्—वे; मण्टपम् अणुकि—मण्डप में पहुँचकर; अम् पॊन्निन्—श्रेष्ठ स्वर्ण के; मणि पुनै—रत्नसहित निर्मित; आतनम्—आसन पर; पॊलिय—उसको शोभित करते हुए; तोन्ऱितान्—विराजे; मुनैवरुम्—मुनिगण; मन्नरुम्—राजा लोग भी; मुऱैयिन् एऱिनार्—यथाक्रम अपने-अपने आसन पर आसीन हुए; चनकनुम्—जनक भी; तन्किळै तऴुवु—अपने बन्धु-बान्धवों के मध्य; एऱिनान्—आसनस्थ हुए। १२७९

वे दशरथ उस मण्डप में आकर स्वर्ण और रत्नों से निर्मित एक शानदार आसन पर विराजमान हुए। मुनिगण और राजा लोग अपने-अपने क्रम में अपने-अपने निर्दिष्ट आसन पर आसीन हुए। राजा जनक भी आसनस्थ हुए और उनको घेरकर उनके बन्धु-बान्धव विराजे। १२७९

मन्नरु मुनिवरु मऱ्ऱु ळोर्हळुम्
अन्नमॆन् नडैयणङ् गनैय मादरुम्
तुन्निनर् तुवन्ऱलिऱ् चुडर्हळ् शूऴ्वरुम्
पॊन्मलै यॊत्तदप् पॊरुविल् कूडमे 1280

मऩ्ऩरुम्–राजा लोग; मुऩिवरुम्–मुनिगण; मऱ्ऱु उळोर्कळुम्–अन्य जो वहाँ रहे, वे पुरुष; अऩ्ऩम् मॅल् नटै–हंस की-सी मृदु चालवाली; अणङ्कु अऩैय–श्रीलक्ष्मीदेवी सदृश; मातरुम्–स्त्रियाँ; तुऩ्ऩिऩर् तुवऩ्ऱलिऩ्–जो खचाखच भरी थीं, उनकी भीड़ से; अ पॊरु इल् कूटम्–वह अनुपम भवन; चुटर्कळ् चूऴ् वरुम्–ग्रह और नक्षत्रों से भरे; पॊऩ् मलै ऑत्ततु–मेरुपर्वत के समान रहा। १२८०

वह मण्डप राजा लोग, मुनिगण, अन्य पुरुष और हंस की-सी चाल वाली स्त्रियाँ —इन सब से खचाखच भर गया। तब वह मेरुपर्वत के समान जिसकी परिक्रमा ग्रह और नक्षत्र करते रहते हैं दिखाई दिया। १२८०

पुयलुळ मिऩ्ऩुळ पॊरुविऩ् मीऩुळ
इयऩ्मणि यिऩमुळ शुडरि रण्डुळ
मयऩ्मुदऱ् ऱिरुत्तिय मणिशॅय् मण्डबम्
अयऩ्मुदऱ् ऱिरुत्तिय वण्ड मॊत्तदे 1281

मयऩ्–मय ने (देवशिल्पी); मुतल् तिरुत्तिय–जिसका पहले निर्माण किया था; मणिचॅय् मण्टपम्–नवरत्न-खचित उस मण्डप में; पुयल् उळ–मेघ है; मिऩ् उळ–बिजली है; पॊरुविल् मीऩ् उळ–अनुपम नक्षत्र है; इयल् मणि इऩम् उळ–कांतियुक्त मणिकुल (तारागण) है; चुटर् इरण्टुम् उळ—(सूर्य-चन्द्र) दोनों प्रकाशपुंज हैं; अयऩ् मुतल् तिरुत्तिय–ब्रह्मा ने जो पहले सृजित किया था उस; अण्टम् ऑत्ततु–अण्डगोल के समान था। १२८१

ब्रह्मा ने जो अण्ड पहले बनाया उसमें मेघ है, बिजली है, ग्रह और नक्षत्र पाये जाते हैं और तारागण हैं। सूर्य और चन्द्र है। इस मय-निर्मित मण्डप में भी मेघ, बिजली और तारों के स्थान में स्त्रियों के केश, शरीर और आँखें हैं। ग्रह (अन्य राजा) सूर्य और चन्द्र के स्थान में ज्योतिपुंज के समान दशरथ (सूर्यकुल के राजा) और जनक (चन्द्रकुल के राजा) है। अतः यह मण्डप भी ब्रह्म-रचित अण्ड के समान है। १२८१

ऑण्डव मुऩिवरु मिऱैवर् यावरुम्
अण्डरुम् बिऱरुम्बुक् कडङ्गिऱ् ऱादलाल्
मण्डबम् वैयमुम् वाऩुम् वाय्मडुत्
तुण्डवऩ् मणियणि युदरम् बोऩ्ऱदे 1282

ऑण् तवम् मुऩिवरुम्–(श्रेष्ठ) मान्य तपस्वी; इऱैवर् यावरुम्–(दिग्पालक आदि) सभी राजा; अण्टरुम्–देवता लोग; पिऱरुम्–अन्य; पुक्कु अटङ्किऱ्ऱु–प्रवेश कर समाहित हो गये; आतलाल्–इसलिए; मण्टपम्–वह मण्डप; वैयमुम् वाऩम्–भूलोक और स्वर्गलोक को; वाय् मटुत्तु–अपने मुख में डालकर; उण्टवऩ्–जिन्होंने उदरस्थ कर लिया था उन श्रीविष्णु के; मणि अणि उतरम् पोऩ्ऱतु—मणि-सम सुन्दर उदर सदृश था। १२८२

जो तपस्या श्रेष्ठ मानी जाती है उस तपस्या के धनी मुनिगण, लोकपालक (दिग्पालक और राजा लोग), देवता लोग और अन्य, सभी

लोगों को उस मण्डप ने समा लिया। इस कारण वह श्रीमन्नारायण के, जिन्होंने आकाश और भूमि सबको अपने मुख में डालकर निगल लिया था, सुन्दर उदर से तुल्य था। १२८२

तरादल मुदलुल हनैत्तुन् दळ्ळुऱ
विराविन कुविन्दन विळम्ब वेण्डुमो
अरावणै तुऱन्दुपोन् दयोत्ति मेविय
इराहवन् शॅय्दियै यियम्बु वामरो 1283

तॅरातलम् मुतल्–धरातल से लेकर; उलकु अतॅत्तुम्–सभी लोकों के वासी; तळ्ळुऱ–(विवाह देखने की इच्छा से) प्रेरित हो; विरावित्त कुविन्तन–मिलकर आये और एकत्रित हुए; विळम्प वेण्टुमो–(फिर) भीड़ की हालत कहना चाहिए क्या; अरा अणै तुऱन्तु–शेष शयन त्यागकर; पोन्तु–जाकर; अयोत्ति मेविय–अयोध्या में जो (अवतार लेकर) पहुँचे; .इराकवन् चॅय्तियै–उन श्रीराघव का समाचार; इयम्पुवाम्–कहेंगे। १२८३

धरातल से लेकर सभी लोकों के वासी, श्री सीताराम विवाह के दर्शन करने की अदम्य इच्छा से प्रेरित होकर वहाँ आकर मिल गये। फिर भीड़ की स्थिति या विशालता का क्या कहना ? अब हम श्रीरामचन्द्र का जो शेषशय्या त्यागकर अयोध्या में आकर अवतरित हुए थे, वृत्तान्त कहेंगे। १२८३

शङ्गिनन् दवळ्हड लेऴिऱ् ऱन्दवुम्
शिङ्गलि लरुमऱै तरिन्द तीर्त्तङ्गळ्
गङ्गये मुदलवुङ् गलन्द नीरिऩाल्
मङ्गल मञ्जन मरबि ऩाडिये 1284

चिङ्कल् इल्–अक्षय; अरु मऱै तॅरिन्त–श्रेष्ठ वेदों में उक्त; तीर्त्तङ्कळ्–पवित्रजल; कङ्कै मुतलवुम्–गंगा आदि का; चङ्कु इनम् तवऴ्–शंख कुल जहाँ रेंगते रहते है उन; कटल् एऴिल् तन्तवुम्–सातों समुद्रों से लाया हुआ जल; कलन्त नीरिऩाऴ्–(दोनो के) मिश्रित जल से; मङ्कलम् मञ्चनम्–मंगलकर पवित्र मज्जन (स्नान); मरपिन् आटि–यथोक्त रीति से करके। १२८४

अक्षय वेदों में उक्त प्रकार से गंगा आदि पवित्र नदियों का जल लाया गया। फिर उन सातों समुद्रों का, जिनमे पवित्र शंख आदि जलचर रहते हैं, पुनीत जल भी लाया गया। उन दोनों के मिश्रित और सुवासित जल से श्रीराम ने मुकुटधारण उत्सव के अंग के रूप में यथोक्त रीति से अभिषेक किया। १२८४

कोदऱ तवत्तुत्तङ् गुलत्तु ळोर्तॊळुम्
आदियञ् जोदियै यडिव णङ्गिऩान्

कादियल् कयल्विऴिक् कन्निऩ् मार्हळै
वेदियर्क् करुमऱै विदियिऩ् नल्हिये 1285

कातु इयल् कयल् विऴि–कर्ण तक आयत मछली-सी आँखों वाली; कन्निमार्कळै–कन्याओं को; वेतियरक्कु–वेदज्ञ विप्रों को (अविवाहित ब्रह्मचारियों को); अरु मऱै वितियिन् नल्कि–श्रेष्ठ वेदोक्त रीति से; नल्कि–दान करके; कोतु अरु तवत्तु–निर्मल तपस्या के; तम् कुलत्तु उळोर्–अपने कुल के पूर्वजों से; तॊऴुम्–परम्परा से पूजित; आति अम् चोतियै–आदि परमज्योति श्रीरंगनाथ की; अटि वणङ्किनान्–चरण-पूजा की। १२८५

फिर वेदोक्त रीति से वेदपाठी ब्राह्मण ब्रह्मचारियों को कन्यादान किया गया। वे कन्यायें सुन्दर थी, जिनकी मछली-सी आँखें कर्ण तक लम्बी थीं। फिर उन्होंने आदि परम ज्योति, श्रीरंगनाथदेव की, जिनकी आराधना उनके वंश के राजा परम्परा से करते आ रहे थे, चरण-पूजा की। १२८५

अऴिवरु तवत्तिनो डऱत्तै याक्कुवान्
ऑऴिवरुङ् गरुणयो रुरुवु कॊण्डॆन्न
ऍऴुदरु वडिवुहॊण् डिरुण्ड मेहत्तै
तऴुविय निलवॆनक् कलवै शात्तिये 1286

अऴिवरु–'ग्लानिगत'; तवत्तिनोटु–तपस्या के साथ; अऱत्तै–धर्म को; आक्कुवान्–स्थापित करने के लिए; ऑऴिवु अरु करुणै–अमर करुणा (निधि) ने; ओर् उरुवु कॊण्टतु–एक (मानव-) रूप ले लिया; ऍन्न–ऐसा; ऍऴुत अरु वटिवु कॊण्टु–(चि) लिखने के लिए कठिन सौंदर्य लेकर; इरुण्ट मेकत्तै तऴुविय–काले मेघ को अपने आलिंगन में जिसने ले लिया है; निलवु ऍन–उस चाँदनी के समान; कलवै चात्ति–चन्दन का लेप लगाकर। १२८६

(इस पद से श्रीराम के श्रृंगार का वर्णन है। पहले चन्दन लगाने का श्रृंगार बताया जाता है।) तप और धर्म क्षीण हो रहे थे उनको फिर से स्थापित करने के लिए मानो अक्षय करुणा ने मानव रूप धर लिया हो ऐसा था श्रीराम का रूप। और उनका सौन्दर्य इतना महान था कि चित्रण कठिन है। उन्होंने अपने शरीर पर चन्दन की चर्चा कर ली थी। तब ऐसा लगा मानो मेघ पर चाँदनी लग गई है। १२८६

मङ्गल मुऴुनिला मलर्न्द तिङ्गळैप्
पॊङ्गिरुङ् गरुङ्गडल् पूत्त दामॆनच्
चॆङ्गिडैच् चिहऴिहैच् चॆम्बॊन् मालयुम्
तॊङ्गलुन् दुयल्वरच् चुऴियज् जूडिये 1287

पॊङ्कु इरु करु कटल्–ज्वार में उठनेवाले विशाल और नीले सागर ने; मङ्कलम्–मंगलमय; मुऴु निला मलर्न्त तिङ्कळै–सारी कलाओं के साथ उत्फुल्ल चन्द्र

को; पूत्तत्तु आम्–अपने में रख लिया हो ऐसा; चॅम् किटै चिकऴिके–लाल "किडै" (नामक जल-लता खुखरी के तने) से बनी हुई "शिकऴिका" (नाम की माला) पर; चॅम् पॉन् मालैयुम्–लाल स्वर्ण की माला और; तॉङ्कलुम्–पुष्पों की मालाएँ; तुयल् वर–झूलते हुए; चुऴियम् चूटि–"चुऴियम्" (नाम का) शिरोभूषण पहनकर। १२८७

केशालंकार का वर्णन है। उनके केश पर पहले 'चिकऴिक' नाम का वलय पहनाया गया। (वह लाल किटै खुखरी ? नाम की जल-लता के तने का बना हुआ होता है। फूलों का भी बनता है— ११९७वाँ पद देखें।) उनका केश नीला सागर-सा था और यह आभूषण पूर्णचन्द्र के समान था। उसके बाद ऊपर "चुऴियम्" नाम का रत्नों का बना आभरण पहनाया गया। उससे स्वर्ण और पुष्प की मालाएँ लटक रही थीं। १२८७

एदमि लिरुकुऴै यिरवु नन्पहल्
कादल्हण् डुणर्न्दन कदिरुन् दिङ्गळुम्
शीदैतन् करुत्तिनैच् चॅवियि नुळ्ळुरत्
तूदुशॅन् ऱुरैप्पन पोन्ऱु तोन्ऱवे 1288

इरवु नन् पकल्–रात और अच्छे दिन में; चीतै तन् कातल्–सीताजी के प्रेम (की वेदना की स्थिति) को; कण्टु उणर्न्तन–देखकर जिन्होंने समझ लिया है; कतिरुम् तिङ्कळुम्–वे सूर्य और चन्द्र; तूतु चॅन्ऱु–दूत बनकर आये; करुत्तितै–सीताजी के मन की बात को; चॅवियिन् उळ् उऱ–कानों में, अन्दर; उरैप्पत पोन्ऱु–कहते हों, जैसे; एतम् इल् इरु कुऴै–दोषहीन दो कुण्डल; तोन्ऱ–शोभा दे रहे थे। १२८८

उनके उज्ज्वल कर्णकुण्डल सूर्य और चन्द्र के समान थे, जो सीताजी की विरह-कथा देख जानकर, दूतों के रूप में, श्रीराम के कानों में वह समाचार कह रहे हों। १२८८

कार्विडक् करैयुडैक् कणिच्चि वानवन्
वार्शडैप् पुडैयिनोर् मदिमि लैच्चत्तान्
शूर्शुडर्क् कुलमॅलाज् जूडि नानॅन
वीरपट् टत्तॊडु तिलह मिन्नवे 1289

कार् विटम् करै उटै(य)–काले विष की कालिमा कण्ठ में धारण करनेवाले; कणिच्चि वानवन्–परशुधर देव (शिवजी) ने; वार् चटै पुटैयिन्–लम्बी जटाजूट पर; ओर मति मिलैच्च–चन्द्र की एक कला को धारण किया है, (मानो स्पर्द्धा में); चूर् चुटर् कुलम् ॲल्लाम्–दिव्य ज्योतिमण्डलों, सबों, को; तान् चूटितान्–खुद धारण कर लिया हो; ॲन–ऐसा; वीर पट्टत्तॊटु–वीरता-सूचक पट्टी के साथ; तिलकम्–तिलक के; मिन्न–चमकते। १२८९

श्रीराम ने पट्टी और तिलक धारण कर ली। (यह पट्टी वीरतासूचक आभरण है।) पट्टी इतनी कांतियुत थी मानो सभी दिव्य ज्योतिमण्डल

एक साथ मिल गये हों और उस समूह को श्रीराम ने धारण कर लिया हो। नीलकंठ, परशुधर श्री शिवजी ने एक ही कलावाले चन्द्र को अपनी जटाजूट पर धारण कर लिया था। उसकी तुलना में श्रीराम की पट्टी जो स्वर्ण की बनी थी और जिसमें श्रेष्ठ रत्न आदि जड़ित थे, लाखों, करोड़ोंगुना श्रेष्ठ और शोभायमान रही। तिलक भी मिल गया, फिर क्या पूछना! । १२८९

शक्करत् तयल्वरुम् जङ्ग मामॅन
मिक्कॉळिर् कळुत्तणि तरळ वॅण्गोडि
मॉय्क्करुङ् गुळलिनाण् मुरुव लुळ्ळुरप्
पुक्कन निरैन्दुमेर् पॉडिप्प पोन्ऱवे 1290

चक्करत्तु अयल् वरुम् चङ्कम् आम् ॲन–चक्रायुध के पास रहनेवाले शंख के समान; **मिक्कु ऑळिर्**–अधिक उज्ज्वल; **कळुत्तु अणि**–कण्ठ में पहने गये; **वॅण् तरळम् कोटि**–श्वेत मुक्ताओं के हार; **मॉय् करु कुळलिनाळ्**–घने काले केशवाली सीताजी की; **मुरुवल्**–मुस्कुराहट; **उळ् उऱ पुक्कन**–जो (श्रीराम के) मन में खूब पैठ गई थी वह; **निऱैन्तु**–वहाँ खूब भरने के बाद; **मेल् पॉटिप्प पोन्ऱ**–ऊपर छलक आयी हो ऐसे लगे। १२९०

श्रीराम का मुख चक्र-समान है तो कण्ठ उस चक्र के पास रहनेवाले शंख के समान। उस कण्ठ को उन्होंने मुक्ताहारों से अलंकृत कर लिया था और वे उनके श्रीवक्ष पर डोल रहे थे। उनको देखकर ऐसा लगता था मानो घने केशवाली सीताजी के हास, 'जो श्री रामजी के हृदय में (स्मृति के रूप में) थे वे छलककर बाहर आकर दिख रहे हों। १२९०

पन्दिशॅय् वयिरङ्गळ् पॉऱियिन् पाडुऱ
अन्दमिल् शुडर्मणि यळलिन् ऱोन्ऱलाल्
सुन्दरत् तोळणि वलयन् दॉल्लैनाळ्
मन्दरञ् जुऱ्ऱिय वरवै मानुमे 1291

पन्ति चॅय् वयिरङ्कळ्–पंक्तियों में जड़े हुए हीरे; **पॉऱियिन् पाटु उऱ**–सर्प की बिन्दियों के समान लगते; **अन्तम् इल् चुटर् मणि**–अपार कांति के माणिक्य; **अळलिन् तोन्ऱलाल्**–अग्नि के समान दिखाई देते, अतः; **चुन्तरम् तोळ् अणि वलयम्**–सुन्दर भुजाओं के बाहुवलय; **तॊल्लै नाळ्**–कभी पुराने दिनों में; **मन्तरम् चुऱ्ऱिय**–(क्षीरसागर मन्थन के अवसर पर) मन्दरपर्वत पर लपेटा हुआ; **अरवै मानुम्**–(वासुकी) सर्प-सम थे। १२९१

(अब बाहुवलय की बात आती है।) बाहुवलयों में बहुमूल्य हीरे जड़े है। वे सर्प के चमड़े की बिन्दियों के समान लगते है। रत्न हैं जो अंगारों के समान ज्वलंत हैं। इसलिए वे सुन्दर बाहुवलय उस वासुकी के समान लगते हैं जिसको अमृतमंथन के दिन मंदरपर्वत पर लपेटा गया था। (श्रीराम की भुजाएँ मेरु के समान थीं।) । १२९१

कोवयिऩ् पॆरुवड मुत्तङ् गोत्तन, कावलशॆय् तडक्कयि नडुवट् काऩ्दुव
मूवहै युलहिऱ्कु मुदल्व नामॆन, एवरुम् पॆरुङ्गुऱि यिट्ट पोऩ्ऱवे 1292

कावल् चॆय्–सर्वलोक पालन करनेवाले; तट कैयिऩ् नट्टुवण्–विशाल हाथों के मध्य; काऩ्तुव–दीप्ति देनेवाले; मुत्तम् कोत्तत्त–मोतियों को गूँथकर बनायी गई; कोवै इऩ् पॆरु वटम्–सुगठित मनोरम बड़ी-बड़ी लड़ियाँ; मू वकै उलकिऱ्कुम्–तीनों वर्ग के लोकों के; मुतल्वऩ् आम् ऍन–आदि नायक हैं, यह; एवरुम्–सब से; पॆरु कुऱि इट्ट पोऩ्ऱ–उत्कृष्ट प्रतीक लगा रखा हो, ऐसी लगीं। १२६२

हाथों में (कुहनियों के ऊपर) मध्य स्थान पर मोती की लड़ियाँ श्रीराम ने पहन ली थीं। वे हाथ लोकरक्षक हाथ हैं और मुक्तालड़ियों का यह आभरण उस बात का सूचक चिह्न है। वह त्रिलोकाधिपतित्व का सर्वसम्मत निशान-सा था। १२९२

माण्डपॊऩ् मणियणि वलयम् वऩ्दॆदिर्
वेण्डिनर्क् कुदवुवाऩ् वेण्डिक् कऱ्पहम्
ईण्डुतऩ् कॊम्बिडै यीऩ्ऱदा मॆनक्
काण्डहु तडक्कयिर् कडक मिऩ्नवे 1293

कऱ्पकम्–कल्पतरु ने; ऍतिर् वन्तु वेण्टिनर्क्कु–सामने आकर याचना करनेवालों को; उतवुवाऩ् वेण्टि–दान देने के लिए; ईण्टु तऩ् कॊम्पिटै–यहाँ अपनी शाखा पर; माण्ट पॊऩ् मणि अणि वलयम्–चोखे स्वर्ण और रत्नों से निर्मित कंकण; ईऩ्ऱतु आम ऍन्न–पैदा करके रख लिया हो, जैसे; काण् तकु–दर्शनीय; तट कैयिल्–विशाल हाथों में; कटकम् मिऩ्ऩ–कंकण चमकते हैं। १२६३

कलाई के ऊपर स्वर्ण-रत्न-कंकण थे। हाथों में कंकण देखकर ऐसा लगता था मानो कल्पतरु ने अपने सामने आनेवाले याचकों की प्रार्थना पूरी करने के लिए अपनी एक शाखा पर ऐसे कंकणों को उत्पन्न कर रख लिया हो, ऐसा लगता था। १२९३

तेऩुडै मलर्महळ् डिळैक्कु मार्विनिल्, तानिडै विळङ्गिय तहैयि नारन्दान्
मीनॊडु शुडर्विड विळङ्गु मेहत्तु, यानिडु विल्लॆऩ्न वयङ्गिक् काट्टवे 1294

तेऩ् उटै मलर् मकळ्–मधुसहित कमलपुष्प की वासिनी श्रीलक्ष्मीदेवी; तिळैक्कुम् मार्पिनिल्–जहाँ आनन्द करती है उस श्रीवक्ष में; इटै विळङ्किय–(मोतियों के हारों के) मध्य ज्वलन्त; तकै इऩ् आरम्–श्रेष्ठ नवरत्नहार; मीऩ् चुटर् विट–नक्षत्रज्वलित; विळङ्कुम् मेकत्तु–विद्यमान मेघों में; वाऩ् इट्ट विल् ऍन–(उद्भूत) इन्द्र-धनुष के समान; वयङ्कि काट्ट–शोभासहित दिखता। १२६४

श्रीराम के वक्ष पर, जो कमलाजी का आनन्दमय निवासस्थान है, मुक्ताहारों के मध्य एक नवरत्न हार था। वह मनोरम हार उस मेघ के बीच, जिसमें नक्षत्र चमक रहे हों, उत्पन्न इन्द्रधनुष के समान था। १२९४

नणुहवु मरियदा नडक्कु ञानत्तर्
उणर्वॅन वॉळिर्तरु मुत्त रीयन्दान्
कणिवरुङ् गरुणयान् कळुत्तिऱ् चात्तिय
मणियुमिळ् कदिरॅन मार्बिऱ् ऱोन्ऱवे 1295

नणुकवुम् अरियतु आक–दुर्गम; नटक्कुम्–(ज्ञान-मार्ग में) चलनेवाले; ञानत्तर्–ज्ञानी के; उणर्वु ॲन–पवित्र ज्ञान के समान; ऑळिर् तरुम्–ज्वलनशील; उत्तरीयम्–उत्तरीय; कणिवु अरु करुणैयान्–अगण्य करुणानिधि श्रीराम के; कळुत्तिल् चात्तिय मणि–गले में पहने हुए मुक्ताहारों से; उमिळ् कतिर् ॲन–निःसृत प्रकाश के समान; मार्पिल् तोन्ऱ–वक्ष पर शोभित है। १२९५

उनका उत्तरीय अगम ज्ञानमार्गी ज्ञानी के ज्ञान के समान पवित्र था। वह उन मुक्ताहारों से, जिनको अपार करुणा के स्वामी श्रीराम ने पहन रखे थे, निःसृत ज्योति के समान लगा। १२९५

मेवरुञ् जुडरॉळि विळङ्गु मार्बिनूल्
एवरुन् दॅरिन्दिनि दुणर्मि नीण्डॅनत्
तेवरु मुनिवरुन् दॅरिक्क लामुदल्
मूवरुन् दानॅन मुडित्त दॉत्तते 1296

मेव अरु–पास जाने में अशक्य; चुटर् ऑळि विळङ्कुम्–(सूर्य, चन्द्र, अग्नि—तीन) ज्योति-पुंजों के समान दीप्तियुत; मार्पिन् नूल्–श्रीवक्ष का त्रिसूत्री यज्ञोपवीत; तेवरुम् मुनिवरुम्–देवों और मुनियों से भी; तॅरिक्क अला–जानने के लिए दुर्लभ; मुतल् मूवरुम्–आदिदेव, त्रिमूर्ति; तान् ॲन–मैं हूँ, यह; ईण्टु–यहाँ; एवरुम्–सब कोई; तॅरिन्तु इनितु उणर्मिन्–जानकर आनन्द का अनुभव कर लो; ॲन–ऐसा कहकर; मुटित्ततु–एक साथ बाँधा गया हो; ऑत्ततु–ऐसा लगा। १२९६

श्रीरामचन्द्र के श्रीवक्ष मे त्रिसूत्री यज्ञोपवीत कैसी शोभा दे रहा था? वह सूर्य, चन्द्र और अग्नि तीनों की एकत्रित ज्योति के समान था। "देव और मुनिगण भी जिनको जान नही पाये है वे तीनों आदि त्रिमूर्ति मैं ही हूँ, सब समझकर उसका लाभ उठाइये।" श्रीराम की ओर से यह सूचित करते हुए तीनों की एक गाँठ बाँधी गई हो ऐसा वह लगता था। १२९६

शुऱ्ऱुनी डमनियच् चोदि पॉङ्गमेल्, ऑऱ्ऱैमा मणियुमि ळुदर बन्दनम्
मऱ्ऱुमो रण्डमु मयनुम् वन्दॅळप्, पॉऱ्ऱडन् दामरै पूत्त दॉत्तदे 1297

चुऱ्ऱुम्–चारों ओर; नीळ् तमनियम् चोति पॉङ्क–श्रेष्ठ स्वर्ण की कांति के उभर आते; मेल् ऑऱ्ऱै मा मणि–सामने मध्य में जड़ित एक बड़े रत्न से; उमिळ्–निकला प्रकाशयुक्त; उतर पन्ततम्–उदर बन्धन; मऱ्ऱुम् ओर् अण्टमुम्–दूसरा एक अण्डगोल और; अयनुम्–उसके सर्जक ब्रह्मा को; वन्तु ॲळ–उत्पन्न करने के लिए; पॉन् तट तामरै–स्वर्ण के बड़े कमल को; पूत्ततु–(श्रीराम की नाभी ने) खिलाया था; ऑत्ततु–जैसा था। १२९७

(उदरवन्धन पेट को लपेटकर पहनाये जानेवाला एक आभरण है। वह स्वर्ण से निर्मित किया जाता है और उसके मध्य सामने एक बड़ा नीला रत्न रखा जाता है।) उदरवंधन के स्वर्ण की कांति खूब छिटकती थी। नीला रत्न ज्वलत था। वह एक नये कमलपुष्प के समान था जिस पर एक नये ब्रह्मा, जो नया अण्डगोल सृष्ट करेंगे, उदित होंगे। १२९७

मण्णुरु	शुटर्मणि	वयङ्कित्	तोन्ऱिय
कण्णुरु	करुङ्गड	लदनैक्	कैवळर्
तण्णिऱप्	पाऱ्कड	ऱ्ऴीइय	दामॅन
वॅण्णिऱप्	पट्टॊळि	विळङ्गच्	चात्तिये 1298

मण् उरु–जल धौत; चुटर् मणि–उज्ज्वल रत्नों के साथ; वयङ्कि तोन्ऱिय–शोभायमान दिखनेवाले; कण् उरु–दर्शनीय; करु कटल् अतनै–नीले सागर को; कै वळर्–अधिक लहरो से युक्त; तण्णिऱम्–शीतल (मनोरम) रंगवाले; पाल् कटल् तऴीइयतु–क्षीरसागर ने लपेट लिया; आम् ऍन–जैसे; वॅळ् निऱम् पट्टु–श्वेत कौशेय वस्त्र; ऑळि विळङ्क–शोभा बढ़ाते हुए; चात्ति–पहनकर। १२९८

जगन्नाथ ने कौशेय वस्त्र धारण कर लिया। नीले सागर सम उनके शरीर पर यह श्वेत कौशेय वस्त्र मनोरम तरंगों वाले क्षीरसागर के समान लगा जो जलधौत रत्नों के आगार, विशाल नीले सागर को लपेटे रहता है। १२९८

शलम्वरु	तरळमुन्	दयङ्गु	नीलमुम्
अलम्वरु	निऴलुमि	ऴम्बॊऩ्	कच्चिन्नाल्
कुलम्वरु	कनहवान्	कुन्ऱै	निन्ऱुडन्
वलम्वरु	कदिरॆन	वाळुम्	वीक्कियें 1299

तयङ्कुम् नीलमुम्–कांत नीलमणियाँ; चलम वरु तरळमुम्–उसके विपरीत (रंगवाले) मोती; अलम् वरु निऴल् उमिऴ्–जिसमें रहकर परस्पर विपरीत प्रकाश छिटकाते हैं; अम् पॊन् कच्चिताऴ्–उस सुन्दर स्वर्णिम कमरबन्द से; कुलम् वरु–गौरवयुक्त; कनकम् वान् कुन्ऱै–स्वर्णमय, बड़े (मेरु) पर्वत की; वलम् वरु कतिर्–परिक्रमा करनेवाले सूर्य; उटन् निन्ऱु ऍन–उसी के साथ खड़े हो गये हों, ऐसा; वाळुम् वीक्कि–तलवार बाँधकर। १२९९

उदरबंधन के नीचे कमरबंद लगा लिया गया और उसमें तलवार बाँध दी गई। कमरबंद में नीले रत्न और उनके विपरीत प्रकाश को देनेवाले मोती सजाये गये थे। वह कमरबन्द भी सोने का था। उनकी तलवार सूर्य के समान लगी जो स्वर्णमय मेरु की परिक्रमा करना रोककर एक स्थान पर मेरुपर्वत से लगकर रुक गये हों। श्रीराम की देह मेरु से उपमित है। यद्यपि वह स्वतः स्वर्णिम नहीं थी, पर सोने के आभरणों के कारण वह मेरु के समान मानी गई। १२९९

मुहैविरि ग़ुडरॉळि मुत्तिन् पत्तियाल्
तॉहैविरि पट्टिहैच् चुडरुम् जुऱ्ऱिडत्
तहैयुडै वाळॅनुन् दयङ्गु वॅय्यवन्
नहैयिळ वॅयिलॅन्नत् तॉङ्ग नाऱ्ऱिये 1300

मुकै विरि–(कुंद) कलियों की-सी छटावाले; चुटर् ऑळि–कांत; मुत्तिन् पत्तियाल्–मोती की पंक्तियों से; तॉकै विरि–जिसपर प्रकाश अधिक है; पट्टिकै चुटरुम्–कमरपट्टिका के प्रकाश से भी; चुऱ्ऱिट–आवृत्त; तयङ्कु–विद्यमान; तकै–सुन्दरतायुक्त; उटैवाळ् ॲनुम्–कटाररूपी; वॅय्यवन्–सूर्य की; नकै इळ वॅयिल् ॲन्न–भासित बालधूप-सा; तॉङ्कल् नाऱ्ऱि–लड़ियाँ लटकाकर। १३००

उसके बाद कमर में कमरपट्टिका पहनी गई उसमें कटार बाँधी गई। उस पट्टिका में कुन्दकलियों की आभावाले मोतियों की लड़ियाँ पाई गई। कटार सूर्य के समान थी और उसके लाल धूप की झड़ियों के समान माणिक की लड़ियाँ कमरपट्टिका से लटकती रहीं। १३००

काशॉडु कण्णिळल् कज़लक् कैवित्तै
एशलिल् किम्पुरि यॅयिऱु वॅण्णिला
वीशलिन् महरवाय् विळङ्गु वाण्मुहम्
आशयै यॉळिहळा लळन्दु काट्टवे 1301

कै वित्तै–हस्तकौशल की; एचल् इल्–जिसमें कमी नहीं; किम्पुरि–वह "किंपुरी" (ऊरु के आभरण) के; कार्चोटु कण् निळल्–रत्नजड़ित आँखों की कांति के; कज़ल्–बिखरते; ॲयिऱु–दाँत; वॅळ् निला वीचलिन्–श्वेत चाँदनी-सा प्रकाश फैलाते है, इसलिए; मकर वाय् विळङ्कुम्–मकरमुख-सा बना हुआ; वाळ् मुकम्–उज्ज्वल अग्रभाग; ऑळिकळाल्–अपनी विविध कांति की किरणों से; आचैयै अळन्तु काट्ट–दिशाओं को माप लेता है। १३०१

(इसमें किंपुरी नामक ऊरु के आभरण का वर्णन है। उसका मुख या अग्रभाग मकर के मुख के समान बनाया जाता है। मकर का मुख खुला रहता है। उसकी आँखों और दाँतों के स्थान पर रत्न, मोती आदि जड़े जाते हैं।)।

प्रभु श्रीराम ने "किंपुरी" पहनी। उसकी रचना बहुत सूक्ष्म और कुशल और विस्मयकारी कारीगरी के साथ हुई थी। उसकी रत्नजड़ित आँखें कान्ति थी। दाँत चाँदनी-सा प्रकाश उगल रहे थे। मकर के मुख से जो प्रभा छूट रही थी वह दिशा-दिशा में इतनी दूर गई मानो दिशाओं को ही नाप रही हो। १३०१

इनिप्परन् दुलहिनै यळप्प दॅङ्गॅन्नत्
तनित्तनि तडुप्पन पोलुम् जाल्बिन

नुनिप्परु नुण्विनैच् चिलम्बु नोन्कऴल्
पनिप्परुन् दामरैप् पादम् बऱ्ऱवे 1302

परन्तु–विशाल बनकर; उलकिनै अळप्पतु–लोकों को मापना; इत्ति ॲङ्कु–अब कहाँ; ॲन–कहकर; तनि तनि–अलग-अलग; तटुप्पन पोलुम्–रोकते से; चाल्पिन–प्रकृतिवाले; नुनिप्पु अरु–सूक्ष्म रूप से देखने पर भी जानने में कठिन; नुण् वित्तै–सूक्ष्म कारीगरी से युक्त; चिलम्पु–नूपुर और; नोन् कऴल्–वीरतासूचक पायल; पतिप्पु अरु–न मुरझानेवाले; तामरै पातम् पऱ्ऱ–कमलचरणों को घेरते हैं। १३०२

नूपुर और पायलो का शृंगार देखिये। "अब फिर से दूर-दूर तक फैलकर लोकों को नापना कहाँ?" यह कहते हुए नूपुर उनके पैरों को अलग-अलग रोक रहे हों ऐसा वे उनके पैरों को लपेटे हुए थे। पायलों की भी वही बात थी। वे चरण-कमल कभी मुरझानेवाले नही थे। (नूपुर और पायल को अलग-अलग आभरण भी माना जा सकता है या चिलम्पुम् का अर्थ "झनझनानेवाले" लेकर "झनझनानेवाली पायल" भी कहा जा सकता है।)। १३०२

इन्नन पॊलिदर विमैय वर्क्कॆलाम्
तन्नये यॊप्पदोर् कोलन् दाङ्गिनान्
पन्नह मणिविळक् कळलुम् बायलुळ्
अन्नवर् तवत्तिना लनन्द नीङ्गिनान् 1303

इमैयवर्क्कु ॲलाम्–सभी देवों के लिए; अन्नवर् तवत्तिनाऴ्–उनकी तपस्या के फलस्वरूप; मणि विळक्कु अऴलुम्–रत्न-दीपों की ज्योति देनेवाले; पन्नकम् पायलुळ्–पन्नगशय्या में; अनन्तल् नीङ्कितान्–निद्रा जिन्होंने त्याग दी, वे; इन्ननम् पॊलितर–इस तरह शोभायमान रहे; तन्नैये ऑप्पतु–अपने समान आप ही होनेवाले; ओर् कोलम् ताङ्किनान्–एक अनुपम रूप (बनाव) धर लिया। १३०३

श्रीराम श्रीविष्णु है। वे उस पन्नग को, जिसके रत्न दीपक-सा प्रकाश दे रहे थे, अपनी शय्या बनाकर निद्रा करते है। वे, वह शय्या छोड़कर देवों के हितार्थ, और उनकी तपस्या के फलस्वरूप अयोध्या में आकर अवतरित हुए थे। वे अब इस नये श्रृंगार में स्वोपम एक रूप में शोभे। १३०३

मुप्परम् बॊरुळुक्कु मुदलै मूलत्तै, इप्परन् दुडैत्तव रॆय्दु मिन्बत्तै
अप्पनै यप्पिनु ळमुदैत् तन्नये, यॊप्पनै यॊप्पनै युरैक्क वॊण्णुमो 1304

मुप्परम् पॊरुळुक्कु–आदि त्रिमूर्ति के; मुतलै–आदि के; मूलत्तै–सृष्टि के आधार के; इ परम् तुटैत्तवर्–यह भवभार जिन्होंने दूर कर लिया है उन ज्ञानियों के; ॲय्तुम्–प्राप्य; इन्पत्तै–सुख रूप के; अप्पनै–जगत्पिता के; अप्पित्तुळ् अमुतै–पय (क्षीरसागर) से उत्पन्न सुधा समान; तन्नैये ऑप्पनै–अपनी समता आप

ही करनेवाले श्रीराम के; ऑप्पनै–अलंकार की महिमा को; उरैक्क ऑण्णुमो–वर्णन कर सकते है क्या । १३०४

उनके अलंकार का कैसे वर्णन किया जायगा ? वे तीनों आदि देवों, ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र के भी आदि भगवान, जगत के मूल, भवभार-विमुक्त ज्ञानी के प्राप्य सुखस्वरूप, जगतपिता, क्षीरसागर से उत्पन्न अमृत से तुल्य, अपनी उपमा आप ही करनेवाले भगवान है । उन्होंने जो शृंगार कर लिया वह कैसे हम जैसों से वर्णित हो सकता है ?.। १३०४

पल्पदि नायिरम् पशुवुम् पैम्बॉनुम्
ऍल्लयि निलत्तॊडु मणिहळ् यावयुम्
नल्लवर्क् कुदविना नविलु नान्मरैच्
चॅल्वर्हळ् वाळ्त्तुरत् तेर्वन् देरिनान् 1305

पल् पतिनायिरम्–अनेक दस सहस्र; पचुवुम्–गायों को; पैम् पॉनुम्–उत्तम स्वर्ण को; ऍल्लै इल् निलत्तॊटु–अमाप भूमि के साथ; मणिकळ् यावैयुम्–नवरत्नों को; नल्लवर्क्कु–योग्य अच्छे व्यक्तियो को; उतवितान्–दान में देकर; नविलुम्–प्रकीर्तित; नाल् मरै–चारों वेदों के; चॅल्वर्कळ्–धनी ब्राह्मणों के; वाळ्त्तुर–वेदमन्त्रों के साथ मंगलाशासन प्राप्तकर; वन्तु–आकर; तेर् एरिनान्–रथ पर चढ़े । १३०५

अलंकृत होकर वे रथ पर आरूढ़ हुए । रथारोहण के पहले उन्होंने अनेक दस सहस्र गायों, स्वर्ण, नवरत्न और भूमि का योग्य अच्छे व्यक्तियों को दान दिया । प्रकीर्तित चारों वेदों के धनी ब्राह्मणों का आशीर्वाद लेकर वे आकर रथ पर सवार हुए । १३०५

पॉऱ्ऱिर ळच्चदु वॆळ्ळिच् चिल्लिपुक्, कुऱ्ऱदु वयिरत्ति नुऱ्ऱ तट्टदु
शुऱ्ऱुरु नवमणि शुडरुन् दोऱ्ऱत्त, दोऱ्ऱया ळिक्कदिर्त् तेरॊ डॊत्तदे 1306

पॉन् तिरळ् अच्चतु–स्वर्णनिर्मित और स्थूल धुरवाला; वॆळ्ळि चिल्लि–चाँदी के चक्र; पुक्कु उऱ्ऱतु–सहित जो था; वयिर्त्तिन् उऱ्ऱ–हीरों से निर्मित; तट्टतु–पीठ का; चुऱ्ऱु उरुम्–चारों ओर जड़ित; नममणि चुटरुम्–नवरत्नों की कांति से ज्योतित; तोऱ्ऱततु–रूपवाला; ऑऱ्ऱै आळि–एक चक्र के; कतिर्–सूर्य के; तेरॊटु–रथ से; ऑत्ततु–तुल्य था । १३०६

उस रथ का धुर स्वर्ण का बना था और सुदृढ़ और स्थूल था । चक्र चाँदी के थे । पीठ पर हीरे जड़े थे । चारों ओर नवरत्न खचित हुए थे । वह सूर्य के एकचक्र-रथ के समान था । १३०६

नूल्वरुन् दहयन नुनिक्कु नोन्मय, शाल्पॅरुञ् जॆव्विय तरुम मादिय
नालयु मनयन पुरवि नान्गॊरु, पालमै पुणर्न्दन पक्कम् बूण्डवे 1307

नूल् वरुम् तकैयत–अश्वशास्त्र में उक्त प्रकार के लक्षणोंवाले; नुतिक्कुम् नोन्मैय–सारथी का इंगित समझनेवाले; चाल् पॅरु चॅव्विय–पूर्ण सुन्दर; तरुमम् आतिय नालैयुम् अनैय–धर्म आदि चारों पुरुषार्थों के समान रहनेवाले; नान्कु ऑरु पालमै पुणर्न्तन–चारों एकसम रहनेवाले; पुरवि–अश्व; पक्कम् पूण्ट–उस रथ में जुते हुए थे। १३०७

उसके अश्व कैसे थे ? वे अश्वशास्त्रों में कथित लक्षणों से युक्त थे। सारथी का इगित जानने की शक्ति रखते थे। देखने में वड़े ही सुडौल और सुघड़ थे। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के चार पुरुषार्थों के समान लगते थे। चारों एक ही सम दर्शनीय, शक्ति और स्वभाव के थे। ऐसे अश्व उस रथ के साथ जुते हुए थे। १३०७

अन्नैयदोर् तेरिनि लरुण निन्ऱॅनप्
पनिवरु मलर्क्कणप् परदन् कोल् कॉळक्
कुनिशिलैत् तम्विय रिरुव रुङ्गुळैन्
दिनियपॉऱ् कवरिहा लियक्क वेहिनान् 1308

अन्नैयतु ओर् तेरिनिल्–उस तरह के एक रथ पर; अरुणन् निन्ऱु ॲॅन–अरुण खड़ा हो, ऐसा; पनि वरु मलर् कण्–(आनन्द के) अश्रु सहित विकसित आँखों वाले; अ परतन्–उन भरत ने; कोल् कॉळ–वेत्र लिये (सारथ्य किया); कुनि चिलै–झुके धनुष लिये हुए; तम्पियर् इरुवरुम्–दोनों (लक्ष्मण और शत्रुघ्न) भाइयों ने; कुळैन्तु–विह्वल होकर; इनिय पॊन् कवरि–सुखद स्वर्ण-चामर लेकर; काल् इयक्क–हवा की, ऐसे; एकिनान्–(श्रीराम मनोरम रीति से) गये। १३०८

ऐसे रथ पर भरत जी, सूर्य के रथ मे अरुण के समान, हाथ में वेत्र लेकर सारथी बने थे। उनकी आँखें अश्रु के साथ आनन्द से उत्फुल्ल थीं। अन्य दोनों भाई, लक्ष्मण और शत्रुघ्न, एक हाथ में झुके हुए धनुष को लिए हुए, दूसरे हाथ से स्वर्णदण्ड वाले चामर से हवा कर रहे थे। १३०८

अमैवरु मेनिया नऴहि नायदो, कमैयुरु मनत्तिनाऱ् करुद वन्ददो
शमैवुऱ वरिन्दिलन् दक्क दाहुह, इमैयव रायिना रिङ्गु ळारुमे 1309

अमैवु अरु मेनियान्–अप्राकृत शरीरी श्रीराम के; अऴकिन्–रूपलावण्य से; आयतो–(वह स्थिति) बनी; कमै उरु मनत्तिनाल्–धृतिसहित मन से; करुत–ध्यान करने से; वन्ततो–वह बनी; चमैवु उऱ–निश्चित रूप से; अऱिन्तिलम्–नहीं जाना; तक्कतु आकुक–जो सही हो, वही हो; इङ्कु उळारुम्–यहाँ रहनेवाले भी (भूलोकवासी भी); इमैयवर् आयिनार–देव (पलकहीन) हो गये। १३०९

अप्राकृत शरीरी श्रीराम की अपूर्व सुन्दरता के दर्शन से, या उस सुन्दरता के, क्षान्ति के साथ, ध्यान या चिन्तन में रत रहने से लोग बिना पलके मारे खड़े रह गये। वे देवों के समान हो गये। पर उन दो में सही कारण कौन-सा था ? हम नही जान पाये। जो सही हो वही हो। (देवों की पलकें नही गिरतीं।)। १३०९

वरम्बरु मुलहित्तै वलिन्दु माय्वित्ड्रिल्
तिरम्बयि लरक्करदम् वरुक्कन् देय्विन्नि
निरम्बिय देन्नक्कोडु निरैन्द तेवर्हळ्
अरम्बयर् कुळात्तोडु माडन् मेयिन्नार् 1310

अरम्पैयर् कुळात्तोटु–देवांगनाओं के समूहों के साथ; निरैन्त तेवर्कळ्–भीड़ लगाकर जो आये वे देव; वरम्पु अरुम्–असीम; उलकित्तै वलिन्तु–लोकों को त्रस्त कर; माय्वु इन्ऱि–विना नाश के; तिरम् पयिल्–जो रहते हैं, उन; अरक्कर् तम् वरुक्कम्–राक्षसों के वर्ग का; तेय्वु–नाश; इन्ऱि निरम्पियतु–अब निश्चित हो गया; ॲन्न कॊटु–यह मानकर; आटल् मेयिनार्–आनन्दनृत्य करने लगे। १३१०

देवता लोग सुरस्त्रियों के साथ आकाश में आकर एकत्र हो गये। उनको विश्वास हो गया था कि अब राक्षसों का, जो विशाल लोकों को हानि पहुँचाते हुए सकुशल रह रहे है, उनके वर्गो के साथ नाश निश्चित है। इसलिए वे नाचने लग गये। १३१०

शॊरिन्दन्नर् पूमळै शुण्णन् दूविन्नर्
विरिन्दॊळिर् काशुपॊन् रूशु वीशिन्नर्
परिन्दन्न रळहित्तैप् परुहिन्नार् कॊलाम्
तॆरिन्दिलन् दिरुनहर् महळिर् चॆय्हये 1311

तिरु नकर् मकळिर्–उस श्रीमिथिला नगरी की अंगनाओं ने; पू मळै–पुष्पवर्षा; चॊरिन्तनर्–बरसाई; चुण्णम् तूविनर्–सुगन्धचूर्ण छिड़का; विरिन्तु ऑळिर्–विकसित दीप्ति के; काचु–रत्नों; पॊन्–स्वर्ण; तूचु–और वस्त्रों को; वीचिनर्–बिखेरा; चॆय्कै तॆरिन्तिलम्–कृत्य (का कारण) नहीं समझते (हम); अळकित्तै–श्रीराम की सुन्दरता को; परिन्तनर्–चाव के साथ; परुकिनार् आम् कॊल्–पी लिया शायद। १३११

श्रीरामचन्द्र को देखकर उस श्रीमंत नगर की स्त्रियों ने पुष्प, सुगंध-चूर्ण, कान्तियुत रत्न, स्वर्ण और वस्त्रों को बरसाया। वे क्यों ऐसा करती हैं ? हम प्रेरणा का मूल नहीं जानते। उन्होंने शायद श्रीराम की दिव्य सुन्दरता का आँखों द्वारा पान किया था। १३११

वळ्ळलै नोक्किय महळिर् मेन्नियिन्
एळ्ळरुम् पूणॆला मिरिय निऱ्किन्ऱार्
उळ्ळन्न यावयु मुदविप् पूण्डवुम्
कॊळ्ळयिऱ् कॊळ्हॆन्नक् कॊडुक्किन् ऱारिन्ने 1312

उळ्ळन यावैयुम् उतवि–अपने पास रहे सब को दान में देकर; पूण्टवुम्–जो पहने थे उन आभरणों को भी; कॊळ्ळैयिन् कॊळ्क–लुटा लें; ॲन्न–ऐसा कहकर; कॊटुक्किन्ऱारिन्–देनेवालों के समान; वळ्ळलै नोक्किय मकळिर्–श्रीराम की दर्शक स्त्रियाँ; मेन्नियिन्–अपने शरीर के; ॲळ्ळ अरु पूण् ॲल्लाम्–अनिंद्य आभरण,

सव को; इरिय–खिसककर गिरने देते हुए; निऱ्‌किऩ्ऱार्–(अचल) खड़ी रहती हैं। १३१२

उन स्त्रियों के पास (शरीर के वाहर) जितने थे उन सवको दे दिया। अव वे मानो अपने आभरणों को लुटा लेने दे रही हों ऐसा लगती है क्योंकि प्रेमातुरता से शरीर क्षीण हो गये और आभरण स्वतः सरक गये। अव वे उन उदार दानियों के समान थी जो वाह्य वस्तुओं को दान कर देने के वाद अपने पहने हुए आभरणों को भी "लूट लो" कहकर लुटा रही हों। १३१२

ॲञ्जलि लुलहत् तळ्ळ वॅऱिपडै यरश वॅळ्ळम्
कुञ्जरक् कुळात्तिऱ् चुऱ्ऱक् कॊऱ्ऱव ऩिरुन्द कूडम्
वॅञ्जिनत् तऩुव लाऩु मेरुमाल् वरैयिऱ् चेरुम्
शॆञ्जुडर्क् कडवु ळॆऩ्ऩत् तेरिऩ्मेऱ् चॆऩ्ऱु शेर्न्दाऩ् 1313

ॲञ्चलिल्–अक्षय; उलकत्तु उळ्ळ–भूलोक में रहनेवाले; ॲऱि पटै–अस्त्र-शस्त्रधारी; अरच वॅळ्ळम्–राजाओं की भीड़ के; कुञ्चरम् कुळात्तिन्–कुंजर झुण्ड के समान; चुऱ्ऱ–अपने को घेरे रहते; कॊऱ्ऱवऩ् इरुन्त–(जहाँ) चक्रवर्ती (दशरथ) रहे उस; कूटम्–मण्डप को; वॅम् चिनम्–भयंकर क्रोध (कर सकनेवाले); तनु वल्लानुम्–धनुर्द्धर श्रीराम भी; मेरु माल् वरैयिल् चेरुम्–मेरु नाम के वड़े पर्वत पर पहुँचनेवाले; चॆम् चुटर् कटवुळ् ॲन्न–लाल किरणोंवाले (सूर्य) देव के समान; तेरिऩ् मेल् चॆऩ्ऱु–रथ पर जाकर; चेर्न्ताऩ्–पहुँचे। १३१३

श्रीराम चलते हुए महामेरु पर जानेवाले सूर्य के समान उस विवाह-मंडप में पहुँच गये, जिसमें राजा दशरथ विराजमान थे और उनको घेरकर गजदलों के समान शस्त्रधारी राजा लोग आसीन थे। वे राजा अत्यन्त विशाल भूमि के विभिन्न राज्यों के शासक थे। श्रीराम शत्रुओं पर भयंकर क्रोध कर सकते थे और वे धनुर्विद्या समर्थ थे। यानी वे पराक्रमी और परंतप थे। १३१३

इरदमाण् डिऴिन्द पिऩ्ऩ रिरुमरुङ् गिरण्डु कैयुम्
वरदऩु मिळैय कोवुम् परिन्दऩ रेन्दप् पैन्दार्
वरदऩु मॅय्दि मैतीर् मादवर्त् तॊऴुदु नीदि
विरदमॅय्त् तादै पादम् वणङ्गिमा डिरुन्द वेलै 1314

पैन्तार् वरतनुम्–नवीन पुष्पमालाधारी वरद (श्रीराम) भी; आण्टु–वहाँ; इरतम् इऴिन्त पिन्नर्–रथ से उतरने के वाद; इरु मरुङ्कु–दोनों पार्श्व में; इरण्टु कैयुम्–दोनों हाथों को; परततुम् इळैय कोवुम्–भरत और लघुराज लक्ष्मण के; परिन्तनर् एन्त–स्नेह के साथ सहारा देते; ॲय्ति–अन्दर जाकर; मै तीर्–निर्मल; मातवर् तॊऴुतु–महर्षियों (वसिष्ठ, कौशिक, शतानन्द आदि) का नमस्कार करके; नीति विरतम्–नीतिपरायण; मॅय्तातै–सत्यसंध पिता के; पातम् वणङ्कि–चरणों पर नत होकर; माटु इरुन्त वेलै–पास विराजे, तव। १३१४

नूतन पुष्पों की बनी माला के धारक वरद प्रभु श्रीराम मण्डप के सामने रथ से उतरे। दोनो भाई, भरत और लघुराज लक्ष्मण, पार्श्वों में हाथों का सहारा देते आये। श्रीराम ने मंडप के अन्दर आकर, अकलंक महर्षि वसिष्ठ, कौशिक, और शतानन्द को नमस्कार किया। पश्चात नीतिव्रती, सत्यसंध अपने पिता दशरथजी के चरणों की वन्दना करके, श्रीराम उनके पास विराजे। १३१४

शिलैयुडैक् कयल्वाट् टिङ्ग ळेन्दियोर् शॆम्बॊऱ् कॊम्बर्
मुलैयिडै मुहिऴ्प्पत् तेरिऩ् मीमिशै मुळैत्त दऩ्ऩाळ्
अलैहडऱ् पिऱन्दु पिऩ्ऩै यवनियिऱ् ऱोऩ्ऱि मीळ
मलैयिडै युदिक्किऩ् ऱाळ्पोऩ् मण्डब मदनिल् वन्दाळ् 1315

ओर् चॆम् पॊऩ् कॊम्पर्–एक लाल, स्वर्णवर्ण पुष्पलता; चिलै उटै(य) कयल्–दो धनुओं को अपने ऊपर लेकर, दो कयल मछलियाँ; वाळ् तिङ्कळ्–उज्ज्वल पूर्ण चन्द्र को; एन्ति–उठाते हुए; मुलै इटै मुकिऴ्प्प–चमेली की कलियों को मध्य में पैदा कर लेकर; तेरिऩ् मी मिचै–रथ पर; मुळैत्ततु–उत्पन्न हो आई; अऩ्ऩाळ्–ऐसा रूप वाली देवी; अलै कटल् पिऱन्तु–तरंगसहित क्षीरसागर में जन्म लेकर; पिऩ्ऩै अवनियिल् तोऩ्ऱि–बाद धरती पर अवतार लेकर; मीळ–फिर से; मलै इटै–पर्वतमध्य; उतिक्किऩ्ऱाळ्–प्रकट होती हों; पोल–जैसे; मण्टपम् अततिल् वन्ताळ्–विवाह-मण्डप में आईं। १३१५

तब सीताजी भी आई। कवि की कल्पना देखिए। एक पुष्पलता एक उज्ज्वल चन्द्र को, जिसमें दो कयल मछलियाँ और उन पर दो धनुष थे, उठाते हुए रथ पर बैठे आती हो, और उसमें चमेली की कलियाँ लगी हों —ऐसा वे आई। और भी पहले जो सागरोद्भवा थी वह अवनिजा हुई। अब वह फिर से अद्रिजा बन आयी हो, ऐसे आई। १३१५

नऩ्ऱिवा नवरॆला मिरुन्द नम्बियैत्
तुऩ्ऱिरुङ् गरुङ्गड ऱुवैप्पत् तोऩ्ऱिय
मऩ्ऱलङ् गोदयाण् मालै शूट्टिय
अऩ्ऱिनु मिऩ्ऱुडैत् तळॆऩ्ऩ् ऱाररो 1316

नऩ्ऱि वानवर् ऍल्लाम्–कृतज्ञ देवगण सब; इरुन्त नम्पियै–वहाँ विराज रहे नायक श्रीराम को; तुऩ्ऱु इरु करु कटल्–समृद्ध बड़े क्षीरसागर को; तुवैप्प–मथने से; तोऩ्ऱिय–वहाँ उदित; मऩ्ऱल् अम् कोतैयाळ्–सुगन्धित केश वाली श्रीलक्ष्मीदेवी ने; मालै चूट्टिय अऩ्ऱितुम्–जिस दिन (विवाह की) वरमाला पहनाई उस दिन से; इऩ्ऱु–बढ़कर आज; अऴकु उटैत्तु–अधिक सुन्दरता से युक्त है; ऍऩ्ऱार्–बोले। १३१६

कृतज्ञतापूर्ण देवों ने वहाँ विराजमान नायक को देखकर सोचा कि आज का दिन उस दिन से, जिस दिन विशाल क्षीरसागर के मथने से

उत्पन्न, सुवासित केशिनी श्रीलक्ष्मी के गले में उन्होंने विवाह-माला पहनायी थी, आज का दिन अधिक मनोरम है। १३१६

ऑलिहड लुलहिनि लुम्बर् नाहरिल्
पॉलिवदु मर्ऱिवळ् पॉर्पॆन् ऱालिवळ्
मलिदरु मणम्बडु तिरुवै वायिन्नाल्
मॅलिदरु मुणर्विने ऍन्न्वि ळम्बुहेन् 1317

ऑलि कटल्–गर्जनशील सागर की; उलकितिल्–इस भूमि में; उम्पर्–देवलोक में; नाकरिल्–और नाग (पाताल) लोक में; पॉलिवतु इवळ् पॉर्पु–विशिष्ट शोभा-शालिनी है इनकी सुन्दरता; ऍन्ऩाल्–तो; मणम् पटु–विवाह के समय में प्रफुल्लित; मलि तरु तिरुवै–अत्यधिक रहनेवाली सौंदर्यश्री को; मॅलि तरुम् उणर्वितेन्–अल्पबुद्धि मैं; वायिनाल् ऍन् विळम्पुकेन्–अपने मुख से क्योंकर वर्णित करूँ। १३१७

श्री सीताजी गर्जनशील सागर वलयित इस भूलोक में ही क्या, पाताललोक और देवलोक मे भी उनकी ही सुन्दरता (की महिमा) है। और आज तो उनका विवाह-दिन है। कन्याएँ विवाह के अवसर पर कई गुना सौन्दर्यवती हो जाती हैं। सीताजी का सौन्दर्य वहुत वढ़ गया। ऐसी स्थिति में अल्पबुद्धि मैं अपने मुख से उनकी सुन्दरता का कैसे वर्णन करूँगा ? । १३१७

इन्दिरन् शशियॊडु मॆय्दि ऩाऩिळम्, चन्दिर मौलितन् ऱैय लाळॊडुम्
वन्दनन् मलरयन् वाक्कि ऩाळुडन्, अन्दरम् पुहुन्दन ऩऴ्हु काणवे 1318

अऴ्कु काण–(उत्सव-वैभव) ठाट देखने के लिए; अन्तरम्–आकाश में; इन्तिरन् चचियॊटुम् ऍय्तिनान्–इन्द्र शची के साथ पधारे; इळम् चन्तिर मौलि–वालचन्द्रमौलि (शिवजी); तन् तैयलाळॊटुम्–अपनी पत्नी (देवी पार्वती) के साथ; वन्तनन्–पधारे; मलर् अयन्–कमलज अज; वाक्किताळुटन्–वाग्देवी के साथ; पुकुन्तनन्–आ पहुँचे। १३१८

इस विवाहोत्सव की छटा, वैभव और सौन्दर्य देखने के लिए आकाश में इन्द्र शची के साथ, चन्द्रमौलि (शिवजी) देवी पार्वती के साथ और कमलज वाग्देवी के साथ पधारे। १३१८

नीन्दरुङ् गडलॆन निरैन्द वेदियर्
तोय्न्दनूल् मार्वितर् शुर्ऱत् तॊन्ऩॆऱि
वाय्न्दनल् वॆळ्विक्कु वशिट्टन् मैयऱ
एय्न्दन कलप्पयो डिन्निदि नॆय्दिनान् 1319

नीन्त अरु कटल् ऍन–तरणदुस्तर सागर-सम; निऱैन्त–एकत्रित; वेतियर्–वेदज्ञ; तोय्न्त नूल् मार्पित्तर्–यज्ञोपवीतधारी वक्षवाले; चुर्ऱ–उनके चारों ओर घेरे आए; वचिट्टन्–वसिष्ठ; तॊल् नॆऱि वाय्न्त–प्राचीन परिपाटी के अनुसार;

नल् वेळ्विक्कु–श्रेष्ठ विवाह-यज्ञ के लिए; मै अऱ्–दोषहीन; एय्न्तन–और आवश्यक; कलप्पैयोटु–सामग्रियों के साथ; इन्तिन् अय्तिनान्–प्रसन्नता के साथ पधारे। १३१९

वसिष्ठजी पधारे। उनके साथ, तरणदुर्लभ सागर के समान विस्तृत वेदों के ज्ञाता यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण भी अधिक संख्या में आये। इस वेदोक्त, प्राचीन परिपाटी के अनुसार होनेवाले विवाह-यज्ञ के लिए आवश्यक साधन, उपकरण और सामग्रियाँ भी वसिष्ठजी अपने साथ लाये। १३१९

तण्डिलम् विरित्तनन् तरुप्पै शार्त्तिनन्
मण्डलम् विदिमुऱै वहुत्तु वॆण्मलर्
कॊण्डनल् शॊरिन्दॆरि कुळुम मूट्टिनन्
पण्डुळ मऱैनॆऱि परविच् चॆय्दनन् 1320

तण्टिलम् विरित्तनन्–("स्थण्डिलं स्थापयित्वा") बालू को चौकोर फैलाकर; तरुप्पै चार्त्तिनन्–दर्भ (यथोक्त प्रकार से) रखे; मण्टलम्–(अग्नि स्थापना के) गोल स्थल; विति मुऱै–विधि के अनुसार; वकुत्तु–ठीक करके; वॆळ् मलर् कॊण्टु–श्वेत पुष्प उचित स्थानों पर रखे; अनल् चॊरिन्तु–अग्नि स्थापित कर; ऎरि कुळुम–जले, ऐसा; मूट्टिनन्–प्रज्वलित किया; पण्टु उळ मऱै नॆऱि परवि–प्राचीन परम्परा के अनुसार मन्त्रों का प्रयोग कर; चॆय्तनन्–होमकर्म किया। १३२०

वसिष्ठजी ने स्थंडिल (बालू का चौकोर विस्तार) फैलाकर उसके ऊपर दर्भ रखे। फिर अग्निस्थापना का स्थल नियत किया। उस पर श्वेत पुष्पों को यथास्थान वितरित किया। उसके बाद अग्नि प्रज्वलित की और वह अग्नि जल उठी। तब वसिष्ठजी ने वेदमन्त्र उच्चरित करके होम कार्य किया। १३२०

❀ मन्ऱलिन् वन्दु मणत्तवि शेऱि, वॆन्ऱि नॆडुन्दहै वीरनु मार्वत्
तिन्तुणै यन्नमु मॆय्दि यिरुन्दार्, ऒन्ऱिय बोहमुम् योहमु मॊत्तार् 1321

वॆन्ऱि–विजय; नॆट्टतकै–व श्रेष्ठ गुण; वीरनुम्–(इनसे) युक्त वीर श्रीराम और; आर्वत्तु–(उनको) प्यार करनेवाली; इन् तुणै–प्रिय संगिनी (बनने को जो थीं वे); अन्नमुम्–हंसिनी (सीताजी) भी; मन्ऱलिन् वन्तु–विवाह मण्डप में आकर; मणम् तविचु एऱि–विवाह मंच पर चढ़कर; ऎय्ति इरुन्तार्–पास-पास आसीन हुए; ऒन्ऱिय–युक्त; पोकमुम्–भोग (मोक्ष का भोग); योकमुम्–और योग; ऒत्तार्–के समान रहे। १३२१

विजयशील और श्रेष्ठगुणी श्रीराम और उनसे प्यार करनेवाली, उनकी निर्णीत संगिनी सीताजी जो हंसिनी के समान चालवाली थीं, दोनो विवाहमंच पर आकर पास-पास आसीन हुए। तव वे सिद्धिभूत मोक्षभोग और उपायभूत योग के समान लगे। १३२१

❀ कोमहऩ् मुऩ्ऩऩ हऩ्गुळिर् नऩ्ऩीर्, पूमह ळुम्बॊरु ळुम्मॆऩ नीयॆऩ्
मामह ळऩ्ऩॊडु मऩ्ऩुदि यॆऩ्ऩात्, तामरै यऩ्ऩ तडक्कैयि ऩीन्दाऩ् 1322

चऩकऩ्–जनक; कोमकऩ्मुऩ्–चक्रवर्ती तनुज के सामने आकर; पू मकळुम् पॊरुळुम् ऎऩ–कमला और परवस्तु (परब्रह्म) श्रीमन्नारायण जैसे; नी ऎऩ् मा मकळ् तऩ्ऩॊटु–आप मेरी उत्तम कन्या के साथ; मऩ्ऩुति–मिलकर रहिए; ऎऩ्ऩा–यह कहकर; तामरै अऩ्ऩ–कमल सदृश; तट कैयिऩ्–विशाल हाथ में; कुळिर् नल् नीर्–शीतल पवित्र जल को; ईन्ताऩ्–ढाला। १३२२

तब महाराज जनक चक्रवर्तीतनुज के सामने आये। कमला और परब्रह्म श्रीनारायण के समान आप मेरी उत्तम कन्या के साथ मिले रहिये। यह कहकर उन्होंने श्रीराम के कमलहस्त में जल ढाला। १३२२

❀ अन्दण राशि यरुङ्गल मिऩ्ऩार्, तन्दप लाण्डिशै तार्मुडि मऩ्ऩर्
वन्दनै मादवर् वाऴ्त्तॊलि पोल, मुन्दिऩ शङ्ग मुऴङ्गिन मादो 1323

अन्तणर् आचि–ब्राह्मणों के आशीर्वचन; अरु कलम् मिऩ्ऩार्–अपूर्व आभरण-धारिणी (मंगलसूत्रधारिणी) सधवा स्त्रियों के; तन्त–गाये हुए; पल्लाण्टु इचै–"अनेक वर्ष मंगल हो" वाले गीत; तार् मुटि मऩ्ऩर्–माला से अलंकृत किरीटधारी राजाओं की; वन्तनै–वन्दना; मातवर् वाऴ्त्तु ऒलि–बड़े तपस्वियों की बधाई का नाद; पोल–इनके समान; मुन्तिऩ चङ्कम्–मंगल सूचना के लिए श्रेष्ठ मान्य शंख; मुऴङ्किऩ–निनादित हो उठे; (मातो)। १३२३

उस अवसर पर ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिया। मंगलसूत्रधारिणी सधवाएँ "जीव" गीत गाने लगीं। माला से युक्त किरीटधारी राजा लोगों ने वन्दना के वचन कहे। महान तपस्वियों, जैसे वसिष्ठ, कौशिक, शतानन्द आदि ने बधाई दी उन सबका स्वर भर उठा। उसी सम्मिलित स्वर के समान मंगलवाद्य शंख भी बजाये गये और वह नाद भी भर उठा। १३२३

❀ वानवर् पूमऴै मऩ्ऩवर् पॊऩ्पू, एनयर् तूवु मिलङ्गॊळि मुत्तम्
ताऩहु नाण्मल रॆऩ्ऱिवै तम्माल्, मीनहु वाऩिऩ् विळङ्गिय दिप्पार् 1324

वानवर् पू मऴै–सुरों की पुष्पवर्षा; मऩ्ऩवर् पॊऩ् पू–राजाओं की स्वर्णवर्षा; एनैयर् तूवुम्–अन्यों के द्वारा बरसाये गये; इलङ्कु ऒळि मुत्तम्–भासमान मोती; ताऩ् नकु नाळ् मलर्–स्वविकसित नवीन फूल; ऎऩ्ऱ इवै तम्माल्–ऐसे इनसे; इ पार्–यह भूतल; मीऩ् नकु–नक्षत्रखचित; वाऩिऩ् विळङ्कियतु–आकाश-सम शोभित था। १३२४

देवों के बरसाये कल्पलता के फूल, राजाओं के बरसाये स्वर्ण के फूल, अन्यों के बरसाये मोती, स्वयं विकसित फूल —इन सबसे भरकर भूलोक नक्षत्रसंकुल आकाश के समान शोभायमान हुआ। १३२४

वॆय्य कनऱ्ऱलै वीरनु मन्नाळ्, मैयऱु मन्दिर मुऱ्ऱुम् वळङ्गा
नॆय्यमै यावुदि यावयु नेर्न्दात्, तैय ऱ्ळिर्क्कै तडक्कै पिडित्तात् 1325

अन् नाळ्–उस दिन (सवेरे); वीरऩुम्–वीर राघव ने; वॆय्य कनल् तलै–कांक्षनीय अग्नि-मुख में; नॆय् अमै आवुति यावैयुम्–घी के साथ होनेवाले सभी होमकार्य को; मै अऱु–दोषरिक्त; मन्तिरम् मुऱ्ऱुम्–मन्त्र सब; वळङ्का–कहकर; नेर्न्तात्–करके; तैयल् तळिर् कै–कन्या का पल्लवहस्त; तट कै पिटित्तात्–अपने विशाल हाथ से ग्रहण किया । १३२५

उस दिन सवेरे वीर राघव ने कांक्षणीय अग्निमुख में घी के साथ होनेवाले सभी होम किये; सम्पूर्ण मन्त्र श्रद्धा के साथ पढ़े और सीताजी के पल्लव-सम पाणी को अपने विशाल पाणी से ग्रहण किया । १३२५

इडम्बडु तोळव ऩोडियै वेळ्वि, तॉडङ्गिय वॆङ्गनल् शूळ्वरु पोदिऩ्
मडम्बडु शिन्दयण् माऱु पिऱप्पिऩ्, उडम्बुयि रैत्तॊडर् हिन्ऱदै यॊत्ताळ् 1326

मटम् पटु चिन्तैयळ्–स्त्रियोचित संकोचशील मनवाली; इयै वेळ्वि तॊटङ्कि–युक्त विवाह कार्य प्रारम्भ कर; इटम् पटु तोळवनोटु–विशाल कन्धे वाले श्रीराम के साथ; अ वॆम् कनल् चूळ् वरु पोतिऩ्–कमनीय होमाग्नि की परिक्रमा करते समय; माऱु पिऱप्पिऩ् उटम्पु–दूसरे जन्म का शरीर; उयिरै तॊटर्किऩ्ऱतै–प्राणों (आत्मा) को अनुगमन करता; ऒत्ताळ्–जैसा लगी । १३२६

स्त्रीसहज संकोचशील स्वभाव वाली सीताजी ने भी अपना कर्तव्य रस्म अदा किया । विशाल कंधे वाले श्रीराम के साथ जब वे अग्नि की परिक्रमा करने लगी तब ऐसा लगा मानो बाद के जन्म का शरीर पिछले जन्म के जीव (आत्मा) का अनुगमन करता हो । [यही धारणा सर्वसम्मत है कि जीव (आत्मा) शरीर से आकर लग जाता है । इधर विपरीत बात कही गयी है । तो भी सोचने पर यह भी ठीक लगेगा क्योंकि भगवान को शरीरी, अन्तर्यामी, और जीव को शरीर माना जाता है । यही वैष्णवसिद्धान्त है ।] । १३२६

वलङ्गॊडु तीयै वणङ्गिऩर् वन्दु
पॊलम्बॊरि शॆय्वन शॆय्पॊरुण् मुऱ्ऱि
इलङ्गॊळि यम्मि मिदित्तॆदिर् निऩ्ऱ
कलङ्गलिल् कऱ्पि नरुन्ददि कण्डार् 1327

तीयै वलम् कॊटु–दोनों ने अग्नि की परिक्रमा करके; वन्तु–आकर; वणङ्किऩर्–नमस्कार किया; पॊलम् पॊरि चॆय्वऩ–कमनीय लाजा-होम; चॆय् पॊरुळ्–और कर्तव्य सब; मुऱ्ऱि–पूर्ण करके; इलङ्कु ऒळि–कांति सहित विद्यमान; अम्मि मितित्तु–सिल पर चरण रखने का रस्म (वधू का) अदा किया; ऎतिर् निऩ्ऱ–सामने स्थित; कलङ्कल् इल् कऱ्पिऩ्–अचल पतिव्रता; अरुन्तति कण्टार्–अरुन्धती का दर्शन किया । १३२७

दोनो ने होमाग्नि की परिक्रमा की। फिर लाजाहोम और अन्य कर्तव्य क्रियाएँ कीं। बाद वधु द्वारा सिल पर चरण रखने का कार्य हुआ और सामने दिखाई देनेवाली अरुन्धती को देखने का रस्म भी अदा किया गया। (ये दोनो कार्य दक्षिण मे विवाह के मुख्य अंग माने जाते हैं। इनका तात्पर्य है कि पतिव्रता धर्म का पालन न करने से पत्थर —जैसे अहल्या वनी थी— बनना पड़ेगा और पतिव्रता धर्मपालन के लिए अरुन्धती का उदाहरण सामने रखा जाय। अरुन्धती श्री वसिष्ठजी की पत्नी है। दोनो नक्षत्र के रूप मे विद्यमान है। दिन में अरुन्धती देखना कठिन है। तो भी औपचारिक रीति से उस दिशा मे दृष्टि करके तृप्ति कर ली जाती है। सीताजी के विषय में तो देवी अरुन्धती सामने ही थी।)। १३२७

❀ मऱ्ऱुळ शॅय्वन शॅय्दु मह्ऴ्न्दार्
मुऱ्ऱिय मादवर् ताण्मुऱै शूडिक्
कॊऱ्ऱ वनैक्कळल् कुम्बिड लोडुम्
पॊऱ्ऱॊडिक् कैक्कॊडु पॊन्मनै पुक्कान् 1328

चॅय्वन मऱ्ऱु उळ–करणीय अन्य सव; चॅय्तु–सुसम्पन्न करके; मकिऴ्न्तार्–हर्षित हुए वे; मुऱ्ऱिय मातवर् ताळ्–पूरा किये हुए तप वाले (वसिष्ठ आदि) महर्षियों के चरणों पर; मुऱै चूटि–यथोचित क्रम से सिर नवाकर (दण्डवत करके); कॊऱ्ऱवनै–चक्रवर्ती को भी; कळल् कुम्पिटलोटुम्–दण्डवत करने के वाद; पॊन् तॊटि कै कॊटु–स्वर्णकंकणधारिणी सीताजी का हाथ पकड़े हुए; पॊन् मनै पुक्कान्–कमनीय अपने महल में प्रविष्ट हुए। १३२८

अन्य कर्तव्य कार्य भी पूरा करके मुदितमन श्रीराम ने वसिष्ठ आदि महर्षियों को दण्डवत की; फिर चक्रवर्ती के चरणों पर सिर धरकर नमस्कार किया। फिर श्रीराम स्वर्णकंकणधारिणी देवी सीता के साथ अपने भवन में पधारे। १३२८

आर्त्तन पेरिह ळार्त्तन शङ्गम्
आर्त्तन नान्मऱै यार्त्तनर् वानोर्
आर्त्तन पल्हलै यार्त्तन पल्लाण्
डार्त्तन वण्डिन मार्त्तन वण्डम् 1329

पेरिकळ् आर्त्तन–भेरियाँ वज उठीं; चङ्कम् आर्त्तन–शंखध्वनि हुई; नाल् मऱै आर्त्तन–चारों वेद उद्घोषित किये गये; वानोर् आर्त्तनर्–आकाशलोकवासियों ने आनन्दरव मचाया; पल् कलै–विविध कलाएँ; आर्त्तन–मुखरित हुई; पल्लाण्टु आर्त्तन–'जयजीव' के गीत सुनाई दिये; वण्टु इनम् आर्त्तन–भ्रमर कुल ने गुंजार किया; अण्टम् आर्त्तन–सारे अण्डगोल आनन्दनाद कर उठे। १३२९

विवाह के सारे रस्म पूरा होने के वाद भेरियाँ नर्दन कर उठीं। शंख वजाये गये। चारों वेदों का घोष किया गया। सुरों ने आनन्दनाद

किया। विविध कलाएँ (संगीत आदि) या शास्त्र मुदित हुए। 'जयजीव' के गीत सुनाई दिये। भ्रमरकुल ने गुंजार किया। सारे अण्डों ने संतोष का हल्ला मचाया। सब जगह आनन्दनर्दन भरा रहा। १३२९

केहयन् मामहळ् केळ्हिळर् पादम्, तायिनु मन्नबॉडु ताळ्न्दु वणङ्गि
आयद नन्नै योडॆट्रुणै शूडित्, तूय शुमित्तिरै ताडॊळ् लोडुम् 1330

केकयन् मा मकळ्–केकयराज की मान्य पुत्री के; केळ् किळर् पातम्–आदरणीय चरणों पर; तायिनुम् अन्पोटु–माता के प्रति होनेवाले प्रेम से अधिक प्रेम के साथ; ताळ्न्तु वणङ्कि–भूमि पर पड़कर नमस्कार करके; आय–वात्सल्य भरी; तन् अन्नै–अपनी माता के; तुणै अटि चूटि–चरणद्वय सिर पर लगा लेकर (दण्डवत करके); तूय–पवित्रमना; चुमित्तिरै ताळ् तॊळलोटुम्–सुमित्रादेवी के पैर स्पर्श करने पर। १३३०

श्रीराम ने केकयराजकुमारी (कैकेयी) के उज्ज्वल चरणों पर, जननी माता (कौसिल्या) से (जितना, उतने से भी) अधिक मातृ-प्रेम के साथ नमस्कार किया। फिर क्रम से उन्होंने अपनी माता के पैर सिर पर धारण किये। और पवित्र मन वाली सुमित्रा देवी के पैरों पर नमस्कार किया। १३३०

अन्नमु मन्नव रम्बॊन् मलर्त्ताळ्
शॆन्नि पुनैन्दनळ् शिन्दै महिळ्न्दार्
कन्नि यरुन्ददि कारिहै काण
नन्मह नुक्किव णल्लणि यॆन्ऱार् 1331

अन्नमुम्–हंसिनी (सीता) ने भी; अन्नवर्–उन (तीनों) के; अम् पॊन् मलर् ताळ्–सुन्दर श्रेष्ठ कमल चरणों को; चॆन्नि पुनैन्तनळ्–सिर पर लगा लिया; चिन्तै मकिळ्न्तार्–प्रसन्नचित्त होकर (उन्होंने); कन्नि अरुन्तति–अचल पातिव्रत्य वाली अरुन्धती (सम) इसकी; कारिकै काण–मनोहारिणी शोभा देखने से; इवळ्–ये; नल् मकन्तुक्कु–सर्वगुणपूर्ण हमारे पुत्र को; नल् अणि–उत्तम आभूषण होगी; ऎन्ऱार्–कहा। १३३१

तब हंसिनी (सदृश) सीता ने भी उनके सुन्दर उज्ज्वल चरणों को अपने सिर पर धरकर प्रणाम किया। तब माताओं ने सन्तोष के साथ उनकी प्रशंसा की कि अचल पातिव्रत्य की देवी अरुन्धती तुल्य इसको देखने पर (यह विश्वास हो जाता है कि) यह हमारे सुपुत्र के लिए श्रेष्ठ भूषण होगी। १३३१

शङ्गव ळैक्कुयि लैत्तऴि निन्ऱार्, अङ्गण नुक्कुरि यारुळ रावार्
पॆण्ग ळिनिप्पिऱ राऱुळ रॆन्ऱार्, कण्गळ् कळिप्प मनङ्गळ् कळिप्पार् 1332

चङ्कम् वळै कुयिलै–शंखकंकणहस्ता कोकिलवाणी का; तऴि निन्ऱार्–(अलग-अलग) गले लगाकर; अम् कणतुक्कु–सुन्दर और कृपाल (श्रीराम) के; उरियार्

उळर्–योग्य; आवार् पॆण्कळ्–रहनेवाली कन्यायें; इनि पिऱर् आर् उळर्–इसके सिवा कौन हो सकती हैं; ॲऩ्ऱार्–कहकर; कण्कळ् कळिप्प–आँखों से आनन्द प्रकट करते हुए; मनङ्कळ् कळिप्पार्–मन में भी मुदित हुईं। १३३२

उन तीनो सासों ने बारी-बारी से शंखकंकणधारिणी, कोकिलबयनी, उन सीताजी को गले लगाया। और आँखों में तृप्ति प्रतिफलित करते हुए और मन में प्रसन्नता के साथ उन्होंने उद्गार निकाली कि हमारे सुन्दराक्ष और कृपालु श्रीराम के योग्य वधू इनसे बढ़कर कौन है ? । १३३२

ऍण्णिल कोडिपॊ नॆल्लयिल् कोडि, वण्ण वरुङ्गल मङ्गयर् वॆळ्ळम्
कण्णह नाडुयर् काशोडु तूशुम्, पॆण्णि नणङ्गनै याळ्पॆऱु हॆऩ्ऱार् 1333

ऍण् इल कोटि पॊऩ्–असंख्य करोड़ अशर्फियों को; ॲल्लै इल् कोटि–अपार करोड़; वण्णम् अरु कलम्–अनेक वर्णों के अपूर्व आभरणों को; मङ्कैयर् वॆळ्ळम्–(दासी-) स्त्रियों की भीड़ को; कण् अकल् नाटु–विस्तृत भूप्रदेश; उयर् काचोटु–श्रेष्ठ रत्नों के साथ; तूचुम्–वस्त्रों को; पॆण्णिऩ् अणङ्कु अऩैयाळ्–स्त्रियो में देवी-सी ये; पॆऱुक ॲऩ्ऱार्–प्राप्त करें (भेंट में); ॲऩ्ऱार्–(सासों ने) कहा। १३३३

(नमस्कार करनेवालों को पुरस्कार देना सामान्य प्रथा है। उसके अनुसार—) सासों ने, "असंख्य करोड़ स्वर्ण की अशर्फ़ियाँ, अपार करोड़, विविध प्रकार के गहने, अनेक (दासी-) स्त्रियों का दल, विस्तृत भू-प्रदेश, बहुमूल्य रत्न, और श्रेष्ठ वस्त्र, तुम्हें प्राप्त हों।" —कहा (और दिला दिये।) । १३३३

नूऱ्कड लऩ्नवर् शॊऱ्कड नोक्कि
माऱ्कडल् पॊङ्गु मनत्तव ळोडुम्
काऱ्कडल् पोऱ्करु णैक्कडल् पण्डॆप्
पाऱ्कड लॊप्पदोर् पळ्ळि यणैन्दाऩ् 1334

करुणै कटल्–करुणासागर (श्रीराम); नूल् कटल् अऩ्ऩवर् चॊल्–शास्त्रों के सागर-सम बड़ों से विहित; कटऩ् नोक्कि–अनुष्ठान के अनुसार कार्य करके; माल् कटल् पॊङ्कुम् मनत्तवळोटुम्–जिनका मन प्रेम से सागर के समान उमंगता था उन सीताजी के साथ; काल् कटल् पोल्–हवा से उद्वेलित समुद्र के समान (आनन्दोमंग के साथ); पण्टै पाल् कटल् ऑप्पतु–प्राचीन क्षीरसागर तुल्य; ओर् पळ्ळि–एक शय्या पर; अणैन्ताऩ्–विराजे। १३३४

करुणा के समुद्र (-स्वरूप) श्रीराम ने, 'दिन में शास्त्रों के समुद्र (स्वरूप) आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट कार्य पूरा करके, रात को, सीताजी के साथ, जिनके मन में प्रेम का सागर उमड़ रहा था, स्वयं पवनोत्तेजित समुद्रसम उत्साह लेकर शय्या पर गये। वह शय्या प्राचीन क्षीरसागर के समान (स्वच्छ और शुभ्र) थी। १३३४

[इधर विवाह-कार्य चार दिन तक करने की प्रथा है। हर दिन दिन में होम आदि होता है। रात में वर और वधू शयनगृह में साथ रहते हैं। इसको समावेशन कहा जाता है। इस पद मे सागर शब्द बार-बार आया है।]

पङ्गुनि युत्तर मान पहऱ्पो
दङ्ग विरुक्किनि लायिर नामच्
चिङ्ग मणत्तॉळिल् शॅय्द तिऱत्ताल्
मङ्गल वङ्गि वशिट्टऩ् वहुत्ताऩ् 1335

वचिट्टऩ्–मुनिवर वसिष्ठ ने; पङ्कुनि उत्तरम् आऩ–(मीन) फाल्गुन मास की उत्तराफाल्गुनी के; पकल् पोतु–दिन में; अङ्कम् इरुक्किलिल्–अंग-उपांग सहित वेदों में उक्त; आयिरम् नामम्–सहस्र नामधारी; चिङ्कम्–केसरी श्रीराम का; मणम् तॉळिल्–विवाह कार्य; चॅय्त तिऱत्ताल्–जैसे किया उसी क्रम से; मङ्कलम् अङ्कि–कल्याणोचित अग्निकार्य; वकुत्ताऩ्–(अन्य दिनों में भी) किया। १३३५

वसिष्ठजी ने फालगुन (मीन) मास के उत्तराफालगुनी नक्षत्र के दिन, अंग-उपांग सहित वेदों में प्रशंसित सहस्रनामधारी केसरी सदृश श्रीराम से जो विवाहोचित होम-कार्य आदि कराया, उसी प्रकार (अन्य तीनो दिनों में) कराके (शेष-होम के साथ) विवाह-संस्कार पूरा किया। १३३५

वळ्ळ ऱऩक्किळै योऱ्ह डमक्कुम्, ऎॅळ्ळलिल् कॉऱ्ऱवऩ् याऩ्पि नळित्त
अळ्ळन् मलर्त्तिरु वऩ्ऩवर् तम्मैक्, कॉळ्ळु मॅऩत्तम रोडु कुऱित्ताऩ् 1336

ऎॅळ्ळल् इल् कॉऱ्ऱवऩ्–अनिन्द्य विजयी जनक ने; वळ्ळल् तऩक्कु–प्रभु श्रीराम के छोटे भाइयों के लिए; याऩ् पिऩ् अळित्त–मेरे और मेरे अनुज द्वारा जनित; अळ्ळल् मलर्–पंक से उत्पन्न (पंकज) की; तिरु अऩ्ऩवर् तम्मै–श्रीलक्ष्मी सदृश दुहिताओं को; कॉळ्ळुम्–स्वीकार कीजिए; ऎॅन–कहकर; तमरोडु–अपने समधी लोगों के साथ; कुऱित्ताऩ्–(विवाह सम्बन्धी) बात चलाई। १३३६

अनिन्द्यविजयी जनक ने दशरथजी आदि समधियों से अपनी दूसरी दुहिता और अपने अनुज की दो दुहिताओं के विवाह की बात चलायी। उन्होंने कहा कि मेरे दूसरी पुत्री है। और मेरे अनुज के दो पुत्रियाँ हैं। वे तीनों पंकजा श्रीलक्ष्मी देवी के समान (शोभापूर्ण) है। उनको प्रभु (श्रीराम) के तीनों अनुजों की वधुओं के रूप में स्वीकार कीजिए। १३३६

कॉय्न्निऱै तारऩ् कुशत्तुव शप्पेर्, नॅय्न्निऱै वेलवऩ् मङ्गयर् नेर्न्दार्
मैन्निऱै कण्णिनर् वानुऱ नीरार्, मॅय्न्निऱै मूवरै मूवरुम् वेट्टार् 1337

कॉय् निऱै तारऩ्–चुने हुए पुष्पों की माला के धारक (जनक) की; कुचत्तुवचऩ् पेर्–कुशध्वज नाम के; नॅय् निऱै वेलवऩ्–घृतलगा भालाधारी की; मङकैयर–दुहिताएँ; नेर्न्तार्–वहुएँ मनोनीत गईं; मै निऱै कण्णिऩर–अंजन लगी आँखों वालियाँ; वाऩ्

उरु नीरार्–देवलोकवास योग्य; मॅय् निरै–और उचित वय वालियाँ; मूवरै–उन तीनो को; मूवरुम्–श्रीराम के तीनो भाइयों ने; वेट्टार्–विवाह लिया। १३३७

चुने हुए पुष्पों की माला से भूषित जनक की पुत्री, उर्मिला, और घी-लगा भालाधारी कुशध्वज नामक जनक के भाई की पुत्रियाँ, माण्डवी और श्रुतकीर्ति वधुएँ मनोनीत हुई। अंजनशोभित आँखों वाली, देवांगना सम गुणवाली और युक्त आयुवाली उन तीनो को (श्रीराम के अनुज) तीनो ने (क्रमशः लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ने) विवाहा। १३३७

वेट्टवर् वेट्टपिन् वेन्दनु मेनाळ्
कूट्टिय शीर्त्ति कॉडुत्तिल नल्लाल्
ईट्टिय मॅय्प्पॉरु ळुळ्ळन वॅल्लाम्
वेट्टवर् वेट्कयिन् मेऱ्पड वीन्दान् 1338

अवर्–उन (वरों) के; वेट्टु–परस्पर चाह करके; वेट्टपिन्–विवाह कर लेने के पश्चात; वेन्तनुम्–चक्रवर्ती ने; मेल् नाळ्–अनेक दिनो से; कूट्टिय–अर्जित; चीर्त्ति–यश को; कॉटुत्तिलन् अल्लाल्–नही दिया, नहीं तो; ईट्टिय–अर्जित; मॅय् पॉरुळ्–सच्चे अर्थ; उळ्ळन ॲल्लाम्–जो उनके पास रहे, उन सबको; वेट्टवर्–माँगनेवालों को; वेट्कैयिन् मेल्पट–याचित परिमाण से अधिक; ईन्तान्–दिया। १३३८

चारों के चाह के साथ विवाह कर लेने के वाद चक्रवर्ती ने यथारीति दान दिया। उन्होने वहुत दिनों से अर्जित अपना यश नहीं दिया, वस। अन्य सभी धन जो अपने पास थे उन्होंने याचकों को उनकी प्रतीक्षा से भी अधिक तृप्त करते हुए लुटा दिया। १३३८

ईन्दळ विल्लदॊ रिन्न नुहर्न्दे, आय्न्दुणर् केळ्वि यरुन्दव रोडुम्
वेन्दॊडु मन्नहर् वैहिनन् मॅळ्ळत्, तेय्न्दन नाळ्शिल शॅय्द दुरैप्पाम् 1339

ईन्तु–वड़ा दान देकर; आय्न्तु उणर् केळ्वि–अन्वेषण के साथ श्रौतज्ञान के रखनेवाले; अरु तवरोटुम्–उत्तम तपस्वियों के साथ; वेन्तॊटुम्–जनक के साथ; अळवु इल्लतु–अमाप; ओर–अद्वितीय; इन्पम् नुकर्न्तु–आनन्दानुभव करते हुए; अ नकर् वैकिनन्–उस नगर में (चक्रवर्ती) रहे; नाळ् चिल मॅळ्ळ तेय्न्तन–कुछ दिन धीरे-धीरे व्यतीत हुए; चॅय्ततु–वाद जो किया; उरैप्पाम्–वह कहेंगे। १३३९

दान देने के वाद चक्रवर्ती शास्त्र के अध्ययन और अनुशीलन से प्राप्त ज्ञान के धनी, उत्तम तपस्वियों और राजा जनक के साथ वार्तालाप का अपार आनन्द उठाते हुए उस नगर में ठहरे। धीरे-धीरे कुछ दिन वीत गये। उसके वाद क्या हुआ वह वृत्तांत हम अव कहेगे। १३३९

22. परशुरामप् पडलम् (परशुराम पटल)

❀ ताऩाहिय तहैमैप्पॉरुळ् शनहऩ्कुयि लुडने
नाऩाविद विरुबोहमु नुहर्हिऩ्ऱवन् नाळ्वाय्
आनामऱै नॅऱिमादव मुऩिकोशिक नरुळिप्
पोऩाऩ्वड दिशैवायुयर् पॉऩ्मालवरै पुक्काऩ् 1340

ताऩ् आकिय–स्वोपम; तकैमै पॉरुळ्–श्रेष्ठ आदि तत्व, परब्रह्म के अवतार श्रीराम; चनकऩ् कुयिलुटने–जनक की पुत्री, कोकिलवाणी, सीताजी के साथ; नाऩावितम्–नानाविध; इरु पोकमुम्–दोनो तरह के भोग; नुकर्किऩ्ऱ अ नाळ् वाय्–भोगते रहे, तब एक दिन; मातव मुनि कोचिकऩ्–महान तपस्वी, मुनिवर कौशिक; आऩा मऱै नॅऱि अरुळि–अक्षय वेदों में प्रतिपादित नीतिमार्ग का उपदेश देकर; पोऩाऩ्–वहाँ से निकलकर; वट तिचै वाय्–उत्तर दिशा में स्थित; उयर्–अत्युन्नत; पॉऩ् माल् वरै–स्वर्णमय हिमगिरि पर; पुक्काऩ्–पहुँचे। १३४०

अपनी उपमा स्वयं आप ही जो रहे (स्वोपम या स्वेच्छा से ग्रहीत अवतार वाले) श्रीराम जनक की दुहिता, कोकिलवाणी श्री सीताजी के साथ (अशन और शयन के) दोनो प्रकार के नानाविध भोग उचित रीति से भोगते रहे। उन दिनों महान तपस्वी कौशिक, श्रीराम को अक्षयवेद-विहित नीतियों का उपदेश देकर वहाँ से चले। वे उत्तर दिशा में स्थित उन्नत स्वर्णिम हिमपर्वत पर पहुँचे। १३४०

अप्पोदिनिऩ् मुडिमऩ्ऩव ऩणिमानहर् शॅलवे
इप्पोदुन मऩिहऩ्दुणै यॅळ्हॅऩ्ऱिऩि दिशैयाक्
कैप्पोदह निहर्कावलर् कुळुवन्दडि कदुव
ऑप्पोदरु तेर्मीदिनि लिऩिदेऱिन नुरवोऩ् 1341

अप्पोतितिल्–तब (एक दिन); उरवोऩ्–पराक्रमी; मुटि मऩ्ऩवऩ्–किरीटधारी चक्रवर्ती; अणि मा नकर् चॅल–कमनीय श्रेष्ठ नगर अयोध्या जाने के लिए; इप्पोतु–अब; नम् अऩिकम्–हमारी सेना; तुणै–और साथ आये सब; ऍळुक–उठें; ऍऩ्ऱु–यह; इऩितु इचैया–मधुर ढंग से कहकर; कै पोतकम् निकर्–सूँडवाले गजों के समान; कावलर् कुळु वन्तु–राजाओं के दल के आकर; अटि कतुव–चरणस्पर्श करते; ऑप्पु ओत–उपमा कहने के लिए; अरु तेर् मीतिनिल्–दुस्साध्य एक श्रेष्ठ रथ पर; इऩितु एऱिऩऩ्–आरोहित हुए। १३४१

तब एक दिन शक्तिमान और किरीटधारी (श्रीमान) चक्रवर्ती दशरथ, मधुर ढंग से यह आज्ञा देकर कि अब हमारे सुन्दर नगर अयोध्या को, हमारी सेना और हमारे संग आये हुए सभी प्रस्थान करें, स्वयं एक अनुपमेय उत्तम रथ पर आरोहित हुए। तब हाथी-सम राजाओं ने आकर उनका चरण स्पर्श कर नमस्कार किया। १३४१

तऩ्मक्कळु मरुमक्कळु ननिदऩ्कऴ़ल् ऱ़ऴुव
मऩ्मक्कळु मयन्मक्कळुम् वयिऩ्मॊय्त्तिड मिदिलैत्
तॊऩ्मक्कड मऩमुक्कुयिर् पिरिवॆऩ्ववॊर् तुयरिऩ्
वऩ्मक्कडल् पुहवुय्प्पदॊर् वऴिपुक्कऩ ऩुरवोऩ् 1342

उरवोऩ्–(तन और मन के) वली चक्रवर्ती; तऩ् मक्कळुम्–अपने पुत्रों के और; मरुमक्कळम्–बहुओं के; ननि तऩ् कऴल्–श्रद्धा के साथ अपने (राजा के) चरणों की; तऴुव–वन्दना करके साथ-साथ आते; मऩ् मक्कळुम्–राजकुमारों और; अयल् मक्कळुम्–अन्य लोगों के; वयिऩ् मॊय्त्तिट–पार्श्व में जुटते आते; मितिलै तॊल् मक्कळ्–मिथिला की प्राचीन प्रजा के; तम् मऩम् उक्कु–अपना मन विदीर्ण होने से; उयिर् पिरिवु ऍऩ्पतु ओर्–प्राण छूट जायँगे, ऐसी स्थिति के; तुयरिऩ् वऩ्मम् कटल् पुक–दुख के प्रबल सागर में डूबते; उय्प्पतु ओर् वऴि–अपने नगर को जानेवाले मार्ग में; पुक्कऩऩ्–जाने लगे। १३४२

चक्रवर्ती के सुपुत्र और पुत्रवधुएँ उनको नमस्कार कर, उनके साथ आईं। अन्य राजकुमार और दूसरे लोग भी उनके चारों ओर मिलकर आये। मिथिला नगर के प्राचीन प्रजाजन विदीर्णमन हो गये। "अब उनके प्राण छूट जायँगे क्या ?" यह डर पैदा करनेवाली एक विषम स्थिति में रहे वे दुख के अपार सागर में डूब गये। इस परिस्थिति में राजा दशरथ, अयोध्या (जाने के) मार्ग में जाने लगे। १३४२

मुऩ्ऩॆऩॆडु मुडिमऩ्ऩवऩ् मुऱ़ैयिऱ़्चॆल मिदिलै
नऩ्मानह रुऱ़ैवार्मऩ ननिपिऩ्ऩॆल नडुवे
तऩ्ऩेर्बुरै तरुतम्बियर् तऴुविच्चॆल मऴैवाय्
मिऩ्ऩेयॆऩु मिडैयाळॊडु मिनिदेहिनऩ् वीरऩ् 1343

नॆंटु मुटि मऩ्ऩवऩ्–बड़े किरीट के चक्रवर्ती; मुऱ़ैयिऩ्–यथा मर्यादा; मुऩ्ऩे चॆल–आगे-आगे गये, तब; मितिलै नल् मानकर् उऱ़ैवार्–मिथिला के श्रेष्ठ नगर वासियों के; मऩम्–मन; ननि पिऩ् चॆल–उनके खब पीछे चले, तब; वीरऩ्–वीर (श्री रघुराम); नटुवे–मध्य में; तऩ् नेर्–अपनी समानता; पुरै तरु–करनेवाले; तम्पियर् तऴुवि चॆल–छोटे भाइयों के साथ लगे आते; मऴै वाय् मिऩ्ऩे–मेघमध्य विद्युत ही सम; ऍऩुम्–मान्य; इटैयाळॊटुम्–कमर वाली (श्री सीताजी) के साथ; इतितु एकिऩऩ्–सुख से गये। १३४३

सबसे आगे, यथोचित प्रकार से दीर्घ-किरीटधारी दशरथ जाते रहे। पीछे मिथिला के अच्छे नगर के वासियों के मन आ रहे थे ! श्रीराम इन दोनो के मध्य जा रहे थे। मेघ में बिजली के समान कमरवाली सीताजी उनके साथ थी और आप समान प्यारे भाई उनके पास आ रहे थे। श्रीराम सुख से जा रहे थे। १३४३

एहुम्मळ वयित्वन्दन्न वलमुम्मयि लिडमुम्
काहम्मुद लियमुन्दिय तडैशेय्वन्न कण्डान्
नाहम्मन्न न्निडैयिङ्गुळ दिडैयुरैन्न नडवान्
माहम्मणि यणितेरॊडु नित्ऱान्नॆऱि वन्दान् 1344

एकुम् अळवैयिन्–उनके चलते समय; मयिल् वलमुम् वन्तत–मोर दायें आये; काकम् मुतलिय–कौए आदि; इटमुम् मुन्तिय–बायें गये (अपशकुन); तटै चॆय्वत–और अवरोध करनेवाले बने; कण्टान्–देखकर; नाकम् अन्नतन्–पर्वत-सम (दृढ़-) मन; नॆऱि वन्तान्–सन्मार्गानुयायी चक्रवर्ती; इङ्कु–अब; इटै–मार्ग में; इटैयूऱु उळतु ॲन्न–कोई बाधा है, यह सोचकर; नटवान्–आगे नहीं गये; माकम् अणि–आकाशस्पर्शी; अणि तेरॊटुम्–शोभामय रथ के साथ; निन्ऱान्–रुक गये। १३४४

जब वे जाते रहे तब चक्रवर्ती ने देखा कि मोर (बायें से) दाहिनी ओर गये। यह शुभ शकुन था। और यह भी देखा कि कौए आदि बायें गये और यह अशुभ शकुन था जो मार्ग का अवरोधक था। चक्रवर्ती पर्वतसम दृढ़ मन थे और सन्मार्गगामी थे। वे यह देखकर सोचने लगे कि कोई बाधा होनेवाली है। इसलिए वे अपने रथ को रोककर रुक गये। १३४४

नित्ऱुनॆऱि यऱिवानॊरु निनैवाळनै यळैया
नन्ऱोपळु दुळदोनय मुरैनीनडु वॆन्नक्
कुन्ऱेपुरै तोळानॆदिर् पुळ्ळिन्कुऱि कॊळ्वान्
इन्ऱेवरु मिडैयूऱदु नन्ऱाय्विडु मॆन्ऱान् 1345

निन्ऱु–स्थित होकर; नॆऱि अऱिवान्–शकुनशास्त्र जाननेवाले; ऑरु निनैवाळनै–एक शोधक को; अळैया–बुलाकर; नन्ऱो पळुतु उळतो–भला है या हानि की सम्भावना है; नयम्–फल; नी नटु उरै ॲन्न–तुम तटस्थ रहकर कहो, कहने पर; कुन्ऱे पुरै–पर्वत-सम; तोळान् ॲतिर्–कन्धों वाले के सामने; पुळ्ळिन् कुऱि कॊळ्वान्–पक्षी-शकुन समझनेवाले ने; इन्ऱे इटैयूऱु वरुम्–अभी बाधा आयगी; अतु नन्ऱु आय् विटुम्–वह भला हो जायगी; ॲन्ऱान्–कहा। १३४५

रुककर उन्होंने एक शकुन-शास्त्रज्ञ शोधक को बुलाया। उससे पूछा कि क्या भला होनेवाला है या बुरा ? इस शकुन का फल, शोध करके, तटस्थ रहकर बताओ। पक्षी-शास्त्रज्ञ ने पर्वतसम कंधों वाले दशरथ को उत्तर में बताया कि अभी बाधा आयेगी। पर वह भला बन जायगी। १३४५

ॲन्नुम्मळ वयिन्नवान्ह मिरुणिन्ऱदु वॆळियाय्
मिन्नुम्बडि पुडैवीशिय शडैयान्मळु वुडैयान्
पॊन्निन्मलै वरुहिन्ऱदु पोल्वान्नल् काल्वान्
उन्नुन्जुळल विळियानुरु मदिर्हिन्ऱदॊ रुरैयान् 1346

ॲन्ऱुम् अळवैयिऩ्–(उसके) यह कहते ही; वाऩकम् निऩ्ऱ्तु इरुळ्–आकाश में व्याप्त अन्धकार; वॅळि आय्–प्रकाश बना; मिऩ्ऩुवु पटि–और चमका, जैसे; पुटै वीचिय–चारों ओर (प्रकाश) फैलानेवाली; चटैयाऩ्–जटाधारी; मऴु उटैयाऩ्–परशु रखनेवाले; पॊऩ्निऩ् मलै वरुकिऩ्ऱ्तु पोल्वाऩ्–स्वर्णपर्वत आता जैसा दिखनेवाले; अनल् काल्वाऩ् उऩ्ऩुम्–आग उगलती हुई; चुऴल् विऴियाऩ्–घूमनेवाली आँखों के; उरुम् अतिर्किऩ्ऱ्तु–गाज का-सा; ओर् उरैयाऩ्–वचन कहनेवाले। १३४६

शकुन-शास्त्रज्ञ यह कह ही रहा था कि परशुराम आ गये। (परशुराम कैसे थे और कैसे आये इसका विवरण इस पद को मिलाकर नौ पदों मे दिया जाता है।) आकाश के अन्धकार को प्रकाश मे वदलते हुए (उनके पार्श्व में) हिलती रहनेवाली जटाओं वाले; परशु के धारक; स्वर्णपर्वत के समान आनेवाले; आग उगलने को उद्यत और चचल ऑखो वाले; गाज के समान वचनवाले— । १३४६

कम्बित्तलै यॅऱिनीरुऱ कलमॊत्तुल हुलैयत्
तम्बित्तुयर् दिशैयाऩैह डळरक्कडल् शलिया
वॅम्बित्तिरि तरवानवर् वॅरुवुऱ्ऱिरि तरवोर्
शॆम्बॊऱ्चिलै तॆऱियावयिऩ् मुहवाळिह डॆरिवाऩ् 1347

अलै ॲऱि नीर्–तरंग फेंकनेवाले सागर जल में; उऱुम् कलम् ऒत्तु–पड़े पोत के समान; उलकु कम्पित्तु उलैय–लोक को कॉपकर थर्राते हुए; उयर् तिचै याऩैकळ्–श्रेष्ठ दिग्गजों को; तम्पित्तु तळर–स्तंभित और भीत कराते हुए; कटल्–सारे समुद्र; चलिया–क्षुब्ध होकर; वॆम्पि–तप्त होकर; तिरितर–चंचल हों, ऐसा करते हुए; वानवर्–देवगण; वॆरु उऱ्ऱु इरि तर–डरकर भाग जायँ, ऐसा; ओर् चॆम् पॊऩ् चिलै–विशिष्ट एक स्वच्छस्वर्ण के धनुष (के डोरे) को; तॆऱिया–टंकारते हुए; अयिल् मुकम् वाळिकळ् तॆरिवाऩ्–तीक्ष्णमुखी शर चुननेवाले। १३४७

(उनके आते समय) तरंगाकुल सागर-जल में ग्रस्त पोत के समान लोक कपित होकर चंचल हुए। वड़े-वड़े दिग्गज स्तंभित और श्रांत हो गये। सारे समुद्र उद्वेलित होकर तप्त और अस्थिर हुए। देवगण भयभीत होकर भागे। (ऐसा आये) अप्रतिम एक स्वर्णधनु की डोरी टंकारकर तीक्ष्ण शर को चुन लेते हुए (परशुरामजी)। १३४७

विण्कीऴुऱ वॆऩ्ऱोपडि मेल्पालुऱ वॆऩ्ऱो
ॲण्कीऱिय वुयिर्यावयुम् यमऩ्वायिड वॆऩ्ऱो
पुण्कीऱिय कुरुदिप्पुऩल् पॊऴिहिऩ्ऱदु पुरैयक्
कण्कीऱिय कनलाऩ्मुनि वियादॆऩ्ऱयल् करुद 1348

पुण् कीऱिय–व्रण के मुख से; कुरुति पुऩल्–रक्त द्रव; पॊऴिकिऩ्ऱतु पुरैय–बहता जैसे; कण् कीऱिय–कनलाऩ्–आँखो से निकलनेवाली आग सहित (इनका); मुनिवु–कोप; विण् कीऴ् उऱ ॲऩ्ऱो–आकाशलोक को नीचे लाने के लिए; पटि मेल्

पाल् उऱ ॲन्ऱो–भूमि को आकाश में पहुँचाने के लिए; ॲण् कीऴिय उयिर् यावैयुम्–संख्या लाँघनेवाले (असंख्यक) सारे जीवों को; यमन् वाय् इट ॲन्ऱो–यम के मुख में डालने के लिए; यातु–क्या; ॲन्ऱु–ऐसा; अयल् करुत–पास में रहनेवाले सोचें, ऐसा। १३४८

खुले व्रण से रक्त बहता-सा आँखों से आग निकल रही थी। इतना इनका कोप आकाश को भूमि पर गिराने के लिए है ? या भूमि को आकाश में पहुँचाने के लिए ? या संख्या की सीमा लाँघकर जो जीव यहाँ हैं उनको यम के मुख का ग्रास बनाने के लिए ? यह कैसा कोप है —ऐसा पास रहने वाले विचार करने लग गये। (इस प्रकार वे आये।)। १३४८

पोरिऩ्मिशै यॅऴुहिऩ्ऱदोर् मऴुविऩ्शिहै पुहैयत्
तेरिऩ्मिशै मलैशूऴ्वरु कदिरुन्दिशै तिरिय
नीरिऩ्मिशै वडवैक्कऩ ऩॅडुवाऩुऱ मुडुहिप्
पारिऩ्मिशै वरुहिऩ्ऱदोर् पडिवॅञ्जुडर् पडर 1349

पोरिन् मिचै ॲऴुकिन्ऱतु–युद्ध में उत्तेजित हो जानेवाले; ओर् मऴुविन् चिकै–उनके विशिष्ट परशु का सिर; पुकैय–धुआँ देने लगा; तेरिन् मिचै–(एक चक्र) रथ पर; मलै चूऴ् वरु–(मेरु) पर्वत को घूमकर आनेवाले; कतिरुम्–सूर्य भी; तिचै तिरिय–दिशा छोड़कर भटकने लगे; नीरिन् मिचै–सागर-जल-मध्य; वटवै-कनल्–बड़वाग्नि; नॅटु वान् उऱ–ऊँचे आकाश में पहुँचने के लिए; मुटुकि–वेग के साथ; पारिन् मिचै वरुकिन्ऱतु–भूमि पर आती हो; ओर् पटि–इस रीति से; वॅम् चुटर् पटर–(उनके शरीर से) गरम ज्योति फैलाते हुए। १३४९

युद्धोत्साही उनके परशु पर धुआँ उठ रहा था। अपने एक-चक्र रथ पर मेरु पर्वत की परिक्रमा करनेवाले सूर्य भी अपनी गति छोड़कर गड़बड़ाने लगे। परशुरामजी के शरीर से गरम प्रकाश फैल रहा था और ऐसा लगा कि सागर-जल में रहनेवाली बड़वाग्नि ऊँचे आकाश में पहुँचने के इरादे से भूमि पर आ रही हो। १३४९

पाऴिप्पुय मुयर्तिक्किडै यडैयप्पुडै पडरच्
चूऴिच्चडै मुडिविण्डॊड वयल्वॆणमदि तॊत्त
आऴिप्पुन लॆरिकाऩिल माहायमु मऴियुम्
ऊऴिक्कडै मुडिविऱ्ऱिरि युमैकेऴ्वनै यॊप्प 1350

पाऴि पुयम्–कठोर भुजाएँ; उयर् तिक्कु इटै–दीर्घ दिशाओं में; अटैय–व्याप्त होकर; पुटै पटर–पार्श्व में हिले, ऐसा; चटै मुटि चूऴि–जटा-मुकुट की शिखा; विण् तॊट–आकाश स्पर्श करने देते हुए; अयल्–उसके एक पार्श्व में; वॆण् मति तॊत्त–श्वेतचन्द्र, पकड़कर लटकता; आऴि पुनल्–समुद्र (संज्ञित) जल; ॲरि–अनल; काल्–अनिल; निलम्–पृथ्वी; आकाचमुम्–और आकाश, इन पाँचों भूतों को; अऴियुम्–मिटानेवाले; ऊऴि कटै मुटिविल्–कल्पांत में; तिरि–घूमकर

(ताण्डव) करनेवाले; उमै केळ्वनै ऑप्प–उमापति नटराज के समान दिखाई देते हुए। १३५०

उनकी वलवान भुजाएँ ऊँची दिशाओं को स्पर्श करते हुए उनके पार्श्व में ऊपर नीचे हिल रही थी। जटाजूट के ऊपर की चोटी आकाश को छू रही थी। उसके एक ओर चन्द्र उससे लगकर लटक रहा था। वे उमापति के समान जो, (सागर रूपी) जल, थल, अनल, अनिल और आकाश वगैरह पाँचों भूतो के विलयनकारी कल्पांत में घूमकर तांडव करते है। (ऐसे परशुराम)। १३५०

अयिर्तुऱ्ऱिय कडन्मानिल मडयत्तनि पडरुम्
शॅयिर्शुऱ्ऱिय पडयानडन् मऱमन्ऩवर् तिलकन्
उयिरुऱ्ऱॊर् मरमामॆन वोरायिर मुयर्तोळ्
वयिरप्पणै तुणियत्तॊडु वडिवाय्मऴु वुडयान् 1351

अयिर् तुऱ्ऱिय–वारीक वालुओं से भरे; कटल् मा निलम् अटैय–समुद्र से वलयित इस भूतल भर में; तनि पटरुम्–अपनी समानता न रखते हुए छानेवाली; चॅयिर् चुऱ्ऱिय–और क्रोधशील; पटैयान्–सेना वाले; अटल् मऱम् मन्ऩवर् तिलकन्–वीरता और साहस से भरे राजाओं में तिलक (कार्त्तवीर्य-सहस्रार्जुन) को; उयिर् उऱ्ऱु ओर् मरम् आम् ॲन–जीवित वृक्ष के समान बनाते हुए; ओर् आयिरम् उयर् तोळ् वयिरम् पणै–एक सहस्र हस्तरूपी वज्र (सम) शाखाओं को; तुणिय–काटने को; तॊटु–चलाये गये; वटिवाय् मऴु उटैयान्–तीक्ष्ण मुख वाले परशु के रखनेवाले। १३५१

कार्तवीर्य वीरतापूर्ण और साहसी राजाओं में तिलक (सर्वश्रेष्ठ) था। उसकी क्रोधी सेना, वारीक वालुओं से युक्त इस समुद्र से वलयित भूतल पर कही भी बेरोकटोक छा जाने की शक्ति रखती थी। इस कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) ने परशुराम के पिता जमदग्नि के पास उनकी कामधेनु चुरा ली। इस अपराध से क्रुद्ध होकर परशुराम ने ऐसे प्रतापी कार्तवीर्य की सेना का नाश किया और उसकी विशाल और उन्नत भुजाओं को शाखाओं की तरह अपने परशु की तीक्ष्ण धार से काट गिराया और उसे शाखाहीन कर जीवित ठूंठ के समान वना दिया। ऐसे धारदार परशु के धारक आये। १३५१

निरुवर्क्कॊरु पऴिपऱ्ऱिड निलमन्ऩवर् कुलमुम्
करुवऱ्ऱिड मऴुवाळ्कॊडु कळैकट्टुयर् कवरा
इरुबत्तॊरु पडिहालिमिऴ् कडलीत्तलै यॆऱ्ऱियुम्
कुरुदिप्पुन लदनिऱ्पुह मुऴुहित्तनि कुडैवान् 1352

निरुपर्क्कु–(क्षत्रिय) राजाओं को; ऑरु पऴि पऱ्ऱिट–एक अपयश हो जाय, ऐसा; निलम् मन्ऩवर् कुलमुम्–भूपति कुल सारा; करु अऱ्ऱिट–निर्मूल नष्ट करके; मऴु वाळ् कॊटु–परशु के अस्त्र से; इरुपत्तॊरु काल् पटि–इक्कीस पीढ़ियो तक;

उयिर् कवरा–प्राणहरण कर; कळै कट्टु–(भूपों का) कलंक मिटाकर; इमिळ् कटल् ऑतुतु–गर्जनशील सागर से तुलकर; अलै ऍरियुम्–तरंग उछालनेवाले; कुरुति पुनल् अततिल्–रक्त के जल में; पुक मुळुकि–खूब पैठकर मग्न होकर; तनि कुटैवान्–अकेले (अभूतपूर्व रीति से) जिन्होंने स्नान किया वे। १३५२

(परशुराम के काम से कार्तवीर्य के पुत्रों को गुस्सा आया और उन्होंने परशुराम की अनुपस्थिति में जमदग्नि को मार दिया। जमदग्नि की पत्नी रेणुका अत्यन्त दुःखिता होकर इक्कीस बार छाती पीटकर रोयीं। इससे प्रभावित परशुराम ने बदला लेने के लिए, इक्कीस पीढ़ियों तक के भूपालों को मारने का निश्चय किया।) तदनुसार— परशुराम ने भूपति राजाओं को इक्कीस पीढ़ियों तक मारकर, राजाओं को अपयश दिलाते हुए भू पर से राजारूपी कलंक को धुला दिया। फिर उन मृत राजाओं के शरीरों के रक्त से जो तरंगायमान सागर के समान रक्त का विस्तार बना उसमें उतरकर गोते लगाये। यह अभूतपूर्व अनोखा स्नान करनेवाले (आये)। १३५२

कमैयॉप्पदोर् तवमुञ्जुडु कनलॉप्पदोर् शिनमुम्
शमैयप्पॅरि दुडैयानॅरि तळ्ळुरॅदिर् तळरुम्
अमैयत्तयर् परवैक्किनि दारास्वहै शीराच्
चिमैयक्किरि युरुवत्तनि वडिवाळिह डॅरिवान् 1353

कमै ऑप्पतु ओर् तवमुम्–मूर्तिमान क्षमा बनने योग्य श्रेष्ठ तपस्या; चुटु कनल् ऑप्पतु–जलानेवाली आग-सा; ओर् चिनमुम्–अपार कोप; चमैय–दोनों को एक साथ युक्त; पेरितु उटैयान्–अधिक परिमाण में रखनेवाले; उयर् परवैक्कु–श्रेष्ठ (हंस) पक्षियों के; ऍतिर् नॅरि तळ्ळुरु–सामने के मार्ग के अवरोध से; तळरुम् अमैयत्तु–श्रांत होते समय; आरु इनितु आम् वकै–मार्ग सुखावह हो, ऐसा; चीरा–कुपित हों; चिमैयम् किरि उरुव–ऊँचे शिखर वाले पर्वत (क्रौंच पर्वत) के मध्य से निफरते हुए जानेवाले; तनि वटि वाळिकळ्–विशिष्ट तीक्ष्ण शरों को; तॅरिवान्–चुनकर जिन्होंने चलाया, वे। १३५३

उनकी तपस्या उनकी धृति और क्षमा का ज्वलन्त उदाहरण थी। वह उनमें खूब थी। साथ-साथ अग्निसम क्रोध भी उनमें था। यह अनोखा सामंजस्य उनमें था। एक बार सामने मार्ग को अवरुद्ध पाकर संकट में पड़े हुए श्रेष्ठ हंसों को मार्ग बनाने के लिए परशुराम ने उन्नत शिखरों वाले क्रौंच पर्वत को बेधनेवाले अनुपम तीक्ष्ण शर छोड़े थे। [सन्दर्भ इस प्रकार है— परशुराम और कार्तिकेय (षणमुख) दोनों ने श्री शिवजी के पास धनुर्विद्या सीखी। क्रौंच पर्वत को बेधने की परीक्षा हुई। षणमुख हारे और परशुराम जीत गये। तब उस पर्वत के दक्षिण में रहने वाले हंसों को अपनी इच्छा के अनुसार उत्तर में स्थित मानसरोवर जाने

को मार्ग मिल गया। इसके बाद झुँझलाकर षणमुख ने अपनी शक्ति (भाले) से उस पर्वत को ही खण्ड-खण्ड तोड़ दिया।] ऐसे शर चलाने वाले परशुधर आये। १३५३

शैयम्बुह निमिरक्कड ऱ्ऴुवुम्बडि शमैवान्
मैयित्तुयिर् मलैनूऱिय मऴुवाळवन् वन्दान्
ऐयन्ऱनै यरिदिऱ्ऱरु मरशन्नदु कण्डान्
वॅय्यन्वर निबमॅन्नैहॉ लॅन्वॅय्दुरु मॅल्लै 1354

चैयम् पुक–पर्वतों को अपने अन्दर समा लेते हुए; निमिर् अ कटल्–उछलनेवाले समुद्र से भी; तऴुवुम्पटि चमैवान्–जिन्होंने अपनी आज्ञा मनवाई; मैयिन् उयर् मलै–मेघमण्डल तक उन्नत (क्रौंच) पर्वत का; नूऱिय–(गर्व) तोड़नेवाले; मऴुवाळ् अवन्–परशुधर (परशुराम); वन्तान्–आ रहे थे; ऐयन् तन्तै–नायक (श्रीराम को); अरितिल् तरुम् अरचु–बहुत असाधारण रूप से (तपस्या करके क्लेश आदि सहकर) जिन्होंने जन्म दिया था उन चक्रवर्ती ने; अन्नतु कण्टान्–उनका वैसा आना देखा; वॅय्यन्–क्रूर, इनके; वर–अब आने का; निपम् ऍन्नै कॉल् ऍन–कारण क्या है, यह सोचकर; वॅय्तुरुम् ऍल्लै–शोकपूर्ण हुए, तब। १३५४

परशुराम का प्रताप असीम था। उन्होंने पर्वत को अपने अन्दर समा लेनेवाले समुद्र से भी अपनी आज्ञा मनवा ली थी। (सन्दर्भ यों है—परशु उनका विशिष्ट हथियार था जो उन्हें शिवजी से मिला था। राजाओं को मारकर भूमि जो ग्रहण की गयी, उसको परशुराम ने काश्यप ऋषि को दान कर दी। बाद उन्होंने यह सोचा कि उनके राज्य में रहना अनुचित है। इसलिए उन्होंने पर्वत पर चढ़कर अपना परशु समुद्र में फेंका। जहाँ परशु गिरा वहाँ तक भूमि निकल आयी और समुद्र उससे बाहर हट गया। वह परशुरामक्षेत्र कहलाया— जो आज का केरल बताया जाता है।) ऐसे समुद्रशासक और (क्रौंच-) पर्वतगर्वभंजक परशुधर उनके सामने आये। चक्रवर्ती ने उनको आते देखा तो, प्रभु श्रीराम को बहुत कष्ट के बाद पुत्र के रूप में प्राप्त करनेवाले दशरथ दहल उठे। क्रूर, ये परशुराम, अब क्यों इधर आते है ? कारण क्या हो सकता है ? वे बहुत चिंतित हुए। १३५४

पॉङ्गुम्बडै यिरियक्किळर् पुरुवङ्गडै नॅरिय
वॅङ्गण्पॉऱि शिदऱक्कडि दुरुमेऱ्ऱॅन विडैयाच्
चिङ्गमॅन्न वुयर्देर्वरु कुमरन्ऩॅदिर् शॅन्ऱान्
अङ्गण्णऴ हऩुमिङ्गिव नारोवॅनु मळविल् 1355

पॉङ्कुम् पटै–(चक्रवर्ती की) विपुल सेना को; इरिय–(भय से) भगाते हुए; किळर् पुरुवम्–ऊपर उठी भौंहों को; कटै नॅरिय–छोरों पर टेढ़ी करते हुए; वॅम् कण्–कठोर आँखों से; पॉऱि चितऱ–अंगारे बरसाते हुए; उरुम् एऱु ऍन–अशनि के

समान; कटितु विटैया–अत्यधिक क्रोध के साथ अकड़कर; उयर् तेर्–उन्नत रथ पर; चिङ्कम् अन्न वरु–सिंह सदृश आनेवाले; कुमरन् ॲतिर् चॅन्ऱान्–कुमार (श्रीराम) के सामने गये; अङ्कण्–तब; अळकनुम्–सुन्दरमूर्ति भी; इङ्कु इवन् आरो–यहाँ आनेवाले ये कौन है; ॲन्नुम् अळविल्–सोचते समय। १३५५

तब उनकी विपुल सेना भयभीत होकर भागने लगी। परशुराम की भौंहें टेढ़ी हो गयीं। आँखों से अंगारे निकल आये। अशनि के समान क्रोध दिखाते हुए वे उन्नत रथ पर आसीन हो सिंह-समान आनेवाले राजकुमार श्रीराम के सामने गये। श्रीराम सोचने लगे कि इधर अब ये कौन आये ? तब। १३५५

अरैशन्नव निडैवन्दिनि दारादनै पुरिवान्
विरैशॅय्मुडि पडिमेलुऱ वडिमीदिनिल् विळ्वुम्
करैशॅन्ऱिल ननैयानॅडु मुडिविन्कनल् काल्वान्
मुरैशिन्कुरल् पडवीरन ऍदिर्निन्ऱिवै मॊऴिवान् 1356

अरैचु–चक्रवर्ती ने; अन्नवन् इटै वन्तु–उन (परशुराम) के पास आकर; इतितु आरातनै पुरिवान्–खूब संस्तुति करते हुए; विरै चॅय् मुटि–सुवासित अपने सिर को; पटि मेल् उऱ–भूमि पर लगाते हुए; अटि मीतिनिल्–उनके चरणों पर; विळ्वुम्–गिरकर नमस्कार किया, तब; अन्नैयान्–(परशुराम) वे; करै चॅन्ऱिलन्–कोप पार नहीं गये (गुस्सा नहीं छोड़ा); नॅटु मुटिविन्–कल्पान्त की-सी; कनल् काल्वान्–अग्नि बरसाते हुए; वीरनतु ऍतिर् निन्ऱु–वीर (राघव) के सामने खड़े होकर; मुरैचिन् कुरल् पट–ढोल के स्वर में; इवै मॊऴिवान्–ये बातें कहने लगे। १३५६

चक्रवर्ती दशरथ परशुराम के पास आये। खूब संस्तुति करके उनके पैरों पर गिरे। तब भी परशुराम का क्रोध शान्त नहीं हुआ। वे कल्पांत की अग्नि के समान आग उगलते हुए, वीर श्रीराम के सामने जा खड़े हुए और ढोल के नाद के समान उच्च स्वर में ये बातें कहीं। १३५६

इऱ्ऱोडिय शिलैयिन्ऱिऱ मऱिवेनिनि यानुन्
पॊऱ्ऱोळ्वलि निलैशोदनै पुरिवान्नशै युडैयेन्
शॅऱ्ऱोडिय तिरडोळुऱु तिन्नवुञ्जिऱि दुडैयेन्
मऱ्ऱोर्पॊरु ळिलैयिङ्गिदॅन् वरवॅन्ऱन नुरवोन् 1357

उरवोन्–बलिष्ठ परशुराम ने; इऱ्ऱु ओटिय चिलैयिन् तिऱम्–टूट गया (जो) उस धनु की प्रकृति; यान् अऱिवॅन्–मैं जानता हूँ; इनि–अब; उन् पॊन् तोळ्–तुम्हारे शोभायमान हाथों की; वलि निलै–शक्ति की स्थिति; चोतनै पुरिवान्–परीक्षा करने की; नचै उटैयेन्–इच्छा रखता हूँ; चॅऱ्ऱु ओटिय–(राजाओं को) हराकर बढ़े हुए; तिरळ् तोळ्–पुष्ट मेरे कन्धों की; उऱु तिन्नवुम्–उठी हुई खुजली भी (युद्ध-लिप्सा); चिऱितु उटैयेन्–थोड़ा रखता हूँ; इङ्कु ॲन् वरवु इतु–यहाँ मेरा आना इसी हेतु है; मऱ्ऱु ओर् पॊरुळ् इलै–दूसरा कोई कारण नहीं; ॲन्ऱनन्–कहा। १३५७

बलिष्ठ परशुराम बोले। "हे राम! जो धनु तुम्हारे हाथ के लगते ही टूटकर गिर गया उसकी सच्ची स्थिति मैं जानता हूँ। (वह पहले ही टूटा हुआ था।) अब मैं तुम्हारी मनोरम भुजाओं के बल की परीक्षा लेने की इच्छा रखता हूँ। साथ-साथ अनेक राजाओं को हराकर बढ़ी हुई मेरी भुजाओं में खुजली (युद्धलिप्सा) थोड़ा पैदा हो गई है। यही मेरे इधर आने का कारण है। दूसरा कोई नहीं।"। १३५७

अवनन्ऩदु पहरुम्मळ वयिन्मन्ऩव ऩयर्वान्
पुवऩम्मुळ्ळु वदुम्वॆन्ऱोरु मुऩिवर्करुळ् पुरिवाय्
शिवनुम्मय नरियुम्मलर् शिरुमानिडर् पॊरुळो
इवनुम्मॆन दुयिरुम्मुन दबयम्मिनि यऩ्ऱान् 1358

अवऩ्–उन (परशुराम) के; अऩ्ऩतु पकरुम् अळवैयिऩ्–वह कहते समय; मऩ्ऩवऩ्–चक्रवर्ती ने; अयर्वाऩ्–दुखी होकर; पुवनम् मुळ्ळुवतुम् वॆऩ्ऱु–भुवन भर जीतकर; ऒरु मुऩिवर्कु अरुळ् पुरिवाय्–एक मुनि के पास देने की कृपा करनेवाले कृपालू; चिवऩुम्–शिवजी; अयऩ् अरियुम्–अज और हरि भी; अलर्–(आपके सामने कोई पदार्थ) नहीं होंगे तो; चिऱु माऩिटर् पॊरुळो–छोटे मनुष्य कोई पदार्थ होंगे क्या; इऩि–अब; इवऩुम्–यह (बालक) और; ऎऩतु उयिरुम्–मेरे प्राण; उऩतु अपयम्–आपके अभयदान के प्रार्थी हैं; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। १३५८

जब वे श्रीराम से ऐसा कह रहे थे तब दशरथ को वह सुनकर बहुत भय और दुख हुआ। उन्होंने परशुराम से विनय की। "आपने सारी भूमि जीतकर एक महर्षि को दान में देने की कृपा की थी। ऐसे कृपालू है आप! शिवजी, ब्रह्माजी और विष्णुदेव भी आपके सामने कोई वस्तु नहीं तो हम जैसे छोटे मनुष्य क्या हो सकते है? अब ये बालक श्रीराम और मेरे प्राण आपके अभयदान के याचक हैं। १३५८

विळिवार्विळि वदुतीविऩै विऴैवारुऴै यऩ्ऱो
कळियालिव ऩयर्हिऩ्ऱवु मुळवोकन लुमिऴुम्
ऒळिवाय्मऴु वुडैयाय्पॊर वुरियारिडै यल्लाल्
ऎळियारिडै वलियार्वलि यॆऩ्ऩाहुव दॆऩ्ऱान् 1359

कतल् उमिऴुम्–अग्निवर्षक; ऒळि वाय् मऴु उटैयाय्–बहुत उज्ज्वल परशु के धारक; विळिवार् विळिवतु–क्रोधशीलों का क्रोध करना; तीविऩै–अपराध; विऴैवार् उऴै अऩ्ऱो–इच्छा के साथ करनेवालों के प्रति (न) होना चाहिए; इवऩ्–इस (राम) के; कळियाल्–(विद्या, धन, बल आदि के) मद के कारण; अयर्किऩ्ऱवुम्–भूल से किये हुए; उळवो–(अपराध) है क्या; वलियार् वलि–बलवान का बल; पॊर उरियार् इटै अल्लाल्–सामना कर सकनेवालों के प्रति नहीं तो; ऎळियार् इटै–बलहीनों के प्रति; ऎऩ् आकुवतु–किस काम का; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। १३५९

"अग्निवर्षक, उज्ज्वल परशुधर! क्रोधशील मनुष्य उन्हीं पर क्रोध

करते हैं जो गम्भीर अपराध जान बूझकर करते है। क्या इस बालक के हाथ, (धन, यौवन, बल, विद्या, इनके) मद के कारण अनजाने कोई अपराध हो गया है ? बली लोग अपना पराक्रम उन्ही लोगों पर प्रयोग करते हैं जो उनसे टकराने का सामर्थ्य रखते हैं। निर्बलों पर बल प्रयोग का क्या महत्त्व या मूल्य रह जायगा ? । १३५९

नतिमादव मुडैयायिदु पिडिनीयॅन्न नल्हुम्
तनिनायह मुलहेळ्ळैयु मुडैयायिदु तविराय्
पनिवार्कडल् पुडैशूळ्पडि नरपालरै यरुळा
मुनिवारिन्नै मुनिहिन्नरदु मुरैयोवॅन्न मौळिवान् 1360

नति मातवम् उटैयाय्–अति महान तपस्वी; इतु पिटि नी–आप इसे ग्रहण कर लें; ॲन्न–कहकर; उलकु एळ्ळैयुम्–(काश्यप के पास) सातों लोकों को; नल्कुम्–दान करनेवाले; तनि नायकम् उटैयाय्–अद्वितीय नेतृत्व वाले; इतु तविराय्–यह (कोप) छोड़ दीजिए; पनि वार् कटल्–शीतल और विशाल समुद्र से; पुटै चूळ् पटि–वलयित इस भूतल पर के; नरपालरै अरुळा–नृपों के प्रति दया करके; मुनिवु आरिन्नै–कोप शांत कर लिया; मुनिकिन्नरतु–अब क्रोध करना; मुरैयो–उचित है क्या; ॲन्न–कहकर; मौळिवान्–आगे बोले। १३६०

"बहुत बड़े तपस्वी ! आपने काश्यप को, 'यह आप ग्रहण कीजिए', कहकर सातों लोकों को दान में दिया था। ऐसे नेता हैं आप ! आपको यह कोप शोभा नहीं देता। आप यह क्रोध त्याग दें। शीतल समुद्र जिसके चारों ओर घेरे हुए है उस भूमि पर के पालकों पर आपने कृपा की थी। आपने अपना क्रोध शान्त कर लिया था। ऐसे आपका अब श्रीराम पर क्रोध करना उचित है क्या ?" राजा ने इतना कहकर आगे भी कहा। १३६०

पुरनिन्नरव रिहळ्ळुम्बडि नडुविन्नरलै पुणरात्
तिरनिन्नुरुयर् वलियॅन्ननदो ररनिन्नरहु शॅयलो
अरनिन्नरद निलैनिन्नुरुयर् पुहळ्ळोन्नुरुव दन्नरो
मरनॅन्नबदु मरवोयिदु पळियॅन्नबदु मदियाय् 1361

मरवोय्–पराक्रमी; पुरन् निन्नरवर्–आस-पास रहनेवाले; इकळ्ळुम् पटि–निंदा करे, ऐसा; नटुविन् तलै पुणरा तिरन् निन्नरु–तटस्थता से अयुक्त स्थिति में रहकर; उयर् वलि ॲन्–उससे बढ़नेवाले बल की क्या महिमा है; अतु–वह (बल-प्रदर्शन); ओर् अरनिन् तकु चॅयलो–धर्मोचित एक काम है क्या; मरन् ॲन्नपतु–वीरता; अरन् निन्नर तन् निलै निन्नरु–धर्म सम्मत स्थिति में रहकर; उयर् पुकळ् ओन्नुरुवतु अन्नरो–उत्कृष्ट यश की प्राप्ति नहीं क्या; इतु–यह (जो आप करने जाते है); पळि–निन्द्य कर्म है; ॲन्नपतु–यह; मतियाय्–सोचिए। १३६१

"पराक्रमी ! पास रहनेवालों की निन्दा का विषय बनकर, तटस्थता

के विपरीत गति मे जाकर बढ़े हुए बल की क्या महिमा है ? ऐसा करना क्या धर्मोचित काम होगा ? क्या सच्ची वीरता वह नही है जो धर्मसम्मत मार्ग पर जाकर उत्कृष्ट कीर्ति प्राप्त करे ? यह, जो आप करने जाते है, निन्द्य काम है, समझ लीजिए। १३६१

शलत्तोडियै विलत्तॆन्मह नन्नैयान्उयिर् तबुमेल
उलत्तोडॆदिर् तोळायॆत दुऱ्वोडुयि रुहुवेन्
निलत्तोडुय रहल्वानुऱ नॆडियायुन दडियेन्
कुलत्तोडऱ मुडियेलिडु कुऱैकॊण्डनॆ नॆन्ऱान् 1362

उलत्तोटु ऍतिर् तोळाय्–पत्थर के खम्भे की टक्कर के कन्धे वाले; निलत्तोटु–इस भूमि के साथ; उयर् अकल् वान् उऱ–उन्नत, विशाल आकाश तक व्याप्त; नॆटियाय्–दीर्घ यश के स्वामी; ऍन् मकन्–मेरा पुत्र; चलत्तोटु इयैवु इलन्–आपके साथ शत्रुता से सम्बन्ध नहीं रखता; अनैयान् उयिर् तपु मेल्–उसकी जान जायगी तो; ऍन्तु उऱवोटु–अपने (पितृत्व) के नाते; उयिर् उकुवेन्–प्राण भी त्याग दूँगा; उन्तु अटियेन्–आपका दास, मुझे; कुलत्तोटु–कुल के साथ; अऱ मुटियेल्–निर्मूल करते हुए उसको मत मारिए; इतु कुऱै कॊण्टतन्–यह विनय याचना करता हूँ। १३६२

"स्थूल प्रस्तर के खम्भे से टक्कर लेनेवाले कंधों के बलशाली ! भूतल के साथ आकाश में भी व्याप्त कीर्तिमान ! मेरा पुत्र आपसे शत्रुता का कोई सम्वन्ध नहीं रखता। उसकी जान चली जायगी तो उसके पिता के नाते मैं भी अपने प्राण त्याग दूँगा। आप उसको मारकर, आपके दास, मुझे मेरे कुल के साथ मत मिटाइये। यही आपसे मेरी याचना है।"। १३६२

ऍन्नावडि विळुवानैयु मिहळावॆरि विळियाप्
पॊन्नार्शिलै युरवोनॆदिर् पुहुवानिलै युणरात्
तन्नालॊरु शॆयलिन्मयै निनैयावुयिर् तळरा
मिन्नालयर् वुरुवाळर वॆनवॆन्दुय रुऱ्ऱान् 1363

ऍन्ना–यह सब कहके; अटि विळुवानैयुम्–चरणों पर पड़नेवाले का; इकळा–अनादर करके; ऍरि विळिया–आग्नेय दृष्टि के साथ तरेरकर; पॊन् आर् चिलै–सुन्दर, विशिष्ट धनु के; उरवोन् ऍतिर्–शक्तिमंत वीर के सामने; पुकुवान् निलै–जानेवाले की मनोगति को; उणरा–समझकर; तन्ताल् ऑरु चॆयल् इन्मैयै–अपने से कुछ न होगा, इस लाचारी को; निनैया–(सोच-) जानकर; उयिर् तळरा–विकल प्राण हो; मिन्नाल् अयर्वु उऱुम्–वज्रपात से शिथिल होनेवाले; वाळ् अरवु ऍन–उज्ज्वल साँप के समान; वॆम् तुयर् उऱ्ऱान्–कठोर दुख से पीड़ित हुए। १३६३

ऐसा कहते हुए दशरथ उनके चरणों पर पड़े। लेकिन परशुराम ने उसकी उपेक्षा कर दी। आग्नेय आँखों से तरेरते हुए परशुराम सुन्दर और श्रेष्ठ धनुष के प्रतापी श्रीराम के सामने जाने लगे। उनकी मनोगति

दशरथ पर प्रकट हो गयी। उनको लगा कि अब हमारे किये कुछ नहीं हो सकता। इसलिए विकल-प्राण होकर दशरथ वज्राहत उज्ज्वल सर्प के समान अत्यन्त भयंकर पीड़ा का अनुभव करने लगे। १३६३

मात्तम्मणि मुडिमन्नवन् मदिशोरवु मदियान्
ताननिलै यळिवानुरु विनैयुण्डदु तविरान्
आनम्मुडै युमैयण्णलै यन्नाळुरु शिलैतान्
ऊनम्मुळ ददन्मॅय्न्नॅरि केळॆन्नुरै पुरिवान् 1364

मातम् अणि–गौरव को आभूषण माननेवाले; मुटि मन्नवन्–चक्रवर्ती के; मति चोरवुम्–सुध-बुध खोने की भी; मतियान्–गणना नहीं करते; तान् अ निलै–खुद की उन्नत स्थिति को; अळिवान् उरु–मिटाने के लिए प्रबुद्ध; विनै उण्टतु–प्रारब्ध के ग्रास को; तविरान–निवारित कर न सकनेवाले; आनम् उटै–आनक (डमरू) धारी; उमै अण्णलै–उमापति श्रीशिवजी के पास; अ नाळ् उरु चिलै–कभी का रहा वह धनुष; ऊनम् उळतु–भग्न था; अतन् मॅय् नॅरि–उसकी सच्ची गति; केळ्–सुनो; ॲन्नुरु–कहकर; उरै पुरिवान्–कहने लगे। १३६४

गौरव को ही आभरण माननेवाले चक्रवर्ती अपनी सुध-बुध खोकर गिर गये। परशुराम ने उसकी बिल्कुल परवाह नही की। उनको उनकी सम्मान्य स्थिति से नीचे गिराने का संकल्प लेकर प्रारब्ध क्रियाशील होने लगा था। परशुराम ने उससे बचने का उपाय भी नही किया। वे श्रीराम से बोले— "(आनक) डमरूधारी उमानाथ श्री शिवजी के हाथ में जो धनुष उन प्राचीन दिनों में था, वह भग्न हो चुका था। उसका सच्चा वृत्तान्त सुनाता हूँ। सुनो।" १३६४

ऑरुकाल्वरु कदिरामॅन वॉळिकाल्वन वुलैया
वरुकार्तवळ् वडमेरुविन् वलिशाल्वन मननाल्
अरुहाविनै पुरिवानुळ नवन्नालमै वनवाम्
इरुकार्मुह मुळयावयु मेलादन मेनाळ् 1365

ऑरु काल् वरु कतिर् आम् ॲन–एकचक्र रथ पर आनेवाले सूर्य के समान; ऑळि काल्वन–कांति बिखेरनेवाले; वरुकार् तवळ्–अधिक मेघों से व्याप्त; वट मेरुविन्–उत्तर के मेरुपर्वत के समान; उलैया वलि चाल्वन–अचल कठोरता से युक्त; यावैयुम् एलातन–अन्य किसी भी धनुष की समानता को न सह सकनेवाले (अनुपम); मननाल्–मन के संकल्प से ही; अरुका विनै पुरिवान् उळन्–त्रुटिहीन निर्माण कार्य करनेवाले; अवन्नाल्–उस (विश्वकर्मा) के द्वारा; अमैवन आम्–निर्मित; इरु कारमुकम्–दो कार्मुक; मेल् नाळ् उळ–प्राचीनकाल से रहते हैं। १३६५

"प्राचीनकाल में दो कार्मुक थे। दोनो एकचक्ररथ वाले सूर्य के समान कान्तिमय थे। मेघों से आवृत्त मेरु के समान, जो उत्तर में है, अचल दृढ़ता और बल रखनेवाले थे। कोई भी अन्य धनुष इनकी

समानता नही कर सकता था। विश्वकर्मा ने, जिनके संकल्प मात्र से निर्माण कार्य हो जाते थे, इनको निर्मित किया था। १३६५

ऑन्ऱिनै युमैयाळ् केळ्व नुहन्दनन् मट्ऱै यौन्ऱै
निन्ऱुल हळन्द नेमि नॅडियव नॅऱियिऱ् कौण्डान्
ॲन्ऱिदु वुणर्न्द विण्णो रिरण्डिनुम् वन्मै यॅय्दुम्
वॅन्ऱिय दियाव दॅन्ऱु विरिञ्जनै विनव वन्नाळ् 1366

ऑन्ऱिनै–(उन में) एक को; उमैयाळ् केळ्वन्–उमानाथ ने; उकन्ततन्–पसन्द कर लिया; मट्ऱै ऑन्ऱै–दूसरे (एक) को; निन्ऱु उलकु अळन्त–ऊँचे वनकर जिन्होंने लोकों को नापा; नेमि नॅटियवन्–उन चक्रधारी त्रिविक्रम देव ने; नॅऱियिन्–क्रम के अनुसार; कौण्टान्–(अपने लिए) लिया; ॲन्ऱ इतु–इससे; उणर्न्त विण्णोर्–अवगत देवों ने; इरण्टिनुम्–इन दो में; वन्मै ॲय्तुम् वॅन्ऱियतु–वल से प्राप्य विजयशील; यावतु ॲन्ऱु–कौन होगा, यह; विरिञ्चनै विनव–ब्रह्मा से पूछा; अन्नाळ्–उस समय। १३६६

"उन दो में एक को उमानाथ शिवजी ने पसंद करके ले लिया। जो वचा रहा उस दूसरे धनुष को लोकमापक त्रिविक्रमदेव ने क्रमागत प्रकार से अपने लिए लिया। देवों ने यह वृत्तान्त जाना तो ब्रह्माजी के पास जाकर पूछा कि इन दो मे अपने वल-पराक्रम के कारण कौन-सा धनुप विजयशील होगा ?। १३६६

शीरिदु तेवर् तङ्गळ् शिन्दनै यॅन्व दुन्नि
वेरियङ् गमलत् तोनु मियैवदोर् विनयन् दन्नाल्
यारिनु मुयर्न्द मूलत् तॊरुवरा मिरुवर् तम्मै
मूरिवॅञ् जिलैमे लिट्टु मॊय्यमर् मूट्टि विट्टान् 1367

वेरि अम् कमलत्तोनुम्–सुवासपूर्ण कमल पर आसीन ब्रह्मा ने भी; तेवर् तङ्कळ्–देवों का; चिन्तनै चीरितु ॲन्पतु उन्नि–विचार श्रेष्ठ है, यह मानकर; इयैवतु ओर् वित्तयम् तन्नाल्–युक्त एक उपाय द्वारा; यारिनुम् उयर्न्त–सर्वश्रेष्ठ; मूलत्तु ऑरुवर् आम्–मूल में एक जो; इरुवर् तम्मै–(स्थिति आदि कार्य के कारण) दो रूप है उनके वीच; मूरि वॅम् चिलै मेल् इट्टु–सुदृढ़ भयंकर धनुषों के वहाने; मॊय् अमर् मूट्टि विट्टान्–प्रवल युद्ध आयोजित करा दिया। १३६७

"कमलासन ब्रह्मा ने भी सोचा कि देवों का प्रश्न ठीक है। इसलिए उन्होने एक सफल उपाय किया। उससे उन दो देवों के वीच, जो मूल में (कारण रूप में) एक थे पर कार्य रूप में दो ईश्वर थे उन (सारयुक्त) वलवान और भयंकर धनुपों के व्याज से घमासान युद्ध छिड़ गया। १३६७

इरुवरु मिरण्डु विल्लु मेऱ्ऱिन रुलह मेळुम्
वॅरुवर तिशैहळ् पेर वॅङ्गनल् पॊङ्ग मेन्मेल्

शरुमलै हिन्ऱु पोदु तिरिपुर मॅरित्त तेवन्
वरिशिलै यिऱ्ऱदाह मऱ्ऱवन् मुनिन्दु मन्नो 1368

इरुवरुम्–दोनो (शिव और विष्णु) ने; इरण्टु विल्लुम् एऱ्ऱित्तर्–दोनो धनुषों पर प्रत्यंचा चढ़ाई; उलकम् एऴुम् वॅरुवर–सातों लोक भयभीत हुए, ऐसा; तिचैकळ् पेर–दिशाएँ अस्त-व्यस्त हों, ऐसा; वॅम् कतल् मेल् मेल् पॉङ्क–भयंकर (कोप) ज्वालाओं के उत्तरोत्तर बढ़ते; चॅरु मलैकिन्ऱपोतु–(जब वे दोनों) निरन्तर लड़ते रहे, तब; तिरिपुरम् ॲरित्त तेवन्–त्रिपुरदाहक देव (शिवजी) का; वरिचिलै–बन्धन-युक्त धनुष; इऱ्ऱतु आक–भग्न हो गया; मऱ्ऱु–उस पर; अवन् मन् मुनिन्तु–रुद्र बहुत गुस्सा करके। १३६८

"दोनो ने अपना-अपना धनुष झुकाकर प्रत्यंचा चढ़ायी। सातों लोक भयभीत हो गये। दिशाएँ चंचल हुई। उनकी कोपाग्नि उत्तरोत्तर बढ़ती गई। ऐसा भयंकर युद्ध हो रहा था। तब त्रिपुर-दाहक शिवजी का धनुष भग्न हो गया। रुद्र को उस पर अपार कोप हुआ। १३६८

मीट्टुम्बोर् तॉडङ्गुम् वेलै विण्णवर् विलक्क वल्विल्
नीट्टिनन् ऱेवर् कोन्गै नॅऱ्ऱियिऱ् कण्णन् वीरम्
काट्टिय करिय मालुङ् गार्मुह मदनैप् पारिल्
ईट्टिय तवत्तिन् मिक्क बिरिशिहऱ् कोन्दु पोनान् 1369

मीट्टुम् पोर् तॉटङ्कुम् वेलै–जब फिर से युद्ध प्रारम्भ करने लगे; विण्णवर् विलक्क–देवों ने रुकवा दिया; नॅऱ्ऱियिल् कण्णन्–भालनेत्र (शिवजी); वल् विल्–बलयुक्त उस धनुष को; तेवर् कोन् कै नीट्टिनन्–देवेन्द्र के हाथ में बढ़ाया (दिया); वीरम् काट्टिय करिय मालुम्–वीरताप्रदर्शक श्यामल विष्णु; कार्मुकम् अतनै–(अपने) कार्मुक, उसको; पारिल्–भूलोक में; ईट्टिय तवत्तिल् मिक्क–अर्जित तपस्या के धनी; इरिचिकऱ्कु–ऋचीक को; ईन्तु पोतान्–देकर चले। १३६९

"वे आगे फिर से युद्ध करने निकले। तब देवों ने बीच में पड़कर युद्ध रुकवा दिया। तब भालनेत्र रुद्रदेव ने अपना धनुष देवेन्द्र के हाथ में दे दिया। वीरता प्रदर्शित करनेवाले श्यामवर्ण श्री विष्णुदेव ने अपने कामुक को लोक भर में कीर्तिप्राप्त और तपस्या में सर्वश्रेष्ठ ऋचीक के पास देकर विदा ली। १३६९

इरिशिह नॅन्दैक् कीय वॅन्दयु मॅनक्कुत् तन्द
वरिशिलै यिदुनो नॉय्दिन् वाङ्गुदि यायिन् मन्न
कुरिशिलह णिन्नो डॉप्पा रिल्लैयान् कुऱित्त पोरुम्
पुरिहिलॅ निन्नो डिन्नम् पुहल्वदु केट्टि यॅन्ऱान् 1370

इरिचिकन् ऍन्तैक्कु ईय–ऋचीक ने मेरे पिता को दिया, तब; ऍन्तैयुम्–मेरे पिता ने; ऍनक्कु तन्त वरिचिलै–मुझे जो दिया वह बन्धनयुक्त धनुष; इतु–यह है; मन्न–राजन; नी नॉय्तिन् वाङ्कुति आयिन्–आप आसानी से (इसको) झुका सकेंगे

तो; निऩ्नोटु ऑप्पार्–आप से तुल्य; कुरिचिल्कळ् इल्लै–राजा नहीं है; निऩ्तोटु याऩ् कुऱित्त पोरुम्–आप से जिसकी मैने चर्चा की, वह युद्ध भी; पुरिकिलॅऩ्–नहीं करूँगा; इऩ्ऩम् पुकल्वतु केट्टि–आगे का कहना भी सुनिए। १३७०

"ऋचीक ने वह धनुष मेरे पिताजी (जमदग्नि) के पास सौपा। मेरे पिता ने वह मुझे दिया। अगर आप बन्धनयुक्त इस चाप को आसानी से लेकर झुका सकेगे तो, राजन्, आपके समान कोई राजा नही होंगे। यह मै मान लूँगा और जिस युद्ध की चर्चा मैने पहले की थी, उसको भी नही करूँगा। यह भी सुनिए। १३७०

ऊऩविल् लिऱुत्त मॊय्म्बै नॊक्कुव दूक्क मऩ्ऱाल्
माऩव मऱ्ऱुङ् गेळाय् मऩ्ऩुयिर्क् किदमे शॅय्युम्
ईऩ्ऱमि लॅऩ्दै शोऱ्ऱ नीक्किऩा ऩवऩै मुऩ्नोर्
ताऩव ऩऩैय मऩ्ऩऩ् कॊल्लयाऩ् शलित्तु मेऩाळ् 1371

ऊनम् विल् इऱुत्त मॊय्म्पै–भग्न धनु-भंजन की वीरता को; नोक्कुवतु–(गर्व के साथ) देखना; ऊक्कम् अऩ्ऱु–उत्साहवर्धक नहीं होगा; माऩव–हे मनु के वंशज; मऱ्ऱुम् केळाय्–और भी सुनिए; मऩ्ऩ उयिर्क्कु–स्थायी जीवो को; इतमे चॅय्युम्–हितकारक; ईतम् इल्–अपराधहीन; ऍऩ्तै–मेरे पिताजी; चीऱ्ऱम् नीक्किऩाऩ्–(किसी से) क्रोध करने से दूर रहे (शांत स्वभाव थे); अवऩै–उनको; मुऩ्–पहले कभी; ताऩवऩ् अऩैय ओर् मऩ्नऩ्–दानव का-सा व्यवहार करनेवाले एक राजा ने; कॊल्ल–मार दिया, तो; याऩ् चलित्तु–मै कुपित होकर; मेल् नाळ्–(उस दिन से) वहुत दिनों तक। १३७१

"पहले ही भग्न धनुष को तोड़कर उस बल पर इतराना उत्साहदायी नहीं होगा। हे मनुकुलश्रेष्ठ! सुनिये। मेरे पिताजी सर्वभूतहितरत थे। कोई बुराई न करनेवाले निरपराध थे। कोपविमुक्त शान्तगुण के थे। उनको, पहले कभी, दानव-सा व्यवहार करनेवाले एक राजा ने (कार्तवीर्य ने या उसके एक पुत्र ने) मार दिया। उससे कुपित होकर तब से आगे वहुत काल,। १३७१

मूवॅळु मुऱैमै पारिऩ् मुडियुडै वेऩ्दै यॅल्लाम्
वेवॅळु मळुविऩ् वायाल् वेरऱक् कळैकट् टऩ्नार्
तूवॅळु कुरुदि वॅळ्ळत् तुऱैयिडै मुळुहि यॅऩ्दैक्
कावऩ कडऩ्ग णेर्ऩ्दे ऩरुञ्जिऩ मडक्कि निऩ्ऱेऩ् 1372

मू ऍळु मुऱैमै–तीन के सात (इक्कीस) पीढ़ियों के; पारिल् मुटि उटैय वेऩ्तै ऍल्लाम्–भूलोक में किरीटधारी सभी राजाओं को; वेवु ऍळु मळुविऩ् वायाल्–जलाकर उठनेवाले परशु की धार से; वेर् अऱ–मूल तक मिटाते हुए; कळै कट्टु–निराने योग्य पौधों के समान उखाड़कर हटाकर; अऩ्नार्–उनके; तू ऍळु–मांस से निसृत; कुरुति वॅळ्ळम् तुऱै इटै मुळुकि–रक्त नदी के घाट पर स्नान करके; ऍऩ्तैक्कु आवऩ–

अपने पिता के प्रति कर्तव्य; कटऩ्कळ् नेर्ऩ्तेऩ्–पितृकर्म किये; अरु चिऩ्ऩम् अटक्कि निऩ्ऱेऩ्–अदम्य कोप को शान्त करके रहा। १३७२

"मैंने इक्कीस पीढ़ियों तक के किरीटधारी राजाओं को अपने उग्र परशु की धार से मरवा डाला। (कोई भी राजा उनके सामने अपना किरीट उतार देता। १३५६वें पद में कहा गया है कि दशरथ ने भी अपना सुवासित केशवाला सिर नवाया। दशरथ के सम्बन्ध में यह भी बताया जाता है कि परशुराम नवविवाहित राजाओं को मारते नहीं थे —यह जानकर दशरथ हर वर्ष एक विवाह कर लेते थे।) मैंने राजाओं का एकदम ऐसा उन्मूलन कर दिया जैसे खेतों में व्यर्थ के पौधे निराये जाते हैं। बाद उनके रक्त से बनी नदी के घाट पर स्नान करके पितृकर्म किये। तभी जाकर मैंने अपना कोप शान्त कर लिया। १३७२

उलहॅला मुऩिवर्‌ कीन्दे नुरुपहै यॉडुक्किप् पोन्देन्
अलहिऩ्मा तवङ्गळ् शॅय्दे यरुवरै यिरुन्दे ऩाण्डच्
चिलैयैनी यिरुत्त वोशै शॅवियुरच् चीऱि वन्देऩ्
मलैहुवॅऩ् वल्लै याहिल् वाङ्गिडिच् चिलैयै यॅऩ्ऱाऩ् 1373

उलकु ॲलाम्–सारे लोक को; मुतिवर्‌कु ईन्तेऩ्–(काश्यप) मुनि को दे दिया; उरुपकै ऑट्टुक्कि–अन्तःशत्रु को जीत कर; अलकु इल् मातवङ्कळ् चॅय्तु–(अत्यधिक) अपार, विविध प्रकार की बड़ी तपस्याएँ करके; अरु वरै इरुन्तेऩ्–उत्तम महेन्द्र पर्वत पर रहा; आण्टु–तब (उधर); अ चिलैयै–उस (शिव-) धनु को; नी इरुत्त ओचै–आपके तोड़ने का शब्द; चॅवि उऱ–कानों में पड़ा, इसलिए; चीऱि वन्तेऩ्–कोप करके आया; वल्लै आकिल्–समर्थ हो तो; इ चिलैयै वाङ्किटु–इस धनुष को झुका लीजिए; मलैकुवॅऩ्–(नहीं तो) लड़ूँगा; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। १३७३

"फिर मैंने सारी जीती हुई भूमि काश्यप मुनि को दान कर दी। उसके बाद काम क्रोधादि अन्तःशत्रुओं का दमन करके अपार और विविध व्रतांधारित तपस्या करते हुए श्रेष्ठ महेन्द्र पर्वत पर रहता था। तब आपके धनुष तोड़ने का शब्द उधर आकर कानों में पड़ा तो पुनः कोप आ गया। अगर सामर्थ्य है तो पकड़िये यह धनुष और झुका लीजिये। तो मैं आपसे लड़ूँगा।" (कम्बन के पहले पद्यों के अनुसार "नहीं तो मैं लड़ूँगा" होना चाहिए क्योंकि परशुराम ने कहा था कि— देखिये पद्य १३७०— आप धनुष चढ़ा देंगे तो चर्चित युद्ध की बात छोड़ दूँगा। पर वाल्मीकी के आधार पर कहा गया है कि आप चढ़ा देंगे तो मैं आपके साथ द्वन्द्वयुद्ध करूँगा।)। १३७३

ॲऩ्ऱन नॅऩ्न निऩ्ऱ विरामऩु मुरुव लॅय्दि
नऩ्ऱॊळिर् मुहत्त ऩाहि नारणऩ् वलियि नाण्ड

वॆऩ्ऱिविऱ् ऱरुह वॆऩ्ऩक् कॊडुत्तऩऩ् वीरऩ् कॊण्डाऩ्
तुऩ्ऱिरुञ् जडैयो ऩञ्जत् तोळुऱ वाङ्गिच् चॊल्लुम् 1374

ऎऩ्ऱऩऩ्–परशुराम कह चुके; ऎऩ्ऩ–उनका यो कहने पर; निऩ्ऱ इरामऩुम्–(जो सुनते) खड़े रहे (उन) श्रीराम ने भी; मुऱुवल् ऎय्ति–मन्दहास युक्त होकर; नऩ्ऱु ऒळिर् मुकत्तऩ् आकि–बहुत ही प्रसन्नमुख हो; नारणऩ् वलियिऩ्–श्रीमन्नारायण के, अपनी शक्ति के साथ; आण्ट वॆऩ्ऱि विल्–प्रयुक्त विजयी धनुष; तरुक–दीजिए; ऎऩ्ऩ–कहा, तब; कॊटुत्तऩऩ्–दिया; वीरऩ् कॊण्टाऩ्–वीर ने लिया; तुऩ्ऱु इरु चटैयोऩ्–घनी लम्बी जटाधारी भी; अञ्च–डर जायँ, ऐसा; तोळ् उऱ वाङ्कि–कंधे तक खींचकर; चॊल्लुम्–कहने लगे। १३७४

परशुराम ने ऐसा कहा। श्रीराम उनके सामने, यह सब सुनते हुए खड़े रहे। मन्दहास के साथ, मुख से प्रसन्नता का प्रकाश प्रकट करते हुए उन्होंने परशुराम से वह धनुष माँगा। "उस धनु को दीजिये जिसका श्रीनारायण ने अपने बल का प्रयोग करके उपयोग किया था।" परशुराम ने धनु को बढ़ाया। वीर श्रीराम ने उसे लिया और प्रत्यंचा चढ़ाई। फिर शर संधान कर परशुराम से बोले। स्वयं परशुराम भयभीत हो गए। १३७४

पूदलत् तरशै यॆल्लाम् पॊऩ्ऱुवित् तऩैयॆऩ् ऱालुम्
वेदवित् ताय मेलोऩ् मैन्दऩॆ विरदम् बूण्डाय्
आदलिऱ् कॊल्ल लाहा दम्बिदु पिऴैप्प दऩ्ऱाल्
यादिदऱ् किलक्क माव दियम्बुदि विरैवि ऩॆऩ्ऱाऩ् 1375

पू तलत्तु अरचै ऎल्लाम्–भूतल के सभी राजाओं को; पॊऩ्ऱु वित्तऩै–मरवा दिया (आपने); ऎनऱालुम्–तो भी; वेत वित्तु आय मेलोऩ्–वेदवित श्रेष्ठ (जमदग्नि) के; मैन्तऩ्–पुत्र है; विरतम् पूण्टाय्–अब (तपो-) व्रती है; आतलिऩ्–इसलिए; कॊल्लल् आकातु–मारना उचित नहीं है; अम्पु इतु–शर यह (जो मैंने डोरी पर चढ़ाया है); पिऴैप्पतु अऩ्ऱु–अचूक है; इतऱ्कु इलक्कम् आवतु–इसका लक्ष्य बनेगा; यातु–क्या; विरैविऩ् इयम्पुति–सत्वर बताइये; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। १३७५

"आपने भूतल के सारे राजाओं को मरवाया। (यह बड़ा अपराध है।) तो भी आप वेदवित और श्रेष्ठ जमदग्नि के पुत्र है। और आप अब तपोव्रती भी हैं। इसलिए आपका प्राण लेना धर्म नहीं होगा। पर यह शर भी व्यर्थ नहीं जायेगा। इसका लक्ष्य क्या हो —यह बताइये तुरन्त।" । १३७५

नीदियाय् मुनिऩ्दिडे ऩीयिङ् गियावरक्कुम्
आदिया यऱिऩ्दऩॆ नलङ्ग नेमियाय्
वेदिया विरुवदे यऩ्ऱि वॆण्मदिप्
पादियाऩ् पिडित्तविल् पऱ्ऱप् पोदुमो 1376

नीतियाय्–नीतिमूर्ति; मुनिन्तिटेल्–कोप मत करें; नी इङ्कु यावर्क्कुम्–आप इन लोकों के सभी वासियों के; आतियाय्–आदिपुरुष हैं; अरिन्ततेन्–समझ लिया (मैंने अब); अलङ्कल् नेमियाय्–प्रकाशमान चक्रधारी; वेतिया–वेदोक्त ब्रह्म; वॆण्मति पातियान्–श्वेत अर्धचन्द्रधर; पिटित्त विल्–शिवग्रहीत धनुष; इरुवते अन्रि–टूटेगा ही, नहीं तो; पट्र पोतुमो–(आप उसको) पकड़कर (झुकायें) इसकी शक्ति रखता है क्या। १३७६

(परशुराम समझ गये कि ये स्वयं विष्णु हैं।) वे बोले। "नीति के मनुष्यरूप! आप मुझ पर क्रोध न करें। मैं समझ गया कि आप ही सर्वलोकमहेश्वर, आदि परब्रह्म हैं। दीप्तिमन्त चक्रधारी! वेदों के आधार! अर्धचन्द्रधर शिवजी का धनुष टूटा, यह ठीक ही है। उसको टूटना ही था। उसमें आपके हाथ की शक्ति को सम्हालने की शक्ति कहाँ रही? । १३७६

पॊन्नुडै वनैकऴल् पॊलङ्गॊ डाळिनाय्
मिन्नुडै नेमिया नादन् मॆय्म्मयाल्
ऎन्नुडैत् तुलहिनि यिडुक्कण् यान्तन्द
उन्नुडै विल्लुमुन् नुरत्तुक् कीडन्राल् 1377

पॊन् उटै–पीताम्बर; वनै कऴल्–कारीगरीयुक्त पायलधारी; पॊलम् कॊळ्–सुन्दर; ताळिनाय्–चरण वाले; मिन् उटै(य) नेमियान्–उज्ज्वल चक्रधारी; आतल् मॆय्म्मैयाल्–हैं, यह सत्य है, इसलिए; उलकु इनि–संसार अब; ऎन् इटुक्कण् उटैत्तु–किस संकट का भागी होगा; यान् तन्त–मुझ से दिया गया; उन्नुटैय विल्लुम्–वह आपका धनुष भी; उन् उरत्तुक्कु ईटु अन्रु–आपकी शक्ति के लिए पर्याप्त नहीं है। १३७७

"हे पीताम्बरधारी! सुन्दर कारीगरी से युक्त पायलधारी चरणों वाले! आप चमकदार चक्र के धारक श्रीविष्णु देव हैं। यह अब साबित है। फिर इस लोक की कौन हानि हो सकती है? असल में जो धनुष अब मैंने आपको दिया उसमें भी आपकी शक्ति सहने का पर्याप्त बल नहीं होगा। १३७७

ऎय्दवम् बिडैपऴु दॆय्दि डामलॆन्, शॆय्दवम् यावैयुञ् जिदैक्क वेण्ॆनक्
कैयव णॊहिऴ्त्तलुङ् गणयुञ् जॆन्ऱवन्, मैयरु तवमॆलाम् वारि मीण्डदे 1378

ऎय्त अम्पु–आपका संधानित शर; इटै पऴुतु ऎय्तिटामल्–बीच में व्यर्थ न हो जाय, इसलिए; ऎन् चॆय् तवम् यावैयुम्–मेरी की हुई तपस्या का सारा संग्रह; चितैक्क ऎन्न–हर ले; ऎन्न–ऐसा कहने पर; अवण्–वहाँ; कै नॆकिऴ्त्तलुम्–हाथ छोड़ने पर; कणैयुम् चॆन्रु–शर भी चलकर; अवन्–उन (परशुराम) के; मै अरु तवम् ऎलाम्–निर्दोष सारी तपस्या के फल को; वारि–उठा लेकर; मीण्टतु–लौट आया। १३७८

"आपने जो शर चढ़ाया है वह बीच में व्यर्थ न हो, इसलिए मैं अपने सब तपोबल को उसका लक्ष्य समर्पित कर देता हूँ। वह उस सबको हर ले। श्रीराम ने यह सुनकर अपनी पकड़ ढीली की तो वह शर परशुराम की सारी तपस्या का फल ग्रहण कर लेकर लौट आया और तूणीर में प्रविष्ट हो गया।" । १३७८

ऍण्णिय पॊरुळॆला मिनिदु मुऱ्ऱुह, मण्णिय मणिनिऱ वण्ण वण्डुळाय्क्
कण्णिय यावर्क्कुङ् गळैह णाहिय, पुण्णिय विडैयॆनत् तॊऴुदु पोयिनान् 1379

मण्णिय मणि निऱ वण्ण–शुद्धिकृत मणि के वर्ण वाले; वण् तुळाय् कण्णिय–पुष्ट तुलसी की मालाधारी; यावर्क्कुम् कळै कण् आकिय–सब किसी के लिए आधार; पुण्णिय–पुण्यस्वरूप; ऍण्णिय पॊरुळ् ऍलाम्–जो चाहेंगे, वे सब कार्य; इनितु मुऱ्ऱुक–सुख से पूर्ण हों; विटै–विदा; ऍन्न–यह कहकर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पोनान्–चले गये। १३७९

परशुराम ने श्रीराम की स्तुति की। "शुद्धिकृत नीलमणिवर्ण! पुष्ट तुलसीदलों की बनी मालाधारी! सर्वाधार पुण्यमूर्ति! आपका सब संकल्प सफल हो। अब मै बिदा लेता हूँ।" यह कहकर वे लौट चले। १३७९

अऴिन्दवन् पोयपि नमल नैयुणर्वु
ऑऴिन्दुतन् नुयिरुलैन् दुरुहु तन्दयैप्
पॊऴिन्दपे रन्बिनाऱ् ऱॊऴुदु मुन्बुपुक्
किऴिन्दवान् ऱुयर्क्कडऱ् करयि नेऱ्ऱिनान् 1380

अवन् अऴिन्तु पोय पिन्–उनके सर्वस्व खोकर जाने के बाद; अमलन्–निर्मल श्रीराम ने; तन् ऐ उणर्वु ऑऴिन्तु–अपने पंचेंद्रिय की शक्ति खोकर; उयिर् उलैन्तु–विकल-प्राण होकर; उरुकुम्–घुलनेवाले; तन्तैयै–पिता दशरथजी के; पॊऴिन्त पेर् अन्पिनाल्–उमंगनेवाले बड़े प्रेम के साथ; मुन्पु पुक्कु–सामने जाकर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; इऴिन्त–(जिसमें वे) मग्न थे; वान् तुयर् कटलिन्–उस विशाल दुख के सागर के; करै एऱ्ऱिनान्–पार लगाया। १३८०

अपना सर्वस्व खोकर परशुराम के चले जाने के बाद श्रीराम अपने पिता के पास आये। चक्रवर्ती दशरथ की पाँचों इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गयी थीं। प्राण विकल हुए थे। वे अन्दर ही अन्दर घुल रहे थे। निर्मल स्वभाव वाले श्रीराम ने उमगनेवाले बड़े प्रेम के साथ पिता के सामने आकर उनको नमस्कार किया। तब जाकर चक्रवर्ती का दुख दूर हुआ। श्रीराम ने अपने पराक्रम से परशुराम को हराकर चक्रवर्ती को दुख-सागर के पार लगा दिया। १३८०

वॆळिप्पडु मुणर्वितन् विळुम नीङ्गिडत्
तळिर्प्पुरु मदहरित् तानै यानिडैक्
कुळिप्पुरुन् द्रुयर्क्कडर् कोडु कण्डवन्
कळिप्पॆन्नुङ् गरैयिलाक् कडलु ळाळ्न्दनन् 1381

वॆळिप्पटुम् उणर्वितन्–स्वस्थ होनेवाली सुधि के बनकर; विळुमम्–दुख के; नीङ्किट–दूर होने से; तळिर्प्पु उरुम्–आह्लादयुक्त हो; मतम् करि तातैयान्–मत्तगजों की सेनावाले; इटै कुळिप्पु उरुम्–बीच में जिसमें मग्न थे; तुयर् कटल्–उस दुख समुद्र का; कोटु कण्टवन्–तीर (अन्त) देखनेवाले; कळिप्पु ॲनुम्–सन्तोष रूपी; करै इला कटलुळ्–बेलाहीन (तीर रहित) समुद्र में; आळ्न्ततन्–डूब गये। १३८१

(श्रीराम के ढाढस देने पर) दशरथजी की बेहोशी दूर हुई और चेतना वापस आई। दुख से विमुक्त हुए। मन उल्लसित हुआ। मत्तगजों की सेना वाले वे दुख-सागर से ऊपर तीर पर आये; अब बेलाहीन सुख-सागर में डूब गए। १३८१

परिवरु शिन्दयप् परशु रामन्कै
वरिशिलै वाङ्गियोर् वशैयै नल्हिय
ऒरुवनैत् तळुविनिन् रुच्चि मोन्दुतन्
अरुवियङ् गण्णॆनुङ् गलश माट्टिनान् 1382

परिवु अरु चिन्तै–अकरुणमन; अ परचुरामन् कै–उन परशुराम के हाथ के; वरि चिलै वाङ्कि–बन्धनसहित धनुष लेकर; ओर् वचैयै नल्किय–एक अपयश (उन्हें) दिलानेवाले; ऒरुवतै–अनुपम (श्रीराम) को; तळुवि निन्रु–गले लगाकर; उच्चि मोन्तु–सिर सूँघकर; तन्–अपनी; अरुवि कण् ॲनुम्–नदी के समान अश्रु बहानेवाली आँखों रूपी; कलचम्–कलशों से; आट्टितान्–अभिषिक्त करा दिया। १३८२

श्रीराम ने अकरुणमन परशुराम के हाथ से धनुष लिया और उन्हें बदले में अपयश दिया। ऐसे अनुपम वीर का दशरथ ने आलिंगन किया; सिर को सूँघा और अपनी अश्रुनदी बहानेवाली आँखों रूपी कलशों से उन्हें अभिषिक्त करा दिया। (इस पद में धनुष लेकर अपयश देने का भाव "परिवर्तनालंकार" के अन्तर्गत लिया जायगा— मूल टीकाकार।)। १३८२

पॊय्म्मैयिल् शिरुमयिर् पुरिन्द वाण्डॊळिल्
मुम्मैयि नुलहिनान् मुडिक्क लावदो
मॆय्म्मैयिच् चिरुवनै विनैशॆय् दोर्हळुक्
किम्मैयु मरुमयु मीयु मॆन्रतन् 1383

पॊय्म्मै इल् चिरुमैयिल्–कपटहीन (नादान) इस छोटी आयु में; पुरिन्त आण् तॊळिल्–जो (इसने) किया वह पौरुष का कार्य; मुम्मैयिन् उलकिताल्–तीनों लोकों के वासियों से; मुटिक्कल् आवतो–किया जा सकता है क्या; मॆय्म्मै–सत्य तो;

इ चिऱुवने–यह बालक; विन्नै चॅय्तोर्कळुक्कु–सुकृतों को; इम्मैयुम् मरुमैयुम्–इह पर सुख; ईयुम्–दिला देनेवाला है; ऍन्ऱतन्–संस्तुति की। १३८३

दशरथ ने उनकी प्रशंसा की। कपटहीन इस छोटी आयु में श्रीराम ने जो पौरुष का काम किया है वह तीनो लोकों में किसी के हाथ हो सकेगा क्या ? नही। सच्ची बात तो यही है कि ये बालक श्रीराम सुकृतों को उनके कर्मानुसार इह-पर सुख देनेवाले 'कर्मफलदाता' भगवान है। १३८३

पूमऴै पॊऴिन्दनर् पुहुन्द तेवर्हळ्, वामवेल् वरुणन्नै मान्न वॅञ्जिलै
शेमियॆन् ऱळित्तनन् शेन्नै यार्त्तॆऴ, नामनी रयोत्तिमा नहर नण्णिनान् 1384

पुकुन्त तेवर्कळ्–आकाश में एकत्र देवों ने; पू मऴै पॊऴिन्तनर्–पुष्पवर्षा की; वामम् वेल् वरुणनै–मनोरम भालाधारी वर्ण को (बुलाकर); मानम् वॅम् चिलै चेमि–आदरणीय और भयंकर धनुष को सुरक्षित रखो; ऍन्ऱु–कहकर; अळित्तनन्–उसके पास दिया और; चेनै आर्त्तु ऍऴ–सेना के कोलाहल के साथ उठते; नामम् नीर्–भय दिलानेवाले खाई के जल से आवृत्त; अयोत्ति मा नकरम् नण्णिनान्–अयोध्या के महान नगर पधारे। १३८४

(आकाश में देव जुट गये। उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा।) देवों ने कल्पक तरुओं के पुष्प की वर्षा की। तब श्रीराम ने सुन्दर सांगधारी वरुण को आमंत्रित किया और उनके हाथ में उस आदरणीय आतंक मचाने वाले धनुष को दिया और कहा कि इसको सुरक्षित रखिये। अपनी उस सेना के साथ जो कोलाहल करते हुए रवाना हुई वे भयावनी खाई के जल से वलयित अयोध्या के महानगर मे पधारे। १३८४

नण्णिन्न रिन्नबत्तु वैहु नाळिडै, मण्णुरु मुरशिनम् वयङ्गु तानैयान्
अण्णलप् परदनै नोक्कि याण्डहै, ऍण्णरुन् दहयदोर् पॊरुळि यम्बुवान् 1385

नण्णिनर्–(अयोध्या में) आगत सब; इन्पत्तु वैकुम् नाळ् इटै–सुख से रहते थे, तब उस मध्य; आण् तकै–पौरुषयुक्त; मण् उरु–मृण्लेप वाले; मुरचु इनम्–ढोल के समूह; वयङ्कुम्–जहाँ बजते थे; तानैयान्–उस सेना के स्वामी ने; अण्णल् अ परतनै नोक्कि–महिमावान भरत को देखकर; ऍण्ण अरु तकैयतु–वह जिसको सोच भी नहीं सकते थे, ऐसा; ओर् पॊरुळ्–एक (आदेश-) समाचार; इयम्पुवान्–कहा। १३८५

अयोध्या में आकर सब सुख से रहने लगे। तब राजा दशरथ ने, जो अपार पौरुष रखनेवाले थे और जिनकी सेना में अनेक ढोल बजते थे (इन ढोलों के चमड़े में मट्टी का बना लेप लगाया जाता है ताकि चमड़ा चोट पाकर खूब थर्रा उठे और जोर का शब्द हो), महिमावान भरत से ऐसी बात कही जिसे स्वयं भरत भी नहीं सोच सकता था (क्योंकि राम से अलग रहना उन्हें सह्य नहीं हो सकता था।)। १३८५

आणयि न्निनदुमू दादै यैयनिऱ्, काणिय विऴैवदोर् करुत्त नादलाल्
केणियिल् वळैमुरल् केह यम्बुहप्, पूणियन् मार्बनी पोदि यॆन्ऱनन् 1386

ऐय–तात; आणैयिन्–शासनकर्त्ता; निन्तु मूतातै–तुम्हारे मातामह; निन्काणिय–तुमको देखने की; विऴैवतु–इच्छा करनेवाले; ओर् करुत्तन्–मन के हैं; आतलाल्–इसलिए; पूण् इयल् मार्प–आभूषणभूषित वक्षवाले; नी–तुम; केणियिल् वळै मुरल्–जहाँ तालाबों में शंख बोलते रहते है; केकयम् पुक–(उस) केकय देश जाने के लिए; पोति–रवाना हो जाओ; ॲन्ऱनन्–यह आज्ञा सुनाई। १३८६

दशरथ ने आज्ञा दी कि तात ! तुम्हारे मातुल, जो प्रतापी शासक हैं, तुमको देखने की इच्छा रखते हैं। आभरणभूषित वक्ष वाले भरत ! तुम केकय देश को, जिसके तालाबों में शंख बोलते रहते हैं (जो देश जल-समृद्ध है), जाने के लिए प्रस्तुत हो जाओ। १३८६

एवलु मिऱैञ्जिप्पो यिरामन् शेवडिप्, पूविनैच् चॆन्नियिऱ् पुनैन्दु पोयिनान्
आवियङ् गवनल दिल्लै यादलान्, ओवलि लुयिर्पिरिन् दुडल्शॆन् ऱॆन्नवे 1387

एवलुम्–आज्ञा देते ही; इऱैञ्चि–पिता का नमस्कार करके; पोय्–जाकर; ईरामन् चे अटि पूविनै–श्रीराम के अरुण चरणपद्मों को; चॆन्नियिल् पुनैन्तु–सिर पर धारण करके; आवि–प्राण; अङ्कु–उधर; अवन् अलतु–उनके सिवा; इल्लै–नहीं; आतलान्–इसलिए; ओवल् इल् उयिर् पिरिन्तु–अपृथक्करणीय प्राणों को छोड़कर; उटल् चॆन्ऱतु ॲन्न–शरीर जाता हो जैसे; पोयिनान्–चले। १३८७

भरत उन्हीं की आज्ञा के कारण चल पड़े। पहले उन्होंने पिताजी को नमस्कार किया। बाद श्रीराम के चरणों पर अपना सिर रखकर दण्डवत की। उनके प्राण या आत्मा श्रीराम के सिवा दूसरे नहीं थे। वे उन्हें इतना प्यार करते थे। इसलिए जब वह चले तो ऐसा लगा कि शरीर आत्मा को छोड़कर जा रहा हो। १३८७

उळैविरि पुरवित्ते रुदाशित् तॆन्ऱॆणुम्
वळैमुरल् शेनयान् मरुङ्गु पोदप्पोय्
इळैयवन् ऱन्नॊडु मेऴु नाळिडै
नळिर्पुनर् केहय नाडु नण्णिनान् 1388

उताचित्तु ॲन्ऱु ॲणुम्–युधाजित नाम से प्रख्यात; वळै मुरल् चेनैयान्–शंखध्वनि वाली सेना के स्वामी के; मरुङ्कु पोत–साथ आते; इळैयवन् तन्नॊटुम्–अनुज (शत्रुघ्न) के साथ; उळै विरि–अयाल मण्डित; पुरवि तेर्–अश्व-जुते रथ पर; एऴु नाळ् इटै–सात दिनों में; नळिर् पुनल् केकय नाटु–शीतल जल से भरे केकय देश में; नण्णिनान्–पहुँचे। १३८८

भरत के साथ युधाजित नाम के उनके मातुल अपनी शंखध्वनि सहित

सेना के साथ गये। भरत अनुज शत्रुघ्न के साथ घने और बिखरे अयाल वाले अश्वों के जुते रथ पर बैठकर सात दिन में जल-समृद्ध केकय देश पहुँचे। १३८८

आनवऩ् पोनपि ऩरशर् कोमहऩ्, ऊनमिल् पेरर शुय्क्कु नाळिडै
वानवर् शॅय्दमा दवमुण् डादलाऩ्, मेनिहऴ् पॊरुळिऩै विळम्बु वामरो 1389

आऩवऩ्–वैसे भरत के; पोऩ्पिऩ्–जाने के वाद; अरचर् कोमकऩ्–राजाधिराज; ऊतम् इल्–कमीहीन; पेर् अरचु उय्क्कुम नाळ् इटै–विपुल अपना राज्य चलाते रहे, उन दिनों; वाऩवर् चॅय्त–देवों के किये हुए; मा तवम् उण्टु–तप है; आतलाऩ्–इसलिए; मेल् निकऴ्–(उसके फलस्वरूप) जो आगे हुआ; पॊरुळिऩै–वह वृत्तांत; विळम्पुवाम्–वर्णन करेंगे। १३८९

ऐसा भरत के जाने के वाद राजाधिराज चक्रवर्ती विना किसी दोष या हीनता के वड़े राज्य का शासन करने लगे। तव देवों ने जो वड़ी तपस्या की थी उसके फलस्वरूप जो घटित हुआ उसका वर्णन हम अब करेंगे। १३८९

॥ वालकाण्ड समाप्त ॥

